१ओं सतिगुर प्रसादि॥

आदि श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी

मूल पाठ सहित हिन्दी अनुवाद

(भाग तीसरा)

(अंग ७२१ से ११०६ तक)

१ ਓੰ सतिगुरु प्रसादि ॥

आदि

श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी

(मूल पाठ सहित हिन्दी अनुवाद)

भाग तीसरा

{अंग ७२१ से ११०६ तक}

अनुवादक :

साहिब सिंघ, चरण सिंघ

डा. अजीत सिंघ औलख

लिप्यन्तरण :

जतिन्द्र कुमार

*Mob.: 98117 91111 ◇98114 91111

धार्मिक पुस्तकें व बाबा जी के रुमाल साहिब का एकमात्र शोरूम

भा. भाई चतर सिंघ एण्ड को. घ

पुस्तकां वाले (अमृतसर वाले)

*डी-118, फतेह नगर, जेल रोड, नई दिल्ली-18

(नजदीक गुरुद्वारा छोटे साहिबजादे साहिब जी)

◇1687 कूचा जट्ट मल, दरीबा कलां, दिल्ली-6

ISBN : 978-93-80323-15-2

प्रथम संस्करण : 2009

भाग तीसरा भेटा : 500-00

प्रकाशक :

भा.चतर सिंघ जीवन सिंघ

बाज़ार माई सेवां, अमृतसर।

फोन/फैक्स : 91-183-2547974, 2557973, 2542346

E-mail : csjssales@hotmail.com, csjsexports@vsnl.com
csjspurchase@yahoo.com

Visit website : www.csjs.com

विनती : पोथी का पाठ आरम्भ करने से पूर्व इसके सभी अंग देख लिए जाएं जी। अगर कहीं कोई त्रुटि नजर आए तो इसे प्राप्ति स्थान से बदला लेवें जी।

'भुलण अंदरि सभु को अभुलु गुरू करतारु॥' —प्रकाशक

मुद्रक : जीवन प्रिंटर्ज, अमृतसर।

१ ਓ सति नामु करता पुरखु निरभउ निरवैरु अकाल मूरति अजूनी सैभं गुर प्रसादि ॥

ततकरा रागों का

भाग तीसरा

१ओं सतिगुर प्रसादि॥

ततकरा शबदों का

रागु तिलंग

रागु सूही

रागु बिलावलु

रागु गोंड

☆☆☆

पंजाबी (गुरमुखी)-देवनागरी वर्णमाला

ਅ अ	ਆ आ	ਇ इ	ਈ ई	
ਉ उ	ਊ ऊ	ਰੀ ऋ	ਏ ए	
ਐ ऐ	ਓ ओ	ਔ औ	ਅੰ अं	ਅ: अः
ਕ क	ਖ ख	ਗ ग	ਘ घ	ਙ ङ
ਚ च	ਛ छ	ਜ ज	ਝ झ	ਞ ञ
ਟ ट	ਠ ठ	ਡ ड	ਢ ढ	ਣ ण
ਤ त	ਥ थ	ਦ द	ਧ ध	ਨ न
ਪ प	ਫ फ	ਬ ब	ਭ भ	ਮ म
ਯ य	ਰ र	ਲ ल	ਵ व	ੜ ड़
ਸ਼ श	ਸ਼ ष	ਸ स	ਹ ह	

ध्यातव्य– मूल पाठ के शब्दों जैसे कि 'हरिनामु' 'जपु' 'परमेसरु' 'सिमरनि' 'अंम्रितु' 'प्रसादि' इत्यादि के आखिरी व्यंजन के साथ सम्मिलित ह्रस्व 'उ' (ੁ) 'ई' (ਿ) मात्राओं का उच्चारण या पाठ नहीं किया जाता।

अंक ज्ञान

हिन्दू अरबी – देवनागरी हिन्दी

एकाई		दहाई		सैकड़ा		हजार	
0	०	10	१०	100	१००	1000	१०००
1	१	11	११	101	१०१	1001	१००१
2	२	12	१२	102	१०२	1002	१००२
3	३	13	१३	103	१०३	1003	१००३
4	४	14	१४	104	१०४	1004	१००४
5	५	15	१५	105	१०५	1005	१००५
6	६	16	१६	106	१०६	1006	१००६
7	७	17	१७	107	१०७	1007	१००७
8	८	18	१८	108	१०८	1008	१००८
9	९	19	१९	109	१०९	1009	१००९
--		20	२०	110	११०	1010	१०१०
--		30	३०	200	२००	1020	१०२०
--		40	४०	300	३००	1030	१०३०
--		50	५०	400	४००	1040	१०४०
--		60	६०	500	५००	1050	१०५०
--		70	७०	600	६००	1060	१०६०
--		80	८०	700	७००	1070	१०७०
--		90	९०	800	८००	1080	१०८०
--		99	९९	900	९००	1100	११००

शब्दार्थ

१. अरज़ — विनती
२. अजनमा — जन्म-मरण से मुक्त
३. अरदास — प्रार्थना, वंदना
४. अव्वल — पहले
५. अगम — पहुँच से परे
६. अष्टपदी — आठ पंक्तियों वाले शब्द
७. अभुल — जो भूल नहीं करता
८. अचरज — दिलचस्प
९. अचुत — अटल
१०. आकार — सृष्टि रचना
११. अपर अपार — परे से परे
१२. आदि पुरुष— ईश्वर
१३. कादिर — स्रष्टा
१४. कबीर — बड़ा
१५. करीम — रहमदिल
१६. करम — अनुकंपा
१७. कुदरत — ईश्वरीय शक्ति
१८. खालिक — परमेश्वर
१९. खलक — संसार
२०. गुरुवाणी — गुरु के मुखारबिंद से उच्चरित वाणी
२१. गुरुसिख — गुरु का शिष्य
२२. गोपाल — संसार का पालनहार
२३. गोविंद — ईश्वर
२४. गुर मंत्र — गुरु का उपदेश
२५. घाल — सेवा
२६. चाकरी — सेवा
२७. जाचक — मांगने वाला
२८. जोर — अत्याचार
२९. टेक — अवलम्ब
३०. ठाकुर — स्वामी
३१. ताण — आसरा
३२. तुठा — प्रसन्न
३३. दुहागिन — पति से विहीन
३४. दात — नियामत
३५. दोजक — नरक
३६. दीनबंधु — गरीबों का हमदर्द
३७. दीबान — कचहरी
३८. धरमराइ — मृत्यु का व्यवस्थापक
३९. धुर दरगाह — ईश्वर की अदालत
४०. नदरि — करुणा-दृष्टि, कृपा-दृष्टि
४१. निगुरा — गुरु-विहीन
४२. निरंजन — मायातीत, प्रभु
४३. निगम — वेद
४४. निधान — भण्डार
४५. निहफलु — फलहीन
४६. नूर — ज्योति
४७. नदर — कृपा
४८. पंचपदे — पाँच पंक्तियों वाले शब्द
४९. पिंड — शरीर
५०. पीर — मुरशद, गुरु
५१. पाक — पावन
५२. पउड़ी — गाथा गीत
५३. परमपद — मुक्ति, मोक्ष
५४. परवाणु — मंजूर, स्वीकार
५५. पतितपावन — पतितों को पावन करने वाला
५६. परवरदगार — पालनहार, परमात्मा
५७. पैज — लाज, मान-प्रतिष्ठा
५८. प्रतिपालक — पालन करने वाला
५९. बेऐब — जिसमें कोई ऐब न हो
६०. बखसीस — अनुग्रह
६१. बेपीर — निगुरा

६२. बोहिथ — जहाज
६३. बखसिंद — रहमदिल
६४. बावरा — पगला, दीवाना
६५. बिसरत — भुलाना, विस्मृत
६६. बेपरवाह — सर्वाधिकार सम्पन्न
६७. भाणा — रज़ा, इच्छा, मर्जी
६८. भगत — प्रभु की भक्ति करने वाला
६९. भरवासा — भरोसा, विश्वास
७०. भउजल — संसार-सागर
७१. भव — जन्म
७२. भाणा — प्रभु की रज़ा
७३. भाउ — श्रद्धा-प्रेम
७४. भक्तवत्सल — भक्तों से प्रेम करने वाला
७५. भजु — भजन
७६. मति — शिक्षा, सीख, उपदेश
७७. मेदिनी — संसार
७८. मैंडा — मेरा
७९. मिठ बोलड़ा — मधुरभाषी
८०. मंदभागी — बदकिस्मत
८१. मसकीन — विनम्र
८२. मनमुख — स्वेच्छाचारी
८३. मता — सलाह
८४. मधुसूदन — दुष्टदमन
८५. मुंदावणी — पहेली
८६. मिथिआ — झूठा
८७. मोकउ — मुझे
८८. मन — अंतःकरण
८९. मुसताक — प्रेमी
९०. मुगध — मूर्ख
९१. यम — मौत का फरिश्ता
९२. रहीम — रहम करने वाला
९३. रहाउ — रुको, दुबारा चिंतन करो
९४. रजाइ — मर्जी
९५. राखनहार — संरक्षक
९६. रसना — जीभ, जिह्वा
९७. रीस — बराबरी
९८. लाव — विवाह का फेरा
९९. लालन — प्रभु
१००. लोच — कामना
१०१. वार — काव्य रूप
१०२. वडिआई — बड़ाई, स्तुति, प्रशंसा
१०३. वाह-वाह — स्तुति
१०४. विधाता — परमेश्वर
१०५. वेसाह — भरोसा
१०६. वडभागी — भाग्यवान, भाग्यशाली
१०७. सतिगुरु — सच्चा गुरु, परमेश्वर
१०८. सबद — शब्द, नाम
१०९. सुखदाता — सुख देने वाला
११०. संध्या — संध्या-वंदन
१११. सिमरन — आराधना, वंदन
११२. सतसंगति— सत्संग, साधु-संतों की संगति
११३. साकत — मतावलंबी, मायावी जीव
११४. सहसा — संशय, चिंता
११५. सोलहे — सोलह पंक्तियों वाले शब्द
११६. सोहिलड़ा — यशोगान
११७. सिक्ख — शिष्य, शार्गिद
११८. सबद — शब्द, ब्रह्म, नाम
११९. सिफत — प्रशंसा, स्तुति
१२०. साहिब — मालिक, परमेश्वर
१२१. हउमै — अहंत्व, अभिमान, अहंकार
१२२. हुक्म — आदेश, आज्ञा
१२३. हरि — ईश्वर
१२४. हलत पलत—लोक-परलोक
१२५. हरि कीरतन — ईश्वर का भजन

☆☆☆

अंग ७२१ से ११०६ तक
मूलपाठ एवं हिन्दी अनुवाद

रागु तिलंग महला १ घरु १

१ ओं सति नामु करता पुरखु निरभउ निरवैरु अकाल मूरति अजूनी सैभं गुर प्रसादि ॥

ईश्वर एक है, उसका नाम सत्य है, वह आदिपुरुष संसार का रचनहार है, सर्वशक्तिमान है, अभय है, वैर भावना से रहित होने के कारण प्रेमस्वरूप है, वह कालातीत ब्रह्म-मूर्ति सदा अमर है, अतः जन्म-मरण के चक्र से रहित है, स्वजन्मा है अर्थात् स्वयं प्रकाशमान हुआ, जिसे गुरु-कृपा से पाया जाता है।

यक अरज गुफतम पेसि तो दर गोस कुन करतार ॥ हका कबीर करीम तू बेऐब परवदगार ॥ १ ॥ दुनीआ मुकामे फानी तहकीक दिल दानी ॥ मम सर मूइ अजराईल गिरफतह दिल हेचि न दानी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जन पिसर पदर बिरादरां कस नेस दसतंगीर ॥ आखिर बिअफतम कस न दारद चूं सवद तकबीर ॥ २ ॥ सब रोज गसतम दर हवा करदेम बदी खिआल ॥ गाहे न नेकी कार करदम मम ईं चिनी अहवाल ॥ ३ ॥ बदबखत हम चु बखील गाफिल बेनजर बेबाक ॥ नानक बुगोयद जनु तुरा तेरे चाकरां पा खाक ॥ ४ ॥ १ ॥

हे करतार! मैंने तेरे पास एक अर्ज की है, जरा इसे कान लगाकर ध्यान से सुन। तू सदैव सत्य है, बहुत बड़ा है, कृपा करने वाला है, तुझमें किसी प्रकार का कोई ऐब नहीं, अपितु सबका पोषक है॥ १॥ हे मेरे दिल! तू यह सत्य जान ले कि यह दुनिया नाश होने वाला मुकाम है। तू कुछ भी नहीं जानता कि मृत्यु के फरिश्ते इजराईल ने मेरे सिर के बाल पकड़े हुए हैं॥ १॥ रहाउ॥ स्त्री, पुत्र, पिता एवं भाई-इन में से कोई भी मेरा मददगार नहीं है। जब आखिर में मेरी मृत्यु आ जाएगी और मृतक शरीर को दफनाने की नमांज पढ़ी जाएगी, तब कोई भी मुझे यहाँ रख नहीं सकेगा॥ २॥ मैं जीवन भर लालच में ही भटकता रहा, बुराई का ही ख्याल करता रहा। मेरी दशा यह है कि मैंने कभी कोई भलाई का कार्य नहीं किया॥ ३॥ मुझ जैसा दुनिया में कोई बदनसीब, चुगलखोर, गाफिल, निर्लज्ज एवं निडर नहीं है। दास नानक यही कहता है कि हे प्रभु! मुझ पर ऐसी मेहर करो कि तेरे सेवकों की चरण-धूलि मिल जाए॥ ४॥ १॥

तिलंग महला १ घरु २ १ओं सतिगुर प्रसादि ॥ भउ तेरा भांग खलड़ी मेरा चीतु ॥ मै देवाना भइआ अतीतु ॥ कर कासा दरसन की भूख ॥ मै दरि मागउ नीता नीत ॥ १ ॥ तउ दरसन की करउ समाइ ॥ मै दरि मागतु भीखिआ पाइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ केसरि कुसम मिरगमै हरणा सरब सरीरी चढ़णा ॥ चंदन भगता जोति इनेही सरबे परमलु करणा ॥ २ ॥ घिअ पट भांडा कहै न कोइ ॥ ऐसा भगतु वरन महि होइ ॥ तेरै नामि निवे रहे लिव लाइ ॥ नानक तिन दरि भीखिआ पाइ ॥ ३ ॥ १ ॥ २ ॥

हे मालिक! तेरा डर मेरी भाँग है और मेरा चित इस भाँग को पाने वाला चमड़े का थैला है। मैं डर रूपी भाँग को पीकर दिवाना एवं विरक्त बन गया हूँ। मुझे तेरे दर्शनों की भूख लगी हुई है और मेरे दोनों हाथ तेरे द्वार पर भीख माँगने के लिए खप्पर हैं। मैं नित्य ही तेरे द्वार पर तेरे दर्शनों की भीख माँगता रहता हूँ॥ १॥ मैं तेरे दर्शन ही माँगता हूँ। मैं भिखारी तेरे द्वार पर खड़ा हूँ, मुझे दर्शनों की भीख दो॥ १॥ रहाउ॥ केसर, फूल, कस्तूरी एवं सोना इत्यादि सबने शरीर पर चढ़ना होता है। ऐसी चन्दन जैसी भक्तों में ज्योति बसती है, जो सबको अपनी ज्ञान रूपी सुगन्धि देती है॥ २॥ घी एवं रेशम को कोई बुरा नहीं कहता। हे प्रभु! तेरा भक्त भी ऐसा ही होता है कि कोई भी उसे बुरा नहीं कहता चाहे वह ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य एवं शूद्र किसी भी जाति में से हो। नानक की विनती है कि हे मालिक! जो तेरे नाम में लीन रहते हैं और तुझ में वृत्ति लगाए रखते हैं, उनके द्वार पर अपने दर्शनों की भिक्षा दो॥ ३॥ १॥ २॥

तिलंग महला १ घरु ३ १ओं सतिगुर प्रसादि ॥ इहु तनु माइआ पाहिआ पिआरे लीतड़ा लबि रंगाए ॥ मेरै कंत न भावै चोलड़ा पिआरे किउ धन सेजै जाए ॥ १ ॥ हंउ कुरबानै जाउ मिहरवाना हंउ कुरबानै जाउ ॥ हंउ कुरबानै जाउ तिना कै लैनि जो तेरा नाउ ॥ लैनि जो तेरा नाउ तिना कै हंउ सद कुरबानै जाउ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ काइआ रंङणि जे थीऐ पिआरे पाईऐ नाउ मजीठ ॥ रंङण वाला जे रंङै साहिबु ऐसा रंगु न डीठ ॥ २ ॥ जिन के चोले रतड़े पिआरे कंतु तिना कै पासि ॥ धूड़ि तिना की जे मिलै जी कहु नानक की अरदासि ॥ ३ ॥ आपे साजे आपे रंगे आपे नदरि करेइ ॥ नानक कामणि कंतै भावै आपे ही रावेइ ॥ ४ ॥ १ ॥ ३ ॥

हे मेरे प्यारे! मेरा यह तन रूपी चोला माया की लाग से लग गया है और मैंने इसे लालच रूपी रंग में रंग लिया है। इसलिए मेरा यह तन रूपी चोला मेरे पति-प्रभु को अच्छा नहीं लगता, मैं उसकी सेज पर कैसे जाऊँ?॥ १॥ हे मेहरबान मालिक! मैं कुर्बान जाता हूँ। मैं सदैव ही उन पर कुर्बान जाता हूँ जो तेरा नाम लेते हैं। जो तेरा नाम जपते हैं, उन पर मैं सदा कुर्बान हूँ॥ १॥ रहाउ॥ हे मेरे प्यारे! यदि यह काया ललारी की भट्ठी बन जाए और उसमें नाम रूपी मजीठ डाला जाए। यदि रंगने वाला मेरा मालिक स्वयं मेरे तन रूपी चोले को रंगे तो उसे ऐसा सुन्दर रंग चढ़ जाता है, जो पहले कभी देखा नहीं होता॥ २॥ हे प्यारे! जिन जीव-स्त्रियों के तन रूपी चोले नाम रूपी रंग में रंगे हुए हैं, उनका पति-प्रभु सर्वदा उनके साथ रहता है। नानक की प्रार्थना है कि मुझे उनकी चरण-धूलि मिल जाए॥ ३॥ प्रभु स्वयं ही जीव-स्त्रियों को पैदा करता है, स्वयं ही उन्हें नाम रूपी रंग में रंगता है और स्वयं ही उन पर अपनी कृपा दृष्टि करता है। हे नानक! जब जीव-स्त्री अपने पति-प्रभु को अच्छी लगने लगती है तो वह स्वयं ही उससे आनंद करता है॥ ४॥ १॥ ३॥

तिलंग म: १ ॥ इआनड़ीए मानड़ा काइ करेहि ॥ आपनड़ै घरि हरि रंगो की न माणेहि ॥ सहु नेड़ै धन कंमलीए बाहरु किआ ढूढेहि ॥ भै कीआ देहि सलाईआ नैणी भाव का करि सीगारो ॥ ता सोहागणि जाणीऐ लागी जा सहु धरे पिआरो ॥ १ ॥ इआणी बाली किआ करे जा धन कंत न भावै ॥ करण पलाह करे बहुतेरे सा धन महलु न पावै ॥ विणु करमा किछु पाईऐ नाही जे बहुतेरा धावै ॥ लब लोभ अहंकार की माती माइआ माहि समाणी ॥ इनी बाती सहु पाईऐ नाही भई कामणि इआणी ॥ २ ॥ जाइ पुछहु सोहागणी वाहै किनी बाती सहु पाईऐ ॥ जो किछु करे सो भला करि मानीऐ हिकमति हुकमु चुकाईऐ ॥ जा कै प्रेमि पदारथु पाईऐ तउ चरणी चितु लाईऐ ॥ सहु कहै सो कीजै

तनु मनो दीजै ऐसा परमलु लाईऐ ॥ एव कहहि सोहागणी भैणे इनी बाती सहु पाईऐ ॥ ३ ॥ आपु गवाईऐ ता सहु पाईऐ अउरु कैसी चतुराई ॥ सहु नदरि करि देखै सो दिनु लेखै कामणि नउ निधि पाई ॥ आपणे कंत पिआरी सा सोहागणि नानक सा सभराई ॥ ऐसै रंगि राती सहज की माती अहिनिसि भाइ समाणी ॥ सुंदरि साइ सरूप बिचखणि कहीऐ सा सिआणी ॥ ४ ॥ २ ॥ ४ ॥

हे नादान जीव-स्त्री ! तू घमण्ड क्यों करती है ? तू अपने ह्रदय-घर में मौजूद हरि का प्रेम क्यों नहीं लेती ? हे बावली स्त्री ! तेरा पति-प्रभु तेरे पास ही है, तेरे ह्रदय में रहता है, तू उसे बाहर क्यों ढूँढती है ? अपने नयनों पर प्रभु के डर रूपी सुरमे की सिलाइयाँ डाल और प्रभु-प्रेम का शृंगार कर। यदि पति-प्रभु जीव-स्त्री से प्रेम धारण करेगा तो ही वह सुहागिन जानी जाएगी॥ १॥ नादान एवं नासमझ जीव-स्त्री क्या कर सकती है, यदि पति-प्रभु उसे पसंद ही न करे। ऐसी जीव-स्त्री कितने ही करुणा-प्रलाप करती है लेकिन पति-प्रभु की अनुकंपा के बिना उसका महल प्राप्त नहीं करती। यदि वह अधिकतर भागदौड़ भी करे तो भी भाग्य के बिना उसे कुछ भी प्राप्त नहीं होता। लालच,लोभ एवं अहंकार में मग्न हुई वह माया में ही समाई रहती है। जीव-स्त्री नासमझ ही बनी हुई है और उसे इन बातों से मालिक-प्रभु प्राप्त नहीं होता॥ २॥ चाहे सुहागिन स्त्रियों से जाकर पूछ लो कि उन्होंने किन बातों से अपने पति-प्रभु को पाया है। जो कुछ प्रभु करता है, उसे भला समझ कर स्वीकार करो और अपनी चालाकी व हुक्म चलाना छोड़ दो। उस प्रभु के चरणों में चित लगाना चाहिए, जिसके प्रेम से मोक्ष पदार्थ मिलता है। जो प्रभु कहता है, वही कार्य करो। ऐसी सुगन्धि लगाओ कि अपना तन एवं मन अर्पण कर दो। हे बहन ! सुहागिन स्त्री इस तरह ही कहती है कि इन बातों से ही पति-प्रभु मिलता है॥ ३॥ यदि अहंत्व को दूर कर दिया जाए तो ही पति प्रभु मिलता है, इसके अलावा कोई अन्य चतुराई व्यर्थ है। जब पति-प्रभु अपनी कृपा-दृष्टि करके देखता है तो जीव-स्त्री का वह दिन ही सफल है और वह नौ निधियाँ पा लेती है। हे नानक ! जो जीव-स्त्री अपने पति-प्रभु को प्यारी लगती है, वही सुहागिन है और वह सबमें शोभा प्राप्त करती है। जो प्रभु-प्रेम में रंगी हुई है और सहजावस्था में प्रभु-प्रेम में लीन रहती है, वही सुन्दर, रूपवान, विलक्षण स्वरूप वाली एवं चतुर कहलाती है॥ ४॥ २॥ ४॥

तिलंग महला १ ॥ जैसी मै आवै खसम की बाणी तैसड़ा करी गिआनु वे लालो ॥ पाप की जंञ लै काबलहु धाइआ जोरी मंगै दानु वे लालो ॥ सरमु धरमु दुइ छपि खलोए कूड़ु फिरै परधानु वे लालो ॥ काजीआ बामणा की गल थकी अगदु पड़ै सैतानु वे लालो ॥ मुसलमानीआ पड़हि कतेबा कसट महि करहि खुदाइ वे लालो ॥ जाति सनाती होरि हिदवाणीआ एहि भी लेखै लाइ वे लालो ॥ खून के सोहिले गावीअहि नानक रतु का कुंगू पाइ वे लालो ॥ १ ॥ साहिब के गुण नानकु गावै मास पुरी विचि आखु मसोला ॥ जिनि उपाई रंगि रवाई बैठा वेखै वखि इकेला ॥ सचा सो साहिबु सचु तपावसु सचड़ा निआउ करेगु मसोला ॥ काइआ कपड़ु टुकु टुकु होसी हिदुसतानु समालसी बोला ॥ आवनि अठतरै जानि सतानवै होरु भी उठसी मरद का चेला ॥ सच की बाणी नानकु आखै सचु सुणाइसी सच की बेला ॥ २ ॥ ३ ॥ ५ ॥

हे भाई लालो ! मेरे मालिक-प्रभु की जैसी वाणी मुझे आई है, वैसा ज्ञान मैं तुझे वर्णन करता हूँ। पाप एवं जुल्म की बारात लेकर बाबर काबुल से आया है और जोर-जुल्म से भारत की हकूमत रूपी कन्या का दान माँग रहा है। हे लालो ! शर्म एवं धर्म दोनों ही लुप्त हो गए हैं और झूठ प्रधान बनकर फिर रहा है। काजियों एवं ब्राह्मणों की विवाह करवाने की परंपरा समाप्त हो गई है और

अब शैतान निकाह पढ़ रहा है। हे लालो ! इस अत्याचार व मुसीबत के समय मुसलमान औरतें कुरान शरीफ पढ़ रही हैं और कष्ट में खुदा को याद कर रही हैं। ऊँची एवं निम्न जाति की अन्य हिन्दू औरतों पर भी बड़ा जुल्म हो रहा है। नानक का कथन है कि हे लालो ! इस खूनी विवाह में सैदपुर नगर के अन्दर खून के मंगल गीत गाए जा रहे है अर्थात् हर तरफ विलाप हो रहा है और रक्त का केसर छिड़का जा रहा है॥ १॥ *{सैदपुर का यह जनसंहार बड़ा भयानक एवं दर्दनाक है लेकिन यह भी ठीक है कि सबकुछ परमात्मा की इच्छानुसार हो रहा है।}* इसलिए लाशों से भरी सैदपुर नगरी में नानक परमात्मा का ही गुणगान कर रहा है। हे लालो ! तू भी इस उसूल की बात को कह और याद रख कि जिस परमात्मा ने यह दुनिया पैदा की है और इसे माया के मोह में लगाया है, वह अकेला ही बैठकर इस को देख रहा है। वह परमात्मा सत्य है और उसका इंसाफ भी सत्य है और इस मसले का वह सच्चा न्याय करेगा। शरीर रूपी कपड़ा टुकड़े-टुकड़े हो जाएगा और हिन्दुस्तान मेरे इस वचन को हमेशा याद रखेगा। मुगल संवत ७८ में यहाँ आए हैं और यह संवत ९७ में यहाँ से चले जाएँगे और एक अन्य शूरवीर उठ खड़ा होगा। नानक सत्य की वाणी कह रहा है और सत्य ही सुना रहा है तथा अब यह सत्य बोलने की बेला ही है॥ २॥ ३॥ ५॥

तिलंग महला ४ घरु २ १ओं सतिगुर प्रसादि ॥

सभि आए हुकमि खसमाहु हुकमि सभ वरतनी ॥ सचु साहिबु साचा खेलु सभु हरि धनी ॥ १ ॥ सालाहिहु सचु सभ ऊपरि हरि धनी ॥ जिसु नाही कोइ सरीकु किसु लेखै हउ गनी ॥ रहाउ ॥ पउण पाणी धरती आकासु घर मंदर हरि बनी ॥ विचि वरतै नानक आपि झूठु कहु किआ गनी ॥ २ ॥ १ ॥

सब जीव परमात्मा के हुक्म से ही दुनिया में आए हैं और सारी दुनिया उसके हुक्म में ही कार्यरत है। वह सदैव सत्य है और उसका जगत् रूपी खेल भी सत्य है तथा सारी दुनिया का मालिक ही सबकुछ है॥ १॥ उस सच्चे परमात्मा की स्तुति करो, वह मालिक सबसे ऊपर अर्थात् सर्वोपरि है। जिस (परमात्मा) के बराबर का अन्य कोई नहीं है, मैं किसी गिनती में नहीं हूँ कि उसकी महिमा कर सकूँ॥ रहाउ॥ पवन, पानी, धरती एवं आकाश परमात्मा के घर एवं मन्दिर बने हुए हैं अर्थात् वह इनमें रहता है। हे नानक ! वह स्वयं ही सबमें मौजूद है, फिर मैं क्या झूठा कहूँ ॥ २॥ १॥

तिलंग महला ४ ॥ नित निहफल करम कमाइ बफावै दुरमतीआ ॥ जब आणै वलवंच करि झूठु तब जाणै जगु जितीआ ॥ १ ॥ ऐसा बाजी सैसारु न चेतै हरि नामा ॥ खिन महि बिनसै सभु झूठु मेरे मन धिआइ रामा ॥ रहाउ ॥ सा वेला चिति न आवै जितु आइ कंटकु कालु ग्रसै ॥ तिसु नानक लए छडाइ जिसु किरपा करि हिरदै वसै ॥ २ ॥ २ ॥

दुर्मति वाला इन्सान बड़ा अहंकार करता है और नित्य ही ऐसा कर्म करता रहता है, जिससे कोई फल नहीं मिलता। जब वह झूठ बोलकर एवं छल-कपट करके अपने घर कुछ ले आता है तो वह समझता है कि उसने जग जीत लिया है॥ १॥ यह संसार एक ऐसी बाजी अर्थात् खेल है, जहाँ इन्सान परमात्मा के नाम को याद ही नहीं करता। हे मेरे मन ! राम का ध्यान कर, क्योंकि दृष्टिमान समूचा जगत् झूठ ही है और यह क्षण में ही नाश हो जाता है॥ रहाउ॥ वह समय इन्सान को याद ही नहीं आता, जब दुखदायी काल आकर उसे पकड़ लेता है। हे नानक ! परमात्मा जिस के हृदय में कृपा करके आ बसता है, उसे वह काल से छुड़ा लेता है॥ २॥ २॥

तिलंग महला ५ घरु १ १ओं सतिगुर प्रसादि ॥

खाक नूर करदं आलम दुनीआइ ॥ असमान जिमी दरखत आब पैदाइसि खुदाइ ॥ १ ॥ बंदे चसम दीदं फनाइ ॥ दुनींआ मुरदार खुरदनी गाफल हवाइ ॥ रहाउ ॥ गैबान हैवान हराम कुसतनी मुरदार बखोराइ ॥ दिल कबज कबजा कादरो दोजक सजाइ ॥ २ ॥ वली निआमति बिरादरा दरबार मिलक खानाइ ॥ जब अजराईलु बसतनी तब चि कारे बिदाइ ॥ ३ ॥ हवाल मालूमु करदं पाक अलाह ॥ बुगो नानक अरदासि पेसि दरवेस बंदाह ॥ ४ ॥ १ ॥

यह सारा आलम एवं दुनिया मिट्टी एवं चेतन ज्योति से परमात्मा ने बनाई है। आसमान,जमीन, वृक्ष एवं पानी सब उस खुदा की पैदाइश है॥ १॥ हे मानव! जो कुछ आँखों से दिखाई दे रहा है, वह नाश होने वाला है। यह दुनिया पराया हक खाने वाली है और माया के लालच में फँसकर परमात्मा को भूल गई है॥ रहाउ॥ यह दुनिया भूत-प्रेत एवं हैवान की तरह हराम का माँस खा रही है। माया ने उसके दिल पर कब्जा किया हुआ है, इसलिए मालिक-प्रभु उसे नरक की सजा देता है॥ २॥ जब मौत का फरिश्ता इजराईल इन्सान को पकड़ लेगा तो दुनिया से विदा होते वक्त पिता, नियामतें, भाई, दरबार, जायदाद एवं घर किसी काम नहीं आएँगे॥ ३॥ अल्लाह पाक इन्सान की सब बातों को मालूम कर लेता है। हे नानक! अपनी अरदास दरवेश बंदों के समक्ष किया कर॥ ४॥ १॥

तिलंग घरु २ महला ५ ॥ तुधु बिनु दूजा नाही कोइ ॥ तू करतारु करहि सो होइ ॥ तेरा जोरु तेरी मनि टेक ॥ सदा सदा जपि नानक एक ॥ १ ॥ सभ ऊपरि पारब्रहमु दातारु ॥ तेरी टेक तेरा आधारु ॥ रहाउ ॥ है तूहै तू होवनहार ॥ अगम अगाधि ऊच आपार ॥ जो तुधु सेवहि तिन भउ दुखु नाहि ॥ गुर परसादि नानक गुण गाहि ॥ २ ॥ जो दीसै सो तेरा रूपु ॥ गुण निधान गोविंद अनूप ॥ सिमरि सिमरि सिमरि जन सोइ ॥ नानक करमि परापति होइ ॥ ३ ॥ जिनि जपिआ तिस कउ बलिहार ॥ तिस कै संगि तरै संसार ॥ कहु नानक प्रभ लोचा पूरि ॥ संत जना की बाछउ धूरि ॥ ४ ॥ २ ॥

जगत् में तेरे बिना दूसरा कोई नहीं है। हे करतार! जो तू करता है, वही होता है। मुझ में तेरा ही जोर है और तेरी ही मन में टेक है। हे नानक! सदा-सर्वदा केवल परमात्मा का ही जाप करते रहो॥ १॥ हे परब्रह्म! तू महान् है, सबको देने वाला है और मुझे तेरी ही टेक है और तेरा ही आसरा है॥ रहाउ॥ तू वर्तमान काल में भी है और भविष्य काल में भी तू ही होने वाला है। तू अगम्य, असीम, सर्वोच्च एवं अपार है। जो व्यक्ति तुझे स्मरण करते रहते हैं, उन्हें कोई भय एवं दुख नहीं लगता। हे प्रभु! गुरु की कृपा से नानक तेरे ही गुण गाता है॥ २॥ जो कुछ भी दिखाई देता है, वह तेरा ही रूप है। हे गोविंद! तू गुणों का भण्डार है एवं बड़ा अनूप है। भक्तजन तुझे स्मरण कर-करके तुझ जैसे ही हो जाते हैं। हे नानक! परमात्मा भाग्य से ही प्राप्त होता है॥ ३॥ जिसने परमात्मा का नाम जपा है, मैं उस पर बलिहारी जाता हूँ। उसकी संगति करके संसार भी भवसागर से तर जाता है। नानक का कथन है कि हे प्रभु! मेरी अभिलाषा पूरी करो; मैं तेरे संतजनों की चरण-धूलि ही चाहता हूँ॥ ४॥ २॥

तिलंग महला ५ घरु ३ ॥ मिहरवानु साहिबु मिहरवानु ॥ साहिबु मेरा मिहरवानु ॥ जीअ सगल कउ देइ दानु ॥ रहाउ ॥ तू काहे डोलहि प्राणीआ तुधु राखैगा सिरजणहारु ॥ जिनि पैदाइसि तू कीआ सोई देइ आधारु ॥ १ ॥ जिनि उपाई मेदनी सोई करदा सार ॥ घटि घटि मालकु दिला का सचा

परवदगारु ॥ २ ॥ कुदरति कीम न जाणीऐ वडा वेपरवाहु ॥ करि बंदे तू बंदगी जिचरु घट महि साहु ॥ ३ ॥ तू समरथु अकथु अगोचरु जीउ पिंडु तेरी रासि ॥ रहम तेरी सुखु पाइआ सदा नानक की अरदासि ॥ ४ ॥ ३ ॥

मेरा मालिक बड़ा मेहरबान है। वह सब पर ही मेहरबान है और सब जीवों को दान देता है॥ रहाउ॥ हे प्राणी! तू क्यों घबराता है? जबकि तुझे पैदा करने वाला परमात्मा ही तेरी रक्षा करेगा। जिसने तेरी पैदाइश की है, वही तेरे जीवन का आधार होगा॥ १॥ जिसने यह पृथ्वी उत्पन्न की है, वही देखभाल करता है। प्रत्येक शरीर में दिलों का मालिक परमात्मा मौजूद है और वह सच्चा पालनहार है ॥२॥ वह बड़ा बेपरवाह है और उसकी कुदरत की कीमत जानी नहीं जा सकती। हे मानव! जब तक तेरे शरीर में जीवन की साँसें हैं, तब तक तू मालिक की बंदगी कर॥ ३॥ हे प्रभु! तू सर्वकला सम्पूर्ण है, अकथनीय एवं अगोचर है और यह प्राण एवं शरीर तेरी ही पूंजी है। नानक की यही प्रार्थना है कि हे प्रभु! तेरे रहम से मैंने सदैव ही सुख पाया है॥ ४॥ ३॥

तिलंग महला ५ घरु ३ ॥ करते कुदरती मुसताकु ॥ दीन दुनीआ एक तूही सभ खलक ही ते पाकु ॥ रहाउ ॥ खिन माहि थापि उथापदा आचरज तेरे रूप ॥ कउणु जाणै चलत तेरे अंधिआरे महि दीप ॥ १ ॥ खुदि खसम खलक जहान अलह मिहरवान खुदाइ ॥ दिनसु रैणि जि तुधु अराधे सो किउ दोजकि जाइ ॥ २ ॥ अजराईलु यारु बंदे जिसु तेरा आधारु ॥ गुनह उस के सगल आफू तेरे जन देखहि दीदारु ॥ ३ ॥ दुनीआ चीज फिलहाल सगले सचु सुखु तेरा नाउ ॥ गुर मिलि नानक बूझिआ सदा एकसु गाउ ॥ ४ ॥ ४ ॥

हे जग के रचयिता! तेरी कुदरत को देखकर मैं तेरा मुश्ताक (प्रेमी) बन गया हूँ। एक तू ही दीनदुनिया (लोक-परलोक) का मालिक है और तू ही सारे विश्व से पवित्र पावन है॥ रहाउ॥ तू क्षण में ही बनाने-बिगाड़ने वाला है और तेरे रूप बड़े अद्‌भुत हैं। तेरी लीला को कौन जान सकता है? तू ही अज्ञानता के अन्धेरे में ज्ञान रूपी प्रकाश करने वाला दीपक है॥ १॥ हे मेरे खुदा! तु खुद ही इस दुनिया का मालिक है और सारे जहान का मेहरबान अल्लाह है। जो लोग दिन-रात तुझे याद करते रहते हैं, वह क्यों नरक में जाएँगे॥ २॥ हे अल्लाह! जिसे तेरा आसरा है, मृत्यु का फरिश्ता इजराईल भी उस इन्सान का यार बन जाता है। उसके सारे गुनाह माफ हो जाते हैं, अतः तेरे भक्तजन तेरा ही दीदार करते हैं॥ ३॥ दुनिया की सब चीजें थोड़े समय के लिए ही हैं और एक तेरा नाम सच्चा सुख देने वाला है। हे नानक! गुरु को मिलकर मैंने सत्य को समझ लिया है और अब मैं एक परमात्मा के ही गुण गाता रहता हूँ॥ ४॥ ४॥

तिलंग महला ५ ॥ मीरां दानां दिल सोच ॥ मुहबते मनि तनि बसै सचु साह बंदी मोच ॥ १ ॥ रहाउ ॥ दीदने दीदार साहिब कछु नही इस का मोलु ॥ पाक परवदगार तू खुदि खसमु वडा अतोलु ॥ १ ॥ दस्तगीरी देहि दिलावर तूही तूही एक ॥ करतार कुदरति करण खालक नानक तेरी टेक ॥ २ ॥ ५ ॥

हे भाई! जगत् के बादशाह एवं चतुर परमात्मा को अपने दिल में याद कर, बन्धनों से मुक्त करने वाला वह सच्चा शाह मुहब्बत से ही मन एवं तन में बसता है ॥ १॥ रहाउ॥ उस मालिक के दर्शन-दीदार का कोई मोल नहीं। हे खुदा! तू पवित्र परवरदिगार है और खुद ही हम सबका

बड़ा एवं अतुलनीय मालिक है॥ १॥ हे परमात्मा! मुझे अपनी सहायता दे, क्योंकि एक तू ही तू ही मेरा मददगार है। हे करतार! तू ही कुदरत बनाने वाला एवं सारी सृष्टि का मालिक है और नानक को तो तेरी ही टेक है॥ २॥ ५॥

तिलंग महला १ घरु २ १ओं सतिगुर प्रसादि ॥

जिनि कीआ तिनि देखिआ किआ कहीऐ रे भाई ॥ आपे जाणै करे आपि जिनि वाड़ी है लाई ॥ १ ॥ राइसा पिआरे का राइसा जितु सदा सुखु होई ॥ रहाउ ॥ जिनि रंगि कंतु न राविआ सा पछो रे ताणी ॥ हाथ पछोड़ै सिरु धुणै जब रैणि विहाणी ॥ २ ॥ पछोतावा ना मिलै जब चूकैगी सारी ॥ ता फिरि पिआरा रावीऐ जब आवैगी वारी ॥ ३ ॥ कंतु लीआ सोहागणी मै ते वधवी एह ॥ से गुण मुझै न आवनी कै जी दोसु धरेह ॥ ४ ॥ जिनी सखी सहु राविआ तिन पूछउगी जाए ॥ पाइ लगउ बेनती करउ लेउगी पंथु बताए ॥ ५ ॥ हुकमु पछाणै नानका भउ चंदनु लावै ॥ गुण कामण कामणि करै तउ पिआरे कउ पावै ॥ ६ ॥ जो दिलि मिलिआ सु मिलि रहिआ मिलिआ कहीऐ रे सोई ॥ जे बहुतेरा लोचीऐ बाती मेलु न होई ॥ ७ ॥ धातु मिलै फुनि धातु कउ लिव लिवै कउ धावै ॥ गुर परसादी जाणीऐ तउ अनभउ पावै ॥ ८ ॥ पाना वाड़ी होइ घरि खरु सार न जाणै ॥ रसीआ होवै मुसक का तब फूलु पछाणै ॥ ९ ॥ अपिउ पीवै जो नानका भ्रमु भ्रमि समावै ॥ सहजे सहजे मिलि रहै अमरा पदु पावै ॥ १० ॥ १ ॥

हे भाई! जिस ईश्वर ने यह जगत् उत्पन्न किया है, वही इसकी देखभाल करता है। इस बारे क्या कहा जाए? जिस प्रभु रूपी बागबां ने यह जगत् रूपी वाटिका लगाई है, वह स्वयं ही इस बारे जानता है और स्वयं ही इसकी देखरेख करता है॥ १॥ उस प्यारे प्रभु का गुणगान करो, जिससे सदा सुख प्राप्त होता है॥ रहाउ॥ जिन जीव-स्त्रियों ने प्रेम से पति-प्रभु को याद नहीं किया, वे अन्त में पछताती रहती हैं। जब उनकी जीवन रूपी रात्रि बीत जाती है तो वे अपने हाथ मलती हैं और अपना सिर पटकती हैं॥ २॥ जब उनका सारा जीवन ही खत्म हो जाएगा तो फिर पछताने से कुछ भी हासिल नहीं होगा। उस प्यारे प्रभु को वे फिर तब ही याद करेंगी, जब उनकी जीवन की बारी आएगी॥ ३॥ हे सखी! जिस सुहागिन जीव-स्त्री ने अपना पति-प्रभु पा लिया है, वह मुझ से सर्वोत्तम है। उस जैसे शुभ-गुण मुझ में नहीं हैं, फिर मैं किसे दोष दूँ॥ ४॥ जिन सखियों ने पति-प्रभु से रमण किया है, मैं उन से जाकर पूछूँगी। मैं उनके चरणों में पड़ूँगी उनसे विनती करूँगी और उनसे पति-प्रभु के मिलन का मार्ग पूछ लूँगी॥ ५॥ हे नानक! जो जीव-स्त्री प्रभु का हुक्म पहचान लेती है, वह उसका भय रूपी चंदन अपने शरीर को लगा लेती है। जब वह शुभ गुण ग्रहण करने का जादू टोना करती है तो वह अपने प्यारे प्रभु को पा लेती है॥ ६॥ जो दिल प्रभु से मिला है, वह सदा ही उससे मिला रहता है और उसे वास्तव में प्रभु से मिला कहा जाता है। यदि कोई व्यक्ति अधिकतर लालसा करता है तो सिर्फ बातों से उसका प्रभु से मेल नहीं होता॥ ७॥ जैसे धातु पुनः धातु में ही मिल जाती है, वैसे ही मनुष्य का प्रेम प्रभु के प्रेम से मिलने के लिए दौड़ता है। गुरु की कृपा से जब मनुष्य इस बात को जान लेता है तो वह प्रभु को पा लेता है॥ ८॥ यदि घर में पान की बगीची लगी हुई तो भी गधा उसकी कद्र को नही जानता। यदि इन्सान सुगन्धि का रसिया हो तो वह फूल की कद्र को पहचान लेता है॥ ९॥ हे नानक! जो व्यक्ति नाम रूपी अमृत पीता है, उसके मन का भ्रम समाप्त हो जाता है। वह सहज ही प्रभु से मिला रहता है और अमर पदवी पा लेता है॥ १०॥ १॥

तिलंग महला ४ ॥ हरि कीआ कथा कहाणीआ गुरि मीति सुणाईआ ॥ बलिहारी गुर आपणे गुर कउ बलि जाईआ ॥ १ ॥ आइ मिलु गुरसिख आइ मिलु तू मेरे गुरू के पिआरे ॥ रहाउ ॥ हरि के गुण हरि भावदे से गुरू ते पाए ॥ जिन गुर का भाणा मंनिआ तिन घुमि घुमि जाए ॥ २ ॥ जिन सतिगुरु पिआरा देखिआ तिन कउ हउ वारी ॥ जिन गुर की कीती चाकरी तिन सद बलिहारी ॥ ३ ॥ हरि हरि तेरा नामु है दुख मेटणहारा ॥ गुर सेवा ते पाईऐ गुरमुखि निसतारा ॥ ४ ॥ जो हरि नामु धिआइदे ते जन परवाना ॥ तिन विटहु नानकु वारिआ सदा सदा कुरबाना ॥ ५ ॥ सा हरि तेरी उसतति है जो हरि प्रभ भावै ॥ जो गुरमुखि पिआरा सेवदे तिन हरि फलु पावै ॥ ६ ॥ जिना हरि सेती पिरहड़ी तिना जीअ प्रभ नाले ॥ ओइ जपि जपि पिआरा जीवदे हरि नामु समाले ॥ ७ ॥ जिन गुरमुखि पिआरा सेविआ तिन कउ घुमि जाइआ ॥ ओइ आपि छुटे परवार सिउ सभु जगतु छडाइआ ॥ ८ ॥ गुरि पिआरै हरि सेविआ गुरु धंनु गुरु धंनो ॥ गुरि हरि मारगु दसिआ गुर पुंनु वड पुंनो ॥ ९ ॥ जो गुरसिख गुरु सेवदे से पुंन पराणी ॥ जनु नानकु तिन कउ वारिआ सदा सदा कुरबाणी ॥ १० ॥ गुरमुखि सखी सहेलीआ से आपि हरि भाईआ ॥ हरि दरगह पैनाईआ हरि आपि गलि लाईआ ॥ ११ ॥ जो गुरमुखि नामु धिआइदे तिन दरसनु दीजै ॥ हम तिन के चरण पखालदे धूड़ि घोलि घोलि पीजै ॥ १२ ॥ पान सुपारी खातीआ मुखि बीड़ीआ लाईआ ॥ हरि हरि कदे न चेतिओ जमि पकड़ि चलाईआ ॥ १३ ॥ जिन हरि नामा हरि चेतिआ हिरदै उरि धारे ॥ तिन जमु नेड़ि न आवई गुरसिख गुर पिआरे ॥ १४ ॥ हरि का नामु निधानु है कोई गुरमुखि जाणै ॥ नानक जिन सतिगुरु भेटिआ रंगि रलीआ माणै ॥ १५ ॥ सतिगुरु दाता आखीऐ तुसि करे पसाओ ॥ हउ गुर विटहु सद वारिआ जिनि दितड़ा नाओ ॥ १६ ॥ सो धंनु गुरू साबासि है हरि देइ सनेहा ॥ हउ वेखि वेखि गुरू विगसिआ गुर सतिगुर देहा ॥ १७ ॥ गुर रसना अंम्रितु बोलदी हरि नामि सुहावी ॥ जिन सुणि सिखा गुरु मंनिआ तिना भुख सभ जावी ॥ १८ ॥ हरि का मारगु आखीऐ कहु कितु बिधि जाईऐ ॥ हरि हरि तेरा नामु है हरि खरचु लै जाईऐ ॥ १९ ॥ जिन गुरमुखि हरि आराधिआ से साह वड दाणे ॥ हउ सतिगुर कउ सद वारिआ गुर बचनि समाणे ॥ २० ॥ तू ठाकुरु तू साहिबो तूहै मेरा मीरा ॥ तुधु भावै तेरी बंदगी तू गुणी गहीरा ॥ २१ ॥ आपे हरि इक रंगु है आपे बहु रंगी ॥ जो तिसु भावै नानका साई गल चंगी ॥ २२ ॥ २ ॥

हरि की कथा-कहानियाँ मुझे मित्र गुरु ने सुनाई हैं। मैं अपने गुरु पर बलिहारी हूँ और उस पर ही कुर्बान जाता हूँ॥ १॥ हे गुरु के शिष्य ! मुझे आकर मिल। हे मेरे गुरु के प्यारे ! तू मुझे आकर मिल॥ रहाउ॥ हरि के गुण हरि को बहुत अच्छे लगते हैं और वे गुण मैंने गुरु से पाए हैं। जिन्होंने गुरु की रज़ा को खुशी-खुशी माना है, मैं उन पर हमेशा कुर्बान जाता हूँ॥ २॥ जिन्होंने प्यारे सतिगुरु के दर्शन किए हैं, मैं उन पर बार-बार कुर्बान जाता हूँ। जिन्होंने गुरु की चाकरी की है, उन पर मैं सदैव बलिहारी हूँ॥ ३॥ हे प्रभु ! तेरा नाम सब दुख मिटाने वाला है। यह (नाम) गुरु की सेवा करने से पाया जाता है तथा गुरुमुख बनने से आदमी का भवसागर से उद्धार हो जाता है॥ ४॥ जो व्यक्ति हरि-नाम का ध्यान करते हैं वे प्रभु को परवान हो जाते हैं। नानक उन पर न्यौछावर है और हमेशा ही कुर्बान जाता है॥ ५॥ हे हरि ! वही तेरी उस्तति है, जो तुझे अच्छी लगती है। जो गुरुमुख प्यारे प्रभु की सेवा करते हैं, वे फल पा लेते हैं॥ ६॥ जिन लोगों का हरि से प्रेम हो जाता है उनके दिल प्रभु से ही मिले रहते हैं। वे अपने प्यारे प्रभु को जप-जप कर ही जिंदा रहते हैं और हरि का नाम ही याद करते रहते हैं॥ ७॥ जिन गुरुमुखों ने प्यारे प्रभु का

सिमरन किया है, मैं उन पर बार-बार कुर्बान जाता हूँ। वे अपने परिवार सहित स्वयं छूट गए हैं और उन्होंने सारे जगत् को भी छुड़ा लिया है॥ ८॥ मेरे प्यारे गुरु ने हरि का सिमरन किया है, इसलिए मेरा गुरु धन्य-धन्य है। गुरु ने मुझे हरि का मार्ग बताया है, गुरु ने मुझ पर बड़ा उपकार किया है॥ ९॥ जो गुरु के शिष्य अपने गुरु की सेवा करते हैं, वे उत्तम प्राणी हैं। नानक उन पर ही न्यौछावर है और सदा उन पर कुर्बान जाता है॥ १०॥ गुरुमुख सखी-सहेलियाँ आप हरि को अच्छी लगी हैं। हरि के दरबार में उन्हें शोभा का वस्त्र पहनाया है और हरि ने स्वयं ही उन्हें अपने गले से लगाया है॥ ११॥ हे प्रभु ! जो गुरुमुख तेरे नाम का ध्यान करते हैं, मुझे उनके दर्शन दीजिए। मैं उनके चरण धोता हूँ और उनकी चरण-धूलि घोल-घोलकर पीता हूँ॥ १२॥ जो जीव-स्त्रियाँ पान-सुपारी खाती हैं और मुँह पर लिपस्टिक लगाती हैं, और हरि को कभी याद नहीं करती तो यम उन्हें पकड़कर आगे लगा लेता है॥ १३॥ जिन्होंने हरि को याद किया है और हरि-नाम को अपने हृदय में बसाया है, यम उनके निकट नहीं आता। गुरु के शिष्य गुरु के प्यारे होते हैं॥ १४॥ हरि का नाम सुखों का भण्डार है लेकिन कोई गुरुमुख ही इस भेद को जानता है। हे नानक ! जिन्हें सतिगुरु मिल गया है, वे खुशियाँ मनाते हैं॥ १५॥ सतिगुरु को दाता कहा जाता है, जो खुश होकर नाम-देन की कृपा करता है। मैं गुरु पर सदा ही कुर्बान जाता हूँ, जिसने मुझे परमात्मा का नाम दिया है॥१६॥ वह गुरु धन्य है, मेरी उसे शाबाश है, जो मुझे हरि का संदेश देता है। मैं गुरु को देख-देखकर खुश हो गया हूँ और उस गुरु का रूप बहुत सुन्दर है॥ १७॥ गुरु की रसना अमृत रूपी नाम बोलती है और वह हरि नाम बोलती हुई बड़ी सुन्दर लगती है। जिन्होंने गुरु की शिक्षा को सुनकर उस पर भरोसा किया है, उनकी सारी भूख दूर हो गई है॥ १८॥ मुझे बताओ, उस मार्ग पर किस विधि द्वारा जाया जाता है, जिसे हरि का मार्ग कहा जाता है। हे हरि ! जो तेरा हरि-नाम है, उस नाम को यात्रा खर्च के तौर पर अपने साथ ले जाना चाहिए॥ १९॥ जिन गुरुमुखों ने हरि की आराधना की है, वे बड़े शाह एवं चतुर हैं। मैं सतिगुरु पर सदा ही कुर्बान जाता हूँ और गुरु के वचनों में लीन रहता हूँ॥ २०॥ हे हरि ! तू ही मेरा स्वामी है, तू ही मेरा मालिक है, तू ही मेरा बादशाह है। यदि तुझे अच्छा लगे तो ही तेरी बंदगी कर सकता हूँ। तू गुणों का गहरा सागर है॥ २१॥ हरि स्वयं ही एक रंग वाला है और स्वयं ही बहुरंगी है। हे नानक ! जो उस प्रभु को अच्छा लगता है, मेरे लिए वही बात अच्छी है॥ २२॥ २॥

तिलंग महला ९ काफी

१ओं सतिगुर प्रसादि ॥ चेतना है तउ चेत लै निसि दिनि मै प्रानी ॥ छिनु छिनु अउध बिहातु है फूटै घट जिउ पानी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ हरि गुन काहि न गावही मूरख अगिआना ॥ झूठै लालचि लागि कै नहि मरनु पछाना ॥ १ ॥ अजहू कछु बिगरिओ नही जो प्रभ गुन गावै ॥ कहु नानक तिह भजन ते निरभै पदु पावै ॥ २ ॥ १ ॥

हे प्राणी ! यदि तूने परमेश्वर को याद करना है तो हर पल याद कर ले। जैसे फूटे हुए घड़े में से पानी निकलता रहता है, वैसे ही क्षण-क्षण तेरी जीवन-अवधि बीतती जा रही है॥ १॥ रहाउ॥ हे मूर्ख अज्ञानी ! तू ईश्वर के गुण क्यों नहीं गाता ? झूठे लालच में लगकर तूने अपनी मृत्यु को भी नहीं पहचाना॥ १॥ अभी भी कुछ बिगड़ा नहीं है, जो प्रभु का गुणगान कर लेगा। हे नानक ! उस प्रभु का भजन करने से जीव निर्भय पद पा लेता है॥ २॥ १॥

तिलंग महला ६ ॥ जाग लेहु रे मना जाग लेहु कहा गाफल सोइआ ॥ जो तनु उपजिआ संग ही सो भी संगि न होइआ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ मात पिता सुत बंध जन हितु जा सिउ कीना ॥ जीउ छूटिओ जब देह ते डारि अगनि मै दीना ॥ १ ॥ जीवत लउ बिउहारु है जग कउ तुम जानउ ॥ नानक हरि गुन गाइ लै सभ सुफन समानउ ॥ २ ॥ २ ॥

हे मेरे मन ! अज्ञानता की नींद से जाग ले। तू क्यों गाफिल होकर सोया हुआ है। जो तन जीव के साथ ही उत्पन्न हुआ है, वह कभी साथ नहीं गया॥ १॥ रहाउ॥ जिस माता-पिता, पुत्रों एवं संबंधियों के साथ तूने बहुत स्नेह किया था, जब तेरी देहि से प्राण ही छूट गए तो उन्होंने तेरी देहि को अग्नि में डाल दिया है॥ १॥ इस जगत् को तुम यूं जानो कि इसका व्यवहार इन्सान के जीवन तक ही रहता है। हे नानक ! हरि का गुणगान कर लो, क्योंकि यह सबकुछ स्वप्न के समान ही है॥ २॥ २॥

तिलंग महला ६ ॥ हरि जसु रे मना गाइ लै जो संगी है तेरो ॥ अउसरु बीतिओ जातु है कहिओ मान लै मेरो ॥ १ ॥ रहाउ ॥ संपति रथ धन राज सिउ अति नेहु लगाइओ ॥ काल फास जब गलि परी सभ भइओ पराइओ ॥ १ ॥ जानि बूझ कै बावरे तै काजु बिगारिओ ॥ पाप करत सुकचिओ नही नह गरबु निवारिओ ॥ २ ॥ जिह बिधि गुर उपदेसिआ सो सुनु रे भाई ॥ नानक कहत पुकारि कै गहु प्रभ सरनाई ॥ ३ ॥ ३ ॥

हे मेरे मन ! हरि का यश गा ले, क्योंकि यही तेरा सच्चा साथी है। मेरा कहना मान ले, चूंकि यह जीवन-अवसर बीतता जा रहा है॥ १॥ रहाउ॥ संपति, रथ, धन एवं राज के साथ तूने बहुत प्यार लगाया हुआ है। लेकिन जब काल की फाँसी गले में पड़ेगी तो सबकुछ पराया हो जाएगा ॥१॥ हे बावले ! तूने जानबूझ कर अपना काम आप ही बिगाड़ लिया है। पाप करते वक्त कभी संकोच नहीं किया और न ही तूने अपना अहंकार छोड़ा है॥ २॥ हे मेरे भाई ! जैसे गुरु ने मुझे उपदेश दिया है, वह भी सुन ले। नानक तुझे पुकार कर कहता है कि प्रभु की शरण पकड़ लो॥ ३॥ ३॥

तिलंग बाणी भगता की कबीर जी ੧ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

बेद कतेब इफतरा भाई दिल का फिकरु न जाइ ॥ टुकु दमु करारी जउ करहु हाजिर हजूरि खुदाइ ॥ १ ॥ बंदे खोजु दिल हर रोज ना फिरु परेसानी माहि ॥ इह जु दुनीआ सिहरु मेला दसतगीरी नाहि ॥ १ ॥ रहाउ ॥ दरोगु पड़ि पड़ि खुसी होइ बेखबर बादु बकाहि ॥ हकु सचु खालकु खलक मिआने सिआम मूरति नाहि ॥ २ ॥ असमान म्यिाने लहंग दरीआ गुसल करदन बूद ॥ करि फकरु दाइम लाइ चसमे जह तहा मउजूदु ॥ ३ ॥ अलाह पाकं पाक है सक करउ जे दूसर होइ ॥ कबीर करमु करीम का उहु करै जानै सोइ ॥ ४ ॥ १ ॥

हे जिज्ञासु ! वेद-(ऋगवेद, यजुर्वेद, सामवेद, अथर्वेद) तथा कतेब (तौरेत, जंबूर, बाईबल एवं कुरान) का ज्ञान पढ़ने से भी दिल का फिक्र दूर नहीं होता। यदि एक पल भर के लिए अपने चंचल मन को वश कर लोगे तो खुदा तुम्हारे सामने प्रत्यक्ष दिखाई देगा॥ १॥ हे मनुष्य ! हर

रोज खुदा को अपने दिल में ही खोज और परेशानी में मत भटकते रहो। यह जो दुनिया है, यह खुदा का बनाया हुआ एक जादू का मेला है, इसने मदद नहीं करनी॥ १॥ रहाउ॥ लोग झूठा ज्ञान पढ़-पढ़कर बड़े खुश होते हैं और बेखबर होने के कारण वाद-विवाद करते रहते हैं। सच्चा परमात्मा अपनी बनाई हुई दुनिया में ही बसता है और वह श्याम मूर्ति नहीं है॥ २॥ आसमान में नाम रूपी दरिया बहता है, तुझे उस में स्नान करना चाहिए। तू सदा ही फकीरी अर्थात् खुदा की बंदगी कर। ज्ञान रूपी चश्मा लगाकर देख, अल्लाह तुझे हर जगह मौजूद नजर आएगा॥ ३॥ अल्लाह पाक-पवित्र है। इस बात में शक तो ही करो, यदि उसके अलावा कोई दूसरा हो। हे कबीर! यह सब उस करीम का ही कर्म है, जो उसे ठीक लगता है, वही करता है॥ ४॥ १॥

नामदेव जी ॥ मै अंधुले की टेक तेरा नामु खुंदकारा ॥ मै गरीब मै मसकीन तेरा नामु है अधारा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ करीमां रहीमां अलाह तू गनीं ॥ हाजरा हजूरि दरि पेसि तूं मनीं ॥ १ ॥ दरीआउ तू दिहंद तू बिसीआर तू धनी ॥ देहि लेहि एकु तूं दिगर को नही ॥ २ ॥ तूं दानां तूं बीनां मै बीचारु किआ करी ॥ नामे चे सुआमी बखसंद तूं हरी ॥ ३ ॥ १ ॥ २ ॥

हे मालिक! तेरा नाम ही मुझ अंधे (ज्ञानहीन) को लकड़ी के समान सहारा है। मैं गरीब एवं मसकीन हूँ और तेरा नाम ही मेरा आसरा है॥ १॥ रहाउ॥ हे करीम, रहीम, अल्लाह! तू ही धनवान है। तू ही जीव के सामने साक्षात् है। तू हर समय मेरे अन्दर एवं मेरे सामने रहता है॥ १॥ तू दया का दरिया है, तू ही दाता है, तू ही बेअंत है और तू ही धनी है। एक तू ही जीवों को सबकुछ देता और लेता है, तेरे सिवा अन्य कोई नहीं॥ २॥ तू चतुर है और तू सब को देखने वाला है। मैं तेरे गुणों का क्या विचार करूँ? हे नामदेव के स्वामी! तू सब पर अपनी कृपा करने वाला है॥ ३॥ १॥ २॥

हले यारां हले यारां खुसिखबरी ॥ बलि बलि जांउ हउ बलि बलि जांउ ॥ नीकी तेरी बिगारी आले तेरा नाउ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ कुजा आमद कुजा रफती कुजा मे रवी ॥ द्वारिका नगरी रासि बुगोई ॥ १ ॥ खूबु तेरी पगरी मीठे तेरे बोल ॥ द्वारिका नगरी काहे के मगोल ॥ २ ॥ चंदीं हजार आलम एकल खानां ॥ हम चिनी पातिसाह सांवले बरनां ॥ ३ ॥ असपति गजपति नरह नरिंद ॥ नामे के स्वामी मीर मुकंद ॥ ४ ॥ २ ॥ ३ ॥

हे मेरे मित्र! हे मेरे यार खुशखबरी सुनो! (हे प्रभु!) तुझ पर बार-बार बलिहारी जाता हूँ। मुझे तेरी बेगार बड़ी अच्छी लगती है और तेरा नाम बड़ा प्यारा लगता है॥ १॥ रहाउ॥ यह द्वारिका नगरी है, यहाँ सत्य ही बोलना। तू कहाँ से आया है, तू कहाँ गया था और तूने अब कहाँ जाना है ॥ १॥ तेरी पगड़ी बहुत सुन्दर है और तेरे बोल बड़े मीठे हैं। द्वारिका नगरी में कोई मुगल कैसे हो सकता है॥ २॥ ब्रह्माण्ड के हजारों भवनों का सिर्फ एक तू ही सुलतान है। हमने तुझे साँवले रंग के बादशाह के रूप में ही पहचान लिया है अर्थात् तू ही कृष्ण है॥ ३॥ तू ही अश्वपति सूर्यदेव है, तू ही गजपति इन्द्रदेव है, तू ही नरों का नरेश ब्रह्मा है। हे नामदेव के स्वामी! तू मीर मुकुन्द है॥ ४॥ २॥ ३॥

१ओं सति नामु करता पुरखु निरभउ निरवैरु अकाल मूरति अजूनी सैभं गुर प्रसादि ॥

वह अद्वैत ईश्वर (ओंकारस्वरूप) केवल एक है, नाम उसका सत्य है। वह आदिपुरुष सृष्टि को रचने वाला है, सब कुछ करने में परिपूर्ण (शक्तिवान) है। उसे किसी प्रकार का कोई भय नहीं, उसका किसी से कोई वैर नहीं, सब पर समदृष्टि होने के कारण वह प्रेमस्वरूप है। वह कालातीत ब्रह्म मूर्ति सदा अमर है, अतः जन्म-मरण से रहित है, वह स्वजन्मा है, जिसकी लब्धि गुरु की कृपा से होती है।

रागु सूही महला १ चउपदे घरु १

भांडा धोइ बैसि धूपु देवहु तउ दूधै कउ जावहु ॥ दूधु करम फुनि सुरति समाइणु होइ निरास जमावहु ॥ १ ॥ जपहु त एको नामा ॥ अवरि निराफल कामा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ इहु मनु ईटी हाथि करहु फुनि नेत्रउ नीद न आवै ॥ रसना नामु जपहु तब मथीऐ इन बिधि अंम्रितु पावहु ॥ २ ॥ मनु संपटु जितु सत सरि नावणु भावन पाती त्रिपति करे ॥ पूजा प्राण सेवकु जे सेवे इन्ह बिधि साहिबु रवतु रहै ॥ ३ ॥ कहदे कहहि कहे कहि जावहि तुम सरि अवरु न कोई ॥ भगति हीणु नानकु जनु जंपै हउ सालाही सचा सोई ॥ ४ ॥ १ ॥

पहले अपने हृदय रूपी बर्तन को विकारों की मैल से शुद्ध करो। फिर बैठकर हृदय रूपी बर्तन को धूप दो अर्थात् मन को स्थिर करके हृदय रूपी मटकी में शुभ गुण बसाओ और फिर दूध लेने के लिए जाओ अर्थात् कर्म करो। कर्म ही दूध है, जिसे मंथन करना है। फिर इस दूध को सुरति की जाग लगाओ अर्थात् कर्म करते समय अपनी वृत्ति परमात्मा में लगाकर रखो। निष्काम भावना से दूध को जमा दो अर्थात् कर्म के फल की इच्छा मत रखो॥ १॥ केवल परमात्मा का नाम ही जपो, अन्य सारे कर्म निष्फल हैं॥ १॥ रहाउ॥ यह चंचल मन वश में करना ही हाथों में रस्सी की गोटियाँ पकड़ना है। अज्ञान रूप नींद का न आना ही रस्सी है। रसना से भगवान का नाम जपते रहो, तभी कर्म रूपी दूध का मंथन होगा। इस विधि से नाम रूपी अमृत पा लो॥ २॥ आदमी को चाहिए कि वह अपने मन को संपुट अर्थात् परमात्मा का निवास बनाए। वह सत्य रूपी सरोवर में अपने मन को स्नान कराए और भगवान को अपनी श्रद्धा रूपी फूलों की पत्तियाँ भेंट करके उसे तृप्त करे। यदि वह सेवक बनकर अपने प्राणों की पूजा अर्पित करके उसकी सेवा करे तो इस विधि द्वारा उसका मन मालिक-प्रभु में लीन रहेगा॥ ३॥ हे ईश्वर! कहने वाले तेरे बारे सिर्फ बातें ही करते रहते हैं और वे बातें कर-करके दुनिया से जा रहे हैं लेकिन तुम्हारे जैसा अन्य कोई नहीं। भक्तिहीन नानक विनती करता है कि मैं उस सच्चे मालिक की हमेशा ही स्तुति करता रहता हूँ॥ ४॥ १॥

सूही महला १ घरु २ ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

अंतरि वसै न बाहरि जाइ ॥ अंम्रितु छोडि काहे बिखु खाइ ॥ १ ॥ ऐसा गिआनु जपहु मन मेरे ॥ होवहु चाकर साचे केरे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ गिआनु धिआनु सभु कोई रवै ॥ बांधनि बांधिआ सभु जगु भवै ॥ २ ॥ सेवा करे सु चाकरु होइ ॥ जलि थलि महीअलि रवि रहिआ सोइ ॥ ३ ॥ हम नही चंगे बुरा नही कोइ ॥ प्रणवति नानकु तारे सोइ ॥ ४ ॥ १ ॥ २ ॥

हे जीव ! परमात्मा तो तेरे हृदय में ही बसता है, तू उसे ढूँढने के लिए बाहर मत जा। तू नाम रूपी अमृत को छोड़कर माया रूपी विष क्यों खा रहा है॥ १॥ हे मेरे मन ! ऐसा ज्ञान जपो कि उस सच्चे मालिक के चाकर बन जाओ॥ १॥ रहाउ॥ हर कोई ज्ञान-ध्यान की सिर्फ बातें ही करता है और सारा जगत् ही माया के बन्धनों में बँधा हुआ भटक रहा है॥ २॥ जो परमात्मा की सेवा करता है, वह उसका चाकर बन जाता है। समुद्र, पृथ्वी एवं गगन में वही बसा हुआ है॥ ३॥ सच तो यह है कि न हम अच्छे हैं और न ही कोई बुरा है। नानक प्रार्थना करता है कि एक परमात्मा ही जीवों को संसार के बन्धनों से मुक्त करवाता है॥ ४॥ १॥ २॥

सूही महला १ घरु ६ ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

उजलु कैहा चिलकणा घोटिम कालड़ी मसु ॥ धोतिआ जूठि न उतरै जे सउ धोवा तिसु ॥ १ ॥ सजण सेई नालि मै चलदिआ नालि चलंन्हि ॥ जिथै लेखा मंगीऐ तिथै खड़े दिसंनि ॥ १ ॥ रहाउ ॥ कोठे मंडप माड़ीआ पासहु चितवीआहा ॥ ढठीआ कंमि न आवन्ही विचहु सखणीआहा ॥ २ ॥ बगा बगे कपड़े तीरथ मंझि वसंन्हि ॥ घुटि घुटि जीआ खावणे बगे ना कहीअन्हि ॥ ३ ॥ सिंमल रुखु सरीरु मै मैजन देखि भुलंन्हि ॥ से फल कंमि न आवन्ही ते गुण मै तनि हंन्हि ॥ ४ ॥ अंधुलै भारु उठाइआ डूगर वाट बहुतु ॥ अखी लोड़ी ना लहा हउ चड़ि लंघा कितु ॥ ५ ॥ चाकरीआ चंगिआईआ अवर सिआणप कितु ॥ नानक नामु समालि तूं बधा छुटहि जितु ॥ ६ ॥ १ ॥ ३ ॥

{इतिहास साक्षी है कि गुरु नानक देव जी (पहली उदासी के समय) तुलंभा जिला मुलतान (पाकिस्तान) में एक प्रसिद्ध सज्जन ठग से मिले थे। जिसने हिन्दुओं एवं मुसलमानों के ठहरने के लिए घर में धर्मशाला बनाई हुई थी लेकिन रात को वह यात्रियों को लूटकर मार डालता था। गुरु जी ने यहाँ आकर सज्जन ठग को उपदेश देते हुए यह शब्द उच्चरित किया था।}

कांस्य की धातु बड़ी उज्ज्वल व चमकीली होती है लेकिन घिसाने से इसकी काली स्याही कालिख नजर आ जाती है। यदि सौ बार भी इसे धोया जाए तो भी इसकी जूठन दूर नहीं होती॥ १॥ *{गुरु नानक देव जी सज्जन ठग को 'सज्जन' नाम का सही अर्थ बताते हुए उपदेश देते हैं।}*

सज्जन वही है, जो मेरे साथ रहे (अर्थात् सुख-दुख में साथ निभाए) और यहाँ (जगत) से चलते समय मेरे साथ जाए। जहाँ कर्मों का लेखा माँगा जाता है, वहाँ मेरे साथ खड़ा दिखाई दे अर्थात् मददगार बन जाए॥ १॥ रहाउ॥ घर, मन्दिर एवं चारों तरफ से चित्रकारी किए हुए महल हों पर ये भीतर से खोखले होते हैं और खंडहर हो जाने पर ये किसी काम नहीं आते॥ २॥ सफेद पंखों वाले बगुले (सफेदपोश) तीर्थ स्थानों पर रहते हैं। लेकिन वे जीवों को गले से घोट-घोट कर खा जाते हैं इसलिए वे सफेद अर्थात् अच्छे नहीं कहे जा सकते॥ ३॥ मेरा शरीर सेमल के पेड़ जैसा है। जैसे सेमल के फलों को देखकर पक्षी धोखा खा जाते हैं, वैसे ही मुझे देखकर आदमी भूल कर जाते हैं। जैसे सेमल के फल तोतों के काम नहीं आते, वैसे लक्षण (गुण) मेरे तन में

हैं॥ ४॥ मुझ अन्धे ने पापों का भार अपने सिर पर उठाया हुआ है और यह जीवन रूपी पहाड़ी मार्ग बहुत कठिन है। मैं अपनी अन्धी आँखों से मार्ग ढूँढना चाहता हूँ पर मुझे मार्ग मिलता नहीं। मैं पहाड़ पर चढ़कर कैसे पार हो सकता हूँ॥ ५॥ परमात्मा के नाम के सिवा अन्य चाकरियाँ, भलाइयाँ एवं चतुराइयाँ किस काम की हैं? हे नानक! तू परमात्मा के नाम का सिमरन कर, जिससे तू बन्धनों से छूट जाएगा॥ ६॥ १॥ ३॥

सूही महला १ ॥ जप तप का बंधु बेड़ुला जितु लंघहि वहेला ॥ ना सरवरु ना ऊछलै ऐसा पंथु सुहेला ॥ १ ॥ तेरा एको नामु मंजीठड़ा रता मेरा चोला सद रंग ढोला ॥ १ ॥ रहाउ ॥ साजन चले पिआरिआ किउ मेला होई ॥ जे गुण होवहि गंठड़ीऐ मेलेगा सोई ॥ २ ॥ मिलिआ होइ न वीछुड़ै जे मिलिआ होई ॥ आवा गउणु निवारिआ है साचा सोई ॥ ३ ॥ हउमै मारि निवारिआ सीता है चोला ॥ गुर बचनी फलु पाइआ सह के अंम्रित बोला ॥ ४ ॥ नानकु कहै सहेलीहो सहु खरा पिआरा ॥ हम सह केरीआ दासीआ साचा खसमु हमारा ॥ ५ ॥ २ ॥ ४ ॥

हे जीव! जप-तप का सुन्दर बेड़ा बाँध ले, जिससे तू भवसागर से सुगम पार हो जाएगा। न भवसागर तुझे डुबाएगा और न ही इसकी लहरें पैदा होंगी अपितु तेरा मार्ग सरल हो जाएगा॥ १॥ हे प्यारे प्रभु! तेरे नाम का रंग सदैव अटल है। एक तेरा नाम ही मजीठ है, जिसमें मेरा शरीर रूपी वस्त्र पक्का रंग गया है॥ १॥ रहाउ॥ हे हरि मार्ग पर चलने वाले प्यारे साजन! हरि से कैसे मिलाप होता है? यदि इन्सान के पास शुभ गुण हों तो उसे प्रभु खुद ही अपने साथ मिला लेगा॥ २॥ यदि कोई प्रभु से मिला हुआ हो तो उससे मिला हुआ इन्सान दुबारा उससे जुदा नहीं होता। प्रभु ने आवागमन मिटा दिया है, एक वही सत्य है॥ ३॥ अपने अहंकार को मार कर जन्म-मरण का चक्र दूर कर लिया है और प्रभु-दरबार में पहनने के लिए नया चोला सी लिया है। गुरु के वचनों का यह फल पाया है और पति-प्रभु की वाणी अमृत है॥ ४॥ नानक कहता है कि हे मेरी सत्संगी सहेलियो! पति-प्रभु बहुत ही प्यारा है, हम सभी उसकी दासियाँ हैं और हमारा पति-प्रभु शाश्वत है॥ ४॥ २॥ ४॥

सूही महला १ ॥ जिन कउ भांडै भाउ तिना सवारसी ॥ सूखी करै पसाउ दूख विसारसी ॥ सहसा मूले नाहि सरपर तारसी ॥ १ ॥ तिन्हा मिलिआ गुरु आइ जिन कउ लीखिआ ॥ अंम्रितु हरि का नाउ देवै दीखिआ ॥ चालहि सतिगुर भाइ भवहि न भीखिआ ॥ २ ॥ जा कउ महलु हजूरि दूजे निवै किसु ॥ दरि दरवाणी नाहि मूले पुछ तिसु ॥ छुटै ता कै बोलि साहिब नदरि जिसु ॥ ३ ॥ घले आणे आपि जिसु नाही दूजा मतै कोइ ॥ ढाहि उसारे साजि जाणै सभ सोइ ॥ नाउ नानक बखसीस नदरी करमु होइ ॥ ४ ॥ ३ ॥ ५ ॥

जिनके हृदय रूपी बर्तन में परमात्मा के लिए प्रेम है, वह उन्हें सुन्दर बना देता है। वह अपनी कृपा करके उन्हें सुखी कर देता है और उनके दुख भुला देता है। इस बात में बिल्कुल ही कोई संशय नहीं है कि परमात्मा उन्हें जरूर ही भवसागर से तार देता है॥ १॥ जिनकी किस्मत में लिखा हुआ था, गुरु उन्हें आकर मिल गया है। हरि का अमृत नाम वह उन्हें दीक्षा में देता है। जो व्यक्ति सतिगुरु की आज्ञानुसार चलते हैं, वे भिक्षा के लिए नहीं भटकते॥ २॥ जिसे रहने के लिए परमात्मा का महल मिल गया है, वह किसी दूसरे के समक्ष क्यों झुकेगा? प्रभु के द्वार के द्वारपाल उससे बिल्कुल ही कोई पूछताछ नहीं करते। जिस पर परमात्मा की कृपा-दृष्टि होती है, उसके वचन से वह जन्म-मरण से छूट जाता है॥ ३॥ जिसे कोई दूसरा उपदेश देने वाला नहीं

है, वह स्वयं ही प्राणियों को दुनिया में भेजता है और फिर वापिस बुला लेता है। वह स्वयं ही दुनिया को तबाह करके बनाता है और खुद ही सबकुछ बनाना जानता है। हे नानक! परमात्मा उसे ही नाम की देन देता है, जिस पर उसकी कृपा-दृष्टि होती है॥ ४॥ ३॥ ५॥

सूही महला १ ॥ भांडा हछा सोइ जो तिसु भावसी ॥ भांडा अति मलीणु धोता हछा न होइसी ॥ गुरू दुआरै होइ सोझी पाइसी ॥ एतु दुआरै धोइ हछा होइसी ॥ मैले हछे का वीचारु आपि वरताइसी ॥ मतु को जाणै जाइ अगै पाइसी ॥ जेहे करम कमाइ तेहा होइसी ॥ अंम्रितु हरि का नाउ आपि वरताइसी ॥ चलिआ पति सिउ जनमु सवारि वाजा वाइसी ॥ माणसु किआ वेचारा तिहु लोक सुणाइसी ॥ नानक आपि निहाल सभि कुल तारसी ॥ १ ॥ ४ ॥ ६ ॥

हृदय रूपी बर्तन वही अच्छा है, जो प्रभु को अच्छा लगता है। जो हृदय रूपी बर्तन बहुत ही मैला होता है, वह तो धोने से भी शुद्ध नहीं होता। जो गुरु के द्वार पर जाता है, उसे सूझ आ जाती है। गुरु के द्वार पर धोने से हृदय रूपी बर्तन शुद्ध हो जाता है। परमात्मा स्वयं ही मैले एवं अच्छे की समझ देता है। कोई यह मत समझ ले कि वह आगे परलोक में जाकर सूझ पा लेगा। इन्सान जैसे कर्म करता है, वह तैसा ही बन जाता है। हरि का नाम अमृत है और वह स्वयं ही यह देन जीवों को देता है। जो व्यक्ति नाम जपता है, वह अपना जन्म संवार कर सम्मानपूर्वक परलोक को जाता है और इस दुनिया में अपनी कीर्ति का डंका बजा जाता है। बेचारा मनुष्य तो क्या है, वह यह बाजा तीनों लोकों को सुना जाता है। हे नानक! वह (मनुष्य) आप निहाल हो जाता है और अपने सारे कुल को भवसागर से तार देता है॥ १॥ ४॥ ६॥

सूही महला १ ॥ जोगी होवै जोगवै भोगी होवै खाइ ॥ तपीआ होवै तपु करे तीरथि मलि मलि नाइ ॥ १ ॥ तेरा सदड़ा सुणीजै भाई जे को बहै अलाइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जैसा बीजै सो लुणे जो खटे सुो खाइ ॥ अगै पुछ न होवई जे सणु नीसाणै जाइ ॥ २ ॥ तैसो जैसा काढीऐ जैसी कार कमाइ ॥ जो दमु चिति न आवई सो दमु बिरथा जाइ ॥ ३ ॥ इहु तनु वेची बै करी जे को लए विकाइ ॥ नानक कंमि न आवई जितु तनि नाही सचा नाउ ॥ ४ ॥ ५ ॥ ७ ॥

जो योगी होता है, वह योग साधना करता है। जो गृहस्थी होता है, वह भोग पदार्थों में ही लीन रहता है। जो तपस्वी होता है, वह तपस्या ही करता है एवं तीर्थों में मल-मल कर स्नान करता है॥ १॥ हे ईश्वर! यदि कोई बैठकर तेरा स्तुतिगान करेगा तो तेरा सन्देश सुनना चाहूँगा॥ १॥ रहाउ॥ जैसा बीज आदमी बोता है, वैसा ही फल वह काटता है। जैसी कमाई करता है, वैसा ही उपयोग करता है। यदि कोई नाम रूपी परवाने सहित जाए तो आगे परमात्मा के दरबार में उससे कोई पूछताछ नहीं होती॥ २॥ जैसा (अच्छा-बुरा) कार्य आदमी करता है, वैसा ही उसे कहा जाता है। जीवन की जिस सांस में परमात्मा याद नहीं आता, वह सांस व्यर्थ ही बीत जाती है॥ ३॥ यदि कोई खरीददार हो तो मैं अपना यह तन उसे बेच दूँगा,यदि उसके बदले में मुझे परमात्मा का नाम मिलता हो। हे नानक! जिस तन में सत्य-नाम नहीं बसता, वह किसी काम नहीं आता॥ ४॥ ५॥ ७॥

सूही महला १ घरु ७

१ओं सतिगुर प्रसादि ॥ जोगु न खिंथा जोगु न डंडै जोगु न भसम चड़ाईऐ ॥ जोगु न मुंदी मूंडि मुडाइऐ जोगु न सिंडी वाईऐ ॥ अंजन माहि निरंजनि रहीऐ जोग जुगति इव पाईऐ ॥ १ ॥

गली जोगु न होई ॥ एक द्रिसटि करि समसरि जाणै जोगी कहीऐ सोई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जोगु न बाहरि मड़ी मसाणी जोगु न ताड़ी लाईऐ ॥ जोगु न देसि दिसंतरि भविऐ जोगु न तीरथि नाईऐ ॥ अंजन माहि निरंजनि रहीऐ जोग जुगति इव पाईऐ ॥ २ ॥ सतिगुरु भेटै ता सहसा तूटै धावतु वरजि रहाईऐ ॥ निझरु झरै सहज धुनि लागै घर ही परचा पाईऐ ॥ अंजन माहि निरंजनि रहीऐ जोग जुगति इव पाईऐ ॥ ३ ॥ नानक जीवतिआ मरि रहीऐ ऐसा जोगु कमाईऐ ॥ वाजे बाझहु सिंङी वाजै तउ निरभउ पदु पाईऐ ॥ अंजन माहि निरंजनि रहीऐ जोग जुगति तउ पाईऐ ॥ ४ ॥ १ ॥ ८ ॥

{उल्लेखनीय है कि गुरु नानक देव जी योगियों के प्रसिद्ध स्थल गोरखमता जिला पीलीभीत पहुँचे थे, जहाँ गोरखनाथ और उनके शिष्य रहते थे। यहाँ पर गुरु जी ने योगियों को उपदेश देते हुए यह शब्द उच्चरित किया था।}

गुदड़ी पहन लेना योग नहीं है, हाथ में डंडा पकड़ लेना योग नहीं है और शरीर पर भस्म लगा लेना भी योगसाधना नहीं है। कानों में मुद्रा पहन लेना और सिर मुनवा लेना भी योग नहीं है। सिंगी बजाने से भी योग-साधना नहीं हो सकती। योग का मार्ग यूं पाया जाता है कि माया में रहते हुए ही निरंजन अर्थात् माया से निर्लिप्त रहें॥ १॥ बातें करने से योग नहीं होता। योगी उसे ही कहा जाता है, जो सब को एक दृष्टि से देखता है तथा एक समान समझता है॥ १॥ रहाउ॥ बाहर श्मशान में रहना योग-साधना नही है और न ही समाधि लगाना योग है। देश-परदेस में भ्रमण करना और तीर्थों में स्नान करना भी योग नही है। योग की युक्ति यही है कि मोह-माया में रहते हुए माया से निर्लिप्त रहें॥ २॥ जब सतगुरु मिल जाता है तो मानव का संदेह समाप्त हो जाता है और वह भटकते हुए मन को वश में कर लेता है। उसके हृदय में अमृत-नाम का झरना बहने लग जाता है, उसका मन मधुर अनहद ध्वनि को सुनने लगता है और हृदय-घर में विद्यमान परमात्मा के साथ वह लीन रहता है। वास्तव में मोह माया में रहकर माया से निर्लिप्त रहना ही योग-युक्ति है॥ ३॥ हे नानक! ऐसी योग-साधना करनी चाहिए कि जीवन में मोह-माया से तटस्थ रहा जाए। जब अन्तर्मन में बाजे के बिना ही अनहद ध्वनि रूपी सिंगी बजती है तो निर्भय पद की प्राप्ति हो जाती है। योग का मार्ग इस विधि से ही पाया जाता है कि माया में रहते हुए ही निरंजन अर्थात् माया से निर्लिप्त रहें॥ ४॥ १॥ ८॥

सूही महला १ ॥ कउण तराजी कवणु तुला तेरा कवणु सराफु बुलावा ॥ कउणु गुरू कै पहि दीखिआ लेवा कै पहि मुलु करावा ॥ १ ॥ मेरे लाल जीउ तेरा अंतु न जाणा ॥ तूं जलि थलि महीअलि भरिपुरि लीणा तूं आपे सरब समाणा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ मनु ताराजी चितु तुला तेरी सेव सराफु कमावा ॥ घट ही भीतरि सो सहु तोली इन बिधि चितु रहावा ॥ २ ॥ आपे कंडा तोलु तराजी आपे तोलणहारा ॥ आपे देखै आपे बूझै आपे है वणजारा ॥ ३ ॥ अंधुला नीच जाति परदेसी खिनु आवै तिलु जावै ॥ ता की संगति नानकु रहदा किउ करि मूड़ा पावै ॥ ४ ॥ २ ॥ ६ ॥

हे ईश्वर! वह कौन-सा तराजू है, कौन-सा तुला है, जिसमें मैं तेरे गुणों का भार तोलूँ? तेरी महिमा की परख करने के लिए मैं किस सर्राफ को बुलाऊँ? कौन-से गुरु के पास दीक्षा लूँ, और किससे मैं मूल्यांकन कराऊँ?॥ १॥ हे मेरे प्यारे प्रभु! मैं तेरा रहस्य नहीं जानता। तू जल, पृथ्वी एवं आकाश में भरपूर है और तू स्वयं ही सबमें समाया हुआ है॥ १॥ रहाउ॥ हे परमात्मा! मेरा मन ही तराजू है और मेरा चित ही तुला है। मैं तेरी उपासना करूँ, यही सर्राफ है। अपने मालिक को मैं अपने हृदय में ही तोलता हूँ तथा इस विधि द्वारा मैं अपना चित उसमें लगाकर रखता हूँ ॥ २॥ परमात्मा स्वयं ही कांटा, स्वयं ही तौल, स्वयं ही तराजू है और वह स्वयं ही तोलने वाला

है। वह स्वयं ही देखता है, स्वयं ही समझता है और स्वयं ही व्यापारी है॥ ३॥ मेरा यह मन अन्धा है, नीच जाति का एवं परदेसी है। यह एक क्षण में ही कहीं से लौटकर आ जाता है और तिल मात्र समय के उपरांत फिर कहीं जाता है अर्थात् हर वक्त भटकता ही रहता है। हे ईश्वर! नानक इस मन की संगति में रहता है, इसलिए वह मूर्ख तुझे कैसे पाए॥ ४॥ २॥ ६॥

रागु सूही महला ४ घरु १ १ओं सतिगुर प्रसादि ॥

मनि राम नामु आराधिआ गुर सबदि गुरू गुर के ॥ सभि इछा मनि तनि पूरीआ सभु चूका डरु जम के ॥ १ ॥ मेरे मन गुण गावहु राम नाम हरि के ॥ गुरि तुठै मनु परबोधिआ हरि पीआ रसु गटके ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सतसंगति ऊतम सतिगुर केरी गुन गावै हरि प्रभ के ॥ हरि किरपा धारि मेलहु सतसंगति हम धोवह पग जन के ॥ २ ॥ राम नामु सभु है राम नामा रसु गुरमति रसु रसके ॥ हरि अंम्रितु हरि जलु पाइआ सभ लाथी तिस तिस के ॥ ३ ॥ हमरी जाति पाति गुरु सतिगुरु हम वेचिओ सिरु गुर के ॥ जन नानक नामु परिओ गुर चेला गुर राखहु लाज जन के ॥ ४ ॥ १ ॥

गुरु के गुरू, गुर-शब्द द्वारा मन में राम नाम की आराधना की है, जिससे मन एवं तन की सब इच्छाएँ पूरी हो गई हैं और मृत्यु का डर भी दूर हो गया है॥ १॥ हे मेरे मन! राम नाम का गुणगान करो। जब गुरु ने प्रसन्न होकर मेरे मन को उपदेश दिया तो उसने जी भर कर हरि रस का पान किया॥ १॥ रहाउ॥ सतगुरु की सत्संगति सबसे उत्तम है, जो प्रभु का गुणानुवाद करती रहती है। हे हरि! कृपा करके मुझे सत्संगति में मिला दो ताकि मैं तेरे भक्तजनों के पैर धोऊँ॥ २॥ राम नाम सब में स्थित है और गुरु के उपदेश द्वारा ही राम नाम रूपी रस स्वाद ले लेकर पान किया जाता है। जिसने हरि नाम रूपी अमृत जल पा लिया है, उसकी सारी तृष्णा रूपी प्यास बुझ गई है॥ ३॥ गुरु-सतगुरु ही मेरी जाति-पाति है और मैंने अपना सिर गुरु के पास बेच दिया है। नानक का कथन है कि मेरा नाम 'गुरु का चेला' पड़ गया है। हे मेरे गुरु! अपने दास की लाज रखो॥ ४॥ १॥ १०॥

सूही महला ४ ॥ हरि हरि नामु भजिओ पुरखोतमु सभि बिनसे दालद दलघा ॥ भउ जनम मरणा मेटिओ गुर सबदी हरि असथिरु सेवि सुखि समघा ॥ १ ॥ मेरे मन भजु राम नाम अति पिरघा ॥ मै मनु तनु अरपि धरिओ गुर आगै सिरु वेचि लीओ मुलि महघा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ नरपति राजे रंग रस माणहि बिनु नावै पकड़ि खड़े सभि कलघा ॥ धरम राइ सिरि डंडु लगाना फिरि पछुताने हथ फलघा ॥ २ ॥ हरि राखु राखु जन किरम तुमारे सरणागति पुरख प्रतिपलघा ॥ दरसनु संत देहु सुखु पावै प्रभ लोच पूरि जनु तुमघा ॥ ३ ॥ तुम समरथ पुरख वडे प्रभ सुआमी मोकउ कीजै दानु हरि निमघा ॥ जन नानक नामु मिलै सुखु पावै हम नाम विटहु सद घुमघा ॥ ४ ॥ २ ॥

पुरुषोत्तम परमेश्वर के नाम का भजन किया है, जिससे सारी दरिद्रता मिट गई है। गुरु के शब्द द्वारा मैंने जन्म-मरण का भय मिटा दिया है और प्रभु की सेवा करके सुख में लीन हो गया हूँ॥ १॥ हे मेरे मन! अत्यंत प्यारे राम नाम का भजन करो। मैंने अपना मन एवं तन अर्पण करके गुरु के समक्ष रख दिया है और मैंने अपना सिर बेचकर राम नाम बहुत महंगे मूल्य लिया है॥ १॥ रहाउ॥ नरपति राजे माया के रंग-रस में मग्न होकर सुख तो भोगते हैं लेकिन नाम के बिना उन सब को यम पकड़ कर ले जाता है। जब यमराज उनके सिर पर डण्डा लगाता है तो फिर वे पछताते हैं। इस तरह उन्हें अपने हाथों से किए कर्मों का फल मिलता है॥ २॥ हे हरि! मेरी रक्षा करो, मैं तो तेरा तुच्छ सेवक हूँ। मैं तेरी शरण में आया हूँ। मुझे अपने संतों के दर्शन

दीजिए ताकि मैं सुख पाऊँ। हे पालनहार प्रभु! मेरी अभिलाषा पूरी करो, मैं तुम्हारा ही सेवक हूँ॥ ३॥ हे मेरे स्वामी प्रभु! तू सर्वकला समर्थ एवं बड़ा पुरुष है। मुझे निमेष भर के लिए हरि नाम का दान कीजिए। हे नानक! यदि नाम मिल जाए तो मैं सुख प्राप्त करूँ। मैं हमेशा ही नाम पर कुर्बान जाता हूँ॥ ४॥ २॥

सूही महला ४ ॥ हरि नामा हरि रंङु है हरि रंङु मजीठै रंङु ॥ गुरि तुठै हरि रंगु चाड़िआ फिरि बहुड़ि न होवी भंङु ॥ १ ॥ मेरे मन हरि राम नामि करि रंङु ॥ गुरि तुठै हरि उपदेसिआ हरि भेटिआ राउ निसंङु ॥ १ ॥ रहाउ ॥ मुंध इआणी मनमुखी फिरि आवण जाणा अंङु ॥ हरि प्रभु चिति न आइओ मनि दूजा भाउ सहलंङु ॥ २ ॥ हम मैलु भरे दुहचारीआ हरि राखहु अंगी अंङु ॥ गुरि अंम्रित सरि नवलाइआ सभि लाथे किलविख पंङु ॥ ३ ॥ हरि दीना दीन दइआल प्रभु सतसंगति मेलहु संङु ॥ मिलि संगति हरि रंगु पाइआ जन नानक मनि तनि रंङु ॥ ४ ॥ ३ ॥

हरि का नाम प्रेम-रंग है और उसका प्रेम-रंग मजीठ जैसा पक्का रंग है। गुरु ने प्रसन्न होकर जिसके मन को यह प्रेम रूपी रंग चढ़ा दिया है, वह फिर दोबारा भंग नहीं होता॥ १॥ हे मेरे मन! राम-नाम का रंग कर। गुरु ने प्रसन्न होकर जिसे भी उपदेश दिया है, उसे हरि-बादशाह अवश्य ही मिल गया है॥ १॥ रहाउ॥ ज्ञानहीन मनमुखी जीव-स्त्री का बार-बार जन्म-मरण से संबंध बना रहता है। उसे प्रभु कभी याद ही नहीं आया और द्वैतभाव ही उसके मन में बसा रहा॥ २॥ मैं पापों की मैल से भरा हुआ दुष्कर्मी हूँ। हे भक्तों का पक्ष करने वाले हरि! मेरी रक्षा करो। जब गुरु ने मुझे नाम रूपी अमृत-सरोवर में स्नान करवाया तो मेरे पापों की मैल मन से उतर गई॥ ३॥ हे दीनानाथ! हे दीनदयालु प्रभु! मुझे सत्संगति में मिला दो। मैंने सत्संग में मिलकर प्रेम-रंग पा लिया है। हे नानक! हरि का प्रेम-रंग मेरे मन-तन में बस गया है॥ ४॥ ३॥

सूही महला ४ ॥ हरि हरि करहि नित कपटु कमावहि हिरदा सुधु न होई ॥ अनदिनु करम करहि बहुतेरे सुपनै सुखु न होई ॥ १ ॥ गिआनी गुर बिनु भगति न होई ॥ कोरै रंगु कदे न चड़ै जे लोचै सभु कोई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जपु तप संजम वरत करे पूजा मनमुख रोगु न जाई ॥ अंतरि रोगु महा अभिमाना दूजै भाइ खुआई ॥ २ ॥ बाहरि भेख बहुतु चतुराई मनूआ दह दिसि धावै ॥ हउमै बिआपिआ सबदु न चीन्है फिरि फिरि जूनी आवै ॥ ३ ॥ नानक नदरि करे सो बूझै सो जनु नामु धिआए ॥ गुर परसादी एको बूझै एकसु माहि समाए ॥ ४ ॥ ४ ॥

जो आदमी हरि-हरि नाम तो जपता है लेकिन नित्य ही दूसरों से छल-कपट करता है, उसका हृदय शुद्ध नहीं होता। चाहे वह रोज ही बहुत सारे धर्म-कर्म करता रहता है, पर उसे स्वप्न में भी सुख नहीं मिलता॥ १॥ ज्ञानी गुरु के बिना भक्ति नहीं होती। जिस तरह कोरे कपड़े पर कभी रंग नहीं चढ़ता, चाहे हर कोई अभिलाषा करता रहे॥ १॥ रहाउ॥ स्वेच्छाचारी इन्सान का अभिमान रूपी रोग कभी दूर नहीं होता चाहे वह जाप, तपस्या, संयम, व्रत एवं पूजा ही करता रहे। उसके अन्तर्मन में अभिमान का बड़ा रोग होता है और द्वैतभाव में फँसकर वह बर्बाद हो जाता है॥ २॥ बाहरी दिखावे के लिए वह धार्मिक वेष धारण करता है और बहुत चतुराई करता है। लेकिन उसका मन दसों दिशाओं में भटकता रहता है। अहंत्व में फँसकर वह शब्द की पहचान नहीं करता और बार-बार योनियों के चक्र में आता है॥ ३॥ हे नानक! जिस पर प्रभु अपनी कृपा-दृष्टि करता है, उसे सूझ हो जाती है और ऐसा व्यक्ति नाम का ध्यान करता रहता है। गुरु की कृपा से वह एक परमात्मा को बूझकर उस में ही समा जाता है॥ ४॥ ४॥

सूही महला ४ घरु २ ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

गुरमति नगरी खोजि खोजाई ॥ हरि हरि नामु पदारथु पाई ॥ १ ॥ मेरै मनि हरि हरि सांति वसाई ॥ तिसना अगनि बुझी खिन अंतरि गुरि मिलिऐ सभ भुख गवाई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ हरि गुण गावा जीवा मेरी माई ॥ सतिगुरि दइआलि गुण नामु द्रिड़ाई ॥ २ ॥ हउ हरि प्रभु पिआरा ढूढि ढूढाई ॥ सतसंगति मिलि हरि रसु पाई ॥ ३ ॥ धुरि मसतकि लेख लिखे हरि पाई ॥ गुरु नानकु तुठा मेलै हरि भाई ॥ ४ ॥ १ ॥ ५ ॥

गुरु-उपदेश द्वारा मैंने अपनी शरीर रूपी नगरी की भलीभांति खोज की है, जिसमें हरि नाम रूपी पदार्थ पा लिया है॥ १॥ मेरे मन में हरि-नाम ने शांति बसा दी है। इससे क्षण में ही तृष्णा की अग्नि बुझ गई है और गुरु को मिलकर मेरी सारी भूख समाप्त हो गई है॥ १॥ रहाउ॥ हे मेरी माई ! मैं हरि का गुणगान करके ही जी रहा हूँ। दयालु सतगुरु ने परमात्मा के गुण एवं उसका नाम मेरे मन में बसा दिया है॥ २॥ मैंने अपना प्यारा प्रभु ढूँढ लिया है और सत्संगति में मिलकर हरि-रस पा लिया है॥ ३॥ आरम्भ से मस्तक पर लिखे भाग्य के कारण ही मैंने हरि को पाया है। हे भाई ! गुरु नानक ने प्रसन्न होकर मुझे हरि से मिला दिया है॥ ४॥ १॥ ५॥

सूही महला ४ ॥ हरि क्रिपा करे मनि हरि रंगु लाए ॥ गुरमुखि हरि हरि नामि समाए ॥ १ ॥ हरि रंगि राता मनु रंग माणे ॥ सदा अनंदि रहै दिन राती पूरे गुर कै सबदि समाणे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ हरि रंग कउ लोचै सभु कोई ॥ गुरमुखि रंगु चलूला होई ॥ २ ॥ मनमुखि मुगधु नरु कोरा होइ ॥ जे सउ लोचै रंगु न होवै कोइ ॥ ३ ॥ नदरि करे ता सतिगुरु पावै ॥ नानक हरि रसि हरि रंगि समावै ॥ ४ ॥ २ ॥ ६ ॥

हे जीव ! हरि अपनी कृपा करके मन में अपना प्रेम उत्पन्न कर देता है। ऐसा इन्सान गुरु के सान्निध्य में रहकर हरि नाम में ही समा जाता है॥ १॥ हरि के प्रेम-रंग में मग्न हुआ मन सुख की अनुभूति करता है। वह सदैव ही दिन-रात आनंद में रहता है और पूर्ण गुरु के शब्द में समा जाता है॥ १॥ रहाउ॥ जीवन में हर कोई इस प्रेम-रंग की कामना करता रहता है, मगर यह प्रेम रूपी गहरा लाल रंग गुरु के माध्यम से ही मन को चढ़ता है॥ २॥ मूर्ख स्वेच्छाचारी इन्सान कोरे कपड़े की तरह होता है। यदि वह सौ बार भी अभिलाषा करे, उसके मन को कोई प्रेम-रंग नहीं चढ़ता॥ ३॥ यदि परमात्मा अपनी कृपा-दृष्टि कर दे तो वह सतिगुरु को पा लेता है। हे नानक ! फिर ऐसा इन्सान हरि-रस एवं हरि के प्रेम-रंग में ही समा जाता है॥ ४॥ २॥ ६॥

सूही महला ४ ॥ जिहवा हरि रसि रही अघाइ ॥ गुरमुखि पीवै सहजि समाइ ॥ १ ॥ हरि रसु जन चाखहु जे भाई ॥ तउ कत अनत सादि लोभाई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ गुरमति रसु राखहु उर धारि ॥ हरि रसि राते रंगि मुरारि ॥ २ ॥ मनमुखि हरि रसु चाखिआ न जाइ ॥ हउमै करै बहुती मिलै सजाइ ॥ ३ ॥ नदरि करे ता हरि रसु पावै ॥ नानक हरि रसि हरि गुण गावै ॥ ४ ॥ ३ ॥ ७ ॥

जिह्वा हरि-रस पीकर तृप्त रहती है। जो गुरमुख बनकर हरि-रस का पान करता है, वह सहज ही समा जाता है॥ १॥ हे भाई ! यदि तुम हरि-रस चख लोगे तो फिर दूसरे स्वादों में क्यों लुब्ध होंगे॥ १॥ रहाउ॥ गुरु के मत द्वारा हरि-रस अपने हृदय में बसाकर रखो। हरि-रस में मग्न हुए भक्तजन प्रभु के प्रेम-रंग में रंग जाते हैं॥ २॥ स्वेच्छाचारी जीव से हरि-रस चखा नहीं जाता। वह बड़ा अहंकार करता है, जिसके कारण इसे बहुत सज़ा मिलती है॥ ३॥ यदि परमात्मा की

थोड़ी-सी कृपा-दृष्टि हो जाए तो वह हरि-रस पा लेता है। हे नानक! फिर ऐसा जीव हरि-रस पीकर हरि का गुणगान करता रहता है॥ ४॥ ३॥ ७॥

सूही महला ४ घरु ६ ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

नीच जाति हरि जपतिआ उतम पदवी पाइ ॥ पूछहु बिदर दासी सुतै किसनु उतरिआ घरि जिसु जाइ ॥ १ ॥ हरि की अकथ कथा सुनहु जन भाई जितु सहसा दूख भूख सभ लहि जाइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ रविदासु चमारु उसतति करे हरि कीरति निमख इक गाइ ॥ पतित जाति उतमु भइआ चारि वरन पए पगि आइ ॥ २ ॥ नामदेअ प्रीति लगी हरि सेती लोकु छीपा कहै बुलाइ ॥ खत्री ब्राहमण पिठि दे छोडे हरि नामदेउ लीआ मुखि लाइ ॥ ३ ॥ जितने भगत हरि सेवका मुखि अठसठि तीरथ तिन तिलकु कढाइ ॥ जनु नानकु तिन कउ अनदिनु परसे जे क्रिपा करे हरि राइ ॥ ४ ॥ १ ॥ ८ ॥

नीच जाति का आदमी भी हरि का नाम जपने से उत्तम पदवी पा लेता है। इस बारे चाहे दासी पुत्र विदुर के संबंध में विश्लेषण कर लो, जिसके घर में श्रीकृष्ण ने आतिथ्य स्वीकार किया था॥ १॥ हे भाई! हरि की अकथनीय कथा सुनो, जिससे चिंता, दुख एवं भूख सब दूर हो जाते हैं॥ १॥ रहाउ॥ चमार जाति के भक्त रविदास ईश्वर की उस्तति करते थे और हर क्षण प्रभु की कीर्ति गाते रहते थे। वह पतित जाति से महान् भक्त बन गए। ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य एवं शूद्र—इन चारों वर्णों के लोग उनके चरणों में आ लगे॥ २॥ भक्त नामदेव की प्रीति हरि से लग गई। लोग उन्हें छीपा कहकर बुलाते थे। हरि ने क्षत्रिय एवं ब्राह्मणों को पीठ देकर छोड़ दिया और नामदेव की ओर मुख करके उन्हें आदर दिया॥ ३॥ ईश्वर के जितने भी भक्त एवं सेवक हैं, अड़सठ तीर्थ उनके माथे का तिलक लगाते हैं। यदि जगत् का बादशाह हरि अपनी कृपा करें तो नानक नित्य ही उनके चरण स्पर्श करता रहेगा॥ ४॥ १॥ ८॥

सूही महला ४ ॥ तिन्ही अंतरि हरि आराधिआ जिन कउ धुरि लिखिआ लिखतु लिलारा ॥ तिन की बखीली कोई किआ करे जिन का अंगु करे मेरा हरि करतारा ॥ १ ॥ हरि हरि धिआइ मन मेरे मन धिआइ हरि जनम जनम के सभि दूख निवारणहारा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ धुरि भगत जना कउ बखसिआ हरि अंम्रित भगति भंडारा ॥ मूरखु होवै सु उन की रीस करे तिसु हलति पलति मुहु कारा ॥ २ ॥ से भगत से सेवका जिना हरि नामु पिआरा ॥ तिन की सेवा ते हरि पाईऐ सिरि निंदक कै पवै छारा ॥ ३ ॥ जिसु घरि विरती सोई जाणै जगत गुर नानक पूछि करहु बीचारा ॥ चहु पीड़ी आदि जुगादि बखीली किनै न पाइओ हरि सेवक भाइ निसतारा ॥ ४ ॥ २ ॥ ६ ॥

{उल्लेखनीय है कि जब गुरु रामदास जी ने श्री गुरु अर्जुन देव जी को गुरुगद्दी दी थी तो उनके बड़े सुपुत्र पृथी चंद ने बड़ा विरोध किया था, तब गुरु जी ने पृथी चंद को उपदेश देते हुए यह शब्द उच्चरित किया था।}

उन्होंने ही अपने मन में हरि की आराधना की है, जिनके माथे पर ऐसा भाग्य लिखा हुआ है। उनकी निंदा कोई क्या कर सकता है, जिनके पक्ष में रचयिता हरि है॥ १॥ हे मेरे मन! सर्वदा हरि का ध्यान करो; यह जन्म-जन्मांतर के सब दुख दूर करने वाला है॥ १॥ रहाउ॥ हरि ने शुरु से ही भक्तजनों को अपनी भक्ति का अमृतमयी भण्डार दिया हुआ है। जो उनकी बराबरी करने की कोशिश करते हैं, वे मूर्ख होते हैं और उनका लोक-परलोक दोनों में मुँह काला (अर्थात् तिरस्कार) होता है॥ २॥ जिन्हें हरि का नाम प्यारा लगता है, वही उसके भक्त एवं सेवक हैं। उनकी सेवा करने से ही हरि पाया जाता है और निंदक के सिर पर राख पड़ती है अर्थात् वे

तिरस्कृत होते हैं॥ ३॥ केवल वही इस बात को जानता है, जिसके घर में यह दशा घटित हुई है। जगत् के गुरु, गुरु नानक के संबंध में इस बात की विचार कर लो। *(गुरु नानक देव जी ने जब अपने शिष्य भाई लहना को गुरुगद्दी सौंपी थी तो उनके पुत्रों ने भी विरोध किया था)* सृष्टि के आदि, युगों के आदि एवं गुरु साहिबान के चारों वंशों में से निंदा करने से किसी ने भी हरि को नहीं पाया अपितु सेवा भावना से ही उद्धार होता है॥ ४॥ २॥ ६॥

सूही महला ४ ॥ जिथै हरि आराधीऐ तिथै हरि मितु सहाई ॥ गुर किरपा ते हरि मनि वसै होरतु बिधि लइआ न जाई ॥ १ ॥ हरि धनु संचीऐ भाई ॥ जि हलति पलति हरि होइ सखाई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सतसंगती संगि हरि धनु खटीऐ होर थै होरतु उपाइ हरि धनु कितै न पाई ॥ हरि रतनै का वापारीआ हरि रतन धनु विहाझे कचै के वापारीए वाकि हरि धनु लइआ न जाई ॥ २ ॥ हरि धनु रतनु जवेहरु माणकु हरि धनै नालि अंम्रित वेलै वतै हरि भगती हरि लिव लाई ॥ हरि धनु अंम्रित वेलै वतै का बीजिआ भगत खाइ खरचि रहे निखुटै नाही ॥ हलति पलति हरि धनै की भगता कउ मिली वडिआई ॥ ३ ॥ हरि धनु निरभउ सदा सदा असथिरु है साचा इहु हरि धनु अगनी तसकरै पाणीऐ जमदूतै किसै का गवाइआ न जाई ॥ हरि धन कउ उचका नेड़ि न आवई जमु जागाती डंडु न लगाई ॥ ४ ॥ साकती पाप करि कै बिखिआ धनु संचिआ तिना इक विख नालि न जाई ॥ हलतै विचि साकत दुहेले भए हथहु छुड़कि गइआ अगै पलति साकतु हरि दरगह ढोई न पाई ॥ ५ ॥ इसु हरि धन का साहु हरि आपि है संतहु जिस नो देइ सु हरि धनु लदि चलाई ॥ इसु हरि धनै का तोटा कदे न आवई जन नानक कउ गुरि सोझी पाई ॥ ६ ॥ ३ ॥ १० ॥

जहाँ भी ईश्वर की आराधना की जाती है, वहाँ ही वह मित्र एवं मददगार बन जाता है। लेकिन गुरु की कृपा से ही प्रभु मन में आ बसता है तथा किसी अन्य विधि से उसे पाया नहीं जा सकता॥१॥ हे भाई! हरि-नाम रूपी धन संचित करना चाहिए, चूंकि लोक-परलोक में वह सहायक बना रहे॥ १॥ रहाउ॥ हरि नाम रूपी धन सत्संगियों के साथ मिलकर ही प्राप्त किया जाता है। किसी अन्य स्थान पर एवं किसी अन्य उपाय से हरि-धन कहीं भी पाया नहीं जा सकता। हरि-नाम रूपी रत्नों का व्यापारी हरि-धन रूपी रत्नों को ही खरीदता है। परन्तु माया धन के व्यापारियों से केवल बातों से हरि-धन खरीदा नहीं जा सकता॥ २॥ हरि धन अमूल्य रत्न, जवाहर एवं माणिक्य है। हरि के भक्तों ने हरि-धन से ब्रह्ममुहूर्त में जागकर हरि में अपनी सुरति लगाई होती है। ब्रह्ममुहूर्त में बोया हुआ हरि धन भक्त खाते रहते हैं और दूसरों को खिलाते रहते हैं। परन्तु यह कभी खत्म नहीं होता। लोक-परलोक में भक्तों को हरि धन की बड़ाई मिली है॥ ३॥ हरि नाम रूपी धन निर्भय एवं सदा सर्वदा स्थिर है। यह सदैव शाश्वत है और यह अग्नि, चोर, पानी एवं यमदूत इत्यादि से प्रभावित नहीं होता। हरि धन को लूटने के लिए कोई भी लुटेरा निकट नहीं आता तथा यमराज रूपी महसूली इसे कर नहीं लगाता॥ ४॥ मायावी जीवों ने पाप कर करके जो विष रूपी धन इकट्ठा किया है, ये धन एक कदम भी उनके साथ नहीं जाता। मायावी इहलोक में बड़े दुखी हुए हैं, जब यह धन उनके हाथ से निकल गया। आगे परलोक में परमात्मा के दरबार में उन्हें कोई सहारा नहीं मिला॥ ५॥ हे संतजनो! इस हरि-धन का साहूकार हरि आप ही है। जिसे वह यह धन देता है, वही इस को लेकर अपने साथ ले जाता है। हे नानक! गुरु ने यही सूझ दी है कि इस हरि-धन में कभी कोई कमी नहीं आती॥ ६॥ ३॥ १०॥

सूही महला ४ ॥ जिस नो हरि सुप्रसंनु होइ सो हरि गुणा रवै सो भगतु सो परवानु ॥ तिस की महिमा किआ वरनीऐ जिस कै हिरदै वसिआ हरि पुरखु भगवानु ॥ १ ॥ गोविंद गुण गाईऐ जीउ लाइ सतिगुरू नालि धिआनु ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सो सतिगुरू सा सेवा सतिगुर की सफल है जिस ते पाईऐ परम निधानु ॥ जो दूजै भाइ साकत कामना अरथि दुरगंध सरेवदे सो निहफल सभु अगिआनु ॥ २ ॥ जिस नो परतीति होवै तिस का गाविआ थाइ पवै सो पावै दरगह मानु ॥ जो बिनु परतीती कपटी कूड़ी कूड़ी अखी मीटदे उन का उतरि जाइगा झूठु गुमानु ॥ ३ ॥ जेता जीउ पिंडु सभु तेरा तूं अंतरजामी पुरखु भगवानु ॥ दासनि दासु कहै जनु नानकु जेहा तूं कराइहि तेहा हउ करी वखिआनु ॥ ४ ॥ ४ ॥ ११॥

जिस व्यक्ति पर भगवान् सुप्रसन्न होता है, वही उसका गुणगान करता है, वही उसका सच्चा भक्त होता है एवं उसे परवान होता है। जिसके हृदय में भगवान् बस गया है, उसकी महिमा क्या वर्णन की जाए॥ १॥ दिल लगाकर गोविन्द का गुणगान करना चाहिए तथा सद्गुरु में ही ध्यान लगाना चाहिए॥ १॥ रहाउ॥ वही सद्गुरु है और उस सद्गुरु की सेवा सफल है, जिससे नाम रूपी परम खजाना मिलता है। जो मायावी जीव द्वैतभाव में फँसकर अपनी मनोकामनाओं की पूर्ति के लिए विषय-विकारों की दुर्गन्ध को भोगते हैं, अज्ञानी हैं, और उनके सारे कर्म निष्फल हैं॥ २॥ जिसे भगवान् पर श्रद्धा होती है, उसका ही स्तुतिगान स्वीकार होता है और वह दरबार में सत्कार पा लेता है। जो कपटी इन्सान श्रद्धा के बिना ही झूठमूठ से आँखें बंद करते रहते हैं, उनका झूठा गुमान दूर हो जाएगा॥ ३॥ हे भगवान्! तू अंतर्यामी है, यह प्राण एवं शरीर इत्यादि जितना भी है, यह सब तेरा ही दिया हुआ है। नानक कहता है कि हे ईश्वर! मैं तेरे दासों का दास हूँ, जो तू मुझ से कहलवाता है, मैं वही बखान करता हूँ॥ ४॥ ४॥ ११॥

सूही महला ४ घरु ७   १ओं सतिगुर प्रसादि ॥

तेरे कवन कवन गुण कहि कहि गावा तू साहिब गुणी निधाना ॥ तुमरी महिमा बरनि न साकउ तूं ठाकुर ऊच भगवाना ॥ १ ॥ मै हरि हरि नामु धर सोई ॥ जिउ भावै तिउ राखु मेरे साहिब मै तुझ बिनु अवरु न कोई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ मै ताणु दीबाणु तूहै मेरे सुआमी मै तुधु आगै अरदासि ॥ मै होरु थाउ नाही जिसु पहि करउ बेनंती मेरा दुखु सुखु तुझ ही पासि ॥ २ ॥ विचे धरती विचे पाणी विचि कासट अगनि धरीजै ॥ बकरी सिंघु इकतै थाइ राखे मन हरि जपि भ्रमु भउ दूरि कीजै ॥ ३ ॥ हरि की वडिआई देखहु संतहु हरि निमाणिआ माणु देवाए ॥ जिउ धरती चरण तले ते ऊपरि आवै तिउ नानक साध जना जगतु आणि सभु पैरी पाए ॥ ४ ॥ १ ॥ १२ ॥

हे ईश्वर! तू हम सबका मालिक है, गुणों का भण्डार हैं, फिर मैं तेरे कौन-कौन से गुण कह-कहकर तेरा गुणानुवाद करूँ? तू हमारा ठाकुर है, सर्वोच्च भगवान् और मैं तेरी महिमा वर्णन नहीं कर सकता॥ १॥ मैं तो हरि-हरि नाम जपता रहता हूँ और वही मेरे जीवन का आधार है। हे मेरे साहिब! जैसे तुझे अच्छा लगता है, वैसे ही मुझे रखो, क्योंकि तेरे बिना मेरा कोई आसरा नहीं है॥ १॥ रहाउ॥ हे मेरे स्वामी! तू ही मेरा बल और सहारा है। मेरी तेरे समक्ष प्रार्थना है। मेरे लिए अन्य कोई स्थान नहीं है, जिसके पास जाकर विनती करूँ, मेरा दुख एवं सुख तेरे पास ही बताया जा सकता है॥ २॥ परमात्मा ने एक ही स्थान में धरती एवं पानी रखे हुए हैं और लकड़ी में अग्नि रखी हुई है। उसने बकरी एवं शेर को भी इकट्ठा एक ही स्थान पर रखा हुआ है। हे मेरे मन! उस भगवान् को जप कर भ्रम एवं भय दूर कर ले॥ ३॥ हे संतजनो! हरि का बड़प्पन देखो।

यह मानहीनों को भी सम्मान दिलवाता है। हे नानक! आदमी की मृत्यु उपरांत जैसे धरती (मिट्टी) पैरों के नीचे से उसके ऊपर आ जाती है, वैसे ही भगवान् सारे जगत् को लाकर साधुजनों के पैरों में डाल देता है॥ ४॥ १॥ १२॥

सूही महला ४ ॥ तूं करता सभु किछु आपे जाणहि किआ तुधु पहि आखि सुणाईऐ ॥ बुरा भला तुधु सभु किछु सूझै जेहा को करे तेहा को पाईऐ ॥ १ ॥ मेरे साहिब तूं अंतर की बिधि जाणहि ॥ बुरा भला तुधु सभु किछु सूझै तुधु भावै तिवै बुलावहि ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सभु मोहु माइआ सरीरु हरि कीआ विचि देही मानुख भगति कराई ॥ इकना सतिगुरु मेलि सुखु देवहि इकि मनमुखि धंधु पिटाई ॥ २ ॥ सभु को तेरा तूं सभना का मेरे करते तुधु सभना सिरि लिखिआ लेखु ॥ जेही तूं नदरि करहि तेहा को होवै बिनु नदरी नाही को भेखु ॥ ३ ॥ तेरी वडिआई तूंहै जाणहि सभ तुधनो नित धिआए ॥ जिस नो तुधु भावै तिस नो तूं मेलहि जन नानक सो थाइ पाए ॥ ४ ॥ २ ॥ १३ ॥

हे ईश्वर! तू जगत् का रचयिता है और सब कुछ स्वयं ही जानता है। फिर मैं क्या कहकर तुझे सुनाऊँ? जीवों के किए हुए बुरे एवं भले कर्मों का तुझे सबकुछ पता लग जाता है। जैसा कर्म कोई करता है, वैसा ही फल वह पा लेता है॥ १॥ हे मेरे मालिक! तू सबके मन की भावना को जानता है। जीवों के बुरे एवं भले कर्मों का तुझे सब पता लग जाता है। जैसे तुझे भाता है, वैसे ही तू जीवों को कहकर बुलाता है॥ १॥ रहाउ॥ माया का मोह एवं मनुष्य का शरीर यह सबकुछ भगवान् ने ही बनाया है। वह मनुष्य से शरीर में से ही भक्ति करवाता है। किसी को वह सतगुरु से मिलाकर सुख देता है और किसी स्वेच्छाचारी को जगत् के धंधों में फँसाकर रखता है॥ २॥ हे मेरे करतार! यह सारे जीव तेरे ही पैदा किए हुए हैं और तू ही सबका मालिक है। तूने ही सब जीवों के माथे पर उनकी तकदीर का लेख लिखा है। जैसी दृष्टि तू किसी जीव पर करता है, वह वैसा ही बन जाता है। तेरी दृष्टि के बिना कोई भी अच्छा या बुरा नहीं बना॥ ३॥ तेरी महिमा को तू स्वयं ही जानता है और सब जीव नित्य तेरा ही ध्यान करते रहते हैं। नानक प्रार्थना करता है कि हे प्रभु! जिसे तू चाहता है, उसे अपने साथ मिला लेता है और वही तुझे स्वीकार हो जाता है॥ ४॥ २॥ १३॥

सूही महला ४ ॥ जिन कै अंतरि वसिआ मेरा हरि हरि तिन के सभि रोग गवाए ॥ ते मुकत भए जिन हरि नामु धिआइआ तिन पवितु परम पदु पाए ॥ १ ॥ मेरे राम हरि जन आरोग भए ॥ गुर बचनी जिना जपिआ मेरा हरि हरि तिन के हउमै रोग गए ॥ १ ॥ रहाउ ॥ ब्रहमा बिसनु महादेउ त्रै गुण रोगी विचि हउमै कार कमाई ॥ जिनि कीए तिसहि न चेतहि बपुड़े हरि गुरमुखि सोझी पाई ॥ २ ॥ हउमै रोगि सभु जगतु बिआपिआ तिन कउ जनम मरण दुखु भारी ॥ गुर परसादी को विरला छूटै तिसु जन कउ हउ बलिहारी ॥ ३ ॥ जिनि सिसटि साजी सोई हरि जाणै ता का रूपु अपारो ॥ नानक आपे वेखि हरि बिगसै गुरमुखि ब्रहम बीचारो ॥ ४ ॥ ३ ॥ १४ ॥

जिनके मन में मेरा परमात्मा बस गया है, उनके सब रोग दूर हो गए हैं। जिन्होंने हरि-नाम का ध्यान किया है, वे मुक्त हो गए हैं और उन्होंने पवित्र परमपद पा लिया है॥१॥ हे मेरे राम! भक्तजन अहम् एवं दुखों से आरोग्य हो गए हैं। जिन्होंने गुरु के वचन द्वारा परमात्मा का नाम जपा है, उनके अहंत्व के रोग दूर हो गए हैं॥ १॥ रहाउ॥ ब्रह्मा, विष्णु एवं शिवशंकर माया के त्रिगुणों-रजोगुण, तमोगुण एवं सतोगुण के रोगी हैं और वे अहंत्व में ही कार्य करते हैं। जिस परमात्मा ने उन्हें पैदा किया है, वे बेचारे उसे याद ही नहीं करते। परमात्मा की सूझ गुरु द्वारा

ही मिलती है॥ २॥ समूचा जगत् अहंत्व के रोग में फँसा हुआ है और उन्हें जन्म-मरण का भारी दुख लगा रहता है। कोई विरला पुरुष ही इससे छूटता है और मैं उस पर बलिहारी जाता हूँ॥ ३॥ जिसने यह सृष्टि-रचना की है, वह हरि स्वयं ही इस तथ्य को जानता है और उस का रूप अपार है। हे नानक! ईश्वर अपनी सृष्टि को देखकर स्वयं प्रसन्न होता है, यह ब्रह्म ज्ञान गुरु द्वारा ही प्राप्त होता है॥ ४॥ ३॥ १४॥

सूही महला ४ ॥ कीता करणा सरब रजाई किछु कीचै जे करि सकीऐ ॥ आपणा कीता किछू न होवै जिउ हरि भावै तिउ रखीऐ ॥ १ ॥ मेरे हरि जीउ सभु को तेरै वसि ॥ असा जोरु नाही जे किछु करि हम साकह जिउ भावै तिवै बखसि ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सभु जीउ पिंडु दीआ तुधु आपे तुधु आपे कारै लाइआ ॥ जेहा तूं हुकमु करहि तेहे को करम कमावै जेहा तुधु धुरि लिखि पाइआ ॥ २ ॥ पंच ततु करि तुधु स्रिसटि सभ साजी कोई छेवा करिउ जे किछु कीता होवै ॥ इकना सतिगुरु मेलि तूं बुझावहि इकि मनमुखि करहि सि रोवै ॥ ३ ॥ हरि की वडिआई हउ आखि न साका हउ मूरखु मुगधु नीचाणु ॥ जन नानक कउ हरि बखसि लै मेरे सुआमी सरणागति पइआ अजाणु ॥ ४ ॥ ४ ॥ १५ ॥ २४ ॥

जो यह सारा विश्व पैदा किया हुआ है, यह सब ईश्वर ने अपनी इच्छा से पैदा किया है। उसकी इच्छा से ही सबकुछ हो रहा है। हम तो ही कुछ कर सकते हैं यदि कुछ करने की समर्था हो। हमारा अपना किया कुछ भी नहीं होता। जैसे ईश्वर को उपयुक्त लगता है, वैसे ही हमें वह रखता है॥ १॥ हे मेरे श्री हरि! सबकुछ तेरे ही वश में है। हम में कोई जोर ही नहीं है कि हम कुछ कर सकें। जैसे तुझे ठीक लगता है, वैसे ही हम पर कृपा करो॥ १॥ रहाउ॥ प्राण एवं शरीर यह सबकुछ तूने स्वयं ही दिया है और तूने ही जगत् के कार्य में लगाया है। हे मालिक! जैसा तू हुक्म करता है, वैसा ही कोई जीव कर्म करता है। जैसा तूने किसी की तकदीर में लिख दिया है, वह वैसा ही पाता है॥ २॥ हे परमपिता! आकाश, पवन, अग्नि, जल एवं पृथ्वी-यह पाँच तत्व उत्पन्न करके तूने सृष्टि का निर्माण किया है। कोई छठा तत्व उत्पन्न करके बताए, यदि उसका किया कुछ हो सकता है। हे स्वामी! तू किसी को गुरु से मिलाकर सूझ प्रदान कर देता है और किसी को तू मनमुख बना देता है, जो दुखी होकर रोता रहता है॥ ३॥ मैं भगवान् की महिमा कथन नहीं कर सकता, क्योंकि मैं तो मूर्ख, मुग्ध एवं नाचीज हूँ। हे मेरे स्वामी! अपने सेवक नानक को क्षमा कर दो, मैं अनजान तेरी शरण में आ गया हूँ॥ ४॥ ४॥ १५॥ २४॥

रागु सूही महला ५ घरु १ १ओं सतिगुर प्रसादि ॥

बाजीगरि जैसे बाजी पाई ॥ नाना रूप भेख दिखलाई ॥ सांगु उतारि थंम्हिओ पासारा ॥ तब एको एकंकारा ॥ १ ॥ कवन रूप द्रिसटिओ बिनसाइओ ॥ कतहि गइओ उहु कत ते आइओ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जल ते ऊठहि अनिक तरंगा ॥ कनिक भूखन कीने बहु रंगा ॥ बीजु बीजि देखिओ बहु परकारा ॥ फल पाके ते एकंकारा ॥ २ ॥ सहस घटा महि एकु आकासु ॥ घट फूटे ते ओही प्रगासु ॥ भरम लोभ मोह माइआ विकार ॥ भ्रम छूटे ते एकंकार ॥ ३ ॥ ओहु अबिनासी बिनसत नाही ॥ ना को आवै ना को जाही ॥ गुरि पूरै हउमै मलु धोई ॥ कहु नानक मेरी परम गति होई ॥ ४ ॥ १ ॥

जैसे बाजीगर ने बाजी डाली और उसने तमाशा देखने वालों को अपने विभिन्न रूप एवं वेष दिखाए। जब उसने स्वांग उतार कर अपनी खेल का विस्तार बंद कर दिया तो वह केवल एक आप ही रह गया। वैसे ही परमात्मा सृष्टि का खेल दिखाकर जब बंद कर देता है तो वह एक स्वयं ही रह जाता है॥ १॥ उसके जो रूप दिखाई देते थे, वे सब लुप्त हो गए। वह कहाँ चला

गया है और कहाँ से आया था॥ १॥ रहाउ॥ जल में से अनेक तरंगें उत्पन्न होती हैं। सुनार ने अनेक प्रकार के स्वर्ण के आभूषण बनाए होते हैं। पेड़ का एक बीज बो कर देखा है कि वही बीज जड़ों, शाखाओं एवं पत्ते इत्यादि अनेक प्रकार का बन जाता है परन्तु फल पकने पर वह पुनः बोया हुआ बीज ही बन जाता है। इस तरह ही सृष्टि का मूल एक ईश्वर ही है॥ २॥ जल से भरे हुए हजारों घड़ों में एक ही सूर्य का अक्स दिखाई देता है। लेकिन घड़े फूटने पर सूर्य का वही एक प्रकाश नजर आता है। भ्रमवश जीवात्मा में लोभ, मोह रूपी माया के विकार पैदा हो जाते हैं लेकिन भ्रम का नाश होने से उसे एक परमात्मा ही नजर आता है॥ ३॥ ईश्वर अविनाशी है और वह कभी नाश नहीं होता। न ही वह जन्म लेता है और न ही उसकी मृत्यु होती है। पूर्ण गुरु ने मेरी अहंत्व रूपी मैल शुद्ध कर दी है, हे नानक! मेरी परमगति हो गई है॥ ४॥ १॥

सूही महला ५ ॥ कीता लोड़हि सो प्रभ होइ ॥ तुझ बिनु दूजा नाही कोइ ॥ जो जनु सेवे तिसु पूरन काज ॥ दास अपुने की राखहु लाज ॥ १ ॥ तेरी सरणि पूरन दइआला ॥ तुझ बिनु कवनु करे प्रतिपाला ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जलि थलि महीअलि रहिआ भरपूरि ॥ निकटि वसै नाही प्रभु दूरि ॥ लोक पतीआरै कछू न पाईऐ ॥ साचि लगै ता हउमै जाईऐ ॥ २ ॥ जिस नो लाइ लए सो लागै ॥ गिआन रतनु अंतरि तिसु जागै ॥ दुरमति जाइ परम पदु पाए ॥ गुर परसादी नामु धिआए ॥ ३ ॥ दुइ कर जोड़ि करउ अरदासि ॥ तुधु भावै ता आणहि रासि ॥ करि किरपा अपनी भगती लाइ ॥ जन नानक प्रभु सदा धिआइ ॥ ४ ॥ २ ॥

हे प्रभु! दुनिया में वही कुछ होता है, जो तू चाहता है। तेरे बिना दूसरा कोई समर्थ नहीं। जो व्यक्ति तेरी उपासना करता है, उसके सब कार्य संवर जाते हैं। अतः अपने दास की भी लाज रखो॥ १॥ हे पूर्ण दयालु! मैं तेरी शरण में आया हूँ, तेरे बिना मेरी कौन देखभाल करेगा॥ १॥ रहाउ॥ तू जल, धरती एवं गगन में हर जगह मौजूद है। हे प्रभु! तू कहीं दूर नहीं, तू तो सबके निकट ही रहता है। लोगों को खुश करने से कुछ भी हासिल नहीं होता। यदि इन्सान सत्य के साथ लग जाए तो उसका अहंत्व समाप्त हो जाता है॥ २॥ जिसे परमात्मा स्वयं अपने साथ लगाता है, वही उससे लगता है। रत्न जैसा अमूल्य ज्ञान उसके मन में जाग जाता है। उसकी दुर्मति नाश हो जाती है और वह परमपद पा लेता है। गुरु की कृपा से वह परमात्मा के नाम का ध्यान करता रहता है॥ ३॥ हे प्रभु! मैं अपने दोनों हाथ जोड़कर तेरे समक्ष प्रार्थना करता हूँ। जब तुझे अच्छा लगता है, तब तू मेरे कार्य संवार देता है। कृपा करके अपनी भक्ति में लगाकर रख। नानक तो सदैव ही प्रभु का ध्यान करता रहता है॥ ४॥ २॥

सूही महला ५ ॥ धनु सोहागनि जो प्रभू पछानै ॥ मानै हुकमु तजै अभिमानै ॥ प्रिअ सिउ राती रलीआ मानै ॥ १ ॥ सुनि सखीए प्रभ मिलण नीसानी ॥ मनु तनु अरपि तजि लाज लोकानी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सखी सहेली कउ समझावै ॥ सोई कमावै जो प्रभ भावै ॥ सा सोहागणि अंकि समावै ॥ २ ॥ गरबि गहेली महलु न पावै ॥ फिरि पछुतावै जब रैणि बिहावै ॥ करमहीणि मनमुखि दुखु पावै ॥ ३ ॥ बिनउ करी जे जाणा दूरि ॥ प्रभु अबिनासी रहिआ भरपूरि ॥ जनु नानकु गावै देखि हदूरि ॥ ४ ॥ ३ ॥

वह सुहागिन धन्य है, जो अपने पति-प्रभु को पहचानती है। वह अपने पति-प्रभु का हुक्म मानती है और अभिमान को त्याग देती है। वह अपने प्रिय के प्रेम में मग्न रहकर आनंद प्राप्त करती है॥ १॥ हे मेरी सखी! प्रभु से मिलन की निशानी सुन। लोक-लाज छोड़कर अपना मन-तन प्रभु को अर्पण कर दे॥ १॥ रहाउ॥ सखी अपनी सहेली को समझाती है कि वह वही कार्य करे

जो प्रभु को अच्छा लगे। फिर वह सुहागिन प्रभु-चरणों में समा जाती है॥ २॥ अहंकार में फँसी जीव-स्त्री प्रभु को नहीं पा सकती। जब उसकी जीवन रूपी रात्रि बीत जाती है तो फिर वह पछतावा करती है। कर्महीन मनमुखी जीव-स्त्री बहुत दुख प्राप्त करती है॥ ३॥ मैं प्रभु के समक्ष तो ही विनती करूँ, यदि मैं उसे कहीं दूर समझूँ। वह अविनाशी प्रभु तो सर्वव्यापक है। नानक उसे अपने आसपास देखकर उसका ही गुणगान करता है॥ ४॥ ३॥

सूही महला ५ ॥ ग्रिहु वसि गुरि कीना हउ घर की नारि ॥ दस दासी करि दीनी भतारि ॥ सगल समग्री मै घर की जोड़ी ॥ आस पिआसी पिर कउ लोड़ी ॥ १ ॥ कवन कहा गुन कंत पिआरे ॥ सुघड़ सरूप दइआल मुरारे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सतु सीगारु भउ अंजनु पाइआ ॥ अंम्रित नामु तंबोलु मुखि खाइआ ॥ कंगन बसत्र गहने बने सुहावे ॥ धन सभ सुख पावै जां पिरु घरि आवै ॥ २ ॥ गुण कामण करि कंतु रीझाइआ ॥ वसि करि लीना गुरि भरमु चुकाइआ ॥ सभ ते ऊचा मंदरु मेरा ॥ सभ कामणि तिआगी प्रिउ प्रीतमु मेरा ॥ ३ ॥ प्रगटिआ सूरु जोति उजीआरा ॥ सेज विछाई सरध अपारा ॥ नव रंग लालु सेज रावण आइआ ॥ जन नानक पिर धन मिलि सुखु पाइआ ॥ ४ ॥ ४ ॥

हे सखी ! गुरु ने मेरा हृदय-घर मेरे वश में कर दिया है और अब मैं इस हृदय-घर की स्वामिनी बन चुकी हूँ। मेरे पति-प्रभु ने मेरी दसों इन्द्रियों को मेरी दासियाँ बना दिया है। मैंने अपने हृदय-घर की सारी सामग्री इकट्ठी कर ली है। अब मैं मिलन की तीव्र लालसा से पति-प्रभु को पाना चाहती हूँ॥ १॥ मैं उस प्यारे प्रभु के कौन-कौन से गुण व्यक्त करूँ ? वह मुरारि तो बड़ा चतुर, सुन्दर रूप वाला एवं बड़ा ही दयालु है॥ १॥ रहाउ॥ मैंने सत्य का शृंगार किया है और उसके प्रेम-भय का सुरमा अपनी आँखों में डाल लिया है। मैंने अमृतमयी नाम रूपी पान को अपने मुख से खाया है। अब मेरे (सत्य के शृंगार से सुसज्जित) कंगन, वस्त्र एवं आभूषण बहुत सुन्दर लगते हैं। हे सखी ! जीव-स्त्री तो ही सर्व सुख पाती है, जब उसका पति-प्रभु उसके हृदय-घर में आ बसता है॥ २॥ मैंने शुभ गुणों का जादू-टोना करके अपने पति-परमेश्वर को प्रसन्न कर लिया है। गुरु ने मेरा भ्रम दूर कर दिया तो ही मैंने उसे अपने वश में कर लिया। मेरा हृदय रूपी मन्दिर सर्वोत्तम बन गया है। मेरे प्रियतम-प्रभु ने अन्य सब जीव-स्त्रियों को छोड़कर मुझे अपना बना लिया है॥ ३॥ जब प्रभु रूपी सूर्य मेरे हृदय में उदय हो गया तो उसकी ज्योति का उजाला हो गया। नवरंग प्रियतम प्रभु रमण करने के लिए मेरी हृदय रूपी सेज पर आ गया है। हे नानक ! जीव-स्त्री ने पति-प्रभु से मिलकर सुख पा लिया है॥ ४॥ ४॥

सूही महला ५ ॥ उमकिओ हीउ मिलन प्रभ ताई ॥ खोजत चरिओ देखउ प्रिअ जाई ॥ सुनत सदेसरो प्रिअ ग्रिहि सेज विछाई ॥ भ्रमि भ्रमि आइओ तउ नदरि न पाई ॥ १ ॥ किन बिधि हीअरो धीरै निमानो ॥ मिलु साजन हउ तुझु कुरबानो ॥ १ ॥ रहाउ ॥ एका सेज विछी धन कंता ॥ धन सूती पिरु सद जागंता ॥ पीओ मदरो धन मतवंता ॥ धन जागै जे पिरु बोलंता ॥ २ ॥ भई निरासी बहुतु दिन लागे ॥ देस दिसंतर मै सगले झागे ॥ खिनु रहनु न पावउ बिनु पग पागे ॥ होइ क्रिपालु प्रभ मिलह सभागे ॥ ३ ॥ भइओ क्रिपालु सतसंगि मिलाइआ ॥ बूझी तपति घरहि पिरु पाइआ ॥ सगल सीगार हुणि मुझहि सुहाइआ ॥ कहु नानक गुरि भरमु चुकाइआ ॥ ४ ॥ जह देखा तह पिरु है भाई ॥ खोल्हिओ कपाटु ता मनु ठहराई ॥ १ ॥ रहाउ दूजा ॥ ५ ॥

प्रभु-मिलन के लिए मेरा हृदय चाव से भर गया और मैं उसे खोजने के लिए चल पड़ी हूँ ताकि जाकर अपने प्रियवर को देख सकूँ। अपने प्रिय-प्रभु के आगमन का संदेश सुनकर मैंने

अपने हृदय रूपी घर में सेज बिछा दी। मैं भटक-भटक कर लौट आई हूँ परन्तु वह मुझे दिखाई नहीं दिया॥ १॥ किस विधि द्वारा मेरे इस मायूस हृदय को धीरज होवे ? हे मेरे साजन ! मुझे आकर मिलो, मैं तुझ पर कुर्बान जाती हूँ॥ १॥ रहाउ॥ जीव-स्त्री एवं पति-प्रभु के लिए एक सेज बिछी हुई है। जीव-स्त्री अज्ञानता की निद्रा में सोई रहती है मगर पति-प्रभु हमेशा ज्ञान में जागता रहता है। वह मोह-माया रूपी मदिरा-पान करके मतवाली हो गई है। यदि पति-प्रभु उसे बोलकर जगा दे तो ही वह अज्ञानता की निद्रा से जागती है॥ २॥ हे सखी ! उस पति-प्रभु को खोजते हुए बहुत दिन बीत गए हैं और अब मैं निराश हो गई हूँ। मैंने देश एवं प्रदेश खोज कर देख लिए हैं। मैं उसके चरणों में पड़े बिना एक क्षण भर भी नहीं रह सकती। सौभाग्य से यदि प्रभु कृपालु हो जाए तो वह मिल जाता है॥ ३॥ प्रभु ने कृपालु होकर मुझे सत्संग में मिला दिया है। मेरी विरह की जलन बुझ गई है, चूंकि मैंने हृदय-घर में ही पति-प्रभु को पा लिया है। अब मुझे सारा श्रृंगार सुन्दर लगता है। हे नानक ! गुरु ने मेरा भ्रम मिटा दिया है॥ ४॥ हे सखी ! अब मैं जिधर भी देखती हूँ, उधर ही मुझे पति-प्रभु नजर आता है। गुरु ने मेरा कपाट खोल दिया तो मेरा मन भटकने से हट गया॥ १॥ रहाउ दूसरा॥ ५॥

सूही महला ५ ॥ किआ गुण तेरे सारि सम्हाली मोहि निरगुन के दातारे ॥ बै खरीदु किआ करे चतुराई इहु जीउ पिंडु सभु थारे ॥ १ ॥ लाल रंगीले प्रीतम मनमोहन तेरे दरसन कउ हम बारे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ प्रभु दाता मोहि दीनु भेखारी तुम्ह सदा सदा उपकारे ॥ सो किछु नाही जि मै ते होवै मेरे ठाकुर अगम अपारे ॥ २ ॥ किआ सेव कमावउ किआ कहि रीझावउ बिधि कितु पावउ दरसारे ॥ मिति नही पाईऐ अंतु न लहीऐ मनु तरसै चरनारे ॥ ३ ॥ पावउ दानु ढीठु होइ मागउ मुखि लागै संत रेनारे ॥ जन नानक कउ गुरि किरपा धारी प्रभि हाथ देइ निसतारे ॥ ४ ॥ ६ ॥

हे मुझ गुणविहीन के दाता ! मैं तेरे कौन-कौन से गुण याद करके तेरी आराधना करूँ ? मेरे ये प्राण एवं शरीर सब तेरे ही दिए हुए है, फिर मैं तेरा बेखरीद सेवक तेरे आगे क्या चतुराई कर सकता हूँ॥ १॥ हे मेरे प्रियतम प्यारे, रंगीले मनमोहन ! मैं तेरे दर्शन पर कुर्बान जाता हूँ॥ १॥ रहाउ॥ हे प्रभु ! तू मेरा दाता है परन्तु मैं तेरे द्वार का दीन भिखारी हूँ। तू सदा-सर्वदा मुझ पर उपकार करता रहता है। हे मेरे ठाकुर ! तू अगम्य एवं अपरंपार है। कोई ऐसा कार्य नहीं है, जो मुझ से हो सके॥ २॥ मैं तेरी कौन-सी सेवा करूँ और क्या कहकर तुझे प्रसन्न करूँ? मैं किस विधि द्वारा तेरे दर्शन करूँ। तेरा विस्तार नहीं पाया जा सकता और तेरा अंत नहीं मिल सकता। तेरे चरणों में रहने के लिए मेरा मन तरसता रहता है॥ ३॥ मैं ढीठ होकर तुझसे यही दान माँगता हूँ कि तेरे संतों की चरण-धूलि मेरे मुँह को लगे। नानक पर गुरु ने कृपा धारण की है और प्रभु ने हाथ देकर उसका निस्तारा कर दिया है॥ ४॥ ६॥

सूही महला ५ घरु ३ १ओं सतिगुर प्रसादि ॥

सेवा थोरी मागनु बहुता ॥ महलु न पावै कहतो पहुता ॥ १ ॥ जो प्रिअ माने तिन की रीसा ॥ कूड़े मूरख की हाठीसा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ भेख दिखावै सचु न कमावै ॥ कहतो महली निकटि न आवै ॥ २ ॥ अतीतु सदाए माइआ का माता ॥ मनि नही प्रीति कहै मुखि राता ॥ ३ ॥ कहु नानक प्रभ बिनउ सुनीजै ॥ कुचलु कठोरु कामी मुकतु कीजै ॥ ४ ॥ दरसन देखे की वडिआई ॥ तुम्ह सुखदाते पुरख सुभाई ॥ १ ॥ रहाउ दूजा ॥ १ ॥ ७ ॥

आदमी सेवा तो थोड़ी करता है परन्तु उसकी मांग बहुत ज्यादा है। वह मंजिल को नहीं पाता परन्तु झूठी घोषणा करता है कि वह उसके पास पहुँच गया है॥ १॥ जिन्हें प्रिय-प्रभु ने स्वीकार

कर लिया है, वह उनकी बराबरी करता है। यह केवल झूठे एवं मूर्ख आदमी का निरा हठ ही है॥ १॥ रहाउ॥ झूठा आदमी धर्मी होने का पाखण्ड ही दिखाता है और सत्य की साधना नहीं करता। चाहे वह इस तरह झूठा दावा करता है परन्तु परमात्मा के चरणों के निकट नहीं आता॥ २॥ वह माया में ही मस्त रहता है लेकिन स्वयं को विरक्त कहलाता है। उसके मन में प्रभु से प्रेम नहीं है लेकिन व्यर्थ ही मुँह से कहलाता रहता है कि वह प्रभु के प्रेम में मग्न है॥ ३॥ नानक का कथन है कि हे प्रभु ! मेरी एक विनती सुन लो, मुझ कुकर्मी, निर्दयी एवं कामी आदमी को मुक्त कर दीजिए॥ ४॥ तेरे दर्शन-दीदार की मुझे यह बड़ाई मिले। हे सुखदाता प्रभु ! तू मेरा शुभचिंतक है॥ १॥ रहाउ दूसरा॥ १॥ ७॥

सूही महला ५ ॥ बुरे काम कउ ऊठि खलोइआ ॥ नाम की बेला पै पै सोइआ ॥ १ ॥ अउसरु अपना बूझै न इआना ॥ माइआ मोह रंगि लपटाना ॥ १ ॥ रहाउ ॥ लोभ लहरि कउ बिगसि फूलि बैठा ॥ साध जना का दरसु न डीठा ॥ २ ॥ कबहू न समझै अगिआनु गवारा ॥ बहुरि बहुरि लपटिओ जंजारा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ बिखै नाद करन सुणि भीना ॥ हरि जसु सुनत आलसु मनि कीना ॥ ३ ॥ द्रिसटि नाही रे पेखत अंधे ॥ छोडि जाहि झूठे सभि धंधे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ कहु नानक प्रभ बखस करीजै ॥ करि किरपा मोहि साधसंगु दीजै ॥ ४ ॥ तउ किछु पाईऐ जउ होईऐ रेना ॥ जिसहि बुझाए तिसु नामु लैना ॥ १ ॥ रहाउ ॥ २ ॥ ८ ॥

बुरे काम के लिए तो आदमी शीघ्र ही उठकर खड़ा हो गया, परन्तु परमात्मा का नाम जपने के शुभ समय पर बेफिक्र होकर सोया रहा॥ १॥ वह ज्ञानहीन अपने जीवन के सुअवसर को नहीं समझता। वह माया-मोह के रंग से ही लिपटा हुआ है॥ १॥ रहाउ॥ वह लोभ की लहरों में खुश होकर गर्व में बैठा हुआ है। वह साधुजनों के कभी दर्शन नहीं करता॥ २॥ वह अज्ञानी एवं गंवार कभी भी नहीं समझता और बार-बार दुनिया के जंजाल में फँसा रहता है॥१॥ रहाउ॥ वह अपने कानों से विषय-विकारों के गीत सुनकर बड़ा खुश होता रहा लेकिन हरि-यश सुनने में मन में आलस्य करता रहा॥ ३॥ हे अंधे आदमी ! तू अपनी आँखों से क्यों नहीं देखता कि एक दिन तू भी दुनिया के सारे झूठे धंधे छोड़कर यहाँ से चला जाएगा॥ १॥ रहाउ॥ नानक का कथन है कि हे प्रभु ! मुझे क्षमा कर दीजिए और कृपा करके साधुओं की संगति प्रदान कर दें॥ ४॥ जिंदगी में तो ही कुछ प्राप्त होता है जब संतों की चरण-धूलि बन जाते हैं। जिसे परमात्मा सूझ प्रदान करता है, वही सत्संग में प्रभु का नाम जपता है॥ १॥ रहाउ॥ २॥ ८॥

सूही महला ५ ॥ घर महि ठाकुरु नदरि न आवै ॥ गल महि पाहणु लै लटकावै ॥ १ ॥ भरमे भूला साकतु फिरता ॥ नीरु बिरोलै खपि खपि मरता ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जिसु पाहण कउ ठाकुरु कहता ॥ ओहु पाहणु लै उस कउ डुबता ॥ २ ॥ गुनहगार लूण हरामी ॥ पाहण नाव न पारगिरामी ॥ ३ ॥ गुर मिलि नानक ठाकुरु जाता ॥ जलि थलि महीअलि पूरन बिधाता ॥ ४ ॥ ३ ॥ ९ ॥

अज्ञानी को हृदय-घर में मौजूद ठाकुर नजर नहीं आता और अपने गले में पत्थर की मूर्ति को देवता मानकर लटका लेता है॥ १॥ मायावी जीव भ्रम में पड़कर भटकता ही रहता है। पत्थर की मूर्ति की पूजा करना तो व्यर्थ ही जल का मंथन करने के समान है। अतः वह दुख-तकलीफ में ही मरता रहता है॥ १॥ रहाउ॥ वह जिस पत्थर को अपना ठाकुर कहता है, वह पत्थर ही उसे अपने साथ लेकर जल में डूब जाता है॥ २॥ हे गुनहगार एवं नमकहरामी जीव ! पत्थर की नाव आदमी को दरिया से पार नहीं कर सकती॥ ३॥ हे नानक ! गुरु को मिलकर ठाकुर की जानकारी हुई है। वह विधाता तो जल, धरती एवं आसमान में हर जगह मौजूद है॥ ४॥ ३॥ ९॥

सूही महला ५ ॥ लालनु राविआ कवन गती री ॥ सखी बतावहु मुझहि मती री ॥ १ ॥ सूहब सूहब सूहवी ॥ अपने प्रीतम कै रंगि रती ॥ १ ॥ रहाउ ॥ पाव मलोवउ संगि नैन भतीरी ॥ जहा पठावहु जांउ तती री ॥ २ ॥ जप तप संजम देउ जती री ॥ इक निमख मिलावहु मोहि प्रानपती री ॥ ३ ॥ माणु ताणु अहंबुधि हती री ॥ सा नानक सोहागवती री ॥ ४ ॥ ४ ॥ १० ॥

अरी सखी ! मुझे यह मति बताओ कि तूने किस विधि द्वारा प्यारे-प्रभु के साथ रमण किया है॥ १॥ तू अपने प्रियतम के प्रेम-रंग में रंगी हुई है और तू लाल रंग वाली बन गई है॥ १॥ रहाउ॥ मैं अपनी आँखों की बरौनी से तेरे पाँव मलूँगी। तू जिधर भी मुझे भेजेगी, मैं उधर ही चली जाऊँगी॥ २॥ मैं जप, तप, संयम एवं यतित्व सब कुछ दे दूँगी, यदि एक निमेष के लिए मेरे प्राणपति से मुझे मिला दो॥ ३॥ हे नानक ! वही जीव-स्त्री सुहागिन है, जिसने अपना अभिमान, बल एवं अहंबुद्धि नाश कर दी है॥ ४॥ ४॥ १०॥

सूही महला ५ ॥ तूं जीवनु तूं प्रान अधारा ॥ तुझ ही पेखि पेखि मनु साधारा ॥ १ ॥ तूं साजनु तूं प्रीतमु मेरा ॥ चितहि न बिसरहि काहू बेरा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ बै खरीदु हउ दासरो तेरा ॥ तूं भारो ठाकुरु गुणी गहेरा ॥ २ ॥ कोटि दास जा कै दरबारे ॥ निमख निमख वसै तिन्ह नाले ॥ ३ ॥ हउ किछु नाही सभु किछु तेरा ॥ ओति पोति नानक संगि बसेरा ॥ ४ ॥ ५ ॥ ११ ॥

हे प्रभु ! तू मेरा जीवन है और तू ही मेरे प्राणों का आधार है। तुझे ही देख-देखकर मेरे मन को धीरज मिलता है॥ १॥ तू मेरा साजन है और तू ही मेरा प्रियतम है। किसी भी वक्त तू मेरे चित्त से नहीं भूलता॥ १॥ रहाउ॥ मैं तेरा खरीदा हुआ दास हूँ। तू मेरा महान् ठाकुर है और गुणों का गहरा सागर है॥ २॥ जिस परमात्मा के दरबार में करोड़ों ही दास रहते हैं, वह स्वयं भी हर क्षण उनके साथ ही बसता है॥ ३॥ हे प्रभु ! मैं तो कुछ भी नहीं हूँ, मुझे सबकुछ तेरा ही दिया हुआ है। हे नानक ! ताने-बाने की तरह परमात्मा का सब के साथ बसेरा है॥ ४॥ ५॥ ११॥

सूही महला ५ ॥ सूख महल जा के ऊच दुआरे ॥ ता महि वासहि भगत पिआरे ॥ १ ॥ सहज कथा प्रभ की अति मीठी ॥ विरलै काहू नेत्रहु डीठी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ तह गीत नाद अखारे संगा ॥ ऊहा संत करहि हरि रंगा ॥ २ ॥ तह मरणु न जीवणु सोगु न हरखा ॥ साच नाम की अंम्रित वरखा ॥ ३ ॥ गुहज कथा इह गुर ते जाणी ॥ नानकु बोलै हरि हरि बाणी ॥ ४ ॥ ६ ॥ १२ ॥

जिस परमात्मा के बड़े सुखदायक महल एवं ऊँचे द्वार हैं, वहाँ पर प्यारे भक्त निवास करते हैं॥ १॥ प्रभु की सहज कथा बड़ी मीठी है और किसी विरले पुरुष ने ही इसे अपने नेत्रों से देखा है ॥१॥ रहाउ॥ वहाँ वैकुण्ठ में सत्संग करने के लिए मंच है, जहाँ प्रभु की महिमा के गीत गाए जाते हैं और अनहद नाद गूँजते रहते हैं। वहाँ संतजन हरि रंग में आनंद प्राप्त करते हैं॥ २॥ वहाँ न मृत्यु है, न जीवन है, और न ही शोक एवं हर्ष है। वहाँ तो सत्य-नाम की अमृत-वर्षा होती रहती है॥ ३॥ यह गुप्त एवं रहस्यमयी कथा मैंने गुरु से जानी है। नानक तो हरि की वाणी ही बोलता रहता है॥ ४॥ ६॥ १२॥

सूही महला ५ ॥ जा कै दरसि पाप कोटि उतारे ॥ भेटत संगि इहु भवजलु तारे ॥ १ ॥ ओइ साजन ओइ मीत पिआरे ॥ जो हम कउ हरि नामु चितारे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जा का सबदु सुनत सुख सारे ॥ जा की टहल जमदूत बिदारे ॥ २ ॥ जा की धीरक इसु मनहि सधारे ॥ जा कै सिमरणि मुख उजलारे ॥ ३ ॥ प्रभ के सेवक प्रभि आपि सवारे ॥ सरणि नानक तिन्ह सद बलिहारे ॥ ४ ॥ ७ ॥ १३ ॥

जिनके दर्शन करने से करोड़ों ही पाप दूर हो जाते हैं और जिनके मिलने एवं संगति से भवसागर से पार हुआ जा सकता है॥ १॥ केवल वही मेरे साजन एवं वही मेरे प्यारे मित्र हैं, जो हमें भगवान का नाम याद कराते हैं॥ १॥ रहाउ॥ जिनका शब्द सुनने से सर्व सुख प्राप्त होता है और जिनकी सेवा करने से यमदूत भी नाश हो जाते हैं॥ २॥ जिनका धीरज इस मन को हौसला देता है, जिनके सिमरन से मुख उज्ज्वल हो जाता है॥ ३॥ ऐसे प्रभु के सेवक प्रभु ने स्वयं ही संवार दिए हैं। नानक उनकी शरण में है और उन पर हमेशा बलिहारी जाता है॥ ४॥ ७॥ १३॥

सूही महला ५ ॥ रहणु न पावहि सुरि नर देवा ॥ ऊठि सिधारे करि मुनि जन सेवा ॥ १ ॥ जीवत पेखे जिन्ही हरि हरि धिआइआ ॥ साधसंगि तिन्ही दरसनु पाइआ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ बादिसाह साह वापारी मरना ॥ जो दीसै सो कालहि खरना ॥ २ ॥ कूड़ै मोहि लपटि लपटाना ॥ छोडि चलिआ ता फिरि पछुताना ॥ ३ ॥ क्रिपा निधान नानक कउ करहु दाति ॥ नामु तेरा जपी दिनु राति ॥ ४ ॥ ८ ॥ १४ ॥

सृष्टि में सदा के लिए तो देवगण, मानव एवं बड़े-बड़े देवता भी नहीं रह सके। बड़े-बड़े मुनिजन भी परमात्मा की उपासना करके स्वर्ग सिधार गए॥ १॥ जीवित तो वही देखे गए, जिन्होंने भगवान् का ध्यान किया है। साधुओं की संगति में उन्होंने ही भगवान् के दर्शन प्राप्त किए हैं॥ १॥ रहाउ॥ बादशाह, साहूकार एवं व्यापारी ने भी मृत्यु को ही प्राप्त होना है। जो दुनिया में दिखाई दे रहे हैं, उन्होंने भी एक न एक दिन काल का ग्रास बनना है॥ २॥ इन्सान झूठे मोह में फँसकर लिपटा रहता है। जब वह सबकुछ छोड़कर चल देता है तो फिर पछताता है॥ ३॥ हे कृपानिधान! नानक को यह देन प्रदान करो कि वह दिन-रात तेरा ही नाम जपता रहे॥ ४॥ ८॥ १४॥

सूही महला ५ ॥ घट घट अंतरि तुमहि बसारे ॥ सगल समग्री सूति तुमारे ॥ १ ॥ तूं प्रीतम तूं प्रान अधारे ॥ तुम ही पेखि पेखि मनु बिगसारे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ अनिक जोनि भ्रमि भ्रमि भ्रमि हारे ॥ ओट गही अब साध संगारे ॥ २ ॥ अगम अगोचरु अलख अपारे ॥ नानकु सिमरै दिनु रैनारे ॥ ३ ॥ ९ ॥ १५ ॥

हे जग के मालिक! हरेक शरीर में तू ही बसता है और सृष्टि रूपी सारी सामग्री तेरे धागे में पिरोई हुई है॥ १॥ तू मेरा प्रियतम है और तू ही मेरे प्राणों का आधार है। तुझे देख-देखकर मेरा मन फूलों की तरह खिला रहता है॥ १॥ रहाउ॥ अनेक योनियों में भटक-भटक कर हार चुका हूँ। अब मैंने साधुओं की संगति की ओट ली है॥ २॥ एक परमात्मा जो अगम्य, अगोचर, अलक्ष्य एवं अपरंपार है, नानक दिन-रात उसका ही सिमरन करता रहता है॥ ३॥ ९॥ १५॥

सूही महला ५ ॥ कवन काज माइआ वडिआई ॥ जा कउ बिनसत बार न काई ॥ १ ॥ इहु सुपना सोवत नही जानै ॥ अचेत बिवसथा महि लपटानै ॥ १ ॥ रहाउ ॥ महा मोहि मोहिओ गावारा ॥ पेखत पेखत ऊठि सिधारा ॥ २ ॥ ऊच ते ऊच ता का दरबारा ॥ कई जंत बिनाहि उपारा ॥ ३ ॥ दूसर होआ ना को होई ॥ जपि नानक प्रभ एको सोई ॥ ४ ॥ १० ॥ १६ ॥

उस माया से मिली बड़ाई आदमी के किस काम की है? जिसका नाश होते कोई देरी नहीं लगती॥ १॥ यह माया की बड़ाई एक स्वप्न है परन्तु अज्ञानता की निद्रा में सोया हुआ आदमी यह नहीं जानता कि वह एक स्वप्न देख रहा है। अचेतावस्था में वह माया से ही लिपटा रहता

है॥ १॥ रहाउ॥ माया के महा मोह ने गंवार आदमी को मुग्ध कर लिया है। सबके देखते-देखते ही वह उठकर दुनिया से चला जाता है॥ २॥ उस परमात्मा का दरबार सर्वोपरि है। उसने कई जीवों को नाश कर पैदा भी किया है॥ ३॥ उस जैसा सर्वशक्तिमान न कोई हुआ है और न ही कोई होगा। हे नानक! उस एक प्रभु का ही जाप करते रहो॥ ४॥ १०॥ १६॥

सूही महला ५ ॥ सिमरि सिमरि ता कउ हउ जीवा ॥ चरण कमल तेरे धोइ धोइ पीवा ॥ १ ॥ सो हरि मेरा अंतरजामी ॥ भगत जना कै संगि सुआमी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सुणि सुणि अंम्रित नामु धिआवा ॥ आठ पहर तेरे गुण गावा ॥ २ ॥ पेखि पेखि लीला मनि आनंदा ॥ गुण अपार प्रभ परमानंदा ॥ ३ ॥ जा कै सिमरनि कछु भउ न बिआपै ॥ सदा सदा नानक हरि जापै ॥ ४ ॥ ११ ॥ १७ ॥

मैं तो उसका सिमरन करके ही जीता हूँ। हे ईश्वर! मैं तेरे सुन्दर चरण-कमल धो-धोकर पीता हूँ॥ १॥ मेरा हरि बड़ा अन्तर्यामी है। वह स्वामी तो भक्तजनों के साथ ही रहता है॥ १॥ रहाउ॥ हे प्रभु जी! मैं तेरा अमृत नाम सुन-सुनकर तेरा ही ध्यान करता रहता हूँ और आठ प्रहर तेरा ही गुणगान करता रहता हूँ॥ २॥ तेरी अद्‌भुत लीला देख-देखकर मन में आनंद बना रहता है। हे परमानंद प्रभु! तेरे गुण अपार हैं॥ ३॥ हे नानक! जिसका सिमरन करने से कोई भय नहीं लगता, मैं तो सदैव उस हरि को ही जपता रहता हूँ॥ ४॥ ११॥ १७॥

सूही महला ५ ॥ गुर कै बचनि रिदै धिआनु धारी ॥ रसना जापु जपउ बनवारी ॥ १ ॥ सफल मूरति दरसन बलिहारी ॥ चरण कमल मन प्राण अधारी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ साधसंगि जनम मरण निवारी ॥ अंम्रित कथा सुणि करन अधारी ॥ २ ॥ काम क्रोध लोभ मोह तजारी ॥ द्रिड़ु नाम दानु इसनानु सुचारी ॥ ३ ॥ कहु नानक इहु ततु बीचारी ॥ राम नाम जपि पारि उतारी ॥ ४ ॥ १२ ॥ १८ ॥

गुरु के वचन द्वारा हृदय में भगवान् का ही ध्यान धारण करता हूँ। अपनी जीभ से परमात्मा का जाप ही जपता हूँ॥ १॥ उसका रूप फलदायक है, मैं तो उसके दर्शन पर बलिहारी हूँ। उसके चरण-कमल मेरे मन एवं प्राणों का आधार है॥ १॥ रहाउ॥ साधुओं की संगति में मैंने जन्म-मरण का निवारण कर लिया है। कानों से हरि की अमृत कथा को सुनकर उसे अपने जीवन का आसरा बना लिया है॥ २॥ काम, क्रोध, लोभ एवं मोह को छोड़ दिया है। जीवन में परमात्मा का नाम, दान, स्नान एवं शुभ आचरण को दृढ़ किया है॥ ३॥ हे नानक! मैंने इसी तत्व पर विचार किया है कि राम का नाम जपने से ही भवसागर से पार हुआ जा सकता है॥४॥ १२॥ १८॥

सूही महला ५ ॥ लोभि मोहि मगन अपराधी ॥ करणहार की सेव न साधी ॥ १ ॥ पतित पावन प्रभ नाम तुमारे ॥ राखि लेहु मोहि निरगुनीआरे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ तूं दाता प्रभ अंतरजामी ॥ काची देह मानुख अभिमानी ॥ २ ॥ सुआद बाद ईरख मद माइआ ॥ इन संगि लागि रतन जनमु गवाइआ ॥ ३ ॥ दुख भंजन जगजीवन हरि राइआ ॥ सगल तिआगि नानकु सरणाइआ ॥ ४ ॥ १३ ॥ १९ ॥

हम तुच्छ जीव लोभ एवं मोह में ही मग्न हैं, और बड़े अपराधी हैं, क्योंकि जिस परमपिता ने हमें पैदा किया है, उसकी उपासना ही नहीं की॥ १॥ हे प्रभु! तुम्हारा नाम पतितपावन है, मुझ गुणविहीन को अपनी शरण में रख लो॥ १॥ रहाउ॥ हे अन्तर्यामी प्रभु! एक तू ही दाता है। यह शरीर तो नश्वर है, पर हम मनुष्य व्यर्थ ही अभिमानी बने हुए हैं॥ २॥ दुनिया के स्वाद, वाद-विवाद, ईर्ष्या एवं माया के नशे में लगकर यह अमूल्य जीवन व्यर्थ ही गंवा दिया है॥ ३॥

हे दुखनाशक! हे जग के जीवन! हे श्रीहरि! सबकुछ त्याग कर नानक तेरी ही शरण में आया है॥ ४॥ १३॥ १६॥

सूही महला ५ ॥ पेखत चाखत कहीअत अंधा सुनीअत सुनीऐ नाही ॥ निकटि वसतु कउ जाणै दूरे पापी पाप कमाही ॥ १ ॥ सो किछु करि जितु छुटहि परानी ॥ हरि हरि नामु जपि अंम्रित बानी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ घोर महल सदा रंगि राता ॥ संगि तुम्हारै कछू न जाता ॥ २ ॥ रखहि पोचारि माटी का भांडा ॥ अति कुचील मिलै जम डांडा ॥ ३ ॥ काम क्रोधि लोभि मोहि बाधा ॥ महा गरत महि निघरत जाता ॥ ४ ॥ नानक की अरदासि सुणीजै ॥ डूबत पाहन प्रभ मेरे लीजै ॥ ५ ॥ १४ ॥ २० ॥

अपनी आँखों से सबकुछ देखता हुआ भी आदमी अन्धा ही कहलाता है। वह सबकुछ सुनता है, फिर भी बहरा ही बना हुआ है। निकट पड़ी वस्तु को वह दूर ही जानता है और वह पापी पाप ही करता रहता है॥ १॥ वह कौन-सा कार्य है, जिससे प्राणी पापों से छूट सकता है? सदैव ही भगवान् का नाम स्मरण करो और उसकी अमृत-वाणी जपते रहो॥ १॥ रहाउ॥ प्राणी हमेशा ही सुन्दर घोड़ों एवं भव्य महल के मोह में मग्न रहता है। हे प्राणी! जगत् को छोड़ते समय तेरे साथ तो कुछ भी जाने वाला नहीं है॥ २॥ यह शरीर तो मिट्टी का बर्तन है अर्थात् नाशवान है, मगर तू इसे सुगन्धित पदार्थों से सजा कर रखता है। किन्तु तेरा यह शरीर भीतर से पापों की मैल से भरा होने के कारण बहुत ही गंदा है और इसे यम का दण्ड अवश्य मिलेगा॥३॥ काम, क्रोध, लोभ एवं मोह ने तुझे फँसाया हुआ है और तू विकारों के बड़े गड्ढे में नष्ट होता जा रहा है॥ ४॥ हे मेरे प्रभु! नानक की अरदास सुन लो और मुझ जैसे डूबते पत्थर को भी बचा लो॥ ५॥ १४॥ २०॥

सूही महला ५ ॥ जीवत मरै बुझै प्रभु सोइ ॥ तिसु जन करमि परापति होइ ॥ १ ॥ सुणि साजन इउ दुतरु तरीऐ ॥ मिलि साधू हरि नामु उचरीऐ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ एक बिना दूजा नही जानै ॥ घट घट अंतरि पारब्रहमु पछानै ॥ २ ॥ जो किछु करै सोई भल मानै ॥ आदि अंत की कीमति जानै ॥ ३ ॥ कहु नानक तिसु जन बलिहारी ॥ जा कै हिरदै वसहि मुरारी ॥ ४ ॥ १५ ॥ २१ ॥

जो व्यक्ति अपने जीवन में मोह-अभिमान को मार देता है, वह प्रभु को बूझ लेता है। भाग्य से उसे ही परमात्मा की प्राप्ति होती है॥ १॥ हे मेरे साजन! सुनो, यह भवसागर बड़ा कठिन है और इससे पार होने के लिए साधुओं के साथ मिलकर भगवान का नाम उच्चरित करते रहना चाहिए॥ १॥ रहाउ॥ जो व्यक्ति एक परमात्मा के अलावा किसी दूसरे को नहीं जानता, वह हरेक शरीर में विद्यमान परब्रह्म को पहचान लेता है॥ २॥ जो कुछ ईश्वर करता है, वह सहर्ष उसे ही भला मानता है। जो परमात्मा सृष्टि के आदि एवं अंत तक मौजूद है, वह उसके मूल्यांकन को जान लेता है॥ ३॥ हे नानक! मैं उस भक्त पर बलिहारी जाता हूँ, जिसके हृदय में ईश्वर बसता है॥ ४॥ १५॥ २१॥

सूही महला ५ ॥ गुरु परमेसरु करणैहारु ॥ सगल स्रिसटि कउ दे आधारु ॥ १ ॥ गुर के चरण कमल मन धिआइ ॥ दूखु दरदु इसु तन ते जाइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ भवजलि डूबत सतिगुरु काढै ॥ जनम जनम का टूटा गाढै ॥ २ ॥ गुर की सेवा करहु दिनु राति ॥ सूख सहज मनि आवै सांति ॥ ३ ॥ सतिगुर की रेणु वडभागी पावै ॥ नानक गुर कउ सद बलि जावै ॥ ४ ॥ १६ ॥ २२ ॥

गुरु ही परमेश्वर है और वही सबकुछ करने में परिपूर्ण है। वह सारी सृष्टि को आधार देता है ॥१॥ हे मेरे मन! गुरु के चरण कमलों का ध्यान किया कर, जिसके फलस्वरूप इस तन से

दुख-दर्द दूर हो जाते हैं॥ १॥ रहाउ॥ गुरु भवसागर में डूब रहे जीव को भी बाहर निकाल देता है। वह जन्म-जन्मांतर से परमात्मा से बिछुड़े व्यक्ति को भी उससे मिला देता है॥ २॥ दिन-रात गुरु की सेवा करो, इससे सहज सुख एवं मन को बड़ी शांति प्राप्त होती है॥ ३॥ सतगुरु की चरण-धूलि कोई खुशनसीब ही प्राप्त करता है। हे नानक ! मैं तो गुरु पर सदैव बलिहारी जाता हूँ॥ ४॥ १६॥ २२॥

सूही महला ५ ॥ गुर अपुने ऊपरि बलि जाईऐ ॥ आठ पहर हरि हरि जसु गाईऐ ॥ १ ॥ सिमरउ सो प्रभु अपना सुआमी ॥ सगल घटा का अंतरजामी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ चरण कमल सिउ लागी प्रीति ॥ साची पूरन निरमल रीति ॥ २ ॥ संत प्रसादि वसै मन माही ॥ जनम जनम के किलविख जाही ॥ ३ ॥ करि किरपा प्रभ दीन दइआला ॥ नानकु मागै संत रवाला ॥ ४ ॥ १७ ॥ २३ ॥

अपने गुरु पर बलिहारी जाना चाहिए और आठ प्रहर हरि का यश गाना चाहिए॥१॥ मैं तो अपने स्वामी प्रभु का ही सिमरन करता रहता हूँ, जो सबके मन की जानने वाला बड़ा अन्तर्यामी है॥ १॥ रहाउ॥ उसके सुन्दर चरण कमल से मेरी प्रीति लग गई है। प्रीति की यह जीवन-युक्ति बड़ी निर्मल, पूर्ण एवं शाश्वत है॥२॥ यदि संतों की कृपा से प्रभु मन में बस जाए तो जन्म-जन्मांतर के पाप दूर हो जाते हैं॥ ३॥ हे दीनदयालु प्रभु ! कृपा करो, नानक तो तेरे संतों की चरण-धूलि ही चाहता है॥ ४॥ १७॥ २३॥

सूही महला ५ ॥ दरसनु देखि जीवा गुर तेरा ॥ पूरन करमु होइ प्रभ मेरा ॥ १ ॥ इह बेनंती सुणि प्रभ मेरे ॥ देहि नामु करि अपणे चेरे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ अपणी सरणि राखु प्रभ दाते ॥ गुर प्रसादि किनै विरलै जाते ॥ २ ॥ सुनहु बिनउ प्रभ मेरे मीता ॥ चरण कमल वसहि मेरै चीता ॥ ३ ॥ नानकु एक करै अरदासि ॥ विसरु नाही पूरन गुणतासि ॥ ४ ॥ १८ ॥ २४ ॥

हे मेरे गुरु ! मैं तेरा दर्शन देखकर ही जीता हूँ। इस तरह प्रभु की मुझ पर पूर्ण कृपा हुई है॥ १॥ हे मेरे प्रभु ! मेरी यह विनती सुनो, मुझे नाम देकर अपना चेला बना लो॥ १॥ रहाउ॥ हे दाता प्रभु ! मुझे हमेशा अपनी शरण में ही रखो। गुरु की कृपा से किसी विरले ने ही तुझे जाना है॥ २॥ हे मेरे मित्र प्रभु ! मेरी विनय सुनो, तेरे सुन्दर चरण मेरे चित्त में बस जाएँ॥ ३॥ नानक एक यही अरदास करता है कि हे पूर्ण गुणों के भण्डार ! तू मुझे कदापि न भूले॥ ४॥ १८॥ २४॥

सूही महला ५ ॥ मीतु साजनु सुत बंधप भाई ॥ जत कत पेखउ हरि संगि सहाई ॥ १ ॥ जति मेरी पति मेरी धनु हरि नामु ॥ सूख सहज आनंद बिसराम ॥ १ ॥ रहाउ ॥ पारब्रहमु जपि पहिरि सनाह ॥ कोटि आवध तिसु बेधत नाहि ॥ २ ॥ हरि चरन सरण गड़ कोट हमारै ॥ कालु कंटकु जमु तिसु न बिदारै ॥ ३ ॥ नानक दास सदा बलिहारी ॥ सेवक संत राजा राम मुरारी ॥ ४ ॥ १९ ॥ २५ ॥

ईश्वर ही मेरा दोस्त, साजन, पुत्र, संबंधी एवं भाई है। मैं जहाँ कहीं भी देखता हूँ, प्रभु ही मेरे साथ है और वही मेरा मददगार है॥ १॥ प्रभु का नाम ही मेरी जाति, मेरी इज्जत एवं मेरा धन है। जिससे मुझे परम सुख, आनंद एवं आराम मिलता है॥ १॥ रहाउ॥ परब्रह्म को जपकर नाम रूपी रक्षा कवच पहन लो, क्योंकि इसे धारण करने से करोड़ों शस्त्र भी बेध नहीं सकते॥२॥ परमात्मा के चरणों की शरण ही हमारा दुर्ग है और दुखदायी यम का खौफ भी इसे ध्वस्त नहीं कर सकता॥ ३॥ हे राजा राम ! दास नानक सदैव ही तेरे सेवकों एवं संतों पर कुर्बान जाता है॥ ४॥ १९॥ २५॥

सूही महला ५ ॥ गुण गोपाल प्रभ के नित गाहा ॥ अनद बिनोद मंगल सुख ताहा ॥ १ ॥ चलु सखीए प्रभु रावण जाहा ॥ साध जना की चरणी पाहा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ करि बेनती जन धूरि बाछाहा ॥ जनम जनम के किलविख लाहां ॥ २ ॥ मनु तनु प्राण जीउ अरपाहा ॥ हरि सिमरि सिमरि मानु मोहु कटाहां ॥ ३ ॥ दीन दइआल करहु उतसाहा ॥ नानक दास हरि सरणि समाहा ॥ ४॥ २० ॥ २६ ॥

मैं नित्य ही प्रभु के गुण गाती रहती हूँ, जिससे मुझे बड़ा आनंद, विनोद, मंगल एवं सुख उपलब्ध होते हैं॥ १॥ हे सखी ! चलो, अपने प्रभु का स्मरण करके आनंद प्राप्त करने जाएँ और साधुजनों के चरणों में पड़ें॥ १॥ रहाउ॥ मैं विनती करके संतजनों की चरण-धूलि की ही कामना करती हूँ। इस प्रकार अपने जन्म-जन्मांतर के पाप दूर करती हूँ॥ २॥ मैं उनको अपना मन, तन, प्राण एवं आत्मा अर्पण करती हूँ। हरि का सिमरन करके अपना अभिमान एवं मोह को नाश करती रहती हूँ॥ ३॥ हे दीनदयाल ! मेरे मन में उत्साह पैदा करो ताकि दास नानक तेरी शरण में समाया रहे॥ ४॥ २०॥ २६॥

सूही महला ५ ॥ बैकुंठ नगरु जहा संत वासा ॥ प्रभ चरण कमल रिद माहि निवासा ॥ १ ॥ सुणि मन तन तुझु सुखु दिखलावउ ॥ हरि अनिक बिंजन तुझु भोग भुंचावउ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ अंम्रित नामु भुंचु मन माही ॥ अचरज साद ता के बरने न जाही ॥ २ ॥ लोभु मूआ त्रिसना बुझि थाकी ॥ पारब्रहम की सरणि जन ताकी ॥ ३ ॥ जनम जनम के भै मोह निवारे ॥ नानक दास प्रभ किरपा धारे ॥ ४ ॥ २१ ॥ २७ ॥

असल में वह बैकुंठ नगर ही है, जहाँ पर संतों का निवास है। प्रभु के चरण-कमलों का उनके हृदय में ही निवास होता है॥ १॥ हे मेरे मन एवं तन ! जरा सुनो, मैं तुझे सुख दिखलाऊँ। मैं तुझे अनेक प्रकार के व्यंजन एवं भोग कराऊँ॥ १॥ रहाउ॥ अपने मन में अमृत नाम चखो। इस नाम के अद्भुत स्वाद वर्णन नहीं किए जा सकते॥ २॥ नाम चखने से मन में से लोभ मर गया है और तृष्णा भी बुझकर खत्म हो गई है। संतजनों ने तो परब्रह्म की शरण ही देखी है ॥३॥ हे नानक ! प्रभु ने मुझ पर कृपा की है और मेरे जन्म-जन्मांतर के भय एवं मोह दूर कर दिए हैं॥ ४॥ २१॥ २७॥

सूही महला ५ ॥ अनिक बींग दास के परहरिआ ॥ करि किरपा प्रभि अपना करिआ ॥ १ ॥ तुमहि छडाइ लीओ जनु अपना ॥ उरझि परिओ जालु जगु सुपना ॥ १ ॥ रहाउ ॥ परबत दोख महा बिकराला ॥ खिन महि दूरि कीए दइआला ॥ २ ॥ सोग रोग बिपति अति भारी ॥ दूरि भई जपि नामु मुरारी ॥ ३ ॥ द्रिसटि धारि लीनो लड़ि लाइ ॥ हरि चरण गहे नानक सरणाइ ॥ ४ ॥ २२ ॥ २८ ॥

प्रभु ने दास की अनेक त्रुटियाँ निवृत्त कर दी हैं और कृपा करके उसे अपना बना लिया है॥ १॥ हे प्रभु जी ! तूने अपने सेवक को छुड़ा लिया है, क्योंकि वह स्वप्न जैसे जगत् रूपी जाल में उलझ पड़ा था॥ १॥ रहाउ॥ मुझ में पर्वत जैसे महा विकराल दोष थे, जिन्हें दयालु प्रभु ने क्षण में ही दूर कर दिया है॥ २॥ परमात्मा का नाम जपने से शोक, रोग एवं अत्यंत भारी विपत्ति दूर हो गई है॥ ३॥ प्रभु ने कृपा-दृष्टि करके मुझे अपने दामन के साथ लगा लिया है। हे नानक ! मैंने श्री हरि के चरण पकड़ लिए हैं और उसकी शरण में आ गया हूँ॥ ४॥ २२॥ २८॥

सूही महला ५ ॥ दीनु छडाइ दुनी जो लाए ॥ दुही सराई खुनामी कहाए ॥ १ ॥ जो तिसु भावै सो परवाणु ॥ आपणी कुदरति आपे जाणु ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सचा धरमु पुंनु भला कराए ॥ दीन कै तोसै

दुनी न जाए ॥ २ ॥ सरब निरंतरि एको जागै ॥ जितु जितु लाइआ तितु तितु को लागै ॥ ३ ॥ अगम अगोचरु सचु साहिबु मेरा ॥ नानकु बोलै बोलाइआ तेरा ॥ ४ ॥ २३ ॥ २९ ॥

जो धर्म को छोड़कर दुनियादारी में लग जाता है वह लोक परलोक दोनों में गुनहगार कहलाता है॥ १॥ जो ईश्वर को उपयुक्त लगता है, मुझे वह खुशी-खुशी मंजूर है। अपनी कुदरत को वह स्वयं ही जानता है॥ १॥ रहाउ॥ वह जिस आदमी से सच्चा धर्म, पुण्य एवं भलाई का कार्य करवाता है, उसे इकट्ठे किए धर्म के भण्डार के कारण उसकी दुनिया नहीं बिगड़ती॥ २॥ सब जीवों के हृदय में एक परमात्मा ही जाग्रत रहता है। उसने जीवों को जिस कार्य में भी लगाया है, वे वहाँ ही लग गए हैं॥ ३॥ मेरा मालिक अगम्य, अगोचर एवं शाश्वत है। हे प्रभु ! नानक तेरा बुलाया हुआ ही बोलता है॥ ४॥ २३॥ २९॥

सूही महला ५ ॥ प्रातहकालि हरि नामु उचारी ॥ ईत ऊत की ओट सवारी ॥ १ ॥ सदा सदा जपीऐ हरि नाम ॥ पूरन होवहि मन के काम ॥ १ ॥ रहाउ ॥ प्रभु अबिनासी रैणि दिनु गाउ ॥ जीवत मरत निहचलु पावहि थाउ ॥ २ ॥ सो साहु सेवि जितु तोटि न आवै ॥ खात खरचत सुखि अनदि विहावै ॥ ३ ॥ जगजीवन पुरखु साधसंगि पाइआ ॥ गुर प्रसादि नानक नामु धिआइआ ॥ ४ ॥ २४ ॥ ३० ॥

मैं प्रातःकाल प्रभु का नाम उच्चारित करता रहता हूँ, जिससे लोक-परलोक की ओट संवार ली है॥ १॥ हे जिज्ञासु ! सदा परमात्मा का नाम जपते रहना चाहिए, इससे सारी मनोकामनाएँ पूरी हो जाती हैं॥ १॥ रहाउ॥ उस अविनाशी प्रभु का दिन-रात गुणगान करो। जीवित ही मोह-अभिमान को मार कर निश्चल स्थान पा लो॥ २॥ उस साहूकार प्रभु की भक्ति करो, जिससे किसी प्रकार की कमी नहीं आती। नाम-धन का उपयोग करने एवं दूसरों से इस्तेमाल करवाने से जिंदगी सुख एवं आनंद में व्यतीत होती है॥ ३॥ परमपुरुष परमेश्वर जग का जीवन है और उसे साधसंगति द्वारा ही पाया जा सकता है। हे नानक ! गुरु के आशीर्वाद से मैंने परमात्मा के नाम का ही ध्यान किया है॥ ४॥ २४॥ ३०॥

सूही महला ५ ॥ गुर पूरे जब भए दइआल ॥ दुख बिनसे पूरन भई घाल ॥ १ ॥ पेखि पेखि जीवा दरसु तुम्हारा ॥ चरण कमल जाई बलिहारा ॥ तुझ बिनु ठाकुर कवनु हमारा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ साधसंगति सिउ प्रीति बणि आई ॥ पूरब करमि लिखत धुरि पाई ॥ २ ॥ जपि हरि हरि नामु अचरजु परताप ॥ जालि न साकहि तीने ताप ॥ ३ ॥ निमख न बिसरहि हरि चरण तुम्हारे ॥ नानकु मागै दानु पिआरे ॥ ४ ॥ २५ ॥ ३१ ॥

जब पूर्ण गुरु दयालु हो गया तो मेरे सब दुख नाश हो गए और नाम-सिमरन की साधना साकार हो गई॥ १॥ हे मालिक ! तुम्हारा दर्शन देख-देखकर ही जीता हूँ और मैं तेरे चरण-कमल पर बलिहारी जाता हूँ। हे ठाकुर जी ! तेरे बिना हमारा कौन है ?॥ १॥ रहाउ॥ साधु-संगति से मेरी प्रीति बन गई है और पूर्व जन्म के कर्मानुसार साधसंगति पाई है॥ २॥ परमात्मा का नाम जपने से अद्भुत प्रताप हो गया है। अब आधि, व्याधि एवं उपाधी–तीनों ही ताप जला नहीं सकते॥ ३॥ हे हरि ! नानक तुझसे यही दान चाहता है कि तुम्हारे सुन्दर चरण एक क्षण भर के लिए भी न भूलें॥ ४॥ २५॥ ३१॥

सूही महला ५ ॥ से संजोग करहु मेरे पिआरे ॥ जितु रसना हरि नामु उचारे ॥ १ ॥ सुणि बेनती प्रभ दीन दइआला ॥ साध गावहि गुण सदा रसाला ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जीवन रूपु सिमरणु प्रभ तेरा ॥ जिसु क्रिपा करहि बसहि तिसु नेरा ॥ २ ॥ जन की भूख तेरा नामु अहारु ॥ तूं दाता प्रभ

देवणहारु ॥ ३ ॥ राम रमत संतन सुखु माना ॥ नानक देवनहार सुजाना ॥ ४ ॥ २६ ॥ ३२ ॥

हे मेरे प्यारे ! ऐसा संयोग बनाओ, जिससे मेरी जीभ तेरा नाम उच्चारित करती रहे॥ १॥ हे दीनदयाल प्रभु ! मेरी एक विनती सुनो; साधु हमेशा ही तेरा रसीला गुणगान करते रहते हैं॥ १॥ रहाउ॥ हे प्रभु ! तेरा सिमरन जीवन रूप है। जिस पर तू अपनी कृपा करता है, उसके निकट आ बसता है॥ २॥ तेरा नाम ऐसा भोजन है, जिससे भक्त की सारी भूख दूर हो जाती है। हे प्रभु ! तू दाता है और सब कुछ देने वाला है॥ ३॥ प्रेमपूर्वक राम नाम जपकर संतजनों ने सुख ही माना है। हे नानक ! वह देने वाला परमात्मा बड़ा चतुर है॥ ४॥ २६॥ ३२॥

सूही महला ५ ॥ बहती जात कदे द्रिसटि न धारत ॥ मिथिआ मोह बंधहि नित पारच ॥ १ ॥ माधवे भजु दिन नित रैणी ॥ जनमु पदारथु जीति हरि सरणी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ करत बिकार दोऊ कर झारत ॥ राम रतनु रिद तिलु नही धारत ॥ २ ॥ भरण पोखण संगि अउध बिहाणी ॥ जै जगदीस की गति नही जाणी ॥ ३ ॥ सरणि समरथ अगोचर सुआमी ॥ उधरु नानक प्रभ अंतरजामी ॥ ४ ॥ २७ ॥ ३३ ॥

हे जीव ! तेरी जीवन रूपी नदिया बहती जा रही है, पर तू कभी इस तरफ दृष्टि भी नहीं करता। तू नित्य ही मिथ्या मोह के झगड़े में फँसा रहता है॥ १॥ इसलिए नित्य ही माधव का भजन करते रहो और हरि की शरण में पड़कर अपना अमूल्य जन्म जीत लो॥ १॥ रहाउ॥ तू अपने दोनों हाथों के जोर से पाप करता है, किन्तु रत्न जैसे अमूल्य राम नाम को अपने हृदय में तिल मात्र भी धारण नहीं करता॥ २॥ तूने भरण-पोषण में सारी जिंदगी व्यतीत कर ली है, मगर जगदीश की जय-जयकार की महिमा नहीं जानी॥ ३॥ हे मन-वाणी से परे स्वामी ! तू सर्वकला समर्थ है और मैं तेरी ही शरण में आया हूँ। नानक की प्रार्थना है कि हे अन्तर्यामी प्रभु ! मेरा भी भवसागर से उद्धार कर दो॥ ४॥ २७॥ ३३॥

सूही महला ५ ॥ साधसंगि तरै भै सागरु ॥ हरि हरि नामु सिमरि रतनागरु ॥ १ ॥ सिमरि सिमरि जीवा नाराइण ॥ दूख रोग सोग सभि बिनसे गुर पूरे मिलि पाप तजाइण ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जीवन पदवी हरि का नाउ ॥ मनु तनु निरमलु साचु सुआउ ॥ २ ॥ आठ पहर पारब्रहमु धिआईऐ ॥ पूरबि लिखतु होइ ता पाईऐ ॥ ३ ॥ सरणि पए जपि दीन दइआला ॥ नानकु जाचै संत रवाला ॥ ४ ॥ २८ ॥ ३४ ॥

साधुओं की संगति करने से जीव भयानक संसार सागर से तर जाता है। हरि नाम-स्मरण करते रहो, जो रत्नाकर है॥ १॥ हे नारायण ! तेरा नाम सिमरन करके ही जी रहा हूँ। मेरे दुख, रोग, शोक सब नाश हो गए हैं और पूर्ण गुरु से मिलकर पाप त्याग दिए हैं॥ १॥ रहाउ॥ भगवान का नाम ही जीवन पदवी है, जिससे मन-तन निर्मल हो जाता है और सच्चा मनोरथ साकार हो जाता है॥ २॥ आठों प्रहर परब्रह्म का ध्यान करना चाहिए लेकिन यह तो ही मिलता है, यदि पूर्व से ही तकदीर में लिखा हो॥ ३॥ जो दीनदयाल परमात्मा का नाम जपकर उसकी शरण में पड़ गए हैं, नानक उन संतजनों की चरण-रज ही माँगता है॥ ४॥ २८॥ ३४॥

सूही महला ५ ॥ घर का काजु न जाणी रूड़ा ॥ झूठै धंधै रचिओ मूड़ा ॥ १ ॥ जितु तूं लावहि तितु तितु लगना ॥ जा तूं देहि तेरा नाउ जपना ॥ १ ॥ रहाउ ॥ हरि के दास हरि सेती राते ॥ राम रसाइणि अनदिनु माते ॥ २ ॥ बाह पकरि प्रभि आपे काढे ॥ जनम जनम के टूटे गाढे ॥ ३ ॥ उधरु सुआमी प्रभ किरपा धारे ॥ नानक दास हरि सरणि दुआरे ॥ ४ ॥ २९ ॥ ३५ ॥

जीव हृदय-घर के नाम-सिमरन रूपी सुन्दर काम को नहीं जानता। वह मूर्ख तो दुनिया के झूठे धंधे में ही मस्त रहता है॥ १॥ हे भगवान्! तू जीव को जिस कार्य में लगा देता है, वह उस में ही लग जाता है। जब तू अपना नाम देता है तो ही वह नाम जपता है॥ १॥ रहाउ॥ भगवान के भक्त उसके प्रेम में लीन रहते हैं। वे रात-दिन राम नाम रूपी रसायण में मस्त रहते हैं॥ २॥ हे प्रभु! तू उनकी बाँह पकड़ कर उन्हें स्वयं ही भवसागर से निकाल देता है और जन्म-जन्मांतर के बिछुड़े हुओं को अपने साथ मिला लेता है॥ ३॥ हे स्वामी प्रभु! कृपा करके मेरा उद्धार कर दो। क्योंकि दास नानक तेरी शरण में तेरे द्वार में आ पड़ा है॥ ४॥ २६॥ ३५॥

सूही महला ५ ॥ संत प्रसादि निहचलु घरु पाइआ ॥ सरब सूख फिरि नही डोलाइआ ॥ १ ॥ गुरू धिआइ हरि चरन मनि चीन्हे ॥ ता ते करतै असथिरु कीन्हे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ गुण गावत अचुत अबिनासी ॥ ता ते काटी जम की फासी ॥ २ ॥ करि किरपा लीने लड़ि लाए ॥ सदा अनदु नानक गुण गाए ॥ ३ ॥ ३० ॥ ३६ ॥

संतों की कृपा से निश्चल घर पा लिया है, जिससे सर्व सुख मिल गए और मन फिर से नहीं डगमगाता॥ १॥ गुरु का ध्यान करके मन में हरि-चरणों को जान लिया है, जिससे करतार ने मुझे स्थिर कर दिया है॥ १॥ रहाउ॥ अब मैं अच्युत अविनाशी परमात्मा के गुण गाता रहता हूँ, जिसके फलस्वरूप मृत्यु की फाँसी कट गई है॥ २॥ कृपा करके ईश्वर ने मुझे अपने साथ लगा लिया है। हे नानक! परमात्मा का गुणगान करने से सदैव आनंद बना रहता है ॥३॥ ३०॥ ३६॥

सूही महला ५ ॥ अंम्रित बचन साध की बाणी ॥ जो जो जपै तिस की गति होवै हरि हरि नामु नित रसन बखानी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ कली काल के मिटे कलेसा ॥ एको नामु मन महि परवेसा ॥ १ ॥ साधू धूरि मुखि मसतकि लाई ॥ नानक उधरे हरि गुर सरणाई ॥ २ ॥ ३१ ॥ ३७ ॥

साधु की वाणी अमृत वचन है। जो भी इसे जपता है, उसकी मुक्ति हो जाती है। वह अपनी जीभ से नित्य हरि नाम का बखान करता रहता है॥ १॥ रहाउ॥ मेरे कलियुग के क्लेश मिट गए है क्योंकि परमात्मा का एक नाम ही मेरे मन में प्रवेश कर गया है॥ १॥ मैंने साधु की चरण-धूलि अपने मुख एवं मस्तक पर लगाई है। हे नानक! हरि-गुरु की शरण में आने से उद्धार हो गया है॥ २॥ ३१॥ ३७॥

सूही महला ५ घरु ३ ॥ गोबिंदा गुण गाउ दइआला ॥ दरसनु देहु पूरन किरपाला ॥ रहाउ ॥ करि किरपा तुम ही प्रतिपाला ॥ जीउ पिंडु सभु तुमरा माला ॥ १ ॥ अंम्रित नामु चलै जपि नाला ॥ नानकु जाचै संत रवाला ॥ २ ॥ ३२ ॥ ३८ ॥

हे गोविन्द! तू बड़ा दयालु है और मैं हर वक्त तेरा ही गुणगान करता रहता हूँ। हे पूर्ण कृपालु! मुझे अपने दर्शन दीजिए॥ रहाउ॥ अपनी कृपा करो, क्योंकि एक तू ही प्रतिपालक है। यह प्राण एवं शरीर सब तेरी ही दी हुई पूंजी है॥ १॥ अमृत नाम जपो, अंतिम समय एक यही जीव के साथ जाता है। नानक तो संतों की चरण-धूलि ही चाहता है॥ २॥ ३२॥ ३८॥

सूही महला ५ ॥ तिसु बिनु दूजा अवरु न कोई ॥ आपे थंमै सचा सोई ॥ १ ॥ हरि हरि नामु मेरा आधारु ॥ करण कारण समरथु अपारु ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सभ रोग मिटावे नवा निरोआ ॥ नानक रखा आपे होआ ॥ २ ॥ ३३ ॥ ३९ ॥

उसके सिवा दूसरा अन्य कोई नहीं है। वह सच्चा परमात्मा स्वयं ही सबको सहारा देता है॥ १॥ परमात्मा का नाम ही मेरे जीवन का आधार है। वह अपरंपार सबकुछ करने-करवाने में समर्थ है॥ १॥ रहाउ॥ उसने सारे रोग मिटाकर तंदरुस्त कर दिया है। हे नानक! परमात्मा स्वयं ही (मेरा) रखवाला बना है॥ २॥ ३३॥ ३६॥

सूही महला ५ ॥ दरसन कउ लोचै सभु कोई ॥ पूरै भागि परापति होई ॥ रहाउ ॥ सिआम सुंदर तजि नीद किउ आई ॥ महा मोहनी दूता लाई ॥ १ ॥ प्रेम बिछोहा करत कसाई ॥ निरदै जंतु तिसु दइआ न पाई ॥ २ ॥ अनिक जनम बीतीअन भरमाई ॥ घरि वासु न देवै दुतर माई ॥ ३ ॥ दिनु रैनि अपना कीआ पाई ॥ किसु दोसु न दीजै किरतु भवाई ॥ ४ ॥ सुणि साजन संत जन भाई ॥ चरण सरण नानक गति पाई ॥ ५ ॥ ३४ ॥ ४० ॥

हरेक जीव प्रभु के दर्शन करने की अभिलाषा करता है, लेकिन उसके दर्शन पूर्ण भाग्य से ही प्राप्त होते हैं॥ रहाउ॥ उस श्यामसुंदर को छोड़कर नींद क्यों आ गई? महामोहिनी माया के दूतों—काम, क्रोध, लोभ, मोह एवं अहंकार ने ही नींद ला दी है॥ १॥ कसाई दूतों ने ही प्रेम बिछोड़ा करवाया है। यह बिछोड़ा निर्दयी जंतु है, जिसमें प्रभु ने दया नहीं की॥ २॥ मेरे अनेक जन्म भ्रम में बीत गए हैं। यह भयानक माया हृदय-घर में वास नहीं करने देती॥ ३॥ मैं दिन-रात अपना किया ही पा रहा हूँ, अतः किसी को दोष नहीं देता, क्योंकि मेरे कर्म ही मुझे भटका रहे हैं॥ ४॥ हे मेरे सज्जन, संतजन, भाई! जरा सुनो, नानक ने परमात्मा के चरणों की शरण में ही गति पाई है॥ ५॥ ३४॥ ४०॥

रागु सूही महला ५ घरु ४ १ओं सतिगुर प्रसादि ॥

भली सुहावी छापरी जा महि गुन गाए ॥ कित ही कामि न धउलहर जितु हरि बिसराए ॥ १ ॥ रहाउ ॥ अनदु गरीबी साधसंगि जितु प्रभ चिति आए ॥ जलि जाउ एहु बडपना माइआ लपटाए ॥ १ ॥ पीसनु पीसि ओढि कामरी सुखु मनु संतोखाए ॥ ऐसो राजु न कितै काजि जितु नह त्रिपताए ॥ २ ॥ नगन फिरत रंगि एक कै ओहु सोभा पाए ॥ पाट पटंबर बिरथिआ जिह रचि लोभाए ॥ ३ ॥ सभु किछु तुम्हरै हाथि प्रभ आपि करे कराए ॥ सासि सासि सिमरत रहा नानक दानु पाए ॥ ४ ॥ १ ॥ ४१ ॥

निर्धन व्यक्ति की वह छोटी-सी कुटिया भली एवं सुहावनी है, जिसमें परमात्मा का गुणगान होता है। किन्तु जहाँ भगवान ही भूल जाता है, ऐसे बड़े-बड़े आलीशान महल भी किसी काम के नहीं हैं॥ १॥ रहाउ॥ साधसंगति में गरीबी में भी आनंद है, जहाँ प्रभु याद आता है। वह बड़प्पन जल जाना चाहिए जो आदमी को माया में फँसाता है॥ १॥ चक्की पीसकर एवं साधारण कम्बल पहनकर भी आदमी को सुख और मन को बड़ा संतोष हासिल होता है। ऐसा राज किसी काम का नहीं जिससे मन तृप्त नहीं होता॥ २॥ जो आदमी परमात्मा के रंग में चाहे फटे-पुराने वस्त्रों में फिरता रहता है, वही शोभा पाता है। वे रेशमी सुन्दर वस्त्र व्यर्थ हैं, जिसमें लीन होने से इन्सान के लालच में और भी वृद्धि होती है॥ ३॥ हे प्रभु! सच तो यही है कि सबकुछ तेरे हाथ में है। तू खुद ही सबकुछ करता और जीवों से करवाता है। नानक प्रार्थना करता है कि हे परमात्मा! मैं तुझसे यह दान प्राप्त करूँ कि श्वास-श्वास से तुझे ही याद करता रहूँ॥ ४ ॥१॥ ४१॥

सूही महला ५ ॥ हरि का संतु परान धन तिस का पनिहारा ॥ भाई मीत सुत सगल ते जीअ हूं ते पिआरा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ केसा का करि बीजना संत चउरु ढुलावउ ॥ सीसु निहारउ चरण तलि धूरि मुखि लावउ ॥ १ ॥ मिसट बचन बेनती करउ दीन की निआई ॥ तजि अभिमानु सरणी परउ हरि गुण निधि पाई ॥ २ ॥ अवलोकन पुनह पुनह करउ जन का दरसारु ॥ अंम्रित बचन मन महि सिंचउ बंदउ बार बार ॥ ३ ॥ चितवउ मनि आसा करउ जन का संगु मागउ ॥ नानक कउ प्रभ दइआ करि दास चरणी लागउ ॥ ४ ॥ २ ॥ ४२ ॥

परमात्मा का संत मेरे प्राण एवं धन है और मैं उसका पानी भरने वाला सेवक हूँ। वह मुझे मेरे भाई, मित्र, पुत्र इत्यादि मेरी जान से भी अधिक प्यारा है॥ १॥ रहाउ॥ मैं अपने केशों का पंखा बनाकर उस संत को चँवर झुलाता हूँ। मैं उसके समक्ष अपना सिर झुकाता हूँ और उसकी चरण-धूलि अपने मुख पर लगाता हूँ॥ १॥ मैं एक दीन की तरह मीठे वचनों द्वारा उसके आगे विनती करता हूँ और अपना अभिमान तज कर उसकी शरण पड़ता हूँ ताकि गुणों के भण्डार परमात्मा को पा लूँ॥ २॥ मैं उस ईश्वर के उपासक का दर्शन पुनःपुनः देखता रहता हूँ। मैं उसके अमृत वचन मन में सिंचित करता रहता हूँ और बार-बार उसे वंदना करता हूँ॥ ३॥ मैं अपने मन में याद और आशा करता रहता हूँ तथा उस उपासक का ही साथ माँगता हूँ। नानक प्रार्थना करता है कि हे प्रभु ! मुझ पर दया करो ताकि तेरे दास के चरणों में लग जाऊँ॥ ४॥ २॥ ४२॥

सूही महला ५ ॥ जिनि मोहे ब्रहमंड खंड ताहू महि पाउ ॥ राखि लेहु इहु बिखई जीउ देहु अपुना नाउ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जा ते नाही को सुखी ता कै पाछै जाउ ॥ छोडि जाहि जो सगल कउ फिरि फिरि लपटाउ ॥ १ ॥ करहु क्रिपा करुणापते तेरे हरि गुण गाउ ॥ नानक की प्रभ बेनती साधसंगि समाउ ॥ २ ॥ ३ ॥ ४३ ॥

हे ईश्वर ! मैं उस माया के मोह में पड़ा हुआ हूँ, जिसने खण्ड-ब्रह्माण्ड मोह लिए हैं। मुझ जैसे विकारी जीव को इससे बचा लो और अपना नाम दीजिए॥ १॥ रहाउ॥ जिस माया से कभी कोई सुखी नहीं हुआ, मैं उसके पीछे भागता रहता हूँ। जो सब को छोड़ जाती है, मैं बार-बार उससे लिपटता रहता हूँ॥ १॥ हे करुणानिधि ! कृपा करो ताकि तेरे गुण गाता रहूँ। हे प्रभु ! नानक की तुझसे यही विनती है कि मैं साधु-संगति में प्रवृत्त रहूँ॥ २॥ ३॥ ४३॥

रागु सूही महला ५ घरु ५ पड़ताल ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

प्रीति प्रीति गुरीआ मोहन लालना ॥ जपि मन गोबिंद एकै अवरु नही को लेखै संत लागु मनहि छाडु दुबिधा की कुरीआ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ निरगुन हरीआ सरगुन धरीआ अनिक कोठरीआ भिंन भिंन भिंन भिन करीआ ॥ विचि मन कोटवरीआ ॥ निज मंदरि पिरीआ ॥ तहा आनद करीआ ॥ नह मरीआ नह जरीआ ॥ १ ॥ किरतनि जुरीआ बहु बिधि फिरीआ पर कउ हिरीआ ॥ बिखना घिरीआ ॥ अब साधू संगि परीआ ॥ हरि दुआरै खरीआ ॥ दरसनु करीआ ॥ नानक गुर मिरीआ ॥ बहुरि न फिरीआ ॥ २ ॥ १ ॥ ४४ ॥

प्यारे प्रभु का प्रेम जग के हर प्रकार के प्रेम से उत्तम एवं सुखदायक है। इसलिए मन में केवल गोविंद का ही नाम जपो, चूंकि अन्य सब काम निष्फल ही हैं। हे बन्धु ! संतों के चरणों में लग जाओ और अपने मन से दुविधा का मार्ग छोड़ दो॥ १॥ रहाउ॥ परमात्मा निर्गुण है, मगर उसने अपना सगुण रूप धारण किया हुआ है। उसने भिन्न-भिन्न प्रकार की शरीर रूपी कोठियाँ

बना दी हैं, जिनमें कोतवाल मन बसता है। प्यारा प्रभु हर मन्दिर रूपी शरीर में बसता है और वह वहाँ आनंद करता रहता है। उसकी न मृत्यु होती है और न ही उसे बुढ़ापा आता है॥ १॥ आदमी दुनिया के धंधों में जुड़ा रहता है, बहुत प्रकार से भटकता है और पराया धन छीनता रहता है। वह तो विषय-विकारों में ही घिरा रहता है। अब वह साधु की संगत में आ गया है, वह हरि के द्वार आ खड़ा है और उसका दर्शन किया है। हे नानक ! उसे गुरु मिल गया है और वह फिर से जीवन-मृत्यु के चक्र में नहीं भटकता॥ २॥ १॥ ४४॥

सूही महला ५ ॥ रासि मंडलु कीनो आखारा ॥ सगलो साजि रखिओ पासारा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ बहु बिधि रूप रंग आपारा ॥ पेखै खुसी भोग नही हारा ॥ सभि रस लैत बसत निरारा ॥ १ ॥ बरनु चिहनु नाही मुखु न मासारा ॥ कहनु न जाई खेलु तुहारा ॥ नानक रेण संत चरनारा ॥ २ ॥ २ ॥ ४५ ॥

परमात्मा ने यह पृथ्वी जीव रूपी गोपियों के लिए रास रचाने के लिए एक अखाड़ा बनाया है। उसने सारी रचना रच कर यह जगत्-प्रसार कर रखा है॥ १॥ रहाउ॥ परमात्मा ने अनेक तरीकों से अपार रूप-रंग वाली दुनिया बनाई है। वह इसे खुशी से देखता रहता है और वह स्वयं जीवों के रूप में सब पदार्थों को भोग कर थका नहीं है। वह जीवों के रूप में सब पदार्थों के स्वादों का आनंद लेता है लेकिन वह खुद सब से निराला है॥ १॥ हे परमेश्वर ! तेरा कोई रंग और चिन्ह नहीं है और तेरा कोई मांस का बना मुँह भी नहीं है। तेरा जगत् रूपी खेल कथन नहीं किया जा सकता। नानक तेरे संतजनों की चरण-धूलि की ही कामना करता है॥ २॥ २॥ ४५॥

सूही महला ५ ॥ तउ मै आइआ सरनी आइआ ॥ भरोसै आइआ किरपा आइआ ॥ जिउ भावै तिउ राखहु सुआमी मारगु गुरहि पठाइआ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ महा दुतरु माइआ ॥ जैसे पवनु झुलाइआ ॥ १ ॥ सुनि सुनि ही डराइआ ॥ कररो ध्रमराइआ ॥ २ ॥ ग्रिह अंध कूपाइआ ॥ पावकु सगराइआ ॥ ३ ॥ गही ओट साधाइआ ॥ नानक हरि धिआइआ ॥ अब मै पूरा पाइआ ॥ ४ ॥ ३ ॥ ४६ ॥

हे मालिक प्रभु ! मैं तेरे पास तेरी शरण में आया हूँ। मैं तेरे भरोसे पर तेरी कृपा से आया हूँ। जैसे तुझे भला लगता है, वैसे ही मेरी रक्षा करो। हे स्वामी ! मुझे तेरे इस मार्ग पर गुरु ने भेजा है॥ १॥ रहाउ॥ माया रूपी सागर में से पार होना बहुत ही कठिन है। यह माया ऐसी है, जैसे तेज हवा झूलती है॥ १॥ यह सुन-सुन कर मैं बहुत डर गया हूँ कि यमराज बड़ा निर्दयी है॥ २॥ जगत् रूपी घर एक अंधा कुआं है और इसमें तृष्णा रूपी आग ही भरी हुई है॥ ३॥ मैंने साधुओं की ओट ली है। हे नानक ! मैंने भगवान का ध्यान-मनन किया है और अब मैंने पूर्ण परमानंद को पा लिया है॥ ४॥ ३॥ ४६॥

रागु सूही महला ५ घरु ६ १ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

सतिगुर पासि बेनंतीआ मिलै नामु आधारा ॥ तुठा सचा पातिसाहु तापु गइआ संसारा ॥ १ ॥ भगता की टेक तूं संता की ओट तूं सचा सिरजनहारा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सचु तेरी सामगरी सचु तेरा दरबारा ॥ सचु तेरे खाजीनिआ सचु तेरा पासारा ॥ २ ॥ तेरा रूपु अगंमु है अनूपु तेरा दरसारा ॥ हउ कुरबाणी तेरिआ सेवका जिन्ह हरि नामु पिआरा ॥ ३ ॥ सभे इछा पूरीआ जा पाइआ अगम अपारा ॥ गुरु नानकु मिलिआ पारब्रहमु तेरिआ चरणा कउ बलिहारा ॥ ४ ॥ १ ॥ ४७ ॥

सतगुरु के पास मेरी यही विनती है कि मुझे ईश्वर का नाम मिल जाए, जो मेरे जीवन का आधार है। सच्चा पातशाह मुझ पर प्रसन्न हो गया है और मेरा संसार का ताप दूर हो गया है॥ १॥ हे प्रभु ! तू भक्तों की टेक है, तू ही संतजनों की ओट है और एक तू ही सच्चा सृजनहार

है॥ १॥ रहाउ॥ तेरी सामग्री सत्य है और तेरा दरबार सत्य है। तेरे खजाने भी सत्य हैं और तेरा जगत्-प्रसार भी सत्य है॥ २॥ तेरा रूप अगम्य है और तेरा दर्शन अनुपम है। मैं तेरे उन सेवकों पर कुर्बान जाता हूँ, जिन्हें तेरा नाम बड़ा प्यारा लगता है॥ ३॥ जब से अगम्य एवं अपार प्रभु को पाया है, मेरी सब इच्छाएँ पूरी हो गई हैं। गुरु नानक को परमात्मा मिल गया है और मैं तेरे चरणों पर बलिहारी जाता हूँ॥ ४॥ १॥ ४७॥

रागु सूही महला ५ घरु ७ ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

तेरा भाणा तूहै मनाइहि जिस नो होहि दइआला ॥ साई भगति जो तुधु भावै तूं सरब जीआ प्रतिपाला ॥ १ ॥ मेरे राम राइ संता टेक तुम्हारी ॥ जो तुधु भावै सो परवाणु मनि तनि तूहै अधारी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ तूं दइआलु क्रिपालु क्रिपा निधि मनसा पूरणहारा ॥ भगत तेरे सभि प्राणपति प्रीतम तूं भगतन का पिआरा ॥ २ ॥ तू अथाहु अपारु अति ऊचा कोई अवरु न तेरी भाते ॥ इह अरदासि हमारी सुआमी विसरु नाही सुखदाते ॥ ३ ॥ दिनु रैणि सासि सासि गुण गावा जे सुआमी तुधु भावा ॥ नामु तेरा सुखु नानकु मागै साहिब तुठै पावा ॥ ४ ॥ १ ॥ ४८ ॥

हे प्रभु ! जिस पर तू दयालु हो जाता है, तू स्वयं ही उससे अपनी रज़ा मनवाता है। वही तेरी भक्ति है, जो तुझे अच्छी लगती है। तू सब जीवों का पालन-पोषण करने वाला है॥ १॥ हे मेरे राम ! संतों को तेरा ही सहारा है। जो तुझे अच्छा लगता है, उन्हें वही सहर्ष मंजूर होता है। तू ही उनके मन एवं तन का अवलम्ब है॥ १॥ रहाउ॥ हे कृपानिधि ! तू बड़ा दयालु एवं कृपालु है और सबकी आशाएँ पूरी करने वाला है। हे प्राणपति प्रियतम ! सब भक्त तुझे बहुत प्रिय हैं और तू भक्तों का प्यारा है॥ २॥ तू अथाह, अपरंपार एवं बहुत ऊँचा है और तेरे जैसा सृष्टि में कोई नहीं है। हे सुखदाता स्वामी ! तुझसे मेरी यह प्रार्थना है कि तू कभी भी न भूले॥ ३॥ हे मालिक ! यदि तुझे उपयुक्त लगे तो मैं दिन-रात सांस-सांस से तेरा ही गुणगान करता रहूँ। हे मेरे साहब ! नानक तुझसे तेरा नाम रूपी सुख ही माँगता है, यदि तू प्रसन्न हो जाए तो मैं इसे पा सकता हूँ॥ ४॥ १॥ ४८॥

सूही महला ५ ॥ विसरहि नाही जितु तू कबहू सो थानु तेरा केहा ॥ आठ पहर जितु तुधु धिआई निरमल होवै देहा ॥ १ ॥ मेरे राम हउ सो थानु भालण आइआ ॥ खोजत खोजत भइआ साधसंगु तिन्ह सरणाई पाइआ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ बेद पड़े पड़ि ब्रहमे हारे इकु तिलु नही कीमति पाई ॥ साधिक सिध फिरहि बिललाते ते भी मोहे माई ॥ २ ॥ दस अउतार राजे होइ वरते महादेव अउधूता ॥ तिन्ह भी अंतु न पाइओ तेरा लाइ थके बिभूता ॥ ३ ॥ सहज सूख आनंद नाम रस हरि संती मंगलु गाइआ ॥ सफल दरसनु भेटिओ गुर नानक ता मनि तनि हरि हरि धिआइआ ॥ ४ ॥ २ ॥ ४९ ॥

हे प्रभु ! तेरा वह कौन-सा स्थान है, जहाँ तू मुझे कभी भी न भूले, जहाँ आठ प्रहर मैं तेरा ध्यान करता रहूँ और मेरा शरीर निर्मल हो जाए॥ १॥ हे मेरे राम ! मैं वह स्थान ढूँढने के लिए आया हूँ। खोजते-खोजते मेरा साधुओं से मिलाप हो गया है और उनकी शरण में तुझे पा लिया है॥ १॥ रहाउ॥ ब्रह्मा ने वेदों का अध्ययन किया और वह उन्हें पढ़-पढ़ कर थक गया है। लेकिन फिर भी उसने एक तिल भर भी तेरी कीमत नहीं पाई। बड़े-बड़े साधक एवं सिद्ध भी तेरे दर्शनों के लिए तरसते रहते हैं परन्तु उन्हें भी माया ने मोह लिया है॥ २॥ विष्णु के दस पूजनीय अवतार हुए तथा महादेव भी महान् अवधूत हुए। परन्तु उन्होंने भी तेरा रहस्य नहीं पाया और अनेक साधु भी अपने शरीर पर विभूति लगा-लगा कर थक गए॥ ३॥ जिन संतजनों ने भगवान् का स्तुतिगान

किया है, उन्हें सहज सुख, आनंद एवं नाम का स्वाद हासिल हुआ है। हे नानक ! जब उन्हें गुरु मिल गया, जिसका दर्शन जीवन सफल करने वाला है तो ही उन्होंने अपने मन एवं तन में भगवान् का चिंतन किया है॥ ४॥ २॥ ४६॥

सूही महला ५ ॥ करम धरम पाखंड जो दीसहि तिन जमु जागाती लूटै ॥ निरबाण कीरतनु गावहु करते का निमख सिमरत जितु छूटै ॥ १ ॥ संतहु सागरु पारि उतरीऐ ॥ जे को बचनु कमावै संतन का सो गुर परसादी तरीऐ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ कोटि तीरथ मजन इसनाना इसु कलि महि मैलु भरीजै ॥ साधसंगि जो हरि गुण गावै सो निरमलु करि लीजै ॥ २ ॥ बेद कतेब सिम्रिति सभि सासत इन्ह पड़िआ मुकति न होई ॥ एकु अखरु जो गुरमुखि जापै तिस की निरमल सोई ॥ ३ ॥ खत्री ब्राहमण सूद वैस उपदेसु चहु वरना कउ साझा ॥ गुरमुखि नामु जपै उधरै सो कलि महि घटि घटि नानक माझा ॥ ४ ॥ ३ ॥ ५० ॥

लोग जो पाखण्ड रूपी धर्म-कर्म करते दिखाई देते हैं, उन धर्म-कर्मों को चुंगी वसूलने वाला यमराज ही लूट लेता है अर्थात् उन धर्म-कर्मों का कोई फल नहीं मिलता। एकाग्रचित होकर परमात्मा का शुद्ध कीर्तन गाओ, जिसका पल भर सिमरन करने से आदमी बन्धनों से छूट जाता है॥ १॥ हे संतजनो ! इस तरह भवसागर से पार हुआ जाता है। यदि कोई संतों के वचन का अनुसरण करता है तो गुरु की कृपा से वह भवसागर से तर जाता है॥ १॥ रहाउ॥ इस कलियुग में तीर्थों पर करोड़ों बार स्नान करने से भी मनुष्य के मन में अभिमान रूपी मैल भर जाती है। जो आदमी साधुओं की संगति में रहकर भगवान का गुणगान करता है, वह अपने मन को अभिमान रूपी मैल से निर्मल कर लेता है॥ २॥ वेदों, कतेबों, स्मृतियों एवं सब शास्त्रों का अध्ययन करने से मनुष्य की मुक्ति नहीं होती। जो गुरुमुख एक नाम रूपी अक्षर को जपता है, उसकी ही दुनिया में कीर्ति होती है॥ ३॥ यह उपदेश क्षत्रिय, ब्राह्मण, शूद्र एवं वैश्य इन चारों वर्णों के लिए सर्व सांझा है कि इस कलियुग में जो व्यक्ति गुरुमुख बनकर परमात्मा का नाम जपता है, उसका उद्धार हो जाता है। हे नानक ! परमात्मा हर एक शरीर में बसा हुआ है॥ ४॥ ३॥ ५०॥

सूही महला ५ ॥ जो किछु करै सोई प्रभ मानहि ओइ राम नाम रंगि राते ॥ तिन्ह की सोभा सभनी थाई जिन्ह प्रभ के चरण पराते ॥ १ ॥ मेरे राम हरि संता जेवडु न कोई ॥ भगता बणि आई प्रभ अपने सिउ जलि थलि महीअलि सोई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ कोटि अप्राधी संतसंगि उधरै जमु ता कै नेड़ि न आवै ॥ जनम जनम का बिछुड़िआ होवै तिन्ह हरि सिउ आणि मिलावै ॥ २ ॥ माइआ मोह भरमु भउ काटै संत सरणि जो आवै ॥ जेहा मनोरथु करि आराधे सो संतन ते पावै ॥ ३ ॥ जन की महिमा केतक बरनउ जो प्रभ अपने भाणे ॥ कहु नानक जिन सतिगुरु भेटिआ से सभ ते भए निकाणे ॥ ४ ॥ ४ ॥ ५१ ॥

जो कुछ होता है, संतजन उसे प्रभु का किया ही मानते हैं और वे तो राम नाम के रंग में ही मग्न रहते हैं। जो प्रभु के चरणों में पड़े रहते हैं, उनकी शोभा सारी दुनिया में हो जाती है॥ १॥ हे मेरे राम ! संतों जैसा महान् अन्य कोई नहीं है। भक्तों की अपने प्रभु से अटूट प्रीति बनी हुई है। उन्हें तो जल, धरती एवं आकाश में परमात्मा ही नजर आता है॥ १॥ रहाउ॥ संतों की संगति करने से करोड़ों पाप करने वाला अपराधी भी छूट जाता है और यम उसके निकट नहीं आता। जो व्यक्ति जन्म-जन्मांतरों से प्रभु से बिछुड़ा होता है, संत उसे भी सत्संग में लाकर भगवान् से मिला देते हैं॥ २॥ जो संतों की शरण में आ जाता है, वे उसका मोह-माया, भ्रम एवं भय दूर कर देते हैं। जिस मनोरथ से भी मनुष्य भगवान् की आराधना करता है, वह फल संतों से पा लेता

है॥ ३॥ जो प्रभु को बड़े ही प्यारे लगते हैं, मैं उन संतजनों की महिमा कितनी वर्णन करूँ? हे नानक। जिन्हें सतगुरु मिल गया है, वे सबसे ही स्वाधीन हो गए हैं॥ ४॥ ४॥ ५१॥

सूही महला ५ ॥ महा अगनि ते तुधु हाथ दे राखे पए तेरी सरणाई ॥ तेरा माणु ताणु रिद अंतरि होर दूजी आस चुकाई ॥ १ ॥ मेरे राम राइ तुधु चिति आइऐ उबरे ॥ तेरी टेक भरवासा तुम्हरा जपि नामु तुम्हारा उधरे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ अंध कूप ते काढि लीए तुम्ह आपि भए किरपाला ॥ सारि सम्हालि सरब सुख दीए आपि करे प्रतिपाला ॥ २ ॥ आपणी नदरि करे परमेसरु बंधन काटि छडाए ॥ आपणी भगति प्रभि आपि कराई आपे सेवा लाए ॥ ३ ॥ भरमु गइआ भै मोह बिनासे मिटिआ सगल विसूरा ॥ नानक दइआ करी सुखदातै भेटिआ सतिगुरु पूरा ॥ ४ ॥ ५ ॥ ५२ ॥

हे ईश्वर ! जो भी तेरी शरण में आए हैं, तूने अपना हाथ देकर उन्हें तृष्णा रूपी महा अग्नि में जलने से बचा लिया है। तेरा ही मान एवं बल मेरे हृदय में मेरा सहारा बना हुआ है और किसी दूसरे की आशा अपने मन से निकाल दी है॥ १॥ हे मेरे राम ! जब तू याद आता है तो मैं भवसागर में डूबने से बचा रहता हूँ। मैंने तेरी टेक ली है और तुम्हारा ही भरोसा है। तेरा नाम जपकर मेरा उद्धार हो गया है॥ १॥ रहाउ॥ जब तुम स्वयं ही कृपालु हो गए, तब तूने मुझे संसार रूपी अंधे कुएं में से बाहर निकाल लिया। तूने मुझे सहारा देकर देखभाल करके सारे सुख दिए हैं। तू स्वयं ही मेरा पालन-पोषण करता है॥ २॥ परमेश्वर ने अपनी कृपा-दृष्टि की है और मेरे बन्धन काट कर मुझे छुड़ा लिया है। प्रभु ने अपनी भक्ति स्वयं ही मुझसे करवाई है और उसने स्वयं ही मुझे अपनी सेवा में लगाया है॥ ३॥ मेरा भ्रम दूर हो गया है, मेरा भय एवं मोह नाश हो गए हैं और मेरे सारे दुख-फिक्र मिट गए हैं। हे नानक ! सुखदाता परमात्मा ने मुझ पर दया की है और पूर्ण सतगुरु मिल गया है॥ ४॥ ५॥ ५२॥

सूही महला ५ ॥ जब कछु न सीओ तब किआ करता कवन करम करि आइआ ॥ अपना खेलु आपि करि देखै ठाकुरि रचनु रचाइआ ॥ १ ॥ मेरे राम राइ मुझ ते कछू न होई ॥ आपे करता आपि कराए सरब निरंतरि सोई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ गणती गणी न छूटै कतहू काची देह इआणी ॥ क्रिपा करहु प्रभ करणैहारे तेरी बखस निराली ॥ २ ॥ जीअ जंत सभ तेरे कीते घटि घटि तुही धिआईऐ ॥ तेरी गति मिति तूहै जाणहि कुदरति कीम न पाईऐ ॥ ३ ॥ निरगुणु मुगधु अजाणु अगिआनी करम धरम नही जाणा ॥ दइआ करहु नानकु गुण गावै मिठा लगै तेरा भाणा ॥ ४ ॥ ६ ॥ ५३ ॥

जब कुछ भी नहीं था, (अर्थात् जब सृष्टि-रचना नहीं हुई थी) तब यह जीव क्या करता था ? यह जीव कौन से कर्म करके जन्म लेकर जगत् में आया है ? अपनी जगत् रूपी खेल रचकर वह स्वयं ही देखता है और उस ठाकुर ने स्वयं ही यह सृष्टि-रचना की है॥ १॥ हे मेरे राम ! मुझ से कुछ भी नहीं होता। वह करतार स्वयं ही सबकुछ करता है और स्वयं ही जीवों से करवाता है। सबमें एक ईश्वर ही बसा हुआ है॥ १॥ रहाउ॥ हे प्रभु ! यदि मेरे कर्मों का लेखा-जोखा किया जाए तो मैं कभी भी जन्म-मरण के चक्र से छूट नहीं सकता। मेरा ज्ञानहीन शरीर नाशवान है। हे रचयिता प्रभु ! कृपा करो, क्योंकि तेरी मेहर निराली है॥ २॥ सब जीव-जन्तु तेरे ही पैदा किए हुए हैं और हर शरीर में तेरा ही ध्यान किया जाता है। तेरी गति एवं विस्तार तू ही जानता है और तेरी कुदरत का मूल्यांकन नहीं किया जा सकता॥ ३॥ मैं गुणविहीन, मूर्ख, अनजान एवं अज्ञानी हूँ और कोई कर्म-धर्म नहीं ज़ानता। नानक की प्रार्थना है कि हे प्रभु ! मुझ पर दया करो ताकि तेरा गुणगान करता रहूँ और तेरी इच्छा सदैव ही मीठी लगे॥ ४॥ ६॥ ५३॥

सूही महला ५ ॥ भागठड़े हरि संत तुम्हारे जिन्ह घरि धनु हरि नामा ॥ परवाणु गणी सेई इह आए सफल तिना के कामा ॥ १ ॥ मेरे राम हरि जन कै हउ बलि जाई ॥ केसा का करि चवरु ढुलावा चरण धूड़ि मुखि लाई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जनम मरण दुहहू महि नाही जन परउपकारी आए ॥ जीअ दानु दे भगती लाइनि हरि सिउ लैनि मिलाए ॥ २ ॥ सचा अमरु सची पातिसाही सचे सेती राते ॥ सचा सुखु सची वडिआई जिस के से तिनि जाते ॥ ३ ॥ पखा फेरी पाणी ढोवा हरि जन कै पीसणु पीसि कमावा ॥ नानक की प्रभ पासि बेनंती तेरे जन देखणु पावा ॥ ४ ॥ ७ ॥ ५४ ॥

हे हरि ! तेरे संत खुशनसीब हैं, जिनके हृदय-घर में नाम रूपी धन है। उनका जन्म लेकर जगत् में आना ही स्वीकार गिना जाता है और उनके सब कार्य सफल हो जाते हैं॥ १॥ हे मेरे राम ! मैं संतजनों पर बलिहारी जाता हूँ और अपने केशों का चँवर बनाकर उनके सिर पर झुलाता हूँ॥ १॥ रहाउ॥ वे जीवों पर परोपकार करने के लिए जगत् में आए हैं और वे जन्म-मरण दोनों से ही रहित हैं। वे जीवों को नाम-दान देकर उन्हें भक्ति में लगाते हैं और उनका भगवान से मिलाप करवा देते हैं॥ २॥ जिस परमात्मा का हुक्म शाश्वत है और जिसकी बादशाहत भी शाश्वत है, वे उस सत्य में ही रंगे रहते हैं। उन्हें सच्चा सुख एवं सच्ची बड़ाई मिलती है। जिस परमात्मा के वे सेवक होते हैं, वे उसे ही जानते हैं॥ ३॥ हे हरि ! मैं तेरे संतजनों के घर चक्की पीस कर उनकी सेवा करूँ, उन्हें पंखा झुलाऊँ और उनके लिए पानी ढोऊँ। नानक की प्रभु के समक्ष यही विनती है कि मैं तेरे संतजनों का दर्शन करता रहूँ॥ ४॥ ७॥ ५४॥

सूही महला ५ ॥ पारब्रहम परमेसर सतिगुर आपे करणैहारा ॥ चरण धूड़ि तेरी सेवकु मागै तेरे दरसन कउ बलिहारा ॥ १ ॥ मेरे राम राइ जिउ राखहि तिउ रहीऐ ॥ तुधु भावै ता नामु जपावहि सुखु तेरा दिता लहीऐ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ मुकति भुगति जुगति तेरी सेवा जिसु तूं आपि कराइहि ॥ तहा बैकुंठु जह कीरतनु तेरा तूं आपे सरधा लाइहि ॥ २ ॥ सिमरि सिमरि सिमरि नामु जीवा तनु मनु होइ निहाला ॥ चरण कमल तेरे धोइ धोइ पीवा मेरे सतिगुर दीन दइआला ॥ ३ ॥ कुरबाणु जाई उसु वेला सुहावी जितु तुमरै दुआरै आइआ ॥ नानक कउ प्रभ भए क्रिपाला सतिगुरु पूरा पाइआ ॥ ४ ॥ ८ ॥ ५५ ॥

हे परब्रह्म-परमेश्वर, हे सतगुरु, तू स्वयं ही सब कुछ कर सकने वाला है, तेरा सेवक तेरी चरण-धूलि माँगता है और तेरे दर्शन पर बलिहारी जाता है॥ १॥ हे मेरे राम ! जैसे तू मुझे रखता है, वैसे ही मैं रहता हूँ। जब तुझे उपयुक्त लगता है तो तू अपना नाम जपवाता है। मैं तेरा दिया हुआ ही सुख लेता हूँ॥ १॥ रहाउ॥ माया के बन्धनों से मुक्ति, भुक्ति एवं जीवन-युक्ति तेरी सेवा करने से ही मिलती है, जिसे तू स्वयं ही अपने सेवकों से करवाता है। जहाँ तेरा कीर्तन किया जाता है, वहाँ ही बैकुण्ठ बन जाता है। तू स्वयं ही अपने सेवकों के मन में श्रद्धा उत्पन्न करता है॥ २॥ हरदम तेरा नाम-सिमरन करने से ही मुझे जीवन मिलता रहता है और मेरा मन-तन निहाल हो जाता है। हे मेरे दीनदयालु सतगुरु ! मैं तेरे सुन्दर चरण कमल धो-धोकर पीता रहूँ॥ ३॥ मैं उस सुन्दर वक्त पर कुर्बान जाता हूँ, जब मैं तुम्हारे द्वार पर आया था। हे भाई ! जब प्रभु नानक पर कृपालु हुआ तो उसने पूर्ण सतगुरु को पा लिया॥ ४॥ ८॥ ५५॥

सूही महला ५ ॥ तुधु चिति आए महा अनंदा जिसु विसरहि सो मरि जाए ॥ दइआलु होवहि जिसु ऊपरि करते सो तुधु सदा धिआए ॥ १ ॥ मेरे साहिब तूं मै माणु निमाणी ॥ अरदासि करी प्रभ अपने आगै सुणि सुणि जीवा तेरी बाणी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ चरण धूड़ि तेरे जन की होवा तेरे दरसन कउ बलि जाई ॥ अंम्रित बचन रिदै उरि धारी तउ किरपा ते संगु पाई ॥ २ ॥ अंतर की गति तुधु पहि सारी तुधु

जेवडु अवरु न कोई ॥ जिस नो लाइ लैहि सो लागै भगतु तुहारा सोई ॥ ३ ॥ दुइ कर जोड़ि मागउ इकु दाना साहिबि तुठै पावा ॥ सासि सासि नानकु आराधे आठ पहर गुण गावा ॥ ४ ॥ ६ ॥ ५६॥

हे प्रभु! जब तू याद आता है तो मन में बड़ा आनंद पैदा होता है। लेकिन जिसे तू भूल जाता है, उसकी तो मृत्यु ही हो जाती है, हे कर्ता! जिस पर तू दयालु हो जाता है, वह सदैव तेरा ध्यान करता रहता है॥ १॥ हे मेरे मालिक! तू मुझ जैसे मानहीन का सम्मान है। मैं अपने प्रभु के समक्ष प्रार्थना करता हूँ कि तेरी वाणी सुन-सुनकर ही जीता रहूँ॥ १॥ रहाउ॥ मैं तेरे सेवक की चरण-धूलि बन जाऊँ और तेरे दर्शन पर बलिहारी जाता रहूँ। मैं तेरे अमृत वचन हृदय में धारण करता हूँ और तेरी कृपा से ही संतों की संगति मिली है॥ २॥ मैंने अपने मन की हालत तेरे समक्ष रख दी है और तेरे जैसा महान् अन्य कोई नहीं है। जिसे तू अपनी भक्ति में लगाता है, वही भक्ति में लगता है और वही तुम्हारा भक्त है॥ ३॥ मैं अपने दोनों हाथ जोड़कर तुझसे एक दान माँगता हूँ। हे मालिक! यदि तू प्रसन्न हो जाए तो मैं यह दान हासिल कर लूँ। नानक सांस-सांस से तेरी आराधना करता रहे और आठ प्रहर तेरा गुणगान करता रहे॥ ४॥ ६॥ ५६॥

सूही महला ५ ॥ जिस के सिर ऊपरि तूं सुआमी सो दुखु कैसा पावै ॥ बोलि न जाणै माइआ मदि माता मरणा चीति न आवै ॥ १ ॥ मेरे राम राइ तूं संता का संत तेरे ॥ तेरे सेवक कउ भउ किछु नाही जमु नही आवै नेरे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जो तेरै रंगि राते सुआमी तिन्ह का जनम मरण दुखु नासा ॥ तेरी बखस न मेटै कोई सतिगुर का दिलासा ॥ २ ॥ नामु धिआइनि सुख फल पाइनि आठ पहर आराधहि ॥ तेरी सरणि तेरै भरवासै पंच दुसट लै साधहि ॥ ३ ॥ गिआनु धिआनु किछु करमु न जाणा सार न जाणा तेरी ॥ सभ ते वडा सतिगुरु नानकु जिनि कल राखी मेरी ॥ ४ ॥ १० ॥ ५७ ॥

हे स्वामी! जिसके सिर पर तूने अपना हाथ रखा है, वह दुख कैसे पा सकता है? माया के नशे में मस्त हुआ व्यक्ति प्रभु का नाम बोलना ही नहीं जानता और उसे मरना भी याद नहीं आता॥ १॥ हे मेरे राम! तू संतों का स्वामी है और संत तेरे सेवक हैं। तेरे सेवक को कोई भय नहीं लगता और यम भी उसके निकट नहीं आता॥ १॥ रहाउ॥ हे स्वामी! जो तेरे रंग में रंगे हुए हैं, उनका जन्म-मरण का दुख नाश हो गया है। सतगुरु ने मुझे यह दिलासा दिया हुआ है कि तेरी बख्शिश को कोई मिटा नहीं सकता॥ २॥ परमात्मा के नाम का ध्यान करने वाले फल के रूप में सुख ही हासिल करते हैं और आठों प्रहर प्रभु की आराधना करते रहते हैं। तेरी शरण एवं तेरे भरोसे पर वे काम, क्रोध, लोभ, मोह एवं अहंकार-पाँच दुष्टों को अपने वश में कर लेते हैं॥ ३॥ हे प्रभु! मैं ज्ञान, ध्यान एवं धर्म-कर्म कुछ भी नहीं जानता और तेरी महत्ता को भी नहीं जानता। सतिगुरु नानक सबसे बड़ा है, जिसने मेरी इज्जत रख ली है॥ ४॥ १०॥ ५७॥

सूही महला ५ ॥ सगल तिआगि गुर सरणी आइआ राखहु राखनहारे ॥ जितु तू लावहि तितु हम लागह किआ एहि जंत विचारे ॥ १ ॥ मेरे राम जी तूं प्रभ अंतरजामी ॥ करि किरपा गुरदेव दइआला गुण गावा नित सुआमी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ आठ पहर प्रभु अपना धिआईऐ गुर प्रसादि भउ तरीऐ ॥ आपु तिआगि होईऐ सभ रेणा जीवतिआ इउ मरीऐ ॥ २ ॥ सफल जनमु तिस का जग भीतरि साधसंगि नाउ जापे ॥ सगल मनोरथ तिस के पूरन जिसु दइआ करे प्रभु आपे ॥ ३ ॥ दीन दइआल क्रिपाल प्रभ सुआमी तेरी सरणि दइआला ॥ करि किरपा अपना नामु दीजै नानक साध रवाला ॥ ४ ॥ ११ ॥ ५८ ॥

मैं सबकुछ त्याग कर गुरु की शरण में आया हूँ। हे रखवाले ! मेरी रक्षा करो। जिस तरफ तू हमें लगाता है, हम उधर ही लग जाते हैं। यह जीव बेचारे क्या कर सकते हैं॥ १॥ हे मेरे राम जी ! तू अन्तर्यामी प्रभु है। हे दयालु गुरुदेव ! कृपा करो ताकि मैं नित्य ही अपने स्वामी का गुणगान करता रहूँ॥ १॥ रहाउ॥ आठों प्रहर प्रभु का ध्यान करना चाहिए। गुरु की कृपा से भवसागर से पार हुआ जा सकता है। अपना अभिमान छोड़कर सबकी चरण-धूलि बन जाना चाहिए, इस प्रकार जीवित ही दुनिया के मोह से मरा जाता है॥ २॥ जो व्यक्ति साधुओं की संगति में रहकर परमात्मा का नाम जपता रहता है, संसार में उसका जन्म सफल हो जाता है। जिस पर प्रभु स्वयं दया करता है, उसके सारे मनोरथ पूर्ण हो जाते हैं॥ ३॥ हे मेरे स्वामी प्रभु! तू दीनदयाल एवं कृपालु है। हे दया के घर ! मैं तेरी शरण में आया हूँ। नानक प्रार्थना करता है कि हे प्रभु ! कृपा करके मुझे अपना नाम एवं साधुओं की चरण-धूलि प्रदान करो॥ ४॥ ११॥ ५८॥

रागु सूही असटपदीआ महला १ घरु १ १ओं सतिगुर प्रसादि ॥

सभि अवगण मै गुणु नही कोई ॥ किउ करि कंत मिलावा होई ॥ १ ॥ ना मै रूपु न बंके नैणा ॥ ना कुल ढंगु न मीठे बैणा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सहजि सीगार कामणि करि आवै ॥ ता सोहागणि जा कंतै भावै ॥ २ ॥ ना तिसु रूपु न रेखिआ काई ॥ अंति न साहिबु सिमरिआ जाई ॥ ३ ॥ सुरति मति नाही चतुराई ॥ करि किरपा प्रभ लावहु पाई ॥ ४ ॥ खरी सिआणी कंत न भाणी ॥ माइआ लागी भरमि भुलाणी ॥ ५ ॥ हउमै जाई ता कंत समाई ॥ तउ कामणि पिआरे नव निधि पाई ॥ ६ ॥ अनिक जनम बिछुरत दुखु पाइआ ॥ करु गहि लेहु प्रीतम प्रभ राइआ ॥ ७ ॥ भणति नानकु सहु है भी होसी ॥ जै भावै पिआरा तै रावेसी ॥ ८ ॥ १ ॥

मुझ में अवगुण ही भरे हुए हैं और कोई गुण नहीं है। फिर पति-परमेश्वर से कैसे मेरा मिलाप हो सकता है॥ १॥ न मेरा रूप सुन्दर है और न ही मेरे नयन सुन्दर हैं। न मेरा कुलीन आचरण है और न ही मेरे मीठे बोल हैं॥ १॥ रहाउ॥ जो जीव-स्त्री सहजावस्था का श्रृंगार करके अपने पति-परमेश्वर के पास आती है, तो वही सुहागिन परमेश्वर को भाती है॥ २॥ उस प्रभु का न कोई रूप है और न कोई चिन्ह है। वह मालिक अंतकाल याद नहीं किया जा सकता॥ ३॥ मुझ में सुरति, बुद्धि एवं चतुराई नहीं है। हे प्रभु ! कृपा करके अपने चरणों में लगा लो॥ ४॥ जो जीव-स्त्री बहुत ज्यादा चतुर बनती है, वह पति-परमेश्वर को अच्छी नहीं लगती। माया में फँसी हुई जीव-स्त्री भ्रम में ही भूली रहती है॥ ५॥ यदि जीव-स्त्री अपना अहंत्व दूर कर दे तो वह पति-परमेश्वर में विलीन हो सकती है और तब ही उसे नवनिधियों का स्वामी प्यारा-प्रभु प्राप्त होता है॥ ६॥ हे प्रियतम प्रभु ! अनेक जन्म तुझसे बिछुड़कर मैंने दुख ही पाया है, अतः मेरा हाथ पकड़कर मुझे अपना बना लो॥ ७॥ नानक कथन करते हैं कि प्रभु वर्तमान में भी स्थित है और भविष्य में भी होगा। जो जीव-स्त्री उसे अच्छी लगती है, वह प्यारा-प्रभु उससे ही प्रेम करता है॥ ८॥ १॥

सूही महला १ घरु ६ १ओं सतिगुर प्रसादि ॥

कचा रंगु कसुंभ का थोड़ड़िआ दिन चारि जीउ ॥ विणु नावै भ्रमि भुलीआ ठगि मुठी कूड़िआरि जीउ ॥ सचे सेती रतिआ जनमु न दूजी वार जीउ ॥ १ ॥ रंगे का किआ रंगीऐ जो रते रंगु लाइ जीउ ॥ रंगण वाला सेवीऐ सचे सिउ चितु लाइ जीउ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ चारे कुंडा जे भवहि बिनु भागा धनु नाहि जीउ ॥ अवगणि मुठी जे फिरहि बधिक थाइ न पाहि जीउ ॥ गुरि राखे से उबरे सबदि रते मन

माहि जीउ ॥ २ ॥ चिटे जिन के कपड़े मैले चित कठोर जीउ ॥ तिन मुखि नामु न ऊपजै दूजै विआपे चोर जीउ ॥ मूलु न बूझहि आपणा से पसूआ से ढोर जीउ ॥ ३ ॥ नित नित खुसीआ मनु करे नित नित मंगै सुख जीउ ॥ करता चिति न आवई फिरि फिरि लगहि दुख जीउ ॥ सुख दुख दाता मनि वसै तितु तनि कैसी भुख जीउ ॥ ४ ॥ बाकी वाला तलबीऐ सिरि मारे जंदारु जीउ ॥ लेखा मंगै देवणा पुछै करि बीचारु जीउ ॥ सचे की लिव उबरै बखसे बखसणहारु जीउ ॥ ५ ॥ अन को कीजै मितड़ा खाकु रलै मरि जाइ जीउ ॥ बहु रंग देखि भुलाइआ भुलि भुलि आवै जाइ जीउ ॥ नदरि प्रभू ते छुटीऐ नदरी मेलि मिलाइ जीउ ॥ ६ ॥ गाफल गिआन विहूणिआ गुर बिनु गिआनु न भालि जीउ ॥ खिंचोताणि विगुचीऐ बुरा भला दुइ नालि जीउ ॥ बिनु सबदै भै रतिआ सभ जोही जमकालि जीउ ॥ ७ ॥ जिनि करि कारणु धारिआ सभसै देइ आधारु जीउ ॥ सो किउ मनहु विसारीऐ सदा सदा दातारु जीउ ॥ नानक नामु न वीसरै निधारा आधारु जीउ ॥ ८ ॥ १ ॥ २ ॥

जिस प्रकार कुसुंभ के फूल का रंग कच्चा ही होता है और थोड़े चार दिन ही रहता है। वैसे ही परमात्मा के नाम बिना जीव-स्त्रियाँ भ्रम में ही भूली हुई हैं और उन झूठी स्त्रियों को काम, क्रोध, लोभ, मोह एवं अहंकार रूपी ठगों ने लूट लिया है। सच्चे प्रभु के नाम में मग्न रहने वाली जीव-स्त्रियों का दूसरी बार जन्म नहीं होता॥ १॥ जो पहले ही प्रभु के प्रेम-रंग में रंगकर रंगे हुए हैं, उन रंगे हुओं को दोबारा रंगने की कोई जरूरत नहीं। उस रंगने वाले प्रभु की उपासना करनी चाहिए और उस परम-सत्य से ही चित्त लगाना चाहिए॥ १॥ रहाउ॥ चाहे कोई चारों दिशाओं में भी घूमता रहे लेकिन भाग्य के बिना नाम-धन हासिल नहीं होता। यदि अवगुणों की ठगी हुई जीव-स्त्री शिकारी की तरह जंगलों में भटकती रहे, तो उसे परमात्मा के दरबार में स्थान नहीं मिलता। जिनकी गुरु ने रक्षा की है, वे भवसागर में डूबने से बच गए। वे अपने मन में शब्द में ही रंगे रहते हैं॥ २॥ जिनके वस्त्र तो सफेद हैं, मगर चित्त बड़े मैले और निर्दयी हैं, उनके मुँह से परमात्मा का नाम कभी निकलता ही नहीं। वे द्वैतभाव में फँसे हुए प्रभु के चोर हैं। जो अपने मूल परमात्मा को नहीं समझते, वे पशु एवं जानवर हैं॥ ३॥ उनके मन सदैव खुशियाँ मनाते रहते हैं और वे सदैव ही सुख की कामना करते रहते हैं। उन्हें परमात्मा कभी याद ही नहीं आता और फिर उन्हें बार-बार दुख लगते रहते हैं। जिसके मन में सुख एवं दुख देने वाला दाता बस जाता है, उसके तन में भूख कैसे लग सकती है॥ ४॥ जिस जीव के जिम्मे कर्मों का कर्जा देना शेष रहता है, उसे यमराज की कचहरी में बुलाया जाता है। निर्दयी यम उसके सिर पर चोट मारता है। यमराज उसके कर्मों का विचार करके उससे पूछताछ करता है और उससे लेखा मांगता है, जो उसने देना होता है। सच्चे परमात्मा में वृत्ति द्वारा ही जीव कर्मों का लेखा देने से बचता है। क्योंकि क्षमाशील परमेश्वर उसे क्षमा कर देता है॥ ५॥ यदि भगवान के सिवा किसी अन्य को मित्र बना लिया जाए, वह तो मर कर स्वयं मिट्टी में ही मिल जाता है। वह दुनिया के बहुत सारे रंग-तमाशे देखकर भटक गया है और भटक-भटक जन्मता-मरता रहता है। वह प्रभु की कृपा-दृष्टि से ही जन्म-मरण से छूटता है और प्रभु कृपा-दृष्टि द्वारा उसे साथ मिला लेता है॥ ६॥ हे गाफिल-ज्ञानहीन इन्सान! गुरु के बिना ज्ञान की खोज मत कर। तू दुविधा में फँसकर ख्वार होता रहता है। तेरा किया हुआ बुरा-भला दोनों तेरे साथ ही रहते हैं। शब्द के बिना जीवों को मौत का डर बना रहता है। सारी दुनिया को यम ने अपनी दृष्टि में रखा हुआ है॥ ७॥ जिस परमात्मा ने जगत् को पैदा करके उसे स्थापित किया हुआ है, वह ही सबको आधार देता है। उस दाता को अपने मन से क्यों

भुलाएँ ? जो जीवों को हमेशा देने वाला है। हे नानक ! मुझे बेसहारा जीवों को सहारा देने वाला प्रभु का नाम कभी न भूले॥ ८॥ १॥ २॥

सूही महला १ काफी घरु १० १ओं सतिगुर प्रसादि ॥

माणस जनमु दुलंभु गुरमुखि पाइआ ॥ मनु तनु होइ चुलंभु जे सतिगुर भाइआ ॥ १ ॥ चलै जनमु सवारि वखरु सचु लै ॥ पति पाए दरबारि सतिगुर सबदि भै ॥ १ ॥ रहाउ ॥ मनि तनि सचु सलाहि साचे मनि भाइआ ॥ लालि रता मनु मानिआ गुरु पूरा पाइआ ॥ २ ॥ हउ जीवा गुण सारि अंतरि तू वसै ॥ तूं वसहि मन माहि सहजे रसि रसै ॥ ३ ॥ मूरख मन समझाइ आखउ केतड़ा ॥ गुरमुखि हरि गुण गाइ रंगि रंगेतड़ा ॥ ४ ॥ नित नित रिदै समालि प्रीतमु आपणा ॥ जे चलहि गुण नालि नाही दुखु संतापणा ॥ ५ ॥ मनमुख भरमि भुलाणा ना तिसु रंगु है ॥ मरसी होइ विडाणा मनि तनि भंगु है ॥ ६ ॥ गुर की कार कमाइ लाहा घरि आणिआ ॥ गुरबाणी निरबाणु सबदि पछाणिआ ॥ ७ ॥ इक नानक की अरदासि जे तुधु भावसी ॥ मै दीजै नाम निवासु हरि गुण गावसी ॥ ८ ॥ १ ॥ ३ ॥

यह मानव जन्म दुर्लभ है, जिसका महत्व गुरुमुख ने ही समझा है। यदि सतगुरु को भा जाए तो मन-तन परमात्मा के रंग में गहरा लाल हो जाता है॥ १॥ वह अपना जन्म संवार कर सत्य-नाम का सौदा खरीद कर दुनिया से चला जाता है। सतगुरु के शब्द द्वारा परमात्मा में भय होने से वह सत्य के दरबार में बड़ी शोभा हासिल करता है॥ १॥ रहाउ॥ वह अपने मन-तन में सच्चे परमात्मा की स्तुति करके परम सत्य को प्यारे लगने लगता है। जब उसने पूर्ण गुरु पा लिया तो उसका मन प्रसन्न हो गया और वह प्रभु के प्रेम रूपी गहरे लाल-रंग में रंग गया॥ २॥ हे ईश्वर ! जब तू मेरे मन में बसता है तो मैं तेरे गुणों को स्मरण करके ही जीता हूँ। एक तू ही मेरे मन में बसता है और मेरा मन सहज ही हरि-रस का स्वाद प्राप्त करता रहता है॥ ३॥ हे मूर्ख मन ! मैं तुझे कितना समझा कर बतलाऊँ कि गुरु के माध्यम से हरि का गुणगान करके उसके रंग में रंग जा॥ ४॥ प्रियतम प्रभु को नित्य ही अपने हृदय में याद कर। यदि तू शुभ-गुण अपने साथ लेकर जाए तो तुझे कोई दुख-संताप प्रभावित नहीं करेगा॥ ५॥ मन की इच्छानुसार चलने वाला आदमी भ्रम में फँसकर भूला ही हुआ है और उसे परमात्मा से कोई प्यार नहीं है। वह पराया होकर मरेगा, क्योंकि उसका मन-तन ही खत्म हो गया है॥ ६॥ जिस इन्सान ने गुरु की शिक्षानुसार आचरण करके भक्ति रूपी लाभ हृदय-घर में बसाया है, उसने गुरुवाणी द्वारा पावन ब्रह्म-शब्द को पहचान लिया है॥ ७॥ हे मालिक ! नानक की तुझसे एक यही प्रार्थना है, यदि तुझे उपयुक्त लगे तो मुझे नाम प्रदान करो चूंकि मैं तेरा गुणगान करता रहूँ॥ ८॥ १॥ ३॥

सूही महला १ ॥ जिउ आरणि लोहा पाइ भंनि घड़ाईऐ ॥ तिउ साकतु जोनी पाइ भवै भवाईऐ ॥ १ ॥ बिनु बूझे सभु दुखु दुखु कमावणा ॥ हउमै आवै जाइ भरमि भुलावणा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ तूं गुरमुखि रखणहारु हरि नामु धिआईऐ ॥ मेलहि तुझहि रजाइ सबदु कमाईऐ ॥ २ ॥ तूं करि करि वेखहि आपि देहि सु पाईऐ ॥ तू देखहि थापि उथापि दरि बीनाईऐ ॥ ३ ॥ देही होवगि खाकु पवणु उडाईऐ ॥ इहु किथै घरु अउताकु महलु न पाईऐ ॥ ४ ॥ दिहु दीवी अंध घोरु घबु मुहाईऐ ॥ गरबि मुसै घरु चोरु किसु रूआईऐ ॥ ५ ॥ गुरमुखि चोरु न लागि हरि नामि जगाईऐ ॥ सबदि निवारी आगि जोति दीपाईऐ ॥ ६ ॥ लालु रतनु हरि नामु गुरि सुरति बुझाईऐ ॥ सदा रहै निहकामु जे गुरमति पाईऐ ॥ ७ ॥ राति दिहै हरि नाउ मंनि वसाईऐ ॥ नानक मेलि मिलाइ जे तुधु भाईऐ ॥ ८ ॥ २ ॥ ४ ॥

हे भाई ! जैसे भट्ठी में डालकर लोहे को गालकर निर्मित किया जाता है, वैसे ही शाक्त योनियों में पड़कर जीवन-मृत्यु के बन्धन में भटकता रहता है॥ १॥ सत्य को समझे बिना उसे हर तरफ दुख ही मिलता है और वह निरा दुख ही भोगता है। अभिमान के कारण वह जन्मता-मरता रहता है और भ्रम में ही भूला रहता है॥ १॥ रहाउ॥ हे परमेश्वर ! तू गुरुमुख की योनियों के चक्र से रक्षा करने वाला है, इसलिए प्रभु नाम का मनन करना चाहिए ! तू जीव को अपनी इच्छा से ही गुरु से मिलाता है और फिर वह शब्द की साधना करता है॥ २॥ हे मालिक ! जीवों को पैदा कर-करके तू स्वयं ही उनकी देखभाल करता है। जो कुछ तू देता है, उन्हें वही प्राप्त होता है। तू बनाकर-बिगाड़ कर देखता रहता है। तू सबको अपनी निगाह में रखता है॥ ३॥ जब प्राण पखेरु हो जाते हैं तो यह शरीर मिट्टी बन जाता है। अब उसे यह घर एवं बैठक कहाँ से मिलने हैं ? वह मंजिल प्राप्त नहीं करता॥ ४॥ उज्ज्वल दिन होते हुए भी उसके हृदय-घर में घोर अँधकार बना हुआ है और उसके हृदय-घर का नाम रूपी माल लुटता जा रहा है। अहंकार रूपी चोर उसका हृदय-घर लूटता जाता है लेकिन अब वह किसके पास जाकर फरियाद करे?॥ ५॥ हरि का नाम गुरुमुख को जगाकर अर्थात् सचेत रखता है और गुरुमुख के नाम-धन को चोर नहीं चुराता। शब्द ने उसकी तृष्णा रूपी अग्नि बुझा दी है और मन में ज्ञान-ज्योति प्रज्वलित कर दी है॥ ६॥ गुरु ने यह सूझ बता दी है कि परमात्मा का नाम अमूल्य लाल एवं रत्न है। यदि मनुष्य गुरु उपदेश प्राप्त कर ले तो वह सदैव ही कामना से रहित बना रहता है॥ ७॥ रात-दिन परमात्मा का नाम मन में बसाकर रखना चाहिए। नानक प्रार्थना करता है कि हे हरि ! यदि तुझे उपयुक्त लगे तो जीव को अपने साथ मिला लेता है॥ ८॥ २॥ ४॥

सूही महला १ ॥ मनहु न नामु विसारि अहिनिसि धिआईऐ ॥ जिउ राखहि किरपा धारि तिवै सुखु पाईऐ ॥ १ ॥ मै अंधुले हरि नामु लकुटी टोहणी ॥ रहउ साहिब की टेक न मोहै मोहणी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जह देखउ तह नालि गुरि देखालिआ ॥ अंतरि बाहरि भालि सबदि निहालिआ ॥ २ ॥ सेवी सतिगुर भाइ नामु निरंजना ॥ तुधु भावै तिवै रजाइ भरमु भउ भंजना ॥ ३ ॥ जनमत ही दुखु लागै मरणा आइ कै ॥ जनमु मरणु परवाणु हरि गुण गाइ कै ॥ ४ ॥ हउ नाही तू होवहि तुध ही साजिआ ॥ आपे थापि उथापि सबदि निवाजिआ ॥ ५ ॥ देही भसम रुलाइ न जापी कह गइआ ॥ आपे रहिआ समाइ सो विसमादु भइआ ॥ ६ ॥ तूं नाही प्रभ दूरि जाणहि सभ तू है ॥ गुरमुखि वेखि हदूरि अंतरि भी तू है ॥ ७ ॥ मै दीजै नाम निवासु अंतरि सांति होइ ॥ गुण गावै नानक दासु सतिगुरु मति देइ ॥ ८ ॥ ३ ॥ ५ ॥

हे जीव ! अपने मन से प्रभु-नाम को मत भुला, अपितु दिन-रात नाम का ध्यान करो। वह कृपानिधान प्रभु जैसे रखता है, वैसे ही सुख प्राप्त होता है॥ १॥ प्रभु का नाम मुझ जैसे अंधे की लकड़ी एवं सहारा है। मैं अपने मालिक की शरण में रहता हूँ और मन को मुग्ध करने वाली माया मुझे प्रभावित नहीं करती॥ १॥ रहाउ॥ मैं जिधर भी देखता हूँ, उधर ही गुरु ने प्रभु मेरे साथ दिखा दिया है। अन्दर-बाहर खोजकर मैंने ब्रह्म को देख लिया है॥ २॥ मैं श्रद्धा-पूर्वक सतगुरु की सेवा करता हुआ तेरा पावन नाम स्मरण करता रहता हूँ। हे भ्रम एवं भयनाशक ! जैसे तुझे उपयुक्त लगता है, वैसे ही तेरी रज़ा में रहता हूँ॥ ३॥ जगत् में जन्म लेते ही जीव को मृत्यु का दुख आकर लग जाता है। लेकिन निरंकार प्रभु का गुणगान करने से जन्म-मरण दोनों ही स्वीकार हो जाते हैं॥ ४॥ हे परमेश्वर ! जिसके हृदय में तू बसता है, वहाँ अभिमान नहीं रहता। तूने ही यह संसार उत्पन्न किया है, तू स्वयं ही पैदा करके नाश कर देता है और शब्द द्वारा कई जीवों

को तू सत्कृत करता है॥ ५॥ पता नहीं लगता कि जीव अपनी देहि को मिट्टी में मिलाकर कहाँ चला गया है? परमात्मा स्वयं ही सब में समाया हुआ है और यह बहुत बड़ा आश्चर्य है॥ ६॥ हे प्रभु! तू कहीं दूर नहीं बसता, सभी जानते हैं कि एक तू ही है। गुरमुख तुझे अपने समक्ष ही देखते हैं और सभी के हृदय में तू ही बसता है॥ ७॥ हे मालिक! मुझे अपने नाम में निवास दीजिए ताकि मेरे मन में शांति प्राप्त हो। दास नानक का कथन है कि यदि सतगुरु सदुपदेश दे तो वह निरंकार का गुणगान करता रहे॥ ८॥ ३॥ ५॥

रागु सूही महला ३ घरु १ असटपदीआ   १ओं सतिगुर प्रसादि ॥

नामै ही ते सभु किछु होआ बिनु सतिगुर नामु न जापै ॥ गुर का सबदु महा रसु मीठा बिनु चाखे सादु न जापै ॥ कउडी बदलै जनमु गवाइआ चीनसि नाही आपै ॥ गुरमुखि होवै ता एको जाणै हउमै दुखु न संतापै ॥ १ ॥ बलिहारी गुर अपणे विटहु जिनि साचे सिउ लिव लाई ॥ सबदु चीन्हि आतमु परगासिआ सहजे रहिआ समाई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ गुरमुखि गावै गुरमुखि बूझै गुरमुखि सबदु बीचारे ॥ जीउ पिंडु सभु गुर ते उपजै गुरमुखि कारज सवारे ॥ मनमुखि अंधा अंधु कमावै बिखु खटे संसारे ॥ माइआ मोहि सदा दुखु पाए बिनु गुर अति पिआरे ॥ २ ॥ सोई सेवकु जे सतिगुर सेवे चालै सतिगुर भाए ॥ साचा सबदु सिफति है साची साचा मंनि वसाए ॥ सची बाणी गुरमुखि आखै हउमै विचहु जाए ॥ आपे दाता करमु है साचा साचा सबदु सुणाए ॥ ३ ॥ गुरमुखि घाले गुरमुखि खटे गुरमुखि नामु जपाए ॥ सदा अलिपतु साचै रंगि राता गुर कै सहजि सुभाए ॥ मनमुखु सद ही कूड़ो बोलै बिखु बीजै बिखु खाए ॥ जमकालि बाधा त्रिसना दाधा बिनु गुर कवणु छडाए ॥ ४ ॥ सचा तीरथु जितु सत सरि नावणु गुरमुखि आपि बुझाए ॥ अठसठि तीरथ गुर सबदि दिखाए तितु नातै मलु जाए ॥ सचा सबदु सचा है निरमलु ना मलु लगै न लाए ॥ सची सिफति सची सालाह पूरे गुर ते पाए ॥ ५ ॥ तनु मनु सभु किछु हरि तिसु केरा दुरमति कहणु न जाए ॥ हुकमु होवै ता निरमलु होवै हउमै विचहु जाए ॥ गुर की साखी सहजे चाखी त्रिसना अगनि बुझाए ॥ गुर कै सबदि राता सहजे माता सहजे रहिआ समाए ॥ ६ ॥ हरि का नामु सति करि जाणै गुर कै भाइ पिआरे ॥ सची वडिआई गुर ते पाई सचै नाइ पिआरे ॥ एको सचा सभ महि वरतै विरला को वीचारे ॥ आपे मेलि लए ता बखसे सची भगति सवारे ॥ ७ ॥ सभो सचु सचु सचु वरतै गुरमुखि कोई जाणै ॥ जंमण मरणा हुकमो वरतै गुरमुखि आपु पछाणै ॥ नामु धिआए ता सतिगुरु भाए जो इछै सो फलु पाए ॥ नानक तिस दा सभु किछु होवै जि विचहु आपु गवाए ॥ ८ ॥ १ ॥

हे भाई! परमेश्वर के नाम से ही सबकुछ उत्पन्न हुआ है, परन्तु सतगुरु के बिना नाम का ज्ञान नहीं होता। गुरु का शब्द मीठा महारस है लेकिन चखे बिना इसका स्वाद पता नहीं लगता। जिस इन्सान ने कौड़ियों के भाव अपना अमूल्य जन्म व्यर्थ ही गंवा लिया है, वह अपने आत्मस्वरूप को नहीं जानता। यदि वह गुरुमुख बन जाए तो वह एक परमात्मा को ही जाने और उसे अहम् रूपी दुख पीड़ित न करे॥ १॥ मैं अपने गुरु पर बलिहारी जाता हूँ, जिसने सत्य (प्रभु) से मेरी लगन लगा दी है। शब्द को पहचान कर मन में प्रकाश हो गया और मैं सहज ही सत्य में विलीन रहता हूँ॥ १॥ रहाउ॥ गुरुमुख परमात्मा के ही गुण गाता रहता है, वह परम-सत्य को ही समझता है और शब्द का ही चिंतन करता रहता है। प्राण एवं शरीर सब गुरु से ही उत्पन्न होते हैं और गुरुमुख अपने कार्य संवार लेता है। मनमुखी अंधा आदमी अंधे कार्य ही करता है और

वह संसार में माया रूपी विष ही अर्जित करता है। अत्यंत प्यारे गुरु के बिना वह माया के मोह में फँसकर सदा ही दुख प्राप्त करता है॥ २॥ वही सच्चा सेवक है, जो सतगुरु की सेवा करता है और गुरु की रज़ा में चलता है। परमात्मा का नाम सत्य है और उसकी कीर्ति भी सत्य है, अतः वह उस सत्य को ही मन में बसाता है। गुरुमुख तो सच्ची वाणी ही उच्चरित करता है और उसके अन्तर्मन में से अहंत्व दूर हो जाता है। सतगुरु स्वयं ही दाता है और उसकी कृपा भी सत्य है। वह हमेशा सच्चा शब्द ही सुनाता है॥ ३॥ गुरुमुख नाम की साधना करता है, नाम धन संचित करता है और दूसरों से भी परमात्मा के नाम का ही जाप करवाता है। वह सदा माया से निर्लिप्त रहकर सत्य के रंग में रंगा रहता है और गुरु के प्रेम द्वारा सहजावस्था में लीन रहता है। लेकिन मनमुखी सदैव झूठ ही बोलता है, माया रूपी विष बोता है और उस विष को ही खाता है। वह मृत्यु के बन्धन में फँसकर तृष्णा की अग्नि में ही जलता रहता है। गुरु के बिना उसे मृत्यु से कौन छुड़ा सकता है॥ ४॥ सतगुरु ही तीर्थ है, जहाँ सत्य (नाम) रूपी सरोवर में स्नान होता है लेकिन गुरु स्वयं ही यह सूझ देता है। गुरु के शब्द ने ही अड़सठ तीर्थ दिखा दिए हैं, जहाँ स्नान करने से अहंकार रूपी मैल दूर हो जाती है। शब्द-गुरु शाश्वत है और वह निर्मल तीर्थ है, जिसे कोई मैल नहीं लगती है और न ही माया उसे मैल लगाती है। सच्ची महिमा-स्तुति पूर्ण गुरु से ही प्राप्त होती है॥ ५॥ यह तन एवं मन सबकुछ उस परमात्मा का दिया हुआ है परन्तु दुर्बुद्धि वाले व्यक्ति से यह कहा नहीं जाता। जब ईश्वर का हुक्म होता है तो उस की बुद्धि निर्मल हो जाती है एवं उसके मन में से अहंत्व दूर हो जाता है। जिस व्यक्ति ने गुरु की शिक्षा सहज ही धारण की है, उसकी तृष्णाग्नि बुझ गई है। वह गुरु के शब्द द्वारा प्रभु-प्रेम में मग्न हुआ सहज ही उस में समाया रहता है॥ ६॥ वह प्यारे गुरु की रज़ा अनुसार हरि का नाम सत्य मानता है। उसने गुरु से ही नाम की सच्ची बड़ाई प्राप्त की है और सत्य नाम से ही प्रेम करता है। एक सच्चा परमात्मा ही सबमें क्रियान्वित है लेकिन कोई विरला व्यक्ति ही इसका विचार करता है। जब प्रभु स्वयं ही जीव को अपने साथ मिला लेता है तो वह उसे क्षमा कर देता है और अपनी भक्ति द्वारा उसका जीवन सुन्दर बना देता है॥ ७॥ कोई गुरुमुख ही जानता है कि एक सत्य परमात्मा ही सबमें क्रियाशील है। दुनिया में जन्म एवं मृत्यु उसके हुक्म में ही हो रहा है। गुरुमुख ही अपने आत्मस्वरूप को पहचानता है। जब जीव परमात्मा के नाम का ध्यान करता है तो वह गुरु को बहुत अच्छा लगता है। वह जैसी इच्छा करता है, वही फल प्राप्त करता है। हे नानक ! जो अपने मन में से अहंकार समाप्त कर लेता है, उसका सबकुछ ठीक हो जाता है॥ ८॥ १॥

सूही महला ३ ॥ काइआ कामणि अति सुआल्हिउ पिरु वसै जिसु नाले ॥ पिर सचे ते सदा सुहागणि गुर का सबदु सम्हाले ॥ हरि की भगति सदा रंगि राता हउमै विचहु जाले ॥ १ ॥ वाहु वाहु पूरे गुर की बाणी ॥ पूरे गुर ते उपजी साचि समाणी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ काइआ अंदरि सभु किछु वसै खंड मंडल पाताला ॥ काइआ अंदरि जगजीवन दाता वसै सभना करे प्रतिपाला ॥ काइआ कामणि सदा सुहेली गुरमुखि नामु सम्हाला ॥ २ ॥ काइआ अंदरि आपे वसै अलखु न लखिआ जाई ॥ मनमुखु मुगधु बूझै नाही बाहरि भालणि जाई ॥ सतिगुरु सेवे सदा सुखु पाए सतिगुरि अलखु दिता लखाई ॥ ३ ॥ काइआ अंदरि रतन पदारथ भगति भरे भंडारा ॥ इसु काइआ अंदरि नउ खंड प्रिथमी हाट पटण बाजारा ॥ इसु काइआ अंदरि नामु नउ निधि पाईऐ गुर कै सबदि वीचारा ॥ ४ ॥ काइआ अंदरि तोलि तुलावै आपे तोलणहारा ॥ इहु मनु रतनु जवाहर माणकु तिस का मोलु अफारा ॥ मोलि कित ही नामु पाईऐ नाही नामु पाईऐ गुर बीचारा ॥ ५ ॥ गुरमुखि होवै सु काइआ खोजै होर सभ भरमि भुलाई ॥ जिस नो देइ सोई जनु पावै होर किआ को करे चतुराई ॥ काइआ अंदरि भउ भाउ वसै गुर परसादी

पाई ॥ ६ ॥ काइआ अंदरि ब्रहमा बिसनु महेसा सभ ओपति जितु संसारा ॥ सचै आपणा खेलु रचाइआ आवा गउणु पासारा ॥ पूरै सतिगुरि आपि दिखाइआ सचि नामि निसतारा ॥ ७ ॥ सा काइआ जो सतिगुरु सेवै सचै आपि सवारी ॥ विणु नावै दरि ढोई नाही ता जमु करे खुआरी ॥ नानक सचु वडिआई पाए जिस नो हरि किरपा धारी ॥ ८ ॥ २ ॥

हे भाई ! काया रूपी अत्यंत सुन्दर कामिनी वही है, जिसके साथ उसका पति-प्रभु बसता है। वह गुरु का शब्द अन्तर्मन में बसाकर रखती है और सच्चे प्रभु के मिलाप से सदा सुहागिन बनी रहती है। जो व्यक्ति भगवान की भक्ति में सर्वदा लीन रहता है, वह अपने अन्तर से अहंत्व को जला देता है॥ १॥ पूर्ण गुरु की वाणी धन्य-धन्य है। पूर्ण गुरु के हृदय से उत्पन्न हुई यह सत्य में ही समाई रहती है॥ १॥ रहाउ॥ खण्ड, मण्डल एवं पाताल इत्यादि सबकुछ शरीर में ही बसता है, इस शरीर में ही जग को जीवन देने वाला प्रभु बसता है, जो सब जीवों की परवरिश करता है। जो व्यक्ति गुरुमुख बनकर परमात्मा का नाम स्मरण करता रहता है, उसकी शरीर रूपी स्त्री सदैव सुखी रहती है॥ २॥ इस शरीर में परमात्मा स्वयं ही बसता है लेकिन अदृष्ट प्रभु देखा नहीं जा सकता। मूर्ख स्वेच्छाचारी इस तथ्य को नहीं बूझता और वह भगवान को ढूँढने हेतु बाहर वनों में जाता है। जो गुरु की सेवा करता है, वह हमेशा सुख प्राप्त करता है। गुरु ने मुझे अदृष्ट परमात्मा के दर्शन करवा दिए हैं॥ ३॥ इस शरीर में ही रत्न-पदार्थ विद्यमान हैं और भक्ति के भण्डार भरे हुए हैं। इस शरीर में ही पृथ्वी के नौ खण्ड, दुकानें, नगर एवं बाज़ार हैं। इस शरीर में ही परमात्मा के नाम की नवनिधियां मौजूद हैं लेकिन इनकी प्राप्ति गुरु के शब्द चिंतन द्वारा ही होती है॥ ४॥ तोलने वाला परमात्मा स्वयं ही शरीर में इन रत्न-पदार्थों को तोलकर तुलाता है। यह मन रत्न, जवाहर एवं माणिक्य है और इसका मूल्य बहुत बड़ा है। परमात्मा का नाम किसी भी मूल्य पर पाया नहीं जा सकता। यह तो गुरु के उपदेश द्वारा ही पाया जाता है॥ ५॥ जो व्यक्ति गुरुमुख बन जाता है, वह अपने शरीर में ही नाम को खोजता है। शेष सारी दुनिया भ्रम में ही भूली हुई है। जिसे परमात्मा अपना नाम देता है, वही उसे प्राप्त करता है। अन्य कोई क्या चतुराई कर सकता है ? इस शरीर में ही प्रभु का भय एवं प्रेम बसता है परन्तु यह गुरु की कृपा से ही पाए जाते हैं॥ ६॥ इस शरीर में त्रिदेव-ब्रह्म, विष्णु एवं शिवशंकर बसते हैं, जिन से सारे संसार की उत्पत्ति हुई है। जन्म-मरण रूपी प्रसार करके सच्चे प्रभु ने अपना एक खेल रचा हुआ है। पूर्ण सतगुरु ने स्वयं ही दिखा दिया है कि सत्य-नाम द्वारा ही मुक्ति होती है॥ ७॥ वह शरीर जो सतगुरु की सेवा करता है, सच्चे प्रभु ने स्वयं ही उसे सुन्दर बना दिया है। ईश्वर के नाम बिना सत्य के द्वार पर आदमी को अन्य कोई अवलम्ब नहीं मिलता और तो ही यम उसे तंग करता है। हे नानक ! जिस पर प्रभु ने अपनी कृपा की है, उसे ही सत्य-नाम की बड़ाई हासिल हुई है॥ ८॥ २॥

रागु सूही महला ३ घरु १० ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

दुनीआ न सालाहि जो मरि वंञसी ॥ लोका न सालाहि जो मरि खाकु थीई ॥ १ ॥ वाहु मेरे साहिबा वाहु ॥ गुरमुखि सदा सलाहीऐ सचा वेपरवाहु ॥ १ ॥ रहाउ ॥ दुनीआ केरी दोसती मनमुख दझि मरंनि ॥ जम पुरि बधे मारीअहि वेला न लाहंनि ॥ २ ॥ गुरमुखि जनमु सकारथा सचै सबदि लगंनि ॥ आतम रामु प्रगासिआ सहजे सुखि रहंनि ॥ ३ ॥ गुर का सबदु विसारिआ दूजै भाइ रचंनि ॥ तिसना भुख न उतरै अनदिनु जलत फिरंनि ॥ ४ ॥ दुसटा नालि दोसती नालि संता वैरु करंनि ॥

आपि डुबे कुटंब सिउ सगले कुल डोबंनि ॥ ५ ॥ निंदा भली किसै की नाही मनमुख मुगध करंनि ॥ मुह काले तिन निंदका नरके घोरि पवंनि ॥ ६ ॥ ए मन जैसा सेवहि तैसा होवहि तेहे करम कमाइ ॥ आपि बीजि आपे ही खावणा कहणा किछू न जाइ ॥ ७ ॥ महा पुरखा का बोलणा होवै कितै परथाइ ॥ ओइ अंम्रित भरे भरपूर हहि ओना तिलु न तमाइ ॥ ८ ॥ गुणकारी गुण संघरै अवरा उपदेसेनि ॥ से वडभागी जि ओना मिलि रहे अनदिनु नामु लएनि ॥ ९ ॥ देसी रिजकु संबाहि जिनि उपाई मेदनी ॥ एको है दातारु सचा आपि धणी ॥ १० ॥ सो सचु तेरै नालि है गुरमुखि नदरि निहालि ॥ आपे बखसे मेलि लए सो प्रभु सदा समालि ॥ ११ ॥ मनु मैला सचु निरमला किउ करि मिलिआ जाइ ॥ प्रभु मेले ता मिलि रहै हउमै सबदि जलाइ ॥ १२ ॥

हे जीव ! दुनिया की झूठी प्रशंसा मत कर, क्योंकि यह तो नाशवान है। लोगों की भी खुशामद मत कर, क्योंकि लोग तो मरकर खाक में मिल जाते हैं॥ १॥ वाह मेरे मालिक ! तू धन्य है, प्रशंसा का पात्र है। गुरु के सान्निध्य में उस सच्चे एवं बेपरवाह मालिक की सदैव स्तुति करनी चाहिए॥ १॥ रहाउ॥ दुनिया की दोस्ती में लगकर स्वेच्छाचारी आदमी जलकर मर जाते हैं। उन्हें यमपुरी में बाँधकर मारा जाता है और दोबारा मानव-जन्म का सुनहरी अवसर नहीं मिलता॥ २॥ गुरुमुखों का जन्म सफल हो जाता है और वे सच्चे शब्द में ही मग्न रहते हैं। उनके अन्तर्मन में बसा हुआ राम प्रगट हो जाता है और वे सहज ही सुखी रहते हैं॥ ३॥ गुरु के शब्द को भुलाने वाले व्यक्ति द्वैतभाव में ही फँसे रहते हैं। उनकी तृष्णा की भूख कभी दूर नहीं होती और वे हर समय तृष्णा में ही जलते रहते हैं॥ ४॥ ऐसे स्वेच्छाचारी इन्सान दुष्टों से दोस्ती करते हैं परन्तु संतों से बड़ा वैर करते हैं। वह अपने परिवार सहित भवसागर में डूब जाते हैं और अपने समूचे वंश को भी डुबा देते हैं॥ ५॥ किसी की भी निन्दा करना अच्छा नहीं है लेकिन मूर्ख मनमुख निंदा ही करते रहते हैं। परमात्मा के दरबार में उनके मुँह काले किए जाते हैं और वे घोर नरक में डाल दिए जाते हैं॥ ६॥ हे मन ! तू जैसे सेवा करता है, वैसा ही बन जाता है और वैसे ही कर्म करता है। जीव को स्वयं बीज कर स्वयं ही उसका फल खाना होता है। इस बारे अन्य कुछ कहा नहीं जा सकता॥ ७॥ महापुरुषों के प्रवचन किसी परमार्थ के लिए होते हैं वे अमृतमयी नाम-रस से भरपूर होते हैं और उन्हें तिल भर भी लोभ नहीं होता॥ ८॥ वह परोपकारी महापुरुष स्वयं शुभ गुणों को ग्रहण करते हैं और दूसरों को भी उपदेश देते हैं। जो व्यक्ति उनकी संगति में रहते हैं, वे बड़े खुशनसीब हैं और रात-दिन निरंकार का नाम जपते रहते हैं॥ ९॥ जिस ईश्वर ने सृष्टि उत्पन्न की है, वह सबको आहार पहुँचाता है। एक वही सबको देने वाला है, जो सदैव सत्य एवं सबका मालिक है॥ १०॥ हे जीव ! वह सत्य तेरे साथ रहता है और गुरुमुखों को अपनी कृपा-दृष्टि से निहाल कर देता है। जो स्वयं ही जीवों को कृपा करके अपने साथ मिला लेता है, सो उस प्रभु को हमेशा याद करते रहो॥ ११॥ इन्सान का मन बड़ा मैला है परन्तु सच्चा प्रभु निर्मल है। फिर उस प्रभु से कैसे मिला जा सकता है ? यदि प्रभु स्वयं ही इन्सान को अपने साथ मिला ले तो वह उससे मिला रहता है। वह शब्द द्वारा अपने अहंत्व को जला देता है॥ १२॥

सो सहु सचा वीसरै ध्रिगु जीवणु संसारि ॥ नदरि करे ना वीसरै गुरमती वीचारि ॥ १३ ॥ सतिगुरु मेले ता मिलि रहा साचु रखा उर धारि ॥ मिलिआ होइ न वीछुड़ै गुर कै हेति पिआरि ॥ १४ ॥ पिरु सालाही आपणा गुर कै सबदि वीचारि ॥ मिलि प्रीतम सुखु पाइआ सोभावंती नारि ॥ १५ ॥ मनमुख मनु न भिजई अति मैले चिति कठोर ॥ सपै दुधु पीआईऐ अंदरि विसु निकोर ॥ १६ ॥ आपि करे किसु

आखीऐ आपे बखसणहारु ॥ गुर सबदी मैलु उतरै ता सचु बणिआ सीगारु ॥ १७ ॥ सचा साहु सचे वणजारे ओथै कूड़े ना टिकंनि ॥ ओना सचु न भावई दुख ही माहि पचंनि ॥ १८ ॥ हउमै मैला जगु फिरै मरि जंमै वारो वार ॥ पइऐ किरति कमावणा कोइ न मेटणहार ॥ १९ ॥ संता संगति मिलि रहै ता सचि लगै पिआरु ॥ सचु सलाही सचु मनि दरि सचै सचिआरु ॥ २० ॥ गुर पूरे पूरी मति है अहिनिसि नामु धिआइ ॥ हउमै मेरा वड रोगु है विचहु ठाकि रहाइ ॥ २१ ॥ गुरु सालाही आपणा निवि निवि लागा पाइ ॥ तनु मनु सउपी आगै धरी विचहु आपु गवाइ ॥ २२ ॥ खिंचोताणि विगुचीऐ एकसु सिउ लिव लाइ ॥ हउमै मेरा छडि तू ता सचि रहै समाइ ॥ २३ ॥ सतिगुर नो मिले सि भाइरा सचै सबदि लगंनि ॥ सचि मिले से न विछुड़हि दरि सचै दिसंनि ॥ २४ ॥

यदि इन्सान को सच्चा प्रभु भूल जाए तो उसका संसार में जीना धिक्कार योग्य है। यदि वह अपनी कृपा करे तो वह उसे कभी भी नहीं भूलता और वह गुरु की शिक्षा द्वारा प्रभु का चिंतन करता रहता है॥ १३॥ यदि सतगुरु उस परमात्मा से मिला दे तो ही मैं उससे मिला रहूँ और परम सत्य को अपने हृदय में बसाकर रखूँ। जो व्यक्ति गुरु के प्रेम द्वारा प्रभु से मिला होता है, वह फिर उससे कदापि जुदा नहीं होता॥ १४॥ वह गुरु-शब्द के चिंतन द्वारा अपने प्रभु की स्तुति करता रहता है। शोभावान जीव-स्त्री ने अपने प्रियतम-प्रभु को मिलकर सुख पा लिया है॥ १५॥ स्वेच्छाचारी आदमी का मन प्रभु में मग्न नहीं होता। वह बहुत अपवित्र एवं कठोर हृदय वाला होता है। यदि सांप को दूध भी पिलाया जाए तो उसके भीतर सिर्फ विष ही भरा रहता है॥ १६॥ हम किसे शिकायत करें? परमात्मा स्वयं ही सबकुछ करता है और वह स्वयं ही क्षमावान है। गुरु के शब्द द्वारा जब मन की अहंत्व रूपी मैल उतर जाती है तो ही सत्य का श्रृंगार बनता है॥ १७॥ परमात्मा सच्चा साहूकार है और उसके संत सच्चे व्यापारी हैं। झूठ के व्यापारी सत्य के द्वार पर टिक ही नहीं सकते। चूंकि उन्हें सत्य अच्छा नहीं लगता और वह दुखों में ही बर्बाद हो जाते हैं॥ १८॥ अहंकार से अपवित्र हुआ यह जगत् भटकता रहता है और बार-बार जन्मता-मरता रहता है। पूर्व जन्म के कर्मानुसार जो उसकी तकदीर में लिखा होता है, वह वही कर्म करता है, और उसकी तकदीर को मिटाने वाला कोई नहीं है॥ १९॥ यदि मनुष्य संतों की संगति में मिला रहे तो उसका सत्य से प्रेम हो जाता है। वह सत्य का स्तुतिगान करता है, सत्य को ही अपने मन में बसा लेता है। फिर वह सत्य के द्वार पर सत्यवादी बन जाता है॥ २०॥ हे भाई ! पूर्ण गुरु की मति पूर्ण है और उसकी मति द्वारा रात-दिन प्रभु-नाम का ध्यान करता रहता हूँ। ममत्व एवं अहंकार का रोग बहुत बड़ा है। लेकिन इस पर अपने मन से अंकुश लगा दिया है॥ २१॥ मैं अपने गुरु की स्तुति करता रहता हूँ और झुक-झुक कर उसके चरणों में लगता हूँ। मैंने अंतर्मन से अहंत्व को दूर करके अपना मन एवं तन गुरु को सौंपकर उसके समक्ष रख दिया है॥ २२॥ दुविधा में फँसकर जीव ख्वार होता रहता है, इसलिए एक ईश्वर से ही वृत्ति लगानी चाहिए। हे जीव ! यदि तू अपना अहंत्व एवं ममत्व छोड़ दे तो ही तू सत्य में समाया रहेगा॥ २३॥ जो व्यक्ति सतगुरु को मिले हैं, वही मेरे भाई हैं और सच्चे शब्द में ही प्रवृत्त रहते हैं। जो सत्य से मिल गए हैं, वे दोबारा उससे जुदा नहीं होते और सत्य के द्वार पर सत्यवादी दिखाई देते हैं॥ २४॥

से भाई से सजणा जो सचा सेवंनि ॥ अवगण विकणि पल्हरनि गुण की साझ करंन्हि ॥ २५ ॥ गुण की साझ सुखु ऊपजै सची भगति करेनि ॥ सचु वणंजहि गुर सबद सिउ लाहा नामु लएनि ॥ २६ ॥ सुइना रुपा पाप करि करि संचीऐ चलै न चलदिआ नालि ॥ विणु नावै नालि न चलसी सभ मुठी जमकालि ॥ २७ ॥ मन का तोसा हरि नामु है हिरदै रखहु सम्हालि ॥ एहु खरचु अखुटु है गुरमुखि निबहै नालि ॥ २८ ॥ ए मन मूलहु भुलिआ जासहि पति गवाइ ॥ इहु जगतु मोहि दूजै

विआपिआ गुरमती सचु धिआइ ॥ २६ ॥ हरि की कीमति ना पवै हरि जसु लिखणु न जाइ ॥ गुर कै सबदि मनु तनु रपै हरि सिउ रहै समाइ ॥ ३० ॥ सो सहु मेरा रंगुला रंगे सहजि सुभाइ ॥ कामणि रंगु ता चड़ै जा पिर कै अंकि समाइ ॥ ३१ ॥ चिरी विछुंने भी मिलनि जो सतिगुरु सेवंनि ॥ अंतरि नव निधि नामु है खानि खरचनि न निखुटई हरि गुण सहजि रवंनि ॥ ३२ ॥ ना ओइ जनमहि ना मरहि ना ओइ दुख सहंनि ॥ गुरि राखे से उबरे हरि सिउ केल करंनि ॥ ३३ ॥ सजण मिले न विछुड़हि जि अनदिनु मिले रहंनि ॥ इसु जग महि विरले जाणीअहि नानक सचु लहंनि ॥ ३४ ॥ १ ॥ ३ ॥

जो सच्चे प्रभु की उपासना करते हैं, वही मेरे भाई हैं, और वही मेरे सज्जन हैं। वे अपने वृथा अवगुणों को बेचकर, गुरु से गुणों की भागीदारी करते हैं॥ २५॥ गुणों की भागीदारी करने से उनके मन में बड़ा सुख उत्पन्न होता है और वे सच्ची भक्ति ही करते रहते हैं। वे गुरु के शब्द द्वारा सत्य-नाम का व्यापार करते हैं और नाम रूपी लाभ हासिल करते हैं॥ २६॥ मनुष्य पाप कर-करके सोना-चांदी इत्यादि धन इकट्ठा करता रहता है लेकिन चलते समय ये उसके साथ नहीं जाता। नाम के सिवा कुछ भी मनुष्य के साथ नहीं जाता और यम ने तो सारी दुनिया को ठग लिया है॥ २७॥ मन का सफर-खर्च केवल हरि का नाम है, इसे अपने हृदय में संभाल कर रखो। यह नाम रूपी सफर-खर्च अक्षय है और यह अन्तिम समय गुरुमुख का साथ निभाता है॥ २८॥ हे मेरे मन! तू जगत् के मूल प्रभु को भूला हुआ है, तू अपनी इज्जत गंवा कर यहाँ से चला जाएगा। यह जगत् तो माया के मोह में ही फँसा हुआ है, इसलिए गुरु की शिक्षा द्वारा सत्य का ध्यान किया कर॥ २६॥ हरि का मूल्यांकन नहीं किया जा सकता और न ही हरि-यश लिखा जा सकता है। जब इन्सान का मन एवं तन गुरु के शब्द में रंग जाता है तो वह हरि में लीन हुआ रहता है॥ ३०॥ मेरा वह पति-प्रभु बड़ा ही रंगीला है और वह सहज स्वभाव ही मुझे प्रेम में रंग देता है। जीव रूपी कामिनी को प्रेम का रंग तभी चढ़ता है, जब वह प्रभु के चरणों में लगती है॥ ३१॥ जो सतगुरु की सेवा करते हैं, वे चिरकाल से बिछुड़े हुए भी प्रभु से मिल जाते हैं। उनके हृदय में ही नवनिधियों वाला प्रभु का नाम बसता है, जो उनके उपयोग करने से एवं दूसरों को बांटने से समाप्त नहीं होता। वे सहज ही हरि के गुण स्मरण करते रहते हैं॥ ३२॥ ऐसे व्यक्ति न ही बार-बार जन्मते हैं, न ही मरते हैं और न ही दुख सहन करते हैं। जिनकी गुरु ने रक्षा की है, वे भवसागर में डूबने से बच गए हैं, वे हरि से मिलकर आनंद करते हैं॥ ३३॥ जो सज्जन प्रभु से मिले रहते हैं, वे कभी उससे बिछुड़ते नहीं। हे नानक! इस जग में विरले पुरुष ही जाने जाते हैं, जो सत्य को प्राप्त कर लेते हैं॥ ३४॥ १॥ ३॥

सूही महला ३ ॥ हरि जी सूखमु अगमु है कितु बिधि मिलिआ जाइ ॥ गुर कै सबदि भ्रमु कटीऐ अचिंतु वसै मनि आइ ॥ १ ॥ गुरमुखि हरि हरि नामु जपंनि ॥ हउ तिन कै बलिहारणै मनि हरि गुण सदा रवंनि ॥ १ ॥ रहाउ ॥ गुरु सरवरु मान सरोवरु है वडभागी पुरख लहंन्हि ॥ सेवक गुरमुखि खोजिआ से हंसुले नामु लहंनि ॥ २ ॥ नामु धिआइन्हि रंग सिउ गुरमुखि नामि लगंन्हि ॥ धुरि पूरबि होवै लिखिआ गुर भाणा मंनि लएन्हि ॥ ३ ॥ वडभागी घरु खोजिआ पाइआ नामु निधानु ॥ गुरि पूरै वेखालिआ प्रभु आतम रामु पछानु ॥ ४ ॥ सभना का प्रभु एकु है दूजा अवरु न कोइ ॥ गुर परसादी मनि वसै तितु घटि परगटु होइ ॥ ५ ॥ सभु अंतरजामी ब्रहमु है ब्रहमु वसै सभ थाइ ॥ मंदा किस नो आखीऐ सबदि वेखहु लिव लाइ ॥ ६ ॥ बुरा भला तिचरु आखदा जिचरु है दुहु माहि ॥ गुरमुखि एको बुझिआ एकसु माहि समाइ ॥ ७ ॥ सेवा सा प्रभ भावसी जो प्रभु पाए थाइ ॥ जन नानक हरि आराधिआ गुर चरणी चितु लाइ ॥ ८ ॥ २ ॥ ४ ॥ ६ ॥

परमेश्वर सूक्ष्म एवं अगम्य है, फिर उसे किस विधि द्वारा मिला जाए? जब गुरु के शब्द द्वारा भ्रम का नाश हो जाता है तो वह नैसर्गिक ही मन में आकर बस जाता है॥ १॥ गुरुमुख परमात्मा का नाम ही जपते रहते हैं। मैं उन पर बलिहारी जाता हूँ, जो सदैव अपने मन में प्रभु का गुणगान करते रहते हैं॥ १॥ रहाउ॥ गुरु मानसरोवर रूपी पावन सरोवर है और खुशनसीब पुरुष उसे प्राप्त कर लेते हैं। जिन सेवकों ने गुरुमुख बनकर नाम को खोजा है, उन परमहंस संतों ने नाम हासिल कर लिया है॥ २॥ गुरुमुख परमात्मा के नाम-ध्यान में ही लीन रहते हैं और प्रेम से नाम-सिमरन करते रहते हैं। यदि प्रारम्भ से ही ऐसा भाग्य लिखा हो तो गुरु की रजा को मान लेते हैं॥ ३॥ उन भाग्यवान पुरुषों ने अपना हृदय-घर ही खोजा है और नाम रूपी खजाना ही पाया है। पूर्ण गुरु ने उन्हें परमात्मा दिखा दिया है और उन्होंने आत्मा में ईश्वर को पहचान लिया है॥ ४॥ सब जीवों का प्रभु एक ही है और दूसरा अन्य कोई नहीं है। वह उस व्यक्ति के हृदय में प्रगट होता है, जिसके मन में गुरु की कृपा द्वारा आ बसता है॥ ५॥ समूचा विश्व अन्तर्यामी ब्रह्म का रूप है और हर जगह ब्रह्म का निवास है। बुरा किसे कहा जाए? शब्द में ध्यान लगाकर देख लो॥ ६॥ जब तक आदमी 'तेरा-मेरा' की दुविधा में पड़ा रहता है, वह तब तक ही किसी को बुरा और किसी को भला कहता रहता है। गुरुमुखों ने एक परमात्मा को ही समझा है और वह उस एक प्रभु में ही लीन रहते हैं॥ ७॥ वही सेवा करनी चाहिए जो प्रभु को उपयुक्त लगती हो और जिसे स्वीकार कर लेता है। हे नानक! गुरु के चरणों में चित्त लगाकर उसने प्रभु की ही आराधना की है॥ ८॥ २॥ ४॥ ६॥

रागु सूही असटपदीआ महला ४ घरु २ १ओं सतिगुर प्रसादि ॥

कोई आणि मिलावै मेरा प्रीतमु पिआरा हउ तिसु पहि आपु वेचाई ॥ १ ॥ दरसनु हरि देखण कै ताई ॥ क्रिपा करहि ता सतिगुरु मेलहि हरि हरि नामु धिआई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जे सुखु देहि त तुझहि अराधी दुखि भी तुझै धिआई ॥ २ ॥ जे भुख देहि त इत ही राजा दुख विचि सूख मनाई ॥ ३ ॥ तनु मनु काटि काटि सभु अरपी विचि अगनी आपु जलाई ॥ ४ ॥ पखा फेरी पाणी ढोवा जो देवहि सो खाई ॥ ५ ॥ नानकु गरीबु ढहि पइआ दुआरै हरि मेलि लैहु वडिआई ॥ ६ ॥ अखी काढि धरी चरणा तलि सभ धरती फिरि मत पाई ॥ ७ ॥ जे पासि बहालहि ता तुझहि अराधी जे मारि कढहि भी धिआई ॥ ८ ॥ जे लोकु सलाहे ता तेरी उपमा जे निंदै त छोडि न जाई ॥ ९ ॥ जे तुधु वलि रहै ता कोई किहु आखउ तुधु विसरिऐ मरि जाई ॥ १० ॥ वारि वारि जाई गुर ऊपरि पै पैरी संत मनाई ॥ ११ ॥ नानकु विचारा भइआ दिवाना हरि तउ दरसन कै ताई ॥ १२ ॥ झखड़ु झागी मीहु वरसै भी गुरु देखण जाई ॥ १३ ॥ समुंदु सागरु होवै बहु खारा गुरसिखु लंघि गुर पहि जाई ॥ १४ ॥ जिउ प्राणी जल बिनु है मरता तिउ सिखु गुर बिनु मरि जाई ॥ १५ ॥ जिउ धरती सोभ करे जलु बरसै तिउ सिखु गुर मिलि बिगसाई ॥ १६ ॥

अगर कोई मुझे प्रियतम प्यारे से मिला दे तो मैं उसके पास अपना आप बेच दूँगा॥ १॥ मैं हरि का दर्शन करने के लिए इस तरह ही करूँगा। हे परमेश्वर! यदि तू कृपा कर दे तो सतगुरु से मिलाप हो जाए और फिर तेरे नाम का ध्यान करता रहूँ॥ १॥ रहाउ॥ हे ईश्वर! यदि तू मुझे सुख देता है तो मैं तेरी ही आराधना करता हूँ और दुख तकलीफ में भी तेरा ही चिंतन करता हूँ॥ २॥ तू मुझे भूखा रखता है तो मैं इससे भी तृप्त हो जाता हूँ और दुख में भी सुख की अनुभूति करता हूँ॥ ३॥ मैं अपना तन-मन काट-काटकर सबकुछ तुझे अर्पण कर दूँगा और अग्नि

में खुद को जला दूँगा॥ ४॥ मैं संतजनों को पंखा करता हूँ, उनके लिए पानी ढोता हूँ और वही खाता हूँ जो मुझे देते हैं॥ ५॥ हे हरि! गरीब नानक तेरे द्वार पर नतमस्तक हो गया है, मुझे अपने साथ मिला लो, मुझे यही बड़ाई दो॥ ६॥ मैं सारी धरती घूम कर देखूँगा, शायद मेरा गुरु मुझे मिल जाए। मैं अपनी आँखें निकालकर उसके चरणों में रख दूँगा॥ ७॥ यदि गुरु मुझे अपने पास बिठा ले तो तेरी ही आराधना करूँगा। यदि वह मुझे धक्के मार-मार कर निकाल भी देगा तो भी तेरा ही ध्यान करूँगा॥ ८॥ यदि लोग मेरी सराहना करेंगे तो वह तेरी ही उपमा है। यदि वे मेरी निंदा-आलोचना करेंगे तो भी मैं तुझे छोड़कर नहीं जाऊँगा॥ ६॥ यदि तू मेरे साथ रहे तो कोई मुझे क्या कह सकता है? तुझे भुलाने से तो मैं मर ही जाता हूँ॥ १०॥ मैं अपने गुरु पर शत-शत कुर्बान जाता हूँ और पैरों पर पड़कर संतों को खुश करता हूँ॥ ११॥ हे हरि! तेरे दर्शन करने के लिए बेचारा नानक तो दीवाना हो गया है॥ १२॥ चाहे सख्त आँधी-तूफान आ जाए, चाहे मूसलाधार बारिश आ जाए तो भी गुरु के दर्शन करने के लिए जाता हूँ॥ १३॥ यदि बहुत खारा समुद्र-सागर हो तो भी गुरु का शिष्य उसे पार करके अपने गुरु के पास जाता है॥ १४॥ जैसे प्राणी जल के बिना मर जाता है, वैसे ही गुरु के बिना शिष्य मृत्यु को प्राप्त हो जाता है॥ १५॥ जैसे वर्षा होने से धरती सुन्दर लगती है, वैसे ही गुरु को मिलकर शिष्य प्रसन्न होता है॥ १६॥

सेवक का होइ सेवकु वरता करि करि बिनउ बुलाई ॥ १७ ॥ नानक की बेनंती हरि पहि गुर मिलि गुर सुखु पाई ॥ १८ ॥ तू आपे गुरु चेला है आपे गुर विचु दे तुझहि धिआई ॥ १६ ॥ जो तुधु सेवहि सो तूहै होवहि तुधु सेवक पैज रखाई ॥ २० ॥ भंडार भरे भगती हरि तेरे जिसु भावै तिसु देवाई ॥ २१ ॥ जिसु तूं देहि सोई जनु पाए होर निहफल सभ चतुराई ॥ २२ ॥ सिमरि सिमरि सिमरि गुरु अपुना सोइआ मनु जागाई ॥ २३ ॥ इकु दानु मंगै नानकु वेचारा हरि दासनि दासु कराई ॥ २४ ॥ जे गुरु झिड़के त मीठा लागै जे बखसे त गुर वडिआई ॥ २५ ॥ गुरमुखि बोलहि सो थाइ पाए मनमुखि किछु थाइ न पाई ॥ २६ ॥ पाला ककरु वरफ वरसै गुरसिखु गुर देखण जाई ॥ २७ ॥ सभु दिनसु रैणि देखउ गुरु अपुना विचि अखी गुर पैर धराई ॥ २८ ॥ अनेक उपाव करी गुर कारणि गुर भावै सो थाइ पाई ॥ २६ ॥ रैणि दिनसु गुर चरण अराधी दइआ करहु मेरे साई ॥ ३० ॥ नानक का जीउ पिंडु गुरू है गुर मिलि त्रिपति अघाई ॥ ३१ ॥ नानक का प्रभु पूरि रहिओ है जत कत तत गोसाई ॥ ३२ ॥ १ ॥

मैं अपने गुरु के सेवकों का सेवक बनकर उनकी सेवा करता हूँ और विनती कर-करके उन्हें बुलाता हूँ॥ १७॥ नानक की प्रभु के पास विनती है कि मैं गुरु को मिलकर सुख प्राप्त करूँ॥ १८॥ हे ईश्वर! तू आप ही गुरु है और आप ही शिष्य है। मैं गुरु के माध्यम से तेरा ही चिंतन करता रहता हूँ॥ १६॥ जो तेरी उपासना करते हैं, वे तेरा ही रूप बन जाते हैं। तुम अपने सेवकों की लाज बचाते आए हो॥ २०॥ हे हरि! तेरी भक्ति के भण्डार भरे पड़े हैं लेकिन जो तुझे भाता है, तू उसे गुरु से दिलवा देता है॥ २१॥ जिसे तू देता है, तेरा वही सेवक इसे प्राप्त करता है और अन्य सब चतुराई निष्फल है॥ २२॥ मैंने गुरु को स्मरण कर-करके अपना अज्ञानता की नींद में सोया हुआ मन जगा लिया है॥ २३॥ हे प्रभु! नानक बेचारा तो तुझ से एक यही दान माँगता है कि मुझे अपने दासों का दास बना लो॥ २४॥ यदि मेरा गुरु मुझे किसी बात पर डाँटता है तो वह डाँट मुझे बड़ी मीठी लगती है। यदि मुझे क्षमा कर देता है तो यह गुरु का बड़प्पन है॥ २५॥ गुरुमुख जो बोलता है, वह प्रभु को स्वीकार हो जाता है लेकिन स्वेच्छाचारी इन्सान का वचन स्वीकार नहीं होता॥ २६॥ यदि भयंकर शीत, कोहरा एवं बर्फ ही पड़ती हो तो भी गुरु का शिष्य

गुरु के दर्शन करने जाता है॥ २७॥ मैं रात-दिन गुरु को देखता रहता हूँ, अपनी आँखों में गुरु के चरण बसाकर रखता हूँ॥ २८॥ मैं अपने गुरु को खुश करने के लिए अनेक उपाय करता रहता हूँ। लेकिन जो गुरु को अच्छा लगता है, उसे वही मंजूर होता है॥ २६॥ हे मेरे मालिक! मुझ पर ऐसी दया करो कि मैं दिन-रात गुरु के चरणों की आराधना करता रहूँ॥ ३०॥ गुरु ही नानक का जीवन एवं शरीर है और गुरु को मिलकर ही वह तृप्त एवं संतुष्ट होता है॥ ३१॥ नानक का प्रभु हर जगह मौजूद है, वह सृष्टि के कण-कण में व्याप्त है॥ ३२॥ १॥

रागु सूही महला ४ असटपदीआ घरु १० १ओं सतिगुर प्रसादि ॥

अंदरि सचा नेहु लाइआ प्रीतम आपणै ॥ तनु मनु होइ निहालु जा गुरु देखा साम्हणे ॥ १ ॥ मै हरि हरि नामु विसाहु ॥ गुर पूरे ते पाइआ अंम्रितु अगम अथाहु ॥ १ ॥ रहाउ ॥ हउ सतिगुरु वेखि विगसीआ हरि नामे लगा पिआरु ॥ किरपा करि कै मेलिअनु पाइआ मोख दुआरु ॥ २ ॥ सतिगुरु बिरही नाम का जे मिलै त तनु मनु देउ ॥ जे पूरबि होवै लिखिआ ता अंम्रितु सहजि पीएउ ॥ ३ ॥ सुतिआ गुरु सालाहीऐ उठदिआ भी गुरु आलाउ ॥ कोई ऐसा गुरमुखि जे मिलै हउ ता के धोवा पाउ ॥ ४ ॥ कोई ऐसा सजणु लोड़ि लहु मै प्रीतमु देइ मिलाइ ॥ सतिगुरि मिलिऐ हरि पाइआ मिलिआ सहजि सुभाइ ॥ ५ ॥ सतिगुरु सागरु गुण नाम का मै तिसु देखण का चाउ ॥ हउ तिसु बिनु घड़ी न जीवऊ बिनु देखे मरि जाउ ॥ ६ ॥ जिउ मछुली विणु पाणीऐ रहै न कितै उपाइ ॥ तिउ हरि बिनु संतु न जीवई बिनु हरि नामै मरि जाइ ॥ ७ ॥ मै सतिगुर सेती पिरहड़ी किउ गुर बिनु जीवा माउ ॥ मै गुरबाणी आधारु है गुरबाणी लागि रहाउ ॥ ८ ॥ हरि हरि नामु रतंनु है गुरु तुठा देवै माइ ॥ मै धर सचे नाम की हरि नामि रहा लिव लाइ ॥ ९ ॥ गुर गिआनु पदारथु नामु है हरि नामो देइ द्रिड़ाइ ॥ जिसु परापति सो लहै गुर चरणी लागै आइ ॥ १० ॥ अकथ कहाणी प्रेम की को प्रीतमु आखै आइ ॥ तिसु देवा मनु आपणा निवि निवि लागा पाइ ॥ ११ ॥ सजणु मेरा एकु तूं करता पुरखु सुजाणु ॥ सतिगुरि मीति मिलाइआ मै सदा सदा तेरा ताणु ॥ १२ ॥ सतिगुरु मेरा सदा सदा ना आवै ना जाइ ॥ ओहु अबिनासी पुरखु है सभ महि रहिआ समाइ ॥ १३ ॥ राम नाम धनु संचिआ साबतु पूंजी रासि ॥ नानक दरगह मंनिआ गुर पूरे साबासि ॥ १४ ॥ १ ॥ २ ॥ ११ ॥

हे भाई! गुरु ने प्रभु के संग सच्चा प्रेम अन्तर्मन में लगा दिया है। जब मैं गुरु को अपने सम्मुख देखता हूँ तो मेरा तन-मन आनंदित हो जाता है॥ १॥ मेरे पास प्रभु-नाम का अमूल्य धन है, जो मैंने गुरु से पाया है। यह अमृत-नाम अगम्य एवं अथाह है॥ १॥ रहाउ॥ मैं सतगुरु को देखकर प्रसन्न हो गया हूँ और प्रभु नाम से मेरा प्रेम लग गया है। प्रभु ने कृपा करके अपने साथ मिला लिया है और मैंने मोक्षद्वार पा लिया है॥ २॥ मेरा सतगुरु ईश्वर के नाम का प्रेमी है। यदि वह मुझे मिल जाए तो मैं अपना तन-मन उसे सौंप दूँ। यदि पूर्व ही-मेरी तकदीर में लिखा हो तो सहज ही अमृत-नाम को पी लूँ॥ ३॥ सोते वक्त गुरु की स्तुति करनी चाहिए और जागते वक्त भी गुरु-गुरु जपना चाहिए। यदि कोई ऐसा गुरुमुख मिल जाए तो मैं उसके चरण धोऊँ॥ ४॥ मुझे कोई ऐसा सज्जन ढूँढ दीजिए, जो मुझे मेरे प्रियतम-प्रभु से मिला दे। मैंने सतिगुरु से मिलकर हरि को पा लिया है और वह मुझे सहज-स्वभाव ही मिला है॥ ५॥ सतगुरु गुणों एवं नाम का सागर है और मुझे उसके दर्शनों का बड़ा चाव है। उसके बिना मैं एक घड़ी भी जीवित नहीं रह सकता और उसे देखे बिना मेरी जीवन-लीला ही समाप्त हो जाती है॥ ६॥ जैसे पानी के बिना मछली अन्य किसी भी उपाय से जीवित नहीं रह सकती, वैसे हरि के बिना संत भी जीवित नहीं रह सकता

और हरि-नाम के बिना उसके प्राण ही पखेरु हो जाते हैं॥ ७॥ मेरी अपने सतिगुरु से बड़ी प्रीति है। हे मेरी माँ! मैं अपने गुरु के बिना कैसे जिंदा रह सकता हूँ। गुरुवाणी मेरे जीवन का आधार है और मेरा गुरुवाणी से प्रेम लगा रहता है॥ ८॥ हरि का नाम अमूल्य रत्न है। हे मेरी माँ! जब गुरु प्रसन्न होता है तो ही वह नाम-रत्न देता है। मुझे तो सत्य-नाम का ही सहारा है और मैं हरि-नाम में सुरति लगाकर रखता हूँ॥ ६॥ गुरु का ज्ञान ही नाम रूपी पदार्थ है। वह हरि-नाम मन में बसा देता है। जिसके भाग्य में इसकी प्राप्ति लिखी होती है, उसे मिल जाता है और वह गुरु के चरणों में आ लगता है॥ १०॥ परमात्मा के प्रेम की कहानी अकथनीय है, कोई प्रियतम आकर मुझे यह कहानी सुना दे। मैं अपना यह मन उसे अर्पण कर दूँगा और झुक-झुक कर उसके पैरों में लग जाऊँगा॥ ११॥ हे परमात्मा! एक तू ही मेरा सज्जन है, तू कर्तापुरुष बड़ा चतुर है। मित्र सतगुरु ने मुझे तुझ से मिला दिया है। अब मुझे सदा के लिए तेरा ही बल है॥ १२॥ मेरा सतगुरु हमेशा के लिए अमर है। न वह जन्मता है और न ही वह मरता है। वह तो अविनाशी पुरुष है, जो सब में समा रहा है॥ १३॥ जिस मनुष्य ने राम नाम रूपी धन संचित कर लिया है, उसकी यह नाम रूपी पूंजी पूरी रहती है। हे नानक! उस मनुष्य को सत्य के दरबार में सम्मानित किया जाता है और पूर्ण गुरु की ओर से उसे शाबाश मिलती है॥ १४॥ १॥ २॥ ११॥

रागु सूही असटपदीआ महला ५ घरु १ ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

उरझि रहिओ बिखिआ कै संगा ॥ मनहि बिआपत अनिक तरंगा ॥ १ ॥ मेरे मन अगम अगोचर ॥ कत पाईऐ पूरन परमेसर ॥ १ ॥ रहाउ ॥ मोह मगन महि रहिआ बिआपे ॥ अति त्रिसना कबहू नही ध्रापे ॥ २ ॥ बसइ करोधु सरीरि चंडारा ॥ अगिआनि न सूझै महा गुबारा ॥ ३ ॥ भ्रमत बिआपत जरे किवारा ॥ जाणु न पाईऐ प्रभ दरबारा ॥ ४ ॥ आसा अंदेसा बंधि पराना ॥ महलु न पावै फिरत बिगाना ॥ ५ ॥ सगल बिआधि कै वसि करि दीना ॥ फिरत पिआस जिउ जल बिनु मीना ॥ ६ ॥ कछू सिआनप उकति न मोरी ॥ एक आस ठाकुर प्रभ तोरी ॥ ७ ॥ करउ बेनती संतन पासे ॥ मेलि लैहु नानक अरदासे ॥ ८ ॥ भइओ क्रिपालु साधसंगु पाइआ ॥ नानक त्रिपते पूरा पाइआ ॥ १ ॥ रहाउ दूजा ॥ १ ॥

मानव जीव विषय-विकारों में ही उलझा हुआ है और उसके मन को विकारों की अनेक तरंगें प्रभावित करती हैं॥ १॥ हे मेरे मन! ऐसी स्थिति में उस अपहुँच, मन-वाणी से परे पूर्ण परमेश्वर को कैसे पाया जाए॥ १॥ रहाउ॥ माया के मोह में मग्न हुआ जीव उसमें ही व्याप्त रहता है। अत्यंत तृष्णा लगी रहने के कारण वह कभी तृप्त नहीं होता॥ २॥ उसके शरीर में चाण्डाल क्रोध ही बसा रहता है लेकिन वह अज्ञानी यह नहीं समझता, क्योंकि उसके मन में अज्ञानता का महा अंधेरा बना हुआ है॥ ३॥ उसके मन को भ्रम में व्याप्त रहने के किवाड़ लगे हुए हैं, जिस कारण वह प्रभु के दरबार में जा नहीं पाता॥ ४॥ आशा एवं चिन्ता ने प्राणी को बाँध कर रखा हुआ है, जिससे वह प्रभु को पा नहीं सकता और परायों की तरह भटकता ही रहता है॥ ५॥ ऐसे आदमी को तो परमात्मा ने सभी व्याधियों के वश में कर दिया है। जिस तरह जल के बिना मछली तड़पती रहती है, वैसे ही वह तृष्णाओं की प्यास में भटकता रहता है॥ ६॥ मेरी कोई चतुराई एवं उक्ति काम नहीं कर सकती। हे प्रभु! मुझे एक तेरी ही आशा है॥ ७॥ मैं संतों के पास विनती करता हूँ। नानक की यही प्रार्थना है कि मुझे अपनी संगति में मिला लो॥ ८॥ परमात्मा मुझ पर कृपालु हो गया है, जिससे मैंने साधुओं की संगति पा ली है। हे नानक! पूर्ण प्रभु को पा कर मैं तृप्त हो गया हूँ॥ १॥ रहाउ दूसरा॥ १॥

रागु सूही महला ५ घरु ३ ੧ओं सतिगुर प्रसादि ॥

मिथन मोह अगनि सोक सागर ॥ करि किरपा उधरु हरि नागर ॥ १ ॥ चरण कमल सरणाइ नराइण ॥ दीना नाथ भगत पराइण ॥ १ ॥ रहाउ ॥ अनाथा नाथ भगत भै मेटन ॥ साधसंगि जमदूत न भेटन ॥ २ ॥ जीवन रूप अनूप दइआला ॥ रवण गुणा कटीऐ जम जाला ॥ ३ ॥ अंम्रित नामु रसन नित जापै ॥ रोग रूप माइआ न बिआपै ॥ ४ ॥ जपि गोबिंद संगी सभि तारे ॥ पोहत नाही पंच बटवारे ॥ ५ ॥ मन बच क्रम प्रभु एकु धिआए ॥ सरब फला सोई जनु पाए ॥ ६ ॥ धारि अनुग्रहु अपना प्रभि कीना ॥ केवल नामु भगति रसु दीना ॥ ७ ॥ आदि मधि अंति प्रभु सोई ॥ नानक तिसु बिनु अवरु न कोई ॥ ८ ॥ १ ॥ २ ॥

हे श्री हरि ! कृपा करके मुझे बचा लो, चूंकि नाशवान पदार्थों का मोह तृष्णाग्नि एवं शोक का सागर है॥ १॥ हे नारायण ! मैं तेरे चरणों की शरण में हूँ। तू दीनानाथ एवं भक्तपरायण है॥ १॥ रहाउ॥ हे अनाथों के नाथ ! तू अपने भक्तों के हर प्रकार के भय मिटाने वाला है। तेरे साधुओं की संगति करने से यमदूत भी पास नहीं आते॥ २॥ हे दया के घर ! तू अनूप है और जीवन प्रदान करने वाला है। तेरे गुण याद करने से मृत्यु का जाल भी कट जाता है॥ ३॥ जो व्यक्ति अपनी जीभ से नित्य ही हरि के अमृत-नाम को जपता है, उसे रोग पैदा करने वाली माया कभी भी नहीं लगती॥ ४॥ गोविंद का नाम जप कर अपने संगी भी भवसागर से तार दिए हैं। काम, क्रोध, लोभ, मोह एवं अहंकार-यह पाँचों लुटेरे अब दुखी नहीं करते॥ ५॥ जो व्यक्ति मन, वचन एवं कर्म से एक प्रभु का ही ध्यान करता है, उसे सर्व फल प्राप्त हो जाते हैं॥ ६॥ प्रभु ने अनुग्रह करके जिसे भी अपना बनाया है, उसे केवल नाम एवं भक्ति का ही रस दिया है॥ ७॥ सृष्टि के आदि, वर्तमान एवं अन्त में भी एक प्रभु ही है। हे नानक ! उसके बिना अन्य कोई नहीं है॥ ८॥ १॥ २॥

रागु सूही महला ५ असटपदीआ घरु ६ ੧ओं सतिगुर प्रसादि ॥

जिन डिठिआ मनु रहसीऐ किउ पाईऐ तिन्ह संगु जीउ ॥ संत सजन मन मित्र से लाइनि प्रभ सिउ रंगु जीउ ॥ तिन्ह सिउ प्रीति न तुटई कबहु न होवै भंगु जीउ ॥ १ ॥ पारब्रहम प्रभ करि दइआ गुण गावा तेरे नित जीउ ॥ आइ मिलहु संत सजणा नामु जपह मन मित जीउ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ देखै सुणे न जाणई माइआ मोहिआ अंधु जीउ ॥ काची देहा विणसणी कूड़ु कमावै धंधु जीउ ॥ नामु धिआवहि से जिणि चले गुर पूरे सनबंधु जीउ ॥ २ ॥ हुकमे जुग महि आइआ चलणु हुकमि संजोगि जीउ ॥ हुकमे परपंचु पसरिआ हुकमि करे रस भोग जीउ ॥ जिस नो करता विसरै तिसहि विछोड़ा सोगु जीउ ॥ ३ ॥ आपनड़े प्रभ भाणिआ दरगह पैधा जाइ जीउ ॥ ऐथै सुखु मुखु उजला इको नामु धिआइ जीउ ॥ आदरु दिता पारब्रहमि गुरु सेविआ सत भाइ जीउ ॥ ४ ॥ थान थनंतरि रवि रहिआ सरब जीआ प्रतिपाल जीउ ॥ सचु खजाना संचिआ एकु नामु धनु माल जीउ ॥ मन ते कबहु न वीसरै जा आपे होइ दइआल जीउ ॥ ५ ॥ आवणु जाणा रहि गए मनि वुठा निरंकारु जीउ ॥ ता का अंतु न पाईऐ ऊचा अगम अपारु जीउ ॥ जिसु प्रभु अपणा विसरै सो मरि जंमै लख वार जीउ ॥ ६ ॥ साचु नेहु तिन प्रीतमा जिन मनि वुठा आपि जीउ ॥ गुण साझी तिन संगि बसे आठ पहर प्रभ जापि जीउ ॥ रंगि रते परमेसरै बिनसे सगल संताप जीउ ॥ ७ ॥ तूं करता तूं करणहारु तूहै एकु अनेक

रागु सूही छंत महला १ घरु १ ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

भरि जोबनि मै मत पेईअड़ै घरि पाहुणी बलि राम जीउ ॥ मैली अवगणि चिति बिनु गुर गुण न समावनी बलि राम जीउ ॥ गुण सार न जाणी भरमि भुलाणी जोबनु बादि गवाइआ ॥ वरु घरु दरु दरसनु नही जाता पिर का सहजु न भाइआ ॥ सतिगुर पूछि न मारगि चाली सूती रैणि विहाणी ॥ नानक बालतणि राडेपा बिनु पिर धन कुमलाणी ॥ १ ॥ बाबा मै वरु देहि मै हरि वरु भावै तिस की बलि राम जीउ ॥ रवि रहिआ जुग चारि त्रिभवण बाणी जिस की बलि राम जीउ ॥ त्रिभवण कंतु रवै सोहागणि अवगणवंती दूरे ॥ जैसी आसा तैसी मनसा पूरि रहिआ भरपूरे ॥ हरि की नारि सु सरब सुहागणि रांड न मैलै वेसे ॥ नानक मै वरु साचा भावै जुगि जुगि प्रीतम तैसे ॥ २ ॥ बाबा लगनु गणाइ हं भी वंञा साहुरै बलि राम जीउ ॥ साहा हुकमु रजाइ सो न टलै जो प्रभु करै बलि राम जीउ ॥ किरतु पइआ करतै करि पाइआ मेटि न सकै कोई ॥ जाञी नाउ नरह निहकेवलु रवि रहिआ तिहु लोई ॥ माइ निरासी रोइ विछुंनी बाली बालै हेते ॥ नानक साच सबदि सुख महली गुर चरणी प्रभु चेते ॥ ३ ॥ बाबुलि दितड़ी दूरि ना आवै घरि पेईऐ बलि राम जीउ ॥ रहसी वेखि हदूरि पिरि रावी घरि सोहीऐ बलि राम जीउ ॥ साचे पिर लोड़ी प्रीतम जोड़ी मति पूरी परधाने ॥ संजोगी मेला थानि सुहेला गुणवंती गुर गिआने ॥ सतु संतोखु सदा सचु पलै सचु बोलै पिर भाए ॥ नानक विछुड़ि ना दुखु पाए गुरमति अंकि समाए ॥ ४ ॥ १ ॥

जीव-स्त्री अपनी भरपूर जवानी में इस तरह रहती है जैसे वह मदिरापान करके मदहोश हो गई है। वह यह नहीं जानती कि वह अपने पीहर अर्थात् इहलोक में एक अतिथि है। वह अपने अवगुणों से अपने चित्त में मैली रहती है। गुरु के बिना उसके हृदय में गुण नहीं बसते। उसने गुणों की कद्र नहीं जानी और वह भ्रम में ही भूली हुई है। उसने अपना यौवन व्यर्थ ही गंवा लिया है। न ही उसने अपने वर (पति-प्रभु) को जाना, न ही उसका घर-द्वार देखा, और न ही उसका दर्शन किया है। उसे अपने प्रभु का सहज सुख नहीं भाया। वह अपने सतगुरु से पूछकर प्रभु के मार्ग पर नहीं चली। वह तो अज्ञानता की निद्रा में ही सोई रही और उसकी जीवन-रूपी रात्रि बीत गई है। हे नानक ! यूं समझ लो कि वह तो बाल्यावस्था में ही विधवा हो गई है और अपने पति-प्रभु के बिना वह मुरझा गई है॥ १॥ हे बाबा ! मुझे मेरे पति-प्रभु से मिला दो। मुझे अपना वर हरि बहुत भाता है, मैं तो उस पर ही कुर्बान हूँ। वह चारों युगों में ही जगत् में बसा हुआ है, जिसकी वाणी तीनों लोकों—आकाश, पाताल एवं धरती में पढ़ी, सुनी एवं गाई जाती है। तीनों लोकों का मालिक, परमात्मा सुहागिन जीव-स्त्रियों से रमण करता है। लेकिन वह अवगुणों वाली जीव-स्त्रियों से दूर रहता है। जैसी किसी जीव-स्त्री की अभिलाषा होती है, सर्वव्यापक परमात्मा उसकी वही अभिलाषा पूरी कर देता है। जो जीव-स्त्री हरि की पत्नी बन जाती है, वह सदा ही सुहागिन रहती है। वह न कभी विधवा होती है और न ही उसका वेष मैला होता है। हे नानक ! मुझे सच्चा प्रभु बहुत भाता है, मेरा प्रियतम युग-युग में एक जैसा ही रहता है॥ २॥ हे बाबा ! मेरे विवाह का लग्न निकलवा लो, ताकि विवाह करवा कर मैं भी अपने ससुराल में जाऊँ। प्रभु अपनी रज़ानुसार जो हुक्म करता है, वही विवाह का लग्न होता है। उसका हुक्म कभी टल नहीं सकता। जो भाग्य में लिखा पड़ा है और जिसे करतार ने स्वयं लिख दिया है, उसे कोई टाल नहीं सकता। जो प्रभु तीनों लोकों में बसा हुआ है और जो सबसे निष्पक्ष है, वह स्वयं अपना वर नाम रखवा कर मुझ से विवाह करवाने आया है। परमात्मा रूपी दुल्हे से जीव-स्त्री दुल्हन के प्रेम को देखकर माँ रूपी माया

निराश होकर रोती हुई दुल्हन से बिछुड़ गई है। हे नानक! जीव-स्त्री गुरु के चरणों में लगकर प्रभु को याद करती रहती है और सच्चे शब्द द्वारा अपने प्रभु के महल में सुख भोगती रहती है॥ ३॥ मेरे बाबुल ने मेरा विवाह करके मुझे घर से दूर भेज दिया है। अब मैं अपने पीहर अर्थात् इहलोक में पुनः नहीं आती। मेरा प्रभु मुझ से रमण करता रहता है। मैं उसे अपने समक्ष देखकर प्रसन्न होती रहती हूँ और उसके घर में सुन्दर लगती हूँ। जब मेरे सच्चे प्रभु को मेरी आवश्यकता पड़ी है तो उसने मुझे अपने साथ मिलाया है। अब मैं पूर्ण बुद्धिमान एवं समस्त जीव-स्त्रियों की प्रधान बन गई हूँ। संयोग से ही मेरा पति-प्रभु से मिलाप हुआ है। जिस स्थान पर मैं रहती हूँ, वह बड़ा ही सुखदायक है। गुरु के ज्ञान द्वारा मैं गुणवान बन गई हूँ। सत्य, संतोष एवं सदैव सत्य मेरे साथ रहता है। मैं सत्य बोलती हूँ, जो मेरे प्रभु को बहुत अच्छा लगता है। हे नानक! अब मैं अपने पति-प्रभु से बिछुड़ कर दुख प्राप्त नहीं करती और गुरु की शिक्षा द्वारा उसके चरणों में लगी रहती हूँ॥ ४॥ १॥

रागु सूही महला १ छंतु घरु २ १ॲं सतिगुर प्रसादि ॥

हम घरि साजन आए ॥ साचै मेलि मिलाए ॥ सहजि मिलाए हरि मनि भाए पंच मिले सुखु पाइआ ॥ साई वसतु परापति होई जिसु सेती मनु लाइआ ॥ अनदिनु मेलु भइआ मनु मानिआ घर मंदर सोहाए ॥ पंच सबद धुनि अनहद वाजे हम घरि साजन आए ॥ १ ॥ आवहु मीत पिआरे ॥ मंगल गावहु नारे ॥ सचु मंगलु गावहु ता प्रभ भावहु सोहिलड़ा जुग चारे ॥ अपनै घरि आइआ थानि सुहाइआ कारज सबदि सवारे ॥ गिआन महा रसु नेत्री अंजनु त्रिभवण रूपु दिखाइआ ॥ सखी मिलहु रसि मंगलु गावहु हम घरि साजनु आइआ ॥ २ ॥ मनु तनु अंम्रिति भिंना ॥ अंतरि प्रेमु रतंना ॥ अंतरि रतनु पदारथु मेरै परम ततु वीचारो ॥ जंत भेख तू सफलिओ दाता सिरि सिरि देवणहारो ॥ तू जानु गिआनी अंतरजामी आपे कारणु कीना ॥ सुनहु सखी मनु मोहनि मोहिआ तनु मनु अंम्रिति भीना ॥ ३ ॥ आतम रामु संसारा ॥ साचा खेलु तुम्हारा ॥ सचु खेलु तुम्हारा अगम अपारा तुधु बिनु कउणु बुझाए ॥ सिध साधिक सिआणे केते तुझ बिनु कवणु कहाए ॥ कालु बिकालु भए देवाने मनु राखिआ गुरि ठाए ॥ नानक अवगण सबदि जलाए गुण संगमि प्रभु पाए ॥ ४ ॥ १ ॥ २ ॥

हे भाई! हमारे घर में सज्जन-प्रभु आए हैं और उस सच्चे प्रभु ने सच्चा मिलाप किया है। उसने मुझे सहज ही मिलाया है और वह हरि ही मन को भाया है। पंचों (ज्ञानेन्द्रियों) ने मिलकर सुख ही पाया है। वही वस्तु प्राप्त हुई है, जिससे मन लगाया हुआ था। अब दिन-रात उससे मेरा मिलाप होता रहता है और मेरा मन संतुष्ट हो गया है। मेरा घर एवं मन्दिर बहुत ही सुन्दर लगने लगे हैं। मेरे मन में पाँच प्रकार की आवाजों वाले अनहद बाजे बजने लग गए हैं, क्योंकि हमारे घर में प्रभु जी आए हैं॥ १॥ हे मेरे मीत प्यारे! मेरे पास आओ। हे जीव-रूपी नारियो! मंगल गीत गाओ। आप सत्यस्वरूप प्रभु का मंगल गाओ तो ही तुम उसको अच्छी लगोगी। प्रभु का गुणगान करने वाली जीव-रूपी नारियों की चारों युगों में ही शोभा होती है। मेरा साजन-प्रभु मेरे हृदय-घर में आया है, जिससे मेरा हृदय-रूपी स्थान बड़ा सुन्दर बन गया है। उसके शब्द ने मेरे सारे कार्य संवार दिए हैं। गुरु ने परमानंद देने वाला ज्ञान का सुरमा मेरी आँखों मे डालकर मुझे तीनों लोकों में व्यापक परमात्मा का रूप दिखा दिया है। हे मेरी सखियो! आकर मुझे मिलो और आनंदपूर्वक मंगल गाओ। मेरे हृदय-रूपी घर में मेरा साजन-प्रभु आया है॥ २॥ हे भाई! मेरा मन एवं तन नाम रूपी अमृत से भीग गया है। मेरे अन्तर्मन में प्रेम रत्न मौजूद है। मेरे अन्तर्मन में रत्न जैसा प्रेम पदार्थ बसता है। उस परम तत्व प्रभु का ही चिंतन करो। हे प्रभु! सभी जीव तेरे भिखारी हैं और

जीउ ॥ तू समरथु तू सरब मै तूहै बुधि बिबेक जीउ ॥ नानक नामु सदा जपी भगत जना की टेक जीउ ॥ ८ ॥ १ ॥ ३ ॥

जिन संतों को देखने से मन प्रसन्न हो जाता है, मुझे उनका साथ कैसे प्राप्त हो ? वे संत मेरे सज्जन एवं मेरे मन के मित्र हैं, जो प्रभु से मेरा प्रेम लगाते हैं। उनसे मेरी प्रीति कभी न टूटे और न ही कभी साथ समाप्त हो॥ १॥ हे परब्रह्म प्रभु ! दया करो, ताकि मैं नित्य ही तेरा गुणगान करता रहूँ। हे मेरे सज्जन संतजनो ! आ कर मुझे मिलो, ताकि हम मन के मीत प्रभु का नाम जपें॥ १॥ रहाउ॥ माया के मोह में अंधा बना हुआ आदमी सच्चाई को न देखता, सुनता और न ही समझता है। कच्ची गागर के समान उसका यह शरीर नाश हो जाना है, लेकिन वह दुनिया में झूठे धंधे ही करता रहता है। जिनका संबंध पूर्ण गुरु से हो जाता है, वह परमात्मा के नाम का ध्यान करके अपना जीवन साकार करके चले जाते हैं॥ २॥ यह जीव इस कलियुग में प्रभु के हुक्म से ही जगत् में आया है और संयोग से उसके हुक्म में ही उसका प्रस्थान हो जाता है। परमात्मा के हुक्म से ही जगत-प्रपंच का प्रसार हुआ है और उसके हुक्म में ही जीव पदार्थों का स्वाद भोग रहा है। जिसे परमात्मा भूल जाता है, उसे ही वियोग एवं चिंता लगी रहती है॥ ३॥ जो व्यक्ति प्रभु को भा गया है, उसे ही दरगाह में सम्मान हासिल हुआ है। एक परमात्मा के नाम का ध्यान करने से उसे इहलोक में सुख एवं परलोक में मुख उज्ज्वल हुआ है। उसने यहाँ सच्चे प्रेम से गुरु की बड़ी सेवा की है, इसलिए परमात्मा ने इतना आदर दिया है॥ ४॥ सब जीवों का पोषण करने वाला परमात्मा हर जगह पर बसा हुआ है। मैंने भी सत्य-नाम का खजाना संचित कर लिया है और यह नाम रूपी धन-माल ही मेरे साथ जाएगा। यदि वह स्वयं दयालु हो जाए तो वह मन से कभी भी नहीं भूलता॥ ५॥ निरंकार प्रभु मेरे मन में आ कर बस गया है और अब मेरा जन्म-मरण मिट गया है। उस सर्वश्रेष्ठ, अगम्य एवं अपरंपार प्रभु का अंत नहीं पाया जा सकता। जिस इन्सान को अपना प्रभु ही भूल जाता है, वह लाखों बार जन्मता एवं मरता है॥ ६॥ जिनके मन में वह स्वयं आकर बस जाता है, उनका अपने प्रियतम प्रभु से सच्चा प्रेम बन जाता है। जो व्यक्ति उनकी संगत में रहते हैं, वह उनके साथ गुणों की भागीदारी कर लेते हैं और आठ प्रहर प्रभु को ही जपते रहते हैं। परमेश्वर के रंग में रंगकर उनके सारे दुख-संताप नाश हो जाते हैं॥ ७॥ हे ईश्वर ! तू जगत् का रचयिता है और सबकुछ करने में परिपूर्ण है। तू ही एक है और तेरे रूप अनेक हैं। तू सर्वकला समर्थ है और तू सब में बसा हुआ है। तू ही जीवों को बुद्धि एवं ज्ञान देने वाला है। हे नानक ! प्रभु ही भक्तजनों का अवलम्ब है और वे सदा ही उसका नाम जपते रहते हैं॥ ८॥ १॥ ३॥

रागु सूही महला ५ असटपदीआ घरु १० काफी १ओं सतिगुर प्रसादि ॥

जे भुली जे चुकी साईं भी तहिंजी काढीआ ॥ जिन्हा नेहु दूजाणे लगा झूरि मरहु से वाढीआ ॥ १ ॥ हउ ना छोडउ कंत पासरा ॥ सदा रंगीला लालु पिआरा एहु महिंजा आसरा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सजणु तूहै सैणु तू मै तुझ उपरि बहु माणीआ ॥ जा तू अंदरि ता सुखे तूं निमाणी माणीआ ॥ २ ॥ जे तू तुठा क्रिपा निधान ना दूजा वेखालि ॥ एहा पाई मू दातड़ी नित हिरदै रखा समालि ॥ ३ ॥ पाव जुलाई पंध तउ नैणी दरसु दिखालि ॥ स्रवणी सुणी कहाणीआ जे गुरु थीवै किरपालि ॥ ४ ॥ किती लख करोड़ि पिरीए रोम न पुजनि तेरिआ ॥ तू साही हू साहु हउ कहि न सका गुण तेरिआ ॥ ५ ॥ सहीआ तऊ असंख मंञहु हभि वधाणीआ ॥ हिक भोरी नदरि निहालि देहि दरसु रंगु माणीआ ॥ ६ ॥ जै डिठे मनु धीरीऐ किलविख वंञन्हि दूरे ॥ सो किउ विसरै माउ मै जो रहिआ भरपूरे ॥ ७ ॥

होइ निमाणी ढहि पई मिलिआ सहजि सुभाइ ॥ पूरबि लिखिआ पाइआ नानक संत सहाइ ॥ ८ ॥ १ ॥ ४ ॥

हे प्रभु ! यदि मुझ से कोई भूल-चूक भी हो गई है तो भी मैं तेरी ही कहलाती हूँ। जिन जीव-स्त्रियों का प्रेम किसी दूसरे से लगा हुआ है तो वे परित्यक्ताएँ बड़ी दुखी होकर मरती हैं॥ १॥ हे मेरी सखी ! मैं अपने पति-प्रभु का साथ कभी भी नहीं छोड़ूँगी। वह मेरा प्यारा लाल सदैव ही रंगीला है और मुझे उसका ही सहारा है॥ १॥ रहाउ॥ हे प्रभु जी ! एक तू ही मेरा सज्जन है और तू ही मेरा संबंधी है। मुझे तुझ पर बहुत गर्व है। तू ही मुझ जैसी मानहीन का सम्मान है। जब तू मेरे ह्रदय-घर में आ बसता है तो मुझे बड़ा सुख प्राप्त होता है॥ २॥ हे कृपानिधान ! यदि तू मुझ पर प्रसन्न हो गया है तो तू मुझे कोई अन्य मत दिखा। मैंने तुझ से यही देन प्राप्त की है और मैं तुझे नित्य ही संभाल कर रखती हूँ॥ ३॥ तू मेरे नयनों को अपने दर्शन दिखा, मैं अपने पैरों को तेरे मार्ग पर चलाऊँ। यदि गुरु मुझ पर कृपालु हो जाए तो मैं उससे अपने कानों से तेरी कहानियाँ सुनूँ॥ ४॥ हे प्रिय ! दुनिया में लाखों-करोड़ों कितने ही बड़े-बड़े महापुरुष हैं लेकिन वे सारे ही तेरे एक रोम के बराबर भी नहीं पहुँचते। तू बादशाहों का बादशाह है, मैं तेरे गुण व्यक्त नहीं कर सकती॥ ५॥ हे प्रभु ! असंख्य सखियाँ तेरी दासियाँ हैं, वे सब मुझ से एक से बढ़कर एक बहुत सुन्दर हैं। अपनी कृपा-दृष्टि करके थोड़ा-सा मेरी तरफ देख और मुझे अपने दर्शन करवा दे ताकि मैं भी आनंद प्राप्त कर सकूँ॥ ६॥ हे मेरी माँ ! जिस प्रभु को देखने से मेरे मन को धीरज होता है और मेरे पाप दूर हो जाते हैं, वह मुझे क्यों भूलें, जो सारे जगत् में बसा हुआ है॥ ७॥ जब मैं विनम्र होकर उसके द्वार पर नतमस्तक हो गई तो वह मुझे सहज-स्वभाव ही मिल गया। हे नानक ! संतों की मदद से मैंने उसे पा लिया है जैसे पूर्व ही मेरे भाग्य में ऐसा लेख लिखा हुआ था॥ ८॥ १॥ ४॥

सूही महला ५ ॥ सिम्रिति बेद पुराण पुकारनि पोथीआ ॥ नाम बिना सभि कूड़ु गाल्ही होछीआ ॥ १ ॥ नामु निधानु अपारु भगता मनि वसै ॥ जनम मरण मोहु दुखु साधू संगि नसै ॥ १ ॥ रहाउ ॥ मोहि बादि अहंकारि सरपर रुंनिआ ॥ सुखु न पाइन्हि मूलि नाम विछुंनिआ ॥ २ ॥ मेरी मेरी धारि बंधनि बंधिआ ॥ नरकि सुरगि अवतार माइआ धंधिआ ॥ ३ ॥ सोधत सोधत सोधि ततु बीचारिआ ॥ नाम बिना सुखु नाहि सरपर हारिआ ॥ ४ ॥ आवहि जाहि अनेक मरि मरि जनमते ॥ बिनु बूझे सभु वादि जोनी भरमते ॥ ५ ॥ जिन्ह कउ भए दइआल तिन्ह साधू संगु भइआ ॥ अंम्रितु हरि का नामु तिन्ही जनी जपि लइआ ॥ ६ ॥ खोजहि कोटि असंख बहुतु अनंत के ॥ जिसु बुझाए आपि नेड़ा तिसु हे ॥ ७ ॥ विसरु नाही दातार आपणा नामु देहु ॥ गुण गावा दिनु राति नानक चाउ एहु ॥ ८ ॥ २ ॥ ५ ॥ १६ ॥

स्मृतियाँ, वेद, पुराण, इत्यादि सारे धार्मिक ग्रंथ पुकार-पुकार कर कह रहे हैं कि नाम के बिना अन्य सबकुछ झूठ एवं ओच्छी बातें हैं॥ १॥ नाम रूपी अपार खजाना तो भक्तों के मन में बसता है। साधुओं की संगत करने से जन्म-मरण, मोह एवं दुख इत्यादि सब दूर हो जाते हैं॥ १॥ रहाउ॥ मोह, वाद-विवाद एवं अहंकार में फँसकर आदमी अवश्य ही दुखी होकर रोता है। परमात्मा के नाम से बिछुड़ा हुआ वह बिल्कुल भी सुख हासिल नहीं करता॥ २॥ मेरी-मेरी की भावना धारण करके जीव माया के बन्धनों में बँध जाता है और माया के धंधों में फँसकर नरक-स्वर्ग में जन्म लेता रहता है॥ ३॥ भलीभांति विचार-विचार कर मैंने यह परिणाम निकाला है कि परमात्मा के नाम बिना आदमी को सुख नहीं मिलता और वह अवश्य ही अपनी जीवन-बाजी हार

जाता है॥ ४॥ अनेकों ही जीव जगत् में आते-जाते रहते हैं और वे पुनःपुन जन्मते-मरते रहते हैं। परमात्मा को समझे बिना उनका सबकुछ व्यर्थ है और वे योनियों में ही भटकते रहते हैं॥ ५॥ जिन पर वह दयालु हुआ है, उन्हें साधु की संगत प्राप्त हुई है। हरि का अमृत-नाम उन्होंने जप लिया है॥ ६॥ करोड़ों एवं असंख्य लोग उसे बहुत खोजते रहते हैं। लेकिन जिसे वह स्वयं ही सूझ प्रदान करता है, उसे वह अपने समीप ही बसता दिखाई देता है॥ ७॥ हे दाता! मुझे अपना नाम दीजिए, चूंकि तू मुझे कदापि न भूले। नानक की प्रार्थना है कि हे प्रभु! मेरे मन में यही चाव है कि मैं दिन-रात तेरा गुणगान करता रहूँ॥ ८॥ २॥ ५॥ १६॥

रागु सूही महला १ कुचजी ੧ਓं सतिगुर प्रसादि ॥

मंञु कुचजी अंमावणि डोसड़े हउ किउ सहु रावणि जाउ जीउ ॥ इक दू इकि चड़ंदीआ कउणु जाणै मेरा नाउ जीउ ॥ जिन्ही सखी सहु राविआ से अंबी छावड़ीएहि जीउ ॥ से गुण मंञु न आवनी हउ कै जी दोस धरेउ जीउ ॥ किआ गुण तेरे विथरा हउ किआ किआ घिना तेरा नाउ जीउ ॥ इकतु टोलि न अंबड़ा हउ सद कुरबाणै तेरै जाउ जीउ ॥ सुइना रुपा रंगुला मोती तै माणिकु जीउ ॥ से वसतू सहि दितीआ मै तिन्ह सिउ लाइआ चितु जीउ ॥ मंदर मिटी संदड़े पथर कीते रासि जीउ ॥ हउ एनी टोली भुलीअसु तिसु कंत न बैठी पासि जीउ ॥ अंबरि कूंजा कुरलीआ बग बहिठे आइ जीउ ॥ सा धन चली साहुरै किआ मुहु देसी अगै जाइ जीउ ॥ सुती सुती झालु थीआ भुली वाटड़ीआसु जीउ ॥ तै सह नालहु मुतीअसु दुखा कूं धरीआसु जीउ ॥ तुधु गुण मै सभि अवगणा इक नानक की अरदासि जीउ ॥ सभि राती सोहागणी मै डोहागणि काई राति जीउ ॥ १ ॥

हे मेरी सखी! मैं शुभ गुणों से विहीन हूँ और मुझ में अनंत दोष हैं। फिर मैं अपने पति-प्रभु से कैसे रमण करने जाऊँ? उसके पास एक से बढ़कर एक गुणवान जीवात्माएँ हैं और वहाँ कौन मेरा नाम जानता है? मेरी जिन सखियों ने प्रभु से रमण किया है, वे तो आमों की छाया में बैठी हुई हैं। उन जैसे शुभ गुण मुझ में नहीं हैं। फिर मैं किसे दोष दूँ? हे प्रभु जी! मैं तेरे गुणों का क्या वर्णन करूँ? मैं तेरा कौन-कौन सा नाम लूँ? तुझे मिलने के लिए मैं किसी एक गुण को भी ग्रहण नहीं कर सकती। मैं तुझ पर सदैव कुर्बान जाती हूँ। हे सखी! सोना, चांदी, सुन्दर मोती एवं माणिक्य ये सब वस्तुएँ मेरे प्रभु ने मुझे दी हैं लेकिन मैंने अपना चित्त इन से लगा लिया है। हे सखी! मैंने मिट्टी एवं पत्थर के बने हुए मन्दिर को अपनी पूंजी बना लिया है। मैं इन सुन्दर वस्तुओं में आकर्षित होकर भूली हुई हूँ और कभी भी अपने प्रभु के पास नहीं बैठी। आसमान में कुरलाने वाली कूंजें चली गई हैं और बगुले आ कर बैठ गए हैं अर्थात् बुढ़ापे में मेरे सिर के काले बाल चले गए हैं और सफेद बाल आ गए हैं। वह जीव-स्त्री अपने ससुराल परलोक को चली गई है लेकिन वह आगे जाकर अपना कौन-सा मुँह दिखाएगी? वह जीवन भर अज्ञानता की निद्रा में मग्न रही और सफेद दिन उदय हो गया है अर्थात् उसकी जीवन रूपी रात्रि व्यतीत हो गई है। वह सन्मार्ग को भूल गई है। हे मेरे पति-प्रभु! मैं तुझ से बिछुड़ गई हूँ और मैंने दुखों को धारण कर लिया है। नानक की एक प्रार्थना है कि हे प्रभु! तुझ में बेअन्त गुण हैं लेकिन मुझ में तो अवगुण ही भरे हुए हैं। सुहागिनें तो सब रातें तेरे साथ रमण करती रहती हैं और मुझ दुहागिन को भी कोई एक रात अपने साथ रमण के लिए प्रदान कर दो॥ १॥

सूही महला १ सुचजी ॥ जा तू ता मै सभु को तू साहिबु मेरी रासि जीउ ॥ तुधु अंतरि हउ सुखि वसा तूं अंतरि साबासि जीउ ॥ भाणै तखति वडाईआ भाणै भीख उदासि जीउ ॥ भाणै थल सिरि

सरु वहै कमलु फुलै आकासि जीउ ॥ भाणै भवजलु लंघीऐ भाणै मंझि भरीआसि जीउ ॥ भाणै सो सहु रंगुला सिफति रता गुणतासि जीउ ॥ भाणै सहु भीहावला हउ आवणि जाणि मुईआसि जीउ ॥ तू सहु अगमु अतोलवा हउ कहि कहि ढहि पईआसि जीउ ॥ किआ मागउ किआ कहि सुणी मै दरसन भूख पिआसि जीउ ॥ गुर सबदी सहु पाइआ सचु नानक की अरदासि जीउ ॥ २ ॥

हे मेरे मालिक ! तू ही मेरी जीवन पूंजी है। जब तू मेरे साथ होता है तो प्रत्येक व्यक्ति मुझे आदर देता है। जब तू मेरे हृदय में आ बसता है तो मैं सुखी रहती हूँ। जब तू मेरे अन्तर्मन में आ बसता है तो हर कोई मुझे शाबाशी देता है। परमात्मा की रज़ा में कोई सिंहासन पर बैठकर यश प्राप्त करता है। उसकी मर्ज़ी से ही मरुस्थल पर भी सरोवर बहने लगता है और उसकी रज़ा में आकाश में भी कमल खिल पड़ता है। ईश्वरेच्छा से कोई भवसागर में से भी पार हो जाता है और यदि उसकी इच्छा हो तो कोई पापों से भर कर भवसागर में डूब जाता है। हे भाई ! उसकी इच्छा में ही किसी ने अपना रंगीला पति-प्रभु पा लिया है और कोई स्तुति द्वारा गुणों के भण्डार प्रभु में रंग गया है। हे मालिक-प्रभु ! तेरी रज़ा में ही मुझे यह जगत् भयानक लगता है और मैं जन्म-मरण के चक्र में पड़कर मृत्यु को प्राप्त करती रहती हूँ। हे मेरे मालिक ! तू अगम्य एवं अतुलनीय है। मैं प्रार्थना कर-करके तेरे द्वार पर गिर पड़ी हूँ। मैं तुझ से और क्या माँगू ? मैं तुझे और क्या कहूँ कि तू मेरी प्रार्थना सुन ले ? चूंकि मुझे तो तेरे दर्शन की ही भूख एवं प्यास है। परमात्मा ने नानक की सच्ची प्रार्थना स्वीकार कर ली है और उसने गुरु के शब्द द्वारा अपना मालिक-प्रभु पा लिया है॥ २॥

सूही महला ५ गुणवंती ॥ जो दीसै गुरसिखड़ा तिसु निवि निवि लागउ पाइ जीउ ॥ आखा बिरथा जीअ की गुरु सजणु देहि मिलाइ जीउ ॥ सोई दसि उपदेसड़ा मेरा मनु अनत न काहू जाइ जीउ ॥ इहु मनु तै कूं डेवसा मै मारगु देहु बताइ जीउ ॥ हउ आइआ दूरहु चलि कै मै तकी तउ सरणाइ जीउ ॥ मै आसा रखी चिति महि मेरा सभो दुखु गवाइ जीउ ॥ इतु मारगि चले भाईअड़े गुरु कहै सु कार कमाइ जीउ ॥ तिआगें मन की मतड़ी विसारें दूजा भाउ जीउ ॥ इउ पावहि हरि दरसावड़ा नह लगै तती वाउ जीउ ॥ हउ आपहु बोलि न जाणदा मै कहिआ सभु हुकमाउ जीउ ॥ हरि भगति खजाना बखसिआ गुरि नानकि कीआ पसाउ जीउ ॥ मै बहुड़ि न त्रिसना भुखड़ी हउ रजा त्रिपति अघाइ जीउ ॥ जो गुर दीसै सिखड़ा तिसु निवि निवि लागउ पाइ जीउ ॥ ३ ॥

जो भी गुरु का शिष्य दिखाई देता है, मैं झुक-झुक कर उसके चरणों में पड़ता हूँ। मैं उसे अपने मन की व्यथा बताता हूँ और उसे निवेदन करता हूँ कि वह मुझे मेरे सज्जन गुरु से मिला दे। मुझे वह उपदेश बताओ जिससे मेरा मन कहीं ओर मत भटके। मैं अपना यह मन तुझे दे दूँगा, मुझे (प्रभु-मिलन का) मार्ग बता दो। मैं बहुत दूर से चलकर तेरे पास आया हूँ और मैंने तेरी ही शरण देखी है। मैंने अपने चित्त में यह आशा रखी हुई है कि तू मेरा सारा दुख दूर कर देगा। हे भाई ! यदि तू इस मार्ग पर चले, जो गुरु कहे, वह कार्य करे, अपने मन की मति त्याग दे और द्वैतभाव को भुला दे तो इस तरह तू हरि का दर्शन पा लेगा और तुझे कोई दुख नहीं लगेगा। मैं स्वयं तो कुछ भी बोलना नहीं जानता, मैंने तो सबकुछ परमात्मा के हुक्म से ही कहा है। गुरु नानक ने मुझ पर बड़ी कृपा की है और मुझे हरि की भक्ति का खजाना प्रदान कर दिया है। अब मैं बिल्कुल तृप्त हो गया हूँ और मुझे दोबारा माया की तृष्णा एवं भूख नहीं लगती। जो भी गुरु का शिष्य नजर आता है, मैं झुक-झुक कर उसके चरणों में पड़ता हूँ॥ ३॥

तू ही सब फल देने वाला दाता है। तू हरेक जीव को देने वाला है। तू चतुर, ज्ञानी एवं अन्तर्यामी है और तूने स्वयं ही यह दुनिया बनाई है। हे मेरी सखियो ! जरा सुनो, मन को मुग्ध करने वाले प्रभु ने मेरा मन मोह लिया है। मेरा मन एवं तन नाम-रूपी अमृत से भीग गया है॥ ३॥ हे भाई ! यह संसार सर्वव्यापक राम का रूप है। हे राम ! तुम्हारा यह जगत् तमाशा भी सत्य है। हे अगम्य एवं अपार प्रभु ! तेरा यह जगत् तमाशा जो सत्य है, इस तथ्य को तेरे सिवाय अन्य कौन समझा सकता है। जगत् में कितने ही सिद्ध, साधक एवं चतुर पुरुष हुए हैं लेकिन तेरे बिना कौन स्वयं को कुछ कहला सकता है ? भयानक काल भी दीवाना हो गया है लेकिन गुरु ने उसका मन स्थिर कर रखा है। हे नानक ! गुरु के शब्द ने अवगुणों को जला दिया है और गुणों के संगम द्वारा प्रभु को पा लिया है॥ ४॥ १॥ २॥

रागु सूही महला १ घरु ३ १ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

आवहु सजणा हउ देखा दरसनु तेरा राम ॥ घरि आपनड़ै खड़ी तका मै मनि चाउ घनेरा राम ॥ मनि चाउ घनेरा सुणि प्रभ मेरा मै तेरा भरवासा ॥ दरसनु देखि भई निहकेवल जनम मरण दुखु नासा ॥ सगली जोति जाता तू सोई मिलिआ भाइ सुभाए ॥ नानक साजन कउ बलि जाईऐ साचि मिले घरि आए ॥ १ ॥ घरि आइअड़े साजना ता धन खरी सरसी राम ॥ हरि मोहिअड़ी साच सबदि ठाकुर देखि रहंसी राम ॥ गुण संगि रहंसी खरी सरसी जा रावी रंगि रातै ॥ अवगण मारि गुणी घरु छाइआ पूरै पुरखि बिधातै ॥ तसकर मारि वसी पंचाइणि अदलु करे वीचारे ॥ नानक राम नामि निसतारा गुरमति मिलहि पिआरे ॥ २ ॥ वरु पाइअड़ा बालड़ीए आसा मनसा पूरी राम ॥ पिरि राविअड़ी सबदि रली रवि रहिआ नह दूरी राम ॥ प्रभु दूरि न होई घटि घटि सोई तिस की नारि सबाई ॥ आपे रसीआ आपे रावे जिउ तिस दी वडिआई ॥ अमर अडोलु अमोलु अपारा गुरि पूरै सचु पाईऐ ॥ नानक आपे जोग सजोगी नदरि करे लिव लाईऐ ॥ ३ ॥ पिरु उचड़ीऐ माड़ड़ीऐ तिहु लोआ सिरताजा राम ॥ हउ बिसम भई देखि गुणा अनहद सबद अगाजा राम ॥ सबदु वीचारी करणी सारी राम नामु नीसाणो ॥ नाम बिना खोटे नही ठाहर नामु रतनु परवाणो ॥ पति मति पूरी पूरा परवाना ना आवै ना जासी ॥ नानक गुरमुखि आपु पछाणै प्रभ जैसे अविनासी ॥ ४ ॥ १ ॥ ३ ॥

हे मेरे प्रियतम-प्रभु ! मेरे पास आओ, ताकि मैं तेरे दर्शन कर लूँ। मैं अपने हृदय-घर में खड़ी तुझे देखती रहती हूँ, तेरे दर्शन करने के लिए मेरे मन में बड़ा ही चाव है। हे मेरे प्रभु ! जरा सुनो, मेरे मन में बड़ा चाव है और मुझे तेरा ही भरोसा है। तेरे दर्शन करके मैं इच्छा-रहित हो गई हूँ और मेरे जन्म-मरण का दुख नाश हो गया है। सब जीवों में तेरी ही ज्योति है और मैंने जान लिया है कि वह ज्योति तू ही है। तू मुझे सहज-स्वभाव ही मिला है। हे नानक ! मैं अपने प्रभु पर बलिहारी जाती हूँ और वह सत्य नाम द्वारा मेरे हृदय-घर में आया है॥ १॥ जब प्रियतम प्रभु हृदय-घर में आया तो जीव-स्त्री बहुत प्रसन्न हुई। सच्चे शब्द द्वारा हरि ने उसे मोह लिया है और अपने ठाकुर जी को देखकर वह फूल की तरह खिल गई है। जब प्रेम में रंगे हुए प्रभु ने उससे रमण किया तो वह उसके गुणों से मुग्ध हो गई और बहुत प्रसन्न हुई। पूर्ण पुरुष विधाता ने उसके अवगुणों को नाश करके उसका हृदय-घर गुणों से बसा दिया है। काम, क्रोध, लोभ, मोह एवं अहंकार रूपी चोरों को मारकर वह जीव-स्त्री प्रभु-चरणों में बस गई है। जो भलीभांति विचार कर ही न्याय करता है। हे नानक ! राम नाम ने उसे भवसागर से पार कर दिया है और गुरु उपदेश द्वारा अपने प्यारे प्रभु को मिल गई है॥ २॥ हे भाई ! नवयौवना जीव-स्त्री ने अपने पति-प्रभु को पा लिया है और उसकी आशा एवं अभिलाषा पूरी हो गई है। उसके पति-प्रभु ने उससे रमण किया है और अब वह

शब्द में लीन हुई रहती है। सर्वव्यापक प्रभु उससे दूर नहीं जाता, वह प्रत्येक शरीर में मौजूद है और सब जीव-स्त्रियाँ उसकी पत्नियां हैं। वह स्वयं ही रसिया है, स्वयं ही रमण करता है और जैसे ही उसकी बड़ाई है। परमात्मा अमर, अटल, अमूल्य एवं अपार है और उस सत्यस्वरूप को पूर्ण गुरु द्वारा ही पाया जाता है। हे नानक! परमात्मा स्वयं ही अपने साथ जीव-स्त्री के मिलाप का संयोग बनाने वाला है। जब वह अपनी कृपा-दृष्टि करता है तो ही वह प्रभु में अपनी सुरति लगाती है॥ ३॥ मेरा पति-प्रभु एक ऊँचे महल में रहता है और वह तीनों लोकों का बादशाह है। मैं उसके गुणों को देखकर चकित हो गई हूँ और मेरे मन में अनहद शब्द गूँज रहा है। मैंने यह शुभ-कर्म किया है कि मैंने शब्द का चिंतन किया है और मुझे सत्य के दरबार में जाने के लिए राम नाम रूपी परवाना मिल गया है। खोटे व्यक्तियों को नाम के बिना प्रभु के दरबार में कोई स्थान नहीं मिलता। प्रभु को नाम रूपी रत्न ही स्वीकार होता है। जिस जीव-स्त्री की मति एवं प्रतिष्ठा पूर्ण है एवं पूर्ण नाम का परवाना है, वह जन्म एवं मृत्यु के चक्र से रहित है। हे नानक! जो जीव-स्त्री गुरुमुख बनकर अपने आत्मस्वरूप को पहचान लेती है, वह अविनाशी प्रभु का रूप ही बन जाती है॥ ४॥ १॥ ३॥

१ओं सतिगुर प्रसादि ॥ रागु सूही छंत महला १ घरु ४ ॥

जिनि कीआ तिनि देखिआ जगु धंधड़ै लाइआ ॥ दानि तेरै घटि चानणा तनि चंदु दीपाइआ ॥ चंदो दीपाइआ दानि हरि कै दुखु अंधेरा उठि गइआ ॥ गुण जंञ लाड़े नालि सोहै परखि मोहणीऐ लइआ ॥ वीवाहु होआ सोभ सेती पंच सबदी आइआ ॥ जिनि कीआ तिनि देखिआ जगु धंधड़ै लाइआ ॥ १ ॥ हउ बलिहारी साजना मीता अवरीता ॥ इहु तनु जिन सिउ गाडिआ मनु लीअड़ा दीता ॥ लीआ त दीआ मानु जिन्ह सिउ से सजन किउ वीसरहि ॥ जिन्ह दिसि आइआ होहि रलीआ जीअ सेती गहि रहहि ॥ सगल गुण अवगणु न कोई होहि नीता नीता ॥ हउ बलिहारी साजना मीता अवरीता ॥ २ ॥ गुणा का होवै वासुला कढि वासु लईजै ॥ जे गुण होवन्हि साजना मिलि साझ करीजै ॥ साझ करीजै गुणह केरी छोडि अवगण चलीऐ ॥ पहिरे पटंबर करि अडंबर आपणा पिड़ु मलीऐ ॥ जिथै जाइ बहीऐ भला कहीऐ झोलि अंम्रितु पीजै ॥ गुणा का होवै वासुला कढि वासु लईजै ॥ ३ ॥ आपि करे किसु आखीऐ होरु करे न कोई ॥ आखण ता कउ जाईऐ जे भूलड़ा होई ॥ जे होइ भूला जाइ कहीऐ आपि करता किउ भुलै ॥ सुणे देखे बाझु कहिऐ दानु अणमंगिआ दिवै ॥ दानु देइ दाता जगि बिधाता नानका सचु सोई ॥ आपि करे किसु आखीऐ होरु करे न कोई ॥ ४ ॥ १ ॥ ४ ॥

जिस परमात्मा ने यह जगत् उत्पन्न किया है, उसने ही इसकी देखभाल की है, और उसने ही सब जीवों को सांसारिक धंधों में लगाया है। हे मालिक! तेरे (नाम रूपी) दान द्वारा मेरे हृदय में प्रकाश हो गया है और मेरे तन में चन्द्रमा रूपी दीपक प्रज्वलित हो गया है। प्रभु की कृपा से चन्द्रमा रूपी दीपक प्रज्वलित होने से अब मेरे हृदय में से दुख एवं अज्ञानता का अंधेरा दूर हो गया है। गुणों की बारात दुल्हे के साथ ही सुन्दर लगती है, जिसने मन को मुग्ध करने वाली दुल्हन को परख कर लिया है। परमात्मा रूपी दुल्हा जीव-रूपी दुल्हन से विवाह करने के लिए पाँच प्रकार की ध्वनियों वाले बाजों सहित बारात लेकर आया है और बड़ी धूमधाम से विवाह हुआ है। जिस परमात्मा ने यह संसार उत्पन्न किया है, उसने ही इसकी देखभाल की है और सब को सांसारिक धंधों में प्रवृत्त किया है॥ १॥ हे भाई! मैं अपने उन सज्जनों एवं मित्रों पर बलिहारी जाता हूँ, जिनका जीवन-आचरण संसार से अलग है। मेरा यह तन जिनसे जुड़ा हुआ है, मैंने उनका मन स्वयं ले लिया है और अपना मन उन्हें दे दिया है। वे सज्जन मुझे क्यों विस्मृत हों, जिनसे मैंने

आदर लिया है। जिनके दिखाई देने से मेरे मन में हर्षोल्लास उत्पन्न होता है, मैं उन्हें पकड़कर अपने दिल से लगाकर रखूँ। मेरे सज्जनों में कोई भी अवगुण नहीं है, अपितु सदैव सर्वगुण ही रहते हैं। मैं अपने सज्जनों एवं मित्रों पर बलिहारी हूँ जो जगत् की मोह-माया से परे हैं॥ २॥ यदि जीव के पास गुण रूपी सुगंधियों का डिब्बा हो तो उसे उसमें से सुगन्धि लेते रहना चाहिए। यदि उसके सज्जनों के पास गुण हो तो उसे उनसे मिलकर उनके साथ गुणों की भागीदारी करनी चाहिए। यदि सज्जनों के साथ मिलकर गुणों की भागीदारी की जाए तो ही अपने अवगुणों को छोड़कर सन्मार्ग पर चला जाता है। जो व्यक्ति शुभ गुणों को अपना श्रृंगार बनाकर मन के कोमलता रूपी वस्त्र पहनता है, वह कामादिक विकारों को पछाड़ कर जीवन रूपी संग्राम जीत लेता है। ऐसा व्यक्ति जहाँ भी जाकर बैठता है, वह शुभ वचन बोलता है और अवगुणों को छांटकर नाम रूपी अमृत पीता रहता है। यदि जीव के पास गुण रूपी सुगन्धियों का डिब्बा हो तो उसे गुण रूपी सुगन्धि लेते रहना चाहिए॥ ३॥ ईश्वर स्वयं ही सबकुछ करता है, फिर उसके सिवा किसे कहा जाए, क्योंकि उसके अलावा अन्य कोई कुछ कर ही नहीं सकता। उसे शिकायत करने तो ही जाएँ, यदि उसने भूल की हो। यदि वह भूला हुआ हो तो ही जाकर शिकायत करने जाएँ। जगत् का रचयिता कोई भूल नहीं करता। वह जीवों की प्रार्थना सुनता एवं उनके किए कार्यों को देखता है। वह बिना कहे और बिना माँगे ही जीवों को दान देता रहता है और एक वही सत्य है। जब वह स्वयं ही सबकुछ करता है, फिर उसके अलावा किसे कहा जाए, क्योंकि उसके अतिरिक्त अन्य कोई कुछ भी नहीं कर सकता॥ ४॥ १॥ ४॥

सूही महला १ ॥ मेरा मनु राता गुण रवै मनि भावै सोई ॥ गुर की पउड़ी साच की साचा सुखु होई ॥ सुखि सहजि आवै साच भावै साच की मति किउ टलै ॥ इसनानु दानु सुगिआनु मजनु आपि अछलिओ किउ छलै ॥ परपंच मोह बिकार थाके कूड़ु कपटु न दोई ॥ मेरा मनु राता गुण रवै मनि भावै सोई ॥ १ ॥ साहिबु सो सालाहीऐ जिनि कारणु कीआ ॥ मैलु लागी मनि मैलिऐ किनै अंम्रितु पीआ ॥ मथि अंम्रितु पीआ इहु मनु दीआ गुर पहि मोलु कराइआ ॥ आपनड़ा प्रभु सहजि पछाता जा मनु साचै लाइआ ॥ तिसु नालि गुण गावा जे तिसु भावा किउ मिलै होइ पराइआ ॥ साहिबु सो सालाहीऐ जिनि जगतु उपाइआ ॥ २ ॥ आइ गइआ की न आइओ किउ आवै जाता ॥ प्रीतम सिउ मनु मानिआ हरि सेती राता ॥ साहिब रंगि राता सच की बाता जिनि बिंब का कोटु उसारिआ ॥ पंच भू नाइको आपि सिरंदा जिनि सच का पिंडु सवारिआ ॥ हम अवगणिआरे तू सुणि पिआरे तुधु भावै सचु सोई ॥ आवण जाणा ना थीऐ साची मति होई ॥ ३ ॥ अंजनु तैसा अंजीऐ जैसा पिर भावै ॥ समझै सूझै जाणीऐ जे आपि जाणावै ॥ आपि जाणावै मारगि पावै आपे मनूआ लेवए ॥ करम सुकरम कराए आपे कीमति कउण अभेवए ॥ तंतु मंतु पाखंडु न जाणा रामु रिदै मनु मानिआ ॥ अंजनु नामु तिसै ते सूझै गुर सबदी सचु जानिआ ॥ ४ ॥ साजन होवनि आपणे किउ पर घर जाही ॥ साजन राते सच के संगे मन माही ॥ मन माहि साजन करहि रलीआ करम धरम सबाइआ ॥ अठसठि तीरथ पुंन पूजा नामु साचा भाइआ ॥ आपि साजे थापि वेखै तिसै भाणा भाइआ ॥ साजन रांगि रंगीलड़े रंगु लालु बणाइआ ॥ ५ ॥ अंधा आगू जे थीऐ किउ पाधरु जाणै ॥ आपि मुसै मति होछीऐ किउ राहु पछाणै ॥ किउ राहि जावै महलु पावै अंध की मति अंधली ॥ विणु नाम हरि के कछु न सूझै अंधु बूडौ धंधली ॥ दिनु राति चानणु चाउ उपजै सबदु गुर का मनि वसै ॥ कर जोड़ि गुर पहि करि बिनंती राहु पाधरु गुरु दसै ॥ ६ ॥ मनु परदेसी जे थीऐ सभु देसु पराइआ ॥ किसु पहि खोल्हउ गंठड़ी दूखी भरि आइआ ॥ दूखी भरि आइआ जगतु

सबाइआ कउणु जाणै बिधि मेरीआ ॥ आवणे जावणे खरे डरावणे तोटि न आवै फेरीआ ॥ नाम विहूणे ऊणे झूणे ना गुरि सबदु सुणाइआ ॥ मनु परदेसी जे थीऐ सभु देसु पराइआ ॥ ७ ॥ गुर महली घरि आपणै सो भरपुरि लीणा ॥ सेवकु सेवा तां करे सच सबदि पतीणा ॥ सबदे पतीजै अंकु भीजै सु महलु महला अंतरे ॥ आपि करता करे सोई प्रभु आपि अंति निरंतरे ॥ गुर सबदि मेला तां सुहेला बाजंत अनहद बीणा ॥ गुर महली घरि आपणै सो भरिपुरि लीणा ॥ ८ ॥ कीता किआ सालाहीऐ करि वेखै सोई ॥ ता की कीमति ना पवै जे लोचै कोई ॥ कीमति सो पावै आपि जाणावै आपि अभुलु न भुलए ॥ जै जै कारु करहि तुधु भावहि गुर कै सबदि अमुलए ॥ हीणउ नीचु करउ बेनंती साचु न छोडउ भाई ॥ नानक जिनि करि देखिआ देवै मति साई ॥ ९ ॥ २ ॥ ५ ॥

प्रभु की भक्ति में लीन मेरा मन उसके ही गुण गाता है और वही मेरे मन को भाता है। गुरु ने मुझे सत्य (नाम) की सीढ़ी दी है, जिससे मुझे सच्चा सुख हासिल होता है। इससे मन को सहज सुख मिलता है, सत्य ही भाता है और सत्य की प्राप्ति वाली बुद्धि कैसे टल सकती है ? स्नान, दान-पुण्य, सुज्ञान एवं तीर्थ-स्नान से उस परमात्मा को कैसे खुश किया जा सकता है, जो स्वयं ही अछल है। मेरे मन में से धोखा, मोह एवं विषय-विकार सब नाश हो गए हैं। अब मेरे मन में झूठ, कपट एवं दुविधा भी नहीं रही। प्रभु की भक्ति में लीन मेरा मन उसका ही गुणगान करता रहता है और वही मेरे मन को भाता है॥ १॥ जिसने इस विश्व की रचना की है, उस परमात्मा की स्तुति करते रहना चाहिए। आदमी के मन में अहंत्व रूपी मैल लगी हुई है और उसका मन मैला हो जाता है। किसी विरले पुरुष ने ही नाम रूपी अमृत पान किया है। मैंने नाम रूपी अमृत मंथन करके पान किया है और अपना यह मन गुरु को सौंप दिया है। नाम का यह मूल्य मैंने गुरु से करवाया है। जब मैंने अपना मन सत्य के साथ लगाया तो सहज ही अपने प्रभु को पहचान लिया। मैं उसके चरणों में लगकर उसके गुण तो ही गाऊँ यदि मैं उसे अच्छा लगने लगूँ। मैं पराया बनकर उसे कैसे मिल सकता हूँ। जिसने यह जगत् उत्पन्न किया है, उस परमात्मा की स्तुति करनी चाहिए॥ २॥ हे भाई ! जब परमात्मा स्वयं ही मेरे हृदय में आकर बस गया तो सबकुछ मिल गया है। अब मेरा जन्म-मरण भी छूट गया है। अब मेरा मन मेरे प्रियतम से संतुष्ट हो गया है और हरि के प्रेम में रंग गया है। मालिक के रंग में रंगा हुआ मेरा मन उस सत्य की ही बातें करता रहता है। जिसने वीर्य रूपी जल से शरीर रूपी दुर्ग बना दिया है। परमात्मा गगन, वायु, अग्नि, जल एवं पृथ्वी—इन पाँच तत्वों का नायक है जो स्वयं ही स्रष्टा है और जिसने आत्मा के निवास हेतु मानव-शरीर की रचना की है। हे प्यारे प्रभु ! तू मेरी विनती सुन, मैं अवगुणों से भरा हुआ पापी जीव हूँ। जो जीव तुझे अच्छा लगता है, वह सच्चा बन जाता है। जिसकी बुद्धि सच्ची हो जाती है, उसका जन्म-मरण नहीं होता॥ ३॥ मुझे अपनी आँखों में वैसा ही सुरमा डालना चाहिए, जैसा मेरे प्रभु को अच्छा लगे। यदि वह स्वयं मुझे ज्ञान देता है, तो ही मैं समझती, सूझती एवं जानती हूँ। वह स्वयं ही मुझे ज्ञान करवाता है और मुझे सन्मार्ग लगाता है और मेरे मन को अपनी ओर प्रेरित करता है। वह स्वयं ही मुझसे कर्म-सुकर्म करवाता है, उसका मूल्यांकन कौन कर सकता है ? मैं किसी तंत्र, मंत्र एवं पाखण्ड को नहीं जानती और राम को अपने हृदय में बसाकर मेरा मन प्रसन्न हो गया है। जो गुरु के शब्द द्वारा सत्य को जान लेता है, नाम रूपी सुरमे का उसे ही ज्ञान होता है॥ ४॥ यदि साजन संत मेरे अपने बन जाएँ तो मैं पराए घर क्यों जाऊँ ? मेरे साजन संत सत्य में ही मग्न रहते हैं और सत्य उनके साथ उनके मन में ही बसता है। मेरे साजन मन में ही रमण करते हैं और यही उनका कर्म-धर्म है। उन्हें परमात्मा का सच्चा-नाम ही भाया है और यही उनका अड़सठ तीर्थो का स्नान, दान-पुण्य एवं पूजा है।

परमात्मा स्वयं ही जगत् को उत्पन्न करता है और उत्पन्न करके इसकी देखरेख करता है और उसकी इच्छा संतों को भली लगी है। संतजन परमात्मा के रंग में मग्न रहते हैं और उन्होंने प्रेम रूपी गहरा लाल रंग बना लिया है॥ ५॥ हे भाई! यदि अन्धा अर्थात् ज्ञानहीन आदमी पथ प्रदर्शक बन जाए तो वह सन्मार्ग को कैसे समझेगा। वह अपनी ओच्छी मति के कारण ठगा जा रहा है, वह सन्मार्ग कैसे पहचान सकता है? वह सन्मार्ग पर कैसे जाए ताकि वह प्रभु का महल पा ले। उस अन्धे व्यक्ति की मति अन्धी ही होती है। हरि के नाम बिना उसे कुछ भी नहीं सूझता और वह जग के धंधों में ही डूबता रहता है। यदि उसके मन में गुरु का शब्द बस जाता है, उसके मन में उत्साह पैदा हो जाता है और मन में दिन-रात ज्ञान का उजाला बना रहता है। वह अपने दोनों हाथ जोड़कर गुरु से विनती करता है और गुरु उसे सन्मार्ग बता देता है॥ ६॥ यदि मनुष्य का मन परदेसी हो जाए अर्थात् आत्मस्वरूप से बिछुड़ा रहे तो उसे सारा जगत् ही पराया लगता है। मैं किसके समक्ष अपने दुखों की गठरी खोलूँ? क्योंकि समूचा जगत् ही दुखों से भरा हुआ है। समूचा जगत् दुखों से भरा हुआ घर है, फिर मेरी दुर्दशा को कौन जान सकता है? जीव के जन्म-मरण के चक्र बड़े ही भयानक हैं और यह चक्र कभी समाप्त नहीं होता। जिन्हें गुरु ने शब्द (परमात्मा का नाम) नहीं सुनाया, वह नामहीन व्यक्ति उदास रहते हैं। यदि आदमी का मन परदेसी हो जाए तो उसे सारा संसार ही पराया लगता है॥ ७॥ जिस व्यक्ति के हृदय-घर में महल का स्वामी प्रभु आ बसता है, तब वह सर्वव्यापक प्रभु में लीन हो जाता है। सेवक सेवा तो ही करता है, जब उसका मन सच्चे शब्द में मग्न हो जाता है। जब उसका मन शब्द में मग्न हो जाता है और हृदय नाम-रस में भीग जाता है तो उसे प्रभु का महल हृदय-घर में ही मिल जाता है। जो कर्तार स्वयं इस जगत् को पैदा करता है, अंत में वही उसे अपने आत्मस्वरूप में लीन कर लेता है। गुरु के शब्द द्वारा जीव का परमात्मा से मिलाप हो जाता है तो वह सुखी हो जाता है और मन में अनहद शब्द की वीणा बजती रहती है। जिसके अन्तर्मन में परमात्मा आ बसता है, तो वह प्रभु में ही समा जाता है॥ ८॥ उस संसार की सराहना क्या करते हो, जिसे भगवान् ने पैदा किया है। स्तुतिगान तो उस भगवान् का करो, जिसने सारे विश्व को पैदा किया है और सब की देखभाल करता रहता है। यदि कोई उसका मूल्यांकन करने की कोशिश करे तो वह मूल्यांकन नहीं कर सकता। उसकी महिमा का मूल्यांकन वही कर सकता है, जिसे वह स्वयं ज्ञान प्रदान करता है। परमात्मा कभी भूल नहीं करता, वह तो अविस्मरणीय है। हे ईश्वर! गुरु के अमूल्य शब्द द्वारा जो तेरी जय-जयकार करते रहते हैं, वही तुझे अच्छे लगते हैं। हे भाई! मैं हीन एवं नीच हूँ और यही प्रार्थना करता हूँ कि मैं कभी भी सत्य (नाम) को छोड़ न पाऊँ। हे नानक! जो परमात्मा जीवों को पैदा करके उनकी देखभाल कर रहा है, वही उन्हें सुमति देता है॥ ६॥ २॥ ५॥

रागु सूही छंत महला ३ घरु २ १ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

सुख सोहिलड़ा हरि धिआवहु ॥ गुरमुखि हरि फलु पावहु ॥ गुरमुखि फलु पावहु हरि नामु धिआवहु जनम जनम के दूख निवारे ॥ बलिहारी गुर अपणे विटहु जिनि कारज सभि सवारे ॥ हरि प्रभु क्रिपा करे हरि जापहु सुख फल हरि जन पावहु ॥ नानकु कहै सुणहु जन भाई सुख सोहिलड़ा हरि धिआवहु ॥ १ ॥ सुणि हरि गुण भीने सहजि सुभाए ॥ गुरमति सहजे नामु धिआए ॥ जिन कउ धुरि लिखिआ तिन गुरु मिलिआ तिन जनम मरण भउ भागा ॥ अंदरहु दुरमति दूजी खोई सो जनु हरि लिव लागा ॥ जिन कउ क्रिपा कीनी मेरै सुआमी तिन अनदिनु हरि गुण गाए ॥ सुणि मन भीने सहजि सुभाए ॥ २ ॥ जुग महि राम नामु निसतारा ॥ गुर ते उपजै सबदु वीचारा ॥ गुर सबदु वीचारा राम

नामु पिआरा जिसु किरपा करे सु पाए ॥ सहजे गुण गावै दिनु राती किलविख सभि गवाए ॥ सभु को तेरा तू सभना का हउ तेरा तू हमारा ॥ जुग महि राम नामु निसतारा ॥ ३ ॥ साजन आइ वुठे घर माही ॥ हरि गुण गावहि त्रिपति अघाही ॥ हरि गुण गाइ सदा त्रिपतासी फिरि भूख न लागै आए ॥ दह दिसि पूज होवै हरि जन की जो हरि हरि नामु धिआए ॥ नानक हरि आपे जोड़ि विछोड़े हरि बिनु को दूजा नाही ॥ साजन आइ वुठे घर माही ॥ ४ ॥ १ ॥

सुख सरीखा गौरवगान हरि का ध्यान करो और गुरुमुख बन फल पा लो। हरि नाम का ध्यान करो, फल पा लो क्योंकि यह जन्म-जन्मांतर के दुख दूर कर देता है। मैं अपने गुरु पर कोटि-कोटि बलिहारी जाता हूँ, जिसने मेरे सभी कार्य संवार दिए हैं। हे हरिजनो ! प्रभु कृपा करे, तो उसका नाम जपो और सुख रूपी फल पा लो। नानक कहते हैं कि हे मेरे हरिजन भाईयो ! सुख सरीखा गौरवगान हरि का ध्यान करो॥ १॥ जो व्यक्ति गुरु उपदेशानुसार सहज ही नाम का ध्यान करते हैं, हरि का गुणगान सुनने से उनका मन सहज-स्वभाव ही उसके प्रेम में भीग जाता हैं। प्रारम्भ से ही जिनके भाग्य में लिखा हुआ है, उन्हें ही गुरु मिला है और उनका जन्म-मरण का भय दूर हो गया है। जिसने अपनी दुर्मति एवं द्वैतभाव को अपने मन से निकाल दिया है, वह हरि की आराधना में लग गया है। मेरे स्वामी ने जिन पर अपनी कृपा की है, उन्होंने निशदिन हरि के गुण गाए हैं। हरि के गुण सुनकर उनका मन सहज-स्वभाव ही भीग गया है॥ २॥ हे भाई ! जगत में राम नाम द्वारा ही मुक्ति प्राप्त हो सकती है। जीव के मन में शब्द का विचार गुरु से ही उत्पन्न होता है। उसे गुरु के शब्द एवं ज्ञान द्वारा ही राम नाम प्यारा लगता है, लेकिन प्राप्ति भी उसे ही होती है, जिस पर परमात्मा अपनी कृपा करता है। ऐसा जीव सहज-स्वभाव दिन-रात परमात्मा का गुणगान करता रहता है और अपने सारे पाप दूर कर लेता है। हे ठाकुर ! सारे जीव तेरे सेवक हैं और तू सबका मालिक है। मैं भी तेरा सेवक हूँ और तू मेरा स्वामी है। जगत में राम का नाम ही मोक्ष का साधन है॥ ३॥ जिनके हृदय-घर में सज्जन-प्रभु आकर बस जाए, वह हरि के गुण गाते रहते हैं और तृप्त एवं संतुष्ट हो जाते हैं। जो हरि का गुणगान करके सदैव तृप्त रहते हैं, उन्हें फिर से कोई भूख आकर नहीं लगती। जो हरिनाम का ध्यान करता रहता है, उस हरिजन की दसों दिशाओं में पूजा होती है। हे नानक ! हरि स्वयं ही जीव का संयोग एवं वियोग बनाता है और उसके बिना अन्य कोई समर्थ नहीं है। साजन-प्रभु उनके हृदय-घर में स्थित हो गया है॥ ४॥ १॥

१ओं सतिगुर प्रसादि ॥ रागु सूही महला ३ घरु ३ ॥

भगत जना की हरि जीउ राखै जुगि जुगि रखदा आइआ राम ॥ सो भगतु जो गुरमुखि होवै हउमै सबदि जलाइआ राम ॥ हउमै सबदि जलाइआ मेरे हरि भाइआ जिस दी साची बाणी ॥ सची भगति करहि दिनु राती गुरमुखि आखि वखाणी ॥ भगता की चाल सची अति निरमल नामु सचा मनि भाइआ ॥ नानक भगत सोहहि दरि साचै जिनी सचो सचु कमाइआ ॥ १ ॥ हरि भगता की जाति पति है भगत हरि कै नामि समाणे राम ॥ हरि भगति करहि विचहु आपु गवावहि जिन गुण अवगण पछाणे राम ॥ गुण अउगण पछाणै हरि नामु वखाणै भै भगति मीठी लागी ॥ अनदिनु भगति करहि दिनु राती घर ही महि बैरागी ॥ भगती राते सदा मनु निरमलु हरि जीउ वेखहि सदा नाले ॥ नानक से भगत हरि कै दरि साचे अनदिनु नामु सम्हाले ॥ २ ॥ मनमुख भगति करहि बिनु सतिगुर विणु सतिगुर भगति न

होई राम ॥ हउमै माइआ रोगि विआपे मरि जनमहि दुखु होई राम ॥ मरि जनमहि दुखु होई दूजै भाइ परज विगोई विणु गुर ततु न जानिआ ॥ भगति विहूणा सभु जगु भरमिआ अंति गइआ पछुतानिआ ॥ कोटि मधे किनै पछाणिआ हरि नामा सचु सोई ॥ नानक नामि मिलै वडिआई दूजै भाइ पति खोई ॥ ३ ॥ भगता कै घरि कारजु साचा हरि गुण सदा वखाणे राम ॥ भगति खजाना आपे दीआ कालु कंटकु मारि समाणे राम ॥ कालु कंटकु मारि समाणे हरि मनि भाणे नामु निधानु सचु पाइआ ॥ सदा अखुटु कदे न निखुटै हरि दीआ सहजि सुभाइआ ॥ हरि जन ऊचे सद ही ऊचे गुर कै सबदि सुहाइआ ॥ नानक आपे बखसि मिलाए जुगि जुगि सोभा पाइआ ॥ ४ ॥ १ ॥ २ ॥

हरि सदैव अपने भक्तजनों की लाज रखता है और युगों-युगांतरों से उनकी रक्षा करता आया है। वही उसका भक्त है, जो गुरुमुख बन गया है और जिसने शब्द द्वारा अपने अभिमान को जला दिया है। जिसने शब्द द्वारा अपने अभिमान को जला दिया है, वही मेरे हरि को भाया है, जिसकी वाणी सत्य है। गुरु ने जो भक्ति कहकर बताई है, भक्तजन दिन-रात सच्ची भक्ति ही करते रहते हैं। भक्तों की जीवन-युक्ति सच्ची एवं अत्यंत निर्मल है और परमात्मा का सच्चा नाम ही उनके मन को भाया है। हे नानक ! भक्तजन सत्य के दरबार में बड़ी शोभा प्राप्त करते हैं, जिन्होंने अपने जीवन में हमेशा परम सत्य की ही साधना की होती है॥ १॥ हरि ही भक्तों की जाति एवं मान-सम्मान है और भक्त हरि के नाम स्मरण में ही लीन रहते हैं। जिन्होंने गुण एवं अवगुण पहचान लिए हैं, वे हरि की भक्ति करते हैं और अपने अन्तर्मन में से अभिमान को दूर कर देते हैं। वे अपने गुण एवं अवगुणों को पहचान कर हरि नाम का ही बखान करते रहते है। उन्हें हरि की भक्ति ही मीठी लगती है। वे दिन-रात भक्ति करते रहते हैं और गृहस्थ में रहते हुए वैरागी बने रहते हैं। भक्ति में लीन रहकर उनका मन सदैव निर्मल बना रहता है और वे हरि को सदैव अपने साथ देखते हैं। हे नानक! जो नाम-स्मरण करते रहते हैं, वे भक्त हरि के दरबार में सत्यवादी माने जाते हैं॥ २॥ स्वेच्छाचारी जीव सतगुरु के बिना ही भक्ति करते हैं लेकिन सतगुरु के बिना भक्ति नहीं सफल होती। वे अहंत्व एवं माया के रोग में फँसे रहते हैं, इसलिए उन्हें जन्म-मरण का भारी दुख लगा रहता है। जीवन-मृत्यु के चक्र में फँसकर उन्हें भारी दुख होता है, द्वैतभाव में सारी दुनिया ही ख्वार हो रही है। गुरु के बिना किसी ने भी परम तत्व को नहीं जाना। भक्तिविहीन समूचा जगत् भटका हुआ है लेकिन अन्तिम समय इसे पछतावा ही हुआ है। करोड़ों में किसी विरले व्यक्ति ने ही हरि-नाम के भेद को पहचाना है, जगत् में केवल हरि-नाम ही सत्य है। हे नानक ! नाम द्वारा ही सत्य के दरबार में बड़ाई मिलती है। लेकिन द्वैतभाव में फँसकर इन्सान अपनी इज्जत गंवा लेता है॥ ३॥ भक्तों के घर में सच्चा कार्य यही किया जाता है कि वे सदा हरि का गुणगान करते रहते हैं। हरि ने स्वयं ही उन्हें भक्ति का खजाना दिया है। वे भयानक यम को नियंत्रण में करके हरि में समाए रहते हैं। वे भयानक यम को वश में करके प्रभु में लीन रहते हैं और हरि को बहुत अच्छे लगते हैं। उन्होंने नाम रूपी सच्चा खजाना हरि से पा लिया है। हरि ने सहज स्वभाव ही यह कोष दिया है, जो सदैव अक्षय है और कभी कम नहीं होता। हरि-भक्त सर्वोत्तम हैं, सदैव सर्वोपरि है और गुरु के शब्द द्वारा उनका जीवन सुन्दर बन गया है। हे नानक ! परमात्मा ने उन्हें स्वयं ही कृपा करके अपने साथ मिला लिया है और युग-युगांतर उन्हें शोभा प्राप्त हुई है॥ ४॥ १॥ २॥

सूही महला ३ ॥ सबदि सचै सचु सोहिला जिथै सचे का होइ वीचारो राम ॥ हउमै सभि किलविख काटे साचु रखिआ उरि धारे राम ॥ सचु रखिआ उर धारे दुतरु तारे फिरि भवजलु तरणु न

होई ॥ सचा सतिगुरु सची बाणी जिनि सचु विखालिआ सोई ॥ साचे गुण गावै सचि समावै सचु वेखै सभु सोई ॥ नानक साचा साहिबु साची नाई सचु निसतारा होई ॥ १ ॥ साचै सतिगुरि साचु बुझाइआ पति राखै सचु सोई राम ॥ सचा भोजनु भाउ सचा है सचै नामि सुखु होई राम ॥ साचै नामि सुखु होई मरै न कोई गरभि न जूनी वासा ॥ जोती जोति मिलाई सचि समाई सचि नाइ परगासा ॥ जिनी सचु जाता से सचे होए अनदिनु सचु धिआइनि ॥ नानक सचु नामु जिन हिरदै वसिआ ना वीछुड़ि दुखु पाइनि ॥ २ ॥ सची बाणी सचे गुण गावहि तितु घरि सोहिला होई राम ॥ निरमल गुण साचे तनु मनु साचा विचि साचा पुरखु प्रभु सोई राम ॥ सभु सचु वरतै सचो बोलै जो सचु करै सु होई ॥ जह देखा तह सचु पसरिआ अवरु न दूजा कोई ॥ सचे उपजै सचि समावै मरि जनमै दूजा होई ॥ नानक सभु किछु आपे करता आपि करावै सोई ॥ ३ ॥ सचे भगत सोहहि दरवारे सचो सचु वखाणे राम ॥ घट अंतरे साची बाणी साचो आपि पछाणे राम ॥ आपु पछाणहि ता सचु जाणहि साचे सोझी होई ॥ सचा सबदु सची है सोभा साचे ही सुखु होई ॥ साचि रते भगत इक रंगी दूजा रंगु न कोई ॥ नानक जिस कउ मसतकि लिखिआ तिसु सचु परापति होई ॥ ४ ॥ २ ॥ ३ ॥

जहाँ सच्चे परमात्मा का चिंतन होता रहता है और सच्चे शब्द द्वारा परम सत्य का यशगान किया जाता है, वहाँ से अहंकार एवं सारे पाप दूर हो जाते हैं और वहाँ सत्य को ही हृदय में बसाया जाता है। जिसने सत्य को अपने हृदय में बसा लिया है, परमात्मा ने उसे दुस्तर भवसागर से तार दिया है और उसे फिर से भवसागर से पार होने की आवश्यकता नहीं पड़ती। जिसने परम-सत्य प्रभु के दर्शन करवा दिए हैं, वह सतिगुरु भी सत्य है और उसकी वाणी भी सत्य है। जो व्यक्ति सत्य का गुणगान करता है, वह सत्य में ही लीन हो जाता है और उसे सर्वत्र सत्य ही दिखाई देता हैं। हे नानक ! सबका मालिक परमेश्वर सत्य है, उसका नाम सत्य है और उस सत्य-नाम के सिमरन द्वारा ही जीव को मुक्ति मिलती है॥ १॥ सच्चे सतिगुरु ने जिस जीव को सत्य का ज्ञान दिया है, वह सत्यस्वरूप परमात्मा ही उसकी प्रतिष्ठा रखता है। परमात्मा का सच्चा प्रेम ही उसका सच्चा भोजन बन जाता है और सत्य-नाम द्वारा ही उसे सुख हासिल होता है। जिस व्यक्ति को सत्य-नाम द्वारा सुख मिलता है, वह फिर कभी मरता नहीं और न ही वह गर्भ-योनियों में निवास पाता है। उसकी ज्योति परम ज्योति में मिल जाती है, वह सत्य में ही समा जाता है और सत्य-नाम द्वारा उसके हृदय में प्रभु-ज्योति का प्रकाश हो जाता है। जिन्होंने सत्य के भेद को जान लिया है, वे सत्यवादी बन गए हैं और रात-दिन परम-सत्य का ही ध्यान करते रहते हैं। हे नानक ! जिनके हृदय में सत्य-नाम स्थित हो गया है, वह बिछुड़ कर दुख नहीं पाते॥ २॥ जहाँ सच्ची वाणी द्वारा भगवान् का गुणगान किया जाता है, उस घर में मंगल बन जाता है। सत्य का निर्मल गुणानुवाद करने से तन-मन भी सच्चा हो जाता है और सत्यस्वरूप प्रभु उसके हृदय में आ बसता है। फिर उसके मन में सत्य ही व्याप्त होता है, वह सत्य ही बोलता है और वही होता है जो प्रभु आप करता है। मैं जहाँ भी देखता हूँ, वहाँ सत्य का प्रसार है, उसके अतिरिक्त अन्य कोई नहीं। जीव सत्यस्वरूप परमात्मा से उत्पन्न होता है और सत्य में ही समा जाता है। जिसमें द्वैतभाव होता है, वह जन्मता-मरता रहता है। हे नानक ! ईश्वर स्वयं ही सबकुछ करता है और जीवों से करवाता है॥ ३॥ भगवान् के सच्चे भक्त उसके दरबार में शोभा के पात्र बनते हैं और सत्य का ही बखान करते रहते हैं। उनके हृदय में सच्ची वाणी बसती है और सत्य द्वारा अपने आत्मस्वरूप को पहचान लेते हैं। जब वे अपने आत्मस्वरूप को पहचान लेते हैं तो वे सत्य को जान लेते हैं और उन्हें सत्य की सूझ हो जाती है। शब्द-ब्रह्म सत्य है, इसकी शोभा भी सत्य है और सत्य से ही सुख

हासिल होता है। सत्य में रंगे हुए भक्त एक प्रभु के रंग में ही रंगे रहते हैं और उन्हें माया का कोई रंग नहीं होता। हे नानक! जिसके मस्तक पर भाग्य में लिखा होता है, उसे ही सत्य (परमात्मा) की प्राप्ति होती है॥ ४॥ २॥ ३॥

सूही महला ३ ॥ जुग चारे धन जे भवै बिनु सतिगुर सोहागु न होई राम ॥ निहचलु राजु सदा हरि केरा तिसु बिनु अवरु न कोई राम ॥ तिसु बिनु अवरु न कोई सदा सचु सोई गुरमुखि एको जाणिआ ॥ धन पिर मेलावा होआ गुरमती मनु मानिआ ॥ सतिगुरु मिलिआ ता हरि पाइआ बिनु हरि नावै मुकति न होई ॥ नानक कामणि कंतै रावे मनि मानिऐ सुखु होई ॥ १ ॥ सतिगुरु सेवि धन बालड़ीए हरि वरु पावहि सोई राम ॥ सदा होवहि सोहागणी फिरि मैला वेसु न होई राम ॥ फिरि मैला वेसु न होई गुरमुखि बूझै कोई हउमै मारि पछाणिआ ॥ करणी कार कमावै सबदि समावै अंतरि एको जाणिआ ॥ गुरमुखि प्रभु रावे दिनु राती आपणा साची सोभा होई ॥ नानक कामणि पिरु रावे आपणा रवि रहिआ प्रभु सोई ॥ २ ॥ गुर की कार करे धन बालड़ीए हरि वरु देइ मिलाए राम ॥ हरि कै रंगि रती है कामणि मिलि प्रीतम सुखु पाए राम ॥ मिलि प्रीतम सुखु पाए सचि समाए सचु वरतै सभ थाई ॥ सचा सीगारु करे दिनु राती कामणि सचि समाई ॥ हरि सुखदाता सबदि पछाता कामणि लइआ कंठि लाए ॥ नानक महली महलु पछाणै गुरमती हरि पाए ॥ ३ ॥ सा धन बाली धुरि मेली मेरै प्रभि आपि मिलाई राम ॥ गुरमती घटि चानणु होआ प्रभु रवि रहिआ सभ थाई राम ॥ प्रभु रवि रहिआ सभ थाई मंनि वसाई पूरबि लिखिआ पाइआ ॥ सेज सुखाली मेरे प्रभ भाणी सचु सीगारु बणाइआ ॥ कामणि निरमल हउमै मलु खोई गुरमति सचि समाई ॥ नानक आपि मिलाई करतै नामु नवै निधि पाई ॥ ४ ॥ ३ ॥ ४ ॥

जीव-स्त्री चाहे चारों युग भटकती रहे, लेकिन सतिगुरु के बिना उसे पति-प्रभु प्राप्त नहीं होता। परमात्मा का राज सदैव निश्चल है तथा उसके अतिरिक्त अन्य कोई नहीं है। उसके अलावा अन्य कोई सर्वशक्तिमान नहीं, केवल वही सदैव सत्य है। जीव-स्त्री ने गुरु के माध्यम से एक परमात्मा को ही जाना है। जब गुरु के उपदेश द्वारा जीव-स्त्री का मन प्रसन्न हुआ तो ही उसका पति-प्रभु से मिलाप हुआ है। जब उसे सतिगुरु मिला तो ही उसने परमेश्वर को पाया है और प्रभु-नाम बिना जीव की मुक्ति नहीं होती। हे नानक! जब जीव-स्त्री प्रभु से रमण करती है तो ही मन प्रसन्न होता है और उसे सुख हासिल होता है॥ १॥ हे नवयौवना जीव-स्त्री! सतिगुरु की सेवा करने से तुझे हरि रूपी वर प्राप्त हो जाएगा। तू सदा सुहागिन बनी रहेगी और तेरा वेष कभी मैला नहीं होगा। तेरा वेष कभी मैला नहीं होगा लेकिन कोई विरली जीव-स्त्री ही गुरु के माध्यम से इस तथ्य को समझती है। जीव-स्त्री ने अपने अहंत्व को नष्ट करके अपने पति-प्रभु को पहचान लिया है। वह शुभ-कर्म करती है, शब्द में लीन रहती है तथा उसने अपने अन्तर्मन में एक परमात्मा को ही समझा है। वह गुरमुख बनकर दिन-रात प्रभु का सिमरन करती रहती है और उसकी सच्ची शोभा हो गई है। हे नानक! जीव-रूपी कामिनी अपने पति-प्रभु से रमण करती है और वह प्रभु सर्वव्यापक है॥ २॥ हे नादान जीव-स्त्री! यदि तू श्रद्धा से गुरु की सेवा करेगी तो वह तुझे हरि रूपी वर से मिला देगा। वह हरि के रंग में ही मग्न है और अपने प्रियतम को मिलकर सुख प्राप्त करती है। वह अपने प्रियतम से मिलकर सुख की अनुभूति करती है और सत्य में समा जाती है। सच्चा प्रभु हर जगह पर मौजूद है। जीव-रूपी कामिनी सत्य में लीन रहती है और दिन-रात सत्य का ही श्रृंगार करती रहती है। वह शब्द द्वारा सुखदाता हरि को पहचान लेती है

और तब वह उसे अपने गले से लगा लेता है। हे नानक! जीव रूपी नारी अपने पति-प्रभु को पहचान लेती है और गुरु की शिक्षा द्वारा हरि को पा लेती है॥ ३॥ जीव-स्त्री प्रारम्भ से ही प्रभु-मिलन का भाग्य लेकर आई है और उसे मेरे प्रभु ने स्वयं ही अपने साथ मिला लिया है। गुरु के उपदेश द्वारा उसके हृदय में प्रकाश हो गया है कि परमात्मा सर्वव्यापक है। प्रभु हर जगह पर बसा हुआ है और उसे जीव-स्त्री ने अपने मन में बसा लिया है। जो उसके भाग्य में लिखा है, वही उसने पा लिया है। उसने सत्य को अपना शृंगार बनाया है और उसकी हृदय रूपी सुखदायक सेज मेरे प्रभु को अच्छी लगी है। जीव रूपी कामिनी अपने मन से अहंत्व रूपी मैल को दूर करके निर्मल हो गई है और गुरु मतानुसार वह सत्य में समा गई है। हे नानक! परमात्मा ने स्वयं ही उसे अपने साथ मिलाया है और उसे नौ निधियों वाला नाम प्राप्त हो गया है॥ ४॥ ३॥ ४॥

सूही महला ३ ॥ हरि हरे हरि गुण गावहु हरि गुरमुखे पाए राम ॥ अनदिनो सबदि रवहु अनहद सबद वजाए राम ॥ अनहद सबद वजाए हरि जीउ घरि आए हरि गुण गावहु नारी ॥ अनदिनु भगति करहि गुर आगै सा धन कंत पिआरी ॥ गुर का सबदु वसिआ घट अंतरि से जन सबदि सुहाए ॥ नानक तिन घरि सद ही सोहिला हरि करि किरपा घरि आए ॥ १ ॥ भगता मनि आनंदु भइआ हरि नामि रहे लिव लाए राम ॥ गुरमुखे मनु निरमलु होआ निरमल हरि गुण गाए राम ॥ निरमल गुण गाए नामु मंनि वसाए हरि की अंम्रित बाणी ॥ जिन्ह मनि वसिआ सेई जन निसतरे घटि घटि सबदि समाणी ॥ तेरे गुण गावहि सहजि समावहि सबदे मेलि मिलाए ॥ नानक सफल जनमु तिन केरा जि सतिगुरि हरि मारगि पाए ॥ २ ॥ संतसंगति सिउ मेलु भइआ हरि हरि नामि समाए राम ॥ गुर कै सबदि सद जीवन मुकत भए हरि कै नामि लिव लाए राम ॥ हरि नामि चितु लाए गुरि मेलि मिलाए मनूआ रता हरि नाले ॥ सुखदाता पाइआ मोहु चुकाइआ अनदिनु नामु सम्हाले ॥ गुर सबदे राता सहजे माता नामु मनि वसाए ॥ नानक तिन घरि सद ही सोहिला जि सतिगुर सेवि समाए ॥ ३ ॥ बिनु सतिगुर जगु भरमि भुलाइआ हरि का महलु न पाइआ राम ॥ गुरमुखे इकि मेलि मिलाइआ तिन के दूख गवाइआ राम ॥ तिन के दूख गवाइआ जा हरि मनि भाइआ सदा गावहि रंगि राते ॥ हरि के भगत सदा जन निरमल जुगि जुगि सद ही जाते ॥ साची भगति करहि दरि जापहि घरि दरि सचा सोई ॥ नानक सचा सोहिला सची सचु बाणी सबदे ही सुखु होई ॥ ४ ॥ ४ ॥ ५ ॥

हे भाई! 'हरि-हरि' जपो, हरि का गुणगान करो और गुरुमुख बनकर हरि को पा लो। दिन-रात शब्द में मग्न रहो और अनहद शब्द बजाते रहो। जो जीव अनहद शब्द बजाता है, हरि उसके हृदय-घर में आ बसता है। हे सत्संगी जीव-स्त्रियो! हरि का गुणगान करते रहो। जो दिन-रात गुरु के समक्ष भक्ति करती है, वह जीव-स्त्री पति-प्रभु को बहुत ही प्यारी लगती है। जिनके हृदय में गुरु का शब्द बस गया है, वे शब्द-गुरु द्वारा सुन्दर बन गए हैं। हे नानक! जिनके हृदय-घर में हरि अपनी कृपा करके आ बसता है, उनके घर में सदैव मंगल बना रहता है॥ १॥ हरि-नाम में लगन लगाए रखने से भक्तों के मन में आनंद उत्पन्न हो गया है। गुरु के माध्यम से उनका मन निर्मल हो गया है और उन्होंने हरि का निर्मल गुणगान ही किया है। उन्होंने हरि के निर्मल गुण गाए हैं, नाम अपने मन में बसा लिया है और हरि की वाणी अमृत समान है। जिनके मन में हरिनाम बस गया है, वे भवसागर से मुक्त हो गए हैं। हरि की अमृतवाणी शब्द द्वारा प्रत्येक हृदय में समा जाती है। हे हरि! जो जीव तेरे गुण गाते रहते हैं, वे सहज ही समाए रहते हैं और शब्द-गुरु द्वारा तूने साथ मिला लिया है। हे नानक! उनका जीवन सफल हो गया है,

जिन्हें सतगुरु ने हरि के मार्ग पर लगा दिया है॥ २॥ हे भाई ! जिन्हें संतों की संगति मिल गई है, वे हरि नाम में लीन हुए रहते हैं। गुरु के शब्द द्वारा वे सदा के लिए जीवन्मुक्त हो गए हैं और हरि के नाम में अपनी लौ लगाकर रखते हैं और गुरु ने जिन्हें सत्संगति में मिलाकर प्रभु से मिला दिया है, वे हमेशा हरि-नाम में ही चित्त लगाकर रखते हैं और उनका मन हरि में ही मग्न रहता हैं। उन्होंने सुखदाता प्रभु को पा लिया है और उनका मोह दूर हो गया है, वे दिन-रात नाम-सिमरन ही करते रहते हैं। गुरु के शब्द द्वारा उनका मन सहज ही मग्न रहता है और वे हरि-नाम को अपने मन में बसा लेते हैं। हे नानक! जो व्यक्ति सतगुरु की सेवा करके प्रभु में समाए रहते हैं, उनके हृदय-घर में सदैव हर्षोल्लास बना रहता है॥ ३॥ सतिगुरु के बिना सारा जगत् भ्रम में फँसकर भूला हुआ है और किसी ने हरि का निवास नहीं पाया ! लेकिन परमात्मा ने कुछ जीवों को गुरु से मिलाकर अपने साथ मिला लिया है और उनके दुख दूर हो गए हैं। जब परमात्मा के मन को उपयुक्त लगा तो उसने उनके दुख समाप्त कर दिए और अब वे उसके गुणगान एवं रंग में ही मग्न रहते हैं। हरि के भक्तजन सदैव निर्मल बने रहते हैं और वे युग-युग सदा के लिए विख्यात हो जाते हैं। वह सच्ची भक्ति करते हैं और सत्य के दरबार में प्रशंसा के पात्र बनते हैं। फिर सत्यस्वरूप परमात्मा उनके हृदय में ही होता है। हे नानक ! परमात्मा का स्तुतिगान सत्य है, वह सदैव सत्य है, उसकी वाणी भी सत्य है और शब्द से ही सुख उपलब्ध होता है॥ ४॥ ४॥ ५॥

सूही महला ३ ॥ जे लोड़हि वरु बालड़ीए ता गुर चरणी चितु लाए राम ॥ सदा होवहि सोहागणी हरि जीउ मरै न जाए राम ॥ हरि जीउ मरै न जाए गुर कै सहजि सुभाए सा धन कंत पिआरी ॥ सचि संजमि सदा है निरमल गुर कै सबदि सीगारी ॥ मेरा प्रभु साचा सद ही साचा जिनि आपे आपु उपाइआ ॥ नानक सदा पिरु रावे आपणा जिनि गुर चरणी चितु लाइआ ॥ १ ॥ पिरु पाइअड़ा बालड़ीए अनदिनु सहजे माती राम ॥ गुरमती मनि अनदु भइआ तितु तनि मैलु न राती राम ॥ तितु तनि मैलु न राती हरि प्रभि राती मेरा प्रभु मेलि मिलाए ॥ अनदिनु रावे हरि प्रभु अपणा विचहु आपु गवाए ॥ गुरमति पाइआ सहजि मिलाइआ अपणे प्रीतम राती ॥ नानक नामु मिलै वडिआई प्रभु रावे रंगि राती ॥ २ ॥ पिरु रावे रंगि रातड़ीए पिर का महलु तिन पाइआ राम ॥ सो सहो अति निरमलु दाता जिनि विचहु आपु गवाइआ राम ॥ विचहु मोहु चुकाइआ जा हरि भाइआ हरि कामणि मनि भाणी ॥ अनदिनु गुण गावै नित साचे कथे अकथ कहाणी ॥ जुग चारे साचा एको वरतै बिनु गुर किनै न पाइआ ॥ नानक रंगि रवै रंगि राती जिनि हरि सेती चितु लाइआ ॥ ३ ॥ कामणि मनि सोहिलड़ा साजन मिले पिआरे राम ॥ गुरमती मनु निरमलु होआ हरि राखिआ उरि धारे राम ॥ हरि राखिआ उरि धारे अपना कारजु सवारे गुरमती हरि जाता ॥ प्रीतमि मोहि लइआ मनु मेरा पाइआ करम बिधाता ॥ सतिगुरु सेवि सदा सुखु पाइआ हरि वसिआ मंनि मुरारे ॥ नानक मेलि लई गुरि अपुनै गुर कै सबदि सवारे ॥ ४ ॥ ५ ॥ ६ ॥

हे कमसिन जीव-स्त्री ! यदि तू अपने हरि रूपी वर को पाना चाहती है तो तुझे गुरु के चरणों में चित्त लगाना चाहिए। तू सदा सुहागिन बनी रहेगी, क्योंकि परमात्मा अनश्वर है। हरि जन्मता-मरता नहीं, वही जीव-स्त्री पति-प्रभु को प्यारी लगती है जो गुरु के प्रेम द्वारा सहज स्वभाव ही लीन रहती है। वह सत्य एवं संयम द्वारा सदैव निर्मल बनी रहती है और गुरु के शब्द द्वारा सत्य का ही शृंगार करती है। मेरा प्रभु सत्य है, वह सदैव शाश्वत है, जिसने स्वयं ही खुद को पैदा किया है अर्थात् वह स्वयंभू है। हे नानक ! जिस जीव-स्त्री ने गुरु के चरणों में चित्त लगाया है, वह सदैव अपने पति-प्रभु के साथ रमण करती है॥ १॥ हे भाई ! कमसिन जीव-स्त्री ने अपना पति-प्रभु

पा लिया है और वह सहज ही मग्न हुई रहती है। गुरु की शिक्षा द्वारा उसके मन में आनंद उत्पन्न हो गया है और उसके तन में थोड़ी-सी भी अहंत्व रूपी मैल नहीं रही। उसके तन में किंचित मात्र भी मैल नहीं रही और वह प्रभु में ही मग्न रहती है। मेरे प्रभु ने उसे गुरु के सम्पर्क में अपने साथ मिला लिया है। वह अपने मन में से अहंत्व को दूर करके रात-दिन प्रभु के साथ रमण करती रहती है। उसने अपने प्रभु को गुरु की शिक्षा द्वारा पाया है। गुरु ने सहज ही पति-प्रभु से उसे मिलाया है और अब वह प्रियतम में ही मग्न रहती है। हे नानक ! जिस जीव-स्त्री को नाम रूपी बड़ाई मिल जाती है, वह रंग में मग्न हुई अपने पति-प्रभु से ही रमण करती रहती है॥ २॥ अपने पति-प्रभु का महल उसने ही हासिल किया है, जो जीव-स्त्री प्रेमपूर्वक अपने प्रभु का चिंतन करती रहती है। जिस जीव-स्त्री ने अपने मन में से अपना अहंत्व दूर कर दिया है, उसने अपने पति को पा लिया है जो अत्यंत निर्मल एवं सबका दाता है। जब प्रभु को भला लगा तो जीव-स्त्री ने अन्तर्मन से अपने मोह को दूर कर दिया। वह जीव-रूपी कामिनी अपने प्रभु के मन को अच्छी लगने लगी। वह रात-दिन सत्य का गुणगान करती रहती है और प्रभु की अकथनीय कहानी कथन करती रहती है। सतियुग, त्रैता, द्वापर एवं कलियुग-इन चारों युगों में एक सच्चा प्रभु ही मौजूद है लेकिन गुरु के बिना उसे किसी ने भी प्राप्त नहीं किया। हे नानक ! जिस जीव-स्त्री ने अपना चित्त परमात्मा से लगाया है, वह उसके रंग में रत हुई रमण करती रहती है॥ ३॥ हे भाई ! जब प्यारा साजन मिला तो जीव-स्त्री के मन में बड़ा सुख उत्पन्न हुआ। गुरु-मतानुसार उसका मन निर्मल हुआ तो उसने हरि नाम को अपने हृदय में बसा लिया। हरि-नाम को अपने हृदय में बसाकर उसने अपना कार्य संवार लिया और गुरु-मतानुसार उसने हरि को जान लिया। उस प्रियतम-प्रभु ने मेरा मन मोह लिया है और मैंने उस कर्म विधाता को पा लिया है। सतिगुरु की सेवा करके मैंने सदैव सुख पा लिया है और प्रभु मेरे मन में बस गया है। हे नानक ! गुरु ने मुझे अपने साथ मिला लिया है और गुरु के शब्द द्वारा मैंने अपना जीवन-कार्य संवार लिया है॥ ४॥ ५॥ ६॥

सूही महला ३ ॥ सोहिलड़ा हरि राम नामु गुर सबदी वीचारे राम ॥ हरि मनु तनो गुरमुखि भीजै राम नामु पिआरे राम ॥ राम नामु पिआरे सभि कुल उधारे राम नामु मुखि बाणी ॥ आवण जाण रहे सुखु पाइआ घरि अनहद सुरति समाणी ॥ हरि हरि एको पाइआ हरि प्रभु नानक किरपा धारे ॥ सोहिलड़ा हरि राम नामु गुर सबदी वीचारे ॥ १ ॥ हम नीवी प्रभु अति ऊचा किउ करि मिलिआ जाए राम ॥ गुरि मेली बहु किरपा धारी हरि कै सबदि सुभाए राम ॥ मिलु सबदि सुभाए आपु गवाए रंग सिउ रलीआ माणे ॥ सेज सुखाली जा प्रभु भाइआ हरि हरि नामि समाणे ॥ नानक सोहागणि सा वडभागी जे चलै सतिगुर भाए ॥ हम नीवी प्रभु अति ऊचा किउ करि मिलिआ जाए राम ॥ २ ॥ घटि घटे सभना विचि एको एको राम भतारो राम ॥ इकना प्रभु दूरि वसै इकना मनि आधारो राम ॥ इकना मन आधारो सिरजणहारो वडभागी गुरु पाइआ ॥ घटि घटि हरि प्रभु एको सुआमी गुरमुखि अलखु लखाइआ ॥ सहजे अनदु होआ मनु मानिआ नानक ब्रहम बीचारो ॥ घटि घटे सभना विचि एको एको राम भतारो राम ॥ ३ ॥ गुरु सेवनि सतिगुरु दाता हरि हरि नामि समाइआ राम ॥ हरि धूड़ि देवहु मै पूरे गुर की हम पापी मुकतु कराइआ राम ॥ पापी मुकतु कराए आपु गवाए निज घरि पाइआ वासा ॥ बिबेक बुधी सुखि रैणि विहाणी गुरमति नामि प्रगासा ॥ हरि हरि अनदु भइआ दिनु राती नानक हरि मीठ लगाए ॥ गुरु सेवनि सतिगुरु दाता हरि हरि नामि समाए ॥ ४ ॥ ६ ॥ ७ ॥ ५ ॥ ७ ॥ १२ ॥

राम का नाम ही मंगलगान है और गुरु के शब्द द्वारा ही इसका चिंतन किया जाता है। गुरुमुख का मन एवं तन इससे भीग जाता है और राम नाम ही उसे प्यारा लगता है। गुरुमुख को राम नाम ही प्यारा लगता है और वह अपने समूचे वंश का उद्धार कर देता है। वह अपने मुँह से राम नाम की वाणी बोलता रहता है। उसका जन्म-मरण का चक्र समाप्त हो गया है और उसने सुख प्राप्त कर लिया है। उसके हृदय-घर में अनहद शब्द गूंजता रहता है, जिस में उसकी सुरति लीन हुई रहती है। हे नानक! प्रभु ने उस पर कृपा की है और उसने एक परमात्मा को पा लिया है। राम का नाम ही मंगलगान है और गुरु के शब्द द्वारा ही इसका चिंतन किया जाता है॥ १॥ हे भाई! मैं बहुत छोटा हूँ और प्रभु अत्यंत ऊँचा है, उसे कैसे मिला जा सकता है, गुरु ने कृपा करके सहज स्वभाव हरि के शब्द में मिला दिया है। मैं अपने अहंत्व को दूर करके सहज स्वभाव ही शब्द द्वारा हरि से रमण करती रहती हूँ। जब प्रभु मुझे अच्छा लगने लग गया तो मेरी हृदय रूपी सेज सुखदायक बन गई और मैं हरि-नाम में विलीन हुई रहती हूँ। हे नानक! वही जीव-स्त्री सुहागिन एवं भाग्यवान् है जो अपने सतिगुरु की रज़ानुसार चलती है। हे भाई! मैं बहुत छोटी हूँ और प्रभु सर्वोपरि है, उसे कैसे मिला जा सकता है॥ २॥ हे भाई! सबका मालिक एक प्रभु ही सब जीवों के हृदय में मौजूद है। कई जीवों को प्रभु दूर बसता लगता है और किसी को अपने मन का आसरा लगता है। सृजनहार परमेश्वर कई जीवों के मन का आधार बना हुआ है और भाग्यवान जीव गुरु को पा लेते हैं। सबके हृदय में एक प्रभु ही मौजूद है, जो सबका मालिक है एवं गुरु ने उस अदृष्ट परमात्मा के दर्शन करवाए हैं। हे नानक! उन्हें सहज ही आनंद उत्पन्न हो गया है, उनका मन तृप्त हो गया है और वे ब्रह्म का चिंतन करते रहते हैं॥ ३॥ हे भाई! जो जीव नाम के दाता गुरु की सेवा करता है, वह हरि-नाम में ही समाया रहता है। हे हरि! मुझे पूर्ण गुरु की चरण-धूलि दीजिए, जिसने मुझ पापी को मुक्त करवा दिया है। उसने मुझ पापी को मुक्त करवाया है, मैंने अभिमान को दूर करके अपने आत्मस्वरूप में निवास पा लिया है। गुरु की शिक्षा द्वारा मेरे मन में प्रभु-नाम का प्रकाश हो गया है, मुझे विवेक बुद्धि मिल गई है और अब जीवन रूपी रात्रि सुखद ही व्यतीत होती है। हे नानक! हरि-नाम जपने से मन में दिन-रात आनंद बना रहता है और मुझे हरि ही मीठा लगता है। हे भाई! नाम के दाता गुरु की सेवा करने वाला जीव हरि नाम में ही समाया रहता है॥ ४॥ ६॥ ७॥ ५॥ ७॥ १२॥

रागु सूही महला ४ छंत घरु १   १ओं सतिगुर प्रसादि ॥

सतिगुरु पुरखु मिलाइ अवगण विकणा गुण रवा बलि राम जीउ ॥ हरि हरि नामु धिआइ गुरबाणी नित नित चवा बलि राम जीउ ॥ गुरबाणी सद मीठी लागी पाप विकार गवाइआ ॥ हउमै रोगु गइआ भउ भागा सहजे सहजि मिलाइआ ॥ काइआ सेज गुर सबदि सुखाली गिआन तति करि भोगो ॥ अनदिनु सुखि माणे नित रलीआ नानक धुरि संजोगो ॥ १ ॥ सतु संतोखु करि भाउ कुड़मु कुड़माई आइआ बलि राम जीउ ॥ संत जना करि मेलु गुरबाणी गावाईआ बलि राम जीउ ॥ बाणी गुर गाई परम गति पाई पंच मिले सोहाइआ ॥ गइआ करोधु ममता तनि नाठी पाखंडु भरमु गवाइआ ॥ हउमै पीर गई सुखु पाइआ आरोगत भए सरीरा ॥ गुर परसादी ब्रहमु पछाता नानक गुणी गहीरा ॥ २ ॥ मनमुखि विछुड़ी दूरि महलु न पाए बलि गई बलि राम जीउ ॥ अंतरि ममता कूरि कूड़ु विहाझे कूड़ि लई बलि राम जीउ ॥ कूड़ु कपटु कमावै महा दुखु पावै विणु सतिगुर मगु न पाइआ ॥ उझड़ पंथि भ्रमै गावारी खिनु खिनु धके खाइआ ॥ आपे दइआ करे प्रभु दाता सतिगुरु पुरखु मिलाए ॥ जनम जनम के विछुड़े जन मेले नानक सहजि सुभाए ॥ ३ ॥ आइआ लगनु गणाइ हिरदै धन ओमाहीआ बलि राम जीउ ॥

पंडित पाधे आणि पती बहि वाचाईआ बलि राम जीउ ॥ पती वाचाई मनि वजी वधाई जब साजन सुणे घरि आए ॥ गुणी गिआनी बहि मता पकाइआ फेरे ततु दिवाए ॥ वरु पाइआ पुरखु अगंमु अगोचरु सद नवतनु बाल सखाई ॥ नानक किरपा करि कै मेले विछुड़ि कदे न जाई ॥ ४ ॥ १ ॥

हे राम ! मैं तुझ पर कुर्बान हूँ; मुझे महापुरुष सतिगुरु से मिला दो, ताकि मैं अपने अवगुणों को समाप्त करके तेरा गुणगान करता रहूँ। मैं हरि-नाम का ध्यान करता रहूँ और नित्य-प्रतिदिन गुरु वाणी का जाप करता रहूँ। मुझे गुरु वाणी सदैव मीठी लगती है, क्योंकि उसने मेरे मन में से पाप-विकार नाश कर दिए हैं। मेरा अहंत्व का रोग दूर हो गया है, मेरा मृत्यु का भय भी समाप्त हो गया है और सहज ही मुझे मिला दिया है। गुरु के शब्द द्वारा मेरी काया रूपी सेज सुखद हो गई है और ज्ञान-तत्व को अपना भोजन बना लिया है। हे नानक ! मैं रात-दिन सुख की अनुभूति करता हूँ, नित्य ही आनंद करता हूँ, क्योंकि प्रारम्भ से ही ऐसा संयोग लिखा हुआ था॥ १॥ हे राम ! मैं तुझ पर बलिहारी हूँ, जीव रूपी कन्या ने सत्य, संतोष एवं प्रेम को अपना श्रृंगार बना लिया है और गुरु रूपी समधी सगाई करने आ गया है। संतजनों का मेल करके गुरु वाणी का गायन किया गया। जब गुरु ने वाणी का गायन किया तो परमगति मिल गई। संत रूपी पंच मिलकर बैठ गए तो सगाई का कार्य सुन्दर बन गया। उसके शरीर में से क्रोध एवं ममता भाग गई है और पाखण्ड एवं भ्रम का नाश हो गया। उसके मन में से अहंकार की पीड़ा नाश हो गई है, सुख उपलब्ध हो गया है और शरीर अरोग्य हो गया है। हे नानक ! गुरु की कृपा से उसने ब्रह्म को पहचान लिया है, जो गुणों का गहरा सागर है॥ २॥ मैं राम पर बलिहारी हूँ। स्वेच्छाचारी जीव-स्त्री पति-प्रभु से बिछुड़ गई है और उसके चरणों से दूर होकर उसका द्वार प्राप्त नहीं करती अपितु तृष्णा की अग्नि में जल रही है। उसके मन में झूठी ममता बसती है और वह मिथ्या माया को खरीदती है। मिथ्या माया ने उसे छल लिया है। वह झूठ एवं कपट कमाकर महादुख प्राप्त करती है और सतिगुरु के बिना उसने सन्मार्ग नहीं पाया। वह मूर्ख वीरान पथ में भटकती रहती है और क्षण-क्षण ठोकरें खाती रहती है। जब दाता प्रभु स्वयं ही दया करता है तो वह महापुरुष सतिगुरु से उसे मिला देता है। हे नानक ! सतगुरु जन्म-जन्मांतर से बिछुड़े हुए जीवों को सहज-स्वभाव ही प्रभु से मिला देता है॥ ३॥ मैं राम पर कुर्बान हूँ । जब लग्न गिनने से विवाह का निश्चित समय आ गया तो जीव-स्त्री के हृदय में चाव उत्पन्न हो गया। पण्डित, पुरोहित ने पत्री लाकर बैठकर भाँवरे देने के समय का विचार किया, पत्री बांची गई। जीव-स्त्री के मन में खुशी पैदा हो गई जब उसने सुना कि उसका साजन प्रभु उसके हृदय-घर में आ गया है। गुणवान एवं ज्ञानियों ने बैठकर सलाह कर ली और तुरंत ही उनके भाँवरे दिलवा गए। जीव-स्त्री ने सर्वशक्तिमान, अगम्य, अगोचर, सदैव नवीन एवं बालसखा अपने वर रूपी परमात्मा को पा लिया है। हे नानक ! जिस जीवात्मा को प्रभु अपनी कृपा करके अपने साथ मिला लेता है, वह कभी भी उससे बिछुड़ कर अलग नहीं हुई॥ ४॥ १ ॥

सूही महला ४ ॥ हरि पहिलड़ी लाव परविरती करम द्रिड़ाइआ बलि राम जीउ ॥ बाणी ब्रहमा वेदु धरमु द्रिड़हु पाप तजाइआ बलि राम जीउ ॥ धरमु द्रिड़हु हरि नामु धिआवहु सिम्रिति नामु द्रिड़ाइआ ॥ सतिगुरु गुरु पूरा आराधहु सभि किलविख पाप गवाइआ ॥ सहज अनंदु होआ वडभागी मनि हरि हरि मीठा लाइआ ॥ जनु कहै नानकु लाव पहिली आरंभु काजु रचाइआ ॥ १ ॥ हरि दूजड़ी लाव सतिगुरु पुरखु मिलाइआ बलि राम जीउ ॥ निरभउ भै मनु होइ हउमै मैलु गवाइआ बलि राम जीउ ॥ निरमलु भउ पाइआ हरि गुण गाइआ हरि वेखै रामु हदूरे ॥ हरि आतम रामु पसारिआ सुआमी

सरब रहिआ भरपूरे ॥ अंतरि बाहरि हरि प्रभु एको मिलि हरि जन मंगल गाए ॥ जन नानक दूजी लाव चलाई अनहद सबद वजाए ॥ २ ॥ हरि तीजड़ी लाव मनि चाउ भइआ बैरागीआ बलि राम जीउ ॥ संत जना हरि मेलु हरि पाइआ वडभागीआ बलि राम जीउ ॥ निरमलु हरि पाइआ हरि गुण गाइआ मुखि बोली हरि बाणी ॥ संत जना वडभागी पाइआ हरि कथीऐ अकथ कहाणी ॥ हिरदै हरि हरि हरि धुनि उपजी हरि जपीऐ मसतकि भागु जीउ ॥ जनु नानकु बोले तीजी लावै हरि उपजै मनि बैरागु जीउ ॥ ३ ॥ हरि चउथड़ी लाव मनि सहजु भइआ हरि पाइआ बलि राम जीउ ॥ गुरमुखि मिलिआ सुभाइ हरि मनि तनि मीठा लाइआ बलि राम जीउ ॥ हरि मीठा लाइआ मेरे प्रभ भाइआ अनदिनु हरि लिव लाई ॥ मन चिंदिआ फलु पाइआ सुआमी हरि नामि वजी वाधाई ॥ हरि प्रभि ठाकुरि काजु रचाइआ धन हिरदै नामि विगासी ॥ जनु नानकु बोले चउथी लावै हरि पाइआ प्रभु अविनासी ॥ ४ ॥ २ ॥

हे राम! मैं तुझ पर बलिहारी हूँ। जब (हरि के) विवाह का पहला (भाँवर) फेरा करवाया गया तो जीव-स्त्री को प्रवृति कर्म अर्थात् गृहस्थ मार्ग दृढ़ करवाया गया। गुरु की वाणी ही ब्रह्मा एवं उसकी रचना वेद है, इसलिए यही जीव के लिए धर्म है, जिसे धारण करने से पाप मिट जाते हैं। इस धर्म का पालन करो एवं हरि नाम का ध्यान करो। स्मृतियों ने भी नाम स्मरण ही दृढ करवाया है। पूर्ण गुरु की आराधना करो, जिसने सारे किल्विष पाप नाश कर दिए हैं। जिसके मन में हरि-नाम मीठा लगता है, उस भाग्यशाली को सहज ही आनंद प्राप्त हो गया है। नानक जी कहते हैं कि पहले फेरे अर्थात् भाँवर द्वारा विवाह का आरंभ कार्य रचाया है॥ १॥ मैं राम पर कुर्बान हूँ। जब (हरि के) विवाह का दूसरा फेरा (भाँवर) करवाया गया तो उसने जीव-स्त्री को सतगुरु से मिला दिया। जीव-स्त्री का मन प्रभु के भय से निर्भय हो गया है और उसकी अहंत्व रूपी मैल दूर हो गई है। जब उसके मन में निर्मल प्रभु का भय उत्पन्न हो गया तो उसने हरि का गुणगान किया। अब वह हरि को आसपास ही देखती है। आत्मा में ही परमात्मा है, स्वामी प्रभु सर्वव्यापक है। उस जीव-स्त्री को एक प्रभु ही अपने ह्रदय एवं बाहर दुनिया में बसता दिखाई देता है। हरि-भक्तों ने मिलकर जीव-स्त्री के विवाह की खुशी के गीत गाए हैं। हे नानक! जब दूसरा फेरा सम्पन्न करवाया गया तो जीव-स्त्री के ह्रदय में आनंद शब्द गूंजने लगा॥ २॥ हे राम! मैं तुझ पर कुर्बान हूँ। जब (हरि के) विवाह का तीसरा फेरा करवाया गया तो जीव-स्त्री के वैरागी मन में चाव पैदा हो गया। जब भाग्यशाली संतजनों से उसका मेल हुआ तो उसने हरि को पा लिया। जब उसने निर्मल हरि को पा लिया तो ही उसने हरि का गुणगान किया। उसने अपने मुख से हरि की वाणी उच्चरित की। भाग्यवान जीव-स्त्री ने उन संतजनों से मिलकर अपना पति-प्रभु पा लिया और संतजन हरि की अकथनीय कहानी कथन करते रहते हैं। उस जीव-स्त्री के ह्रदय में हरि के नाम की ध्वनि पैदा हो गई है। वह हरि का जाप करती रहती है क्योंकि उसके माथे पर ऐसा भाग्य लिखा हुआ था। नानक कहते हैं कि तीसरे फेरे में जीव-स्त्री के मन में वैराग्य उत्पन्न हो जाता है॥ ३॥ हे राम! मैं तुझ पर बलिहारी हूँ। जब (हरि के) विवाह का चौथा फेरा हुआ तो जीव-स्त्री के मन में सहज उत्पन्न हो गया और उसने अपने परमात्मा को पा लिया। उसे गुरु द्वारा सहज स्वभाव ही प्रभु मिला है, जिसने उसके मन एवं तन में हरि मीठा लगा दिया है। गुरु ने जीव-स्त्री को हरि मीठा लगा दिया है और यह बात मेरे प्रभु को अच्छी लगी है। जीव-स्त्री रात-दिन हरि में ध्यानस्थ रहती है। उसने मनोवांछित स्वामी पा लिया है और उसे हरि नाम की शुभ-कामनाएँ मिल रही हैं। स्वामी प्रभु ने जीव-स्त्री से अपना विवाह करवाया है। जीव-स्त्री नाम द्वारा अपने ह्रदय में बहुत प्रसन्न रहती है। नानक कहते हैं, जब विवाह का चौथा फेरा संपन्न करवाया गया तो जीव-स्त्री ने अविनाशी प्रभु को पा लिया॥ ४॥ २॥

१ओं सतिगुर प्रसादि ॥ रागु सूही छंत महला ४ घरु २ ॥

गुरमुखि हरि गुण गाए ॥ हिरदै रसन रसाए ॥ हरि रसन रसाए मेरे प्रभ भाए मिलिआ सहजि सुभाए ॥ अनदिनु भोग भोगे सुखि सोवै सबदि रहै लिव लाए ॥ वडै भागि गुरु पूरा पाईऐ अनदिनु नामु धिआए ॥ सहजे सहजि मिलिआ जगजीवनु नानक सुंनि समाए ॥ १ ॥ संगति संत मिलाए ॥ हरि सरि निरमलि नाए ॥ निरमलि जलि नाए मैलु गवाए भए पवितु सरीरा ॥ दुरमति मैलु गई भ्रमु भागा हउमै बिनठी पीरा ॥ नदरि प्रभू सतसंगति पाई निज घरि होआ वासा ॥ हरि मंगल रसि रसन रसाए नानक नामु प्रगासा ॥ २ ॥ अंतरि रतनु बीचारे ॥ गुरमुखि नामु पिआरे ॥ हरि नामु पिआरे सबदि निसतारे अगिआनु अधेरु गवाइआ ॥ गिआनु प्रचंडु बलिआ घटि चानणु घर मंदर सोहाइआ ॥ तनु मनु अरपि सीगार बणाए हरि प्रभ साचे भाइआ ॥ जो प्रभु कहै सोई परु कीजै नानक अंकि समाइआ ॥ ३ ॥ हरि प्रभि काजु रचाइआ ॥ गुरमुखि वीआहणि आइआ ॥ वीआहणि आइआ गुरमुखि हरि पाइआ सा धन कंत पिआरी ॥ संत जना मिलि मंगल गाए हरि जीउ आपि सवारी ॥ सुरि नर गण गंधरब मिलि आए अपूरब जंञ बणाई ॥ नानक प्रभु पाइआ मै साचा ना कदे मरै न जाई ॥ ४ ॥ १ ॥ ३ ॥

गुरु के सान्निध्य में हरि के ही गुण गाए हैं और हृदय एवं जिह्वा द्वारा उस महारस का ही आनंद लिया है। जिसने अपनी जिह्वा से गुणों का आनंद लिया है, वही मेरे प्रभु को भा गया है और वह सहज स्वभाव ही प्रभु से मिल गया है। वह प्रतिदिन स्वादिष्ट पदार्थ सेवन करता है, सुख की नींद सोता है और शब्द में सुरति लगाकर रखता है। पूर्ण गुरु की प्राप्ति अहोभाग्य से ही होती है और फिर जीव रात-दिन परमात्मा के नाम का मनन करता रहता है। हे नानक ! जगत् का जीवन प्रभु उसे सहज स्वभाव ही मिल गया है और अब वह शून्यावस्था में शब्द में विलीन हुआ रहता है॥ १॥ प्रभु ने मुझे संतों की संगति में मिला दिया है और अब हरि-नाम रूपी सरोवर में स्नान करता रहता हूँ। मैंने नाम रूपी निर्मल जल में स्नान करके अपने पापों की मैल दूर कर दी है और मेरा शरीर पवित्र हो गया है। मेरी दुर्मति रूपी मैल निवृत्त हो गई है, मेरा भ्रम भाग गया है और अहंत्व की पीड़ा भी नाश हो गई है। प्रभु की करुणा-दृष्टि से मुझे सत्संगति की प्राप्ति हो गई है और मेरा आत्मस्वरूप में निवास हो गया है। मैंने हरि के मंगल गुण ही गाए हैं, जिह्वा से उसके गुणों का रस प्राप्त किया है। हे नानक ! अब मन में नाम का प्रकाश हो गया है॥ २॥ जीव अपने अंतर्मन में मौजूद नाम रूपी रत्न का ही चिंतन करता है। गुरुमुख को परमात्मा का नाम बड़ा प्यारा लगता है। जिसे हरि-नाम प्यारा लगता है, गुरु ने शब्द द्वारा उसका उद्धार कर दिया है और उसके अन्तर में से अज्ञान रूपी अंधेरा समाप्त कर दिया है। उसके हृदय में ज्ञान रूपी प्रचंड अग्नि प्रज्वलित हो गई है और प्रभु-ज्योति का आलोक हो गया है। उसके घर एवं मन्दिर सुन्दर बन गए हैं। उसने अपना तन एवं मन अर्पण करके शुभ गुणों का श्रृंगार किया है, जो सत्यस्वरूप प्रभु को अच्छा लगा है। जो प्रभु कहता है, वही वह भलीभांति करता है। हे नानक ! वह प्रभु-चरणों में लीन हो गया है॥ ३॥ हे भाई ! प्रभु ने विवाह रचाया है और वह गुरु के माध्यम से विवाह करवाने आया है। वह विवाह करवाने आया है और जीव-स्त्री ने गुरु के माध्यम से हरि को पा लिया है। वह जीव-स्त्री प्रभु को बड़ी प्यारी लगती है। संतजनों ने मिलकर विवाह के मंगल गीत गाए हैं तथा श्री हरि ने स्वयं ही शुभ गुणों से अलंकृत किया है। इस शुभावसर पर देवते, नर एवं गंधर्व मिल कर आए हैं और अपूर्व बारात बन गई। हे नानक ! मैंने सच्चा प्रभु पा लिया है, जो जन्म-मरण के चक्र से मुक्त है॥ ४॥ १॥ ३॥

रागु सूही छंत महला ४ घरु ३ ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

आवहो संत जनहु गुण गावह गोविंद केरे राम ॥ गुरमुखि मिलि रहीऐ घरि वाजहि सबद घनेरे राम ॥ सबद घनेरे हरि प्रभ तेरे तू करता सभ थाई ॥ अहिनिसि जपी सदा सालाही साच सबदि लिव लाई ॥ अनदिनु सहजि रहै रंगि राता राम नामु रिद पूजा ॥ नानक गुरमुखि एकु पछाणै अवरु न जाणै दूजा ॥ १ ॥ सभ महि रवि रहिआ सो प्रभु अंतरजामी राम ॥ गुर सबदि रवै रवि रहिआ सो प्रभु मेरा सुआमी राम ॥ प्रभु मेरा सुआमी अंतरजामी घटि घटि रविआ सोई ॥ गुरमति सचु पाईऐ सहजि समाईऐ तिसु बिनु अवरु न कोई ॥ सहजे गुण गावा जे प्रभ भावा आपे लए मिलाए ॥ नानक सो प्रभु सबदे जापै अहिनिसि नामु धिआए ॥ २ ॥ इहु जगो दुतरु मनमुखु पारि न पाई राम ॥ अंतरे हउमै ममता कामु क्रोधु चतुराई राम ॥ अंतरि चतुराई थाइ न पाई बिरथा जनमु गवाइआ ॥ जम मगि दुखु पावै चोटा खावै अंति गइआ पछुताइआ ॥ बिनु नावै को बेली नाही पुतु कुटंबु सुतु भाई ॥ नानक माइआ मोहु पसारा आगै साथि न जाई ॥ ३ ॥ हउ पूछउ अपना सतिगुरु दाता किन बिधि दुतरु तरीऐ राम ॥ सतिगुर भाइ चलहु जीवतिआ इव मरीऐ राम ॥ जीवतिआ मरीऐ भउजलु तरीऐ गुरमुखि नामि समावै ॥ पूरा पुरखु पाइआ वडभागी सचि नामि लिव लावै ॥ मति परगासु भई मनु मानिआ राम नामि वडिआई ॥ नानक प्रभु पाइआ सबदि मिलाइआ जोती जोति मिलाई ॥ ४ ॥ १ ॥ ४ ॥

हे संतजनो ! आओ, हम गोविंद का गुणगान करें। गुरुमुख बनकर मिलकर रहें और हमारे हृदय-घर में अनेक प्रकार के शब्द बजते रहते हैं। हे प्रभु ! यह अनेक प्रकार के अनहद शब्द तेरे ही बजाए बजते हैं, तू जगत् का रचयिता है और सर्वव्यापक है। ऐसी कृपा करो कि मैं रात-दिन तेरा नाम जपता रहूँ, सदैव तेरी स्तुति करता रहूँ और सच्चे शब्द में अपनी वृत्ति लगाकर रखूँ। मैं रात-दिन सहज स्वभाव तेरे रंग में लीन रहूँ और अपने हृदय में राम नाम की पूजा-अर्चना करता रहूँ। हे नानक ! गुरु के माध्यम से मैं एक परमात्मा को ही पहचानता हूँ और किसी अन्य को नहीं जानता॥ १॥ वह प्रभु अन्तर्यामी है और सब जीवों में समाया हुआ है। जो जीव शब्द-गुरु द्वारा उसका मनन करता है, मेरा स्वामी प्रभु उसे सब में बसा हुआ नजर आता है। मेरा स्वामी अन्तर्यामी प्रभु सबके हृदय में मौजूद है। गुरु की शिक्षा द्वारा ही सत्य की प्राप्ति होती है और जीव सहज ही उसमें समा जाता है, उसके अतिरिक्त अन्य कोई समर्थ नहीं है। यदि प्रभु को उपयुक्त लगे तो मैं सहज ही उसका गुणानुवाद करूँ और वह स्वयं ही मुझे अपने चरणों से मिला ले। हे नानक ! शब्द-गुरु द्वारा उस प्रभु की सूझ होती है और निशदिन उसके नाम का भजन होता है॥ २॥ यह जगत् ऐसा सागर है, जिस में से पार होना बहुत कठिन है और मन की मर्जी अनुसार चलने वाला जीव तो इससे पार ही नहीं हो सकता। ऐसे जीव के अन्तर्मन में अभिमान, ममत्व, काम, क्रोध एवं चतुराई ही भरे होते हैं। अन्तर्मन में चतुराई होने के कारण उसका जीवन सफल नहीं होता और अपना जीवन व्यर्थ ही गंवा देता है। वह मृत्यु के मार्ग में बहुत दुख प्राप्त करता है, मृत्यु से चोटें खाता है तथा अन्तिम समय जगत् को छोड़ता हुआ पछताता है। परमात्मा के नाम के अतिरिक्त पुत्र, परिवार, सुपुत्र एवं भाई इत्यादि कोई उसका साथी नहीं बना। हे नानक ! यह मोह-माया का प्रसार आगे परलोक में जीव के साथ नहीं जाता॥ ३॥ मेरा सतिगुरु नाम का दाता है, मैं उससे पूछता हूँ कि इस दुस्तर संसार-सागर से कैसे पार हुआ जा सकता है ? सतिगुरु की रज़ानुसार चलो, फिर जीते-जी मरा जाता है अर्थात् अहंत्व समाप्त हो जाता है। यदि मनुष्य जीते-जी मर जाए अर्थात् अपना अहम् समाप्त कर दे तो इस संसार-सागर से पार हुआ जा सकता

है और वह गुरु के माध्यम से नाम में ही विलीन हो जाता है। भाग्यशाली जीव ने पूर्ण परमात्मा को पा लिया है और वह सत्य-नाम में ही वृत्ति लगाकर रखता है। उसकी बुद्धि में ज्ञान का प्रकाश हो गया है और राम नाम की बड़ाई से उसका मन प्रसन्न हो गया है। हे नानक ! उसे प्रभु ने शब्द द्वारा अपने साथ मिला लिया है और उसकी आत्म-ज्योति परमज्योति में विलीन हो गई है॥ ४॥ १॥ ४॥

सूही महला ४ घरु ५ १ओं सतिगुर प्रसादि ॥

गुरु संत जनो पिआरा मै मिलिआ मेरी त्रिसना बुझि गईआसे ॥ हउ मनु तनु देवा सतिगुरै मै मेले प्रभ गुणतासे ॥ धनु धंनु गुरू वड पुरखु है मै दसे हरि साबासे ॥ वडभागी हरि पाइआ जन नानक नामि विगासे ॥ १ ॥ गुरु सजणु पिआरा मै मिलिआ हरि मारगु पंथु दसाहा ॥ घरि आवहु चिरी विछुंनिआ मिलु सबदि गुरू प्रभ नाहा ॥ हउ तुझु बाझहु खरी उडीणीआ जिउ जल बिनु मीनु मराहा ॥ वडभागी हरि धिआइआ जन नानक नामि समाहा ॥ २ ॥ मनु दह दिसि चलि चलि भरमिआ मनमुखु भरमि भुलाइआ ॥ नित आसा मनि चितवै मन त्रिसना भुख लगाइआ ॥ अनता धनु धरि दबिआ फिरि बिखु भालण गइआ ॥ जन नानक नामु सलाहि तू बिनु नावै पचि पचि मुइआ ॥ ३ ॥ गुरु सुंदरु मोहनु पाइ करे हरि प्रेम बाणी मनु मारिआ ॥ मेरै हिरदै सुधि बुधि विसरि गई मन आसा चिंत विसारिआ ॥ मै अंतरि वेदन प्रेम की गुर देखत मनु साधारिआ ॥ वडभागी प्रभ आइ मिलु जनु नानकु खिनु खिनु वारिआ ॥ ४ ॥ १ ॥ ५ ॥

हे संतजनो ! मुझे प्यारा गुरु मिल गया है, जिससे मेरी तृष्णा बुझ गई है। मैं अपना मन एवं तन सतिगुरु को अर्पण करता हूँ ताकि वह मुझे गुणों के भण्डार प्रभु से मिला दे। वह महापुरुष गुरु धन्य है, उस गुरु को मेरी शाबाश है, जिसने मुझे हरि के बारे में मार्गदर्शन किया है। हे नानक ! मैं खुशकिस्मत हूँ, जो हरि को पा लिया है और नाम द्वारा फूल की तरह खिल गया हूँ अर्थात् प्रसन्न हो गया हूँ॥ १॥ हे भाई ! मेरा प्यारा सज्जन गुरु मुझे मिल गया है। मैं उससे हरि का मार्ग पूछती हूँ। हे मेरे प्रभु ! शब्द-गुरु द्वारा मुझे आन मिलो, मेरे हृदय घर में आन बसो, मैं चिरकाल से तुझ से बिछुड़ी हुई हूँ। जैसे जल बिना मछली तड़पती है वैसे ही तेरे बिना मैं बहुत बेचैन रहती हूँ। हे नानक ! भाग्य से मैंने हरि का मनन किया है और उसके नाम में ही समाहित हो गई हूँ॥ २॥ हे भाई ! स्वेच्छाचारी जीव भ्रम में ही भूला हुआ है और उसका मन दसों दिशाओं में भटक रहा है। वह नित्य अपने मन में नवीन आशा सोचता रहता है और उसने अपने मन को तृष्णा की भूख लगा ली है। उसने अनंत धन धरती में दबा रखा है लेकिन फिर भी वह इससे अधिक माया रूपी विष ढूँढने के लिए गया है। हे नानक ! तू भी नाम का स्तुतिगान किया कर, क्योंकि नाम के बिना स्वेच्छाचारी जीव बड़ा दुखी होकर दम तोड़ गया है॥ ३॥ हे भाई ! मन को मुग्ध करने वाले सुन्दर गुरु को पा कर मैंने हरि की प्रेम वाणी द्वारा मन को नियंत्रण में कर लिया है। मैंने अपने मन की अभिलाषा एवं चिन्ता भुला दी है और मेरे हृदय में से सांसारिक चेतना भूल चुकी है। मेरे अन्तर्मन में प्रभु-प्रेम की वेदना है, मगर गुरु के दर्शन करके मन को धीरज हो गया है। हे नानक ! सौभाग्य से मुझे प्रभु आकर मिल गया है और मैं उस पर क्षण-क्षण न्यौछावर होता हूँ॥ ४॥ १॥ ५॥

सूही छंत महला ४ ॥ मारेहिसु वे जन हउमै बिखिआ जिनि हरि प्रभ मिलण न दितीआ ॥ देह कंचन वे वंनीआ इनि हउमै मारि विगुतीआ ॥ मोहु माइआ वे सभ कालखा इनि मनमुखि मूड़ि

सजुतीआ ॥ जन नानक गुरमुखि उबरे गुर सबदी हउमै छुटीआ ॥ १ ॥ वसि आणिहु वे जन इसु मन कउ मनु बासे जिउ नित भउदिआ ॥ दुखि रैणि वे विहाणीआ नित आसा आस करेदिआ ॥ गुरु पाइआ वे संत जनो मनि आस पूरी हरि चउदिआ ॥ जन नानक प्रभ देहु मती छडि आसा नित सुखि सउदिआ ॥ २ ॥ सा धन आसा चिति करे राम राजिआ हरि प्रभ सेजड़ीऐ आई ॥ मेरा ठाकुरु अगम दइआलु है राम राजिआ करि किरपा लेहु मिलाई ॥ मेरै मनि तनि लोचा गुरमुखे राम राजिआ हरि सरधा सेज विछाई ॥ जन नानक हरि प्रभ भाणीआ राम राजिआ मिलिआ सहजि सुभाई ॥ ३ ॥ इकतु सेजै हरि प्रभो राम राजिआ गुरु दसे हरि मेलेई ॥ मै मनि तनि प्रेम बैरागु है राम राजिआ गुरु मेले किरपा करेई ॥ हउ गुर विटहु घोलि घुमाइआ राम राजिआ जीउ सतिगुर आगै देई ॥ गुरु तुठा जीउ राम राजिआ जन नानक हरि मेलेई ॥ ४ ॥ २ ॥ ६ ॥ ५ ॥ ७ ॥ ६ ॥ १८ ॥

हे जीव ! उस अभिमान रूपी विष को समाप्त कर दो, जिसने तुझे प्रभु से मिलने नहीं दिया। हे जीव ! तेरा यह शरीर सोने जैसा सुन्दर था किन्तु इस अहंत्व ने इसे कुरूप कर दिया है। माया का मोह सब कालिमा है, किन्तु मूर्ख मनमुख ने खुद को इससे जोड़ रखा है। हे नानक ! गुरुमुख भवसागर में डूबने से बच गया है और वह गुरु के शब्द द्वारा अहंत्व से छूट गया है॥ १॥ हे जीव ! इस मन को अपने वश में रखो, यह तो शिकारी पक्षी की तरह नित्य ही भटकता रहता है। हे भाई ! नित्य ही नवीन अभिलाषा करते हुए मानव की जीवन रूपी रात्रि दुखों में ही बीत जाती है। हे संतजनो ! मैंने गुरु को पा लिया है और हरि का नाम जपते हुए मेरे मन की अभिलाषा पूरी हो गई है। नानक की प्रार्थना है कि हे प्रभु ! मुझे यही बुद्धि दीजिए कि मैं सब कामनाएँ छोड़कर अपनी जीवन रूपी रात्रि सुख की नींद में सोते हुए व्यतीत करूँ॥ २॥ हे मेरे राम ! वह जीव-स्त्री अपने चित्त में यही अभिलाषा करती है कि प्रभु उसकी हृदय-सेज पर आए। तू मेरा मालिक है, अपहुँच है एवं बड़ा दयालु है, कृपा करके मुझे अपने साथ मिला लो। मेरे मन एवं तन में तेरी ही लालसा है। हे हरि ! मैंने तेरे मिलन के लिए अपने हृदय में श्रद्धा की सेज बिछा रखी है। नानक का कथन है कि जब जीव-स्त्री प्रभु को भा गई तो वह उसे सहज स्वभाव ही मिल गया॥ ३॥ प्रभु जीव-स्त्री के साथ एक ही हृदय-सेज पर मौजूद है परन्तु जीव-स्त्री को यह भेद गुरु बताता है और उसे परमात्मा से मिला देता है। मेरे मन एवं तन में परमात्मा के लिए प्रेम है और उसे मिलने के लिए वैराग्य पैदा हो गया है। गुरु कृपा करके मुझे उससे मिला दे। मैं गुरु पर कोटि-कोटि कुर्बान जाती हूँ, यह प्राण भी उस पर न्यौछावर हैं। नानक का कथन है कि जब गुरु प्रसन्न हो गया तो उसने उसे हरि से मिला दिया॥ ४॥ २॥ ६॥ ५॥ ७॥ ६॥ १८॥

रागु सूही छंत महला ५ घरु १   १ओं सतिगुर प्रसादि ॥

सुणि बावरे तू काए देखि भुलाना ॥ सुणि बावरे नेहु कूड़ा लाइओ कुसंभ रंगाना ॥ कूड़ी डेखि भुलो अढु लहै न मुलो गोविद नामु मजीठा ॥ थीवहि लाला अति गुलाला सबदु चीनि गुर मीठा ॥ मिथिआ मोहि मगनु थी रहिआ झूठ संगि लपटाना ॥ नानक दीन सरणि किरपा निधि राखु लाज भगताना ॥ १ ॥ सुणि बावरे सेवि ठाकुरु नाथु पराणा ॥ सुणि बावरे जो आइआ तिसु जाणा ॥ निहचलु हभ वैसी सुणि परदेसी संतसंगि मिलि रहीऐ ॥ हरि पाईऐ भागी सुणि बैरागी चरण प्रभू गहि रहीऐ ॥ एहु मनु दीजै संक न कीजै गुरमुखि तजि बहु माणा ॥ नानक दीन भगत भव तारण तेरे किआ गुण आखि वखाणा ॥ २ ॥ सुणि बावरे किआ कीचै कूड़ा मानो ॥ सुणि बावरे हभु वैसी गरबु गुमानो ॥

निहचलु हभ जाणा मिथिआ माणा संत प्रभू होइ दासा ॥ जीवत मरीऐ भउजलु तरीऐ जे थीवै करमि लिखिआसा ॥ गुरु सेवीजै अंम्रितु पीजै जिसु लावहि सहजि धिआनो ॥ नानकु सरणि पइआ हरि दुआरै हउ बलि बलि सद कुरबानो ॥ ३ ॥ सुणि बावरे मतु जाणहि प्रभु मै पाइआ ॥ सुणि बावरे थीउ रेणु जिनी प्रभु धिआइआ ॥ जिनि प्रभु धिआइआ तिनि सुखु पाइआ वडभागी दरसनु पाईऐ ॥ थीउ निमाणा सद कुरबाणा सगला आपु मिटाईऐ ॥ ओहु धनु भाग सुधा जिनि प्रभु लधा हम तिसु पहि आपु वेचाइआ ॥ नानक दीन सरणि सुख सागर राखु लाज अपनाइआ ॥ ४ ॥ १ ॥

अरे पगले ! मेरी बात सुन, तू जगत्-तमाशे को देखकर क्यों भूला हुआ है ? तूने इससे झूठा प्रेम लगाया हुआ है, इसका रंग कुसुंभ के फूल जैसा है। झूठी माया को देखकर तू भूल गया है, तुझे इसका मूल्य कौड़ियों में भी नहीं मिलना। गोविन्द का नाम मजीठ जैसा स्थिर रहने वाला है। गुरु के शब्द को मीठा समझकर तू गुलाल जैसा गहरे रंग वाला पोस्त का सुन्दर फूल बन जाएगा। तू माया के मिथ्या मोह में ही मग्न है और झूठ के साथ लिपटा हुआ है। नानक प्रार्थना करता है कि हे कृपानिधि ! मैं गरीब तेरी शरण में आया हूँ। जैसे तू अपने भक्तों की लाज रखता है, मेरी भी लाज रखो॥ १॥ हे विमूढ़ जीव ! सुन, तू प्राणनाथ ठाकुर जी की उपासना कर। जो भी इस जगत् में जन्म लेकर आया है, उसने एक न एक दिन यहाँ से चले जाना है। हे परदेसी ! ध्यानपूर्वक सुन; संतों की संगति में मिलकर रहना चाहिए क्योंकि यह सारी दुनिया नाशवान है। हे वैरागी ! सुन; भाग्य से ही भगवान् प्राप्त होता है एवं प्रभु-चरणों में पड़े रहना चाहिए। अपना मन ईश्वर को अर्पण कर देना चाहिए, कोई शंका नहीं करनी चाहिए और गुरुमुख बनकर घमण्ड को त्याग दो। नानक प्रार्थना करता है कि हे प्रभु ! तू गरीब एवं भक्तों का संसार-सागर से उद्धार करने वाला है। मैं तेरे कौन-कौन से गुण कहकर बखान करूँ ?॥ २॥ हे बावरे जीव ! जरा सुन; क्यों झूठा अहंकार करता है ? तेरा सारा घमण्ड एवं गुमान नाश हो जाएगा। स्थिर लगता यह सारा जगत् चला जाएगा; तेरा अभिमान झूठा है, इसलिए प्रभु के संतों का दास बन जा। यदि तेरी किस्मत में ऐसा लिखा हो तो तू जगत के मोह से जीते जी मरकर भवसागर में से पार हो जाए। परमात्मा जिससे सहज ही अपना ध्यान-मनन करवाता है, वही गुरु की सेवा करता है और नाम-अमृत पीता रहता है। हे भाई ! नानक हरि के द्वार पर उसकी शरण में पड़ा है और सदैव उस पर कुर्बान जाता है॥ ३॥ हे मूर्ख जीव ! सुन, यह मत समझ कि तूने प्रभु को पा लिया है। जिन्होंने प्रभु का मनन किया है, तू उनके चरणों की धूलि बन जा। जिन्होंने प्रभु का ध्यान किया है, उन्हें ही सुख उपलब्ध हुआ है और भाग्यशाली को ही परमात्मा के दर्शन होते हैं। विनम्र बनकर हमेशा प्रभु पर कुर्बान होना चाहिए और अपना सारा अहंत्व मिटा देना चाहिए। जिसने प्रभु को ढूँढ लिया है, वह धन्य एवं भाग्यशाली है और मैंने अपना आप उसे बेचा हुआ है। नानक प्रार्थना करता है कि हे सुखों के सागर प्रभु ! मैं गरीब तेरी शरण में आया हूँ, अपने सेवक की लाज रखो॥ ४॥ १॥

सूही महला ५ ॥ हरि चरण कमल की टेक सतिगुरि दिती तुसि कै बलि राम जीउ ॥ हरि अंम्रिति भरे भंडार सभु किछु है घरि तिस कै बलि राम जीउ ॥ बाबुलु मेरा वड समरथा करण कारण प्रभु हारा ॥ जिसु सिमरत दुखु कोई न लागै भउजलु पारि उतारा ॥ आदि जुगादि भगतन का राखा उसतति करि करि जीवा ॥ नानक नामु महा रसु मीठा अनदिनु मनि तनि पीवा ॥ १ ॥ हरि आपे लए मिलाइ किउ वेछोड़ा थीवई बलि राम जीउ ॥ जिस नो तेरी टेक सो सदा सद जीवई बलि राम जीउ ॥ तेरी टेक तुझै ते पाई साचे सिरजणहारा ॥ जिस ते खाली कोई नाही ऐसा प्रभू हमारा ॥ संत जना मिलि मंगलु गाइआ दिनु रैनि आस तुम्हारी ॥ सफलु दरसु भेटिआ गुरु पूरा नानक सद बलिहारी ॥ २ ॥

संम्हलिआ सचु थानु मानु महतु सचु पाइआ बलि राम जीउ ॥ सतिगुरु मिलिआ दइआलु गुण अबिनासी गाइआ बलि राम जीउ ॥ गुण गोविंद गाउ नित नित प्राण प्रीतम सुआमीआ ॥ सुभ दिवस आए गहि कंठि लाए मिले अंतरजामीआ ॥ सतु संतोखु वजहि वाजे अनहदा झुणकारे ॥ सुणि भै बिनासे सगल नानक प्रभ पुरख करणैहारे ॥ ३ ॥ उपजिआ ततु गिआनु साहुरै पेईऐ इकु हरि बलि राम जीउ ॥ ब्रहमै ब्रहमु मिलिआ कोइ न साकै भिंन करि बलि राम जीउ ॥ बिसमु पेखै बिसमु सुणीऐ बिसमादु नदरी आइआ ॥ जलि थलि महीअलि पूरन सुआमी घटि घटि रहिआ समाइआ ॥ जिस ते उपजिआ तिसु माहि समाइआ कीमति कहणु न जाए ॥ जिस के चलत न जाही लखणे नानक तिसहि धिआए ॥ ४ ॥ २ ॥

सतगुरु ने प्रसन्न होकर मुझे हरि चरणों का सहारा दिया है। हरि के भण्डार नाम-अमृत से भरे हुए हैं और उसके घर में सबकुछ उपलब्ध है। मेरा पिता-प्रभु सर्वशक्तिमान है, सब का रचयिता है। जिसका नाम-सिमरन करने से कोई दुख नहीं लगता और भवसागर से पार उतारा हो जाता है। सृष्टि के प्रारंभ एवं युगों-युगांतरों से ही वह अपने भक्तों का रखवाला है, मैं उसकी स्तुति करके ही जीता हूँ। हे नानक ! उसका नाम महारस मीठा है और तन एवं मन द्वारा दिन-रात उसका पान करता रहता हूँ॥ १॥ जिस व्यक्ति को परमात्मा अपने साथ मिला लेता है, उसका उससे बिछोड़ा कैसे होगा ? हे प्रभु ! जिसे तेरा सहारा है, वह सदैव जीता है। हे सच्चे सृजनहार ! मैंने तेरा सहारा तुझसे ही पाया है। हमारा प्रभु ऐसा है जिसके द्वार से कोई भी खाली हाथ नहीं जाता। हे स्वामी ! संतजनों ने मिलकर तेरा यशोगान किया है, उन्हें दिन-रात तेरे मिलन की आशा रहती है। हे नानक ! मुझे पूर्ण गुरु मिल गया है, जिसके दर्शन फलदायक हैं, मैं उस पर सदैव बलिहारी हूँ॥ २॥ परमात्मा के सच्चे स्थान का ध्यान करने से मुझे मान-सम्मान एवं सत्य की प्राप्ति हुई है। जब मुझे दयालु सतगुरु मिल गया तो मैंने अविनाशी परमात्मा का ही गुणानुवाद किया। मैं नित्य गोविंद का गुणगान करता रहता हूँ, जो मुझे प्राणों से भी प्रिय है और मेरा स्वामी है। अब मेरे शुभ दिवस आ गए हैं, क्योंकि अन्तर्यामी प्रभु मुझे मिल गया है, उसने पकड़ कर मुझे गले से लगा लिया है। मन में सत्य एवं संतोष की मधुर ध्वनियाँ गूंज रही हैं और अनहद शब्द की झंकार हो रही है। हे नानक ! सर्वकर्ता परमपुरुष प्रभु का यश सुनकर मेरे सारे भय नाश हो गए हैं॥ ३॥ जब मेरे मन में परम तत्व ज्ञान पैदा हो गया तो पता लगा कि ससुराल एवं पीहर अर्थात् लोक-परलोक दोनों में एक परमात्मा ही मौजूद है। आत्मा परमात्मा में मिल गई है और अब कोई उसे उससे भिन्न नहीं कर सकता। अब मुझे अद्भुत रूप ब्रह्म ही दिखाई देता, सुनाई देता एवं अद्भुत रूप ब्रह्म ही नजर आया है। जगत् का स्वामी प्रभु जल, धरती एवं आकाश में भरपूर है और प्रत्येक हृदय में समाया हुआ है। यह दुनिया जिससे उत्पन्न होती है, अंततः उस में ही समा जाती है और उसका मूल्यांकन नहीं किया जा सकता। हे नानक ! जिस परमेश्वर के कौतुक जाने नहीं जा सकते, उसका भजन करो॥ ४॥ २॥

रागु सूही छंत महला ५ घरु २ ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

गोबिंद गुण गावण लागे ॥ हरि रंगि अनदिनु जागे ॥ हरि रंगि जागे पाप भागे मिले संत पिआरिआ ॥ गुर चरण लागे भरम भागे काज सगल सवारिआ ॥ सुणि स्रवण बाणी सहजि जाणी हरि नामु जपि वडभागै ॥ बिनवंति नानक सरणि सुआमी जीउ पिंडु प्रभ आगै ॥ १ ॥ अनहत सबदु सुहावा ॥ सचु मंगलु हरि जसु गावा ॥ गुण गाइ हरि हरि दूख नासे रहसु उपजै मनि घणा ॥ मनु तंनु निरमलु देखि

दरसनु नागु प्रभ का मुखि भणा ॥ होइ रेण साधू प्रभ अराधू आपणे प्रभ भावा ॥ बिनवंति नानक दइआ धारहु सदा हरि गुण गावा ॥ २ ॥ गुर मिलि सागरु तरिआ ॥ हरि चरण जपत निसतरिआ ॥ हरि चरण धिआए सभि फल पाए मिटे आवण जाणा ॥ भाइ भगति सुभाइ हरि जपि आपणे प्रभ भावा ॥ जपि एकु अलख अपार पूरन तिसु बिना नही कोई ॥ बिनवंति नानक गुरि भरमु खोइआ जत देखा तत सोई ॥ ३ ॥ पतित पावन हरि नामा ॥ पूरन संत जना के कामा ॥ गुरु संतु पाइआ प्रभु धिआइआ सगल इछा पुंनीआ ॥ हउ ताप बिनसे सदा सरसे प्रभ मिले चिरी विछुंनिआ ॥ मनि साति आई वजी वधाई मनहु कदे न वीसरै ॥ बिनवंति नानक सतिगुरि द्रिड़ाइआ सदा भजु जगदीसरै ॥ ४ ॥ १ ॥ ३ ॥

हे भाई ! मैं गोविंद का गुणगान करने लग गया हूँ। मैं हर वक्त हरि के रंग में जागता रहता हूँ। हरि के रंग में जागने से सारे पाप भाग गए हैं और मुझे प्यारा संत मिल गया है। गुरु के चरणों में लगने से मेरे सारे भ्रम दूर हो गए हैं और उसने सारे कार्य संवार दिए हैं। सौभाग्य से हरि नाम जपकर और अपने कानों से वाणी सुनकर सहजावस्था को जान लिया है। नानक की प्रार्थना है कि हे स्वामी ! मैं तेरी शरण में आया हूँ, मेरे प्राण एवं शरीर तुझे अर्पण हैं॥ १॥ हे भाई ! जब मैंने सच्चा मंगल हरि यश गाया तो मन में सुरीला अनहद शब्द गूंजने लग गया। हरि का गुणगान करने से मेरे सारे दुख नाश हो गए हैं और मन में बड़ा आनंद उत्पन्न हुआ है। प्रभु के दर्शन करके मेरा मन एवं तन निर्मल हो गया है और अब मैं अपने मुख से प्रभु का नाम ही उच्चरित करता रहता हूँ। मैं साधुओं की चरण-धूलि बनकर प्रभु की आराधना करता रहता हूँ और इस प्रकार अपने प्रभु को अच्छा लगने लग गया हूँ। नानक प्रार्थना करता है कि हे हरि ! मुझ पर दया करो ताकि मैं सदैव तेरा गुणगान करता रहूँ॥ २॥ हे भाई ! गुरु को मिलकर भवसागर से पार हुआ जा सकता है। हरि-चरणों का जाप करने से निस्तारा हो सकता है। हरि-चरणों का ध्यान करने से सारे फल प्राप्त हो जाते हैं और जन्म-मरण का चक्र भी मिट जाता है। प्रेम-भक्ति द्वारा सहज-स्वभाव हरि को जप कर अपने प्रभु को अच्छा लगता हूँ। हे भाई ! तू भी उस अदृष्ट, अपरम्पार एवं पूर्ण एक परमात्मा का जाप कर, क्योंकि उसके बिना अन्य कोई बड़ा नहीं है। नानक विनती करता है कि गुरु ने मेरा भ्रम दूर कर दिया है। अब मैं जिधर भी देखता हूँ, उधर ही परमात्मा दिखाई देता है॥ ३॥ हे भाई ! हरि का नाम पतितों को पावन करने वाला है। यह संतजनों के सब कार्य पूरे कर देता है। जब मैंने संत रूपी गुरु को पा लिया तो प्रभु का ही ध्यान-मनन किया, जिससे मेरी सारी मनोकामनाएँ पूरी हो गई हैं। मेरा अभिमान का ताप नष्ट हो गया है, अब मैं सदैव प्रसन्न रहता हूँ और मुझ चिरकाल से बिछुड़े हुए को प्रभु मिल गया है। मेरे मन में बड़ी शान्ति प्राप्त हुई है और शुभकामनाएँ मिल रही हैं। अब मेरे मन से प्रभु कभी भी विस्मृत नहीं होता। नानक विनती करता है कि सतिगुरु ने मेरे हृदय में यह बात बसा दी है कि सदैव परमेश्वर का भजन करते रहो॥ ४॥ १॥ ३॥

रागु सूही छंत महला ५ घरु ३ ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

तू ठाकुरो बैरागरो मै जेही घण चेरी राम ॥ तूं सागरो रतनागरो हउ सार न जाणा तेरी राम ॥ सार न जाणा तू वड दाणा करि मिहरंमति सांई ॥ किरपा कीजै सा मति दीजै आठ पहर तुधु धिआई ॥ गरबु न कीजै रेण होवीजै ता गति जीअरे तेरी ॥ सभ ऊपरि नानक का ठाकुरु मै जेही घण चेरी राम ॥ १ ॥ तुम्ह गउहर अति गहिर गंभीरा तुम पिर हम बहुरीआ राम ॥ तुम वडे वडे वड ऊचे हउ इतनीक लहुरीआ राम ॥ हउ किछु नाही एको तूहै आपे आपि सुजाना ॥ अंम्रित द्रिसटि निमख प्रभ जीवा सरब

रंग रस माना ॥ चरणह सरनी दासह दासी मनि मउलै तनु हरीआ ॥ नानक ठाकुरु सरब समाणा आपन भावन करीआ ॥ २ ॥ तुझु ऊपरि मेरा है माणा तूहै मेरा ताणा राम ॥ सुरति मति चतुराई तेरी तू जाणाइहि जाणा राम ॥ सोई जाणै सोई पछाणै जा कउ नदरि सिरंदे ॥ मनमुखि भूली बहुती राही फाथी माइआ फंदे ॥ ठाकुर भाणी सा गुणवंती तिन ही सभ रंग माणा ॥ नानक की धर तूहै ठाकुर तू नानक का माणा ॥ ३ ॥ हउ वारी वंञा घोली वंञा तू परबतु मेरा ओल्हा राम ॥ हउ बलि जाई लख लख लख बरीआ जिनि भ्रमु परदा खोल्हा राम ॥ मिटे अंधारे तजे बिकारे ठाकुर सिउ मनु माना ॥ प्रभ जी भाणी भई निकाणी सफल जनमु परवाना ॥ भई अमोली भारा तोली मुकति जुगति दरु खोल्हा ॥ कहु नानक हउ निरभउ होई सो प्रभु मेरा ओल्हा ॥ ४ ॥ १ ॥ ४ ॥

हे प्रभु ! तू सबका मालिक है और वैराग्यवान है। मुझ जैसी तेरी अनेक दासियाँ हैं। तू रत्नाकर सागर है, पर मैं तेरी कद्र नहीं जानती। तू बड़ा बुद्धिमान है, मगर मैं तेरे गुणों को नहीं जानती। हे स्वामी ! मुझ पर मेहर करो। अपनी कृपा-दृष्टि करो और मुझे ऐसी बुद्धि दीजिए कि मैं आठों प्रहर तेरा ही ध्यान करती रहूँ। हे जीवात्मा ! घमण्ड मत कर, सब की चरण-धूलि बन जा, तो तेरी गति हो जाएगी। हे भाई ! नानक का मालिक सबसे महान है और मुझ जैसी उसकी अनेक दासियाँ हैं॥ १॥ हे ईश्वर ! तू गुणों का गहरा सागर एवं गहन-गंभीर है। तू मेरा पति है और मैं तेरी पत्नी हूँ। तू बहुत बड़ा है, सबसे ऊँचा है पर मैं तो बहुत ही छोटी-सी हूँ। मैं तो कुछ भी नहीं हूँ, एक तू ही है जो स्वयं ही बड़ा चतुर है। हे प्रभु ! तेरी निमेष मात्र अमृत-दृष्टि द्वारा मुझे जीवन मिलता है और सारे रंग-रस हासिल होते रहते हैं। मैं तेरे दासों की दासी हूँ और तेरे ही चरणों की शरण ली है, जिससे मेरा मन प्रसन्न हो गया है और सारा शरीर फूलों की तरह खिल गया है। हे नानक ! ईश्वर सब जीवों में समाया हुआ है, जो उसे उपयुक्त लगता है, वही करता है॥ २॥ हे राम ! मुझे तुझ पर बड़ा गर्व है, तू ही मेरा बल है। मुझे सुरति, बुद्धि एवं चतुराई तेरी ही प्रदान की हुई है। यदि तू मुझे समझा दे तो ही मैं तुझे समझूँ। जिस पर परमात्मा की कृपा-दृष्टि होती है, वही उसे जानता है और वही उसे पहचानता है। मनमुखी जीव-स्त्री बहुत सारे रास्तों पर भटकती रहती है और माया के जाल में फँसी रहती है। जो जीव-स्त्री प्रभु को अच्छी लगती है, वही गुणवान है और उसने जीवन की सब खुशियाँ हासिल की हैं। हे ठाकुर ! तू ही नानक का सहारा है और तू ही नानक का सम्मान है॥ ३॥ हे राम ! मैं तुझ पर कुर्बान जाती हूँ, तू मेरी पर्वत रूपी ओट है। मैं तुझ पर लाख-लाख बार बलिहारी जाती हूँ, जिसने मेरा भ्रम का पर्दा खोल दिया है। मेरा अज्ञानता रूपी अंधेरा मिट गया है और मैंने सारे विकार त्याग दिए हैं। अब मेरा मन ठाकुर जी के साथ संतुष्ट हो गया है। मैं प्रभु जी को भा गई हूँ और बेपरवाह हो गई हूँ। मेरा जन्म सफल हो गया है और प्रभु को स्वीकार हो गया है। मैं अमूल्य एवं अतुलनीय हो गई हूँ। मेरे लिए मुक्ति का द्वार खुल गया है। हे नानक ! मैं निडर हो गई हूँ क्योंकि वह प्रभु ही मेरा सहारा है॥ ४॥ १॥ ४॥

सूही महला ५ ॥ साजनु पुरखु सतिगुरु मेरा पूरा तिसु बिनु अवरु न जाणा राम ॥ मात पिता भाई सुत बंधप जीअ प्राण मनि भाणा राम ॥ जीउ पिंडु सभु तिस का दीआ सरब गुणा भरपूरे ॥ अंतरजामी सो प्रभु मेरा सरब रहिआ भरपूरे ॥ ता की सरण सरब सुख पाए होए सरब कलिआणा ॥ सदा सदा प्रभ कउ बलिहारै नानक सद कुरबाणा ॥ १ ॥ ऐसा गुरु वडभागी पाईऐ जितु मिलिऐ प्रभु जापै राम ॥ जनम जनम के किलविख उतरहि हरि संत धूड़ी नित नापै राम ॥ हरि धूड़ी नाईऐ प्रभू धिआईऐ बाहुड़ि जोनि न आईऐ ॥ गुर चरणी लागे भ्रम भउ भागे मनि चिंदिआ फलु पाईऐ ॥ हरि गुण नित गाए नामु

धिआए फिरि सोगु नाही संतापै ॥ नानक सो प्रभु जीअ का दाता पूरा जिसु परतापै ॥ २ ॥ हरि हरे हरि गुण निधे हरि संतन कै वसि आए राम ॥ संत चरण गुर सेवा लागे तिनी परम पद पाए राम ॥ परम पदु पाइआ आपु मिटाइआ हरि पूरन किरपा धारी ॥ सफल जनमु होआ भउ भागा हरि भेटिआ एकु मुरारी ॥ जिस का सा तिन ही मेलि लीआ जोती जोति समाइआ ॥ नानक नामु निरंजन जपीऐ मिलि सतिगुर सुखु पाइआ ॥ ३ ॥ गाउ मंगलो नित हरि जनहु पुंनी इछ सबाई राम ॥ रंगि रते अपुने सुआमी सेती मरै न आवै जाई राम ॥ अबिनासी पाइआ नामु धिआइआ सगल मनोरथ पाए ॥ सांति सहज आनंद घनेरे गुर चरणी मनु लाए ॥ पूरि रहिआ घटि घटि अबिनासी थान थनंतरि साई ॥ कहु नानक कारज सगले पूरे गुर चरणी मनु लाई ॥ ४ ॥ २ ॥ ५ ॥

परमपुरुष परमेश्वर ही मेरा प्यारा सज्जन है, उस परिपूर्ण के अतिरिक्त मैं किसी को नहीं जानता। सच तो यही है कि वही मेरा माता-पिता, भाई, पुत्र, संबंधी, आत्मा एवं प्राण है और वही मेरे मन को भाता है । यह जीवन एवं शरीर सब उसका दिया हुआ है, वह सर्वगुण भरपूर है। मन की भावनाओं को जानने वाला मेरा प्रभु सब में व्याप्त है। उसकी शरण में आकर मैंने सारे सुख हासिल कर लिए हैं और सर्वकल्याण हुआ है। हे नानक ! मैं ऐसे प्रभु पर सदैव ही बलिहारी जाता हूँ॥ १॥ ऐसा गुरु बड़े भाग्य से ही मिलता है, जिसे मिलने से प्रभु का बोध होता है। जो नित्य संतों की चरण-धूलि में स्नान करता है, उसके जन्म-जन्मांतर के सब पाप दूर हो जाते हैं। हरि की चरण-धूलि में स्नान करने से, प्रभु का ध्यान-मनन करने से, दोबारा योनियों में नहीं आना पड़ता। जो व्यक्ति गुरु के चरणों में लग गए हैं, उनके भ्रम एवं भय भाग गए हैं और उन्हें मनोवांछित फल की प्राप्ति हो गई है। जो नित्य हरि के गुण गाता है, नाम का मनन करता है, उसे कोई चिंता एवं दुख स्पर्श नहीं करता। हे नानक ! जिसका सारी दुनिया में पूर्ण प्रताप है, वह प्रभु ही जीवन देने वाला है॥ २॥ श्री हरि गुणों का भण्डार है और वह अपने संतों के ही वश में आता है। जो व्यक्ति संतों के चरणों में लगे हैं, गुरु सेवा में प्रवृत्त हुए हैं, उन्हें ही मुक्ति मिली है। जिस पर श्री हरि ने पूर्ण कृपा की है, उसने अपने अहंत्व को मिटाकर परमपद पा लिया है। उसे प्रभु मिल गया है, जिससे उसका जन्म सफल हो गया है और सारा भय भाग गया है। जिस ईश्वर का वह अंश था, उसने उसे अपने साथ मिला लिया है। उसकी ज्योति परम ज्योति में विलीन हो गई है। हे नानक ! जिसने पावनस्वरूप नाम स्मरण किया है, उसने सतिगुरु से मिलकर सुख ही पाया है॥ ३॥ हे भक्तजनो ! नित्य भगवान् का यशगान करो, इससे तुम्हारी सब कामनाएँ पूरी हो जाएँगी। जो अपने स्वामी के रंग में मग्न रहते हैं, वे जन्म-मरण से मुक्त हो जाते हैं। जिसने नाम का चिंतन किया है, उसे ही अविनाशी प्रभु मिला है और उसके सारे मनोरथ पूरे हो गए हैं। गुरु के चरणों में मन लगाने से बड़ी शान्ति, सहजावस्था एवं आनंद मिलता है। अनश्वर परमात्मा प्रत्येक हृदय में विद्यमान है और देश-देशांतर हर जगह वही बसा हुआ है। हे नानक ! गुरु के चरणों में मन लगाने से सब कार्य पूरे हो जाते हैं॥ ४॥ २॥ ५॥

सूही महला ५ ॥ करि किरपा मेरे प्रीतम सुआमी नेत्र देखहि दरसु तेरा राम ॥ लाख जिहवा देहु मेरे पिआरे मुखु हरि आराधे मेरा राम ॥ हरि आराधे जम पंथु साधे दूखु न विआपै कोई ॥ जलि थलि महीअलि पूरन सुआमी जत देखा तत सोई ॥ भरम मोह बिकार नाठे प्रभु नेर हू ते नेरा ॥ नानक कउ प्रभ किरपा कीजै नेत्र देखहि दरसु तेरा ॥ १ ॥ कोटि करन दीजहि प्रभ प्रीतम हरि गुण सुणीअहि अबिनासी राम ॥ सुणि सुणि इहु मनु निरमलु होवै कटीऐ काल की फासी राम ॥ कटीऐ जम फासी सिमरि अबिनासी सगल मंगल सुगिआना ॥ हरि हरि जपु जपीऐ दिनु राती लागै सहजि धिआना ॥

कलमल दुख जारे प्रभू चितारे मन की दुरमति नासी ॥ कहु नानक प्रभ किरपा कीजै हरि गुण सुणीअहि अविनासी ॥ २ ॥ करोड़ि हसत तेरी टहल कमावहि चरण चलहि प्रभ मारगि राम ॥ भव सागर नाव हरि सेवा जो चड़ै तिसु तारगि राम ॥ भवजलु तरिआ हरि हरि सिमरिआ सगल मनोरथ पूरे ॥ महा बिकार गए सुख उपजे बाजे अनहद तूरे ॥ मन बांछत फल पाए सगले कुदरति कीम अपारगि ॥ कहु नानक प्रभ किरपा कीजै मनु सदा चलै तेरै मारगि ॥ ३ ॥ एहो वरु एहा वडिआई इहु धनु होइ वडभागा राम ॥ एहो रंगु एहो रस भोगा हरि चरणी मनु लागा राम ॥ मनु लागा चरणे प्रभ की सरणे करण कारण गोपाला ॥ सभु किछु तेरा तू प्रभु मेरा मेरे ठाकुर दीन दइआला ॥ मोहि निरगुण प्रीतम सुख सागर संतसंगि मनु जागा ॥ कहु नानक प्रभि किरपा कीन्ही चरण कमल मनु लागा ॥ ४ ॥ ३ ॥ ६ ॥

हे मेरे प्रियतम स्वामी ! ऐसी कृपा करो ताकि मेरे नेत्र तेरे दर्शन कर सकें। हे प्यारे प्रभु ! मुझे लाखों जिह्वाएँ दीजिए जिन से मेरा मुख तेरे नाम की आराधना ही करता रहे। प्रभु की आराधना करके यम-मार्ग पर विजय पा लूँ और कोई भी दुख प्रभावित न कर सके। मेरा स्वामी समुद्र, पृथ्वी एवं गगन में भी विद्यमान है, मैं जहाँ भी देखता हूँ, उधर वही नजर आता है। मेरे सारे भ्रम, मोह एवं विकार दूर हो गए हैं और प्रभु मुझे निकट से भी निकट दिखाई देता है। हे प्रभु ! नानक पर ऐसी कृपा करो कि वह अपनी आँखों से तेरे दर्शन कर ले॥ १॥ हे प्रियतम प्रभु ! मुझे करोड़ों ही कान दीजिए, जिनसे मैं तेरे गुण सुनता रहूँ। तेरा गुणगान सुनने से यह मन निर्मल हो जाता है और मृत्यु की फाँसी भी कट जाती है। अनश्वर हरि का सिमरन करने से यम की फाँसी कट जाती है और सारी खुशियाँ एवं ज्ञान प्राप्त हो जाता है। दिन-रात हरि-नाम का जाप जपने से सहज ही ध्यान लग जाता है। प्रभु का चिंतन करके सारे दुख एवं पाप जला दिए हैं और मन की दुर्मति नाश हो गई है। नानक प्रार्थना करता है कि हे प्रभु ! मुझ पर कृपा करो ताकि तेरे गुण सुन सकूँ॥ २॥ हे प्रभु ! मेरे करोड़ों हाथ हो जाएँ और वे तेरी ही सेवा करते रहें। मेरे करोड़ों पैर हो जाएँ तो वे तेरे ही मार्ग पर चलें। भवसागर में से पार होने के लिए हरि की उपासना एक नाव है, जो इस नाव पर चढ़ता है, वह पार हो जाता है। जिसने भी हरि नाम का सिमरन किया है, वह भवसागर में से पार हो गया है तथा उसके सारे मनोरथ पूरे हो गए हैं। उसके मन में से काम, क्रोध, मोह, लोभ एवं अहंकार रूपी महा विकार दूर हो गए हैं, सुख उपलब्ध हो गया है और अनहद बाजे बजते हैं। उसने मनोवांछित फल पा लिया है और उसकी कुदरत की कीमत अपरंपार है। नानक प्रार्थना करता है कि हे प्रभु ! मुझ पर कृपा करो ताकि मेरा मन सदैव ही तेरे मार्ग पर चले॥ ३॥ हे ईश्वर ! मेरे लिए तो यही वरदान, यही बड़ाई, यही धन, रस, रंग, भोग इत्यादि है कि मेरा मन तेरे चरणों में लीन रहे। मेरा मन उसके चरणों में लग गया है और यही प्रभु की शरण है। एक परमात्मा ही सर्वकर्ता है। हे दीनदयाल प्रभु ! यह सबकुछ तेरा ही दिया हुआ है और तू मेरा रखवाला है। हे मेरे प्रियतम ! तू सुख का सागर है, पर मैं गुणविहीन हूँ। अज्ञानता की निद्रा में सोया हुआ मेरा मन संतों की संगति करने से चेतन हो गया है। हे नानक ! प्रभु ने मुझ पर बड़ी कृपा की है और मेरा मन उसके चरणों से लग गया है॥ ४॥ ३॥ ६॥

सूही महला ५ ॥ हरि जपे हरि मंदरु साजिआ संत भगत गुण गावहि राम ॥ सिमरि सिमरि सुआमी प्रभु अपना सगले पाप तजावहि राम ॥ हरि गुण गाइ परम पदु पाइआ प्रभ की ऊतम बाणी ॥ सहज कथा प्रभ की अति मीठी कथी अकथ कहाणी ॥ भला संजोगु मूरतु पलु साचा अबिचल नीव रखाई ॥ जन नानक प्रभ भए दइआला सरब कला बणि आई ॥ १ ॥ आनंदा वजहि

नित वाजे पारब्रहमु मनि वूठा राम ॥ गुरमुखे सचु करणी सारी बिनसे भ्रम भै झूठा राम ॥ अनहद बाणी गुरमुखि वखाणी जसु सुणि सुणि मनु तनु हरिआ ॥ सरब सुखा तिस ही बणि आए जो प्रभि अपना करिआ ॥ घर महि नव निधि भरे भंडारा राम नामि रंगु लागा ॥ नानक जन प्रभु कदे न विसरै पूरन जा के भागा ॥ २ ॥ छाइआ प्रभि छत्रपति कीन्ही सगली तपति बिनासी राम ॥ दूख पाप का डेरा ढाठा कारजु आइआ रासी राम ॥ हरि प्रभि फुरमाइआ मिटी बलाइआ साचु धरमु पुंनु फलिआ ॥ सो प्रभु अपुना सदा धिआईऐ सोवत बैसत खलिआ ॥ गुण निधान सुख सागर सुआमी जलि थलि महीअलि सोई ॥ जन नानक प्रभ की सरणाई तिसु बिनु अवरु न कोई ॥ ३ ॥ मेरा घरु बनिआ बनु तालु बनिआ प्रभ परसे हरि राइआ राम ॥ मेरा मनु सोहिआ मीत साजन सरसे गुण मंगल हरि गाइआ राम ॥ गुण गाइ प्रभू धिआइ साचा सगल इछा पाईआ ॥ गुर चरण लागे सदा जागे मनि वजीआ वाधाईआ ॥ करी नदरि सुआमी सुखह गामी हलतु पलतु सवारिआ ॥ बिनवंति नानक नित नामु जपीऐ जीउ पिंडु जिनि धारिआ ॥ ४ ॥ ४ ॥ ७ ॥

{उल्लेखनीय है कि जब श्री हरिमन्दिर साहिब बनाया गया था तो श्री गुरु अर्जुन देव जी ने इस शब्द का उच्चारण किया था। वर्णनीय है कि हरिमन्दिर की आधारशिला सूफी संत साँई मियाँ मीर जी ने ३ अक्तूबर, सन् १५८८ ई. को रखी थी। इस हरिमन्दिर को स्वर्ण मन्दिर भी कहा जाता है।}

हे भाई ! यह हरिमन्दिर हरि का नाम जपने के लिए बनाया है। इसमें संत एवं भक्तजन बैठकर हरि का गुणानुवाद करते हैं। वे स्वामी प्रभु का सिमरन करके अपने सर्व पापों को दूर करते हैं। प्रभु की उत्तम वाणी द्वारा हरि का गुणगान करके उन्होंने परमपद (मोक्ष) पा लिया है। प्रभु की सहज कथा मन को शांति देने वाली है और बड़ी मीठी है। अतः मैंने यह अकथनीय कहानी कथन की है। वह संयोग बड़ा शुभ था, वह मुहूर्त एवं पल भी सच्चा था, जब इस हरिमन्दिर की अटल नींव रखवाई थी। हे नानक ! जब प्रभु दयालु हो गया तो सब कार्य सम्पूर्ण हो गए॥ १॥ हे भाई ! जिसके मन में परमात्मा आकर बस गया है, उसके मन में नित्य आनंददायक बाजे बजते रहते हैं। जिसने गुरु के माध्यम से सत्कर्म किया है, उसका भ्रम एवं झूठा भय नाश हो गए हैं। जब गुरु ने अनहद वाणी का बखान किया तो उसे सुन-सुनकर मन एवं तन आनंदित हो गया। यह सर्व सुख उसे ही हासिल हुए हैं, जिसे प्रभु ने अपना बना लिया है। जिसे राम नाम का रंग लग गया है, उसके घर नौ निधियों के भण्डार भरे रहते हैं। हे नानक ! जिस व्यक्ति के पूर्ण भाग्य हैं, उसे प्रभु कभी नहीं भूलता॥ २॥ हे भाई ! छत्रपति प्रभु ने मुझ पर कृपा रूपी छाया कर दी है, जिससे तृष्णा रूपी सारा ताप नाश हो गया है। मेरे दुखों एवं पापों का डेरा ध्वस्त हो गया है और मेरा कार्य सँवर गया है। जब प्रभु ने हुक्म किया तो मेरी सब बलाएँ मिट गईं और मुझे सत्य, धर्म एवं पुण्य फल मिल गया। सोते, बैठते, खड़े होते हर वक्त हमें प्रभु का ध्यान करना चाहिए। वह जगत् का स्वामी गुणों का भण्डार एवं सुखों का सागर है, जो जल, धरती, गगन सर्वत्र मौजूद है। हे नानक ! मैंने तो प्रभु की शरण ली है, उसके अतिरिक्त मेरा कोई आधार नहीं है॥ ३॥ हे भाई ! प्रभु चरणों की सेवा करने से मेरा हृदय रूपी घर सुन्दर सरोवर एवं उपवन बन गया है। जब मैंने हरि के गुणों का मंगलगान किया तो मन मुग्ध हो गया और मेरे साजन-मित्र सब प्रसन्न हो गए। सच्चे प्रभु का गुणगान एवं ध्यान करने से मेरी सब इच्छाएँ पूरी हो गई हैं। गुरु के चरणों में लगकर सदैव के लिए सचेत हो गया हूँ और मन में खुशियाँ पैदा हो गई हैं। सुख देने वाले स्वामी प्रभु ने कृपा-दृष्टि करके मेरा लोक-परलोक संवार दिया है। नानक विनती करता है कि जिस परमात्मा ने हमारे जीवन एवं शरीर को सहारा दिया हुआ है, नित्य उसका नाम जपते रहना चाहिए॥ ४॥ ४॥ ७॥

सूही महला ५ ॥ भै सागरो भै सागरु तरिआ हरि हरि नामु धिआए राम ॥ बोहिथड़ा हरि चरण अराधे मिलि सतिगुर पारि लघाए राम ॥ गुर सबदी तरीऐ बहुड़ि न मरीऐ चूकै आवण जाणा ॥ जो किछु करै सोई भल मानउ ता मनु सहजि समाणा ॥ दूख न भूख न रोगु न बिआपै सुख सागर सरणी पाए ॥ हरि सिमरि सिमरि नानक रंगि राता मन की चिंत मिटाए ॥ १ ॥ संत जना हरि मंत्रु द्रिड़ाइआ हरि साजन वसगति कीने राम ॥ आपनड़ा मनु आगै धरिआ सरबसु ठाकुरि दीने राम ॥ करि अपुनी दासी मिटी उदासी हरि मंदरि थिति पाई ॥ अनद बिनोद सिमरहु प्रभु साचा विछुड़ि कबहू न जाई ॥ सा वडभागणि सदा सोहागणि राम नाम गुण चीन्हे ॥ कहु नानक रवहि रंगि राते प्रेम महा रसि भीने ॥ २ ॥ अनद बिनोद भए नित सखीए मंगल सदा हमारै राम ॥ आपनड़ै प्रभि आपि सीगारी सोभावंती नारे राम ॥ सहज सुभाइ भए किरपाला गुण अवगण न बीचारिआ ॥ कंठि लगाइ लीए जन अपुने राम नाम उरि धारिआ ॥ मान मोह मद सगल बिआपी करि किरपा आपि निवारे ॥ कहु नानक भै सागरु तरिआ पूरन काज हमारे ॥ ३ ॥ गुण गोपाल गावहु नित सखीहो सगल मनोरथ पाए राम ॥ सफल जनमु होआ मिलि साधू एकंकारु धिआए राम ॥ जपि एक प्रभू अनेक रविआ सरब मंडलि छाइआ ॥ ब्रहमो पसारा ब्रहमु पसरिआ सभु ब्रहमु द्रिसटी आइआ ॥ जलि थलि महीअलि पूरि पूरन तिसु बिना नही जाए ॥ पेखि दरसनु नानक बिगसे आपि लए मिलाए ॥ ४ ॥ ५ ॥ ८ ॥

हरि-नाम का ध्यान-मनन करने से भयानक संसार-सागर से पार हुआ जा सकता है। जो गुरु को मिलकर जहाज रूपी हरि-चरणों की आराधना करता है, वह भवसागर में से पार हो जाता है। जो व्यक्ति शब्द-गुरु द्वारा भवसागर में से पार हो जाता है, उसका जन्म-मरण का चक्र ही छूट जाता है। जो कुछ परमात्मा करता है, उसे सहर्ष भला मानना चाहिए, इससे मन सहज ही उसमें समा जाता है। सुखों के सागर परमेश्वर की शरण में आने से कोई दुख, भूख एवं रोग स्पर्श नहीं करता। हे नानक ! जो हरि का सिमरन करके उसके रंग में लीन हो जाता है, वह मन की सब चिंताएँ मिटा लेता है॥ १॥ संतजनों ने ह्रदय में हरि-मंत्र बसा दिया है, इस तरह मैंने अपने साजन हरि को अपने वश में कर लिया है। मैंने अपना मन उसके आगे अर्पण कर दिया है और ठाकुर जी ने मुझे सबकुछ दे दिया है। जब उसने मुझे अपनी दासी बना लिया तो मेरी उदासी मिट गई और हरिमन्दिर में स्थिर निवास मिल गया। सच्चे प्रभु का सिमरन करके आनंद एवं खुशियाँ हासिल करो, कभी भी वियोग नहीं होता। जो जीव-स्त्री राम नाम के गुणों को जानती है, वह भाग्यवान् एवं सदैव सुहागिन है। हे नानक ! जो प्रभु के रंग में लीन होकर उसे स्मरण करते हैं, वे उसके प्रेम के महारस में ही भीगे रहते हैं॥ २॥ हे सखी ! मेरे ह्रदय घर में नित्य आनंद-विनोद बना रहता है और सदैव प्रभु का स्तुतिगान किया जाता है। मेरे प्रभु ने स्वयं ही मेरा श्रृंगार किया है और अब मैं शोभावान् नारी बन गई हूँ। वह सहज स्वभाव मुझ पर कृपालु हो गया है और उसने मेरे गुण-अवगुण का ख्याल नहीं किया। हे सखी ! जिन्होंने राम-नाम अपने ह्रदय में बसा लिया है, प्रभु ने उन्हें गले से लगा लिया है। सारी दुनिया को अभिमान एवं मोह-माया का नशा लगा हुआ है लेकिन प्रभु ने कृपा करके इन्हें मेरे मन में से दूर कर दिया है। हे नानक ! मैं भवसागर से पार हो गई हूँ और मेरे सभी कार्य सम्पूर्ण हो गए हैं॥ ३॥ हे मेरी सखियो ! नित्य परमात्मा का गुणानुवाद करो, इस प्रकार सारे मनोरथ प्राप्त कर लो। साधु को मिलकर ओंकार का ध्यान करने से मेरा जन्म सफल हो गया है। एक प्रभु को ही जपो जो अनेक जीवों में बसा हुआ है और

सर्व-मण्डलों में छाया हुआ है। ब्रह्म विश्वव्यापक है, यह विश्व उस ब्रह्म का ही प्रसार है, जिधर भी दृष्टि जाती है, वही दृष्टिगत हुआ है। वह सागर, पृथ्वी एवं आकाश में मौजूद है और कोई भी स्थान उससे खाली नहीं है। हे नानक! उसके दर्शन करके मैं प्रसन्न हो गया हूँ और वह स्वयं ही जीवों को अपने साथ मिला लेता है॥ ४॥ ५॥ ८॥

सूही महला ५ ॥ अबिचल नगरु गोबिंद गुरू का नामु जपत सुखु पाइआ राम ॥ मन इछे सेई फल पाए करतै आपि वसाइआ राम ॥ करतै आपि वसाइआ सरब सुख पाइआ पुत भाई सिख बिगासे ॥ गुण गावहि पूरन परमेसुर कारजु आइआ रासे ॥ प्रभु आपि सुआमी आपे रखा आपि पिता आपि माइआ ॥ कहु नानक सतिगुर बलिहारी जिनि एहु थानु सुहाइआ ॥ १ ॥ घर मंदर हटनाले सोहे जिसु विचि नामु निवासी राम ॥ संत भगत हरि नामु अराधहि कटीऐ जम की फासी राम ॥ काटी जम फासी प्रभि अबिनासी हरि हरि नामु धिआए ॥ सगल समग्री पूरन होई मन इछे फल पाए ॥ संत सजन सुखि माणहि रलीआ दूख दरद भ्रम नासी ॥ सबदि सवारे सतिगुरि पूरै नानक सद बलि जासी ॥ २ ॥ दाति खसम की पूरी होई नित नित चड़ै सवाई राम ॥ पारब्रहमि खसमाना कीआ जिस दी वडी वडिआई राम ॥ आदि जुगादि भगतन का राखा सो प्रभु भइआ दइआला ॥ जीअ जंत सभि सुखी वसाए प्रभि आपे करि प्रतिपाला ॥ दह दिस पूरि रहिआ जसु सुआमी कीमति कहणु न जाई ॥ कहु नानक सतिगुर बलिहारी जिनि अबिचल नीव रखाई ॥ ३ ॥ गिआन धिआन पूरन परमेसुर हरि हरि कथा नित सुणीऐ राम ॥ अनहद चोज भगत भव भंजन अनहद वाजे धुनीऐ राम ॥ अनहद झुणकारे ततु बीचारे संत गोसटि नित होवै ॥ हरि नामु अराधहि मैलु सभ काटहि किलविख सगले खोवै ॥ तह जनम न मरणा आवण जाणा बहुड़ि न पाईऐ जुोनीऐ ॥ नानक गुरु परमेसरु पाइआ जिसु प्रसादि इछ पुनीऐ ॥ ४ ॥ ६ ॥ ९ ॥

{उल्लेखनीय है कि यह शब्द गुरु अर्जुन देव जी ने गुरु रामदास की नगरी अमृतसर की प्रशंसा में उच्चरित किया था। अमृतसर नगर गुरु रामदास जी ने बसाया था। गुरु जी प्रत्येक कार्य परमात्मा का किया हुआ ही मानते थे। इस नगर का पूर्व नाम रामदास चक्क था।}

गुरु परमेश्वर की यह पावन नगरी निश्चल है और यहाँ पर नाम जप कर सुख उपलब्ध होता है। परमेश्वर ने स्वयं इसे बसाया है और यहाँ पर मनोवांछित फल की प्राप्ति होती है। ईश्वर ने स्वयं नगरी को बसाया है, यहाँ पर सर्व सुख फल प्राप्त होते हैं और पुत्र, भाई एवं शिष्य सभी प्रसन्न रहते हैं। पूर्ण परमेश्वर के गुण गाने से सारे कार्य सम्पूर्ण हो गए हैं। प्रभु स्वयं सबका स्वामी है, स्वयं सबका रखवाला और स्वयं सबका माता-पिता है। हे नानक! मैं सतिगुरु पर बलिहारी जाता हूँ, जिसने यह स्थान सुन्दर बना दिया है॥ १॥ जिसके हृदय में नाम का निवास हो गया है, उसकी दुकानों सहित घर एवं मन्दिर सुन्दर बन गए हैं। संत एवं भक्त सभी हरि नाम की आराधना करते रहते हैं और उनकी यम की फाँसी कट गई है। जो हरि नाम का ध्यान करते रहते हैं, अविनाशी प्रभु ने उनकी यम की फाँसी काट दी है। प्रभु-भक्ति के लिए सारी सामग्री पूरी हो गई है और उन्होंने मनोवांछित फल पा लिया है। सज्जन संत सुख में आनंद मना रहे हैं और उनके दुख-दर्द एवं भ्रम सब नाश हो गए हैं। हे नानक! पूर्ण सतगुरु ने शब्द द्वारा उनका जीवन सुन्दर बना दिया है और मैं सदैव उस पर बलिहारी जाता हूँ॥ २॥ मालिक-प्रभु की देन पूरी हुई है और यह नित्य बढ़ती रहती है। जिस परमात्मा की बड़ाई बहुत बड़ी है, उसने मुझे अपना बना लिया है। सो वह प्रभु मुझ पर दयालु हो गया है, जो युग-युगांतर से अपने भक्तों का रखवाला बना हुआ है। उसने सभी जीव-जंतु सुखी बसा दिए हैं, वह प्रभु स्वयं सबका पालन-पोषण करता

है। दसों दिशाओं में स्वामी का यश फैला हुआ है और इसकी महत्ता के लिए शब्द उपलब्ध नहीं। हे नानक ! मैं सतगुरु पर बलिहारी जाता हूँ, जिसने (अमृतसर) नगर की अटल नींव रखवाई है॥ ३॥ यहाँ पर संत एवं भक्त पूर्ण परमेश्वर के ज्ञान एवं ध्यान की चर्चा करते रहते हैं और नित्य हरि कथा सुनते रहते हैं। उनके मन में अनहद बाजे बजते रहते हैं और भयनाशक प्रभु के भक्त अनहद शब्द सुनते एवं विलास करते रहते हैं। उनके मन में अनहद शब्द की झंकार होती रहती है। वहाँ नित्य संतों की ज्ञान-गोष्ठी होती है और परमतत्व का विचार होता रहता है। वह हरिनाम की आराधना करके अपनी अहंकार रूपी मैल दूर करते हैं और सब पापों को दूर कर देते हैं। इस तरह उनका न जन्म होता है, न मरण होता है, अपितु आवागमन समाप्त हो जाता है और इस तरह वे दोबारा योनियों में भी नहीं पड़ते। हे नानक ! उन्होंने गुरु-परमेश्वर को पा लिया है, जिसकी कृपा से सब मनोकामनाएँ पूरी हो गई हैं॥ ४॥ ६॥ ६॥

सूही महला ५ ॥ संता के कारजि आपि खलोइआ हरि कंमु करावणि आइआ राम ॥ धरति सुहावी तालु सुहावा विचि अंम्रित जलु छाइआ राम ॥ अंम्रित जलु छाइआ पूरन साजु कराइआ सगल मनोरथ पूरे ॥ जै जै कारु भइआ जग अंतरि लाथे सगल विसूरे ॥ पूरन पुरख अचुत अबिनासी जसु वेद पुराणी गाइआ ॥ अपना बिरदु रखिआ परमेसरि नानक नामु धिआइआ ॥ १ ॥ नव निधि सिधि रिधि दीने करते तोटि न आवै काई राम ॥ खात खरचत बिलछत सुखु पाइआ करते की दाति सवाई राम ॥ दाति सवाई निखुटि न जाई अंतरजामी पाइआ ॥ कोटि बिघन सगले उठि नाठे दूखु न नेड़ै आइआ ॥ सांति सहज आनंद घनेरे बिनसी भूख सबाई ॥ नानक गुण गावहि सुआमी के अचरजु जिसु वडिआई राम ॥ २ ॥ जिस का कारजु तिन ही कीआ माणसु किआ वेचारा राम ॥ भगत सोहनि हरि के गुण गावहि सदा करहि जैकारा राम ॥ गुण गाइ गोबिंद अनद उपजे साधसंगति संगि बनी ॥ जिनि उदमु कीआ ताल केरा तिस की उपमा किआ गनी ॥ अठसठि तीरथ पुंन किरिआ महा निरमल चारा ॥ पतित पावनु बिरदु सुआमी नानक सबद अधारा ॥ ३ ॥ गुण निधान मेरा प्रभु करता उसतति कउनु करीजै राम ॥ संता की बेनंती सुआमी नामु महा रसु दीजै राम ॥ नामु दीजै दानु कीजै बिसरु नाही इक खिनो ॥ गुण गोपाल उचरु रसना सदा गाईऐ अनदिनो ॥ जिसु प्रीति लागी नाम सेती मनु तनु अंम्रित भीजै ॥ बिनवंति नानक इछ पुंनी पेखि दरसनु जीजै ॥ ४ ॥ ७ ॥ १० ॥

संतों के शुभ-कार्य में ईश्वर स्वयं सहायक हुआ है, यह कार्य सम्पन्न करवाने के लिए वह स्वयं आया है। अब धरती सुहावनी हो गई है एवं पावन सरोवर भी बड़ा सुन्दर लगता है। इस सरोवर में अमृत-जल भर गया है। परमात्मा की कृपा से इसमें अमृत-जल भर गया है, उसने स्वयं समूचा कार्य सम्पन्न कर दिया है, इस प्रकार संतों के सारे मनोरथ पूरे हो गए हैं। सारे जगत् में (प्रभु की) जय-जयकार हो रही है और संतों की सब चिन्ताएँ मिट गई हैं। पूर्ण परम पुरुष, अच्युत एवं अविनाशी परमात्मा का यश वेदों एवं पुराणों ने गाया है। हे नानक ! जब भी संतों ने नाम का ध्यान किया है तो परमेश्वर ने अपने विरद् का पालन किया है॥ १॥ रचनहार ईश्वर ने हमें नौ निधियाँ एवं ऋद्धियाँ-सिद्धियाँ प्रदान कर दी हैं और अब किसी वस्तु की कोई कमी नहीं आती। अब खाते-खर्चते एवं उपयोग करते हुए सुख ही उपलब्ध हुआ है, इस तरह परमात्मा की देन में दिन-ब-दिन वृद्धि हो रही है। उसकी देन में वृद्धि हो रही है और कभी समाप्त नहीं होती, क्योंकि उस अन्तर्यामी प्रभु को पा लिया है। इस तरह करोड़ों ही विघ्न उठकर भाग गए हैं और कोई दुख भी निकट नहीं आया। मुझे शांति, सहजावस्था एवं अनेक आनंद प्राप्त हो गए हैं और तमाम भूख

भी शमित हो गई है। हे नानक! मैं तो अपने स्वामी प्रभु का ही गुणगान कर रहा हूँ, जिसकी महिमा अद्‌भुत है॥ २॥ हे भाई! जिसका यह कार्य था, उसने ही यह सम्पूर्ण किया है, इसमें मनुष्य बेचारा भला क्या कर सकता है? भक्तजन हरि का गुणगान करते हुए बड़े सुन्दर लगते हैं और वे सदैव उसकी जय-जयकार करते रहते हैं। गोविंद का स्तुतिगान करने से उनके मन में बड़ा आनंद उत्पन्न होता है तथा साधु-संगति करने से उनकी प्रभु से प्रीति बनी रहती है। जिस परमात्मा ने पावन सरोवर को बनाने का प्रयास किया है, उसकी उपमा वर्णन नहीं की जा सकती। इस सरोवर में स्नान करने से अड़सठ तीर्थों के स्नान, अनेक दान-पुण्य एवं सभी महानिर्मल कर्मों का फल मिल जाता है। नानक प्रार्थना करता है कि हे स्वामी! पतितों को पावन करना तेरा धर्म है और मुझे तेरे शब्द का ही आसरा है॥ ३॥ सृष्टि-रचयिता मेरा प्रभु गुणों का भण्डार है और उसकी स्तुति भला कौन कर सकता है। हे स्वामी! तेरे पास संतों की यही विनती है कि हमें नाम रूपी महारस दीजिए। हमें नाम-दान दीजिए ताकि तू हमें एक क्षण भी विस्मृत न होवे। हमें अपनी जीभ से सदैव उसके गुण गाते रहना चाहिए। जिसकी नाम से प्रीति लग जाती है, उसका मन-तन नामामृत से भीग जाता है। नानक विनती करता है कि हे प्रभु! मेरी इच्छा पूरी हो गई है और मैं तेरे दर्शन देखकर ही जिंदा हूँ॥ ४॥ ७॥ १०॥

रागु सूही महला ५ छंत १ॐ सतिगुर प्रसादि ॥

मिठ बोलड़ा जी हरि सजणु सुआमी मोरा ॥ हउ संमलि थकी जी ओहु कदे न बोलै कउरा ॥ कउड़ा बोलि न जानै पूरन भगवानै अउगणु को न चितारे ॥ पतित पावनु हरि बिरदु सदाए इकु तिलु नही भंनै घाले ॥ घट घट वासी सरब निवासी नेरै ही ते नेरा ॥ नानक दासु सदा सरणागति हरि अंम्रित सजणु मेरा ॥ १ ॥ हउ बिसमु भई जी हरि दरसनु देखि अपारा ॥ मेरा सुंदरु सुआमी जी हउ चरन कमल पग छारा ॥ प्रभ पेखत जीवा ठंढी थीवा तिसु जेवडु अवरु न कोई ॥ आदि अंति मधि प्रभु रविआ जलि थलि महीअलि सोई ॥ चरन कमल जपि सागरु तरिआ भवजल उतरे पारा ॥ नानक सरणि पूरन परमेसुर तेरा अंतु न पारावारा ॥ २ ॥ हउ निमख न छोडा जी हरि प्रीतम प्रान अधारो ॥ गुरि सतिगुर कहिआ जी साचा अगम बीचारो ॥ मिलि साधू दीना ता नामु लीना जनम मरण दुख नाठे ॥ सहज सूख आनंद घनेरे हउमै बिनठी गाठे ॥ सभ कै मधि सभ हू ते बाहरि राग दोख ते निआरो ॥ नानक दास गोबिंद सरणाई हरि प्रीतमु मनहि सधारो ॥ ३ ॥ मै खोजत खोजत जी हरि निहचलु सु घरु पाइआ ॥ सभि अध्रुव डिठे जीउ ता चरन कमल चितु लाइआ ॥ प्रभु अबिनासी हउ तिस की दासी मरै न आवै जाए ॥ धरम अरथ काम सभि पूरन मनि चिंदी इछ पुजाए ॥ स्रुति सिम्रिति गुन गावहि करते सिध साधिक मुनि जन धिआइआ ॥ नानक सरनि क्रिपा निधि सुआमी वडभागी हरि हरि गाइआ ॥ ४ ॥ १ ॥ ११ ॥

मेरा स्वामी सज्जन हरि बहुत मीठा बोलने वाला है। मैं याद कर-करके थक चुकी हूँ, वह कभी भी कड़वा नहीं बोलता। वह पूर्ण भगवान् कड़वा बोलना जानता ही नहीं और मेरा कोई अवगुण याद ही नहीं करता। पतितों को पावन करना उसका विरद् कहलाता है, वह किसी की साधना को तिल भर भी नहीं भूलता। वह घट-घट में व्याप्त है, सर्वव्यापक है और हमारे बिल्कुल निकट ही रहता है। दास नानक सदैव उसकी शरण में है, मेरा सज्जन हरि अमृत समान मीठा

है॥ १॥ हे भाई ! हरि का दर्शन देखकर मैं आश्चर्यचकित हो गई हूँ। मेरा स्वामी बड़ा सुन्दर है और मैं उसके चरणों की धूल मात्र हूँ। मैं प्रभु को देखकर ही जीवित रहती हूँ व बड़ी शांति मिलती है और उस जैसा महान् अन्य कोई नहीं। जगत् के आरम्भ, मध्य, एवं अन्त में प्रभु ही विद्यमान है, वह समुद्र, जमीन एवं आसमान में व्यापक है। मैं उसके चरण-कमल को जपकर संसार-सागर से तर गया हूँ और भवसागर से पार हो गया हूँ। नानक वंदना करता है कि हे पूर्ण परमेश्वर ! मैं तेरी शरण में आया हूँ, तेरा कोई आर-पार नहीं॥ २॥ प्रियतम हरि मेरे प्राणों का आधार है और मैं उसका नाम, एक क्षण भर के लिए भी नहीं छोड़ता। गुरु ने मुझे उपदेश दिया है कि उस सच्चे प्रभु का ही चिंतन करो। मैंने साधु को मिलकर अपना तन-मन सौंपकर उन से नाम लिया है, अब मेरे जन्म-मरण के दुख भाग गए हैं। मेरे मन में सहज सुख एवं बेशुमार आनंद पैदा हो गया है और मेरी अहंत्व की गांठ नाश हो गई है। भगवान् सब जीवों में बसता है और सबसे बाहर भी मौजूद रहता है, वह राग-द्वेष से निर्लिप्त है। दास नानक गोविंद की शरण में है और प्यारा प्रभु ही उसके मन का एकमात्र सहारा है॥ ३॥ खोजते-खोजते मैंने हरि का निश्चल घर पा लिया है। दुनिया में मुझे जब सब नाशवान दिखाई दिए तो मैंने प्रभु के चरण-कमल से ही चित्त लगाया। मैं अविनाशी प्रभु की दासी हूँ, जो जन्म-मरण से मुक्त है। धर्म, अर्थ एवं काम ये सारे पदार्थ उसमें भरपूर हैं और वह मनोकामनाएँ पूरी कर देता है। वेद एवं स्मृतियाँ उस कर्त्तार का ही गुणगान करती हैं तथा सिद्ध, साधक एवं मुनिजनों ने उसका ही मनन किया है। हे नानक ! मैं कृपानिधि स्वामी की ही शरण में हूँ और बड़ा भाग्यशाली हूँ जो परमात्मा का यशगान किया है॥ ४॥ १॥ ११॥

१ਓ सतिगुर प्रसादि ॥ वार सूही की सलोका नालि महला ३॥

सलोकु म: ३ ॥ सूहै वेसि दोहागणी पर पिरु रावण जाइ ॥ पिरु छोडिआ घरि आपणै मोही दूजै भाइ ॥ मिठा करि कै खाइआ बहु सादहु वधिआ रोगु ॥ सुधु भतारु हरि छोडिआ फिरि लगा जाइ विजोगु ॥ गुरमुखि होवै सु पलटिआ हरि राती साजि सीगारि ॥ सहजि सचु पिरु राविआ हरि नामा उर धारि ॥ आगिआकारी सदा सोहागणि आपि मेली करतारि ॥ नानक पिरु पाइआ हरि साचा सदा सोहागणि नारि ॥ १ ॥

श्लोक महला ३॥ जो पराए पति के संग रमण करने जाती है, ऐसी स्त्री तो सुहाग के वेष में भी विधवा ही है। वह अपना घर व पति-प्रभु को छोड़ कर द्वैतभाव में लीन बनी हुई है। जिस पदार्थ को उसने मीठा मान कर खाया है, उसके अधिक स्वाद से उसके शरीर में रोग और भी बढ़ गया है। उसने अपने शुद्ध पति हरि को छोड़ दिया है और उसका फिर वियोग हो गया है। जो जीव-स्त्री गुरुमुख बन गई है, वह द्वैतभाव से पलट गई है और अपना हार-श्रृंगार बनाकर हरि के रंग में लीन रहती है। उसने हरि-नाम को अपने हृदय में बसाकर सहज ही सच्चे प्रभु से रमण किया है। प्रभु की आज्ञाकारिणी जीव-स्त्री सदा सुहागिन है और उसे परमात्मा ने स्वयं अपने साथ मिला लिया है। हे नानक ! उसने अपना सच्चा पति हरि पा लिया है और वह सदा सुहागिन नारी बनी रहती है॥ १॥

म: ३॥ सुहवीए निमाणीए सो सहु सदा सम्हालि ॥ नानक जनमु सवारहि आपणा कुलु भी छुटी नालि ॥ २ ॥

महला ३॥ हे सुहाग की वेशभूषा वाली जीव रूपी नारी ! अपने मालिक को सदैव याद रख।

हे नानक! इस तरह वह अपना जन्म संवार लेती है और साथ ही उसका वंश भी छूट जाता है॥ २॥

पउड़ी ॥ आपे तखतु रचाइओनु आकास पताला ॥ हुकमे धरती साजीअनु सची धरम साला ॥ आपि उपाइ खपाइदा सचे दीन दइआला ॥ सभना रिजकु संबाहिदा तेरा हुकमु निराला ॥ आपे आपि वरतदा आपे प्रतिपाला ॥ १ ॥

पउड़ी॥ ईश्वर ने स्वयं ही आकाश एवं पाताल रूपी अपने सिंहासन की रचना की है। उसके हुक्म से ही धरती का निर्माण हुआ है, जो जीवों के लिए धर्म कमाने की सच्ची धर्मशाला है। हे सच्चे दीनदयाल! तू स्वयं ही दुनिया को बनाकर नष्ट कर देता है। तू सब जीवों को भोजन देता है और तेरा हुक्म बड़ा निराला है। वह सब जीवों में क्रियान्वित है और स्वयं ही उनका पोषण करता है॥ १॥

सलोकु म: ३ ॥ सूहब ता सोहागणी जा मंनि लैहि सचु नाउ ॥ सतिगुरु अपणा मनाइ लै रूपु चड़ी ता अगला दूजा नाही थाउ ॥ ऐसा सीगारु बणाइ तू मैला कदे न होवई अहिनिसि लागै भाउ ॥ नानक सोहागणि का किआ चिहनु है अंदरि सचु मुखु उजला खसमै माहि समाइ ॥ १ ॥

श्लोक महला ३॥ हे सुहाग के परिधान वाली जीव-स्त्री! तू सुहागिन तो ही बन सकती है, यदि तू सत्य-नाम को मन में बसा ले। यदि तू अपने सतिगुरु को प्रसन्न कर ले तो तेरा रूप हजार गुणा बढ़ जाएगा। नाम प्राप्त करने के लिए गुरु के सिवा अन्य कोई स्थान नहीं। तू अपना ऐसा शृंगार बना, जो कभी भी मैला न हो और निशदिन तेरा प्रेम प्रभु से बना रहे। हे नानक! सुहागिन की वास्तव में यही निशानी है कि उसके मन में सत्य स्थित हो, उसका मुख उज्ज्वल हो और वह प्रभु में ही विलीन रहे॥ १॥

म: ३ ॥ लोका वे हउ सूहवी सूहा वेसु करी ॥ वेसी सहु न पाईऐ करि करि वेस रही ॥ नानक तिनी सहु पाइआ जिनी गुर की सिख सुणी ॥ जो तिसु भावै सो थीऐ इन बिधि कंत मिली ॥ २ ॥

महला ३॥ हे लोगो! मैं सुहाग के लाल वस्त्रों में हूँ और मैंने नववधु जैसा वेष किया हुआ है। लेकिन सुहाग का वेष धारण करने से मालिक-प्रभु प्राप्त नहीं हुआ और मैं तो वेष बना-बनाकर थक गई हूँ। हे नानक! प्रभु उन्हें ही प्राप्त हुआ है, जिन्होंने गुरु की शिक्षा सुनी है। इस विधि द्वारा ही पति-प्रभु मिलता है जो वेष उसे उपयुक्त लगता है, जीव-स्त्री उसी वेष वाली बन जाए॥ २॥

पउड़ी ॥ हुकमी स्रिसटि साजीअनु बहु भिति संसारा ॥ तेरा हुकमु न जापी केतड़ा सचे अलख अपारा ॥ इकना नो तू मेलि लैहि गुर सबदि बीचारा ॥ सचि रते से निरमले हउमै तजि विकारा ॥ जिसु तू मेलहि सो तुधु मिलै सोई सचिआरा ॥ २ ॥

पउड़ी॥ ईश्वर ने अपने हुक्म से ही सृष्टि-रचना की है और अनेक प्रकार का संसार बनाया है। हे सत्यस्वरूप, अलक्ष्य एवं अपार! तेरा हुक्म जाना नहीं जा सकता कि कितना बड़ा है। तू कुछ जीवों को गुरु शब्द के चिंतन द्वारा अपने साथ मिला लेता है। जो अपने अहंत्व एवं काम, क्रोध, मोह, लोभ रूपी विकारों को त्याग देते हैं, वे सत्य में ही लीन रहते हैं और वास्तव में वही निर्मल हैं। जिसे तू अपने साथ मिला लेता है, वही तेरे साथ मिलता है और वही सत्यवादी है॥ २॥

सलोकु म: ३ ॥ सूहवीए सूहा सभु संसारु है जिन दुरमति दूजा भाउ ॥ खिन महि झूठु सभु बिनसि जाइ जिउ टिकै न बिरख की छाउ ॥ गुरमुखि लालो लालु है जिउ रंगि मजीठ सचड़ाउ ॥ उलटी

सकति सिवै घरि आई मनि वसिआ हरि अंम्रित नाउ ॥ नानक बलिहारी गुर आपणे जितु मिलिऐ हरि गुण गाउ ॥ १ ॥

श्लोक महला ३॥ हे सुहाग जोड़े वाली जीव-स्त्री! दुर्मति के कारण जिनका माया से ही लगाव है, उनके लिए समूचा संसार ही लाल है। सारा झूठ क्षण में ऐसे नाश हो जाता है, जैसे पेड़ की छाया स्थिर नहीं रहती। गुरुमुख बहुत ही लाल होता है, जैसे वह मजीठ के रंग में रंगा होता है। जिसके मन में हरि का अमृत नाम स्थित हो गया है और उसकी अभिलाषा माया से उल्ट कर प्रभु के घर में आ गई है। हे नानक! मैं अपने गुरु पर बलिहारी जाता हूँ, जिसे मिलकर परमात्मा का गुणगान किया जाता है॥ १॥

म: ३ ॥ सूहा रंगु विकारु है कंतु न पाइआ जाइ ॥ इसु लहदे बिलम न होवई रंड बैठी दूजै भाइ ॥ मुंध इआणी दुंमणी सूहै वेसि लुोभाइ ॥ सबदि सचै रंगु लालु करि भै भाइ सीगारु बणाइ ॥ नानक सदा सोहागणी जि चलनि सतिगुर भाइ ॥ २ ॥

महला ३॥ सुहाग का लाल रंग भी विकार ही है, जिससे परमात्मा नहीं पाया जा सकता। इस रंग को उतरते कोई देरी नहीं होती और द्वैतभाव में फँसकर जीव-स्त्री विधवा हो बैठती है। द्वैतभाव में फँसी हुई मूर्ख एवं नादान जीव-स्त्री लाल वेष में लोभायमान रहती है। यदि सच्चे शब्द द्वारा लाल रंग बना कर प्रभु भय एवं प्रेम को अपना शृंगार बना ले तो हे नानक! वह सदा सुहागिन बनी रहती है, जो सतगुरु की रज़ा में चलती है॥ २॥

पउड़ी ॥ आपे आपि उपाइअनु आपि कीमति पाई ॥ तिस दा अंतु न जापई गुर सबदि बुझाई ॥ माइआ मोहु गुबारु है दूजै भरमाई ॥ मनमुख ठउर न पाइन्ही फिरि आवै जाई ॥ जो तिसु भावै सो थीऐ सभ चलै रजाई ॥ ३ ॥

पउड़ी॥ स्वयंभू ईश्वर ने अपने गुणों का मूल्य स्वयं ही पाया है। उसका रहस्य जाना नहीं जा सकता परन्तु गुरु-शब्द द्वारा ही उसकी सूझ होती है। माया का मोह घोर अन्धकार है, जो द्वैतभाव में भटकाता रहता है। स्वेच्छाचारी को कहीं भी ठिकाना नहीं मिलता और वह बार-बार जन्मता-मरता रहता है। जो परमात्मा को उपयुक्त लगता है, वही होता है। सब जीव उसकी इच्छानुसार ही चलते हैं॥ ३॥

सलोकु म: ३ ॥ सूहै वेसि कामणि कुलखणी जो प्रभ छोडि पर पुरख धरे पिआरु ॥ ओसु सीलु न संजमु सदा झूठु बोलै मनमुखि करम खुआरु ॥ जिसु पूरबि होवै लिखिआ तिसु सतिगुरु मिलै भतारु ॥ सूहा वेसु सभु उतारि धरे गलि पहिरै खिमा सीगारु ॥ पेईऐ साहुरै बहु सोभा पाए तिसु पूज करे सभु सैसारु ॥ ओह रलाई किसै दी ना रलै जिसु रावे सिरजनहारु ॥ नानक गुरमुखि सदा सुहागणी जिसु अविनासी पुरखु भरतारु ॥ १ ॥

श्लोक महला ३॥ लाल वेष वाली जीव रूपी कामिनी कुलक्षणी है, जो प्रभु को छोड़कर पराए पुरुष से प्रेम करती है। उसे कोई शर्म एवं संयम नहीं, वह तो सदा झूठ बोलती रहती है। वह मनमुखी कर्म करके ख्वार होती रहती है। जिसके भाग्य में पूर्व ही शुभ लेख लिखा हुआ है, उसे पति-परमेश्वर मिल जाता है। वह अपना लाल वेष उतार कर गले में क्षमा रूपी शृंगार पहन लेती है। फिर वह लोक-परलोक में बहुत शोभा प्राप्त करती है और सारा संसार उसकी पूजा करता है। जिस जीव-स्त्री से सृजनहार प्रभु रमण करता है, वह किसी के साथ मिलाने पर भी उससे नहीं मिलती। हे नानक! वह गुरुमुख जीव-स्त्री सदा सुहागिन है, जिसका पति अनश्वर प्रभु है॥ १॥

म: १ ॥ सूहा रंगु सुपनै निसी बिनु तागे गलि हारु ॥ सचा रंगु मजीठ का गुरमुखि ब्रहम बीचारु ॥ नानक प्रेम महा रसी सभि बुरिआईआ छारु ॥ २ ॥

महला १॥ माया का लाल रंग रात के सपने की तरह है और डोर के बिना गले में पहने हार के बराबर है। जबकि गुरु से प्राप्त किया ब्रह्म-चिंतन वैसे है जैसे मजीठ का सच्चा रंग होता है। हे नानक! जो जीव-स्त्री परमात्मा के प्रेम रूपी महारस में भीगी रहती है, उसकी सब बुराईयाँ जल कर राख हो जाती हैं॥ २॥

पउड़ी ॥ इहु जगु आपि उपाइओनु करि चोज विडानु ॥ पंच धातु विचि पाईअनु मोहु झूठु गुमानु ॥ आवै जाइ भवाईऐ मनमुखु अगिआनु ॥ इकना आपि बुझाइओनु गुरमुखि हरि गिआनु ॥ भगति खजाना बखसिओनु हरि नामु निधानु ॥ ४ ॥

पउड़ी॥ अद्‌भुत लीला करके परमेश्वर ने स्वयं यह जगत् उत्पन्न किया है। उसने इसमें पाँच तत्व-हवा, आकाश, अग्नि, जल एवं पृथ्वी डाले हैं और मोह, झूठ एवं घमण्ड भी डाले हैं। ज्ञानहीन मनमुख जीव जन्म-मरण के चक्र में ही भटकता रहता है। कुछ जीवों को भगवान् स्वयं ही गुरु के माध्यम से ब्रह्म-ज्ञान प्रदान करता है। जिसने हरि-नाम रूपी धन पा लिया है, उन्हें ही उसने भक्ति का खजाना प्रदान किया है॥ ४॥

सलोकु म: ३ ॥ सूहवीए सूहा वेसु छडि तू ता पिर लगी पिआरु ॥ सूहै वेसि पिरु किनै न पाइओ मनमुखि दझि मुई गावारि ॥ सतिगुरि मिलिऐ सूहा वेसु गइआ हउमै विचहु मारि ॥ मनु तनु रता लालु होआ रसना रती गुण सारि ॥ सदा सोहागणि सबदु मनि भै भाइ करे सीगारु ॥ नानक करमी महलु पाइआ पिरु राखिआ उर धारि ॥ १ ॥

श्लोक महला ३॥ हे सुहाग जोड़े वाली! तू अपना लाल वेष छोड़ दे तो ही तेरा प्यार अपने पति-प्रभु से लगेगा। मिथ्या लाल वेष में किसी ने भी प्रभु को नहीं पाया और गंवार मनमुख जीव-स्त्री माया के मोह में जलकर मर गई है। अपने अहंत्व को नष्ट करके सद्‌गुरु से मिलकर जिस का लाल वेष दूर हो गया है, प्रभु के रंग में लीन हुआ उसका मन-तन लाल हो गया है और उसकी जीभ प्रभु के गुणगान में ही लीन रहती है। जो जीव-स्त्री श्रद्धा भाव का श्रृंगार करती है और मन में शब्द को बसाती है, वह सदा सुहागिन है। हे नानक! जिस जीव-स्त्री ने प्रभु-कृपा द्वारा अपने घर को पा लिया है, वह पति-प्रभु को ही अपने हृदय में बसाकर रखती है॥ १॥

म: ३ ॥ मुंधे सूहा परहरहु लालु करहु सीगारु ॥ आवण जाणा वीसरै गुर सबदी वीचारु ॥ मुंध सुहावी सोहणी जिसु घरि सहजि भतारु ॥ नानक सा धन रावीऐ रावे रावणहारु ॥ २ ॥

महला ३॥ हे जीव-स्त्री! अपना सूहा वेष छोड़ दे और लाल श्रृंगार कर ले। गुरु के शब्द द्वारा प्रभु-चिंतन करने से तेरा आवागमन मिट जाएगा। जिसके हृदय-घर में सहज स्वभाव पति-प्रभु आ बसता है, वह जीव-स्त्री बड़ी सुन्दर एवं गुणवान है। हे नानक! वही जीव-स्त्री रमण करती है, जिससे रमण करने वाला प्रभु रमण करता है॥ २॥

पउड़ी ॥ मोहु कूड़ु कुटंबु है मनमुखु मुगधु रता ॥ हउमै मेरा करि मुए किछु साथि न लिता ॥ सिर उपरि जमकालु न सुझई दूजै भरमिता ॥ फिरि वेला हथि न आवई जमकालि वसि किता ॥ जेहा धुरि लिखि पाइओनु से करम कमिता ॥ ५ ॥

पउड़ी॥ परिवार का मोह झूठा है किन्तु मूर्ख स्वेच्छाचारी इसमें ही लीन रहता है। वह जीवन भर अहंत्व एवं ममत्व करता हुआ ही प्राण त्याग गया है लेकिन अपने साथ कुछ भी लेकर नहीं गया। उसे कोई सूझ नहीं होती कि यमकाल उसके सिर पर खड़ा है, पर वह द्वैतभाव में फँसकर भटकता रहता है। यमकाल ने उसे अपने वश में कर लिया है और अब उसे यह सुनहरी अवसर दोबारा नहीं मिलना। लेकिन उसने वही कर्म किया है, जो प्रारम्भ से ही उसकी किस्मत में लिखा हुआ था॥ ५॥

सलोकु मः ३ ॥ सतीआ एहि न आखीअनि जो मड़िआ लगि जलंन्हि ॥ नानक सतीआ जाणीअन्हि जि बिरहे चोट मरंन्हि ॥ १ ॥

{यहाँ पर गुरु जी ने सती प्रथा का खण्डन किया है।}

श्लोक महला ३॥ उन स्त्रियों को सती नहीं मानना चाहिए, जो पति की लाश के साथ जल मरती हैं। हे नानक! दरअसल वही स्त्रियाँ सती कहलाने की हकदार हैं, जो अपने पति के वियोग के दुख से मर जाती हैं॥ १॥

मः ३ ॥ भी सो सतीआ जाणीअनि सील संतोखि रहंन्हि ॥ सेवनि साई आपणा नित उठि संम्हालंन्हि ॥ २ ॥

महला ३॥ जो स्त्रियाँ शील एवं संतोष के साथ रहती हैं, उन्हें भी सती मानना चाहिए। वे अपने स्वामी की सेवा करती हैं और नित्य प्रातःकाल उठकर उनकी संभाल करती हैं॥ २॥

मः ३ ॥ कंता नालि महेलीआ सेती अगि जलाहि ॥ जे जाणहि पिरु आपणा ता तनि दुख सहाहि ॥ नानक कंत न जाणनी से किउ अगि जलाहि ॥ भावै जीवउ कै मरउ दूरहु ही भजि जाहि ॥ ३ ॥

महला ३॥ जो स्त्रियाँ पतियों के साथ अग्नि में जलकर मरती हैं, वे तो ही अपने तन पर दुख सहन करती हैं, यदि वे उन्हें अपना पति समझती हैं। हे नानक! जो स्त्रियाँ उन्हें अपना पति ही नहीं समझतीं, उन्हें आग में जलकर सती होने की आवश्यकता नहीं। उनका पति चाहे जीए चाहे मरे, वे उनसे दूर से ही भाग जाती हैं॥ ३॥

पउड़ी ॥ तुधु दुखु सुखु नालि उपाइआ लेखु करतै लिखिआ ॥ नावै जेवड होर दाति नाही तिसु रूपु न रिखिआ ॥ नामु अखुटु निधानु है गुरमुखि मनि वसिआ ॥ करि किरपा नामु देवसी फिरि लेखु न लिखिआ ॥ सेवक भाइ से जन मिले जिन हरि जपु जपिआ ॥ ६ ॥

पउड़ी॥ हे परमेश्वर! तूने दुख-सुख साथ ही पैदा किया है और भाग्य लिख दिया है। नाम जितनी बड़ी देन अन्य कोई नहीं, न ही उसका कोई रूप है और न ही कोई चिन्ह है। नाम तो एक अक्षय खजाना है, जो गुरु के माध्यम से ही मन में बसता है। परमात्मा अपनी कृपा करके जिसे नाम दे देता है, वह पुनः उसका दुख-सुख का नसीब नहीं लिखता। जिन्होंने श्रद्धा भावना से हरि का नाम जपा है, वे मनुष्य उसमें ही मिल गए हैं॥ ६॥

सलोकु मः २ ॥ जिनी चलणु जाणिआ से किउ करहि विथार ॥ चलण सार न जाणनी काज सवारणहार ॥ १ ॥

श्लोक महला २॥ जिन मनुष्यों ने यह भेद जान लिया है कि उन्होंने दुनिया से चले जाना

है, वे झूठे धंधों का प्रसार क्यों करें? अपने ही कार्य संवारने वाले लोगों को यहाँ से चले जाने के बारे में कोई समझ नहीं है॥ १॥

म: २ ॥ राति कारणि धनु संचीऐ भलके चलणु होइ ॥ नानक नालि न चलई फिरि पछुतावा होइ ॥ २ ॥

महला २॥ आदमी जीवन रूपी एक रात्रि के लिए धन संचित करता है, किन्तु वह सुबह होते ही दम तोड़कर चला जाता है। हे नानक! मौत के बाद धन उसके साथ नहीं जाता, फिर उसे पछतावा होता है॥ २॥

म: २ ॥ बधा चटी जो भरे ना गुणु ना उपकारु ॥ सेती खुसी सवारीऐ नानक कारजु सारु ॥ ३ ॥

महला २॥ जो आदमी मजबूरी में लगाया दण्ड भरता है, इसमें न कोई उसका गुण है और न ही उसका उपकार है। हे नानक! वही कार्य उत्तम है, जो वह अपनी खुशी से करता है॥ ३॥

म: २ ॥ मनहठि तरफ न जिपई जे बहुता घाले ॥ तरफ जिणै सत भाउ दे जन नानक सबदु वीचारे ॥ ४ ॥

महला २॥ अपने मन के हठ से कोई भी प्रभु को अपने पक्ष में नहीं कर सकता, चाहे वह बहुत साधना करता रहे। हे नानक! वही मनुष्य कामयाबी हासिल करता है, जो सच्चा प्रेम अर्पण करता है और शब्द का चिंतन करता है॥ ४॥

पउड़ी ॥ करतै कारणु जिनि कीआ सो जाणै सोई ॥ आपे सिसटि उपाईअनु आपे फुनि गोई ॥ जुग चारे सभ भवि थकी किनि कीमति होई ॥ सतिगुरि एकु विखालिआ मनि तनि सुखु होई ॥ गुरमुखि सदा सलाहीऐ करता करे सु होई ॥ ७ ॥

पउड़ी॥ जिस परमात्मा ने कुदरत को पैदा किया है, वही उसे जानता है। उसने स्वयं ही सृष्टि-रचना की है और स्वयं उसे नष्ट भी कर देता है। सारी दुनिया चारों युग भटकती हुई थक गई है किन्तु किसी ने भी उसका मूल्यांकन नहीं पाया। सतगुरु ने मुझे एक परमात्मा दिखा दिया है, जिससे मन-तन सुखी हो गया है। गुरु के माध्यम से हमेशा भगवान् की स्तुति करते रहना चाहिए। वही होता है, जो परमात्मा करता है॥ ७ ॥

सलोक महला २ ॥ जिना भउ तिन्ह नाहि भउ मुचु भउ निभविआह ॥ नानक एहु पटंतरा तितु दीबाणि गइआह ॥ १ ॥

श्लोक महला २॥ जिन लोगों को भगवान् का भय होता है, उन्हें अन्य कोई भय प्रभावित नहीं करता। परन्तु जिन्हें भगवान् का भय नहीं होता, उन्हें बहुत प्रकार के भय लगे रहते हैं। हे नानक! यह निर्णय उस मालिक के दरबार में जाते ही होता है॥ १॥

म: २ ॥ तुरदे कउ तुरदा मिलै उडते कउ उडता ॥ जीवते कउ जीवता मिलै मूए कउ मूआ ॥ नानक सो सालाहीऐ जिनि कारणु कीआ ॥ २ ॥

महला २॥ नदिया को सागर मिल जाता है, वायु को वायु मिल जाती है। प्रचण्ड अग्नि अग्नि से मिल जाती है। मिट्टी को शरीर रूपी मिट्टी मिल जाती है। हे नानक! उस परमात्मा की प्रशंसा करनी चाहिए, जिसने यह सारी कुदरत बनाई है॥ २॥

पउड़ी ॥ सचु धिआइनि से सचे गुर सबदि वीचारी ॥ हउमै मारि मनु निरमला हरि नामु उरि धारी ॥ कोठे मंडप माड़ीआ लगि पए गावारी ॥ जिन्हि कीए तिसहि न जाणनी मनमुखि गुबारी ॥ जिसु बुझाइहि सो बुझसी सचिआ किआ जंत विचारी ॥ ८ ॥

पउड़ी॥ वास्तव में वही मनुष्य सत्यवादी हैं, जो शब्द-गुरु के चिंतन द्वारा सत्य का ध्यान करते हैं। अहंकार को समाप्त कर उनका मन निर्मल हो जाता है और वे अपने हृदय में हरि नाम को बसा लेते हैं। गँवार आदमी अपने सुन्दर घरों; भव्य महलों एवं भिन्न-भिन्न उद्योगों के मोह में लीन है। मनमुख आदमी मोह के घोर अंधेरे में फँसकर उस परमात्मा को नहीं जानते, जिसने उन्हें पैदा किया है। सच तो यही है कि ये जीव बेचारे कुछ भी नहीं, वही समझता है, जिसे वह सूझ देता है॥ ८॥

सलोक म: ३ ॥ कामणि तउ सीगारु करि जा पहिलां कंतु मनाइ ॥ मतु सेजै कंतु न आवई एवै बिरथा जाइ ॥ कामणि पिर मनु मानिआ तउ बणिआ सीगारु ॥ कीआ तउ परवाणु है जा सहु धरे पिआरु ॥ भउ सीगारु तबोल रसु भोजनु भाउ करेइ ॥ तनु मनु सउपे कंत कउ तउ नानक भोगु करेइ ॥ १ ॥

श्लोक महला ३॥ जीव रूपी कामिनी को तो ही श्रृंगार करना चाहिए, यदि वह पहले अपने पति-प्रभु को प्रसन्न कर ले। क्योंकि पति-प्रभु शायद हृदय रूपी सेज पर न आए तो किया हुआ पूरा श्रृंगार व्यर्थ ही चला जाता है। जब जीव रूपी कामिनी के पति का मन प्रसन्न हुआ तो ही उसे श्रृंगार अच्छा लगा है। उसका किया हुआ श्रृंगार तो ही मंजूर है, यदि प्रभु उसे प्रेम करे। वह अपने प्रभु के भय को अपना श्रृंगार, हरि रस को पान एवं प्रेम को अपना भोजन बना लेती है। हे नानक! पति-प्रभु तो ही उससे रमण करता है, जब वह अपना तन, मन इत्यादि सबकुछ प्रभु को सौंप देती है॥ १॥

म: ३ ॥ काजल फूल तंबोल रसु ले धन कीआ सीगारु ॥ सेजै कंतु न आइओ एवै भइआ विकारु ॥ २ ॥

महला ३॥ जीव स्त्री ने आँखों में काजल, केशों में फूल, होंठों पर तंबोल रस का श्रृंगार किया है। परन्तु प्रभु उसकी हृदय-सेज पर नहीं आया और उसका किया हुआ श्रृंगार व्यर्थ ही विकार बन गया है॥ २॥

म: ३ ॥ धन पिरु एहि न आखीअनि बहनि इकठे होइ ॥ एक जोति दुइ मूरती धन पिरु कहीऐ सोइ ॥ ३ ॥

महला ३॥ दरअसल उन्हें पति-पत्नी नहीं कहा जाता, जो परस्पर मिलकर बैठते हैं। पति-पत्नी उन्हें ही कहा जाता है, जिनके शरीर तो दो हैं पर उनमें ज्योति एक है।(अर्थात् दो शरीर एवं एक आत्मा है)॥ ३॥

पउड़ी ॥ भै बिनु भगति न होवई नामि न लगै पिआरु ॥ सतिगुरि मिलिऐ भउ ऊपजै भै भाइ रंगु सवारि ॥ तनु मनु रता रंग सिउ हउमै त्रिसना मारि ॥ मनु तनु निरमलु अति सोहणा भेटिआ क्रिसन मुरारि ॥ भउ भाउ सभु तिस दा सो सचु वरतै संसारि ॥ ९ ॥

पउड़ी॥ श्रद्धा-भय बिना उसकी भक्ति नहीं होती और न ही नाम से प्यार लगता है। सतगुरु

को मिलकर ही श्रद्धा रूपी भय उत्पन्न होता है और उस श्रद्धा से भक्ति का सुन्दर रंग चढ़ता है। अहंत्व एवं तृष्णा को समाप्त करके उसका मन-तन प्रभु के रंग में लीन हो गया है। जिसका मन-तन निर्मल एवं अत्यंत सुन्दर हो गया है, उसे ही ईश्वर मिला है। वह परम-सत्य समूचे संसार में प्रवृत्त है और भय एवं प्रेम सब उसका ही दिया हुआ है॥ ६॥

सलोक म: १ ॥ वाहु खसम तू वाहु जिनि रचि रचना हम कीए ॥ सागर लहरि समुंद सर वेलि वरस वराहु ॥ आपि खड़ोवहि आपि करि आपीणै आपाहु ॥ गुरमुखि सेवा थाइ पवै उनमनि ततु कमाहु ॥ मसकति लहहु मजूरीआ मंगि मंगि खसम दराहु ॥ नानक पुर दर वेपरवाह तउ दरि ऊणा नाहि को सचा वेपरवाहु ॥ १ ॥

श्लोक महला १॥ वाह मालिक! तू वाह-वाह है, जिसने यह सृष्टि-रचना करके हमें पैदा किया है। तूने ही सागर, समुद्र की लहरें, सरोवर, वनस्पति की शाखाएँ एवं वर्षा करने वाले बादल पैदा किए हैं। तू स्वयं ही सृष्टि रचना करके उसमें आधार बनकर स्वयं ही खड़ा है। तू स्वयंभू है, सबकुछ है। जो व्यक्ति सहज स्वभाव परमतत्व की सेवा करता है, उस गुरुमुख की सेवा ही परमात्मा को मंजूर होती है। अपने मालिक के द्वार से माँग-माँग कर अपनी नाम की कमाई की मजदूरी लो। गुरु नानक कहते हैं कि हे बेपरवाह प्रभु! तेरा घर खजानों से भरपूर है, तेरे घर में किसी वस्तु की कोई कमी नहीं और तू ही सच्चा बेपरवाह है॥ १॥

महला १ ॥ उजल मोती सोहणे रतना नालि जुड़ंनि ॥ तिन जरु वैरी नानका जि बुढे थीइ मरंनि ॥ २ ॥

महला १ ॥ आदमी के सुन्दर शरीर में मोतियों जैसे सफेद दाँत एवं रत्नों जैसे नेत्र जड़ित होते हैं। हे नानक! जो बूढ़े होकर मरते हैं, बुढ़ापा उनका शत्रु है अर्थात् बुढ़ापा शरीर को नाश कर देता है॥ २॥

पउड़ी ॥ हरि सालाही सदा सदा तनु मनु सउपि सरीरु ॥ गुर सबदी सचु पाइआ सचा गहिर गंभीरु ॥ मनि तनि हिरदै रवि रहिआ हरि हीरा हीरु ॥ जनम मरण का दुखु गइआ फिरि पवै न फीरु ॥ नानक नामु सलाहि तू हरि गुणी गहीरु ॥ १० ॥

पउड़ी॥ अपना तन-मन एवं शरीर सब सौंपकर सदैव परमात्मा की स्तुति करो। गुरु के उपदेश द्वारा सत्य को पाया जा सकता है, जो गहनगंभीर एवं शाश्वत है। परमात्मा रूपी अनमोल हीरा तन मन हृदय सब में मौजूद है। मेरा जन्म-मरण का दुख मिट गया है और अब मुझे आवागमन में पड़ना नहीं पड़ेगा। हे नानक! परमात्मा गुणों का गहरा सागर है, तू उसके नाम का स्तुतिगान करता रह॥ १०॥

सलोक म: १ ॥ नानक इहु तनु जालि जिनि जलिऐ नामु विसारिआ ॥ पउदी जाइ परालि पिछै हथु न अंबड़ै तितु निवंधै तालि ॥ १ ॥

श्लोक महला १॥ हे नानक! यह शरीर जला दे, जिस जले हुए ने परमात्मा का नाम भुला दिया है। तेरे हृदय रूपी तालाब में पापों की काई अर्थात् गंदगी पड़ती जा रही है, जिसे साफ करने के लिए फिर तेरा हाथ उस तक नहीं पहुँचेगा॥ १॥

म: १ ॥ नानक मन के कंम फिटिआ गणत न आवही ॥ किती लहा सहंम जा बखसे ता धका नही ॥ २ ॥

महला १॥ हे नानक ! मेरे मन के कार्य इतने धिक्कार योग्य हैं, जो गिने नहीं जा सकते। ओह ! इनके कारण शायद मैं कितना दुख खौफ प्राप्त करूँगा। यदि परमात्मा क्षमा कर दे तो मुझे मुसीबतों का धक्का नहीं लगेगा॥ २॥

पउड़ी ॥ सचा अमरु चलाइओनु करि सचु फुरमाणु ॥ सदा निहचलु रवि रहिआ सो पुरखु सुजाणु ॥ गुर परसादी सेवीऐ सचु सबदि नीसाणु ॥ पूरा थाटु बणाइआ रंगु गुरमति माणु ॥ अगम अगोचरु अलखु है गुरमुखि हरि जाणु ॥ ११ ॥

पउड़ी॥ परमात्मा ने सच्चा विधान लागू करके सारी दुनिया में अपना सच्चा हुक्म चलाया हुआ है। सो वह चतुर परमपुरुष सदैव अटल है और विश्वव्यापक है। गुरु की कृपा से ही उसकी भक्ति होती है और उसके दरबार में पहुँचने के लिए सत्य शब्द ही परवाना है। उसने समूचा विश्व बनाया है और गुरु उपदेशानुसार उसके रंग का आनंद प्राप्त करो। वह अगम्य, अगोचर एवं अलक्ष्य है और गुरु के माध्यम से ही उस परमात्मा को जाना जाता है॥ ११॥

सलोक म: १ ॥ नानक बदरा माल का भीतरि धरिआ आणि ॥ खोटे खरे परखीअनि साहिब कै दीबाणि ॥ १ ॥

श्लोक महला १॥ हे नानक ! जीव के माल की गठरी अर्थात् उसके शुभाशुभ कर्मों का लेखा जोखा लाकर भीतर रखा जाता है। मालिक के दरबार में शुभ एवं अशुभ (सत्य-असत्य) कर्मों की परख की जाती है॥ १॥

म: १ ॥ नावण चले तीरथी मनि खोटै तनि चोर ॥ इकु भाउ लथी नातिआ दुइ भा चड़ीअसु होर ॥ बाहरि धोती तूमड़ी अंदरि विसु निकोर ॥ साध भले अणनातिआ चोर सि चोरा चोर ॥ २ ॥

महला १॥ कुछ लोगों के मन में बड़ी खोट एवं तन में विकार रूपी चोर होते हैं। वे दिखावे के तौर पर बड़े चाव से तीर्थों में पापों से छूटने के लिए स्नान करने जाते हैं। फलस्वरूप तीर्थ पर स्नान करने से उनके विकारों का एक भाग तो छूट जाता है परन्तु विकारों के दो भाग और लग जाते हैं। बाहर से उनकी धोती तो धुल जाती है, मगर अन्तर्मन में झूठ रूपी विष भरा रहता है। साधु तीर्थों पर स्नान किए बिना ही भले हैं किन्तु चोर तीर्थ पर स्नान करके भी चोर ही रहते हैं॥ २॥

पउड़ी ॥ आपे हुकमु चलाइदा जगु धंधै लाइआ ॥ इकि आपे ही आपि लाइअनु गुर ते सुखु पाइआ ॥ दह दिस इहु मनु धावदा गुरि ठाकि रहाइआ ॥ नावै नो सभ लोचदी गुरमती पाइआ ॥ धुरि लिखिआ मेटि न सकीऐ जो हरि लिखि पाइआ ॥ १२ ॥

पउड़ी॥ ईश्वर स्वयं ही सब पर अपना हुक्म चलाता है और समूचे जगत् को भिन्न-भिन्न कार्यों में लगाया हुआ है। उसने कुछ जीवों को अपने आप नाम-सिमरन में लगाया है और उन्होंने गुरु से सुख प्राप्त किया है। यह मन दसों दिशाओं में दौड़ता है, पर गुरु ने इस पर अंकुश लगाया है। सारी दुनिया ही नाम की अभिलाषा करती है परन्तु यह गुरु-मतानुसार ही मिलता है। जो ईश्वर ने भाग्य में लिख दिया है, उसे टाला नहीं जा सकता॥ १२॥

सलोक म: १ ॥ दुइ दीवे चउदह हटनाले ॥ जेते जीअ तेते वणजारे ॥ खुल्हे हट होआ वापारु ॥ जो पहुचै सो चलणहारु ॥ धरमु दलालु पाए नीसाणु ॥ नानक नामु लाहा परवाणु ॥ घरि आए वजी वाधाई ॥ सच नाम की मिली वडिआई ॥ १ ॥

श्लोक महला १॥ दुनिया में उजाला करने के लिए परमात्मा ने सूर्य एवं चन्द्रमा दो दीपक बनाए हैं और साथ ही चौदह लोक रूपी दुकानें बनाई हैं। दुनिया में जितने भी जीव हैं, वे सभी व्यापारी हैं। जब दुकानें खुल गईं तो व्यापार होने लग गया। जो भी जन्म लेकर आता है, उसने यहाँ से चले जाना है। यमराज रूपी दलाल जीवों के शुभाशुभ कर्मों पर मोहर लगाता जाता है। हे नानक! जीवों का अर्जित नाम रूपी लाभ ही मंजूर होता है। जो जीव नाम रूपी लाभ अर्जित करके अपने घर आए हैं, उन्हें शुभकामनाएँ मिली हैं और उन्हें ही सत्य-नाम की बड़ाई मिली है॥ १॥

म: १ ॥ राती होवनि कालीआ सुपेदा से वंन ॥ दिहु बगा तपै घणा कालिआ काले वंन ॥ अंधे अकली बाहरे मूरख अंध गिआनु ॥ नानक नदरी बाहरे कबहि न पावहि मानु ॥ २ ॥

महला १॥ जब रातें काली होती हैं तो भी सफेद वस्त्रों के रंग सफेद ही रहते हैं अर्थात् दुख में भी धैर्यवान अपना धैर्य नहीं छोड़ते। निःसंकोच दिन सफेद होता है और गर्मी भी काफी होती है तो भी काली वस्तुओं के रंग काले ही रहते हैं अर्थात् झूठे अपना झूठ नहीं छोड़ते। ज्ञानहीन आदमी नासमझ ही होते हैं। मूर्खों की अक्ल अंधी ही होती है अर्थात् मूर्ख ज्ञानहीन ही होते हैं। हे नानक! जिस पर परमात्मा की कृपा-दृष्टि नहीं होती, वह कभी शोभा का पात्र नहीं बनता॥ २॥

पउड़ी ॥ काइआ कोटु रचाइआ हरि सचै आपे ॥ इकि दूजै भाइ खुआइअनु हउमै विचि विआपे ॥ इहु मानस जनमु दुलंभु सा मनमुख संतापे ॥ जिसु आपि बुझाए सो बुझसी जिसु सतिगुरु थापे ॥ सभु जगु खेलु रचाइओनु सभ वरतै आपे ॥ १३ ॥

पउड़ी॥ सच्चे परमेश्वर ने स्वयं यह शरीर रूपी किला बनाया है। किसी को द्वैतभाव में प्रवृत्त करके पथभ्रष्ट कर देता है, जो अहम्-भावना में ही लीन रहता है। यह मानव जन्म दुर्लभ है परन्तु मन की मर्जी करने वाले आदमी बहुत दुखी होते हैं। यह सूझ उसे ही होती है, जिसे परमात्मा स्वयं सूझ देता है और जिसे सतगुरु प्रेरित करता है। यह समूचा जगत् परमात्मा द्वारा रचित एक खेल है जिसमें वह स्वयं ही समान रूप से व्याप्त है॥ १३॥

सलोक म: १ ॥ चोरा जारा रंडीआ कुटणीआ दीबाणु ॥ वेदीना की दोसती वेदीना का खाणु ॥ सिफती सार न जाणनी सदा वसै सैतानु ॥ गदहु चंदनि खउलीऐ भी साहू सिउ पाणु ॥ नानक कूड़ै कतिऐ कूड़ा तणीऐ ताणु ॥ कूड़ा कपड़ु कछीऐ कूड़ा पैनणु माणु ॥ १ ॥

श्लोक महला १॥ चोरों, व्यभिचारियों, वेश्याओं तथा दलालों के इतने गहरे रिश्ते होते हैं कि उनकी महफिल लगी ही रहती है। दुष्टों की दुष्ट लोगों से दोस्ती होती है और उनका परस्पर खाना-पीना एवं मेलजोल बना रहता है। ऐसे पापी लोग भगवान् की महिमा के महत्व को बिल्कुल नहीं जानते और उनके मन में हमेशा शैतान वास करता है। यदि गधे को चन्दन का लेप कर दिया जाए तो भी वह धूल में ही लेटता है। हे नानक! झूठ का सूत कातने से झूठ का ही ताना तना जाता है और झूठा कपड़ा नाप दिया जाता है। झूठ उनका वस्त्र है और झूठ ही उनका आहार है॥ १॥

म: १ ॥ बांगा बुरगू सिंडीआ नाले मिली कलाण ॥ इकि दाते इकि मंगते नामु तेरा परवाणु ॥ नानक जिन्ही सुणि कै मंनिआ हउ तिना विटहु कुरबाणु ॥ २ ॥

महला १॥ नमाज की बाँग देने वाला मौलवी, तूती बजाने वाला फकीर, सिंगी बजाने वाला योगी तथा नकल करने वाले मिरासी भी लोगों से माँगते फिरते हैं। हे प्रभु! दुनिया में कोई दानी

है और कोई भिखारी है, मगर सत्य के दरबार में तेरा नाम ही मंजूर होता है। हे नानक! मैं उन पर कुर्बान जाता हूँ, जिन्होंने नाम सुनकर उसका मनन किया है॥ २॥

पउड़ी ॥ माइआ मोहु सभु कूड़ु है कूड़ो होइ गइआ ॥ हउमै झगड़ा पाइओनु झगड़ै जगु मुइआ ॥ गुरमुखि झगड़ु चुकाइओनु इको रवि रहिआ ॥ सभु आतम रामु पछाणिआ भउजलु तरि गइआ ॥ जोति समाणी जोति विचि हरि नामि समइआ ॥ १४ ॥

पउड़ी॥ माया का मोह सब झूठ है और यह अंत में झूठा ही सिद्ध हुआ। इन्सान के अभिमान ने ही झगड़ा उत्पन्न किया है और सारी दुनिया झगड़े में पड़कर नष्ट हो गई है। गुरुमुख ने झगड़ा समाप्त कर दिया है और उसे एक ईश्वर ही सबमें नजर आता है। उसने आत्मा में ही परमात्मा को पहचान लिया है, जिससे वह भवसागर से पार हो गया है। उसकी ज्योति परम ज्योति में विलीन हो गई है और वह हरि-नाम में ही समा गया है॥ १४॥

सलोक म: १ ॥ सतिगुर भीखिआ देहि मै तूं संम्रथु दातारु ॥ हउमै गरबु निवारीऐ कामु क्रोधु अहंकारु ॥ लबु लोभु परजालीऐ नामु मिलै आधारु ॥ अहिनिसि नवतन निरमला मैला कबहूं न होइ ॥ नानक इह बिधि छुटीऐ नदरि तेरी सुखु होइ ॥ १ ॥

श्लोक महला १॥ हे सतगुरु! तू समर्थ एवं दानशील है, मुझे नाम रूपी भिक्षा दे दो। मेरा अभिमान एवं घमण्ड दूर कर दो और काम, क्रोध एवं अहंकार को पूर्णतया नष्ट कर दो। मेरे लालच एवं लोभ को जला दीजिए ताकि मुझे मेरे जीवन का आधार नाम मिल जाए। यह नाम दिन-रात नवनूतन एवं निर्मल रहता है और कभी मैला नहीं होता। नानक प्रार्थना करते हैं कि हे मेरे सतगुरु! इस विधि द्वारा मैं बन्धनों से छूट सकता हूँ और तेरी कृपा-दृष्टि से ही सुख उपलब्ध हो सकता है॥ १॥

म: १ ॥ इको कंतु सबाईआ जिती दरि खड़ीआह ॥ नानक कंतै रतीआ पुछहि बातड़ीआह ॥ २ ॥

महला १॥ जितनी भी जीव-स्त्रियाँ द्वार पर खड़ी हैं, एक ईश्वर ही उन सबका पति है। हे नानक! पति-प्रभु के प्रेम में लीन हुईं, वे एक दूसरे से उसकी बातें पूछती हैं॥ २॥

म: १ ॥ सभे कंतै रतीआ मै दोहागणि कितु ॥ मै तनि अवगण एतड़े खसमु न फेरे चितु ॥ ३ ॥

महला १॥ सब जीव-स्त्रियाँ प्रभु-पति के प्रेम में लीन हैं, परन्तु मैं दुहागिन कौन-सी गिनती में हूँ? मेरे तन में इतने अवगुण हैं कि मेरा मालिक मेरी तरफ अपना चित्त भी नहीं करता॥ ३॥

म: १ ॥ हउ बलिहारी तिन कउ सिफति जिना दै वाति ॥ सभि राती सोहागणी इक मै दोहागणि राति ॥ ४ ॥

महला १॥ जिनके मुँह पर परमात्मा की स्तुति है, मैं उन पर कुर्बान जाती हूँ। हे प्रभु! तू सभी रातें सुहागिनों को दे रहा है, किन्तु मुझ दुहागिन को एक रात ही दे दो॥ ४॥

पउड़ी ॥ दरि मंगतु जाचै दानु हरि दीजै क्रिपा करि ॥ गुरमुखि लेहु मिलाइ जनु पावै नामु हरि ॥ अनहद सबदु वजाइ जोती जोति धरि ॥ हिरदै हरि गुण गाइ जै जै सबदु हरि ॥ जग महि वरतै आपि हरि सेती प्रीति करि ॥ १५ ॥

पउड़ी॥ हे हरि! मैं भिखारी तुझ से एक दान माँगता हूँ, अपनी कृपा करके मुझे यह दान दीजिए। गुरु के माध्यम से मुझे अपने साथ मिला लो, ताकि मैं तेरा हरि-नाम पा लूँ। मैं अपने मन में अनहद शब्द बजाऊँ और अपनी ज्योति परमज्योति में मिला दूँ। मैं अपने हृदय में

हरि का गुणगान करूँ, हरिनाम की जय-जयकार करता रहूँ। हरि से ही प्रेम करो, क्योंकि वह समूचे जगत् में व्यापक है॥ १५॥

सलोक म: १ ॥ जिनी न पाइओ प्रेम रसु कंत न पाइओ साउ ॥ सुंञे घर का पाहुणा जिउ आइआ तिउ जाउ ॥ १ ॥

श्लोक महला १॥ जिन्होंने प्रेम रस नहीं पाया और अपने पति-प्रभु से रमण नहीं किया, वे सूने घर में उस अतिथि की तरह हैं जो जैसे आया है, वैसे ही लौट जाता है॥ १॥

म: १ ॥ सउ ओलाम्हे दिनै के राती मिलन्हि सहंस ॥ सिफति सलाहणु छडि कै करंगी लगा हंसु ॥ फिटु इवेहा जीविआ जितु खाइ वधाइआ पेटु ॥ नानक सचे नाम विणु सभो दुसमनु हेतु ॥ २ ॥

महला १॥ पाप-कर्म में लीन रहने वाला दिन-रात सैकड़ों-हजारों शिकायतों का हकदार बन जाता है। यह जीव रूपी हंस, परमात्मा की स्तुति को छोड़कर मृत पशुओं की हड्डियों को ढूँढने लग गया है अर्थात् विकार भोगने लग गया है। उसका ऐसा जीना धिक्कार योग्य है, जिसमें स्वादिष्ट पदार्थ खा-खाकर उसने अपना पेट बढ़ा लिया है। हे नानक! सत्य-नाम के बिना ये सारे मोह जीव के दुश्मन अर्थात् हानिकारक बन जाते हैं॥ २॥

पउड़ी ॥ ढाढी गुण गावै नित जनमु सवारिआ ॥ गुरमुखि सेवि सलाहि सचा उर धारिआ ॥ घरु दरु पावै महलु नामु पिआरिआ ॥ गुरमुखि पाइआ नामु हउ गुर कउ वारिआ ॥ तू आपि सवारहि आपि सिरजनहारिआ ॥ १६ ॥

पउड़ी॥ ढाढी ने नित्य परमात्मा का गुणगान करके अपना जन्म सफल कर लिया है। गुरु के माध्यम से भक्ति एवं स्तुतिगान करके उसने सत्य को अपने हृदय में बसा लिया है। उसने नाम से प्रेम करके प्रभु का द्वार-घर पा लिया है। उसने गुरु के माध्यम से नाम को प्राप्त किया है, मैं उस गुरु पर न्यौछावर हूँ। हे सृजनहार! तू स्वयं सबको संवारने वाला है॥ १६॥

सलोक म: १ ॥ दीवा बलै अंधेरा जाइ ॥ बेद पाठ मति पापा खाइ ॥ उगवै सूरु न जापै चंदु ॥ जह गिआन प्रगासु अगिआनु मिटंतु ॥ बेद पाठ संसार की कार ॥ पढ़ि पढ़ि पंडित करहि बीचार ॥ बिनु बूझे सभ होइ खुआर ॥ नानक गुरमुखि उतरसि पारि ॥ १ ॥

श्लोक महला १॥ जैसे दीया जलाने से अँधेरा दूर हो जाता है, वैसे ही वेद इत्यादि ग्रंथों का पाठ पापों वाली मति को नाश कर देता है। जैसे सूर्योदय होने से चाँद नजर नहीं आता, वैसे ही ज्ञान का प्रकाश होने से अज्ञान मिट जाता है। वेदों का पाठ संसार का एक व्यवसाय बन गया है। पण्डित वेदों को पढ़-पढ़कर विचार करते हैं किन्तु सूझ के बिना वे सभी ख्वार होते हैं। हे नानक! गुरु के माध्यम से ही इन्सान भवसागर से पार हो सकता है॥ १॥

म: १ ॥ सबदै सादु न आइओ नामि न लगो पिआरु ॥ रसना फिका बोलणा नित होइ खुआरु ॥ नानक पइऐ किरति कमावणा कोइ न मेटणहारु ॥ २॥

महला १॥ जिस व्यक्ति को ब्रह्म-शब्द का आनंद नहीं आया और नाम से भी प्यार नहीं लगा, वह जुबान द्वारा फीका बोलने से नित्य ख्वार होता रहता है। हे नानक! व्यक्ति को अपनी किस्मत में लिखा हुआ कर्म ही करना पड़ता है, जिसे कोई भी टालने वाला नहीं है॥ २॥

पउड़ी ॥ जि प्रभु सालाहे आपणा सो सोभा पाए ॥ हउमै विचहु दूरि करि सचु मंनि वसाए ॥

सचु बाणी गुण उचरै सचा सुखु पाए ॥ मेलु भइआ चिरी विछुंनिआ गुर पुरखि मिलाए ॥ मनु मैला इव सुधु है हरि नामु धिआए ॥ १७ ॥

पउड़ी॥ जो अपने प्रभु की स्तुति करता है, उसे दुनिया में बड़ी शोभा प्राप्त होती है। वह अपने अभिमान को दूर करके मन में सत्य को बसा लेता है। वह सच्ची वाणी द्वारा परमात्मा का गुणगान करता है और सच्चा सुख हासिल करता है। चिरकाल से बिछुड़े हुए जीव का मिलन हो गया है, गुरु ने उसे परमात्मा से मिला दिया है। इस तरह हरि-नाम का ध्यान करने से जीव का मैला मन शुद्ध हो जाता है॥ १७॥

सलोक म: १ ॥ काइआ कूमल फुल गुण नानक गुपसि माल ॥ एनी फुली रउ करे अवर कि चुणीअहि डाल ॥ १ ॥

श्लोक महला १॥ हे नानक! यह मानव-शरीर कोंपलों एवं गुण फूलों की मानिंद हैं। अतः इन गुण रूपी फूलों की माला बनाकर भगवान् के समक्ष अर्पण करनी चाहिए। इन फूलों का हार बनाने के बाद अन्य डालियां चुनने की कोई जरूरत नहीं रहती॥ १॥

महला २ ॥ नानक तिना बसंतु है जिन्ह घरि वसिआ कंतु ॥ जिन के कंत दिसापुरी से अहिनिसि फिरहि जलंत ॥ २ ॥

महला १॥ हे नानक! उन स्त्रियों के लिए सदैव वसंत है, जिनका पति-प्रभु उनके घर में ही स्थित है। लेकिन जिन स्त्रियों के पति परदेस गए हैं, वे दिन-रात वियोग में जलती रहती हैं॥ २॥

पउड़ी ॥ आपे बखसे दइआ करि गुर सतिगुर बचनी ॥ अनदिनु सेवी गुण रवा मनु सचै रचनी ॥ प्रभु मेरा बेअंतु है अंतु किनै न लखनी ॥ सतिगुर चरणी लगिआ हरि नामु नित जपनी ॥ जो इछै सो फलु पाइसी सभि घरै विचि जचनी ॥ १८ ॥

पउड़ी॥ गुरु के वचन द्वारा प्रभु दया करके स्वयं ही बख्शिश कर देता है। मैं दिन-रात परमात्मा की उपासना एवं उसका गुणगान करता रहता हूँ। मेरा मन परम-सत्य में ही लीन रहता है। मेरा प्रभु बेअंत है और किसी ने भी उसका रहस्य नहीं समझा। गुरु के चरणों में लगकर नित्य हरि-नाम का जाप करना चाहिए। इस प्रकार मनोवांछित फल प्राप्त होता है और सभी मुरादें घर में पूरी हो जाती हैं॥ १८॥

सलोक म: १ ॥ पहिल बसंतै आगमनि पहिला मउलिओ सोइ ॥ जितु मउलिऐ सभ मउलीऐ तिसहि न मउलिहु कोइ ॥ १ ॥

श्लोक महला १॥ सर्वप्रथम वसंत ऋतु का आगमन होता है परन्तु उससे भी पहले परमात्मा था, जो सबसे पहले विकसित हुआ है। उसके विकसित होने से सबका विकास होता है। मगर परमात्मा किसी के द्वारा विकसित नहीं होता, वह स्वयंभू है॥ १॥

म: २ ॥ पहिल बसंतै आगमनि तिस का करहु बीचारु ॥ नानक सो सालाहीऐ जि सभसै दे आधारु ॥ २ ॥

महला २॥ उसका चिंतन करो, जो वसंत ऋतु के आगमन से पहले भी मौजूद था। हे नानक! उस परमात्मा की प्रशंसा करनी चाहिए, जो सबको सहारा देता है॥ २॥

म: २ ॥ मिलिऐ मिलिआ ना मिलै मिलै मिलिआ जे होइ ॥ अंतर आतमै जो मिलै मिलिआ कहीऐ सोइ ॥ ३ ॥

महला २॥ निरा कहने से ही मिलाप नहीं होता, सच्चा मिलन तो ही होता है, अगर सचमुच मिलाप हो जाए। जो अपनी अन्तरात्मा में मिल गया है, उसे ही मिलन कहना चाहिए॥ ३॥

पउड़ी ॥ हरि हरि नामु सलाहीऐ सचु कार कमावै ॥ दूजी कारै लगिआ फिरि जोनी पावै ॥ नामि रतिआ नामु पाईऐ नामे गुण गावै ॥ गुर कै सबदि सलाहीऐ हरि नामि समावै ॥ सतिगुर सेवा सफल है सेविऐ फल पावै ॥ १६ ॥

पउड़ी॥ प्रभु-नाम का स्तुतिगान करो, वास्तव में यही सत्कर्म करना चाहिए। संसार के अन्य कार्यों में संलग्न रहने वाला पुनः योनि प्राप्त करता है। नाम में लीन रहने से नाम ही प्राप्त होता है और प्रभु-नाम का ही गुणगान करना चाहिए, गुरु के उपदेश द्वारा परमात्मा की प्रशंसा करने वाला नाम में ही विलीन हो जाता है। सतगुरु की सेवा ही सफल है, सेवा करने से फल की प्राप्ति होती है॥ १६॥

सलोक म: २ ॥ किस ही कोई कोइ मंञु निमाणी इकु तू ॥ किउ न मरीजै रोइ जा लगु चिति न आवही ॥ १ ॥

श्लोक महला २॥ हे परमात्मा! हर किसी का कोई न कोई सहारा है, पर मुझ विनीत का एक तू ही सहारा है। जब तक तू मेरे चित्त में आकर नहीं बसता, तब तक क्यों न मैं रो रो कर मृत्यु को प्राप्त हो जाऊँ॥ १॥

म: २ ॥ जां सुखु ता सहु राविओ दुखि भी संम्हालिओइ ॥ नानकु कहै सिआणीए इउ कंत मिलावा होइ ॥ २ ॥

महला २॥ अगर सुख हो तो भी पति-प्रभु को स्मरण करो और दुख में भी उसकी स्मृति में लीन रहो। नानक कहते हैं कि हे बुद्धिमान स्त्री! इस प्रकार पति-प्रभु से सच्चा मिलन होता है॥ २॥

पउड़ी ॥ हउ किआ सालाही किरम जंतु वडी तेरी वडिआई ॥ तू अगम दइआलु अगंमु है आपि लैहि मिलाई ॥ मै तुझ बिनु बेली को नही तू अंति सखाई ॥ जो तेरी सरणागती तिन लैहि छडाई ॥ नानक वेपरवाहु है तिसु तिलु न तमाई ॥ २० ॥ १ ॥

पउड़ी॥ हे ईश्वर! तेरी महिमा बहुत बड़ी है, फिर मैं कीड़े जैसा छोटा-सा जीव तेरी क्या स्तुति करूँ? तू अगम्य, दयालु एवं अपरंपार है और स्वयं ही अपने साथ मिला लेता है। तेरे सिवा मेरा कोई साथी नहीं है और अन्तिम समय तू ही सहायक होता है। जो तेरी शरण में आता है, तू उसे यम से छुड़ा लेता है। हे नानक! परमात्मा बेपरवाह है और उसे तिल मात्र भी किसी प्रकार का लालच नहीं॥ २०॥ १॥

रागु सूही बाणी स्री कबीर जीउ तथा सभना भगता की ॥ कबीर के १ओं सतिगुर प्रसादि ॥

अवतरि आइ कहा तुम कीना ॥ राम को नामु न कबहू लीना ॥ १ ॥ राम न जपहु कवन मति लागे ॥ मरि जइबे कउ किआ करहु अभागे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ दुख सुख करि कै कुटंबु जीवाइआ ॥ मरती बार इकसर दुखु पाइआ ॥ २ ॥ कंठ गहन तब करन पुकारा ॥ कहि कबीर आगे ते न संम्हारा ॥ ३ ॥ १ ॥

हे भाई! दुर्लभ मानव-जन्म लेकर तूने क्या किया है? राम का नाम तो कभी मुख से लिया ही नहीं॥ १॥ राम का नाम न जपकर तू कौन-सी मति में लग गया है। हे अभागे! तू मृत्यु के समय भी क्या कर रहा है॥ १॥ रहाउ॥ तूने दुखों को भी सुख मानकर अपने परिवार का पोषण

किया और अब मृत्यु के समय भी दुख ही दुख भोग रहा है॥ २॥ अब जब यमदूतों ने तुझे गले से पकड़ लिया है तो तू ज़ोर-ज़ोर से चिल्ला रहा है। कबीर जी कहते हैं कि हे भाई ! तूने पहले ही ईश्वर का स्मरण क्यों नहीं किया॥ ३॥ १॥

सूही कबीर जी ॥ थरहर कंपै बाला जीउ ॥ ना जानउ किआ करसी पीउ ॥ १ ॥ रैनि गई मत दिनु भी जाइ ॥ भवर गए बग बैठे आइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ काचै करवै रहै न पानी ॥ हंसु चलिआ काइआ कुमलानी ॥ २ ॥ कुआर कंनिआ जैसे करत सीगारा ॥ किउ रलीआ मानै बाझु भतारा ॥ ३ ॥ काग उडावत भुजा पिरानी ॥ कहि कबीर इह कथा सिरानी ॥ ४ ॥ २ ॥

जीव-रूपी कन्या मिलन के समय थर-थर काँपती है और यह नहीं जानती कि उसका प्रियतम उससे क्या करेगा॥ १॥ उसकी जवानी रूपी रात्रि नाम-सिमरन के बिना ही बीत गई है और उसे डर है कि उसका बुढ़ापा रूपी दिन भी यूं ही न गुजर जाए। उसके काले केश रूपी भँवरे उड़ चुके हैं और सफेद केश रूपी बगुले आकर बैठ गए हैं॥ १॥ रहाउ॥ कच्चे घड़े में पानी कभी नहीं रहता, वैसे ही यह शरीर है। जब आत्मा रूपी हंस उड़ जाता है तो शरीर मुरझा जाता है॥ २॥ जैसे कुमारी कन्या अपना श्रृंगार करती है लेकिन अपने पति के बिना वह रंगरलियां नहीं मना सकती॥ ३॥ पति-प्रभु की प्रतीक्षा में कौआ उड़ाते हुए मेरी बाँहें थक चुकी हैं, पर पति-परमेश्वर नहीं आया। कबीर जी कहते हैं कि मेरी यह जीवन-कथा अब समाप्त हो गई है॥ ४॥ २॥

सूही कबीर जीउ ॥ अमलु सिरानो लेखा देना ॥ आए कठिन दूत जम लेना ॥ किआ तै खटिआ कहा गवाइआ ॥ चलहु सिताब दीबानि बुलाइआ ॥ १ ॥ चलु दरहालु दीवानि बुलाइआ ॥ हरि फुरमानु दरगह का आइआ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ करउ अरदासि गाव किछु बाकी ॥ लेउ निबेरि आजु की राती ॥ किछु भी खरचु तुम्हारा सारउ ॥ सुबह निवाज सराइ गुजारउ ॥ २ ॥ साधसंगि जा कउ हरि रंगु लागा ॥ धनु धनु सो जनु पुरखु सभागा ॥ ईत ऊत जन सदा सुहेले ॥ जनमु पदारथु जीति अमोले ॥ ३ ॥ जागतु सोइआ जनमु गवाइआ ॥ मालु धनु जोरिआ भइआ पराइआ ॥ कहु कबीर तेई नर भूले ॥ खसमु बिसारि माटी संगि रूले ॥ ४ ॥ ३ ॥

कठोर स्वभाव वाले यमदूत जीव को लेने के लिए आ गए हैं और वे उससे कहते हैं कि तेरा अब इस शरीर पर अख्तियार समाप्त हो गया है। अब तुझे अपने कर्मों का लेखा देना पड़ेगा कि इस जगत् में आकर तूने क्या अर्जित किया है और क्या गंवाया है ? शीघ्र चलो, तुझे यमराज ने बुलाया है॥ १॥ इसी हालत में चलो, यमराज ने अपनी कचहरी में बुलाया है। परमात्मा के दरबार का हुक्म आया है॥ १॥ रहाउ॥ जीव कहता है कि हे यमदूतो ! मैं आप से प्रार्थना करता हूँ कि मेरी कुछ रकम गाँव में से लेनी शेष रहती है। मैं आज रात को ही वह लेन-देन समाप्त कर लूँगा। कुछ तुम्हारे खर्च का भी प्रबंध कर लूँगा। सुबह की नमाज सराय में ही पढ़ लूँगा॥ २॥ साधु संगति में मिलकर जिसे हरि का रंग लग गया है, वह धन्य है, वही भाग्यशाली पुरुष है। ऐसा व्यक्ति लोक-परलोक दोनों में सुखी रहता है। उसने अमूल्य जन्म पदार्थ जीत लिया है॥ ३॥ जो व्यक्ति सचेत रहता हुआ भी अज्ञान की नींद में सोया रहा है, उसने अपना अमूल्य जन्म व्यर्थ गंवा लिया है। उसने जो धन संपति अर्जित की थी, उसके मरणोपरांत सब पराया हो गया है। कबीर जी कहते हैं कि वही व्यक्ति भूले हुए हैं, जो परमात्मा को भुलाकर मिट्टी में मिल गए हैं॥ ४॥ ३॥

सूही कबीर जीउ ललित ॥ थाके नैन स्रवन सुनि थाके थाकी सुंदरि काइआ ॥ जरा हाक दी सभ मति थाकी एक न थाकसि माइआ ॥ १ ॥ बावरे तै गिआन बीचारु न पाइआ ॥ बिरथा जनमु गवाइआ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ तब लगु प्रानी तिसै सरेवहु जब लगु घट महि सासा ॥ जे घटु जाइ त भाउ न जासी

हरि के चरन निवासा ॥ २ ॥ जिस कउ सबदु बसावै अंतरि चूकै तिसहि पिआसा ॥ हुकमै बूझै चउपड़ि खेलै मनु जिणि ढाले पासा ॥ ३ ॥ जो जन जानि भजहि अबिगत कउ तिन का कछू न नासा ॥ कहु कबीर ते जन कबहु न हारहि ढालि जु जानहि पासा ॥ ४ ॥ ४ ॥

हे जीव ! देख-देख कर तेरे नयन थक चुके हैं, सुन-सुनकर तेरे कान भी थक चुके हैं और तेरी सुन्दर काया भी थक चुकी है। बुढ़ापा आने से तेरी सारी अक्ल भी थक गई है परन्तु एक माया का ही मोह नहीं थकता॥ १॥ हे बावरे ! तूने ज्ञान की सूझ प्राप्त नहीं की और अपना जन्म व्यर्थ गंवा दिया है॥ १॥ रहाउ॥ हे प्राणी ! जब तक शरीर में जीवन-साँसें चल रही हैं, तब तक भगवान् का सिमरन करते रहो। यदि तेरा शरीर नाश भी हो जाए तो भी परमात्मा का प्रेम खत्म नहीं होगा और हरि के चरणों में तेरा निवास हो जाएगा॥ २॥ परमात्मा जिसके हृदय में अपना शब्द बसा देता है, उसकी तृष्णा मिट जाती है। वह उसके हुक्म को समझकर अपनी जीवन रूपी चौपड़ का खेल खेलता है। वह अपना मन जीतकर पासा फैंकता है॥ ३॥ जो व्यक्ति इस विधि को समझकर भगवान् का भजन करते रहते हैं, उनका कुछ भी नाश नहीं होता। कबीर जी कहते हैं कि वे मनुष्य कदापि अपनी जीवन बाजी नहीं हारते जो यह पासा फैंकना जानते हैं॥ ४॥ ४॥

सूही ललित कबीर जीउ ॥ एकु कोटु पंच सिकदारा पंचे मागहि हाला ॥ जिमी नाही मै किसी की बोई ऐसा देनु दुखाला ॥ १ ॥ हरि के लोगा मोकउ नीति डसै पटवारी ॥ ऊपरि भुजा करि मै गुर पहि पुकारिआ तिनि हउ लीआ उबारी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ नउ डाडी दस मुंसफ धावहि रईअति बसन न देही ॥ डोरी पूरी मापहि नाही बहु बिसटाला लेही ॥ २ ॥ बहतरि घर इकु पुरखु समाइआ उनि दीआ नामु लिखाई ॥ धरम राइ का दफतरु सोधिआ बाकी रिजम न काई ॥ ३ ॥ संता कउ मति कोई निंदहु संत रामु है एको ॥ कहु कबीर मै सो गुरु पाइआ जा का नाउ बिबेको ॥ ४ ॥ ५ ॥

मानव शरीर एक दुर्ग है। काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार—यह पाँचों विकार इस दुर्ग के अधिकारी हैं और यह पाँचों ही मुझसे कर माँगते हैं। मैंने इन में से किसी की जमीन तो बोई नहीं, फिर भी वे मुझे ऐसा दुख दे रहे हैं, जैसे मैंने उनकी जमीन बोई हुई है॥ १॥ हे भगवान् के भक्तो ! मुझे नित्य मृत्यु रूपी पटवारी का डर डंसता रहता है, अर्थात् दुखी करता है। जब मैंने बांहें ऊँची करके गुरु से पुकार की तो उसने मुझे इन से बचा लिया॥ १॥ रहाउ॥ शरीर के नौ द्वार रूपी परिमापक एवं दस न्यायाधीश—पाँच ज्ञानेन्द्रियाँ व पाँच कर्मेन्द्रियाँ दौड़ते रहते हैं और वे सत्य, संतोष, दया, धर्म इत्यादि प्रजा को बसने नहीं देते। वे परिमापक पूरा माप भी नहीं करते तथा बहुत रिश्वत लेते हैं॥ २॥ मेरे शरीर रूपी घर की बहत्तर नाड़ियों में जो पुरुष समाया हुआ है, उसने मेरे लेखे में परमात्मा का नाम लिख दिया है। जब यमराज के दफ्तर में मेरे कर्मों के लेखे की जाँच पड़ताल हुई तो मेरी तरफ से थोड़ा-सा ऋण नहीं निकला॥ ३॥ कोई भी संतों की निन्दा मत करे, क्योंकि संत एवं राम एक ही रूप हैं। कबीर जी कहते हैं कि मैंने वह गुरु पा लिया है, जिसका नाम विवेक है॥ ४॥ ५॥

रागु सूही बाणी स्री रविदास जीउ की ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

सह की सार सुहागनि जानै ॥ तजि अभिमानु सुख रलीआ मानै ॥ तनु मनु देइ न अंतरु राखै ॥ अवरा देखि न सुनै अभाखै ॥ १ ॥ सो कत जानै पीर पराई ॥ जा कै अंतरि दरदु न पाई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ दुखी दुहागनि दुइ पख हीनी ॥ जिनि नाह निरंतरि भगति न कीनी ॥ पुर सलात का पंथु दुहेला ॥ संगि न साथी गवनु इकेला ॥ २ ॥ दुखीआ दरदवंदु दरि आइआ ॥ बहुतु पिआस जबाबु न पाइआ ॥ कहि रविदास सरनि प्रभ तेरी ॥ जिउ जानहु तिउ करु गति मेरी ॥ ३ ॥ १ ॥

सुहागिन ही अपने मालिक-प्रभु का महत्व जानती है। वह अपने अभिमान को तजकर सुख एवं रंगरलियां मनाती है। वह तन-मन अपने परमेश्वर को अर्पण कर देती है और उससे कोई अंतर नहीं रखती। वह दूसरों की ओर देखती नहीं, न उनकी बात सुनती है और न ही अशुभ वचन बोलती है॥ १॥ जिसके अन्तर्मन में प्रेम की पीड़ा कभी आई ही न हो, वह पराया दर्द कैसे समझ सकता है॥ १॥ रहाउ॥ जिस जीव-स्त्री ने अपने परमात्मा की निरंतर भक्ति नहीं की, वह दुहागिन दुखी ही रहती है और लोक-परलोक से भी वंचित हो जाती है। मृत्यु का मार्ग बड़ा दुखदायक है, जीव के साथ उसका कोई संगी एवं साथी नहीं होता और उसे अकेले ही जाना पड़ता है॥ २॥ हे परमात्मा! मैं दुखिया एवं दर्दमंद तेरे द्वार पर आया हूँ। मुझे तेरे दर्शनों की तीव्र लालसा है, किन्तु तेरी ओर से मुझे कोई जवाब नहीं मिला। रविदास जी प्रार्थना करते हैं कि हे प्रभु! मैं तेरी शरण में आया हूँ, जैसे तू उपयुक्त समझता है, वैसे ही मेरी गति कर॥ ३॥ १॥

सूही ॥ जो दिन आवहि सो दिन जाही ॥ करना कूचु रहनु थिरु नाही ॥ संगु चलत है हम भी चलना ॥ दूरि गवनु सिर ऊपरि मरना ॥ १ ॥ किआ तू सोइआ जागु इआना ॥ तै जीवनु जगि सचु करि जाना ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जिनि जीउ दीआ सु रिजकु अंबरावै ॥ सभ घट भीतरि हाटु चलावै ॥ करि बंदिगी छाडि मै मेरा ॥ हिरदै नामु सम्हारि सवेरा ॥ २ ॥ जनमु सिरानो पंथु न सवारा ॥ सांझ परी दह दिस अंधिआरा ॥ कहि रविदास निदानि दिवाने ॥ चेतसि नाही दुनीआ फन खाने ॥ ३ ॥ २ ॥

जीवन का जो दिन आता है, वह बीत जाता है। प्रत्येक व्यक्ति ने एक न एक दिन यहाँ से चले जाना है और किसी ने भी यहाँ स्थिर नहीं रहना है। हमारे साथी इस जग से चले जा रहे हैं और हमने भी यहाँ से चले जाना है। मृत्यु हमारे सिर पर खड़ी है और बहुत दूर गमन करना है॥ १॥ हे नादान इन्सान! तू क्यों अज्ञान की नींद में सोया हुआ है। जाग जा। तूने जगत् में जीवन को सत्य समझ लिया है॥ १॥ रहाउ॥ जिस परमात्मा ने जीवन दिया है, वही आहार देकर देखभाल भी करता है। सभी शरीरों में वह अपनी दुकान चला रहा है। हे इन्सान! अपने अहंत्व एवं ममत्व को छोड़कर भगवान् की भक्ति करो। अभी यह तेरे जीवन का सुबह का समय है, अपने हृदय में नाम-सिमरन करो॥ २॥ तेरा सारा जन्म बीत गया है, पर अभी तक तूने परलोक का मार्ग नहीं संवारा। संध्या हो चुकी है अर्थात् बुढ़ापे का प्रवेश हो चुका है और दसों दिशाओं में अज्ञान रूपी अंधेरा हो गया है। रविदास जी कहते हैं कि हे नादान एवं दीवाने! अब भी परमात्मा को याद क्यों नहीं कर रहा? यह दुनिया जीवों का नाशवान घर है॥ ३॥ २॥

सूही ॥ ऊचे मंदर साल रसोई ॥ एक घरी फुनि रहनु न होई ॥ १ ॥ इहु तनु ऐसा जैसे घास की टाटी ॥ जलि गइओ घासु रलि गइओ माटी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ भाई बंध कुटंब सहेरा ॥ ओइ भी लागे काढु सवेरा ॥ २ ॥ घर की नारि उरहि तन लागी ॥ उह तउ भूतु भूतु करि भागी ॥ ३ ॥ कहि रविदास सभै जगु लूटिआ ॥ हम तउ एक रामु कहि छूटिआ ॥ ४ ॥ ३ ॥

जिस व्यक्ति के पास ऊँचे महल एवं सुन्दर रसोईघर थे, मरणोपरांत उसे एक घड़ी भी इनमें रहने के लिए नहीं मिला॥ १॥ यह शरीर ऐसे है, जैसे घास की छपरी होती है। सारा घास जलकर मिट्टी में मिल जाता है॥ १॥ रहाउ॥ जब व्यक्ति की जीवनलीला समाप्त हो जाती है तो उसके भाई, रिश्तेदार, परिवार वाले एवं मित्र सभी कहने लग जाते हैं कि इस पार्थिव शरीर को शीघ्र ही घर से निकाल दो॥ २॥ उसकी धर्मपत्नी जो उसके हृदय से लगी रहती थी, वह भी 'भूत-भूत' कहती हुई भाग गई है॥ ३॥ रविदास जी कहते हैं कि विकार रूपी चोरों ने समूचा जगत् लूट लिया है, परन्तु हम एक राम का नाम-सिमरन करके इनसे मुक्त हो गए हैं॥ ४॥ ३॥

१ओं सतिगुर प्रसादि ॥ रागु सूही बाणी सेख फरीद जी की ॥

तपि तपि लुहि लुहि हाथ मरोरउ ॥ बावलि होई सो सहु लोरउ ॥ तै सहि मन महि कीआ रोसु ॥ मुझु अवगन सह नाही दोसु ॥ १ ॥ तै साहिब की मै सार न जानी ॥ जोबनु खोइ पाछै पछुतानी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ काली कोइल तू कित गुन काली ॥ अपने प्रीतम के हउ बिरहै जाली ॥ पिरहि बिहून कतहि सुखु पाए ॥ जा होइ क्रिपालु ता प्रभू मिलाए ॥ २ ॥ विधण खूही मुंध इकेली ॥ ना को साथी ना को बेली ॥ करि किरपा प्रभि साधसंगि मेली ॥ जा फिरि देखा ता मेरा अलहु बेली ॥ ३ ॥ वाट हमारी खरी उडीणी ॥ खंनिअहु तिखी बहुतु पिईणी ॥ उसु ऊपरि है मारगु मेरा ॥ सेख फरीदा पंथु सम्हारि सवेरा ॥ ४ ॥ १ ॥

विरह की आग में जलती मैं हाथ मरोड़ती हूँ और बावली हुई प्रभु-मिलन की अभिलाषा करती हूँ। हे प्रभु! तूने अपने मन में मेरे साथ गुस्सा किया है। तेरा कोई दोष नहीं है, अपितु मुझ में ही अनेक अवगुण हैं॥ १॥ तू मेरा मालिक है, मगर मैंने तेरा महत्व नहीं जाना। मैं अपना यौवन गंवा कर अब पछता रही हूँ॥ १॥ रहाउ॥ हे काली कोयल! तू किस कारण काली हो गई है? कोयल कहती है कि मुझे मेरे प्रियतम के विरह ने जला दिया है। अपने प्रियतम से विहीन होकर वह कैसे सुख पा सकती है। जब प्रभु कृपालु होता है तो वह जीव-स्त्री को स्वयं ही अपने साथ मिला लेता है॥ २॥ मैं जीव-स्त्री अकेली ही इस भयानक संसार रूपी कुएं में गिर गई हूँ। यहाँ मेरा न कोई साथी है और न कोई बेली है। प्रभु ने कृपा करके मुझे साधु-संगत में मिला दिया है। जब फिर मैंने देखा तो बेली बनकर अल्लाह मेरे साथ खड़ा था॥ ३॥ हमारा (भक्ति) मार्ग बड़ा ही उदास करने वाला अर्थात् कठिन है। यह कृपाण की धार से तीक्ष्ण एवं बड़ा नुकीला है। उसके ऊपर मेरा मार्ग है। हे शेख फरीद! अपने जीवन की सुबह ही अपना पथ संवार ले॥ ४॥ १॥

सूही ललित ॥ बेड़ा बंधि न सकिओ बंधन की वेला ॥ भरि सरवरु जब ऊछलै तब तरणु दुहेला ॥ १ ॥ हथु न लाइ कसुंभड़ै जलि जासी ढोला ॥ १ ॥ रहाउ ॥ इक आपीन्है पतली सह केरे बोला ॥ दुधा थणी न आवई फिरि होइ न मेला ॥ २ ॥ कहै फरीदु सहेलीहो सहु अलाएसी ॥ हंसु चलसी डुंमणा अहि तनु ढेरी थीसी ॥ ३ ॥ २ ॥

जब जीवन रूपी बेड़ा बांधने का वक्त था, तब तू बेड़ा बांध नहीं सका। अब जब समुद्र उछल कर लहरें मार रहा है तो उस में से पार होना मुश्किल हो गया है। जब प्रभु-सिमरन का वक्त अर्थात् जवानी थी, तो तूने सिमरन नहीं किया। अब बुढ़ापे में जब विकार समुद्र में भर गए हैं और अपना जोर दिखा रहे हैं तो इन पर काबू पाना मुश्किल हो गया है॥ १॥ हे प्रियवर! कुसुंभ फूल के रंग जैसी माया रूपी आग को अपना हाथ मत लगाना, तेरा हाथ जल जाएगा॥ १ ॥ रहाउ॥ हे जीव-स्त्री! माया के मुकाबले में तू अपने आप में बहुत निर्बल हो बैठी है। तुझे मालिक की डांट पड़ेगी। थन से निकला दूध जैसे थन में वापिस नहीं जाता वैसे ही तेरा यौवन फिर नहीं आएगा और दोबारा उस पति-प्रभु से तेरा मिलाप नहीं होगा॥ २॥ फरीद जी कहते हैं कि हे सहेलियो! जब मालिक-प्रभु बुलाएगा तो यह शरीर मिट्टी का ढेर हो जाएगा और जीवात्मा रूपी हंस उदास होकर यहाँ से चला जाएगा॥ ३॥ २॥

१ओ सति नामु करता पुरखु निरभउ निरवैरु अकाल मूरति अजूनी सैभं गुर प्रसादि ॥

ओंकार एक है, उसका नाम सत्य है, वह आदिपुरुष सृष्टि का रचयिता है, सर्वशक्तिमान है, उसे कोई भय नहीं, उसका किसी से कोई वैर नहीं, वह कालातीत ब्रह्म मूर्ति सदा शाश्वत है, वह जन्म-मरण से रहित है, वह स्वयं ही प्रकाशमान हुआ है, उसे गुरु-कृपा से पाया जा सकता है।

रागु बिलावलु महला १ चउपदे घरु १ ॥

तू सुलतानु कहा हउ मीआ तेरी कवन वडाई ॥ जो तू देहि सु कहा सुआमी मै मूरख कहणु न जाई ॥ १ ॥ तेरे गुण गावा देहि बुझाई ॥ जैसे सच महि रहउ रजाई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जो किछु होआ सभु किछु तुझ ते तेरी सभ असनाई ॥ तेरा अंतु न जाणा मेरे साहिब मै अंधुले किआ चतुराई ॥ २ ॥ किआ हउ कथी कथे कथि देखा मै अकथु न कथना जाई ॥ जो तुधु भावै सोई आखा तिलु तेरी वडिआई ॥ ३ ॥ एते कूकर हउ बेगाना भउका इसु तन ताई ॥ भगति हीणु नानकु जे होइगा ता खसमै नाउ न जाई ॥ ४ ॥ १ ॥

हे परमात्मा ! तू समूची सृष्टि का सुलतान है, अगर मैं तुझे मियाँ कहकर संबोधित कर दूँ, तो भला कौन-सी बड़ी बात है, क्योंकि तेरी महिमा का कोई अन्त नहीं। हे स्वामी ! जो सूझ तू मुझे देता है, मैं वही कहता हूँ, अन्यथा मुझ मूर्ख से कुछ भी कहा नहीं जाता॥ १॥ मुझे ऐसी सूझ दीजिए ताकि मैं तेरा गुणगान करूँ तथा जैसे तेरी रज़ा में मैं सत्य में ही लीन रहूँ॥ १॥ रहाउ॥ दुनिया में जो कुछ भी हुआ है, वह तेरे हुक्म से ही हुआ। यह सब तेरा ही बड़प्पन है। हे मेरे मालिक ! मैं तेरा अंत नहीं जानता, फिर मुझ ज्ञानहीन की चतुराई क्या कर सकती है॥ २॥ हे ईश्वर ! मैं तेरे गुण क्या कथन करूँ ? मैं तेरे गुण कथन करके देखता हूँ लेकिन तू अकथनीय है और मुझ से तेरा कथन नहीं किया जाता। जो तुझे भाता है, वही कहता हूँ और मैं एक तिल मात्र ही तेरी प्रशंसा करता हूँ॥ ३॥ कितने ही कूकर हैं, पर मैं ही एक बेगाना कूकर हूँ, जो अपने इस पेट के लिए भौंकता रहता हूँ। यदि नानक भक्तिविहीन भी हो जाएगा तो भी उसके मालिक का नाम नहीं जाएगा अर्थात् नाम साथ ही चलता रहेगा॥ ४॥ १॥

बिलावलु महला १ ॥ मनु मंदरु तनु वेस कलंदरु घट ही तीरथि नावा ॥ एकु सबदु मेरै प्रानि बसतु है बाहुड़ि जनमि न आवा ॥ १ ॥ मनु बेधिआ दइआल सेती मेरी माई ॥ कउणु जाणै पीर पराई ॥ हम नाही चिंत पराई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ अगम अगोचर अलख अपारा चिंता करहु हमारी ॥ जलि थलि महीअलि भरिपुरि लीणा घटि घटि जोति तुम्हारी ॥ २ ॥ सिख मति सभ बुधि तुम्हारी मंदिर छावा तेरे ॥ तुझ बिनु अवरु न जाणा मेरे साहिबा गुण गावा नित तेरे ॥ ३ ॥ जीअ जंत सभि सरणि तुम्हारी सरब चिंत तुधु पासे ॥ जो तुधु भावै सोई चंगा इक नानक की अरदासे ॥ ४ ॥ २ ॥

हे भाई ! मेरा मन मन्दिर है और यह तन कलंदर (फकीर) का वेष है तथा यह हृदय रूपी तीर्थ में स्नान करता रहता है। मेरे प्राणों में एक शब्द 'ब्रह्म' ही बसता है अतः मैं पुनर्जन्म में नहीं

आऊँगा।। १।। हे मेरी माँ! मेरा मन दया के घर परमात्मा से बिंध गया है, इसलिए पराई पीड़ा को कौन जानता है। हमें अब किसी की चिंता नहीं है।। १।। रहाउ।। हे अगम्य, अगोचर, अलक्ष्य एवं अपरंपार मालिक! हमारी चिंता करो। तू समुद्र, पृथ्वी एवं आकाश में भरपूर होकर सबमें बसा हुआ है और प्रत्येक शरीर में तुम्हारी ही ज्योति विद्यमान है।। २।। हे भगवान्! मुझे सीख, अक्ल एवं बुद्धि यह सब तेरी ही दी हुई है और मन्दिर एवं छायादार वाटिका भी तेरे ही दिए हुए हैं। हे मेरे मालिक! मैं तेरे अलावा किसी को भी नहीं जानता और नित्य तेरे ही गुण गाता रहता हूँ।। ३।। सभी जीव-जन्तु तेरी शरण में हैं और तुझे उन सबकी चिंता है। नानक की एक प्रार्थना है कि हे ईश्वर! जो तुझे भला लगता है, वही मेरे लिए उचित है।। ४।। २।।

बिलावलु महला १ ॥ आपे सबदु आपे नीसानु ॥ आपे सुरता आपे जानु ॥ आपे करि करि वेखै ताणु ॥ तू दाता नामु परवाणु ॥ १ ॥ ऐसा नामु निरंजन देउ ॥ हउ जाचिकु तू अलख अभेउ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ माइआ मोहु धरकटी नारि ॥ भूंडी कामणि कामणिआरि ॥ राजु रूपु झूठा दिन चारि ॥ नामु मिलै चानणु अंधिआरि ॥ २ ॥ चखि छोडी सहसा नही कोइ ॥ बापु दिसै वेजाति न होइ ॥ एके कउ नाही भउ कोइ ॥ करता करे करावै सोइ ॥ ३ ॥ सबदि मुए मनु मन ते मारिआ ॥ ठाकि रहे मनु साचै धारिआ ॥ अवरु न सूझै गुर कउ वारिआ ॥ नानक नामि रते निसतारिआ ॥ ४ ॥ ३ ॥

परमात्मा स्वयं ही ब्रह्म शब्द है और स्वयं ही दरगाह में जाने के लिए परवाना है। वह स्वयं ही अपना यश सुनने वाला श्रोता है और स्वयं ही ज्ञाता है। वह स्वयं ही दुनिया को बनाकर उसकी देखभाल करता रहता है। हे जगत्पालक! तू दाता है और तेरा नाम ही सर्वमान्य है।। १।। हे पावनस्वरूप! तेरा नाम सर्वसुख व मुक्ति प्रदाता है, अतः यही देना। तू अदृष्ट एवं अभेद है और मैं तेरे नाम का याचक हूँ।। १।। रहाउ।। माया का मोह उस कुलटा स्त्री के प्रेम जैसा है, जो बदशक्ल एवं जादू-टोने करती रहती है। राज्य एवं सौन्दर्य झूठे हैं और यह चार दिन ही रहते हैं। जिसे नाम मिल जाता है, उसके अंधेरे हृदय में उजाला हो जाता है।। २।। मैंने चखकर माया छोड़ दी है और मेरे मन में इस बारे कोई सन्देह नहीं है। जिस बच्चे का पिता पास है, उसे कोई अवैध संतान नहीं कहता। परमात्मा की भक्ति करने वाले को कोई भय नहीं रहता। एक ईश्वर ही सबकुछ करता है और वही दूसरों से करवाता है।। ३।। जिनका अभिमान ब्रह्म-शब्द द्वारा समाप्त हो गया है, उसने अपने मन को मन द्वारा नियंत्रण में कर लिया है। जिन्होंने मन को विकारों की तरफ से काबू में कर रखा है, उन्होंने अपना मन सत्य में लीन कर लिया है। मुझे कुछ भी नहीं सूझता, मैं तो गुरु पर ही न्यौछावर हूँ। हे नानक! प्रभु के नाम में लीन रहने वाले व्यक्ति का संसार से निस्तारा हो जाता है।। ४।। ३।।

बिलावलु महला १ ॥ गुर बचनी मनु सहज धिआने ॥ हरि कै रंगि रता मनु माने ॥ मनमुख भरमि भुले बउराने ॥ हरि बिनु किउ रहीऐ गुर सबदि पछाने ॥ १ ॥ बिनु दरसन कैसे जीवउ मेरी माई ॥ हरि बिनु जीअरा रहि न सकै खिनु सतिगुरि बूझ बुझाई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ मेरा प्रभु बिसरै हउ मरउ दुखाली ॥ सासि गिरासि जपउ अपुने हरि भाली ॥ सद बैरागनि हरि नामु निहाली ॥ अब जाने गुरमुखि हरि नाली ॥ २ ॥ अकथ कथा कहीऐ गुर भाइ ॥ प्रभु अगम अगोचरु देइ दिखाइ ॥ बिनु गुर करणी किआ कार कमाइ ॥ हउमै मेटि चलै गुर सबदि समाइ ॥ ३ ॥ मनमुखु विछुड़ै खोटी रासि ॥ गुरमुखि नामि मिलै साबासि ॥ हरि किरपा धारी दासनि दास ॥ जन नानक हरि नाम धनु रासि ॥ ४ ॥ ४ ॥

गुरु के वचनों द्वारा मन सहज ही परमात्मा के ध्यान में मग्न हो गया है और हरि के रंग में लीन हुआ मेरा मन आनंदित हो गया है। स्वेच्छाचारी व्यक्ति भ्रम में भूलकर पगले हो गए हैं।

परमात्मा के चिंतन बिना मैं कैसे रहूँ ? गुरु के शब्द द्वारा उसकी पहचान हो गई है॥ १॥ हे मेरी माई ! भगवान् के दर्शन बिना मैं कैसे जिंदा रहूँ। परमात्मा के सिमरन बिना मेरी जीवन साँसें एक क्षण भर के लिए रह नहीं सकती, चूंकि सतगुरु ने मुझे यह सूझ बता दी है॥ १॥ रहाउ॥ यदि मेरा प्रभु मुझे विस्मृत हो जाता है तो मैं बहुत दुखी होकर मरती हूँ। मैं अपने हरि को ढूँढ़ती हूँ और श्वास-ग्रास से उसे ही जपती रहती हूँ। मैं सदैव के लिए वैरागिन बनकर हरि नाम से आनंदित रहती हूँ। गुरु के माध्यम से अब मैंने जान लिया है कि हरि मेरे साथ ही रहता है॥ २॥ हरि की अकथनीय कथा गुरु के प्रेम द्वारा ही कही जाती है। गुरु ने अगम्य, अगोचर प्रभु दिखा दिया है। गुरु की करनी बिना आदमी क्या कार्य कर सकता है ? जो अपना अभिमान मिटाकर गुरु के निर्देशानुसार चलता है, वह गुरु-शब्द में ही समा जाता है॥ ३॥ मनमुख आदमी परमात्मा से बिछुड़ जाता है और वह झूठी पूंजी संचित करता रहता है। मगर गुरुमुख को सत्य के दरबार में शाबाश मिलती है, जो नाम का लाभ हासिल करता है। हरि ने कृपा करके अपने दासों का दास बना लिया है। हे नानक ! हरि नाम धन ही मेरी जीवन-पूंजी है॥ ४॥ ४॥

बिलावलु महला ३ घरु १ १ओं सतिगुर प्रसादि ॥

ध्रिगु ध्रिगु खाइआ ध्रिगु ध्रिगु सोइआ ध्रिगु ध्रिगु कापड़ु अंगि चड़ाइआ ॥ ध्रिगु सरीरु कुटंब सहित सिउ जितु हुणि खसमु न पाइआ ॥ पउड़ी छुड़की फिरि हाथि न आवै अहिला जनमु गवाइआ ॥ १ ॥ दूजा भाउ न देई लिव लागणि जिनि हरि के चरण विसारे ॥ जगजीवन दाता जन सेवक तेरे तिन के तै दूख निवारे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ तू दइआलु दइआपति दाता किआ एहि जंत विचारे ॥ मुकत बंध सभि तुझ ते होए ऐसा आखि वखाणे ॥ गुरमुखि होवै सो मुकतु कहीऐ मनमुख बंध विचारे ॥ २ ॥ सो जनु मुकतु जिसु एक लिव लागी सदा रहै हरि नाले ॥ तिन की गहण गति कही न जाई सचै आपि सवारे ॥ भरमि भुलाणे सि मनमुख कहीअहि ना उरवारि न पारे ॥ ३ ॥ जिस नो नदरि करे सोई जनु पाए गुर का सबदु सम्हाले ॥ हरि जन माइआ माहि निसतारे ॥ नानक भागु होवै जिसु मसतकि कालहि मारि बिदारे ॥ ४ ॥ १ ॥

उस आदमी का खाना, सोना, शरीर पर कपड़े इत्यादि पहनना सब धिक्कार योग्य है और परिवार सहित उसका शरीर भी धिक्कार योग्य है, जिसने अब इस जन्म में परमेश्वर को नहीं पाया। हाथों से छूटी हुई पौड़ी पुनः हाथ में नहीं आती और उसने अपना दुर्लभ जन्म व्यर्थ ही गंवा लिया है॥ १॥ जिसने भगवान् के सुन्दर चरण भुला दिए हैं, द्वैतभाव उसकी वृत्ति भगवान् में लगने नहीं देता। हे जग के जीवन दाता ! जो तेरे भक्त एवं सेवक हैं, तूने उनके सब दुख समाप्त कर दिए हैं॥ १॥ रहाउ॥ हे प्रभु ! तू बड़ा दयालु है, दयापति है और सबका दाता है। किन्तु ये जीव बेचारे कुछ भी करने में असमर्थ हैं। गुरु ने यह सत्य ही बखान किया है कि प्राणियों का मुक्ति-बन्धन तेरे हुक्म से ही होता है। जो गुरुमुख बन जाता है, उसे बन्धनों से मुक्त कहा जाता है किन्तु बेचारे मनमुखी इन्सान बन्धनों में फँसे रहते हैं॥ २॥ वही आदमी मुक्त हैं, जिनकी वृत्ति ईश्वर से लग चुकी है और वे सदैव हरि में लीन रहते हैं। सत्यस्वरूप परमात्मा ने उनका जीवन संवार दिया है और उनकी गहन गति वर्णन नहीं की जा सकती। उन्हें मनमुख कहा जाता है, जो भ्रम में फँसकर कुमार्गगामी हो गए हैं और इस तरह के व्यक्ति लोक-परलोक कहीं के भी नहीं रहते॥ ३॥ जिस पर परमात्मा अपनी करुणा-दृष्टि करता है वही उसे पा लेता है और गुरु का शब्द स्मरण करता रहता है। ऐसे भक्तजन माया से मुक्ति प्राप्त कर लेते हैं। हे नानक ! जिसके मस्तक पर उत्तम भाग्य लिखा होता है, वह मौत पर विजय पाकर आवागमन से छूट जाता है॥ ४॥ १॥

बिलावलु महला ३ ॥ अतुलु किउ तोलिआ जाइ ॥ दूजा होइ त सोझी पाइ ॥ तिस ते दूजा नाही कोइ ॥ तिस दी कीमति किकू होइ ॥ १ ॥ गुर परसादि वसै मनि आइ ॥ ता को जाणै दुबिधा जाइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ आपि सराफु कसवटी लाए ॥ आपे परखे आपि चलाए ॥ आपे तोले पूरा होइ ॥ आपे जाणै एको सोइ ॥ २ ॥ माइआ का रूपु सभु तिस ते होइ ॥ जिस नो मेले सु निरमलु होइ ॥ जिस नो लाए लगै तिसु आइ ॥ सभु सचु दिखाले ता सचि समाइ ॥ ३ ॥ आपे लिव धातु है आपे ॥ आपि बुझाए आपे जापे ॥ आपे सतिगुरु सबदु है आपे ॥ नानक आखि सुणाए आपे ॥ ४ ॥ २ ॥

परमात्मा अतुलनीय है, फिर उसे कैसे तोला जा सकता है ? यदि कोई दूसरा उस जैसा हो तो ही वह उसकी सूझ डाले। सत्य तो यही है कि उसके सिवा दूसरा कोई नहीं है। अतः उसकी कीमत कैसे आंकी जाए॥ १॥ गुरु की कृपा से वह मन में आकर बस जाता है और उसे वही जानता है, जिसकी दुविधा दूर हो जाती है॥ १ ॥ रहाउ॥ परमात्मा स्वयं ही सर्राफ है और स्वयं ही जीवों को परखने के लिए कसौटी लगाता है। वह स्वयं उनके गुण-अवगुण की परख करके सन्मार्ग पर चलाता है। वही पूर्ण होता है, जिसे वह स्वयं तोलता है और एक परमात्मा ही सबकुछ जानता है॥ २॥ यह जगत् माया का रूप है और सभी जीव उससे ही उत्पन्न हुए हैं। जिसे वह अपने साथ मिला लेता है, वह निर्मल हो जाता है। जिसे वह माया का मोह लगता है वह उसे ही आकर लग जाती है। जब वह अपना सत्यस्वरूप दिखाता है तो जीव उस सत्य में ही विलीन हो जाता है॥ ३॥ वह स्वयं ही वृत्ति है और स्वयं ही माया है। वह स्वयं ही जीव को सूझ प्रदान करता है और स्वयं ही जीव रूप में अपना नाम जपता रहता है। वह स्वयं ही सद्गुरु है और स्वयं ही शब्द है। हे नानक ! ईश्वर स्वयं ही कहकर जीवों को अपना नाम सुनाता है॥ ४॥ २॥

बिलावलु महला ३ ॥ साहिब ते सेवकु सेव साहिब ते किआ को कहै बहाना ॥ ऐसा इकु तेरा खेलु बनिआ है सभ महि एकु समाना ॥ १ ॥ सतिगुरि परचै हरि नामि समाना ॥ जिसु करमु होवै सो सतिगुरु पाए अनदिनु लागै सहज धिआना ॥ १ ॥ रहाउ ॥ किआ कोई तेरी सेवा करे किआ को करे अभिमाना ॥ जब अपुनी जोति खिंचहि तू सुआमी तब कोई करउ दिखा वखिआना ॥ २ ॥ आपे गुरु चेला है आपे आपे गुणी निधाना ॥ जिउ आपि चलाए तिवै कोई चालै जिउ हरि भावै भगवाना ॥ ३ ॥ कहत नानकु तू साचा साहिबु कउणु जाणै तेरे कामां ॥ इकना घर महि दे वडिआई इकि भरमि भवहि अभिमाना ॥ ४ ॥ ३ ॥

मालिक का बनाया हुआ ही कोई उसका सेवक बनता है और उसे सेवा भी मालिक से ही मिली होती है, फिर कोई यूं ही क्या बहाना बना सकता है ? हे प्रभु ! तेरा एक ऐसा खेल बना हुआ है कि एक तू ही सब जीवों में समाया हुआ है॥ १॥ जब मन सद्गुरु से संतुष्ट हो जाता है तो हरि-नाम में लीन हो जाता है। लेकिन सद्गुरु उसे ही मिलता है, जिस पर परमात्मा मेहर करता है और फिर जीव का रात-दिन परमात्मा में ध्यान लगा रहता है॥ १॥ रहाउ॥ हे परमपिता ! कोई तेरी सेवा क्या कर सकता है और कोई सेवा का क्या अभिमान कर सकता है ? हे स्वामी ! जब तू शरीर में से अपनी प्राण रूपी ज्योति खींच लेता है, तब कोई सेवा करके बखान तो करके दिखाए॥ २॥ गुरु एवं चेला स्वयं परमात्मा ही है और स्वयं गुणों का भण्डार है। हे भगवान् ! जैसे तुझे उपयुक्त लगता है, वैसे ही तेरी इच्छानुसार कोई चलता है॥ ३॥ नानक का कथन है कि हे जगत्पालक ! तू सच्चा मालिक है और तेरे विलक्षण कार्यों को कौन जानता है ? तू किसी को घर बैठे ही यश प्रदान कर देता है और कोई अभिमानी बनकर भ्रम में ही भटकता रहता है॥ ४॥ ३॥

बिलावलु महला ३ ॥ पूरा थाटु बणाइआ पूरै वेखहु एक समाना ॥ इसु परपंच महि साचे नाम की वडिआई मतु को धरहु गुमाना ॥ १ ॥ सतिगुर की जिस नो मति आवै सो सतिगुर माहि समाना ॥ इह बाणी जो जीअहु जाणै तिसु अंतरि रवै हरि नामा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ चहु जुगा का हुणि निबेड़ा नर मनुखा नो एकु निधाना ॥ जतु संजम तीरथ ओना जुगा का धरमु है कलि महि कीरति हरि नामा ॥ २ ॥ जुगि जुगि आपो आपणा धरमु है सोधि देखहु बेद पुराना ॥ गुरमुखि जिनी धिआइआ हरि हरि जगि ते पूरे परवाना ॥ ३ ॥ कहत नानकु सचे सिउ प्रीति लाए चूकै मनि अभिमाना ॥ कहत सुणत सभे सुख पावहि मानत पाहि निधाना ॥ ४ ॥ ४ ॥

हे जिज्ञासु ! देख लो, पूर्ण परमेश्वर ने पूर्ण ही जगत्-प्रपंच बनाया है और वही सब में समाया हुआ है। इस जगत् प्रपंच में सत्य-नाम की ही कीर्ति है, अतः मन में किसी प्रकार का घमण्ड मत करो॥ १॥ जिसे सद्‌गुरु की मत आ जाती है, वह उस में लीन हुआ रहता है, जो इस वाणी को अपने मन में श्रद्धापूर्वक जान लेता है, उसके अन्तर्मन में हरि-नाम स्थित हो जाता है॥ १॥ रहाउ॥ चहुं युगों का अब यही निष्कर्ष है कि मनुष्यों के लिए एक नाम ही अमूल्य भण्डार है। सतियुग, त्रैता एवं द्वापर-उन युगों में ब्रह्मचार्य, संयम तथा तीर्थ स्नान ही धर्म था परन्तु कलियुग में हरि नाम की कीर्ति करना ही विशेष धर्म है॥ २॥ प्रत्येक युग में अपना अपना भिन्न धर्म है। चाहे वेदों एवं पुराणों का अध्ययन करके देख लो। जिन्होंने गुरु के माध्यम से हरि का मनन किया है, वे जगत् में पूर्ण और स्वीकार हो गए हैं॥ ३॥ नानक का कथन है कि जो सत्यस्वरूप परमात्मा से प्रीति लगाता है, उसके मन का अभिमान समाप्त हो जाता है। नाम को सुनने एवं मुँह से जपने वाले सभी सुख हासिल करते हैं परन्तु निष्ठापूर्वक मनन करने वाले गुणों के भण्डार को ही पा लेते हैं॥ ४॥ ४॥

बिलावलु महला ३ ॥ गुरमुखि प्रीति जिस नो आपे लाए ॥ तितु घरि बिलावलु गुर सबदि सुहाए ॥ मंगलु नारी गावहि आए ॥ मिलि प्रीतम सदा सुखु पाए ॥ १ ॥ हउ तिन बलिहारै जिन्ह हरि मंनि वसाए ॥ हरि जन कउ मिलिआ सुखु पाईऐ हरि गुण गावै सहजि सुभाए ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सदा रंगि राते तेरै चाए ॥ हरि जीउ आपि वसै मनि आए ॥ आपे सोभा सद ही पाए ॥ गुरमुखि मेलै मेलि मिलाए ॥ २ ॥ गुरमुखि राते सबदि रंगाए ॥ निज घरि वासा हरि गुण गाए ॥ रंगि चलूलै हरि रसि भाए ॥ इहु रंगु कदे न उतरै साचि समाए ॥ ३ ॥ अंतरि सबदु मिटिआ अगिआनु अंधेरा ॥ सतिगुर गिआनु मिलिआ प्रीतमु मेरा ॥ जो सचि राते तिन बहुड़ि न फेरा ॥ नानक नामु द्रिड़ाए पूरा गुरु मेरा ॥ ४ ॥ ५ ॥

गुरु के ज्ञान द्वारा भगवान् जिसे अपनी प्रीति लगा देता है, उसके हृदय-घर में आनंद पैदा हो जाता है और गुरु के शब्द द्वारा वह सुन्दर बन जाता है। उसकी सत्संगी रूपी नारियाँ आकर मंगल गान करती हैं और वह अपने प्रियतम प्रभु से मिलकर सदैव सुख हासिल करता है॥ १॥ मैं उन पर सदा बलिहारी जाता हूँ, जिन्होंने हरि को अपने मन में बसा लिया है। भक्त को मिलकर बड़ा सुख प्राप्त होता है, जो सहज-स्वभाव भगवान् का गुणगान करने में ही मग्न रहता है॥ १॥ रहाउ॥ हे श्री हरि ! तुझे मिलने के चाव में भक्त तेरे ही रंग में लीन रहते हैं। पर तू स्वयं उनके मन में आकर निवास कर लेता है। ऐसे भक्तजन स्वयं सदैव शोभा हासिल करते हैं। फिर भगवान् उन्हें गुरु के सम्पर्क में मिलाकर अपने साथ मिला लेता है॥ २॥ गुरुमुख शब्द में रंगकर लीन रहते हैं और भगवान् का यशोगान करने से उनका आत्मस्वरूप में निवास हो जाता है। वे परमात्मा के प्रेम रूपी गहरे लाल रंग में अनुरक्त रहते हैं और उन्हें तो हरि-रस ही भाता है। यह प्रेम रूपी

रंग कभी भी नहीं उतरता और वह सत्य में ही विलीन हुए रहते हैं॥ ३॥ उनके अन्तर्मन में शब्द के निवास से अज्ञान रूपी अँधेरा मिट गया है। सद्गुरु का ज्ञान प्राप्त होने से मेरा प्रियतम प्रभु मिल गया है। जो सत्य में लीन रहते हैं, उनका पुनः जन्म-मरण का चक्र नहीं पड़ता। हे नानक! मेरा गुरु पूर्ण है, जो प्रभु का नाम मन में बसाता है॥ ४॥ ५॥

बिलावलु महला ३ ॥ पूरे गुर ते वडिआई पाई ॥ अचिंत नामु वसिआ मनि आई ॥ हउमै माइआ सबदि जलाई ॥ दरि साचै गुर ते सोभा पाई ॥ १ ॥ जगदीस सेवउ मै अवरु न काजा ॥ अनदिनु अनदु होवै मनि मेरै गुरमुखि मागउ तेरा नामु निवाजा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ मन की परतीति मन ते पाई ॥ पूरे गुर ते सबदि बुझाई ॥ जीवण मरणु को समसरि वेखै ॥ बहुड़ि न मरै ना जमु पेखै ॥ २ ॥ घर ही महि सभि कोट निधान ॥ सतिगुरि दिखाए गइआ अभिमानु ॥ सद ही लागा सहजि धिआन ॥ अनदिनु गावै एको नाम ॥ ३ ॥ इसु जुग महि वडिआई पाई ॥ पूरे गुर ते नामु धिआई ॥ जह देखा तह रहिआ समाई ॥ सदा सुखदाता कीमति नही पाई ॥ ४ ॥ पूरै भागि गुरु पूरा पाइआ ॥ अंतरि नामु निधानु दिखाइआ ॥ गुर का सबदु अति मीठा लाइआ ॥ नानक त्रिसन बुझी मनि तनि सुखु पाइआ ॥ ५ ॥ ६ ॥ ४ ॥ ६ ॥ १० ॥

जब पूर्ण गुरु से बड़ाई मिली तो परमात्मा का नाम मन में आकर स्थित हो गया। मैंने माया रूपी अहंत्व को शब्द द्वारा जला दिया है और गुरु द्वारा सत्य के दरबार में बड़ी शोभा हासिल हुई है॥ १॥ अब मैं ईश्वर की उपासना करता रहता हूँ एवं मुझे अन्य कोई कार्य नहीं है। हे प्रभु! मैं तेरा नाम ही माँगता हूँ चूंकि मेरे मन में हर समय आनंद ही आनंद बना रहे॥ १॥ रहाउ॥ मैंने तुझ में मन की श्रद्धा मन से ही हासिल की है और पूर्ण गुरु द्वारा शब्द की सूझ मिली है। जो व्यक्ति जीवन मृत्यु को एक समान समझ लेता है। फिर वह बार-बार मृत्यु को प्राप्त नहीं होता और न ही यम को देखता है॥ २॥ हृदय-घर में अनेक प्रकार के करोड़ों ही खजाने हैं। जब गुरु ने मुझे यह खजाने दिखाए तो मेरा अभिमान दूर हो गया। अब सदैव ही परमात्मा में ध्यान लगा रहता है। मैं रात-दिन भगवन्नाम का ही गुणगान करता रहता हूँ॥ ३॥ पूर्ण गुरु द्वारा परमात्मा के नाम का ध्यान करने से संसार में ख्याति मिलती है। मैं जिधर भी देखता हूँ, उधर ही परमात्मा समाया हुआ है। उस सदैव सुखदाता का मूल्यांकन नहीं किया जा सकता॥ ४॥ पूर्ण भाग्य से पूर्ण गुरु को पा लिया है। उसने अन्तर्मन में ही नाम रूपी निधि के दर्शन करा दिए हैं। हे नानक! गुरु का शब्द मुझे अत्यंत मीठा लगा है, जिससे सारी तृष्णा बुझ गई है और मन एवं तन को सुख हासिल हो गया है॥ ५॥ ६॥ ४॥ ६॥ १०॥

रागु बिलावलु महला ४ घरु ३ १ओं सतिगुर प्रसादि ॥

उदम मति प्रभ अंतरजामी जिउ प्रेरे तिउ करना ॥ जिउ नटूआ तंतु वजाए तंती तिउ वाजहि जंत जना ॥ १ ॥ जपि मन राम नामु रसना ॥ मसतकि लिखत लिखे गुरु पाइआ हरि हिरदै हरि बसना ॥ १ ॥ रहाउ ॥ माइआ गिरसति भ्रमतु है प्रानी रखि लेवहु जनु अपना ॥ जिउ प्रहिलादु हरणाखसि ग्रसिओ हरि राखिओ हरि सरना ॥ २ ॥ कवन कवन की गति मिति कहीऐ हरि कीए पतित पवंना ॥ ओहु ढोवै ढोर हाथि चमु चमरे हरि उधरिओ परिओ सरना ॥ ३ ॥ प्रभ दीन दइआल भगत भव तारन हम पापी राखु पपना ॥ हरि दासन दास दास हम करीअहु जन नानक दास दासंना ॥ ४ ॥ १ ॥

अन्तर्यामी प्रभु उद्यम करने की समझ देता है, जैसे प्रेरित करता है, वैसे ही हम करते हैं। जैसे नटुवा सितार की तंत्री बजाता है, वैसे ही बजाए हुए जीव रूपी बाजे बजते हैं॥ १॥ हे मन! अपनी जीभ से राम-नाम जप। मस्तक पर लिखे भाग्य लेखानुसार मैंने गुरु को पा लिया है और हृदय में भगवान् का निवास हो गया है॥१॥ रहाउ॥ हे श्री हरि! माया में ग्रस्त हुआ प्राणी भटकता रहता है, अपने दास को इससे बचा लो। जैसे दैत्य हिरण्यकशिपु ने भक्त प्रहलाद को खंभे से बांध लिया था, शरण में आने पर तूने उसे बचा लिया था, वैसे ही हमें बचा लो॥ २॥ श्री हरि ने बड़े-बड़े पापियों को भी पावन कर दिया है, मैं किस-किस की दास्तान बयान करूँ। जिस चमार के हाथ में चमड़ा पकड़ा होता था और वह मृत पशु ढोता रहता था, लेकिन जब वह शरण में आया तो भगवान् ने उसका भी उद्धार कर दिया॥ ३॥ हे प्रभु! तू दीनदयाल है, अपने भक्तजनों को संसार के जन्म-मरण से पार करवाने वाला है। अतः मुझ जैसे पापी को पापों से बचा लो। दास नानक प्रार्थना करता है कि हे श्री हरि! मैं तेरे दासों का दास हूँ, मुझे अपने दासों के दासों का दास बना लो॥ ४॥ १॥

बिलावलु महला ४ ॥ हम मूरख मुगध अगिआन मती सरणागति पुरख अजनमा ॥ करि किरपा रखि लेवहु मेरे ठाकुर हम पाथर हीन अकरमा ॥ १ ॥ मेरे मन भजु राम नामै रामा ॥ गुरमति हरि रसु पाईऐ होरि तिआगहु निहफल कामा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ हरि जन सेवक से हरि तारे हम निरगुन राखु उपमा ॥ तुझ बिनु अवरु न कोई मेरे ठाकुर हरि जपीऐ वडे करंमा ॥ २ ॥ नामहीन ध्रिगु जीवते तिन वड दूख सहंमा ॥ ओइ फिरि फिरि जोनि भवाईअहि मंदभागी मूड़ अकरमा ॥ ३ ॥ हरि जन नामु अधारु है धुरि पूरबि लिखे वड करमा ॥ गुरि सतिगुरि नामु द्रिड़ाइआ जन नानक सफलु जनंमा ॥ ४ ॥ २ ॥

हे अजन्मा प्रभो! हम मूर्ख, बेवकूफ, अज्ञान बुद्धि वाले तेरी शरण में आए हैं। हे मेरे ठाकुर! हम बड़े पत्थरदिल, गुणहीन एवं कर्महीन हैं, कृपा करके हमें बचा लो॥ १॥ हे मेरे मन! राम-नाम का भजन कर। गुरु के उपदेश से ही हरि-रस प्राप्त होता है, इसलिए अन्य सभी निष्फल कार्यों को त्याग दो॥ १॥ रहाउ॥ हे प्रभु! तूने अपने भक्तजनों को भवसागर से पार किया है, इसलिए मुझ गुणविहीन को भी बचा लो, इसमें तेरी ही उपमा है। हे मेरे ठाकुर! तेरे अतिरिक्त मेरा अन्य कोई सहारा नहीं है। बड़ी तकदीर से ही तेरा जाप करने को मिलता है॥ २॥ नामविहीन लोगों का जीना धिक्कार योग्य है, क्योंकि उन्हें दुखों की भारी चिंता लगी रहती है। उन्हें बार-बार योनियों के चक्र में घुमाया जाता है, ऐसे व्यक्ति बड़े बदनसीब, मूर्ख तथा कर्महीन होते हैं॥ ३॥ प्रभु का नाम ही भक्तजनों के जीवन का आधार है, विधाता ने पूर्वजन्म से उनके शुभ कर्म लिखे होते हैं। हे नानक! उन लोगों का जन्म सफल है, जिन्हें गुरु ने नाम दृढ़ कर दिया है॥ ४॥ २॥

बिलावलु महला ४ ॥ हमरा चितु लुभत मोहि बिखिआ बहु दुरमति मैलु भरा ॥ तुम्हरी सेवा करि न सकह प्रभ हम किउ करि मुगध तरा ॥ १ ॥ मेरे मन जपि नरहर नामु नरहरा ॥ जन ऊपरि किरपा प्रभि धारी मिलि सतिगुर पारि परा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ हमरे पिता ठाकुर प्रभ सुआमी हरि देहु मती जसु करा ॥ तुम्हरै संगि लगे से उधरे जिउ संगि कासट लोह तरा ॥ २ ॥ साकत नर होछी मति मधिम जिन्ह हरि हरि सेव न करा ॥ ते नर भागहीन दुहचारी ओइ जनमि मुए फिरि मरा ॥ ३ ॥ जिन कउ तुम्ह हरि मेलहु सुआमी ते न्हाए संतोख गुर सरा ॥ दुरमति मैलु गई हरि भजिआ जन नानक पारि परा ॥ ४ ॥ ३ ॥

मेरा चित्त विष रूपी माया के मोह में फँसा हुआ है और इसमें खोटी बुद्धि की बहुत मैल भर गई है। हे प्रभु! मैं तेरी सेवा नहीं कर सकता, फिर मैं मूर्ख भवसागर से कैसे पार होऊँगा?॥ १॥ हे मेरे मन! ईश्वर का नाम जप। प्रभु ने अपने भक्त पर कृपा की है और वह गुरु से मिलकर भवसागर से पार हो गया है॥ १॥ रहाउ॥ हे मेरे स्वामी प्रभु! तू मेरा पिता है और तू ही मेरा ठाकुर है। मुझे ऐसी बुद्धि दीजिए ताकि मैं तेरा यश करता रहूँ। जैसे लकड़ी के साथ लगकर लोहा नदी से पार हो जाता है, वैसे ही जो तुम्हारी भक्ति के साथ लगे हैं, उनका भी उद्धार हो गया है॥ २॥ जिन्होंने परमात्मा की उपासना नहीं की, उन मायावी पुरुषों की मति बड़ी ओच्छी एवं मलिन है। ऐसे व्यक्ति भाग्यहीन एवं दुराचारी हैं और वे बारंबार जन्मते मरते एवं पुनःपुनः मौत को प्राप्त होते रहते हैं॥ ३॥ हे मेरे स्वामी हरि! जिन्हें तुम अपने साथ मिला लेते हो, वह गुरु रूपी संतोष के सरोवर में स्नान करते रहते हैं। हे नानक! भगवान् का भजन करने से जिसकी खोटी बुद्धि की मैल दूर हो गई है, वह भवसागर से पार हो गया है॥ ४॥ ३॥

बिलावलु महला ४ ॥ आवहु संत मिलहु मेरे भाई मिलि हरि हरि कथा करहु ॥ हरि हरि नामु बोहिथु है कलजुगि खेवटु गुर सबदि तरहु ॥ १ ॥ मेरे मन हरि गुण हरि उचरहु ॥ मसतकि लिखत लिखे गुन गाए मिलि संगति पारि परहु ॥ १ ॥ रहाउ ॥ काइआ नगर महि राम रसु ऊतमु किउ पाईऐ उपदेसु जन करहु ॥ सतिगुरु सेवि सफल हरि दरसनु मिलि अंम्रितु हरि रसु पीअहु ॥ २ ॥ हरि हरि नामु अंम्रितु हरि मीठा हरि संतहु चाखि दिखहु ॥ गुरमति हरि रसु मीठा लागा तिन बिसरे सभि बिख रसहु ॥ ३ ॥ राम नामु रसु राम रसाइणु हरि सेवहु संत जनहु ॥ चारि पदारथ चारे पाए गुरमति नानक हरि भजहु ॥ ४ ॥ ४ ॥

हे मेरे संतजन भाईयो! आओ, सभी मिलकर बैठो और मिलकर हरि की कथा करो। हरि का नाम कलियुग में जहाज है, गुरु मल्लाह है तथा उसके शब्द द्वारा भवसागर से पार हो जाओ॥ १॥ हे मेरे मन! हरि के गुण उच्चरित करो। जिनके माथे पर भाग्य हैं, उन्होंने ही प्रभु के गुण गाए हैं। साधसंगत में मिलकर पार हो जाओ॥ १ ॥ रहाउ॥ इस काया रूपी नगर में सर्वोत्तम राम रस है। हे संतजनो! मुझे उपदेश करो कि मैं इसे कैसे प्राप्त करूँ? गुरु को मिलकर हरि-रस रूपी अमृत पान करो तथा गुरु की सेवा करके भगवान् के दर्शन कर लो॥ २॥ हे संतजनो! 'हरि-हरि' नाम रूपी अमृत बड़ा मीठा है, इसे चखकर देख लो। गुरु के उपदेश द्वारा जिन्हें हरि-रस मीठा लगता है, उन्हें विष रूपी माया के सभी रस भूल गए हैं॥ ३॥ राम-नाम रूपी रस ही रसायन है। हे संतजनो! भगवान की उपासना करते रहो। हे नानक! गुरु उपदेश द्वारा भगवान् का भजन करने से चारों पदार्थ—धर्म, अर्थ, काम एवं मोक्ष पाए जा सकते हैं॥ ४॥ ४॥

बिलावलु महला ४ ॥ खत्री ब्राहमणु सूदु वैसु को जापै हरि मंत्रु जपैनी ॥ गुरु सतिगुरु पारब्रहमु करि पूजहु नित सेवहु दिनसु सभ रैनी ॥ १ ॥ हरि जन देखहु सतिगुरु नैनी ॥ जो इछहु सोई फलु पावहु हरि बोलहु गुरमति बैनी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ अनिक उपाव चितवीअहि बहुतेरे सा होवै जि बात होवैनी ॥ अपना भला सभु कोई बाछै सो करे जि मेरै चिति न चितैनी ॥ २ ॥ मन की मति तिआगहु हरि जन एहा बात कठैनी ॥ अनदिनु हरि हरि नामु धिआवहु गुर सतिगुर की मति लैनी ॥ ३ ॥ मति सुमति तेरै वसि सुआमी हम जंत तू पुरखु जंतैनी ॥ जन नानक के प्रभ करते सुआमी जिउ भावै तिवै बुलैनी ॥ ४ ॥ ५ ॥

हे भाई! क्षत्रिय, ब्राह्मण, शूद्र एवं वैश्य में से हर कोई हरि-मंत्र जप सकता है, जो सभी के

लिए जपने योग्य है। परब्रह्म का रूप मानकर गुरु की पूजा करो और नित्य दिन-रात सेवा में लीन रहो॥ १॥ हे भक्तजनो ! नयनों से सतगुरु के दर्शन करो। गुरु के उपदेश द्वारा हरि-नाम बोलो और मनोवांछित फल पा लो॥ १॥ रहाउ॥ आदमी अनेक उपाय मन में सोचता रहता है लेकिन वही होता है, जो बात होनी होती है। हर कोई अपनी भलाई की कामना करता है लेकिन भगवान् वही करता है, जो हमारे चित में याद भी नहीं होता॥ २॥ हे भक्तजनो ! अपने मन की मति त्याग दो, पर यह बात बड़ी कठिन है। गुरु का उपदेश लेकर नित्य हरि-नाम का ध्यान करते रहो॥ ३॥ हे स्वामी ! मति अथवा सुमति यह सब तेरे ही वश में है। हम जीव तो यंत्र हैं और तू यंत्र चलाने वाला पुरुष है। हे नानक के प्रभु, हे कर्ता स्वामी ! जैसे तुझे अच्छा लगता है, वैसे ही हम बोलते हैं॥ ४॥ ५॥

बिलावलु महला ४ ॥ अनद मूलु धिआइओ पुरखोतमु अनदिनु अनद अनंदे ॥ धरम राइ की काणि चुकाई सभि चूके जम के छंदे ॥ १ ॥ जपि मन हरि हरि नामु गोबिंदे ॥ वडभागी गुरु सतिगुरु पाइआ गुण गाए परमानंदे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ साकत मूड़ माइआ के बधिक विचि माइआ फिरहि फिरंदे ॥ त्रिसना जलत किरत के बाधे जिउ तेली बलद भवंदे ॥ २ ॥ गुरमुखि सेव लगे से उधरे वडभागी सेव करंदे ॥ जिन हरि जपिआ तिन फलु पाइआ सभि तूटे माइआ फंदे ॥ ३ ॥ आपे ठाकुरु आपे सेवकु सभु आपे आपि गोविंदे ॥ जन नानक आपे आपि सभु वरतै जिउ राखै तिवै रहंदे ॥ ४ ॥ ६ ॥

आनंद का मूल स्रोत पुरुषोत्तम प्रभु का ध्यान करने से रात-दिन आनंद ही आनंद बना रहता है। अब यमराज की मोहताजी मिटा दी है और यम का लेन-देन समाप्त कर दिया है॥ १॥ हे मन ! हरि नाम जप। बड़े भाग्य से हमने सतगुरु को पाया है और अब परमानंद का ही गुणगान किया है॥ १॥ रहाउ॥ मूर्ख शाक्त माया के बंदी हैं और वे माया में ही भटकते रहते हैं। वे तकदीर के बंधे हुए तृष्णाग्नि में जलते रहते हैं तथा तेली के बैल के समान जन्म मरण के चक्र में भटकते रहते हैं॥ २॥ जो व्यक्ति गुरु के माध्यम से भगवान् की सेवा में लीन हुए हैं, उनका उद्धार हो गया है किन्तु यह सेवा खुशनसीब ही करते हैं। जिन्होंने भगवान् का जाप किया है, उन्हें फल मिल गया है, उनके माया के तमाम फंदे टूट गए हैं॥ ३॥ गोविंद सबकुछ स्वयं ही है और मालिक अथवा सेवक भी स्वयं ही है। हे नानक ! परमात्मा सर्वत्र व्याप्त है, जैसे वह जीवों को रखता है, वैसे ही वे रहते हैं॥ ४॥ ६॥

१ओं सतिगुर प्रसादि ॥ रागु बिलावलु महला ४ पड़ताल घरु १३ ॥

बोलहु भईआ राम नामु पतित पावनो ॥ हरि संत भगत तारनो ॥ हरि भरिपुरे रहिआ ॥ जलि थले राम नामु ॥ नित गाईऐ हरि दूख बिसारनो ॥ १ ॥ रहाउ ॥ हरि कीआ है सफल जनमु हमारा ॥ हरि जपिआ हरि दूख बिसारनहारा ॥ गुरु भेटिआ है मुकति दाता ॥ हरि कीई हमारी सफल जाता ॥ मिलि संगती गुन गावनो ॥ १ ॥ मन राम नाम करि आसा ॥ भाउ दूजा बिनसि बिनासा ॥ विचि आसा होइ निरासी ॥ सो जनु मिलिआ हरि पासी ॥ कोई राम नाम गुन गावनो ॥ जनु नानकु तिसु पगि लावनो ॥ २ ॥ १ ॥ ७ ॥ ४ ॥ ६ ॥ ७ ॥ १७ ॥

हे भाई ! पतितों को पावन करने वाला राम नाम बोलो। वह प्रभु ही संतों एवं भक्तों का उद्धार करने वाला है। ईश्वर हर जगह भरपूर है। राम का नाम जल एवं पृथ्वी में विद्यमान है। नित्य दुखों का नाश करने वाले हरि का यश गाना चाहिए॥ १ ॥ रहाउ॥ हमने दुखनाशक हरि का जाप किया है अतः प्रभु ने हमारा जन्म सफल कर दिया है। हमें मुक्तिदाता गुरु मिल गया है। हरि ने

हमारी जीवन-यात्रा सफल कर दी है, अतः संगत में मिलकर हरि के गुण गाते रहते हैं॥ १॥ हे मेरे मन ! राम-नाम की आशा करो, यह द्वैतभाव को नाश कर देगा। जो आदमी आशा में निराश अर्थात् निर्लिप्त रहता है, वह भगवान् को मिल जाता है। नानक उसके चरण स्पर्श करता है जो राम नाम का गुणगान करता है॥ २॥ १॥ ७॥ ४॥ ६॥ ७॥ १७॥

रागु बिलावलु महला ५ चउपदे घरु १ ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

नदरी आवै तिसु सिउ मोहु ॥ किउ मिलीऐ प्रभ अबिनासी तोहि ॥ करि किरपा मोहि मारगि पावहु ॥ साधसंगति कै अंचलि लावहु ॥ १ ॥ किउ तरीऐ बिखिआ संसारु ॥ सतिगुरु बोहिथु पावै पारि ॥ १ ॥ रहाउ ॥ पवन झुलारे माइआ देइ ॥ हरि के भगत सदा थिरु सेइ ॥ हरख सोग ते रहहि निरारा ॥ सिर ऊपरि आपि गुरू रखवारा ॥ २ ॥ पाइआ वेड़ु माइआ सरब भुइअंगा ॥ हउमै पचे दीपक देखि पतंगा ॥ सगल सीगार करे नही पावै ॥ जा होइ क्रिपालु ता गुरू मिलावै ॥ ३ ॥ हउ फिरउ उदासी मै इकु रतनु दसाइआ ॥ निरमोलकु हीरा मिलै न उपाइआ ॥ हरि का मंदरु तिसु महि लालु ॥ गुरि खोलिआ पड़दा देखि भई निहालु ॥ ४ ॥ जिनि चाखिआ तिसु आइआ सादु ॥ जिउ गूंगा मन महि बिसमादु ॥ आनद रूपु सभु नदरी आइआ ॥ जन नानक हरि गुण आखि समाइआ ॥ ५ ॥ १ ॥

जो कुछ नजर आ रहा है, उससे ही मोह लगा हुआ है। हे अविनाशी प्रभु ! मैं तुझे कैसे मिलूँ ? कृपा करके मुझे मार्गदर्शन कीजिए और साधु संगति के आँचल से लगा दो॥ १॥ इस विष रूपी संसार से कैसे पार हुआ जाए ? हे भाई ! सतगुरु रूपी जहाज इससे पार करवा देता है॥ १॥ रहाउ॥ माया पवन की तरह झुलाती है, लेकिन हरि के भक्त सदैव स्थिर रहते हैं। जो आदमी हर्ष एवं शोक से निर्लिप्त रहता है, उसके सिर पर गुरु आप रखवाला बना हुआ है॥ २॥ हे भाई ! माया रूपी नागिन ने सब जीवों को लपेटा हुआ है। इन्सान अभिमान में यूं जल रहे हैं, जिस तरह दीपक को देखकर पतंगा जल जाता है। चाहे जीव-स्त्री सारे शृंगार कर ले किन्तु वह फिर भी अपने पति-प्रभु को नहीं पा सकती। जब प्रभु कृपालु हो जाता है तो वह गुरु से मिला देता है॥ ३॥ मैं उदास हुई फिरती थी लेकिन गुरु ने मुझे एक रत्न बता दिया। यह अमूल्य हीरा किसी भी उपाय से नहीं मिलता। यह काया ही हरि का मन्दिर है, जिसमें यह लाल मौजूद है। जब गुरु ने अहंत्व रूपी पर्दा खोल दिया तो मैं लाल को देखकर आनंदित हो गई॥ ४॥ जिसने हरि रस को चखा है, उसे ही स्वाद आया है, जिस तरह मिठाई खाकर गूँगा मन में आश्चर्यचकित हो जाता है। आनंद रूपी प्रभु मुझे हर जगह नजर आया है। हे नानक ! हरि के गुण गाकर उसमें ही समा गया हूँ॥ ५॥ १॥

बिलावलु महला ५ ॥ सरब कलिआण कीए गुरदेव ॥ सेवकु अपनी लाइओ सेव ॥ बिघनु न लागै जपि अलख अभेव ॥ १ ॥ धरति पुनीत भई गुन गाए ॥ दुरतु गइआ हरि नामु धिआए ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सभनी थांई रविआ आपि ॥ आदि जुगादि जा का वड परतापु ॥ गुर परसादि न होइ संतापु ॥ २ ॥ गुर के चरन लगे मनि मीठे ॥ निरबिघन होइ सभ थांई वूठे ॥ सभि सुख पाए सतिगुर तूठे ॥ ३ ॥ पारब्रहम प्रभ भए रखवाले ॥ जिथै किथै दीसहि नाले ॥ नानक दास खसमि प्रतिपाले ॥ ४ ॥ २ ॥

गुरुदेव ने सर्व कल्याण कर दिया है और सेवक को अपनी सेवा में लगा लिया है। अदृष्ट एवं अभेद परमात्मा का जाप करने से कोई विघ्न नहीं आता॥ १॥ भगवान् का गुणगान करने से

सारी धरती पावन हो गई है। हरि-नाम का ध्यान करने से सारे पाप विनष्ट हो गए हैं॥ १॥ रहाउ॥ भगवान स्वयं ही हर जगह पर विद्यमान है, सृष्टि के आदि एवं युगों के आरम्भ से उसका बड़ा प्रताप है। गुरु की अनुकंपा से कोई संताप प्रभावित नहीं करता॥ २॥ गुरु के चरण मन को बड़े मीठे लगे हैं। वह निर्विघ्न हर जगह बस रहा है। सतगुरु की प्रसन्नता से सभी सुख हासिल हो गए हैं॥ ३॥ परब्रह्म प्रभु मेरा रखवाला बन गया है, जहाँ कहीं भी देखता हूँ, मुझे साथ ही दिखाई देता है। हे नानक ! मालिक-प्रभु ही अपने दास का प्रतिपालक है॥ ४॥ २॥

बिलावलु महला ५ ॥ सुख निधान प्रीतम प्रभ मेरे ॥ अगनत गुण ठाकुर प्रभ तेरे ॥ मोहि अनाथ तुमरी सरणाई ॥ करि किरपा हरि चरन धिआई ॥ १ ॥ दइआ करहु बसहु मनि आइ ॥ मोहि निरगुन लीजै लड़ि लाइ ॥ रहाउ ॥ प्रभु चिति आवै ता कैसी भीड़ ॥ हरि सेवक नाही जम पीड़ ॥ सरब दूख हरि सिमरत नसे ॥ जा कै संगि सदा प्रभु बसै ॥ २ ॥ प्रभ का नामु मनि तनि आधारु ॥ बिसरत नामु होवत तनु छारु ॥ प्रभ चिति आए पूरन सभ काज ॥ हरि बिसरत सभ का मुहताज ॥ ३ ॥ चरन कमल संगि लागी प्रीति ॥ बिसरि गई सभ दुरमति रीति ॥ मन तन अंतरि हरि हरि मंत ॥ नानक भगतन कै घरि सदा अनंद ॥ ४ ॥ ३ ॥

हे मेरे प्रियतम प्रभु ! तू सुखों का भण्डार है। तेरे गुण असंख्य हैं। मुझ अनाथ ने तेरी शरण ली है। हे श्री हरि ! ऐसी कृपा करो, ताकि मैं तेरे चरणों का ध्यान करता रहूँ॥ १॥ दया करो और मेरे मन में आ बसो। मुझ निर्गुण को अपने आँचल में लगा लीजिए॥ रहाउ॥ यदि प्रभु याद आ जाए तो कोई विपत्ति कैसे आ सकती है ? हरि के सेवक को यम की पीड़ा सहन नहीं करनी पड़ती। हरि का सिमरन करने से सर्व दुखों का नाश हो जाता है और उसके साथ प्रभु सदा बसता रहता है॥ २॥ प्रभु का नाम मेरे मन एवं तन का आसरा है। नाम विस्मृत होने से शरीर खाक हो जाता है। प्रभु याद आने से सभी कार्य पूर्ण हो जाते हैं। भगवान् को भुलाने से जीव सबका मोहताज बन जाता है॥ ३॥ प्रभु के चरण-कमल से मेरी प्रीति लग गई है और सारी दुर्मति की रीति भूल गई है। मेरे मन एवं तन में हरि नाम रूपी मंत्र का जाप होता रहता है। हे नानक ! भक्तों के घर में सदैव आनंद कायम रहता है॥ ४॥ ३॥

रागु बिलावलु महला ५ घरु २ यानड़ीए कै घरि गावणा ੧ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

मै मनि तेरी टेक मेरे पिआरे मै मनि तेरी टेक ॥ अवर सिआणपा बिरथीआ पिआरे राखन कउ तुम एक ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सतिगुरु पूरा जे मिलै पिआरे सो जनु होत निहाला ॥ गुर की सेवा सो करे पिआरे जिस नो होइ दइआला ॥ सफल मूरति गुरदेउ सुआमी सरब कला भरपूरे ॥ नानक गुरु पारब्रहमु परमेसरु सदा सदा हजूरे ॥ १ ॥ सुणि सुणि जीवा सोइ तिना की जिन्ह अपुना प्रभु जाता ॥ हरि नामु अराधहि नामु वखाणहि हरि नामे ही मनु राता ॥ सेवकु जन की सेवा मागै पूरै करमि कमावा ॥ नानक की बेनंती सुआमी तेरे जन देखणु पावा ॥ २ ॥ वडभागी से काढीअहि पिआरे संतसंगति जिना वासो ॥ अंम्रित नामु अराधीऐ निरमलु मनै होवै परगासो ॥ जनम मरण दुखु काटीऐ पिआरे चूकै जम की काणे ॥ तिना परापति दरसनु नानक जो प्रभ अपणे भाणे ॥ ३ ॥ ऊच अपार बेअंत सुआमी कउणु जाणै गुण तेरे ॥ गावते उधरहि सुणते उधरहि बिनसहि पाप घनेरे ॥ पसू परेत मुगध कउ तारे पाहन पारि उतारै ॥ नानक दास तेरी सरणाई सदा सदा बलिहारै ॥ ४ ॥ १ ॥ ४ ॥

हे मेरे प्यारे प्रभु ! मेरे मन में एक तेरा ही सहारा है। मेरी अन्य समस्त चतुराइयाँ व्यर्थ हैं और एक तू ही मेरा रखवाला है॥ १॥ रहाउ॥ हे प्यारे ! जिसे पूर्ण सतगुरु मिल जाता है, वह आनंदित हो जाता है। गुरु की सेवा वही करता है, जिस पर तू दयालु हो जाता है। स्वामी गुरुदेव सफल मूर्त्त है और वह सर्वकला सम्पूर्ण है। हे नानक ! गुरु ही परब्रह्म परमेश्वर है जो सदा हर जगह हाजिर है॥ १॥ जिन्होंने अपने प्रभु को जान लिया है, मैं उनकी शोभा सुन-सुनकर जी रहा हूँ। वे हरि-नाम की आराधना करते रहते हैं, नाम का बखान करते रहते हैं, और उनका मन हरि-नाम में लीन रहता है। हे प्रभो ! तेरा सेवक तेरे भक्तों की सेवा का दान माँगता है किन्तु तेरी पूर्ण कृपा से ही यह हो सकता है। हे मेरे स्वामी ! नानक की तुझसे एक यही प्रार्थना है कि मैं तेरे भक्तजनों के दर्शन करूँ॥ २॥ हे प्यारे ! वही व्यक्ति भाग्यशाली कहलाने के हकदार हैं, जिनका निवास संतों की संगति में है। अमृत-नाम की आराधना करने से निर्मल मन में प्रकाश हो जाता है। हे मेरे प्यारे ! उनका जन्म-मरण का दुख नाश हो जाता है और यम का सारा भय समाप्त हो जाता है। हे नानक ! जो जीव अपने प्रभु को भाता है, उसे ही उसके दर्शन प्राप्त होते हैं॥ ३॥ हे मेरे स्वामी ! तू उच्च, अपार एवं बेअंत है, तेरे गुणों को कौन जानता है ? तेरा यश गाने एवं सुनने वालों का उद्धार हो जाता है तथा उनके अनेक पाप विनष्ट हो जाते हैं। तू पशु, प्रेत एवं मूर्खों का भी कल्याण कर देता है और तू पत्थरों को भी पार करवा देता है। दास नानक तेरी शरण में आया है और सदा तुझ पर ही बलिहारी जाता है॥ ४॥ १॥ ४॥

बिलावलु महला ५ ॥ बिखै बनु फीका तिआगि री सखीए नामु महा रसु पीओ ॥ बिनु रस चाखे बुडि गई सगली सुखी न होवत जीओ ॥ मानु महतु न सकति ही काई साधा दासी थीओ ॥ नानक से दरि सोभावंते जो प्रभि अपुनै कीओ ॥ १ ॥ हरिचंदउरी चित भ्रमु सखीए म्रिग त्रिसना द्रुम छाइआ ॥ चंचलि संगि न चालती सखीए अंति तजि जावत माइआ ॥ रसि भोगण अति रूप रस माते इन संगि सूखु न पाइआ ॥ धंनि धंनि हरि साध जन सखीए नानक जिनी नामु धिआइआ ॥ २ ॥ जाइ बसहु वडभागणी सखीए संता संगि समाईऐ ॥ तह दूख न भूख न रोगु बिआपै चरन कमल लिव लाईऐ ॥ तह जनम न मरणु न आवण जाणा निहचलु सरणी पाईऐ ॥ प्रेम बिछोहु न मोहु बिआपै नानक हरि एकु धिआईऐ ॥ ३ ॥ द्रिसटि धारि मनु बेधिआ पिआरे रतड़े सहजि सुभाए ॥ सेज सुहावी संगि मिलि प्रीतम अनद मंगल गुण गाए ॥ सखी सहेली राम रंगि राती मन तन इछ पुजाए ॥ नानक अचरजु अचरज सिउ मिलिआ कहणा कछू न जाए ॥ ४ ॥ २ ॥ ५ ॥

हे सखी ! विषय-विकारों का फीका रस छोड़ दे और हरि-नाम महारस का ही पान करो। इस नाम-रस को चखे बिना सारी दुनिया विकारों के जल में डूब गई है और यह मन कभी सुखी नहीं होता। कोई मान, महत्त्व एवं शक्ति सुखी होने का साधन नहीं है, इसलिए साधुओं की दासी बन जाओ। हे नानक ! प्रभु के द्वार पर वही शोभा के पात्र बनते हैं, जिन्हें उसने अपना बना लिया है॥ १॥ हे सखी ! यह माया राजा हरिचन्द की नगरी के समान है, मृगतृष्णा है, पेड़ की छाया है और यह मनुष्य के चित्त का भ्रम है। यह चंचल माया मृत्यु के समय मनुष्य के साथ नहीं जाती तथा अन्तिम क्षणों में साथ छोड़ जाती है। रसों के भोग एवं रस-रूप में अत्यंत मस्त होने से कभी सुख उपलब्ध नहीं होता। हे सखी ! साधुजन धन्य-धन्य हैं, जिन्होंने भगवन्नाम का ध्यान किया है॥ २॥ हे खुशनसीब सखी ! संतों के संग लीन रहना चाहिए, जाकर उनकी संगति में बस जाओ। वहाँ प्रभु के चरण कमल में वृत्ति लगाई जाती है तथा वहाँ पर कोई दुख, भूख और कोई रोग नहीं लगता। वहाँ जन्म मरण एवं आवागमन छूट जाता है और निश्चल शरण प्राप्त हो जाती है।

हे नानक ! एक ईश्वर का ध्यान करने से प्रेम वियोग व मोह इत्यादि प्रभावित नहीं करते॥ ३॥ प्रिय-प्रभु ने करुणा-दृष्टि करके मन को भेद दिया है और सहज स्वभाव ही उसमें लीन रहता है। प्रभु से मिलकर उनकी हृदय रूपी सेज सुन्दर हो गई है और वह उसका गुणगान करके आनंद एवं मंगल प्राप्त करता है। सभी सखियाँ एवं सहेलियाँ राम के रंग में मग्न रहती हैं और उसने उनके मन एवं तन की सभी मनोकामनाएँ पूरी कर दी हैं। हे नानक ! जीव की अद्भुत आत्म-ज्योति परमात्मा की अद्भुत ज्योति में विलीन हो गई है और इस बारे अन्य कुछ कहा नहीं जा सकता॥ ४॥ २॥ ५॥

रागु बिलावलु महला ५ घरु ४ १ॐ सतिगुर प्रसादि ॥

एक रूप सगलो पासारा ॥ आपे बनजु आपि बिउहारा ॥ १ ॥ ऐसो गिआनु बिरलो ई पाए ॥ जत जत जाईऐ तत द्रिसटाए ॥ १ ॥ रहाउ ॥ अनिक रंग निरगुन इक रंगा ॥ आपे जलु आप ही तरंगा ॥ २ ॥ आप ही मंदरु आपहि सेवा ॥ आप ही पूजारी आप ही देवा ॥ ३ ॥ आपहि जोग आप ही जुगता ॥ नानक के प्रभ सद ही मुकता ॥ ४ ॥ १ ॥ ६ ॥

यह समूचा जगत्-प्रसार एक ईश्वर का ही रूप है। वह स्वयं ही वाणिज्य है और स्वयं ही व्यवहार है॥ १॥ ऐसा ज्ञान कोई विरला ही प्राप्त करता है। जहाँ-जहाँ भी जाते हैं, उधर ही वह नजर आता है॥ १॥ रहाउ॥ निर्गुण ईश्वर का एक रंग है किन्तु वह अनेक रंगों वाला बन गया है। वह स्वयं ही जल है और स्वयं ही तरंग है॥ २॥ वह स्वयं ही मन्दिर है और स्वयं ही पूजा-अर्चना व स्तुति है। वह स्वयं ही पुजारी है और स्वयं ही देव है॥ ३॥ वह स्वयं ही योग-विद्या है और स्वयं ही विधि है। नानक का प्रभु सदैव सब बन्धनों से मुक्त है॥ ४॥ १॥ ६॥

बिलावलु महला ५ ॥ आपि उपावन आपि सधरना ॥ आपि करावन दोसु न लैना ॥ १ ॥ आपन बचनु आप ही करना ॥ आपन बिभउ आप ही जरना ॥ १ ॥ रहाउ ॥ आप ही मसटि आप ही बुलना ॥ आप ही अछलु न जाई छलना ॥ २ ॥ आप ही गुपत आपि परगटना ॥ आप ही घटि घटि आपि अलिपना ॥ ३ ॥ आपे अविगतु आप संगि रचना ॥ कहु नानक प्रभ के सभि जचना ॥ ४ ॥ २ ॥ ७ ॥

ईश्वर स्वयं ही उत्पन्न करने वाला है और स्वयं ही सहारा देने वाला है। वह स्वयं ही जीवों से कर्म करवाता है परन्तु इन कर्मो का दोष अपने ऊपर नहीं लेता॥ १॥ वह स्वयं ही वचन देता है और स्वयं ही वचन पूरा करता है। वह स्वयं ही विभूति है और स्वयं ही इसे सहन करता है॥ १॥ रहाउ॥ वह खुद ही मौनधारी है और खुद ही बोलता है। वह छल-रहित है और कोई भी उससे छल नहीं कर सकता॥ २॥ वह स्वयं ही गुप्त है और स्वयं ही प्रगट है। वह हरेक जीव में बसा हुआ है परन्तु फिर भी सबसे निर्लिप्त है॥ ३॥ परमात्मा अविगत है लेकिन वह स्वयं ही अपनी रचना के साथ मिला हुआ है। हे नानक ! प्रभु की सभी लीलाएँ अच्छी हैं॥ ४॥ २॥ ७॥

बिलावलु महला ५ ॥ भूले मारग जिनहि बताइआ ॥ ऐसा गुरु वडभागी पाइआ ॥ १ ॥ सिमरि मना राम नामु चितारे ॥ बसि रहे हिरदै गुर चरन पिआरे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ कामि क्रोधि लोभि मोहि मनु लीना ॥ बंधन काटि मुकति गुरि कीना ॥ २ ॥ दुख सुख करत जनमि फुनि मूआ ॥ चरन कमल गुरि आस्रमु दीआ ॥ ३ ॥ अगनि सागर बूडत संसारा ॥ नानक बाह पकरि सतिगुरि निसतारा ॥ ४ ॥ ३ ॥ ८ ॥

जिसने मुझ भूले हुए को मार्ग बताया है, ऐसा गुरु मुझे बड़ी किस्मत से मिला है॥ १॥ हे मेरे मन! राम नाम याद करके उसका सिमरन किया कर। प्यारे गुरु के चरण हृदय में बस रहे हैं॥ १ ॥ रहाउ॥ मेरा मन काम, क्रोध, लोभ, मोह में लीन रहता था, मगर गुरु ने मेरे सारे बन्धन काटकर मुझे मुक्त कर दिया है॥ २॥ दुख एवं सुख भोगता हुआ मैं कभी जन्म ले रहा था और कभी पुनः मृत्यु को प्राप्त हो रहा था। किन्तु गुरु ने मुझे अपने चरण कमल में आश्रय दे दिया है॥ ३॥ समूचा संसार तृष्णा रूपी अग्नि सागर में डूब रहा है। हे नानक! सतगुरु ने मेरी बाँह पकड़ कर मेरा निस्तारा कर दिया है॥ ४॥ ३॥ ८॥

बिलावलु महला ५ ॥ तनु मनु धनु अरपउ सभु अपना ॥ कवन सु मति जितु हरि हरि जपना ॥ १ ॥ करि आसा आइओ प्रभ मागनि ॥ तुम्ह पेखत सोभा मेरै आगनि ॥ १ ॥ रहाउ ॥ अनिक जुगति करि बहुतु बीचारउ ॥ साधसंगि इसु मनहि उधारउ ॥ २ ॥ मति बुधि सुरति नाही चतुराई ॥ ता मिलीऐ जा लए मिलाई ॥ ३ ॥ नैन संतोखे प्रभ दरसनु पाइआ ॥ कहु नानक सफलु सो आइआ ॥ ४ ॥ ४ ॥ ९ ॥

मैं अपना तन, मन एवं धन इत्यादि सबकुछ अर्पण कर दूँगा। वह कौन-सी सुमति है, जिससे मैं हरि का जाप करता रहूँ॥ १॥ हे प्रभु! मैं बड़ी आशा करके तुझ से माँगने आया हूँ, तुझे देखकर मेरे हृदय रूपी आँगन में शोभा हो जाती है॥ १॥ रहाउ॥ मैंने अनेक युक्तियों द्वारा बहुत विचार किया है कि सत्संग में ही इस मन का उद्धार होता है॥ २॥ मुझ में कोई मति, बुद्धि,चेतना अथवा चतुराई नहीं है, तू तभी मिल सकता है, यद्यपि तू स्वयं ही मुझे अपने साथ मिला ले॥ ३॥ प्रभु के दर्शन पाकर जिसके नयनों को संतोष हो गया है, हे नानक! उस व्यक्ति का दुनिया में आना सफल हो गया है॥ ४॥ ४॥ ६॥

बिलावलु महला ५ ॥ मात पिता सुत साथि न माइआ ॥ साधसंगि सभु दूखु मिटाइआ ॥ १ ॥ रवि रहिआ प्रभु सभ महि आपे ॥ हरि जपु रसना दुखु न विआपे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ तिखा भूख बहु तपति विआपिआ ॥ सीतल भए हरि हरि जसु जापिआ ॥ २ ॥ कोटि जतन संतोखु न पाइआ ॥ मनु त्रिपताना हरि गुण गाइआ ॥ ३ ॥ देहु भगति प्रभ अंतरजामी ॥ नानक की बेनंती सुआमी ॥ ४ ॥ ५ ॥ १० ॥

माता-पिता, पुत्र एवं धन-दौलत कोई भी साथ देने वाला नहीं है। अतः साधुओं की संगति में सारा दुख मिटा लिया है॥ १॥ प्रभु स्वयं ही सब जीवों में समाया हुआ है। जीभ से हरि का जाप करने से कोई दुख प्रभावित नहीं करता॥ १॥ रहाउ॥ तृष्णा एवं भूख की तपस मन को बड़ा जला रही थी लेकिन भगवान का यशगान करने से मन शीतल हो गया है॥ २॥ करोड़ों यत्न करने से भी संतोष नहीं मिला, परन्तु भगवान का गुणगान करने से मन तृप्त हो गया है॥ ३॥ हे अन्तर्यामी प्रभु! मुझे अपनी भक्ति दीजिए। नानक की अपने स्वामी से केवल यही विनती है॥ ४॥ ५॥ १०॥

बिलावलु महला ५ ॥ गुरु पूरा वडभागी पाईऐ ॥ मिलि साधू हरि नामु धिआईऐ ॥ १ ॥ पारब्रहम प्रभ तेरी सरना ॥ किलबिख काटै भजु गुर के चरना ॥ १ ॥ रहाउ ॥ अवरि करम सभि लोकाचार ॥ मिलि साधू संगि होइ उधार ॥ २ ॥ सिम्रिति सासत बेद बीचारे ॥ जपीऐ नामु जितु पारि उतारे ॥ ३ ॥ जन नानक कउ प्रभ किरपा करीऐ ॥ साधू धूरि मिलै निसतरीऐ ॥ ४ ॥ ६ ॥ ११ ॥

पूर्ण गुरु सौभाग्य से ही मिलता है। साधु के साथ मिलकर हरि-नाम का ध्यान करते रहना

चाहिए॥ १॥ हे परब्रह्म प्रभु ! तेरी शरण में आया हूँ। गुरु के चरणों का भजन करने से सारे पाप नाश हो जाते हैं॥ १॥ रहाउ॥ अन्य सभी कर्म केवल लोकाचार ही हैं। अतःसाधु की संगति में मिलकर ही उद्धार होता है॥ २॥ मैंने स्मृतियाँ, शास्त्र एवं वेद विचार कर देखे हैं, लेकिन भगवान् का नाम जपने से ही जीव को मोक्ष मिलता है॥ ३॥ हे प्रभु ! दास नानक पर कृपा कीजिए, यदि साधु की चरण-धूलि मिल जाए तो निस्तारा हो जाए॥ ४॥ ६॥ ११॥

बिलावलु महला ५ ॥ गुर का सबदु रिदे महि चीना ॥ सगल मनोरथ पूरन आसीना ॥ १ ॥ संत जना का मुखु ऊजलु कीना ॥ करि किरपा अपुना नामु दीना ॥ १ ॥ रहाउ ॥ अंध कूप ते करु गहि लीना ॥ जै जै कारु जगति प्रगटीना ॥ २ ॥ नीचा ते ऊच ऊन पूरीना ॥ अंम्रित नामु महा रसु लीना ॥ ३ ॥ मन तन निरमल पाप जलि खीना ॥ कहु नानक प्रभ भए प्रसीना ॥ ४ ॥ ७ ॥ १२ ॥

गुरु का शब्द हृदय में पहचान लिया है, इससे मेरे सारे मनोरथ एवं आशाएँ पूरी हो गई हैं॥ १॥ भगवान् ने संतजनों का मुख उज्जवल कर दिया है और कृपा करके उन्हें अपना नाम दे दिया है॥ १॥ रहाउ॥ भगवान् ने उनका हाथ पकड़कर उन्हें अज्ञान के अंधकूप में से बाहर निकाल लिया है। वह सारे जगत् में लोकप्रिय हो गए हैं और सब जगह उनकी जय-जयकार हो रही है॥ २॥ वह नीचों को ऊँचा कर देता है और गुणविहीन को गुणवान् बना देता है। मैंने अमृत नाम का महारस लिया है॥ ३॥ मेरा मन-तन निर्मल हो गया है और सारे पाप जलकर क्षीण हो गए हैं। हे नानक! प्रभु मुझ पर प्रसन्न हो गया है॥ ४॥ ७॥ १२॥

बिलावलु महला ५ ॥ सगल मनोरथ पाईअहि मीता ॥ चरन कमल सिउ लाईऐ चीता ॥ १ ॥ हउ बलिहारी जो प्रभू धिआवत ॥ जलनि बुझै हरि हरि गुन गावत ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सफल जनमु होवत वडभागी ॥ साधसंगि रामहि लिव लागी ॥ २ ॥ मति पति धनु सुख सहज अनंदा ॥ इक निमख न विसरहु परमानंदा ॥ ३ ॥ हरि दरसन की मनि पिआस घनेरी ॥ भनति नानक सरणि प्रभ तेरी ॥ ४ ॥ ८ ॥ १३ ॥

हे मेरे मित्र ! भगवान के चरणों में चित्त लगाने से सारे मनोरथ प्राप्त हो जाते हैं॥ १॥ जो प्रभु का ध्यान करता है, मैं उस पर बलिहारी जाता हूँ। भगवान् का गुणगान करने से सारी जलन बुझ जाती है॥ १॥ रहाउ॥ संतों की संगति में जिसकी राम में लगन लग जाती है, उस भाग्यशाली का जन्म सफल हो जाता है॥ २॥ उसे सुमति, मान-सम्मान, धन-दौलत, परम सुख एवं आनंद प्राप्त हो जाता है। हे परमानंद ! मुझे एक क्षण के लिए भी न भूलो॥ ३॥ मेरे मन में हरि-दर्शन की तीव्र लालसा लगी हुई है। नानक प्रार्थना करते हैं कि हे प्रभु ! मैं तेरी शरण में आया हूँ॥ ४॥ ८॥ १३॥

बिलावलु महला ५ ॥ मोहि निरगुन सभ गुणह बिहूना ॥ दइआ धारि अपुना करि लीना ॥ १ ॥ मेरा मनु तनु हरि गोपालि सुहाइआ ॥ करि किरपा प्रभु घर महि आइआ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ भगति वछल भै काटनहारे ॥ संसार सागर अब उतरे पारे ॥ २ ॥ पतित पावन प्रभ बिरदु बेदि लेखिआ ॥ पारब्रहमु सो नैनहु पेखिआ ॥ ३ ॥ साधसंगि प्रगटे नाराइण ॥ नानक दास सभि दूख पलाइण ॥ ४ ॥ ९ ॥ १४ ॥

मैं निर्गुण तो सभी गुणों से विहीन हूँ। प्रभु ने कृपा करके मुझे अपना बना लिया है ॥१॥ ईश्वर ने मेरा मन-तन सुन्दर बना दिया है और अपनी कृपा करके प्रभु मेरे हृदय-घर में आ गया है॥ १॥ रहाउ॥ हे ईश्वर, तू भक्तवत्सल एवं भय काटने वाला है। अब तेरी करुणा से मैं संसार-सागर से पार हो गया हूँ॥ २॥ वेदों में लिखा है कि प्रभु का यही विरद् है कि वह पतितों

को पावन करने वाला है। मैंने उस परब्रह्म को अपनी आँखों से देख लिया है॥ ३॥ साधुओं की संगति करने से नारायण मेरे हृदय में प्रगट हो गया है। हे दास नानक ! मेरे सभी दुख नाश हो गए हैं॥ ४ ॥६॥ १४॥

बिलावलु महला ५ ॥ कवनु जानै प्रभ तुम्हरी सेवा ॥ प्रभ अविनासी अलख अभेवा ॥ १ ॥ गुण बेअंत प्रभ गहिर गंभीरि ॥ ऊच महल सुआमी प्रभ मेरे ॥ तू अपरंपर ठाकुर मेरे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ एकस बिनु नाही को दूजा ॥ तुम्ह ही जानहु अपनी पूजा ॥ २ ॥ आपहु कछू न होवत भाई ॥ जिसु प्रभु देवै सो नामु पाई ॥ ३ ॥ कहु नानक जो जनु प्रभ भाइआ ॥ गुण निधान प्रभु तिन ही पाइआ ॥ ४ ॥ १० ॥ १५ ॥

हे प्रभु ! तेरी सेवा-भक्ति कौन जानता है, तू तो अविनाशी अदृष्ट एवं रहस्यमय है॥ १॥ प्रभु के गुण बेअंत हैं, वह गहन-गंभीर है। हे मेरे स्वामी प्रभु ! तेरे महल सर्वोच्च हैं। हे मेरे ठाकुर ! तू अपरंपार है॥ १॥ रहाउ॥ एक ईश्वर के अतिरिक्त अन्य कोई नहीं है। अपनी पूजा तुम स्वयं ही जानते हो॥ २॥ हे भाई ! जीव से अपने आप कुछ भी नहीं होता। जिसे प्रभु देता है, उसे ही नाम प्राप्त होता है॥ ३॥ हे नानक ! जो व्यक्ति प्रभु को भा गया है, उसने ही गुणनिधान प्रभु को पा लिया है॥ ४॥ १०॥ १५॥

बिलावलु महला ५ ॥ मात गरभ महि हाथ दे राखिआ ॥ हरि रसु छोडि बिखिआ फलु चाखिआ ॥ १ ॥ भजु गोबिद सभ छोडि जंजाल ॥ जब जमु आइ संघारै मूड़े तब तनु बिनसि जाइ बेहाल ॥ १ ॥ रहाउ ॥ तनु मनु धनु अपना करि थापिआ ॥ करनहारु इक निमख न जापिआ ॥ २ ॥ महा मोह अंध कूप परिआ ॥ पारब्रहमु माइआ पटलि बिसरिआ ॥ ३ ॥ वडै भागि प्रभ कीरतनु गाइआ ॥ संतसंगि नानक प्रभु पाइआ ॥ ४ ॥ ११ ॥ १६ ॥

हे जीव ! परमेश्वर ने अपना हाथ देकर तुझे माता के गर्भ में बचाया है, लेकिन हरि-रस को छोड़कर तू विष रूपी माया का फल चख रहा है॥ १॥ जगत् के सारे जंजाल छोड़कर गोविंद का भजन करो। हे मूर्ख ! जब यम आकर मारता है तो यह तन नाश हो जाता है और इसका बड़ा बुरा हाल होता है॥ १॥ रहाउ॥ यह तन, मन एवं धन तूने अपना समझ लिया है, लेकिन उस बनाने वाले परमात्मा को एक क्षण भर के लिए भी याद नहीं किया॥ २॥ तू महामोह के अँधे कुएँ में गिर पड़ा है, इसलिए माया के पर्दे के कारण तूने भगवान को भुला दिया है॥ ३॥ हे नानक ! बड़े भाग्य से प्रभु का कीर्तन गाया है और संतों की संगति में प्रभु को पा लिया है॥ ४॥ ११॥ १६॥

बिलावलु महला ५ ॥ मात पिता सुत बंधप भाई ॥ नानक होआ पारब्रहमु सहाई ॥ १ ॥ सूख सहज आनंद घणे ॥ गुरु पूरा पूरी जा की बाणी अनिक गुणा जा के जाहि न गणे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सगल सरंजाम करे प्रभु आपे ॥ भए मनोरथ सो प्रभु जापे ॥ २ ॥ अरथ धरम काम मोख का दाता ॥ पूरी भई सिमरि सिमरि बिधाता ॥ ३ ॥ साधसंगि नानकि रंगु माणिआ ॥ घरि आइआ पूरै गुरि आणिआ ॥ ४ ॥ १२ ॥ १७ ॥

हे नानक ! माता-पिता, पुत्र, बंधु एवं भाई की तरह परब्रह्म ही हमारा सहायक बना है॥ १॥ मुझे सहज सुख एवं बड़ा आनंद प्राप्त हो गया है। पूर्ण गुरु, जिसकी वाणी पूर्ण है, उसके अनेकों ही गुण हैं, जो मुझ से गिने नहीं जा सकते॥ १॥ रहाउ॥ प्रभु स्वयं ही सभी कार्य साकार कर देता

है। सो प्रभु को जपने से मेरे सारे मनोरथ पूरे हो गए हैं॥ २॥ परमात्मा धर्म, अर्थ, काम एवं मोक्ष का दाता है। उस विधाता का सिमरन कर कर के मेरी साधना पूरी हो गई है॥ ३॥ नानक ने साधु की संगति में आनंद प्राप्त किया है। पूर्ण गुरु की कृपा से प्रभु हृदय-घर में आ गया है॥ ४॥ १२॥ १७॥

बिलावलु महला ५ ॥ सब निधान पूरन गुरदेव ॥ १ ॥ रहाउ ॥ हरि हरि नामु जपत नर जीवे ॥ मरि खुआरु साकत नर थीवे ॥ १ ॥ राम नामु होआ रखवारा ॥ झख मारउ साकतु वेचारा ॥ २ ॥ निंदा करि करि पचहि घनेरे ॥ मिरतक फास गलै सिरि पैरे ॥ ३ ॥ कहु नानक जपहि जन नाम ॥ ता के निकटि न आवै जाम ॥ ४ ॥ १३ ॥ १८ ॥

पूर्ण गुरुदेव सर्व सुखों का भण्डार है॥ १॥ रहाउ॥ भगवान् का नाम जपने से ही मनुष्य जीते हैं किन्तु शाक्त आदमी मर कर ख्वार होते हैं॥ १॥ राम नाम मेरा रखवाला बन गया है लेकिन शाक्त बेचारा यूं ही समय बर्बाद करता रहता है॥ २॥ अनेक व्यक्ति संत-महापुरुषों की निंदा कर-करके बहुत दुखी होते हैं और मृत्यु की फाँसी उनके गले, सिर एवं पैरों में पड़ी रहती है॥ ३॥ हे नानक! जो नाम जपते हैं, यम उनके निकट नहीं आता॥ ४॥ १३॥ १८॥

रागु बिलावलु महला ५ घरु ४ दुपदे ੧ਓ सतिगुर प्रसादि ॥

कवन संजोग मिलउ प्रभ अपने ॥ पलु पलु निमख सदा हरि जपने ॥ १ ॥ चरन कमल प्रभ के नित धिआवउ ॥ कवन सु मति जितु प्रीतमु पावउ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ ऐसी क्रिपा करहु प्रभ मेरे ॥ हरि नानक बिसरु न काहू बेरे ॥ २ ॥ १ ॥ १९ ॥

वह कौन-सा संयोग है, जब मैं अपने प्रभु को मिलूँगा? मैं पल-पल एवं हर क्षण सदैव हरि को जपता रहता हूँ॥ १॥ मैं नित्य प्रभु के चरण-कमल का ध्यान करता रहता हूँ। वह कौन-सी सुमति है, जिस द्वारा प्रियतम को पा लूँगा॥ १॥ रहाउ॥ नानक प्रार्थना करता है कि हे मेरे प्रभु! ऐसी कृपा करो ताकि मैं कभी भी तुझे विस्मृत न करूँ॥ २॥ १॥ १९॥

बिलावलु महला ५ ॥ चरन कमल प्रभ हिरदै धिआए ॥ रोग गए सगले सुख पाए ॥ १ ॥ गुरि दुखु काटिआ दीनो दानु ॥ सफल जनमु जीवन परवानु ॥ १ ॥ रहाउ ॥ अकथ कथा अंम्रित प्रभ बानी ॥ कहु नानक जपि जीवे गिआनी ॥ २ ॥ २ ॥ २० ॥

प्रभु के चरण-कमल का हृदय में ध्यान करने से रोग दूर हो गए हैं और सर्व सुख पा लिए हैं॥ १॥ गुरु ने दुख काट दिया है और मुझे नाम का दान दिया है। अब मेरा जन्म सफल हो गया है और यह जीवन परवान हो गया है॥ १॥ रहाउ॥ हे नानक! प्रभु की अमृत वाणी की कथा अकथनीय है और ज्ञानी पुरुष इसे जपकर ही जीते हैं॥ २॥ २॥ २०॥

बिलावलु महला ५ ॥ सांति पाई गुरि सतिगुरि पूरे ॥ सुख उपजे बाजे अनहद तूरे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ ताप पाप संताप बिनासे ॥ हरि सिमरत किलविख सभि नासे ॥ १ ॥ अनदु करहु मिलि सुंदर नारी ॥ गुरि नानकि मेरी पैज सवारी ॥ २ ॥ ३ ॥ २१ ॥

पूर्ण गुरु-सतगुरु ने हृदय में शान्ति कर दी है। सुख उत्पन्न हो गया है और मन में अनहद ध्वनियों वाले बाजे बज रहे हैं॥ १॥ रहाउ॥ ताप, पाप एवं संताप नाश हो गए हैं। हरि का सिमरन करने से सारे किल्विष दूर हो गए हैं॥ १॥ हे (सत्संगी रूपी) सुन्दर नारी! मिलकर आनंद करो, गुरु नानक ने मेरी लाज रख ली है॥ २॥ ३॥ २१॥

बिलावलु महला ५ ॥ ममता मोह ध्रोह मदि माता बंधनि बाधिआ अति बिकराल ॥ दिनु दिनु छिजत बिकार करत अउध फाही फाथा जम कै जाल ॥ १ ॥ तेरी सरणि प्रभ दीन दइआला ॥ महा बिखम सागरु अति भारी उधरहु साधू संगि रवाला ॥ १ ॥ रहाउ ॥ प्रभ सुखदाते समरथ सुआमी जीउ पिंडु सभु तुमरा माल ॥ भ्रम के बंधन काटहु परमेसर नानक के प्रभ सदा क्रिपाल ॥ २ ॥ ४ ॥ २२ ॥

ममता, मोह एवं छल-कपट के नशे में मतवाला मनुष्य बन्धनों में फँसा हुआ अति विकराल नजर आता है। पाप करते हुए उसकी आयु दिन-बदिन नाश होती रहती है तथा फाँसी में फँसा हुआ यम के जाल में पड़ा हुआ है॥ १॥ हे दीनदयाल प्रभु ! मैं तेरी शरण में आया हूँ। यह संसार सागर महाविषम एवं अति भारी है, इसलिए मुझे साधु की संगति में उनकी चरण-धूलि देकर उद्धार कर दो॥ १॥ रहाउ॥ हे मेरे स्वामी-प्रभु ! तू सुखों का दाता है और सर्वकला समर्थ है। मेरी जिंदगी एवं शरीर इत्यादि सब कुछ तेरी ही संपति है। हे परमेश्वर ! मेरे भ्रम के बन्धन काट दो। हे नानक के प्रभु ! तू सदैव कृपालु है॥ २॥ ४॥ २२॥

बिलावलु महला ५ ॥ सगल अनंदु कीआ परमेसरि अपणा बिरदु सम्हारिआ ॥ साध जना होए किरपाला बिगसे सभि परवारिआ ॥ १ ॥ कारजु सतिगुरि आपि सवारिआ ॥ वडी आरजा हरि गोबिंद की सूख मंगल कलिआण बीचारिआ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ वण त्रिण त्रिभवण हरिआ होए सगल जीअ साधारिआ ॥ मन इछे नानक फल पाए पूरन इछ पुजारिआ ॥ २ ॥ ५ ॥ २३ ॥

परमेश्वर ने अपने विरद् का पालन करते हुए सब आनंद कर दिया है। वह साधुजनों पर कृपालु हो गया है और सारा परिवार भी प्रसन्न हो गया है॥ १॥ मेरा कार्य सतगुरु ने स्वयं ही संवार दिया है। उसने सुख, शान्ति एवं कल्याण का विचार करते हुए (बालक) हरिगोविन्द की आयु लंबी कर दी है॥ १॥ रहाउ॥ वन, वनस्पति एवं धरती, आकाश, पाताल—तीनों भवन हरे भरे हो गए हैं। इस प्रकार सभी जीवों को उसने सहारा दिया है। हे नानक ! मुझे मनोवांछित फल प्राप्त हो गया है और सभी इच्छाएँ पूरी हो गई हैं॥ २॥ ५॥ २३॥

{उल्लेखनीय है कि श्री गुरु अर्जुन देव जी ने बालक हरिगोविंद के रोगन्मुक्त होने पर प्रभु का धन्यवाद करते हुए इस शब्द का उच्चारण किया था।}

बिलावलु महला ५ ॥ जिसु ऊपरि होवत दइआलु ॥ हरि सिमरत काटै सो कालु ॥ १ ॥ रहाउ ॥ साधसंगि भजीऐ गोपालु ॥ गुन गावत तूटै जम जालु ॥ १ ॥ आपे सतिगुरु आपे प्रतिपाल ॥ नानकु जाचै साध रवाल ॥ २ ॥ ६ ॥ २४ ॥

जिस पर ईश्वर दयालु हो जाता है, हरि का सिमरन करके वह काल को भी जीत लेता है॥ १॥ रहाउ॥ साधुओं की संगति में मिलकर भगवान् का भजन करना चाहिए, क्योंकि उसका गुणगान करने से यम का जाल भी टूट जाता है॥ १॥ ईश्वर स्वयं ही सतगुरु है और स्वयं ही सबका प्रतिपालक है। नानक तो साधुओं की चरण-धूलि ही चाहता है॥ २॥ ६॥ २४॥

बिलावलु महला ५ ॥ मन महि सिंचहु हरि हरि नाम ॥ अनदिनु कीरतनु हरि गुण गाम ॥ १ ॥ ऐसी प्रीति करहु मन मेरे ॥ आठ पहर प्रभ जानहु नेरे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ कहु नानक जा के निरमल भाग ॥ हरि चरनी ता का मनु लाग ॥ २ ॥ ७ ॥ २५ ॥

हे भाई ! मन में हरि-नाम सिंचित करो, निशदिन कीर्तन करते हुए हरि की महिमागान करो॥ १॥ हे मेरे मन ! ऐसी प्रीति करो कि आठ प्रहर प्रभु को निकट ही मानो॥ १॥ रहाउ॥

हे नानक! जिसका भाग्य निर्मल होता है, उसका ही मन हरि चरणों में लगता है॥ २॥ ७॥ २५॥

बिलावलु महला ५ ॥ रोगु गइआ प्रभि आपि गवाइआ ॥ नीद पई सुख सहज घरु आइआ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ रजि रजि भोजनु खावहु मेरे भाई ॥ अंम्रित नामु रिद माहि धिआई ॥ १ ॥ नानक गुर पूरे सरनाई ॥ जिनि अपने नाम की पैज रखाई ॥ २ ॥ ८ ॥ २६ ॥

प्रभु ने स्वयं रोग दूर कर दिया है। अब हमें सुख की नींद आई है और घर में सहज ही आनंद आया है॥ १॥ रहाउ॥ हे मेरे भाई! पेट भरकर (नाम रूपी) भोजन खाओ। मैं अपने हृदय में अमृत नाम का ध्यान करता रहता हूँ॥ १॥ हे नानक! मैंने पूर्ण गुरु की शरण ली है, जिसने स्वयं अपने नाम की लाज रखी है॥ २॥ ८॥ २६॥

बिलावलु महला ५ ॥ सतिगुर करि दीने असथिर घर बार ॥ रहाउ ॥ जो जो निंद करै इन ग्रिहन की तिसु आगै ही मारै करतार ॥ १ ॥ नानक दास ता की सरनाई जा को सबदु अखंड अपार ॥ २ ॥ ९ ॥ २७ ॥

सतगुरु ने घर-परिवार को स्थिर कर दिया है॥ रहाउ॥ जो-जो व्यक्ति गुरु-घर की निंदा करता है, परमात्मा उसे नष्ट कर देता है॥ १॥ दास नानक उस परमेश्वर की शरण में है, जिसका शब्द अखण्ड एवं अपार है॥ २॥ ९॥ २७॥

बिलावलु महला ५ ॥ ताप संताप सगले गए बिनसे ते रोग ॥ पारब्रहमि तू बखसिआ संतन रस भोग ॥ रहाउ ॥ सरब सुखा तेरी मंडली तेरा मनु तनु आरोग ॥ गुन गावहु नित राम के इह अवखद जोग ॥ १ ॥ आइ बसहु घर देस महि इह भले संजोग ॥ नानक प्रभ सुप्रसंन भए लहि गए बिओग ॥ २ ॥ १० ॥ २८ ॥

सारे ताप-संताप समाप्त हो गए हैं और सब रोग नष्ट हो गए हैं। हे परब्रह्म! तूने संतजनों का संगति रूपी रस भोग प्रदान किया है॥ रहाउ॥ सर्वसुख तेरे साथी बने रहेंगे और तेरा मन-तन आरोग्य रहेगा। इसलिए नित्य राम के गुण गाते रहो, क्योंकि यही औषधि हर प्रकार के दुख-क्लेश से छुटकारे के लिए योग्य है॥ १॥ अपने हृदय-घर में आकर बसे रहो, यही संयोग उत्तम है। हे नानक! प्रभु जी प्रसन्न हो गए हैं, जिससे सारे वियोग मिट गए हैं॥ २॥ १०॥ २८॥

बिलावलु महला ५ ॥ काहू संगि न चालही माइआ जंजाल ॥ ऊठि सिधारे छत्रपति संतन कै खिआल ॥ रहाउ ॥ अहंबुधि कउ बिनसना इह धुर की ढाल ॥ बहु जोनी जनमहि मरहि बिखिआ बिकराल ॥ १ ॥ सति बचन साधू कहहि नित जपहि गुपाल ॥ सिमरि सिमरि नानक तरे हरि के रंग लाल ॥ २ ॥ ११ ॥ २९ ॥

यह माया के जंजाल किसी भी मनुष्य के साथ नहीं जाते। संतजनों के विचारानुसार बड़े-बड़े छत्रपति राजे भी इन आडम्बरों को छोड़कर संसार से खाली हाथ चले गए हैं॥ रहाउ॥ कुदरत की यही परम्परा है कि अहंबुद्धि का हमेशा ही विनाश होता है। विकराल विषय-विकारों में लीन हुए अहंकारी आदमी अनेक योनियों में फँसकर जन्मते मरते रहते हैं॥ १॥ साधुजन सदा ही सत्य वचन कहते हैं और नित्य भगवान् का जाप करते रहते हैं। हे नानक! वे हरि के प्रेम-रंग में लाल होकर नाम-सिमरन करते हुए जगत से तर जाते हैं॥ २॥ ११॥ २९॥

बिलावलु महला ५ ॥ सहज समाधि अनंद सूख पूरे गुरि दीन ॥ सदा सहाई संगि प्रभ अंम्रित गुण चीन ॥ रहाउ ॥ जै जै कारु जगत्र महि लोचहि सभि जीआ ॥ सुप्रसंन भए सतिगुर प्रभू कछु बिघनु न थीआ ॥ १ ॥ जा का अंगु दइआल प्रभ ता के सभ दास ॥ सदा सदा वडिआईआ नानक गुर पासि ॥ २ ॥ १२ ॥ ३० ॥

पूर्ण गुरु ने मुझे सहज समाधि, सुख एवं आनंद दिए हैं। प्रभु सदैव मेरा सहायक एवं साथी बना रहता है और मैं उसके अमृत गुणों का चिंतन करता रहता हूँ॥ रहाउ॥ सभी लोग जगत् में अपनी जय-जयकार ही चाहते हैं। सतगुरु प्रभु सुप्रसन्न हो गया है, उसकी कृपा से किसी भी कार्य में विघ्न नहीं आ रहा॥ १॥ दयालु प्रभु जिसका भी पक्ष लेता है, सभी जीव उसके दास बन जाते हैं। हे नानक ! गुरु की ओर से मुझे सदैव बड़ाईयाँ मिलती रहती हैं॥ २॥ १२॥ ३०॥

रागु बिलावलु महला ५ घरु ५ चउपदे ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

म्रित मंडल जगु साजिआ जिउ बालू घर बार ॥ बिनसत बार न लागई जिउ कागद बूंदार ॥ १ ॥ सुनि मेरी मनसा मनै माहि सति देखु बीचारि ॥ सिध साधिक गिरही जोगी तजि गए घर बार ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जैसा सुपना रैनि का तैसा संसार ॥ द्रिसटिमान सभु बिनसीऐ किआ लगहि गवार ॥ २ ॥ कहा सु भाई मीत है देखु नैन पसारि ॥ इकि चाले इकि चालसहि सभि अपनी वार ॥ ३ ॥ जिन पूरा सतिगुरु सेविआ से असथिरु हरि दुआरि ॥ जनु नानकु हरि का दासु है राखु पैज मुरारि ॥ ४ ॥ १ ॥ ३१ ॥

परमात्मा ने मृत्यु-मण्डल रूपी ऐसा जगत् बनाया है, जैसे रेत के बने हुए घर-बार होते हैं। जैसे वर्षा की बूंदों से कागज नाश हो जाता है, वैसे ही जगत् को नाश होते देरी नहीं लगती॥ १॥ हे बंधु ! जरा मन लगाकर सुन, अपने मन में सत्य को विचार कर देख ले। सिद्ध, साधक, गृहस्थी एवं योगी सभी घर बार छोड़कर दुनिया से चले गए हैं॥ १॥ रहाउ॥ जैसे रात्रि का सपना होता है, वैसे ही यह संसार है। हे गंवार आदमी ! दिखाई देने वाला यह सबकुछ ही नाश हो जाएगा, तू क्यों इससे लिपट रहा है॥ २॥ अपनी आँखें खोलकर देख, तेरे वे भाई एवं मित्र कहाँ हैं ? उन में से कुछ दुनिया छोड़कर चले गए हैं और कुछ चले जाएँगे। अपनी बारी आने पर सारे ही चले जाते हैं॥ ३॥ जिन्होंने पूर्ण सतगुरु की सेवा की है, वे हरि के द्वार में स्थिर हो गए हैं। हे प्रभु ! नानक तेरा दास है। मेरी लाज रखो॥ ४॥ १॥ ३१॥

बिलावलु महला ५ ॥ लोकन कीआ वडिआईआ बैसंतरि पागउ ॥ जिउ मिलै पिआरा आपना ते बोल करागउ ॥ १ ॥ जउ प्रभ जीउ दइआल होइ तउ भगती लागउ ॥ लपटि रहिओ मनु बासना गुर मिलि इह तिआगउ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ करउ बेनती अति घनी इहु जीउ होमागउ ॥ अरथ आन सभि वारिआ प्रिअ निमख सोहागउ ॥ २ ॥ पंच संगु गुर ते छुटे दोख अरु रागउ ॥ रिदै प्रगासु प्रगट भइआ निसि बासुर जागउ ॥ ३ ॥ सरणि सोहागनि आइआ जिसु मसतकि भागउ ॥ कहु नानक तिनि पाइआ तनु मनु सीतलागउ ॥ ४ ॥ २ ॥ ३२ ॥

लोगों की तारीफ को तो अग्नि में डाल दूँगा। जैसे मुझे अपना प्यारा प्रभु मिल जाए, मैं वही बोल बोलूँगा॥ १॥ जैसे ही प्रभु जी मुझ पर दयालु हो जाए तो मैं उनकी भक्ति में लग जाऊँगा। मेरा मन वासनाओं से लिपटा हुआ है और गुरु को मिलकर इन्हें त्याग दूँगा॥ १॥ रहाउ॥ मैं अपने प्रभु से बहुत प्रार्थना करूँगा और यह जीवन भी उसे कुर्बान कर दूँगा। मैंने अपने प्रिय के क्षण भर के सुहाग के लिए अन्य सभी धन पदार्थ उस पर न्यौछावर कर दिए हैं॥ २॥ गुरु-कृपा

से काम, क्रोध, मोह, लोभ एवं अहंकार इन पाँचों से संगति छूट गई है और सारे दोष एवं राग द्वेष भी दूर हो गए हैं। मेरे हृदय में ज्ञान का प्रकाश हो गया है, इसलिए अब मैं दिन-रात जागता रहता हूँ॥ ३॥ जिसके मस्तक पर उत्तम भाग्य है, वही जीव सुहागिन बनकर प्रभु की शरण में आया है। हे नानक! प्रभु को पा कर उसका तन-मन शीतल हो गया है॥ ४॥ २॥ ३२॥

बिलावलु महला ५ ॥ लाल रंगु तिस कउ लगा जिस के वडभागा ॥ मैला कदे न होवई नह लागै दागा ॥ १ ॥ प्रभु पाइआ सुखदाईआ मिलिआ सुख भाइ ॥ सहजि समाना भीतरे छोडिआ नह जाइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जरा मरा नह विआपई फिरि दूखु न पाइआ ॥ पी अंम्रितु आघानिआ गुरि अमरु कराइआ ॥ २ ॥ सो जानै जिनि चाखिआ हरि नामु अमोला ॥ कीमति कही न जाईऐ किआ कहि मुखि बोला ॥ ३ ॥ सफल दरसु तेरा पारब्रहम गुण निधि तेरी बाणी ॥ पावउ धूरि तेरे दास की नानक कुरबाणी ॥ ४ ॥ ३ ॥ ३३ ॥

जिसका उत्तम भाग्य होता है, उसे ही प्रभु का प्रेम रूपी लाल रंग लगता है। यह प्रेम-रंग विकारों की मैल से कभी मैला नहीं होता और न ही इसे अहंत्व रूपी कोई दाग लगता है॥ १॥ सुखों के दाता प्रभु को पाकर सर्व सुख मिल गए हैं। वह अपने मन में सहज ही समाया रहता है और उससे सहज सुख छोड़ा नहीं जाता॥ १॥ रहाउ॥ उसे बुढ़ापा एवं मृत्यु प्रभावित नहीं करते और न ही कोई दुख प्राप्त हुआ है, क्योंकि नामामृत का पान करके वह संतुष्ट हो गया है और गुरु ने उसे अमर कर दिया है॥ २॥ जिसने अमूल्य हरि-नाम को चखा है, वही इसके स्वाद को जानता है। हरि-नाम का मूल्य मुझसे बताया नहीं जा सकता, मैं अपने मुँह से कहकर क्या बोलूँ?॥ ३॥ हे परब्रह्म! तेरा दर्शन सफल है और तेरी वाणी गुणों का खजाना है। नानक प्रार्थना करता है कि हे प्रभु! अगर तेरे दास की चरण-धूलि मिल जाए तो उस पर ही कुर्बान होऊँ॥ ४॥ ३॥ ३३॥

बिलावलु महला ५ ॥ राखहु अपनी सरणि प्रभ मोहि किरपा धारे ॥ सेवा कछू न जानऊ नीचु मूरखारे ॥ १ ॥ मानु करउ तुधु ऊपरे मेरे प्रीतम पिआरे ॥ हम अपराधी सद भूलते तुम्ह बखसनहारे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ हम अवगन करह असंख नीति तुम्ह निरगुन दातारे ॥ दासी संगति प्रभू तिआगि ए करम हमारे ॥ २ ॥ तुम्ह देवहु सभु किछु दइआ धारि हम अकिरतघनारे ॥ लागि परे तेरे दान सिउ नह चिति खसमारे ॥ ३ ॥ तुझ ते बाहरि किछु नही भव काटनहारे ॥ कहु नानक सरणि दइआल गुर लेहु मुगध उधारे ॥ ४ ॥ ४ ॥ ३४ ॥

हे प्रभु! कृपा करके मुझे अपनी शरण में रखो। मैं तो नीच एवं मूर्ख हूँ और तेरी सेवा करना कुछ भी नहीं जानता॥ १॥ हे मेरे प्रियतम प्यारे! मैं तुझ पर बड़ा मान करता हूँ। हम जीव अपराधी हैं और सदा ही भूल करते रहते हैं लेकिन तू क्षमावान् है॥ १॥ रहाउ॥ हम नित्य असंख्य अवगुण करते रहे हैं परन्तु तू हम निर्गुणों को क्षमा करने वाला है। हे प्रभु! हमारे कर्म इतने बुरे हैं कि तुझे छोड़कर तेरी दासी माया की संगति में आसक्त रहते हैं॥ २॥ अपनी दया करके तुम हमें सबकुछ देते रहते हो लेकिन हम फिर भी एहसान-फरामोश ही हैं। हे मालिक! हम तुझे याद नहीं करते अपितु तेरे दिए हुए दान में ही लीन रहते हैं॥ ३॥ हे संसार-सागर के बन्धन काटने वाले! तेरे वश से बाहर कुछ भी नहीं है। नानक विनती करता है कि हे दयालु गुरु! तेरी शरण में आया हूँ, मुझ मूर्ख का भवसागर से उद्धार कर दो॥ ४॥ ४॥ ३४॥

बिलावलु महला ५ ॥ दोसु न काहू दीजीऐ प्रभु अपना धिआईऐ ॥ जितु सेविऐ सुखु होइ घना मन सोई गाईऐ ॥ १ ॥ कहीऐ काइ पिआरे तुझु बिना ॥ तुम्ह दइआल सुआमी सभ अवगन हमा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जिउ तुम्ह राखहु तिउ रहा अवरु नही चारा ॥ नीधरिआ धर तेरीआ इक नाम अधारा ॥ २ ॥ जो तुम्ह करहु सोई भला मनि लेता मुकता ॥ सगल समग्री तेरीआ सभ तेरी जुगता ॥ ३ ॥ चरन पखारउ करि सेवा जे ठाकुर भावै ॥ होहु क्रिपाल दइआल प्रभ नानकु गुण गावै ॥ ४ ॥ ५ ॥ ३५॥

किसी अन्य को दोष नहीं देना चाहिए अपितु सदैव प्रभु का ध्यान करना चाहिए। हे मेरे मन ! जिसकी उपासना करने से बहुत सुख मिलता है, उस परमात्मा का ही यशगान करना चाहिए।। १।। हे मेरे प्यारे ! तेरे अतिरिक्त किसे अपना दुख बताऊँ ? हे मेरे स्वामी ! तू दया का सागर है, परन्तु मुझ में अनेक अवगुण भरे हुए हैं।। १।। रहाउ।। जैसे (सुख दुख में) तू मुझे रखता है, वैसे ही मैं रहता हूँ। इसके सिवाय अन्य कोई साधन नहीं है। बेसहारों को तेरा ही सहारा है तथा एक तेरा नाम ही सबके जीवन का आधार है।। २।। जो कुछ तू करता है, वही भला है। जो इसे सहर्ष स्वीकार कर लेता है, वह मुक्त हो जाता है। यह सम्पूर्ण सृष्टि तेरी अपनी है और सबकुछ तेरी मर्यादा में हो रहा है।। ३।। यदि ठाकुर जी को अच्छा लगे तो ही उनकी सेवा करके चरण धोऊँ। हे प्रभु ! कृपालु एवं दयालु हो जाओ ताकि नानक तेरे गुण गाता रहे।। ४।। ५।। ३५।।

बिलावलु महला ५ ॥ मिरतु हसै सिर ऊपरे पसूआ नही बूझै ॥ बाद साद अहंकार महि मरणा नही सूझै ॥ १ ॥ सतिगुरु सेवहु आपना काहे फिरहु अभागे ॥ देखि कसुंभा रंगुला काहे भूलि लागे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ करि करि पाप दरबु कीआ वरतण कै ताई ॥ माटी सिउ माटी रली नागा उठि जाई ॥ २ ॥ जा कै कीऐ स्रमु करै ते बैर बिरोधी ॥ अंत कालि भजि जाहिगे काहे जलहु करोधी ॥ ३ ॥ दास रेणु सोई होआ जिसु मसतकि करमा ॥ कहु नानक बंधन छुटे सतिगुर की सरना ॥ ४ ॥ ६ ॥ ३६ ॥

मृत्यु सिर पर खड़ी हुई हँसती है लेकिन पशु समान इन्सान इस तथ्य को नहीं समझता। जीवन भर वाद-विवाद, स्वादों एवं अहंकार में लिप्त रहने के कारण उसे मरना ही नहीं सूझता।। १।। हे बदनसीब ! क्यों भटक रहा है ? अपने सतगुरु की सेवा करो। कुसुंभ फूल के सुन्दर रंग वाली माया को देखकर तू भूलकर क्यों इससे मोह कर रहा है।। १।। रहाउ।। अपने उपयोग के लिए पाप कर-करके तूने बेशुमार धन एकत्रित किया है। किन्तु जब मृत्यु आती है तो यह शरीर रूपी मिट्टी मिट्टी में ही मिल जाता है और जीव नग्न ही दुनिया से चला जाता है।। २।। जिन संबंधियों के लिए वह कठोर परिश्रम करता है, वही उसके विरोधी बनकर उससे वैर करते हैं। इनके लिए तू क्यों क्रोध में जल रहा है ? क्योंकि अंतकाल सभी तुझसे दूर भाग जाएँगे।। ३।। जिसके मस्तक पर भाग्य होता है, वही प्रभु के दासों की चरणरज बना है। हे नानक ! जिसने भी सतगुरु की शरण ली है, उसके तमाम बन्धन छूट गए हैं।। ४।। ६।। ३६।।

बिलावलु महला ५ ॥ पिंगुल परबत पारि परे खल चतुर बकीता ॥ अंधुले त्रिभवण सूझिआ गुर भेटि पुनीता ॥ १ ॥ महिमा साधू संग की सुनहु मेरे मीता ॥ मैलु खोई कोटि अघ हरे निरमल भए चीता ॥ १ ॥ रहाउ ॥ ऐसी भगति गोविंद की कीटि हसती जीता ॥ जो जो कीनो आपनो तिसु अभै दानु दीता ॥ २ ॥ सिंघु बिलाई होइ गइओ त्रिणु मेरु दिखीता ॥ स्रमु करते दम आढ कउ ते गनी धनीता ॥ ३ ॥ कवन वडाई कहि सकउ बेअंत गुनीता ॥ करि किरपा मोहि नामु देहु नानक दर सरीता ॥ ४ ॥ ७ ॥ ३७ ॥

लँगड़ा आदमी पर्वत पर चढ़ गया है और महामूर्ख भी चतुर वक्ता बन गया है। गुरु से मिलकर अन्धे व्यक्ति को तीनों लोकों का ज्ञान हो गया है॥ १॥ हे मेरे मित्र ! साधु-संगति की महिमा सुनो; जिस किसी ने भी साधु का संग किया है, उसके मन की मैल दूर हो गई है, उसके करोड़ों ही पाप नाश हो गए हैं और उसका चित निर्मल हो गया है॥ १॥ रहाउ॥ गोविंद की भक्ति ऐसी है कि नम्रता रूपी चींटी ने अहम् रूपी हाथी को भी जीत लिया है। जिस-किसी को भी भगवान् ने अपना बनाया है, उसे अभयदान दिया है॥ २॥ (अहंकार रूपी) सिंह (नम्रता रूपी) बिल्ली बन गया है। उसे (नम्रता रूपी) घास का तिनका मेरू पर्वत दिखाई देने लग गया है। जो व्यक्ति पहले आधे-आधे दाम के लिए मेहनत करते थे, अब वह धनवान माने जाते हैं॥ ३॥ हे बेअंत गुणों के भण्डार ! मैं तेरी कौन-कौन-सी बड़ाई कर सकता हूँ ? नानक विनती करता है कि हे प्रभु ! कृपा करके मुझे अपना नाम दीजिए, मैं तेरे दर्शनों का अभिलाषी हूँ॥ ४॥ ७॥ ३७॥

बिलावलु महला ५ ॥ अहंबुधि परबाद नीत लोभ रसना सादि ॥ लपटि कपटि ग्रिहि बेधिआ मिथिआ बिखिआदि ॥ १ ॥ ऐसी पेखी नेत्र महि पूरे गुर परसादि ॥ राज मिलख धन जोबना नामै बिनु बादि ॥ १ ॥ रहाउ ॥ रूप धूप सोगंधता कापर भोगादि ॥ मिलत संगि पापिसट तन होए दुरगादि ॥ २ ॥ फिरत फिरत मानुखु भइआ खिन भंगन देहादि ॥ इह अउसर ते चूकिआ बहु जोनि भ्रमादि ॥ ३ ॥ प्रभ किरपा ते गुर मिले हरि हरि बिसमाद ॥ सूख सहज नानक अनंद ता कै पूरन नाद ॥ ४ ॥ ८ ॥ ३८ ॥

अहम्-भावना के कारण इन्सान नित्य झगड़ा करता रहता है और जीभ के स्वाद में फँसकर बड़ा लोभ करता है। वह अपने घर के सदस्यों के मोह में फँसा हुआ लोगों से छल-कपट करता है और झूठे विकारों इत्यादि में बँधा रहता है॥ १॥ पूर्ण गुरु की कृपा से मैंने उनकी ऐसी दुर्दशा अपनी आँखों से देखी है। राज्य, सम्पति, धन एवं यौवन ये सभी भगवन्नाम बिना व्यर्थ हैं॥ १॥ रहाउ॥ सुन्दर रूप वाले पदार्थ, धूप, सुगन्धि, वस्त्र एवं स्वादिष्ट भोजन इत्यादि सभी पापी मनुष्य के तन को छू कर दुर्गन्धयुक्त बन जाते हैं॥ २॥ अनेक योनियों में भटकने के पश्चात् जीव को अमूल्य मनुष्य-जीवन मिला है और इसकी देह क्षणभंगुर है। इस सुनहरी अवसर से चूक कर जीव दोबारा अनेक योनियों में भटकता है॥ ३॥ प्रभु-कृपा से जिस व्यक्ति को गुरु मिल जाता है, वह अद्भुत रूप वाले हरि का नाम जपता रहता है। हे नानक ! उसे सहज सुख एवं आनंद प्राप्त हो जाता है और मन में अनहद नाद गूंजने लग जाते हैं॥ ४॥ ८॥ ३८॥

बिलावलु महला ५ ॥ चरन भए संत बोहिथा तरे सागरु जेत ॥ मारग पाए उदिआन महि गुरि दसे भेत ॥ १ ॥ हरि हरि हरि हरि हरि हरे हरि हरि हरि हेत ॥ ऊठत बैठत सोवते हरि हरि हरि चेत ॥ १ ॥ रहाउ ॥ पंच चोर आगै भगे जब साधसंगेत ॥ पूंजी साबतु घणो लाभु ग्रिहि सोभा सेत ॥ २ ॥ निहचल आसणु मिटी चिंत नाही डोलेत ॥ भरमु भुलावा मिटि गइआ प्रभ पेखत नेत ॥ ३ ॥ गुण गभीर गुन नाइका गुण कहीअहि केत ॥ नानक पाइआ साधसंगि हरि हरि अंम्रेत ॥ ४ ॥ ९ ॥ ३९ ॥

संतों के चरण जहाज बन गए हैं, जिस द्वारा अनेक जीव भवसागर से पार हो गए हैं। गुरु ने प्रभु मिलन का भेद बताया है और उन्हें संसार रूपी वन में भ्रमभुलैया से सन्मार्ग लगा दिया है॥ १॥ सदैव 'हरि-हरि-हरि-हरि' मंत्र को जपते रहो, हरि-नाम से प्रेम करो, उठते-बैठते तथा सोते वक्त हमेशा परमेश्वर को याद करो॥ १॥ रहाउ॥ जब साधु-संगति की तो काम, क्रोध, लोभ, मोह एवं अहंकार रूपी पाँच चोर भाग गए। नाम रूपी पूंजी को बचाते हुए उन्होंने बहुत लाभ

हासिल किया है और वे शोभा सहित अपने घर लौट आए हैं॥ २॥ वहाँ अब अटल आसन प्राप्त कर लिया है, उनकी सब चिन्ताएँ मिट गई हैं और अब वे कभी भी डगमगाते नहीं। अपने नेत्रों से प्रभु के साक्षात् दर्शन करने से उनका भ्रम-भुलावा मिट गया है॥ ३॥ परमात्मा गुणों का गहरा सागर है, सर्व गुणों का मालिक है। फिर उसके कितने गुण वर्णन किए जा सकते हैं ? हे नानक ! साधु की संगति में मिलकर हरि नाम रूपी अमृत पा लिया है॥ ४॥ ६॥ ३६॥

बिलावलु महला ५ ॥ बिनु साधू जो जीवना तेतो बिरथारी ॥ मिलत संगि सभि भ्रम मिटे गति भई हमारी ॥ १ ॥ जा दिन भेटे साध मोहि उआ दिन बलिहारी ॥ तनु मनु अपनो जीअरा फिरि फिरि हउ वारी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ एत छडाई मोहि ते इतनी द्रिड़तारी ॥ सगल रेन इहु मनु भइआ बिनसी अपधारी ॥ २ ॥ निंद चिंद पर दूखना ए खिन महि जारी ॥ दइआ मइआ अरु निकटि पेखु नाही दूरारी ॥ ३ ॥ तन मन सीतल भए अब मुकते संसारी ॥ हीत चीत सभ प्रान धन नानक दरसारी ॥ ४ ॥ १० ॥ ४० ॥

साधु की संगति के बिना जितना भी हमारा जीवन था, वह व्यर्थ बीत गया है। लेकिन अब साधु-संगति मिलने से सारे भ्रम मिट गए हैं और हमारी गति हो गई है॥ १॥ जिस दिन मुझे साधु मिले थे, मैं उस दिन पर बलिहारी जाता हूँ। मैं अपना तन, मन एवं प्राण बार-बार साधु पर न्यौछावर करता हूँ॥ १॥ रहाउ॥ साधु ने मुझसे अहंत्व छुड़वा दिया है और इतनी दृढ़ता प्रदान की है कि अब मेरा यह मन सबकी चरण-धूलि बन चुका है और सारा अपनापन नाश हो गया है॥ २॥ उन्होंने मेरे मन में पराई निंदा एवं दूसरों का बुरा सोचना एक क्षण में ही जला दिए हैं। अब मुझ में इतनी दया एवं प्रेम की भावना है कि सब जीवों में बस रहे ईश्वर को निकट ही देखता हूँ और उसे दूर नहीं समझता॥ ३॥ मेरा तन-मन शीतल हो गए हैं और अब मैं संसार के बन्धनों से मुक्त हो गया हूँ। हे नानक ! प्रभु के दर्शन ही मेरा धन, प्राण हित-चित इत्यादि सबकुछ है॥ ४॥ १०॥ ४०॥

बिलावलु महला ५ ॥ टहल करउ तेरे दास की पग झारउ बाल ॥ मसतकु अपना भेट देउ गुन सुनउ रसाल ॥ १ ॥ तुम्ह मिलते मेरा मनु जीओ तुम्ह मिलहु दइआल ॥ निसि बासुर मनि अनदु होत चितवत किरपाल ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जगत उधारन साध प्रभ तिन्ह लागहु पाल ॥ मोकउ दीजै दानु प्रभ संतन पग राल ॥ २ ॥ उकति सिआनप कछु नही नाही कछु घाल ॥ भ्रम भै राखहु मोह ते काटहु जम जाल ॥ ३ ॥ बिनउ करउ करुणापते पिता प्रतिपाल ॥ गुण गावउ तेरे साधसंगि नानक सुख साल ॥ ४ ॥ ११ ॥ ४१ ॥

हे ईश्वर ! मैं तेरे दास की सेवा करता हूँ और अपने केशों से उसके चरण झाड़ता हूँ। मैं अपना मस्तक उसे भेंट करता हूँ और उससे तेरे रसीले गुण सुनता हूँ॥ १॥ हे दयाल ! तुम मुझे आन मिलो, क्योंकि तुझे मिलकर ही मेरा मन जीवन प्राप्त करता है। हे कृपा के सागर ! तुझे याद करके रात-दिन मेरे मन में आनंद बना रहता है॥ १॥ रहाउ॥ प्रभु के साधु महात्मा जगत् का उद्धार करने में सक्षम हैं, अतः उनकी शरण में लग जाओ। हे प्रभु ! मुझे संतों की चरण-धूलि का दान दीजिए॥ २॥ मेरे पास कोई उक्ति एवं अक्लमंदी नहीं है और न ही कोई साधना की है। इसलिए भ्रम, भय एवं मोह से मेरी रक्षा करो और यम का जाल काट दो॥ ३॥ हे करुणापति, हे परमपिता ! तू समूचे जगत् का प्रतिपालक है। मैं तुझसे यही विनती करता हूँ कि मैं साधु की संगति में शामिल होकर तेरा गुणगान करता रहूँ। हे नानक ! यही सुखों का घर है॥ ४॥ ११॥ ४१॥

बिलावलु महला ५ ॥ कीता लोड़हि सो करहि तुझ बिनु कछु नाहि ॥ परतापु तुम्हारा देखि कै जमदूत छडि जाहि ॥ १ ॥ तुम्हरी क्रिपा ते छूटीऐ बिनसै अहंमेव ॥ सरब कला समरथ प्रभ पूरे गुरदेव ॥ १ ॥ रहाउ ॥ खोजत खोजत खोजिआ नामै बिनु कूरु ॥ जीवन सुखु सभु साधसंगि प्रभ मनसा पूरु ॥ २ ॥ जितु जितु लावहु तितु तितु लगहि सिआनप सभ जाली ॥ जत कत तुम्ह भरपूर हहु मेरे दीन दइआली ॥ ३ ॥ सभु किछु तुम ते मागना वडभागी पाए ॥ नानक की अरदासि प्रभ जीवा गुन गाए ॥ ४ ॥ १२ ॥ ४२ ॥

हे ईश्वर ! जो तू चाहता है, वही करता है। सच तो यही है कि तेरे बिना कुछ भी सृष्टि में संभव नहीं है। तेरा प्रताप देख कर यमदूत भी जीव को छोड़ जाते हैं॥ १॥ तेरी कृपा से ही जीव बन्धनों से छूटता है और उसका अहंत्व नाश हो जाता है। हे पूर्ण गुरुदेव प्रभु ! तू सर्वकला समर्थ है॥ १॥ रहाउ॥ खोजते-खोजते मैंने यही खोज की है कि नाम के अलावा अन्य सबकुछ झूठ है। जीवन में सच्चा सुख संतों की संगति में ही मिलता है और प्रभु हमारी हर कामना पूरी करने वाला है॥ २॥ जिस-जिस कार्य में तू जीवों को लगाता है, वे उधर ही लग जाते हैं, शेष उनकी अपनी सब चतुराइयाँ बेकार हैं। हे मेरे दीनदयाल ! तू हर जगह समाया हुआ है॥ ३॥ जीवों ने सबकुछ तुझसे ही मांगना है, लेकिन खुशकिस्मत ही तुझसे प्राप्त करते हैं। हे प्रभु ! नानक की एक यही प्रार्थना है कि मैं तेरे गुण गा कर जीता रहूँ॥ ४॥ १२॥ ४२॥

बिलावलु महला ५ ॥ साधसंगति कै बासबै कलमल सभि नसना ॥ प्रभ सेती रंगि रातिआ ता ते गरभि न ग्रसना ॥ १ ॥ नामु कहत गोविंद का सूची भई रसना ॥ मन तन निरमल होई है गुर का जपु जपना ॥ १ ॥ रहाउ ॥ हरि रसु चाखत ध्रापिआ मनि रसु लै हसना ॥ बुधि प्रगास प्रगट भई उलटि कमलु बिगसना ॥ २ ॥ सीतल सांति संतोखु होइ सभ बूझी त्रिसना ॥ दह दिस धावत मिटि गए निरमल थानि बसना ॥ ३ ॥ राखनहारै राखिआ भए भ्रम भसना ॥ नामु निधान नानक सुखी पेखि साध दरसना ॥ ४ ॥ १३ ॥ ४३ ॥

संतों की संगति में से सारे पाप नाश हो जाते हैं। प्रभु के रंग में रंगने से गर्भ में प्रवेश नहीं होता॥ १॥ गोविंद का नाम जपने से जिह्वा शुद्ध हो गई है, गुरु का बताया जाप जपने से मन-तन निर्मल हो गया है॥ १॥ रहाउ॥ हरि-रस चखकर मन बड़ा तृप्त हो गया है और इसका स्वाद लेकर मन बहुत खुश रहता है। उलटा पड़ा हृदय खिल गया है और बुद्धि में ज्ञान का प्रकाश हो गया है॥ २॥ मन में शीतल, शान्ति एवं सन्तोष उत्पन्न हो गया है, जिससे सारी तृष्णा बुझ गई है। मेरे मन की दसों दिशाओं वाली भटकन मिट गई है और अब यह निर्मल स्थान में बसने लग गया है॥ ३॥ सर्वरक्षक परमात्मा ने मुझे बचा लिया है और मेरे मन के भ्रम जलकर राख हो गए हैं। हे नानक ! नाम निधि को पाकर तथा साधुओं के दर्शन करके सुखी हो गया हूँ॥ ४॥ १३॥ ४३॥

बिलावलु महला ५ ॥ पाणी पखा पीसु दास कै तब होहि निहालु ॥ राज मिलख सिकदारीआ अगनी महि जालु ॥ १ ॥ संत जना का छोहरा तिसु चरणी लागि ॥ माइआधारी छत्रपति तिन्ह छोडउ तिआगि ॥ १ ॥ रहाउ ॥ संतन का दाना रूखा सो सरब निधान ॥ ग्रिहि साकत छतीह प्रकार ते बिखू समान ॥ २ ॥ भगत जना का लूगरा ओढि नगन न होई ॥ साकत सिरपाउ रेसमी पहिरत पति खोई ॥ ३ ॥ साकत सिउ मुखि जोरिऐ अध वीचहु टूटै ॥ हरि जन की सेवा जो करे इत ऊतहि छूटै ॥ ४ ॥ सभ किछु तुम्ह ही ते होआ आपि बणत बणाई ॥ दरसनु भेटत साध का नानक गुण गाई ॥ ५ ॥ १४ ॥ ४४ ॥

हे जीव! ईश्वर के दास (संत-महात्मा) के घर पानी ढोने, पंखा करने तथा आटा पीसने से सच्चा आनंद मिल सकता है। राज्य, धन-संपति एवं उच्चाधिकारों की चाह को अग्नि में जला दो॥ १॥ जो संतजनों का सेवक है, उसके चरणों में लग। धनवान एवं छत्रपति राजा का साथ छोड़कर उन्हें त्याग दो॥ १॥ रहाउ॥ संतजनों के घर की रूखी-सूखी रोटी सर्व सुखों के भण्डार समान है, किन्तु किसी शाक्त के घर के छत्तीस प्रकार के व्यंजन भी विष के समान है॥ २॥ भक्तजनों से मिला मामूली वस्त्र पहनकर आदमी नग्न नहीं होता। लेकिन शाक्त से मिला रेशमी सिरोपा पहनकर वह अपनी इज्जत गंवा देता है॥ ३॥ शाक्त के साथ मित्रता करने एवं संपर्क बढ़ाने से बीच में ही टूट जाती है। लेकिन जो भगवान् के भक्तों की सेवा करता है, उसका जन्म-मरण ही छूट जाता है॥ ४॥ हे प्रभु! सबकुछ तेरे हुक्म से ही उत्पन्न हुआ है और तूने स्वयं ही यह रचना की है। हे नानक! मैं साधु के दर्शन व भेंटवार्ता कर ईश्वर के ही गुण गाता हूँ॥ ५॥ १४॥ ४४॥

बिलावलु महला ५ ॥ स्रवनी सुनउ हरि हरि हरे ठाकुर जसु गावउ ॥ संत चरण कर सीसु धरि हरि नामु धिआवउ ॥ १ ॥ करि किरपा दइआल प्रभ इह निधि सिधि पावउ ॥ संत जना की रेणुका लै माथै लावउ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ नीच ते नीचु अति नीचु होइ करि बिनउ बुलावउ ॥ पाव मलोवा आपु तिआगि संतसंगि समावउ ॥ २ ॥ सासि सासि नह वीसरै अन कतहि न धावउ ॥ सफल दरसन गुरु भेटीऐ मानु मोहु मिटावउ ॥ ३ ॥ सतु संतोखु दइआ धरमु सीगारु बनावउ ॥ सफल सुहागणि नानका अपुने प्रभ भावउ ॥ ४ ॥ १५ ॥ ४५ ॥

कानों से 'हरि-हरि' नाम सुनता रहूँ और ठाकुर जी का यश गाता रहूँ। मैं अपना शीश संतों के चरणों पर रखकर हरि-नाम का ध्यान करता रहूँ॥ १॥ हे दयालु प्रभु! ऐसी कृपा करो कि मुझे यह निधियाँ सिद्धियाँ प्राप्त हो जाएँ। मैं तेरे संतजनों की चरण-रज लेकर अपने माथे पर लगाता रहूँ॥ १॥ रहाउ॥ मैं निम्न से निम्न अति विनम्र होकर संतों के समक्ष विनती करके उन्हें बुलाता रहूँ। मैं अपना अहंत्व त्याग कर संतों के पांव मलता रहूँ और उनकी संगति में लीन रहूँ॥ २॥ मैं श्वास-श्वास से भगवान् को कभी भी न भुलाऊँ और उसे छोड़कर कहीं न भटकूँ। मुझे वह गुरु मिल जाए, जिसका दर्शन करके मेरा जन्म सफल हो जाए और अपना मान-मोह मिटा लूँ॥ ३॥ मैं सत्य, संतोष, दया एवं धर्म इत्यादि गुणों का शृंगार बना लूँ। हे नानक! इस तरह मैं सफल सुहागिन बनकर अपने पति-प्रभु को भा जाऊँ॥ ४॥ १५॥ ४५॥

बिलावलु महला ५ ॥ अटल बचन साधू जना सभ महि प्रगटाइआ ॥ जिसु जन होआ साधसंगु तिसु भेटै हरि राइआ ॥ १ ॥ इह परतीति गोविंद की जपि हरि सुखु पाइआ ॥ अनिक बाता सभि करि रहे गुरु घरि लै आइआ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सरणि परे की राखता नाही सहसाइआ ॥ करम भूमि हरि नामु बोइ अउसरु दुलभाइआ ॥ २ ॥ अंतरजामी आपि प्रभु सभ करे कराइआ ॥ पतित पुनीत घणे करे ठाकुर बिरदाइआ ॥ ३ ॥ मत भूलहु मानुख जन माइआ भरमाइआ ॥ नानक तिसु पति राखसी जो प्रभि पहिराइआ ॥ ४ ॥ १६ ॥ ४६ ॥

दुनिया भर में यह तथ्य सुविख्यात है कि साधुजनों का वचन अटल होता है। जिस व्यक्ति को साधु का साथ हासिल हुआ है, उसे भगवान् भी मिल गया है॥ १॥ जिसे गोविंद पर पूर्ण निष्ठा है, उसने उसका नाम जपकर सुख हासिल कर लिया है। सभी लोग अनेक प्रकार की बातें कर रहे हैं लेकिन गुरु तो प्रभु को मेरे हृदय में ले आया है॥ १॥ रहाउ॥ इसमें कोई सन्देह नहीं है

कि शरण में आए जीव की भगवान् लाज रखता है। इस शरीर रूपी कर्मभूमि में हरि-नाम रूपी बीज बोओ, यह सुनहरी अवसर बड़ा दुर्लभ है॥ २॥ प्रभु स्वयं अन्तर्यामी है, सारे जीव वही करते हैं, जो वह करवाता है। ठाकुर जी का यही धर्म है कि वह कितने ही पतित जीवों को पुनीत कर देता है॥ ३॥ हे मानव-जीवो! माया के भ्रम में डालने से मत भूलो। हे नानक! जिसे प्रभु कीर्ति प्रदान करता है, उसकी ही मान-प्रतिष्ठा रखता है॥ ४॥ १६॥ ४६॥

बिलावलु महला ५ ॥ माटी ते जिनि साजिआ करि दुरलभ देह ॥ अनिक छिद्र मन महि ढके निरमल द्रिसटेह ॥ १ ॥ किउ बिसरै प्रभु मनै ते जिस के गुण एह ॥ प्रभ तजि रचे जि आन सिउ सो रलीऐ खेह ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सिमरहु सिमरहु सासि सासि मत बिलम करेह ॥ छोडि प्रपंचु प्रभ सिउ रचहु तजि कूड़े नेह ॥ २ ॥ जिनि अनिक एक बहु रंग कीए है होसी एह ॥ करि सेवा तिसु पारब्रहम गुर ते मति लेह ॥ ३ ॥ ऊचे ते ऊचा वडा सभ संगि बरनेह ॥ दास दास को दासरा नानक करि लेह ॥ ४ ॥ १७ ॥ ४७ ॥

जिसने मिट्टी से हमारा यह दुर्लभ शरीर बनाया है, हमारे अनेक अवगुण मन में छिपा रखे हैं, जिस कारण हम निर्मल दिखाई देते हैं॥ १॥ जिसने हम पर इतने उपकार किए हैं, उस प्रभु को मन से कैसे विस्मृत किया जा सकता है? जो प्रभु को तजकर दुनिया के मोह में फँस जाते हैं, वे खाक में मिल जाते हैं॥ १॥ रहाउ॥ जीवन की हरेक धड़कन से परमात्मा का सिमरन करते रहो तथा इस कार्य में विलम्ब मत करो। झूठे स्नेह त्यागकर एवं प्रपंचों को छोड़कर प्रभु की स्मृति में लीन रहो॥ २॥ जिसने अनेक प्रकार के ये खेल-तमाशे बनाए हैं, वह वर्तमान में भी है और भविष्य में भी उसका ही अस्तित्व रहेगा। गुरु से उपदेश लेकर उस परब्रह्म की उपासना करो॥ ३॥ ईश्वर महान् है, सर्वोपरि है, लेकिन यह भी वर्णन योग्य है कि वह सबका हमदर्द है। नानक विनती करता है कि हे रचनहार! मुझे अपने दासों के दासों का दास बना लो॥ ४॥ १७॥ ४७॥

बिलावलु महला ५ ॥ एक टेक गोविंद की तिआगी अन आस ॥ सभ ऊपरि समरथ प्रभ पूरन गुणतास ॥ १ ॥ जन का नामु अधारु है प्रभ सरणी पाहि ॥ परमेसर का आसरा संतन मन माहि ॥ १ ॥ रहाउ ॥ आपि रखै आपि देवसी आपे प्रतिपारै ॥ दीन दइआल क्रिपा निधे सासि सासि सम्हारै ॥ २ ॥ करणहारु जो करि रहिआ साई वडिआई ॥ गुरि पूरै उपदेसिआ सुखु खसम रजाई ॥ ३ ॥ चिंत अंदेसा गणत तजि जनि हुकमु पछाता ॥ नह बिनसै नह छोडि जाइ नानक रंगि राता ॥ ४ ॥ १८ ॥ ४८ ॥

सब आशाएँ छोड़कर केवल गोविंद का ही सहारा लिया है। प्रभु गुणों का पूर्ण भण्डार है और वह सर्वशक्तिमान है॥ १॥ परमात्मा का नाम ही भक्तजनों के जीवन का आधार है, इसलिए वे उसकी शरण में ही पड़े रहते हैं। संतों के मन में परमेश्वर का ही आसरा है॥ १॥ रहाउ॥ वह स्वयं ही जीवों की रक्षा करता है, स्वयं ही उन्हें भोजन देता है और स्वयं ही सबका पालन-पोषण करता है। भक्तजन उस दीनदयाल एवं कृपानिधि को श्वास-श्वास से स्मरण करते रहते हैं॥ २॥ सब करने वाला परमात्मा जो कुछ कर रहा है, यही उसका बड़प्पन है। पूर्ण गुरु ने यही उपदेश दिया है कि मालिक की इच्छानुसार रहने से ही परम सुख हासिल होता है॥३॥ दास ने चिंता, सन्देह एवं वृत्तियों को त्यागकर उसके हुक्म को पहचान लिया है। हे नानक! दास तो प्रभु के रंग में लीन रहता है, जो न कभी नाश होता है और न ही उसे छोड़कर जाता है॥ ४॥ १८॥ ४८॥

बिलावलु महला ५ ॥ महा तपति ते भई सांति परसत पाप नाठे ॥ अंध कूप महि गलत थे काढे दे हाथे ॥ १ ॥ ओइ हमारे साजना हम उन की रेन ॥ जिन भेटत होवत सुखी जीअ दानु देन

॥ १ ॥ रहाउ ॥ परा पूरबला लीखिआ मिलिआ अब आइ ॥ बसत संगि हरि साध कै पूरन आसाइ ॥ २ ॥ भै बिनसे तिहु लोक के पाए सुख थान ॥ दइआ करी समरथ गुरि बसिआ मनि नाम ॥ ३ ॥ नानक की तू टेक प्रभ तेरा आधार ॥ करण कारण समरथ प्रभ हरि अगम अपार ॥ ४ ॥ १६ ॥ ४६ ॥

संतों के चरण स्पर्श करने से सारे पाप भाग गए हैं और तृष्णा रूपी जलन से मन को शान्ति मिल गई है। हम जगत् रूपी अंधकूप में लीन थे किन्तु संतों ने हाथ देकर हमें निकाल लिया है॥ १॥ वही हमारे साजन हैं और हम उनकी चरण-धूलि हैं। जिनको मिलने से मैं सुखी होता हूँ, उन्होंने मुझे जीवनदान दिया है॥ १॥ रहाउ॥ पूर्ण जन्म के कर्मों के कारण जो भाग्य में लिखा हुआ था, वह मुझे अब मिल गया है। संतों की संगति में रहने से मेरी कामनाएँ पूरी हो गई हैं॥ २॥ मेरे तीनों लोकों के भय नाश हो गए हैं और सुख का स्थान मिल गया है। समर्थ गुरु ने दया की है, जिससे मेरे मन में नाम स्थित हो गया है॥ ३॥ नानक कहते हैं कि हे प्रभु ! तू ही मेरी टेक है और मुझे तेरा ही सहारा है। अगम्य अपार प्रभु ही करने-करवाने में समर्थ है॥ ४॥ १६॥ ४६॥

बिलावलु महला ५ ॥ सोई मलीनु दीनु हीनु जिसु प्रभु बिसराना ॥ करनैहारु न बूझई आपु गनै बिगाना ॥ १ ॥ दूखु तदे जदि वीसरै सुखु प्रभ चिति आए ॥ संतन कै आनंदु एहु नित हरि गुण गाए ॥ १ ॥ रहाउ ॥ ऊचे ते नीचा करै नीच खिन महि थापै ॥ कीमति कही न जाईऐ ठाकुर परतापै ॥ २ ॥ पेखत लीला रंग रूप चलनै दिनु आइआ ॥ सुपने का सुपना भइआ संगि चलिआ कमाइआ ॥ ३ ॥ करण कारण समरथ प्रभ तेरी सरणाई ॥ हरि दिनसु रैणि नानकु जपै सद सद बलि जाई ॥ ४ ॥ २० ॥ ५० ॥

जिसने प्रभु को भुला दिया है, वही मलिन, गरीब एवं नीच है। वह सृजनहार को नहीं बूझता, अपितु नासमझ स्वयं को बड़ा समझता है॥ १॥ जीवन में इन्सान तभी दुखी होता है, जब वह उसे भुला देता है। लेकिन प्रभु को याद करने से वह सुखी हो जाता है। संतों के मन में सदैव आनंद बना रहता है, क्योंकि वे नित्य भगवान् का गुणगान करते रहते हैं॥ १॥ रहाउ॥ ईश्वर किसी को ऊँचे (राजा) से निम्न (भिखारी) बना देता है, यदि उसकी मर्जी हो तो वह क्षण में ही निम्न (रंक) को ऊँचा (राजा) स्थापित कर देता है। ठाकुर जी के प्रताप का मूल्यांकन नहीं किया जा सकता॥ २॥ खेल-तमाशे एवं रंग-रूप देखते ही जीव का दुनिया से विदा होने का दिन आ गया है। यह जीवन एक सपना है और यह सपना ही बन गया है तथा जीव का कमाया हुआ पुण्य एवं पाप ही उसके साथ गया है॥ ३॥ हे प्रभु ! तू करने एवं करवाने में समर्थ है, इसलिए मैं तेरी शरण में आया हूँ। नानक दिन-रात परमात्मा को ही जपता रहता है और उस पर सदैव बलिहारी जाता है॥ ४॥ २०॥ ५०॥

बिलावलु महला ५ ॥ जलु ढोवउ इह सीस करि कर पग पखलावउ ॥ बारि जाउ लख बेरीआ दरसु पेखि जीवावउ ॥ १ ॥ करउ मनोरथ मनै माहि अपने प्रभ ते पावउ ॥ देउ सूहनी साध कै बीजनु ढोलावउ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ अंम्रित गुण संत बोलते सुणि मनहि पीलावउ ॥ उआ रस महि सांति त्रिपति होइ बिखै जलनि बुझावउ ॥ २ ॥ जब भगति करहि संत मंडली तिन्ह मिलि हरि गावउ ॥ करउ नमसकार भगत जन धूरि मुखि लावउ ॥ ३ ॥ ऊठत बैठत जपउ नामु इहु करमु कमावउ ॥ नानक की प्रभ बेनती हरि सरनि समावउ ॥ ४ ॥ २१ ॥ ५१ ॥

मैं अपने इस सिर से संतों के लिए पानी ढोता हूँ और हाथों से उनके चरण धोता हूँ। मैं लाख बार उन पर कुर्बान जाता हूँ और उनके दर्शन करने से ही जीवन मिल रहा है॥ १॥ मैं जो मनोरथ मन में करता हूँ, वह प्रभु से पा लेता हूँ। मैं संतों के निवास पर झाड़ू देता हूँ और उन्हें पंखा करता हूँ॥ १॥ रहाउ॥ संत जो भी अमृत गुण बोलते हैं, मैं उन्हें सुनकर अपने मन को पिलाता हूँ। उस अमृत रस से मैं शान्ति प्राप्त करता हूँ, तृप्त हो जाता हूँ और विष रूपी तृष्णा की जलन को बुझाता हूँ॥ २॥ जब संतों की मण्डली भक्ति करती है तो मैं भी उनके साथ मिलकर भगवान् के गुण गाता हूँ। मैं भक्तजनों को प्रणाम करता हूँ और उनकी चरण-धूलि अपने मुँह पर लगाता हूँ॥ ३॥ मैं यही कर्म करता हूँ कि उठते-बैठते परमात्मा का नाम जपता रहता हूँ। नानक की प्रभु से यह विनती है कि मैं तेरी शरण में विलीन रहूँ॥ ४॥ २१॥ ५१॥

बिलावलु महला ५ ॥ इहु सागरु सोई तरै जो हरि गुण गाए ॥ साधसंगति कै संगि वसै वडभागी पाए ॥ १ ॥ सुणि सुणि जीवै दासु तुम्ह बाणी जन आखी ॥ प्रगट भई सभ लोअ महि सेवक की राखी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ अगनि सागर ते काढिआ प्रभि जलनि बुझाई ॥ अंम्रित नामु जलु संचिआ गुर भए सहाई ॥ २ ॥ जनम मरण दुख काटिआ सुख का थानु पाइआ ॥ काटी सिलक भ्रम मोह की अपने प्रभ भाइआ ॥ ३ ॥ मत कोई जाणहु अवरु कछु सभ प्रभ कै हाथि ॥ सरब सूख नानक पाए संगि संतन साथि ॥ ४ ॥ २२ ॥ ५२ ॥

इस संसार-सागर में से वही पार होता है, जो भगवान् के गुण गाता है। संतों की संगति में रहकर कोई भाग्यशाली ही ईश्वर को पाता है॥ १॥ हे परमेश्वर ! संत-भक्तजनों ने तेरी वाणी उच्चारण की है, जिसे सुन-सुनकर तेरा दास जी रहा है। यह बात सभी लोकों में लोकप्रिय हो गई है कि तूने ही अपने सेवक की लाज रखी है॥ १॥ रहाउ॥ प्रभु ने अग्नि सागर से निकालकर सारी जलन बुझा दी है। गुरु मेरा मददगार बन गया है और उसने अमृत नाम रूपी जल मन में छिड़क दिया है॥ २॥ उसने मेरा जन्म-मरण का दुख काट दिया है और मैंने सुख का स्थान पा लिया है। मैं अपने प्रभु को भा गया हूँ, इसलिए उसने मेरे भ्रम एवं मोह की रस्सी को काट दिया है॥ ३॥ सबकुछ प्रभु के हाथ में है, इसलिए किसी अन्य को ताकतवर मत समझो। हे नानक ! संतों के संग रहकर सर्व सुख पा लिए हैं॥ ४॥ २२॥ ५२॥

बिलावलु महला ५ ॥ बंधन काटे आपि प्रभि होआ किरपाल ॥ दीन दइआल प्रभ पारब्रहम ता की नदरि निहाल ॥ १ ॥ गुरि पूरै किरपा करी काटिआ दुखु रोगु ॥ मनु तनु सीतलु सुखी भइआ प्रभ धिआवन जोगु ॥ १ ॥ रहाउ ॥ अउखधु हरि का नामु है जितु रोगु न विआपै ॥ साधसंगि मनि तनि हितै फिरि दूखु न जापै ॥ २ ॥ हरि हरि हरि हरि जापीऐ अंतरि लिव लाई ॥ किलविख उतरहि सुधु होइ साधू सरणाई ॥ ३ ॥ सुनत जपत हरि नाम जसु ता की दूरि बलाई ॥ महा मंत्रु नानकु कथै हरि के गुण गाई ॥ ४ ॥ २३ ॥ ५३ ॥

प्रभु ने स्वयं ही कृपालु होकर सारे बन्धन काट दिए हैं। उस दीनदयाल, परब्रह्म-प्रभु की कृपा-दृष्टि हो गई है॥ १॥ पूर्ण गुरु ने कृपा कर दुख-रोग काट दिया है। मेरा मन, तन शीतल एवं सुखी हो गया है और प्रभु ही ध्यान-मनन करने योग्य है॥ १॥ रहाउ॥ हरि का नाम ऐसी औषधि है, जिसका उपयोग करने से कोई रोग नहीं लगता। साधु-संगति करने से मन-तन में प्रभु प्यारा लगता है और फिर कोई दुख स्पर्श नहीं करता॥ २॥ अपने अन्तर्मन में ध्यान लगाकर 'हरि-हरि-हरि-हरि' नाम मंत्र का जाप करते रहो। साधु की शरण में आने से सारे पाप नाश हो

जाते हैं और मन शुद्ध हो जाता है॥ ३॥ जो व्यक्ति हरि-नाम का यश सुनता एवं जपता रहता है, उसकी सब मुसीबतें दूर हो जाती हैं। नानक यही महामंत्र कथन करता है और हरि के गुण गाता है॥ ४॥ २३॥ ५३॥

बिलावलु महला ५ ॥ भै ते उपजै भगति प्रभ अंतरि होइ सांति ॥ नामु जपत गोविंद का बिनसै भ्रम भ्रांति ॥ १ ॥ गुरु पूरा जिसु भेटिआ ता कै सुखि परवेसु ॥ मन की मति तिआगीऐ सुणीऐ उपदेसु ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सिमरत सिमरत सिमरीऐ सो पुरखु दातारु ॥ मन ते कबहु न वीसरै सो पुरखु अपारु ॥ २ ॥ चरन कमल सिउ रंगु लगा अचरज गुरदेव ॥ जा कउ किरपा करहु प्रभ ता कउ लावहु सेव ॥ ३ ॥ निधि निधान अंम्रितु पीआ मनि तनि आनंद ॥ नानक कबहु न वीसरै प्रभ परमानंद ॥ ४ ॥ २४ ॥ ५४ ॥

भय से ही मनुष्य के अन्तर में प्रभु-भक्ति की भावना उत्पन्न होती है और फिर मन को बड़ी शान्ति प्राप्त होती है। गोविंद का नाम जपने से भ्रम एवं भ्रांतियाँ नाश हो जाते हैं॥ १॥ जिसे पूर्ण गुरु मिल गया है, वह सुखी हो गया है। अतः मन की मति त्यागकर गुरु का उपदेश सुनना चाहिए॥ १॥ रहाउ॥ सदैव उस परमपुरुष दाता का सिमरन करो। वह अपार है, अतः उसे मन से कभी भुलाना नहीं चाहिए॥ २॥ अद्भुत गुरुदेव के चरण-कमल से प्रेम लग गया है। प्रभु जिस पर अपनी कृपा करता है, उसे भक्ति में लगा देता है॥ ३॥ सर्व निधियों के भण्डार नामामृत का पान करने से मन-तन आनंदपूर्ण हो गया है। हे नानक! परमानंद प्रभु कभी भी नहीं भूलना चाहिए॥ ४॥ २४॥ ५४॥

बिलावलु महला ५ ॥ त्रिसन बुझी ममता गई नाठे भै भरमा ॥ थिति पाई आनदु भइआ गुरि कीने धरमा ॥ १ ॥ गुरु पूरा आराधिआ बिनसी मेरी पीर ॥ तनु मनु सभु सीतलु भइआ पाइआ सुखु बीर ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सोवत हरि जपि जागिआ पेखिआ बिसमादु ॥ पी अंम्रितु त्रिपतासिआ ता का अचरज सुआदु ॥ २ ॥ आपि मुकतु संगी तरे कुल कुटंब उधारे ॥ सफल सेवा गुरदेव की निरमल दरबारे ॥ ३ ॥ नीचु अनाथु अजानु मै निरगुनु गुणहीनु ॥ नानक कउ किरपा भई दासु अपना कीनु ॥ ४ ॥ २५ ॥ ५५ ॥

गुरु ने अपने धर्म का पालन किया है, जिससे मेरी तृष्णा बुझ गई है, ममता दूर हो गई है, भ्रम एवं भय भाग गए हैं। मन ने स्थिरता प्राप्त कर ली है और बड़ा आनंद बन गया है॥ १॥ पूर्ण गुरु की आराधना करने से मेरी पीड़ा नाश हो गई है। हे मेरे भाई! इससे मुझे सुख प्राप्त हो गया है और तेरा मन-तन सब शीतल हो गया है॥ १॥ रहाउ॥ अज्ञान की निद्रा में सोया हुआ मेरा मन भगवान् का नाम जपकर जाग्रत हो गया है और सब ओर आश्चर्य ही नजर आया है। नामामृत को पी कर मन तृप्त हो गया है, जिसका स्वाद बड़ा निराला है॥ २॥ मैं स्वयं बन्धनों से मुक्त हो गया हूँ, मेरे साथी भी भवसागर से पार हो गए हैं और मैंने अपनी कुल एवं कुटुंब का भी उद्धार करवा दिया है। गुरुदेव की सेवा सफल है और उसके निर्मल दरबार में यश प्राप्त हो गया है॥ ३॥ मैं नीच, अनाथ, अनजान, निर्गुण एवं गुणहीन था। लेकिन नानक पर प्रभु की कृपा हो गई है और उसने उसे अपना दास बना लिया है॥ ४॥ २५॥ ५५॥

बिलावलु महला ५ ॥ हरि भगता का आसरा अन नाही ठाउ ॥ ताणु दीबाणु परवार धनु प्रभ तेरा नाउ ॥ १ ॥ करि किरपा प्रभि आपणी अपने दास रखि लीए ॥ निंदक निंदा करि पचे जमकालि ग्रसीए ॥ १ ॥ रहाउ ॥ संता एकु धिआवना दूसर को नाहि ॥ एकसु आगै बेनती रविआ स्रब थाइ

॥ २ ॥ कथा पुरातन इउ सुणी भगतन की बानी ॥ सगल दुसट खंड खंड कीए जन लीए मानी ॥ ३ ॥ सति बचन नानकु कहै परगट सभ माहि ॥ प्रभ के सेवक सरणि प्रभ तिन कउ भउ नाहि ॥ ४ ॥ २६ ॥ ५६ ॥

परमात्मा ही भक्तों का सहारा है, उनके लिए अन्य कोई ठिकाना नहीं। हे प्रभु ! तेरा नाम ही उनका बल, दीवान, परिवार एवं धन है॥ १॥ प्रभु ने कृपा करके अपने भक्तों को बचा लिया है। निंदक भक्तों की निंदा करके नष्ट हो गए हैं और उन्हें यमकाल ने अपना ग्रास बना लिया है॥ १॥ रहाउ॥ संत सदैव परमात्मा के ध्यान-मनन में लीन रहते हैं तथा उनके लिए अन्य कोई नहीं। जो विश्वव्यापक है, उनकी उस एक से ही विनती है॥ २॥ भक्तों की वाणी द्वारा एक प्राचीन कथा यूं सुनी है कि प्रभु ने सब दुष्टों को मार कर टुकड़े-टुकड़े कर दिया है और अपने भक्तजनों को सम्मान दिया है॥ ३॥ नानक सत्य वचन कहते हैं जो सारी दुनिया में लोकप्रिय हो गया है कि प्रभु के सेवक उसकी शरण में ही पड़े रहते हैं और उन्हें किसी प्रकार का कोई भय नहीं॥ ४॥ २६॥ ५६॥

बिलावलु महला ५ ॥ बंधन काटै सो प्रभू जा कै कल हाथ ॥ अवर करम नही छूटीऐ राखहु हरि नाथ ॥ १ ॥ तउ सरणागति माधवे पूरन दइआल ॥ छूटि जाइ संसार ते राखै गोपाल ॥ १ ॥ रहाउ ॥ आसा भरम बिकार मोह इन महि लोभाना ॥ झूठु समग्री मनि वसी पारब्रहमु न जाना ॥ २ ॥ परम जोति पूरन पुरख सभि जीअ तुम्हारे ॥ जिउ तू राखहि तिउ रहा प्रभ अगम अपारे ॥ ३ ॥ करण कारण समरथ प्रभ देहि अपना नाउ ॥ नानक तरीऐ साधसंगि हरि हरि गुण गाउ ॥ ४ ॥ २७ ॥ ५७ ॥

जिस प्रभु के हाथ में सर्व शक्तियाँ हैं, वह तमाम बन्धन काट देता है। हे नाथ ! हमारी रक्षा करो, क्योंकि अन्य धर्म-कर्म द्वारा हम छूट नहीं सकते॥ १॥ हे ईश्वर ! तू पूर्ण दयालु है, अतः मैं तेरी शरण में ही आया हूँ, जिसकी तू रक्षा करता है, वह संसार की उलझनों से मुक्त हो जाता है॥ १॥ रहाउ॥ जीव तो आशा, भ्रम, विकारों एवं मोह में फँसा रहता है। झूठ की सामग्री उसके मन में बसी हुई है, जिस कारण उसने परमात्मा को नहीं जाना॥ २॥ हे परमज्योति ! तू पूर्ण पुरुष है और सभी जीव तुम्हारे हैं। हे अगम्य, अपार प्रभु ! जैसे तू रखता है, वैसे ही मैं रहता हूँ॥ ३॥ हे प्रभु ! तू करने-करवाने में समर्थ है, मुझे अपना नाम दीजिए। हे नानक ! साधु-संगति में परमात्मा का यशोगान करने से संसार-सागर से पार हुआ जा सकता है॥ ४॥ २७॥ ५७॥

बिलावलु महला ५ ॥ कवनु कवनु नही पतरिआ तुम्हरी परतीति ॥ महा मोहनी मोहिआ नरक की रीति ॥ १ ॥ मन खुटहर तेरा नही बिसासु तू महा उदमादा ॥ खर का पैखरु तउ छुटै जउ ऊपरि लादा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जप तप संजम तुम्ह खंडे जम के दुख डांड ॥ सिमरहि नाही जोनि दुख निरलजे भांड ॥ २ ॥ हरि संगि सहाई महा मीतु तिस सिउ तेरा भेदु ॥ बीधा पंच बटवारई उपजिओ महा खेदु ॥ ३ ॥ नानक तिन संतन सरणागती जिन मनु वसि कीना ॥ तनु धनु सरबसु आपणा प्रभि जन कउ दीन्हा ॥ ४ ॥ २८ ॥ ५८ ॥

हे मन ! तुझ पर भरोसा करके किस-किस ने धोखा नहीं खाया ? महामोहिनी माया ने तुझे मुग्ध किया हुआ है, लेकिन यह तो नरक में जाने का राह है॥ १॥ हे खोटे मन ! तुझ पर विश्वास नहीं किया जा सकता, तू बहुत उन्मादी बना हुआ है। गधे के पांव में बंधी रस्सी तो ही खोली जाती है, जब उस पर भार लाद दिया जाता है॥ १॥ रहाउ॥ तूने जप, तप एवं संयम सब नाश कर दिए हैं और तू यम के दण्ड का दुख भोग रहा है। हे निर्लज्ज भांड ! तू भगवान् का सिमरन नहीं

करता, इसलिए योनियों के दुख भोग रहा है॥ २॥ भगवान् ही तेरा साथी, हमदर्द एवं घनिष्ठ मित्र है परन्तु तेरा उसके साथ मतभेद है। कामादिक पाँचों लुटेरों ने तुझे लूटकर अपने वश में कर लिया है, जिस कारण तेरे मन में भारी दुख पैदा हो गया है॥ ३॥ हे नानक! मैं उन संतजनों की शरण में हूँ, जिन्होंने अपने मन को वश में कर लिया है। मैंने अपना तन-धन सर्वस्व प्रभु के संतजनों को अर्पण कर दिया है॥ ४॥ २८॥ ५८॥

बिलावलु महला ५ ॥ उदमु करत आनदु भइआ सिमरत सुख सारु ॥ जपि जपि नामु गोबिंद का पूरन बीचारु ॥ १ ॥ चरन कमल गुर के जपत हरि जपि हउ जीवा ॥ पारब्रहमु आराधते मुखि अंम्रितु पीवा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जीअ जंत सभि सुखि बसे सभ कै मनि लोच ॥ परउपकारु नित चितवते नाही कछु पोच ॥ २ ॥ धंनु सु थानु बसंत धंनु जह जपीऐ नामु ॥ कथा कीरतनु हरि अति घना सुख सहज बिस्रामु ॥ ३ ॥ मन ते कदे न वीसरै अनाथ को नाथ ॥ नानक प्रभ सरणागती जा कै सभु किछु हाथ ॥ ४ ॥ २९ ॥ ५९ ॥

भक्ति का उद्यम करने से आनंद हो गया है एवं नाम सिमरन से सुख ही सुख उपलब्ध हो गया है। पूर्ण विचार यही है कि गोविंद का नाम जपते रहो॥ १॥ गुरु के चरणों को जपकर एवं भगवान का नाम जपकर ही जीवन बना हुआ हूँ। परब्रह्म की आराधना कर अपने मुँह द्वारा नामामृत पी रहा हूँ॥ १॥ रहाउ॥ सभी जीव-जन्तु सुखी बस रहे हैं और सभी के मन में प्रभु को पाने की तीव्र लालसा बनी हुई है। वे नित्य परोपकार करने के बारे में सोचते रहते हैं और किसी का बुरा नहीं चाहते॥ २॥ जहाँ परमात्मा का नाम जपा जाता है, वह स्थान धन्य है और वहाँ रहने वाले भी धन्य हैं। वहाँ हरि की कथा एवं कीर्तन अत्याधिक होता रहता है और वह स्थान सुख एवं शान्ति का ठिकाना बन गया है॥ ३॥ अनाथों का नाथ परमेश्वर कभी भी मन से विस्मृत नहीं होता। नानक तो उस प्रभु की शरण में है, जिसके हाथ में सबकुछ है॥ ४॥ २९॥ ५९॥

बिलावलु महला ५ ॥ जिनि तू बंधि करि छोडिआ फुनि सुख महि पाइआ ॥ सदा सिमरि चरणारबिंद सीतल होताइआ ॥ १ ॥ जीवतिआ अथवा मुइआ किछु कामि न आवै ॥ जिनि एहु रचनु रचाइआ कोऊ तिस सिउ रंगु लावै ॥ १ ॥ रहाउ ॥ रे प्राणी उसन सीत करता करै घाम ते काढै ॥ कीरी ते हसती करै टूटा ले गाढै ॥ २ ॥ अंडज जेरज सेतज उतभुजा प्रभ की इह किरति ॥ किरत कमावन सरब फल रवीऐ हरि निरति ॥ ३ ॥ हम ते कछू न होवना सरणि प्रभ साध ॥ मोह मगन कूप अंध ते नानक गुर काढ ॥ ४ ॥ ३० ॥ ६० ॥

हे जीव! जिसने तुझे गर्भ के बन्धन से मुक्त करके पुनः जीवन के सुखों में डाल दिया है, सदैव उसके चरणों का सिमरन कर, इस तरह तू सुखी एवं शीतल हो जाएगा॥ १॥ जिंदा रहते अथवा मरणोपरांत कुछ भी काम नहीं आता। जिसने यह रचना रची है, उसकी स्तुति में लीन रहना ही उचित है॥ १॥ रहाउ॥ हे प्राणी! कर्ता परमेश्वर ही ग्रीष्म एवं शिशिर बनाता है और स्वयं ही दुखों से निजात दिलवाता है। वह मामूली चींटी से बलवान हाथी बना देता है और टूटे हुए को भी जोड़ देता है॥ २॥ अण्डज, जेरज, स्वेदज तथा उद्भिज—यह चारों स्रोत परमात्मा की रचना है। हरि-नाम स्मरण का शुभ कर्म करने से सब फल प्राप्त हो जाते हैं॥ ३॥ हे प्रभु! हम से कुछ भी नहीं हो सकता, अतः साधु की शरण ली है। हे नानक! मैं माया के मोह में मग्न रहता था लेकिन गुरु ने मुझे इस संसार रूपी अंधे कुएँ से बाहर निकाल दिया है॥ ४॥ ३०॥ ६०॥

बिलावलु महला ५ ॥ खोजत खोजत मै फिरा खोजउ बन थान ॥ अछल अछेद अभेद प्रभ ऐसे भगवान ॥ १ ॥ कब देखउ प्रभु आपना आतम कै रंगि ॥ जागन ते सुपना भला बसीऐ प्रभ संगि ॥ १ ॥ रहाउ ॥ बरन आस्रम सासत्र सुनउ दरसन की पिआस ॥ रूपु न रेख न पंच तत ठाकुर अबिनास ॥ २ ॥ ओहु सरूपु संतन कहहि विरले जोगीसुर ॥ करि किरपा जा कउ मिले धनि धनि ते ईसुर ॥ ३ ॥ सो अंतरि सो बाहरे बिनसे तह भरमा ॥ नानक तिसु प्रभु भेटिआ जा के पूरन करमा ॥ ४ ॥ ३१ ॥ ६१ ॥

अनेक जंगलों एवं स्थानों पर खोज-खोजकर प्रभु को खोजता रहता हूँ। हमारा भगवान ऐसा है जो छलरहित, अनश्वर एवं रहस्यमय है॥ १॥ पता नहीं मैं अपनी आत्मा के रंग में प्रभु को कब देखूँगा ? जागते रहने से तो सपना ही भला है, जिसमें प्रभु के साथ बस रहा था॥ १॥ रहाउ॥ भगवान के दर्शनों की प्यास में, मैं चारों वर्ण, चारों आश्रम एवं शास्त्रों के उपदेश सुनता रहता हूँ। हमारा ठाकुर अविनाशी है, उसका न कोई रूप है, न कोई आकार है और न ही वह पाँच तत्वों से बना है॥ २॥ विरले योगीश्वर एवं संतजन उसके स्वरूप का वर्णन करते हैं। अपनी कृपा करके ईश्वर जिन्हें मिल जाता है, वे धन्य हैं॥ ३॥ वे प्रभु को अन्दर एवं बाहर सब जगह देखते हैं और उनका भ्रम नाश हो गया है। हे नानक ! प्रभु उसे ही मिलता है, जिसका भाग्य पूर्ण है॥ ४॥ ३१॥ ६१॥

बिलावलु महला ५ ॥ जीअ जंत सुप्रसंन भए देखि प्रभ परताप ॥ करजु उतारिआ सतिगुरू करि आहरु आप ॥ १ ॥ खात खरचत निबहत रहै गुर सबदु अखूट ॥ पूरन भई समगरी कबहू नही तूट ॥ १ ॥ रहाउ ॥ साधसंगि आराधना हरि निधि आपार ॥ धरम अरथ अरु काम मोख देते नही बार ॥ २ ॥ भगत अराधहि एक रंगि गोबिंद गुपाल ॥ राम नाम धनु संचिआ जा का नही सुमारु ॥ ३ ॥ सरनि परे प्रभ तेरीआ प्रभ की वडिआई ॥ नानक अंतु न पाईऐ बेअंत गुसाई ॥ ४ ॥ ३२ ॥ ६२ ॥

प्रभु का प्रताप देखकर सारे जीव सुप्रसन्न हो गए हैं। सतगुरु ने स्वयं प्रयास करके मेरा कर्ज उतार दिया है॥ १॥ गुरु का शब्द अक्षय है, इसे खाने-खर्च करने अर्थात् उपयोग करने से यह समाप्त नहीं होता। हमारी नाम रूपी सामग्री पूरी इकट्ठी हो गई है और कभी भी इसमें कमी नहीं आती॥ १॥ रहाउ॥ साधुओं की संगति में हरि की आराधना करने से अपार निधियाँ मिल जाती हैं। धर्म, अर्थ, काम एवं मोक्ष देने में प्रभु कोई देरी नहीं करता॥ २॥ भक्त सदैव एकाग्रचित होकर गोविंद की आराधना में ही मग्न रहते हैं। उन्होंने राम नाम रूपी धन संचित कर लिया है, जो बेशुमार है॥ ३॥ हे प्रभु ! भक्त तेरी शरण में ही पड़े रहते हैं और यह तेरी ही बड़ाई है। हे नानक ! उस बेअन्त मालिक का अन्त नहीं पाया जा सकता॥ ४॥ ३२॥ ६२॥

बिलावलु महला ५ ॥ सिमरि सिमरि पूरन प्रभू कारज भए रासि ॥ करतार पुरि करता वसै संतन कै पासि ॥ १ ॥ रहाउ ॥ बिघनु न कोऊ लागता गुर पहि अरदासि ॥ रखवाला गोबिंद राइ भगतन की रासि ॥ १ ॥ तोटि न आवै कदे मूलि पूरन भंडार ॥ चरन कमल मनि तनि बसे प्रभ अगम अपार ॥ २ ॥ बसत कमावत सभि सुखी किछु ऊन न दीसै ॥ संत प्रसादि भेटे प्रभू पूरन जगदीसै ॥ ३ ॥ जै जै कारु सभै करहि सचु थानु सुहाइआ ॥ जपि नानक नामु निधान सुख पूरा गुरु पाइआ ॥ ४ ॥ ३३ ॥ ६३ ॥

पूर्ण प्रभु का सिमरन करने से सभी कार्य सम्पन्न हो गए हैं। कर्ता परमेश्वर संतों के पास करतारपुर (अर्थात् सत्संग में) निवास करता है॥ १॥ गुरु के पास प्रार्थना करने से कोई विघ्न नहीं आता। गोविंद अपने भक्तों का रखवाला है और उसका नाम ही उनकी जीवन पूंजी है॥ १॥ नाम रूपी पूंजी से भक्तों के भण्डार भरे हुए हैं और उनमें कभी कोई कमी नहीं आती। प्रभु अगम्य एवं अपार है और उसके सुन्दर चरण-कमल मेरे मन एवं तन में बसते हैं॥ २॥ नाम की कमाई करने से सारे संतजन करतारपुर में सुखी रहते हैं और उन्हें किसी बात की कोई कमी नहीं। संतों की कृपा से मुझे पूर्ण प्रभु जगदीश मिल गया है॥ ३॥ सभी जय-जयकार कर रहे हैं और सत्य का स्थान बड़ा सुन्दर लग रहा है। हे नानक! सुखों के भण्डार प्रभु-नाम को जपकर पूर्ण गुरु को पा लिया है॥ ४॥ ३३॥ ६३॥

बिलावलु महला ५ ॥ हरि हरि हरि आराधीऐ होईऐ आरोग ॥ रामचंद की लसटिका जिनि मारिआ रोगु ॥ १ ॥ रहाउ ॥ गुरु पूरा हरि जापीऐ नित कीचै भोगु ॥ साधसंगति कै वारणै मिलिआ संजोगु ॥ १ ॥ जिसु सिमरत सुखु पाईऐ बिनसै बिओगु ॥ नानक प्रभ सरणागती करण कारण जोगु ॥ २ ॥ ३४ ॥ ६४ ॥

हरि की आराधना करने से जीव आरोग्य हो जाता है। यह हरि-नाम ही श्री राम चन्द्र की लाठी है, जिसने रोग को नाश कर दिया है॥ १॥ रहाउ॥ पूर्ण गुरु द्वारा हरि का जाप किया जाए तो नित्य सुख बना रहता है। मैं साधुओं की संगति पर न्यौछावर हूँ, जिनके कारण संयोग प्राप्त हुआ है॥ १॥ जिसका सिमरन करने से सुख प्राप्त होता है और वियोग दूर हो जाता है, नानक तो उस प्रभु की शरण में है, जो करने एवं करवाने में समर्थ है॥ २॥ ३४॥ ६४॥

रागु बिलावलु महला ५ दुपदे घरु ५ १ओं सतिगुर प्रसादि ॥

अवरि उपाव सभि तिआगिआ दारू नामु लइआ ॥ ताप पाप सभि मिटे रोग सीतल मनु भइआ ॥ १ ॥ गुरु पूरा आराधिआ सगला दुखु गइआ ॥ राखनहारै राखिआ अपनी करि मइआ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ बाह पकड़ि प्रभि काढिआ कीना अपनइआ ॥ सिमरि सिमरि मन तन सुखी नानक निरभइआ ॥ २ ॥ १ ॥ ६५ ॥

अन्य सब उपाय त्यागकर नाम रूपी दवा ली है। इससे ताप, पाप एवं सभी रोग मिट गए हैं और मन शीतल शांत हो गया है॥ १॥ पूर्ण गुरु की आराधना करने से सारा दुख दूर हो गया है। रखवाले परमात्मा ने कृपा करके बचा लिया है॥ १॥ रहाउ॥ प्रभु ने मेरी बांह पकड़कर मुझे भवसागर में से बाहर निकाल लिया है। हे नानक! भगवान् का सिमरन करके मन-तन सुखी हो गया है और निडर हो गया हूँ॥ २ ॥ १ ॥ ६५ ॥

बिलावलु महला ५ ॥ करु धरि मसतकि थापिआ नामु दीनो दानि ॥ सफल सेवा पारब्रहम की ता की नही हानि ॥ १ ॥ आपे ही प्रभु राखता भगतन की आनि ॥ जो जो चितवहि साध जन सो लेता मानि ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सरणि परे चरणारबिंद जन प्रभ के प्रान ॥ सहजि सुभाइ नानक मिले जोती जोति समान ॥ २ ॥ २ ॥ ६६ ॥

मेरे मस्तक पर अपना हाथ धरकर ईश्वर ने मुझे अपनी सेवा में ही लीन किया है और नाम-दान दिया है। परब्रह्म की सेवा सफल है और इससे कोई हानि नहीं होती॥ १॥ प्रभु स्वयं

ही अपने भक्तों की मान-प्रतिष्ठा रखता है। साधुजन जो कुछ भी मन में सोचते हैं, परमात्मा उन्हें सम्मान देता है॥ १॥ रहाउ॥ भक्तजन प्रभु को प्राणों से प्रिय हैं और वे उसके चरणों की शरण में ही पड़े रहते हैं। हे नानक ! वे सहज स्वभाव प्रभु को मिल जाते हैं और उनकी ज्योति परमज्योति में विलीन हो जाती है॥ २॥ २॥ ६६॥

बिलावलु महला ५ ॥ चरण कमल का आसरा दीनो प्रभि आपि ॥ प्रभ सरणागति जन परे ता का सद परतापु ॥ १ ॥ राखनहार अपार प्रभ ता की निरमल सेव ॥ राम राज रामदास पुरि कीन्हे गुरदेव ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सदा सदा हरि धिआईऐ किछु बिघनु न लागै ॥ नानक नामु सलाहीऐ भइ दुसमन भागै ॥ २ ॥ ३ ॥ ६७ ॥

प्रभु ने स्वयं ही अपने चरणों का आसरा दिया है। जो भक्तजन प्रभु की शरण में पड़े हैं, उनका सदा के लिए प्रताप बन गया है॥ १॥ अपार प्रभु रखवाला है और उसकी सेवा करने से मन निर्मल हो जाता है। गुरुदेव ने अमृतसर नगरी में राम-राज्य स्थापित कर दिया है॥ १॥ रहाउ॥ सदैव भगवान का ध्यान करने से कोई विघ्न नहीं आता। हे नानक ! नाम की महिमा-गान करने से दुश्मन भी भाग जाते हैं॥ २॥ ३॥ ६७॥

बिलावलु महला ५ ॥ मनि तनि प्रभु आराधीऐ मिलि साध समागै ॥ उचरत गुन गोपाल जसु दूर ते जमु भागै ॥ १ ॥ राम नामु जो जनु जपै अनदिनु सद जागै ॥ तंतु मंतु नह जोहई तितु चाखु न लागै ॥ १ ॥ रहाउ ॥ काम क्रोध मद मान मोह बिनसे अनरागै ॥ आनंद मगन रसि राम रंगि नानक सरनागै ॥ २ ॥ ४ ॥ ६८ ॥

साधुओं की सभा में मिलकर तन-मन से प्रभु की आराधना करनी चाहिए। ईश्वर का गुणगान एवं यश करने से यम दूर से ही भाग जाता है॥ १॥ जो व्यक्ति नित्य राम-नाम जपता रहता है, वह सदैव जाग्रत रहता है। कोई तंत्र-मंत्र उसे स्पर्श नहीं करता और बुरी बला भी उस पर कोई असर नहीं करती॥ १॥ रहाउ॥ भगवान की भक्ति में लीन रहने से काम, क्रोध, लोभ, मोह एवं अहंकार सब नाश हो जाते हैं। हे नानक ! राम-रंग के रस में मग्न होकर जीव आनंद में लीन रहता है॥ २॥ ४॥ ६८॥

बिलावलु महला ५ ॥ जीअ जुगति वसि प्रभू कै जो कहै सु करना ॥ भए प्रसंन गोपाल राइ भउ किछु नही करना ॥ १ ॥ दूखु न लागै कदे तुधु पारब्रहमु चितारे ॥ जमकंकरु नेड़ि न आवई गुरसिख पिआरे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ करण कारण समरथु है तिसु बिनु नही होरु ॥ नानक प्रभ सरणागती साचा मनि जोरु ॥ २ ॥ ५ ॥ ६९ ॥

जीवों की जीवन-युक्ति प्रभु के वश में है, वह जो हुक्म करता है, वही सबने करना है। जब ईश्वर प्रसन्न हो जाता है तो जीवों को डरने की कोई आवश्यकता नहीं रहती॥ १॥ हे जीव ! परब्रह्म को याद करने से तुझे कभी कोई दुख नहीं लगेगा। गुरु के प्यारे शिष्य के पास यमदूत भी आने का दुस्साहस नहीं करता॥ १॥ रहाउ॥ करने-करवाने में ईश्वर सर्वसमर्थ है, उसके सिवा अन्य कोई नहीं। हे नानक ! मैंने उस प्रभु की शरण ली है और मन में उसके सत्य का ही बल है॥ २॥ ५॥ ६९॥

बिलावलु महला ५ ॥ सिमरि सिमरि प्रभु आपना नाठा दुख ठाउ ॥ बिस्राम पाए मिलि साधसंगि ता ते बहुड़ि न धाउ ॥ १ ॥ बलिहारी गुर आपने चरनन्ह बलि जाउ ॥ अनद सूख मंगल बने पेखत

गुन गाउ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ कथा कीरतनु राग नाद धुनि इहु बनिओ सुआउ ॥ नानक प्रभ सुप्रसंन भए बांछत फल पाउ ॥ २ ॥ ६ ॥ ७० ॥

अपने प्रभु का निरन्तर सिमरन करने से दुखों का ठिकाना ही दूर हो गया है। साधु-संगति में मिलकर मुझे सुख-शान्ति प्राप्त हो गई है, इसलिए अन्यत्र भटकना नहीं पड़ता॥ १॥ मैं अपने गुरु पर बलिहारी जाता हूँ और उनके चरणों पर ही न्यौछावर हूँ। उनके दर्शन एवं गुणगान करने से मन में आनंद, सुख एवं मंगल बना रहता है॥ १॥ रहाउ॥ हरि की कथा-कीर्तन, स्तुतिगान एवं अनहद शब्द की ध्वनि को सुनना ही मेरा जीवन-मनोरथ बन चुका है। हे नानक ! प्रभु सुप्रसन्न हो गया है, जिससे मुझे मनोवांछित फल प्राप्त हो गया है॥ २॥ ६॥ ७०॥

बिलावलु महला ५ ॥ दास तेरे की बेनती रिद करि परगासु ॥ तुम्हरी क्रिपा ते पारब्रहम दोखन को नासु ॥ १ ॥ चरन कमल का आसरा प्रभ पुरख गुणतासु ॥ कीरतन नामु सिमरत रहउ जब लगु घटि सासु ॥ १ ॥ रहाउ ॥ मात पिता बंधप तूहै तू सरब निवासु ॥ नानक प्रभ सरणागती जा को निरमल जासु ॥ २ ॥ ७ ॥ ७१ ॥

हे ईश्वर ! तेरे दास की विनती है कि मेरे हृदय में प्रकाश कर दो। हे परब्रह्म ! तेरी कृपा से सभी दोष नाश हो सकते हैं॥ १॥ हे प्रभु ! तू गुणों का भण्डार है और तुम्हारे चरण-कमल का ही आसरा है। जब तक मेरी जीवन-साँसें चल रही हैं, मैं तेरा ही नाम-सिमरन एवं कीर्तन करता रहूँ॥ १॥ रहाउ॥ तू ही मेरा माता-पिता एवं संबंधी है और तू सब में निवास कर रहा है। हे नानक ! मैं उस प्रभु की शरण में हूँ, जिसका यश बहुत निर्मल है॥ २॥ ७॥ ७१॥

बिलावलु महला ५ ॥ सरब सिधि हरि गाईऐ सभि भला मनावहि ॥ साधु साधु मुख ते कहहि सुणि दास मिलावहि ॥ १ ॥ सूख सहज कलिआण रस पूरै गुरि कीन्ह ॥ जीअ सगल दइआल भए हरि हरि नामु चीन्ह ॥ १ ॥ रहाउ ॥ पूरि रहिओ सरबत्र महि प्रभ गुणी गहीर ॥ नानक भगत आनंद मै पेखि प्रभ की धीर ॥ २ ॥ ८ ॥ ७२ ॥

ईश्वर सर्व सिद्धियों का स्वामी है, उसका स्तुतिगान करने से सभी सुख एवं कल्याण की अनुभूति करते हैं। संत अपने मुख से भगवान् की स्तुति कर रहे हैं और उनका उपदेश सुनकर दास उनके साथ मिल गए है॥ १॥ पूर्ण गुरु ने सहज सुख एवं कल्याण प्रदान किया है। हरि-नाम के भेद को पहचान कर सभी जीव दयालु हो गए हैं॥ १॥ रहाउ॥ गुणों का गहरा सागर प्रभु सब में बस रहा है। हे नानक ! प्रभु के धैर्य को देखकर भक्तजन आनंदमय हो गए हैं॥ २॥ ८॥ ७२॥

बिलावलु महला ५ ॥ अरदासि सुणी दातारि प्रभि होए किरपाल ॥ राखि लीआ अपना सेवको मुखि निंदक छारु ॥ १ ॥ तुझहि न जोहै को मीत जन तूं गुर का दास ॥ पारब्रहमि तू राखिआ दे अपने हाथ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जीअन का दाता एकु है बीआ नही होरु ॥ नानक की बेनंतीआ मै तेरा जोरु ॥ २ ॥ ६ ॥ ७३ ॥

दाता-प्रभु ने प्रार्थना सुन ली है, इसलिए वह हम पर कृपालु हो गया है। उसने अपने सेवक की रक्षा की है तथा निंदकों के मुँह काले कर दिए हैं॥ १॥ हे मीत ! तू गुरु का दास है, अतः कोई भी तुझ पर कुदृष्टि नहीं कर सकता। अपना हाथ देकर परब्रह्म ने तेरी रक्षा की है॥ १॥ रहाउ॥ सब जीवों का दाता एक ईश्वर ही है एवं अन्य कोई नहीं। नानक की विनती है कि हे प्रभु ! मुझे तेरा ही आत्मबल है॥ २॥ ६॥ ७३॥

बिलावलु महला ५ ॥ मीत हमारे साजना राखे गोविंद ॥ निंदक मिरतक होइ गए तुम्ह होहु निचिंद ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सगल मनोरथ प्रभि कीए भेटे गुरदेव ॥ जै जै कारु जगत महि सफल जा की सेव ॥ १ ॥ ऊच अपार अगनत हरि सभि जीअ जिसु हाथि ॥ नानक प्रभ सरणागती जत कत मेरै साथि ॥ २ ॥ १० ॥ ७४ ॥

हे मेरे मित्रो-सज्जनो ! गोविंद ने तुम्हारी रक्षा की है, निंदक मृतक हो गए हैं, इसलिए तुम निश्चिंत होकर रहो॥ १॥ रहाउ॥ गुरुदेव से भेंट करने पर प्रभु ने सारे मनोरथ पूरे कर दिए हैं। जिसकी सेवा सफल हो जाती है, उसकी जगत् में जय-जयकार होती है॥ १॥ जिसके वश में सारे जीव हैं, वह परमात्मा सर्वोच्च, अपार एवं अगम्य है। हे नानक ! मैं उस प्रभु की शरण में हूँ, जो सदैव मेरे साथ है॥ २ ॥ १० ॥ ७४ ॥

बिलावलु महला ५ ॥ गुरु पूरा आराधिआ होए किरपाल ॥ मारगु संति बताइआ तूटे जम जाल ॥ १ ॥ दूख भूख संसा मिटिआ गावत प्रभ नाम ॥ सहज सूख आनंद रस पूरन सभि काम ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जलनि बुझी सीतल भए राखे प्रभि आप ॥ नानक प्रभ सरणागती जा का वड परताप ॥ २ ॥ ११ ॥ ७५ ॥

पूर्ण गुरु की आराधना की है, इसलिए वह मुझ पर कृपालु हो गया है। उसने मुझे सन्मार्ग बता दिया है, जिससे मेरे यम के जाल टूट गए हैं॥ १॥ प्रभु का नाम गाने से मेरे दुख, भूख एवं संशय मिट गए हैं। मुझे सहज सुख, आनंद एवं उल्लास उत्पन्न हो गया है तथा सभी कार्य सिद्ध हो गए हैं॥ १॥ रहाउ॥ प्रभु ने स्वयं मेरी रक्षा की है, जिससे सारी जलन बुझ गई है और मन शांत हो गया है। नानक तो उस प्रभु की शरण में ही है, जिसका जगत् में बड़ा प्रताप है॥ २॥ ११॥ ७५॥

बिलावलु महला ५ ॥ धरति सुहावी सफल थानु पूरन भए काम ॥ भउ नाठा भ्रमु मिटि गइआ रविआ नित राम ॥ १ ॥ साध जना कै संगि बसत सुख सहज बिस्राम ॥ साई घड़ी सुलखणी सिमरत हरि नाम ॥ १ ॥ रहाउ ॥ प्रगट भए संसार महि फिरते पहनाम ॥ नानक तिसु सरणागती घट घट सभ जान ॥ २ ॥ १२ ॥ ७६ ॥

सारी धरती सुहावनी हो गई है, वह स्थान सफल हो गया है और सब काम पूरे हो गए हैं। नित्य राम का भजन करने से सारा भय दूर हो गया है और भ्रम भी मिट गया है॥ १॥ साधुजनों के संग रहने से सहज सुख एवं शान्ति प्राप्त हो गई है। वह घड़ी बड़ी शुभ है, जब हरि-नाम का सिमरन किया जाता है॥ १॥ रहाउ॥ हमें पहले कोई भी नहीं जानता था परन्तु अब संसार भर में लोकप्रिय हो गए हैं। नानक तो उस परमात्मा की शरण में है जो सबके दिल की भावना को जानने वाला है॥ २॥ १२॥ ७६॥

बिलावलु महला ५ ॥ रोगु मिटाइआ आपि प्रभि उपजिआ सुखु सांति ॥ वड परतापु अचरज रूपु हरि कीन्ही दाति ॥ १ ॥ गुरि गोविंदि क्रिपा करी राखिआ मेरा भाई ॥ हम तिस की सरणागती जो सदा सहाई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ बिरथी कदे न होवई जन की अरदासि ॥ नानक जोरु गोविंद का पूरन गुणतासि ॥ २ ॥ १३ ॥ ७७ ॥

प्रभु ने स्वयं रोग मिटाया है और सुख-शांति उत्पन्न कर दी है। जिसका प्रताप बहुत बड़ा है और रूप आश्चर्यमय है, उस परमात्मा ने ही देन प्रदान की है॥ १॥ गोविंद गुरु ने कृपा करके

मेरे प्रिय की रक्षा की है। मैंने उसकी शरण ली है, जो सदैव मेरा सहायक है॥ १॥ रहाउ॥ सेवक की प्रार्थना कभी व्यर्थ नहीं जाती। हे नानक! मेरे पास गोविंद का ही आत्मबल है, जो पूर्ण गुणों का भण्डार है॥ २॥ १३॥ ७७॥

बिलावलु महला ५ ॥ मरि मरि जनमे जिन बिसरिआ जीवन का दाता ॥ पारब्रहमु जनि सेविआ अनदिनु रंगि राता ॥ १ ॥ सांति सहजु आनदु घना पूरन भई आस ॥ सुखु पाइआ हरि साधसंगि सिमरत गुणतास ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सुणि सुआमी अरदासि जन तुम्ह अंतरजामी ॥ थान थनंतरि रवि रहे नानक के सुआमी ॥ २ ॥ १४ ॥ ७८ ॥

जिसे जीवन-दाता ईश्वर भूल गया है, वह जन्म-मरण के बन्धन में ही पड़ा हुआ है। जिस भक्त ने परब्रह्म की उपासना की है, वह दिन-रात उसके रंग में ही लीन रहता है॥ १॥ उसकी सब अभिलाषाएँ पूरी हो गई हैं और मन में सहज सुख, शान्ति एवं बड़ा आनंद पैदा हो गया है। उसने साधु-संगति में गुणों के भण्डार परमात्मा का सिमरन कर सुख प्राप्त कर लिया है॥ १॥ रहाउ॥ हे स्वामी! तू अन्तर्यामी है, अपने सेवक की प्रार्थना सुनो। हे नानक के स्वामी! तू सर्वव्यापक है॥ २॥ १४॥ ७८॥

बिलावलु महला ५ ॥ ताती वाउ न लगई पारब्रहम सरणाई ॥ चउगिरद हमारै राम कार दुखु लगै न भाई ॥ १ ॥ सतिगुरु पूरा भेटिआ जिनि बणत बणाई ॥ राम नामु अउखधु दीआ एका लिव लाई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ राखि लीए तिनि रखनहारि सभ बिआधि मिटाई ॥ कहु नानक किरपा भई प्रभ भए सहाई ॥ २ ॥ १५ ॥ ७९ ॥

परब्रह्म की शरण में आने से हमें कोई गर्म हवा भी नहीं लगती अर्थात् तनिक मात्र भी संताप नहीं लगता। हमारे इर्द-गिर्द राम-नाम की रेखा खिंची हुई है, जिससे कोई दुख नहीं लगता॥ १॥ मुझे पूर्ण सतगुरु मिल गया है, जिसने ऐसा विधान बनाया है। उसने मुझे राम-नाम रूपी औषधि दी है, जिसने एक परमात्मा में वृत्ति लगा दी है॥ १॥ रहाउ॥ उस रखवाले परमात्मा ने हमारी रक्षा की है और सारी व्याधि मिटा दी है। हे नानक! मुझ पर प्रभु-कृपा हो गई है और वही मेरा सहायक बना है॥ २॥ १५॥ ७९॥

बिलावलु महला ५ ॥ अपणे बालक आपि रखिअनु पारब्रहम गुरदेव ॥ सुख सांति सहज आनद भए पूरन भई सेव ॥ १ ॥ रहाउ ॥ भगत जना की बेनती सुणी प्रभि आपि ॥ रोग मिटाइ जीवालिअनु जा का वड परतापु ॥ १ ॥ दोख हमारे बखसिअनु अपणी कल धारी ॥ मन बांछत फल दितिअनु नानक बलिहारी ॥ २ ॥ १६ ॥ ८० ॥

परब्रह्म-गुरुदेव ने स्वयं अपने बालक (हरिगोविंद) की रक्षा की है। मन में सुख-शांति एवं सहज आनंद उत्पन्न हो गया है और हमारी सेवा-भक्ति पूर्ण हो गई है॥ १॥ रहाउ॥ प्रभु ने स्वयं ही अपने भक्तजनों की विनती सुनी है। जिसका सारे जगत् में बड़ा प्रताप है, उसने रोग मिटाकर बालक को जीवनदान दिया है॥ १॥ अपनी शक्ति द्वारा उसने हमारे सब दोष माफ कर दिए हैं। हे नानक! उसने मुझे मनोवांछित फल प्रदान किया है, मैं उस पर बारंबार बलिहारी जाता हूँ॥ २॥ १६॥ ८०॥

रागु बिलावलु महला ५ चउपदे दुपदे घरु ६ १ओं सतिगुर प्रसादि ॥

मेरे मोहन स्रवनी इह न सुनाए ॥ साकत गीत नाद धुनि गावत बोलत बोल अजाए ॥ १ ॥

रहाउ ॥ सेवत सेवि सेवि साध सेवउ सदा करउ किरताए ॥ अभै दानु पावउ पुरख दाते मिलि संगति हरि गुण गाए ॥ १ ॥ रसना अगह अगह गुन राती नैन दरस रंगु लाए ॥ होहु क्रिपाल दीन दुख भंजन मोहि चरण रिदै वसाए ॥ २ ॥ सभहू तलै तलै सभ ऊपरि एह द्रिसटि द्रिसटाए ॥ अभिमानु खोइ खोइ खोइ खोई हउ मोकउ सतिगुर मंत्रु द्रिड़ाए ॥ ३ ॥ अतुलु अतुलु अतुलु नह तुलीऐ भगति वछलु किरपाए ॥ जो जो सरणि परिओ गुर नानक अभै दानु सुख पाए ॥ ४ ॥ १ ॥ ८१ ॥

हे मेरे मोहन ! जो मायावी जीव अभद्र गीतों के स्वर एवं ध्वनियाँ गाते हैं और व्यर्थ बोल बोलते हैं, वे मेरे कानों में मुझे कभी न सुनाओ॥ १॥ रहाउ॥ जीवन में सदैव यही कार्य करूँ कि एकाग्रचित होकर साधुओं की सेवा करता रहूँ। हे दाता ! मैं तुझसे अभयदान प्राप्त करूँ और सत्संगति में मिलकर तेरा ही गुणगान करता रहूँ॥ १॥ हे प्रभो ! मेरी जीभ तेरे अनंत गुणों में ही लीन रहे और नयन तेरे दर्शनों के प्रेम में लगे रहें। हे दीनों के दुखनाशक ! कृपालु हो जाओ और अपने चरण-कमल मेरे हृदय में बसाओ॥ २॥ मुझे ऐसी दृष्टि दिखाओ कि मैं खुद को सबसे विनीत समझूँ और सबको खुद से ऊँचा समझूँ। सतगुरु ने मुझे नाममंत्र दृढ़ करवाया है और मेरा अभिमान बिल्कुल दूर हो गया है॥ ३॥ हे भक्तवत्सल, हे कृपानिधि ! तू अतुलनीय है और तेरे गुणों को तोला नहीं जा सकता। नानक कहते हैं कि जो जो गुरु की शरण में आया है, उसने अभयदान एवं सुख पा लिया है॥ ४॥ १॥ ८१॥

बिलावलु महला ५ ॥ प्रभ जी तू मेरे प्रान अधारै ॥ नमसकार डंडउति बंदना अनिक बार जाउ बारै ॥ १ ॥ रहाउ ॥ ऊठत बैठत सोवत जागत इहु मनु तुझहि चितारै ॥ सूख दूख इसु मन की बिरथा तुझ ही आगै सारै ॥ १ ॥ तू मेरी ओट बल बुधि धनु तुम ही तुमहि मेरै परवारै ॥ जो तुम करहु सोई भल हमरै पेखि नानक सुख चरनारै ॥ २ ॥ २ ॥ ८२ ॥

हे प्रभु ! तू मेरे प्राणों का आधार है, इसलिए मैं तुझे दण्डवत प्रणाम एवं वंदना करता हूँ और तुझ पर अनेक बार बलिहारी जाता हूँ॥ १॥ रहाउ॥ उठते-बैठते, सोते-जागते मेरा यह मन तुझे ही याद करता रहे। मैं अपने सुख-दुख और इस मन की व्यथा तेरे समक्ष ही वर्णन करता हूँ॥ १॥ तू मेरी ओट, बल, बुद्धि, धन इत्यादि सबकुछ है, और तुम ही मेरा परिवार हो। नानक कहते हैं कि जो तुम करते हो, वही मेरे लिए भला है तथा तुम्हारे चरणों को देखकर मुझे सुख मिलता है॥ २॥ २॥ ८२॥

बिलावलु महला ५ ॥ सुनीअत प्रभ तउ सगल उधारन ॥ मोह मगन पतित संगि प्रानी ऐसे मनहि बिसारन ॥ १ ॥ रहाउ ॥ संचि बिखिआ ले ग्राहजु कीनी अंम्रितु मन ते डारन ॥ काम क्रोध लोभ रतु निंदा सतु संतोखु बिदारन ॥ १ ॥ इन ते काढि लेहु मेरे सुआमी हारि परे तुम्ह सारन ॥ नानक की बेनंती प्रभ पहि साधसंगि रंक तारन ॥ २ ॥ ३ ॥ ८३ ॥

हे प्रभु ! सुना है कि तू सब जीवों का उद्धार करने वाला है। मोह में मग्न होकर पतित प्राणियों के संग रहकर हमने मन से तुझे भुला दिया है॥ १॥ रहाउ॥ हमने माया रूपी विष को संचित करके जकड़ कर पकड़ रखा है किन्तु नामामृत को मन से हटा दिया है। हम काम, क्रोध एवं निंदा में लीन रहते हैं लेकिन सत्य एवं संतोष को त्याग चुके हैं॥ १॥ हे मेरे स्वामी ! मुझे इन विकारों से बाहर निकाल लो, मैं हार कर तेरी शरण में आ गया हूँ। नानक की प्रभु से विनती है कि मुझ निर्धन को साध-संगत द्वारा संसार-सागर से तार दो॥ २॥ ३॥ ८३॥

बिलावलु महला ५ ॥ संतन कै सुनीअत प्रभ की बात ॥ कथा कीरतनु आनंद मंगल धुनि पूरि रही दिनसु अरु राति ॥ १ ॥ रहाउ ॥ करि किरपा अपने प्रभि कीने नाम अपुने की कीनी दाति ॥ आठ पहर गुन गावत प्रभ के काम क्रोध इसु तन ते जात ॥ १ ॥ त्रिपति अघाए पेखि प्रभ दरसनु अंम्रित हरि रसु भोजनु खात ॥ चरन सरन नानक प्रभ तेरी करि किरपा संतसंगि मिलात ॥ २ ॥ ४ ॥ ८४॥

संतजनों के सान्निध्य में प्रभु की कथा ही सुनी जाती है। वहाँ दिन-रात कथा-कीर्तन, आनंद एवं मंगल ध्वनि होती रहती है॥ १॥ रहाउ॥ कृपा करके प्रभु ने अपना सेवक बना लिया है और अपने नाम का दान प्रदान कर दिया है। अब आठ प्रहर प्रभु का गुणानुवाद करने से काम, क्रोध इस तन से दूर हो गए हैं॥ १॥ प्रभु के दर्शन करके तृप्त एवं संतुष्ट हो गए हैं और अमृत रूप हरि रस का भोजन ग्रहण करते रहते हैं। नानक कहते हैं कि हे प्रभु! मैंने तेरे चरणों की शरण ली है, कृपा करके मुझे संतों के संग मिला दो॥ २॥ ४॥ ८४॥

बिलावलु महला ५ ॥ राखि लीए अपने जन आप ॥ करि किरपा हरि हरि नामु दीनो बिनसि गए सभ सोग संताप ॥ १ ॥ रहाउ ॥ गुण गोविंद गावहु सभि हरि जन राग रतन रसना आलाप ॥ कोटि जनम की त्रिसना निवरी राम रसाइणि आतम ध्राप ॥ १ ॥ चरण गहे सरणि सुखदाते गुर कै बचनि जपे हरि जाप ॥ सागर तरे भरम भै बिनसे कहु नानक ठाकुर परताप ॥ २ ॥ ५ ॥ ८५ ॥

ईश्वर ने स्वयं ही अपने दास को बचा लिया है। उसने कृपा करके नाम दिया है, जिससे सारे शोक-संताप नष्ट हो गए हैं॥ १॥ रहाउ॥ हे भक्तजनो! सभी मिलकर गोविंद का गुणगान करो और अपनी जिह्वा से अमूल्य राग उच्चारण करो। अब करोड़ों जन्मों की तृष्णा दूर हो गई है और राम नाम रूपी रसायन से आत्मा तृप्त हो गई है॥ १॥ मैंने सुखदाता की शरण लेकर उसके चरण पकड़ लिए हैं तथा गुरु के वचन द्वारा हरि का जाप किया है। हे नानक! ठाकुर के प्रताप से भवसागर से पार हो गए हैं और सारे भ्रम-भय नाश हो गए हैं॥ २॥ ५॥ ८५॥

बिलावलु महला ५ ॥ तापु लाहिआ गुर सिरजनहारि ॥ सतिगुर अपने कउ बलि जाई जिनि पैज रखी सारै संसारि ॥ १ ॥ रहाउ ॥ करु मसतकि धारि बालिकु रखि लीनो ॥ प्रभि अंम्रित नामु महा रसु दीनो ॥ १ ॥ दास की लाज रखै मिहरवानु ॥ गुरु नानकु बोलै दरगह परवानु ॥ २ ॥ ६ ॥ ८६ ॥

सृजनहार गुरु ने (पुत्र हरिगोविंद का) बुखार उतार दिया है। मैं अपने सतगुरु पर कुर्बान जाता हूँ, जिसने सारे संसार में मेरी लाज रखी है॥ १॥ रहाउ॥ उसने माथे पर अपना हाथ रखकर बालक (हरिगोविंद) को बचा लिया है। प्रभु ने उसे अमृत नाम रूपी महारस दिया है॥ १॥ मेहरबान परमात्मा सदैव अपने दास की लाज रखता है। जो कुछ गुरु नानक बोलते हैं, वह दरगाह में मंजूर हो जाता है॥ २॥ ६॥ ८६॥

रागु बिलावलु महला ५ चउपदे दुपदे घरु ७ १ओं सतिगुर प्रसादि ॥

सतिगुर सबदि उजारो दीपा ॥ बिनसिओ अंधकार तिह मंदरि रतन कोठड़ी खुल्ही अनूपा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ बिसमन बिसम भए जउ पेखिओ कहनु न जाइ वडिआई ॥ मगन भए ऊहा संगि माते ओति पोति लपटाई ॥ १ ॥ आल जाल नही कछू जंजारा अहंबुधि नही भोरा ॥ ऊचन ऊचा बीचु न खीचा हउ तेरा तूं मोरा ॥ २ ॥ एकंकारु एकु पासारा एकै अपर अपारा ॥ एकु बिसथीरनु एकु संपूरनु एकै प्रान अधारा ॥ ३ ॥ निरमल निरमल सूचा सूचो सूचा सूचो सूचा ॥ अंत न अंता सदा बेअंता कहु नानक ऊचो ऊचा ॥ ४ ॥ १ ॥ ८७ ॥

गुरु का शब्द ज्ञान रूपी उजाला करने वाला दीपक है। इसके आलोक से मन-मन्दिर में से अज्ञान रूपी अंधेरा नाश हो गया है तथा मन-मन्दिर की अनूप कोठरी खुल गई है॥ १॥ रहाउ॥ मन-मन्दिर में भगवान के दर्शन करके मैं आश्चर्यचकित हो गया हूँ तथा मुझ से उसकी महिमा की नहीं जा सकती। मैं उसके साथ मिलकर मस्त एवं आसक्त हो गया हूँ और ताने-बाने की तरह उससे मिल गया हूँ॥ १॥ मेरे मन में अहंबुद्धि बिल्कुल नहीं रही और मोह-माया के जाल एवं सब उलझनें भी दूर हो गई हैं। हे प्रभु ! तू सर्वोच्च है, मुझ में और तुझ में कोई अन्तर नहीं तथा मैं तेरा हूँ और तू मेरा है॥ २॥ एक ओंकार का ही समूचा प्रसार है और वह अपरंपार है। एक परमेश्वर ही सारे जगत् में फैला हुआ है, पर वह फिर भी सम्पूर्ण है और सब जीवों के प्राणों का आधार है॥ ३॥ वह अति निर्मल एवं सबसे शुद्ध है। हे नानक ! उसका अंत नहीं पाया जा सकता, वह सदैव बेअंत तथा महान् है॥ ४॥ १॥ ८७॥

बिलावलु महला ५ ॥ बिनु हरि कामि न आवत हे ॥ जा सिउ राचि माचि तुम्ह लागे ओह मोहनी मोहावत हे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ कनिक कामिनी सेज सोहनी छोडि खिनै महि जावत हे ॥ उरझि रहिओ इंद्री रस प्रेरिओ बिखै ठगउरी खावत हे ॥ १ ॥ त्रिण को मंदरु साजि सवारिओ पावकु तलै जरावत हे ॥ ऐसे गड़ महि ऐठि हठीलो फूलि फूलि किआ पावत हे ॥ २ ॥ पंच दूत मूड परि ठाढे केस गहे फेरावत हे ॥ द्रिसटि न आवहि अंध अगिआनी सोइ रहिओ मद मावत हे ॥ ३ ॥ जालु पसारि चोग बिसथारी पंखी जिउ फाहावत हे ॥ कहु नानक बंधन काटन कउ मै सतिगुरु पुरखु धिआवत हे ॥ ४ ॥ २ ॥ ८८ ॥

हे जीव ! हरि-नाम के अतिरिक्त कुछ भी तेरे काम नहीं आना है। जिसके साथ तू घुल-मिलकर रहता है, वह मोहिनी तुझे मोहित कर रही है॥ १॥ रहाउ॥ अपनी सुन्दर नारी की खूबसूरत सेज को एक क्षण में ही छोड़कर जीव यहाँ से चला जाता है। इन्द्रियों के रस से प्रेरित हुआ वह वासनाओं में उलझा हुआ है और विष रूपी ठग-बूटी का सेवन कर रहा है॥ १॥ उसने तिनकों का घर बनाकर उसे संवारा हुआ है। किन्तु उसके नीचे आग जला रहा है। वह ऐसे किले में हठवश अकड़ कर बैठा हुआ है परन्तु अकड़कर वह क्या प्राप्त कर रहा है॥ २॥ काम, क्रोध, लोभ, मोह एवं अहंकार—पाँच दूत उसके सिर पर खड़े हैं और केशों से पकड़ कर उसे घुमाते हैं। उस अन्धे-अज्ञानी को कुछ भी नजर नहीं आ रहा अपितु मोह के नशे में सो रहा है॥ ३॥ जैसे किसी पक्षी को पकड़ने के लिए जाल बिछाकर दाना फैला दिया जाता है, वैसे ही मृत्यु ने उसे फँसाया हुआ है। हे नानक ! इन बन्धनों को काटने के लिए मैं महापुरुष सतगुरु का ध्यान करता रहता हूँ॥ ४॥ २॥ ८८॥

बिलावलु महला ५ ॥ हरि हरि नामु अपार अमोली ॥ प्रान पिआरो मनहि अधारो चीति चितवउ जैसे पान तंबोली ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सहजि समाइओ गुरहि बताइओ रंगि रंगी मेरे तन की चोली ॥ प्रिअ मुखि लागो जउ वडभागो सुहागु हमारो कतहु न डोली ॥ १ ॥ रूप न धूप न गंध न दीपा ओति पोति अंग अंग संगि मउली ॥ कहु नानक प्रिअ रवी सुहागनि अति नीकी मेरी बनी खटोली ॥ २ ॥ ३ ॥ ८९॥

हरि का नाम अपार एवं अमूल्य है। यह हमें प्राणों से भी प्यारा है और मन का आधार है। मैं इसे ऐसे याद करता हूँ जैसे पान बेचने वाला अपने पानों को याद रखता है॥ १॥ रहाउ॥ जैसे गुरु ने बताया है, वैसे ही मैं सहजावस्था में समाया रहता हूँ और मेरी शरीर रूपी चोली प्रभु रंग में रंग गई है। जब मेरा भाग्योदय हुआ तो मुझे अपने प्रिय के दर्शन हो गए। अब मेरा सुहाग

अटल हो गया है॥ १॥ ईश्वर की पूजा करने के लिए मुझे रूप, धूप, सुगन्धि एवं दीपक की कोई आवश्यकता नहीं, क्योंकि ताने-बाने की तरह वह सदा मेरे साथ रहता है और उससे मैं फूल की तरह खिल गई हूँ। हे नानक ! मेरे प्रिय-प्रभु ने मुझे सुहागिन बनाकर रमण किया है और मेरी हृदय रूपी सेज सुन्दर बन गई है॥ २॥ ३॥ ८६॥

बिलावलु महला ५ ॥ गोबिंद गोबिंद गोबिंद मई ॥ जब ते भेटे साध दइआरा तब ते दुरमति दूरि भई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ पूरन पूरि रहिओ संपूरन सीतल सांति दइआल दई ॥ काम क्रोध त्रिसना अहंकारा तन ते होए सगल खई ॥ १ ॥ सतु संतोखु दइआ धरमु सुचि संतन ते इहु मंतु लई ॥ कहु नानक जिनि मनहु पछानिआ तिन कउ सगली सोझ पई ॥ २ ॥ ४ ॥ ९० ॥

'गोविंद-गोविंद' जपकर मैं गोविंदमयी बन गया हूँ। जबसे मुझे दयालु साधु मिल गए हैं, तबसे मेरी दुर्मति दूर हो गई है॥ १॥ रहाउ॥ सम्पूर्ण परमात्मा हर जगह बसा हुआ है, वह बड़ा शीतल स्वभाव वाला, शान्ति का पुंज एवं दया का सागर है। मेरे तन में से काम, क्रोध, तृष्णा एवं अहंकार इत्यादि नाश हो गए हैं॥ १॥ मैंने संतों से सत्य, संतोष, दया, धर्म एवं पुण्य का मंत्र लिया है। हे नानक ! जिन्होंने मन से भगवान् को पहचान लिया है, उन्हें सारी सूझ प्राप्त हो गई है॥ २॥ ४॥ ९०॥

बिलावलु महला ५ ॥ किआ हम जीअ जंत बेचारे बरनि न साकह एक रोमाई ॥ ब्रहम महेस सिध मुनि इंद्रा बेअंत ठाकुर तेरी गति नही पाई ॥ १ ॥ किआ कथीऐ किछु कथनु न जाई ॥ जह जह देखा तह रहिआ समाई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जह महा भइआन दूख जम सुनीऐ तह मेरे प्रभ तूहै सहाई ॥ सरनि परिओ हरि चरन गहे प्रभ गुरि नानक कउ बूझ बुझाई ॥ २ ॥ ५ ॥ ९१ ॥

हे ठाकुर जी ! हम जीव बेचारे क्या हैं, हम तेरे एक रोम का भी वर्णन नहीं कर सकते। ब्रह्मा, शिवशंकर, सिद्ध, मुनि एवं इन्द्र भी तेरी गति को नहीं जान सके॥ १॥ तेरी क्या महिमा करें ? कुछ कथन नहीं किया जा सकता। मैं जिधर भी देखता हूँ, तू वहाँ ही समाया हुआ है॥१॥ रहाउ॥ हे मेरे प्रभु ! सुनते हैं कि जहाँ यमों के बड़े भयानक दुख मिलते हैं, वहाँ तू ही सहायक होता है। मैं हरि की शरण में पड़ गया हूँ और उसके चरण पकड़ लिए हैं। नानक कहते हैं कि प्रभु ने मुझे सत्य का ज्ञान दे दिया है॥ २॥ ५॥ ९१॥

बिलावलु महला ५ ॥ अगम रूप अबिनासी करता पतित पवित इक निमख जपाईऐ ॥ अचरजु सुनिओ परापति भेटुले संत चरन चरन मनु लाईऐ ॥ १ ॥ कितु बिधीऐ कितु संजमि पाईऐ ॥ कहु सुरजन कितु जुगती धिआईऐ ॥ १ ॥ रहाउ॥ जो मानुखु मानुख की सेवा ओहु तिस की लई लई फुनि जाईऐ ॥ नानक सरनि सरणि सुख सागर मोहि टेक तेरो इक नाईऐ॥ २॥ ६ ॥ ९२॥

अगम्य रूप, अविनाशी ईश्वर का एक निमिष के लिए ही नाम जप लेना चाहिए, जो पतित जीवों को पवित्र कर देता है। यह आश्चर्य सुना है कि प्रभु संतों से भेंट करने पर प्राप्त होता है, इसलिए संतों के चरणों से मन लगाना चाहिए॥ १॥ उसे किस विधि एवं संयम द्वारा पाया जाता है ? हे भद्रजनो ! बताओ, किस युक्ति से उसका ध्यान करना चाहिए॥ १॥ रहाउ॥ जो मनुष्य किसी अन्य मनुष्य की सेवा करता है, वह भी उसकी सेवा के लिए पुनः पुनः जाता है। नानक कहते हैं कि हे सुखसागर ! मैंने तेरी शरण ली है तथा मुझे तेरे नाम का ही आसरा है॥ २॥ ६॥ ९२॥

बिलावलु महला ५ ॥ संत सरणि संत टहल करी ॥ धंधु बंधु अरु सगल जंजारो अवर काज ते छूटि परी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सूख सहज अरु घनो अनंदा गुर ते पाइओ नामु हरी ॥ ऐसो हरि रसु बरनि

न साकउ गुरि पूरै मेरी उलटि धरी ॥ १ ॥ पेखिओ मोहनु सभ कै संगे ऊन न काहू सगल भरी ॥ पूरन पूरि रहिओ किरपा निधि कहु नानक मेरी पूरी परी ॥ २ ॥ ७ ॥ ६३ ॥

मैंने संतों की शरण में आकर उनकी सेवा की है। जिसके फलस्वरूप जगत् के धंधों, बंधनों, सारे जंजालों एवं अन्य कार्यों से मुक्त हो गया हूँ॥ १॥ रहाउ॥ मैंने गुरु से हरि का नाम प्राप्त कर लिया है, जिससे मुझे सहज सुख एवं बड़ा आनंद मिला है। हरि-रस इतना मीठा है कि मैं उसका वर्णन नहीं कर सकता। पूर्ण गुरु ने मेरी पराङ्मुखी वृत्ति को अन्तर्मुखी कर दिया है॥१॥ उस मोहन को सब जीवों के साथ बसता देखा है, कोई भी स्थान उससे रिक्त नहीं तथा सारी सृष्टि ही उससे भरपूर है। हे नानक ! वह कृपानिधि सर्वव्यापक है और मेरी कामना पूरी हो गई है॥ २ ॥७॥ ६३॥

बिलावलु महला ५ ॥ मन किआ कहता हउ किआ कहता ॥ जान प्रबीन ठाकुर प्रभ मेरे तिसु आगै किआ कहता ॥ १ ॥ रहाउ ॥ अनबोले कउ तुही पछानहि जो जीअन महि होता ॥ रे मन काइ कहा लउ डहकहि जउ पेखत ही संगि सुनता ॥ १ ॥ ऐसो जानि भए मनि आनद आन न बीओ करता ॥ कहु नानक गुर भए दइआरा हरि रंगु न कबहू लहता ॥ २ ॥ ८ ॥ ६४ ॥

हे मन ! तू क्या कहता है और मैं क्या कहता हूँ ? हे मेरे ठाकुर प्रभु ! तू मन की बात को जानने वाला एवं प्रवीण है, तेरे समक्ष मैं क्या कह सकता हूँ॥ १॥ रहाउ॥ जो मन में होता है, तू उसे बिना बोले ही पहचान लेता है। हे मन ! तू किसलिए और कब तक दूसरों से छल करता रहेगा, जबकि तेरे साथ बसता प्रभु सबकुछ देखता एवं सुनता है॥ १॥ यह जान कर मेरे मन में बड़ा आनंद पैदा हो गया है कि परमात्मा के अलावा अन्य कोई भी रचयिता नहीं। हे नानक ! गुरु मुझ पर दयालु हो गया है और हरि का रंग मन से कभी नहीं उतरता॥ २॥ ८॥ ६४॥

बिलावलु महला ५ ॥ निंदकु ऐसे ही झरि परीऐ ॥ इह नीसानी सुनहु तुम भाई जिउ कालर भीति गिरीऐ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जउ देखै छिद्रु तउ निंदकु उमाहै भलो देखि दुख भरीऐ ॥ आठ पहर चितवै नही पहुचै बुरा चितवत चितवत मरीऐ ॥ १ ॥ निंदकु प्रभू भुलाइआ कालु नेरै आइआ हरि जन सिउ बादु उठरीऐ ॥ नानक का राखा आपि प्रभु सुआमी किआ मानस बपुरे करीऐ ॥ २ ॥ ६ ॥ ६५ ॥

हे भाई ! तुम यह निशानी सुनो, निंदक यूं ध्वस्त हो जाता है जैसे कल्लर की मिट्टी की बनी दीवार गिर जाती है॥ १॥ रहाउ॥ जब किसी मनुष्य का अवगुण देखता है तो निंदक बड़ा खुश होता है किन्तु उसका शुभ गुण देख कर वह दुख से भर जाता है। वह आठों प्रहर दूसरों का बुरा सोचता रहता है किन्तु बुरा करने में कामयाब नहीं होता। वह दूसरों का बुरा करने में सोचता-सोचता ही जीवन छोड़ जाता है॥ १॥ वास्तव में प्रभु ने ही निंदक को भुलाया हुआ है और उसकी मृत्यु निकट आ गई है। अतः वह भक्तजनों से झगड़ा उत्पन्न कर लेता है। स्वामी प्रभु स्वयं नानक का रखवाला बन गया है, फिर बेचारा मनुष्य भला क्या बिगाड़ सकता है॥ २॥ ६॥ ६५॥

बिलावलु महला ५ ॥ ऐसे काहे भूलि परे ॥ करहि करावहि मूकरि पावहि पेखत सुनत सदा संगि हरे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ काच बिहाझन कंचन छाडन बैरी संगि हेतु साजन तिआगि खरे ॥ होवनु कउरा अनहोवनु मीठा बिखिआ महि लपटाइ जरे ॥ १ ॥ अंध कूप महि परिओ परानी भरम गुबार मोह बंधि परे ॥ कहु नानक प्रभ होत दइआरा गुरु भेटै काढै बाह फरे ॥ २ ॥ १० ॥ ६६ ॥

पता नहीं मनुष्य क्यों भूला हुआ है ? वह स्वयं पाप-कर्म करता एवं करवाता है, लेकिन इस बात से इन्कार करता है। लेकिन ईश्वर सदैव साथ रहता हुआ सबकुछ देखता-सुनता रहता है॥ १॥ रहाउ॥ वह नाम रूपी कंचन को छोड़कर माया रूपी काँच का सौदा करता है और अपने शत्रुओं—काम, क्रोध, लोभ, मोह एवं अहंकार से प्रेम करता है और अपने सज्जनों—सत्य, संतोष, दया, धर्म, पुण्य को त्याग देता है। उसे अविनाशी प्रभु कड़वा लगता है और नाशवान् संसार मीठा लगता है। वह माया रूपी विष से लिपट कर जल जाता है॥ १॥ ऐसे प्राणी अन्धकूप में गिरे हुए हैं और भ्रम के अँधेरे एवं मोह के बन्धनों में फँसे हुए हैं। हे नानक ! जब प्रभु दयालु हो जाता है तो वह मनुष्य को गुरु से मिलाकर बांह पकड़कर उसे अंधकूप में से बाहर निकाल देता है॥ २॥ १०॥ ६६॥

बिलावलु महला ५ ॥ मन तन रसना हरि चीन्हा ॥ भए अनंदा मिटे अंदेसे सरब सूख मोकउ गुरि दीन्हा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ इआनप ते सभ भई सिआनप प्रभु मेरा दाना बीना ॥ हाथ देइ राखै अपने कउ काहू न करते कछु खीना ॥ १ ॥ बलि जावउ दरसन साधू कै जिह प्रसादि हरि नामु लीना ॥ कहु नानक ठाकुर भारोसै कहू न मानिओ मनि छीना ॥ २ ॥ ११ ॥ ६७ ॥

मन, तन एवं जिह्वा से सिमरन करके भगवान को पहचान लिया है। मेरे सारे संदेह मिट गए हैं और बड़ा आनंद हो गया है। गुरु ने मुझे सर्वसुख प्रदान किए हैं॥ १॥ रहाउ॥ मेरा प्रभु बड़ा चतुर है, सर्वज्ञाता है। मेरे मन में नासमझी की जगह पूरी समझ पैदा हो गई है। प्रभु हाथ देकर अपने सेवक की रक्षा करता है और कोई भी उसका नुक्सान नहीं कर सकता॥ १॥ मैं साधु के दर्शन पर बलिहारी जाता हूँ, जिसकी कृपा से हरि-नाम प्राप्त किया है। हे नानक ! मैंने अपने ठाकुर पर भरोसा रखकर किसी अन्य को मन में एक क्षण के लिए भी नहीं माना॥ २॥ ११॥ ६७॥

बिलावलु महला ५ ॥ गुरि पूरै मेरी राखि लई ॥ अंम्रित नामु रिदे महि दीनो जनम जनम की मैलु गई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ निवरे दूत दुसट बैराई गुर पूरे का जपिआ जापु ॥ कहा करै कोई बेचारा प्रभ मेरे का बड परतापु ॥ १ ॥ सिमरि सिमरि सिमरि सुखु पाइआ चरन कमल रखु मन माही ॥ ता की सरनि परिओ नानक दासु जा ते ऊपरि को नाही ॥ २ ॥ १२ ॥ ६८ ॥

पूर्ण गुरु ने मेरी लाज रख ली है, उसने अमृत नाम मेरे हृदय में बसा दिया है, जिससे जन्म-जन्मांतर की मैल दूर हो गई है॥ १॥ रहाउ॥ जब पूर्ण गुरु का जाप जपा तो मेरे वैरी दुष्ट दूत-काम, क्रोध, लोभ, मोह एवं अहंकार दूर हो गए। मेरे प्रभु का सारी दुनिया में बड़ा प्रताप है, फिर कोई मनुष्य बेचारा मेरा क्या बिगाड़ सकता है॥ १॥ बारंबार भगवान् का सिमरन करके मुझे सुख उपलब्ध हो गया है, इसलिए उसके चरण-कमल को मन में बसा लिया है। दास नानक उस परमात्मा की शरण में पड़ा है, जिससे ऊपर कोई नहीं॥ २॥ १२॥ ६८॥

बिलावलु महला ५ ॥ सदा सदा जपीऐ प्रभ नाम ॥ जरा मरा कछु दूखु न बिआपै आगै दरगह पूरन काम ॥ १ ॥ रहाउ ॥ आपु तिआगि परीऐ नित सरनी गुर ते पाईऐ एहु निधानु ॥ जनम मरण की कटीऐ फासी साची दरगह का नीसानु ॥ १ ॥ जो तुम्ह करहु सोई भल मानउ मन ते छूटै सगल गुमानु ॥ कहु नानक ता की सरणाई जा का कीआ सगल जहानु ॥ २ ॥ १३ ॥ ६९ ॥

सर्वदा प्रभु का नाम जपना चाहिए, क्योंकि इससे बुढ़ापा एवं मृत्यु का दुख कुछ भी प्रभावित नहीं करता और आगे सत्य के दरबार में कार्य पूर्ण हो जाता है॥ १॥ रहाउ॥ अपना अहंत्व त्याग

कर सदैव शरण में रहना चाहिए। यह नाम का भण्डार गुरु से प्राप्त होता है। इससे जन्म-मरण की फाँसी कट जाती है और सत्य के दरबार में जाने के लिए यह परवाना है॥ १॥ हे ईश्वर! जो तू करता है, मैं उसे सहर्ष भला मानता हूँ और मेरे मन से सारा घमण्ड छूट गया है। हे नानक! मैं उस परमात्मा की शरण में हूँ, जिसने सारा जहान बनाया है॥ २॥ १३॥ ९९॥

बिलावलु महला ५ ॥ मन तन अंतरि प्रभु आही ॥ हरि गुन गावत परउपकार नित तिसु रसना का मोलु किछु नाही ॥ १ ॥ रहाउ ॥ कुल समूह उधरे खिन भीतरि जनम जनम की मलु लाही ॥ सिमरि सिमरि सुआमी प्रभु अपना अनद सेती बिखिआ बनु गाही ॥ १ ॥ चरन प्रभू के बोहिथु पाए भव सागरु पारि पराही ॥ संत सेवक भगत हरि ता के नानक मनु लागा है ताही ॥ २ ॥ १४ ॥ १०० ॥

जिसके मन तन में प्रभु बसा हुआ है, वह नित्य उसका गुणगान करके दूसरों को सुनाने का परोपकार करता है, उसकी रसना का मूल्यांकन नहीं किया जा सकता॥ १॥ रहाउ॥ उसकी सारी कुल का एक क्षण में ही उद्धार हो गया है और उसके जन्म-जन्मांतर की मैल दूर हो गई है। वह अपने प्रभु का सिमरन करके बड़े आनंद से विकारों से भरे वन रूपी जगत् से पार हो गया है॥ १॥ वह प्रभु के चरण रूपी जहाज को पाकर भवसागर से पार हो गया है। हे नानक! जिस भगवान् की भक्ति में अनेक संत, महापुरुष एवं भक्तजन लीन हैं, उसका मन भी उससे ही लगा हुआ है॥ २॥ १४॥ १००॥

बिलावलु महला ५ ॥ धीरउ देखि तुम्हारे रंगा ॥ तुही सुआमी अंतरजामी तूही वसहि साध कै संगा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ खिन महि थापि निवाजे ठाकुर नीच कीट ते करहि राजंगा ॥ १ ॥ कबहू न बिसरै हीए मोरे ते नानक दास इही दानु मंगा ॥ २ ॥ १५ ॥ १०१ ॥

हे परमेश्वर! तेरी लीला देखकर मुझे बड़ा धैर्य होता है। तू ही अन्तर्यामी स्वामी है और तू ही साधुओं के संग रहता है॥ १॥ रहाउ॥ उस ठाकुर की लीला इतनी अद्भुत है कि वह क्षण में ही नीच आदमी को राजसिंहासन पर बैठाकर सम्मान दिलवा देता है॥ १॥ दास नानक विनती करता है कि हे प्रभु! मैं यही दान माँगता हूँ कि तू मेरे हृदय से कभी न विस्मृत हो॥ २॥ १५॥ १०१॥

बिलावलु महला ५ ॥ अचुत पूजा जोग गोपाल ॥ मनु तनु अरपि रखउ हरि आगै सरब जीआ का है प्रतिपाल ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सरनि सम्रथ अकथ सुखदाता किरपा सिंधु बडो दइआल ॥ कंठि लाइ राखै अपने कउ तिस नो लगै न ताती बाल ॥ १ ॥ दामोदर दइआल सुआमी सरबसु संत जना धन माल ॥ नानक जाचिक दरसु प्रभ मागै संत जना की मिलै रवाल ॥ २ ॥ १६ ॥ १०२ ॥

अटल परमेश्वर पूजनीय है, मैं अपना मन-तन उसके समक्ष अर्पण करता हूँ, वही सब जीवों का पालनहार है॥ १॥ रहाउ॥ वह जीवों को शरण देने में समर्थ है, उसकी महिमा अकथनीय है, वह सुखदाता, कृपा का सागर एवं बड़ा दयालु है। वह भक्तों को गले से लगाकर रखता है और उन्हें कोई गर्म हवा अर्थात् दुख नहीं लगने देता॥ १॥ वह दामोदर स्वामी बड़ा दयाल है और संतजनों का धन-संपति सब कुछ है। याचक नानक प्रभु-दर्शन ही माँगता है और चाहता है कि उसे संतजनों की चरण-धूलि ही मिले॥ २॥ १६॥ १०२॥

बिलावलु महला ५ ॥ सिमरत नामु कोटि जतन भए ॥ साधसंगि मिलि हरि गुन गाए जमदूतन कउ त्रास अहे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जेते पुनहचरन से कीन्हे मनि तनि प्रभ के चरण गहे ॥ आवण जाणु

भरमु भउ नाठा जनम जनम के किलविख दहे ॥ १ ॥ निरभउ होइ भजहु जगदीसै एहु पदारथु वडभागि लहे ॥ करि किरपा पूरन प्रभ दाते निरमल जसु नानक दास कहे ॥ २ ॥ १७ ॥ १०३ ॥

भगवान का नाम-सिमरन करने से करोड़ों ही यत्न पूरे हो गए हैं। जब संतों की संगति में मिलकर हरि का गुणगान किया तो यमदूत भी निकट आने से डरने लगे॥ १॥ रहाउ॥ मन-तन में प्रभु के चरण बसाने से जितने भी प्रायश्चित कर्म हैं, सब पूर्ण हो गए हैं। अब मेरा आवागमन, भ्रम एवं भय दूर हो गया है और जन्म-जन्मांतर के सब पाप जल गए हैं॥ १॥ निडर होकर जगदीश्वर का भजन करो, यह नाम रूपी पदार्थ भाग्यशालियों को ही मिलता है। दास नानक प्रार्थना करता है कि हे पूर्ण प्रभु दाता ! ऐसी कृपा करो कि मैं तेरा पावन यश करता रहूँ॥ २॥ १७॥ १०३॥

बिलावलु महला ५ ॥ सुलही ते नाराइण राखु ॥ सुलही का हाथु कही न पहुचै सुलही होइ मूआ नापाकु ॥ १ ॥ रहाउ ॥ काढि कुठारु खसमि सिरु काटिआ खिन महि होइ गइआ है खाकु ॥ मंदा चितवत चितवत पचिआ जिनि रचिआ तिनि दीना धाकु ॥ १ ॥ पुत्र मीत धनु किछू न रहिओ सु छोडि गइआ सभ भाई साकु ॥ कहु नानक तिसु प्रभ बलिहारी जिनि जन का कीनो पूरन वाकु ॥ २ ॥ १८ ॥ १०४ ॥

{इतिहास साक्षी है कि मुगल बादशाह जहाँगीर का हाकिम सुलही खाँ गुरु साहिब पर प्रहार करने के लिए आ रहा था। लेकिन लाहौर के समीप गाँव हेहर में वह ईंटों के भट्ठे में जलता हुआ तड़प तड़पकर मौत का ग्रास बन गया। इसी संदर्भ में गुरु जी ने परमात्मा का कोटि-कोटि आभार व्यक्त किया है।}

ईश्वर ने सुलही खाँ से हमें बचा लिया है। सुलही खाँ अपने मकसद में सफल नहीं हो सका अर्थात् वह हमें नुक्सान पहुँचाने में असफल रहा और बड़ी नापाक मौत का शिकार हुआ। *{मुसलमान मृतक को दफना देते हैं किन्तु सुलही खाँ जलती आग में मर गया}*॥ १॥ रहाउ॥ ईश्वर ने कुठार निकाल कर उसका सिर काट दिया है और क्षण में ही वह खाक हो गया। वह हमारा बुरा सोचता-सोचता स्वयं ही जलकर मर गया है। जिस परमेश्वर ने उसे बनाया था, उसने ही उसे मौत के हवाले कर दिया है॥ १॥ उसका कोई पुत्र, मित्र एवं धन कुछ भी नहीं रहा और वह अपने भाई-रिश्तेदार पीछे छोड़ गया है। हे नानक ! मैं उस प्रभु पर शत्-शत् बलिहारी हूँ, जिसने अपने सेवक का वाक्य पूरा किया है॥ २॥ १८॥ १०४॥

बिलावलु महला ५ ॥ पूरे गुर की पूरी सेव ॥ आपे आपि वरतै सुआमी कारजु रासि कीआ गुरदेव ॥ १ ॥ रहाउ ॥ आदि मधि प्रभु अंति सुआमी अपना थाटु बनाइओ आपि ॥ अपने सेवक की आपे राखै प्रभ मेरे को वड परतापु ॥ १ ॥ पारब्रहम परमेसुर सतिगुर वसि कीन्हे जिनि सगले जंत ॥ चरन कमल नानक सरणाई राम नाम जपि निरमल मंत ॥ २ ॥ १९ ॥ १०५ ॥

पूर्ण गुरु की सेवा पूर्ण फलदायक है। जगत् का स्वामी स्वयं हर जगह मौजूद है और गुरुदेव ने हमारा हर कार्य सम्पूर्ण कर दिया है॥ १॥ रहाउ॥ स्वामी प्रभु ही आदि, मध्य एवं अन्त तक मौजूद है, उसने अपनी रचना स्वयं ही बनाई है। मेरे प्रभु का बड़ा प्रताप है कि वह अपने सेवक की हमेशा ही लाज रखता है॥ १॥ परब्रह्म-परमेश्वर ही सतगुरु है, जिसने सब जीवों को अपने वश में किया हुआ है। हे नानक ! मैंने उसके चरणों की शरण ली है और निर्मल राम नाम रूपी मंत्र जपता रहता हूँ॥ २॥ १९॥ १०५॥

बिलावलु महला ५ ॥ ताप पाप ते राखे आप ॥ सीतल भए गुर चरनी लागे राम नाम हिरदे महि जाप ॥ १ ॥ रहाउ ॥ करि किरपा हसत प्रभि दीने जगत उधार नव खंड प्रताप ॥ दुख बिनसे सुख अनद प्रवेसा त्रिसन बुझी मन तन सचु ध्राप ॥ १ ॥ अनाथ को नाथु सरणि समरथा सगल स्रिसटि को माई बापु ॥ भगति वछल भै भंजन सुआमी गुण गावत नानक आलाप ॥ २ ॥ २० ॥ १०६ ॥

परमात्मा स्वयं मुझे दुखों एवं पापों से बचाता है। गुरु के चरणों में लगकर मन शांत हो गया है और अपने हृदय में राम नाम का ही जाप करता रहता हूँ॥ १॥ रहाउ॥ प्रभु ने कृपा कर मेरे सिर पर अपना हाथ रखा है, वह जगत् का उद्धार करने वाला है और धरती के नौ खण्डों में उसका ही प्रताप फैला हुआ है। मेरे सब दुख नाश हो गए हैं तथा सुख एवं आनंद मन में प्रवेश कर गए हैं। नाम जपकर तृष्णा बुझ गई है और मन-तन संतुष्ट हो गए हैं॥ १॥ अनाथों का नाथ ईश्वर ही जीवों को शरण देने में समर्थ है और वही समूची सृष्टि का माता-पिता है। हे नानक! मैं तो भक्तवत्सल, भयनाशक स्वामी का ही गुणगान करता हूँ और उसका ही नाम अलापता हूँ॥ २॥ २०॥ १०६॥

बिलावलु महला ५ ॥ जिस ते उपजिआ तिसहि पछानु ॥ पारब्रहमु परमेसरु धिआइआ कुसल खेम होए कलिआन ॥ १ ॥ रहाउ ॥ गुरु पूरा भेटिओ बड भागी अंतरजामी सुघड़ु सुजानु ॥ हाथ देइ राखे करि अपने बड समरथु निमाणिआ को मानु ॥ १ ॥ भ्रम भै बिनसि गए खिन भीतरि अंधकार प्रगटे चानाणु ॥ सासि सासि आराधै नानकु सदा सदा जाईऐ कुरबाणु ॥ २ ॥ २१ ॥ १०७ ॥

हे मानव! जिससे तू पैदा हुआ है, उसे पहचान! परब्रह्म-परमेश्वर का ध्यान-मनन करने से ही कुशलक्षेम एवं कल्याण होता है॥ १॥ रहाउ॥ अहोभाग्य से ही पूर्ण गुरु मिलता है, वही अन्तर्यामी, बुद्धिमान एवं सर्वगुणसम्पन्न है। वह अपना बनाकर हाथ देकर रक्षा करता है। वह बड़ा समर्थ है और सम्मानहीनों को सम्मान दिलवाता है॥ १॥ मेरे सारे भ्रम भय क्षण में ही नाश हो गए हैं और अज्ञान का अंधेरा मिटकर ज्ञान का प्रकाश हो गया है। हे नानक! मैं तो जीवन की हरेक साँस से उसकी ही आराधना करता हूँ और सदैव उस पर कुर्बान जाता हूँ॥ २॥ २१॥ १०७॥

बिलावलु महला ५ ॥ दोवै थाव रखे गुर सूरे ॥ हलत पलत पारब्रहमि सवारे कारज होए सगले पूरे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ हरि हरि नामु जपत सुख सहजे मजनु होवत साधू धूरे ॥ आवण जाण रहे थिति पाई जनम मरण के मिटे बिसूरे ॥ १ ॥ भ्रम भै तरे छुटे भै जम के घटि घटि एकु रहिआ भरपूरे ॥ नानक सरणि परिओ दुख भंजन अंतरि बाहरि पेखि हजूरे ॥ २ ॥ २२ ॥ १०८ ॥

शूरवीर गुरु ने इहलोक एवं परलोक दोनों स्थानों में हमारी रक्षा की है। परब्रह्म-परमेश्वर ने हमारा लोक-परलोक संवार दिया है और सभी कार्य पूरे हो गए हैं॥ १॥ रहाउ॥ हरि का नाम जपने से सुख प्राप्त हो गया है और साधुओं की चरण-धूलि में स्नान होता रहता है। अब आवागमन समाप्त हो गया है तथा जन्म-मरण के चक्र भी मिट गए हैं॥ १॥ मैं भ्रम-भय के सागर से पार हो गया हूँ और मृत्यु के भय से भी छूट गया हूँ। एक परमात्मा ही घट-घट में भरपूर हो रहा है। हे नानक! मैं तो दुखनाशक परमात्मा की शरण में ही आया हूँ और अन्तर्मन एवं बाहर उसे ही देखता हूँ॥ २॥ २२॥ १०८॥

बिलावलु महला ५ ॥ दरसनु देखत दोख नसे ॥ कबहु न होवहु द्रिसटि अगोचर जीअ कै संगि बसे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ प्रीतम प्रान अधार सुआमी ॥ पूरि रहे प्रभ अंतरजामी ॥ १ ॥ किआ गुण तेरे सारि

सम्हारी ॥ सासि सासि प्रभ तुझहि चितारी ॥ २ ॥ किरपा निधि प्रभ दीन दइआला ॥ जीअ जंत की करहु प्रतिपाला ॥ ३ ॥ आठ पहर तेरा नामु जनु जापे ॥ नानक प्रीति लाई प्रभि आपे ॥ ४ ॥ २३ ॥ १०६ ॥

हे ईश्वर! तेरे दर्शन करने से ही सारे दोष नाश हो जाते हैं। इसलिए तू कभी भी हमारी नजर से दूर मत होना और सदैव प्राणों के साथ बसे रहना॥ १॥ रहाउ॥ हे मेरे प्रियतम! तू मेरे प्राणों का आधार है और तू ही मेरा स्वामी है। वह अन्तर्यामी प्रभु हर जगह बसा हुआ है॥ १॥ मैं तेरे कौन-कौन से गुण स्मरण करके तेरा ध्यान करूँ। हे प्रभु! जीवन की हरेक साँस से तुझे ही याद करता रहता हूँ॥ २॥ हे प्रभु! तू कृपानिधि एवं दीनदयाल है, अपने जीवों का पालन-पोषण करो॥ ३॥ यह सेवक आठ प्रहर तेरा ही नाम जपता रहता है। हे नानक! प्रभु ने स्वयं ही अपनी प्रीति मेरे मन में लगाई है॥ ४॥ २३॥ १०६॥

बिलावलु महला ५ ॥ तनु धनु जोबनु चलत गइआ ॥ राम नाम का भजनु न कीनो करत बिकार निसि भोरु भइआ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ अनिक प्रकार भोजन नित खाते मुख दंता घसि खीन खइआ ॥ मेरी मेरी करि करि मूठउ पाप करत नह परी दइआ ॥ १ ॥ महा बिकार घोर दुख सागर तिसु महि प्राणी गलतु पइआ ॥ सरनि परे नानक सुआमी की बाह पकरि प्रभि काढि लइआ ॥ २ ॥ २४ ॥ ११० ॥

हे जीव! तेरा तन, धन एवं यौवन चला गया है। मगर तूने राम-नाम का भजन नहीं किया और दिन-रात विकार करते ही बीत गए हैं॥ १॥ रहाउ॥ नित्य अनेक प्रकार का भोजन खाते मुँह के दाँत भी घिस कर क्षीण हो गए हैं। 'मेरी-मेरी' कर करके तू लुट गया है और पाप करते हुए तेरे मन में कभी दया नहीं आई॥ १॥ हे प्राणी! यह जगत् महाविकारों एवं दुखों का घोर सागर है, जिसमें तू डूबा हुआ है। हे नानक! जो जीव स्वामी की शरण में पड़ गए हैं, प्रभु ने उन्हें बाँह से पकड़ कर दुखों के सागर से निकाल लिया है॥ २॥ २४॥ ११०॥

बिलावलु महला ५ ॥ आपना प्रभु आइआ चीति ॥ दुसमन दुसट रहे झख मारत कुसलु भइआ मेरे भाई मीत ॥ १ ॥ रहाउ ॥ गई बिआधि उपाधि सभ नासी अंगीकारु कीओ करतारि ॥ सांति सूख अरु अनद घनेरे प्रीतम नामु रिदै उर हारि ॥ १ ॥ जीउ पिंडु धनु रासि प्रभ तेरी तूं समरथु सुआमी मेरा ॥ दास अपुने कउ राखनहारा नानक दास सदा है चेरा ॥ २ ॥ २५ ॥ १११ ॥

हे मेरे सज्जनो! जब अपना प्रभु याद आया तो मेरा कल्याण हो गया तथा मेरे दुष्ट दुश्मन व्यर्थ ही समय बर्बाद करते रहे॥ १॥ रहाउ॥ जब करतार ने मेरा पक्ष लिया तो सब व्याधियाँ एवं मुसीबतें नाश हो गईं। जब मैंने प्रियतम के नाम को अपने हृदय का हार बना लिया तो मन में सुख, शांति और बड़ा आनंद पैदा हो गया॥ १॥ हे प्रभु! मेरी जिंदगी, तन एवं धन सब तेरी ही दी हुई पूंजी है और तू ही मेरा समर्थ स्वामी है। तू ही अपने दास का रखवाला है और दास नानक सदैव तेरा चेला है॥ २॥ २५॥ १११॥

बिलावलु महला ५ ॥ गोबिदु सिमरि होआ कलिआणु ॥ मिटी उपाधि भइआ सुखु साचा अंतरजामी सिमरिआ जाणु ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जिस के जीअ तिनि कीए सुखाले भगत जना कउ साचा ताणु ॥ दास अपुने की आपे राखी भै भंजन ऊपरि करते माणु ॥ १ ॥ भई मित्राई मिटी बुराई द्रुसट दूत हरि काढे छाणि ॥ सूख सहज आनंद घनेरे नानक जीवै हरि गुणह वखाणि ॥ २ ॥ २६ ॥ ११२ ॥

गोविन्द का सिमरन करने से कल्याण हो गया है। उस अन्तर्यामी का भजन करने से सब मुसीबतें मिट गई हैं और सच्चा सुख प्राप्त हो गया है॥ १॥ रहाउ॥ जिसके ये जीव पैदा किए हुए हैं, उसने ही उन्हें सुखी किया है तथा भक्तजनों को उसका ही सच्चा सहारा है। प्रभु ने स्वयं अपने भक्तों की लाज रखी है और वे तो भयनाशक परमात्मा पर ही गर्व करते हैं॥ १॥ भगवान ने चुन-चुनकर कामादिक दुष्ट दूतों को मन से निकाल दिया है और अब सबसे मित्रता हो गई है तथा सारी बुराई मिट गई है। हे नानक! मैं तो भगवान के गुणों का बखान करके ही जी रहा हूँ और मन में सहज सुख एवं आनंद पैदा हो गया है॥ २॥ २६॥ ११२॥

बिलावलु महला ५ ॥ पारब्रहम प्रभ भए क्रिपाल ॥ कारज सगल सवारे सतिगुर जपि जपि साधू भए निहाल ॥ १ ॥ रहाउ ॥ अंगीकारु कीआ प्रभि अपनै दोखी सगले भए रवाल ॥ कंठि लाइ राखे जन अपने उधरि लीए लाइ अपनै पाल ॥ १ ॥ सही सलामति मिलि घरि आए निंदक के मुख होए काल ॥ कहु नानक मेरा सतिगुरु पूरा गुर प्रसादि प्रभ भए निहाल ॥ २ ॥ २७ ॥ ११३ ॥

परब्रह्म प्रभु कृपालु हो गया है। सतगुरु ने सब कार्य संवार दिए हैं तथा नाम जप-जपकर साधुजन निहाल हो गए हैं॥ १॥ रहाउ॥ प्रभु ने अपने सेवक का पक्ष लिया है, जिससे उसके सारे दोषी मिट्टी में मिल गए हैं। उसने सेवक को गले से लगाकर रखा हुआ है और अपनी शरण में रखकर उसका उद्धार कर दिया है॥ १॥ दास सकुशल घर आ गया है और निंदकों का मुँह काला हो गया है। हे नानक! मेरा सतगुरु पूर्ण है और गुरु की कृपा से प्रभु मुझ पर निहाल हो गया है॥ २॥ २७॥ ११३॥

बिलावलु महला ५ ॥ मू लालन सिउ प्रीति बनी ॥ रहाउ ॥ तोरी न तूटै छोरी न छूटै ऐसी माधो खिंच तनी ॥ १ ॥ दिनसु रैनि मन माहि बसतु है तू करि किरपा प्रभ अपनी ॥ २ ॥ बलि बलि जाउ सिआम सुंदर कउ अकथ कथा जा की बात सुनी ॥ ३ ॥ जन नानक दासनि दासु कहीअत है मोहि करहु क्रिपा ठाकुर अपुनी ॥ ४ ॥ २८ ॥ ११४ ॥

मेरी ईश्वर से अटूट प्रीति बनी है॥ रहाउ॥ प्रभु ने प्रेम की डोर ऐसी बनाई है जो तोड़ने से भी नहीं टूटती और न ही छोड़ने से छूटती है॥ १॥ अब दिन-रात वह मेरे मन में ही बसता है। हे प्रभु! तू अपनी कृपा करता रह॥ २॥ मैं तो उस श्याम सुन्दर पर बलिहारी जाती हूँ, जिसके बारे में यह बात सुनी है कि उसकी कथा अकथनीय है॥ ३॥ नानक कहते हैं कि मुझे तो प्रभु के दासों का दास कहा जाता है। हे ठाकुर जी! मुझ पर अपनी कृपा करो॥ ४॥ २८॥ ११४॥

बिलावलु महला ५ ॥ हरि के चरन जपि जांउ कुरबानु ॥ गुरु मेरा पारब्रहम परमेसुरु ता का हिरदै धरि मन धिआनु ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सिमरि सिमरि सिमरि सुखदाता जा का कीआ सगल जहानु ॥ रसना रवहु एकु नाराइणु साची दरगह पावहु मानु ॥ १ ॥ साधू संगु परापति जा कउ तिन ही पाइआ एहु निधानु ॥ गावउ गुण कीरतनु नित सुआमी करि किरपा नानक दीजै दानु ॥ २ ॥ २९ ॥ ११५ ॥

मैं तो हरि के चरणों को जपकर उस पर ही कुर्बान जाता हूँ। गुरु ही मेरा परब्रह्म-परमेश्वर है और हृदय में बसाकर उसका ही ध्यान करता हूँ॥ १॥ रहाउ॥ जिसने यह सारा संसार बनाया हुआ है, उस सुखदाता ईश्वर का बारंबार सिमरन करते रहो। अपनी जीभ से एक नारायण को जपते रहो और सच्ची दरगाह में सम्मान प्राप्त करो॥ १॥ जिसे साधु की संगति प्राप्त हुई है, उसने ही यह नाम रूपी खजाना हासिल किया है। नानक प्रार्थना करते हैं कि हे स्वामी! कृपा करके यही दान दीजिए कि नित्य तेरा गुणगान एवं कीर्तन करता रहूँ॥ २॥ २९॥ ११५॥

बिलावलु महला ५ ॥ राखि लीए सतिगुर की सरण ॥ जै जै कारु होआ जग अंतरि पारब्रहमु मेरो तारण तरण ॥ १ ॥ रहाउ ॥ बिस्वंभर पूरन सुखदाता सगल समग्री पोखण भरण ॥ थान थनंतरि सरब निरंतरि बलि बलि जांई हरि के चरण ॥ १ ॥ जीअ जुगति वसि मेरे सुआमी सरब सिधि तुम कारण करण ॥ आदि जुगादि प्रभु रखदा आइआ हरि सिमरत नानक नही डरण ॥ २ ॥ ३० ॥ ११६ ॥

सतगुरु की शरण में परमात्मा ने हमारी रक्षा की है। मेरा परब्रह्म भवसागर में से पार करवाने वाला है और सारे जग में उसकी जय-जयकार हो रही है॥ १॥ रहाउ॥ पूर्ण सुखदाता विश्वंभर सारी सृष्टि का भरण पोषण करने वाला है। वह देश-देशांतर सबमें व्याप्त है और मैं उस हरि के चरणों पर बारंबार बलिहारी जाता हूँ॥ १॥ हे मेरे स्वामी! सब जीवों की जीवन-युक्ति तेरे वश में है और तू सर्व सिद्धियों का कर्ता है। हे नानक! युगों-युगांतरों से प्रभु अपने भक्तजनों की रक्षा करता आया है तथा उसका सिमरन करने से कोई डर नहीं रहता॥ २॥ ३०॥ ११६॥

रागु बिलावलु महला ५ दुपदे घरु ८ १ओं सतिगुर प्रसादि ॥

मै नाही प्रभ सभु किछु तेरा ॥ ईघै निरगुन ऊघै सरगुन केल करत बिचि सुआमी मेरा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ नगर महि आपि बाहरि फुनि आपन प्रभ मेरे को सगल बसेरा ॥ आपे ही राजनु आपे ही राइआ कह कह ठाकुरु कह कह चेरा ॥ १ ॥ का कउ दुराउ का सिउ बलबंचा जह जह पेखउ तह तह नेरा ॥ साध मूरति गुरु भेटिओ नानक मिलि सागर बूंद नही अन हेरा ॥ २ ॥ १ ॥ ११७ ॥

हे प्रभु! मैं तो कुछ भी नहीं हूँ और सबकुछ तेरा ही दिया हुआ है। मेरा स्वामी निर्गुण स्वरूप एवं सगुण स्वरूप में स्वयं ही लीला कर रहा है॥ १॥ रहाउ॥ शरीर रूपी नगर में वही मौजूद है और बाहर भी वही बस रहा है। सच तो यही है कि मेरा प्रभु सब में निवास कर रहा है। वह स्वयं ही राजा है और स्वयं ही प्रजा है। कहीं वह मालिक बना हुआ है और कहीं वह चेला बना हुआ है॥ १॥ मैं कौन-सी वस्तु छिपा कर रखूँ और किससे छल-कपट करूँ, मैं जिधर भी देखता हूँ, वह मुझे निकट ही नजर आता है। हे नानक! मुझे साधु स्वरूप गुरु मिल गया है। अब मैंने देखा है कि जैसे सागर से मिली बूँद उससे भिन्न नहीं होती, वैसे ही ज्योति परमज्योति से मिलकर भिन्न नहीं होती॥ २॥ १॥ ११७॥

बिलावलु महला ५ ॥ तुम्ह समरथा कारन करन ॥ ढाकन ढाकि गोबिद गुर मेरे मोहि अपराधी सरन चरन ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जो जो कीनो सो तुम्ह जानिओ पेखिओ ठउर नाही कछु ढीठ मुकरन ॥ बड परतापु सुनिओ प्रभ तुम्हरो कोटि अघा तेरो नाम हरन ॥ १ ॥ हमरो सहाउ सदा सद भूलन तुम्हरो बिरदु पतित उधरन ॥ करुणा मै किरपाल क्रिपा निधि जीवन पद नानक हरि दरसन ॥ २ ॥ २ ॥ ११८ ॥

हे गोविंद! तू समर्थ एवं सर्वकर्ता है, मेरे अवगुण ढंक ले, मैं अपराधी तेरे चरणों की शरण में आया हूँ॥ १॥ रहाउ॥ जो कुछ भी मैंने किया है, उसे तूने देख जान लिया है और मुझ ढीठ को मुकरने के लिए भी कोई राह नहीं। हे प्रभु! मैंने सुना है कि सारे जगत् में तेरा बड़ा प्रताप है और तेरा नाम करोड़ों पापों को नाश कर देता है॥ १॥ मेरा स्वभाव है कि मैं सदैव गलतियाँ करता रहता हूँ और तेरा धर्म पतितों का उद्धार करना है। नानक विनती करता है कि हे करुणामय, हे कृपालु, हे कृपानिधि, हे श्री हरि! तेरे दर्शन ही जीवन देने वाले हैं॥ २॥ २॥ ११८॥

बिलावलु महला ५ ॥ ऐसी किरपा मोहि करहु ॥ संतह चरण हमारो माथा नैन दरसु तनि धूरि परहु ॥ १ ॥ रहाउ ॥ गुर को सबदु मेरै हीअरै बासै हरि नामा मन संगि धरहु ॥ तसकर पंच निवारहु ठाकुर सगलो भरमा होमि जरहु ॥ १ ॥ जो तुम्ह करहु सोई भल मानै भावनु दुबिधा दूरि टरहु ॥ नानक के प्रभ तुम ही दाते संतसंगि ले मोहि उधरहु ॥ २ ॥ ३ ॥ ११६ ॥

हे ईश्वर ! मुझ पर ऐसी कृपा करो कि मेरा माथा संतों के चरणों में पड़ा रहे, यह आँखें उनके दर्शन करें और तन पर उनकी चरण-धूलि पड़ी रहे॥ १॥ रहाउ॥ गुरु का शब्द मेरे हृदय में बसा रहे और मन हरि-नाम में लीन रहे। हे ठाकुर जी ! कामादिक पाँच तस्करों को मुझ से दूर कर दो और सारे भ्रम आग में जला दो॥ १॥ जो कुछ तुम करो, उसे ही मैं भला मानूँ और मेरी दुविधा एवं लालसा को दूर कर दो। हे प्रभु ! तुम ही नानक के दाता हो, इसलिए संतों के संग मिलाकर मेरा उद्धार कर दो॥ २॥ ३॥ ११६॥

बिलावलु महला ५ ॥ ऐसी दीखिआ जन सिउ मंगा ॥ तुम्हरो धिआनु तुम्हारो रंगा ॥ तुम्हरी सेवा तुम्हारे अंगा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जन की टहल संभाखनु जन सिउ ऊठनु बैठनु जन कै संगा ॥ जन चर रज मुखि माथै लागी आसा पूरन अनंत तरंगा ॥ १ ॥ जन पारब्रहम जा की निरमल महिमा जन के चरन तीरथ कोटि गंगा ॥ जन की धूरि कीओ मजनु नानक जनम जनम के हरे कलंगा ॥ २ ॥ ४ ॥ १२० ॥

हे परमेश्वर ! तेरे संतजनों से ऐसी दीक्षा माँगता हूँ कि मैं तेरे ही ध्यान एवं तेरे ही रंग में लीन रहूँ। मैं तेरी ही भक्ति करता रहूँ और तेरे चरणों में ही लीन रहूँ॥ १॥ रहाउ॥ संतों की टहल-सेवा, उनके साथ संभाषण, उनके साथ मेल-मिलाप एवं साथ सदैव बना रहे। उनकी चरणरज मेरे मुँह एवं माथे पर लग गई है, जिससे अनेक तरंगें पैदा करने वाली कामनाएँ पूरी हो गई हैं॥ १॥ परब्रह्म के संतजनों की महिमा इतनी पावन है कि उनके चरण ही गंगा की तरह करोड़ों तीर्थ स्थान हैं। हे नानक ! उनकी चरण-धूलि में स्नान करने से जन्म-जन्मांतर के कलंक दूर हो जाते हैं॥ २॥ ४॥ १२०॥

बिलावलु महला ५ ॥ जिउ भावै तिउ मोहि प्रतिपाल ॥ पारब्रहम परमेसर सतिगुर हम बारिक तुम्ह पिता किरपाल ॥ १ ॥ रहाउ ॥ मोहि निरगुण गुणु नाही कोई पहुचि न साकउ तुम्हरी घाल ॥ तुमरी गति मिति तुम ही जानहु जीउ पिंडु सभु तुमरो माल ॥ १ ॥ अंतरजामी पुरख सुआमी अनबोलत ही जानहु हाल ॥ तनु मनु सीतलु होइ हमारो नानक प्रभ जीउ नदरि निहाल ॥ २ ॥ ५ ॥ १२१ ॥

जैसे तुझे भाता है, वैसे ही हमारा पालन-पोषण करो। हे परब्रह्म परमेश्वर सतगुरु ! हम बालक हैं और तुम हमारे कृपालु पिता हो॥ १॥ रहाउ॥ मैं तो निर्गुण हूँ, मुझ में कोई गुण नहीं और मैं तेरी साधना तक पहुँच नहीं सकता। अपनी गति तुम ही जानते हो, यह जीवन, शरीर सबकुछ तेरी संपति है॥ १॥ हे अन्तर्यामी स्वामी ! बिना बोले ही तू सारा हाल जानता है। नानक प्रार्थना करता है कि हे प्रभु जी ! यदि तेरी कृपा-दृष्टि हो जाए तो हमारा तन-मन शीतल शांत हो जाए॥ २॥ ५॥ १२१॥

बिलावलु महला ५ ॥ राखु सदा प्रभ अपनै साथ ॥ तू हमरो प्रीतमु मनमोहनु तुझ बिनु जीवनु सगल अकाथ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ रंक ते राउ करत खिन भीतरि प्रभु मेरो अनाथ को नाथ ॥ जलत अगनि

महि जन आपि उधारे करि अपुने दे राखे हाथ ॥ १ ॥ सीतल सुखु पाइओ मन त्रिपते हरि सिमरत स्रम सगले लाथ ॥ निधि निधान नानक हरि सेवा अवर सिआनप सगल अकाथ ॥ २ ॥ ६ ॥ १२२ ॥

हे प्रभु ! मुझे सदैव अपने साथ रखो। तू ही मेरा प्रियतम, मनमोहन है और तेरे बिना पूरा जीवन ही बेकार है।। १।। रहाउ।। मेरा प्रभु अनाथों का नाथ है, यदि उसकी इच्छा हो तो वह क्षण में ही जीव को भिखारी से राजा बना देता है। वह जलती आग में भी हाथ रखकर भक्तों की रक्षा करता आया है।। १।। भगवान का सिमरन करने से सब दुख दूर होते हैं, मन तृप्त एवं बड़ा सुख प्राप्त होता है। हे नानक ! सर्व निधियों के भण्डार परमात्मा की भक्ति करो, शेष सब चतुराईयाँ व्यर्थ हैं।। २।। ६।। १२२।।

बिलावलु महला ५ ॥ अपने सेवक कउ कबहु न बिसारहु ॥ उरि लागहु सुआमी प्रभ मेरे पूरब प्रीति गोबिंद बीचारहु ॥ १ ॥ रहाउ ॥ पतित पावन प्रभ बिरदु तुम्हारो हमरे दोख रिदै मत धारहु ॥ जीवन प्रान हरि धनु सुखु तुम ही हउमै पटलु क्रिपा करि जारहु ॥ १ ॥ जल बिहून मीन कत जीवन दूध बिना रहनु कत बारो ॥ जन नानक पिआस चरन कमलन्ह की पेखि दरसु सुआमी सुख सारो ॥ २ ॥ ७ ॥ १२३ ॥

हे स्वामी प्रभु ! अपने सेवक को कभी न भुलाओ, मेरे हृदय से लगे रहो। हे गोविन्द ! मेरी पूर्व प्रीति का ख्याल करो।। १।। रहाउ।। हे प्रभु ! तेरा विरद् पतितों को पावन करना है, इसलिए मेरे दोषों को हृदय में मत रखना। हे श्री हरि ! तू ही मेरा जीवन, प्राण, धन एवं सुख है, कृपा करके मेरे अहंत्व का पर्दा जला दो।। १।। जैसे जल के बिना मछली एवं दूध के बिना शिशु का जीना असंभव है। हे स्वामी ! वैसे ही नानक को तेरे चरणों की प्यास लगी हुई है और तेरे दर्शन करके ही उसे परम सुख उपलब्ध होता है।। २।। ७।। १२३।।

बिलावलु महला ५ ॥ आगै पाछै कुसलु भइआ ॥ गुरि पूरै पूरी सभ राखी पारब्रहमि प्रभि कीनी मइआ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ मनि तनि रवि रहिआ हरि प्रीतमु दूख दरद सगला मिटि गइआ ॥ सांति सहज आनद गुण गाए दूत दुसट सभि होए खइआ ॥ १ ॥ गुनु अवगुनु प्रभि कछु न बीचारिओ करि किरपा अपुना करि लइआ ॥ अतुल बडाई अचुत अबिनासी नानकु उचरै हरि की जइआ ॥ २ ॥ ८ ॥ १२४ ॥

मेरा परलोक एवं इहलोक सुखदायक हो गया है, परब्रह्म-प्रभु ने मुझ पर दया की है और पूर्ण गुरु ने पूर्णतया मेरी लाज रख ली है।। १।। रहाउ।। मेरा प्रियतम हरि मेरे मन-तन में वास कर रहा है, इसलिए सारा दुख-दर्द मिट गया है। भगवान् का गुणगान करने से मन में शांति एवं सहज आनंद हो गया है और काम, क्रोध इत्यादि सारे दुष्ट दूत नाश हो गए हैं।। १।। प्रभु ने मेरे गुण अवगुण का कुछ भी विचार नहीं किया और कृपा कर मुझे अपना बना लिया है। अटल, अविनाशी परमात्मा की महिमा अतुलनीय है और नानक तो उस हरि की जय-जयकार करता रहता है।। २।। ८।। १२४।।

बिलावलु महला ५ ॥ बिनु भै भगती तरनु कैसे ॥ करहु अनुग्रहु पतित उधारन राखु सुआमी आप भरोसे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सिमरनु नही आवत फिरत मद मावत बिखिआ राता सुआन जैसे ॥ अउध बिहावत अधिक मोहावत पाप कमावत बुडे ऐसे ॥ १ ॥ सरनि दुख भंजन पुरख निरंजन साधू संगति रवणु जैसे ॥ केसव कलेस नास अघ खंडन नानक जीवत दरस दिसे ॥ २ ॥ ९ ॥ १२५ ॥

निष्ठा रूपी भय एवं भक्ति के बिना कैसे भवसागर से पार हुआ जा सकता है? हे पतितों के उद्धारक! अनुग्रह करो; हे स्वामी! मुझे तुझ पर ही भरोसा है॥ १॥ रहाउ॥ जिस जीव को तेरा सिमरन करना नहीं आता, वह विकारों के नशे में ऐसे फिरता है, जैसे लोभी कुत्ता फिरता रहता है। उसकी जीवन-अवधि अधिकतर मोह में ही बीतती जा रही है और पाप करते ही वह डूबता जा रहा है॥ १॥ हे दुखनाशक, हे निरंजन! मैं तेरी शरण में आया हूँ, जैसे हो सके साधुओं की संगति में मिला दो। हे प्रभु! तू सब क्लेश नाश करने वाला एवं सब पाप मिटाने वाला है। नानक तेरे दर्शन करके ही जीवन पा रहा है॥ २॥ ६॥ १२५॥

रागु बिलावलु महला ५ दुपदे घरु ६ १ओं सतिगुर प्रसादि ॥

आपहि मेलि लए ॥ जब ते सरनि तुमारी आए तब ते दोख गए ॥ १ ॥ रहाउ ॥ तजि अभिमानु अरु चिंत बिरानी साधह सरन पए ॥ जपि जपि नामु तुम्हारो प्रीतम तन ते रोग खए ॥ १ ॥ महा मुगध अजान अगिआनी राखे धारि दए ॥ कहु नानक गुरु पूरा भेटिओ आवन जान रहे ॥ २ ॥ १ ॥ १२६ ॥

हे ईश्वर! जब से हम तेरी शरण में आए हैं, तब से हमारे सब दोष दूर हो गए हैं और तूने स्वयं ही हमें अपने साथ मिला लिया है॥ १॥ रहाउ॥ अपना अभिमान और पराई चिंता को तजकर साधुओं की शरण में आ गए हैं। हे मेरे प्रियतम! तेरा नाम जप-जपकर तन से सब रोग नष्ट हो गए हैं॥ १॥ तूने अपनी कृपा करके बड़े-बड़े महामूर्खों, नासमझ एवं अज्ञानियों को भी बचा लिया है। हे नानक! पूर्ण गुरु से साक्षात्कार होने से हमारा आवागमन मिट गया है॥ २॥ १॥ १२६॥

बिलावलु महला ५ ॥ जीवउ नामु सुनी ॥ जउ सुप्रसंन भए गुर पूरे तब मेरी आस पुनी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ पीर गई बाधी मनि धीरा मोहिओ अनद धुनी ॥ उपजिओ चाउ मिलन प्रभ प्रीतम रहनु न जाइ खिनी ॥ १ ॥ अनिक भगत अनिक जन तारे सिमरहि अनिक मुनी ॥ अंधुले टिक निरधन धनु पाइओ प्रभ नानक अनिक गुनी ॥ २ ॥ २ ॥ १२७ ॥

मैं तो नाम सुनकर ही जीता हूँ। जब पूर्ण गुरु सुप्रसन्न हो गया तो मेरी सब कामनाएँ पूरी हो गईं॥ १॥ रहाउ॥ मेरी पीड़ा दूर हो गई है, मन को धीरज हो गया है और अनहद ध्वनि ने मुझे मोह लिया है। मेरे मन में प्रियतम प्रभु के मिलन का चाव उत्पन्न हो गया है और उसके बिना एक क्षण के लिए भी मुझसे रहा नहीं जाता॥ १॥ अनेक भक्त, अनेक संतजन एवं अनेक मुनि उसका सिमरन करते हुए भवसागर से तर गए हैं। हे नानक! प्रभु गुणों का गहरा सागर है और उसकी प्राप्ति तो ऐसे है, जैसे अंधे ने छड़ी तथा निर्धन ने धन पा लिया हो॥ २॥ २॥ १२७॥

रागु बिलावलु महला ५ घरु १३ पड़ताल १ओं सतिगुर प्रसादि ॥

मोहन नीद न आवै हावै हार कजर बसत्र अभरन कीने ॥ उडीनी उडीनी उडीनी ॥ कब घरि आवै री ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सरनि सुहागनि चरन सीसु धरि ॥ लालनु मोहि मिलावहु ॥ कब घरि आवै री ॥ १ ॥ सुनहु सहेरी मिलन बात कहउ सगरो अहं मिटावहु तउ घर ही लालनु पावहु ॥ तब रस मंगल गुन गावहु ॥ आनद रूप धिआवहु ॥ नानकु दुआरै आइओ ॥ तउ मै लालनु पाइओ री ॥ २ ॥ मोहन रूपु दिखावै ॥ अब मोहि नीद सुहावै ॥ सभ मेरी तिखा बुझानी ॥ अब मै सहजि समानी ॥ मीठी पिरहि कहानी ॥ मोहनु लालनु पाइओ री ॥ रहाउ दूजा ॥ १ ॥ १२८ ॥

हे प्रभु ! तेरे बिना मुझे नींद नहीं आती और आहें भरती रहती हूँ। मैंने अपने गले में हार, आँखों में काजल, वस्त्र एवं आभूषणों से श्रृंगार किया हुआ है। लेकिन फिर भी तेरे इन्तजार में उदास ही रहती हूँ। अरी सखी ! वह कब घर आएगा॥ १॥ रहाउ॥ मैं सुहागिन की शरण में आकर उसके चरणों में शीश रखती हूँ। अरी सखी ! मेरे प्रिय प्रभु से मिला दो, वह कब घर आएगा॥ १॥ (उत्तर है) हे सहेली ! ध्यानपूर्वक सुनो; मैं तुझे प्रिय प्रभु से मिलन की बात कहती हूँ, अपना सारा अहंत्व मिटा दो, इस तरह हृदय-घर में प्रभु को पा लो। तब मिलन की खुशी में उसका मंगल गुणगान करो। आनंद रूप पति-प्रभु का ध्यान करो। नानक का कथन है कि अरी सखी ! जब पति-प्रभु द्वार पर आया तो मैंने उस प्रिय को पा लिया॥ २॥ हे सखी ! प्रभु अपना रूप दिखा रहा है और अब मुझे अच्छी नींद आ रही है। इस तरह मेरी सारी तृष्णा बुझ गई है और अब मैं सहज ही समाई रहती हूँ। मेरे प्रिय की कहानी बड़ी मीठी है, मैंने अपने प्रिय प्रभु को पा लिया है॥ रहाउ दूसरा॥ १॥ १२८॥

बिलावलु महला ५ ॥ मोरी अहं जाइ दरसन पावत हे ॥ राचहु नाथ ही सहाई संतना ॥ अब चरन गहे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ आहे मन अवरु न भावै चरनावै चरनावै उलझिओ अलि मकरंद कमल जिउ ॥ अन रस नही चाहै एकै हरि लाहै ॥ १ ॥ अन ते टूटीऐ रिख ते छूटीऐ ॥ मन हरि रस घूटीऐ संगि साधू उलटीऐ ॥ अन नाही नाही रे ॥ नानक प्रीति चरन चरन हे ॥ २ ॥ २ ॥ १२६ ॥

प्रभु के दर्शन पाकर ही मेरा अहंत्व दूर हो जाता है। संतजनों के सहायक नाथ के साथ लीन रहो। अब मैंने उनके चरण पकड़ लिए हैं॥ १॥ रहाउ॥ जैसे भँवरा कमल फूल के रस से उलझा रहता है, वैसे ही मेरा मन प्रभु-चरणों से लिपटना चाहता है, अन्य उसे कुछ भी अच्छा नहीं लगता। मेरा मन हरि रस का ही अभिलाषी है, इसे कोई अन्य रस नहीं चाहिए॥ १॥ मन का दूसरों से नाता टूट गया है और वह इन्द्रियों से भी छूट गया है। मेरा मन दुनिया की तरफ से उलटकर साधु-संगति में हरि-रस पीता रहता है। हे नानक ! उसकी प्रीति प्रभु-चरणों से ही लगी रहती है, अन्य उसे कुछ भी अच्छा नहीं लगता॥ २॥ २॥ १२६॥

रागु बिलावलु महला ६ दुपदे १ओं सतिगुर प्रसादि ॥

दुख हरता हरि नामु पछानो ॥ अजामलु गनिका जिह सिमरत मुकत भए जीअ जानो ॥ १ ॥ रहाउ ॥ गज की त्रास मिटी छिनहू महि जब ही रामु बखानो ॥ नारद कहत सुनत ध्रूअ बारिक भजन माहि लपटानो ॥ १ ॥ अचल अमर निरभै पदु पाइओ जगत जाहि हैरानो ॥ नानक कहत भगत रछक हरि निकटि ताहि तुम मानो ॥ २ ॥ १ ॥

हे जीवो ! दुख नाशक हरि-नाम को पहचान लो। जिसका सिमरन करने से अजामल एवं गणिका जैसे पापी भी मुक्त हो गए, उसकी महत्ता अपने हृदय में जान लो॥ १॥ रहाउ॥ गजिन्द्र हाथी का दर्द एक क्षण में ही मिट गया था, जब उसने राम-नाम का बखान किया। नारद मुनि का उपदेश सुनकर बालक ध्रुव भी भगवान के भजन में लीन हो गया था॥ १॥ उसने अटल, अमर एवं निर्भय पद पा लिया, जिसे देखकर सारा जगत् हैरान हो गया। नानक कहते हैं कि परमात्मा भक्तों का रक्षक है, तुम भी उसे निकट ही मानो॥ २॥ १॥

बिलावलु महला ६ ॥ हरि के नाम बिना दुखु पावै ॥ भगति बिना सहसा नह चूकै गुरु इहु भेदु बतावै ॥ १ ॥ रहाउ ॥ कहा भइओ तीरथ ब्रत कीए राम सरनि नही आवै ॥ जोग जग निहफल तिह मानउ जो प्रभ जसु बिसरावै ॥ १ ॥ मान मोह दोनो कउ परहरि गोबिंद के गुन गावै ॥ कहु नानक इह बिधि को प्रानी जीवन मुकति कहावै ॥ २ ॥ २ ॥

प्रभु के नाम-स्मरण बिना मनुष्य बड़ा दुखी होता है। गुरु ने यह भेद बताया है कि भगवान की भक्ति के बिना मन का संशय समाप्त नहीं होता॥ १॥ रहाउ॥ जो व्यक्ति राम की शरण में नहीं आता, उसे तीर्थों पर स्नान करने एवं व्रत-उपवास रखने का कोई लाभ नहीं। जो प्रभु का यश भुला देता है, उसके योग एवं यज्ञ करने को निष्फल ही समझो॥ १॥ हे नानक! जो अभिमान एवं मोह दोनों को त्याग कर गोविंद का गुणगान करता है, इस विधि से ही प्राणी जीवन्मुक्त कहलाता है॥ २॥ २॥

बिलावलु महला ९ ॥ जा मै भजनु राम को नाही ॥ तिह नर जनमु अकारथु खोइआ यह राखहु मन माही ॥ १ ॥ रहाउ ॥ तीरथ करै ब्रत फुनि राखै नह मनूआ बसि जा को ॥ निहफल धरमु ताहि तुम मानहु साचु कहत मै या कउ ॥ १ ॥ जैसे पाहनु जल महि राखिओ भेदै नाहि तिह पानी ॥ तैसे ही तुम ताहि पछानहु भगति हीन जो प्रानी ॥ २ ॥ कल मै मुकति नाम ते पावत गुरु यह भेदु बतावै ॥ कहु नानक सोई नरु गरूआ जो प्रभ के गुन गावै ॥ ३ ॥ ३ ॥

यह बात हमेशा अपने मन में याद रखो, जिसने राम का भजन नहीं किया, उसने मनुष्य-जन्म व्यर्थ ही गंवा दिया है॥ १॥ रहाउ॥ जो व्यक्ति तीर्थ-स्नान करता है, व्रत-उपवास भी रखता है, किन्तु मन उसके वश में नहीं है, तो उसका धर्म कर्म निष्फल ही मानो। यह मैं सत्य ही कहता हूँ॥ १॥ जैसे पत्थर को जल में डुबोकर रखा जाता है। परन्तु उसके अन्दर पानी प्रवेश नहीं करता, वैसे ही तुम भक्तिहीन प्राणी को पहचानो॥ २॥ गुरु ने यह भेद बताया है कि कलियुग में जीव प्रभु-नाम से ही मुक्ति प्राप्त करता है। हे नानक! वही व्यक्ति श्रेष्ठ है, जो प्रभु का गुणगान करता है॥ ३॥ ३॥

बिलावलु असटपदीआ महला १ घरु १० ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

निकटि वसै देखै सभु सोई ॥ गुरमुखि विरला बूझै कोई ॥ विणु भै पइऐ भगति न होई ॥ सबदि रते सदा सुखु होई ॥ १ ॥ ऐसा गिआनु पदारथु नामु ॥ गुरमुखि पावसि रसि रसि मानु ॥ १ ॥ रहाउ ॥ गिआनु गिआनु कथै सभु कोई ॥ कथि कथि बादु करे दुखु होई ॥ कथि कहणै ते रहै न कोई ॥ बिनु रस राते मुकति न होई ॥ २ ॥ गिआनु धिआनु सभु गुर ते होई ॥ साची रहत साचा मनि सोई ॥ मनमुख कथनी है परु रहत न होई ॥ नावहु भूले थाउ न कोई ॥ ३ ॥ मनु माइआ बंधिओ सर जालि ॥ घटि घटि बिआपि रहिओ बिखु नालि ॥ जो आंजै सो दीसै कालि ॥ कारजु सीधो रिदै सम्हालि ॥ ४ ॥ सो गिआनी जिनि सबदि लिव लाई ॥ मनमुखि हउमै पति गवाई ॥ आपे करतै भगति कराई ॥ गुरमुखि आपे दे वडिआई ॥ ५ ॥ रैणि अंधारी निरमल जोति ॥ नाम बिना झूठे कुचल कछोति ॥ बेदु पुकारै भगति सरोति ॥ सुणि सुणि मानै वेखै जोति ॥ ६ ॥ सासत्र सिम्रिति नामु द्रिड़ामं ॥ गुरमुखि सांति ऊतम करामं ॥ मनमुखि जोनी दूख सहामं ॥ बंधन तूटे इकु नामु वसामं ॥ ७ ॥ मंने नामु सची पति पूजा ॥ किसु वेखा नाही को दूजा ॥ देखि कहउ भावै मनि सोइ ॥ नानकु कहै अवरु नही कोइ ॥ ८ ॥ १ ॥

परमेश्वर जीव के निकट ही निवास करता है और सब को देखता है। यह तथ्य कोई विरला गुरुमुख ही समझता है। प्रभु-भय के बिना भक्ति नहीं हो सकती और शब्द में लीन होने से सदैव सुख हासिल होता है॥ १॥ ईश्वर का नाम ऐसा ज्ञान पदार्थ है, जो व्यक्ति गुरु द्वारा इसे पा लेता है, उसे बड़ा आनंद मिलता है॥ १॥ रहाउ॥ हर कोई ज्ञान की बातें करता है, लेकिन कह-कहकर

वह झगड़ा ही उत्पन्न करता है, जिससे बड़ा दुखी होता है। कथन करने एवं चर्चा करने से कोई भी रह नहीं सकता। वास्तव में नाम-रस में लीन हुए बिना किसी की भी मुक्ति नहीं होती॥ २॥ ज्ञान एवं ध्यान सब गुरु से ही प्राप्त होता है। जिसका जीवन-आचरण सच्चा है, उसके मन में ही सत्य का निवास होता है। मन की मर्जी करने वाला इन्सान ज्ञान ध्यान की व्यर्थ बातें ही करता है, किन्तु उसका जीवन-आचरण शुद्ध नहीं होता। परमात्मा के नाम से भूले हुए जीव को कोई स्थान नहीं मिलता॥ ३॥ माया ने मन को मोह रूपी सरोवर के जाल में बांध लिया है, माया रूपी विष घट-घट में व्याप्त हो रहा है। जो भी जन्म लेता है, वह मृत्यु के वश में नजर आ रहा है। जो हृदय में परमात्मा का ध्यान करता है, उसका कार्य सिद्ध हो जाता है॥ ४॥ वही ज्ञानी है, जिसने शब्द में वृत्ति लगाई है। स्वेच्छाचारी ने अहंकार में अपनी प्रतिष्ठा ही गंवा दी है। ईश्वर ने ही भक्ति करवाई है और गुरुमुख को स्वयं ही बड़ाई देता है॥ ५॥ इन्सान की जीवन रूपी रात्रि अंधकारमय है और परमज्योति ही निर्मल है। परमात्मा के नाम बिना मनुष्य झूठे, मलिन एवं अछूत हैं। वेद पुकार-पुकार कर भक्ति का उपदेश देते हैं, जो जीव उनके उपदेश को सुन-सुनकर एकाग्रचित होते हैं, उन्हें परमज्योति के दर्शन हो जाते हैं॥ ६॥ शास्त्र एवं स्मृतियाँ भी नाम-सिमरन का ही उपदेश करती हैं। गुरुमुख नाम-सिमरन का उत्तम कर्म करता है, जिससे उसके मन को बड़ी शान्ति मिलती है। स्वेच्छाचारी अनेक योनियों में पड़कर बड़ा दुख भोगता है। लेकिन ईश्वर का नाम मन में बसाने से सब बन्धन टूट जाते हैं॥ ७॥ प्रभु-नाम का मनन करना ही सच्ची पूजा एवं प्रतिष्ठा है। जब प्रभु के बिना अन्य कोई नहीं है तो मैं किसे देखूँ ? मैं देखकर यही कहता हूँ कि वही मेरे मन को अच्छा लगता है। हे नानक ! उस प्रभु के बिना अन्य कोई नहीं है॥ ८॥ १॥

बिलावलु महला १ ॥ मन का कहिआ मनसा करै ॥ इहु मनु पुंनु पापु उचरै ॥ माइआ मदि माते त्रिपति न आवै ॥ त्रिपति मुकति मनि साचा भावै ॥ १ ॥ तनु धनु कलतु सभु देखु अभिमाना ॥ बिनु नावै किछु संगि न जाना ॥ १ ॥ रहाउ ॥ कीचहि रस भोग खुसीआ मन केरी ॥ धनु लोकां तनु भसमै ढेरी ॥ खाकू खाकु रलै सभु फैलु ॥ बिनु सबदै नही उतरै मैलु ॥ २ ॥ गीत राग घन ताल सि कूरे ॥ त्रिहु गुण उपजै बिनसै दूरे ॥ दूजी दुरमति दरदु न जाइ ॥ छूटै गुरमुखि दारू गुण गाइ ॥ ३ ॥ धोती ऊजल तिलकु गलि माला ॥ अंतरि क्रोधु पड़हि नाट साला ॥ नामु विसारि माइआ मदु पीआ ॥ बिनु गुर भगति नाही सुखु थीआ ॥ ४ ॥ सूकर सुआन गरधभ मंजारा ॥ पसू मलेछ नीच चंडाला ॥ गुर ते मुहु फेरे तिन्ह जोनि भवाईऐ ॥ बंधनि बाधिआ आईऐ जाईऐ ॥ ५ ॥ गुर सेवा ते लहै पदारथु ॥ हिरदै नामु सदा किरतारथु ॥ साची दरगह पूछ न होइ ॥ माने हुकमु सीझै दरि सोइ ॥ ६ ॥ सतिगुरु मिलै त तिस कउ जाणै ॥ रहै रजाई हुकमु पछाणै ॥ हुकमु पछाणि सचै दरि वासु ॥ काल बिकाल सबदि भए नासु ॥ ७ ॥ रहै अतीतु जाणै सभु तिस का ॥ तनु मनु अरपै है इहु जिस का ॥ ना ओहु आवै ना ओहु जाइ ॥ नानक साचे साचि समाइ ॥ ८ ॥ २ ॥

जो मन कहता है, वही संकल्प करता है। यह मन ही पाप-पुण्य की बात कहता है। माया के नशे में मस्त होकर भी इसकी तृप्ति नहीं होती। यदि मन को सत्य भा जाए तो तृप्ति एवं मुक्ति हो जाती है॥ १॥ हे जीव ! देख ले, यह तन, धन एवं सुन्दर नारी सब अभिमान ही हैं और प्रभु-नाम के बिना कुछ भी तेरे साथ नहीं जाना॥ १॥ रहाउ॥ मन की खुशी के लिए जीव कितने ही रसों का भोग करता है। लेकिन मरणोपरांत जीव का धन अन्य लोगों का हो जाता है और तन जलकर भस्म की ढेरी बन जाता है। मिट्टी का यह सारा प्रसार मिट्टी में ही मिल जाता है। शब्द के बिना मन की मैल कभी नहीं उतरती॥ २॥ अनेक प्रकार के गीत, राग एवं ताल इत्यादि सब

झूठे हैं। त्रिगुणात्मक जीव उत्पन्न होते हैं और नाश होते रहते हैं तथा यह प्रभु मिलाप से दूर ही रहते हैं। द्वैतभाव में मनुष्य की दुर्मति एवं दर्द दूर नहीं होता। प्रभु का गुणगान रूपी औषधि से गुरुमुख छूट जाता है॥ ३॥ जो व्यक्ति उज्ज्वल धोती पहनता है, माथे पर तिलक लगाता है और गले में माला पहनता है, यदि उसके मन में क्रोध है तो समझो, वह नाट्यशाला में संवाद पढ़ रहा है। जिस ने नाम को भुलाकर माया रूपी मदिरा का पान किया है, उसे गुरु-भक्ति के बिना सुख उपलब्ध नहीं हुआ॥ ४॥ जो व्यक्ति गुरु से मुँह फेर लेते हैं, वे सूअर, कुत्ते, गधे, बिल्ली, पशु, मलेच्छ एवं नीच चाण्डालों की योनियों में भटकते रहते हैं और बन्धनों में फँसकर जन्मते मरते रहते हैं॥ ५॥ गुरु की सेवा करने से ही जीव को नाम-पदार्थ मिलता है और हृदय में नाम स्थित होने से वह सदा के लिए कृतार्थ हो जाता है। इस तरह सत्य के दरबार में उसके कर्मों की पूछताछ नहीं होती। जो व्यक्ति भगवान के हुक्म को मानता है, वही उसके दरबार में मंजूर हो जाता है॥ ६॥ यदि मनुष्य को सतगुरु मिल जाए तो वह प्रभु को जान लेता है। जो उसकी रज़ा में रहता है, वही उसके हुक्म को पहचान लेता है, वह उसके हुक्म को पहचान कर सत्य के द्वार में निवास पा लेता है, शब्द द्वारा जन्म-मरण का नाश हो जाता है॥ ७॥ जो जगत् से निर्लिप्त रहता है, वह सबकुछ प्रभु का ही समझता है। वह अपना तन-मन उसे अर्पण कर देता है, जिसने उसे बनाया है। हे नानक ! ऐसा व्यक्ति जन्म-मरण के चक्र से छूटकर परम सत्य में ही समा जाता है॥ ८॥ २॥

बिलावलु महला ३ असटपदी घरु १० १ओं सतिगुर प्रसादि ॥

जगु कऊआ मुखि चुंच गिआनु ॥ अंतरि लोभु झूठु अभिमानु ॥ बिनु नावै पाजु लहगु निदानि ॥ १ ॥ सतिगुर सेवि नामु वसै मनि चीति ॥ गुरु भेटे हरि नामु चेतावै बिनु नावै होर झूठु परीति ॥ १ ॥ रहाउ ॥ गुरि कहिआ सा कार कमावहु ॥ सबदु चीन्हि सहज घरि आवहु ॥ साचै नाइ वडाई पावहु ॥ २ ॥ आपि न बूझै लोक बुझावै ॥ मन का अंधा अंधु कमावै ॥ दरु घरु महलु ठउरु कैसे पावै ॥ ३ ॥ हरि जीउ सेवीऐ अंतरजामी ॥ घट घट अंतरि जिस की जोति समानी ॥ तिसु नालि किआ चलै पहनामी ॥ ४ ॥ साचा नामु साचै सबदि जानै ॥ आपै आपु मिलै चूकै अभिमानै ॥ गुरमुखि नामु सदा सदा वखानै ॥ ५ ॥ सतिगुरि सेविऐ दूजी दुरमति जाई ॥ अउगण काटि पापा मति खाई ॥ कंचन काइआ जोती जोति समाई ॥ ६ ॥ सतिगुरि मिलिऐ वडी वडिआई ॥ दुखु काटै हिरदै नामु वसाई ॥ नामि रते सदा सुखु पाई ॥ ७ ॥ गुरमति मानिआ करणी सारु ॥ गुरमति मानिआ मोख दुआरु ॥ नानक गुरमति मानिआ परवारै साधारु ॥ ८ ॥ १ ॥ ३ ॥

यह जगत् कौआ है, जो मुँह रूपी चोंच से थोड़ी ज्ञान की बात तो करता है। किन्तु इसके अन्तर्मन में लोभ, झूठ एवं अभिमान ही भरा हुआ है। नाम के बिना इसका अंत में पाखण्ड प्रगट हो जाएगा॥ १॥ सतगुरु की सेवा करने से परमात्मा का नाम मन एवं चित्त में आ बसता है। जिसे गुरु मिल जाता है, वह उसे हरि नाम ही याद करवाता है। नाम के बिना अन्य सब प्रेम झूठे हैं॥ १॥ रहाउ॥ गुरु के निर्देशानुसार ही कार्य करो। शब्द को पहचान कर सहजावस्था में आ जाओ और सत्य नाम द्वारा बड़ाई प्राप्त करो॥ २॥ जो व्यक्ति स्वयं तो कुछ समझता नहीं किन्तु लोगों को समझाता रहता है, वह मन का अन्धा है और अन्धे काम ही करता है। फिर ऐसा व्यक्ति प्रभु के दरबार में कैसे स्थान प्राप्त कर सकता है॥ ३॥ अन्तर्यामी परमात्मा की उपासना करनी चाहिए, जिसकी ज्योति घट-घट में समा रही है। उससे कुछ भी छिपाया नहीं जा सकता॥ ४॥ सच्चे शब्द द्वारा ही सत्य-नाम को जाना जाता है। फिर वह स्वयं ही जीव को अपने साथ मिला

लेता है, जिससे सारा अभिमान समाप्त हो जाता है। गुरुमुख हमेशा ही परमात्मा के नाम का बखान करता रहता है॥ ५॥ सतगुरु की सेवा करने से इन्सान का द्वैतभाव एवं दुर्मति दूर हो जाती है। उसके सब अवगुण कट जाते हैं और पापों वाली बुद्धि नाश हो जाती है। फिर काया शुद्ध हो जाती है तथा आत्म-ज्योति परमज्योति में विलीन हो जाती है॥ ६॥ जिसे सतगुरु मिल जाता है, उसे बड़ी बड़ाई मिलती है। सतगुरु उसके दुख दूर करके हृदय में नाम बसा देता है। परमात्मा के नाम में लीन रहने से जीव को सदैव सुख प्राप्त हो जाता है॥ ७॥ गुरु-उपदेश को मानने से जीवन-आचरण श्रेष्ठ हो जाता है, गुरु-उपदेश को मानने से ही मोक्ष का द्वार मिलता है। हे नानक! गुरु-उपदेश को मानने से तो समूचे परिवार का भी कल्याण हो जाता है॥ ८॥ १॥ ३॥

बिलावलु महला ४ असटपदीआ घरु ११ १ओं सतिगुर प्रसादि ॥

आपै आपु खाइ हउ मेटै अनदिनु हरि रस गीत गवईआ ॥ गुरमुखि परचै कंचन काइआ निरभउ जोती जोति मिलईआ ॥ १ ॥ मै हरि हरि नामु अधारु रमईआ ॥ खिनु पलु रहि न सकउ बिनु नावै गुरमुखि हरि हरि पाठ पड़ईआ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ एकु गिरहु दस दुआर है जा के अहिनिसि तसकर पंच चोर लगईआ ॥ धरमु अरथु सभु हिरि ले जावहि मनमुख अंधुले खबरि न पईआ ॥ २ ॥ कंचन कोटु बहु माणकि भरिआ जागे गिआन तति लिव लईआ ॥ तसकर हेरू आइ लुकाने गुर कै सबदि पकड़ि बंधि पईआ ॥ ३ ॥ हरि हरि नामु पोतु बोहिथा खेवटु सबदु गुरु पारि लंघईआ ॥ जमु जागाती नेड़ि न आवै ना को तसकरु चोरु लगईआ ॥ ४ ॥ हरि गुण गावै सदा दिनु राती मै हरि जसु कहते अंतु न लहीआ ॥ गुरमुखि मनूआ इकतु घरि आवै मिलउ गोपाल नीसानु बजईआ ॥ ५ ॥ नैनी देखि दरसु मनु त्रिपतै स्रवन बाणी गुर सबदु सुणईआ ॥ सुनि सुनि आतम देव है भीने रसि रसि राम गोपाल रवईआ ॥ ६ ॥ त्रै गुण माइआ मोहि विआपे तुरीआ गुणु है गुरमुखि लहीआ ॥ एक द्रिसटि सभ सम करि जाणै नदरी आवै सभु ब्रहमु पसरईआ ॥ ७ ॥ राम नामु है जोति सबाई गुरमुखि आपे अलखु लखईआ ॥ नानक दीन दइआल भए है भगति भाइ हरि नामि समईआ ॥ ८ ॥ १ ॥ ४ ॥

जो अपनी अहम्-भावना को दूर कर देता है, अपने अहंकार को मिटा देता है, वह रात-दिन हरि-नाम रस के गीत गाता रहता है। जो जीव गुरुमुख बनकर प्रसन्न रहता है, उसकी काया कंचन जैसी शुद्ध हो जाती है, जिससे निडर होकर उसकी ज्योति परमज्योति में विलीन हो जाती है॥ १॥ परमात्मा का नाम ही मेरे जीवन का आधार है और नाम के बिना मैं पल भर भी नहीं रह सकता। गुरु ने अपने मुख से मुझे 'हरि-स्मरण' का ही पाठ पढ़ाया है॥ १॥ रहाउ॥ यह मानव शरीर एक घर है, जिसके दस द्वार हैं। काम, क्रोध, मोह, लोभ एवं अहंकार रूपी पाँच चोर सेंध लगा रहे हैं। वे इस घर में से धर्म एवं अर्थ रूपी सारा धन चोरी करके ले जाते हैं। किन्तु अन्धे मनमुखी जीव को इसकी खबर नहीं होती॥ २॥ यह शरीर सोने का किला है, जो सत्य, संतोष, दया, धर्म रूपी अनेक रतनों से भरा हुआ है। इस किले के रक्षक ज्ञानेन्द्रियाँ परमतत्व में वृत्ति लगाई रखती हैं। कामादिक तस्कर इस किले में छिपकर बैठे रहते हैं लेकिन ज्ञानेन्द्रियों ने गुरु के शब्द द्वारा इन्हें पकड़कर बंदी बना लिया है॥ ३॥ हरि का नाम जहाज है तथा गुरु का शब्द भवसागर से पार करवाने वाला मल्लाह है। अब कर लेने वाला यमराज पास नहीं आता और न ही कामादिक तस्कर-चोर किले को सेंध लगा सकते हैं॥ ४॥ मेरा मन दिन-रात सदैव ही हरि के गुण गाता रहता है और मैं हरि-यश करके उसका अंत नहीं पा सका। गुरु के माध्यम से मेरा मन अपने आत्मस्वरूप में आ गया है और अब मैं अनहद शब्द रूपी ढोल बजाकर भगवान से

मिलूँगा॥ ५॥ अपने नयनों से दर्शन करके मन तृप्त हो जाता है और कानों से गुरु की वाणी एवं गुरु-शब्द सुनता रहता हूँ। गुरु-शब्द सुन-सुनकर मेरी आत्मा हरि-रस में भीगी रहती है और राम को याद करती रहती है॥ ६॥ रजोगुण, तमोगुण, सतोगुण इन त्रिगुणों में जीव माया में ही फँसा रहता है। लेकिन गुरुमुख ने तुरीयावस्था प्राप्त कर ली है। वह सब जीवों को एक दृष्टि से ही देखता-जानता है और उसे सब में ब्रह्म का प्रसार ही नजर आता है॥ ७॥ राम-नाम की ज्योति सब जीवों में प्रज्वलित हो रही है तथा अदृष्ट प्रभु स्वयं ही गुरुमुख को नजर आ जाता है। हे नानक! परमात्मा मुझ दीन पर दयालु हो गया है और मैं भक्ति-भावना से हरि-नाम में विलीन हो गया हूँ॥ ८॥ १॥ ४॥

बिलावलु महला ४ ॥ हरि हरि नामु सीतल जलु धिआवहु हरि चंदन वासु सुगंध गंधईआ ॥ मिलि सतसंगति परम पदु पाइआ मै हिरड पलास संगि हरि बुहीआ ॥ १ ॥ जपि जगंनाथ जगदीस गुसईआ ॥ सरणि परे सेई जन उबरे जिउ प्रहिलाद उधारि समईआ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ भार अठारह महि चंदनु ऊतम चंदन निकटि सभ चंदनु हुईआ ॥ साकत कूड़े ऊभ सुक हूए मनि अभिमानु विछुड़ि दूरि गईआ ॥ २ ॥ हरि गति मिति करता आपे जाणै सभ बिधि हरि हरि आपि बनईआ ॥ जिसु सतिगुरु भेटे सु कंचनु होवै जो धुरि लिखिआ सु मिटै न मिटईआ ॥ ३ ॥ रतन पदारथ गुरमति पावै सागर भगति भंडार खुल्हईआ ॥ गुर चरणी इक सरधा उपजी मै हरि गुण कहते त्रिपति न भईआ ॥ ४ ॥ परम बैरागु नित नित हरि धिआए मै हरि गुण कहते भावनी कहीआ ॥ बार बार खिनु खिनु पलु कहीऐ हरि पारु न पावै परै परईआ ॥ ५ ॥ सासत बेद पुराण पुकारहि धरमु करहु खटु करम द्रिड़ईआ ॥ मनमुख पाखंडि भरमि विगूते लोभ लहरि नाव भारि बुडईआ ॥ ६ ॥ नामु जपहु नामे गति पावहु सिम्रिति सासत्र नामु द्रिड़ईआ ॥ हउमै जाइ त निरमलु होवै गुरमुखि परचै परम पदु पईआ ॥ ७ ॥ इहु जगु वरनु रूपु सभु तेरा जितु लावहि से करम कमईआ ॥ नानक जंत वजाए वाजहि जितु भावै तितु राहि चलईआ ॥ ८ ॥ २ ॥ ५ ॥

परमात्मा का नाम शीतल जल की तरह है, इसका ही चिंतन करो, प्रभु का नाम ही चंदन की सुन्दर सुगन्ध समान है, जो शरीर को सुगन्धित कर देता है। संतों की संगति में मिलकर मैंने परमपद पा लिया है। जैसे एरण्ड एवं ढाक के वृक्ष चंदन की संगति करके चंदन बन जाते हैं, वैसे ही मैं भी हरि से मिलकर सुगन्धित हो गया हूँ॥ १॥ जगन्नाथ, जगदीश, गुसाँई का जाप करो, जो उसकी शरण में आए हैं, उनका वैसे ही उद्धार हो गया है, जिस तरह भक्त प्रहलाद का उद्धार हो गया॥ १॥ रहाउ॥ सारी वनस्पति में चंदन सर्वोत्तम है, चूंकि चंदन के निकट का प्रत्येक पेड़ चंदन बन गया है। मायावी इतने झूठे हैं कि वे सूखे हुए खड़े पेड़ जैसे हैं, जिन पर चंदन (शुभ गुणों) का कोई प्रभाव नहीं पड़ता। उनके मन में अभिमान ही भरा हुआ है, जिससे वे प्रभु से बिछुड़ कर दूर हो गए हैं॥ २॥ कर्ता परमेश्वर अपनी गति एवं विस्तार स्वयं ही जानता है। जगत्-रचना की सब विधियाँ अर्थात् नियम-विधान उसने स्वयं ही बनाए हैं। जिसे सतगुरु मिल जाता है, वह गुणवान् बन जाता है। जो प्रारम्भ से ही भाग्य में लिखा होता है, उसे मिटाया नहीं जा सकता॥ ३॥ गुरु के उपदेश से जीव नाम-रूपी रत्न-पदार्थ को पा लेता है। गुरु रूपी सागर में भक्ति का भण्डार खुला हुआ है। गुरु-चरणों में लगकर मन में श्रद्धा पैदा हो गई है और हरि का गुणगान करते हुए मुझे तृप्ति नहीं हुई॥ ४॥ नित्य हरि का ध्यान करने से मन में बड़ा वैराग्य पैदा हो गया है और हरि का गुणानुवाद करते हुए अपनी निष्ठा को व्यक्त किया है। यदि बार-बार,

क्षण-क्षण, हर पल हरि का यश किया जाए तो भी उसका अन्त नहीं पाया जा सकता, क्योंकि हरि अपरम्पार है॥ ५॥ वेद, शास्त्र एवं पुराण सब जीवों को धर्म करने की सीख देते हैं और षट्कर्म ही दृढ़ करवाते हैं। स्वेच्छाचारी जीव पाखण्ड एवं भ्रम में पड़कर ख्वार होते रहते हैं। उनकी जीवन-नैया पापों के भार के कारण लोभ की लहरों में डूब जाती है॥ ६॥ स्मृतियों एवं शास्त्रों ने नाम ही दृढ़ करवाया है, इसलिए परमात्मा का नाम जपो और नाम जपकर गति पा लो। यदि अभिमान दूर हो जाए तो मन निर्मल हो जाता है। जो गुरु-सान्निध्य में लीन रहता है, वह मोक्ष प्राप्त कर लेता है॥ ७॥ हे परमेश्वर! यह जगत् तेरा ही रूप-रंग है, जैसे तू चाहता है, जीव वही कर्म करता है। नानक का कथन है कि हे ईश्वर! यह जीव तो तेरे बाजे हैं, जैसे तेरी इच्छा होती है, वैसे ही ये बजते हैं। जैसे तुझे उपयुक्त लगता है, वैसे ही राह पर चलते हैं॥ ८॥ २॥ ५॥

बिलावलु महला ४ ॥ गुरमुखि अगम अगोचरु धिआइआ हउ बलि बलि सतिगुर सति पुरखईआ ॥ राम नामु मेरै प्राणि वसाए सतिगुर परसि हरि नामि समईआ ॥ १ ॥ जन की टेक हरि नामु टिकईआ ॥ सतिगुर की धर लागा जावा गुर किरपा ते हरि दरु लहीआ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ इहु सरीरु करम की धरती गुरमुखि मथि मथि ततु कढईआ ॥ लालु जवेहर नामु प्रगासिआ भांडै भाउ पवै तितु अईआ ॥ २ ॥ दासनि दास दास होइ रहीऐ जो जन राम भगत निज भईआ ॥ मनु बुधि अरपि धरउ गुर आगै गुर परसादी मै अकथु कथईआ ॥ ३ ॥ मनमुख माइआ मोहि विआपे इहु मनु त्रिसना जलत तिखईआ ॥ गुरमति नामु अंम्रित जलु पाइआ अगनि बुझी गुर सबदि बुझईआ ॥ ४ ॥ इहु मनु नाचै सतिगुर आगै अनहद सबद धुनि तूर वजईआ॥ हरि हरि उसतति करै दिनु राती रखि रखि चरण हरि ताल पूरईआ ॥ ५ ॥ हरि कै रंगि रता मनु गावै रसि रसाल रसि सबदु रवईआ ॥ निज घरि धार चुऐ अति निरमल जिनि पीआ तिन ही सुखु लहीआ ॥ ६ ॥ मनहठि करम करै अभिमानी जिउ बालक बालू घर उसरईआ ॥ आवै लहरि समुंद सागर की खिन महि भिंन भिंन ढहि पईआ ॥ ७ ॥ हरि सरु सागरु हरि है आपे इहु जगु है सभु खेलु खेलईआ ॥ जिउ जल तरंग जलु जलहि समावहि नानक आपे आपि रमईआ ॥ ८ ॥ ३ ॥ ६ ॥

गुरु के सान्निध्य में अगम्य, अगोचर परमात्मा का ध्यान किया है, इसलिए सत्यपुरुष सतगुरु पर बलिहारी जाता हूँ। गुरु ने राम नाम मेरे प्राणों में बसा दिया है और सतगुरु के चरण-स्पर्श करके हरि-नाम में विलीन रहता हूँ॥ १॥ गुरु ने हरि-नाम को सेवक का आसरा बना दिया है। मैं तो सतगुरु के सहारे सन्मार्ग लग गया हूँ और गुरु की कृपा से हरि का द्वार ढूँढ लिया है॥ १॥ रहाउ॥ यह शरीर कर्मभूमि है, जैसे दूध का मंथन करने मक्खन निकाल लिया जाता है, वैसे ही गुरुमुख ने शरीर का मंथन करके नाम रूपी तत्व निकाल लिया है। यह नाम रूपी रत्न जवाहर उसके हृदय रूपी बर्तन में आलोकित हो गया है, जिसमें प्रभु-प्रेम आ बसा है॥ २॥ जो राम का भक्त बन गया है, हमें तो उसके दास का दास बन कर रहना चाहिए। मैं गुरु के समक्ष अपना मन एवं बुद्धि सब अर्पण कर दूँगा, गुरु की कृपा से ही अकथनीय परमात्मा का कथन किया है॥ ३॥ मनमुखी जीव माया के मोह में ही फँसा रहता है, जिससे उसका प्यासा मन तृष्णाग्नि में जलता रहता है। गुरु के उपदेश द्वारा नामामृत रूपी जल मिल गया है, गुरु-शब्द ने तृष्णाग्नि बुझा दी है॥ ४॥ यह मन सतगुरु के समक्ष नाचता है और अनहद शब्द की ध्वनि का बाजा मन में बजता रहता है। मैं हरि-चरणों को अपने मन में बसाकर तथा पैर स्वरताल में टिका कर हरि की स्तुति करता रहता हूँ॥ ५॥ यह मन हरि के रंग में लीन होकर उसका ही गुणगान करता है और रसों के रस शब्द का जाप किया है। अन्तरात्मा में अमृत की निर्मल धारा बहती रहती है।

जिसने इस अमृत का पान किया है, उसे ही सुख मिला है॥ ६॥ अभिमानी व्यक्ति मन के हठ से कर्म करता है परन्तु उसके यह कर्म ऐसे हैं जैसे बालक ने रेत का घर बनाया है, जब समुद्र-सागर की लहर आती है तो यह क्षण में ही भिन्न-भिन्न होकर गिर जाता है॥ ७॥ हरि ही सरोवर एवं सागर है और उसने स्वयं ही यह जगत् रूपी खेल बनाया है। हे नानक! जैसे जल की तरंगें जल ही होती हैं और जल में ही मिल जाती हैं, वैसे ही प्रभु सब में समाया हुआ है॥ ८॥ ३॥ ६॥

बिलावलु महला ४ ॥ सतिगुरु परचै मनि मुंद्रा पाई गुर का सबदु तनि भसम द्रिड़ईआ ॥ अमर पिंड भए साधू संगि जनम मरण दोऊ मिटि गईआ ॥ १ ॥ मेरे मन साधसंगति मिलि रहीआ ॥ क्रिपा करहु मधसूदन माधउ मै खिनु खिनु साधू चरण पखईआ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ तजै गिरसतु भइआ बन वासी इकु खिनु मनूआ टिकै न टिकईआ ॥ धावतु धाइ तदे घरि आवै हरि हरि साधू सरणि पवईआ ॥ २ ॥ धीआ पूत छोडि संनिआसी आसा आस मनि बहुतु करईआ ॥ आसा आस करै नही बूझै गुर कै सबदि निरास सुखु लहीआ ॥ ३ ॥ उपजी तरक दिगंबरु होआ मनु दह दिस चलि चलि गवनु करईआ ॥ प्रभवनु करै बूझै नही त्रिसना मिलि संगि साध दइआ घरु लहीआ ॥ ४ ॥ आसण सिध सिखहि बहुतेरे मनि मागहि रिधि सिधि चेटक चेटकईआ ॥ त्रिपति संतोखु मनि सांति न आवै मिलि साधू त्रिपति हरि नामि सिधि पईआ ॥ ५ ॥ अंडज जेरज सेतज उतभुज सभि वरन रूप जीअ जंत उपईआ ॥ साधू सरणि परै सो उबरै खत्री ब्राहमणु सूदु वैसु चंडालु चंडईआ ॥ ६ ॥ नामा जैदेउ कंबीरु त्रिलोचनु अउजाति रविदासु चमिआरु चमईआ ॥ जो जो मिलै साधू जन संगति धनु धंना जटु सैणु मिलिआ हरि दईआ ॥ ७ ॥ संत जना की हरि पैज रखाई भगति वछलु अंगीकारु करईआ ॥ नानक सरणि परे जगजीवन हरि हरि किरपा धारि रखईआ ॥ ८ ॥ ४ ॥ ७ ॥

सतगुरु प्रसन्न हो जाए, इसलिए मन में ज्ञान रूपी मुद्राएँ धारण की हैं और गुरु का शब्द तन में भस्म रूप में लगा लिया है। साधु की संगति में रहकर जन्म-मरण दोनों मिट गया है और यह शरीर अमर हो गया है॥ १॥ हे मेरे मन! सदैव साधुओं की संगति में मिलकर रहना चाहिए। हे मधुसूदन, हे माधो! ऐसी कृपा करो कि मैं क्षण-क्षण साधु के चरण धोता रहूँ॥ १॥ रहाउ॥ जो व्यक्ति गृहस्थ को तजकर वनवासी बन जाता है। उसका मन एक क्षण के लिए भी नहीं टिकता। जब वह साधु की शरण में आता है तो उसका भटकता हुआ मन टिक जाता है॥ २॥ जो अपने पुत्र-पुत्रियों को छोड़कर सन्यासी बन जाता है, उसके मन में अनेक आशाएँ पैदा होती रहती हैं। किन्तु वह इस तथ्य को नहीं बूझता कि गुरु के शब्द द्वारा आशा रहित होकर ही सुख उपलब्ध होता है॥ ३॥ कोई नागा साधु तो बन जाता है परन्तु उसके मन में तर्क वितर्क पैदा होता रहता है और मन दसों दिशाओं में भटकता रहता है। वह धरती पर भटकता रहता है लेकिन उसकी तृष्णा नहीं मिटती। लेकिन साधु की संगति में मिलकर उसे दया का घर मिल जाता है॥ ४॥ कोई व्यक्ति आसन लगाकर सिद्धियाँ सीखने का प्रयत्न करता है और अपने मन में ऋद्धियाँ-सिद्धियाँ एवं जादुई शक्तियों की चाह करता रहता है। इससे न उसे तृप्ति होती है, न संतोष मिलता है और न ही मन को शान्ति आती है। परन्तु साधु को मिलकर हरि-नाम द्वारा उसे तृप्ति हो जाती है और सर्व-सिद्धियाँ प्राप्त हो जाती हैं॥ ५॥ अण्डज, जेरज, स्वेदज, उद्‌भिज--सब प्रकार के जीव जन्तु परमात्मा ने पैदा किए हुए हैं। चाहे क्षत्रिय, ब्राह्मण, शूद्र, वैश्य अथवा चाण्डाल हो, जो भी साधु की शरण में आता है, उसका उद्धार हो जाता है॥ ६॥ नामदेव, जयदेव, कबीर, त्रिलोचन एवं निम्न जाति का चमार रविदास जो चमार का काम करता था, धन्ना जाट एवं सैण नाई जो भी संत-गुरु की संगति में मिला है, वह धन्य हो गया है और उसे दयालु परमात्मा मिल गया

है॥ ७॥ भक्तवत्सल हरि ने सदैव ही संतजनों की लाज रखी है और उसने हमेशा अपने भक्तों का साथ दिया है। हे नानक! जो भी जगत् के जीवन परमात्मा की शरण में आया है, उसने कृपा करके उसकी रक्षा की है॥ ८॥ ४॥ ७॥

बिलावलु महला ४ ॥ अंतरि पिआस उठी प्रभ केरी सुणि गुर बचन मनि तीर लगईआ ॥ मन की बिरथा मन ही जाणै अवरु कि जाणै को पीर परईआ ॥ १ ॥ राम गुरि मोहनि मोहि मनु लईआ ॥ हउ आकल बिकल भई गुर देखे हउ लोट पोट होइ पईआ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ हउ निरखत फिरउ सभि देस दिसंतर मै प्रभ देखन को बहुतु मनि चईआ ॥ मनु तनु काटि देउ गुर आगै जिनि हरि प्रभ मारगु पंथु दिखईआ ॥ २ ॥ कोई आणि सदेसा देइ प्रभ केरा रिद अंतरि मनि तनि मीठ लगईआ ॥ मसतकु काटि देउ चरणा तलि जो हरि प्रभु मेले मेलि मिलईआ ॥ ३ ॥ चलु चलु सखी हम प्रभु परबोधह गुण कामण करि हरि प्रभु लहीआ ॥ भगति वछलु उआ को नामु कहीअतु है सरणि प्रभू तिसु पाछै पईआ ॥ ४ ॥ खिमा सीगार करे प्रभ खुसीआ मनि दीपक गुर गिआनु बलईआ ॥ रसि रसि भोग करे प्रभु मेरा हम तिसु आगै जीउ कटि कटि पईआ ॥ ५ ॥ हरि हरि हारु कंठि है बनिआ मनु मोतीचूरु वड गहन गहनईआ ॥ हरि हरि सरधा सेज विछाई प्रभु छोडि न सकै बहुतु मनि भईआ ॥ ६ ॥ कहै प्रभु अवरु अवरु किछु कीजै सभु बादि सीगारु फोकट फोकटईआ ॥ कीओ सीगारु मिलण कै ताई प्रभु लीओ सुहागनि थूक मुखि पईआ ॥ ७ ॥ हम चेरी तू अगम गुसाई किआ हम करह तेरै वसि पईआ ॥ दइआ दीन करहु रखि लेवहु नानक हरि गुर सरणि समईआ ॥ ८ ॥ ५ ॥ ८ ॥

गुरु के वचन को सुनकर मन में ऐसा तीर लगा कि अन्तर्मन में प्रभु-मिलन की तीव्र लालसा पैदा हो गई। मन की व्यथा मन ही जानता है, अन्य कोई पराई पीड़ा को क्या जान सकता है॥ १॥ प्यारे गुरु ने मेरा मन मोह लिया है। मैं बहुत व्याकुल थी, पर गुरु को देखकर प्रसन्न हो गई हूँ॥ १॥ रहाउ॥ मैं देश-विदेश सब जगह देखती रहती हूँ और मेरे मन में प्रभु-दर्शन का बड़ा चाव है। मैं अपना तन-मन काट कर गुरु के समक्ष भेंट कर दूँगी, जिसने मुझे प्रभु का मार्ग दिखाया है॥ २॥ जो कोई प्रभु का संदेश आकर मुझे देता है, वह मेरे हृदय, अन्तर, मन-तन को बड़ा मीठा लगता है। मैं अपना सिर काटकर उसके चरणों में रख दूँगी, जो मुझे हरि-प्रभु से मिला दे॥ ३॥ हे सखी! चलो, हम प्रभु को समझ लें और अपने शुभ-गुणों के टोने करके प्रभु को पा लें। उसका नाम भक्तवत्सल कहा जाता है, इसलिए प्रभु की शरण में बने रहें॥ ४॥ जो जीव-स्त्री क्षमा का श्रृंगार करती है तथा मन रूपी दीपक में गुरु का ज्ञान प्रज्वलित करती है, प्रभु उस पर बड़ा खुश होता है। मेरा प्रभु बड़े आनंद से उस जीव-स्त्री से भोग करता है, हम उसके आगे अपना जीवन काट-काट कर रख देंगे॥ ५॥ हरि नाम मेरे गले का हार बन गया है और मेरा मन सिर का बड़ा आभूषण मोतीचूर बन चुका है। मैंने हरि के लिए अपने हृदय में श्रद्धा की सेज बिछा दी है और मन में प्रभु बड़ा प्यारा लगता है, जो मुझे छोड़ नहीं सकेगा॥ ६॥ यदि प्रभु कुछ अन्य कहता रहे और जीव-स्त्री कुछ अन्य ही करती रहे तो उसका किया सारा श्रृंगार व्यर्थ हो जाता है। जिसने प्रभु-मिलन के लिए शुभ-गुणों का श्रृंगार किया है, उसने उसे सुहागिन बना लिया है। लेकिन जिस जीव-स्त्री ने परमात्मा का हुक्म नहीं माना, उसका तिरस्कार ही हुआ है॥ ७॥ हे ईश्वर! तू अगम्य स्वामी है, मैं तेरी सेविका हूँ, मैं क्या कर सकती हूँ? मैं तो तेरे ही वश में पड़ी हूँ। नानक प्रार्थना करता है कि हे हरि! मुझ दीन पर दया करो, मेरी लाज रख लो, क्योंकि मैं तेरी ही शरण में हूँ॥ ८॥ ५॥ ८॥

बिलावलु महला ४ ॥ मै मनि तनि प्रेमु अगम ठाकुर का खिनु खिनु सरधा मनि बहुतु उठईआ ॥ गुर देखे सरधा मन पूरी जिउ चात्रिक प्रिउ प्रिउ बूंद मुखि पईआ ॥ १ ॥ मिलु मिलु सखी हरि कथा सुनईआ ॥ सतिगुरु दइआ करे प्रभु मेले मै तिसु आगै सिरु कटि कटि पईआ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ रोमि रोमि मनि तनि इक बेदन मै प्रभ देखे बिनु नीद न पईआ ॥ बैदक नाटिक देखि भुलाने मै हिरदै मनि तनि प्रेम पीर लगईआ ॥ २ ॥ हउ खिनु पलु रहि न सकउ बिनु प्रीतम जिउ बिनु अमलै अमली मरि गईआ ॥ जिन कउ पिआस होइ प्रभ केरी तिन्ह अवरु न भावै बिनु हरि को दुईआ ॥ ३ ॥ कोई आनि आनि मेरा प्रभू मिलावै हउ तिसु विटहु बलि बलि घुमि गईआ ॥ अनेक जनम के विछुड़े जन मेले जा सति सति सतिगुर सरणि पवईआ ॥ ४ ॥ सेज एक एको प्रभु ठाकुरु महलु न पावै मनमुख भरमईआ ॥ गुरु गुरु करत सरणि जे आवै प्रभु आइ मिलै खिनु ढील न पईआ ॥ ५ ॥ करि करि किरिआचार वधाए मनि पाखंड करमु कपट लोभईआ ॥ बेसुआ कै घरि बेटा जनमिआ पिता ताहि किआ नामु सदईआ ॥ ६ ॥ पूरब जनमि भगति करि आए गुरि हरि हरि हरि हरि भगति जमईआ ॥ भगति भगति करते हरि पाइआ जा हरि हरि हरि हरि नामि समईआ ॥ ७ ॥ प्रभि आणि आणि महिंदी पीसाई आपे घोलि घोलि अंगि लईआ ॥ जिन कउ ठाकुरि किरपा धारी बाह पकरि नानक कढि लईआ ॥ ८ ॥ ६ ॥ २ ॥ १ ॥ ६ ॥ ६ ॥

मेरे मन-तन में अगम्य प्रभु का प्रेम उत्पन्न हो गया है और क्षण-क्षण उसे पाने की श्रद्धा मन में बहुत उठती रहती है। मेरे मन की यह श्रद्धा गुरु को देखने से ही पूरी होती है जैसे पीय-पीय करते पपीहे के मुँह में स्वाति बूँद पड़ जाती है॥ १॥ हे सखी ! मुझे मिलो और हरि की कथा सुनाओ। यदि सतगुरु दया करके मुझे प्रभु से मिला दे तो मैं उसके आगे अपना सिर काट-काटकर सौंप दूँगी॥ १॥ रहाउ॥ मेरे रोम-रोम, मन-तन में एक विरह की वेदना है और प्रभु को देखे बिना मुझे नींद नहीं आती। वैद्य मेरी नब्ज को देखकर भूल गए हैं और मेरे हृदय, मन-तन में प्रेम की पीड़ा लगी हुई है॥ २॥ मैं अपने प्रियतम के बिना एक क्षण एवं पल भर भी नहीं रह सकती जैसे नशे के बिना अमली ही मर जाता है। जिन्हें प्रभु-मिलन की प्यास लगी हुई है, उन्हें उसके बिना कुछ भी अच्छा नहीं लगता॥ ३॥ यदि कोई आकर मुझे मेरे प्रभु से मिला दे, तो मैं उस पर शत-शत बलिहारी जाती हूँ। यदि सच्चे सतगुरु की शरण में आया जाए तो वह जन्म-जन्मांतरों के बिछुड़े जीव को भी परमात्मा से मिला देता है॥ ४॥ हृदय रूपी सेज एक ही है और एक ठाकुर प्रभु ही उस पर आ बसता है लेकिन मनमुखी जीव भ्रमों में ही भटकता रहता है और उसे आत्मस्वरूप नहीं मिलता। जो 'गुरु-गुरु' करता हुआ उसकी शरण में आता है, उसे वह प्रभु से मिला देता है और क्षण भर के लिए भी विलम्ब नहीं करता॥ ५॥ यदि कोई मनुष्य धर्म-कर्म करके कर्मकाण्ड में वृद्धि करता जाए तो उसके मन में पाखण्ड, लोभ, कपट वाले कर्म ही टिके रहेंगे। अगर वेश्या के घर पुत्र पैदा हो गया है, तो उसके पिता का कोई नाम नहीं बताया जा सकता॥ ६॥ जो जीव पूर्व जन्म भक्ति करके इस जन्म में आया है, गुरु ने उसके मन में हरि की भक्ति का मंत्र पैदा कर दिया है। जब भक्ति करके परमात्मा को पा लिया, तो वह हरि-नाम में ही विलीन हो गया॥ ७॥ प्रभु ने स्वयं लाकर भक्ति रूपी मेहंदी पीसी है और स्वयं ही घोलकर भक्तों के अंगों पर लगाई है। हे नानक ! जिन पर ठाकुर जी ने अपनी कृपा की है, उसने उनकी बाँह पकड़कर भवसागर में से निकाल लिया है॥ ८॥ ६॥ २॥ १॥ ६॥ ६॥

राग बिलावलु महला ५ असटपदी घरु १२ १ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

उपमा जात न कही मेरे प्रभ की उपमा जात न कही ॥ तजि आन सरणि गही ॥ १ ॥ रहाउ ॥ प्रभ चरन कमल अपार ॥ हउ जाउ सद बलिहार ॥ मनि प्रीति लागी ताहि ॥ तजि आन कतहि न जाहि ॥ १ ॥ हरि नाम रसना कहन ॥ मल पाप कलमल दहन ॥ चड़ि नाव संत उधारि ॥ भै तरे सागर पारि ॥ २ ॥ मनि डोरि प्रेम परीति ॥ इह संत निरमल रीति ॥ तजि गए पाप बिकार ॥ हरि मिले प्रभ निरंकार ॥ ३ ॥ प्रभ पेखीऐ बिसमाद ॥ चखि अनद पूरन साद ॥ नह डोलीऐ इत ऊत ॥ प्रभ बसे हरि हरि चीत ॥ ४ ॥ तिन्ह नाहि नरक निवासु ॥ नित सिमरि प्रभ गुणतासु ॥ ते जमु न पेखहि नैन ॥ सुनि मोहे अनहत बैन ॥ ५ ॥ हरि सरणि सूर गुपाल ॥ प्रभ भगत वसि दइआल ॥ हरि निगम लहहि न भेव ॥ नित करहि मुनि जन सेव ॥ ६ ॥ दुख दीन दरद निवार ॥ जा की महा बिखड़ी कार ॥ ता की मिति न जानै कोइ ॥ जलि थलि महीअलि सोइ ॥ ७ ॥ करि बंदना लख बार ॥ थकि परिओ प्रभ दरबार ॥ प्रभ करहु साधू धूरि ॥ नानक मनसा पूरि ॥ ८ ॥ १ ॥

मेरे प्रभु की उपमा कही नहीं जा सकती, अतः सब कुछ छोड़कर उसकी ही शरण ले ली है॥ १॥ रहाउ॥ प्रभु के चरण कमल अपार हैं, मैं सदैव उन पर कुर्बान जाता हूँ। मेरे मन में उससे प्रीति लग चुकी है, उसे छोड़कर कहीं नहीं जाता॥ १॥ मैं जिह्वा से हरि-नाम कहता रहता हूँ, जिससे सारे पापों एवं दोषों की मैल जल गई है। संतों की नाव पर चढ़कर मेरा उद्धार हो गया है और भवसागर से पार हो गया हूँ॥ २॥ यह संतों की निर्मल मर्यादा है कि उनका मन प्रभु के प्रेम एवं प्रीति की डोर से बंधा होता है। पाप एवं विकार उनका साथ छोड़ गए हैं और उन्हें निराकार प्रभु मिल गया है॥ ३॥ प्रभु के दर्शन करके बड़ा आश्चर्य होता है और पूर्ण आनंद का स्वाद चखने को मिलता है। जब प्रभु चित में बस जाता है तो इधर-उधर भटकना नहीं पड़ता॥ ४॥ जो नित्य गुणों के भण्डार प्रभु का चिंतन करते रहते हैं, उनका नरक में निवास नहीं होता। वे यमों को अपनी आँखों से देखते भी नहीं और अनहद शब्द की ध्वनि से मुग्ध हो जाते हैं॥ ५॥ शूरवीर परमेश्वर की शरण में ही पड़े रहना चाहिए। दयालु प्रभु अपने भक्तों के वश में है। वेद हरि का भेद नहीं पा सकते और मुनिजन भी नित्य उसकी भक्ति करते रहते हैं॥ ६॥ परमात्मा दीनों के दुख-दर्द दूर करने वाला है, उसकी भक्ति बड़ी कठिन है। उसका विस्तार कोई नहीं जानता, जो जल, धरती, आकाश, सब में समाया हुआ है॥ ७॥ मैं हार कर प्रभु-दरबार में आ पड़ा हूँ और लाख बार उसकी ही वन्दना करता हूँ। हे प्रभु जी! मुझे साधु की धूलि बना दो और नानक की यह अभिलाषा पूरी कर दो॥ ८॥ १॥

बिलावलु महला ५ ॥ प्रभ जनम मरन निवारि ॥ हारि परिओ दुआरि ॥ गहि चरन साधू संग ॥ मन मिसट हरि हरि रंग ॥ करि दइआ लेहु लड़ि लाइ ॥ नानका नामु धिआइ ॥ १ ॥ दीना नाथ दइआल मेरे सुआमी दीना नाथ दइआल ॥ जाचउ संत रवाल ॥ १ ॥ रहाउ ॥ संसारु बिखिआ कूप ॥ तम अगिआन मोहत घूप ॥ गहि भुजा प्रभ जी लेहु ॥ हरि नामु अपुना देहु ॥ प्रभ तुझ बिना नही ठाउ ॥ नानका बलि बलि जाउ ॥ २ ॥ लोभि मोहि बाधी देह ॥ बिनु भजन होवत खेह ॥ जमदूत महा भइआन ॥ चित गुपत करमहि जान ॥ दिनु रैनि साखि सुनाइ ॥ नानका हरि सरनाइ ॥ ३ ॥ भै भंजना मुरारि ॥ करि दइआ पतित उधारि ॥ मेरे दोख गने न जाहि ॥ हरि बिना कतहि समाहि ॥ गहि ओट चितवी नाथ ॥ नानका दे रखु हाथ ॥ ४ ॥ हरि गुण निधे गोपाल ॥ सरब घट प्रतिपाल ॥ मनि प्रीति

दरसन पिआस ॥ गोबिंद पूरन आस ॥ इक निमख रहनु न जाइ ॥ वड भागि नानक पाइ ॥ ५ ॥ प्रभ तुझ बिना नही होर ॥ मनि प्रीति चंद चकोर ॥ जिउ मीन जल सिउ हेतु ॥ अलि कमल भिंनु न भेतु ॥ जिउ चकवी सूरज आस ॥ नानक चरन पिआस ॥ ६ ॥ जिउ तरुनि भरत परान ॥ जिउ लोभीऐ धनु दानु ॥ जिउ दूध जलहि संजोगु ॥ जिउ महा खुधिआरथ भोगु ॥ जिउ मात पूतहि हेतु ॥ हरि सिमरि नानक नेत ॥ ७ ॥ जिउ दीप पतन पतंग ॥ जिउ चोरु हिरत निसंग ॥ मैगलहि कामै बंधु ॥ जिउ ग्रसत बिखई धंधु ॥ जिउ जूआर बिसनु न जाइ ॥ हरि नानक इहु मनु लाइ ॥ ८ ॥ कुरंक नादै नेहु ॥ चात्रिकु चाहत मेहु ॥ जन जीवना सतसंगि ॥ गोबिदु भजना रंगि ॥ रसना बखानै नामु ॥ नानक दरसन दानु ॥ ६ ॥ गुन गाइ सुनि लिखि देइ ॥ सो सरब फल हरि लेइ ॥ कुल समूह करत उधारु ॥ संसारु उतरसि पारि ॥ हरि चरन बोहिथ ताहि ॥ मिलि साधसंगि जसु गाहि ॥ हरि पैज रखै मुरारि ॥ हरि नानक सरनि दुआरि ॥ १० ॥ २ ॥

हे प्रभु ! मेरा जन्म-मरण मिटा दो, मैं हार कर तेरे द्वार पर आ गया हूँ। मैं साधु के चरण पकड़ कर उसके साथ ही रहता हूँ और मन को हरि-रंग ही मीठा लगता है। नानक विनती करता है कि हे प्रभु ! दया करके मुझे अपने साथ मिला लो, मैं तो नाम का ही ध्यान करता रहता हूँ॥ १॥ हे मेरे स्वामी ! तू दीनानाथ एवं बड़ा दयालु है और मैं संतों की चरण-धूलि की ही कामना करता हूँ॥ १॥ रहाउ॥ यह संसार माया रूपी विष का कुआं है, जिसमें अज्ञान एवं मोह का घोर अंधेरा है। हे प्रभु जी ! मेरी बाँह पकड़ कर मुझे बचा लो और अपना नाम दे दीजिए। तेरे अतिरिक्त मेरा कोई ठिकाना नहीं। नानक तुझ पर बारंबार कुर्बान जाता है॥ २॥ लोभ मोह ने मेरे शरीर को बांध लिया है और प्रभु-भजन बिना यह मिट्टी हो जाता है। यमदूत बहुत भयानक हैं और चित्रगुप्त मेरे किए कर्मों को जानता है और वह साक्षी बनकर दिन-रात मेरे किए कर्मों को यमराज की कचहरी में सुनाता है। हे नानक ! मैं हरि की शरण में आ गया हूँ॥ ३॥ हे भयभंजन मुरारि ! दया करके मुझ पतित का उद्धार कर दो। मेरे दोष गिने नहीं जा सकते, तेरे बिना यह पाप अन्य कहाँ समा सकते हैं। नानक की प्रार्थना है कि हे नाथ ! मैंने तेरा सहारा लेने के बारे में सोचा है, अतः अपना हाथ देकर मेरी रक्षा करो॥ ४॥ हे गुणनिधि प्रभु ! तू सारे जगत् का प्रतिपालक है। मेरे मन में तेरा ही प्रेम बना हुआ है और तेरे दर्शन की तीव्र लालसा है। हे गोविंद ! मेरी अभिलाषा पूरी करो, तेरे बिना मुझसे एक क्षण भर भी रहा नहीं जाता। हे नानक ! भाग्यशाली को ही उसकी प्राप्ति होती है॥ ५॥ हे प्रभु ! तेरे बिना मेरा अन्य कोई नहीं है, मेरे मन में तेरे लिए ऐसा प्रेम बना हुआ है, जैसे चाँद के साथ चकोर का है, जैसे मछली को जल से है, जैसे भँवरे का कमल के साथ कोई अन्तर नहीं है और जैसे चकवी को सूर्योदय की उम्मीद लगी रहती है, वैसे ही नानक को तेरे चरणों की प्यास लगी रहती है॥ ६॥ जैसे नवयुवती का पति उसके प्राण है, जैसे लालची आदमी को धन लेकर बड़ी खुशी होती है, जैसे दूध का जल से संयोग होता है, जैसे भूखे व्यक्ति को भोजन प्रिय होता है, जैसे माता का अपने पुत्र से स्नेह होता है, हे नानक ! वैसे ही नित्य भगवान् का सिमरन करना चाहिए॥ ७॥ जैसे पतंगा दीए पर गिरता है, जैसे चोर निस्संकोच होकर चोरी करता है, जैसे हाथी का कामवासना से संबंध है, जैसे विकारों का धंधा विकारी आदमी को वश में किए रखता है, जैसे जुआरी की जुआ खेलने की बुरी आदत नहीं जाती। हे नानक ! वैसे ही तू अपना मन परमात्मा के साथ लगाकर रख॥ ८॥ जैसे हिरण का नाद से प्यार होता है, जैसे पपीहा वर्षा की अभिलाषा करता है, वैसे ही भक्तजनों का जीवन सत्संग से बना होता है और वे प्रेमपूर्वक गोविंद का भजन करते रहते हैं। वे अपनी जीभ से प्रभु नाम का

ही बखान करते हैं। हे नानक ! वे तो भगवान् के दर्शनों का ही दान माँगते हैं॥ ९॥ जो व्यक्ति भगवान् का गुणगान करता, सुनता, लिखता एवं दूसरों को भी यह गुण देता है, उसे सभी फल प्राप्त हो जाते हैं। वह अपने समूचे वंश का उद्धार कर देता है और स्वयं भी संसार-सागर से पार हो जाता है। हरि के चरण उसका जहाज है और संतों के साथ मिलकर परमेश्वर का यश गाता रहता है। ईश्वर उसकी लाज रखता है, इसलिए नानक भी हरि के द्वार पर उसकी शरण में आ गया है॥ १०॥ २॥

बिलावलु महला १ थिती घरु १० जति　　१ओं सतिगुर प्रसादि ॥

एकम एकंकारु निराला ॥ अमरु अजोनी जाति न जाला ॥ अगम अगोचरु रूपु न रेखिआ ॥ खोजत खोजत घटि घटि देखिआ ॥ जो देखि दिखावै तिस कउ बलि जाई ॥ गुर परसादि परम पदु पाई ॥ १ ॥ किआ जपु जापउ बिनु जगदीसै ॥ गुर कै सबदि महलु घरु दीसै ॥ १ ॥ रहाउ ॥ दूजै भाइ लगे पछुताणे ॥ जम दरि बाधे आवण जाणे ॥ किआ लै आवहि किआ ले जाहि ॥ सिरि जमकालु सि चोटा खाहि ॥ बिनु गुर सबद न छूटसि कोइ ॥ पाखंडि कीन्है मुकति न होइ ॥ २ ॥ आपे सचु कीआ कर जोड़ि ॥ अंडज फोड़ि जोड़ि विछोड़ि ॥ धरति अकासु कीए बैसण कउ थाउ ॥ राति दिनंतु कीए भउ भाउ ॥ जिनि कीए करि वेखणहारा ॥ अवरु न दूजा सिरजणहारा ॥ ३ ॥ त्रितीआ ब्रहमा बिसनु महेसा ॥ देवी देव उपाए वेसा ॥ जोती जाती गणत न आवै ॥ जिनि साजी सो कीमति पावै ॥ कीमति पाइ रहिआ भरपूरि ॥ किसु नेड़ै किसु आखा दूरि ॥ ४ ॥ चउथि उपाए चारे बेदा ॥ खाणी चारे बाणी भेदा ॥ असट दसा खटु तीनि उपाए ॥ सो बूझै जिसु आपि बुझाए ॥ तीनि समावै चउथै वासा ॥ प्रणवति नानक हम ता के दासा ॥ ५ ॥ पंचमी पंच भूत बेताला ॥ आपि अगोचरु पुरखु निराला ॥ इकि भ्रमि भूखे मोह पिआसे ॥ इकि रसु चाखि सबदि त्रिपतासे ॥ इकि रंगि राते इकि मरि धूरि ॥ इकि दरि घरि साचै देखि हदूरि ॥ ६ ॥ झूठे कउ नाही पति नाउ ॥ कबहु न सूचा काला काउ ॥ पिंजरि पंखी बंधिआ कोइ ॥ छेरीं भरमै मुकति न होइ ॥ तउ छूटै जा खसमु छडाए ॥ गुरमति मेले भगति द्रिड़ाए ॥ ७ ॥ खसटी खटु दरसन प्रभ साजे ॥ अनहद सबदु निराला वाजे ॥ जे प्रभ भावै ता महलि बुलावै ॥ सबदे भेदे तउ पति पावै ॥ करि करि वेस खपहि जलि जावहि ॥ साचै साचे साचि समावहि ॥ ८ ॥ सपतमी सतु संतोखु सरीरि ॥ सात समुंद भरे निरमल नीरि ॥ मजनु सीलु सचु रिदै वीचारि ॥ गुर कै सबदि पावै सभि पारि ॥ मनि साचा मुखि साचउ भाइ ॥ सचु नीसाणै ठाक न पाइ ॥ ९ ॥ असटमी असट सिधि बुधि साधै ॥ सचु निहकेवलु करमि अराधै ॥ पउण पाणी अगनी बिसराउ ॥ तही निरंजनु साचो नाउ ॥ तिसु महि मनूआ रहिआ लिव लाइ ॥ प्रणवति नानकु कालु न खाइ ॥ १० ॥

प्रतिपदा तिथि (द्वारा बताया है कि) ईश्वर एक ही है, वह सबसे निराला है, वह अमर, अयोनि एवं जाति बन्धन से रहित है। वह मन वाणी से परे, इन्द्रियातीत है और उसका कोई रूप एवं चिन्ह नहीं है। खोजते-खोजते मैंने उसे घट-घट देखा है। जो उसे देखता एवं दिखाता है, मैं उस पर कुर्बान जाता हूँ। गुरु की कृपा से ही मोक्ष मिलता है॥ १॥ जगदीश के बिना अन्य क्या जप जपूँ ? गुरु के शब्द द्वारा ही सच्चा घर दिखाई देता है॥ १॥ रहाउ॥ जो व्यक्ति द्वैतभाव में लगे रहते हैं, अंत में पछताते हैं। वे यम के बन्धनों में बंधे रहते हैं और उनका आवागमन बना रहता है। वे क्या लेकर जगत् में आते हैं और क्या लेकर जाते हैं ? उनके सिर पर यम हर वक्त

खड़ा रहता है और यम से चोट खाते रहते हैं। शब्द-गुरु के बिना कोई भी छूट नहीं सकता तथा पाखण्ड करने से भी मुक्ति नहीं होती॥ २॥ ईश्वर ने स्वयं माया के तत्वों को जोड़कर यह जगत् पैदा किया है। उसने अण्डाकार वाले गोलाकार को फोड़कर जोड़कर फिर बिछोड़ दिया। उसने जीवों के रहने के लिए धरती और आकाश बनाए। उसने रात-दिन, डर और प्रेम बनाए। जिसने सारी जगत्-रचना की है, वही प्रतिपालक है अन्य कोई सृजनहार नहीं॥ ३॥ तृतीया—ब्रह्मा, विष्णु एवं शिवशंकर सृष्टि में आए। ईश्वर ने अनेक देवी-देवता एवं अनेक रूपों वाले जीवों को उत्पन्न किया। सूर्य, चन्द्रमा तथा अनेक योनियों के जीव पैदा किए, जिनकी गिनती नहीं की जा सकती। जिसने यह सृष्टि रचना की है, वही इसका मूल्य कर सकता है। वह सबमें भरपूर है। फिर मैं किसे परमात्मा के निकट एवं किसे उससे दूर कहूँ॥ ४॥ चतुर्थी—उसने चार वेद—ऋग्वेद, सामवेद, यजुर्वेद एवं अथर्ववेद पैदा किए, चार स्रोत, भिन्न-भिन्न बोलियां पैदा कीं। उसने अठारह पुराण, छः शास्त्र एवं तीन गुण उत्पन्न किए। यह तथ्य वही समझता है, जिसे वह स्वयं ज्ञान देता है। नानक प्रार्थना करता है कि हम उसके दास हैं, जिसका तीन गुणों का नाश कर तुरीयावस्था में वास हो गया है॥ ५॥ पंचमी—पंच भूतों से रचे हुए जीव बेताल हैं। परमात्मा स्वयं अगोचर एवं निराला है। कुछ जीव भ्रम में फँसे हुए हैं और माया के भूखे एवं प्यासे हैं। कुछ जीव हरि रस चखकर तृप्त हो गए हैं। कोई परमात्मा के रंग में लीन हैं और कोई मर कर मिट्टी हो गया है। कोई सच्चे घर—द्वार तक पहुँचकर परमात्मा के दर्शन कर रहा है॥ ६॥ झूठे आदमी का कोई मान-सम्मान नहीं होता। विष्ठा खाने वाला काला कौआ कभी शुद्ध नहीं हो सकता। यदि कोई पक्षी पिंजरे में बंद किया जाए तो वह पिंजरे की सलाखों में ही भटकता रहता है परन्तु वह तभी मुक्त होता है, जब उसका मालिक उसे छोड़ता है। गुरु का उपदेश मिलने पर जीव.के हृदय में भक्ति दृढ़ हो जाती है॥ ७॥ षष्ठी—परमात्मा ने छः दर्शन अर्थात् वेष—योगी, जंगम, सन्यासी, बौद्धी, जैन एवं वैरागी बनाए हैं। जीव की अन्तरात्मा में अनहद शब्द बजता रहता है। यदि कोई प्रभु को भा जाए तो वह उसे अपने साथ मिला लेता है। यदि किसी को शब्द भेद ले तो वह सत्य के द्वार पर शोभा का पात्र बन जाता है। कुछ व्यक्ति वेष धारण कर करके जलते मर जाते हैं लेकिन सत्य में लीन रहने वाला परम-सत्य में ही विलीन हो जाता है॥ ८॥ सप्तमी—जिस के शरीर में सत्य संतोष पैदा हो जाता है, उसके दोनों नेत्र, दोनों कान, दोनों नासिकाएँ एवं मुँह रूपी यह सात समुद्र निर्मल नाम रूपी जल से भरे रहते हैं। जो हृदय में सत्य का चिंतन करता रहता है, उसका अन्तर्मन में स्थित ज्ञान रूपी तीर्थ में स्नान हो जाता है और वह शांत-स्वभाव वाला बन जाता है। गुरु के शब्द द्वारा जीव भवसागर से पार हो जाता है। जिसके मन में सत्य है और मुख पर भी सत्य-नाम बना रहता है। वह सत्य का परवाना साथ लेकर जाता है और सत्य के दरबार में पहुँचने के लिए कोई विघ्न नहीं आता॥ ६॥ अष्टमी—जो व्यक्ति निष्काम भावना से सत्य की आराधना करता है, अपनी बुद्धि को अपने वश में कर लेता है, उसे आठ सिद्धियाँ प्राप्त हो जाती हैं। जो पवन, पानी एवं अग्नि अर्थात् रजोगुण, तमोगुण, सतोगुण को भुला देता है, उसके हृदय में पावन सत्य-नाम बस जाता है। उसका मन सत्य में ही वृत्ति लगाकर रखता है। नानक विनती करता है कि उस व्यक्ति को काल भी निगल नहीं सकता॥ १०॥

नाउ नउमी नवे नाथ नव खंडा ॥ घटि घटि नाथु महा बलवंडा ॥ आई पूता इहु जगु सारा ॥ प्रभ आदेसु आदि रखवारा ॥ आदि जुगादी है भी होगु ॥ एहु अपरंपरु करणै जोगु ॥ ११ ॥ दसमी नामु दानु इसनानु ॥ अनदिनु मजनु सचा गुण गिआनु ॥ सचि मैलु न लागै भ्रमु भउ भागै ॥ बिलमु न तूटसि काचै तागै ॥ जिउ तागा जगु एवै जाणहु ॥ असथिरु चीतु साचि रंगु माणहु ॥ १२ ॥

एकादसी इकु रिदै वसावै ॥ हिंसा ममता मोहु चुकावै ॥ फलु पावै ब्रतु आतम चीनै ॥ पाखंडि राचि ततु नही बीनै ॥ निरमलु निराहारु निहकेवलु ॥ सूचै साचे ना लागै मलु ॥ १३ ॥ जह देखउ तह एको एका ॥ होरि जीअ उपाए वेको वेका ॥ फलोहार कीए फलु जाइ ॥ रस कस खाए सादु गवाइ ॥ कूड़ै लालचि लपटै लपटाइ ॥ छूटै गुरमुखि साचु कमाइ ॥ १४ ॥ दुआदसि मुद्रा मनु अउधूता ॥ अहिनिसि जागहि कबहि न सूता ॥ जागतु जागि रहै लिव लाइ ॥ गुर परचै तिसु कालु न खाइ ॥ अतीत भए मारे बैराई ॥ प्रणवति नानक तह लिव लाई ॥ १५ ॥ दुआदसी दइआ दानु करि जाणै ॥ बाहरि जातो भीतरि आणै ॥ बरती बरत रहै निहकाम ॥ अजपा जापु जपै मुखि नाम ॥ तीनि भवण महि एको जाणै ॥ सभि सुचि संजम साचु पछाणै ॥ १६ ॥ तेरसि तरवर समुद कनारै ॥ अंम्रितु मूलु सिखरि लिव तारै ॥ डर डरि मरै न बूडै कोइ ॥ निडरु बूडि मरै पति खोइ ॥ डर महि घरु घर महि डरु जाणै ॥ तखति निवासु सचु मनि भाणै ॥ १७ ॥ चउदसि चउथे थावहि लहि पावै ॥ राजस तामस सत काल समावै ॥ ससीअर कै घरि सूरु समावै ॥ जोग जुगति की कीमति पावै ॥ चउदसि भवन पाताल समाए ॥ खंड ब्रहमंड रहिआ लिव लाए ॥ १८ ॥ अमावसिआ चंदु गुपतु गैणारि ॥ बूझहु गिआनी सबदु बीचारि ॥ ससीअरु गगनि जोति तिहु लोई ॥ करि करि वेखै करता सोई ॥ गुर ते दीसै सो तिस ही माहि ॥ मनमुखि भूले आवहि जाहि ॥ १९ ॥ घरु दरु थापि थिरु थानि सुहावै ॥ आपु पछाणै जा सतिगुरु पावै ॥ जह आसा तह बिनसि बिनासा ॥ फूटै खपरु दुबिधा मनसा ॥ ममता जाल ते रहै उदासा ॥ प्रणवति नानक हम ता के दासा ॥ २० ॥ १ ॥

नवमी–परमेश्वर सर्वव्यापक है, महाबलवान है, योगियों के नौ नाथ एवं नवखण्डों वाली पृथ्वी के जीव उसका ही नाम जपते हैं। यह समूचा जगत् जगन्माता के पुत्र समान है। मेरा उस परमात्मा को शत्-शत् नमन है, जो प्रारम्भ से ही सबका रखवाला है। वह युग-युगांतरों से है, वर्तमान में भी है और भविष्य में भी उसका ही अस्तित्व होगा। वह अपरंपार है और सबकुछ करने में समर्थ है॥ ११॥ दसमी–नाम जपो, दान करो, शरीर की शुद्धता के लिए स्नान करो। सत्य के गुणों का ज्ञान प्राप्त करना नित्य स्नान करना है। सत्य-नाम का सिमरन करने से मन को विकारों की मैल नहीं लगती और भ्रम एवं भय दूर हो जाता है। कच्चे धागे को टूटते कोई देरी नहीं होती। जगत् को ऐसे ही जानो जैसे कच्चा धागा है। अपना चित स्थिर करने के लिए सत्य के रंग में लीन रहो॥ १२॥ एकादशी–जो व्यक्ति परमात्मा को हृदय में बसाता है, अपने मन में से हिंसा, ममता एवं मोह को दूर कर देता है, उसे इस व्रत का यही फल मिलता है कि वह अपनी अन्तरात्मा को पहचान लेता है। पाखण्ड में लीन होकर मनुष्य परमतत्व को नहीं देख सकता। एक वही निर्मल, निराहार एवं वासना रहित है और उस शुद्ध एवं सत्यस्वरुप को विकारों की कोई मैल नहीं लगती॥ १३॥ मैं जिधर भी देखता हूँ, एक परमात्मा ही मौजूद है। उसने भिन्न-भिन्न प्रकार के अनेक जीव पैदा किए हुए हैं। फलों का आहार करने से मनुष्य को कोई फल नहीं मिलता। वह अनेक स्वादों को ग्रहण करता है, जो उसके व्रत का स्वाद गंवा देते हैं। वह झूठे लालच में ही फँसा रहता है। लेकिन वह तभी छूटता है, जब गुरु के माध्यम से सत्य की साधना करता है॥ १४॥ द्वादशी–अवधूत वही है, जिसका मन व्यर्थ की बारह मुद्राओं से पृथक हो गया है। वह दिन-रात जागता रहता है और मोह-माया की नींद में नहीं सोता तथा परमात्मा में ही ध्यान लगाकर रखता है। जो गुरु पर श्रद्धा रखता है, उसे काल भी नहीं खाता। जिन्होंने कामादिक विकारों को समाप्त कर लिया है, वह त्यागी है। नानक विनती करता है कि उसने ही परमात्मा में वृत्ति लगाई है॥ १५॥ द्वादशी–जीवों पर दया एवं दान करना चाहिए। भटकते मन को नियंत्रण

में करना चाहिए। जो निष्काम रहता है, उस व्रत रखने वाले का ही सच्चा व्रत है। अपने मुख से नाम का अजपा जाप जपते रहना चाहिए। तीनों लोकों में एक परमात्मा को ही जानो। जो सत्य को पहचान लेता है, वही शुद्धिकरण एवं संयम के सारे उद्यम कर रहा है॥ १६॥ त्रयोदशी– मानव जीवन समुद्र के किनारे खड़े वृक्ष जैसा है। जैसे समुद्र की लहर उसे किसी भी वक्त उखाड़ सकती है, वैसे ही मृत्यु किसी भी समय खत्म कर सकती है। शरीर का मूल भाव जड़ मन है और उसका शिखर दसम द्वार है। परमात्मा का नाम अमृत है। शरीर का मूल मन अमृत नाम द्वारा जीव को पार करवा देता है। यदि कोई प्रभु-डर से डरकर मरता है, वह भवसागर में नहीं डूबता। जो परमात्मा से नहीं डरता, वह भवसागर में डूबकर अपनी प्रतिष्ठा गंवा देता है। जो प्रभु-डर में रहने को अपना घर समझता है, वह हृदय-घर में प्रभु का डर मानता है। वह ईश्वर के चरणों में निवास पा लेता है और उसे सत्य ही भाता है॥ १७॥ चतुर्दशी–जब मनुष्य तुरीयावस्था प्राप्त कर लेता है तो रजो, तमो एवं सतोगुण काल में ही समा जाते हैं और चन्द्रमा के घर में सूर्य समा जाता है। वह मनुष्य योग-भक्ति का मूल्य पा लेता है। ऐसा मनुष्य परमात्मा में लगन लगाकर रखता है, जो चौदह लोकों, पातालों, खण्डों-ब्रह्माण्डों में समाया हुआ है॥ १८॥ अमावस्या–अमावस्या की रात्रि को चन्द्रमा आसमान में लुप्त रहता है। हे ज्ञानी! इस तथ्य को शब्द के चिन्तन द्वारा समझो। जैसे चांद गगन में होता है। लेकिन उसका आलोक तीनों लोकों में होता है। वैसे ही परमात्मा की ज्योति सब में समाई हुई है। वह रचयिता सृष्टि-रचना कर करके उसकी देखभाल करता रहता है। लेकिन स्वेच्छाचारी जीव भ्रम में फँसकर जन्मते-मरते रहते हैं॥ १६॥ जो व्यक्ति प्रभु-चरणों में स्थाई निवास बना लेता है, वह आत्मस्वरूप को पहचान कर सतगुरु को पा लेता है। जिसकी सब अभिलाषाएँ मिट जाती हैं, उसके मन की दुविधा एवं लालसा वाला हृदय रूपी बर्तन भी फूट जाता है। उसका मन ममता जाल से दूर रहता है। नानक प्रार्थना करता है कि हम उस जीव के दास हैं॥ २०॥ १॥

बिलावलु महला ३ वार सत घरु १०　　　　१ओं सतिगुर प्रसादि ॥

आदित वारि आदि पुरखु है सोई ॥ आपे वरतै अवरु न कोई ॥ ओति पोति जगु रहिआ परोई ॥ आपे करता करै सु होई ॥ नामि रते सदा सुखु होई ॥ गुरमुखि विरला बूझै कोई ॥ १ ॥ हिरदै जपनी जपउ गुणतासा ॥ हरि अगम अगोचरु अपरंपर सुआमी जन पगि लगि धिआवउ होइ दासनि दासा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सोमवारि सचि रहिआ समाइ ॥ तिस की कीमति कही न जाइ ॥ आखि आखि रहे सभि लिव लाइ ॥ जिसु देवै तिसु पलै पाइ ॥ अगम अगोचरु लखिआ न जाइ ॥ गुर कै सबदि हरि रहिआ समाइ ॥ २ ॥ मंगलि माइआ मोहु उपाइआ ॥ आपे सिरि सिरि धंधै लाइआ ॥ आपि बुझाए सोई बूझै ॥ गुर कै सबदि दरु घरु सूझै ॥ प्रेम भगति करे लिव लाइ ॥ हउमै ममता सबदि जलाइ ॥ ३ ॥ बुधवारि आपे बुधि सारु ॥ गुरमुखि करणी सबदु वीचारु ॥ नामि रते मनु निरमलु होइ ॥ हरि गुण गावै हउमै मलु खोइ ॥ दरि सचै सद सोभा पाए ॥ नामि रते गुर सबदि सुहाए ॥ ४ ॥ लाहा नामु पाए गुर दुआरि ॥ आपे देवै देवणहारु ॥ जो देवै तिस कउ बलि जाईऐ ॥ गुर परसादी आपु गवाईऐ ॥ नानक नामु रखहु उर धारि ॥ देवणहारे कउ जैकारु ॥ ५ ॥ वीरवारि वीर भरमि भुलाए ॥ प्रेत भूत सभि दूजै लाए ॥ आपि उपाए करि वेखै वेका ॥ सभना करते तेरी टेका ॥ जीअ जंत तेरी सरणाई ॥ सो मिलै जिसु लैहि मिलाई ॥ ६ ॥ सुक्रवारि प्रभु रहिआ समाई ॥ आपि उपाइ सभ कीमति पाई ॥ गुरमुखि होवै सु करै बीचारु ॥ सचु संजमु करणी है कार ॥ वरतु नेमु निताप्रति पूजा ॥ बिनु बूझे

सभु भाउ है दूजा ॥ ७ ॥ छनिछरवारि सउण सासत बीचारु ॥ हउमै मेरा भरमै संसारु ॥ मनमुखु अंधा दूजै भाइ ॥ जम दरि बाधा चोटा खाइ ॥ गुर परसादी सदा सुखु पाए ॥ सचु करणी साचि लिव लाए ॥ ८ ॥ सतिगुरु सेवहि से वडभागी ॥ हउमै मारि सचि लिव लागी ॥ तेरै रंगि राते सहजि सुभाइ ॥ तू सुखदाता लैहि मिलाइ ॥ एकस ते दूजा नाही कोइ ॥ गुरमुखि बूझै सोझी होइ ॥ ६ ॥ पंद्रह थिंती तै सत वार ॥ माहा रुती आवहि वार वार ॥ दिनसु रैणि तिवै संसारु ॥ आवा गउणु कीआ करतारि ॥ निहचलु साचु रहिआ कल धारि ॥ नानक गुरमुखि बूझै को सबदु वीचारि ॥ १० ॥ १ ॥

आदित्यवार (रविवार)—आदिपुरुष परमेश्वर सबमें व्याप्त है, उसके बिना अन्य कोई नहीं। उसने समूचा जगत ताने बाने की तरह संजों कर रखा हुआ है। वह कर्तापुरुष जो करता है, वही होता है। उसके नाम में लीन रहने से सदैव सुख मिलता है, यह तथ्य कोई विरला गुरुमुख ही समझता है॥ १॥ मेरी तो यही माला है कि मैं उस गुणों के भण्डार को हृदय में जपता रहता हूँ। परमात्मा अपहुँच, मन-वाणी से परे, अपरंपार एवं पूरे जगत का स्वामी है। मैं उसके दासों का दास बनकर हरि जनों के चरणों में लगकर प्रभु का ध्यान करता हूँ॥ १॥ रहाउ॥ सोमवार—सत्य स्वरूप परमेश्वर सबमें समा रहा है, उसकी गरिमा को व्यक्त नहीं किया जा सकता। उसके गुण कह-कह कर उसमें वृत्ति लगाकर कितने ही थक गए हैं। परमात्मा का नाम उसे ही मिलता है, जिसे वह स्वयं देता है। अपहुँच, मन-वाणी से परे परमात्मा का रहस्य जाना नहीं जा सकता और गुरु के उपदेश द्वारा ही जीव परमात्मा में लीन रहता है॥ २॥ मंगलवार—ईश्वर ने माया-मोह को पैदा किया है और स्वयं ही जीवों को मोह में जगत धंधे में लगाया है। इस तथ्य को वही समझता है, जिसे वह ज्ञान प्रदान करता है। गुरु के शब्द द्वारा जीव को अपने वास्तविक घर की सूझ हो जाती है। वह भक्ति करके इसमें ही वृत्ति लगाकर रखता है। इस तरह वह अपने अहंत्व एवं ममता को शब्द द्वारा जला देता है॥ ३॥ बुधवार—वह स्वयं ही श्रेष्ठ बुद्धि देता है। गुरुमुख शब्द का चिंतन एवं सत्कर्म करता है। नाम में लीन रहने से मन निर्मल हो जाता है। भगवान का स्तुतिगान करने से अहंत्व रूपी मैल दूर हो जाती है। इस तरह जीव सत्य के दरबार में सदैव शोभा पाता है। गुरु के शब्द द्वारा नाम में लीन होकर वह सुन्दर बन जाता है॥ ४॥ जीव गुरु के द्वार पर सेवा करके नाम रूपी लाभ हासिल करता है। वह देने वाला दाता बख्शिशें देता रहता है। जो देता है, मैं उस पर बलिहारी जाता हूँ। गुरु की कृपा से अहंत्व दूर होता है। हे नानक ! परमात्मा का नाम हृदय में बसाकर रखो और दाता का ही यशोगान करते रहो॥ ५॥ गुरुवार—परमात्मा ने जीवों को बावन वीरों के भ्रम में भुलाया हुआ है। उसने भूतों-प्रेतों को भी द्वैतभाव में लगाया हुआ है। उसने स्वयं सबको उत्पन्न किया है और भिन्न-भिन्न प्रकार का बनाकर सबकी देखभाल करता है। हे कर्ता ! सब जीवों को तेरा ही सहारा है और सब तेरी ही शरण में हैं। वही मनुष्य तुझसे मिलता है, जिसे तू अपने साथ मिला लेता है॥ ६॥ शुक्रवार—प्रभु विश्वव्याप्त है। उसने सृष्टि की रचना करके स्वयं ही उसका मूल्यांकन किया है। जो गुरुमुख बन जाता है, वही परमात्मा का चिंतन करता है। सत्य एवं संयम का आचरण ही उसका कर्म होता है। व्रत, नियम एवं नित्य की पूजा-अर्चना प्रभु को समझे बिना सब द्वैतभाव का प्रेम है॥ ७॥ शनिवार—शुभ मुहूर्त एवं शास्त्रों का विचार कर सारा संसार अहंत्व, ममत्व एवं भ्रम में भटक रहा है। ज्ञानहीन स्वेच्छाचारी जीव द्वैतभाव में ही लीन है। इसलिए यम के द्वार पर चोटें खाता रहता है। गुरु की कृपा से जीव सदैव सुख प्राप्त करता है। वह सत्कर्म करता है और सत्य में ही ध्यान लगाकर रखता है॥ ८॥ कोई भाग्यशाला ही सतगुरु की सेवा करता है। अपने अहंत्व को नष्ट करके सत्य में ही उसकी वृत्ति लग गई है। हे प्रभु ! वह सहज स्वभाव तेरे रंग में

लीन है। तू सुखदाता है और स्वयं ही अपने साथ मिला लेता है। एक परमात्मा के अलावा अन्य कोई नहीं। गुरुमुख ही इस तथ्य को बूझता है और उसे इस तथ्य की सूझ हो जाती है॥ ६॥ जैसे पन्द्रह तिथियाँ, सात वार, बारह महीने, छः ऋतुएँ और दिन-रात पुनः पुन आते रहते हैं, वैसे ही यह संसार है। करतार ने जीवों के लिए आवागमन बनाया हुआ है। वह सदैव शाश्वत, निश्चल है और उसकी शक्ति भरपूर है। हे नानक ! कोई गुरुमुख ही शब्द के चिंतन द्वारा इस तथ्य को बूझता है॥ १०॥ १॥

बिलावलु महला ३ ॥ आदि पुरखु आपे स्रिसटि साजे ॥ जीअ जंत माइआ मोहि पाजे ॥ दूजै भाइ परपंचि लागे ॥ आवहि जावहि मरहि अभागे ॥ सतिगुरि भेटिऐ सोझी पाइ ॥ परपंचु चूकै सचि समाइ ॥ १ ॥ जा कै मसतकि लिखिआ लेखु ॥ ता कै मनि वसिआ प्रभु एकु ॥ १ ॥ रहाउ ॥ स्रिसटि उपाइ आपे सभु वेखै ॥ कोइ न मेटै तेरै लेखै ॥ सिध साधिक जे को कहै कहाए ॥ भरमे भूला आवै जाए ॥ सतिगुरु सेवै सो जनु बूझै ॥ हउमै मारे ता दरु सूझै ॥ २ ॥ एकसु ते सभु दूजा हूआ ॥ एको वरतै अवरु न बीआ ॥ दूजे ते जे एको जाणै ॥ गुर कै सबदि हरि दरि नीसाणै ॥ सतिगुरु भेटे ता एको पाए ॥ विचहु दूजा ठाकि रहाए ॥ ३ ॥ जिस दा साहिबु डाढा होइ ॥ तिस नो मारि न साकै कोइ ॥ साहिब की सेवकु रहै सरणाई ॥ आपे बखसे दे वडिआई ॥ तिस ते ऊपरि नाही कोइ ॥ कउणु डरै डरु किस का होइ ॥ ४ ॥ गुरमती सांति वसै सरीर ॥ सबदु चीन्हि फिरि लगै न पीर ॥ आवै न जाइ ना दुखु पाए ॥ नामे राते सहजि समाए ॥ नानक गुरमुखि वेखै हदूरि ॥ मेरा प्रभु सद रहिआ भरपूरि ॥ ५ ॥ इकि सेवक इकि भरमि भुलाए ॥ आपे करे हरि आपि कराए ॥ एको वरतै अवरु न कोइ ॥ मनि रोसु कीजै जे दूजा होइ ॥ सतिगुरु सेवे करणी सारी ॥ दरि साचै साचे वीचारी ॥ ६ ॥ थिती वार सभि सबदि सुहाए ॥ सतिगुरु सेवे ता फलु पाए ॥ थिती वार सभि आवहि जाहि ॥ गुर सबदु निहचलु सदा सचि समाहि ॥ थिती वार ता जा सचि राते ॥ बिनु नावै सभि भरमहि काचे ॥ ७ ॥ मनमुख मरहि मरि बिगती जाहि ॥ एकु न चेतहि दूजै लोभाहि ॥ अचेत पिंडी अगिआन अंधारु ॥ बिनु सबदै किउ पाए पारु ॥ आपि उपाए उपावणहारु ॥ आपे कीतोनु गुर वीचारु ॥ ८ ॥ बहुते भेख करहि भेखधारी ॥ भवि भवि भरमहि काची सारी ॥ ऐथै सुखु न आगै होइ ॥ मनमुख मुए अपणा जनमु खोइ ॥ सतिगुरु सेवे भरमु चुकाए ॥ घर ही अंदरि सचु महलु पाए ॥ ९ ॥ आपे पूरा करे सु होइ ॥ एहि थिती वार दूजा दोइ ॥ सतिगुर बाझहु अंधु गुबारु ॥ थिती वार सेवहि मुगध गवार ॥ नानक गुरमुखि बूझै सोझी पाइ ॥ इकतु नामि सदा रहिआ समाइ ॥ १० ॥ २ ॥

आदिपुरुष स्वयं ही सृष्टि-रचना करता है और सब जीवों को उसने माया-मोह में लगाया हुआ है। द्वैतभाव द्वारा जीव जगत्-प्रपंच में लगे हुए हैं। इस तरह भाग्यहीन जीव जगत् में आते जाते और मरते रहते हैं। लेकिन सतगुरु से साक्षात्कार होने से ज्ञान प्राप्त हो जाता है और जीव जगत्-प्रपंच से छूटकर सत्य में विलीन हो जाता है॥ १॥ जिसके भाग्य में लिखा हुआ है, उसके मन में एक प्रभु बस गया है॥ १॥ रहाउ॥ हे प्रभु ! सृष्टि को पैदा करके तू स्वयं ही सबकी देखभाल करता है। तेरे विधान को कोई भी मिटा नहीं सकता। यदि कोई खुद को बड़ा सिद्ध या साधक कहता अथवा कहलाता है, वह भी भ्रमों में भूलकर जन्मता-मरता रहता है। जो व्यक्ति सतगुरु की सेवा करता है, उसे ज्ञान हो जाता है। यदि वह अहंत्व को समाप्त कर दे तो उसे अपने द्वार की सूझ हो जाती है॥ २॥ एक परमात्मा से यह दूसरा सब उत्पन्न हुआ है। एक वही सर्वव्यापक है, अन्य कोई नहीं। यदि कोई इस दूसरे (जग) को त्याग कर एक परमात्मा को जान

ले, तो वह गुरु के शब्द द्वारा उसके द्वार पर परवाना लेकर पहुँच जाता है। यदि सतगुरु मिल जाए तो ईश्वर प्राप्त हो जाता है और मन में द्वैतभाव को रोका जा सकता है॥ ३॥ जिसका मालिक ताकतवर है, उसे कोई मार नहीं सकता। वह सेवक अपने मालिक की शरण में पड़ा रहता है और वह स्वयं ही सेवक को बड़ाई प्रदान करता है। मालिक से बड़ा अन्य कोई नहीं। कौन डरता है? उसे किस का डर है॥ ४॥ गुरु मतानुसार रहने से शरीर में शान्ति पैदा हो जाती है। शब्द को पहचान कर फिर कोई पीड़ा नहीं लगती। वह जन्म-मरण से छूट जाता है और उसे कोई दुख नहीं लगता। नाम में लीन होकर वह सहज ही समाया रहता है। हे नानक! गुरुमुख परमात्मा को अपने पास ही देखता है। सच तो यही है कि मेरा प्रभु सदैव सर्वव्यापक है॥ ५॥ कोई सेवक बना हुआ है और कोई भ्रमों में भटका हुआ है। ईश्वर स्वयं ही सब करता और करवाता है। परमात्मा सबमें व्याप्त है, उसके अतिरिक्त अन्य कोई नहीं। मन में रोष तो ही करो यदि कोई दूसरा हो। सतगुरु की सेवा ही अच्छा आचरण है। सत्य के द्वार पर इन कर्मशीलों को सत्यवादी माना जाता है॥ ६॥ सब तिथियाँ एवं वार शब्द से ही सुन्दर लगते हैं। सतगुरु की सेवा करने से फल प्राप्त होता है। यह तिथियाँ एवं वार आते-जाते रहते हैं। लेकिन गुरु के शब्द द्वारा जीव निश्चल होकर सत्य में ही विलीन हो जाता है। तिथियाँ एवं वार तभी शुभ होते हैं, जब जीव सत्य में लीन रहे। परमात्मा के नाम बिना सब नाशवान जीव योनियों में भटकते रहते हैं॥ ७॥ जब मनमुखी जीव मरते हैं तो उनकी मुक्ति नहीं होती। वे परमात्मा को याद नहीं करते अपितु द्वैतभाव में ही फँसे रहते हैं। चेतनाहीन जीव को अज्ञान का अँधेरा बना रहता है। शब्द के बिना वह कैसे पार हो सकता है? पैदा करने वाले परमात्मा ने ही सब को पैदा किया है और स्वयं ही गुरु का ज्ञान रचा है॥ ८॥ वेषधारी अनेक वेष धारण करते रहते हैं। वे कच्चे पाँसे की तरह भटकते रहते हैं। उन्हें न ही इहलोक में सुख मिलता है और न ही परलोक में सुख उपलब्ध होता है। मनमुखी जीव अपना अमूल्य जीवन गंवा कर मृत्यु को प्राप्त हो जाते हैं। यदि वे सतगुरु की सेवा करें तो उनका भ्रम दूर हो जाता है और अपने शरीर रूपी घर में ही सत्य को पा लेते हैं॥ ९॥ पूर्ण परमेश्वर जो करता है, वही होता है। यह तिथियाँ एवं वार द्वैतभाव पैदा करते हैं। सतगुरु के बिना जगत् में घोर अन्धेरा बना रहता है। मूर्ख गंवार व्यक्ति ही तिथियों एवं वारों को मानते हैं। हे नानक! जो गुरुमुख बनकर ज्ञान प्राप्त करता है, उसे सूझ हो जाती है और वह सदा परमात्मा के नाम में लीन रहता है॥ १०॥ २॥

बिलावलु महला १ छंत दखणी ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

मुंध नवेलड़ीआ गोइलि आई राम ॥ मटुकी डारि धरी हरि लिव लाई राम ॥ लिव लाइ हरि सिउ रही गोइलि सहजि सबदि सीगारीआ ॥ कर जोड़ि गुर पहि करि बिनंती मिलहु साचि पिआरीआ ॥ धन भाइ भगती देखि प्रीतम काम क्रोधु निवारिआ ॥ नानक मुंध नवेल सुंदरि देखि पिरु साधारिआ ॥ १ ॥ सचि नवेलड़ीए जोबनि बाली राम ॥ आउ न जाउ कही अपने सह नाली राम ॥ नाह अपने संगि दासी मै भगति हरि की भावए ॥ अगाधि बोधि अकथु कथीऐ सहजि प्रभ गुण गावए ॥ राम नाम रसाल रसीआ रवै साचि पिआरीआ ॥ गुरि सबदु दीआ दानु कीआ नानका वीचारीआ ॥ २ ॥ स्रीधर मोहिअड़ी पिर संगि सूती राम ॥ गुर कै भाइ चलो साचि संगूती राम ॥ धन साचि संगूती हरि संगि सूती संगि सखी सहेलीआ ॥ इक भाइ इक मनि नामु वसिआ सतिगुरू हम मेलीआ ॥ दिनु रैणि घड़ी न चसा विसरै सासि सासि निरंजनो ॥ सबदि जोति जगाइ दीपकु नानका भउ भंजनो ॥ ३ ॥ जोति सबाइड़ीए त्रिभवण सारे राम ॥ घटि घटि रवि रहिआ अलख अपारे राम ॥ अलख अपार अपारु साचा आपु मारि

मिलाईऐ ॥ हउमै ममता लोभु जालहु सबदि मैलु चुकाईऐ ॥ दरि जाइ दरसनु करी भाणै तारि तारणहारिआ ॥ हरि नामु अंम्रितु चाखि त्रिपती नानका उर धारिआ ॥ ४ ॥ १ ॥

जीव रूपी नववधू मुग्धा इस जगत् रूपी चरागाह में थोड़े दिनों के लिए आई है। उसने दूध से भरी हुई मटकी को सिर से उतार कर परमात्मा में लगन लगा ली है। उसने परमात्मा में लगन लगाकर सहज ही शब्द का श्रृंगार कर लिया है। वह हाथ जोड़ कर गुरु से विनती करती है कि मुझे सच्चे प्रियतम से मिला दो। उसने भक्ति भावना द्वारा प्रियतम को देखकर काम-क्रोध को दूर कर दिया है। हे नानक ! उस सुन्दर नववधू मुग्धा ने प्रियतम को देखकर श्रद्धा धारण कर ली है॥ १॥ हे नववधू जीव-स्त्री ! सत्य द्वारा यौवन में भी भोलीभाली बनी रहो। अपने पति के संग बनी रहो और कहीं ओर न आओ और न जाओ। अपने प्रभु की दासी बनकर उसके साथ ही रहो। मुझे तो हरि की भक्ति अच्छी लगती है। मैं उसका कथन करती हूँ, जिसका ज्ञान अथाह एवं अकथनीय है, मैं सहज ही प्रभु का गुणगान करती रहती हूँ। राम का नाम रसों का सागर है। वह रसिया उससे ही रमण करता है, जो सत्य से प्रेम करती है। हे नानक ! जिसे गुरु ने शब्द दान किया है, वही विचारवान् बना है॥ २॥ प्रभु के मोह में मुग्ध हुई जीव-स्त्री उसका ही संग प्राप्त करती है। गुरु की रज़ानुसार चलने वाली जीव-स्त्री सत्य के संग ही मिल जाती है। अपनी सखी-सहेलियों के साथ वह सत्य में ही लीन रहती है और परमात्मा का ही संयोग प्राप्त करती है। एक मन होने से प्रेम द्वारा प्रभु का नाम मन में बस गया है और सतगुरु ने परमात्मा से मिला दिया है। उस निरंजन को हर धड़कन से स्मरण करती हूँ और वह दिन-रात एक घड़ी और एक पल के लिए भी नहीं भूलता। हे नानक ! मन रूपी दीपक में शब्द की ज्योति प्रज्वलित की है, जो सारे भय नाश करने वाली है॥ ३॥ हे सखी ! जिसकी ज्योति तीनों लोकों में फैली हुई है। वह अदृष्ट, अपार परमात्मा हरेक शरीर में बसा हुआ है। उस अदृष्ट, अपरंपार, सच्चे परमेश्वर से अहंत्व का नाश करके ही मिला जाता है। अपने अहम्, ममता एवं लोभ को जला दो और शब्द द्वारा मन की मैल दूर कर दो। श्रद्धा से उसके द्वार जाकर उसके दर्शन करो। हे तारणहार ! इस संसार-सागर से तार दो। हे नानक ! जिसने हरि को हृदय में बसा लिया है, वह हरि का नामामृत चखकर तृप्त हो गया है॥ ४॥ १॥

बिलावलु महला १ ॥ मै मनि चाउ घणा साचि विगासी राम ॥ मोही प्रेम पिरे प्रभि अबिनासी राम ॥ अविगतो हरि नाथु नाथह तिसै भावै सो थीऐ ॥ किरपालु सदा दइआलु दाता जीआ अंदरि तूं जीऐ ॥ मै अवरु गिआनु न धिआनु पूजा हरि नामु अंतरि वसि रहे ॥ भेखु भवनी हठु न जाना नानका सचु गहि रहे ॥ १ ॥ भिंनड़ी रैणि भली दिनस सुहाए राम ॥ निज घरि सूतड़ीए पिरमु जगाए राम ॥ नव हाणि नव धन सबदि जागी आपणे पिर भाणीआ ॥ तजि कूड़ु कपटु सुभाउ दूजा चाकरी लोकाणीआ ॥ मै नामु हरि का हारु कंठे साच सबदु नीसाणिआ ॥ कर जोड़ि नानकु साचु मागै नदरि करि तुधु भाणिआ ॥ २ ॥ जागु सलोनड़ीए बोलै गुरबाणी राम ॥ जिनि सुणि मंनिअड़ी अकथ कहाणी राम ॥ अकथ कहाणी पदु निरबाणी को विरला गुरमुखि बूझए ॥ ओहु सबदि समाए आपु गवाए त्रिभवण सोझी सूझए ॥ रहै अतीतु अपरंपरि राता साचु मनि गुण सारिआ ॥ ओहु पूरि रहिआ सरब ठाई नानका उरि धारिआ ॥ ३ ॥ महलि बुलाइड़ीए भगति सनेही राम ॥ गुरमति मनि रहसी सीझसि देही राम ॥ मनु मारि रीझै सबदि सीझै त्रै लोक नाथु पछाणए ॥ मनु डीगि डोलि न जाइ कत ही आपणा पिरु जाणए ॥ मै आधारु तेरा तू खसमु मेरा मै ताणु तकीआ तेरओ ॥ साचि सूचा सदा नानक गुर सबदि झगरु निबेरओ ॥ ४ ॥ २ ॥

हे सखी! मेरे मन में बड़ा चाव उत्पन्न हो गया है, मैं सत्य द्वारा खिली रहती हूँ। अविनाशी प्रभु के प्रेम ने मुझे मोह लिया है। अटल परमात्मा नाथों का नाथ है, जो उसे भाता है, वही होता है। हे दाता! तू सदैव कृपालु एवं दयालु है और सब जीवों के अन्दर तू ही जीवन रूप में है। मैं किसी ज्ञान, ध्यान एवं पूजा को नहीं मानती, हरि-नाम मेरे मन में बस रहा है। हे नानक! मैं किसी भेष, तीर्थ एवं हठयोग को नहीं मानती, क्योंकि मैंने सत्य को ग्रहण कर लिया है॥ १॥ प्रभु के प्रेम में भीगी हुई जीव-स्त्री को अपने जीवन की रातें बहुत अच्छी लगती हैं और दिन भी सुन्दर लगते हैं। अपनी अन्तरात्मा में अज्ञान की निद्रा में सोई हुई जीव-स्त्री को प्रभु प्रेम जगा देता है। नवयौवना नारी शब्द द्वारा जाग गई है और अपने प्रियतम को अच्छी लगने लगी है। मैंने झूठ, कपट, द्वैतभाव एवं लोगों की चाकरी छोड़कर हरि-नाम का हार अपने गले में डाल लिया है। अब सच्चे शब्द का परवाना मुझे मिल गया है। हे प्रभु! नानक दोनों हाथ जोड़कर तुझसे सत्य ही माँगता है, यदि तुझे भला लगे तो कृपा-दृष्टि कर दो॥ २॥ हे सलोनी! अज्ञान की निद्रा से जागकर गुरुवाणी का पाठ कर। जिसने मन लगाकर अकथनीय कहानी सुनी है, उसने अकथनीय कहानी सुनकर निर्वाण पद पा लिया है। इस तथ्य को कोई विरला गुरुमुख ही बूझता है। वह शब्द में लीन होकर अपना अहंत्व दूर करके तीनों लोकों का ज्ञान प्राप्त कर लेता है। वह अपरंपार प्रभु में लीन हुआ विरक्त बना रहता है और मन में सत्य का ही गुणगान करता रहता है। हे नानक! उसने उस परमात्मा को अपने हृदय में बसा लिया है, जो हर जगह पर बसा हुआ है॥ ३॥ हे जीव-स्त्री! जिस परमात्मा ने तुझे अपने महल में बुला लिया है, वह भक्ति से प्रेम करने वाला है। गुरु के उपदेश द्वारा भक्ति करने से मन में आनंद बना रहता है और शरीर अपने मनोरथ में सफल हो जाता है। जो जीव-स्त्री मन को मारकर प्रसन्न होती है, वह शब्द द्वारा अपने मनोरथ में सफल हो जाती है। इस प्रकार वह त्रिलोकी नाथ को पहचान लेती है। जो अपने प्रियतम-प्रभु को जान लेती है, उसका मन कभी भी डगमगाता नहीं और न ही कहीं ओर जाती है। हे परमात्मा! तू मेरा मालिक है, मुझे तेरा ही आसरा है और मुझे तेरा ही आत्मबल है। हे नानक! सत्य में लीन रहने वाला सदैव शुद्ध है, गुरु के शब्द ने सारा झगड़ा समाप्त कर दिया है॥ ४॥ २॥

छंत बिलावलु महला ४ मंगल ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

मेरा हरि प्रभु सेजै आइआ मनु सुखि समाणा राम ॥ गुरि तुठै हरि प्रभु पाइआ रंगि रलीआ माणा राम ॥ वडभागीआ सोहागणी हरि मसतकि माणा राम ॥ हरि प्रभु हरि सोहागु है नानक मनि भाणा राम ॥ १ ॥ निंमाणिआ हरि माणु है हरि प्रभु हरि आपै राम ॥ गुरमुखि आपु गवाइआ नित हरि हरि जापै राम ॥ मेरे हरि प्रभ भावै सो करै हरि रंगि हरि रापै राम ॥ जनु नानकु सहजि मिलाइआ हरि रसि हरि ध्रापै राम ॥ २ ॥ माणस जनमि हरि पाईऐ हरि रावण वेरा राम ॥ गुरमुखि मिलु सोहागणी रंगु होइ घणेरा राम ॥ जिन माणस जनमि न पाइआ तिन्ह भागु मंदेरा राम ॥ हरि हरि हरि हरि राखु प्रभ नानकु जनु तेरा राम ॥ ३ ॥ गुरि हरि प्रभु अगमु द्रिड़ाइआ मनु तनु रंगि भीना राम ॥ भगति वछलु हरि नामु है गुरमुखि हरि लीना राम ॥ बिनु हरि नाम न जीवदे जिउ जल बिनु मीना राम ॥ सफल जनमु हरि पाइआ नानक प्रभि कीना राम ॥ ४ ॥ १ ॥ ३ ॥

मेरा प्रभु मेरी हृदय रूपी सेज पर आ गया है, जिससे मन सुखी हो गया है। गुरु के प्रसन्न होने पर ही मैंने प्रभु को पाया है, अब मैं उससे रंगरलियाँ मना रही हूँ। वही जीव-स्त्री खुशनसीब एवं सुहागिन है, जिसके माथे पर हरि-नाम रूपी रत्न उदय है। हे नानक! प्रभु ही मेरा सुहाग है, जो मेरे मन को भा रहा है॥ १॥ विनम्र एवं सम्मानहीन जीवों के लिए प्रभु ही माननीय है और प्रभु

ही सबके लिए पूज्य है। जिसने गुरु के माध्यम से अपने अहंत्व को दूर कर लिया है, वह नित्य प्रभु का नाम जपता रहता है। मेरे प्रभु को जो अच्छा लगता है, वही करता है। इसलिए वह हरि के रंग में ही लीन रहता है। दास नानक को प्रभु ने सहज ही अपने साथ मिला लिया है और वह हरि-रस का पान करके तृप्त रहता है॥ २॥ मानव जन्म में ही भगवान को पाया जा सकता है, इसलिए यह हरि-स्मरण का सुनहरी समय है। गुरु के माध्यम से जीवात्मा परमात्मा से मिलकर सुहागिन बन जाती है और बड़ा आनंद प्राप्त करती है। जिन्होंने मनुष्य जन्म में भगवान को प्राप्त नहीं किया, यह उनका दुर्भाग्य है। हे प्रभु ! नानक तेरा दास है, अपनी शरण में रखो॥ ३॥ गुरु ने ईश्वर का नाम मुझे दृढ़ करा दिया है, जिससे मन-तन उसके रंग में भीग गया है। हरि नाम भक्तवत्सल है, गुरु के माध्यम से हरि में लीन हुआ रहता हूँ। जैसे जल के बिना मछली नहीं रह सकती, वैसे ही भक्तजन हरि-नाम के बिना जीवित नहीं रह सकते। हे नानक ! जिसने ईश्वर को पा लिया है, उसका जीवन सफल हो गया है॥ ४॥ १॥ ३॥

बिलावलु महला ४ सलोकु ॥ हरि प्रभु सजणु लोड़ि लहु मनि वसै वडभागु ॥ गुरि पूरै वेखालिआ नानक हरि लिव लागु ॥ १ ॥ छंत ॥ मेरा हरि प्रभु रावणि आईआ हउमै बिखु झागे राम ॥ गुरमति आपु मिटाइआ हरि हरि लिव लागे राम ॥ अंतरि कमलु परगासिआ गुर गिआनी जागे राम ॥ जन नानक हरि प्रभु पाइआ पूरै वडभागे राम ॥ १ ॥ हरि प्रभु हरि मनि भाइआ हरि नामि वधाई राम ॥ गुरि पूरै प्रभु पाइआ हरि हरि लिव लाई राम ॥ अगिआनु अंधेरा कटिआ जोति परगटिआई राम ॥ जन नानक नामु अधारु है हरि नामि समाई राम ॥ २ ॥ धन हरि प्रभि पिआरै रावीआ जां हरि प्रभ भाई राम ॥ अखी प्रेम कसाईआ जिउ बिलक मसाई राम ॥ गुरि पूरै हरि मेलिआ हरि रसि आघाई राम ॥ जन नानक नामि विगसिआ हरि हरि लिव लाई राम ॥ ३ ॥ हम मूरख मुगध मिलाइआ हरि किरपा धारी राम ॥ धनु धंनु गुरू साबासि है जिनि हउमै मारी राम ॥ जिन्ह वडभागीआ वडभागु है हरि हरि उर धारी राम ॥ जन नानक नामु सलाहि तू नामे बलिहारी राम ॥ ४ ॥ २ ॥ ४ ॥

श्लोक॥ अपने सज्जन प्रभु को ढूँढ लो, जिसके मन में बस जाता है, वही भाग्यशाली है। हे नानक ! पूर्ण गुरु ने मुझे उसके दर्शन करवा दिए हैं, इसलिए अब मेरी परमात्मा में ही लगन लगी हुई है॥ १॥ छंद॥ मैं अपने अहंकार रूपी विष को दूर करके प्रभु से रमण करने आई हूँ। गुरु के उपदेश द्वारा मैंने अपने आत्माभिमान को मिटा दिया है और मेरी वृत्ति हरि-नाम में लगी रहती है। मेरा हृदय-कमल खिल गया है, गुरु के ज्ञान ने जगा दिया है। हे नानक ! पूर्ण भाग्य से परमात्मा को प्राप्त किया है॥ १॥ प्रभु ही मेरे मन को भाया है और हरि-नाम ही मेरी बधाई है। पूर्ण गुरु द्वारा प्रभु को पाकर उसमें ही लगन लगाई है। मेरा अज्ञान का अंधेरा मिट गया है और मन में ज्योति प्रज्वलित हो गई है। हे नानक ! नाम ही मेरा जीवनाधार है और हरि-नाम में ही विलीन हो गई हूँ॥ २॥ जब प्रभु को अच्छी लगी तो ही प्यारे प्रभु ने उससे रमण किया। उसकी आँखें प्रेम में ऐसे आकर्षित हो गईं जैसे बिल्ली की आँखें चूहे की ओर होती हैं। पूर्ण गुरु ने हरि से मिला दिया है और हरि-रस पीकर तृप्त हो गई है। हे नानक ! हरि-नाम द्वारा उसका हृदय-कमल खिल गया है और वह हरि में ही लगन लगा कर रखती है॥ ३॥ ईश्वर ने कृपा करके मुझ मूर्ख एवं नासमझ को अपने साथ मिला लिया है। वह गुरु धन्य है, प्रशंसा का पात्र है, जिसने मेरा अहंकार नाश कर दिया है। जिन भाग्यशालियों का भाग्य उदय हो गया है, उन्होंने परमात्मा को अपने हृदय में बसा लिया है। हे नानक ! तू नाम की स्तुति करता रह और नाम पर बलिहारी हो जा॥ ४॥ २॥ ४॥

बिलावलु महला ५ छंत ੧ਓੰ सतिगुर प्रसादि ॥

मंगल साजु भइआ प्रभु अपना गाइआ राम ॥ अबिनासी वरु सुणिआ मनि उपजिआ चाइआ राम ॥ मनि प्रीति लागै वडै भागै कब मिलीऐ पूरन पते ॥ सहजे समाईऐ गोविंदु पाईऐ देहु सखीए मोहि मते ॥ दिनु रैणि ठाढी करउ सेवा प्रभु कवन जुगती पाइआ ॥ बिनवंति नानक करहु किरपा लैहु मोहि लड़ि लाइआ ॥ १ ॥ भइआ समाहड़ा हरि रतनु विसाहा राम ॥ खोजी खोजि लधा हरि संतन पाहा राम ॥ मिले संत पिआरे दइआ धारे कथहि अकथ बीचारो ॥ इक चिति इक मनि धिआइ सुआमी लाइ प्रीति पिआरो ॥ कर जोड़ि प्रभ पहि करि बिनंती मिलै हरि जसु लाहा ॥ बिनवंति नानक दासु तेरा मेरा प्रभु अगम अथाहा ॥ २ ॥ साहा अटलु गणिआ पूरन संजोगो राम ॥ सुखह समूह भइआ गइआ विजोगो राम ॥ मिलि संत आए प्रभ धिआए बणे अचरज जाञीआं ॥ मिलि इकत्र होए सहजि ढोए मनि प्रीति उपजी माञीआ ॥ मिलि जोति जोती ओति पोती हरि नामु सभि रस भोगो ॥ बिनवंति नानक सभ संति मेली प्रभु करण कारण जोगो ॥ ३ ॥ भवनु सुहावड़ा धरति सभागी राम ॥ प्रभु घरि आइअड़ा गुर चरण लागी राम ॥ गुर चरण लागी सहजि जागी सगल इछा पुंनीआ ॥ मेरी आस पूरी संत धूरी हरि मिले कंत विछुंनिआ ॥ आनंद अनदिनु वजहि वाजे अहं मति मन की तिआगी ॥ बिनवंति नानक सरणि सुआमी संतसंगि लिव लागी ॥ ४ ॥ १ ॥

हे सखी ! बड़ा खुशी का अवसर आ बना है, मैंने अपने प्रभु का यशोगान किया है। जब अपने अविनाशी वर का नाम सुना तो मेरे मन में बड़ा चाव उत्पन्न हो गया। बड़े भाग्य से मेरे मन में उसके लिए प्रीति लगी है, अब पूर्ण पति-प्रभु से कब मिलन होगा ? हे सखी ! मुझे ऐसी शिक्षा दो कि मैं गोविंद को पा लूँ और सहज ही उसमें लीन रहूँ। मैं दिन-रात उसकी बड़ी सेवा करूँगी, फिर किस युक्ति से प्रभु को पाया जा सकता है। नानक की विनती है कि हे प्रभु ! कृपा करके मुझे अपने साथ मिला लो॥ १॥ जब शुभ समय आया तो मैंने हरि रूपी रत्न खरीद लिया। खोजी ने खोज कर उसे हरि के संतों से ढूँढा है। मुझे प्यारे संत मिल गए हैं, जो दया करके अकथनीय कथा करते रहते हैं। मैं प्रेम-प्रीति लगाकर एकाग्रचित होकर अपने स्वामी का ध्यान करती रहती हूँ। अपने हाथ जोड़कर मैं प्रभु से विनती करती हूँ कि मुझे हरि-यश रूपी लाभ प्राप्त हो। नानक विनती करता है कि हे अगम्य-अथाह प्रभु ! मैं तेरा दास हूँ॥ २॥ हे सखी ! प्रभु से विवाह का मुहूर्त अटल है और सारे संयोग पूरे मिलते हैं। मुझे सर्व सुख प्राप्त हो गए हैं और मेरा वियोग दूर हो गया है। संत मिलकर आए हैं, जो प्रभु का ध्यान कर रहे हैं। इस तरह वे अद्‌भुत बाराती बने हुए हैं। वे सभी इकट्ठे होकर बारात में मिलकर शान्ति से मेरे घर आ पहुँचे हैं। मेरे संबंधियों के मन में उनके लिए प्रेम उत्पन्न हो गया है। मेरी ज्योति परमज्योति में मिलकर ताने-बाने की तरह एक हो गई है। सभी मिलकर हरि-नाम रूपी रस भोग रहे हैं। नानक विनती करता है कि संतों ने जीव-स्त्री का उस प्रभु से मिलन करवा दिया है, जो सब करने-कराने में समर्थ है॥ ३॥ मेरा घर बड़ा सुन्दर बन गया है, धरती भी भाग्यशाली हो गई है। मेरा प्रभु घर में आया है। मैं गुरु के चरणों में लग गई हूँ और अब मैं सहज ही अज्ञान की निद्रा से जाग गई हूँ, मेरी सब कामनाएँ पूरी हो गई हैं। संतों की चरण-धूलि लेने से मेरी आशा पूरी हो गई है, मेरा बिछुड़ा हुआ पति-प्रभु मुझे मिल गया है। मेरा हर दिन आनंद में व्यतीत होता है, मन में अनहद शब्द बजता रहता है और मैंने अपने मन की अहंबुद्धि त्याग दी है। नानक की विनती है कि हे स्वामी ! मैं तेरी शरण में आया हूँ और संतों के संग तुझसे ही लगन लगी रहती है॥ ४॥ १॥

बिलावलु महला ५ ॥ भाग सुलखणा हरि कंतु हमारा राम ॥ अनहद बाजित्रा तिसु धुनि दरबारा राम ॥ आनंद अनदिनु वजहि वाजे दिनसु रैणि उमाहा ॥ तह रोग सोग न दूखु बिआपै जनम मरणु न ताहा ॥ रिधि सिधि सुधा रसु अंम्रितु भगति भरे भंडारा ॥ बिनवंति नानक बलिहारि वंञा पारब्रहम प्रान अधारा ॥ १ ॥ सुणि सखीअ सहेलड़ीहो मिलि मंगलु गावह राम ॥ मनि तनि प्रेमु करे तिसु प्रभ कउ रावह राम ॥ करि प्रेमु रावह तिसै भावह इक निमख पलक न तिआगीऐ ॥ गहि कंठि लाईऐ नह लजाईऐ चरन रज मनु पागीऐ ॥ भगति ठगउरी पाइ मोहह अनत कतहू न धावह ॥ बिनवंति नानक मिलि संगि साजन अमर पदवी पावह ॥ २ ॥ बिसमन बिसम भई पेखि गुण अबिनासी राम ॥ करु गहि भुजा गही कटि जम की फासी राम ॥ गहि भुजा लीन्ही दासि कीन्ही अंकुरि उदोतु जणाइआ ॥ मलन मोह बिकार नाठे दिवस निरमल आइआ ॥ द्रिसटि धारी मनि पिआरी महा दुरमति नासी ॥ बिनवंति नानक भई निरमल प्रभ मिले अबिनासी ॥ ३ ॥ सूरज किरणि मिले जल का जलु हूआ राम ॥ जोती जोति रली संपूरनु थीआ राम ॥ ब्रहमु दीसै ब्रहमु सुणीऐ एकु एकु वखाणीऐ ॥ आतम पसारा करणहारा प्रभ बिना नही जाणीऐ ॥ आपि करता आपि भुगता आपि कारणु कीआ ॥ बिनवंति नानक सेई जाणहि जिन्ही हरि रसु पीआ ॥ ४ ॥ २ ॥

मेरा भाग्य उत्तम है, चूँकि ईश्वर ही हमारा पति है। उसके दरबार में अनहद ध्वनि वाले वाद्य बजते रहते हैं। वहाँ हर समय आनंद ही आनंद बना रहता है, खुशियों के बाजे बजते रहते हैं और दिन-रात उल्लास बना रहता है। वहाँ रोग-शोक एवं कोई दुख नहीं और न ही जन्म-मरण का बंधन है। वहाँ ऋद्धियाँ-सिद्धियाँ, सुधा-रस मौजूद है और भक्ति के भण्डार भरे हुए हैं। नानक विनती करते हैं कि मैं अपने प्राणाधार परब्रह्म पर बलिहारी जाता हूँ॥ १॥ हे सखियो-सहेलियो! सुनो; आओ हम मिलकर प्रभु का मंगलगान करें। अपने तन-मन में प्रेम पैदा करके उसे याद करें। जब प्रेमपूर्वक हम उसे स्मरण करती हैं तो हम उसे बहुत अच्छी लगती हैं। इसलिए हमें पलक झपकने जितने समय के लिए उसके सिमरन का त्याग नहीं करना चाहिए। हमें पकड़कर उसे गले से लगा लेना चाहिए और इस काम में कोई शर्म नहीं करनी चाहिए। हमें उसकी चरण-धूलि मन में लगा लेनी चाहिए। आओ, भक्ति रूपी ठगउरी खिला कर प्रभु को मुग्ध कर लें और कहीं ओर मत भटकें। नानक विनती करते हैं कि हम अपने साजन से मिलकर अमर पदवी प्राप्त कर लें॥ २॥ मैं अनश्वर प्रभु के गुणों को देखकर आश्चर्यचकित हो गई हूँ। उसने मेरा हाथ एवं बाँह पकड़कर मेरी यम की फाँसी काट दी है। उसने बाँह पकड़कर मुझे अपनी दासी बना लिया और मेरे भाग्य का अंकुर उदय कर दिया है। मेरे मन में से मलिनता, मोह एवं विकार भाग गए हैं और जीवन का निर्मल दिवस उदय हो गया है। उसकी कृपा-दृष्टि मेरे मन को बड़ी प्यारी लगी है और मन में से महादुर्मति नाश हो गई है। नानक विनती करते हैं कि अविनाशी प्रभु को मिलने से मेरी बुद्धि निर्मल हो गई है॥ ३॥ जैसे सूर्य की किरण सूर्य में मिल जाती है और जल का जल में मेल हो जाता है, वैसे ही आत्मज्योति परमज्योति में मिल गई है और जीव रूपी अंश सम्पूर्ण हो गया है। जो कुछ दिखाई एवं सुनाई दे रहा है, वह ब्रह्म ही है और ब्रह्म का ही बखान हो रहा है। रचयिता ने स्वयं ही परमज्योति का प्रसार किया हुआ है और प्रभु के बिना कुछ भी नहीं जाना जाता। वह स्वयं ही कर्ता है, स्वयं ही भोक्ता है और उसने स्वयं ही यह संसार बनाया है। नानक विनती करते हैं कि इस तथ्य को वही जानता है, जिसने हरि-रस का पान किया है॥ ४॥ २॥

बिलावलु महला ५ छंत ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

सखी आउ सखी वसि आउ सखी असी पिर का मंगलु गावह ॥ तजि मानु सखी तजि मानु सखी मतु आपणे प्रीतम भावह ॥ तजि मानु मोहु बिकारु दूजा सेवि एकु निरंजनो ॥ लगु चरण सरण दइआल प्रीतम सगल दुरत बिखंडनो ॥ होइ दास दासी तजि उदासी बहुड़ि बिधी न धावा ॥ नानकु पइअंपै करहु किरपा तामि मंगलु गावा ॥ १ ॥ अंम्रितु प्रिअ का नामु मै अंधुले टोहनी ॥ ओह जोहै बहु परकार सुंदरि मोहनी ॥ मोहनी महा बचित्रि चंचलि अनिक भाव दिखावए ॥ होइ ढीठ मीठी मनहि लागै नामु लैण न आवए ॥ ग्रिह बनहि तीरै बरत पूजा बाट घाटै जोहनी ॥ नानकु पइअंपै दइआ धारहु मै नामु अंधुले टोहनी ॥ २ ॥ मोहि अनाथ प्रिअ नाथ जिउ जानहु तिउ रखहु ॥ चतुराई मोहि नाहि रीझावउ कहि मुखहु ॥ नह चतुरि सुघरि सुजान बेती मोहि निरगुनि गुनु नही ॥ नह रूप धूप न नैण बंके जह भावै तह रखु तुही ॥ जै जै जइअंपहि सगल जा कउ करुणापति गति किनि लखहु ॥ नानकु पइअंपै सेव सेवकु जिउ जानहु तिउ मोहि रखहु ॥ ३ ॥ मोहि मछुली तुम नीर तुझ बिनु किउ सरै ॥ मोहि चात्रिक तुम्ह बूंद त्रिपतउ मुखि परै ॥ मुखि परै हरै पिआस मेरी जीअ हीआ प्रानपते ॥ लाडिले लाड लडाइ सभ महि मिलु हमारी होइ गते ॥ चीति चितवउ मिटु अंधारे जिउ आस चकवी दिनु चरै ॥ नानकु पइअंपै प्रिअ संगि मेली मछुली नीरु न वीसरै ॥ ४ ॥ धनि धंनि हमारे भाग घरि आइआ पिरु मेरा ॥ सोहे बंक दुआर सगला बनु हरा ॥ हर हरा सुआमी सुखह गामी अनद मंगल रसु घणा ॥ नवल नवतन नाहु बाला कवन रसना गुन भणा ॥ मेरी सेज सोही देखि मोही सगल सहसा दुखु हरा ॥ नानकु पइअंपै मेरी आस पूरी मिले सुआमी अपरंपरा ॥ ५ ॥ १ ॥ ३ ॥

हे सखी ! आओ, निष्ठापूर्वक आओ, हम सब मिलकर प्रभु का मंगलगान करें। हे सखी ! अपने अभिमान को त्याग दो, शायद इस तरह प्रियतम को भा जाएँ। अपना अहंकार, मोह एवं विकारों को त्यागकर पावन रूप ईश्वर की उपासना करो। उस दयालु प्रियतम के चरणों की शरण में लग जाओ, वह सब पाप नाश करने वाला है। अपनी उदासी को तजकर प्रभु के दासों की दासी बन जाओ, फिर तुझे दोबारा भटकना नहीं पड़ेगा। नानक विनय करते हैं कि हे परमेश्वर ! ऐसी कृपा करो कि तेरा स्तुतिगान करते रहें॥ १॥ मेरे प्रिय का अमृत नाम अन्धे के लिए छड़ी के समान है। सुन्दर मोहिनी अनेक प्रकार से जीव को आकर्षित करने का प्रयास करती है। यह मोहिनी बड़ी विचित्र एवं चंचल है और जीवों को अनेक नखरे दिखाती है। यह ढीठ बनकर मन को मीठी लगने लगती है, इसी वजह से जीव को परमात्मा का नाम स्मरण नहीं होता। यह घर, वन, तट, व्रत-पूजा करते वक्त, राह-घाट हर जगह छलती रहती है। नानक विनय करते हैं कि हे परमात्मा ! दया करो; तेरा नाम ही मुझ अन्धे के लिए छड़ी समान है॥ २॥ हे प्रिय नाथ ! जैसे तुझे उपयुक्त लगे, वैसे ही मुझ अनाथ की रक्षा करो। मैं कोई चतुराई नहीं जानती कि अपने मुँह से कुछ कहकर तुझे प्रसन्न कर सकूँ। मैं चतुर, सुघड़, समझदार एवं बुद्धिमान भी नहीं। मैं निर्गुण हूँ और मुझ में कोई गुण नहीं। न मेरा रूप, सौन्दर्य है और न ही सुन्दर नयन हैं। जैसे तुझे ठीक लगता है, वैसे ही मुझे रखो। हे करुणापति ! सारे लोग तेरी जय-जयकार करते रहते हैं और तेरी गति कोई नहीं जानता। नानक विनय करते हैं कि हे प्रभु ! मैं तेरा सेवक हूँ, मुझे अपनी सेवा का अवसर दीजिए, जैसे तुझे उपयुक्त लगे, वैसे ही मेरी रक्षा करो॥ ३॥ हे प्रभु ! मैं मछली हूँ और तू पानी है, तेरे बिना मेरा गुजारा कैसे हो सकता है ? मैं पपीहा हूँ और तू स्वाति-बूँद है। मैं तभी तृप्त होता हूँ, जब यह बूँद मेरे मुँह में पड़ती है। यह बूँद मुँह में पड़ने से मेरी प्यास बुझा देती

है। हे प्राणपति ! तू मेरी जिन्दगी और हृदय है। हे लाडले ! तेरे लाड लडाने से हमारी गति हो जाती है। जैसे चकवी को आशा होती है कि दिन उदय होगा, वैसे ही मैं चित्त में तुझे याद करती रहती हूँ कि मेरा अज्ञान रूपी अंधेरा मिट जाए। नानक विनय करते हैं कि मुझे प्रभु ने अपने साथ मिला लिया है और मछली के समान परमात्मा रूपी जल को नहीं भूलती॥ ४॥ मेरा भाग्य अच्छा है कि प्रभु मेरे घर में आ गया है। मेरे घर के द्वार सुन्दर हो गए हैं और सारा बाग हरा-भरा हो गया है। सुख देने वाले स्वामी ने मेरा जीवन खुशहाल कर दिया है। अब मन में बड़ा आनंद, खुशियाँ एवं स्वाद बना रहता है। मेरा सुकुमार पति सदैव नवीन एवं बड़ा सुन्दर है, फिर मैं अपनी जीभ से उसके कौन-से गुण बखान करूँ ? मेरी सेज सुन्दर हो गई है और उसे देखकर मेरा सारा संशय एवं दुख समाप्त हो गया है। नानक विनय करते हैं कि अपरंपार स्वामी के मिलन से मेरी आशा पूरी हो गई है॥ ५॥ १॥ ३॥

बिलावलु महला ५ छंत मंगल ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

सलोकु ॥ सुंदर सांति दइआल प्रभ सरब सुखा निधि पीउ ॥ सुख सागर प्रभ भेटिऐ नानक सुखी होत इहु जीउ ॥ १ ॥ छंत ॥ सुख सागर प्रभु पाईऐ जब होवै भागो राम ॥ माननि मानु वञाईऐ हरि चरणी लागो राम ॥ छोडि सिआनप चातुरी दुरमति बुधि तिआगो राम ॥ नानक पउ सरणाई राम राइ थिरु होइ सुहागो राम ॥ १ ॥ सो प्रभु तजि कत लागीऐ जिसु बिनु मरि जाईऐ राम ॥ लाज न आवै अगिआन मती दुरजन बिरमाईऐ राम ॥ पतित पावन प्रभु तिआगि करे कहु कत ठहराईऐ राम ॥ नानक भगति भाउ करि दइआल की जीवन पदु पाईऐ राम ॥ २ ॥ स्री गोपालु न उचरहि बलि गईए दुहचारणि रसना राम ॥ प्रभु भगति वछलु नह सेवही काइआ काक ग्रसना राम ॥ भ्रमि मोही दूख न जाणही कोटि जोनी बसना राम ॥ नानक बिनु हरि अवरु जि चाहना बिसटा क्रिम भसमा राम ॥ ३ ॥ लाइ बिरहु भगवंत संगे होइ मिलु बैरागनि राम ॥ चंदन चीर सुगंध रसा हउमै बिखु तिआगनि राम ॥ ईत ऊत नह डोलीऐ हरि सेवा जागनि राम ॥ नानक जिनि प्रभु पाइआ आपणा सा अटल सुहागनि राम ॥ ४ ॥ १ ॥ ४ ॥

श्लोक॥ मेरा प्रिय प्रभु बड़ा सुन्दर, शान्ति का पुंज, दयालु एवं सर्व सुखों का भण्डार है। हे नानक ! यदि सुख-सागर प्रभु से भेंट हो जाए तो यह जिन्दगी सुखी हो जाती है॥ १॥ छंद॥ जब भाग्योदय हो तो सुख-सागर प्रभु की प्राप्ति हो जाती है। अपना मान-अभिमान त्याग कर भगवान के चरणों में लीन हो जाओ। अपनी अक्लमंदी एवं चतुराई को छोड़कर खोटी मति वाली बुद्धि को त्याग दीजिए। नानक का कथन है कि हे जीवात्मा ! राम की शरण में आने से तुम्हारा सुहाग अटल हो जाएगा॥ १॥ जिसके बिना जीना मौत के बराबर है, उस प्रभु को त्याग कर किसी अन्य को कैसे अपनाया जा सकता है ? नासमझ जीव को शर्म तो आती नहीं अपितु दुर्जन लोगों के साथ ही प्रवृत्त रहता है। पतितपावन प्रभु को त्याग कर कैसे शान्ति मिल सकती है। हे नानक ! दयालु परमात्मा की भक्ति करके ही जीव मोक्ष प्राप्त कर सकता है॥ २॥ ऐसी दुश्चरित रसना को जल जाना चाहिए जो परमात्मा का नाम उच्चारण नहीं करती। यदि भक्तवत्सल प्रभु की भक्ति न की तो इस काया को कौए ने अपना ग्रास बना लेना है। भ्रम में भूला हुआ प्राणी इन दुखों को नहीं जानता जो करोड़ों योनियों में कष्ट भोगता है। हे नानक ! ईश्वर के बिना किसी अन्य वस्तु की अभिलाषा करना विष्ठा के कीड़े की तरह मरकर भस्म हो जाने के तुल्य है॥ ३॥ दुनिया से वैराग्यवान बनकर भगवंत के संग प्रेम बढ़ाकर उससे मिल जाओ। चंदन, सुन्दर वस्त्र, सुगन्धियाँ,

स्वादिष्ट पदार्थ एवं अहंत्व रूपी विष को त्याग दीजिए। भगवान की भक्ति में जाग्रत रहो, इधर-उधर मत भटको। हे नानक! जिन्होंने अपना प्रभु पा लिया है, वही अटल सुहागिन बन गई है॥ ४॥ १॥ ४॥

बिलावलु महला ५ ॥ हरि खोजहु वडभागीहो मिलि साधू संगे राम ॥ गुन गोविद सद गाईअहि पारब्रहम कै रंगे राम ॥ सो प्रभु सद ही सेवीऐ पाईअहि फल मंगे राम ॥ नानक प्रभ सरणागती जपि अनत तरंगे राम ॥ १ ॥ इकु तिलु प्रभू न वीसरै जिनि सभु किछु दीना राम ॥ वडभागी मेलावड़ा गुरमुखि पिरु चीन्हा राम ॥ बाह पकड़ि तम ते काढिआ करि अपुना लीना राम ॥ नामु जपत नानक जीवै सीतलु मनु सीना राम ॥ २ ॥ किआ गुण तेरे कहि सकउ प्रभ अंतरजामी राम ॥ सिमरि सिमरि नाराइणै भए पारगरामी राम ॥ गुन गावत गोविंद के सभ इछ पुजामी राम ॥ नानक उधरे जपि हरे सभहू का सुआमी राम ॥ ३ ॥ रस भिंनिअड़े अपुने राम संगे से लोइण नीके राम ॥ प्रभ पेखत इछा पुंनीआ मिलि साजन जी के राम ॥ अंम्रित रसु हरि पाइआ बिखिआ रस फीके राम ॥ नानक जलु जलहि समाइआ जोती जोति मीके राम ॥ ४ ॥ २ ॥ ५ ॥ ६ ॥

हे भाग्यशालियो! साधुओं के संग मिलकर भगवान की खोज करो। परब्रह्म के रंग में तल्लीन होकर सदैव उसका गुणगान करो। सो ऐसे प्रभु की सदा ही उपासना करनी चाहिए, जिससे मनोवांछित फल मिल जाते हैं। हे नानक! प्रभु की शरण में आकर उसका ही जाप करो, जो जीवन रूपी अनंत लहरें खेल रहा है॥ १॥ जिसने मुझे सबकुछ दिया है, वह प्रभु मुझे एक पल मात्र समय के लिए भी नहीं भूलता। बड़े भाग्य से मेरा उससे मिलाप हुआ है, गुरु के माध्यम से मैंने अपने प्रभु को पहचान लिया है। उसने बाँह पकड़ कर मुझे अज्ञानता के अंधेरे से निकालकर अपना बना लिया है। हे नानक! उसका नाम जपकर ही जीवन पा रहा हूँ और मेरा मन एवं हृदय शीतल हो गया है॥ २॥ हे अन्तर्यामी प्रभु! मैं भला तेरे गुणों का क्या कथन कर सकता हूँ। उस नारायण का सिमरन करके भवसागर से पार हो गया हूँ। गोविन्द का गुणगान करने से मेरी सब कामनाएँ पूरी हो गई हैं। हे नानक! जो सबका स्वामी है, उस हरि का जाप करने से उद्धार हो गया है॥ ३॥ वे नेत्र शुभ हैं, जो अपने राम के नाम-रस से भीगे रहते हैं। साजन प्रभु को मिलकर उसके दर्शन करके मेरी सब इच्छाएँ पूरी हो गई हैं। मैंने हरि का अमृत-रस पा लिया है, जिससे माया रूपी विष के स्वाद फीके हो गए हैं। हे नानक! जैसे जल जल में मिल गया है, वैसे ही आत्मज्योति परम-ज्योति में विलीन होकर एक हो गई है॥ ४॥ २॥ ५॥ ६॥

बिलावल की वार महला ४ १ओं सतिगुर प्रसादि ॥

सलोक म: ४ ॥ हरि उतमु हरि प्रभु गाविआ करि नादु बिलावलु रागु ॥ उपदेसु गुरू सुणि मंनिआ धुरि मसतकि पूरा भागु ॥ सभ दिनसु रैणि गुण उचरै हरि हरि हरि उरि लिव लागु ॥ सभु तनु मनु हरिआ होइआ मनु खिड़िआ हरिआ बागु ॥ अगिआनु अंधेरा मिटि गइआ गुर चानणु गिआनु चरागु ॥ जनु नानकु जीवै देखि हरि इक निमख घड़ी मुखि लागु ॥ १ ॥

श्लोक महला ४॥ बिलावल राग गा कर हमने तो उत्तम परमात्मा का ही यशोगान किया है। गुरु के उपदेश को सुनकर मन में धारण कर लिया है, पूर्ण भाग्य उदय हो गया है। मैं दिन-रात उसका गुणानुवाद करता हूँ और हृदय में हरि-नाम की ही लगन लगी रहती है। मेरा तन-मन खिल

गया है, हृदय रूपी वाटिका भी खिलकर खुशहाल हो गई है। गुरु के ज्ञान रूपी चिराग का प्रकाश होने से अज्ञान रूपी अंधेरा मिट गया है। नानक तो हरि को देखकर ही जीवन पा रहा है, हे हरि ! एक निमिष एवं एक घड़ी के लिए दर्शन दे दो॥ १॥

म: ३ ॥ बिलावलु तब ही कीजीऐ जब मुखि होवै नामु ॥ राग नाद सबदि सोहणे जा लागै सहजि धिआनु ॥ राग नाद छोडि हरि सेवीऐ ता दरगह पाईऐ मानु ॥ नानक गुरमुखि ब्रहमु बीचारीऐ चूकै मनि अभिमानु ॥ २ ॥

महला ३॥ बिलावल राग तब ही गाना चाहिए, जब मुख में परमात्मा का नाम हो। शब्द द्वारा राग एवं नाद तभी सुन्दर लगते हैं, जब सहज ही परमात्मा में ध्यान लगता है। यदि राग एवं नाद को छोड़कर भगवान की सेवा की जाए तो ही दरबार में आदर प्राप्त होता है। हे नानक ! गुरुमुख बनकर ब्रह्म का चिन्तन करने से मन का अभिमान दूर हो जाता है॥ २॥

पउड़ी ॥ तू हरि प्रभु आपि अगंमु है सभि तुधु उपाइआ ॥ तू आपे आपि वरतदा सभु जगतु सबाइआ ॥ तुधु आपे ताड़ी लाईऐ आपे गुण गाइआ ॥ हरि धिआवहु भगतहु दिनसु राति अंति लए छडाइआ ॥ जिनि सेविआ तिनि सुखु पाइआ हरि नामि समाइआ ॥ १ ॥

पउड़ी॥ हे प्रभु ! तू अगम्य है और तूने ही सब उत्पन्न किया है। यह जितना भी जगत् नजर आ रहा है, तू स्वयं ही इसमें व्याप्त हो रहा है। तूने स्वयं ही समाधि लगाई है और स्वयं ही गुणगान कर रहा है। हे भक्तजनो ! दिन-रात परमात्मा का ध्यान करते रहो, अंत में वही मुक्त करवाता है। जिसने भी उसकी सेवा की है, उसने ही सुख पाया है और वह हरि-नाम में ही विलीन हो गया है॥ १॥

सलोक म: ३ ॥ दूजै भाइ बिलावलु न होवई मनमुखि थाइ न पाइ ॥ पाखंडि भगति न होवई पारब्रहमु न पाइआ जाइ ॥ मनहठि करम कमावणे थाइ न कोई पाइ ॥ नानक गुरमुखि आपु बीचारीऐ विचहु आपु गवाइ ॥ आपे आपि पारब्रहमु है पारब्रहमु वसिआ मनि आइ ॥ जंमणु मरणा कटिआ जोती जोति मिलाइ ॥ १ ॥

श्लोक महला ३॥ द्वैतभाव में पड़कर बिलावल राग गाना असंभव है तथा मनमुखी जीव को कहीं भी ठिकाना नहीं मिलता। पाखण्ड करने से भक्ति नहीं हो सकती और न ही परब्रह्म को पाया जा सकता है। मन के हठ से कर्म करने से सफलता नहीं मिलती। हे नानक ! जो व्यक्ति गुरु के सान्निध्य में आत्म-चिंतन करता है, वह अपने अहंत्व को मिटा देता है। वह परब्रह्म स्वयं ही सबकुछ है और वही मन में आकर बस गया है। उसका जन्म-मरण मिट गया है और आत्म-ज्योति परम-ज्योति में विलीन हो गई है॥ १॥

म: ३ ॥ बिलावलु करिहु तुम्ह पिआरिहो एकसु सिउ लिव लाइ ॥ जनम मरण दुखु कटीऐ सचे रहै समाइ ॥ सदा बिलावलु अनंदु है जे चलहि सतिगुर भाइ ॥ सतसंगती बहि भाउ करि सदा हरि के गुण गाइ ॥ नानक से जन सोहणे जि गुरमुखि मेलि मिलाइ ॥ २ ॥

महला ३॥ हे प्रियजनो ! तुम बिलावल राग गायन करो, एक परमात्मा के साथ लगन लगाओ। इस तरह जन्म-मरण का दुख समाप्त हो जाएगा और तुम सत्य में विलीन रहोगे। यदि सतगुरु की रज़ानुसार चला जाए तो बिलावल राग द्वारा सदैव आनंद बना रहता है। सत्संग में मिलकर निष्ठापूर्वक सदैव परमात्मा का गुणगान करो। हे नानक ! वही जीव सुन्दर है, जो गुरुमुख बनकर प्रभु से मिले रहते हैं॥ २॥

पउड़ी ॥ सभना जीआ विचि हरि आपि सो भगता का मितु हरि ॥ सभु कोई हरि कै वसि भगता कै अनंदु घरि ॥ हरि भगता का मेली सरबत सउ निसुल जन टंग धरि ॥ हरि सभना का है खसमु सो भगत जन चिति करि ॥ तुधु अपड़ि कोइ न सकै सभ झखि झखि पवै झड़ि ॥ २ ॥

पउड़ी॥ सभी जीवों में बसने वाला हरि ही भक्तजनों का घनिष्ठ मित्र है। सबकुछ ईश्वर के वश में है और भक्तों के घर में सदैव आनंद बना रहता है। हरि अपने भक्तों का शुभचिंतक है और उसके भक्तजन टांग पर टांग रखकर अर्थात् बेफिक्र होकर रहते हैं। वह सबका मालिक है, इसलिए भक्तजन उसे ही स्मरण करते रहते हैं। कोई सामान्य जीव भी उसके पास पहुँच नहीं सकता अपितु ख्वार होकर नाश हो जाता है॥ २॥

सलोक म: ३ ॥ ब्रहमु बिंदहि ते ब्राहमणा जे चलहि सतिगुर भाइ ॥ जिन कै हिरदै हरि वसै हउमै रोगु गवाइ ॥ गुण रवहि गुण संग्रहहि जोती जोति मिलाइ ॥ इसु जुग महि विरले ब्राहमण ब्रहमु बिंदहि चितु लाइ ॥ नानक जिन्ह कउ नदरि करे हरि सचा से नामि रहे लिव लाइ ॥ १ ॥

श्लोक महला ३॥ वास्तव में ब्राह्मण वही है, जो ब्रह्म को पहचानता है और सतगुरु की रज़ा में चलता है। जिनके हृदय में भगवान स्थित होता है, उनका अहंकार का रोग दूर हो जाता है। वे गुणों को स्मरण करते रहते हैं और गुणों का ही संग्रह करते हैं और उनकी आत्म-ज्योति परम-ज्योति में विलीन हो जाती है। इस संसार में विरले ही ब्राह्मण हैं, जो एकाग्रचित होकर ब्रह्म को जानते हैं। हे नानक ! जिन पर सच्चा परमात्मा अपनी कृपा-दृष्टि करता है, वे नाम में ही तल्लीन रहते हैं॥ १॥

म: ३ ॥ सतिगुर की सेव न कीतीआ सबदि न लगो भाउ ॥ हउमै रोगु कमावणा अति दीरघु बहु सुआउ ॥ मनहठि करम कमावणे फिरि फिरि जोनी पाइ ॥ गुरमुखि जनमु सफलु है जिस नो आपे लए मिलाइ ॥ नानक नदरी नदरि करे ता नाम धनु पलै पाइ ॥ २ ॥

महला ३॥ जिसने सतगुरु की सेवा नहीं की और न ही शब्द में श्रद्धा रखी है, उसे अहंकार का अति दीर्घ रोग ही लगा है, जो अनेक प्रकार के विकारों के स्वाद में फँसा रहता है। मन के हठ द्वारा कर्म करने से जीव बार-बार योनियों में पड़ता रहता है। उस गुरुमुख का जन्म-सफल है, जिसे परमात्मा अपने साथ मिला लेता है। हे नानक ! जब करुणा-दृष्टि करने वाला अपनी कृपा-दृष्टि करता है तो ही मनुष्य नाम-धन हासिल करता है॥ २॥

पउड़ी ॥ सभ वडिआईआ हरि नाम विचि हरि गुरमुखि धिआईऐ ॥ जि वसतु मंगीऐ साई पाईऐ जे नामि चितु लाईऐ ॥ गुहज गल जीअ की कीचै सतिगुरू पासि ता सरब सुखु पाईऐ ॥ गुरु पूरा हरि उपदेसु देइ सभ भुख लहि जाईऐ ॥ जिसु पूरबि होवै लिखिआ सो हरि गुण गाईऐ ॥ ३ ॥

पउड़ी॥ हरि-नाम में सब बड़ाईयाँ हैं, अत: गुरु के सान्निध्य में हरि का ध्यान करना चाहिए। यदि नाम में चित्त लगाया जाए तो इन्सान जिस वस्तु की कामना करता है, वही उसे मिल जाती है। यदि सतगुरु के पास मन की गहरी बात की जाए तो सर्व सुख प्राप्त हो जाते हैं। पूर्ण गुरु जीव को उपदेश देता है तो सारी भूख मिट जाती है। पूर्व से ही जिसके भाग्य में लिखा होता है, वही भगवान का गुणगान करता है॥ ३॥

सलोक म: ३ ॥ सतिगुर ते खाली को नही मेरै प्रभि मेलि मिलाए ॥ सतिगुर का दरसनु सफलु है जेहा को इछे तेहा फलु पाए ॥ गुर का सबदु अंम्रितु है सभ त्रिसना भुख गवाए ॥ हरि रसु पी संतोखु

होआ सचु वसिआ मनि आए ॥ सचु धिआइ अमरा पदु पाइआ अनहद सबद वजाए ॥ सचो दह दिसि पसरिआ गुर कै सहजि सुभाए ॥ नानक जिन अंदरि सचु है से जन छपहि न किसै दे छपाए ॥ १ ॥

श्लोक महला ३॥ मेरा प्रभु संयोग बनाकर जिसे गुरु से मिला देता है, वह कोई भी सतगुरु से खाली हाथ नहीं लौटता। सतगुरु का दर्शन सफल है, जैसी किसी की कामना होती है, उसे वैसा ही फल मिलता है। गुरु का शब्द अमृत की तरह है, जिससे सारी तृष्णा एवं भूख मिट जाती है। हरि रस पान करके संतोष हो गया है, और मन में सत्य का निवास हो गया है। सत्य का ध्यान करने से अमर पद प्राप्त हो गया है और मन में अनहद शब्द गूँज रहा है। दसों दिशाओं में सत्य का ही प्रसार है, यह अवस्था गुरु के सहज स्वभाव से प्राप्त हुई है। हे नानक! जिनके अन्तर्मन में सत्य मौजूद है, ऐसे भक्तजन किसी के छिपाने से नहीं छिपते अर्थात् लोकप्रिय हो जाते हैं॥ १॥

म: ३ ॥ गुर सेवा ते हरि पाईऐ जा कउ नदरि करेइ ॥ मानस ते देवते भए सची भगति जिसु देइ ॥ हउमै मारि मिलाइअनु गुर कै सबदि सुचेइ ॥ नानक सहजे मिलि रहे नामु वडिआई देइ ॥ २ ॥

महला ३॥ गुरु की सेवा करने से ही ईश्वर को पाया जा सकता है, जिस पर वह अपनी कृपा कर देता है। जिन्हें उसने सच्ची भक्ति दी है, वे मनुष्य से देवते बन गए हैं। गुरु के शब्द द्वारा जिनका जीवन-आचरण शुद्ध हो जाता है, उनका अहंत्व नाश करके ईश्वर उन्हें अपने साथ मिला लेता है। हे नानक! जिन्हें ईश्वर नाम रूपी बड़ाई देता है, वे सहज ही उससे मिले रहते हैं॥ २॥

पउड़ी ॥ गुर सतिगुर विचि नावै की वडी वडिआई हरि करतै आपि वधाई ॥ सेवक सिख सभि वेखि वेखि जीवन्हि ओन्हा अंदरि हिरदै भाई ॥ निंदक दुसट वडिआई वेखि न सकनि ओन्हा पराइआ भला न सुखाई ॥ किआ होवै किस ही की झख मारी जा सचे सिउ बणि आई ॥ जि गल करते भावै सा नित नित चड़ै सवाई सभ झखि झखि मरै लोकाई ॥ ४ ॥

पउड़ी॥ सतगुरु में नाम की बड़ी बड़ाई कर्ता परमेश्वर ने स्वयं ही बढ़ाई है। गुरु के सेवक एवं शिष्य इस बड़ाई को देख देखकर ही जी रहे हैं और उनके हृदय को यही भाया है। परन्तु निंदक-दुष्ट गुरु की बड़ाई को सहन नहीं कर सकते और उन्हें दूसरों का भला अच्छा नहीं लगता। जब गुरु की सत्य से प्रीति बनी हुई है तो किसी के विरोधाभास से कुछ नहीं हो सकता। जो बात परमात्मा को अच्छी लगती है, वह दिन-ब-दिन प्रगति करती रहती है, लेकिन दुनिया के लोग यों ही धक्के खाते रहते हैं॥ ४॥

सलोक म: ३ ॥ ध्रिगु एह आसा दूजे भाव की जो मोहि माइआ चितु लाए ॥ हरि सुखु पल्हरि तिआगिआ नामु विसारि दुखु पाए ॥ मनमुख अगिआनी अंधुले जनमि मरहि फिरि आवै जाए ॥ कारज सिधि न होवनी अंति गइआ पछुताए ॥ जिसु करमु होवै तिसु सतिगुरु मिलै सो हरि हरि नामु धिआए ॥ नामि रते जन सदा सुखु पाइन्हि जन नानक तिन बलि जाए ॥ १ ॥

श्लोक महला ३॥ जो मोह-माया में चित्त को लगाती है, उसकी द्वैतभाव की यह आशा धिक्कार योग्य है। नाशवान पदार्थों के मोह में फँसकर हमने सच्चा सुख त्याग दिया है और प्रभु-नाम को भुलाकर हम दुख ही भोग रहे हैं। मनमुख अज्ञानी जीव अन्धा ही है, वह जन्मता-मरता रहता है और बार-बार दुनिया में आता जाता रहता है। उसका कोई भी कार्य सिद्ध नहीं होता और

अन्त में पछताता हुआ चल देता है। जिस पर प्रभु-कृपा होती है, उसे सतगुरु मिल जाता है और फिर वह प्रभु-नाम का ही ध्यान करता रहता है। नाम में लीन रहने वाला उपासक सदैव सुख हासिल करता है और नानक तो उस पर ही बलिहारी जाता है॥ १॥

म: ३ ॥ आसा मनसा जगि मोहणी जिनि मोहिआ संसारु ॥ सभु को जम के चीरे विचि है जेता सभु आकारु ॥ हुकमी ही जमु लगदा सो उबरै जिसु बखसै करतारु ॥ नानक गुर परसादी एहु मनु तां तरै जा छोडै अहंकारु ॥ आसा मनसा मारे निरासु होइ गुर सबदी वीचारु ॥ २ ॥

महला ३॥ आशा एवं अभिलाषा जगत् को मोह लेने वाली है, जिन्होंने पूरा संसार मोह लिया है। जितना भी यह जगत्-आकार है, हर कोई मृत्यु के वश में है। परमात्मा के हुक्म से ही मृत्यु आती है, वही बचता है, जिसे करतार क्षमा कर देता है। हे नानक! गुरु की कृपा से यह मन तो ही भवसागर से पार होता है, जब अहंकार छोड़ देता है। गुरु-शब्द का चिंतन करके जीव अपनी आशा-अभिलाषा को मिटा कर वैरागी हो जाता है॥ २॥

पउड़ी ॥ जिथै जाईऐ जगत महि तिथै हरि साई ॥ अगै सभु आपे वरतदा हरि सचा निआई ॥ कूड़िआरा के मुह फिटकीअहि सचु भगति वडिआई ॥ सचु साहिबु सचा निआउ है सिरि निंदक छाई ॥ जन नानक सचु अराधिआ गुरमुखि सुखु पाई ॥ ५ ॥

पउड़ी॥ इस जगत् में जिधर भी जाएँ, उधर ही प्रभु स्थित है। सच्चा न्याय करने वाला परमात्मा आगे परलोक में भी सर्वत्र स्वयं ही कार्य चला रहा है। वहाँ झूठे लोगों का ही तिरस्कार होता है, लेकिन सच्चे प्रभु की भक्ति करने वाले को शोभा प्राप्त होती है। सबका मालिक एक ईश्वर सत्य है, उसका न्याय भी सत्य है, निन्दकों के सिर पर धूल ही पड़ती है। हे नानक! गुरु के माध्यम से जिसने सत्य की आराधना की है, उसने ही सुख पाया है॥ ५॥

सलोक म: ३ ॥ पूरै भागि सतिगुरु पाईऐ जे हरि प्रभु बखस करेइ ॥ ओपावा सिरि ओपाउ है नाउ परापति होइ ॥ अंदरु सीतलु सांति है हिरदै सदा सुखु होइ ॥ अंम्रितु खाणा पैन्हणा नानक नाइ वडिआई होइ ॥ १ ॥

श्लोक महला ३॥ यदि प्रभु अनुकंपा कर दे तो ही पूर्ण भाग्य से सतगुरु प्राप्त होता है। जीवन में सब उपायों से उत्तम उपाय यही है कि जीव को नाम प्राप्त हो जाए। इससे मन को बड़ी शान्ति मिलती है और हृदय सदैव सुखी रहता है। हे नानक! नामामृत ही उस जीव का खाना-पहनना अर्थात् जीवन-आचरण बन जाता है और नाम से ही लोक-परलोक में बड़ाई मिलती है॥ १॥

म: ३ ॥ ए मन गुर की सिख सुणि पाइहि गुणी निधानु ॥ सुखदाता तेरै मनि वसै हउमै जाइ अभिमानु ॥ नानक नदरी पाईऐ अंम्रितु गुणी निधानु ॥ २ ॥

महला ३॥ हे मन! गुरु की सीख सुन, इस प्रकार तुझे गुणों का भण्डार (परमात्मा) प्राप्त हो जाएगा। सुख देने वाला ईश्वर तेरे मन में स्थित हो जाएगा और तेरा अहंत्व एवं अभिमान दूर हो जाएगा। हे नानक! नामामृत एवं गुणों का कोष उसकी कृपा-दृष्टि से ही पाया जाता है॥ २॥

पउड़ी ॥ जितने पातिसाह साह राजे खान उमराव सिकदार हहि तितने सभि हरि के कीए ॥ जो किछु हरि करावै सु ओइ करहि सभि हरि के अरथीए ॥ सो ऐसा हरि सभना का प्रभु सतिगुर कै वलि है तिनि सभि वरन चारे खाणी सभ स्रिसटि गोले करि सतिगुर अगै कार कमावण कउ दीए ॥ हरि सेवे की ऐसी वडिआई देखहु हरि संतहु जिनि विचहु काइआ नगरी दुसमन दूत सभि मारि कढीए ॥ हरि हरि किरपालु होआ भगत जना उपरि हरि आपणी किरपा करि हरि आपि रखि लीए ॥ ६ ॥

पउड़ी॥ दुनिया में जितने भी बादशाह, शाह, राजा, खान, उमराव एवं सरदार हैं, वे सभी ईश्वर के ही पैदा किए हुए हैं। जो कुछ ईश्वर अपनी मर्जी से उनसे करवाता है, वे वही कार्य करते हैं। वास्तव में वे सभी प्रभु के सन्मुख भिखारी हैं। सो ऐसा परमात्मा सबका मालिक है, जो सतगुरु के पक्ष में है। उसने सभी वर्णों, चारों स्रोतों एवं सारी सृष्टि के जीव सतगुरु के आगे सेवा करने के लिए उसके सेवक बना दिए हैं। हे संतजनो ! देखो, ईश्वर-उपासना की इतनी महिमा है कि उसने काया रूपी नगरी में से सभी दुश्मन दूतों-काम, क्रोध, मोह, लोभ एवं अहंकार को नष्ट करके बाहर निकाल दिया है। हरि भक्तजनों पर कृपालु हो गया है और कृपा करके उसने स्वयं ही बचा लिया है॥ ६॥

सलोक म: ३ ॥ अंदरि कपटु सदा दुखु है मनमुख धिआनु न लागै ॥ दुख विचि कार कमावणी दुखु वरतै दुखु आगै ॥ करमी सतिगुरु भेटीऐ ता सचि नामि लिव लागै ॥ नानक सहजे सुखु होइ अंदरहु भ्रमु भउ भागै ॥ १ ॥

श्लोक महला ३॥ मनमुख का ध्यान नहीं लगता, मन में कपट होने के कारण सदैव दुख भोगता रहता है। वह दुख में ही कार्य करता है और हर वक्त दुख में ही ग्रस्त रहता है और आगे परलोक में भी दुखी रहता है। यदि प्रभु-कृपा हो जाए तो सतगुरु से भेंट हो जाती है और सत्य-नाम में लगन लग जाती है। हे नानक ! फिर सहज ही सुख प्राप्त हो जाता है, जिससे मन में से भ्रम एवं मृत्यु का भय दूर हो जाता है॥ १॥

म: ३ ॥ गुरमुखि सदा हरि रंगु है हरि का नाउ मनि भाइआ ॥ गुरमुखि वेखणु बोलणा नामु जपत सुखु पाइआ ॥ नानक गुरमुखि गिआनु प्रगासिआ तिमर अगिआनु अंधेरु चुकाइआ ॥ २ ॥

महला ३॥ गुरुमुख सदैव हरि-रंग में लीन रहता है और हरि का नाम ही उसे भाता है। गुरुमुख सत्य को ही देखता है, सत्य ही बोलता है और नाम जपकर सुख प्राप्त करता है। हे नानक ! गुरुमुख के मन में ज्ञान का प्रकाश हो गया है और अज्ञान रूपी घोर अंधेरा दूर हो गया है॥ २॥

म: ३ ॥ मनमुख मैले मरहि गवार ॥ गुरमुखि निरमल हरि राखिआ उर धारि ॥ भनति नानकु सुणहु जन भाई ॥ सतिगुरु सेविहु हउमै मलु जाई ॥ अंदरि संसा दूखु विआपे सिरि धंधा नित मार ॥ दूजै भाइ सूते कबहु न जागहि माइआ मोह पिआर ॥ नामु न चेतहि सबदु न वीचारहि इहु मनमुख का बीचार ॥ हरि नामु न भाइआ बिरथा जनमु गवाइआ नानक जमु मारि करे खुआर ॥ ३ ॥

महला ३॥ मनमुखी जीव मन के मैले होते हैं और ऐसे मूर्ख मरते ही रहते हैं। लेकिन गुरुमुख निर्मल हैं और उन्होंने भगवान को अपने हृदय में बसाया हुआ है। नानक का कथन है कि हे मेरे भाई, भक्तजनो ! जरा सुनो; सतगुरु की सेवा करो, इससे अहंत्व रूपी मैल दूर हो जाती है। मनमुख के मन में संशय बना रहता है, इसलिए उसे दुख ही प्रभावित करता रहता है और वह जगत् के धंधों में अपना सिर खपाता रहता है। जो जीव द्वैतभाव में सोये रहते हैं, वे कभी नहीं जागते, अपितु मोह-माया से ही उनका प्यार बना रहता है। मनमुख का विचार अर्थात् सोचने का ढंग यही है कि वह न तो परमात्मा का नाम याद करता है और न ही शब्द का चिंतन करता है। उसे हरि का नाम कभी नहीं भाया और उसने अपना जन्म व्यर्थ ही गंवा लिया है। हे नानक ! ऐसे जीव को यम मार-मार कर ख्वार करता है॥ ३॥

पउड़ी ॥ जिस नो हरि भगति सचु बखसीअनु सो सचा साहु ॥ तिस की मुहताजी लोकु कढदा होरतु हटि न वथु न वेसाहु ॥ भगत जना कउ सनमुखु होवै सु हरि रासि लए वेमुख भसु पाहु ॥ हरि के नाम के वापारी हरि भगत हहि जमु जागाती तिना नेड़ि न जाहु ॥ जन नानकि हरि नाम धनु लदिआ सदा वेपरवाहु ॥ ७ ॥

पउड़ी॥ वही सच्चा शाह है, जिसे ईश्वर ने भक्ति एवं सत्य का दान दिया है। सारी दुनिया ही उसकी मोहताजी करती है और किसी अन्य दुकान पर नाम रूपी वस्तु नहीं मिलती, न ही इसका व्यापार होता है। जो व्यक्ति भक्तजनों के सम्मुख रहता है, उसे हरि-नाम रूपी राशि मिल जाती है। किन्तु विमुख जीव को भस्म ही प्राप्त होती है। हरि के भक्त हरि-नाम के व्यापारी हैं और यम रूपी महसूलिया उनके निकट नहीं आता। दास नानक ने भी हरि-नाम रूपी धन लाद लिया है, इसलिए वह सदा बेपरवाह है॥ ७॥

सलोक म: ३ ॥ इसु जुग महि भगती हरि धनु खटिआ होरु सभु जगतु भरमि भुलाइआ ॥ गुर परसादी नामु मनि वसिआ अनदिनु नामु धिआइआ ॥ बिखिआ माहि उदास है हउमै सबदि जलाइआ ॥ आपि तरिआ कुल उधरे धंनु जणेदी माइआ ॥ सदा सहजु सुखु मनि वसिआ सचे सिउ लिव लाइआ ॥ ब्रहमा बिसनु महादेउ त्रै गुण भुले हउमै मोहु वधाइआ ॥ पंडित पड़ि पड़ि मोनी भुले दूजै भाइ चितु लाइआ ॥ जोगी जंगम संनिआसी भुले विणु गुर ततु न पाइआ ॥ मनमुख दुखीए सदा भ्रमि भुले तिन्ही बिरथा जनमु गवाइआ ॥ नानक नामि रते सेई जन समधे जि आपे बखसि मिलाइआ ॥ १ ॥

श्लोक महला ३॥ इस युग में भक्तों ने ही हरि-धन का लाभ प्राप्त किया है तथा अन्य समूचा जगत् भ्रम में भूला हुआ है। गुरु की कृपा से जिसके मन में नाम स्थित हो गया है, उसने निशदिन नाम का ही मनन किया है। वह विष रूपी माया में से निर्लिप्त बना रहता है और शब्द द्वारा उसने अपने अहंकार को जला दिया है। वह स्वयं भवसागर में से पार हो गया है और उसकी सारी कुल का भी उद्धार हो गया है। उसे जन्म देने वाली माता धन्य है। उसके मन में सदैव सहज सुख बसा रहता है और सत्य में ही लगन लगी रहती है। त्रिदेव—ब्रह्मा, विष्णु एवं शिवशंकर तथा रजोगुणी मनुष्य, तमोगुणी दैत्य तथा सतोगुणी देवता भी भूले हुए हैं और उन्होंने अपना अहंकार एवं माया का मोह बढ़ा लिया है। धर्म ग्रंथों को पढ़-पढ़कर पण्डित एवं मौनधारी मुनि भी भूले हुए हैं और उन्होंने द्वैतभाव में अपना चित्त लगाया हुआ है। योगी, जंगम एवं सन्यासी भी भटके हुए हैं और गुरु के बिना किसी को भी परमतत्व प्राप्त नहीं हुआ। मनमुखी जीव भ्रम में फँसकर भूले हुए हैं, सदैव दुखी रहते हैं और उन्होंने अपना जन्म व्यर्थ गंवा दिया है। हे नानक! नाम में लीन रहने वाले जीव सदैव स्थिर रहते हैं और ईश्वर ने करुणा करके उन्हें स्वयं मिला लिया है॥ १॥

म: ३ ॥ नानक सो सालाहीऐ जिसु वसि सभु किछु होइ ॥ तिसहि सरेवहु प्राणीहो तिसु बिनु अवरु न कोइ ॥ गुरमुखि अंतरि मनि वसै सदा सदा सुखु होइ ॥ २ ॥

महला ३॥ हे नानक! उसकी स्तुति करनी चाहिए, जिसके वश में सबकुछ है। हे प्राणियो! परमात्मा को याद करो; उसके सिवा अन्य कोई नहीं है। गुरुमुख के अन्तर्मन में ईश्वर बस जाता है और वह सदैव सुखी रहता है॥ २॥

पउड़ी ॥ जिनी गुरमुखि हरि नाम धनु न खटिओ से देवालीए जुग माहि ॥ ओइ मंगदे फिरहि सभ जगत महि कोई मुहि थुक न तिन कउ पाहि ॥ पराई बखीली करहि आपणी परतीति खोवनि सगवा भी आपु लखाहि ॥ जिसु धनु कारणि चुगली करहि सो धनु चुगली हथि न आवै ओइ भावै

तिथै जाहि ॥ गुरमुखि सेवक भाइ हरि धनु मिलै तिथहु करमहीण लै न सकहि होर थै देस दिसंतरि हरि धनु नाहि ॥ ८ ॥

पउड़ी॥ जिन्होंने गुरु से हरि-नाम धन प्राप्त नहीं किया, वे इस जग में दिवालिया बने रहते हैं। वे सारे जगत् में माँगते रहते हैं, परन्तु कोई उनके मुँह पर थूकता भी नहीं। वे पराई निन्दा करते रहते हैं, लेकिन अपना भरोसा भी गंवा देते हैं, अपितु अपना आप दूसरों के समक्ष जतला देते हैं। जिस धन के लिए वे चुगली करते हैं, पर वह धन चुगली करने से भी उनके हाथ नहीं आता, चाहे वे कहीं भी जाकर यत्न कर लें। हरि-धन तो श्रद्धा-भावना से ही गुरु से मिलता है। किन्तु दुर्भाग्यशाली जीव इसे नहीं ले सकते। देश-देशांतर भ्रमण करने से भी हरि-धन हासिल नहीं होता॥ ८॥

सलोक म: ३ ॥ गुरमुखि संसा मूलि न होवई चिंता विचहु जाइ ॥ जो किछु होइ सु सहजे होइ कहणा किछू न जाइ ॥ नानक तिन का आखिआ आपि सुणे जि लइअनु पंनै पाइ ॥ १ ॥

श्लोक महला ३॥ गुरुमुख को कदापि सन्देह नहीं होता और उसकी मन की चिन्ता दूर हो जाती है। जो कुछ होता है, वह सहज ही होता है और इस सन्दर्भ में कुछ भी बयान नहीं किया जा सकता। हे नानक! परमात्मा स्वयं उनका निवेदन सुनता है, जिन्हें उसने अपना सेवक बना लिया है॥ १॥

म: ३ ॥ कालु मारि मनसा मनहि समाणी अंतरि निरमलु नाउ ॥ अनदिनु जागै कदे न सोवै सहजे अंम्रितु पिआउ ॥ मीठा बोले अंम्रित बाणी अनदिनु हरि गुण गाउ ॥ निज घरि वासा सदा सोहदे नानक तिन मिलिआ सुखु पाउ ॥ २ ॥

महला ३॥ जिसके अन्तर्मन में परमात्मा का निर्मल नाम आ बसा है, उसने काल को भी जीत लिया है और उसकी अभिलाषा उसके मन में ही समा गई है। वह नित्य मोह-माया से सचेत रहता है और कभी भी अज्ञान की निद्रा में नहीं सोता तथा सहज ही नामामृत पीता रहता है। उसकी वाणी अमृतमय है, वह बड़ा मधुर बोलता है और दिन-रात प्रभु का गुणगान करता रहता है। हे नानक! जिनका आत्म-स्वरूप में निवास हो जाता है, वे सदैव सुन्दर लगते हैं और उन्हें मिलने से बड़ा सुख प्राप्त होता है॥ २॥

पउड़ी ॥ हरि धनु रतन जवेहरी सो गुरि हरि धनु हरि पासहु देवाइआ ॥ जे किसै किहु दिसि आवै ता कोई किहु मंगि लए अकै कोई किहु देवाए एहु हरि धनु जोरि कीतै किसै नालि न जाइ वंडाइआ ॥ जिस नो सतिगुर नालि हरि सरधा लाए तिसु हरि धन की वंड हथि आवै जिस नो करतै धुरि लिखि पाइआ ॥ इसु हरि धन का कोई सरीकु नाही किसै का खतु नाही किसै कै सीव बंनै रोलु नाही जे को हरि धन की बखीली करे तिस का मुहु हरि चहु कुंडा विचि काला कराइआ ॥ हरि के दिते नालि किसै जोरु बखीली न चलई दिहु दिहु नित नित चड़ै सवाइआ ॥ ६ ॥

पउड़ी॥ हरि-धन अमूल्य रत्न एवं जवाहर के समान है। गुरु ने वह धन अपने सेवक को हरि से दिलवाया है। यदि किसी मनुष्य को किसी अन्य से कुछ हरि-धन दिखाई दे तो वह उससे कैसे कुछ मांग सकता है या कोई उससे कुछ हरि धन किसी अन्य को दिलवा सकता है परन्तु यह हरि-धन किसी ताकत से बांटा नहीं जा सकता। उपरोक्त तुक का यह अर्थ है कि हरि-धन के लिए याचना तो हो सकती है किन्तु जबरदस्ती नहीं हो सकती। इस हरि-धन की बांट उस

व्यक्ति के ही हाथ आती है, जिसकी श्रद्धा हरि सतगुरु से बना देता है और विधाता ने आरम्भ से ही जिसके भाग्य में लिखा हुआ है। इस हरि-धन का कोई शरीक नहीं है और न ही इसकी मलकियत का पटा है। इस हरि-धन का कोई सीमा-बन्धन नहीं और न ही कोई विवाद है। यदि कोई हरि-धन की निंदा करता है तो हरि उसका चारों दिशाओं में मुँह काला करवा देता है। हरि के दिए धन से किसी अन्य का जोर एवं ईर्ष्या नहीं चलती, अपितु वह तो दिन दुगुनी रात चौगुणी वृद्धि करता रहता है॥ ६॥

सलोक म: ३ ॥ जगतु जलंदा रखि लै आपणी किरपा धारि ॥ जितु दुआरै उबरै तितै लैहु उबारि ॥ सतिगुरि सुखु वेखालिआ सचा सबदु बीचारि ॥ नानक अवरु न सुझई हरि बिनु बखसणहारु ॥ १ ॥

श्लोक महला ३॥ हे परमात्मा! यह जगत् तृष्णाग्नि में जल रहा है, अपनी कृपा करके इसकी रक्षा करो। जिस किसी तरीके से भी यह बच सकता है, इसे बचा लो। सच्चे शब्द के चिंतन द्वारा सतगुरु ने मुझे सुख दिखा दिया है। हे नानक! ईश्वर के अतिरिक्त मुझे अन्य कोई भी क्षमावान् नजर नहीं आता॥ १॥

म: ३ ॥ हउमै माइआ मोहणी दूजै लगै जाइ ॥ ना इह मारी न मरै ना इह हटि विकाइ ॥ गुर कै सबदि परजालीऐ ता इह विचहु जाइ ॥ तनु मनु होवै उजला नामु वसै मनि आइ ॥ नानक माइआ का मारणु सबदु है गुरमुखि पाइआ जाइ ॥ २ ॥

महला ३॥ अहंत्व रूपी माया दुनिया को मोह लेने वाली है, इसी कारण जीव द्वैतभाव में लगता है। यह न ही मारी जा सकती है और न ही इसे किसी दुकान पर बेचा जा सकता है। लेकिन गुरु के शब्द द्वारा भलीभांति जला दिया जाए तो ही यह मन में से दूर होती है। अहंत्व के दूर होने से तन-मन उज्ज्वल हो जाता है, जिससे मन में नाम का निवास हो जाता है। हे नानक! शब्द ही माया को नाश करने वाला है, परन्तु यह गुरु द्वारा ही प्राप्त होता है॥ २॥

पउड़ी ॥ सतिगुर की वडिआई सतिगुरि दिती धुरहु हुकमु बुझि नीसाणु ॥ पुती भातीई जावाई सकी अगहु पिछहु टोलि डिठा लाहिओनु सभना का अभिमानु ॥ जिथै को वेखै तिथै मेरा सतिगुरू हरि बखसिओनु सभु जहानु ॥ जि सतिगुर नो मिलि मंने सु हलति पलति सिझै जि वेमुखु होवै सु फिरै भरिसट थानु ॥ जन नानक कै वलि होआ मेरा सुआमी हरि सजण पुरखु सुजानु ॥ पउदी भिति देखि कै सभि आइ पए सतिगुर की पैरी लाहिओनु सभना किअहु मनहु गुमानु ॥ १० ॥

पउड़ी॥ परमात्मा से मिले हुक्म को समझ कर गुरु अंगद देव जी ने (गुरु) अमरदास जी को नाम रूपी परवाना देकर सतगुरु बनने की बड़ाई प्रदान की। गुरु अंगद देव जी ने अपने पुत्रों, भतीजों, दामादों एवं अन्य संबंधियों को भलीभांति परख कर देख लिया था और सभी का अभिमान उतार दिया था। जिधर भी कोई देखता था, वहाँ ही मेरा सतगुरु होता था। परमात्मा ने सारे जहान पर ही कृपा कर दी थी। जो भी निष्ठापूर्वक गुरु को मिलता है, उसका लोक-परलोक सँवर जाता है। जो गुरु से विमुख हो जाता है, वह भ्रष्ट स्थान पर फिरता रहता है। हे नानक! मेरा स्वामी हरि (गुरु अमरदास के) पक्ष में हो गया और वह चतुर प्रभु ही सज्जन है। गुरु के द्वार पर अटूट लंगर मिलता देखकर सारे सेवक गुरु (अमरदास) के चरणों में आ पड़े हैं और गुरु ने सबके मन का गुमान दूर कर दिया है॥ १०॥

सलोक म: १ ॥ कोई वाहे को लुणै को पाए खलिहानि ॥ नानक एव न जापई कोई खाइ निदानि ॥ १ ॥

श्लोक महला ३॥ कोई हल जोतता है, कोई फसल काटता है और कोई दाने निकालने के लिए खलिहान डालता है। गुरु नानक का कथन है कि यह समझ में नहीं आता कि अन्त में इस अन्न को कौन खाता है॥ १॥

म: १ ॥ जिसु मनि वसिआ तरिआ सोइ ॥ नानक जो भावै सो होइ ॥ २ ॥

महला १॥ जिसके मन में परमात्मा आ बसा है, वही संसार-सागर से पार हुआ है। हे नानक! जो उसे उपयुक्त लगता है, वही होता है॥ २॥

पउड़ी ॥ पारब्रहमि दइआलि सागरु तारिआ ॥ गुरि पूरै मिहरवानि भरमु भउ मारिआ ॥ काम क्रोधु बिकरालु दूत सभि हारिआ ॥ अंम्रित नामु निधानु कंठि उरि धारिआ ॥ नानक साधू संगि जनमु मरणु सवारिआ ॥ ११ ॥

पउड़ी॥ दयालु परब्रह्म ने संसार-सागर में से पार कर दिया है। पूर्ण गुरु ने मेहरबान होकर भ्रम एवं भय दूर कर दिया है। माया के विकराल दूत काम-क्रोध सब हार गए हैं। मैंने अमृत नाम रूपी खजाना अपने गले एवं हृदय में बसा लिया है। हे नानक! साधु की संगति में मिलकर जन्म-मरण संवर गया है॥ ११॥

सलोक म: ३ ॥ जिन्ही नामु विसारिआ कूड़े कहण कहंन्हि ॥ पंच चोर तिना घरु मुहन्हि हउमै अंदरि संन्हि ॥ साकत मुठे दुरमती हरि रसु न जाणंन्हि ॥ जिन्ही अंम्रितु भरमि लुटाइआ बिखु सिउ रचहि रचंन्हि ॥ दुसटा सेती पिरहड़ी जन सिउ वादु करंन्हि ॥ नानक साकत नरक महि जमि बधे दुख सहंन्हि ॥ पइऐ किरति कमावदे जिव राखहि तिवै रहंन्हि ॥ १ ॥

श्लोक महला ३॥ जिन्होंने परमात्मा का नाम भुला दिया है, उन्हें झूठे ही कहा जाता है। काम, क्रोध, लोभ, मोह एवं अहंकार ये पाँच चोर उनके हृदय-घर को लूटते रहते हैं और अहंकार उनके हृदय-घर में सेंध लगाता है। दुर्मति ने शाक्त जीवों को लूट लिया है, इसलिए वे हरि-रस को जानते ही नहीं। जिन्होंने भ्रम में फँसकर नामामृत लुटा दिया है, वे माया रूपी विष में ही लीन रहते हैं। उनका दुष्टों से प्रेम बना होता है परन्तु भक्तजनों से नित्य झगड़ा करते रहते हैं। हे नानक! यम के बंधे हुए शाक्त जीव नरकों में बड़ा दुख सहन करते हैं। अपने भाग्य के अनुसार ही कर्म करते हैं और जैसे परमात्मा उन्हें रखता है, वैसे ही वे रहते हैं॥ १॥

म: ३ ॥ जिन्ही सतिगुरु सेविआ ताणु निताणे तिसु ॥ सासि गिरासि सदा मनि वसै जमु जोहि न सकै तिसु ॥ हिरदै हरि हरि नाम रसु कवला सेवकि तिसु ॥ हरि दासा का दासु होइ परम पदारथु तिसु ॥ नानक मनि तनि जिसु प्रभु वसै हउ सद कुरबाणै तिसु ॥ जिन्ह कउ पूरबि लिखिआ रसु संत जना सिउ तिसु ॥ २ ॥

महला ३॥ जिसने सतगुरु की सेवा की है, उस दुर्बल को बल मिल गया है। जो साँस-ग्रास लेते वक्त सर्वदा परमात्मा को याद करता रहता है, वह उसके मन में आ बसता है और उसे यम भी प्रभावित नहीं कर सकता। जिसके हृदय में हरि-नाम रूपी रस बसा रहता है, माया भी उसकी सेविका बन जाती है। जो हरि के दासों का दास बन जाता है, उसे परम पदार्थ (मोक्ष) प्राप्त हो जाता है। हे नानक! जिसके मन-तन में प्रभु आ बसता है, मैं सदैव उस पर कुर्बान जाता

हूँ। जिसके भाग्य में पूर्व से ही ऐसा लिखा हुआ है, उसे ही संतजनों से मिलकर रस प्राप्त होता है॥ २॥

पउड़ी ॥ जो बोले पूरा सतिगुरू सो परमेसरि सुणिआ ॥ सोई वरतिआ जगत महि घटि घटि मुखि भणिआ ॥ बहुतु वडिआईआ साहिबै नह जाही गणीआ ॥ सचु सहजु अनदु सतिगुरू पासि सची गुर मणीआ ॥ नानक संत सवारे पारब्रहमि सचे जिउ बणिआ ॥ १२ ॥

पउड़ी॥ पूर्ण सतगुरु जो कुछ बोलता है, उसे परमेश्वर सुनता है। वही कुछ जगत् में हुआ है और हरेक मनुष्य ने उसे अपने मुँह से कहा है। मेरे मालिक की बहुत बड़ी महिमा है, जो गिनी नहीं जा सकती। सतगुरु के पास सत्य, सहज शान्ति एवं आनंद है और गुरु की सच्ची शिक्षा अमूल्य रत्न के सम्मान है। हे नानक! परब्रह्म ने संतों को संवार दिया है और वे सत्य जैसे ही बन गए हैं॥ १२॥

सलोक म: ३ ॥ अपणा आपु न पछाणई हरि प्रभु जाता दूरि ॥ गुर की सेवा विसरी किउ मनु रहै हजूरि ॥ मनमुखि जनमु गवाइआ झूठै लालचि कूरि ॥ नानक बखसि मिलाइअनु सचै सबदि हदूरि ॥ १ ॥

श्लोक महला ३॥ जो व्यक्ति अपने आपको नहीं पहचानता, वह प्रभु को भी दूर ही समझता है। जब उसे गुरु की सेवा ही भूल गई है तो उसका मन परमात्मा में कैसे टिक सकता है? झूठे लालच में फँस कर मनमुख ने अपना जन्म व्यर्थ ही गंवा दिया है। हे नानक! जो शब्द के चिन्तन में लीन रहते हैं, परमात्मा ने उन्हें क्षमा करके स्वयं ही साथ मिला लिया है॥ १॥

म: ३ ॥ हरि प्रभु सचा सोहिला गुरमुखि नामु गोविंदु ॥ अनदिनु नामु सलाहणा हरि जपिआ मनि आनंदु ॥ वडभागी हरि पाइआ पूरनु परमानंदु ॥ जन नानक नामु सलाहिआ बहुड़ि न मनि तनि भंगु ॥ २॥

महला ३॥ सच्चे प्रभु का यशगान करो, गुरुमुख बनकर उसका ही नाम स्मरण करो। नित्य नाम की स्तुति करनी चाहिए, हरि का नाम जपने से मन में आनंद पैदा हो जाता है। किसी भाग्यशाली ने ही पूर्ण परमानंद परमात्मा को प्राप्त किया है। हे नानक! जिन्होंने नाम की स्तुति की है, उनके मन-तन में पुनः कभी कोई रुकावट नहीं आई॥ २॥

पउड़ी ॥ कोई निंदकु होवै सतिगुरू का फिरि सरणि गुर आवै ॥ पिछले गुनह सतिगुरु बखसि लए सतसंगति नालि रलावै ॥ जिउ मीहि वुठै गलीआ नालिआ टोभिआ का जलु जाइ पवै विचि सुरसरी सुरसरी मिलत पवित्रु पावनु होइ जावै ॥ एह वडिआई सतिगुर निरवैर विचि जितु मिलिऐ तिसना भुख उतरै हरि सांति तड़ आवै ॥ नानक इहु अचरजु देखहु मेरे हरि सचे साह का जि सतिगुरू नो मंनै सु सभनां भावै ॥ १३ ॥ १ ॥ सुधु ॥

पउड़ी॥ यदि कोई सतगुरु का निंदक हो परन्तु वह फिर से गुरु की शरण में आ जाए तो सतगुरु उसके पिछले गुनाह क्षमा करके उसे सत्संगति से मिला देता है। जैसे बारिश होने पर गलियों, नालियों एवं तालाबों का जल जाकर गंगा में मिल जाता है तो वह गंगा में मिलने से पवित्र-पावन हो जाता है। यही बड़ाई निर्वैर सतगुरु में है कि उसे मिलने से इन्सान की तृष्णा एवं भूख दूर हो जाती है और मन में हरि के मिलाप से तुरंत शान्ति पैदा हो जाती है। हे नानक! मेरे सच्चे बादशाह हरि का अद्भुत कौतुक देखो कि जो व्यक्ति सतगुरु को श्रद्धा से मानता है, वह सबको प्यारा लगता है॥ १३॥ १॥ शुद्ध॥

बिलावलु बाणी भगता की ॥ कबीर जीउ की ੴ सति नामु करता पुरखु गुर प्रसादि ॥

ऐसो इहु संसारु पेखना रहनु न कोऊ पईहै रे ॥ सूधे सूधे रेगि चलहु तुम नतर कुधका दिवईहै रे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ बारे बूढे तरुने भईआ सभहू जमु लै जईहै रे ॥ मानसु बपुरा मूसा कीनो मीचु बिलईआ खईहै रे ॥ १ ॥ धनवंता अरु निरधन मनई ता की कछू न कानी रे ॥ राजा परजा सम करि मारै ऐसो कालु बडानी रे ॥ २ ॥ हरि के सेवक जो हरि भाए तिन्ह की कथा निरारी रे ॥ आवहि न जाहि न कबहू मरते पारब्रहम संगारी रे ॥ ३ ॥ पुत्र कलत्र लछिमी माइआ इहै तजहु जीअ जानी रे ॥ कहत कबीरु सुनहु रे संतहु मिलिहै सारिगपानी रे ॥ ४ ॥ १ ॥

यह संसार ऐसा अद्‌भुत खेल है कि इसमें कोई भी सदा के लिए रह नहीं सकता अर्थात् मृत्यु अटल है। हे जीव! तू सीधे-सीधे राह पर चलता जा, अन्यथा यम बहुत बुरा धक्का देता है॥ १॥ रहाउ॥ हे भाई! बालक, वृद्ध एवं युवक सभी को मृत्यु अपने साथ ले जाती है। मनुष्य बेचारा तो एक चूहा बना हुआ है, जिसे मृत्यु रूपी बिल्ली निगल लेती है॥ १॥ चाहे कोई अपने आपको धनवान एवं निर्धन मान रहा है लेकिन मृत्यु को किसी का कोई लिहाज नहीं है। यम इतना बलशाली है कि वह राजा एवं प्रजा को एक समान समझकर मारता है॥ २॥ जो हरि के सेवक हरि को अत्यंत प्रिय हैं, उनकी कथा बड़ी निराली है। वे जगत् के आवागमन से मुक्त हैं और परमात्मा खुद उनका सहायक है॥ ३॥ हे प्रिय मन! अपने पुत्र, पत्नी और लक्ष्मी रूपी माया का मोह त्याग दो। कबीर जी कहते हैं कि हे संतजनो! सुनो; इनका त्याग करने से तुम्हें ईश्वर मिल जाएगा॥ ४॥ १॥

बिलावलु ॥ बिदिआ न परउ बादु नही जानउ ॥ हरि गुन कथत सुनत बउरानो ॥ १ ॥ मेरे बाबा मै बउरा सभ खलक सैआनी मै बउरा ॥ मै बिगरिओ बिगरै मति अउरा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ आपि न बउरा राम कीओ बउरा ॥ सतिगुरु जारि गइओ भ्रमु मोरा ॥ २ ॥ मै बिगरे अपनी मति खोई ॥ मेरे भरमि भूलउ मति कोई ॥ ३ ॥ सो बउरा जो आपु न पछानै ॥ आपु पछानै त एकै जानै ॥ ४ ॥ अबहि न माता सु कबहु न माता ॥ कहि कबीर रामै रंगि राता ॥ ५ ॥ २ ॥

मैं कोई विद्या नहीं पढ़ता और न ही वाद-विवाद को जानता हूँ। मैं भगवान् के गुण कथन कर करके एवं सुन-सुनकर बावला हो गया हूँ॥ १॥ हे मेरे बाबा! मैं तो बावला हूँ, अन्य सारी दुनिया बुद्धिमान है, एक मैं ही बौरा हूँ। मैं तो बिगड़ गया हूँ, देखना, मेरी तरह कोई अन्य भी बिगड़ न जाए॥ १॥ रहाउ॥ मैं स्वयं बावला नहीं बना, अपितु मेरे राम ने बावला मुझे बनाया है। सतगुरु ने मेरा भ्रम जला दिया है॥ २॥ मैंने बिगड़ कर अपनी मति खो दी है किन्तु मेरे भ्रम में कोई मत भूले॥ ३॥ वही बावला होता है, जो अपने आपको नहीं पहचानता। यदि वह अपने आपको पहचान ले तो वह परमात्मा को जान लेता है॥ ४॥ जो व्यक्ति अब अपने जीवन में परमात्मा के रंग में मतवाला नहीं हुआ, वह फिर कभी भी मतवाला नहीं हो सकता। कबीर जी कहते हैं कि मैं तो राम के रंग में लीन हो गया हूँ॥ ५॥ २॥

बिलावलु ॥ ग्रिहु तजि बन खंड जाईऐ चुनि खाईऐ कंदा ॥ अजहु बिकार न छोडई पापी मनु मंदा ॥ १ ॥ किउ छूटउ कैसे तरउ भवजल निधि भारी ॥ राखु राखु मेरे बीठुला जनु सरनि तुम्हारी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ बिखै बिखै की बासना तजीअ नह जाई ॥ अनिक जतन करि राखीऐ फिरि फिरि लपटाई ॥ २ ॥ जरा जीवन जोबनु गइआ किछु कीआ न नीका ॥ इहु जीअरा निरमोलको कउडी लगि

मीका ॥ ३ ॥ कहु कबीर मेरे माधवा तू सरब बिआपी ॥ तुम समसरि नाही दइआलु मोहि समसरि पापी ॥ ४ ॥ ३ ॥

यदि घर-परिवार को त्याग कर किसी वन में चले जाएँ और वहाँ कन्दमूल चुन-चुनकर खाते रहें तो भी यह पापी एवं मंदा मन विकारों को नहीं छोड़ता॥ १॥ कैसे छूट सकता हूँ, कैसे इस बड़े भयानक संसार सागर से पार हो सकूँगा ? हे मेरे प्रभु ! तेरी शरण में आया हूँ, मेरी रक्षा करो॥ १॥ रहाउ॥ अनेक प्रकार के विषय-विकारों की वासना मुझसे छोड़ी नहीं जाती। मैं अनेक यत्न करके मन को रोकता हूँ किन्तु यह वासना फिर से लिपट जाती है॥ २॥ मेरी जवानी की उम्र बीत गई है और बुढ़ापा आ चुका है, लेकिन मैंने कोई भी शुभ कर्म नहीं किया। यह अमूल्य जीवन वासना में लगकर कौड़ियों के भाव हो गया है॥ ३॥ कबीर जी कहते हैं कि हे मेरे माधव ! तू सर्वव्यापक है; तेरे समान अन्य कोई दयालु नहीं है तथा मेरे जैसा अन्य कोई पापी नहीं है॥ ४॥ ३॥

बिलावलु ॥ नित उठि कोरी गागरि आनै लीपत जीउ गइओ ॥ ताना बाना कछू न सूझै हरि हरि रसि लपटिओ ॥ १ ॥ हमारे कुल कउने रामु कहिओ ॥ जब की माला लई निपूते तब ते सुखु न भइओ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सुनहु जिठानी सुनहु दिरानी अचरजु एकु भइओ ॥ सात सूत इनि मुडींए खोए इहु मुडीआ किउ न मुइओ ॥ २ ॥ सरब सुखा का एकु हरि सुआमी सो गुरि नामु दइओ ॥ संत प्रहलाद की पैज जिनि राखी हरनाखसु नख बिदरिओ ॥ ३ ॥ घर के देव पितर की छोडी गुर को सबदु लइओ ॥ कहत कबीरु सगल पाप खंडनु संतह लै उधरिओ ॥ ४ ॥ ४ ॥

(कबीर जी की माता कहती है कि) यह जुलाहा नित्य सुबह उठकर कोरी गागर में पानी भर कर लाता है और लीपते-लीपते इसकी जिंदगी भी बीत गई है। इसे ताना-बाना कुछ नहीं आता और यह हर वक्त हरि-नाम के रस में ही लिपटा रहता है॥ १॥ बताओ, हमारी कुल के किस व्यक्ति ने राम-नाम जपा है। जब से इस निपूत ने माला ली है, तब से हमें कोई सुख उपलब्ध नहीं हुआ॥ १॥ रहाउ॥ हे जेठानी ! जरा सुनो; हे देवरानी ! तुम भी सुनो; एक अद्भुत घटना हो गई है कि इस लड़के ने हमारा सूत का काम ही बिगाड़ दिया है। यह लड़का मर क्यों नहीं गया॥ २॥ (कबीर जी अपनी माता को उत्तर देते हैं कि) एक परमात्मा ही मेरा स्वामी है और वह सर्व सुखों का दाता है। मेरे गुरु ने मुझे उसका ही नाम दिया है। उसने ही भक्त प्रहलाद की लाज रखी थी और दुष्ट हिरण्यकशिपु दैत्य को नखों से फाड़कर वध कर दिया था॥ ३॥ अब मैंने अपने घर के देवताओं एवं पितरों की पूजा छोड़ दी है और गुरु का शब्द ले लिया है। कबीर जी कहते हैं कि एक वही सर्व पापों का खंडन करने वाला है और संतों ने उसे अपनाकर अपना उद्धार कर लिया है॥ ४॥ ४॥

बिलावलु ॥ कोऊ हरि समानि नही राजा ॥ ए भूपति सभ दिवस चारि के झूठे करत दिवाजा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ तेरो जनु होइ सोइ कत डोलै तीनि भवन पर छाजा ॥ हाथु पसारि सकै को जन कउ बोलि सकै न अंदाजा ॥ १ ॥ चेति अचेत मूड़ मन मेरे बाजे अनहद बाजा ॥ कहि कबीर संसा भ्रमु चूको ध्रू प्रहिलाद निवाजा ॥ २ ॥ ५ ॥

हरि के समान कोई राजा नहीं है। दुनिया के यह सारे राजा चार दिनों के लिए ही हैं और यों ही अपने राज-प्रताप का झूठा दिखावा करते हैं॥ १॥ रहाउ॥ हे परमात्मा ! यदि कोई तेरा दास होगा, तो वह क्यों डगमगाएगा ? वह तो तीनों लोकों पर अपना हुक्म चलाता है। तेरे सेवक के ऊपर कोई भी अपना हाथ उठा नहीं सकता और तेरे जन की शक्ति का कोई अंदाजा नहीं

लगा सकता॥ १॥ हे मूर्ख एवं अज्ञानी मन! परमात्मा को याद कर ताकि तेरे अन्दर अनहद शब्द का बाजा बजने लगे। कबीर जी कहते हैं कि मेरा संशय एवं भ्रम दूर हो गया है, परमात्मा ने मुझे भक्त ध्रुव एवं भक्त प्रहलाद की तरह बड़ाई दी है॥ २॥ ५॥

बिलावलु ॥ राखि लेहु हम ते बिगरी ॥ सीलु धरमु जपु भगति न कीनी हउ अभिमान टेढ पगरी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ अमर जानि संची इह काइआ इह मिथिआ काची गगरी ॥ जिनहि निवाजि साजि हम कीए तिसहि बिसारि अवर लगरी ॥ १ ॥ संधिक तोहि साध नही कहीअउ सरनि परे तुमरी पगरी ॥ कहि कबीर इह बिनती सुनीअहु मत घालहु जम की खबरी ॥ २ ॥ ६ ॥

हे परमेश्वर! मुझे बचा लो, मुझसे बहुत बड़ी भूल हो गई है। न ही चरित्रवान् बना, न ही कोई धर्म किया, न जप किया और न ही तेरी भक्ति की अपितु अभिमान में कुपथ पर ही चलता रहा॥ १॥ रहाउ॥ अपनी इस काया को अमर मानकर इसका पोषण करता रहा किन्तु यह कच्ची गागर की तरह मिथ्या ही निकली। जिस परमात्मा ने दया करके मुझे सुन्दर बना कर पैदा किया है, मैं उसे ही भुलाकर दुनिया के लगाव में लगा रहा॥ १॥ हे मालिक! मैं तेरा चोर हूँ और तेरा साधु नहीं कहला सकता, मैं तेरे चरणों की शरण में आ पड़ा हूँ। कबीर जी कहते हैं कि हे प्रभु जी! मेरी यह विनती सुनो; मुझे यमराज की कोई भी खबर मत भेजना ॥ २॥ ६॥

बिलावलु ॥ दरमादे ठाढे दरबारि ॥ तुझ बिनु सुरति करै को मेरी दरसनु दीजै खोल्हि किवार ॥ १ ॥ रहाउ ॥ तुम धन धनी उदार तिआगी स्रवनन्ह सुनीअतु सुजसु तुम्हार ॥ मागउ काहि रंक सभ देखउ तुम्ह ही ते मेरो निसतारु ॥ १ ॥ जैदेउ नामा बिप सुदामा तिन कउ क्रिपा भई है अपार ॥ कहि कबीर तुम संम्रथ दाते चारि पदारथ देत न बार ॥ २ ॥ ७ ॥

हे परमात्मा! मैं बहुत लाचार होकर तेरे दरबार में आ खड़ा हूँ। तेरे बिना अन्य कौन मेरी देखरेख करे? किवाड़ खोलकर मुझे दर्शन दीजिए॥ १॥ रहाउ॥ तुम बहुत धनवान, उदारचित्त एवं त्यागी हो और अपने कानों से तुम्हारा ही सुयश सुनता रहता हूँ। मैं तुझसे क्या दान माँगू? मैं सब को ही कंगाल देखता हूँ और तुझ से ही मेरा निस्तार होना है॥ १॥ जयदेव, नामदेव एवं सुदामा ब्राह्मण जैसे इन भक्तों पर तेरी अपार कृपा हुई है। कबीर जी कहते हैं कि हे दाता! तू सर्वकला समर्थ है और जीवों को धर्म, अर्थ, काम एवं मोक्ष पदार्थ देते तुझे कोई देरी नहीं लगती॥ २॥ ७॥

बिलावलु ॥ डंडा मुंद्रा खिंथा आधारी ॥ भ्रम कै भाइ भवै भेखधारी ॥ १ ॥ आसनु पवन दूरि करि बवरे ॥ छोडि कपटु नित हरि भजु बवरे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जिह तू जाचहि सो त्रिभवन भोगी ॥ कहि कबीर केसौ जगि जोगी ॥ २ ॥ ८ ॥

योगी हाथ में डण्डा, कानों में मुद्रा, कफनी पहनकर, बगल में झोली लटकाकर वेषधारी बनकर भ्रम के भाव में ही भटकता रहता है॥ १॥ हे बावले योगी! योगाभ्यास का आसन एवं प्राणायाम की साधना छोड़ दे। हे पगले! यह कपट छोड़कर नित्य भगवान का भजन कर॥१॥ रहाउ॥ जिस माया को तू माँगता फिरता है, उसे तो तीनों लोकों के जीव भोग रहे हैं। कबीर जी कहते हैं कि इस जगत में एकमात्र ईश्वर ही सच्चा योगी है॥ २॥ ८॥

बिलावलु ॥ इन्हि माइआ जगदीस गुसाई तुम्हरे चरन बिसारे ॥ किंचत प्रीति न उपजै जन कउ जन कहा करहि बेचारे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ ध्रिगु तनु ध्रिगु धनु ध्रिगु इह माइआ ध्रिगु ध्रिगु मति बुधि फंनी ॥ इस माइआ कउ द्रिडु करि राखहु बांधे आप बचंनी ॥ १ ॥ किआ खेती किआ लेवा देई परपंच झूठु गुमाना ॥ कहि कबीर ते अंति बिगूते आइआ कालु निदाना ॥ २ ॥ ९ ॥

हे ईश्वर! इस माया के मोह में फँसकर जीवों ने तेरे ᠆ ही भुला दिए हैं। अब लोगों को तेरे लिए किंचित मात्र भी प्रीति उत्पन्न नहीं होती। वे बेचारे क्या कर सकते हैं॥ १॥ रहाउ॥ यह तन, धन, माया सब धिक्कार योग्य है। धोखा देने वाली जीव की अक्ल एवं बुद्धि सब धिक्कार योग्य है। इस माया को भलीभांति अपने वश में रखो, जिसने स्वयं ही परमात्मा के हुक्मानुसार जीव बांधे हुए हैं॥ १॥ क्या खेतीबाड़ी, क्या लेन-देन अर्थात् व्यापार ? सारे प्रपंच का गुमान झूठा है। कबीर जी कहते हैं कि जब अन्तिम समय काल आया तो जीव बहुत ख्वार हुए हैं॥ २॥ ६॥

बिलावलु ॥ सरीर सरोवर भीतरे आछै कमल अनूप ॥ परम जोति पुरखोतमो जा कै रेख न रूप ॥ १ ॥ रे मन हरि भजु भ्रमु तजहु जगजीवन राम ॥ १ ॥ रहाउ ॥ आवत कछू न दीसई नह दीसै जात ॥ जह उपजै बिनसै तही जैसे पुरिवन पात ॥ २ ॥ मिथिआ करि माइआ तजी सुख सहज बीचारि ॥ कहि कबीर सेवा करहु मन मंझि मुरारि ॥ ३ ॥ १० ॥

शरीर रूपी सरोवर में ही ब्रह्म रूपी अनुपम कमल खिला हुआ है। वह परमज्योति, पुरुषोत्तम है, जिसका कोई रूप अथवा आकार नहीं है॥ १॥ हे मन! भ्रम को त्याग कर भगवान् का भजन करो; एक प्रभु ही सारे जगत् का जीवन है॥ १॥ रहाउ॥ यह आत्मा न शरीर में आती दिखाई देती है और न ही शरीर में से जाती नजर आती है। पुरइन के पत्तों की तरह यह आत्मा जिस परमात्मा में से पैदा होती है, यह उसमें ही विलीन हो जाती है॥ २॥ जिसने माया को मिथ्या मानकर त्याग दिया है, उसने विचार कर सहज सुख पा लिया है। कबीर जी कहते हैं कि मन में निष्ठापूर्वक परमात्मा का सिमरन करो॥ ३॥ १०॥

बिलावलु ॥ जनम मरन का भ्रमु गइआ गोबिद लिव लागी ॥ जीवत सुंनि समानिआ गुर साखी जागी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ कासी ते धुनि ऊपजै धुनि कासी जाई ॥ कासी फूटी पंडिता धुनि कहां समाई ॥ १ ॥ त्रिकुटी संधि मै पेखिआ घट हू घट जागी ॥ ऐसी बुधि समाचरी घट माहि तिआगी ॥ २ ॥ आपु आप ते जानिआ तेज तेजु समाना ॥ कहु कबीर अब जानिआ गोबिद मनु माना ॥ ३ ॥ ११ ॥

जबसे गोविंद में लगन लगी है, मेरा जन्म-मरण का भ्रम दूर हो गया है। गुरु की शिक्षा से जाग गया हूँ और जीवित ही शून्यावस्था में समाया रहता हूँ॥ १॥ रहाउ॥ जो ध्वनि कांस्य के घड़ियाल से पैदा होती है, वह पुनः उस में ही समा जाती है। हे पण्डित! जब कांस्य का घड़ियाल फूट गया तो ध्वनि कहाँ समा गई ?॥ १॥ इड़ा, पिंगला एवं सुषुम्ना नाड़ियों के संगम त्रिकुटी पर जब मैंने देखा तो मेरे शरीर में ही आत्म ज्योति जाग गई। मेरे भीतर ऐसी बुद्धि पैदा हो गई कि मेरा मन मेरे शरीर में बसता हुआ ही त्यागी बन गया है॥ २॥ मैंने अपने आप को स्वयं ही जान लिया है, मेरी ज्योति परमज्योति में विलीन हो गई है। कबीर जी कहते हैं कि अब मैंने जान लिया है और मेरा मन गोविंद से मान गया है॥ ३॥ ११॥

बिलावलु ॥ चरन कमल जा कै रिदै बसहि सो जनु किउ डोलै देव ॥ मानौ सभ सुख नउ निधि ता कै सहजि सहजि जसु बोलै देव ॥ रहाउ ॥ तब इह मति जउ सभ महि पेखै कुटिल गांठि जब खोलै देव ॥ बारं बार माइआ ते अटकै लै नरजा मनु तोलै देव ॥ १ ॥ जह उहु जाइ तही सुखु पावै माइआ तासु न झोलै देव ॥ कहि कबीर मेरा मनु मानिआ राम प्रीति कीओ लै देव ॥ २ ॥ १२ ॥

हे देव! जिसके हृदय में तेरे चरण कमल बसते हैं, ऐसा व्यक्ति कैसे विचलित हो सकता है ? मानो उसके हृदय में जीवन के तमाम सुख एवं नौ निधियाँ बस गई हैं, जो सहज ही तेरा

यश गाता रहता है॥ रहाउ॥ हे देव! जब इन्सान अपने हृदय में से कुटिलता की गांठ खोल देता है, तो उसकी बुद्धि इतनी निर्मल हो जाती है कि उसे सब में परमात्मा ही नजर आता है। वह बारंबार अपने मन को माया की तरफ से सचेत करता है और विवेक रूपी तराजू लेकर मन को तोलता रहता है अर्थात् गुण-अवगुण की जांच-पड़ताल करता रहता है॥ १॥ तब वह जिधर भी जाएगा, उधर ही उसे सुख उपलब्ध होगा और माया उसे विचलित नहीं करेगी। कबीर जी कहते हैं कि जब से राम से प्रेम लगाया है, मेरा मन प्रसन्न हो गया है॥ २॥ १२॥

बिलावलु बाणी भगत नामदेव जी की १ओं सतिगुर प्रसादि ॥

सफल जनमु मोकउ गुर कीना ॥ दुख बिसारि सुख अंतरि लीना ॥ १ ॥ गिआन अंजनु मोकउ गुरि दीना ॥ राम नाम बिनु जीवनु मन हीना ॥ १ ॥ रहाउ ॥ नामदेइ सिमरनु करि जानां ॥ जगजीवन सिउ जीउ समानां ॥ २ ॥ १ ॥

गुरु ने मेरा जन्म सफल कर दिया है। अब मैं दुखों को भुलाकर सुख में लीन रहता हूँ॥ १॥ गुरु ने मुझे ज्ञान का अञ्जन दिया है। राम नाम के बिना मेरा जीवन हीन था॥ १॥ रहाउ॥ नामदेव ने सिमरन करके जान लिया है और उसकी आत्मा परमात्मा में विलीन हो गई है॥ २॥ १॥

बिलावलु बाणी रविदास भगत की १ओं सतिगुर प्रसादि ॥

दारिदु देखि सभ को हसै ऐसी दसा हमारी ॥ असट दसा सिधि कर तलै सभ क्रिपा तुमारी ॥ १ ॥ तू जानत मै किछु नही भव खंडन राम ॥ सगल जीअ सरनागती प्रभ पूरन काम ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जो तेरी सरनागता तिन नाही भारु ॥ ऊच नीच तुम ते तरे आलजु संसारु ॥ २ ॥ कहि रविदास अकथ कथा बहु काइ करीजै ॥ जैसा तू तैसा तुही किआ उपमा दीजै ॥ ३ ॥ १ ॥

हे ईश्वर! हमारी दशा ऐसी थी कि दरिद्र देखकर हर कोई हँसता था। अब अठारह सिद्धियाँ मेरे हाथों की हथेली में हैं, यह सब तेरी ही कृपा है॥ १॥ हे मुक्तिदाता ! तू जानता ही है कि मैं कुछ भी नहीं। हे प्रभु ! तू सबकी कामना पूर्ण करने वाला है, अतः सब जीव तेरी शरण लेते हैं॥ १॥ रहाउ॥ जो तेरी शरण में आ जाते हैं, उनके पापों का भार नहीं रहता। ऊँच-नीच वाले सब जीव तेरी कृपा से इस झंझटों वाले संसार से पार हो गए हैं॥ २॥ रविदास जी कहते हैं कि प्रभु की कथा अकथनीय है, इस बारे और कथन किसलिए किया जाए। जैसा तू है, वैसा केवल तू स्वयं ही है, फिर तुझे क्या उपमा दी जा सकती है॥ ३॥ १॥

बिलावलु ॥ जिह कुल साधु बैसनौ होइ ॥ बरन अबरन रंकु नही ईसुरु बिमल बासु जानीऐ जगि सोइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ ब्रहमन बैस सूद अरु ख्यत्री डोम चंडार मलेछ मन सोइ ॥ होइ पुनीत भगवंत भजन ते आपु तारि तारे कुल दोइ ॥ १ ॥ धंनि सु गाउ धंनि सो ठाउ धंनि पुनीत कुटंब सभ लोइ ॥ जिनि पीआ सार रसु तजे आन रस होइ रस मगन डारे बिखु खोइ ॥ २ ॥ पंडित सूर छत्रपति राजा भगत बराबरि अउरु न कोइ ॥ जैसे पुरैन पात रहै जल समीप भनि रविदास जनमे जगि ओइ ॥ ३ ॥ २॥

जिस कुल में वैष्णव साधु पैदा हो जाता है, चाहे वह ऊँची जाति का है अथवा नीच जाति का है, वह धनवान है अथवा निर्धन है, उसकी सुगन्धि एवं शोभा सारे जग में फैल जाती है॥ १॥ रहाउ॥ चाहे कोई ब्राह्मण, वैश्य, शूद्र, क्षत्रिय, डोम, चाण्डाल अथवा मलिन मन वाला मलेच्छ हो, वह भगवंत के भजन से पवित्र हो जाता है। वह स्वयं पार होकर पितृ एवं मातृ दोनों कुलों को भी पार करवा देता है॥ १॥ वह गाँव धन्य है, जहाँ उसने जन्म लिया है और वह ठिकाना भी धन्य है, जहाँ वह रहता है। उसका पवित्र परिवार भी धन्य है जिसमें मिलकर वह रहता है और वे सब लोग धन्य हैं जो उसकी संगत करते हैं। जिसने हरि-नाम रूपी श्रेष्ठ रस पान किया है तथा अन्य रस त्याग दिए हैं, उसने हरि-रस में लीन होकर विष रूपी रसों को नाश कर दिया है॥ २॥ पण्डित, शूरवीर, छत्रपति राजा इत्यादि अन्य कोई भी भक्त के बराबर नहीं है, जैसे पुरिन के पत्ते जल के निकट रहकर हरे भरे रहते हैं, वैसे ही हरि के भक्त हरि के सहारे खिले रहते हैं। रविदास जी कहते हैं कि उन भक्तजनों का ही जन्म सफल है॥ ३॥ २॥

बाणी सधने की रागु बिलावलु ੧ਓ सतिगुर प्रसादि ॥

न्रिप कंनिआ के कारनै इकु भइआ भेखधारी ॥ कामारथी सुआरथी वा की पैज सवारी ॥ १ ॥ तव गुन कहा जगत गुरा जउ करमु न नासै ॥ सिंघ सरन कत जाईऐ जउ जंबुकु ग्रासै ॥ १ ॥ रहाउ ॥ एक बूंद जल कारने चात्रिकु दुखु पावै ॥ प्रान गए सागरु मिलै फुनि कामि न आवै ॥ २ ॥ प्रान जु थाके थिरु नही कैसे बिरमावउ ॥ बूडि मूए नउका मिलै कहु काहि चढावउ ॥ ३ ॥ मै नाही कछु हउ नही किछु आहि न मोरा ॥ अउसर लजा राखि लेहु सधना जनु तोरा ॥ ४ ॥ १ ॥

राजा की पुत्री से विवाह करवाने के लिए एक ढोंगी आदमी ने विष्णु का रूप धारण कर लिया था। वह कामुक एवं स्वार्थी था, हे हरि! पर तूने उसकी भी लाज रखी थी॥ १॥ हे जगतगुरु! यदि मेरा किया कर्म नाश न हो तो तेरी महिमा का क्या अभिप्राय है। शेर की शरण क्यों जाए यदि फिर गीदड़ ही ग्रास बना ले॥ १॥ रहाउ॥ स्वाति जल की एक बूंद के लिए पपीहा दुख प्राप्त करता है। इस लालसा में यदि प्राण निकलने के पश्चात् उसे समुद्र भी मिल जाए तो फिर वह उसके काम नहीं आता॥ २॥ मेरे प्राण जो थक गए हैं, अब वह स्थिर नहीं होते, फिर मैं कैसे धीरज करूँ? मेरे डूबकर मरने के पश्चात् यदि नौका मिल जाए तो बताओ, उसमें मुझे किसलिए चढ़ाया जाएगा?॥ ३॥ मैं कुछ भी नहीं था, न अब मैं कुछ हूँ और न ही मेरा कुछ है। हे मालिक! सधना तेरा दास है, अब मेरी लाज रखने का समय है, लाज रखो॥ ४॥ १॥

१ओं सति नामु करता पुरखु निरभउ निरवैरु अकाल मूरति अजूनी सैभं गुर प्रसादि ॥

ओंकार एक है, उसका नाम सत्य है, वही संसार का रचयिता है, सर्वशक्तिमान है, उसे किसी से कोई भय नहीं है, वह वैर भावना से रहित है, वह कालातीत ब्रह्म-मूर्ति सदा शाश्वत है, वह जन्म-मरण से रहित है, वह स्वयं ही प्रकाशमान हुआ है, जिसे गुरु-कृपा से पाया जा सकता है।

रागु गोंड चउपदे महला ४ घरु १ ॥

जे मनि चिति आस रखहि हरि ऊपरि ता मन चिंदे अनेक अनेक फल पाई ॥ हरि जाणै सभु किछु जो जीइ वरतै प्रभु घालिआ किसै का इकु तिलु न गवाई ॥ हरि तिस की आस कीजै मन मेरे जो सभ महि सुआमी रहिआ समाई ॥ १ ॥ मेरे मन आसा करि जगदीस गुसाई ॥ जो बिनु हरि आस अवर काहू की कीजै सा निहफल आस सभ बिरथी जाई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जो दीसै माइआ मोह कुटंबु सभु मत तिस की आस लगि जनमु गवाई ॥ इन्ह कै किछु हाथि नही कहा करहि इहि बपुड़े इन्ह का वाहिआ कछु न वसाई ॥ मेरे मन आस करि हरि प्रीतम अपुने की जो तुझु तारै तेरा कुटंबु सभु छडाई ॥ २ ॥ जे किछु आस अवर करहि परमित्री मत तूं जाणहि तेरै कितै कंमि आई ॥ इह आस परमित्री भाउ दूजा है खिन महि झूठु बिनसि सभ जाई ॥ मेरे मन आसा करि हरि प्रीतम साचे की जो तेरा घालिआ सभु थाइ पाई ॥ ३ ॥ आसा मनसा सभ तेरी मेरे सुआमी जैसी तू आस करावहि तैसी को आस कराई ॥ किछु किसी कै हथि नाही मेरे सुआमी ऐसी मेरै सतिगुरि बूझ बुझाई ॥ जन नानक की आस तू जाणहि हरि दरसनु देखि हरि दरसनि त्रिपताई ॥ ४ ॥ १ ॥

हे जीव! यदि मन में भगवान् पर आशा रखोगे तो अनेकों ही मनोवांछित फलों की प्राप्ति हो जाएगी। जो तेरे दिल में है, परमात्मा सबकुछ जानता है। प्रभु इतना दयालु है कि वह किसी की मेहनत को तिल भर भी वृथा नहीं होने देता। हे मेरे मन! उस ईश्वर पर आशा रखो, जो सबमें समा रहा है॥ १॥ हे मेरे मन! ईश्वर की ही आशा करो, जो व्यक्ति प्रभु के अलावा किसी अन्य पर आशा करता है, उसकी वह आशा निष्फल है और वह सारी व्यर्थ हो जाती है॥ १॥ रहाउ॥ यह जो सारा परिवार नजर आता है, यह माया का मोह है, इस परिवार की आशा में लगकर अपना जन्म मत गंवाना। परिवार के इन सदस्यों के वश में कुछ भी नहीं है, ये बेचारे कुछ नहीं कर सकते। इनके करने से कुछ नहीं होता और इनका कुछ वश नहीं चलता। हे मेरे मन! अपने प्यारे प्रभु की आशा करो, जो तुझे भवसागर से पार कर देगा और तेरे पूरे परिवार को भी यम से छुड़ा देगा॥ २॥ यदि तू अपने किसी पराए मित्र की आशा करता है तो यह मत समझ लेना कि यह तेरे कहीं काम आएगी। पराए मित्र की आशा तो द्वैतभाव है, जो झूठी होने के कारण क्षण में नाश हो जाती है। हे मेरे मन! अपने सच्चे प्रियतम प्रभु की आशा करो, जो तेरी सारी मेहनत को साकार कर देता है॥ ३॥ हे मेरे स्वामी! यह आशा एवं अभिलाषा सब तेरी ही हैं, तू जैसी आशा करवाता है, वैसी ही कोई आशा करता है। मेरे सतगुरु ने मुझे यही सूझ दी है कि किसी भी जीव के हाथ में कुछ भी नहीं है। हे हरि! नानक की आशा तू ही जानता है और तेरे दर्शन करके मैं तृप्त हो जाता हूँ॥ ४॥ १॥

गोंड महला ४ ॥ ऐसा हरि सेवीऐ नित धिआईऐ जो खिन महि किलविख सभि करे बिनासा ॥ जे हरि तिआगि अवर की आस कीजै ता हरि निहफल सभ घाल गवासा ॥ मेरे मन हरि सेविहु सुखदाता सुआमी जिसु सेविऐ सभ भुख लहासा ॥ १ ॥ मेरे मन हरि ऊपरि कीजै भरवासा ॥ जह जाईऐ तह नालि मेरा सुआमी हरि अपनी पैज रखै जन दासा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जे अपनी बिरथा कहहु अवरा पहि ता आगै अपनी बिरथा बहु बहुतु कढासा ॥ अपनी बिरथा कहहु हरि अपुने सुआमी पहि जो तुम्हरे दूख ततकाल कटासा ॥ सो ऐसा प्रभु छोडि अपनी बिरथा अवरा पहि कहीऐ अवरा पहि कहि मन लाज मरासा ॥ २ ॥ जो संसारै के कुटंब मित्र भाई दीसहि मन मेरे ते सभि अपनै सुआइ मिलासा ॥ जितु दिनि उन्ह का सुआउ होइ न आवै तितु दिनि नेड़ै को न ढुकासा ॥ मन मेरे अपना हरि सेवि दिनु राती जो तुधु उपकरै दूखि सुखासा ॥ ३ ॥ तिस का भरवासा किउ कीजै मन मेरे जो अंती अउसरि रखि न सकासा ॥ हरि जपु मंतु गुर उपदेसु लै जापहु तिन्ह अंति छडाए जिन्ह हरि प्रीति चितासा ॥ जन नानक अनदिनु नामु जपहु हरि संतहु इहु छूटण का साचा भरवासा ॥ ४ ॥ २ ॥

ऐसे ईश्वर की उपासना करनी चाहिए, नित्य उसका मनन करना चाहिए, जो क्षण में ही सब पाप नाश कर देता है। यदि परमात्मा को त्याग कर किसी अन्य की आशा करोगे तो सारी मेहनत निष्फल हो जाएगी। हे मेरे मन! सुखों के दाता, स्वामी हरि की अर्चना करो, जिसकी अर्चना करने से सारी भूख दूर हो जाती है॥ १॥ हे मेरे मन! भगवान पर भरोसा रखना चाहिए। जहाँ भी जाता हूँ, वहाँ ही मेरा स्वामी मेरे साथ होता है। हरि अपने भक्तजनों एवं दासों की हमेशा ही लाज रखता है॥ १॥ रहाउ॥ यदि हम अपना दुख किसी को जाकर बताएँ तो आगे से वह अपने ही अनेक दुःख सुना देता है। इसलिए अपना दुःख अपने स्वामी हरि के पास ही कहो, जो तेरे दुख तत्काल ही समाप्त कर देगा। हे मन! सो ऐसे प्रभु को छोड़कर अपना दुख किसी अन्य के पास कहना तो शर्म से डूबकर मरने की तरह ही है॥ २॥ हे मन! संसार के जो परिवार, मित्र, भाई इत्यादि रिश्ते नजर आते हैं, वे तुझे अपने स्वार्थ के लिए ही मिलते हैं। जिस दिन उनका स्वार्थ तुझसे पूरा न हो, उस दिन से उन में से कोई भी तेरे निकट नहीं आएगा। हे मेरे मन! दिन-रात भगवान की भक्ति करो; जो तुझ पर उपकार करके दुखों को सुख में तबदील कर देता है॥ ३॥ हे मेरे मन! उस पर भरोसा कैसे किया जा सकता है? जो अन्तिम समय बचा नहीं सकता। गुरु का उपदेश लेकर हरि-मंत्र का जाप करो, अन्तिम समय हरि उन्हें यम से बचा लेता है, जिनके चित्त में उसका प्रेम बसता है। नानक कहते हैं कि हे भक्तजनो! हर समय प्रभु का नाम जपो; यम से छूटने का यही सच्चा भरोसा है॥ ४॥ २॥

गोंड महला ४ ॥ हरि सिमरत सदा होइ अनंदु सुखु अंतरि सांति सीतल मनु अपना ॥ जैसे सकति सूरु बहु जलता गुर ससि देखे लहि जाइ सभ तपना ॥ १ ॥ मेरे मन अनदिनु धिआइ नामु हरि जपना ॥ जहा कहा तुझु राखै सभ ठाई सो ऐसा प्रभु सेवि सदा तू अपना ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जा महि सभि निधान सो हरि जपि मन मेरे गुरमुखि खोजि लहहु हरि रतना ॥ जिन हरि धिआइआ तिन हरि पाइआ मेरा सुआमी तिन के चरण मलहु हरि दसना ॥ २ ॥ सबदु पछाणि राम रसु पावहु ओहु ऊतमु संतु भइओ बड बडना ॥ तिसु जन की वडिआई हरि आपि वधाई ओहु घटै न किसै की घटाई इकु तिलु तिलु तिलना ॥ ३ ॥ जिस ते सुख पावहि मन मेरे सो सदा धिआइ नित कर जुरना ॥ जन नानक कउ हरि दानु इकु दीजै नित बसहि रिदै हरी मोहि चरना ॥ ४ ॥ ३ ॥

परमात्मा का सिमरन करने से सदा ही आनंद एवं सुख मिलता है, इससे मन शीतल हो जाता है और बड़ी शांति मिलती है। जैसे सूर्य रूपी माया से मन बहुत जलता रहता है, वैसे ही चन्द्रमा रूपी गुरु के दर्शन करके सारा ताप दूर हो जाता है॥ १॥ हे मेरे मन! नित्य परमेश्वर का ध्यान करो और उसका नाम जपो। जहाँ कहाँ सब स्थानों पर तेरी रक्षा करता है, सो ऐसे प्रभु की तू सदैव उपासना करता रह॥ १॥ रहाउ॥ हे मेरे मन! जिसमें सर्व सुखों के भण्डार हैं, उस परमात्मा को जपते रहो तथा गुरु के माध्यम से हरि नाम रूपी रत्न को खोज लो। जिन्होंने हरि का ध्यान किया है, उन्होंने उसे पा लिया है, हरि के उन दासों के चरणों की सेवा करो॥ २॥ शब्द को पहचान कर राम रस प्राप्त करो। राम रस पा कर वह उत्तम संत एवं महान् बन गया है। अपने उस सेवक की बड़ाई परमात्मा ने स्वयं बड़ाई है और उसकी वह बड़ाई किसी के घटाने से एक तिल मात्र भी कम नहीं होती॥ ३॥ हे मेरे मन! जिस प्रभु से सर्व सुख हासिल होते हैं, सो नित्य हाथ जोड़कर सदा उसका ध्यान करो। नानक प्रार्थना करते हैं कि हे हरि! मैं केवल यही दान चाहता हूँ कि तेरे सुन्दर चरण मेरे हृदय में वसते रहें॥ ४॥ ३॥

गोंड महला ४ ॥ जितने साह पातिसाह उमराव सिकदार चउधरी सभि मिथिआ झूठु भाउ दूजा जाणु ॥ हरि अबिनासी सदा थिरु निहचलु तिसु मेरे मन भजु परवाणु ॥ १ ॥ मेरे मन नामु हरी भजु सदा दीबाणु ॥ जो हरि महलु पावै गुर बचनी तिसु जेवडु अवरु नाही किसै दा ताणु ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जितने धनवंत कुलवंत मिलखवंत दीसहि मन मेरे सभि बिनसि जाहि जिउ रंगु कसुंभ कचाणु ॥ हरि सति निरंजनु सदा सेवि मन मेरे जितु हरि दरगह पावहि तू माणु ॥ २ ॥ ब्राहमणु खत्री सूद वैस चारि वरन चारि आस्रम हहि जो हरि धिआवै सो परधानु ॥ जिउ चंदन निकटि वसै हिरडु बपुड़ा तिउ सतसंगति मिलि पतित परवाणु ॥ ३ ॥ ओहु सभ ते ऊचा सभ ते सूचा जा कै हिरदै वसिआ भगवानु ॥ जन नानकु तिस के चरन पखालै जो हरि जनु नीचु जाति सेवकाणु ॥ ४ ॥ ४ ॥

दुनिया में जितने भी शाह-बादशाह, उमराव-सरदार एवं चौधरी हैं, सब नाशवान, झूठे एवं द्वैतभाव में लीन जानो। एकमात्र अनश्वर परमात्मा ही सदैव स्थिर एवं अटल है, इसलिए हे मेरे मन! उसे प्रवान होने के लिए उसका ही भजन कर॥ १॥ हे मन! हरि-नाम का भजन कर, उसका आसरा अटल है। जो गुरु के वचन द्वारा हरि का महल पा लेता है, उसके बल जितना अन्य कोई बलशाली नहीं॥ १॥ रहाउ॥ हे मेरे मन! जितने भी धनवान्, उच्च कुलीन एवं करोड़पति नजर आते हैं, वे यूं नाश हो जाते हैं, जैसे कुसुंभ फूल का कच्चा रंग नाश हो जाता है। सदैव सत्य मायातीत हरि की सेवा करो, जिस द्वारा तू उसके दरबार में शोभा हासिल करेंगा॥ २॥ ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, एवं शूद्र—चार जातियाँ हैं और ब्रह्मचार्य, ग्रहस्थ, वानप्रस्थ एवं सन्यास चार आश्रम हैं, इन में से जो भी हरि का ध्यान करता है, वही दुनिया में प्रधान है। जैसे चंदन के निकट बसता अरिण्ड भी खुशबूदार हो जाता है, वैसे ही सत्संगति में मिलकर पापी भी स्वीकार हो जाता है॥ ३॥ जिसके हृदय में भगवान का निवास हो गया है, वह सबसे ऊँचा एवं सबसे शुद्ध है। नानक उसके चरण धोता है, जो हरिजन चाहे नीच जाति से सेवक है॥ ४॥ ४॥

गोंड महला ४ ॥ हरि अंतरजामी सभतै वरतै जेहा हरि कराए तेहा को करईऐ ॥ सो ऐसा हरि सेवि सदा मन मेरे जो तुधनो सभ दू रखि लईऐ ॥ १ ॥ मेरे मन हरि जपि हरि नित पड़ईऐ ॥ हरि बिनु को मारि जीवालि न साकै ता मेरे मन काइतु कड़ईऐ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ हरि परपंचु कीआ सभु करतै विचि आपे आपणी जोति धरईऐ ॥ हरि एको बोलै हरि एकु बुलाए गुरि पूरै हरि एकु दिखईऐ ॥ २ ॥ हरि अंतरि नाले बाहरि नाले कहु तिसु पासहु मन किआ चोरईऐ ॥ निहकपट सेवा कीजै हरि केरी तां

मेरे मन सरब सुख पईऐ ॥ ३ ॥ जिस दै वसि सभु किछु सो सभ दू वडा सो मेरे मन सदा धिआईऐ ॥ जन नानक सो हरि नालि है तेरै हरि सदा धिआइ तू तुधु लए छडईऐ ॥ ४ ॥ ५ ॥

ईश्वर अन्तर्यामी है, विश्वव्यापी है, जैसी उसकी इच्छा है, वैसा ही हर किसी ने करना है। हे मेरे मन ! सो ऐसे प्रभु की सदैव उपासना करो, जो तुझे सब दुख-तकलीफों से बचा लेता है॥ १॥ हे मन ! हरि का जाप करो; नित्य उसकी पूजा करो। जब हरि के बिना कोई मारने एवं जीवित करने वाला नहीं तो क्यों किसी बात पर डरें ?॥ १॥ रहाउ॥ यह समूचा जगत्-प्रपंच उस रचयिता हरि ने बनाया है और स्वयं ही अपनी ज्योति इसमें रखी है। एक हरि ही सब में बोलता एवं जीवों से बुलाता है और पूर्ण गुरु ही उस एक परमात्मा के दर्शन करवा सकता है॥ २॥ हे मन ! बताओ, उस परमात्मा से क्या चुराया जा सकता है, जब हमारे हृदय एवं बाहर जगत् में वह स्वयं ही मौजूद है। हे मन ! यदि निष्कपट होकर परमात्मा की सेवा की जाए तो जीवन के सर्व सुख हासिल हो जाते हैं॥ ३॥ हे मेरे मन ! सदैव उसका ध्यान करना चाहिए, जिसके वश में सबकुछ है और जो सबसे महान् है। हे नानक ! वह हरि तेरे साथ ही रहता है, तू सदा ही उसका मनन किया कर, वह तुझे यम से मुक्त करा देगा॥ ४॥ ५॥

गोंड महला ४ ॥ हरि दरसन कउ मेरा मनु बहु तपतै जिउ त्रिखावंतु बिनु नीर ॥ १ ॥ मेरै मनि प्रेमु लगो हरि तीर ॥ हमरी बेदन हरि प्रभु जानै मेरे मन अंतर की पीर ॥ १ ॥ रहाउ ॥ मेरे हरि प्रीतम की कोई बात सुनावै सो भाई सो मेरा बीर ॥ २ ॥ मिलु मिलु सखी गुण कहु मेरे प्रभ के ले सतिगुर की मति धीर ॥ ३ ॥ जन नानक की हरि आस पुजावहु हरि दरसनि सांति सरीर ॥ ४ ॥ ६ ॥ छका १ ॥

हरि-दर्शनों के लिए मेरा मन ऐसा तड़प रहा है, जैसे कोई प्यासा मनुष्य पानी के लिए तड़पता रहता है॥ १॥ मेरे मन में हरि के प्रेम का तीर लग चुका है, मेरे अन्तर्मन की पीड़ा एवं वेदना तो प्रभु ही जानता है॥ १॥ रहाउ॥ वास्तव में वही मेरा भाई एवं हितैषी है, जो मुझे मेरे हरि प्रियतम की कोई बात सुनाता है॥ २॥ हे मेरी सखियो ! आओ, मिलकर सतिगुरु की धीरज देने वाली मति लेकर मुझे मेरे प्रभु के गुण सुनाओ॥ ३॥ हे हरि ! नानक की अभिलाषा पूरी करो, चूंकि तेरे दर्शन करके ही उसके शरीर को शान्ति मिलती है॥ ४॥ ६॥ छका १॥

रागु गोंड महला ५ चउपदे घरु १ १ओं सतिगुर प्रसादि ॥

सभु करता सभु भुगता ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सुनतो करता पेखत करता ॥ अद्रिसटो करता द्रिसटो करता ॥ ओपति करता परलउ करता ॥ बिआपत करता अलिपतो करता ॥ १ ॥ बकतो करता बूझत करता ॥ आवतु करता जातु भी करता ॥ निरगुन करता सरगुन करता ॥ गुर प्रसादि नानक समद्रिसटा ॥ २ ॥ १ ॥

ईश्वर ही सब करने वाला एवं सब भोगने वाला है॥ १॥ रहाउ॥ वह स्वयं ही सुनता एवं देखता है। एक वही दृश्य एवं अदृश्य है। सृष्टि की रचना और प्रलय भी वही करने वाला है। वह सर्वव्यापक है लेकिन स्वयं जग के मोह से निर्लिप्त है॥ १॥ परमात्मा ही वक्ता है और वही सबकुछ जानता है। एक वही अवतार लेकर दुनिया में आता है और वही जाता भी है। एक परमात्मा ही निर्गुण एवं सगुण रूप में है। हे नानक ! वह समद्रष्टा ईश्वर तो गुरु की कृपा से ही मिलता है॥ २॥ १॥

गोंड महला ५ ॥ फाकिओ मीन कपिक की निआई तू उरझि रहिओ कसुंभाइले ॥ पग धारहि सासु लेखै लै तउ उधरहि हरि गुण गाइले ॥ १ ॥ मन समझु छोडि आवाइले ॥ अपने रहन कउ ठउरु न पावहि काए पर कै जाइले ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जिउ मैगलु इंद्री रसि प्रेरिओ तू लागि परिओ कुटंबाइले ॥ जिउ पंखी इकत्र होइ फिरि बिछुरै थिरु संगति हरि हरि धिआइले ॥ २ ॥ जैसे मीनु रसन सादि बिनसिओ ओहु मूठौ मूड़ लोभाइले ॥ तू होआ पंच वासि वैरी कै छूटहि परु सरनाइले ॥ ३ ॥ होहु क्रिपाल दीन दुख भंजन सभि तुम्हरे जीअ जंताइले ॥ पावउ दानु सदा दरसु पेखा मिलु नानक दास दसाइले ॥ ४ ॥ २ ॥

हे जीव ! तू मछली एवं बंदर की तरह यम के जाल में फँस चुका है और कुसुंभ के फूल जैसी माया के मोह में उलझा हुआ है। अपने भाग्यानुसार ही तू पैर रखता और साँस लेता है, यदि तू भगवान का गुणगान कर ले तो तेरा उद्धार हो सकता है॥ १॥ हे मन ! जरा समझ ले और दुनिया का मोह छोड़ दे। अपने रहने के लिए स्थान नहीं मिला, फिर क्यों पराए घर जाता है॥ १॥ रहाउ॥ जैसे कामवासना के स्वाद ने हाथी को वश में कर लिया है, वैसे ही तू परिवार के मोह में लगा हुआ है। जैसे पक्षी रात्रिकाल पेड़ पर इकट्ठे होकर सुबह फिर बिछुड़ जाते हैं, वैसे ही परिवार के सदस्य बिछुड़ जाते हैं। सत्संग में मिलकर परमात्मा का ध्यान करने से स्थिरता मिल जाती है॥ २॥ जैसे जीभ के स्वाद के कारण मछली नाश हो जाती है, वैसे ही मूर्ख आदमी लोभ में फँसकर लुट जाता है। हे मन ! तू काम, क्रोध, मोह, लोभ, अहंकार—इन पाँच शत्रुओं के वशीभूत हो गया है, लेकिन भगवान की शरण लेने से छूट सकता है॥ ३॥ हे दीनों के दुखनाशक ! कृपालु हो जाओ, सब जीव तेरे पैदा किए हुए हैं। मैं सदैव तेरे दर्शन का दान चाहता हूँ, मुझे मिलो, नानक तेरे दासों का दास है॥ ४॥ २॥

रागु गोंड महला ५ चउपदे घरु २ ੧ਓ सतिगुर प्रसादि ॥

जीअ प्रान कीए जिनि साजि ॥ माटी महि जोति रखी निवाजि ॥ बरतन कउ सभु किछु भोजन भोगाइ ॥ सो प्रभु तजि मूड़े कत जाइ ॥ १ ॥ पारब्रहम की लागउ सेव ॥ गुर ते सुझै निरंजन देव ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जिनि कीए रंग अनिक परकार ॥ ओपति परलउ निमख मझार ॥ जा की गति मिति कही न जाइ ॥ सो प्रभु मन मेरे सदा धिआइ ॥ २ ॥ आइ न जावै निहचलु धनी ॥ बेअंत गुना ता के केतक गनी ॥ लाल नाम जा कै भरे भंडार ॥ सगल घटा देवै आधार ॥ ३ ॥ सति पुरखु जा को है नाउ ॥ मिटहि कोटि अघ निमख जसु गाउ ॥ बाल सखाई भगतन को मीत ॥ प्रान अधार नानक हित चीत ॥ ४ ॥ १ ॥ ३ ॥

जिसने बनाकर यह जीवन एवं प्राण दिए हैं, मिट्टी रूपी शरीर में अपनी ज्योति रखकर तुझे बड़ाई दी है। तेरे उपयोग के लिए सबकुछ दिया एवं स्वादिष्ट भोजन खिलाता है। अरे मूर्ख ! उस प्रभु को त्याग कर किधर भटक रहा है॥ १॥ परब्रह्म की सेवा में लग जाओ, उस निरंजन देव की सूझ तो गुरु से ही मिलती है॥ १॥ रहाउ॥ जिसने अनेक प्रकार के खेल-तमाशे बनाए हैं, एक क्षण में ही सृष्टि की उत्पत्ति एवं प्रलय कर देता है, उस परमात्मा की गति एवं विस्तार बयान नहीं किया जा सकता। हे मेरे मन ! स. ऐसे प्रभु का सदैव ध्यान करो॥ २॥ वह सबका मालिक है, निश्चल है और जन्म-मरण के चक्र से दूर है। उसके गुण बेअंत हैं, जिन्हें गिना नहीं जा सकता। उसके नाम रूपी रत्नों के भण्डार भरे हुए हैं। वह सब जीवों को आधार देता है॥ ३॥ जिसका नाम

सत्यपुरुष है, पल भर उसका यशगान करने से करोड़ों ही पाप मिट जाते हैं। वह बालसखा एवं भक्तजनों का घनिष्ठ मित्र है। एकमात्र वही नानक का प्राणाधार एवं शुभचिन्तक है॥ ४॥ १॥ ३॥

गोंड महला ५ ॥ नाम संगि कीनो बिउहारु ॥ नामो ही इसु मन का अधारु ॥ नामो ही चिति कीनी ओट ॥ नामु जपत मिटहि पाप कोटि ॥ १ ॥ रासि दीई हरि एको नामु ॥ मन का इसटु गुर संगि धिआनु ॥ १ ॥ रहाउ ॥ नामु हमारे जीअ की रासि ॥ नामो संगी जत कत जात ॥ नामो ही मनि लागा मीठा ॥ जलि थलि सभ महि नामो डीठा ॥ २ ॥ नामे दरगह मुख उजले ॥ नामे सगले कुल उधरे ॥ नामि हमारे कारज सीध ॥ नाम संगि इहु मनूआ गीध ॥ ३ ॥ नामे ही हम निरभउ भए ॥ नामे आवन जावन रहे ॥ गुरि पूरै मेले गुणतास ॥ कहु नानक सुखि सहजि निवासु ॥ ४ ॥ २ ॥ ४ ॥

नाम से व्यापार किया है और नाम ही इस मन का आधार है। नाम को अपने चित्त का सहारा बना लिया है। नाम जपने से करोड़ों ही पाप मिट जाते हैं॥ १॥ ईश्वर ने मुझे केवल नाम की ही राशि दी है। मन का इष्ट यही है कि गुरु के साथ मिलकर नाम का ध्यान किया जाए॥ १॥ रहाउ॥ परमात्मा का नाम ही हमारे जीवन की राशि है। नाम मेरा साथी है और जहाँ कहीं भी जाता हूँ, मेरे साथ जाता है। परमात्मा का नाम मेरे मन में मीठा लग गया है और जल एवं धरती सबमें मैंने नाम ही देखा है॥ २॥ नाम द्वारा ही प्रभु-दरबार में शोभा प्राप्त होती है और नाम द्वारा सारी कुल का ही उद्धार हो जाता है। नाम ने हमारे सभी कार्य संवार दिए हैं और नाम से यह मन गद्गद् हो गया है॥ ३॥ नाम से हम निडर हो गए हैं और नाम द्वारा हमारा आवागमन मिट गया है। पूर्ण गुरु ने गुणों के भण्डार से मिला दिया है। हे नानक! अब सहज सुख में निवास हो गया है॥ ४॥ २॥ ४॥

गोंड महला ५ ॥ निमाने कउ जो देतो मानु ॥ सगल भूखे कउ करता दानु ॥ गरभ घोर महि राखनहारु ॥ तिसु ठाकुर कउ सदा नमसकारु ॥ १ ॥ ऐसो प्रभु मन माहि धिआइ ॥ घटि अवघटि जत कतहि सहाइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ रंकु राउ जा कै एक समानि ॥ कीट हसति सगल पूरान ॥ बीओ पूछि न मसलति धरै ॥ जो किछु करै सु आपहि करै ॥ २ ॥ जा का अंतु न जानसि कोइ ॥ आपे आपि निरंजनु सोइ ॥ आपि अकारु आपि निरंकारु ॥ घट घट घटि सभ घट आधारु ॥ ३ ॥ नाम रंगि भगत भए लाल ॥ जसु करते संत सदा निहाल ॥ नाम रंगि जन रहे अघाइ ॥ नानक तिन जन लागै पाइ ॥ ४ ॥ ३ ॥ ५ ॥

जो दीन को भी सम्मान देता है, सब भूखों को भी भोजन-दान देता है, भयानक गर्भ में भी जीव की रक्षा करने वाला है, उस ईश्वर को हमारा सदा शत् शत् नमन है॥ १॥ सो ऐसे प्रभु का मन में ध्यान करते रहो, जो सुख-दुख हर जगह सहायता करता है॥ १॥ रहाउ॥ जिसकी दृष्टि में भिखारी एवं राजा एक समान हैं, वह चींटी एवं हाथी सबमें भरपूर है। वह किसी से पूछकर कोई सलाह नहीं करता। वह जो कुछ करता है, अपनी मर्जी से ही करता है॥ २॥ जिस भगवान का रहस्य कोई नहीं जानता, वह निरंजन स्वयं ही सबकुछ है। वह स्वयं ही साकार और स्वयं ही निराकार है। वह सर्वव्यापक है और सब के जीवन का आधार है॥ ३॥ नाम के रंग में रंगकर भक्त लाल हो गए हैं और संतजन उसका यश करते हुए सदा निहाल रहते हैं। नाम के रंग में संतजन तृप्त रहते हैं और नानक तो उन संतजनों के चरणों में ही लगता है॥ ४॥ ३॥ ५॥

गोंड महला ५ ॥ जा कै संगि इहु मनु निरमलु ॥ जा कै संगि हरि हरि सिमरनु ॥ जा कै संगि किलबिख होहि नास ॥ जा कै संगि रिदै परगास ॥ १ ॥ से संतन हरि के मेरे मीत ॥ केवल नामु गाईऐ जा कै नीत ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जा कै मंत्रि हरि हरि मनि वसै ॥ जा कै उपदेसि भरमु भउ नसै ॥ जा कै कीरति निरमल सार ॥ जा की रेनु बांछै संसार ॥ २ ॥ कोटि पतित जा कै संगि उधार ॥ एकु निरंकारु जा कै नाम अधार ॥ सरब जीआं का जानै भेउ ॥ क्रिपा निधान निरंजन देउ ॥ ३ ॥ पारब्रहम जब भए क्रिपाल ॥ तब भेटे गुर साध दइआल ॥ दिनु रैणि नानकु नामु धिआए ॥ सूख सहज आनंद हरि नाए ॥ ४ ॥ ४ ॥ ६ ॥

जिनके संग रहने से यह मन निर्मल हो जाता है, जिनकी संगत में प्रभु का सिमरन होता है, जिनकी सुसंगति में सब पाप नाश हो जाते हैं, जिनकी संगत में हृदय में प्रकाश हो जाता है॥ १॥ वे हरि के संतजन ही मेरे परम मित्र हैं, जिनके साथ केवल नाम का ही गुणगान किया जाता है॥ १॥ रहाउ॥ जिनके मंत्र द्वारा परमेश्वर मन में आ बसता है, जिनके उपदेश द्वारा सारे भ्रम एवं भय नाश हो जाते हैं, जिनके हृदय में प्रभु की निर्मल कीर्ति है, उनकी चरण-धूलि का सारा संसार ही अभिलाषी है॥ २॥ जिनकी सुसंगति द्वारा करोड़ों ही पापियों का उद्धार हो जाता है, एक परमात्मा ही उनके हृदय में बसता है, जिसके नाम का उन्हें आसरा है। निरंजन परमात्मा कृपा का भण्डार है और वह सब जीवों का भेद जानता है॥ ३॥ जब परब्रह्म कृपालु हुआ तो ही दयालु गुरु-साधु से भेंट हुई। नानक तो दिन-रात नाम का ही मनन करता रहता है और हरि के नाम द्वारा उसके हृदय में सहज सुख एवं आनंद बना रहता है॥ ४॥ ४॥ ६॥

गोंड महला ५ ॥ गुर की मूरति मन महि धिआनु ॥ गुर कै सबदि मंत्रु मनु मान ॥ गुर के चरन रिदै लै धारउ ॥ गुरु पारब्रहमु सदा नमसकारउ ॥ १ ॥ मत को भरमि भुलै संसारि ॥ गुर बिनु कोइ न उतरसि पारि ॥ १ ॥ रहाउ ॥ भूले कउ गुरि मारगि पाइआ ॥ अवर तिआगि हरि भगती लाइआ ॥ जनम मरन की त्रास मिटाई ॥ गुर पूरे की बेअंत वडाई ॥ २ ॥ गुर प्रसादि ऊरध कमल बिगास ॥ अंधकार महि भइआ प्रगास ॥ जिनि कीआ सो गुर ते जानिआ ॥ गुर किरपा ते मुगध मनु मानिआ ॥ ३ ॥ गुरु करता गुरु करणै जोगु ॥ गुरु परमेसरु है भी होगु ॥ कहु नानक प्रभि इहै जनाई ॥ बिनु गुर मुकति न पाईऐ भाई ॥ ४ ॥ ५ ॥ ७ ॥

गुरु की मूर्ति का ही मन में ध्यान लगा हुआ है और गुरु के शब्द को ही मन में मंत्र मान लिया है। गुरु के चरणों को हृदय में धारण कर लिया है, गुरु ही परब्रह्म है, जिसे हमारा सदैव नमन है॥ १॥ हे संसार के लोगो ! भ्रम में पड़कर भूल मत जाना, क्योंकि गुरु के बिना कोई भी संसार-सागर में से पार नहीं होता॥ १॥ रहाउ॥ भटके हुए जीव को गुरु ने ही सन्मार्ग प्रदान किया है और अन्य सब कुछ त्याग कर भगवान की भक्ति में लगाया है। पूर्ण गुरु की यह बेअंत बड़ाई है कि उसने जन्म-मरण की सारी चिन्ता मिटा दी है॥ २॥ गुरु की कृपा से उलटा पड़ा हृदय कमल खिल गया है और अन्धेरे रूपी मन में प्रकाश हो गया है। जिस ईश्वर ने उत्पन्न किया है, उसे गुरु से ही जाना है। गुरु-कृपा से मूर्ख मन प्रसन्न हो गया है॥ ३॥ गुरु ही कर्ता है और वही सब कुछ करने में समर्थ है। गुरु ही परमेश्वर है, वह वर्तमान में भी है और भविष्य में भी उसका ही अस्तित्व होगा। हे नानक ! प्रभु ने यह भेद बता दिया है कि गुरु के बिना मुक्ति नहीं मिलती॥ ४॥ ५॥ ७॥

गोंड महला ५ ॥ गुरू गुरू गुरु करि मन मोर ॥ गुरू बिना मै नाही होर ॥ गुर की टेक रहहु दिनु राति ॥ जा की कोइ न मेटै दाति ॥ १ ॥ गुरु परमेसरु एको जाणु ॥ जो तिसु भावै सो परवाणु ॥ १ ॥ रहाउ ॥ गुर चरणी जा का मनु लागै ॥ दूखु दरदु भ्रमु ता का भागै ॥ गुर की सेवा पाए मानु ॥ गुर ऊपरि सदा कुरबानु ॥ २ ॥ गुर का दरसनु देखि निहाल ॥ गुर के सेवक की पूरन घाल ॥ गुर के सेवक कउ दुखु न बिआपै ॥ गुर का सेवकु दह दिसि जापै ॥ ३ ॥ गुर की महिमा कथनु न जाइ ॥ पारब्रहमु गुरु रहिआ समाइ ॥ कहु नानक जा के पूरे भाग ॥ गुर चरणी ता का मनु लाग ॥ ४ ॥ ६ ॥ ८ ॥

हे मेरे मन! गुरु गुरु जपो, गुरु के बिना मेरा अन्य कोई सहारा नहीं है। दिन-रात गुरु की शरण में रहो, जिसकी देन कोई नहीं मिटा सकता॥ १॥ गुरु एवं परमेश्वर को एक ही समझो, जो उसे भाता है, वही मंजूर होता है॥ १॥ रहाउ॥ जिसका मन गुरु-चरणों में लग जाता है, उसका दुख-दर्द एवं भ्रम दूर हो जाता है। गुरु की सेवा करने से बड़ा यश प्राप्त होता है, इसलिए मैं सदैव गुरु पर कुर्बान जाता हूँ॥ २॥ गुरु का दर्शन करके मैं निहाल हो गया हूँ। गुरु के सेवक की साधना पूर्ण हो जाती है। गुरु के सेवक को कोई दुख नहीं लगता और गुरु का सेवक दसों दिशाओं में विख्यात हो जाता है॥ ३॥ गुरु की महिमा अकथनीय है, परब्रह्म गुरु हर जगह समाया हुआ है। हे नानक! जिसके पूर्ण भाग्य होते हैं, उसका मन ही गुरु के चरणों में लगता है॥ ४॥ ६॥ ८॥

गोंड महला ५ ॥ गुरु मेरी पूजा गुरु गोबिंदु ॥ गुरु मेरा पारब्रहमु गुरु भगवंतु ॥ गुरु मेरा देउ अलख अभेउ ॥ सरब पूज चरन गुर सेउ ॥ १ ॥ गुर बिनु अवरु नाही मै थाउ ॥ अनदिनु जपउ गुरू गुर नाउ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ गुरु मेरा गिआनु गुरु रिदै धिआनु ॥ गुरु गोपालु पुरखु भगवानु ॥ गुर की सरणि रहउ कर जोरि ॥ गुरू बिना मै नाही होरु ॥ २ ॥ गुरु बोहिथु तारे भव पारि ॥ गुर सेवा जम ते छुटकारि ॥ अंधकार महि गुर मंत्रु उजारा ॥ गुर कै संगि सगल निसतारा ॥ ३ ॥ गुरु पूरा पाईऐ वडभागी ॥ गुर की सेवा दूखु न लागी ॥ गुर का सबदु न मेटै कोइ ॥ गुरु नानकु नानकु हरि सोइ ॥ ४ ॥ ७ ॥ ९ ॥

गुरु ही मेरी पूजा है, वही मेरा गोविन्द है। गुरु ही मेरा परब्रह्म एवं भगवंत है। गुरु मेरा पूज्य देवता है, वह अदृष्ट है और उसका रहस्य पाया नहीं जा सकता। जिसकी सभी पूजा करते हैं, मैं उस गुरु के चरणों की सेवा में ही लीन हूँ॥ १॥ गुरु के बिना मेरा अन्य कोई स्थान नहीं है, मैं दिन-रात गुरु का नाम जपता रहता हूँ॥ १॥ रहाउ॥ गुरु ही मेरा ज्ञान है और हृदय में गुरु का ही ध्यान करता हूँ। गुरु ही जगत का पालनहार एवं परमपुरुष भगवान है। मैं हाथ जोड़कर गुरु की शरण में पड़ा रहता हूँ, गुरु के बिना मेरा अन्य कोई साथी नहीं है॥ २॥ गुरु ऐसा जहाज है जो जीव को भवसागर से पार करवा देता है। गुरु की सेवा करने से ही यम से छुटकारा मिलता है और अज्ञान रूपी अंधेरे में गुरु-मंत्र ही उजाला करता है। गुरु के संग रहने से सबका निस्तारा हो जाता है॥ ३॥ बड़े भाग्य से ही पूर्ण गुरु मिलता है, गुरु की सेवा करने से कोई दुख स्पर्श नहीं करता। गुरु के शब्द को कोई मिटा नहीं सकता। गुरु ही नानक है और नानक ही परमेश्वर है॥ ४॥ ७॥ ९॥

गोंड महला ५ ॥ राम राम संगि करि बिउहार ॥ राम राम राम प्रान अधार ॥ राम राम राम कीरतनु गाइ ॥ रमत रामु सभ रहिओ समाइ ॥ १ ॥ संत जना मिलि बोलहु राम ॥ सभ ते निरमल पूरन काम ॥ १ ॥ रहाउ ॥ राम राम धनु संचि भंडार ॥ राम राम राम करि आहार ॥ राम राम वीसरि नही जाइ

॥ करि किरपा गुरि दीआ बताइ ॥ २ ॥ राम राम राम सदा सहाइ ॥ राम राम राम लिव लाइ ॥ राम राम जपि निरमल भए ॥ जनम जनम के किलबिख गए ॥ ३ ॥ रमत राम जनम मरणु निवारै ॥ उचरत राम भै पारि उतारै ॥ सभ ते ऊच राम परगास ॥ निसि बासुर जपि नानक दास ॥ ४ ॥ ८ ॥ १० ॥

हे जीव! राम नाम से ही व्यवहार करो, क्योंकि राम ही प्राणों का एकमात्र आधार है। राम का ही कीर्तिगान करना चाहिए, क्योंकि प्यारा राम सब में ही समाया हुआ है॥ १॥ संतजनों के साथ मिलकर राम नाम ही बोलो, यही सबसे पावन है और मनोकामना पूर्ण करने वाला है॥ १॥ रहाउ॥ राम नाम का धन संचित करके भण्डार भर लो। राम नाम का अपना भोजन बना लो। गुरु ने कृपा कर यह बता दिया है कि राम नाम कभी नहीं भुलाना चाहिए॥ २॥ राम सदा ही मेरी सहायता करता है, इसलिए राम नाम में ही लगन लगा ली है। राम नाम जपकर हम निर्मल हो गए हैं और इससे जन्म-जन्मांतर के पाप दूर हो गए हैं॥ ३॥ राम नाम का सिमरन जन्म-मरण का चक्र मिटा देता है। राम नाम का उच्चारण भवसागर से पार करवा देता है। राम नाम का प्रकाश सर्वोत्तम है। हे दास नानक! दिन-रात राम को जपते रहो॥ ४॥ ८॥ १०॥

गोंड महला ५ ॥ उन कउ खसमि कीनी ठाकहारे ॥ दास संग ते मारि बिदारे ॥ गोबिंद भगत का महलु न पाइआ ॥ राम जना मिलि मंगलु गाइआ ॥ १ ॥ सगल स्रिसटि के पंच सिकदार ॥ राम भगत के पानीहार ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जगत पास ते लेते दानु ॥ गोबिंद भगत कउ करहि सलामु ॥ लूटि लेहि साकत पति खोवहि ॥ साध जना पग मलि मलि धोवहि ॥ २ ॥ पंच पूत जणे इक माइ ॥ उतभुज खेलु करि जगत विआइ ॥ तीनि गुणा कै संगि रचि रसे ॥ इन कउ छोडि ऊपरि जन बसे ॥ ३ ॥ करि किरपा जन लीए छडाइ ॥ जिस के से तिनि रखे हटाइ ॥ कहु नानक भगति प्रभ सारु ॥ बिनु भगती सभ होइ खुआरु ॥ ४ ॥ ६ ॥ ११ ॥

मेरे मालिक ने काम, क्रोध, मोह, लोभ एवं अहंकार को रोक दिया है। प्रभु ने उन्हें अपने दास को मिलने से मार कर भगा दिया है। इन विकारों ने गोविंद के भक्त का ठिकाना नहीं पाया। राम के भक्तजनों ने मिलकर उसका ही मंगलगान किया है॥ १॥ ये पाँचों चाहे सारी सृष्टि के सरदार हैं लेकिन राम-भक्तों के पानी भरने वाले सेवक हैं॥ १॥ रहाउ॥ यह जगत् से तो कर (टैक्स) लेते हैं लेकिन गोविंद के भक्तों को हमेशा सलाम करते हैं। ये पदार्थवादी जीवों के शुभ गुणों को लूट लेते हैं और उनकी इज्जत गंवा देते हैं परन्तु साधुजनों के पैर मल-मलकर धोते हैं॥ २॥ एक माया माई ने इन पाँचों पुत्रों को जन्म दिया है और उसने उद्भिज, अण्डज, जेरज और स्वेदज के जीवों की खेल रच कर जगत् को उत्पन्न किया है। रजोगुणी, तमोगुणी एवं सतोगुणी जीवों के साथ मिलकर ये आनंद करते हैं। इन विकारों को छोड़कर भक्तजन इनसे ऊपर बसते हैं॥ ३॥ ईश्वर ने कृपा करके भक्तजनों को छुड़ा लिया है, जिसके ये पैदा किए हुए हैं, उसने ही इन्हें विकारों से दूर किया है। हे नानक! प्रभु की भक्ति ही उत्तम है, भक्ति के बिना सब तंग होते हैं॥ ४॥ ६॥ ११॥

गोंड महला ५ ॥ कलि कलेस मिटे हरि नाइ ॥ दुख बिनसे सुख कीनो ठाउ ॥ जपि जपि अंम्रित नामु अघाए ॥ संत प्रसादि सगल फल पाए ॥ १ ॥ राम जपत जन पारि परे ॥ जनम जनम के पाप हरे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ गुर के चरन रिदै उरि धारे ॥ अगनि सागर ते उतरे पारे ॥ जनम मरण सभ मिटी उपाधि ॥ प्रभ सिउ लागी सहजि समाधि ॥ २ ॥ थान थनंतरि एको सुआमी ॥ सगल घटा का अंतरजामी ॥ करि किरपा जा कउ मति देइ ॥ आठ पहर प्रभ का नाउ लेइ ॥ ३ ॥ जा कै अंतरि वसै

प्रभु आपि ॥ ता कै हिरदै होइ प्रगासु ॥ भगति भाइ हरि कीरतनु करीऐ ॥ जपि पारब्रहमु नानक निसतरीऐ ॥ ४ ॥ १० ॥ १२॥

हरि का नाम जपने से सभी कलह-कलेश मिट जाते हैं। इससे दुखों का नाश हो जाता है और सुख ही सुख बना रहता है। प्रभु का अमृत नाम जप-जप कर जीव तृप्त हो जाता है और संतों की कृपा से सभी फल प्राप्त हो जाते हैं॥ १॥ राम-नाम जपकर भक्तजन भवसागर से पार हो जाते हैं और उनके जन्म-जन्मांतर के पाप नाश हो जाते हैं॥ १॥ रहाउ॥ गुरु के चरण हृदय में धारण कर लो इससे संसार रूपी अग्नि सागर से पार हुआ जा सकता है और जन्म-मरण की सारी पीड़ा मिट जाती है और सहज ही प्रभु से समाधि लग जाती है॥ २॥ एक स्वामी ही सबमें बसा हुआ है और वह सबके दिल की बात जानता है। अपनी कृपा करके वह जिसे भी उपदेश देता है, वह आठ प्रहर प्रभु का नाम ही लेता रहता है॥ ३॥ जिसके अन्तर्मन में प्रभु स्वयं आ बसता है, उसके हृदय में प्रकाश हो जाता है। भक्ति-भाव से हरि का कीर्तन करना चाहिए। हे नानक! परब्रह्म को जपकर मुक्ति प्राप्त हो जाती है॥ ४॥ १०॥ १२॥

गोंड महला ५ ॥ गुर के चरन कमल नमसकारि ॥ कामु क्रोधु इसु तन ते मारि ॥ होइ रहीऐ सगल की रीना ॥ घटि घटि रमईआ सभ महि चीना ॥ १ ॥ इन बिधि रमहु गोपाल गोबिंदु ॥ तनु धनु प्रभ का प्रभ की जिंदु ॥ १ ॥ रहाउ ॥ आठ पहर हरि के गुण गाउ ॥ जीअ प्रान को इहै सुआउ ॥ तजि अभिमानु जानु प्रभु संगि ॥ साध प्रसादि हरि सिउ मनु रंगि ॥ २ ॥ जिनि तूं कीआ तिस कउ जानु ॥ आगै दरगह पावै मानु ॥ मनु तनु निरमल होइ निहालु ॥ रसना नामु जपत गोपाल ॥ ३ ॥ करि किरपा मेरे दीन दइआला ॥ साधू की मनु मंगै रवाला ॥ होहु दइआल देहु प्रभ दानु ॥ नानकु जपि जीवै प्रभ नामु ॥ ४ ॥ ११ ॥ १३ ॥

गुरु के चरण-कमल को नमन करो; इस प्रकार इस तन में से काम-क्रोध को मार दो। हमें सबके चरणों की धूलि बनकर रहना चाहिए और सबमें बस रहे राम को पहचानना चाहिए॥ १॥ इस विधि द्वारा गोपाल गोविंद को याद करते रहो, यह तन-धन सब प्रभु का दिया हुआ है और अमूल्य जिंदगी भी उसकी देन है॥ १॥ रहाउ॥ आठ प्रहर भगवान का गुणगान करो; तेरी जिंदगी एवं प्राणों का यही मनोरथ है, अपना अभिमान त्यागकर प्रभु को साथ ही समझो। साधु की कृपा से मन भगवान् के रंग में लगाओ॥ २॥ जिस परमात्मा ने तुझे पैदा किया है, उसे समझ लो। आगे उसके दरबार में बड़ा यश प्राप्त होगा। जिस व्यक्ति की रसना ईश्वर का नाम जपती रहती है, उसका मन-तन निर्मल हो जाता है और वह निहाल हो जाता है॥ ३॥ हे दीनदयाल! मुझ पर कृपा करो; मेरा मन तो साधु की चरण-धूलि ही मांगता है। हे प्रभु! दयालु होकर मुझे यह दान दीजिए। क्योंकि नानक तो प्रभु का नाम जपकर ही जीवित रह रहा है॥ ४॥ ११॥ १३॥

गोंड महला ५ ॥ धूप दीप सेवा गोपाल ॥ अनिक बार बंदन करतार ॥ प्रभ की सरणि गही सभ तिआगि ॥ गुर सुप्रसंन भए वड भागि ॥ १ ॥ आठ पहर गाईऐ गोबिंदु ॥ तनु धनु प्रभ का प्रभ की जिंदु ॥ १ ॥ रहाउ ॥ हरि गुण रमत भए आनंद ॥ पारब्रहम पूरन बखसंद ॥ करि किरपा जन सेवा लाए ॥ जनम मरण दुख मेटि मिलाए ॥ २ ॥ करम धरम इहु ततु गिआनु ॥ साधसंगि जपीऐ हरि नामु ॥ सागर तरि बोहिथ प्रभ चरण ॥ अंतरजामी प्रभ कारण करण ॥ ३ ॥ राखि लीए अपनी किरपा धारि ॥ पंच दूत भागे बिकराल ॥ जूऐ जनमु न कबहू हारि ॥ नानक का अंगु कीआ करतारि ॥ ४ ॥ १२ ॥ १४ ॥

परमात्मा की उपासना ही मेरे लिए वास्तव में धूप एवं दीप की तरह अर्चना करना है और अनेक बार करतार की ही वन्दना करता हूँ। सबकुछ त्याग कर मैंने प्रभु की शरण ग्रहण कर ली है और मैं बड़ा भाग्यशाली हूँ कि गुरु मुझ पर सुप्रसन्न हो गया है॥ १॥ आठ प्रहर गोविंद का यशोगान करना चाहिए। यह तन-धन प्रभु का दिया हुआ है और प्राण भी उसकी ही देन है॥ १॥ रहाउ॥ भगवान का गुणगान करने से मन में आनंद बना रहता है। परब्रह्म क्षमावान् एवं कृपा का घर है और कृपा करके उसने भक्तजनों को अपनी सेवा में लगा लिया है। उसने जन्म-मरण के दुख मिटाकर अपने साथ मिला लिया है॥ २॥ कर्म-धर्म एवं सच्चा ज्ञान तो यही है कि सत्संग में मिलकर हरि का नाम जपना चाहिए। प्रभु के चरण ऐसा जहाज है जो संसार-सागर से पार करवा देता है। अन्तर्यामी प्रभु ही सब करने एवं कराने वाला है॥ ३॥ उसने अपनी कृपा करके बचा लिया है और भयानक पाँच दूतों—काम, क्रोध, मोह, लोभ एवं अहंकार को भगा दिया है। अब वह कभी भी जुए में जन्म नहीं हारेगा, क्योंकि ईश्वर ने स्वयं नानक का पक्ष लिया है॥ ४॥ १२॥ १४॥

गोंड महला ५ ॥ करि किरपा सुख अनद करेइ ॥ बालक राखि लीए गुरदेवि ॥ प्रभ किरपाल दइआल गोबिंद ॥ जीअ जंत सगले बखसिंद ॥ १ ॥ तेरी सरणि प्रभ दीन दइआल ॥ पारब्रहम जपि सदा निहाल ॥ १ ॥ रहाउ ॥ प्रभ दइआल दूसर कोई नाही ॥ घट घट अंतरि सरब समाही ॥ अपने दास का हलतु पलतु सवारै ॥ पतित पावन प्रभ बिरदु तुम्हारै ॥ २ ॥ अउखध कोटि सिमरि गोबिंद ॥ तंतु मंतु भजीऐ भगवंत ॥ रोग सोग मिटे प्रभ धिआए ॥ मन बांछत पूरन फल पाए ॥ ३ ॥ करन कारन समरथ दइआर ॥ सरब निधान महा बीचार ॥ नानक बखसि लीए प्रभि आपि ॥ सदा सदा एको हरि जापि ॥ ४ ॥ १३ ॥ १५ ॥

परमात्मा ने कृपा करके मन में सुख एवं आनंद कर दिया है। गुरुदेव ने अपने बालक को बचा लिया है। प्रभु कृपा का घर एवं दया का सागर है, वह सब जीवों को क्षमा करने वाला है॥ १॥ हे दीनदयाल प्रभु! तेरी शरण में आ गया हूँ। हे परब्रह्म! तेरा नाम जपकर सदैव निहाल रहता हूँ॥ १॥ रहाउ॥ हे प्रभु! तुझ जैसा दयालु अन्य कोई नहीं और घट-घट सबके मन में तू ही समा रहा है। तू अपने दास का लोक-परलोक संवार देता है। हे प्रभु! पतितों को पावन करना तुम्हारा यश है॥ २॥ गोविंद का स्मरण ही करोड़ों रोगों की औषधि है और भगवान् का भजन ही सर्वोत्तम तंत्र-मंत्र है। प्रभु का ध्यान करने से सब रोग—शोक मिट जाते हैं और मनोवांछित फल प्राप्त होते हैं॥ ३॥ दयावान् ईश्वर सबकुछ करने-कराने में समर्थ है और उसका चिंतन ही सर्व भण्डार है। हे नानक! प्रभु ने स्वयं ही भक्तजनों को बचा लिया है, सदैव एक परमात्मा का जाप करो॥ ४॥ १३॥ १५॥

गोंड महला ५ ॥ हरि हरि नामु जपहु मेरे मीत ॥ निरमल होइ तुम्हारा चीत ॥ मन तन की सभ मिटै बलाइ ॥ दूखु अंधेरा सगला जाइ ॥ १ ॥ हरि गुण गावत तरीऐ संसारु ॥ वड भागी पाईऐ पुरखु अपारु ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जो जनु करै कीरतनु गोपाल ॥ तिस कउ पोहि न सकै जमकालु ॥ जग महि आइआ सो परवाणु ॥ गुरमुखि अपना खसमु पछाणु ॥ २ ॥ हरि गुण गावै संत प्रसादि ॥ काम क्रोध मिटहि उनमाद ॥ सदा हजूरि जाणु भगवंत ॥ पूरे गुर का पूरन मंत ॥ ३ ॥ हरि धनु खाटि कीए भंडार ॥ मिलि सतिगुर सभि काज सवार ॥ हरि के नाम रंग संगि जागा ॥ हरि चरणी नानक मनु लागा ॥ ४ ॥ १४ ॥ १६ ॥

हे मेरे मित्र! हरि नाम जपो; इससे तुम्हारा चित्त निर्मल हो जाएगा। मन-तन की सब चिन्ता-परेशानियाँ मिट जाएँगी और दुख का सारा अन्धेरा नाश हो जाएगा॥ १॥ हरि का गुणगान

करने से संसार-सागर से पार हुआ जाता है और भाग्यशाली को ही अपार परमेश्वर मिलता है॥ १॥ रहाउ॥ जो व्यक्ति भगवान का कीर्तन करता है, यमराज भी उसके निकट नहीं आ सकता। जग में उसका जन्म ही सफल है, जो गुरुमुख बनकर अपने मालिक को पहचान लेता है॥ ३॥ संत की कृपा से जो व्यक्ति हरि का स्तुतिगान करता है, काम, क्रोध एवं उन्माद उसके मन से मिट जाते हैं। पूर्ण गुरु का यह पूर्ण मंत्र है कि सदैव भगवंत को अपने आस-पास समझो॥ ३॥ हरि नाम रूपी धन प्राप्त करके भण्डार भर लिए हैं और सतगुरु को मिलकर सब कार्य संवार लिए हैं। हरि के नाम रंग से मन जाग गया है। हे नानक! अब मन हरि-चरणों में लीन हो गया है॥ ४॥१४॥ १६॥

गोंड महला ५ ॥ भव सागर बोहिथ हरि चरण ॥ सिमरत नामु नाही फिरि मरण ॥ हरि गुण रमत नाही जम पंथ ॥ महा बीचार पंच दूतह मंथ ॥ १ ॥ तउ सरणाई पूरन नाथ ॥ जंत अपने कउ दीजहि हाथ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सिम्रिति सासत्र बेद पुराण ॥ पारब्रहम का करहि वखिआण ॥ जोगी जती बैसनो रामदास ॥ मिति नाही ब्रहम अबिनास ॥ २ ॥ करण पलाह करहि सिव देव ॥ तिलु नही बूझहि अलख अभेव ॥ प्रेम भगति जिसु आपे देइ ॥ जग महि विरले केई केइ ॥ ३ ॥ मोहि निरगुण गुणु किछहू नाहि ॥ सरब निधान तेरी द्रिसटी माहि ॥ नानकु दीनु जाचै तेरी सेव ॥ करि किरपा दीजै गुरदेव ॥ ४ ॥ १५ ॥ १७ ॥

हरि के चरण ही भवसागर से पार करवाने के लिए जहाज है। नाम स्मरण करने से जीव की दोबारा मृत्यु नहीं होती। हरि का गुणगान करने से यम के मार्ग पर नहीं जाना पड़ता। प्रभु का चिंतन कामादिक पाँच दूतों का नाश कर देता है॥ १॥ हे पूर्ण नाथ! मैं तेरी शरण में आया हूँ, अपने जीव को हाथ देकर रक्षा कीजिए॥ १॥ रहाउ॥ स्मृति, शास्त्र, वेद एवं पुराण भगवान् की महिमा का ही बखान करते हैं। योगी, ब्रह्मचारी, वैष्णव तथा रामदास भी अविनाशी ब्रह्म के विस्तार को नहीं जानते॥ २॥ शिवशंकर जैसे देव भी उसे पाने के लिए करुणा करते हैं लेकिन वे तिल मात्र भी अलक्ष्य अभेद परमात्मा को नहीं बूझते। जिसे वह अपनी प्रेम-भक्ति देता है, इस जग में ऐसे व्यक्ति विरले ही हैं॥ ३॥ मुझ गुणहीन में कोई भी गुण नहीं है और सब खजाने तेरी कृपा-दृष्टि में ही हैं। दीन नानक तो तेरी सेवा ही चाहता है, हे गुरुदेव! कृपा करके मुझे अपनी सेवा दीजिए॥ ४॥ १५॥ १७॥

गोंड महला ५ ॥ संत का लीआ धरति बिदारउ ॥ संत का निंदकु अकास ते टारउ ॥ संत कउ राखउ अपने जीअ नालि ॥ संत उधारउ ततखिण तालि ॥ १ ॥ सोई संतु जि भावै राम ॥ संत गोबिंद कै एकै काम ॥ १ ॥ रहाउ ॥ संत कै ऊपरि देइ प्रभु हाथ ॥ संत कै संगि बसै दिनु राति ॥ सासि सासि संतह प्रतिपालि ॥ संत का दोखी राज ते टालि ॥ २ ॥ संत की निंदा करहु न कोइ ॥ जो निंदै तिस का पतनु होइ ॥ जिस कउ राखै सिरजनहारु ॥ झख मारउ सगल संसारु ॥ ३ ॥ प्रभ अपने का भइआ बिसासु ॥ जीउ पिंडु सभु तिस की रासि ॥ नानक कउ उपजी परतीति ॥ मनमुख हार गुरमुख सद जीति ॥ ४ ॥ १६ ॥ १८ ॥

संत का तिरस्कृत व्यक्ति धरती से अलग कर देना चाहिए और संत का निंदक तो आकाश से नीचे फैंक देना चाहिए। संत को अपने प्राणों से लगाकर रखो, चूंकि संत का संग तत्क्षण उद्धार कर देता है॥ १॥ वही संत है, जो राम को प्यारा लगता है। गोविंद और संत का एक ही काम है॥ १॥ रहाउ॥ प्रभु अपना हाथ रखकर संत की रक्षा करता है और दिन-रात संत के साथ ही रहता है। वह श्वास-श्वास संतों का प्रतिपालक बनता है। संत का दोषी अपना राज भी गंवा देता

है॥ २॥ हे भाई! कोई भी संत की निंदा न करो; जो भी उनकी निंदा करता है, उसका पतन हो जाता है। जिसकी रक्षा सृजनहार करता है, सारा संसार व्यर्थ ही उसका बुरा करने के लिए ठोकरें खाता रहता है॥ ३॥ संत को अपने प्रभु पर अटल विश्वास हो गया है, यह जीवन एवं शरीर सब उसकी ही दी हुई राशि है। नानक के मन में यह निष्ठा उत्पन्न हो गई है कि मनमुख जीवन में हार जाता है और गुरुमुख सदा जीत प्राप्त करता है॥ ४॥ १६॥ १८॥

गोंड महला ५ ॥ नामु निरंजनु नीरि नराइण ॥ रसना सिमरत पाप बिलाइण ॥ १ ॥ रहाउ ॥ नाराइण सभ माहि निवास ॥ नाराइण घटि घटि परगास ॥ नाराइण कहते नरकि न जाहि ॥ नाराइण सेवि सगल फल पाहि ॥ १ ॥ नाराइण मन माहि अधार ॥ नाराइण बोहिथ संसार ॥ नाराइण कहत जमु भागि पलाइण ॥ नाराइण दंत भाने डाइण ॥ २ ॥ नाराइण सद सद बखसिंद ॥ नाराइण कीने सूख अनंद ॥ नाराइण प्रगट कीनो परताप ॥ नाराइण संत को माई बाप ॥ ३ ॥ नाराइण साधसंगि नराइण ॥ बारं बार नराइण गाइण ॥ बसतु अगोचर गुर मिलि लही ॥ नाराइण ओट नानक दास गही ॥ ४ ॥ १७ ॥ १९ ॥

नारायण का पावन नाम शुद्ध जल की तरह है, जिसका जिह्वा द्वारा सिमरन करने से सारे पाप नाश हो जाते हैं॥ १॥ रहाउ॥ सब जीवों में नारायण का ही निवास है और हरेक शरीर में उसकी ज्योति का प्रकाश हो रहा है। नारायण का नाम जपने वाला कभी नरक में नहीं जाता, उसकी उपासना करने से सब फल प्राप्त हो जाते हैं॥ १॥ मेरे मन में नारायण के नाम का ही आसरा है और संसार-सागर से पार करवाने के लिए वही जहाज है। नारायण जपने से यम भागकर दूर चला जाता है और वही माया रूपी डायन के दाँत तोड़ने वाला है॥ २॥ नारायण सदैव क्षमावान् है और उसने भक्तों के हृदय में सुख एवं आनंद पैदा कर दिया है। समूचे संसार में उसका ही प्रताप फैला हुआ है और नारायण ही संतों का माई-बाप है॥ ३॥ संतों की संगति में हर समय 'नारायण-नारायण' शब्द का ही भजन गूंजता रहता है और वे बारम्बार नारायण के ही गुण गाते रहते हैं। गुरु से मिलकर अगोचर वस्तु प्राप्त कर ली है, दास नानक ने भी नारायण की शरण ले ली है॥ ४॥ १७॥ १९॥

गोंड महला ५ ॥ जा कउ राखै राखणहारु ॥ तिस का अंगु करे निरंकारु ॥ १ ॥ रहाउ ॥ मात गरभ महि अगनि न जोहै ॥ कामु क्रोधु लोभु मोहु न पोहै ॥ साधसंगि जपै निरंकारु ॥ निंदक कै मुहि लागै छारु ॥ १ ॥ राम कवचु दास का संनाहु ॥ दूत दुसट तिसु पोहत नाहि ॥ जो जो गरबु करे सो जाइ ॥ गरीब दास की प्रभु सरणाइ ॥ २ ॥ जो जो सरणि पइआ हरि राइ ॥ सो दासु रखिआ अपणै कंठि लाइ ॥ जे को बहुतु करे अहंकारु ॥ ओहु खिनु महि रुलता खाकू नालि ॥ ३ ॥ है भी साचा होवणहारु ॥ सदा सदा जाईं बलिहार ॥ अपणे दास रखे किरपा धारि ॥ नानक के प्रभ प्राण अधार ॥ ४ ॥ १८ ॥ २० ॥

जिसकी रक्षा सर्वशक्तिमान निरंकार करता है, उसका ही वह साथ देता है॥ १॥ रहाउ॥ माता के गर्भ में जठराग्नि भी उस जीव को स्पर्श नहीं करती और काम, क्रोध, लोभ एवं मोह भी तंग नहीं करते। साधु की संगति में वह निरंकार का नाम जपता रहता है और उसकी निंदा करने वाले के मुँह में राख ही पड़ती है॥ १॥ राम का नाम ही दास का कवच एवं ढाल है, जिसे कामादिक दुष्ट दूत स्पर्श नहीं करते। जो भी व्यक्ति घमण्ड करता है, उसका नाश हो जाता है। प्रभु की शरण ही विनम्र दास का सहारा है॥ २॥ जो जो जीव भगवान की शरण में आया है, उस

दास को प्रभु ने अपने गले से लगा लिया है। यदि कोई बहुत अहंकार करता है तो वह क्षण में ही खाक में मिल जाता है॥ ३॥ ईश्वर ही सत्य है, वह वर्तमान में भी है और भविष्य में भी वही होगा। मैं सदैव उस पर बलिहारी जाता हूँ, वह अपनी कृपा करके दास की रक्षा करता है। केवल प्रभु ही नानक के प्राणों का आधार है॥ ४॥ १८॥ २०॥

गोंड महला ५ ॥ अचरज कथा महा अनूप ॥ प्रातमा पारब्रहम का रूपु ॥ रहाउ ॥ ना इहु बूढा ना इहु बाला ॥ ना इसु दूखु नही जम जाला ॥ ना इहु बिनसै ना इहु जाइ ॥ आदि जुगादी रहिआ समाइ ॥ १ ॥ ना इसु उसनु नही इसु सीतु ॥ ना इसु दुसमनु ना इसु मीतु ॥ ना इसु हरखु नही इसु सोगु ॥ सभु किछु इस का इहु करनै जोगु ॥ २ ॥ ना इसु बापु नही इसु माइआ ॥ इहु अपरंपरु होता आइआ ॥ पाप पुंन का इसु लेपु न लागै ॥ घट घट अंतरि सद ही जागै ॥ ३ ॥ तीनि गुणा इक सकति उपाइआ ॥ महा माइआ ता की है छाइआ ॥ अछल अछेद अभेद दइआल ॥ दीन दइआल सदा किरपाल ॥ ता की गति मिति कछू न पाइ ॥ नानक ता कै बलि बलि जाइ ॥ ४ ॥ १६ ॥ २१ ॥

यह अद्‌भुत कथा बड़ी अनुपम है कि आत्मा ही परमात्मा का रूप है॥ रहाउ॥ यह (आत्मा) न ही बूढ़ा होता है और न ही जवान होता है। न इसे कोई दुख छूता है और न ही इसे यम का जाल फँसाता है। न ही इसका कभी नाश होता है और न ही यह जन्मता है। यह तो युगों-युगान्तरों में हमेशा स्थित रहता है॥ १॥ न ही इसे गर्मी प्रभावित करती है और न ही सर्दी का कोई प्रभाव पड़ता है। न इसका कोई दुश्मन है और न ही कोई मित्र है। न इसे कोई खुशी है और न ही कोई गम है। यह सबकुछ इसका ही है और यह सबकुछ करने में योग्य है॥ २॥ न इसका कोई बाप है और न ही इसकी कोई माँ है। यह अपरम्पार है और सदा ही होता आया है। पाप एवं पुण्य का इसे कोई लेप नहीं लगता। यह घट-घट सबके अंतर में सदैव ही जाग्रत है॥ ३॥ उसने तीन गुणों वाली शक्ति अर्थात् माया को पैदा किया है और यह महामाया उसकी ही छाया है। परमात्मा बड़ा दयालु, अछल, अछेद एवं अभेद है। वह दीनदयाल सदैव कृपा का घर है। उसकी गति एवं अनुमान लगाया नहीं जा सकता। नानक सदैव उस पर बलिहारी जाता है॥ ४॥ १६॥ २१॥

गोंड महला ५ ॥ संतन कै बलिहारै जाउ ॥ संतन कै संगि राम गुन गाउ ॥ संत प्रसादि किलविख सभि गए ॥ संत सरणि वडभागी पए ॥ १ ॥ रामु जपत कछु बिघनु न विआपै ॥ गुर प्रसादि अपुना प्रभु जापै ॥ १ ॥ रहाउ ॥ पारब्रहमु जब होइ दइआल ॥ साधू जन की करै रवाल ॥ कामु क्रोधु इसु तन ते जाइ ॥ राम रतनु वसै मनि आइ ॥ २ ॥ सफलु जनमु तां का परवाणु ॥ पारब्रहमु निकटि करि जाणु ॥ भाइ भगति प्रभ कीरतनि लागै ॥ जनम जनम का सोइआ जागै ॥ ३ ॥ चरन कमल जन का आधारु ॥ गुण गोविंद रउं सचु वापारु ॥ दास जना की मनसा पूरि ॥ नानक सुखु पावै जन धूरि ॥ ४ ॥ २० ॥ २२ ॥ ६ ॥ २८ ॥

संतों पर बलिहारी जाना चाहिए, संतों के संग मिलकर राम के गुण गाते रहो। संतों की कृपा से सभी पाप दूर हो जाते हैं और संतों की शरण कोई भाग्यशाली ही पाता है॥ १॥ राम नाम जपने से कोई विघ्न नहीं आता। गुरु की कृपा से प्रभु अपना ही प्रतीत होता है॥ १॥ रहाउ॥ जब परब्रह्म दयालु होता है तो वह जीव को साधुजनों की चरण-धूलि बना देता है। फिर काम एवं क्रोध इस तन से दूर हो जाते हैं और राम नाम रूपी रत्न मन में आ बसता है॥ २॥ जो परमात्मा को अपने निकट समझता है, उसका जन्म सफल एवं परवान हो जाता है। ऐसा जीव श्रद्धा भक्ति से प्रभु का कीर्तन करता रहता है और जन्म-जन्मांतर का सोया हुआ उसका मन जाग जाता

है।। ३।। भगवान के चरण-कमल ही दास का आधार है। गोविंद का स्तुतिगान ही सच्चा व्यापार है। हे ईश्वर ! अपने दास जनों की अभिलाषा पूरी करो; क्योंकि नानक तो संतजनों की चरण-धूलि पाकर ही सुख हासिल करता है।। ४।। २०।। २२।। ६।। २८।।

रागु गोंड असटपदीआ महला ५ घरु २ १ओं सतिगुर प्रसादि ॥

करि नमसकार पूरे गुरदेव ॥ सफल मूरति सफल जा की सेव ॥ अंतरजामी पुरखु बिधाता ॥ आठ पहर नाम रंगि राता ॥ १ ॥ गुरु गोबिंद गुरू गोपाल ॥ अपने दास कउ राखनहार ॥ १ ॥ रहाउ ॥ पातिसाह साह उमराउ पतीआए ॥ दुसट अहंकारी मारि पचाए ॥ निंदक कै मुखि कीनो रोगु ॥ जै जै कारु करै सभु लोगु ॥ २ ॥ संतन कै मनि महा अनंदु ॥ संत जपहि गुरदेउ भगवंतु ॥ संगति के मुख ऊजल भए ॥ सगल थान निंदक के गए ॥ ३ ॥ सासि सासि जनु सदा सलाहे ॥ पारब्रहम गुर बेपरवाहे ॥ सगल भै मिटे जा की सरनि ॥ निंदक मारि पाए सभि धरनि ॥ ४ ॥ जन की निंदा करै न कोइ ॥ जो करै सो दुखीआ होइ ॥ आठ पहर जनु एकु धिआए ॥ जमूआ ता कै निकटि न जाए ॥ ५ ॥ जन निरवैर निंदक अहंकारी ॥ जन भल मानहि निंदक वेकारी ॥ गुर कै सिखि सतिगुरू धिआइआ ॥ जन उबरे निंदक नरकि पाइआ ॥ ६ ॥ सुणि साजन मेरे मीत पिआरे ॥ सति बचन वरतहि हरि दुआरे ॥ जैसा करे सु तैसा पाए ॥ अभिमानी की जड़ सरपर जाए ॥ ७ ॥ नीधरिआ सतिगुर धर तेरी ॥ करि किरपा राखहु जन केरी ॥ कहु नानक तिसु गुर बलिहारी ॥ जा कै सिमरनि पैज सवारी ॥ ८ ॥ १ ॥ २६ ॥

पूर्ण गुरुदेव को नमन करो, जिसके दर्शन सफल हैं और जिसकी सेवा करने से सब कामनाएँ पूरी होती हैं। वह अन्तर्यामी, परमपुरुष विधाता है और आठ प्रहर नाम-रंग में ही लीन रहता है।। १।। गुरु ही गोविंद एवं गुरु ही संसार का पालनहार है, वही अपने दास का रखवाला है।। १।। रहाउ।। उसने राजा-महाराजा एवं उमराव प्रसन्न कर दिए हैं और दुष्ट अहंकारियों को मारकर नष्ट कर दिया है। उसने निंदकों के मुँह में रोग पैदा कर दिया है और दुनिया के सभी लोग उसकी ही जय-जयकार करते हैं।। २।। संतों के मन में आनंद ही आनंद बना रहता है और वे सदैव ही गुरुदेव भगवन्त को जपते रहते हैं। उनकी संगति में रहने वाले लोगों के मुख उज्जवल हो गए हैं और निंदकों के सभी स्थान उनके हाथ से निकल गए हैं।। ३।। भक्तजन सदा उसकी स्तुति करते रहते हैं। परब्रह्म गुरु बेपरवाह है, जिसकी शरण में आने से सारे भय मिट जाते हैं तथा उसने निंदकों को मार कर धरती पर लिटा दिया है।। ४।। ईश्वर के उपासक की कोई भी निंदा मत करे, जो भी निंदा करता है, वही दुखी होता है। वह आठ प्रहर केवल परमात्मा का ही भजन करता है और यमराज भी उसके निकट नहीं जाता।। ५।। प्रभु का सेवक किसी से भी वैर नहीं करता, किन्तु निंदक बड़ा अहंकारी होता है। सेवक सबका भला चाहता है, लेकिन निंदक बड़ा पापी होता है। गुरु के शिष्यों ने सतगुरु का ही ध्यान किया है, हरिजनों का उद्धार हो गया है, लेकिन निंदक नरक में पड़ गए हैं।। ६।। हे मेरे प्यारे मित्र ! हे साजन ! इस तथ्य को ध्यानपूर्वक सुनो; ईश्वर के द्वार पर यह सत्य वचन ही सही सिद्ध हो रहे हैं, जैसा कोई कर्म करता है, वैसा ही वह फल पाता है। अभिमानी इन्सान की जड़ सचमुच ही उखड़ जाती है।। ७।। हे सतगुरु ! निराश्रित जीवों को तेरा ही आश्रय है, कृपा करके भक्तजनों की लाज रख लो। हे नानक ! मैं उस गुरु पर बलिहारी जाता हूँ, जिसके सिमरन ने मेरी लाज रख ली है।। ८।। १।। २६।।

रागु गोंड बाणी भगता की ॥ कबीर जी घरु १ ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

संतु मिलै किछु सुनीऐ कहीऐ ॥ मिलै असंतु मसटि करि रहीऐ ॥ १ ॥ बाबा बोलना किआ कहीऐ ॥ जैसे राम नाम रवि रहीऐ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ संतन सिउ बोले उपकारी ॥ मूरख सिउ बोले झख मारी ॥ २ ॥ बोलत बोलत बढहि बिकारा ॥ बिनु बोले किआ करहि बीचारा ॥ ३ ॥ कहु कबीर छूछा घटु बोलै ॥ भरिआ होइ सु कबहु न डोलै ॥ ४ ॥ १ ॥

यदि कोई संत मिल जाए तो उससे कुछ सुनना और कुछ पूछना चाहिए परन्तु यदि कोई दुष्ट पुरुष मिल जाए तो चुप ही रहना चाहिए।। १।। हे बाबा ! यदि बोलना हो तो क्या कहना चाहिए, जिससे राम का नाम जपते रहें।। १।। रहाउ।। संत पुरुषों के साथ विचार-विमर्श बड़ा उपकारी है किन्तु मूर्ख के साथ बातचीत व्यर्थ ही समय बर्बाद करती है।। २।। मूर्खों के साथ बातचीत एवं बोलने से विकारों में वृद्धि ही होती है और संतों से बिना बोले ज्ञान की बातें कैसे कर सकते हैं।। ३।। कबीर जी कहते हैं कि खाली घड़ा ही आवाज करता है पर वह भरा हो तो कभी नहीं डोलता।। ४।। १।।

गोंड ॥ नरू मरै नरु कामि न आवै ॥ पसू मरै दस काज सवारै ॥ १ ॥ अपने करम की गति मै किआ जानउ ॥ मै किआ जानउ बाबा रे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ हाड जले जैसे लकरी का तूला ॥ केस जले जैसे घास का पूला ॥ २ ॥ कहु कबीर तब ही नरु जागै ॥ जम का डंडु मूंड महि लागै ॥ ३ ॥ २ ॥

जब मनुष्य की मृत्यु हो जाती है तो उसका शरीर किसी काम नहीं आता। लेकिन जब पशु मरता है तो वह दस कार्य संवारता है।। १।। मैं अपने शुभाशुभ कर्मों की गति क्या जान सकता हूँ। हे बाबा ! मैं क्या जानूँ मेरे साथ क्या होगा ?।। १।। रहाउ।। मृतक की हड्डियाँ ऐसे जलती हैं, जैसे लकड़ी का गट्ठर जलता है, केश इस तरह जलते हैं, जैसे घास का गट्ठर हो।। २।। हे कबीर ! मनुष्य अज्ञान की निद्रा से तभी जागता है, जब उसके सिर पर यम का डण्डा लगता है।। ३।। २।।

गोंड ॥ आकासि गगनु पातालि गगनु है चहु दिसि गगनु रहाइले ॥ आनद मूलु सदा पुरखोतमु घटु बिनसै गगनु न जाइले ॥ १ ॥ मोहि बैरागु भइओ ॥ इहु जीउ आइ कहा गइओ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ पंच ततु मिलि काइआ कीन्ही ततु कहा ते कीनु रे ॥ करम बध तुम जीउ कहत हौ करमहि किनि जीउ दीनु रे ॥ २ ॥ हरि महि तनु है तन महि हरि है सरब निरंतरि सोइ रे ॥ कहि कबीर राम नामु न छोडउ सहजे होइ सु होइ रे ॥ ३ ॥ ३ ॥

आकाश, पाताल एवं चारों दिशाओं में सर्वात्मा ही मौजूद है। आनंद का स्रोत पुरुषोत्तम सदैव अमर है, शरीर नाश हो जाता है, लेकिन उसकी चेतन सत्ता विद्यमान है।। १।। मुझे वैराग्य पैदा हो गया है, यह आत्मा संसार में आकर कहाँ चला गया है।। १।। रहाउ।। आकाश, हवा, अग्नि, जल एवं पृथ्वी—इन पाँच तत्वों से ईश्वर ने शरीर का निर्माण किया है, लेकिन ये तत्व कहाँ से रचे गए हैं ? आप कहते हो कि जीव कर्मों का बँधा हुआ है लेकिन इन कर्मों को जीवन किसने दिया है ?।। २।। ईश्वर में ही तन है और तन में ही ईश्वर स्थित है, वह मन-तन सबमें समाया हुआ है। कबीर जी कहते हैं कि मैं राम का नाम जपना नहीं छोड़ूँगा, चाहे जो कुछ सहज ही होता है, वह होता रहे।। ३।। ३।।

रागु गोंड बाणी कबीर जीउ की घरु २ १ओं सतिगुर प्रसादि ॥

भुजा बांधि भिला करि डारिओ ॥ हसती क्रोपि मूंड महि मारिओ ॥ हसति भागि कै चीसा मारै ॥ इआ मूरति कै हउ बलिहारै ॥ १ ॥ आहि मेरे ठाकुर तुमरा जोरु ॥ काजी बकिबो हसती तोरु ॥ १ ॥ रहाउ ॥ रे महावत तुझु डारउ काटि ॥ इसहि तुरावहु घालहु साटि ॥ हसति न तोरै धरै धिआनु ॥ वा कै रिदै बसै भगवानु ॥ २ ॥ किआ अपराधु संत है कीन्हा ॥ बांधि पोट कुंचर कउ दीन्हा ॥ कुंचरु पोट लै लै नमसकारै ॥ बूझी नही काजी अंधिआरै ॥ ३ ॥ तीनि बार पतीआ भरि लीना ॥ मन कठोरु अजहू न पतीना ॥ कहि कबीर हमरा गोबिंदु ॥ चउथे पद महि जन की जिंदु ॥ ४ ॥ १ ॥ ४ ॥

{इतिहास में वर्णन है कि एक बार बादशाह सिकंदर लोधी ने बनारस में कबीर जी को हाथी के पाँव तले कुचलने का दण्ड दिया था परन्तु ईश्वर ने उनकी रक्षा की और हाथी कुचलने की बजाय पीछे भाग गया।}

मेरी भुजा बाँधकर पोटली बना उन्होंने मुझे हाथी के आगे डाल दिया। महावत ने हाथी को और क्रोधित करने के लिए उसके सिर पर अंकुश भी मारा लेकिन हाथी पीछे को भागकर चिंघाड़ने लगा और मन में कहता है कि मैं इस मूर्ति पर बलिहारी जाता हूँ॥ १॥ कबीर जी कहते हैं कि हे मेरे ईश्वर! यह तेरा बल ही मेरी रक्षा कर रहा है। काजी क्रोध में बक रहा था कि इस हाथी को कबीर की तरफ चलाओ॥ १॥ रहाउ॥ काजी आगबबूला होकर कहता है कि हे महावत! मैं तुझे कत्ल करवा दूँगा। हाथी को चोट कर कबीर की ओर चलाओ किन्तु हाथी कबीर को मार नहीं रहा था अपितु परमात्मा का ही ध्यान करता था। उस हाथी के ह्रदय में भगवान् ही बस रहा था॥ २॥ देखने वाले लोग कह रहे थे कि इस संत ने क्या अपराध किया है कि पोटली बाँधकर इसे हाथी के आगे डाल दिया गया? हाथी उस पोटली को लेकर बार-बार प्रणाम करता था किन्तु अंधे काजी ने परमात्मा की रज़ा को नहीं समझा॥ ३॥ तीन बार हाथी को चढ़ा-चढ़ाकर काजी ने परीक्षा ली लेकिन उसका कठोर मन फिर भी संतुष्ट नहीं हुआ। कबीर जी कहते हैं कि गोविंद हमारा रखवाला है, भक्त के प्राण तुरीयावस्था में बसते हैं॥ ४॥ १॥ ४॥

गोंड ॥ ना इहु मानसु ना इहु देउ ॥ ना इहु जती कहावै सेउ ॥ ना इहु जोगी ना अवधूता ॥ ना इसु माइ न काहू पूता ॥ १ ॥ इआ मंदर महि कौन बसाई ॥ ता का अंतु न कोऊ पाई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ ना इहु गिरही ना ओदासी ॥ ना इहु राज न भीख मंगासी ॥ ना इसु पिंडु न रकतू राती ॥ ना इहु ब्रहमनु ना इहु खाती ॥ २ ॥ ना इहु तपा कहावै सेखु ॥ ना इहु जीवै न मरता देखु ॥ इसु मरते कउ जे कोऊ रोवै ॥ जो रोवै सोई पति खोवै ॥ ३ ॥ गुर प्रसादि मै डगरो पाइआ ॥ जीवन मरनु दोऊ मिटवाइआ ॥ कहु कबीर इहु राम की अंसु ॥ जस कागद पर मिटै न मंसु ॥ ४ ॥ २ ॥ ५ ॥

यह (आत्मा) न ही मनुष्य है और न ही यह देवता है। न ही यह ब्रह्मचारी और न ही शैव कहलाता है। न ही यह कोई योगी है और न ही कोई अवधूत है। न ही इसकी कोई जन्म देने वाली माता है और न ही यह किसी का पुत्र है॥ १॥ काया रूपी मन्दिर में कौन निवास कर रहा है, इसका रहस्य कोई नहीं पा सकता॥ १॥ रहाउ॥ न ही यह गृहस्थी है और न ही उदासी है। न ही यह कोई राजा है और न ही कोई भीख माँगने वाला भिखारी है। न इसका कोई शरीर है और न ही थोड़ा-सा रक्त है। न यह कोई ब्राह्मण है और न ही क्षत्रिय है॥ २॥ यह कोई तपस्वी अथवा शेख भी नहीं कहलाता। न ही यह जिंदा देखा जाता है और न ही यह मरता देखा जाता है। यदि कोई इस आत्मा को भरता समझ कर रोता है तो वह अपनी इज्जत गंवा देता है॥ ३॥ गुरु की कृपा से मैंने सन्मार्ग पा लिया है और जन्म-मरण दोनों को मिटवा लिया है। हे कबीर!

यह आत्मा तो राम की अंश है, जैसे कागज पर लिखी हुई स्याही कभी नहीं मिटती, वैसे ही आत्मा कभी नाश नहीं होती॥ ४॥ २॥ ५॥

गोंड ॥ तूटे तागे निखुटी पानि ॥ दुआर ऊपरि झिलकावहि कान ॥ कूच बिचारे फूए फाल ॥ इआ मुंडीआ सिरि चढिबो काल ॥ १ ॥ इहु मुंडीआ सगलो द्रबु खोई ॥ आवत जात नाक सर होई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ तुरी नारि की छोडी बाता ॥ राम नाम वा का मनु राता ॥ लरिकी लरिकन खैबो नाहि ॥ मुंडीआ अनदिनु धापे जाहि ॥ २ ॥ इक दुइ मंदरि इक दुइ बाट ॥ हम कउ साथरु उन कउ खाट ॥ मूड पलोसि कमर बधि पोथी ॥ हम कउ चाबनु उन कउ रोटी ॥ ३ ॥ मुंडीआ मुंडीआ हूए एक ॥ ए मुंडीआ बूडत की टेक ॥ सुनि अंधली लोई बेपीरि ॥ इन्ह मुंडीअन भजि सरनि कबीर ॥ ४ ॥ ३ ॥ ६ ॥

धागे टूट गए हैं और पाण समाप्त हो गया है, द्वार पर तोरण चमक रहे हैं और बेचारे कूच टूट कर फैले हुए हैं। इस लड़के (कबीर) के सिर पर काल सवार हो गया है॥ १॥ इस लड़के ने अपना सारा धन गंवा दिया है और घर में आने जाने वाले संत-महात्माओं ने मेरे नाक में दम कर दिया है॥ १॥ रहाउ॥ इसने खड्डी की लठ और तानी तनने वाली नलकियों की तो बात करनी ही छोड़ दी है और इसका मन तो राम नाम में ही लीन हो गया है। इसकी लड़की-लड़के को पेट भर भोजन नसीब नहीं लेकिन साधु-संत पेट भर कर तृप्त होकर जाते हैं॥ २॥ एक दो साधु तो घर में पहले ही बैठे होते हैं और एक दो अन्य चले आते हैं। हमें सोने के लिए तो चटाई नसीब होती है किन्तु साधुओं को चारपाई मिल जाती है। वे अपनी कमर से पोथी बाँधकर सिर पर हाथ फेरते हुए घर की ओर चले आते हैं। हमें चबाने के लिए भुने हुए दाने मिलते हैं किन्तु उन्हें रोटी खिलाई जाती है॥ ३॥ यह लड़का और साधु आपस में एक हो गए हैं। यह साधुजन डूबते लोगों का सहारा हैं। कबीर जी का कथन है कि हे ज्ञानहीन एवं निगुरी लोई! जरा सुन; तू भी भागकर इन साधुओं की शरण में आ जा॥ ४॥ ३॥ ६॥

गोंड ॥ खसमु मरै तउ नारि न रोवै ॥ उसु रखवारा अउरो होवै ॥ रखवारे का होइ बिनास ॥ आगै नरकु ईहा भोग बिलास ॥ १ ॥ एक सुहागनि जगत पिआरी ॥ सगले जीअ जंत की नारी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सोहागनि गलि सोहै हारु ॥ संत कउ बिखु बिगसै संसारु ॥ करि सीगारु बहै पखिआरी ॥ संत की ठिठकी फिरै बिचारी ॥ २ ॥ संत भागि ओह पाछै परै ॥ गुर परसादी मारहु डरै ॥ साकत की ओह पिंड पराइणि ॥ हम कउ द्रिसटि परै त्रखि डाइणि ॥ ३ ॥ हम तिस का बहु जानिआ भेउ ॥ जब हूए क्रिपाल मिले गुरदेउ ॥ कहु कबीर अब बाहरि परी ॥ संसारै कै अंचलि लरी ॥ ४ ॥ ४ ॥ ७ ॥

जब माया रूपी नारी का स्वामी मर जाता है तो वह रोती नहीं, क्योंकि उसका रखवाला कोई अन्य बन जाता है। जब उस रखवाले का नाश हो जाता है तो इहलोक में भोग-विलास करने वाला आगे परलोक में नरक ही भोगता है॥ १॥ एक माया रूपी सुहागिन सारे जगत् की प्यारी बनी हुई है और यह सब जीवों की नारी है॥ १॥ रहाउ॥ माया रूपी सुहागिन के गले में पड़ा हुआ विकारों का हार सबको सुन्दर लगता है। इसको देखकर सारा संसार फूलों की तरह खिल जाता है, परन्तु संतों को यह विष के समान बुरी नजर आती है। यह माया रूपी नारी वेश्या की तरह शृंगार लगाकर बैठती है, परन्तु संतों द्वारा ठुकराई होने के कारण यह बेचारी भटकती ही रहती है॥ २॥ यह भागकर संतों के पीछे पड़ी रहती है लेकिन गुरु-कृपा से मार से डरती भी है। शाक्त जीवों का पोषण करने

वाली यह प्राणप्रिया है परन्तु मुझे तो वह रक्त-पिपासु डायन नजर आती है॥ ३॥ जब कृपालु होकर गुरुदेव मिल गए तो मैंने इसका सारा भेद जान लिया। कबीर जी कहते हैं कि अब यह माया मेरे मन में से बाहर निकल गई है और संसार के आंचल में जा लगी है॥ ४॥ ४॥ ७॥

गोंड ॥ ग्रिहि सोभा जा कै रे नाहि ॥ आवत पहीआ खूधे जाहि ॥ वा कै अंतरि नही संतोखु ॥ बिनु सोहागनि लागै दोखु ॥ १ ॥ धनु सोहागनि महा पवीत ॥ तपे तपीसर डोलै चीत ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सोहागनि किरपन की पूती ॥ सेवक तजि जगत सिउ सूती ॥ साधू कै ठाढी दरबारि ॥ सरनि तेरी मोकउ निसतारि ॥ २ ॥ सोहागनि है अति सुंदरी ॥ पग नेवर छनक छनहरी ॥ जउ लगु प्रान तऊ लगु संगे ॥ नाहि त चली बेगि उठि नंगे ॥ ३ ॥ सोहागनि भवन त्रै लीआ ॥ दस अठ पुराण तीरथ रस कीआ ॥ ब्रहमा बिसनु महेसर बेधे ॥ बडे भूपति राजे है छेधे ॥ ४ ॥ सोहागनि उरवारि न पारि ॥ पांच नारद कै संगि बिधवारि ॥ पांच नारद के मिटवे फूटे ॥ कहु कबीर गुर किरपा छूटे ॥ ५ ॥ ५ ॥ ८ ॥

जिस मनुष्य के घर में धन की शोभा नहीं है, उस घर में आए गए अतिथि भूखे ही चले जाते हैं। घर के मुखिया के मन में संतोष नहीं होता और (माया रूपी) सुहागिन के बिना उस पर दोष लग जाता है॥ १॥ यह सुहागिन महापवित्र एवं धन्य है, जिसके कारण बड़े-बड़े तपस्वियों के भी मन डगमगा जाते हैं॥ १॥ रहाउ॥ यह माया रूपी सुहागिन कंजूसों की पुत्री है। यह भगवान के सेवकों को छोड़कर जगत् के साथ लीन रहती है। यह साधु के दरबार में खड़ी होकर उनसे विनती करती है कि मैं आपकी शरण में आई हूँ, मेरा उद्धार कर दो॥ २॥ यह सुहागिन बड़ी सुन्दर है और इसके पैरों की पायल छन-छन करती है। जब तक इन्सान में प्राण है, तब तक यह उसके साथ रहती है, अन्यथा उसके प्राण पखेरू हो जाने पर तत्काल नंगे पांव ही भाग जाती है॥ ३॥ इस माया रूपी सुहागिन ने तीनों लोकों को वशीभूत कर लिया है। अठारह पुराण पढ़ने वाले एवं अड़सठ तीर्थ पर स्नान करने वालों ने भी इसका स्वाद लिया है। इसने ब्रह्मा, विष्णु एवं शिवशंकर के मन को भी भेद लिया है। बड़े-बड़े राजा-महाराजा भी इसने आकर्षित किए हुए हैं॥ ४॥ इस माया रूपी सुहागिन का कोई आर-पार नहीं है, यह पाँच ज्ञानेन्द्रियों के साथ भी मिली हुई है, जब पाँचों ज्ञानेन्द्रियों के भेद खुल जाते हैं तो हे कबीर ! गुरु की कृपा से मनुष्य का छुटकारा हो जाता है॥ ५॥ ५॥ ८॥

गोंड ॥ जैसे मंदर महि बलहर ना ठाहरै ॥ नाम बिना कैसे पारि उतरै ॥ कुंभ बिना जलु ना टीकावै ॥ साधू बिनु ऐसे अबगतु जावै ॥ १ ॥ जारउ तिसै जु रामु न चेतै ॥ तन मन रमत रहै महि खेतै ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जैसे हलहर बिना जिमी नही बोईऐ ॥ सूत बिना कैसे मणी परोईऐ ॥ घुंडी बिनु किआ गंठि चढ़ाईऐ ॥ साधू बिनु तैसे अबगतु जाईऐ ॥ २ ॥ जैसे मात पिता बिनु बालु न होई ॥ बिंब बिना कैसे कपरे धोई ॥ घोर बिना कैसे असवार ॥ साधू बिनु नाही दरवार ॥ ३ ॥ जैसे बाजे बिनु नही लीजै फेरी ॥ खसमि दुहागनि तजि अउहेरी ॥ कहै कबीरु एकै करि करना ॥ गुरमुखि होइ बहुरि नही मरना ॥ ४ ॥ ६ ॥ ९ ॥

जैसे शहतीर के बिना मकान ठहर नहीं सकता, वैसे ही परमात्मा के नाम बिना जीव संसार-सागर में से कैसे पार हो सकता है ? जैसे घड़े के बिना जल इकट्ठा नहीं हो सकता, वैसे ही साधु के बिना जीव की गति नहीं होती॥ १॥ जो राम का स्मरण नहीं करता, उसे तो जला ही देना चाहिए, क्योंकि उसका तन-मन अपने शरीर रूप खेत में मग्न रहता है॥ १॥ रहाउ॥ जैसे कृषक के बिना जमीन नहीं बोई जा सकती, वैसे ही सूत्र के बिना माला के मोती कैसे पिरोए जा

सकते हैं। जैसे घुंडी के बिना गांठ नहीं दी जा सकती है, वैसे ही साधु-महात्मा के बिना जीव की गति नहीं हो सकती॥ २॥ जैसे माता-पिता के बिना औलाद उत्पन्न नहीं होती, वैसे ही पानी के बिना कपड़े कैसे धोये जा सकते हैं ? जैसे घोड़े के बिना कोई कैसे घुड़सवारी कर सकता है, वैसे ही साधु के बिना ईश्वर का द्वार नहीं मिल सकता॥ ३॥ जैसे संगीत के बिना नृत्य का आनंद नहीं मिल सकता, वैसे ही दुहागिन अपने पति को छोड़कर बर्बाद होती है। कबीर जी कहते हैं कि एक ही करने योग्य कार्य है, सो वही कार्य करो, जो गुरुमुख बन जाता है, उसे दोबारा मरना नहीं पड़ता॥ ४॥ ६॥ ६॥

गोंड ॥ कूटनु सोइ जु मन कउ कूटै ॥ मन कूटै तउ जम ते छूटै ॥ कुटि कुटि मनु कसवटी लावै ॥ सो कूटनु मुकति बहु पावै ॥ १ ॥ कूटनु किसै कहहु संसार ॥ सगल बोलन के माहि बीचार ॥ १ ॥ रहाउ ॥ नाचनु सोइ जु मन सिउ नाचै ॥ झूठि न पतीऐ परचै साचै ॥ इसु मन आगे पूरै ताल ॥ इसु नाचन के मन रखवाल ॥ २ ॥ बजारी सो जु बजारहि सोधै ॥ पांच पलीतह कउ परबोधै ॥ नउ नाइक की भगति पछानै ॥ सो बाजारी हम गुर मानै ॥ ३ ॥ तसकरु सोइ जि ताति न करै ॥ इंद्री कै जतनि नामु उचरै ॥ कहु कबीर हम ऐसे लखन ॥ धंनु गुरदेव अति रूप बिचखन ॥ ४ ॥ ७ ॥ १० ॥

वास्तव में वही दलाल है, जो मन को जोड़ता है। यदि मन को जोड़ा जाए तो यम से छुटकारा हो जाता है। जो मन को बार-बार जोड़कर कसौटी पर लगाता है, ऐसा व्यक्ति मुक्ति प्राप्त कर लेता है॥ १॥ हे संसार के लोगो! कुटन (दलाल) किसे कहते हो ? बोली गई सब बातों में ही अन्तर होता है॥ १॥ रहाउ॥ नाचने वाला वही है, जो मन को नचाता है। वह झूठ से खुश नहीं होता अपितु सत्य में ही लीन रहता है। वह अपने इस मन के समक्ष नृत्य करता रहता है और इस नाचने वाले के मन का रखवाला स्वयं भगवान ही है॥ २॥ असली बाजारी वही है, जो अपने शरीर रूप बाजार का सुधार करता है। वह विकारों से मलिन हुई पाँचों ज्ञानेन्द्रियों को ज्ञान का उपदेश देता और नवखण्डों के मालिक परमेश्वर की भक्ति को पहचान लेता है। हम तो ऐसे बाजारी को ही अपना गुरु मानते हैं॥ ३॥ असली चोर वही है, जो किसी से ईर्ष्या-द्वेष नहीं करता और अपनी ज्ञानेन्द्रियों की सहायता से भगवान का नाम उच्चरित करता रहता है। कबीर जी कहते हैं कि जिसकी कृपा से हमें ऐसे गुण हासिल हुए हैं, मेरा वह गुरुदेव धन्य है, जिसका रूप बड़ा सुन्दर एवं विलक्षण है॥ ४॥ ७॥ १०॥

गोंड ॥ धंनु गुपाल धंनु गुरदेव ॥ धंनु अनादि भूखे कवलु टहकेव ॥ धनु ओइ संत जिन ऐसी जानी ॥ तिन कउ मिलिबो सारिंगपानी ॥ १ ॥ आदि पुरख ते होइ अनादि ॥ जपीऐ नामु अंन कै सादि ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जपीऐ नामु जपीऐ अंनु ॥ अंभै कै संगि नीका वंनु ॥ अंनै बाहरि जो नर होवहि ॥ तीनि भवन महि अपनी खोवहि ॥ २ ॥ छोडहि अंनु करहि पाखंड ॥ ना सोहागनि ना ओहि रंड ॥ जग महि बकते दूधाधारी ॥ गुपती खावहि वटिका सारी ॥ ३ ॥ अंनै बिना न होइ सुकालु ॥ तजिऐ अंनि न मिलै गुपालु ॥ कहु कबीर हम ऐसे जानिआ ॥ धंनु अनादि ठाकुर मनु मानिआ ॥ ४ ॥ ८ ॥ ११ ॥

हे ईश्वर, हे गुरुदेव! तू धन्य है। यह अन्नादि भी धन्य है, जिसे खाकर भूखे आदमी का हृदय-कमल खिल जाता है। वे सन्तजन धन्य हैं, जिन्होंने यह बात समझ ली है और उन्हें परमात्मा मिल गया है॥ १॥ यह अन्न इत्यादि पदार्थ आदिपुरुष परमेश्वर से ही पैदा हुआ है। अन्न के स्वाद की तरह ही भगवान का नाम जपना चाहिए॥ १॥ रहाउ॥ परमात्मा का नाम जपना और अन्न को भी जपना वैसे ही है, जिस तरह जल के साथ मिलकर भोजन और भी स्वादिष्ट

बन जाता है। जो व्यक्ति अन्न को त्याग देता है, वह तीनों लोकों में अपनी प्रतिष्ठा गंवा देता है॥ २॥ जो व्यक्ति भोजन खाना छोड़ देते हैं, वे पाखण्ड ही करते हैं। न ही वे सुहागिन हैं और न ही वे विधवा कहलाने के हकदार हैं। जग में जो लोग दुग्धाहारी कहे जाते हैं, वे पंजीरी बना कर लोगों से चोरी-चोरी खाते रहते हैं॥ ३॥ दुनिया में अन्न के बिना सुख-समृद्धि नहीं होती और अन्न का त्याग करने से भगवान् भी नहीं मिलता। कबीर जी कहते हैं कि मैंने यह ज्ञान समझ लिया है कि अन्न धन्य है, जिसे खाने से मेरा मन ठाकुर जी के ध्यान में लीन है॥ ४॥ ८॥ ११॥

रागु गोंड बाणी नामदेउ जी की घरु १ १ओं सतिगुर प्रसादि ॥

असुमेध जगने ॥ तुला पुरख दाने ॥ प्राग इसनाने ॥ १ ॥ तउ न पुजहि हरि कीरति नामा ॥ अपुने रामहि भजु रे मन आलसीआ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ गइआ पिंडु भरता ॥ बनारसि असि बसता ॥ मुखि बेद चतुर पड़ता ॥ २ ॥ सगल धरम अछिता ॥ गुर गिआन इंद्री द्रिड़ता ॥ खटु करम सहित रहता ॥ ३ ॥ सिवा सकति संबादं ॥ मन छोडि छोडि सगल भेदं ॥ सिमरि सिमरि गोबिंदं ॥ भजु नामा तरसि भव सिंधं ॥ ४ ॥ १ ॥

चाहे कोई अश्वमेध यज्ञ करवा ले, चाहे अपने भार के बराबर तोलकर सोना, चाँदी एवं अनाज इत्यादि का दान करे, चाहे प्रयागराज तीर्थ में जाकर स्नान कर ले॥ १॥ तो भी यह सभी पुण्य-कर्म ईश्वर की कीर्ति के बराबर नहीं आते। हे आलसी मन! अपने राम का भजन कर ले॥ १॥ रहाउ॥ चाहे कोई गया तीर्थ पर जाकर अपने पूर्वजों के नमित्त पिण्डदान करवाता है, चाहे बनारस के निकट असि नदी के तट पर जाकर बसता है, चाहे मुख से चार वेदों का पाठ करता है॥ २॥ चाहे वह सभी धर्म-कर्म निर्विघ्न करता है, चाहे गुरु के दिए ज्ञान द्वारा अपनी इन्द्रियों को वशीभूत करता है, चाहे छः कर्म करता हुआ अपना जीवन-व्यतीत करता है तो भी कल्याण नहीं होता॥ ३॥ चाहे वह शिवा-शक्ति के संवाद में मग्न रहता है। हे मन! इन सभी धर्म-कर्मों को छोड़ दे, क्योंकि ये सभी कर्म परमात्मा से दूर ले जाने वाले हैं। नामदेव जी कहते हैं कि हरदम गोविंद का सिमरन करते रहो, उसका भजन करने से तू भवसागर से पार हो जाएगा॥ ४॥ १॥

गोंड ॥ नाद भ्रमे जैसे मिरगाए ॥ प्रान तजे वा को धिआनु न जाए ॥ १ ॥ ऐसे रामा ऐसे हेरउ ॥ रामु छोडि चितु अनत न फेरउ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जिउ मीना हेरै पसूआरा ॥ सोना गढते हिरै सुनारा ॥ २ ॥ जिउ बिखई हेरै पर नारी ॥ कउडा डारत हिरै जुआरी ॥ ३ ॥ जह जह देखउ तह तह रामा ॥ हरि के चरन नित धिआवै नामा ॥ ४ ॥ २ ॥

जैसे मृग संगीत की ध्वनि को सुनकर उस ओर भागता है और अपने प्राण गंवा देता है, परन्तु उसका ध्यान नहीं भूलता॥ १॥ मैं भी राम की ओर ऐसे ही ध्यान लगाकर रखता हूँ और राम को छोड़कर अपना चित्त कहीं ओर नहीं लगाता॥ १॥ रहाउ॥ जैसे बगुला मछलियों को देखता रहता है, जैसे सुनार स्वर्ण को गढ़ता आभूषण की ओर देखता रहता है॥ २॥ जैसे कामी इन्सान पराई नारी को कुदृष्टि से देखता है, जैसे जुआरी कौड़ियाँ फैंकते उनकी ओर देखता रहता है॥ ३॥ वैसे ही मैं जिधर भी देखता हूँ, उधर ही मुझे राम नजर आता है। अब नामदेव नित्य हरि के चरणों का ध्यान करता रहता है॥ ४॥ २॥

गोंड ॥ मोकउ तारि ले रामा तारि ले ॥ मै अजानु जनु तरिबे न जानउ बाप बीठुला बाह दे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ नर ते सुर होइ जात निमख मै सतिगुर बुधि सिखलाई ॥ नर ते उपजि सुरग कउ जीतिओ

सो अवखध मै पाई ॥ १ ॥ जहां जहा धूअ नारदु टेके नैकु टिकावहु मोहि ॥ तेरे नाम अविलंबि बहुतु जन उधरे नामे की निज मति एह ॥ २ ॥ ३ ॥

हे मेरे राम ! मुझे भवसागर से तार दो, मेरा उद्धार कर दो। मैं तेरा अनजान सेवक तैरना नहीं जानता; हे परमपिता ! मुझे बाँह देकर आसरा दीजिए॥ १॥ रहाउ॥ सतगुरु ने मुझे ऐसी बुद्धि सिखाई है, जिससे मानव पल में ही देवता बन जाता है। मैंने वह औषधि प्राप्त कर ली है, जिससे मानव-जन्म लेकर स्वर्ग को भी जीता जा सकता है॥ १॥ हे परमेश्वर ! मुझे भी उस स्थान पर टिका दो, जहाँ-जहाँ तूने भक्त ध्रुव एवं नारद मुनि को टिकाया है। नामदेव की मति यही है कि तेरे नाम के अवलम्ब द्वारा बहुत सारे भक्तजन भवसागर से पार हो गए हैं॥ २॥ ३॥

गोंड ॥ मोहि लागती तालाबेली ॥ बछरे बिनु गाइ अकेली ॥ १ ॥ पानीआ बिनु मीनु तलफै ॥ ऐसे राम नामा बिनु बापुरो नामा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जैसे गाइ का बाछा छूटला ॥ थन चोखता माखनु घूटला ॥ २ ॥ नामदेउ नाराइनु पाइआ ॥ गुरु भेटत अलखु लखाइआ ॥ ३ ॥ जैसे बिखै हेत पर नारी ॥ ऐसे नामे प्रीति मुरारी ॥ ४ ॥ जैसे तापते निरमल घामा ॥ तैसे राम नामा बिनु बापुरो नामा ॥ ५ ॥ ४ ॥

नाम बिना मुझे ऐसी बेचैनी हो जाती है, जैसे बछड़े के बिना गाय अकेली हो जाती है॥ १॥ जैसे पानी के बिना मछली तड़पती है, वैसे ही राम नाम बिना बेचारा नामदेव तड़पता रहता है॥ १॥ रहाउ॥ जैसे खूँटे से बंधा हुआ बछड़ा छूटकर गाय के थन चूंघता और दूध के घूंट भरता है॥ २॥ नामदेव ने नारायण को पा लिया है, गुरु से मुलाकात करते ही नामदेव को अदृष्ट प्रभु दिखा दिया है॥ ३॥ जैसे कामवासना के लिए कामुक पुरुष की पराई नारी से प्रीति होती है, वैसे ही नामदेव की ईश्वर से प्रीति है॥ ४॥ जैसे कड़कती धूप की गर्मी में लोगों के शरीर जलते हैं, वैसे ही राम नाम बिना बेचारा नामदेव विरह की अग्नि में जलता है॥ ५॥ ४॥

रागु गोंड बाणी नामदेउ जीउ की घरु २ १ओं सतिगुर प्रसादि ॥

हरि हरि करत मिटे सभि भरमा ॥ हरि को नामु लै ऊतम धरमा ॥ हरि हरि करत जाति कुल हरी ॥ सो हरि अंधुले की लाकरी ॥ १ ॥ हरए नमसते हरए नमह ॥ हरि हरि करत नही दुखु जमह ॥ १ ॥ रहाउ ॥ हरि हरनाकस हरे परान ॥ अजैमल कीओ बैकुंठहि थान ॥ सूआ पड़ावत गनिका तरी ॥ सो हरि नैनहु की पूतरी ॥ २ ॥ हरि हरि करत पूतना तरी ॥ बाल घातनी कपटहि भरी ॥ सिमरन द्रोपद सुत उधरी ॥ गऊतम सती सिला निसतरी ॥ ३ ॥ केसी कंस मथनु जिनि कीआ ॥ जीअ दानु काली कउ दीआ ॥ प्रणवै नामा ऐसो हरी ॥ जासु जपत भै अपदा टरी ॥ ४ ॥ १ ॥ ५ ॥

'हरि-हरि' मंत्र का जाप करने से सभी भ्रम मिट जाते हैं। हरि का नाम जपना ही सबसे उत्तम धर्म है। हरि-नाम का मनन करने से जाति एवं कुल का भेदभाव मिट जाता है। सो हरि-नाम अंधे की लाठी है॥ १॥ हरि को कोटि-कोटि प्रणाम है और हरि को ही हमारा नमन है। हरि नाम का ध्यान करने से यम का दुख नहीं भोगना पड़ता॥ १॥ रहाउ॥ हरि ने हिरण्यकशिपु दैत्य के प्राण पखेरु किए; पापी अजामल को बैकुण्ठ में स्थान दिया; तोते को हरि-नाम का पाठ पढ़ाने से वेश्या का छुटकारा हो गया, सो ऐसा हरि मेरे नयनों की पुतली है॥ २॥ हरि नाम जपने से पूतना राक्षसी का उद्धार हो गया, जो बालघाती एवं कपट से भरी हुई थी। हरि का सिमरन करने से राजा द्रुपद की कन्या द्रोपदी का उद्धार हो गया था और गौतम ऋषि की पत्नी अहल्या जो पति के शाप कारण शिला बन गई थी, उसका भी निस्तारा हो गया था॥ ३॥ जिसने केशी राक्षस और मथुरा नरेश

दुष्ट कंस का संहार किया एवं कालियनाग को जीवन दान दिया था, ऐसे हरि को नामदेव कोटि कोटि प्रणाम करता है, जिसके नाम का जाप करने से हर प्रकार के भय एवं संकट दूर हो जाते हैं॥ ४॥ १॥ ५॥

गोंड ॥ भैरउ भूत सीतला धावै ॥ खर बाहनु उहु छारु उडावै ॥ १ ॥ हउ तउ एकु रमईआ लैहउ ॥ आन देव बदलावनि दैहउ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सिव सिव करते जो नरु धिआवै ॥ बरद चढे डउरू ढमकावै ॥ २ ॥ महा माई की पूजा करै ॥ नर सै नारि होइ अउतरै ॥ ३ ॥ तू कहीअत ही आदि भवानी ॥ मुकति की बरीआ कहा छपानी ॥ ४ ॥ गुरमति राम नाम गहु मीता ॥ प्रणवै नामा इउ कहै गीता ॥ ५ ॥ २ ॥ ६ ॥

जो व्यक्ति भैरो, भूत अथवा शीतला देवी की ओर भागता फिरता है, परिणामस्वरूप गधे का सवार बनकर वह धूल उड़ाता रहता है॥ १॥ मैं तो केवल एक राम का नाम ही जपूँगा और अन्य देवी-देवताओं को (छोड़कर) इसके बदले में (सबकुछ) दे दूँगा॥ १॥ रहाउ॥ जो नर 'शिव-शिव' करते हुए उसका ध्यान करते हैं, वे बैल पर सवार होकर डमरू बजाते रहते हैं॥ २॥ जो व्यक्ति महामाई दुर्गा की पूजा करता है, वह नर से नारी के रूप में जन्म लेता है॥ ३॥ तू आदिभवानी कहलाती है, लेकिन मुक्ति देने के समय कहाँ छिप जाती है ?॥ ४॥ हे मित्र ! गुरु-मतानुसार राम का नाम ग्रहण कर लो, नामदेव विनती करता है कि गीता भी यही उपदेश देती है॥ ५॥ २॥ ६॥

बिलावलु गोंड ॥ आजु नामे बीठलु देखिआ मूरख को समझाऊ रे ॥ रहाउ ॥ पांडे तुमरी गाइत्री लोधे का खेतु खाती थी ॥ लै करि ठेगा टगरी तोरी लांगत लांगत जाती थी ॥ १ ॥ पांडे तुमरा महादेउ धउले बलद चड़िआ आवतु देखिआ था ॥ मोदी के घर खाणा पाका वा का लड़का मारिआ था ॥ २ ॥ पांडे तुमरा रामचंदु सो भी आवतु देखिआ था ॥ रावन सेती सरबर होई घर की जोइ गवाई थी ॥ ३ ॥ हिंदू अंन्हा तुरकू काणा ॥ दुहां ते गिआनी सिआणा ॥ हिंदू पूजै देहुरा मुसलमाणु मसीति ॥ नामे सोई सेविआ जह देहुरा न मसीति ॥ ४ ॥ ३ ॥ ७ ॥

नामदेव ने ईश्वर के दर्शन कर लिए हैं, मैं मूर्ख को समझाता हूँ॥ रहाउ॥ हे पांडे ! गायत्री की पूजा और पाठ करते हो, यह कैसी श्रद्धा, क्योंकि तुम्हारा ही कथन है कि गायत्री (शाप के कारण) गाय की योनि में किसान का खेत चरने लग गई थी। उसने डण्डा लेकर उसकी एक टांग तोड़ दी, जिससे वह लँगड़ा-लँगड़ा कर चलती थी॥ १॥ हे पांडे ! (शिव की अर्चना करते हो, साथ ही तुम लोगों का यह कथन है कि) महादेव सफेद नन्दी बैल पर चढ़कर आए, जिस मोदी के घर उनके लिए भोजन पकाया गया था (भोजन अच्छा न लगने के कारण) उन्होंने क्रोध में आकर उसका लड़का ही अभिशाप देकर मार दिया था॥ २॥ हे पांडे ! तुम्हारे (कथनानुसार) रामचंद्र का भी बहुत नाम सुना, उनकी लंका नरेश रावण के साथ लड़ाई हुई और तदुपरांत उन्होंने पत्नी सीता गंवा दी थी॥ ३॥ हिन्दू अन्धा है और तुर्क काना है, मगर इन दोनों से ज्ञानी चतुर है। हिन्दू मन्दिर में पूजा करता है और मुसलमान मस्जिद में सिजदा करता है। नामदेव ने तो उस परमात्मा का ही सिमरन किया है, जो मन्दिर अथवा मस्जिद में नहीं है॥ ४॥ ३॥ ७॥

रागु गोंड बाणी रविदास जीउ की घरु १ॐ सतिगुर प्रसादि ॥

मुकंद मुकंद जपहु संसार ॥ बिनु मुकंद तनु होइ अउहार ॥ सोई मुकंदु मुकति का दाता ॥ सोई

मुकंदु हमरा पित माता ॥ १ ॥ जीवत मुकंदे मरत मुकंदे ॥ ता के सेवक कउ सदा अनंदे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ मुकंद मुकंद हमारे प्रानं ॥ जपि मुकंद मसतकि नीसानं ॥ सेव मुकंद करै बैरागी ॥ सोई मुकंदु दुरबल धनु लाधी ॥ २ ॥ एकु मुकंदु करै उपकारु ॥ हमरा कहा करै संसारु ॥ मेटी जाति हूए दरबारि ॥ तुही मुकंद जोग जुग तारि ॥ ३ ॥ उपजिओ गिआनु हूआ परगास ॥ करि किरपा लीने कीट दास ॥ कहु रविदास अब त्रिसना चूकी ॥ जपि मुकंद सेवा ताहू की ॥ ४ ॥ १ ॥

हे संसार के लोगो ! ईश्वर का जाप करो; उसका सिमरन किए बिना यह तन व्यर्थ ही चला जाता है। ईश्वर ही मुक्ति का दाता है और हमारा माता-पिता भी वही है॥ १॥ जिसका जीना-मरना सब भगवान पर है, उसके सेवक को सदा आनंद बना रहता है॥ १॥ रहाउ॥ ईश्वर की उपासना ही हमारे प्राणों का आधार है। उसका जाप करने से मस्तक पर मुक्ति का चिन्ह पड़ जाता है। कोई वैरागी ही मुकुन्द की अर्चना करता है। मुझ जैसे दुर्बल को भी मुकुन्द नाम रूपी धन हासिल हो गया है॥ १॥ जब एक परमेश्वर स्वयं मुझ पर उपकार करता है तो यह संसार मेरा क्या बिगाड़ सकता है। उसकी भक्ति ने मेरी नीच जाति को मिटाकर अपने द्वार का दरबारी नियुक्त कर दिया है। हे मुकुन्द ! एक तू ही युगों-युगांतरों से पार करवाने में समर्थ है॥ ३॥ मेरे मन में ज्ञान उत्पन्न होने से प्रकाश हो गया है। उसने कृपा करके मुझ जैसे तुच्छ जीव को अपना दास बना लिया है। रविदास जी कहते हैं कि अब मेरी तृष्णा बुझ गई है, मुकुन्द को जप कर उसकी सेवा में ही लीन रहता हूँ॥ ४॥ १॥

गोंड ॥ जे ओहु अठसठि तीरथ न्हावै ॥ जे ओहु दुआदस सिला पूजावै ॥ जे ओहु कूप तटा देवावै ॥ करै निंद सभ बिरथा जावै ॥ १ ॥ साध का निंदकु कैसे तरै ॥ सरपर जानहु नरक ही परै ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जे ओहु ग्रहन करै कुलखेति ॥ अरपै नारि सीगार समेति ॥ सगली सिंम्रिति स्रवनी सुनै ॥ करै निंद कवनै नही गुनै ॥ २ ॥ जे ओहु अनिक प्रसाद करावै ॥ भूमि दान सोभा मंडपि पावै ॥ अपना बिगारि बिरांना सांढै ॥ करै निंद बहु जोनी हांढै ॥ ३ ॥ निंदा कहा करहु संसारा ॥ निंदक का परगटि पाहारा ॥ निंदकु सोधि साधि बीचारिआ ॥ कहु रविदास पापी नरकि सिधारिआ ॥ ४ ॥ २ ॥ ११ ॥ ७ ॥ २ ॥ ४९ ॥ जोड़ु ॥

यदि कोई अड़सठ तीर्थों पर स्नान करे, यदि वह (अमरनाथ, सोमनाथ, काशी, रामेश्वरम, केदारनाथ इत्यादि) बारह शिवलिंगों की पूजा भी करे, यदि वह कुआं एवं तालाब बनाकर जनहित के लिए अर्पण भी कर दे, किन्तु यदि वह (साधु की) निंदा करता है तो उसका सारा पुण्य व्यर्थ ही जाता है॥ १॥ साधु की निंदा करने वाला कैसे मोक्ष प्राप्त कर सकता है ? सत्य जानो वह अवश्य ही नरक में पड़ता है॥ १॥ रहाउ॥ यदि कोई सूर्यग्रहण के समय कुरुक्षेत्र तीर्थ पर जाकर स्नान करे, वहाँ अपनी नारी को सोलह श्रृंगार सहित ब्राह्मणों को दान के रूप में अर्पित कर दे, यदि वह समस्त स्मृतियों को अपने कानों से सुने, यद्यपि वह साधु की निंदा कर दे तो उसके किए पुण्य-कर्मों का उसे कोई फल नहीं मिलता ॥ २॥ यदि कोई अनेक बार ब्रह्म-भोज का आयोजन कर साधुओं अथवा लोगों को भोजन करवाता है, यदि वह जनहित के लिए भूमिदान करता, सुन्दर महल एवं धर्मशाला बनवाता है, यदि वह अपना कार्य बिगाड़ कर दूसरों का कार्य संवार देता है लेकिन यदि वह (संत की) निंदा कर दे तो उसे अनेक योनियों में भटकना पड़ता है॥ ३॥ हे संसार के लोगो ! आप निंदा क्यों करते हो ? निंदक की मक्कारी की दुकान प्रगट हो जाती है अर्थात् उसका पोल खुल जाता है। रविदास जी कहते हैं कि मैंने भलीभांति जाँच-पड़ताल करके निंदक के बारे में यही विचार किया है कि ऐसा पापी इन्सान आखिरकार नरक में ही पड़ा है॥ ४॥ २॥ ११॥ ७॥ २॥ ४९॥ जोड़॥

रामकली महला १ घरु १ चउपदे

१ओं सति नामु करता पुरखु निरभउ निरवैरु अकाल मूरति अजूनी सैभं गुर प्रसादि ॥

ओंकार एक है, नाम उसका सत्य है, वह सृष्टि का रचयिता है, सर्वशक्तिमान है, वह भय से रहित है, वह वैर से रहित प्रेमस्वरूप है, वह कालातीत ब्रह्म मूर्ति शाश्वत है, वह जन्म-मरण के चक्र से मुक्त है, वह स्वयं प्रकाशमान हुआ है और गुरु की कृपा से प्राप्त होता है।

कोई पड़ता सहसाकिरता कोई पड़ै पुराना ॥ कोई नामु जपै जपमाली लागै तिसै धिआना ॥ अब ही कब ही किछू न जाना तेरा एको नामु पछाना ॥ १ ॥ न जाणा हरे मेरी कवन गते ॥ हम मूरख अगिआन सरनि प्रभ तेरी करि किरपा राखहु मेरी लाज पते ॥ १ ॥ रहाउ ॥ कबहू जीअड़ा ऊभि चड़तु है कबहू जाइ पइआले ॥ लोभी जीअड़ा थिरु न रहतु है चारे कुंडा भाले ॥ २ ॥ मरणु लिखाइ मंडल महि आए जीवणु साजहि माई ॥ एकि चले हम देखह सुआमी भाहि बलंती आई ॥ ३ ॥ न किसी का मीतु न किसी का भाई ना किसै बापु न माई ॥ प्रणवति नानक जे तू देवहि अंते होइ सखाई ॥ ४ ॥ १ ॥

कोई संस्कृत में वेदों को पढ़ता है, कोई पुराण पढ़ रहा है। कोई माला द्वारा नाम जप रहा है और उसमें ही ध्यान लगा रहा है। लेकिन मैंने अब भी और कभी भी कुछ नहीं जाना, मैं तो केवल तेरे नाम को ही पहचानता हूँ॥ १॥ हे हरि ! मैं नहीं जानता कि मेरी क्या गति होगी ? हे प्रभु ! मैं मूर्ख एवं अज्ञानी तेरी शरण में आया हूँ, कृपा करके मेरी लाज रखो॥ १॥ रहाउ॥ हमारा मन कभी आकाश में चढ़ जाता है और कभी यह पाताल में जा गिरता है। यह लोभी मन स्थिर नहीं रहता और चारों दिशाओं में भटकता रहता है॥ २॥ सभी जीव अपनी मृत्यु का लेख लिखवा कर दुनिया में आए हैं लेकिन वे अपने जीने के लिए योजनाएं बनाते रहते हैं। हे स्वामी ! हम हर रोज़ किसी न किसी जीव की मृत्यु को देख रहे हैं और मृत्यु की अग्नि हर तरफ जल रही है॥ ३॥ सच तो यही है कि न किसी का कोई मित्र है, न किसी का कोई भाई है, न कोई किसी का माता-पिता है। गुरु नानक विनय करते हैं कि हे ईश्वर ! यदि तू अपना नाम हमें प्रदान कर दे तो वह अन्तिम समय हमारा मददगार हो जाएगा॥ ४॥ १॥

रामकली महला १ ॥ सरब जोति तेरी पसरि रही ॥ जह जह देखा तह नरहरी ॥ १ ॥ जीवन तलब निवारि सुआमी ॥ अंध कूपि माइआ मनु गाडिआ किउ करि उतरउ पारि सुआमी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जह भीतरि घट भीतरि बसिआ बाहरि काहे नाही ॥ तिन की सार करे नित साहिबु सदा चिंत मन माही ॥ २ ॥ आपे नेड़ै आपे दूरि ॥ आपे सरब रहिआ भरपूरि ॥ सतगुरु मिलै अंधेरा जाइ ॥ जह देखा तह रहिआ समाइ ॥ ३ ॥ अंतरि सहसा बाहरि माइआ नैणी लागसि बाणी ॥ प्रणवति नानकु दासनि दासा परतापहिगा प्राणी ॥ ४ ॥ २ ॥

हे परमेश्वर ! समूचे विश्व में तेरी ही ज्योति का प्रसार हो रहा है, मैं जहाँ-जहाँ देखता हूँ, तू ही नजर आता है॥ १॥ हे स्वामी ! मेरी जीवन की लालसा को दूर कर दो, मेरा मन तो माया

के अंधकूप में फँसा हुआ है, फिर मैं कैसे पार हो सकता हूँ?॥ १॥ रहाउ॥ जो जीवों के हृदय में बस रहा है, वह भला बाहर क्यों नहीं बस रहा। मेरा मालिक तो नित्य उनकी देखभाल करता है और सदा ही उसके मन में जीवों की चिंता लगी रहती है॥ २॥ परमात्मा स्वयं ही जीवों के निकट भी बसता है और दूर भी रहता है, वह स्वयं ही सर्वव्यापक है। जिसे सतगुरु मिल जाता है, उसका अज्ञान का अंधेरा दूर हो जाता है, फिर जहाँ भी दृष्टि जाती है, उधर ही भगवान समाया हुआ लगता है॥ ३॥ जिसके अन्तर्मन में सन्देह होता है तो बाहर से माया के तीर उसकी आँखों पर लगते हैं। गुरु नानक विनय करते हैं कि हे प्राणी! तू परमात्मा के दासों का दास बन जा, अन्यथा बहुत दुखी होगा॥ ४॥ २॥

रामकली महला १ ॥ जितु दरि वसहि कवनु दरु कहीऐ दरा भीतरि दरु कवनु लहै ॥ जिसु दर कारणि फिरा उदासी सो दरु कोई आइ कहै ॥ १ ॥ किन बिधि सागरु तरीऐ ॥ जीवतिआ नह मरीऐ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ दुखु दरवाजा रोहु रखवाला आसा अंदेसा दुइ पट जड़े ॥ माइआ जलु खाई पाणी घरु बाधिआ सत कै आसणि पुरखु रहै ॥ २ ॥ किंते नामा अंतु न जाणिआ तुम सरि नाही अवरु हरे ॥ ऊचा नही कहणा मन महि रहणा आपे जाणै आपि करे ॥ ३ ॥ जब आसा अंदेसा तब ही किउ करि एकु कहै ॥ आसा भीतरि रहै निरासा तउ नानक एकु मिलै ॥ ४ ॥ इन बिधि सागरु तरीऐ ॥ जीवतिआ इउ मरीऐ ॥ १ ॥ रहाउ दूजा ॥ ३ ॥

शरीर के जिस द्वार में भगवान का निवास है, उसे कौन-सा द्वार कहा जाता है? शरीर के दस द्वारों में से उस गुप्त द्वार को कौन ढूँढ सकता है? कोई आकर मुझे वह द्वार बताए जिस द्वार को ढूँढने के लिए मैं चिरकाल उदास हुआ फिरता हूँ॥ १॥ इस संसार-सागर में से किस विधि द्वारा पार हुआ जा सकता है? (गुरु जी उत्तर देते हैं कि) जीवन्मुक्त होने से ही जीव का उद्धार हो सकता है॥ १॥ रहाउ॥ शरीर रूपी घर का दरवाजा दुख है और क्रोध उसका रखवाला है। उस दरवाजे को आशा एवं सन्देह के दो तख्ते लगे हुए हैं। उस स्थान के इर्द-गिर्द माया रूपी खाई है जिसमें विषय-विकार रूपी पानी भरा हुआ है, जीव ने उस स्थान पर अपना घर बनाया हुआ है। सत्य के आसन पर परमात्मा विराजमान है॥ २॥ हे परमेश्वर! तेरे कितने ही नाम हैं और किसी ने भी तेरा अंत नहीं जाना। तुझ जैसा अन्य कोई नहीं है। ऊँचा नहीं बोलना चाहिए, अपितु मन में स्थिर रहना चाहिए। वह स्वयं ही सबकुछ जानता है और स्वयं ही सबकुछ करता है॥ ३॥ जब तक मन में आशा एवं सन्देह है, तब तक वह कैसे एक परमात्मा का स्मरण कर सकता है? हे नानक! परमेश्वर तभी मिल सकता है, यदि जीव आशाओं में रहता हुआ आशाओं से निर्लिप्त रहे॥ ४॥ हे जीव! इस विधि द्वारा संसार सागर से पार हुआ जा सकता है और जीवन्मुक्त हुआ जा सकता है॥ १॥ रहाउ दूसरा॥ ३॥

रामकली महला १ ॥ सुरति सबदु साखी मेरी सिंङी बाजै लोकु सुणे ॥ पतु झोली मंगण कै ताई भीखिआ नामु पड़े ॥ १ ॥ बाबा गोरखु जागै ॥ गोरखु सो जिनि गोइ उठाली करते बार न लागै ॥ १ ॥ रहाउ ॥ पाणी प्राण पवणि बंधि राखे चंदु सूरजु मुखि दीए ॥ मरण जीवण कउ धरती दीनी एते गुण विसरे ॥ २ ॥ सिध साधिक अरु जोगी जंगम पीर पुरस बहुतेरे ॥ जे तिन मिला त कीरति आखा ता मनु सेव करे ॥ ३ ॥ कागदु लूणु रहै घ्रित संगे पाणी कमलु रहै ॥ ऐसे भगत मिलहि जन नानक तिन जमु किआ करै ॥ ४ ॥ ४ ॥

अनहद शब्द की ध्वनि को सुरति द्वारा सुनना ही मेरी सिंगी है, जब अनहद शब्द बजता है

तो इसे सभी लोग सुनते हैं। नाम माँगने के लिए स्वयं को योग्य बनाना ही मेरी झोली है,जिस में नाम रूपी भिक्षा डाली जाती है॥ १॥ हे बाबा ! गोरख सदैव जाग्रत है। गोरख वही (परमेश्वर) है, जिसने पृथ्वी को उठाकर उसकी रक्षा की थी और ऐसा करते उसे देरी नहीं लगी॥ १॥ रहाउ॥ परमात्मा ने पवन-पानी इत्यादि पाँच तत्वों द्वारा प्राणों को बाँधकर रखा हुआ है और संसार में उजाला करने के लिए सूर्य एवं चन्द्रमा दो दीपक प्रज्वलित किए हुए हैं। उसने मरने एवं जीने के लिए जीवों को धरती दी हुई है लेकिन जीव को उसके इतने सब उपकार भूल गए हैं॥ २॥ संसार में सिद्ध-साधक, योगी, जंगम एवं अनेक पीर-पैगम्बर हैं, यदि उनसे मेरी मुलाकात हो तो भी परमात्मा की स्तुति करता हूँ और मेरा मन प्रभु की सेवा करे॥ ३॥ जैसे कागज एवं नमक घी के साथ सुरक्षित रहते हैं (अर्थात् खराब नहीं होते) और कमल का फूल जल में खिला रहता है, हे नानक ! वैसे ही जिन्हें ऐसे भक्त मिल जाते हैं, यम उनका क्या बिगाड़ सकता है॥ ४॥ ४॥

रामकली महला १ ॥ सुणि माछिंद्रा नानकु बोलै ॥ वसगति पंच करे नह डोलै ॥ ऐसी जुगति जोग कउ पाले ॥ आपि तरै सगले कुल तारे ॥ १ ॥ सो अउधूतु ऐसी मति पावै ॥ अहिनिसि सुंनि समाधि समावै ॥ १ ॥ रहाउ ॥ भिखिआ भाइ भगति भै चलै ॥ होवै सु त्रिपति संतोखि अमुलै ॥ धिआन रूपि होइ आसणु पावै ॥ सचि नामि ताड़ी चितु लावै ॥ २ ॥ नानकु बोलै अंम्रित बाणी ॥ सुणि माछिंद्रा अउधू नीसाणी ॥ आसा माहि निरासु वलाए ॥ निहचउ नानक करते पाए ॥ ३ ॥ प्रणवति नानकु अगमु सुणाए ॥ गुर चेले की संधि मिलाए ॥ दीखिआ दारू भोजनु खाइ ॥ छिअ दरसन की सोझी पाइ ॥ ४ ॥ ५ ॥

गुरु नानक देव जी कहते हैं कि हे मच्छन्दर नाथ ! जरा ध्यान से सुन; जो व्यक्ति कामादिक पाँच विकारों को वशीभूत कर लेता है, वह कभी पथभ्रष्ट नहीं होता। जो ऐसी योग युक्ति की साधना करता है, वह स्वयं तो भवसागर से पार होता ही है, उसकी सारी कुल का भी उद्धार हो जाता है॥ १॥ सच्चा अवधूत वही है, जो ऐसी मति प्राप्त कर लेता है और रात-दिन शून्य समाधि में ही विलीन रहता है॥ १॥ रहाउ॥ ऐसा व्यक्ति भक्ति की भिक्षा मांगता और प्रभु-भय में ही जीवन व्यतीत करता है। इस तरह उसे अमूल्य संतोष हासिल हो जाता है, जिससे वह तृप्त रहता है। सिद्धों के आसन के स्थान पर वह ध्यान रूपी आसन लगाता है और अपने चित्त में सत्य-नाम की समाधि लगाकर रखता है॥ २॥ नानक तो अमृत-वाणी बोलता है। हे मच्छन्दर नाथ ! सच्चे अवधूत की निशानी सुन, वह अभिलाषा वाले जगत् में रहता हुआ विरक्त जीवन व्यतीत करता है। हे नानक ! ऐसा अवधूत निश्चय ईश्वर को पा लेता है॥ ३॥ नानक विनती करते हैं कि हे मच्छन्दर नाथ ! तुम्हें रहस्य की बात सुनाता हूँ। वह अपने गुरु की शिक्षा द्वारा अपने शिष्यों का भी परमात्मा से मिलाप करवा देता है। वह गुरु की दीक्षा रूपी औषधि एवं भोजन खाता रहता है और उसे छः दर्शनों की सूझ प्राप्त हो जाती है॥ ४॥ ५॥

रामकली महला १ ॥ हम डोलत बेड़ी पाप भरी है पवणु लगै मतु जाई ॥ सनमुख सिध भेटण कउ आए निहचउ देहि वडिआई ॥ १ ॥ गुर तारि तारणहारिआ ॥ देहि भगति पूरन अविनासी हउ तुझ कउ बलिहारिआ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सिध साधिक जोगी अरु जंगम एकु सिधु जिनी धिआइआ ॥ परसत पैर सिझत ते सुआमी अखरु जिन कउ आइआ ॥ २ ॥ जप तप संजम करम न जाना नामु जपी प्रभ तेरा ॥ गुरु परमेसरु नानक भेटिओ साचै सबदि निबेरा ॥ ३ ॥ ६ ॥

हम डोल रहे हैं, क्योंकि हमारी जीवन-नैया पापों से भरी हुई है, डर लग रहा है कि तूफान के कारण कहीं यह डूब न जाए। हे मालिक! हम तुझे मिलने के लिए तेरे पास आए हैं, निश्चय ही बड़ाई दीजिए॥ १॥ हे तरन-तारन गुरु! संसार-सागर से तिरा दो, हे पूर्ण अविनाशी! अपनी भक्ति प्रदान कीजिए, मैं तुझ पर बलिहारी जाता हूँ॥ १॥ रहाउ॥ जिन्होंने परमेश्वर रूपी सिद्ध का ध्यान किया है, दरअसल वही सच्चा सिद्ध-साधक, योगी एवं जंगम है। जिन्हें परमात्मा का नाम मिल गया है, वे जगत् के स्वामी प्रभु के चरण छू कर सफल हो गए हैं॥ २॥ हे प्रभु! मैं कोई जप, तप, संयम इत्यादि धर्म कर्म को नहीं जानता, सिर्फ तेरा ही नाम जपता रहता हूँ। हे नानक! जिसकी गुरु-परमेश्वर से भेंट हो गई है, सच्चे शब्द द्वारा उसके कर्मों का लेखा-जोखा मिट गया है॥ ३॥ ६॥

रामकली महला १ ॥ सुरती सुरति रलाईऐ एतु ॥ तनु करि तुलहा लंघहि जेतु ॥ अंतरि भाहि तिसै तू रखु ॥ अहिनिसि दीवा बलै अथकु ॥ १ ॥ ऐसा दीवा नीरि तराइ ॥ जितु दीवै सभ सोझी पाइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ हछी मिटी सोझी होइ ॥ ता का कीआ मानै सोइ ॥ करणी ते करि चकहु ढालि ॥ ऐथै ओथै निबही नालि ॥ २ ॥ आपे नदरि करे जा सोइ ॥ गुरमुखि विरला बूझै कोइ ॥ तितु घटि दीवा निहचलु होइ ॥ पाणी मरै न बुझाइआ जाइ ॥ ऐसा दीवा नीरि तराइ ॥ ३ ॥ डोलै वाउ न वडा होइ ॥ जापै जिउ सिंघासणि लोइ ॥ खत्री ब्राहमणु सूदु कि वैसु ॥ निरति न पाईआ गणी सहंस ॥ ऐसा दीवा बाले कोइ ॥ नानक सो पारंगति होइ ॥ ४ ॥ ७ ॥

इस मानव-जन्म में अपना ध्यान भगवान में ऐसे लगाकर रखना चाहिए कि अपने तन को ही नैया बना लो, जिससे भवसागर से पार हुआ जाए। अन्तर्मन में जो तृष्णाग्नि जल रही है, उसे दबाकर रखो ताकि मन में दिन-रात ज्ञान का दीपक जलता रहे॥ १॥ यदि शरीर रूपी जल में ऐसा दीपक जलाया जाए तो उस दीपक द्वारा सारा ज्ञान प्राप्त हो सकता है॥ १॥ रहाउ॥ यदि अच्छी सूझ-बूझ रूपी मिट्टी हो तो उस मिट्टी से बने दीपक को प्रभु स्वीकार कर लेता है। अपने शुभ-कर्मों को चाक बनाओ, उस चाक पर दीपक बनाओ। ऐसा दीपक लोक-परलोक में सहायक होगा॥ २॥ जब परमात्मा अपनी कृपा-दृष्टि करता है तो कोई विरला गुरुमुख इस तथ्य को समझ जाता है और उसके हृदय में यह दीपक निश्चल हो जाता है। ऐसा दीपक पानी द्वारा न नाश होता है और न ही इसे बुझाया जा सकता है। सो ऐसा दीपक शरीर रूपी जल में तैराना चाहिए॥ ३॥ हवा इस दीपक को डुला नहीं सकती और न ही यह बड़ा होता है। इस दीपक के आलोक से अन्तर्मन रूपी सिंहासन पर विराजमान परमेश्वर नजर आने लगता है। क्षत्रिय, ब्राह्मण, वैश्य एवं शूद्र किसी ने भी हजारों बार गिनती करके भी उसका मूल्यांकन नहीं किया। हे नानक! जो जीव अपने हृदय में ऐसा दीपक प्रज्वलित कर लेता है, उसका उद्धार हो जाता है॥ ४॥ ७॥

रामकली महला १ ॥ तुधनो निवणु मंनणु तेरा नाउ ॥ साचु भेट बैसण कउ थाउ ॥ सतु संतोखु होवै अरदासि ॥ ता सुणि सदि बहाले पासि ॥ १ ॥ नानक बिरथा कोइ न होइ ॥ ऐसी दरगह साचा सोइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ प्रापति पोता करमु पसाउ ॥ तू देवहि मंगत जन चाउ ॥ भाडै भाउ पवै तितु आइ ॥ धुरि तै छोडी कीमति पाइ ॥ २ ॥ जिनि किछु कीआ सो किछु करै ॥ अपनी कीमति आपे धरै ॥ गुरमुखि परगटु होआ हरि राइ ॥ ना को आवै ना को जाइ ॥ ३ ॥ लोकु धिकारु कहै मंगत जन मागत मानु न पाइआ ॥ सह कीआ गला दर कीआ बाता तै ता कहणु कहाइआ ॥ ४ ॥ ८ ॥

हे परमेश्वर ! तेरे नाम का मनन करना ही तेरी अर्चना अथवा वंदना है, सत्य-नाम की भेंट देने से तेरे दरबार में बैठने को स्थान मिल जाता है। जो व्यक्ति सत्य एवं संतोष की प्रार्थना करता है, तू उसकी प्रार्थना सुनकर बुला कर अपने पास बिठा लेता है॥ १॥ हे नानक ! वह सच्चा परमात्मा ऐसा है और उसका दरबार भी ऐसा है कि उससे कोई भी खाली हाथ नहीं लौटता॥ १॥ रहाउ॥ तेरी रहमत एवं कृपा का खजाना प्राप्त हो जाए। मुझ जैसे भिखारी के मन में यही चाव है कि तू मुझे यह खजाना प्रदान कर दे। जिसके हृदय में तूने आरम्भ से ही श्रद्धा रूपी कीमत डाल रखी है, उसके हृदय रूपी बर्तन में तेरी प्रीति स्वयं ही आ पड़ती है॥ २॥ जिस परमात्मा ने यह सबकुछ पैदा किया है, वही सबकुछ कर रहा है, वह श्रद्धा रूपी कीमत भी हृदय रूपी बर्तन में स्वयं ही डालता है। ईश्वर गुरुमुख के हृदय-घर में प्रगट हुआ है, फिर उसका जन्म-मरण का चक्र समाप्त हो जाता है॥ ३॥ भिखारी को लोग तिरस्कृत ही करते हैं और उनका कहना है कि मांगने से सम्मान प्राप्त नहीं होता। परमात्मा की बातें, उसके दरबार की बातें, उस मालिक ने स्वयं ही मुझसे मुख से कहलवाई हैं॥ ४॥ ८॥

रामकली महला १ ॥ सागर महि बूंद बूंद महि सागरु कवणु बुझै बिधि जाणै ॥ उतभुज चलत आपि करि चीनै आपे ततु पछाणै ॥ १ ॥ ऐसा गिआनु बीचारै कोई ॥ तिस ते मुकति परम गति होई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ दिन महि रैणि रैणि महि दिनीअरु उसन सीत बिधि सोई ॥ ता की गति मिति अवरु न जाणै गुर बिनु समझ न होई ॥ २ ॥ पुरख महि नारि नारि महि पुरखा बूझहु ब्रहम गिआनी ॥ धुनि महि धिआनु धिआन महि जानिआ गुरमुखि अकथ कहानी ॥ ३ ॥ मन महि जोति जोति महि मनूआ पंच मिले गुर भाई ॥ नानक तिन कै सद बलिहारी जिन एक सबदि लिव लाई ॥ ४ ॥ ९ ॥

सागर में बूंद एवं बूंद में ही सागर समाया हुआ है किन्तु इस भेद को कौन समझता और कौन इस विधि को जानता है ? ईश्वर स्वयं ही उद्भिज इत्यादि चारों स्रोतों को पैदा करके उनके तमाशे को जानता है और स्वयं ही रहस्य को पहचानता भी है॥ १॥ कोई विरला ही ऐसा ज्ञान सोचता है, जिससे उसकी मुक्ति एवं परमगति हो जाती है॥ १॥ रहाउ॥ जैसे दिन में रात है और रात में दिन करने वाला सूरज है, वैसे ही गर्मी और सर्दी के लिए वही विधि बनी हुई है। उसकी गति एवं विस्तार को अन्य कोई नहीं जानता और गुरु के बिना किसी को भी इस भेद का ज्ञान नहीं होता॥ २॥ इस तथ्य को ब्रह्मज्ञानी ही समझता है कि पुरुष में स्त्री और स्त्री में ही पुरुष समाया हुआ है अर्थात् स्त्री का जन्म पुरुष के वीर्य एवं स्त्री की कोख से ही पुरुष पैदा होता है। अनहद शब्द की धुन में ध्यान समाया हुआ है और ध्यान में ही अनहद शब्द की धुन को जाना जाता है। इस अकथनीय कहानी को गुरुमुख ही समझ सकता है॥ ३॥ मनुष्य की ज्योति उसके मन में समाई हुई है और मन ज्योति में ही समाया हुआ है। मनुष्य की पाँचों ज्ञानेन्द्रियाँ गुरु-भाई बनकर परस्पर रहती हैं। हे नानक ! जिन्होंने केवल ब्रह्म-शब्द में ध्यान लगाया है, मैं उन पर सदैव बलिहारी जाता हूँ॥ ४॥ ६॥

रामकली महला १ ॥ जा हरि प्रभि किरपा धारी ॥ ता हउमै विचहु मारी ॥ सो सेवकि राम पिआरी ॥ जो गुर सबदी बीचारी ॥ १ ॥ सो हरि जनु हरि प्रभ भावै ॥ अहिनिसि भगति करे दिनु राती लाज छोडि हरि के गुण गावै ॥ १ ॥ रहाउ ॥ धुनि वाजे अनहद घोरा ॥ मनु मानिआ हरि रसि मोरा ॥ गुर पूरै सचु समाइआ ॥ गुरु आदि पुरखु हरि पाइआ ॥ २ ॥ सभि नाद बेद गुरबाणी ॥ मनु राता सारिगपाणी ॥ तह तीरथ वरत तप सारे ॥ गुर मिलिआ हरि निसतारे ॥ ३ ॥ जह आपु गइआ भउ भागा ॥ गुर चरणी सेवकु लागा ॥ गुरि सतिगुरि भरमु चुकाइआ ॥ कहु नानक सबदि मिलाइआ ॥ ४ ॥ १० ॥

जब प्रभु की कृपा होती है तो मन का अहम् मिट जाता है। वही सेवक राम को प्यारा लगता है, जो गुरु के शब्द द्वारा चिंतन करता है॥ १॥ वही भक्त प्रभु को भाता है, जो निशदिन उसकी भक्ति करता है और लोक-लाज को छोड़कर दिन-रात उसका गुणगान करता रहता है॥१॥ रहाउ॥ उसके मन में अनहद शब्द की ध्वनि गूँजती रहती है। मेरा मन हरि रस का पान करके तृप्त हो गया है। पूर्ण गुरु में ही सत्य समाया हुआ है और गुरु द्वारा ही आदिपुरुष परमात्मा मिला है॥ २॥ गुरुवाणी ही सब नाद एवं वेद है। मेरा मन तो ईश्वर में ही लीन है और वही सारे तप, व्रत एवं तीर्थ है। जिसे भी गुरु मिला है, भगवान ने उसका उद्धार कर दिया है॥ ३॥ जिसके मन में से अहंत्व दूर हो गया, उसका भय नाश हो गया है। जो भी सेवक गुरु के चरणों में आकर लग गया है, गुरु-सतगुरु ने उसका भ्रम दूर कर दिया है। हे नानक! वह ब्रह्म-शब्द में ही विलीन हो गया है॥ ४॥ १०॥

रामकली महला १ ॥ छादनु भोजनु मागतु भागै ॥ खुधिआ दुसट जलै दुखु आगै ॥ गुरमति नही लीनी दुरमति पति खोई ॥ गुरमति भगति पावै जनु कोई ॥ १ ॥ जोगी जुगति सहज घरि वासै ॥ एक द्रिसटि एको करि देखिआ भीखिआ भाइ सबदि त्रिपतासै ॥ १ ॥ रहाउ ॥ पंच बैल गडीआ देह धारी ॥ राम कला निबहै पति सारी ॥ धर तूटी गाडो सिर भारि ॥ लकरी बिखरि जरी मंझ भारि ॥ २ ॥ गुर का सबदु वीचारि जोगी ॥ दुखु सुखु सम करणा सोग बिओगी ॥ भुगति नामु गुर सबदि बीचारी ॥ असथिरु कंधु जपै निरंकारी ॥ ३ ॥ सहज जगोटा बंधन ते छूटा ॥ कामु क्रोधु गुर सबदी लूटा ॥ मन महि मुंद्रा हरि गुर सरणा ॥ नानक राम भगति जन तरणा ॥ ४ ॥ ११ ॥

योगी तो केवल वस्त्र-भोजन माँगता हुआ भागा फिरता है। वह दुष्ट भूख की आग में जलता रहता है और मरणोपरांत परलोक में भी दुख ही भोगता है। उसने गुरु की मति ग्रहण नहीं की और दुर्मति में ही अपनी इज्जत गंवा ली है। कोई विरला ही गुरु मतानुसार भक्ति को प्राप्त करता है॥ १॥ सच्चे योगी की योग-युक्ति यही है कि वह सहजावस्था के घर में ही रहता है। वह एक दृष्टि से सब जीवों में एक परमेश्वर को ही देखता है और शब्द की भिक्षा से तृप्त रहता है॥ १॥ रहाउ॥ पाँच ज्ञानेन्द्रियाँ रूपी बैल इस शरीर रूपी गाड़ी को चला रहे हैं। राम की शक्ति से इस शरीर रूपी गाड़ी की प्रतिष्ठा बनी रहती है। जब इस गाड़ी का धुरा टूट जाता है तो यह शरीर रूपी गाड़ी सिर के भार गिर जाती है। जब इसकी अंग रूपी लकड़ियां भिन्न-भिन्न हो जाती हैं तो इसे जला दिया जाता है॥ २॥ हे योगी! गुरु के शब्द का चिंतन करो, दुख-सुख एवं शोक-वियोग को एक समान समझो। शब्द-गुरु के चिंतन द्वारा नाम रूपी भोजन ग्रहण करो। जीवन रूपी दीवार स्थिर हो जाएगी और फिर निरंकार का जाप करते रहोगे॥ ३॥ जिसने सहजावस्था को अपना लंगोटा बना लिया है, वह बन्धनों से छूट गया है। उसने गुरु-शब्द द्वारा काम-क्रोध पर विजय प्राप्त कर ली है और भगवान् की शरण को मन में कानों की मुद्रा धारण कर लिया है। हे नानक! राम की भक्ति से ही दास भवसागर से पार होता है॥ ४॥ ११॥

१ओं सतिगुर प्रसादि ॥ रामकली महला ३ घरु १ ॥

सतजुगि सचु कहै सभु कोई ॥ घरि घरि भगति गुरमुखि होई ॥ सतजुगि धरमु पैर है चारि ॥ गुरमुखि बूझै को बीचारि ॥ १ ॥ जुग चारे नामि वडिआई होई ॥ जि नामि लागै सो मुकति होवै गुर बिनु नामु न पावै कोई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ त्रेतै इक कल कीनी दूरि ॥ पाखंडु वरतिआ हरि जाणनि दूरि ॥ गुरमुखि बूझै सोझी होई ॥ अंतरि नामु वसै सुखु होई ॥ २ ॥ दुआपुरि दूजै दुबिधा होइ ॥ भरमि

भुलाने जाणहि दोइ ॥ दुआपुरि धरमि दुइ पैर रखाए ॥ गुरमुखि होवै त नामु द्रिड़ाए ॥ ३ ॥ कलजुगि धरम कला इक रहाए ॥ इक पैरि चलै माइआ मोहु वधाए ॥ माइआ मोहु अति गुबारु ॥ सतगुरु भेटै नामि उधारु ॥ ४ ॥ सभ जुग महि साचा एको सोई ॥ सभ महि सचु दूजा नही कोई ॥ साची कीरति सचु सुखु होई ॥ गुरमुखि नामु वखाणै कोई ॥ ५ ॥ सभ जुग महि नामु ऊतमु होई ॥ गुरमुखि विरला बूझै कोई ॥ हरि नामु धिआए भगतु जनु सोई ॥ नानक जुगि जुगि नामि वडिआई होई ॥ ६ ॥ १ ॥

सतयुग में सब लोग सत्य बोलते थे और गुरु की अनुकंपा से घर-घर में भक्ति होती थी। सतयुग में धर्म के चार पैर (सत्य, संतोष, धर्म एवं दया) थे। कोई गुरुमुख ही इस विचार को बूझता है॥ १॥ चारों युगों में नाम की ही कीर्ति होती रही है। जो नाम-स्मरण में लग जाता है, उसकी मुक्ति हो जाती है, किन्तु गुरु के बिना कोई भी नाम प्राप्त नहीं कर सकता॥ १॥ रहाउ॥ त्रैता युग में धर्म की एक कला दूर कर दी गई अर्थात् धर्म का एक पैर टूट गया इससे जगत् में पाखण्ड प्रवृत्त हो गया तथा लोग ईश्वर को दूर मानने लग गए। लेकिन जो गुरुमुख बनकर इस भेद को समझता है, उसे ज्ञान हो जाता है। जिसके मन में नाम स्थित हो जाता है, उसे सुख प्राप्त होता है॥ २॥ द्वापर में द्वैतभाव के कारण जीवों के मन में दुविधा पैदा हो गई। लोग भ्रम में भूलकर ब्रह्म एवं माया को दो विभिन्न शक्तियां समझने लग गए। इस तरह द्वापर में धर्म के दो ही पैर रह गए। लेकिन जो गुरुमुख बन जाता था, वह नाम को मन में बसा लेता था॥ ३॥ फिर कलियुग में धर्म की एक ही कला रह गई और वह एक ही पैर पर चलने लगा। दुनिया में चारों ओर मोह-माया में वृद्धि हो गई। यह माया का मोह घोर अंधेरा अर्थात् निरा अज्ञान है। जो सतगुरु से भेंट करता है, उसका नाम द्वारा उद्धार हो जाता है॥ ४॥ सब युगों में एक परमात्मा ही मौजूद है। वह परम सत्य सब में विद्यमान है, अन्य कोई नहीं। उस सच्चे की सच्ची स्तुति करने से ही सुख हासिल होता है, लेकिन कोई विरला ही गुरुमुख बनकर नाम जपता है॥ ५॥ सब युगों में नाम ही सब धर्म-कर्मों से उत्तम है, लेकिन कोई विरला गुरुमुख ही इस तथ्य को समझता है। जो हरि-नाम का ध्यान करता है, वही भक्त है। हे नानक ! युग-युग में नाम की ही कीर्ति हुई है॥ ६॥ १॥

रामकली महला ४ घरु १ ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

जे वड भाग होवहि वडभागी ता हरि हरि नामु धिआवै ॥ नामु जपत नामे सुखु पावै हरि नामे नामि समावै ॥ १ ॥ गुरमुखि भगति करहु सद प्राणी ॥ हिरदै प्रगासु होवै लिव लागै गुरमति हरि हरि नामि समाणी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ हीरा रतन जवेहर माणक बहु सागर भरपूरु कीआ ॥ जिसु वड भागु होवै वड मसतकि तिनि गुरमति कढि कढि लीआ ॥ २ ॥ रतनु जवेहरु लालु हरि नामा गुरि काढि तली दिखलाइआ ॥ भागहीण मनमुखि नही लीआ त्रिण ओलै लाखु छपाइआ ॥ ३ ॥ मसतकि भागु होवै धुरि लिखिआ ता सतगुरु सेवा लाए ॥ नानक रतन जवेहर पावै धनु धनु गुरमति हरि पाए ॥ ४ ॥ १ ॥

यदि किसी भाग्यशाली का बड़ा भाग्य हो तो ही वह हरि-नाम का ध्यान करता है। प्रभु का नाम जपने से उसे सुख हासिल हो जाता है और हरि-नाम में ही विलीन हो जाता है॥ १॥ हे प्राणी ! गुरुमुख बनकर भगवान की भक्ति करो; इससे हृदय में ज्ञान का आलोक हो जाएगा, परमात्मा में ध्यान लग जाएगा और गुरु मतानुसार हरि-नाम में विलीन हो जाओगे॥ १॥ रहाउ॥ हरि का नाम हीरे-रत्न, जवाहर-माणिक्य की तरह अमूल्य है और गुरु रूपी समुद्र में प्रभु ने भरपूर किया हुआ है। जिसके माथे पर बड़े भाग्य उज्ज्वल हो, वह गुरु मतानुसार इसे निकालकर प्राप्त कर लेता है॥ २॥ हरि का नाम रत्न-जवाहर एवं लाल जैसा अनमोल है, जिसे गुरु ने अपने हाथ

की तली पर रखकर सबको दिखाया है किन्तु भाग्यहीन मनमुखों ने इनको प्राप्त नहीं किया। लाखों रुपए के मूल्य का यह नाम तृण की ओट में छिपा कर रखा हुआ है॥ ३॥ आरम्भ से ही जिसके भाग्य में लिखा हो तो ही सतगुरु उसे सेवा में लगाता है। हे नानक! वह जीव धन्य है, जो रत्न-जवाहर रूपी नाम को प्राप्त कर लेता है और गुरु उपदेश द्वारा भगवान् को पा लेता है॥ ४॥ १॥

रामकली महला ४ ॥ राम जना मिलि भइआ अनंदा हरि नीकी कथा सुनाइ ॥ दुरमति मैलु गई सभ नीकलि सतसंगति मिलि बुधि पाइ ॥ १ ॥ राम जन गुरमति रामु बोलाइ ॥ जो जो सुणै कहै सो मुकता राम जपत सोहाइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जे वड भाग होवहि मुखि मसतकि हरि राम जना भेटाइ ॥ दरसनु संत देहु करि किरपा सभु दालदु दुखु लहि जाइ ॥ २ ॥ हरि के लोग राम जन नीके भागहीण न सुखाइ ॥ जिउ जिउ राम कहहि जन ऊचे नर निंदक डंसु लगाइ ॥ ३ ॥ ध्रिगु ध्रिगु नर निंदक जिन जन नही भाए हरि के सखा सखाइ ॥ से हरि के चोर वेमुख मुख काले जिन गुर की पैज न भाइ ॥ ४ ॥ दइआ दइआ करि राखहु हरि जीउ हम दीन तेरी सरणाइ ॥ हम बारिक तुम पिता प्रभ मेरे जन नानक बखसि मिलाइ ॥ ५ ॥ २ ॥

राम के भक्तों को मिलकर मन में आनंद पैदा हो गया है और उन्होंने मुझे हरि की उत्तम कथा सुनाई है। अब मन में से दुर्मति की सारी मैल निकल गई है और सत्संगति में मिलकर बुद्धि प्राप्त हो गई है॥ १॥ राम के भक्त गुरु मतानुसार राम नाम ही जपते हैं। जो भी राम का नाम सुनता एवं जपता है, वह संसार के बन्धनों से मुक्त हो जाता है और वह राम का नाम जपता ही सुन्दर लगता है॥ १॥ रहाउ॥ यदि माथे पर बड़े भाग्य उज्ज्वल हों तो प्रभु भक्तजनों से भेंट करवा देता है। यदि कृपा करके संत अपने दर्शन दें तो सब दुख-दारिद्र दूर हो जाते हैं॥ २॥ भगवान् के भक्तजन बड़े नेक व उपकारी हैं किन्तु भाग्यहीन निंदकों को वे अच्छे नहीं लगते। भक्तजन जैसे-जैसे उच्च स्वर से राम नाम उच्चरित करते हैं, उतना ही सर्पदंश की तरह राम नाम निंदकों को पीड़ित करता है॥ ३॥ निंदक व्यक्ति धिक्कार योग्य हैं, जिन्हें संतजन भले नहीं लगते जो हरि के मित्र एवं साथी हैं। जिन्हें गुरु का मान-सम्मान नहीं भाता, वे विमुख, तिरस्कृत एवं हरि के चोर हैं॥ ४॥ हे श्री हरि! हम दीन तेरी शरण में आए हैं, दया करके हमारी रक्षा करो। नानक का कथन है कि हे प्रभु! तुम हमारे पिता हो और हम तेरी संतान हैं, क्षमा करके अपने साथ मिला लो॥ ५॥ २॥

रामकली महला ४ ॥ हरि के सखा साध जन नीके तिन ऊपरि हाथु वतावै ॥ गुरमुखि साध सेई प्रभ भाए करि किरपा आपि मिलावै ॥ १ ॥ राम मोकउ हरि जन मेलि मनि भावै ॥ अमिउ अमिउ हरि रसु है मीठा मिलि संत जना मुखि पावै ॥ १ ॥ रहाउ ॥ हरि के लोग राम जन ऊतम मिलि ऊतम पदवी पावै ॥ हम होवत चेरी दास दासन की मेरा ठाकुरु खुसी करावै ॥ २ ॥ सेवक जन सेवहि से वडभागी रिद मनि तनि प्रीति लगावै ॥ बिनु प्रीती करहि बहु बाता कूड़ु बोलि कूड़ो फलु पावै ॥ ३ ॥ मोकउ धारि क्रिपा जगजीवन दाते हरि संत पगी ले पावै ॥ हउ काटउ काटि बाढि सिरु राखउ जितु नानक संतु चड़ि आवै ॥ ४ ॥ ३ ॥

हरि के सखा साधुजन बड़े नेक हैं और उन पर प्रभु अपनी कृपा का हाथ रखता है। गुरुमुख साधुजन ही प्रभु को भाते हैं और वह उन्हें कृपा करके अपने साथ मिला लेता है॥ १॥ हे राम! मुझे भक्तों से मिला दो, क्योंकि वही मेरे मन को भाते हैं। हरि रस अमृत के समान बड़ा मीठा

है और संतजनों से मिलकर ही मुख में डाला जा सकता है॥ १॥ रहाउ॥ भगवान के भक्तजन बड़े उत्तम हैं, जिन्हें मिलकर उत्तम पदवी प्राप्त होती है। यदि मेरा ठाकुर मुझ पर प्रसन्न हो जाए तो मैं उसके दासों के दास की सेविका बन जाऊँ॥ २॥ वे भक्तजन बड़े भाग्यशाली हैं, जो प्रभु की उपासना करते हैं और उनके मन-तन-हृदय में प्रभु से प्रीति लगी रहती है। जो व्यक्ति प्रीति के बिना ही बहुत बातें करता है, वह झूठ बोलकर झूठा फल ही हासिल करता है॥ ३॥ हे जग के जीवनदाता! मुझ पर कृपा करो, ताकि संतों के चरणों में आश्रय प्राप्त हो जाए। हे नानक! मैं अपना सिर काट-काट कर मार्ग में रख दूँगा ताकि संत उस पर चढ़कर मेरे पास आएँ॥ ४॥ ३॥

रामकली महला ४ ॥ जे वड भाग होवहि वड मेरे जन मिलदिआ ढिल न लाईऐ ॥ हरि जन अंम्रित कुंट सर नीके वडभागी तितु नावाईऐ ॥ १ ॥ राम मोकउ हरि जन कारै लाईऐ ॥ हउ पाणी पखा पीसउ संत आगै पग मलि मलि धूरि मुखि लाईऐ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ हरि जन वडे वडे वड ऊचे जो सतगुर मेलि मिलाईऐ ॥ सतगुर जेवडु अवरु न कोई मिलि सतगुर पुरख धिआईऐ ॥ २ ॥ सतगुर सरणि परे तिन पाइआ मेरे ठाकुर लाज रखाईऐ ॥ इकि अपणै सुआइ आइ बहहि गुर आगै जिउ बगुल समाधि लगाईऐ ॥ ३ ॥ बगुला काग नीच की संगति जाइ करंग बिखू मुखि लाईऐ ॥ नानक मेलि मेलि प्रभ संगति मिलि संगति हंसु कराईऐ ॥ ४ ॥ ४ ॥

यदि मेरे बड़े भाग्य हों तो भक्तजनों को मिलने में कोई विलम्ब नहीं करना चाहिए। भक्तजन अमृत का कुण्ड एवं पावन सरोवर हैं और उन में उत्तम भाग्य से ही स्नान किया जाता है॥ १॥ हे राम! मुझे भक्तजनों की सेवा में लगाओ ताकि उन संतों की पानी, पंखा, आटा पीसने की सेवा करूँ और उनके पैर मल-मल कर धोकर उनकी चरण-धूलि मुँह में लगाऊँ॥ १॥ रहाउ॥ भक्तजन बड़े परोपकारी एवं महान होते हैं, जो सतगुरु से संपर्क करवा देते हैं। सतगुरु जैसा महान् अन्य कोई नहीं है और सतगुरु से मिलकर ही परमात्मा का ध्यान हो सकता है॥ २॥ जो व्यक्ति सतगुरु की शरण में पड़े हैं, उन्होंने परम सत्य को पा लिया है और मेरे ठाकुर ने उनकी लाज रख ली है। कुछ व्यक्ति अपने स्वार्थ के लिए गुरु के आगे बैठ जाते हैं और बगुले की तरह समाधि लगा लेते हैं॥ ३॥ बगुले एवं कौए जैसे नीचों की संगति में जाकर गंदगी में ही मुँह लगाना पड़ता है। नानक प्रार्थना करते हैं कि हे प्रभु! मुझे गुरु की संगति में मिला दो ताकि गुरु मुझे बगुले से हंस बना दे॥ ४॥ ४॥

रामकली महला ४ ॥ सतगुर दइआ करहु हरि मेलहु मेरे प्रीतम प्राण हरि राइआ ॥ हम चेरी होइ लगह गुर चरणी जिनि हरि प्रभ मारगु पंथु दिखाइआ ॥ १ ॥ राम मै हरि हरि नामु मनि भाइआ ॥ मै हरि बिनु अवरु न कोई बेली मेरा पिता माता हरि सखाइआ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ मेरे इकु खिनु प्रान न रहहि बिनु प्रीतम बिनु देखे मरहि मेरी माइआ ॥ धनु धनु वड भाग गुर सरणी आए हरि गुर मिलि दरसनु पाइआ ॥ २ ॥ मै अवरु न कोई सूझै बूझै मनि हरि जपु जपउ जपाइआ ॥ नामहीण फिरहि से नकटे तिन घसि घसि नक वढाइआ ॥ ३ ॥ मोकउ जगजीवन जीवालि लै सुआमी रिद अंतरि नामु वसाइआ ॥ नानक गुरू गुरू है पूरा मिलि सतिगुर नामु धिआइआ ॥ ४ ॥ ५ ॥

हे सतगुरु! दया करो और मुझे मेरे प्रियतम प्राण हरि से मिला दो। मैं दासी बनकर गुरु-चरणों में लग गई हूँ, जिसने मुझे प्रभु मिलन का मार्ग दिखाया है॥ १॥ हे राम! हरि का नाम ही मेरे मन को भा गया है। हरि के बिना मेरा अन्य कोई साथी नहीं है और वही मेरा पिता, मेरी माता एवं सच्चा साथी है॥ १॥ रहाउ॥ हे मेरी माता! अपने प्रियतम के दर्शनों के बिना मैं एक

क्षण भर भी जीवित नहीं रह सकती और उसके बिना मेरे प्राण ही निकल जाते हैं। वे मनुष्य भाग्यशाली एवं धन्य हैं, जो गुरु की शरण में आए हैं और गुरु से मिलकर प्रभु दर्शन प्राप्त कर लिए हैं॥ २॥ मुझे अन्य कुछ भी नहीं सूझता और मन तो गुरु का जपाया हरि नाम का जाप ही जपता रहता है। नामहीन द्वार-द्वार फिरने वाले नकटे अर्थात् बेशर्म हैं और उन्होंने रगड़-रगड़ कर अपना नाक कटवा लिया है॥ ३॥ हे जगत्पालक स्वामी! मेरे हृदय में नाम बसाकर जीवित कर लो। हे नानक! मेरा गुरु पूर्ण है, सतगुरु से मिलकर ही नाम का ध्यान किया है॥ ४॥ ५॥

रामकली महला ४ ॥ सतगुरु दाता वडा वड पुरखु है जितु मिलिऐ हरि उर धारे ॥ जीअ दानु गुरि पूरै दीआ हरि अंम्रित नामु समारे ॥ १ ॥ राम गुरि हरि हरि नामु कंठि धारे ॥ गुरमुखि कथा सुणी मनि भाई धनु धनु वड भाग हमारे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ कोटि कोटि तेतीस धिआवहि ता का अंतु न पावहि पारे ॥ हिरदै काम कामनी मागहि रिधि मागहि हाथु पसारे ॥ २ ॥ हरि जसु जपि जपु वडा वडेरा गुरमुखि रखउ उरि धारे ॥ जे वड भाग होवहि ता जपीऐ हरि भउजलु पारि उतारे ॥ ३ ॥ हरि जन निकटि निकटि हरि जन है हरि राखै कंठि जन धारे ॥ नानक पिता माता है हरि प्रभु हम बारिक हरि प्रतिपारे ॥ ४ ॥ ६ ॥ १८ ॥

सतगुरु बड़ा दाता एवं महापुरुष है, जिसे मिलकर हरि को हृदय में बसाया जा सकता है। पूर्ण गुरु ने मुझे जीवनदान दिया है और हरि के नामामृत का चिंतन करता रहता हूँ॥ १॥ हे राम! गुरु ने हरि-नाम मेरे कंठ में बसा दिया है। मैं बड़ा भाग्यशाली एवं धन्य-धन्य हूँ जो गुरु के मुख से हरि-कथा सुनी है और वही मेरे मन को भा गई है॥ १॥ रहाउ॥ तेंतीस करोड़ देवता भी परमात्मा का ध्यान करते हैं लेकिन उन्होंने भी उसका अन्त प्राप्त नहीं किया। वे अपने हृदय में काम के वशीभूत होकर नारी की कामना करते हैं और हाथ फैलाकर ऋद्धियाँ मांगते हैं॥ २॥ हरि-यश का जाप करो, सब धर्म कर्मों से यही सर्वश्रेष्ठ है तथा गुरुमुख बनकर इसे हृदय में धारण करके रखो। यदि उत्तम भाग्य हों तो हरि का जाप किया जा सकता है, जो भवसागर से पार उतार देता है॥ ३॥ भगवान अपने भक्तों के निकट बसता है और भक्त उसके निकट बसते हैं। वह अपने भक्तों को गले से लगाकर रखता है। हे नानक! प्रभु ही हमारी माता एवं पिता है, हम उसकी संतान हैं और वही हमारा पोषण करता है॥ ४॥ ६॥ १८॥

रागु रामकली महला ५ घरु १ ੧ਓ सतिगुर प्रसादि ॥

किरपा करहु दीन के दाते मेरा गुणु अवगणु न बीचारहु कोई ॥ माटी का किआ धोपै सुआमी माणस की गति एही ॥ १ ॥ मेरे मन सतिगुरु सेवि सुखु होई ॥ जो इछहु सोई फलु पावहु फिरि दूखु न विआपै कोई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ काचे भाडे साजि निवाजे अंतरि जोति समाई ॥ जैसा लिखतु लिखिआ धुरि करतै हम तैसी किरति कमाई ॥ २ ॥ मनु तनु थापि कीआ सभु अपना एहो आवण जाणा ॥ जिनि दीआ सो चिति न आवै मोहि अंधु लपटाणा ॥ ३ ॥ जिनि कीआ सोई प्रभु जाणै हरि का महलु अपारा ॥ भगति करी हरि के गुण गावा नानक दासु तुमारा ॥ ४ ॥ १ ॥

हे दीनों के दाता! कृपा करो; मेरे गुण अवगुण पर कोई विचार मत करो। हे स्वामी! मिट्टी को धोने से कोई लाभ नहीं, मनुष्य की हालत भी यही है॥ १॥ हे मेरे मन! सतगुरु की सेवा करने से ही सुख हासिल होता है, जैसी कामना होगी, वही फल मिलेगा और फिर से कोई दुख नहीं लगेगा॥ १॥ रहाउ॥ परमात्मा ने मानव-शरीर रूपी कच्चे बर्तन बनाकर उपकार किया है और उनके अन्तर्मन में उसकी ही ज्योति समाई हुई है। विधाता ने जैसा हमारा भाग्य लिख दिया है,

हम वैसा ही कर्म करते हैं॥ २॥ किन्तु जीव ने तन-मन को अपना समझ लिया है, यही जन्म-मरण का कारण है। जिसने इतना सुन्दर जीवन दिया है, वह परमेश्वर याद ही नहीं आता, अन्धा इन्सान मोह में ही फँसा हुआ है॥ ३॥ जिसने रचना की, वही प्रभु इस रहस्य को जानता है और उसका दरबार अपरम्पार है। नानक विनय करता है कि हे प्रभु ! मैं तेरा दास हूँ, तेरी भक्ति करता हुआ तेरे ही गुण गाता रहता हूँ॥ ४॥ १॥

रामकली महला ५ ॥ पवहु चरणा तलि ऊपरि आवहु ऐसी सेव कमावहु ॥ आपस ते ऊपरि सभ जाणहु तउ दरगह सुखु पावहु ॥ १ ॥ संतहु ऐसी कथहु कहाणी ॥ सुर पवित्र नर देव पवित्रा खिनु बोलहु गुरमुखि बाणी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ परपंचु छोडि सहज घरि बैसहु झूठा कहहु न कोई ॥ सतिगुर मिलहु नवै निधि पावहु इन बिधि ततु बिलोई ॥ २ ॥ भरमु चुकावहु गुरमुखि लिव लावहु आतमु चीनहु भाई ॥ निकटि करि जाणहु सदा प्रभु हाजरु किसु सिउ करहु बुराई ॥ ३ ॥ सतिगुरि मिलिऐ मारगु मुकता सहजे मिले सुआमी ॥ धनु धनु से जन जिनी कलि महि हरि पाइआ जन नानक सद कुरबानी ॥ ४ ॥ २ ॥

हे भक्तजनो ! ऐसी सेवा करो कि सब लोगों के ऊपर अर्थात् उनसे श्रेष्ठ बन जाओ, सब की चरण-धूलि बन जाओ। यदि सब को अपने से उत्तम मानोगे तो ही दरगाह में सुख हासिल होगा॥ १॥ हे संतजनो ! ऐसी कथा-कहानी सुनाओ, यदि एक क्षण भर के लिए गुरु की वाणी बोलो, तो मनुष्य, देवते एवं देवगण भी पवित्र हो जाएँगे॥ १॥ रहाउ॥ जग के प्रपंच को छोड़कर सहजावस्था में बैठो और किसी को भी झूठा मत कहो। सतगुरु से मिलकर नौ-निधियाँ हासिल कर लो, इस विधि द्वारा नाम रूपी दूध को बिलोकर माखन रूपी परमतत्व प्रभु को पा लो॥ २॥ अपना भ्रम दूर करके गुरुमुख बनकर परमात्मा में ध्यान लगाओ एवं अपनी आत्म ज्योति को पहचानो। हमेशा ही प्रभु को अपने निकट समझो तथा किसी की बुराई में मत पड़ो॥ ३॥ यदि सतगुरु मिल जाए तो मुक्ति का मार्ग प्राप्त हो जाता है और सहज ही स्वामी से मिलाप हो जाता है। वे भक्तजन धन्य हैं, जिन्होंने कलियुग में भगवान् को पा लिया है। नानक तो सदैव उन पर कुर्बान जाता है॥ ४॥ २॥

रामकली महला ५ ॥ आवत हरख न जावत दूखा नह बिआपै मन रोगनी ॥ सदा अनंदु गुरु पूरा पाइआ तउ उतरी सगल बिओगनी ॥ १ ॥ इह बिधि है मनु जोगनी ॥ मोहु सोगु रोगु लोगु न बिआपै तह हरि हरि हरि रस भोगनी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सुरग पवित्रा मिरत पवित्रा पइआल पवित्र अलोगनी ॥ आगिआकारी सदा सुखु भुंचै जत कत पेखउ हरि गुनी ॥ २ ॥ नह सिव सकती जलु नही पवना तह अकारु नही मेदनी ॥ सतिगुर जोग का तहा निवासा जह अविगत नाथु अगम धनी ॥ ३ ॥ तनु मनु हरि का धनु सभु हरि का हरि के गुण हउ किआ गनी ॥ कहु नानक हम तुम गुरि खोई है अंभै अंभु मिलोगनी ॥ ४ ॥ ३ ॥

अगर मन परमात्मा के ध्यान में लीन हो तो न किसी वस्तु के मिलने से खुशी होती है, न ही किसी वस्तु के खोने से दुख होता है और न ही मन को कोई रोग प्रभावित करता है। पूर्ण गुरु को पाकर सदैव परमानंद बना रहता है, सब वियोग मिट जाते हैं॥ १॥ इस तरीके से जिसका मन ईश्वर में प्रवृत्त है तो मोह, शोक, रोग एवं लोक-लाज प्रभावित नहीं करते और मन हरि नाम का ही रस भोगता रहता है॥ १॥ रहाउ॥ उसके लिए तो स्वर्गलोक, मृत्युलोक, पाताललोक, पवित्र हैं। ऐसा व्यक्ति प्रभु का आज्ञाकारी बनकर सदा सुख भोगता है और जिधर भी देखता है

उधर ही गुणों का सागर परमेश्वर नजर आता है॥ २॥ जिधर न शिवशक्ति, न जल, न पवन, न कोई आकार और न धरती है, सतगुरु का निवास वहाँ है, जहाँ अगम्य, अविगत एवं गुणों का भण्डार मालिक प्रभु है॥ ३॥ यह तन-मन, धन सब परमात्मा की देन है, उसके उपकार गिने नहीं जा सकते। हे नानक ! गुरु ने मेरे मन से 'मेरा-तेरा' की भावना दूर कर दी है और जैसे जल में जल मिल जाता है, वैसे ही आत्मज्योति परमज्योति में विलीन हो गई है॥ ४॥ ३॥

रामकली महला ५ ॥ त्रै गुण रहत रहै निरारी साधिक सिध न जानै ॥ रतन कोठड़ी अंम्रित संपूरन सतिगुर कै खजानै ॥ १ ॥ अचरजु किछु कहणु न जाई ॥ बसतु अगोचर भाई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ मोलु नाही कछु करणै जोगा किआ को कहै सुणावै ॥ कथन कहण कउ सोझी नाही जो पेखै तिसु बणि आवै ॥ २ ॥ सोई जाणै करणैहारा कीता किआ बेचारा ॥ आपणी गति मिति आपे जाणै हरि आपे पूर भंडारा ॥ ३ ॥ ऐसा रसु अंम्रितु मनि चाखिआ त्रिपति रहे आघाई ॥ कहु नानक मेरी आसा पूरी सतिगुर की सरणाई ॥ ४ ॥ ४ ॥

हरिनाम तीन गुणों से रहित एवं निराला ही बना रहता है और सिद्ध-साधक भी इसकी महत्ता नहीं जानते। सतगुरु के खजाने में रत्नों की कोठरी है, जो अमृत से भरी हुई है॥ १॥ इसका आश्चर्य कथन नहीं किया जा सकता और यह नाम रूपी वस्तु अपहुँच है॥ १॥ रहाउ॥ जब इसका मूल्यांकन नहीं किया जा सकता तो क्या कोई कहे अथवा सुनाए। इसे कथन करने एवं कहने की किसी को कोई सूझ नहीं है। जो भी इसे देखता है, उसकी प्रीति इसमें लग जाती है॥ २॥ परमेश्वर सब जानता है, फिर जीव बेचारा क्या जानता है ? भक्ति का पूर्ण भण्डार परमेश्वर स्वयं ही अपनी गति एवं विस्तार को जानता है॥ ३॥ ऐसा नाम रूपी अमृत रस मन ने चखा है, जिससे वह तृप्त एवं संतुष्ट हो गया है। हे नानक ! सतगुरु की शरण लेने से मेरी अभिलाषा पूरी हो गई है॥ ४॥ ४॥

रामकली महला ५ ॥ अंगीकारु कीआ प्रभि अपनै बैरी सगले साधे ॥ जिनि बैरी है इहु जगु लूटिआ ते बैरी लै बाधे ॥ १ ॥ सतिगुरु परमेसरु मेरा ॥ अनिक राज भोग रस माणी नाउ जपी भरवासा तेरा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ चीति न आवसि दूजी बाता सिर ऊपरि रखवारा ॥ बेपरवाहु रहत है सुआमी इक नाम कै आधारा ॥ २ ॥ पूरन होइ मिलिओ सुखदाई ऊन न काई बाता ॥ ततु सारु परम पदु पाइआ छोडि न कतहू जाता ॥ ३ ॥ बरनि न साकउ जैसा तू है साचे अलख अपारा ॥ अतुल अथाह अडोल सुआमी नानक खसमु हमारा ॥ ४ ॥ ५ ॥

प्रभु ने मेरा साथ दिया है तथा उसने मेरे सारे वैरी (काम, क्रोध इत्यादि) वशीभूत कर दिए हैं। जिन वैरियों ने यह सारा जग लूट लिया है, उसने वे वैरी पकड़ कर बांध दिए हैं॥ १॥ सतगुरु ही मेरा परमेश्वर है। मैं अनेक राज सुख एवं खुशियाँ प्राप्त करता हूँ। हे ईश्वर ! मुझे तेरा ही भरोसा है और तेरा ही नाम जपता हूँ॥ १॥ रहाउ॥ मुझे कोई अन्य बात याद नहीं आती, क्योंकि परमेश्वर ही मेरा रखवाला है। हे स्वामी ! एक तेरे नाम के आधार से मैं बेपरवाह रहता हूँ॥ २॥ मुझे सुखदायक प्रभु मिल गया है, जिससे मैं पूर्ण सुखी हो गया हूँ तथा मुझे किसी बात की कोई कमी नहीं रही। तत्व सार रूपी परमपद पा लिया है और उसे छोड़कर कहीं नहीं जाता॥ ३॥ हे सच्चे अलक्ष्य अपरंपार ! जैसा तू है, मैं वर्णन नहीं कर सकता। हे नानक ! मेरा मालिक अतुलनीय, अथाह, अडोल एवं सारे जगत् का स्वामी है॥ ४॥ ५॥

रामकली महला ५ ॥ तू दाना तू अबिचलु तूही तू जाति मेरी पाती ॥ तू अडोलु कदे डोलहि नाही ता हम कैसी ताती ॥ १ ॥ एकै एकै एक तूही ॥ एकै एकै तू राइआ ॥ तउ किरपा ते सुखु पाइआ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ तू सागरु हम हंस तुमारे तुम महि माणक लाला ॥ तुम देवहु तिलु संक न मानहु हम भुंचह सदा निहाला ॥ २ ॥ हम बारिक तुम पिता हमारे तुम मुखि देवहु खीरा ॥ हम खेलह सभि लाड लडावह तुम सद गुणी गहीरा ॥ ३ ॥ तुम पूरन पूरि रहे संपूरन हम भी संगि अघाए ॥ मिलत मिलत मिलत मिलि रहिआ नानक कहणु न जाए ॥ ४ ॥ ६ ॥

हे परमेश्वर ! तू बड़ा बुद्धिमान है, तू ही अटल है और तू ही मेरी जाति-पांति है। तू अडोल है और कभी नहीं डोलता, फिर मुझे कैसी चिन्ता हो सकती है ?॥ १॥ हे ईश्वर ! केवल एक तू ही हैं, एक तू ही सम्पूर्ण विश्व का बादशाह है। तेरी कृपा से ही मुझे सुख प्राप्त हुआ है॥ १॥ रहाउ॥ तू गुणों का गहरा सागर है और हम तुम्हारे हंस हैं और तुझ में ही माणिक एवं लाल है। देते वक्त तू तिल मात्र भी शंका नहीं करता और हम तुझ से दान पाकर सदा निहाल रहते हैं॥ २॥ हम तेरी संतान हैं, तुम हमारे पिता हो और तुम ही हमारे मुँह में दूध डालते हो। हम तेरे साथ खेलते हैं, तुम लाड लडाते रहते हो, तुम सदा ही गुणों के गहरे सागर हो॥ ३॥ तू पूर्ण है, सर्वव्यापक है, तेरे संग लगकर हम तृप्त हो चुके हैं। हे प्रभु ! हम तेरे साथ मिलते-मिलते पूर्णतया मिल चुके हैं। हे नानक ! इस मिलाप को व्यक्त नहीं किया जा सकता॥ ४॥ ६॥

रामकली महला ५ ॥ कर करि ताल पखावजु नैनहु माथै वजहि रबाबा ॥ करनहु मधु बासुरी बाजै जिहवा धुनि आगाजा ॥ निरति करे करि मनूआ नाचै आणे घूघर साजा ॥ १ ॥ राम को निरतिकारी ॥ पेखै पेखनहारु दइआला जेता साजु सीगारी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ आखार मंडली धरणि सबाई ऊपरि गगनु चंदोआ ॥ पवनु विचोला करत इकेला जल ते ओपति होआ ॥ पंच ततु करि पुतरा कीना किरत मिलावा होआ ॥ २ ॥ चंदु सूरजु दुइ जरे चरागा चहु कुंट भीतरि राखे ॥ दस पातउ पंच संगीता एकै भीतरि साथे ॥ भिंन भिंन होइ भाव दिखावहि सभहु निरारी भाखे ॥ ३ ॥ घरि घरि निरति होवै दिनु राती घटि घटि वाजै तूरा ॥ एकि नचावहि एकि भवावहि इकि आइ जाइ होइ धूरा ॥ कहु नानक सो बहुरि न नाचै जिसु गुरु भेटै पूरा ॥ ४ ॥ ७ ॥

हाथों से ताल, नयनों से पखावज और माथे पर रबाब बजता है। कानों से मधुर बांसुरी एवं जिह्वा द्वारा रागों की धुन गूंजती है। घुँघरु एवं अन्य साजों सहित मन नृत्य करके नाचता है॥ १॥ यह राम की रचना का नाच हो रहा है। यह जितना भी साज-शृंगार है, देखने वाला दयालु प्रभु इसे देख रहा है॥ १॥ रहाउ॥। यह सारी धरती नृत्य करने के लिए अखाड़े का मंच बनी हुई है और उसके ऊपर गगन रूपी चंदोया तना हुआ है। आत्मा का परमात्मा से मिलन करवाने के लिए पवन बिचौला बना हुआ है और अकेला ही बिचौलगी कर रहा है। यह शरीर मनुष्य के वीर्य रूपी जल से उत्पन्न हुआ है। परमात्मा ने पाँच तत्वों—आकाश, हवा, जल, अग्नि एवं पृथ्वी द्वारा मानव शरीर रूपी पुतला बनाया है और कर्मों से ही उसका परमेश्वर से मिलाप होता है॥ २॥ चाँद एवं सूर्य रूपी दो दीपक जल रहे हैं, जिन्हें चारों दिशाओं में प्रकाश करने के लिए रखा हुआ है। नृत्य करने वाली वेश्या रूपी दस ज्ञानेन्द्रियाँ और संगीत बजाने वाले पाँच विकार शरीर में एक ही स्थान पर इकट्ठे बैठे हुए हैं। ये सभी भिन्न-भिन्न होकर अपना-अपना कमाल दिखाते हैं और सभी अपनी-अपनी निराली भाषा बोलते हैं॥ ३॥ शरीर रूपी घर-घर में दिन-रात नृत्य हो रहा है और हरेक हृदय में बाजा बज रहा है। परमात्मा किसी को नाच नचाता है, किसी को योनियों में घुमाता है और कोई जन्म-मरण के चक्र में पड़कर खाक होता रहता है। हे नानक ! जिसे पूर्ण गुरु मिल जाता है, उसे दुबारा नहीं नाचना पड़ता॥ ४॥ ७॥

रामकली महला ५ ॥ ओअंकारि एक धुनि एकै एकै रागु अलापै ॥ एका देसी एकु दिखावै एको रहिआ बिआपै ॥ एका सुरति एका ही सेवा एको गुर ते जापै ॥ १ ॥ भलो भलो रे कीरतनीआ ॥ राम रमा रामा गुन गाउ ॥ छोडि माइआ के धंध सुआउ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ पंच बजित्र करे संतोखा सात सुरा लै चालै ॥ बाजा माणु ताणु तजि ताना पाउ न बीगा घालै ॥ फेरी फेरु न होवै कब ही एकु सबदु बंधि पालै ॥ २ ॥ नारदी नरहर जाणि हदूरे ॥ घूंघर खड़कु तिआगि विसूरे ॥ सहज अनंद दिखावै भावै ॥ एहु निरतिकारी जनमि न आवै ॥ ३ ॥ जे को अपने ठाकुर भावै ॥ कोटि मधि एहु कीरतनु गावै ॥ साधसंगति की जावउ टेक ॥ कहु नानक तिसु कीरतनु एक ॥ ४ ॥ ८ ॥

सच्चा कीर्तनिया वही है, जो ओंकार की ध्वनि में ध्यान लगाता हुआ उसी का राग गाता हो, उस एक प्रभु के देश का निवासी हो, उस एक सर्वव्यापी के दर्शन करवाता हो, उस एक में ध्यान लगाता हो, एक की ही सेवा करता हो, जिसे गुरु द्वारा जाना जाता है॥ १॥ ऐसा कीर्तनिया उत्तम है, जो माया के धंधों एवं स्वार्थ को छोड़कर राम का गुणगान करता रहता है॥ १॥ रहाउ॥ सत्य, संतोष, दया, धर्म एवं पुण्य—इन पाँच शुभ गुणों को अपना साज बनाता हो और सा, रे, गा, मा, पा, धा, नी—इन सात स्वरों को प्रभु-प्रेम में चलने की चाल बनाता हो। मान-अभिमान के त्याग को अपना बाजा बनाता हो और कुमार्ग की तरफ पैर न रखने को बाजे का स्वर बनाता हो। यदि वह शब्द को अपने आंचल में बांध लेता हो तो जन्म-मरण के चक्र से छूट जाए॥ २॥ वह नारद जैसी भक्ति करता हुआ भगवान् को अपने समीप समझता हो तथा अपनी परेशानियों को त्याग कर नाच-नाचकर घुँघरुओं की छन-छन करता हो। वह अपने नखरे दिखाने की बजाय सहज आनंद प्राप्त करता हो। ऐसा नर्तक जन्म-मरण के चक्र में नहीं आता॥ ३॥ यदि कोई अपने ठाकुर जी को भाता है तो करोड़ों में से कोई विरला ही यह कीर्तन गाता है। हे नानक ! संतों की शरण में जाओ, जहाँ एक परमेश्वर का ही कीर्तन होता रहता है॥ ४॥ ८॥

रामकली महला ५ ॥ कोई बोलै राम राम कोई खुदाइ ॥ कोई सेवै गुसईआ कोई अलाहि ॥ १ ॥ कारण करण करीम ॥ किरपा धारि रहीम ॥ १ ॥ रहाउ ॥ कोई नावै तीरथि कोई हज जाइ ॥ कोई करै पूजा कोई सिरु निवाइ ॥ २ ॥ कोई पड़ै बेद कोई कतेब ॥ कोई ओढै नील कोई सुपेद ॥ ३ ॥ कोई कहै तुरकु कोई कहै हिंदू ॥ कोई बाछै भिसतु कोई सुरगिंदू ॥ ४ ॥ कहु नानक जिनि हुकमु पछाता ॥ प्रभ साहिब का तिनि भेदु जाता ॥ ५ ॥ ६ ॥

ईश्वर तो एक ही है, पर कोई उसे राम-राम बोल रहा है और कोई खुदा कह रहा है। कोई गुसाँई की उपासना करता है और कोई अल्लाह की बंदगी कर रहा है॥ १॥ सबकी रचना करने वाला वह परमपिता बड़ा दयालु, कृपा का घर एवं रहमदिल है॥ १॥ रहाउ॥ कोई तीर्थों पर स्नान करता है तो कोई हज्ज करने के लिए मक्का जाता है। कोई पूजा-अर्चना करता है तो कोई सिर झुका कर सिजदा करता है॥ २॥ कोई वेद पढ़ता है तो कोई कुरान पढ़ता है। कोई नीले वस्त्र पहनता है, कोई सफेद वस्त्र धारण करता है॥ ३॥ कोई स्वयं को मुसलमान कहता है और कोई हिन्दू कहता है। कोई बिहिश्त की तमन्ना करता है, तो कोई स्वर्ग की कामना करता है॥ ४॥ हे नानक ! जिसने ईश्वर के हुक्म को पहचान लिया है, उसने मालिक-प्रभु का भेद जान लिया है॥ ५॥ ६॥

रामकली महला ५ ॥ पवनै महि पवनु समाइआ ॥ जोती महि जोति रलि जाइआ ॥ माटी माटी होई एक ॥ रोवनहारे की कवन टेक ॥ १ ॥ कउनु मूआ रे कउनु मूआ ॥ ब्रहम गिआनी मिलि करहु

बीचारा इहु तउ चलतु भइआ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ अगली किछु खबरि न पाई ॥ रोवनहारु भि ऊठि सिधाई ॥ भरम मोह के बांधे बंध ॥ सुपनु भइआ भखलाए अंध ॥ २ ॥ इहु तउ रचनु रचिआ करतारि ॥ आवत जावत हुकमि अपारि ॥ नह को मूआ न मरणै जोगु ॥ नह बिनसै अबिनासी होगु ॥ ३ ॥ जो इहु जाणहु सो इहु नाहि ॥ जानणहारे कउ बलि जाउ ॥ कहु नानक गुरि भरमु चुकाइआ ॥ ना कोई मरै न आवै जाइआ ॥ ४ ॥ १० ॥

मनुष्य की मृत्यु हो जाने पर उसकी प्राण रूपी वायु मूल वायु में ही विलीन हो गई है। आत्म ज्योति परमज्योति में ही मिल गई है। उसकी शरीर रूपी मिट्टी धरती की मिट्टी में मिल कर एक हो गई है। फिर रोने वाले संबंधियों का रोने-चिल्लाने का क्या आधार रह गया है॥ १॥ हे भाई! कौन मरा है? कौन मृत्यु को प्राप्त हुआ है। ब्रह्मज्ञानियों के साथ मिल कर विचार करो, यह तो ईश्वर की लीला है॥ १॥ रहाउ॥ जहाँ जीवन छोड़कर जाना है, आगे की तो किसी को कोई खबर नहीं होती। आखिरकार रोने वाला भी मृत्यु को प्राप्त हो जाता है। जीव तो भ्रम एवं मोह के बन्धनों में बँधे हुए हैं। मरने वाले का यह जीवन एक सपना होकर बीत गया है, लेकिन रोने वाले ज्ञानहीन व्यर्थ विलाप करते हैं॥ २॥ ईश्वर ने यह रचना तो अपनी एक लीला रची है। उसके अपार हुक्म से जीव का जन्म-मरण होता है। न कोई मरा है और न ही मरणशील है। आत्मा का कभी विनाश नहीं होता, अपितु यह तो अमर है॥ ३॥ जो इसे समझते हो, यह वैसा नहीं है। जो इस भेद को जानता है, मैं उस पर कुर्बान जाता हूँ। हे नानक! गुरु ने भ्रम दूर कर दिया है कि आत्मा न मरता है और न ही आता-जाता है॥ ४॥ १०॥

रामकली महला ५ ॥ जपि गोबिंदु गोपाल लालु ॥ राम नाम सिमरि तू जीवहि फिरि न खाई महा कालु ॥ १ ॥ रहाउ ॥ कोटि जनम भ्रमि भ्रमि भ्रमि आइओ ॥ बडै भागि साधसंगु पाइओ ॥ १ ॥ बिनु गुर पूरे नाही उधारु ॥ बाबा नानकु आखै एहु बीचारु ॥ २ ॥ ११ ॥

हे भाई! प्यारे गोविन्द गोपाल का जाप करो। राम नाम का भजन करने से तू जीवन पाता रहेगा और फिर महाकाल भी तुझे ग्रास नहीं बनाएगा॥ १॥ रहाउ॥ करोड़ों जन्म भटक-भटक तू मानव-योनि में आया है तथा अहोभाग्य से ही संतों की संगति प्राप्त हुई है॥ १॥ बाबा नानक तुझे यही विचार बताता है कि पूर्ण गुरु के बिना किसी का उद्धार नहीं होता॥ २॥ ११॥

रागु रामकली महला ५ घरु २ १ओं सतिगुर प्रसादि ॥

चारि पुकारहि ना तू मानहि ॥ खटु भी एका बात वखानहि ॥ दस असटी मिलि एको कहिआ ॥ ता भी जोगी भेदु न लहिआ ॥ १ ॥ किंकुरी अनूप वाजै ॥ जोगीआ मतवारो रे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ प्रथमे वसिआ सत का खेड़ा ॥ त्रितीए महि किछु भइआ दुतेड़ा ॥ दुतीआ अरधो अरधि समाइआ ॥ एकु रहिआ ता एकु दिखाइआ ॥ २ ॥ एकै सूति परोए मणीए ॥ गाठी भिनि भिनि भिनि भिनि तणीए ॥ फिरती माला बहु बिधि भाइ ॥ खिंचिआ सूतु त आई थाइ ॥ ३ ॥ चहु महि एकै मटु है कीआ ॥ तह बिखड़े थान अनिक खिड़कीआ ॥ खोजत खोजत दुआरे आइआ ॥ ता नानक जोगी महलु घरु पाइआ ॥ ४ ॥ इउ किंकुरी आनूप वाजै ॥ सुणि जोगी कै मनि मीठी लागै ॥ १ ॥ रहाउ दूजा ॥ १ ॥ १२ ॥

चार वेद भी कह रहे हैं किन्तु तू नहीं मानता। छः शास्त्र भी एक की बात का बखान कर रहे हैं। अठारह पुराणों ने भी मिलकर एक परमेश्वर की ही महिमा की है लेकिन फिर भी हे योगी!

तूने यह भेद नहीं समझा॥ १॥ हे मतवाले योगी! हर समय अनुपम वीणा बज रही है॥ १॥ रहाउ॥ सर्वप्रथम सतयुग रूपी सत्य का नगर बसा था। तदुपरांत त्रैता युग में धर्म में कुछ दरार आ गई थी। द्वापर युग में धर्म का आधा भाग ही रह गया था। कलियुग में धर्म का एक भाग ही रह गया है और सतगुरु ने जगत् को मुक्ति का एक नाम मार्ग दिखाया है॥ २॥ जैसे माला के सारे मनके एक ही धागे में पिरोए होते हैं और भिन्न-भिन्न गाँठों द्वारा उन्हें भिन्न रखा होता है। यह माला अनेक विधियों द्वारा प्रेम से फेरी हुई फिरती रहती है। जब माला का धागा खींच लिया जाता है तो सारी माला एक ही स्थान आ जाती है॥ ३॥ चारों युगों में रहने के लिए प्रभु ने यह जगत् रूपी एक मठ बनाया है। इस में विकारों से भरपूर कई दुखदायक स्थान हैं और इसमें से बाहर निकलने के लिए अनेक ही योनियां रूपी खिड़कियां हैं। हे नानक! जब योगी ढूँढता-ढूँढता सत्य के द्वार पर आ गया तो उसने आत्मस्वरूप पा लिया॥ ४॥ इस तरह अब बहुत ही सुन्दर वीणा उसके आत्मस्वरूप में बज रही है, जिसे सुनने से यह योगी के मन में मीठी लगती है॥ १॥ रहाउ दूसरा॥ १॥ १२॥

रामकली महला ५ ॥ तागा करि कै लाई थिगली ॥ लउ नाड़ी सूआ है असती ॥ अंभै का करि डंडा धरिआ ॥ किआ तू जोगी गरबहि परिआ ॥ १ ॥ जपि नाथु दिनु रैनाई ॥ तेरी खिंथा दो दिहाई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ गहरी बिभूत लाइ बैठा ताड़ी ॥ मेरी तेरी मुंद्रा धारी ॥ मागहि टूका त्रिपति न पावै ॥ नाथु छोडि जाचहि लाज न आवै ॥ २ ॥ चल चित जोगी आसणु तेरा ॥ सिंङी वाजै नित उदासेरा ॥ गुर गोरख की तै बूझ न पाई ॥ फिरि फिरि जोगी आवै जाई ॥ ३ ॥ जिस नो होआ नाथु क्रिपाला ॥ रहरासि हमारी गुर गोपाला ॥ नामै खिंथा नामै बसतरु ॥ जन नानक जोगी होआ असथिरु ॥ ४ ॥ इउ जपिआ नाथु दिनु रैनाई ॥ हुणि पाइआ गुरु गोसाई ॥ १ ॥ रहाउ दूजा ॥ २ ॥ १३ ॥

परमात्मा ने पवन रूपी प्राणों को धागा बनाकर शरीर रूपी कफनी को अंग रूपी सिलाई किया है और हड्डियों रूपी सुई से नाड़ियों को जोड़ा हुआ है। वीर्य रूपी रक्त-बिन्दु बनाकर इस कफनी रूपी शरीर का निर्माण किया है। हे योगी! तू किस बात का घमण्ड करता है?॥ १॥ दिन-रात भगवान् का जाप कर, चूंकि तेरी यह शरीर रूपी कफनी तो दो दिन ही चलेगी॥ १॥ रहाउ॥ तू शरीर पर विभूति मलकर समाधि लगाकर बैठा है। तूने अहंत्व की मुद्राएं धारण की हुई हैं। तू घर-घर से भोजन मांगता रहता है किन्तु तृप्ति नहीं होती। ईश्वर को छोड़कर दूसरों से मांगते हुए तुझे शर्म नहीं आती॥ २॥ हे योगी! तेरा आसन लगा हुआ है, लेकिन तेरा मन चंचल बना हुआ है। बेशक सिंगी बजती रहती है, फिर भी तेरा मन नित्य ही उदास रहता है। जगद्गुरु परमेश्वर की तुझे अभी तक सूझ नहीं हुई। हे योगी! इसी कारण तू बार-बार जन्मता-मरता रहता है॥ ३॥ जिस पर मालिक कृपालु हो गया है, उस गुरु परमेश्वर के समक्ष हमारी प्रार्थना है। हे नानक! वही योगी स्थिर हुआ है, नाम ही जिसकी कफनी एवं वस्त्र है॥ ४॥ जिसने इस प्रकार दिन-रात ईश्वर का जाप किया है, उसने अब मानव-जन्म में गुरु-परमेश्वर को पा लिया है॥ १॥ रहाउ दूसरा॥ २॥ १३॥

रामकली महला ५ ॥ करन करावन सोई ॥ आन न दीसै कोई ॥ ठाकुरु मेरा सुघड़ु सुजाना ॥ गुरमुखि मिलिआ रंगु माना ॥ १ ॥ ऐसो रे हरि रसु मीठा ॥ गुरमुखि किनै विरलै डीठा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ निरमल जोति अंम्रितु हरि नाम ॥ पीवत अमर भए निहकाम ॥ तनु मनु सीतलु अगनि निवारी ॥ अनद रूप प्रगटे संसारी ॥ २ ॥ किआ देवउ जा सभु किछु तेरा ॥ सद बलिहारि जाउ लख बेरा ॥ तनु मनु जीउ पिंडु दे साजिआ ॥ गुर किरपा ते नीचु निवाजिआ ॥ ३ ॥ खोलि किवारा महलि बुलाइआ

॥ जैसा सा तैसा दिखलाइआ ॥ कहु नानक सभु पड़दा तूटा ॥ हउ तेरा तू मै मनि वूठा ॥ ४ ॥ ३ ॥ १४ ॥

परमेश्वर ही करने-कराने वाला है, उसके अतिरिक्त अन्य कोई दृष्टिगत नहीं होता। मेरा ठाकुर बड़ा चतुर एवं सर्वज्ञाता है। गुरु के माध्यम से जब वह मिला तो ही आनंद प्राप्त हुआ है॥ १॥ हरि-रस इतना मीठा है कि किसी विरले ने गुरुमुख बनकर ही इसे चखा है॥ १॥ रहाउ॥ उसकी ज्योति निर्मल है, हरि का नाम अमृत है, जिसे पान करने से जीव अमर एवं निष्काम हो जाता है। इससे मन-तन शीतल हो जाता है और तृष्णाग्नि बुझ जाती है। वह आनंद स्वरूप में सारे संसार में लोकप्रिय हो जाता है॥ २॥ हे परमेश्वर ! जब सबकुछ तेरा ही मुझे दिया हुआ है तो मैं तुझे क्या भेंट करूँ ? मैं तुझ पर लाखों बार सदा ही बलिहारी जाता हूँ। यह तन-मन, प्राण सब देकर तूने ही बनाया है। गुरु की कृपा से मुझ नीच को आदर प्रदान किया है॥ ३॥ तूने कपाट खोलकर मुझे अपने चरणों में बुला लिया है। तू जैसा है, वैसा अपना रूप दिखा दिया है। हे नानक ! मेरा भ्रम का सारा पर्दा टूट गया है, तू मेरे मन में बस गया है और मैं तेरा हो गया हूँ॥ ४॥ ३॥ १४॥

रामकली महला ५ ॥ सेवकु लाइओ अपुनी सेव ॥ अंम्रितु नामु दीओ मुखि देव ॥ सगली चिंता आपि निवारी ॥ तिसु गुर कउ हउ सद बलिहारी ॥ १ ॥ काज हमारे पूरे सतगुर ॥ बाजे अनहद तूरे सतगुर ॥ १ ॥ रहाउ ॥ महिमा जा की गहिर गंभीर ॥ होइ निहालु देइ जिसु धीर ॥ जा के बंधन काटे राइ ॥ सो नरु बहुरि न जोनी पाइ ॥ २ ॥ जा कै अंतरि प्रगटिओ आप ॥ ता कउ नाही दूख संताप ॥ लालु रतनु तिसु पालै परिआ ॥ सगल कुटंब ओहु जनु लै तरिआ ॥ ३ ॥ ना किछु भरमु न दुबिधा दूजा ॥ एको एकु निरंजन पूजा ॥ जत कत देखउ आपि दइआल ॥ कहु नानक प्रभ मिले रसाल ॥ ४ ॥ ४ ॥ १५ ॥

सेवक को अपनी सेवा में लगा कर गुरु ने नामामृत मुँह में डाल दिया है। उसने सारी चिंता दूर कर दी है, इसलिए उस गुरु पर सदैव बलिहारी जाता हूँ॥ १॥ सतगुरु ने मेरे सभी कार्य पूरे कर दिए हैं और उसी के फलस्वरूप अनहद ध्वनि के बाजे बज रहे हैं॥ १॥ रहाउ॥ जिस परमात्मा की महिमा गहनगंभीर है, जिसे वह धीरज देता है, वह आनंदित हो जाता है। वह जिसके बंधन काट देता है, वह नर दोबारा योनियों के चक्र में नहीं पड़ता॥ २॥ जिसके अन्तर्मन में प्रभु स्वयं प्रगट हो गया है, उसे कोई दुख-संताप नहीं लगता। जिसके आँचल में लाल-रत्न जैसा नाम पड़ा है, वह अपने समूचे परिवार सहित भवसागर से पार हो गया है॥ ३॥ जिसने केवल परमात्मा की पूजा की है, उसका भ्रम, दुविधा एवं द्वैतभाव मिट गया है। जिधर भी देखता हूँ, दयालु प्रभु स्वयं ही मौजूद है। हे नानक ! रसों का भण्डार प्रभु मुझे मिल गया है॥ ४॥ ४॥ १५॥

रामकली महला ५ ॥ तन ते छुटकी अपनी धारी ॥ प्रभ की आगिआ लगी पिआरी ॥ जो किछु करै सु मनि मेरै मीठा ॥ ता इहु अचरजु नैनहु डीठा ॥ १ ॥ अब मोहि जानी रे मेरी गई बलाइ ॥ बुझि गई त्रिसन निवारी ममता गुरि पूरै लीओ समझाइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ करि किरपा राखिओ गुरि सरना ॥ गुरि पकराए हरि के चरना ॥ बीस बिसुए जा मन ठहराने ॥ गुर पारब्रहम एकै ही जाने ॥ २ ॥ जो जो कीनो हम तिस के दास ॥ प्रभ मेरे को सगल निवास ॥ ना को दूतु नही बैराई ॥ गलि मिलि चाले एकै भाई ॥ ३ ॥ जा कउ गुरि हरि दीए सूखा ॥ ता कउ बहुरि न लागहि दूखा ॥ आपे आपि सरब प्रतिपाल ॥ नानक रातउ रंगि गोपाल ॥ ४ ॥ ५ ॥ १६ ॥

प्रभु की आज्ञा इतनी प्यारी लगी है कि तन से अपनी ही धारण की हुई अहम्-भावना छूट गई है। वह जो कुछ करता है, वही मेरे मन को मीठा लगता है। यह विचित्र खेल मैंने अपनी आँखों से देख लिया है॥ १॥ अब मैंने जान लिया है कि मेरी सब बलाएँ दूर हो गई हैं, मेरी तृष्णा बुझ गई है, मन में से ममता भी दूर हो गई है, क्योंकि पूर्ण गुरु ने मुझे समझा दिया है॥ १॥ रहाउ॥ गुरु ने कृपा करके मुझे अपनी शरण में रखा हुआ है और उसने मुझे हरि के चरण पकड़ा दिए हैं। जब मन शत-प्रतिशत स्थिर हो गया तो जान लिया कि गुरु-परब्रह्म एक ही हैं॥ २॥ जो भी जीव प्रभु ने पैदा किया है, मैं उसका दास हूँ क्योंकि सब जीवों में मेरे प्रभु का ही निवास है, इसलिए न कोई मेरा दुश्मन है और न ही मेरा कोई वैरी है। अब मैं सब के गले मिलकर ऐसे चलता हूँ, जैसे एक पिता के पुत्र होते हैं॥ ३॥ जिसे हरि गुरु ने सुख दिया है, उसे दोबारा कोई दुख नहीं लगता। हे नानक! वह परमेश्वर स्वयं ही सबका प्रतिपालक है और मैं उसके रंग में ही मग्न रहता हूँ॥ ४॥ ५॥ १६॥

रामकली महला ५ ॥ मुख ते पड़ता टीका सहित ॥ हिरदै रामु नही पूरन रहत ॥ उपदेसु करे करि लोक द्रिड़ावै ॥ अपना कहिआ आपि न कमावै ॥ १ ॥ पंडित बेदु बीचारि पंडित ॥ मन का क्रोधु निवारि पंडित ॥ १ ॥ रहाउ ॥ आगै राखिओ साल गिरामु ॥ मनु कीनो दह दिस बिस्रामु ॥ तिलकु चरावै पाई पाइ ॥ लोक पचारा अंधु कमाइ ॥ २ ॥ खटु करमा अरु आसणु धोती ॥ भागठि ग्रिहि पड़ै नित पोथी ॥ माला फेरै मंगै बिभूत ॥ इह बिधि कोइ न तरिओ मीत ॥ ३ ॥ सो पंडितु गुर सबदु कमाइ ॥ त्रै गुण की ओसु उतरी माइ ॥ चतुर बेद पूरन हरि नाइ ॥ नानक तिस की सरणी पाइ ॥ ४ ॥ ६ ॥ १७ ॥

हे पण्डित! तू अपने मुँह से अर्थों सहित ग्रंथों का अध्ययन करता रहता है, लेकिन फिर भी तेरे हृदय में राम नहीं बसता। तू उपदेश कर करके लोगों को दृढ़ करवाता रहता है लेकिन स्वयं उस पर अमल नहीं करता॥ १॥ हे पण्डित! वेदों का चिंतन कर और अपने मन का क्रोध दूर कर दे॥ १॥ रहाउ॥ तूने शालिग्राम अपने सामने रखा हुआ है, किन्तु तेरा मन दसों दिशाओं में भटकता रहता है। तू शालिग्राम को तिलक लगाता है और उसके चरण छूता है। यह तू लोगों को प्रसन्न करने का अन्धा कार्य करता है॥ २॥ तू षट्-कर्म भी करता रहता है, आसन लगाता है और निउली-धोती क्रिया भी करता है। तू धनवानों के घरों में जाकर नित्य पोथी पढ़ता रहता है, माला फेरता है और उनसे धन मांगता है। हे मित्र! इस विधि द्वारा कोई भी संसार-सागर में से पार नहीं हुआ॥ ३॥ पण्डित वही है, जो गुरु-शब्द की कमाई करता है, त्रिगुणात्मक माया उसके मन से दूर हो गई है। हे नानक! हरि नाम का जाप करने से ही चारों वेदों के पाठ का फल मिल जाता है और हम तो नाम की शरण में ही पड़े हैं॥ ४॥ ६॥ १७॥

रामकली महला ५ ॥ कोटि बिघन नही आवहि नेरि ॥ अनिक माइआ है ता की चेरि ॥ अनिक पाप ता के पानीहार ॥ जा कउ मइआ भई करतार ॥ १ ॥ जिसहि सहाई होइ भगवान ॥ अनिक जतन उआ कै सरंजाम ॥ १ ॥ रहाउ ॥ करता राखै कीता कउनु ॥ कीरी जीतो सगला भवनु ॥ बेअंत महिमा ता की केतक बरन ॥ बलि बलि जाईऐ ता के चरन ॥ २ ॥ तिन ही कीआ जपु तपु धिआनु ॥ अनिक प्रकार कीआ तिनि दानु ॥ भगतु सोई कलि महि परवानु ॥ जा कउ ठाकुरि दीआ मानु ॥ ३ ॥ साधसंगि मिलि भए प्रगास ॥ सहज सूख आस निवास ॥ पूरै सतिगुरि दीआ बिसास ॥ नानक होए दासनि दास ॥ ४ ॥ ७ ॥ १८ ॥

जिस पर ईश्वर की कृपा हो गई है, करोड़ों विघ्न भी उसके निकट नहीं आते, अनेक प्रकार की माया उसकी दासी बन जाती है तथा अनेक पाप भी उसके पानी भरने वाले बन जाते हैं॥ १॥ भगवान जिसका सहायक बन जाता है, उसके अनेक यत्न कामयाब हो जाते हैं॥ १॥ रहाउ॥ जिसकी रक्षा परमेश्वर करता है तो कोई अन्य जीव उसका क्या बिगाड़ सकता है? उसकी कृपा से तो चींटी ने भी समूचा जगत् जीत लिया है। उसकी महिमा बेअंत है, उसे कितना बयान किया जाए? मैं तो उसके सुन्दर चरणों पर बलिहारी जाता हूँ॥ २॥ जिसे ठाकुर जी ने सम्मान दिया है, उसने ही जप, तप एवं ध्यान किया है, उसने ही अनेक प्रकार का दान किया है, वही भक्त कलियुग में स्वीकार हुआ है॥ ३॥ संतों की संगति में मिलकर मन में ज्ञान का प्रकाश हो गया है, सहज सुख प्राप्त हो गया है, सब कामनाएँ पूरी हो गई हैं। हे नानक! जिसे पूर्ण सतगुरु ने विश्वास दिलवाया है, वह दासों का दास बन गया है॥ ४॥ ७॥ १८॥

रामकली महला ५ ॥ दोसु न दीजै काहू लोग ॥ जो कमावनु सोई भोग ॥ आपन करम आपे ही बंध ॥ आवनु जावनु माइआ धंध ॥ १ ॥ ऐसी जानी संत जनी ॥ परगासु भइआ पूरे गुर बचनी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ तनु धनु कलतु मिथिआ बिसथार ॥ हैवर गैवर चालनहार ॥ राज रंग रूप सभि कूर ॥ नाम बिना होइ जासी धूर ॥ २ ॥ भरमि भूले बादि अहंकारी ॥ संगि नाही रे सगल पसारी ॥ सोग हरख महि देह बिरधानी ॥ साकत इव ही करत बिहानी ॥ ३ ॥ हरि का नामु अंम्रितु कलि माहि ॥ एहु निधाना साधू पाहि ॥ नानक गुरु गोविदु जिसु तूठा ॥ घटि घटि रमईआ तिन ही डीठा ॥ ४ ॥ ८ ॥ १९ ॥

हे जीव! किसी को दोष नहीं देना चाहिए, वास्तव में जो शुभाशुभ कमाना है, वही तुमने भोगना है। अपने कर्म स्वयं ही तुम्हारे बंधन हैं और जन्म-मरण केवल माया का ही खेल है॥ १॥ संतजनों से यह सत्य जान लिया है, पूर्ण गुरु के वचन से मन में ज्ञान का प्रकाश हो गया है॥ १॥ रहाउ॥ तन, धन एवं नारी यह सभी मिथ्या प्रसार हैं। कुशल घोड़े एवं हाथी नाशवान् हैं। राज, रंग-तमाशे एवं सौन्दर्य सब झूठे हैं। नाम के बिना ये सभी मिट्टी हो जाएँगे॥ २॥ अहंकारी इन्सान व्यर्थ ही भ्रम में भूला हुआ है। ये सभी प्रसार किसी के साथ नहीं जाते। गम एवं खुशी में मानव शरीर बूढ़ा हो जाता है। ऐसा करते ही शाक्त ने अपनी आयु व्यतीत कर ली है॥ ३॥ कलियुग में हरि का नाम ही अमृत है और यह सुख का कोष साधु-महात्मा के ही पास है। हे नानक! गोविन्द गुरु जिस पर प्रसन्न हुआ है, उसने ही घट-घट में परमात्मा को देखा है॥ ४॥ ८॥ १९॥

रामकली महला ५ ॥ पंच सबद तह पूरन नाद ॥ अनहद बाजे अचरज बिसमाद ॥ केल करहि संत हरि लोग ॥ पारब्रहम पूरन निरजोग ॥ १ ॥ सूख सहज आनंद भवन ॥ साधसंगि बैसि गुण गावहि तह रोग सोग नही जनम मरन ॥ १ ॥ रहाउ ॥ ऊहा सिमरहि केवल नामु ॥ बिरले पावहि ओहु बिस्रामु ॥ भोजनु भाउ कीरतन आधारु ॥ निहचल आसनु बेसुमारु ॥ २ ॥ डिगि न डोलै कतहू न धावै ॥ गुर प्रसादि को इहु महलु पावै ॥ भ्रम भै मोह न माइआ जाल ॥ सुंन समाधि प्रभू किरपाल ॥ ३ ॥ ता का अंतु न पारावारु ॥ आपे गुपतु आपे पासारु ॥ जा कै अंतरि हरि हरि सुआदु ॥ कहनु न जाई नानक बिसमादु ॥ ४ ॥ ९ ॥ २० ॥

सत्संग में पंच प्रकार का शब्द गूँजता रहता है, वहाँ बड़ी ही विचित्र एवं अद्भुत अनहद ध्वनि वाला वाद्य बजता रहता है। हरि के संतजन क्रीड़ा करते हैं, वहाँ पर पूर्ण निर्लिप्त परब्रह्म का निवास होता है॥ १॥ सत्संग सहज सुख एवं आनंद का घर है। वहाँ पर साधु-संत बैठकर भगवान

का गुणगान करते हैं और वहाँ पर कोई रोग, शोक नहीं होता एवं जन्म-मरण से छुटकारा हो जाता है॥ १॥ रहाउ॥ वहाँ केवल नाम-स्मरण ही होता है और कोई विरला ही यह सुख-शान्ति का स्थान प्राप्त करता है। वहाँ भक्तजनों का भक्तिभाव ही भोजन होता है और हरि-कीर्तन ही उनका आधार होता है। उस अटल स्थान की कीर्ति बेअंत है॥ २॥ वह स्थान कभी गिरता एवं डोलता नहीं और गुरु की कृपा से ही कोई इस स्थान को प्राप्त करता है। वहाँ भक्तजनों को भ्रम, भय एवं मोह-माया का जाल प्रभावित नहीं करता। शून्य समाधि में रहने वाले पर प्रभु कृपालु हो जाता है॥ ३॥ उसका कोई अन्त एवं आर-पार नहीं। वह स्वयं ही गुप्त है एवं स्वयं ही जगत्-प्रसार में प्रगट हो रहा है। हे नानक! जिसके अन्तर में हरि-नाम का स्वाद पैदा हो जाता है, ऐसा अद्भुत स्वाद बयान नहीं किया जा सकता॥ ४॥ ६॥ २०॥

रामकली महला ५ ॥ भेटत संगि पारब्रहमु चिति आइआ ॥ संगति करत संतोखु मनि पाइआ ॥ संतह चरन माथा मेरो पउत ॥ अनिक बार संतह डंडउत ॥ १ ॥ इहु मनु संतन कै बलिहारी ॥ जा की ओट गही सुखु पाइआ राखे किरपा धारी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ संतह चरण धोइ धोइ पीवा ॥ संतह दरसु पेखि पेखि जीवा ॥ संतह की मेरै मनि आस ॥ संत हमारी निरमल रासि ॥ २ ॥ संत हमारा राखिआ पड़दा ॥ संत प्रसादि मोहि कबहू न कड़दा ॥ संतह संगु दीआ किरपाल ॥ संत सहाई भए दइआल ॥ ३ ॥ सुरति मति बुधि परगासु ॥ गहिर गंभीर अपार गुणतासु ॥ जीअ जंत सगले प्रतिपाल ॥ नानक संतह देखि निहाल ॥ ४ ॥ १० ॥ २१ ॥

संतों से भेंट करने पर परब्रह्म स्मरण आया है, उनकी संगति करने से मन में संतोष प्राप्त हो गया है। मेरा माथा संतों के चरणों में ही झुकता है और अनेक बार उन्हें दण्डवत प्रणाम करता हूँ॥ १॥ यह मन संतजनों पर बलिहारी जाता है, जिनकी ओट लेकर सच्चा सुख प्राप्त हुआ है और कृपा करके उन्होंने ही मेरी रक्षा की है॥ १॥ मैं तो संतों के चरण धो धोकर पीता रहता हूँ और उनके दर्शन देख-देखकर ही जीवन पा रहा हूँ। मेरे मन में संतों की ही आशा बनी हुई है और उनकी सेवा ही हमारी निर्मल राशि है॥ २॥ संतों ने हमारा पर्दा रख लिया है अर्थात् पापों को ढंक लिया है। उनकी कृपा से मैं कभी दुखी नहीं होता। कृपालु प्रभु ने ही संतों का साथ दिया है और दयालु संत मेरे सहायक बन गए हैं॥ ३॥ अब अन्तर्मन में मति एवं बुद्धि का आलोक हो गया है। संत गहन गंभीर एवं गुणों के भण्डार हैं और वही सब जीवों के प्रतिपालक हैं। नानक तो संतों को देखकर निहाल हो गया है॥ ४॥ १०॥ २१॥

रामकली महला ५ ॥ तेरै काजि न ग्रिहु राजु मालु ॥ तेरै काजि न बिखै जंजालु ॥ इसट मीत जाणु सभ छलै ॥ हरि हरि नामु संगि तेरै चलै ॥ १ ॥ राम नाम गुण गाइ ले मीता हरि सिमरत तेरी लाज रहै ॥ हरि सिमरत जमु कछु न कहै ॥ १ ॥ रहाउ ॥ बिनु हरि सगल निरारथ काम ॥ सुइना रुपा माटी दाम ॥ गुर का सबदु जापि मन सुखा ॥ ईहा ऊहा तेरो ऊजल मुखा ॥ २ ॥ करि करि थाके वडे वडेरे ॥ किन ही न कीए काज माइआ पूरे ॥ हरि हरि नामु जपै जनु कोइ ॥ ता की आसा पूरन होइ ॥ ३ ॥ हरि भगतन को नामु अधारु ॥ संती जीता जनमु अपारु ॥ हरि संतु करे सोई परवाणु ॥ नानक दासु ता कै कुरबाणु ॥ ४ ॥ ११ ॥ २२ ॥

हे प्राणी! घर, राज्य एवं धन संपदा तेरे किसी काम नहीं आने। माया रूपी विष के ये जंजाल भी तेरे काम नहीं आने। यह भी समझ लो कि घनिष्ठ मित्र भी छल ही हैं। केवल हरि-नाम ही तेरे साथ जाएगा॥ १॥ हे प्यारे, राम नाम का गुणगान कर ले, हरि-स्मरण से ही तेरी लाज रहेगी।

हरि का सिमरन करने से यम तुझे तंग नहीं करेगा॥ १॥ रहाउ॥ परमात्मा की स्मृति के बिना सब कार्य व्यर्थ हैं। सोना, चांदी एवं रुपए-पैसे मिट्टी के समान हैं। गुरु का शब्द जपने से ही मन को सुख हासिल होगा और लोक-परलोक में तेरा मुख उज्ज्वल होगा॥ २॥ तेरे पूर्वज भी संसार के धंधे कर करके थक चुके हैं, किन्तु माया ने किसी का कार्य पूरा नहीं किया। जो भी व्यक्ति हरि-नाम का जाप करता है, उसकी सब आशाएँ पूरी हो जाती हैं॥ ३॥ भगवान के भक्तों को उसके नाम का ही आसरा है और अमूल्य मानव-जन्म को संतों ने ही जीता है। हरि का संत जो भी करता है, वह मंजूर हो जाता है। दास नानक उन संतों पर ही कुर्बान जाता है॥ ४॥ ११॥ २२॥

रामकली महला ५ ॥ सिंचहि दरबु देहि दुखु लोग ॥ तेरै काजि न अवरा जोग ॥ करि अहंकारु होइ वरतहि अंध ॥ जम की जेवड़ी तू आगै बंध ॥ १ ॥ छाडि विडाणी ताति मूड़े ॥ ईहा बसना राति मूड़े ॥ माइआ के माते तै उठि चलना ॥ राचि रहिओ तू संगि सुपना ॥ १ ॥ रहाउ ॥ बाल बिवसथा बारिकु अंध ॥ भरि जोबनि लागा दुरगंध ॥ त्रितीअ बिवसथा सिंचे माइ ॥ बिरधि भइआ छोडि चलिओ पछुताइ ॥ २ ॥ चिरंकाल पाई द्रुलभ देह ॥ नाम बिहूणी होई खेह ॥ पसू परेत मुगध ते बुरी ॥ तिसहि न बूझै जिनि एह सिरी ॥ ३ ॥ सुणि करतार गोविंद गोपाल ॥ दीन दइआल सदा किरपाल ॥ तुमहि छडावहु छुटकहि बंध ॥ बखसि मिलावहु नानक जग अंध ॥ ४ ॥ १२ ॥ २३ ॥

हे जीव! लोगों को दुख देकर तू बड़ा धन इकट्ठा करता है, लेकिन यह तेरे किसी काम नहीं आना, अपितु दूसरों के उपयोग के लिए यहाँ ही रह जाएगा। तू धन में अंधा होकर बड़ा अहंकार करता है, लेकिन यम की फाँसी में बांधकर तुझे परलोक में ले जाया जाएगा॥ १॥ अरे मूर्ख! दूसरों से ईर्ष्या करना छोड़ दे, तूने इस दुनिया में केवल एक रात ही रहना है। हे माया के मतवाले! तूने एक दिन यहाँ से चले जाना है, तू सपने में लीन हो रहा है॥ १॥ रहाउ॥ बाल्यावस्था में बालक ज्ञानहीन होता है और यौवनावस्था में विकारों में लग जाता है। अपनी उम्र की तीसरी अवस्था में वह धन-दौलत संचित करता रहता है और जब वह बूढ़ा हो जाता है तो धन इत्यादि सबकुछ छोड़कर पछताता हुआ यहाँ से चला जाता है॥ २॥ चिरकाल से ही जीव ने दुर्लभ मानव-देह प्राप्त की है, लेकिन नामविहीन देह मिट्टी हो जाती है। जिसने रचना की है, अगर उसे ही नहीं बूझती तो यह मूर्ख पशुओं एवं प्रेत से भी बुरी है॥ ३॥ हे स्रष्टा, हे गोविंद गोपाल! हमारी विनती सुनो, तू दीनदयाल एवं सदा कृपा का घर है। जब तू छुड़ाता है तो ही हमारे बंधन छूटते हैं। नानक कहते हैं कि हे परमेश्वर! यह जगत् अन्धा है, क्षमा करके अपने साथ मिला लो॥ ४॥ १२॥ २३॥

रामकली महला ५ ॥ करि संजोगु बनाई काछि ॥ तिसु संगि रहिओ इआना राचि ॥ प्रतिपारै नित सारि समारै ॥ अंत की बार ऊठि सिधारै ॥ १ ॥ नाम बिना सभु झूठु परानी ॥ गोविद भजन बिनु अवर संगि राते ते सभि माइआ मूठु परानी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ तीरथ नाइ न उतरसि मैलु ॥ करम धरम सभि हउमै फैलु ॥ लोक पचारै गति नही होइ ॥ नाम बिहूणे चलसहि रोइ ॥ २ ॥ बिनु हरि नाम न टूटसि पटल ॥ सोधे सासत्र सिम्रिति सगल ॥ सो नामु जपै जिसु आपि जपाए ॥ सगल फला से सूखि समाए ॥ ३ ॥ राखनहारे राखहु आपि ॥ सगल सुखा प्रभ तुमरै हाथि ॥ जितु लावहि तितु लागह सुआमी ॥ नानक साहिबु अंतरजामी ॥ ४ ॥ १३ ॥ २४ ॥

ईश्वर ने पंच तत्वों के संयोग से यह शरीर बनाया है, लेकिन नादान जीव इसके साथ ही लीन रहता है। वह नित्य इसका पोषण एवं देखभाल करता है, लेकिन अन्तिम समय यह शरीर

छोड़कर चला जाता है॥ १॥ हे प्राणी, नाम के बिना सब झूठ ही है। गोविन्द के भजन के बिना जो प्राणी सांसारिक पदार्थों में ही लीन हैं, उन सब को माया ने ठग लिया है॥ १॥ रहाउ॥ तीर्थों पर स्नान करने से भी मन की मैल नहीं उतरती और सभी धर्म-कर्म अहंत्व का प्रसार है। लोक-दिखावा करने से गति नहीं होती और नामविहीन जीव रोता हुआ यहाँ से चल देता है॥ २॥ सभी शास्त्रों एवं स्मृतियों का भलीभांति विश्लेषण करके देख लिया है कि हरि-नाम के बिना भ्रम के कपाट नहीं टूटते। वही मनुष्य नाम जपता है, जिससे ईश्वर स्वयं जाप करवाता है। इस प्रकार जीव सभी फल पाकर सुखी रहता है॥ ३॥ हे दुनिया के रखवाले, हमारी रक्षा करो; हे प्रभु! जीवन के तमाम सुख तेरे ही हाथ में हैं। हे स्वामी! तू जिधर लगाता है, हम उधर ही लग जाते हैं। हे नानक! मेरा मालिक अन्तर्यामी है॥ ४॥ १३॥ २४॥

रामकली महला ५ ॥ जो किछु करै सोई सुखु जाना ॥ मनु असमझु साधसंगि पतीआना ॥ डोलन ते चूका ठहराइआ ॥ सति माहि ले सति समाइआ ॥ १ ॥ दूखु गइआ सभु रोगु गइआ ॥ प्रभ की आगिआ मन महि मानी महा पुरख का संगु भइआ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सगल पवित्र सरब निरमला ॥ जो वरताए सोई भला ॥ जह राखै सोई मुकति थानु ॥ जो जपाए सोई नामु ॥ २ ॥ अठसठि तीरथ जह साध पग धरहि ॥ तह बैकुंठु जह नामु उचरहि ॥ सरब अनंद जब दरसनु पाईऐ ॥ राम गुणा नित नित हरि गाईऐ ॥ ३ ॥ आपे घटि घटि रहिआ बिआपि ॥ दइआल पुरख परगट परताप ॥ कपट खुलाने भ्रम नाठे दूरे ॥ नानक कउ गुर भेटे पूरे ॥ ४ ॥ १४ ॥ २५ ॥

परमेश्वर जो कुछ भी करता है, उसे ही सुख मान लिया है। नासमझ मन सत्संगति में प्रसन्न हो गया है। अब यह डोलता नहीं, अपितु स्थिर हो गया है। यह मन सत्य का चिंतन करके सत्य में ही विलीन हो गया है॥ १॥ मेरा दुख एवं सारा रोग दूर हो गया है, जब से प्रभु की आज्ञा मन में मानी है, महापुरुषों का साथ भी मिल गया है॥ १॥ रहाउ॥ सब कार्य पवित्र हो गए हैं और सबकुछ निर्मल हो गया है। जो कुछ प्रभु करता है, वही मेरे लिए भला है। वह जहाँ भी मुझे रखता है, वही मुक्ति का स्थान है। जो वह जपाता है, वही उसका नाम है॥ २॥ जिस स्थान पर साधु अपने चरण रखते हैं, वह अड़सठ तीर्थ बन जाता है। जहाँ भी वे प्रभु-नाम का उच्चारण करते हैं, वही बैकुण्ठ बन जाता है। जब उनके दर्शन प्राप्त होते हैं तो बड़ा आनंद मिलता है। वे तो नित्य ही प्रभु का गुणगान करते रहते हैं॥ ३॥ परमात्मा सर्वव्यापक है और उस दयालु सत्यपुरुष का प्रताप सारे विश्व में फैला हुआ है। हे नानक! पूर्ण गुरु से भेंट करने पर मन के सारे कपाट खुल गए और सारे भ्रम दूर हो गए हैं॥ ४॥ १४॥ २५॥

रामकली महला ५ ॥ कोटि जाप ताप बिस्राम ॥ रिधि बुधि सिधि सुर गिआन ॥ अनिक रूप रंग भोग रसै ॥ गुरमुखि नामु निमख रिदै वसै ॥ १ ॥ हरि के नाम की वडिआई ॥ कीमति कहणु न जाई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सूरबीर धीरज मति पूरा ॥ सहज समाधि धुनि गहिर गंभीरा ॥ सदा मुकतु ता के पूरे काम ॥ जा कै रिदै वसै हरि नाम ॥ २ ॥ सगल सूख आनंद अरोग ॥ समदरसी पूरन निरजोग ॥ आइ न जाइ डोलै कत नाही ॥ जा कै नामु बसै मन माही ॥ ३ ॥ दीन दइआल गोपाल गोविंद ॥ गुरमुखि जपीऐ उतरै चिंद ॥ नानक कउ गुरि दीआ नामु ॥ संतन की टहल संत का कामु ॥ ४ ॥ १५ ॥ २६ ॥

जिस गुरुमुख के हृदय में पल भर के लिए नाम स्थित हो जाता है, उसे करोड़ों ही जप-तप का फल मिल जाता है, ऋद्धियाँ-सिद्धियाँ, बुद्धि एवं दैवीय ज्ञान की उसे प्राप्ति हो जाती है और

वह अनेक प्रकार के रूप-रंग एवं रसों को भोगता रहता है॥ १॥ हरि के नाम की ऐसी कीर्ति है, जिसकी कीमत को आंका नहीं जा सकता॥ १॥ रहाउ॥ जिसके हृदय में हरि नाम बस जाता है, वही व्यक्ति शूरवीर, धैर्यवान एवं बुद्धिमान है, वह सहज समाधि में अनहद ध्वनि को सुनता है और गहनगंभीर होता है। वह सदा बंधनों से मुक्त रहता है और उसके सभी कार्य पूर्ण हो जाते हैं॥ २॥ जिसके मन में नाम स्थित हो जाता है, वह सर्व सुख-आनंद प्राप्त करता और आरोग्य रहता है। वह निर्लिप्त एवं समदर्शी होता है। उसका जन्म-मरण समाप्त हो जाता है और कभी पथभ्रष्ट नहीं होता॥ ३॥ गुरुमुख बनकर दीनदयाल गोविन्द गोपाल का जाप करने से सब चिन्ताएँ समाप्त हो जाती हैं। नानक को गुरु ने हरि-नाम ही दिया है, अब वह संतों की सेवा एवं उनके कार्य में ही लगा रहता है॥ ४॥ १५॥ २६॥

रामकली महला ५ ॥ बीज मंत्रु हरि कीरतनु गाउ ॥ आगै मिली निथावे थाउ ॥ गुर पूरे की चरणी लागु ॥ जनम जनम का सोइआ जागु ॥ १ ॥ हरि हरि जापु जपला ॥ गुर किरपा ते हिरदै वासै भउजलु पारि परला ॥ १ ॥ रहाउ ॥ नामु निधानु धिआइ मन अटल ॥ ता छूटहि माइआ के पटल ॥ गुर का सबदु अंम्रित रसु पीउ ॥ ता तेरा होइ निरमल जीउ ॥ २ ॥ सोधत सोधत सोधि बीचारा ॥ बिनु हरि भगति नही छुटकारा ॥ सो हरि भजनु साध कै संगि ॥ मनु तनु रापै हरि कै रंगि ॥ ३ ॥ छोडि सिआणप बहु चतुराई ॥ मन बिनु हरि नावै जाइ न काई ॥ दइआ धारी गोविद गोसाई ॥ हरि हरि नानक टेक टिकाई ॥ ४ ॥ १६ ॥ २७ ॥

मूलमंत्र हरि का कीर्तन गान करो, इससे बेसहारा को भी परलोक में सहारा मिल जाता है। पूर्ण गुरु के चरणों में लगने से जन्म-जन्मांतर का सोया हुआ मन जाग जाता है॥ १॥ जिसने हरि-नाम का जाप किया है, गुरु कृपा से वह उसके हृदय में बस गया है और वह भवसागर से पार हो गया है॥ १॥ रहाउ॥ हे मन! नाम-भण्डार अटल है, उसका ध्यान करने से माया के बंधन छूट जाते हैं। गुरु का शब्द अमृतमय रस है, इसका पान करने से तेरा हृदय निर्मल हो जाएगा॥ २॥ खोज-खोजकर सोच-समझकर मैंने यही विचार किया है कि हरि की भक्ति के बिना किसी का छुटकारा नहीं होता। इसलिए साधुओं की संगति में हरि का भजन करना चाहिए, इस प्रकार मन-तन हरि के रंग में लीन हो जाता है॥ ३॥ अपनी अक्लमंदी एवं चतुराई को छोड़ दो। हे मन! हरि के नाम बिना पापों की मैल दूर नहीं होती। हे नानक! ईश्वर ने मुझ पर दया की है, इसलिए हरि-नाम का ही सहारा लिया है॥ ४॥ १६॥ २७॥

रामकली महला ५ ॥ संत कै संगि राम रंग केल ॥ आगै जम सिउ होइ न मेल ॥ अहंबुधि का भइआ बिनास ॥ दुरमति होई सगली नास ॥ १ ॥ राम नाम गुण गाइ पंडित ॥ करम कांड अहंकारु न काजै कुसल सेती घरि जाहि पंडित ॥ १ ॥ रहाउ ॥ हरि का जसु निधि लीआ लाभ ॥ पूरन भए मनोरथ साभ ॥ दुखु नाठा सुखु घर महि आइआ ॥ संत प्रसादि कमलु बिगसाइआ ॥ २ ॥ नाम रतनु जिनि पाइआ दानु ॥ तिसु जन होए सगल निधान ॥ संतोखु आइआ मनि पूरा पाइ ॥ फिरि फिरि मागन काहे जाइ ॥ ३ ॥ हरि की कथा सुनत पवित ॥ जिहवा बकत पाई गति मति ॥ सो परवाणु जिसु रिदै वसाई ॥ नानक ते जन ऊतम भाई ॥ ४ ॥ १७ ॥ २८ ॥

जो संतों के संग मिलकर राम-रंग की क्रीड़ा करता है, उसका आगे परलोक में यमों से मिलाप नहीं होता। उसकी अहम्-भावना मिट जाती है और सारी दुर्मति भी नाश हो जाती है॥ १॥ हे पण्डित! राम नाम का गुणगान कर ले, कर्मकाण्ड एवं तेरा अहंकार किसी काम नहीं आना।

राम की स्तुति करने से तू सहर्ष मोक्ष प्राप्त कर लेगा॥ १॥ रहाउ॥ हरि का यश ही सुख का कोष है, जिसने इसका लाभ प्राप्त किया है, उसके सारे मनोरथ पूर्ण हो गए हैं। उसके दुख दूर हो गए हैं, और हृदय-घर में सुख उपलब्ध हो गया है। संतों की कृपा से उसका हृदय कमल खिल गया है॥ २॥ जिसने नाम रूपी रत्न का दान प्राप्त किया है, उसे सब भण्डार हासिल हो गए हैं। उसके मन में पूर्ण संतोष आ गया है और फिर वह पुनः पुनः किसी से माँगने के लिए नहीं जाता॥ ३॥ हरि की कथा सुनने से मन पवित्र हो जाता है। जो जिह्वा स्तुतिगान करती है, उसकी गति हो जाती है। हे नानक! जिसने इसे हृदय में बसाया है, वह मंजूर हो गया है और वही व्यक्ति सर्वोत्तम है॥ ४॥ १७॥ २८॥

रामकली महला ५ ॥ गहु करि पकरी न आई हाथि ॥ प्रीति करी चाली नही साथि ॥ कहु नानक जउ तिआगि दई ॥ तब ओह चरणी आइ पई ॥ १ ॥ सुणि संतहु निरमल बीचार ॥ राम नाम बिनु गति नही काई गुरु पूरा भेटत उधार ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जब उस कउ कोई देवै मानु ॥ तब आपस ऊपरि रखै गुमानु ॥ जब उस कउ कोई मनि परहरै ॥ तब ओह सेवकि सेवा करै ॥ २ ॥ मुखि बेरावै अंति ठगावै ॥ इकतु ठउर ओह कही न समावै ॥ उनि मोहे बहुते ब्रहमंड ॥ राम जनी कीनी खंड खंड ॥ ३ ॥ जो मागै सो भूखा रहै ॥ इसु संगि राचै सु कछू न लहै ॥ इसहि तिआगि सतसंगति करै ॥ वडभागी नानक ओहु तरै ॥ ४ ॥ १८ ॥ २९ ॥

माया को अगर सावधानी से पकड़ा भी जाए तो यह किसी के हाथ में नहीं आती। अगर इससे प्रीति भी की जाए तो यह साथ नहीं देती। हे नानक! जब इसे त्याग दिया जाए तो तब यह चरणों में आ जाती है॥ १॥ हे सज्जनो! यह निर्मल विचार सुनो; राम-नाम के बिना किसी की गति नहीं होती, पूर्ण गुरु से भेंट करने से उद्धार हो जाता है॥ १॥ रहाउ॥ जब कोई मनुष्य माया को आदर देता है तो वह अपने ऊपर बड़ा घमण्ड करती है। जब कोई उसे अपने मन में से निकाल देता है, तब वह दासी बनकर उसकी सेवा करती है॥ २॥ वह मीठे वचन बोलकर मनुष्य को मोहित करती है, लेकिन अन्त में धोखा ही देती है। वह एक स्थान पर कहीं भी नहीं टिकती, उसने ब्रह्माण्ड के अनेक जीवों को मोहित किया हुआ है। लेकिन राम के भक्तों ने उसे टुकड़े-टुकड़े कर दिया है॥ ३॥ जो माया माँगता है, वह भूखा ही रहता है। जो इसके साथ लीन रहता है, उसे कुछ भी हासिल नहीं होता। हे नानक! जो इसे त्याग कर सत्संगति करता है, वह खुशनसीब मुक्त हो जाता है॥ ४॥ १८॥ २९॥

रामकली महला ५ ॥ आतम रामु सरब महि पेखु ॥ पूरन पूरि रहिआ प्रभ एकु ॥ रतनु अमोलु रिदे महि जानु ॥ अपनी वसतु तू आपि पछानु ॥ १ ॥ पी अंम्रितु संतन परसादि ॥ वडे भाग होवहि तउ पाईऐ बिनु जिहवा किआ जाणै सुआदु ॥ १ ॥ रहाउ ॥ अठ दस बेद सुने कह डोरा ॥ कोटि प्रगास न दिसै अंधेरा ॥ पसू परीति घास संगि रचै ॥ जिसु नही बुझावै सो कितु बिधि बुझै ॥ २ ॥ जानणहारु रहिआ प्रभु जानि ॥ ओति पोति भगतन संगानि ॥ बिगसि बिगसि अपुना प्रभु गावहि ॥ नानक तिन जम नेड़ि न आवहि ॥ ३ ॥ १९ ॥ ३० ॥

सब जीवों में राम का रूप देखो; एक प्रभु ही सबमें व्याप्त है। उस अमूल्य-रत्न को अपने हृदय में ही समझो और अपनी वस्तु को अपने हृदय में ही पहचानो॥ १॥ संतों की कृपा से नामामृत का पान करो। उत्तम भाग्य हो तो ही इसे पाया जा सकता है और जीभ से चखे बिना इसके स्वाद को कैसे जाना जा सकता है॥ १॥ रहाउ॥ अठारह पुराणों एवं चार वेदों को सुनकर

भी मनुष्य बहरा ही बना हुआ है। करोड़ों सूर्यों का प्रकाश हो तो भी अंधे को अंधेरा ही नजर आता है। पशु का प्रेम घास से होता है और वह उसी में लीन रहता है। जिस व्यक्ति को ज्ञान नहीं होता, वह किस विधि द्वारा समझ सकता है॥ २॥ जानने वाला प्रभु सब कुछ जानता है तथा ताने-बाने की तरह पूर्णतया भक्तों के संग रहता है। हे नानक ! जो खुशी-खुशी अपने प्रभु का स्तुतिगान करता है, यमदूत भी उसके निकट नहीं आता॥ ३॥ १६॥ ३०॥

रामकली महला ५ ॥ दीनो नामु कीओ पवितु ॥ हरि धनु रासि निरास इह बितु ॥ काटी बंधि हरि सेवा लाए ॥ हरि हरि भगति राम गुण गाए ॥ १ ॥ बाजे अनहद बाजा ॥ रसकि रसकि गुण गावहि हरि जन अपनै गुरदेवि निवाजा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ आइ बनिओ पूरबला भागु ॥ जनम जनम का सोइआ जागु ॥ गई गिलानि साध कै संगि ॥ मनु तनु रातो हरि कै रंगि ॥ २ ॥ राखे राखनहार दइआल ॥ ना किछु सेवा ना किछु घाल ॥ करि किरपा प्रभि कीनी दइआ ॥ बूडत दुख महि काढि लइआ ॥ ३ ॥ सुणि सुणि उपजिओ मन महि चाउ ॥ आठ पहर हरि के गुण गाउ ॥ गावत गावत परम गति पाई ॥ गुर प्रसादि नानक लिव लाई ॥ ४ ॥ २० ॥ ३१ ॥

सतगुरु ने मुझे नाम देकर पवित्र कर दिया है। हरि-नाम रूपी धन ही मेरी राशि है और माया की ओर से निराश रहता हूँ। उसने मेरे बंधन काटकर हरि की सेवा में लगा दिया है। अब मैं हरि की भक्ति एवं उसके ही गुण गाता रहता हूँ॥ १॥ मन में अनहद ध्वनि का वाद्य बज रहा है। हरि के भक्त बड़े आनंद से उसका स्तुतिगान कर रहे हैं और गुरुदेव ने इन्हें बड़ाई प्रदान की है॥ १॥ रहाउ॥ पूर्व भाग्य उदय हो गया है और जन्म-जन्मांतर का सोया हुआ मन जाग गया है। साधुओं की संगति में दूसरों के प्रति घृणा दूर हो गई है। अब मन-तन हरि के रंग में ही लीन रहता है॥ २॥ रखवाले परमेश्वर ने दया करके रक्षा की है, न कोई सेवा की और न ही कोई साधना की है। अपनी कृपा करके प्रभु ने मुझ पर दया की है और दुखों के सागर में मुझ डूब रहे को निकाल लिया है॥ ३॥ परमात्मा की महिमा सुन-सुनकर मेरे मन में चाव पैदा हो गया है, इसलिए आठ प्रहर हरि के गुण गाता रहता हूँ। उसकी स्तुति गाते-गाते हमने परमगति पा ली है। हे नानक ! गुरु की कृपा से भगवान में ही लगन लगाई है॥ ४॥ २०॥ ३१॥

रामकली महला ५ ॥ कउडी बदलै तिआगै रतनु ॥ छोडि जाइ ताहू का जतनु ॥ सो संचै जो होछी बात ॥ माइआ मोहिआ टेढउ जात ॥ १ ॥ अभागे तै लाज नाही ॥ सुख सागर पूरन परमेसरु हरि न चेतिओ मन माही ॥ १ ॥ रहाउ ॥ अंम्रितु कउरा बिखिआ मीठी ॥ साकत की बिधि नैनहु डीठी ॥ कूड़ि कपटि अहंकारि रीझाना ॥ नामु सुनत जनु बिछूअ डसाना ॥ २ ॥ माइआ कारणि सद ही झूरै ॥ मनि मुखि कबहि न उसतति करै ॥ निरभउ निरंकार दातारु ॥ तिसु सिउ प्रीति न करै गवारु ॥ ३ ॥ सभ साहा सिरि साचा साहु ॥ वेमुहताजु पूरा पातिसाहु ॥ मोह मगन लपटिओ भ्रम गिरह ॥ नानक तरीऐ तेरी मिहर ॥ ४ ॥ २१ ॥ ३२ ॥

नासमझ जीव कौड़ियों के बदले अमूल्य नाम-रत्न को त्याग देता है। जो माया उसका साथ छोड़ जाती है, वह उसे ही हासिल करने का यत्न करता है। वह उसे संचित करता है जो एक तुच्छ वस्तु है। माया के मोह में जीव टेढ़े राह ही चलता है॥ १॥ हे बदनसीब ! क्या तुझे शर्म नहीं आती कि जो पूर्ण परमेश्वर सुखों का सागर है, तूने उसे मन में कभी याद ही नहीं किया॥ १॥ रहाउ॥ उसे नामामृत कड़वा लगता है और माया रूपी विष मीठा लगता है। शाक्त की यही हालत मैंने अपने नयनों से देखी है। वह झूठ, कपट एवं अहंकार में ही मस्त रहता है लेकिन परमात्मा

का नाम सुनकर ऐसे हो जाता है, जैसे बिच्छु ने डंक मार दिया है॥ २॥ वह माया के कारण सदा ही चिंतित रहता है किन्तु अपने मन एवं मुँह से कभी भगवान की स्तुति नहीं करता। जो निर्भय, निरंकार एवं सबका दाता है, वह गंवार उससे कभी प्रेम नहीं करता॥ ३॥ परमात्मा सब राजाओं में सच्चा राजा है और वह पूर्ण बादशाह एवं बेपरवाह है। जीव माया के मोह में लिपटा रहता है और सूर्य के इर्द-गिर्द घूमने वाले ग्रहों की तरह भटकता रहता है। नानक कहते हैं कि हे ईश्वर ! तेरी मेहर से ही भवसागर से पार हुआ जा सकता है॥ ४॥ २१॥ ३२॥

रामकली महला ५ ॥ रैणि दिनसु जपउ हरि नाउ ॥ आगै दरगह पावउ थाउ ॥ सदा अनंदु न होवी सोगु ॥ कबहू न बिआपै हउमै रोगु ॥ १ ॥ खोजहु संतहु हरि ब्रहम गिआनी ॥ बिसमन बिसम भए बिसमादा परम गति पावहि हरि सिमरि परानी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ गनि मिनि देखहु सगल बीचारि ॥ नाम बिना को सकै न तारि ॥ सगल उपाव न चालहि संगि ॥ भवजलु तरीऐ प्रभ कै रंगि ॥ २ ॥ देही धोइ न उतरै मैलु ॥ हउमै बिआपै दुबिधा फैलु ॥ हरि हरि अउखधु जो जनु खाइ ॥ ता का रोगु सगल मिटि जाइ ॥ ३ ॥ करि किरपा पारब्रहम दइआल ॥ मन ते कबहु न बिसरु गोपाल ॥ तेरे दास की होवा धूरि ॥ नानक की प्रभ सरधा पूरि ॥ ४ ॥ २२ ॥ ३३ ॥

रात-दिन हरि-नाम का जाप करो, इस तरह आगे प्रभु-दरबार में स्थान प्राप्त हो जाएगा। फिर सदैव आनंद बना रहेगा और कभी कोई शोक-चिंता नहीं लगेगी। अहंकार का रोग भी कभी प्रभावित नहीं करेगा॥ १॥ हे भक्तजनो, किसी ब्रह्मज्ञानी की खोज करो। हरि की महिमा को देखकर बड़ी हैरानी होती है। हे प्राणी ! हरि का स्मरण करने से परमगति प्राप्त हो जाती है॥ १॥ रहाउ॥ नाम के बिना कोई भी संसार-सागर से पार नहीं हो सकता, चाहे इस संदर्भ में सोच-समझ कर विचार करके देख लो। अनेक प्रकार के सब उपाय भी साथ नहीं देने वाले, अपितु प्रभु के रंग में लीन होने से ही भवसागर से पार हुआ जा सकता है॥ २॥ शरीर को धोने से मन की मैल साफ नहीं होती, अपितु अहंकार में और वृद्धि हो जाती है और दुविधा भी फैल जाती है। जो व्यक्ति हरि-नाम रूपी औषधि को सेवन करता है, उसका सब प्रकार का रोग मिट जाता है॥ ३॥ हे दयालु परब्रह्म ! ऐसी कृपा करो कि मन में कभी भी तुम विस्मृत न हो पाओ। हे प्रभु ! तेरे दास की चरण-धूलि बन जाऊँ, नानक की यह श्रद्धा पूरी करो॥ ४॥ २२॥ ३३॥

रामकली महला ५ ॥ तेरी सरणि पूरे गुरदेव ॥ तुधु बिनु दूजा नाही कोइ ॥ तू समरथु पूरन पारब्रहमु ॥ सो धिआए पूरा जिसु करमु ॥ १ ॥ तरण तारण प्रभ तेरो नाउ ॥ एका सरणि गही मन मेरै तुधु बिनु दूजा नाही ठाउ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जपि जपि जीवा तेरा नाउ ॥ आगै दरगह पावउ ठाउ ॥ दूखु अंधेरा मन ते जाइ ॥ दुरमति बिनसै राचै हरि नाइ ॥ २ ॥ चरन कमल सिउ लागी प्रीति ॥ गुर पूरे की निरमल रीति ॥ भउ भागा निरभउ मनि बसै ॥ अंम्रित नामु रसना नित जपै ॥ ३ ॥ कोटि जनम के काटे फाहे ॥ पाइआ लाभु सचा धनु लाहे ॥ तोटि न आवै अखुट भंडार ॥ नानक भगत सोहहि हरि दुआर ॥ ४ ॥ २३ ॥ ३४ ॥

हे पूर्ण गुरुदेव ! मैं तेरी शरण में आया हूँ, क्योंकि तेरे बिना मेरा अन्य कोई अवलम्ब नहीं। हे पूर्ण परब्रह्म ! तू सर्वकला समर्थ है, वही तेरा ध्यान-मनन करता है, जिसका पूर्ण भाग्य होता है॥ १॥ हे प्रभु ! तेरा नाम संसार के बंधनों से मुक्त करवाने वाला है, इसलिए मेरे मन ने एक तेरी ही शरण ग्रहण की है और तेरे अतिरिक्त अन्य कोई ठौर-ठिकाना नहीं॥ १॥ रहाउ॥ मैं तेरा नाम जप-जप कर ही जी रहा हूँ, और आगे तेरे दरबार में स्थान प्राप्त कर लूँगा। मन से दुख

का अंधेरा दूर हो जाता है और प्रभु का नाम-स्मरण करने से दुर्मति नाश हो जाती है॥ २॥ प्रभु के सुन्दर चरण-कमलों से प्रीति लग गई है। पूर्ण गुरु की निर्मल मर्यादा है। निर्भय प्रभु का मन में निवास हो जाने से यम का भय भाग गया है। अब रसना नित्य नामामृत को जपती रहती है॥ ३॥ मैंने करोड़ों जन्मों के बन्धन काट दिए हैं और नाम-धन का सच्चा लाभ प्राप्त कर लिया है। इस अक्षय भण्डार के कारण कोई कमी नहीं आती। हे नानक! भक्तजन हमेशा भगवान के द्वार में ही शोभा के पात्र बनते हैं॥ ४॥२३॥ ३४॥

रामकली महला ५ ॥ रतन जवेहर नाम ॥ सतु संतोखु गिआन ॥ सूख सहज दइआ का पोता ॥ हरि भगता हवालै होता ॥ १ ॥ मेरे राम को भंडारु ॥ खात खरचि कछु तोटि न आवै अंतु नही हरि पारावारु ॥ १ ॥ रहाउ ॥ कीरतनु निरमोलकु हीरा ॥ आनंद गुणी गहीरा ॥ अनहद बाणी पूंजी ॥ संतन हथि राखी कूंजी ॥ २ ॥ सुंन समाधि गुफा तह आसनु ॥ केवल ब्रहम पूरन तह बासनु ॥ भगत संगि प्रभु गोसटि करत ॥ तह हरख न सोग न जनम न मरत ॥ ३ ॥ करि किरपा जिसु आपि दिवाइआ ॥ साधसंगि तिनि हरि धनु पाइआ ॥ दइआल पुरख नानक अरदासि ॥ हरि मेरी वरतणि हरि मेरी रासि ॥ ४ ॥ २४ ॥ ३५ ॥

हरि का नाम अमूल्य रत्न एवं जवाहर के समान है। यह सत्य, संतोष, ज्ञान, सहज सुख एवं दया का कोष है। यह कोष हरि ने अपने भक्तों को ही सौंपा हुआ है॥ १॥ मेरे राम का भण्डार बेअन्त है, जिसे खाने-खर्च करने से कोई कमी नहीं आती, उसका कोई अंत नहीं और न ही उसका आर-पार पाया जा सकता है॥ १॥ रहाउ॥ भगवान का कीर्तन अमूल्य हीरे जैसा है, यह आनंददायक एवं गुणों का गहरा सागर है। अनहद वाणी अमूल्य पूंजी है, जिसकी कुंजी भगवान् ने संतों के हाथ में रखी हुई है॥ २॥ जिस गुफा में उसका आसन है, वहाँ उसने शून्य समाधि लगाई है। वहाँ पर केवल पूर्ण ब्रह्म का ही निवास है। प्रभु वहाँ पर अपने भक्तों के साथ गोष्ठी करता है। वहाँ न कोई हर्ष है, न कोई शोक है और न ही जन्म-मरण का बन्धन है॥ ३॥ भगवान् ने कृपा करके जिसे स्वयं दिलवाया है, उसने ही साधुओं की संगति में हरि-धन प्राप्त किया है। हे दयालु परमपुरुष! नानक की तुझसे प्रार्थना है कि हरि-नाम ही मेरा जीवन उपयोग एवं जीवन राशि है॥ ४॥ २४॥ ३५॥

रामकली महला ५ ॥ महिमा न जानहि बेद ॥ ब्रहमे नही जानहि भेद ॥ अवतार न जानहि अंतु ॥ परमेसरु पारब्रहम बेअंतु ॥ १ ॥ अपनी गति आपि जानै ॥ सुणि सुणि अवर वखानै ॥ १ ॥ रहाउ ॥ संकरा नही जानहि भेव ॥ खोजत हारे देव ॥ देवीआ नही जानै मरम ॥ सभ ऊपरि अलख पारब्रहम ॥ २ ॥ अपनै रंगि करता केल ॥ आपि बिछोरै आपे मेल ॥ इकि भरमे इकि भगती लाए ॥ अपणा कीआ आपि जणाए ॥ ३ ॥ संतन की सुणि साची साखी ॥ सो बोलहि जो पेखहि आखी ॥ नही लेपु तिसु पुंनि न पापि ॥ नानक का प्रभु आपे आपि ॥ ४ ॥ २५ ॥ ३६ ॥

उसकी महिमा वेद भी नहीं जानते, ब्रह्मा भी उसका भेद नहीं जानता, बड़े-बड़े अवतार भी उसका अन्त नहीं जानते, चूंकि परब्रह्म-परमेश्वर बेअंत है॥ १॥ वह अपनी गति स्वयं ही जानता है, सुन-सुनकर अन्य लोग उसका बखान करते हैं॥ १॥ रहाउ॥ शिवशंकर उसका भेद नहीं जानता, खोजते-खोजते बड़े-बड़े देवता भी हार गए। देवियाँ भी उसका मर्म नहीं जानतीं, क्योंकि सबसे ऊपर अदृष्ट परब्रह्म है॥ २॥ वह अपने रंग में स्वयं ही लीला करता है, वह स्वयं ही किसी को बिछोड़ देता है और किसी को मिला लेता है। उसकी मर्जी से कुछ जीव भटकते रहते हैं और किसी

को उसने भक्ति में लगाया हुआ है। वह अपनी जगत्-लीला को स्वयं ही जानता है॥ ३॥ संतों की सच्ची शिक्षा सुनो, वे वही बोलते हैं, जो अपनी आँखों से देखते हैं। नानक का प्रभु स्वयंभू है, उसे पाप-पुण्य का कोई लेप नहीं लगता॥ ४॥ २५॥ ३६॥

रामकली महला ५ ॥ किछहू काजु न कीओ जानि ॥ सुरति मति नाही किछु गिआनि ॥ जाप ताप सील नही धरम ॥ किछू न जानउ कैसा करम ॥ १ ॥ ठाकुर प्रीतम प्रभ मेरे ॥ तुझ बिनु दूजा अवरु न कोई भूलह चूकह प्रभ तेरे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ रिधि न बुधि न सिधि प्रगासु ॥ बिखै बिआधि के गाव महि बासु ॥ करणहार मेरे प्रभ एक ॥ नाम तेरे की मन महि टेक ॥ २ ॥ सुणि सुणि जीवउ मनि इहु बिस्रामु ॥ पाप खंडन प्रभ तेरो नामु ॥ तू अगनतु जीअ का दाता ॥ जिसहि जणावहि तिनि तू जाता ॥ ३ ॥ जो उपाइओ तिसु तेरी आस ॥ सगल अराधहि प्रभ गुणतास ॥ नानक दास तेरै कुरबाणु ॥ बेअंत साहिबु मेरा मिहरवाणु ॥ ४ ॥ २६ ॥ ३७ ॥

मैंने सोच-समझकर कोई शुभ कर्म नहीं किया, मेरे पास सुरति, बुद्धि एवं कोई ज्ञान भी नहीं है, और तो और कोई जाप, कोई तपस्या, कोई शील एवं धर्म भी नहीं है। मैं कुछ भी नहीं जानता कि कैसे कर्म करना उचित है॥ १॥ हे ठाकुर जी, हे मेरे प्रियतम प्रभु! तेरे बिना मेरा अन्य कोई आधार नहीं, चाहे भूल-चूक करता रहता हूँ फिर भी तेरा ही अंश हूँ॥ १॥ रहाउ॥ न मेरे पास ऋद्धियाँ-सिद्धियाँ हैं और न ही ज्ञान का प्रकाश है। मेरा निवास तो विषय-विकारों एवं व्याधियों के गाँव में है। हे मेरे प्रभु! एक तू ही सबकुछ करने में समर्थ है और मेरे मन में तेरे नाम का ही सहारा है॥ २॥ हे प्रभु! मन में यही सुख है और यही सुन-सुनकर जी रहा हूँ कि तेरा नाम सब पापों का नाश करने वाला है। तू असंख्य जीवों का दाता है, जिसे तू ज्ञान देता है, वह तेरी महिमा को समझ जाता है॥ ३॥ जिसे भी तूने उत्पन्न किया है, उसे तेरी ही आशा है। सभी जीव गुणों के भण्डार परमात्मा की ही आराधना करते हैं। दास नानक तुझ पर कुर्बान जाता है चूंकि मेरा मालिक बेअंत एवं सब पर मेहरबान है॥ ४॥ २६॥ ३७॥

रामकली महला ५ ॥ राखनहार दइआल ॥ कोटि भव खंडे निमख खिआल ॥ सगल अराधहि जंत ॥ मिलीऐ प्रभ गुर मिलि मंत ॥ १ ॥ जीअन को दाता मेरा प्रभु ॥ पूरन परमेसुर सुआमी घटि घटि राता मेरा प्रभु ॥ १ ॥ रहाउ ॥ ता की गही मन ओट ॥ बंधन ते होई छोट ॥ हिरदै जपि परमानंद ॥ मन माहि भए अनंद ॥ २ ॥ तारण तरण हरि सरण ॥ जीवन रूप हरि चरण ॥ संतन के प्राण अधार ॥ ऊचे ते ऊच अपार ॥ ३ ॥ सु मति सारु जितु हरि सिमरीजै ॥ करि किरपा जिसु आपे दीजै ॥ सूख सहज आनंद हरि नाउ ॥ नानक जपिआ गुर मिलि नाउ ॥ ४ ॥ २७ ॥ ३८ ॥

दयालु परमेश्वर सबका रखवाला है, एक पल भर के लिए उसका चिंतन करने से करोड़ों जन्मों का बंधन नाश हो जाता है। सभी जीव उसकी ही आराधना करते हैं। जिसे गुरु-मंत्र मिल जाता है, वह प्रभु को पा लेता है॥ १॥ मेरा प्रभु सब जीवों का दाता है, वह पूर्ण परमेश्वर सबका स्वामी हर हृदय में बसा हुआ है॥ १॥ रहाउ॥ मेरे मन ने उसकी ही ओट ली है, जिससे सब बन्धनों से छुटकारा हो गया है। उस परमानंद को हृदय में जपने से मन में आनंद उत्पन्न हो गया है॥ २॥ भगवान् की शरण संसार-सागर से पार करवाने वाला जहाज है। उसके चरणों में जीवन दान मिलता है और वह संतों के प्राणों का आधार है। वह सबसे ऊँचा एवं अपरम्पार है॥ ३॥ वही सुमति है, जिस द्वारा भगवान् का सिमरन किया जाता है। वह जिस पर अपनी कृपा करता है, उसे ही सुमति देता है। हरि का नाम परम सुख एवं आनंद प्रदान करने वाला है, अतः हे नानक! गुरु को मिलकर नाम ही जपा है॥ ४॥ २७॥ ३८॥

रामकली महला ५ ॥ सगल सिआनप छाडि ॥ करि सेवा सेवक साजि ॥ अपना आपु सगल मिटाइ ॥ मन चिंदे सेई फल पाइ ॥ १ ॥ होहु सावधान अपुने गुर सिउ ॥ आसा मनसा पूरन होवै पावहि सगल निधान गुर सिउ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ दूजा नही जानै कोइ ॥ सतगुरु निरंजनु सोइ ॥ मानुख का करि रूपु न जानु ॥ मिली निमाने मानु ॥ २ ॥ गुर की हरि टेक टिकाइ ॥ अवर आसा सभ लाहि ॥ हरि का नामु मागु निधानु ॥ ता दरगह पावहि मानु ॥ ३ ॥ गुर का बचनु जपि मंतु ॥ एहा भगति सार ततु ॥ सतिगुर भए दइआल ॥ नानक दास निहाल ॥ ४ ॥ २८ ॥ ३९ ॥

अपनी सब चतुराइयाँ छोड़ दो और सेवक बनकर गुरु की सेवा करो। जो अपना सारा अहंत्व मिटा देता है, उसे मनोवांछित फल प्राप्त होता है॥ १॥ अपने गुरु के साथ सावधान होकर रहो, आशा-अभिलाषा सब पूर्ण हो जाएँगी और गुरु से सर्व भण्डार हासिल हो जाएँगे॥ १॥ रहाउ॥ अन्य कोई नहीं जानता कि सतगुरु ही निरंजन है। गुरु को मनुष्य का रूप न समझो। मुझ मानहीन को भी उसके द्वार पर सम्मान मिला है॥ २॥ भगवान् के रूप गुरु का सहारा लो, अन्य सब आशाएँ त्याग दो। गुरु से हरि-नाम का भण्डार मांगो, तो दरबार में आदर प्राप्त हो जाएगा॥ ३॥ गुरु वचन का जाप करो, यही मंत्र है, यही भक्ति का सार तत्व है। जब सतगुरु दयालु हो गया तो दास नानक भी निहाल हो गया॥ ४॥ २८॥ ३९॥

रामकली महला ५ ॥ होवै सोई भल मानु ॥ आपना तजि अभिमानु ॥ दिनु रैनि सदा गुन गाउ ॥ पूरन एही सुआउ ॥ १ ॥ आनंद करि संत हरि जपि ॥ छाडि सिआनप बहु चतुराई गुर का जपि मंतु निरमल ॥ १ ॥ रहाउ ॥ एक की करि आस भीतरि ॥ निरमल जपि नामु हरि हरि ॥ गुर के चरन नमसकारि ॥ भवजलु उतरहि पारि ॥ २ ॥ देवनहार दातार ॥ अंतु न पारावार ॥ जा कै घरि सरब निधान ॥ राखनहार निदान ॥ ३ ॥ नानक पाइआ एहु निधान ॥ हरे हरि निरमल नाम ॥ जो जपै तिस की गति होइ ॥ नानक करमि परापति होइ ॥ ४ ॥ २९ ॥ ४० ॥

जो कुछ हो रहा है, उसे ही भला मानो। अपना अभिमान त्याग दो और दिन-रात भगवान का गुणगान करो, यही मानव-जीवन का पूर्ण मनोरथ है॥ १॥ संतों के संग ईश्वर का नाम जपो एवं आनंद करो। अपनी बुद्धिमता एवं चतुराई को छोड़कर गुरु के निर्मल मंत्र का जाप करो॥ १॥ रहाउ॥ मन में एक परमात्मा की आशा करो, निर्मल हरि-नाम का जाप करो। गुरु के चरणों को प्रणाम करो, भवसागर से उद्धार हो जाएगा॥ २॥ सबकुछ देने वाले दातार का कोई अन्त एवं आर-पार नहीं है, जिसके घर में सर्व भण्डार हैं, अंत में वही रक्षा करने वाला है॥ ३॥ नानक ने निर्मल हरि नाम का कोष पा लिया है। जो भी पावन हरि नाम का जाप करता है, उसकी गति हो जाती है। हे नानक! भाग्य से ही इसकी प्राप्ति होती है॥ ४॥ २९॥ ४०॥

रामकली महला ५ ॥ दुलभ देह सवारि ॥ जाहि न दरगह हारि ॥ हलति पलति तुधु होइ वडिआई ॥ अंत की बेला लए छडाई ॥ १ ॥ राम के गुन गाउ ॥ हलतु पलतु होहि दोवै सुहेले अचरज पुरखु धिआउ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ ऊठत बैठत हरि जापु ॥ बिनसै सगल संतापु ॥ बैरी सभि होवहि मीत ॥ निरमलु तेरा होवै चीत ॥ २ ॥ सभ ते ऊतम इहु करमु ॥ सगल धरम महि स्रेसट धरमु ॥ हरि सिमरनि तेरा होइ उधारु ॥ जनम जनम का उतरै भारु ॥ ३ ॥ पूरन तेरी होवै आस ॥ जम की कटीऐ तेरी फास ॥ गुर का उपदेसु सुनीजै ॥ नानक सुखि सहजि समीजै ॥ ४ ॥ ३० ॥ ४१ ॥

हे मानव! अपना दुर्लभ जीवन सफल कर ले; इस तरह जीवन बाजी हार कर दरबार में

नहीं जाना पड़ेगा। लोक-परलोक में तेरी बड़ी प्रशंसा होगी तथा अन्तिम समय परमात्मा यमों से बचा लेगा॥ १॥ राम का गुणगान करो, लोक-परलोक दोनों सुखद हो जाएँगे, अद्‌भुत परमेश्वर का ध्यान करते रहो॥ १॥ रहाउ॥ उठते-बैठते हर वक्त परमात्मा का जाप करो, इससे दुख-संताप नाश हो जाएँगे, सब शत्रु भी मित्र बन जाएँगे, और तेरा चित्त भी निर्मल हो जाएगा॥ २॥ सबसे उत्तम यही कर्म है, सब धर्मों में यही श्रेष्ठ धर्म है कि भगवान् का सिमरन करते रहो। भगवान् का सिमरन करने से तेरा उद्धार हो जाएगा और जन्म-जन्मांतरों के किए पापों का भार उतर जाएगा॥ ३॥ तेरी हर आशा पूर्ण हो जाएगी और तेरी यम की फाँसी भी कट जाएगी। हे नानक! गुरु का उपदेश सुनना चाहिए, इससे सहज सुख में समाया जा सकता है॥ ४॥ ३०॥ ४१॥

रामकली महला ५ ॥ जिस की तिस की करि मानु ॥ आपन लाहि गुमानु ॥ जिस का तू तिस का सभु कोइ ॥ तिसहि अराधि सदा सुखु होइ ॥ १ ॥ काहे भ्रमि भ्रमहि बिगाने ॥ नाम बिना किछु कामि न आवै मेरा मेरा करि बहुतु पछुताने ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जो जो करै सोई मानि लेहु ॥ बिनु माने रलि होवहि खेह ॥ तिस का भाणा लागै मीठा ॥ गुर प्रसादि विरले मनि वूठा ॥ २ ॥ वेपरवाहु अगोचरु आपि ॥ आठ पहर मन ता कउ जापि ॥ जिसु चिति आए बिनसहि दुखा ॥ हलति पलति तेरा ऊजल मुखा ॥ ३ ॥ कउन कउन उधरे गुन गाइ ॥ गनणु न जाई कीम न पाइ ॥ बूडत लोह साधसंगि तरै ॥ नानक जिसहि परापति करै ॥ ४ ॥ ३१ ॥ ४२ ॥

जिस परमात्मा की यह सृष्टि, धन-सम्पदा इत्यादि है, उसकी ही मान और अपना घमण्ड छोड़ दो। जिसका तू पैदा किया हुआ है, सब कुछ उसी का है। उसकी आराधना करने से सदा ही सुख मिलता है॥ १॥ अरे बेगाने जीव! क्यों भ्रम में भटक रहा है, नाम के बिना कुछ भी काम नहीं आता और 'मेरा-मेरा' करके बहुत सारे लोग पछताए हैं॥ १॥ रहाउ॥ जो-जो परमात्मा करता है, उसे भला मान लो। उसकी मर्जी को अस्वीकार करने से जीव मिट्टी में मिलकर खाक हो जाता है। गुरु की कृपा से किसी विरले के ही मन में बसता है और उसे ही उसकी इच्छा मीठी लगती है॥ २॥ ईश्वर बेपरवाह है, वह मन वाणी से परे है, आठों प्रहर मन में उसका ही जाप करना चाहिए। जिसे वह याद आता है, उसके दुख नाश हो जाते हैं। लोक-परलोक में तेरा मुख उज्जवल हो जाएगा॥ ३॥ भगवान का गुणगान करके कौन-कौन से जीव का उद्धार हो गया है, उनकी गणना नहीं की जा सकती और न ही सही कीमत आंकी जा सकती है। जैसे डूबता हुआ लोहा नाव द्वारा पार हो जाता है, वैसे ही पापी जीव भी संतों की संगति करके संसार-सागर से पार हो जाता है। हे नानक! जिस पर कृपा करता है, उसे ही सुसंगति मिलती है॥ ४॥ ३१॥ ४२॥

रामकली महला ५ ॥ मन माहि जापि भगवंतु ॥ गुरि पूरै इहु दीनो मंतु ॥ मिटे सगल भै त्रास ॥ पूरन होई आस ॥ १ ॥ सफल सेवा गुरदेवा ॥ कीमति किछु कहणु न जाई साचे सचु अलख अभेवा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ करन करावन आपि ॥ तिस कउ सदा मन जापि ॥ तिस की सेवा करि नीत ॥ सचु सहजु सुखु पावहि मीत ॥ २ ॥ साहिबु मेरा अति भारा ॥ खिन महि थापि उथापनहारा ॥ तिसु बिनु अवरु न कोई ॥ जन का राखा सोई ॥ ३ ॥ करि किरपा अरदासि सुणीजै ॥ अपणे सेवक कउ दरसनु दीजै ॥ नानक जापी जपु जापु ॥ सभ ते ऊच जा का परतापु ॥ ४ ॥ ३२ ॥ ४३ ॥

पूर्ण गुरु ने यही मंत्र दिया है कि मन में भगवंत का जाप करो। इससे सब भय एवं कष्ट मिट जाते हैं और हर कामना पूर्ण होती है॥ १॥ गुरुदेव की सेवा फलदायक है, उस परम सत्य, अलक्ष्य, अभेद परमेश्वर की महिमा की सही कीमत कुछ भी आंकी नहीं जा सकती॥ १॥ रहाउ॥

वह स्वयं ही करने-करवाने में समर्थ है, मन में सदैव उसका जाप करो। हे मित्र! नित्य उसकी उपासना करनी चाहिए, इससे सहज सुख एवं सत्य की प्राप्ति होगी॥ २॥ मेरा मालिक सर्वशक्तिमान है, वह एक क्षण में ही बनाने एवं नष्ट करने वाला है। उसके अतिरिक्त अन्य कोई भी समर्थ नहीं है और वही सेवक का रखवाला है॥ ३॥ हे भगवंत! कृपा करके मेरी प्रार्थना सुनो; अपने सेवक को दर्शन दीजिए। नानक तो उस परमात्मा के नाम का जाप जपता रहता है, जिसका प्रताप सबसे ऊँचा है॥ ४॥ ३२॥ ४३॥

रामकली महला ५ ॥ बिरथा भरवासा लोक ॥ ठाकुर प्रभ तेरी टेक ॥ अवर छूटी सभ आस ॥ अचिंत ठाकुर भेटे गुणतास ॥ १ ॥ एको नामु धिआइ मन मेरे ॥ कारजु तेरा होवै पूरा हरि हरि हरि गुण गाइ मन मेरे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ तुम ही कारन करन ॥ चरन कमल हरि सरन ॥ मनि तनि हरि ओही धिआइआ ॥ आनंद हरि रूप दिखाइआ ॥ २ ॥ तिस ही की ओट सदीव ॥ जा के कीने है जीव ॥ सिमरत हरि करत निधान ॥ राखनहार निदान ॥ ३ ॥ सरब की रेण होवीजै ॥ आपु मिटाइ मिलीजै ॥ अनदिनु धिआईऐ नामु ॥ सफल नानक इहु कामु ॥ ४ ॥ ३३ ॥ ४४ ॥

लोगों पर भरोसा करना व्यर्थ है। हे प्रभु! मुझे तो केवल तेरा ही सहारा है। अन्य सब आशाएँ छूट गई हैं और अकस्मात, गुणों का भण्डार प्रभु मुझे मिल गया है॥ १॥ हे मेरे मन! केवल नाम का ही ध्यान करो, 'हरि-हरि' नाम का गुणगान करने से तेरा कार्य सम्पूर्ण हो जाएगा॥ १॥ रहाउ॥ हे परमेश्वर! तू ही सब बनाने वाला है। मैंने तो हरि-चरणों की ही शरण ली है, अपने मन-तन में उसका ही ध्यान किया है। गुरु ने मुझे आनंद रूप हरि के दर्शन करवाएं हैं॥ २॥ जिसने सब जीवों की उत्पति की है, मैंने सदैव उसका ही आसरा लिया है। हरि का सिमरन करने से सर्व सुखों के भण्डार प्राप्त होते हैं एवं अन्तिम समय वही रक्षा करता है॥ ३॥ सबकी चरण-धूलि बन जाना चाहिए और अपना आत्माभिमान मिटाकर सत्य में मिल जाना चाहिए। प्रतिदिन नाम का ध्यान करना चाहिए, हे नानक! जीवन में यही कार्य सफल है॥ ४॥ ३३॥ ४४॥

रामकली महला ५ ॥ कारन करन करीम ॥ सरब प्रतिपाल रहीम ॥ अलह अलख अपार ॥ खुदि खुदाइ वड बेसुमार ॥ १ ॥ ओं नमो भगवंत गुसाई ॥ खालकु रवि रहिआ सरब ठाई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जगंनाथ जगजीवन माधो ॥ भउ भंजन रिद माहि अराधो ॥ रिखीकेस गोपाल गोविंद ॥ पूरन सरबत्र मुकंद ॥ २ ॥ मिहरवान मउला तूही एक ॥ पीर पैकांबर सेख ॥ दिला का मालकु करे हाकु ॥ कुरान कतेब ते पाकु ॥ ३ ॥ नाराइण नरहर दइआल ॥ रमत राम घट घट आधार ॥ बासुदेव बसत सभ ठाइ ॥ लीला किछु लखी न जाइ ॥ ४ ॥ मिहर दइआ करि करनैहार ॥ भगति बंदगी देहि सिरजणहार ॥ कहु नानक गुरि खोए भरम ॥ एको अलहु पारब्रहम ॥ ५ ॥ ३४ ॥ ४५ ॥

दयालु परमेश्वर करने-करवाने वाला है, वह बड़ा रहमदिल है, सबका पालनहार है। वही अल्लाह अदृष्ट एवं अपरम्पार है। उस महान् खुदा का हुक्म अटल है, उसकी महिमा बेअन्त है॥ १॥ ओम् को हमारा प्रणाम है, वह भगवंत, पृथ्वीपालक, स्रष्टा सब स्थानों पर बसा हुआ है॥ १॥ रहाउ॥ वह समूचे जगत् का मालिक है, जगत् को जीवन देने वाला है, उस भयभंजन की हृदय में आराधना करो। हे ऋषिकेष, हे गोपाल-गोविंद, हे मुक्तिदाता! तू विश्वव्यापक है॥ २॥ दुनिया में कितने ही पीर-पैगम्बर एवं शेख हैं परन्तु एक तू ही मेहरबान मौला है। तू सबके दिलों का मालिक है और सबसे इन्साफ करता है। तू कुरान-कतेब से भी पवित्र है॥ ३॥ हे नारायण नृसिंह रूप! तू बड़ा दयालु है। घट-घट में व्यापक राम सबके जीवन का आधार है। वह वासुदेव

सब जीवों में निवास करता है, उसकी लीला को समझा नहीं जा सकता॥ ४॥ हे बनाने वाले! अपनी मेहर एवं दया करो। हे सृजनहार! मुझे अपनी भक्ति एवं बंदगी दीजिए। हे नानक! गुरु ने मेरे सारे भ्रम दूर कर दिए हैं और सत्य तो यही है कि परब्रह्म-अल्लाह एक ही हैं॥ ५॥ ३४॥ ४५॥

रामकली महला ५ ॥ कोटि जनम के बिनसे पाप ॥ हरि हरि जपत नाही संताप ॥ गुर के चरन कमल मनि वसे ॥ महा बिकार तन ते सभि नसे ॥ १ ॥ गोपाल को जसु गाउ प्राणी ॥ अकथ कथा साची प्रभ पूरन जोती जोति समाणी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ त्रिसना भूख सभ नासी ॥ संत प्रसादि जपिआ अबिनासी ॥ रैनि दिनसु प्रभ सेव कमानी ॥ हरि मिलणै की एह नीसानी ॥ २ ॥ मिटे जंजाल होए प्रभ दइआल ॥ गुर का दरसनु देखि निहाल ॥ परा पूरबला करमु बणि आइआ ॥ हरि के गुण नित रसना गाइआ ॥ ३ ॥ हरि के संत सदा परवाणु ॥ संत जना मसतकि नीसाणु ॥ दास की रेणु पाए जे कोइ ॥ नानक तिस की परम गति होइ ॥ ४ ॥ ३५ ॥ ४६ ॥

करोड़ों जन्मों के सब पाप नाश हो जाते हैं, हरि-हरि नाम का जाप करने से कोई संताप नहीं लगता। यदि गुरु के सुन्दर चरण-कमल मन में निवसित हो जाएँ, तो सारे महाविकार भी तन से दूर हो जाते हैं॥ १॥ हे प्राणी! ईश्वर का यशगान करो। सच्चे प्रभु की कथा अकथनीय है और आत्म ज्योति परम-ज्योति में विलीन हो जाती है॥ १॥ रहाउ॥ संतों की कृपा से अविनाशी प्रभु का जाप करने से सारी भूख एवं तृष्णा नाश हो गई है। रात-दिन प्रभु की भक्ति करनी चाहिए, हरि से मिलन की यही निशानी है॥ २॥ प्रभु मुझ पर दयालु हो गया है, जिससे सब विपत्तियाँ मिट गई हैं। गुरु का दर्शन करके निहाल हो गया हूँ। मेरे पूर्व जन्म के कर्मो का भाग्य उदय हो गया है और रसना से नित्य भगवान का गुणगान करता रहता हूँ॥ ३॥ भगवान के संत सदैव मान्य होते हैं, संतजनों के माथे पर स्वीकृत का नाम-रूपी निशान पड़ा होता है। हे नानक! यदि कोई व्यक्ति परमात्मा के दास की चरण-धूलि प्राप्त कर ले तो उसकी परमगति हो जाती है॥ ४॥ ३५॥ ४६॥

रामकली महला ५ ॥ दरसन कउ जाईऐ कुरबानु ॥ चरन कमल हिरदै धरि धिआनु ॥ धूरि संतन की मसतकि लाइ ॥ जनम जनम की दुरमति मलु जाइ ॥ १ ॥ जिसु भेटत मिटै अभिमानु ॥ पारब्रहमु सभु नदरी आवै करि किरपा पूरन भगवान ॥ १ ॥ रहाउ ॥ गुर की कीरति जपीऐ हरि नाउ ॥ गुर की भगति सदा गुण गाउ ॥ गुर की सुरति निकटि करि जानु ॥ गुर का सबदु सति करि मानु ॥ २ ॥ गुर बचनी समसरि सुख दूख ॥ कदे न बिआपै त्रिसना भूख ॥ मनि संतोखु सबदि गुर राजे ॥ जपि गोबिंदु पड़दे सभि काजे ॥ ३ ॥ गुरु परमेसरु गुरु गोविंदु ॥ गुरु दाता दइआल बखसिंदु ॥ गुर चरनी जा का मनु लागा ॥ नानक दास तिसु पूरन भागा ॥ ४ ॥ ३६ ॥ ४७ ॥

गुरु के दर्शन पर कुर्बान जाना चाहिए, हृदय में उसके चरण-कमल का ध्यान करना चाहिए। अपने मस्तक पर संतों की चरण-धूलि लगानी चाहिए, इससे जन्म-जन्मांतर की दुर्मति की मैल दूर हो जाती है॥ १॥ जिस गुरु से भेंट करने से अभिमान मिट जाता है, सब परब्रह्म ही नजर आता है। हे भगवान! अपनी पूर्ण कृपा करो॥ १॥ रहाउ॥ गुरु की कीर्ति यही है कि हरि-नाम का जाप करना चाहिए। गुरु की भक्ति यही है कि सदैव परमात्मा का गुणगान करो। गुरु की स्मृति को अपने निकट समझो। गुरु का शब्द सत्य जान कर मानो॥ २॥ गुरु के उपदेश द्वारा सुख-दुख को समान समझना चाहिए, फिर कभी भी तृष्णा एवं भूख नहीं लगती। शब्द-गुरु द्वारा मन में संतोष पैदा हो जाता है और तृप्ति हो जाती है। गोविंद का भजन करने से सब पाप ढक

जाते हैं॥ ३॥ गुरु ही परमेश्वर एवं गुरु ही गोविन्द है। गुरु ही दाता, दयालु एवं क्षमावान् है। हे नानक ! जिसका मन गुरु के चरणों में लगता है, वही पूर्ण भाग्यवान् है॥ ४॥ ३६॥ ४७॥

रामकली महला ५ ॥ किसु भरवासै बिचरहि भवन ॥ मूड़ मुगध तेरा संगी कवन ॥ रामु संगी तिसु गति नही जानहि ॥ पंच बटवारे से मीत करि मानहि ॥ १ ॥ सो घरु सेवि जितु उधरहि मीत ॥ गुण गोविंद रवीअहि दिनु राती साधसंगि करि मन की प्रीति ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जनमु बिहानो अहंकारि अरु वादि ॥ त्रिपति न आवै बिखिआ सादि ॥ भरमत भरमत महा दुखु पाइआ ॥ तरी न जाई दुतर माइआ ॥ २ ॥ कामि न आवै सु कार कमावै ॥ आपि बीजि आपे ही खावै ॥ राखन कउ दूसर नही कोइ ॥ तउ निसतरै जउ किरपा होइ ॥ ३ ॥ पतित पुनीत प्रभ तेरो नामु ॥ अपने दास कउ कीजै दानु ॥ करि किरपा प्रभ गति करि मेरी ॥ सरणि गही नानक प्रभ तेरी ॥ ४ ॥ ३७ ॥ ४८ ॥

अरे तू किसके भरोसे दुनिया में विचरण कर रहा है, हे मूर्ख ! यहाँ तेरा कौन साथी है ? राम ही तेरा साथी है किन्तु तू उसकी गति को नहीं जानता। काम, क्रोध, लोभ, मोह एवं अहंकार—इन पाँच चोरों को तू अपना मित्र समझ रहा है॥ १॥ हे मित्र ! उस भगवान की भक्ति करो, जिससे तेरा उद्धार हो जाएगा। दिन-रात गोविंद का स्तुतिगान करना चाहिए और मन में साधुओं की संगति से प्रेम करो॥ १॥ रहाउ॥ अहंकार एवं झगड़ों में जन्म व्यर्थ ही व्यतीत हो जाता है। विषय-विकारों के स्वाद में तृप्ति नहीं होती। इधर-उधर भटक कर बड़ा दुख प्राप्त होता है। इस माया रूपी भयानक नदिया से पार नहीं हुआ जा सकता॥ २॥ तू वही कार्य करता है, जो तेरे किसी काम नहीं आना। तू स्वयं ही अपने शुभाशुभ कर्मो का फल भोगता है। भगवान के अतिरिक्त अन्य कोई भी रक्षा करने वाला नहीं है। यदि उसकी कृपा हो जाए तो ही मुक्ति हो सकती है॥ ३॥ हे प्रभु ! तेरा नाम पतितों को पवित्र करने वाला है, अपने दास को भी नाम का दान दीजिए। नानक प्रार्थना करते हैं कि हे प्रभु ! कृपा करके मेरी मुक्ति कर दो, क्योंकि मैंने तेरी ही शरण ली है॥ ४॥ ३७॥ ४८॥

रामकली महला ५ ॥ इह लोके सुखु पाइआ ॥ नही भेटत धरम राइआ ॥ हरि दरगह सोभावंत ॥ फुनि गरभि नाही बसंत ॥ १ ॥ जानी संत की मित्राई ॥ करि किरपा दीनो हरि नामा पूरबि संजोगि मिलाई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ गुर कै चरणि चितु लागा ॥ धंनि धंनि संजोगु सभागा ॥ संत की धूरि लागी मेरै माथे ॥ किलविख दुख सगले मेरे लाथे ॥ २ ॥ साध की सचु टहल कमानी ॥ तब होए मन सुध परानी ॥ जन का सफल दरसु डीठा ॥ नामु प्रभू का घटि घटि वूठा ॥ ३ ॥ मिटाने सभि कलि कलेस ॥ जिस ते उपजे तिसु महि परवेस ॥ प्रगटे आनूप गोविंद ॥ प्रभ पूरे नानक बखसिंद ॥ ४ ॥ ३८ ॥ ४९ ॥

जिसे इहलोक में सुख हासिल हो जाता है, उसकी यमराज से मुलाकात नहीं होती। भगवान के दरबार में वह शोभा का पात्र बन जाता है और दोबारा गर्भ में निवास नहीं करता॥ १॥ मैंने संत की मित्रता जान ली है, उन्होंने कृपा करके हरि-नाम ही दिया है और पूर्व संयोग से ही संतों से मिलाप होता है॥ १॥ रहाउ॥ वह सौभाग्य एवं संयोग धन्य है, जब गुरु के चरणों में चित्त लगा। जब संतों की चरण-धूलि मेरे माथे पर लगी तो सब दुख-क्लेश एवं पाप दूर हो गए॥ २॥ हे प्राणी ! मन तभी शुद्ध होता है, जब श्रद्धा से साधु-महात्मा की सच्ची सेवा की जाती है। जिसने संतजनों का सफल दर्शन किया है, उसे प्रभु का नाम प्रत्येक हृदय में निवसित लगता है॥ ३॥ सभी कलह-क्लेश मिट गए हैं और जिससे उत्पन्न हुए थे, उसमें प्रविष्ट हो गए हैं। गोविंद

का अनुपम प्रताप प्रगट हुआ है। हे नानक ! पूर्ण प्रभु क्षमावान् है॥ ४॥ ३८॥ ४६॥

रामकली महला ५ ॥ गऊ कउ चारे सारदूलु ॥ कउडी का लख हूआ मूलु ॥ बकरी कउ हसती प्रतिपाले ॥ अपना प्रभु नदरि निहाले ॥ १ ॥ क्रिपा निधान प्रीतम प्रभ मेरे ॥ बरनि न साकउ बहु गुन तेरे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ दीसत मासु न खाइ बिलाई ॥ महा कसाबि छुरी सटि पाई ॥ करणहार प्रभु हिरदै वूठा ॥ फाथी मछुली का जाला तूटा ॥ २ ॥ सूके कासट हरे चलूल ॥ ऊचै थलि फूले कमल अनूप ॥ अगनि निवारी सतिगुर देव ॥ सेवकु अपनी लाइओ सेव ॥ ३ ॥ अकिरतघणा का करे उधारु ॥ प्रभु मेरा है सदा दइआरु ॥ संत जना का सदा सहाई ॥ चरन कमल नानक सरणाई ॥ ४ ॥ ३६ ॥ ५० ॥

प्रभु ने ऐसी कृपा-दृष्टि कर दी है कि नम्रता रूपी गाय को अहम् रूपी शेर चरा रहा है, देह रूपी कौड़ी का मूल्य लाख रुपए हो गया है तथा हाथी बकरी का पालन-पोषण कर रहा है॥ १॥ हे मेरे प्रियतम प्रभु ! तू कृपानिधि है, मैं तेरे अनेक गुणों का बखान नहीं कर सकता॥ १॥ रहाउ॥ सृजनहार प्रभु हृदय में आ बसा है, सामने नजर आ रहा विकार रूपी मांस तृष्णा रूपी बिल्ली नहीं खा रही। क्रोध रूपी निर्दयी कसाई ने हिंसा रूपी छुरी अपने हाथ से फैंक दी है, फँसी हुई मछली का जाल टूट गया है॥ २॥ सूखे हुए वृक्ष हरे भरे हो गए हैं, ऊँचे रेगिस्तान पर भी सुन्दर कमल के फूल खिल गए हैं। सतगुरु ने तृष्णाग्नि बुझा दी है और सेवक को अपनी सेवा में लगा लिया है॥ ३॥ मेरा प्रभु सदा ही दयालु है, वह कृतघ्न जीवों का भी उद्धार कर देता है। वह संतजनों का सदा सहायक है और नानक ने भी उसके चरणों की शरण ली है॥ ४॥ ३६॥ ५०॥

रामकली महला ५ ॥ पंच सिंघ राखे प्रभ मारि ॥ दस बिघिआड़ी लई निवारि ॥ तीनि आवरत की चूकी घेर ॥ साधसंगि चूके भै फेर ॥ १ ॥ सिमरि सिमरि जीवा गोविंद ॥ करि किरपा राखिओ दासु अपना सदा सदा साचा बखसिंद ॥ १ ॥ रहाउ ॥ दाझि गए त्रिण पाप सुमेर ॥ जपि जपि नामु पूजे प्रभ पैर ॥ अनद रूप प्रगटिओ सभ थानि ॥ प्रेम भगति जोरी सुख मानि ॥ २ ॥ सागरु तरिओ बाछर खोज ॥ खेदु न पाइओ नह फुनि रोज ॥ सिंधु समाइओ घटुके माहि ॥ करणहार कउ किछु अचरजु नाहि ॥ ३ ॥ जउ छूटउ तउ जाइ पइआल ॥ जउ काढिओ तउ नदरि निहाल ॥ पाप पुंन हमरै वसि नाहि ॥ रसकि रसकि नानक गुण गाहि ॥ ४ ॥ ४० ॥ ५१ ॥

काम, क्रोध, लोभ, मोह एवं अहंकार रूपी पाँच शेरों को प्रभु ने मार दिया है, दस इन्द्रिय रूपी बघियाड़ों का भी अंत कर दिया है, माया के रज, तम एवं सत इन तीन गुणों की भूलभुलैया भी खत्म हो गई है और साधुओं की संगति से जन्म-मरण के चक्र का भय समाप्त हो गया है॥ १॥ मैं तो गोविंद का स्मरण करके ही जीवन पा रहा हूँ। सच्चा प्रभु सर्वदा क्षमावान् है, उसने कृपा करके अपने दास की रक्षा की है॥ १॥ रहाउ॥ पापों का सुमेर पर्वत घास के तिनकों की तरह जलकर राख हो गया है। मैं नाम जप-जपकर प्रभु के चरणों की पूजा कर रहा हूँ। आनंदरूप प्रभु सब स्थानों में प्रगट हो गया है और प्रेम-भक्ति में ध्यान लगाने से सुख उपलब्ध हो गया है॥ २॥ मैं संसार-सागर से ऐसे तैर गया हूँ, जैसे सागर पानी से भरे हुए बछड़े के पैर का चिन्ह था। अब मुझे कोई दुख एवं चिंता नहीं है। ईश्वर रूपी समुद्र मेरे हृदय रूपी घड़े में समा गया है। उस करने वाले परमेश्वर के लिए यह कोई अद्भुत बात नहीं है॥ ३॥ यदि मुझसे परमात्मा का आंचल छूटता है तो पाताल में जा गिरता हूँ, परन्तु जब वह मुझे बाहर निकाल लेता है तो उसकी

करुणा-दृष्टि से आनंदित हो जाता हूँ। पाप-पुण्य कर्म हमारे वश में नहीं है। हे नानक! खूब मज़ा ले लेकर ईश्वर के ही गुण गा रहा हूँ॥ ४॥ ४०॥ ५१॥

रामकली महला ५ ॥ ना तनु तेरा ना मनु तोहि ॥ माइआ मोहि बिआपिआ धोहि ॥ कुदम करै गाडर जिउ छेल ॥ अचिंतु जालु कालु चक्रु पेल ॥ १ ॥ हरि चरन कमल सरनाइ मना ॥ राम नामु जपि संगि सहाई गुरमुखि पावहि साचु धना ॥ १ ॥ रहाउ ॥ ऊने काज न होवत पूरे ॥ कामि क्रोधि मदि सद ही झूरे ॥ करै बिकार जीअरे कै ताई ॥ गाफल संगि न तसूआ जाई ॥ २ ॥ धरत धोह अनिक छल जानै ॥ कउडी कउडी कउ खाकु सिरि छानै ॥ जिनि दीआ तिसै न चेतै मूलि ॥ मिथिआ लोभु न उतरै सूलु ॥ ३ ॥ पारब्रहम जब भए दइआल ॥ इहु मनु होआ साध रवाल ॥ हसत कमल लड़ि लीनो लाइ ॥ नानक साचै साचि समाइ ॥ ४ ॥ ४१ ॥ ५२ ॥

हे प्राणी! न यह शरीर तेरा है और न ही मन तेरे वश में है। तू मोह-माया के कारण धोखे में फँसा हुआ है। तू भेड़ के मेमने की तरह खेलता कूदता है और अचानक ही मृत्यु के जाल में फँस जाता है॥ १॥ हे मन! प्रभु-चरणों की शरण ग्रहण करो, राम नाम का जाप करो जो तेरा साथी एवं सहायक है। गुरुमुख ही नाम रूपी धन प्राप्त करता है॥ १॥ रहाउ॥ इन्सान के अधूरे कार्य पूरे नहीं होते, वह काम, क्रोध के नशे में सदैव परेशान होता है। हे गाफिल! तेरे साथ कुछ भी नहीं जाने वाला, परन्तु तू अपने मन के लिए अनेक पाप करता रहता है॥ २॥ तू लोगों के साथ बड़ा छल-कपट एवं अनेक प्रकार के धोखे करता है। कौड़ी-कौड़ी के लिए तू अपने सिर पर बदनामी की खाक डलवाता रहता है। जिस परमेश्वर ने अमूल्य जीवन दिया है, उसे तू बिल्कुल याद नहीं करता। झूठे लोभ के कारण तेरी पीड़ा दूर नहीं होती॥ ३॥ जब परब्रह्म दयालु हो जाता है तो यह मन साधुओं की चरण-धूलि बन जाता है। हे नानक! ईश्वर जब सुन्दर हाथों से अपने संग मिला लेता है तो जीव परम सत्य में ही विलीन हो जाता है॥ ४॥ ४१॥ ५२॥

रामकली महला ५ ॥ राजा राम की सरणाइ ॥ निरभउ भए गोबिंद गुन गावत साधसंगि दुखु जाइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जा कै रामु बसै मन माही ॥ सो जनु दुतरु पेखत नाही ॥ सगले काज सवारे अपने ॥ हरि हरि नामु रसन नित जपने ॥ १ ॥ जिस कै मसतकि हाथु गुरु धरै ॥ सो दासु अदेसा काहे करै ॥ जनम मरण की चूकी काणि ॥ पूरे गुर ऊपरि कुरबाण ॥ २ ॥ गुरु परमेसरु भेटि निहाल ॥ सो दरसनु पाए जिसु होइ दइआलु ॥ पारब्रहमु जिसु किरपा करै ॥ साधसंगि सो भवजलु तरै ॥ ३ ॥ अंम्रितु पीवहु साध पिआरे ॥ मुख ऊजल साचै दरबारे ॥ अनद करहु तजि सगल बिकार ॥ नानक हरि जपि उतरहु पारि ॥ ४ ॥ ४२ ॥ ५३ ॥

जो भी राम की शरण में आया है, वह उसका गुणगान करके निर्भय हो गया है। साधुओं की संगति करने से हर प्रकार के दुख दूर हो जाते हैं॥ १॥ रहाउ॥ जिसके मन में राम स्थित हो जाता है, उसे मुश्किल से तैरने वाला संसार-सागर दिखाई नहीं देता। जो अपनी जिह्वा से नित्य हरि-नाम का जाप करता है, उसके सभी कार्य सम्पूर्ण हो जाते हैं॥ १॥ जिसके मस्तक पर गुरु अपना (आशीर्वाद का) हाथ रख देता है, उस दास को किसी बात की चिंता नहीं रहती। उसकी जन्म-मरण की चिंता समाप्त हो जाती है और वह पूर्ण गुरु पर कुर्बान जाता है॥ २॥ गुरु-परमेश्वर से मिलकर मन निहाल हो जाता है। उसके दर्शन वही प्राप्त करता है, जिस पर वह दयालु होता है। परब्रह्म जिस पर अपनी कृपा करता है, वह साधुओं की संगति करके भवसागर से तैर जाता

है॥ ३॥ हे प्यारे साधुजनो! नामामृत का पान करो; सत्य के दरबार में मुख उज्जवल हो जाएगा। सब विषय-विकारों को त्यागकर आनंद करो। हे नानक! भगवान का नाम-जपकर संसार-सागर से पार हो जाओ॥ ४॥ ४२॥ ५३॥

रामकली महला ५ ॥ ईंधन ते बैसंतरु भागै ॥ माटी कउ जलु दह दिस तिआगै ॥ ऊपरि चरन तलै आकासु ॥ घट महि सिंधु कीओ परगासु ॥ १ ॥ ऐसा संम्रथु हरि जीउ आपि ॥ निमख न बिसरै जीअ भगतन कै आठ पहर मन ता कउ जापि ॥ १ ॥ रहाउ ॥ प्रथमे माखनु पाछै दूधु ॥ मैलू कीनो साबुनु सूधु ॥ भै ते निरभउ डरता फिरै ॥ होंदी कउ अणहोंदी हिरै ॥ २ ॥ देही गुपत बिदेही दीसै ॥ सगले साजि करत जगदीसै ॥ ठगणहार अणठगदा ठागै ॥ बिनु वखर फिरि फिरि उठि लागै ॥ ३ ॥ संत सभा मिलि करहु बखिआण ॥ सिंम्रिति सासत बेद पुराण ॥ ब्रहम बीचारु बीचारे कोइ ॥ नानक ता की परम गति होइ ॥ ४ ॥ ४३ ॥ ५४ ॥

परमेश्वर की लीला इतनी विचित्र है कि यदि उसकी मर्जी हो तो अग्नि भी लकड़ी को जलाना छोड़ देती है। जल मिट्टी को स्वयं में घोल लेता है, पर जल मिट्टी को घोलने की जगह दसों दिशाओं से त्याग देता है अर्थात् पृथ्वी समुद्र में बसती है किन्तु समुद्र इसे स्वयं में डुबोता नहीं। माता के गर्भ में बालक के पैर ऊपर होते हैं और सिर नीचे होता है। घट में प्रकाश रूपी सिन्धु समाया हुआ है॥ १॥ परमेश्वर सर्वकला समर्थ है, भक्तों को एक पल भी अपने दिल से वह नहीं भूलता। मन में आठों प्रहर उसका जाप करना चाहिए॥ १॥ रहाउ॥ सर्वप्रथम परमात्मा रूपी माखन था और तदुपरांत जगत् रूपी दूध पैदा हुआ है। बालक के पीने के लिए माता के स्तनों के रक्त ने साबुन जैसा सफेद शुद्ध दूध पैदा किया है। परमात्मा का अंश जीवात्मा निडर है किन्तु मृत्यु से डरता है। होनी को अनहोनी ले जाती है॥ २॥ मनुष्य के शरीर में रहने वाली आत्मा गुप्त है, पर शरीर ही नजर आता है। सब को बनाकर जगदीश्वर लीला करता रहता है। छलने वाली माया न छले जाने वाले जीव को छल लेती है। नाम रूपी धन के बिना जीव बार-बार जन्म-मरण के चक्र में पड़ता है॥ ३॥ चाहे संतों की सभा में मिलकर स्मृतियाँ, शास्त्र एवं वेद-पुराणों का बखान करके देख लो। जो ब्रह्म की महिमा का विचार करता है, हे नानक! उसकी परमगति हो जाती है॥ ४॥ ४३॥ ५४॥

रामकली महला ५ ॥ जो तिसु भावै सो थीआ ॥ सदा सदा हरि की सरणाई प्रभ बिनु नाही आन बीआ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ पुतु कलतु लखिमी दीसै इन महि किछू न संगि लीआ ॥ बिखै ठगउरी खाइ भुलाना माइआ मंदरु तिआगि गइआ ॥ १ ॥ निंदा करि करि बहुतु विगूता गरभ जोनि महि किरति पइआ ॥ पुरब कमाणे छोडहि नाही जमदूति ग्रासिओ महा भइआ ॥ २ ॥ बोलै झूठु कमावै अवरा त्रिसन न बूझै बहुतु हइआ ॥ असाध रोगु उपजिआ संत दूखनि देह बिनासी महा खइआ ॥ ३ ॥ जिनहि निवाजे तिन ही साजे आपे कीने संत जइआ ॥ नानक दास कंठि लाइ राखे करि किरपा पारब्रहम मइआ ॥ ४ ॥ ४४ ॥ ५५ ॥

जो ईश्वर को उपयुक्त लगा है, वही हुआ है। सदैव भगवान की शरण ग्रहण करो, उसके अतिरिक्त अन्य कोई नहीं है॥ १॥ रहाउ॥ पुत्र, स्त्री एवं लक्ष्मी जो कुछ नजर आता है, इन में से कुछ भी जीव अपने साथ नहीं लेकर गया। माया रूपी ठग बूटी को खाकर जीव भूला हुआ है लेकिन अन्त में माया एवं घर इत्यादि सबकुछ त्याग वह चला जाता है॥ १॥ दूसरों की निंदा कर करके जीव बहुत दुखी हुआ है एवं अपने कर्मों के अनुसार गर्भ योनियों में पड़ता रहा है। पूर्व जन्म

में किए कर्म जीव का साथ नहीं छोड़ते और भयानक यमदूत उसे अपना ग्रास बना लेते हैं॥ २॥ मनुष्य झूठ बोलता है, वह बताता कुछ और है और करता कुछ अन्य है। यह बड़ी शर्म की बात है कि उसकी तृष्णा नहीं बुझती। संतों पर झूठे दोष लगाने से उसके शरीर में असाध्य रोग पैदा हो जाता है, जिससे उसका शरीर नष्ट हो जाता है॥ ३॥ जिस परमात्मा ने संतों को यश प्रदान किया है, उसने ही उन्हें पैदा किया है और स्वयं ही संतों की जय-जयकार करवाई है। हे नानक! परब्रह्म ने अपनी कृपा करके संतों को गले से लगाकर रखा हुआ है॥ ४॥ ४४॥ ५५॥

रामकली महला ५ ॥ ऐसा पूरा गुरदेउ सहाई ॥ जा का सिमरनु बिरथा न जाई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ दरसनु पेखत होइ निहालु ॥ जा की धूरि काटै जम जालु ॥ चरन कमल बसे मेरे मन के ॥ कारज सवारे सगले तन के ॥ १ ॥ जा कै मसतकि राखै हाथु ॥ प्रभु मेरो अनाथ को नाथु ॥ पतित उधारणु क्रिपा निधानु ॥ सदा सदा जाईऐ कुरबानु ॥ २ ॥ निरमल मंतु देइ जिसु दानु ॥ तजहि बिकार बिनसै अभिमानु ॥ एकु धिआईऐ साध कै संगि ॥ पाप बिनासे नाम कै रंगि ॥ ३ ॥ गुर परमेसुर सगल निवास ॥ घटि घटि रवि रहिआ गुणतास ॥ दरसु देहि धारउ प्रभ आस ॥ नित नानकु चितवै सचु अरदासि ॥ ४ ॥ ४५ ॥ ५६ ॥

मेरा पूर्ण गुरुदेव ऐसा सहायक है, जिसका सिमरन कभी व्यर्थ नहीं जाता॥ १॥ रहाउ॥ उसके दर्शन करने से मन निहाल हो जाता है, उसकी चरण-धूलि मृत्यु का जाल काट देती है। उसके चरण-कमल मेरे मन में बसे हुए हैं, उसने मेरे तन के सभी कार्य संवार दिए हैं॥ १॥ जिसके मस्तक पर मेरा प्रभु हाथ रख देता है, वह अनाथ भी सनाथ बन जाता है। वह पतितों का उद्धार करने वाला एवं कृपा का भण्डार है, इसलिए सदैव उस पर कुर्बान जाना चाहिए॥ २॥ वह जिसे निर्मल नाम-मंत्र का दान देता है, उसका अभिमान नष्ट हो जाता है और वह विकारों को त्याग देता है। साधुओं की संगति में केवल परमात्मा का ही ध्यान करना चाहिए। नाम के रंग से सब पापों का नाश हो जाता है॥ ३॥ सब जीवों में गुरु-परमेश्वर का ही निवास है। वह गुणों का भण्डार घट-घट में व्यापक है। हे प्रभु! तेरी ही आशा है, अपने दर्शन दीजिए। मेरी यही सच्ची प्रार्थना है कि नानक नित्य तुझे स्मरण करता रहे॥ ४॥ ४५॥ ५६॥

रागु रामकली महला ५ घरु २ दुपदे १ओं सतिगुर प्रसादि ॥

गावहु राम के गुण गीत ॥ नामु जपत परम सुखु पाईऐ आवा गउणु मिटै मेरे मीत ॥ १ ॥ रहाउ ॥ गुण गावत होवत परगासु ॥ चरन कमल महि होइ निवासु ॥ १ ॥ संतसंगति महि होइ उधारु ॥ नानक भवजलु उतरसि पारि ॥ २ ॥ १ ॥ ५७ ॥

नित्य राम के गुण गीत गाओ। हे मेरे मित्र! राम नाम जपने से परमसुख प्राप्त होता है और आवागमन मिट जाता है॥ १॥ रहाउ॥ उसका गुणगान करने से मन में सत्य का प्रकाश हो जाता है और चरण-कमल में निवास हो जाता है॥ १॥ हे नानक! संतों की संगति करने से जीव का उद्धार हो जाता है और वह भवसागर से पार हो जाता है॥ २॥ १॥ ५७॥

रामकली महला ५ ॥ गुरु पूरा मेरा गुरु पूरा ॥ राम नामु जपि सदा सुहेले सगल बिनासे रोग कूरा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ एकु अराधहु साचा सोइ ॥ जा की सरनि सदा सुखु होइ ॥ १ ॥ नीद सुहेली नाम की लागी भूख ॥ हरि सिमरत बिनसे सभ दूख ॥ २ ॥ सहजि अनंद करहु मेरे भाई ॥ गुरि पूरै सभ चिंत मिटाई ॥ ३ ॥ आठ पहर प्रभ का जपु जापि ॥ नानक राखा होआ आपि ॥ ४ ॥ २ ॥ ५८॥

मेरा गुरु सर्वकला सम्पूर्ण है। राम नाम का जाप करने से सदा सुख बना रहता है और मिथ्या माया से उत्पन्न हुए सब रोग नाश हो जाते हैं॥ १॥ रहाउ॥ एक परमेश्वर ही सत्य है, इसलिए उसकी ही आराधना करो; जिसकी शरण लेने से सदा सुख उपलब्ध होता है॥ १॥ अब सुख की नींद प्राप्त हो गई है और नाम की भूख लग गई है। भगवान का सिमरन करने से सारे दुख नाश हो गए हैं॥ २॥ हे मेरे भाई ! सहजावस्था में आनंद करो; पूर्ण गुरु ने सारी चिंता मिटा दी है॥ ३॥ हे नानक! आठों प्रहर प्रभु नाम का जाप जपते रहो; वह स्वयं ही रखवाला बन जाता है॥ ४॥ २॥ ५८॥

रागु रामकली महला ५ पड़ताल घरु ३ ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

नरनरह नमसकारं ॥ जलन थलन बसुध गगन एक एकंकारं ॥ १ ॥ रहाउ ॥ हरन धरन पुन पुनह करन ॥ नह गिरह निरंहारं ॥ १ ॥ गंभीर धीर नाम हीर ऊच मूच अपारं ॥ करन केल गुण अमोल नानक बलिहारं ॥ २ ॥ १ ॥ ५९ ॥

पुरुषोत्तम परमेश्वर को हमारा शत्-शत् प्रणाम है। जल, थल, पृथ्वी एवं आकाश सब में एक ओंकार का ही निवास है॥ १॥ रहाउ॥ वह सृष्टि का संहार करने वाला, पालनकर्ता एवं पुनः पुनः पैदा करने वाला है। उसका कोई घर नहीं है और न ही वह भोजन करता है॥ १॥ वह गहन-गंभीर, धैर्यवान, नाम का अमूल्य हीरा, सर्वोच्च एवं अपरम्पार है। हे नानक ! उस अद्‌भुत लीला करने वाले, अमूल्य गुणों के भण्डार पर हम बलिहारी जाते हैं॥ २॥ १॥ ५९॥

रामकली महला ५ ॥ रूप रंग सुगंध भोग तिआगि चले माइआ छले कनिक कामिनी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ भंडार दरब अरब खरब पेखि लीला मनु सधारै ॥ नह संगि गामनी ॥ १ ॥ सुत कलत्र भ्रात मीत उरझि परिओ भरमि मोहिओ इह बिरख छामनी ॥ चरन कमल सरन नानक सुखु संत भावनी ॥ २ ॥ २ ॥ ६० ॥

स्वर्ण एवं कामिनी रूपी माया के छले हुए अनेक जीव रूप-रंगों, सुगन्धियों एवं भोगने वाले पदार्थों को त्याग कर दुनिया से चले गए हैं॥ १॥ रहाउ॥ धन से भरे हुए अपने अरबों-खरबों के भण्डार एवं खेल-तमाशों को देखकर जीव मन को धीरज देता रहता है परन्तु अन्तिम समय यह सबकुछ उसके साथ नहीं जाता॥ १॥ भ्रम में फँसा हुआ जीव अपने पुत्र, पत्नी, भाई एवं मित्र के मोह में उलझा हुआ है, परन्तु यह सब पेड़ की छाया के समान नाशवान् है। हे नानक ! परमात्मा के चरणों की शरण का सुख ही संतों को भला लगता है॥ २॥ २॥ ६०॥

ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ रागु रामकली महला ९ तिपदे ॥

रे मन ओट लेहु हरि नामा ॥ जा कै सिमरनि दुरमति नासै पावहि पदु निरबाना ॥ १ ॥ रहाउ ॥ बडभागी तिह जन कउ जानहु जो हरि के गुन गावै ॥ जनम जनम के पाप खोइ कै फुनि बैकुंठि सिधावै ॥ १ ॥ अजामल कउ अंत काल महि नाराइन सुधि आई ॥ जां गति कउ जोगीसुर बाछत सो गति छिन महि पाई ॥ २ ॥ नाहिन गुनु नाहिन कछु बिदिआ धरमु कउनु गजि कीना ॥ नानक बिरदु राम का देखहु अभै दानु तिह दीना ॥ ३ ॥ १ ॥

हे मन ! परमात्मा के नाम का सहारा लो, उसका सिमरन करने से दुर्मति नाश हो जाती है तथा निर्वाण पद प्राप्त होता है॥ १॥ रहाउ॥ उस इन्सान को खुशनसीब समझो, जो भगवान के गुण गाता है। वह जन्म-जन्मांतर के पापों को नाश करके बैकुण्ठ में पहुँच जाता है॥ १॥ जब

अन्तिम समय पापी अजामल को नारायण की याद आई तो उसने एक क्षण में ही ऐसी गति प्राप्त कर ली, जिस गति के बड़े-बड़े योगीश्वर भी अभिलाषी हैं॥ २॥ गजिन्द्र हाथी में न कोई गुण था, न उसने कुछ विद्या पढ़ी थी, फिर उसने कौन-सा धर्म-कर्म किया था ? हे नानक ! राम जी का बिरद् देखो, उसने मगरमच्छ के मुँह से बचाकर उसे भी अभयदान दिया था॥ ३॥ १॥

रामकली महला ६ ॥ साधो कउन जुगति अब कीजै ॥ जा ते दुरमति सगल बिनासै राम भगति मनु भीजै ॥ १ ॥ रहाउ ॥ मनु माइआ महि उरझि रहिओ है बूझै नह कछु गिआना ॥ कउनु नामु जगु जा कै सिमरै पावै पदु निरबाना ॥ १ ॥ भए दइआल क्रिपाल संत जन तब इह बात बताई ॥ सरब धरम मानो तिह कीए जिह प्रभ कीरति गाई ॥ २ ॥ राम नामु नरु निसि बासुर महि निमख एक उरि धारै ॥ जम को त्रासु मिटै नानक तिह अपुनो जनमु सवारै ॥ ३ ॥ २ ॥

हे साधुजनो ! अब कौन-सी युक्ति की जाए, जिससे सारी दुर्मति नाश हो जाए और मन राम की भक्ति में भीग जाए॥ १॥ रहाउ॥ यह मन तो माया में उलझा रहता है और ज्ञान को बिल्कुल नहीं जानता। जगत में ऐसा कौन-सा नाम है, जिसका सिमरन करने से निर्वाण पद प्राप्त हो जाता है॥ १॥ जब संतजन दयालु कृपालु हो गए तो उन्होंने यह ज्ञान की बात बताई है कि जिसने प्रभु का कीर्तिगान किया है, समझ लो उसने सब धर्म-कर्म कर लिए हैं॥ २॥ हे नानक ! जो व्यक्ति रात-दिन एक पल भर के लिए राम नाम को अपने हृदय में धारण करता है, उसका मृत्यु का भय मिट जाता है और वह अपना जन्म संवार लेता है॥ ३॥ २॥

रामकली महला ६ ॥ प्रानी नाराइन सुधि लेहि ॥ छिनु छिनु अउध घटै निसि बासुर ब्रिथा जातु है देह ॥ १ ॥ रहाउ ॥ तरनापो बिखिअन सिउ खोइओ बालपनु अगिआना ॥ बिरधि भइओ अजहू नही समझै कउन कुमति उरझाना ॥ १ ॥ मानस जनमु दीओ जिह ठाकुरि सो तै किउ बिसराइओ ॥ मुकतु होत नर जा कै सिमरै निमख न ता कउ गाइओ ॥ २ ॥ माइआ को मदु कहा करतु है संगि न काहू जाई ॥ नानकु कहतु चेति चिंतामनि होइ है अंति सहाई ॥ ३ ॥ ३ ॥ ८१ ॥

हे प्राणी ! नारायण का ध्यान करो; चूंकि क्षण-क्षण तेरी आयु कम होती जा रही है और रात-दिन तेरा शरीर व्यर्थ जा रहा है॥ १॥ तेरा बचपन अज्ञानता में बीत गया और तरुणावस्था विषय-विकारों में गंवा दी। अब तू बूढ़ा हो गया है, पर अभी भी तू नहीं समझ रहा। फिर कौन-सी खोटी बुद्धि में उलझा हुआ है॥ १॥ जिस ठाकुर जी ने तुझे मनुष्य-जन्म दिया है, तूने उसे क्यों भुला दिया है ? जिसका सिमरन करने से मुक्ति हो जाती है, तूने क्षण भर भी उसका यशगान नहीं किया॥ २॥ तू धन-दौलत का इतना अभिमान क्यों करता है ? अंतिम समय यह किसी के साथ नहीं जाती। नानक कहते हैं कि अरे भाई ! चिंतामणि परमेश्वर का स्मरण करो; अन्त में वही तेरा मददगार होगा॥ ३॥ ३॥ ८१॥

रामकली महला १ असटपदीआ ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

सोई चंदु चड़हि से तारे सोई दिनीअरु तपत रहै ॥ सा धरती सो पउणु झुलारे जुग जीअ खेले थाव कैसे ॥ १ ॥ जीवन तलब निवारि ॥ होवै परवाणा करहि धिङाणा कलि लखण वीचारि ॥ १ ॥ रहाउ ॥ कितै देसि न आइआ सुणीऐ तीरथ पासि न बैठा ॥ दाता दानु करे तह नाही महल उसारि न बैठा ॥ २ ॥ जे को सतु करे सो छीजै तप घरि तपु न होई ॥ जे को नाउ लए बदनावी कलि के लखण एई ॥ ३ ॥ जिसु सिकदारी तिसहि खुआरी चाकर केहे डरणा ॥ जा सिकदारै पवै जंजीरी ता चाकर हथहु मरणा ॥ ४ ॥ आखु गुणा कलि आईऐ ॥ तिहु जुग केरा रहिआ तपावसु जे गुण देहि त

पाईऐ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ कलि कलवाली सरा निबेड़ी काजी क्रिसना होआ ॥ बाणी ब्रहमा बेदु अथरबणु करणी कीरति लहिआ ॥ ५ ॥ पति विणु पूजा सत विणु संजमु जत विणु काहे जनेऊ ॥ नावहु धोवहु तिलकु चड़ावहु सुच विणु सोच न होई ॥ ६ ॥ कलि परवाणु कतेब कुराणु ॥ पोथी पंडित रहे पुराण ॥ नानक नाउ भइआ रहमाणु ॥ करि करता तू एको जाणु ॥ ७ ॥ नानक नामु मिलै वडिआई एदू उपरि करमु नही ॥ जे घरि होदै मंगणि जाईऐ फिरि ओलामा मिलै तही ॥ ८ ॥ १ ॥

आसमान में वही चाँद और सितारे चमक रहे हैं तथा वही सूर्य तप रहा है। वही धरती है और वही पवन झूल रही है। यह किस तरह माना जा सकता है कि कोई युग जीवों में क्रियाशील होता है ?॥ १॥ अपने जीवन की लालसा छोड़ दो। जो व्यक्ति मासूमों पर अत्याचार करता है, उसकी सत्ता को माना जाता है। इसे कलियुग के लक्षण समझो॥ १॥ रहाउ॥ किसी से ऐसा नहीं सुना कि कलियुग किसी देश में आया है और न ही वह किसी तीर्थ के पास बैठा हुआ है। जिधर कोई दानी दान कर रहा है, उधर भी कलियुग नहीं और किसी विशेष स्थान पर महल का निर्माण करके भी नहीं बैठा हुआ॥ २॥ यदि कोई सत्य, धर्म या नेक आचरण करता है तो वह ख्वार होता है। यदि कोई तपस्या करता है तो उसकी तपस्या सफल नहीं होती। यदि कोई परमात्मा का नाम लेता है तो लोगों में उसकी बदनामी होती है। यही कलियुग के लक्षण हैं॥ ३॥ जिस व्यक्ति को शासन मिलता है तो वह भी ख्वार होता है। नौकरों को किसी प्रकार का कोई डर नहीं होता ? जब शासक को जंजीरें पड़ती हैं तो नौकरों के हाथों ही उसकी मृत्यु होती है अर्थात् नौकर ही मालिक से धोखा करते हैं॥ ४॥ कलियुग आ गया है, इसलिए ईश्वर के गुण गाओ। सत्य, त्रैता एवं द्वापर इन तीनों युगों का न्याय अब समाप्त हो गया है। इस युग में ईश्वर का गुणगान ही सबसे बड़ी उपलब्धि एवं मुक्ति का साधन है॥ १॥ रहाउ॥ कलह-क्लेश वाले इस कलियुग में इस्लामी शरह (कानून) ही फैसले करता है और काजी नीले वस्त्र पहनकर कृष्ण बना हुआ है। इस कलियुग में ब्रह्मा द्वारा रचित अथर्ववेद प्रधान है और किए गए कर्मों के द्वारा कीर्ति अथवा अपकीर्ति मिलती है॥ ५॥ परमात्मा के बिना अन्य देवताओं की पूजा, सत्य के बिना संयम एवं यतीत्व के बिना जनेऊ धारण करना किस काम के हैं ? आप तीर्थों में स्नान करते हो, शरीर को मल-मलकर धोते तथा माथे पर तिलक लगाते हो किन्तु मन की पवित्रता के बिना शरीर शुद्ध नहीं होता॥ ६॥ अब कतेब एवं कुरान ही कलियुग में मान्य हो गए हैं और पण्डितों के धार्मिक ग्रंथों एवं पुराणों का महत्व नहीं रहा। हे नानक ! उस परमात्मा का नाम रहमान हो गया है, लेकिन उस रचयिता को एक ही समझो॥ ७॥ हे नानक ! जो परमात्मा का नाम जपता है, उसे ही यश मिलता है, इससे ऊपर अन्य कोई कर्म नहीं। यदि किसी मनुष्य के हृदय-घर में नाम रूपी वस्तु पड़ी हो और वह इसे किसी अन्य से मांगने जाए तो उसे शिकायत ही मिलती है॥ ८॥ १॥

रामकली महला १ ॥ जगु परबोधहि मड़ी बधावहि ॥ आसणु तिआगि काहे सचु पावहि ॥ ममता मोहु कामणि हितकारी ॥ ना अउधूती ना संसारी ॥ १ ॥ जोगी बैसि रहहु दुबिधा दुखु भागै ॥ घरि घरि मागत लाज न लागै ॥ १ ॥ रहाउ ॥ गावहि गीत न चीनहि आपु ॥ किउ लागी निवरै परतापु ॥ गुर कै सबदि रचै मन भाइ ॥ भिखिआ सहज वीचारी खाइ ॥ २ ॥ भसम चड़ाइ करहि पाखंडु ॥ माइआ मोहि सहहि जम डंडु ॥ फूटै खापरु भीख न भाइ ॥ बंधनि बाधिआ आवै जाइ ॥ ३ ॥ बिंदु न राखहि जती कहावहि ॥ माई मागत त्रै लोभावहि ॥ निरदइआ नही जोति उजाला ॥ बूडत बूडे सरब जंजाला ॥ ४ ॥ भेख करहि खिंथा बहु थटूआ ॥ झूठो खेलु खेलै बहु नटूआ ॥ अंतरि अगनि चिंता बहु जारे ॥ विणु करमा कैसे उतरसि पारे ॥ ५ ॥ मुंद्रा फटक बनाई कानि ॥ मुकति नही बिदिआ

बिगिआनि ॥ जिहवा इंद्री सादि लुोभाना ॥ पसू भए नही मिटै नीसाना ॥ ६ ॥ त्रिबिधि लोगा त्रिबिधि जोगा ॥ सबदु वीचारै चूकसि सोगा ॥ ऊजलु साचु सु सबदु होइ ॥ जोगी जुगति वीचारे सोइ ॥ ७ ॥ तुझ पहि नउ निधि तू करणै जोगु ॥ थापि उथापे करे सु होगु ॥ जतु सतु संजमु सचु सुचीतु ॥ नानक जोगी त्रिभवण मीतु ॥ ८॥ २ ॥

हे योगी! तू जगत् को उपदेश देता है परन्तु पेट-पूजा द्वारा अपना तन रूपी मठ बढ़ा रहा है। तू अपना आसन त्याग कर सत्य को कैसे प्राप्त कर सकता है। तू नारी से प्रेम करने वाला है और ममता-मोह में फँसा हुआ है। न तू अवधूत है और न ही गृहस्थी है॥ १॥ हे योगी! अपना आसन लगाकर बैठे रहो, तेरी दुविधा एवं दुख दूर हो जाएगा। तुझे घर-घर माँगते शर्म नहीं आती॥ १॥ रहाउ॥ दिखावे के रूप में तू गीत गाता रहता है परन्तु अपने आत्मस्वरूप को नहीं पहचानता। तेरे मन को लगी तृष्णाग्नि कैसे बुझ सकती है? यदि तेरे मन में गुरु के शब्द से प्रेम बन जाए तो तुझे सिमरन द्वारा परमानंद की भिक्षा का भोजन मिलेगा॥ २॥ तू अपने शरीर पर भस्म लगाकर पाखण्ड करता है और मोह-माया में फँसकर यम का दण्ड भोगता है। तेरा टूटा हुआ हृदय रूपी खप्पर प्रभु-नाम की भिक्षा नहीं प्राप्त करता, जिस कारण बन्धनों में बँधकर जन्मता-मरता रहता है॥ ३॥ तू अपने वीर्य को रोककर नहीं रखता और स्वयं को यती कहलाता है। माया के तीन गुणों में मुग्ध होकर माया मांगता रहता है। तेरा मन निर्दयी है, इसलिए प्रभु-ज्योति का उजाला नहीं हुआ और जगत् के सब जंजालों में डूबता डूब गया है॥ ४॥ अपनी कफनी पहनकर बहुत आडम्बर करके तू वेष बना लेता है। तू नट की तरह बहुत ही झूठे खेल खेलता रहता है। चिन्ता की अग्नि तेरे अन्तर्मन को जला रही है। शुभ कर्मों के बिना कैसे भवसागर से पार हो सकता है॥ ५॥ तूने काँच की मुद्राएँ बनाकर कानों में पहनी हुई हैं। सत्य की विद्या से अज्ञानी बनकर मुक्ति नहीं मिलती। तू जीभ एवं इन्द्रियों के स्वादों में फँसा हुआ है, इसलिए तू पशु बन गया है और तेरा यह निशान नहीं मिटता॥ ६॥ जैसे जगत् के लोग माया के तीन गुणों में फँसे हुए हैं, वैसे ही योगी त्रिगुणों में फँसे हुए हैं। जो व्यक्ति शब्द का चिंतन करता है, उसकी चिंता मिट जाती है। सच्चे शब्द द्वारा मन उज्ज्वल हो जाता है। वही योगी ऐसी युक्ति का विचार करता है॥ ७॥ हे प्रभु! तू सबकुछ करने में समर्थ है और तेरे ही पास नवनिधियाँ हैं। तू ही जीवों को पैदा करके उन्हें नष्ट कर देता है, जो तू करता है, वही होता है। जो यतीत्व, सदाचार एवं संयम को धारण करता है, सत्य उसी के हृदय में बसता है। हे नानक! ऐसा योगी तीनों लोकों का मित्र बन जाता है॥ ८॥ २॥

रामकली महला १ ॥ खटु मटु देही मनु बैरागी ॥ सुरति सबदु धुनि अंतरि जागी ॥ वाजै अनहदु मेरा मनु लीणा ॥ गुर बचनी सचि नामि पतीणा ॥ १ ॥ प्राणी राम भगति सुखु पाईऐ ॥ गुरमुखि हरि हरि मीठा लागै हरि हरि नामि समाईऐ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ माइआ मोहु बिवरजि समाए ॥ सतिगुरु भेटै मेलि मिलाए ॥ नामु रतनु निरमोलकु हीरा ॥ तितु राता मेरा मनु धीरा ॥ २ ॥ हउमै ममता रोगु न लागै ॥ राम भगति जम का भउ भागै ॥ जमु जंदारु न लागै मोहि ॥ निरमल नामु रिदै हरि सोहि ॥ ३ ॥ सबदु बीचारि भए निरंकारी ॥ गुरमति जागे दुरमति परहारी ॥ अनदिनु जागि रहे लिव लाई ॥ जीवन मुकति गति अंतरि पाई ॥ ४ ॥ अलिपत गुफा महि रहहि निरारे ॥ तसकर पंच सबदि संघारे ॥ पर घर जाइ न मनु डोलाए ॥ सहज निरंतरि रहउ समाए ॥ ५ ॥ गुरमुखि जागि रहे अउधूता ॥ सद बैरागी ततु परोता ॥ जगु सूता मरि आवै जाइ ॥ बिनु गुर सबद न सोझी पाइ ॥ ६ ॥ अनहद सबदु वजै दिनु राती ॥ अविगत की गति गुरमुखि जाती ॥ तउ जानी जा सबदि पछानी ॥ एको रवि रहिआ निरबानी

॥ ७ ॥ सुंन समाधि सहजि मनु राता ॥ तजि हउ लोभा एको जाता ॥ गुर चेले अपना मनु मानिआ ॥ नानक दूजा मेटि समानिआ ॥ ८ ॥ ३ ॥

छः चक्रों वाला शरीर एक मठ है और इसमें वैराग्यवान् मन स्थित है। अनहद शब्द की ध्वनि को सुनने वाली सोई हुई चेतना अन्तर में जाग गई है। अनहद शब्द बज रहा है और मेरा मन उसमें लीन हो गया है। गुरु के वचनों से सत्य-नाम में मन संतुष्ट हो गया है॥ १॥ हे प्राणी! राम की भक्ति से ही सुख प्राप्त होता है और गुरुमुख बनकर ही हरि नाम मीठा लगता है और मन हरि-नाम में ही विलीन हो जाता है॥ १॥ रहाउ॥ मोह माया को रोक कर ही मन नाम में लीन होता है। यदि सच्चा गुरु मिल जाए तो वह जीव को अपनी संगति में रखकर परमात्मा से मिला देता है। नाम रूपी रत्न अमूल्य हीरा है और मेरा मन धैर्यवान होकर उसमें ही लीन हो गया है॥ २॥ राम की भक्ति करने से यम का भय दूर हो जाता है और अहम् एवं ममता का रोग नहीं लगता। मेरे हृदय में परमात्मा का निर्मल नाम शोभा दे रहा है, इसलिए निर्दयी यमदूत निकट नहीं आते॥ ३॥ शब्द का चिन्तन करके निरंकारी हो गए हैं। अज्ञान की निद्रा में सोया हुआ मन गुरुमत द्वारा जाग गया है और दुर्मति दूर हो गई है। अब दिन-रात सचेत होकर परमात्मा में ध्यान लगा रहता है। अब जीवन से मुक्ति प्राप्त हो गई है॥ ४॥ जो जीवात्मा देहि रूपी गुफा में मोह-माया से अलिप्त एवं निराला रहती है और शब्द द्वारा काम, क्रोध, लोभ, मोह एवं अहंकार रूपी पाँच तस्करों को समाप्त कर देती है। उसका मन इधर-उधर नहीं भटकता और माया एवं विकारों के घर में नहीं जाता। वह सहज ही सत्य में समाया रहता है॥ ५॥ जो गुरु से उपदेश लेकर जाग्रत रहता है,वही अवधूत है। वह सदैव वैरागी है, जिसने परमतत्व प्रभु को मन में बसा लिया है। जगत् अज्ञान की निद्रा में सोया रहता है, इसलिए आवागमन में पड़ा रहता हैं। शब्द-गुरु के बिना ज्ञान प्राप्त नहीं होता॥ ६॥ दिन-रात अनहद शब्द बजता रहता है, गुरुमुख ही परमात्मा की गति को जानता है। जिसने शब्द को पहचान लिया है, उसे ही इस रहस्य का ज्ञान हुआ है कि एक निर्लिप्त परमात्मा कण-कण में विद्यमान है॥ ७॥ मन सहज ही शून्य-समाधि में लीन रहता है। अपने आत्माभिमान एवं लोभ को त्यागकर एक ईश्वर को जान लिया है। हे नानक! जब गुरु के चेले का मन संतुष्ट हो गया तो वह द्वैतभाव को मिटाकर सत्य में विलीन हो गया॥ ८॥ ३॥

रामकली महला १ ॥ साहा गणहि न करहि बीचारु ॥ साहे ऊपरि एकंकारु ॥ जिसु गुरु मिलै सोई बिधि जाणै ॥ गुरमति होइ त हुकमु पछाणै ॥ १ ॥ झूठु न बोलि पाडे सचु कहीऐ ॥ हउमै जाइ सबदि घरु लहीऐ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ गणि गणि जोतकु कांडी कीनी ॥ पड़ै सुणावै ततु न चीनी ॥ सभसै ऊपरि गुर सबदु बीचारु ॥ होर कथनी बदउ न सगली छारु ॥ २ ॥ नावहि धोवहि पूजहि सैला ॥ बिनु हरि राते मैलो मैला ॥ गरबु निवारि मिलै प्रभु सारथि ॥ मुकति प्रान जपि हरि किरतारथि ॥ ३ ॥ वाचै वादु न बेदु बीचारै ॥ आपि डुबै किउ पितरा तारै ॥ घटि घटि ब्रहमु चीनै जनु कोइ ॥ सतिगुरु मिलै त सोझी होइ ॥ ४ ॥ गणत गणीऐ सहसा दुखु जीऐ ॥ गुर की सरणि पवै सुखु थीऐ ॥ करि अपराध सरणि हम आइआ ॥ गुर हरि भेटे पुरबि कमाइआ ॥ ५ ॥ गुर सरणि न आईऐ ब्रहमु न पाईऐ ॥ भरमि भुलाईऐ जनमि मरि आईऐ ॥ जम दरि बाधउ मरै बिकारु ॥ ना रिदै नामु न सबदु अचारु ॥ ६ ॥ इकि पाधे पंडित मिसर कहावहि ॥ दुबिधा राते महलु न पावहि ॥ जिसु गुर परसादी नामु अधारु ॥ कोटि मधे को जनु आपारु ॥ ७ ॥ एकु बुरा भला सचु एकै ॥ बूझु गिआनी सतगुर की टेकै ॥ गुरमुखि विरली एको जाणिआ ॥ आवणु जाणा मेटि समाणिआ ॥ ८ ॥ जिन कै हिरदै एकंकारु ॥ सरब गुणी साचा बीचारु ॥ गुर कै भाणै करम कमावै ॥ नानक साचे साचि समावै ॥ ९ ॥ ४ ॥

पण्डित शुभ मुहूर्त की गणना करता है, परन्तु यह विचार नहीं करता कि ओंकार मुहूर्त से ऊपर है। जिसे गुरु मिल जाता है, वही मुहूर्त की विधि को जानता है। जब मनुष्य को गुरु उपदेश प्राप्त हो जाता है, तो वह परमात्मा के हुक्म को पहचान लेता है॥ १॥ हे पण्डित! कभी झूठ न बोल, सत्य ही कहना चाहिए। जब अहंकार दूर हो जाता है तो शब्द द्वारा सच्चा घर मिल जाता है॥ १॥ रहाउ॥ ज्योतिषी ग्रह-नक्षत्रों की गणना करके कुण्डली बनाता है। वह कुण्डली को पढ़-पढ़कर दूसरों को सुनाता है परन्तु परमतत्व को नहीं जानता। गुरु के शब्द का विचार सबसे ऊपर है। मैं कोई अन्य बात नहीं करता, चूंकि अन्य सबकुछ राख समान है॥ २॥ पण्डित नहा-धोकर पत्थरों की मूर्तियों की पूजा करता है किन्तु परमात्मा के नाम में लीन हुए बिना मन मैला ही रहता है। घमण्ड को दूर करने से ही जीव को सारथी प्रभु मिलता है। प्राणों को मुक्ति देने वाले एवं कृतार्थ करने वाले परमात्मा को जप लो॥ ३॥ तू वेदों का तो विचार नहीं करता और वाद-विवाद बारे ही सोचता रहता है। तू स्वयं तो डूब रहा है, फिर अपने पूर्वजों को कैसे पार करवा सकता है। कोई विरला ही घट-घट में व्यापक ब्रह्म को जानता है। जिसे सतिगुरु मिल जाता है, उसे ज्ञान हो जाता है॥ ४॥ मुहूर्त की गणना करने से सन्देह बना रहता है और दुख भोगना पड़ता है। गुरु की शरण में आने से सुख उपलब्ध हो जाता है। अनेक अपराध करके जब हम गुरु की शरण में आ जाते हैं तो पूर्व जन्म में किए शुभ कर्मों के कारण गुरु ईश्वर से मिला देता है॥ ५॥ यदि हम गुरु की शरण में नहीं आते तो ब्रह्म की प्राप्ति नहीं हो सकती। भ्रमों में भूलकर हम जन्म-मरण के चक्र में ही पड़े रहते हैं। विकारों के कारण बंधकर यम के द्वार पर मारे जाते हैं। न हमारे हृदय में नाम बसता है और न ही नेक आचरण बनता है॥ ६॥ कोई स्वयं को पुरोहित, पण्डित एवं मिश्र कहलवाता है लेकिन दुविधा में लीन होकर सत्य को प्राप्त नहीं करते। गुरु की कृपा से जिसे परमात्मा के नाम का आधार मिल गया है, करोड़ों में कोई विरला ही प्रभु का भक्त है॥ ७॥ दुनिया में चाहे कोई बुरा अथवा भला है, लेकिन एक परमात्मा ही सत्य है। हे ज्ञानी! सतगुरु का सहारा लेकर इस रहस्य को समझो। गुरु से उपदेश लेकर किसी विरले ने एक ईश्वर को समझा है और वह आवागमन मिटा कर सत्य में ही विलीन हो गया है॥ ८॥ जिसके हृदय में ओंकार है, वह सर्वगुणसम्पन्न सच्चे प्रभु का चिंतन करता है। हे नानक! ऐसा जीव गुरु की रज़ानुसार कर्म करता है और परम सत्य में ही विलीन हो जाता है॥ ६॥ ४॥

रामकली महला १ ॥ हठु निग्रहु करि काइआ छीजै ॥ वरतु तपनु करि मनु नही भीजै ॥ राम नाम सरि अवरु न पूजै ॥ १ ॥ गुरु सेवि मना हरि जन संगु कीजै ॥ जमु जंदारु जोहि नही साकै सरपनि डसि न सकै हरि का रसु पीजै ॥ १ ॥ रहाउ ॥ वादु पड़ै रागी जगु भीजै ॥ त्रै गुण बिखिआ जनमि मरीजै ॥ राम नाम बिनु दूखु सहीजै ॥ २ ॥ चाड़सि पवनु सिंघासनु भीजै ॥ निउली करम खटु करम करीजै ॥ राम नाम बिनु बिरथा सासु लीजै ॥ ३ ॥ अंतरि पंच अगनि किउ धीरजु धीजै ॥ अंतरि चोरु किउ सादु लहीजै ॥ गुरमुखि होइ काइआ गड़ु लीजै ॥ ४ ॥ अंतरि मैलु तीरथ भरमीजै ॥ मनु नही सूचा किआ सोच करीजै ॥ किरतु पइआ दोसु का कउ दीजै ॥ ५ ॥ अंनु न खाहि देही दुखु दीजै ॥ बिनु गुर गिआन त्रिपति नही थीजै ॥ मनमुखि जनमै जनमि मरीजै ॥ ६ ॥ सतिगुर पूछि संगति जन कीजै ॥ मनु हरि राचै नही जनमि मरीजै ॥ राम नाम बिनु किआ करमु कीजै ॥ ७ ॥ ऊंदर दूंदर पासि धरीजै ॥ धुर की सेवा रामु रवीजै ॥ नानक नामु मिलै किरपा प्रभ कीजै ॥ ८ ॥ ५ ॥

हठयोग की क्रिया एवं इन्द्रियों को निग्रह करने से काया क्षीण हो जाती है। व्रत-उपवास एवं तपस्या करने से भी मन संतुष्ट नहीं होता। राम-नाम के समान अन्य पहुँचने वाला नहीं है॥ १॥

हे मन! गुरु की सेवा करो और भक्तजनों की संगति करो। हरि का रस पीने से निर्दयी यमदूत भी पास नहीं आते और माया रूपी नागिन भी डंक नहीं मार सकती॥ १॥ रहाउ॥ समूचा जगत् वाद-विवाद में पड़ा रहता है और रागों संगीत द्वारा प्रसन्न होता रहता है। त्रिगुणात्मक माया रूपी विष में पड़कर जीव जन्मता-मरता रहता है और राम-नाम के बिना बड़ा दुख सहन करता है॥ २॥ योगी प्राणायाम करता है और आसन पर बैठकर बड़ा प्रसन्न होता है। वह निउली कर्म एवं छः हठयोग कर्म भी करता रहता है लेकिन राम नाम के बिना वह व्यर्थ साँस लेता है॥ ३॥ जब अन्तर्मन में काम-क्रोध इत्यादि पाँच विकारों की अग्नि जलती रहती है तो कैसे धैर्य हो सकता है। अन्तर्मन में कामादिक चोरों का वास है, फिर जीवन का कैसे स्वाद मिल सकता है? गुरुमुख बनने से शरीर रूपी किले पर जीत प्राप्त हो सकती है॥ ४॥ मन में मैल होने के कारण तीर्थों में भटकने का कोई फायदा नहीं है। यदि मन ही शुद्ध नहीं तो शौचादि करने का क्या अभिप्राय है? जब भाग्य लेख ही ऐसा है तो फिर किसे दोष दिया जाए॥ ५॥ जो भोजन नहीं करता, उपवास रखता है। वह तो अपने शरीर को दुख ही देता है। गुरु के ज्ञान बिना जीव की तृप्ति नहीं होती और स्वेच्छाचारी जीव आवागमन के चक्र में पड़कर जन्मता मरता रहता है॥ ६॥ सतगुरु से पूछकर भक्तजनों की संगति करनी चाहिए। यदि मन परमात्मा में लीन रहे तो वह जन्म-मरण से छूट जाता है। राम-नाम का सिमरन किए बिना अन्य धर्म-कर्म करने का कोई लाभ नहीं है॥ ७॥ चूहे की तरह शोर मचा रहे मन के ख्यालों को एक तरफ कर दो। राम नाम का सिमरन ही सच्ची सेवा है। नानक प्रार्थना करते हैं कि हे प्रभु! ऐसी कृपा करो कि मुझे नाम का दान मिल जाए॥ ८॥ ५॥

रामकली महला १ ॥ अंतरि उतभुजु अवरु न कोई ॥ जो कहीऐ सो प्रभ ते होई ॥ जुगह जुगंतरि साहिबु सचु सोई ॥ उतपति परलउ अवरु न कोई ॥ १ ॥ ऐसा मेरा ठाकुरु गहिर गंभीरु ॥ जिनि जपिआ तिन ही सुखु पाइआ हरि कै नामि न लगै जम तीरु ॥ १ ॥ रहाउ ॥ नामु रतनु हीरा निरमोलु ॥ साचा साहिबु अमरु अतोलु ॥ जिहवा सूची साचा बोलु ॥ घरि दरि साचा नाही रोलु ॥ २ ॥ इकि बन महि बैसहि डूगरि असथानु ॥ नामु बिसारि पचहि अभिमानु ॥ नाम बिना किआ गिआन धिआनु ॥ गुरमुखि पावहि दरगहि मानु ॥ ३ ॥ हठु अहंकारु करै नही पावै ॥ पाठ पड़ै ले लोक सुणावै ॥ तीरथि भरमसि बिआधि न जावै ॥ नाम बिना कैसे सुखु पावै ॥ ४ ॥ जतन करै बिंदु किवै न रहाई ॥ मनूआ डोलै नरके पाई ॥ जम पुरि बाधो लहै सजाई ॥ बिनु नावै जीउ जलि बलि जाई ॥ ५ ॥ सिध साधिक केते मुनि देवा ॥ हठि निग्रहि न त्रिपतावहि भेवा ॥ सबदु वीचारि गहहि गुर सेवा ॥ मनि तनि निरमल अभिमान अभेवा ॥ ६ ॥ करमि मिलै पावै सचु नाउ ॥ तुम सरणागति रहउ सुभाउ ॥ तुम ते उपजिओ भगती भाउ ॥ जपु जापउ गुरमुखि हरि नाउ ॥ ७ ॥ हउमै गरबु जाइ मन भीनै ॥ झूठि न पावसि पाखंडि कीनै ॥ बिनु गुर सबद नही घरु बारु ॥ नानक गुरमुखि ततु बीचारु ॥ ८ ॥ ६ ॥

परमात्मा के अलावा अन्य कोई भी वनस्पति इत्यादि जीवों की उत्पति करने वाला नहीं। जिस वस्तु का भी कथन किया जाए, वह प्रभु से ही पैदा हुई है। युग-युगान्तरों से एक परमेश्वर ही सत्य है, विश्व की उत्पति एवं प्रलय करने वाला उसके अतिरिक्त कोई नहीं है॥ १॥ मेरा ठाकुर ऐसा गहन-गंभीर है, जिसने भी उसका जाप किया है, उसे ही सुख उपलब्ध हुआ है। हरि का नाम-स्मरण करने से यम का तीर नहीं लगता॥ १॥ रहाउ॥ प्रभु का नाम अमूल्य रत्न एवं हीरा है, वह सच्चा मालिक अमर एवं अतुलनीय है। उसकी जिह्वा शुद्ध एवं वचन सत्य है। उसका

घर द्वार सदैव सत्य है और कोई अस्त-व्यस्तता नहीं है॥ २॥ कोई जंगलों में जाकर बैठता है तो कोई पहाड़ों में गुफा इत्यादि स्थान पर बैठ जाता है। ऐसे व्यक्ति नाम को भुलाकर अभिमान में पीड़ित होते हैं। परमात्मा के नाम बिना ज्ञान-ध्यान का कोई महत्त्व नहीं। गुरुमुख ही सत्य के दरबार में शोभा का पात्र बनता है॥ ३॥ जो व्यक्ति हठ एवं अहंकार करता है, उसे सत्य की प्राप्ति नहीं होती। कोई धार्मिक ग्रंथों का पाठ पढ़कर लोगों को सुनाता है एवं तीर्थ-यात्रा करने से भी रोग दूर नहीं होते। प्रभु नाम के बिना कैसे सुख प्राप्त हो सकता है॥ ४॥ चाहे मनुष्य कितना ही प्रयास करे, किन्तु वह अपने वीर्य को नियंत्रण में नहीं कर सकता। उसका मन डगमगाता रहता है और वह नरक में ही पड़ता है। वह यमपुरी में बंधा हुआ दण्ड भोगता है और नाम के बिना मन जलता ही रहता है॥ ५॥ कितने ही सिद्ध-साधक, ऋषि-मुनि एवं देवता हठ निग्रह द्वारा अपने मन की तृष्णा को तृप्त नहीं कर सकते। जो शब्द का चिंतन करते हैं, गुरु की सेवा में लीन रहते हैं, उनका मन-तन निर्मल हो जाता है और अभिमान मिट जाता है॥ ६॥ परमात्मा की कृपा से जिसे गुरु मिल जाता है, उसे सत्य नाम प्राप्त हो जाता है। हे प्रभु! मैं बड़ी श्रद्धा से तेरी शरण में रहता हूँ और तुम से ही भक्ति-भावना पैदा होती है। गुरु से हरि-नाम का मंत्र लेकर उसका ही जाप जपता रहता हूँ॥ ७॥ मन के नाम-रस में भीगने से अहंत्व एवं घमण्ड दूर हो जाता है। पाखण्ड करने एवं झूठ बोलने से सत्य की प्राप्ति नहीं होती। शब्द-गुरु के बिना सत्य का घर प्राप्त नहीं होता। हे नानक! गुरुमुख बनकर परमतत्व का चिंतन करो॥ ८॥ ६॥

रामकली महला १ ॥ जिउ आइआ तिउ जावहि बउरे जिउ जनमे तिउ मरणु भइआ ॥ जिउ रस भोग कीए तेता दुखु लागै नामु विसारि भवजलि पइआ ॥ १ ॥ तनु धनु देखत गरबि गइआ ॥ कनिक कामनी सिउ हेतु वधाइहि की नामु विसारहि भरमि गइआ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जतु सतु संजमु सीलु न राखिआ प्रेत पिंजर महि कासटु भइआ ॥ पुंनु दानु इसनानु न संजमु साधसंगति बिनु बादि जइआ ॥ २ ॥ लालचि लागै नामु बिसारिओ आवत जावत जनमु गइआ ॥ जा जमु धाइ केस गहि मारै सुरति नही मुखि काल गइआ ॥ ३ ॥ अहिनिसि निंदा ताति पराई हिरदै नामु न सरब दइआ ॥ बिनु गुर सबद न गति पति पावहि राम नाम बिनु नरकि गइआ ॥ ४ ॥ खिन महि वेस करहि नटूआ जिउ मोह पाप महि गलतु गइआ ॥ इत उत माइआ देखि पसारी मोह माइआ कै मगनु भइआ ॥ ५ ॥ करहि बिकार विथार घनेरे सुरति सबद बिनु भरमि पइआ ॥ हउमै रोगु महा दुखु लागा गुरमति लेवहु रोगु गइआ ॥ ६ ॥ सुख संपति कउ आवत देखै साकत मनि अभिमानु भइआ ॥ जिस का इहु तनु धनु सो फिरि लेवै अंतरि सहसा दूखु पइआ ॥ ७ ॥ अंति कालि किछु साथि न चालै जो दीसै सभु तिसहि मइआ ॥ आदि पुरखु अपरंपरु सो प्रभु हरि नामु रिदै लै पारि पइआ ॥ ८ ॥ मूए कउ रोवहि किसहि सुणावहि भै सागर असरालि पइआ ॥ देखि कुटंबु माइआ ग्रिह मंदरु साकतु जंजालि परालि पइआ ॥ ९ ॥ जा आए ता तिनहि पठाए चाले तिनै बुलाइ लइआ ॥ जो किछु करणा सो करि रहिआ बखसणहारै बखसि लइआ ॥ १० ॥ जिनि एहु चाखिआ राम रसाइणु तिन की संगति खोजु भइआ ॥ रिधि सिधि बुधि गिआनु गुरू ते पाइआ मुकति पदारथु सरणि पइआ ॥ ११ ॥ दुखु सुखु गुरमुखि सम करि जाणा हरख सोग ते बिरकतु भइआ ॥ आपु मारि गुरमुखि हरि पाए नानक सहजि समाइ लइआ ॥ १२ ॥ ७ ॥

हे भोले प्राणी! जैसे तू आया है, वैसे ही यहाँ से चले जाना है। जैसे तुझे जन्म मिला है, वैसे ही तेरी मृत्यु हो जानी है। जैसे तूने रस-भोग किए हैं, उतना ही दुख लगा है। नाम को भुलाकर तू संसार-सागर में पड़ गया है॥ १॥ अपने तन एवं धन को देख-देखकर तू अभिमान में फँस गया

है। तू सोना चाँदी एवं सुन्दर नारी से प्रेम बढ़ाकर नाम को भुलाकर भ्रम में पड़ गया है॥ १॥ रहाउ॥ तूने यतीत्व, सदाचार, संयम एवं शील को धारण नहीं किया और प्रेत जैसा शरीर पिंजरे में पड़ा सूख कर लकड़ी हो गया। न कोई दान-पुण्य किया, न तीर्थ-स्नान किया, न ही संयम किया, साधु-महापुरुषों की संगति के बिना व्यर्थ ही जीवन बीत गया॥ २॥ लालच में फँसकर तूने नाम को भुला दिया, जिससे जन्म-मरण का चक्र पड़ गया है। जब यम केशों से पकड़ कर मारता है तो जीव को कोई ख्याल नहीं रहता और वह मृत्यु के मुँह में चला जाता है॥ ३॥ तू रात-दिन पराई निन्दा, चुगली एवं ईर्ष्या में ही पड़ा रहा है, जिससे तेरे ह्रदय में न ही नाम का वास है और न ही सबके प्रति दया है। गुरु के शब्द के बिना तेरी गति नहीं होनी और न ही सम्मान प्राप्त होना है। राम-नाम के बिना तूने नरक में ही जाना है॥ ४॥ एक क्षण में ही तू नट की तरह वेष धारण कर लेता है और मोह-पाप में लीन रहता है। इधर-उधर माया का प्रसार देखकर तू मोह-माया में ही मग्न हो गया है॥ ५॥ तू बड़े पाप-विकार का विस्तार करता है और शब्द के ज्ञान के बिना भ्रम में पड़ा हुआ है। तुझे अहम् रोग रूपी बड़ा दुख लगा हुआ है। गुरु-उपदेश ग्रहण करो, तेरा रोग दूर हो जाएगा॥ ६॥ जब पदार्थवादी इन्सान घर में सुख-संपति को आते देखता है तो उसका मन अभिमान का शिकार हो जाता है। जिस परमात्मा ने यह तन एवं धन दिया हुआ है, जब वह वापिस ले लेता है तो उसके मन में चिंता एवं दुख पैदा हो जाता है॥ ७॥ अन्तिम समय कुछ भी साथ नहीं जाता, जो कुछ नजर आता है, सब उसकी माया है। आदिपुरुष प्रभु अपरंपार है, हरि-नाम को ह्रदय में बसाने से भवसागर से पार हुआ जा सकता है॥ ८॥ हे जीव! अपने मृतक रिश्तेदार पर रो रो कर किसे सुना रहा है? तू स्वयं ही भवसागर में गिर रहा है। पदार्थवादी जीव अपने परिवार, माया एवं सुन्दर घर-महल को देखकर व्यर्थ जंजाल में फँसा हुआ है॥ ६॥ जब जीव जगत् में आया तो परमेश्वर ने ही भेजा था। अब उसके आह्वान पर ही जगत् से जा रहा है। जो उसने करना है, वह कर रहा है। उस क्षमावान ने स्वयं ही क्षमा कर दिया है॥ १०॥ जिन्होंने यह राम-रस चखा है, उनकी संगति में सत्य की खोज करके उसे पाया है। ऋद्धियाँ सिद्धियाँ, बुद्धि एवं ज्ञान गुरु से ही प्राप्त होता है और उसकी शरण में आने से ही मोक्ष मिलता है॥ ११॥ गुरुमुख ने ही दुख सुख को एक समान समझा है और वह खुशी-गम से निर्लिप्त हो गया है। हे नानक! गुरुमुख ने अपने आत्माभिमान को मिटाकर परमात्मा को पा लिया है और वह सहज ही सत्य में विलीन हो गया है॥ १२॥ ७॥

रामकली दखणी महला १ ॥ जतु सतु संजमु साचु द्रिड़ाइआ साच सबदि रसि लीणा ॥ १ ॥ मेरा गुरु दइआलु सदा रंगि लीणा ॥ अहिनिसि रहै एक लिव लागी साचे देखि पतीणा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ रहै गगन पुरि द्रिसटि समैसरि अनहत सबदि रंगीणा ॥ २ ॥ सतु बंधि कुपीन भरिपुरि लीणा जिहवा रंगि रसीणा ॥ ३ ॥ मिलै गुर साचे जिनि रचु राचे किरतु वीचारि पतीणा ॥ ४ ॥ एक महि सरब सरब महि एका एह सतिगुरि देखि दिखाई ॥ ५ ॥ जिनि कीए खंड मंडल ब्रहमंडा सो प्रभु लखनु न जाई ॥ ६ ॥ दीपक ते दीपकु परगासिआ त्रिभवण जोति दिखाई ॥ ७ ॥ सचै तखति सच महली बैठे निरभउ ताड़ी लाई ॥ ८ ॥ मोहि गइआ बैरागी जोगी घटि घटि किंगुरी वाई ॥ ६ ॥ नानक सरणि प्रभू की छूटे सतिगुर सचु सखाई ॥ १० ॥ ८ ॥

गुरु ने यतीत्व, सदाचार, संयम एवं सत्य ही दृढ़ करवाया है, जिससे सच्चे शब्द के रस में लीन रहता हूँ॥ १॥ मेरा गुरु दयालु है और सदा सत्य के रंग में लीन रहता है। रात-दिन उसका ध्यान परमात्मा में ही लगा रहता है और सत्य के दर्शन करके वह संतुष्ट रहता है॥ १॥ रहाउ॥ वह दशम द्वार में रहता है, सबको एक ही दृष्टि से देखता है और अनहद शब्द के रंग में लीन

रहता है॥ २॥ वह सत्य की कौपीन बांधकर परमेश्वर में रत रहता है और उसकी जीभ हरि-रस के रंग में लीन रहती है॥ ३॥ जिन्हें गुरु मिल जाता है, वे सत्य में ही आस्था रखते हैं और शुभकर्मों में ही संतुष्ट रहते हैं॥ ४॥ सतगुरु ने यह रहस्य दिखा दिया है कि एक परमेश्वर में ही सब का निवास है और एक परमेश्वर ही सब में वास कर रहा है॥ ५॥ जिसने खण्ड-मण्डल, ब्रह्माण्ड की रचना की है, उस प्रभु को देखा नहीं जा सकता॥ ६॥ गुरु ने ज्योति रूपी दीपक से ज्ञान का दीपक जगा दिया है और तीनों लोकों में फैली प्रभु-ज्योति दिखा दी है॥ ७॥ उस परमात्मा का सिंहासन एवं महल सत्य है, जहाँ निर्भय होकर उसने समाधि लगाई है॥ ८॥ उस बैरागी योगी ने सारे जगत् को मोहित कर दिया है और घट-घट में अनहद शब्द रूपी वीणा बजा दी है॥ ६॥ हे नानक ! प्रभु की शरण में आने से ही छुटकारा होता है, क्योंकि सच्चा सतगुरु सहायक बन जाता है॥ १०॥ ८॥

रामकली महला १ ॥ अउहठि हसत मड़ी घरु छाइआ धरणि गगन कल धारी ॥ १ ॥ गुरमुखि केती सबदि उधारी संतहु ॥ १ ॥ रहाउ ॥ ममता मारि हउमै सोखै त्रिभवणि जोति तुमारी ॥ २ ॥ मनसा मारि मनै महि राखै सतिगुर सबदि वीचारी ॥ ३ ॥ सिंङी सुरति अनाहदि वाजै घटि घटि जोति तुमारी ॥ ४ ॥ परपंच बेणु तही मनु राखिआ ब्रहम अगनि परजारी ॥ ५ ॥ पंच ततु मिलि अहिनिसि दीपकु निरमल जोति अपारी ॥ ६ ॥ रवि ससि लउके इहु तनु किंगुरी वाजै सबदु निरारी ॥ ७ ॥ सिव नगरी महि आसणु अउधू अलखु अगंमु अपारी ॥ ८ ॥ काइआ नगरी इहु मनु राजा पंच वसहि वीचारी ॥ ६ ॥ सबदि रवै आसणि घरि राजा अदलु करे गुणकारी ॥ १० ॥ कालु बिकालु कहे कहि बपुरे जीवत मूआ मनु मारी ॥ ११ ॥ ब्रहमा बिसनु महेस इक मूरति आपे करता कारी ॥ १२ ॥ काइआ सोधि तरै भव सागरु आतम ततु वीचारी ॥ १३ ॥ गुर सेवा ते सदा सुखु पाइआ अंतरि सबदु रविआ गुणकारी ॥ १४ ॥ आपे मेलि लए गुणदाता हउमै त्रिसना मारी ॥ १५ ॥ त्रै गुण मेटे चउथै वरतै एहा भगति निरारी ॥ १६ ॥ गुरमुखि जोग सबदि आतमु चीनै हिरदै एकु मुरारी ॥ १७ ॥ मनूआ असथिरु सबदे राता एहा करणी सारी ॥ १८ ॥ बेदु बादु न पाखंडु अउधू गुरमुखि सबदि बीचारी ॥ १६ ॥ गुरमुखि जोगु कमावै अउधू जतु सतु सबदि वीचारी ॥ २० ॥ सबदि मरै मनु मारे अउधू जोग जुगति वीचारी ॥ २१ ॥ माइआ मोहु भवजलु है अवधू सबदि तरै कुल तारी ॥ २२ ॥ सबदि सूर जुग चारे अउधू बाणी भगति वीचारी ॥ २३ ॥ एहु मनु माइआ मोहिआ अउधू निकसै सबदि वीचारी ॥ २४ ॥ आपे बखसे मेलि मिलाए नानक सरणि तुमारी ॥ २५ ॥ ६ ॥

जिसने धरती एवं गगन में अपनी सत्ता को धारण किया हुआ है, हृदय में स्थित प्रभु ने मानव-शरीर को अपना घर बनाया हुआ है॥ १॥ हे संतो ! गुरु ने शब्द द्वारा कितने ही लोगों का उद्धार कर दिया है॥ १॥ रहाउ॥ हे परमपिता ! जो व्यक्ति अपनी ममता को मारकर अपने आत्माभिमान को मिटा देता है, उसे तीनों लोकों में तेरी ही ज्योति नजर आती है॥ २॥ ऐसा व्यक्ति सतगुरु के शब्द का चिंतन करके अपनी इच्छाओं को मारकर सत्य को ही मन में धारण करता है॥ ३॥ उसके मन में अनहद शब्द रूपी सिंगी बजती रहती है, जिसे चेतना द्वारा सुनता रहता है और घट-घट में तेरी ही ज्योति देखता है॥ ४॥ जहाँ सारे जगत् में अनहद शब्द रूपी वीणा बज रही है, उसने अपना मन वहाँ ही रखा हुआ है और अपने अन्तर्मन में ब्रह्म-अग्नि प्रज्वलित कर ली है॥ ५॥ पृथ्वी, आकाश, पवन, जल एवं अग्नि—इन पाँच तत्वों से मिलकर बने हुए मानव शरीर में अपार प्रभु की निर्मल ज्योति का दीपक दिन-रात जगता रहता है॥ ६॥ सूर्य

चन्द्रमा शरीर रूपी वीणा के तूंबे हैं और निराली ही अनहद शब्द रूपी वीणा बजती रहती है॥ ७॥ हे योगी ! उस अलक्ष्य, अगम्य एवं अपरंपार परमात्मा का दसम द्वार में आसन लगा हुआ है॥ ८॥ यह मन काया रूपी नगरी का राजा है और चिन्तनशील पाँचों ज्ञानेन्द्रियाँ इसमें रहती है॥ ६॥ मन रूपी राजा हृदय-घर में आसन लगाकर शब्द में लीन रहता है और गुणवान बनकर पूर्ण न्याय करता है॥ १०॥ जो मन को मारकर जीवन्मुक्त हो जाता है, काल भी उस बेचारे जीव का कुछ नहीं बिगाड़ सकता॥ ११॥ ब्रह्मा, विष्णु एवं महेश एक परमेश्वर का ही रूप हैं और वह स्वयं ही सबकुछ करने वाला है॥ १२॥ जो आत्म-तत्व का चिंतन करता है, वह अपने शरीर को शुद्ध करके भवसागर से तैर जाता है॥ १३॥ गुरु की सेवा करने से सदा सुख ही प्राप्त होता है और अन्तर्मन में गुणकारी शब्द समाया रहता है॥ १४॥ जिसने अपने अभिमान एवं तृष्णा को मिटा दिया है, गुणों के दाता ईश्वर ने स्वयं ही उसे अपने साथ मिला लिया है॥ १५॥ जो माया के तीन गुणों को मिटाकर तुरीयावस्था में रहता है, यही निराली भक्ति है॥ १६॥ गुरुमुख का योग यही है कि वह शब्द द्वारा आत्मा को पहचान ले और हृदय में ईश्वर का सिमरन करता रहे॥ १७॥ शुभ आचरण यही है कि मन स्थिर हो जाए और शब्द में लीन रहे॥ १८॥ हे योगी ! वेदों के वाद-विवाद एवं पाखण्ड में नहीं पड़ना चाहिए, अपितु गुरुमुख बनकर शब्द का चिंतन करना चाहिए॥ १६॥ हे योगी ! जो गुरुमुख बनकर योग-साधना करता है, वही यतीत्व, सदाचारी है और शब्द का चिंतन करता है॥ २०॥ हे योगी ! जिसने शब्द द्वारा अपने अभिमान को मिटाकर मन को नियंत्रण में कर लिया है, उसने ही योग-युक्ति को पहचाना है॥ २१॥ हे योगी ! चारों युगों में वही शूरवीर माना गया है, जिसने शब्द का चिंतन एवं वाणी द्वारा प्रभु की भक्ति की है॥ २३॥ हे योगी ! यह मन माया के मोह में फँसा हुआ है जो शब्द के चिंतन द्वारा ही इससे निकल सकता है॥ २४॥ नानक कहते हैं कि हे परमेश्वर ! जो तेरी शरण में आता है, तू उसे क्षमा करके अपने साथ मिला लेता है॥ २५॥ ६॥

रामकली महला ३ असटपदीआ १ओं सतिगुर प्रसादि ॥

सरमै दीआ मुंद्रा कंनी पाइ जोगी खिंथा करि तू दइआ ॥ आवणु जाणु बिभूति लाइ जोगी ता तीनि भवण जिणि लइआ ॥ १ ॥ ऐसी किंगुरी वजाइ जोगी ॥ जितु किंगुरी अनहदु वाजै हरि सिउ रहै लिव लाइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सतु संतोखु पतु करि झोली जोगी अंम्रित नामु भुगति पाई ॥ धिआन का करि डंडा जोगी सिंङी सुरति वजाई ॥ २ ॥ मनु द्रिड़ु करि आसणि बैसु जोगी ता तेरी कलपणा जाई ॥ काइआ नगरी महि मंगणि चड़हि जोगी ता नामु पलै पाई ॥ ३ ॥ इतु किंगुरी धिआनु न लागै जोगी ना सचु पलै पाइ ॥ इतु किंगुरी सांति न आवै जोगी अभिमानु न विचहु जाइ ॥ ४ ॥ भउ भाउ दुइ पत लाइ जोगी इहु सरीरु करि डंडी ॥ गुरमुखि होवहि ता तंती वाजै इन बिधि त्रिसना खंडी ॥ ५ ॥ हुकमु बुझै सो जोगी कहीऐ एकस सिउ चितु लाए ॥ सहसा तूटै निरमलु होवै जोगु जुगति इव पाए ॥ ६ ॥ नदरी आवदा सभु किछु बिनसै हरि सेती चितु लाइ ॥ सतिगुर नालि तेरी भावनी लागै ता इह सोझी पाइ ॥ ७ ॥ एहु जोगु न होवै जोगी जि कुटंबु छोडि परभवणु करहि ॥ ग्रिह सरीर महि हरि हरि नामु गुर परसादी अपणा हरि प्रभु लहहि ॥ ८ ॥ इहु जगतु मिटी का पुतला जोगी इसु महि रोगु वडा त्रिसना माइआ ॥ अनेक जतन भेख करे जोगी रोगु न जाइ गवाइआ ॥ ६ ॥ हरि का नामु अउखधु है जोगी जिस नो मंनि वसाए ॥ गुरमुखि होवै सोई बूझै जोग जुगति सो पाए ॥ १० ॥ जोगै का मारगु बिखमु है जोगी जिस नो नदरि करे सो पाए ॥ अंतरि बाहरि एको वेखै विचहु भरमु चुकाए ॥ ११ ॥

विणु वजाई किंगुरी वाजै जोगी सा किंगुरी वजाइ ॥ कहै नानकु मुकति होवहि जोगी साचे रहहि समाइ ॥ १२ ॥ १ ॥ १० ॥

हे योगी ! मेहनत एवं शालीनता की कानों में मुद्राएँ धारण कर और दया को तू अपनी कफनी बना। यदि तू जन्म-मरण की भय रूपी विभूति अपने शरीर पर लगा ले तो समझ लेना तीनों लोकों को जीत लिया है॥ १॥ हे योगी ! ऐसी वीणा बजाना, जिस वीणा से तेरे मन में अनहद शब्द बजता रहे और परमात्मा में तेरा ध्यान लगा रहे॥ १॥ रहाउ॥ हे योगी ! सत्य-संतोष को अपना पात्र एवं झोली बना और उसमें नामामृत रूपी भोजन डाल। तू ध्यान को अपना डंडा बना और अपनी सुरति को बजाने वाली सिंगी बना॥ २॥ हे योगी ! अपने मन को स्थिर करके आसन लगाकर बैठ, तो तेरी कल्पना मिट जाएगी। यदि तू शरीर रूपी नगरी में भिक्षा मांगने जाएगा तो तुझे नाम-दान प्राप्त होगा॥ ३॥ हे योगी ! यदि इस वीणा द्वारा ध्यान नहीं लगता तो तुझे सत्य की प्राप्ति नहीं होगी। यदि इस वीणा द्वारा शान्ति नहीं मिलती तो तेरे मन का अभिमान दूर नहीं होता॥ ४॥ हे योगी ! तू अपनी वीणा को परमात्मा के भय एवं प्रेम के दो तूँबे लगा और शरीर को इसकी डण्डी बना। यदि तू गुरुमुख बन जाए तो तेरे प्रेम की तंती तेरे हृदय में बजती रहेगी और इस विधि से तेरी तृष्णा नाश हो जाएगी॥ ५॥ वही सच्चा योगी कहलाता है, जो परमेश्वर से चित्त लगाता है और उसके हुक्म को बूझता है। उसका सन्देह मिट जाता है, मन निर्मल हो जाता है और इस तरह योग की युक्ति को हासिल कर लेता है॥ ६॥ जो कुछ नजर आ रहा है, वह नाशवान है। इसलिए परमात्मा में ही अपना चित्त लगाओ। यह सूझ तुझे तभी होगी, जब सतगुरु से तेरी श्रद्धा बन जाएगी॥ ७॥ हे योगी ! यह योग नहीं है कि अपने परिवार को छोड़कर देश-दिशांतर भटकता रहे। शरीर रूपी घर में ही परमात्मा का नाम बस रहा है और गुरु की कृपा से प्रभु तुझे मिल सकता है॥ ८॥ हे योगी ! यह जगत् मिट्टी का पुतला है और इसमें माया की तृष्णा का बड़ा रोग लगा हुआ है। चाहे कोई अनेक यत्न एवं वेष धारण करे तो भी यह रोग दूर नहीं किया जा सकता॥ ६॥ हे योगी ! हरि का नाम औषधि है, जिसके मन में नाम बसा देता है, वह इस औषधि को सेवन करके तृष्णा के रोग को मिटा देता है। जो गुरुमुख बन जाता है, उसे इस रहस्य का ज्ञान हो जाता है और वह योग युक्ति को प्राप्त कर लेता है॥ १०॥ हे योगी ! सच्चे योग का मार्ग बड़ा कठिन है, इस मार्ग को वही प्राप्त करता है, जिस पर परमात्मा कृपा-दृष्टि करता है। वह मन से भ्रम को दूर कर देता है और अन्दर-बाहर एक परमेश्वर को ही देखता है॥ ११॥ हे योगी ! ऐसी वीणा बजा, जो बिना बजाए ही बजती है। नाँनक कहते हैं कि हे योगी ! इस तरह तेरी मुक्ति हो जाएगी और तू सत्य में ही विलीन हो जाएगा॥ १२॥ १॥ १०॥

रामकली महला ३ ॥ भगति खजाना गुरमुखि जाता सतिगुरि बूझि बुझाई ॥ १ ॥ संतहु गुरमुखि देइ वडिआई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सचि रहहु सदा सहजु सुखु उपजै कामु क्रोधु विचहु जाई ॥ २ ॥ आपु छोडि नाम लिव लागी ममता सबदि जलाई ॥ ३ ॥ जिस ते उपजै तिस ते बिनसै अंते नामु सखाई ॥ ४ ॥ सदा हजूरि दूरि नह देखहु रचना जिनि रचाई ॥ ५ ॥ सचा सबदु रवै घट अंतरि सचे सिउ लिव लाई ॥ ६ ॥ सतसंगति महि नामु निरमोलकु वडै भागि पाइआ जाई ॥ ७ ॥ भरमि न भूलहु सतिगुरु सेवहु मनु राखहु इक ठाई ॥ ८ ॥ बिनु नावै सभ भूली फिरदी बिरथा जनमु गवाई ॥ ६ ॥ जोगी जुगति गवाई हंढै पाखंडि जोगु न पाई ॥ १० ॥ सिव नगरी महि आसणि बैसै गुर सबदी जोगु पाई ॥ ११ ॥ धातुर बाजी सबदि निवारे नामु वसै मनि आई ॥ १२ ॥ एहु सरीरु सरवरु है संतहु इसनानु करे लिव लाई ॥ १३ ॥ नामि इसनानु करहि से जन निरमल सबदे मैलु गवाई ॥ १४ ॥ त्रै गुण अचेत

नामु चेतहि नाही बिनु नावै बिनसि जाई ॥ १५ ॥ ब्रहमा बिसनु महेसु त्रै मूरति त्रिगुणि भरमि भुलाई ॥ १६ ॥ गुर परसादी त्रिकुटी छूटै चउथै पदि लिव लाई ॥ १७ ॥ पंडित पड़हि पड़ि वादु वखाणहि तिंना बूझ न पाई ॥ १८ ॥ बिखिआ माते भरमि भुलाए उपदेसु कहहि किसु भाई ॥ १९ ॥ भगत जना की ऊतम बाणी जुगि जुगि रही समाई ॥ २० ॥ बाणी लागै सो गति पाए सबदे सचि समाई ॥ २१ ॥ काइआ नगरी सबदे खोजे नामु नवं निधि पाई ॥ २२ ॥ मनसा मारि मनु सहजि समाणा बिनु रसना उसतति कराई ॥ २३ ॥ लोइण देखि रहे बिसमादी चितु अदिसटि लगाई ॥ २४ ॥ अदिसटु सदा रहै निरालमु जोती जोति मिलाई ॥ २५ ॥ हउ गुरु सालाही सदा आपणा जिनि साची बूझ बुझाई ॥ २६ ॥ नानकु एक कहै बेनंती नावहु गति पति पाई ॥ २७ ॥ २ ॥ ११ ॥

सतगुरु ने यही तथ्य-ज्ञान बताया है कि गुरुमुख ने ही भक्ति का खजाना समझा है॥ १॥ हे सज्जनो ! गुरुमुख को ही बड़ाई मिलती है॥ १॥ यदि सदा ही सत्य में लीन रहो तो सहज ही सुख उत्पन्न हो जाता है और अन्तर्मन में से काम-क्रोध दूर हो जाता है॥ २॥ अहंत्व को छोड़कर जिसकी नाम में लगन लग गई है, उसने शब्द द्वार ममता को जला दिया है॥ ३॥ जिससे संसार उत्पन्न होता है, उससे ही नष्ट हो जाता है और अन्त में नाम ही जीव का साथी बनता है॥ ४॥ जिस परमात्मा ने सृष्टि-रचना की है, उसे अपने पास ही समझो एवं दूर मत देखो॥ ५॥ सच्चा शब्द हृदय में ही व्याप्त है, इसलिए सत्य में ही ध्यान लगाओ॥ ६॥ सत्संगति में अमूल्य नाम किसी भाग्यशाली को ही प्राप्त होता है॥ ७॥ भ्रम में फँसकर भूल मत करो; अपितु श्रद्धा से सतगुरु की सेवा करो और अपने मन को संयमित करो॥ ८॥ नाम के बिना सारी दुनिया भटकती फिरती है और अपना जन्म व्यर्थ गंवा रही है॥ ९॥ यदि चारों दिशाओं में भटककर योग की युक्ति गंवा दी तो पाखण्ड करने से योग की प्राप्ति नहीं होती॥ १०॥ सत्यखण्ड रूपी सत्संग में ध्यान लगाकर आसन पर बैठकर गुरु के शब्द द्वारा योग-युक्ति प्राप्त हो सकती है॥ ११॥ शब्द-गुरु द्वारा इधर-उधर की भटकन को मिटाया जाए तो मन में नाम का निवास हो जाता है॥ १२॥ हे सज्जनो ! यह मानव-शरीर पावन सरोवर है, जो इसमें स्नान करता है, उसका ही परमात्मा में ध्यान लगता है॥ १३॥ जो व्यक्ति नाम रूपी सरोवर में स्नान करते हैं, उनका मन निर्मल हो जाता है और शब्द द्वारा उनकी मैल दूर हो जाती है॥ १४॥ तीन गुणों में लीन जीव ज्ञानहीन होते हैं, इसलिए वे नाम-स्मरण नहीं करते और नाम के बिना वे नाश हो जाते हैं॥ १५॥ ब्रह्मा, विष्णु एवं महेश जैसी त्रिमूर्ति भी तीन गुणों के कारण भ्रम में भूली हुई है॥ १६॥ गुरु की कृपा से जब तीन गुणों से छुटकारा हो जाता है तो तुरीयावस्था प्राप्त हो जाती है और परमात्मा में ध्यान लग जाता है॥ १७॥ पण्डित ग्रंथों को पढ़-पढ़कर वाद-विवाद ही करते हैं और उन्हें सत्य का ज्ञान प्राप्त नहीं होता॥ १८॥ हे भाई ! जो माया रूपी विष के नशे में मस्त होकर भ्रम में भूले हुए हैं, उन्हें उपदेश देने का कोई लाभ नहीं॥ १९॥ भक्तजनों की उत्तम वाणी युग-युगान्तरों से प्रगट हो रही है॥ २०॥ जो वाणी में लगन लगाता है, उसकी गति हो जाती है और शब्द द्वारा सत्य में विलीन हो जाता है॥ २१॥ जो काया रूपी नगरी में शब्द की खोज करता है, उसे नाम रूपी नवनिधि हासिल हो जाती है॥ २२॥ जब मन अभिलाषा को त्यागकर सहजावस्था में लीन होता है तो बिना रसना के ही परमात्मा की स्तुति करने लगता है॥ २३॥ नेत्र हैरान होकर उसकी लीला देख रहे हैं और चित्त अदृष्य प्रभु के ध्यान में लगा हुआ है॥ २४॥ परमात्मा सदैव अदृष्ट एवं निर्लिप्त रहता है और ज्योति परमज्योति में मिला ली है॥ २५॥ मैं सदैव अपने गुरु की स्तुति करता हूँ, जिसने सत्य का ज्ञान प्रदान किया है॥ २६॥ नानक एक विनती करता है कि नाम से ही मुक्ति एवं शोभा प्राप्त होती है॥ २७॥ २॥ ११॥

रामकली महला ३ ॥ हरि की पूजा दुलंभ है संतहु कहणा कछू न जाई ॥ १ ॥ संतहु गुरमुखि पूरा पाई ॥ नामो पूज कराई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ हरि बिनु सभु किछु मैला संतहु किआ हउ पूज चड़ाई ॥ २ ॥ हरि साचे भावै सा पूजा होवै भाणा मनि वसाई ॥ ३ ॥ पूजा करै सभु लोकु संतहु मनमुखि थाइ न पाई ॥ ४ ॥ सबदि मरै मनु निरमलु संतहु एह पूजा थाइ पाई ॥ ५ ॥ पवित पावन से जन साचे एक सबदि लिव लाई ॥ ६ ॥ बिनु नावै होर पूज न होवी भरमि भुली लोकाई ॥ ७ ॥ गुरमुखि आपु पछाणै संतहु राम नामि लिव लाई ॥ ८ ॥ आपे निरमलु पूज कराए गुर सबदी थाइ पाई ॥ ६ ॥ पूजा करहि परु बिधि नही जाणहि दूजै भाइ मलु लाई ॥ १० ॥ गुरमुखि होवै सु पूजा जाणै भाणा मनि वसाई ॥ ११ ॥ भाणे ते सभि सुख पावै संतहु अंते नामु सखाई ॥ १२ ॥ अपणा आपु न पछाणहि संतहु कूड़ि करहि वडिआई ॥ १३ ॥ पाखंडि कीनै जमु नही छोडै लै जासी पति गवाई ॥ १४ ॥ जिन अंतरि सबदु आपु पछाणहि गति मिति तिन ही पाई ॥ १५ ॥ एहु मनूआ सुंन समाधि लगावै जोती जोति मिलाई ॥ १६ ॥ सुणि सुणि गुरमुखि नामु वखाणहि सतसंगति मेलाई ॥ १७ ॥ गुरमुखि गावै आपु गवावै दरि साचै सोभा पाई ॥ १८ ॥ साची बाणी सचु वखाणै सचि नामि लिव लाई ॥ १६ ॥ भै भंजनु अति पाप निखंजनु मेरा प्रभु अंति सखाई ॥ २० ॥ सभु किछु आपे आपि वरतै नानक नामि वडिआई ॥ २१ ॥ ३ ॥ १२ ॥

हे संत पुरुषो! ईश्वर की पूजा दुर्लभ है और इसकी महिमा के बारे में कुछ भी कहा नहीं जा सकता॥ १॥ हे सज्जनो! गुरु द्वारा ही पूर्ण प्रभु पाया जा सकता है और गुरु ने सदा परमेश्वर की पूजा करवाई है॥ १॥ रहाउ॥ परमेश्वर के बिना सब कुछ अपवित्र है, फिर उसकी पूजा के लिए क्या अर्पित किया जाए?॥ २॥ जो सच्चे परमेश्वर को मंजूर है, उसकी रज़ा को मन में बसाना ही वास्तव में उसकी पूजा-अर्चना करना है॥ ३॥ हे सज्जनो! सब लोग पूजा करते हैं, परन्तु मनमुखी जीव की पूजा स्वीकार नहीं होती॥ ४॥ हे संतो! यदि शब्द द्वारा अहम् को मिटा दिया जाए तो मन निर्मल हो जाता है और यही पूजा ईश्वर को मंजूर होती है॥ ५॥ जो भक्तजन एक शब्द में ध्यान लगाते हैं, वही पवित्र-पावन एवं सत्यशील हैं॥ ६॥ नाम-सिमरन के बिना कोई अन्य पूजा स्वीकार नहीं होती और सारी दुनिया यों ही भ्रम में भूली हुई है॥ ७॥ हे संतजनो! गुरुमुख आत्म-ज्ञान को पहचान लेता है और उसकी राम-नाम में लगन लग जाती है॥ ८॥ ईश्वर स्वयं ही गुरुमुख से पूजा करवाता है और गुरु-शब्द द्वारा उसका जीवन सफल हो जाता है॥ ६॥ कुछ लोग पूजा तो करते हैं मगर पूजा की विधि को नहीं जानते, उन्होंने द्वैतभाव में फँसकर मन को अहम् रूपी मैल लगा ली है॥ १०॥ जो व्यक्ति गुरुमुख बन जाता है, वह पूजा के तथ्य को जान लेता है और ईश्वरेच्छा को मन में बसा लेता है॥ ११॥ हे संतजनो! ईश्वरेच्छा को मानने से ही सर्वसुख प्राप्त होते हैं और अंत में नाम ही सहायक बन जाता है॥ १२॥ हे संतो! जो आत्मज्ञान को नहीं पहचानता, वह झूठी ही प्रशंसा करता है॥ १३॥ पाखण्ड करने से यम उन्हें नहीं छोड़ता और उनका मान-सम्मान छीन कर पकड़ कर ले जाता है॥ १४॥ जिनके अन्तर्मन में शब्द का निवास हो जाता है, वह अपने आत्म-ज्ञान को पहचान लेता है और उसकी परमगति हो जाती है॥ १५॥ यह मन शून्य समाधि लगा लेता है और उसकी ज्योति परमज्योति में विलीन हो जाती है॥ १६॥ सत्संगति में मिलकर गुरुमुख नाम की स्तुति सुनकर दूसरों को भी नाम का ही बखान करते हैं॥ १७॥ गुरुमुख परमात्मा का यशगान करता है और सत्य के दरबार में शोभा का पात्र बनता है॥ १८॥ गुरु की सच्ची वाणी ने सत्य का ही बखान किया है और सत्य नाम में ही लगन लगाई है॥ १६॥ मेरा प्रभु भयभंजन, पापों का खंडन करने वाला है और अंत में वही हमारा

सहायक बनता है॥ २०॥ हे नानक! सबकुछ अपने आप ही घटित हो रहा है और नाम से ही शोभा मिलती है॥ २१॥ ३॥ १२॥

रामकली महला ३ ॥ हम कुचल कुचील अति अभिमानी मिलि सबदे मैलु उतारी ॥ १ ॥ संतहु गुरमुखि नामि निसतारी ॥ सचा नामु वसिआ घट अंतरि करतै आपि सवारी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ पारस परसे फिरि पारसु होए हरि जीउ अपणी किरपा धारी ॥ २ ॥ इकि भेख करहि फिरहि अभिमानी तिन जूऐ बाजी हारी ॥ ३ ॥ इकि अनदिनु भगति करहि दिनु राती राम नामु उरि धारी ॥ ४ ॥ अनदिनु राते सहजे माते सहजे हउमै मारी ॥ ५ ॥ भै बिनु भगति न होई कब ही भै भाइ भगति सवारी ॥ ६ ॥ माइआ मोहु सबदि जलाइआ गिआनि तति बीचारी ॥ ७ ॥ आपे आपि कराए करता आपे बखसि भंडारी ॥ ८ ॥ तिस किआ गुणा का अंतु न पाइआ हउ गावा सबदि वीचारी ॥ ९ ॥ हरि जीउ जपी हरि जीउ सालाही विचहु आपु निवारी ॥ १० ॥ नामु पदारथु गुर ते पाइआ अखुट सचे भंडारी ॥ ११ ॥ अपणिआ भगता नो आपे तुठा अपणी किरपा करि कल धारी ॥ १२ ॥ तिन साचे नाम की सदा भुख लागी गावनि सबदि वीचारी ॥ १३ ॥ जीउ पिंडु सभु किछु है तिस का आखणु बिखमु बीचारी ॥ १४ ॥ सबदि लगे सेई जन निसतरे भउजलु पारि उतारी ॥ १५ ॥ बिनु हरि साचे को पारि न पावै बूझै को वीचारी ॥ १६ ॥ जो धुरि लिखिआ सोई पाइआ मिलि हरि सबदि सवारी ॥ १७ ॥ काइआ कंचनु सबदे राती साचै नाइ पिआरी ॥ १८ ॥ काइआ अंम्रिति रही भरपूरे पाईऐ सबदि वीचारी ॥ १९ ॥ जो प्रभु खोजहि सेई पावहि होरि फूटि मूए अहंकारी ॥ २० ॥ बादी बिनसहि सेवक सेवहि गुर कै हेति पिआरी ॥ २१ ॥ सो जोगी ततु गिआनु बीचारे हउमै त्रिसना मारी ॥ २२ ॥ सतिगुरु दाता तिनै पछाता जिस नो क्रिपा तुमारी ॥ २३ ॥ सतिगुरु न सेवहि माइआ लागे डूबि मूए अहंकारी ॥ २४ ॥ जिचरु अंदरि सासु तिचरु सेवा कीचै जाइ मिलीऐ राम मुरारी ॥ २५ ॥ अनदिनु जागत रहै दिनु राती अपने प्रिअ प्रीति पिआरी ॥ २६ ॥ तनु मनु वारी वारि घुमाई अपने गुर विटहु बलिहारी ॥ २७ ॥ माइआ मोहु बिनसि जाइगा उबरे सबदि वीचारी ॥ २८ ॥ आपि जगाए सेई जागे गुर कै सबदि वीचारी ॥ २९ ॥ नानक सेई मूए जि नामु न चेतहि भगत जीवे वीचारी ॥ ३० ॥ ४ ॥ १३ ॥

हम बड़े मैले, आचरणहीन एवं अभिमानी थे, पर शब्द-गुरु से मिलकर सारी मैल उतार दी है॥ १॥ हे संतजनो! गुरु ने नाम-सिमरन द्वारा उद्धार कर दिया है। सच्चा-नाम हृदय में स्थित हो गया है, कर्त्तार ने स्वयं ही जीवन-संवार दिया है॥ १॥ रहाउ॥ परमेश्वर ने अपनी कृपा की है और गुरु रूपी पारस को छूने से गुणवान रूपी पारस बन गया हूँ॥ २॥ कुछ लोग वेष बनाकर अभिमानी होकर फिरते हैं और उन्होंने अपनी जीवन बाजी जुए में हार दी है॥ ३॥ कोई राम-नाम को अपने हृदय में बसाकर रात-दिन भक्ति करता है॥ ४॥ वे निशदिन सहजावस्था में मस्त होकर लीन रहते हैं और सहज ही अपने अहंत्व को मिटा दिया है॥ ५॥ भगवान के श्रद्धा-भय के बिना कभी भक्ति नहीं हो सकती, इसलिए उन्होंने भय एवं भक्ति-भाव से अपना जीवन संवार लिया है॥ ६॥ ज्ञान-तत्व का विचार करके उन्होंने शब्द द्वारा मोह-माया को जला दिया है॥ ७॥ परमेश्वर स्वयं ही सब करवाता है और वह स्वयं ही कृपा का भण्डार है॥ ८॥ उसके गुणों का अन्त नहीं पाया जा सकता, मैं शब्द द्वारा विचार करके उसका स्तुतिगान करता हूँ॥ ९॥ अपना अहंत्व दूर करके परमात्मा का जाप करता हूँ और उसकी ही स्तुति करता हूँ॥ १०॥ मैंने नाम पदार्थ गुरु से प्राप्त किया है, सच्चे प्रभु के नाम का भण्डार अक्षय है॥ ११॥ परमात्मा अपने भक्तों पर मेहरबान हो गया है, उसने कृपा करके नाम-रूपी कला हृदय में रख दी है॥ १२॥ उन्हें सदैव

सत्य-नाम की भूख लगी रहती है और शब्द का चिंतन करके प्रभु का गुणगान करते रहते हैं॥ १३॥ यह प्राण एवं शरीर सबकुछ उसकी देन है, इसलिए उसके दान का वर्णन एवं विचार करना बहुत कठिन है॥ १४॥ जो शब्द से लगे हैं, उनका ही उद्धार हुआ है और वही भवसागर से पार हो गए हैं॥ १५॥ सच्चे परमात्मा के बिना कोई भी पार नहीं हो सकता, परन्तु कोई विरला ही इस तथ्य को सोचता-समझता है॥ १६॥ प्रारम्भ से ही जो भाग्य में लिखा हुआ है, वही प्राप्त हुआ है और प्रभु से मिलकर शब्द द्वारा जीवन संवार लिया है॥ १७॥ शब्द में लीन काया सोने की तरह सुन्दर हो गई है और सच्चे नाम के प्यार में ही लीन है॥ १८॥ यह काया नामामृत से भरपूर रहती है, पर यह काया शब्द का चिंतन करने से ही प्राप्त होती है॥ १६॥ जो व्यक्ति प्रभु की खोज करते हैं, उसे पा लेते हैं परन्तु अन्य अहंकारी जीव अपने अहंकार में ही मर मिट जाता है॥ २०॥ वाद-विवाद करने वाले जीव नाश हो जाते हैं पर गुरु से प्रेम करने वाला सेवक उसकी ही सेवा करता है॥ २१॥ सच्चा योगी वही है, जो अहम् एवं तृष्णा को मिटाकर ज्ञान-तत्व का चिंतन करता है॥ २२॥ हे परमेश्वर ! जिस पर तुम्हारी कृपा हुई है, उसने दाता सतगुरु को पहचान लिया है॥ २३॥ माया में लगे हुए जीव सतगुरु की सेवा नहीं करते और ऐसे अहंकारी डूबकर मर जाते हैं॥ २४॥ जब तक जीवन-साँसें हैं, तब तक सेवा करनी चाहिए, इस प्रकार राम मिल जाता है॥ २५॥ जिन्हें अपने प्रिय प्रभु की प्रीति लग जाती है, वे दिन-रात जाग्रत रहते हैं॥ २६॥ मैं अपने गुरु पर बलिहारी जाता हूँ और अपना तन-मन सबकुछ उस पर न्यौछावर करता हूँ॥ २७॥ यह मोह-माया तो नाशवान है, शब्द का चिंतन करने से उद्धार हो सकता है॥ २८॥ गुरु के शब्द का विचार करके वही अज्ञान से जागते हैं, जिन्हें प्रभु ने स्वयं सचेत किया है॥ २६॥ हे नानक ! जो नाम-स्मरण नहीं करते, वही जीव मरे हैं और भक्त तो शब्द का विचार करके जीते रहते हैं॥ ३०॥ ४॥ १३॥

रामकली महला ३ ॥ नामु खजाना गुर ते पाइआ त्रिपति रहे आघाई ॥ १ ॥ संतहु गुरमुखि मुकति गति पाई ॥ एकु नामु वसिआ घट अंतरि पूरे की वडिआई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ आपे करता आपे भुगता देदा रिजकु सबाई ॥ २ ॥ जो किछु करणा सो करि रहिआ अवरु न करणा जाई ॥ ३ ॥ आपे साजे स्रिसटि उपाए सिरि सिरि धंधै लाई ॥ ४ ॥ तिसहि सरेवहु ता सुखु पावहु सतिगुरि मेलि मिलाई ॥ ५ ॥ आपणा आपु आपि उपाए अलखु न लखणा जाई ॥ ६ ॥ आपे मारि जीवाले आपे तिस नो तिलु न तमाई ॥ ७ ॥ इकि दाते इकि मंगते कीते आपे भगति कराई ॥ ८ ॥ से वडभागी जिनी एको जाता सचे रहे समाई ॥ ६ ॥ आपि सरूपु सिआणा आपे कीमति कहणु न जाई ॥ १० ॥ आपे दुखु सुखु पाए अंतरि आपे भरमि भुलाई ॥ ११ ॥ वडा दाता गुरमुखि जाता निगुरी अंध फिरै लोकाई ॥ १२ ॥ जिनी चाखिआ तिना सादु आइआ सतिगुरि बूझ बुझाई ॥ १३ ॥ इकना नावहु आपि भुलाए इकना गुरमुखि देइ बुझाई ॥ १४ ॥ सदा सदा सालाहिहु संतहु तिस दी वडी वडिआई ॥ १५ ॥ तिसु बिनु अवरु न कोई राजा करि तपावसु बणत बणाई ॥ १६ ॥ निआउ तिसै का है सद साचा विरले हुकमु मनाई ॥ १७ ॥ तिस नो प्राणी सदा धिआवहु जिनि गुरमुखि बणत बणाई ॥ १८ ॥ सतिगुर भेटै सो जनु सीझै जिसु हिरदै नामु वसाई ॥ १६ ॥ सचा आपि सदा है साचा बाणी सबदि सुणाई ॥ २० ॥ नानक सुणि वेखि रहिआ विसमादु मेरा प्रभु रविआ स्रब थाई ॥ २१ ॥ ५ ॥ १४ ॥

नाम का खजाना गुरु से प्राप्त किया है, जिससे अब मैं तृप्त एवं संतुष्ट रहता हूँ॥ १॥ हे संतजनो ! गुरु के सान्निध्य में मुक्ति एवं परमगति प्राप्त हुई है। प्रभु का नाम हृदय में वास कर गया है, यह पूर्ण गुरु का बड़प्पन है॥ १॥ रहाउ॥ परमेश्वर स्वयं ही कर्ता, स्वयं ही भोगने

वाला है और वह सब जीवों को भोजन देता है॥ २॥ जो कुछ वह करना चाहता है, वही कर रहा है, उसके अतिरिक्त अन्य कोई भी करने वाला नहीं॥ ३॥ वह स्वयं ही सृष्टि की उत्पति करता है और स्वयं ही जीवों को जगत् के कार्यों में लगाता है॥ ४॥ उसकी उपासना करने से सुख हासिल होता है। सतगुरु जीव को ईश्वर से मिला देता है॥ ५॥ ईश्वर स्वयंभू है और उस अदृष्ट को देखा नहीं जा सकता॥ ६॥ वह स्वयं ही मृत्युदाता, स्वयं ही जीवनदाता है और उसे तिल मात्र भी कोई लोभ नहीं॥ ७॥ यह सब उसकी ही लीला है कि कोई दानी बना हुआ है, कोई भिखारी है और वह स्वयं ही भक्ति करवाता है॥ ८॥ जिन्होंने एक परमात्मा को जान लिया है, वे भाग्यशाली हैं और वे सत्य में ही विलीन रहते हैं॥ ६॥ वह स्वयं ही सुन्दर रूप वाला एवं बड़ा बुद्धिमान है और उसकी महिमा की सही कीमत को आंका नहीं जा सकता॥ १०॥ उसने स्वयं ही जीवों को दुख-सुख प्रदान किया है और स्वयं ही उन्हें भ्रम में भुलाया हुआ है॥ ११॥ वह बहुत बड़ा दाता है, जिसे गुरुमुख ने पहचान लिया है, किन्तु ज्ञानहीन निगुरी दुनिया इधर-उधर भटक रही है॥ १२॥ जिन्होंने नामामृत को चखा है, उन्हें ही स्वाद आया है और सतिगुरु ने यही ज्ञान दिया है॥ १३॥ किसी को परमात्मा ने स्वयं ही नाम से विमुख किया हुआ है और किसी को गुरु के माध्यम से नाम ज्ञान प्रदान किया है॥ १४॥ हे सज्जनो ! सदैव परमात्मा का स्तुतिगान करो; उसकी कीर्ति बहुत बड़ी है॥ १५॥ उसके अतिरिक्त अन्य कोई संसार का राजा नहीं है, उसने स्वयं सबके साथ न्याय का नियम बनाया है॥ १६॥ उसका न्याय सदैव सच्चा है, वह किसी विरले जीव से ही अपना हुक्म मनवाता है॥ १७॥ हे प्राणी ! सदैव उसका ध्यान करो; जिसने गुरु द्वारा हुक्म पालन का नियम बनाया है॥ १८॥ वही जीव सफल होता है, जो सतगुरु से साक्षात्कार करता है और जिसके हृदय में नाम स्थित हो जाता है॥ १६॥ वह सदैव सत्य एवं शाश्वत है, उसकी वाणी सत्य है और उसका ही शब्द सुनाई देता है॥ २०॥ हे नानक ! यह सुन-देखकर बड़ा आश्चर्य हो रहा है कि मेरा प्रभु सब स्थानों में मौजूद है॥ २१॥ ५॥ १४॥

रामकली महला ५ असटपदीआ १ओ सतिगुर प्रसादि ॥

किनही कीआ परविरति पसारा ॥ किनही कीआ पूजा बिसथारा ॥ किनही निवल भुइअंगम साधे ॥ मोहि दीन हरि हरि आराधे ॥ १ ॥ तेरा भरोसा पिआरे ॥ आन न जाना वेसा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ किनही ग्रिहु तजि वण खंडि पाइआ ॥ किनही मोनि अउधूतु सदाइआ ॥ कोई कहतउ अनंनि भगउती ॥ मोहि दीन हरि हरि ओट लीती ॥ २ ॥ किनही कहिआ हउ तीरथ वासी ॥ कोई अंनु तजि भइआ उदासी ॥ किनही भवनु सभ धरती करिआ ॥ मोहि दीन हरि हरि दरि परिआ ॥ ३ ॥ किनही कहिआ मै कुलहि वडिआई ॥ किनही कहिआ बाह बहु भाई ॥ कोई कहै मै धनहि पसारा ॥ मोहि दीन हरि हरि आधारा ॥ ४ ॥ किनही घूघर निरति कराई ॥ किनहू वरत नेम माला पाई ॥ किनही तिलकु गोपी चंदन लाइआ ॥ मोहि दीन हरि हरि हरि धिआइआ ॥ ५ ॥ किनही सिध बहु चेटक लाए ॥ किनही भेख बहु थाट बनाए ॥ किनही तंत मंत बहु खेवा ॥ मोहि दीन हरि हरि हरि सेवा ॥ ६ ॥ कोई चतुरु कहावै पंडित ॥ को खटु करम सहित सिउ मंडित ॥ कोई करै आचार सुकरणी ॥ मोहि दीन हरि हरि हरि सरणी ॥ ७ ॥ सगले करम धरम जुग सोधे ॥ बिनु नावै इहु मनु न प्रबोधे ॥ कहु नानक जउ साधसंगु पाइआ ॥ बूझी त्रिसना महा सीतलाइआ ॥ ८ ॥ १ ॥

किसी ने गृहस्थ-जीवन का प्रसार किया हुआ है, किसी ने पूजा-अर्चना का विस्तार किया हुआ है, किसी ने निउली कर्म का अभ्यास एवं कुण्डलिनी की साधना की हुई है, परन्तु मुझ दीन ने परमेश्वर की ही आराधना की है॥ १॥ हे प्यारे प्रभु ! मुझे तेरा ही भरोसा है और कोई आडम्बर

जानता ही नहीं॥ १॥ रहाउ॥ किसी ने अपना घर-परिवार छोड़कर जंगल में निवास कर लिया है। कोई मौनी एवं अवधूत कहला रहा है। कोई कहता है कि मैं भगवती देवी का अनन्य उपासक हूँ, परन्तु मुझ दीन ने तो परमात्मा का ही सहारा लिया है॥ २॥ किसी ने कहा है कि मैं तीर्थ का वासी हूँ। कोई अन्न त्यागकर उदासी साधु बन गया है। किसी ने सारी धरती का भ्रमण कर लिया है, परन्तु मैं गरीब भगवान के द्वार पर ही आ पड़ा हूँ॥ ३॥ किसी ने कहा है कि उच्च कुल के कारण मेरी बड़ी शोभा है, किसी ने कहा है कि अपने भाईयों की मदद के कारण मेरा बड़ा बाहुबल है, कोई कह रहा है कि अधिक धन दौलत के कारण मैं ही धनवान हूँ, परन्तु मुझ दीन को हरि का ही आधार है॥ ४॥ कोई पैरों में घुँघरू बाँधकर नाच रहा है। किसी ने व्रत-उपवास, नियम एवं माला पहनी हुई है, किसी ने अपने माथे पर गोपीचन्दन का तिलक लगाया हुआ है, परन्तु मुझ दीन ने ईश्वर का ही ध्यान किया है॥ ५॥ कोई मनुष्य सिद्धों की ऋद्धियाँ सिद्धियाँ वाले कारनामे दिखा रहे हैं, किसी ने वेश बनाकर अपने बहुत आश्रम बना लिए हैं, कोई तंत्र-मंत्र की विद्या में प्रवृत्त रहता है। परन्तु मैं गरीब तो परमात्मा की उपासना में ही लीन रहता हूँ॥ ६॥ कोई स्वयं को चतुर पण्डित कहलवाता है, कोई छः कर्मों में प्रवृत्त रहता है और शिव की पूजा करता है, कोई शुभ कर्म एवं धर्म-कर्म करता है परन्तु मुझ दीन ने परमात्मा की ही शरण ली है॥ ७॥ मैंने सब युगों के धर्म-कर्म का भलीभांति विश्लेषण कर लिया है, परन्तु नाम के बिना यह मन किसी अन्य धर्म-कर्म को उचित नहीं समझता। हे नानक ! जब साधुओं की संगति प्राप्त हुई तो सारी तृष्णा बुझ गई और मन शान्त हो गया॥ ८॥ १॥

रामकली महला ५ ॥ इसु पानी ते जिनि तू घरिआ ॥ माटी का ले देहुरा करिआ ॥ उकति जोति लै सुरति परीखिआ ॥ मात गरभ महि जिनि तू राखिआ ॥ १ ॥ राखनहारु सम्हारि जना ॥ सगले छोडि बीचार मना ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जिनि दीए तुधु बाप महतारी ॥ जिनि दीए भ्रात पुत हारी ॥ जिनि दीए तुधु बनिता अरु मीता ॥ तिसु ठाकुर कउ रखि लेहु चीता ॥ २ ॥ जिनि दीआ तुधु पवनु अमोला ॥ जिनि दीआ तुधु नीरु निरमोला ॥ जिनि दीआ तुधु पावकु बलना ॥ तिसु ठाकुर की रहु मन सरना ॥ ३ ॥ छतीह अंम्रित जिनि भोजन दीए ॥ अंतरि थान ठहरावन कउ कीए ॥ बसुधा दीओ बरतनि बलना ॥ तिसु ठाकुर के चिति रखु चरना ॥ ४ ॥ पेखन कउ नेत्र सुनन कउ करना ॥ हसत कमावन बासन रसना ॥ चरन चलन कउ सिरु कीनो मेरा ॥ मन तिसु ठाकुर के पूजहु पैरा ॥ ५ ॥ अपवित्र पवित्रु जिनि तू करिआ ॥ सगल जोनि महि तू सिरि धरिआ ॥ अब तू सीझु भावै नही सीझै ॥ कारजु सवरै मन प्रभु धिआईजै ॥ ६ ॥ ईहा ऊहा एकै ओही ॥ जत कत देखीऐ तत तत तोही ॥ तिसु सेवत मनि आलसु करै ॥ जिसु विसरिऐ इक निमख न सरै ॥ ७ ॥ हम अपराधी निरगुनीआरे ॥ ना किछु सेवा ना करमारे ॥ गुरु बोहिथु वडभागी मिलिआ ॥ नानक दास संगि पाथर तरिआ ॥ ८ ॥ २ ॥

हे जीव ! जिसने वीर्य रूपी बूँद से तुझे उत्पन्न किया है और मिट्टी को लेकर तेरा शरीर बनाया है, जिसने बुद्धि की ज्योति एवं सोचने परखने का ज्ञान देकर माता के गर्भ में तेरी रक्षा की है॥ १॥ हे जीव ! अपने रचयिता एवं रखवाले का चिंतन कर; मन के सब विचार छोड़ दे॥ १॥ रहाउ॥ जिसने तुझे माता-पिता दिए हैं, जिसने तुझे भाई, पुत्र एवं साथी दिए हैं, जिसने तुझे पत्नी और मित्र दिए हैं, उस ठाकुर जी को अपने हृदय में बसाकर रखो॥ २॥ जिसने तुझे अमूल्य पवन दी है, जिसने तुझे निर्मल जल दिया है, जिसने तुझे अग्नि एवं ईंधन दिया है, हे मन ! उस मालिक की शरण में पड़े रहो॥ ३॥ जिसने तुझे छत्तीस प्रकार का अमृत भोजन दिया है, जिसने भोजन को तेरे पेट में ठहरने के लिए स्थान बनाया है, जिसने तुझे धरती एवं उपयोग

के लिए सामग्री दी है, उस ठाकुर जी के चरणों को अपने चित्त में बसाकर रखो॥ ४॥ जिसने देखने के लिए आँखें, सुनने के लिए कान, काम करने के लिए हाथ, सूँघने के लिए नाक और स्वाद के लिए जीभ दी है, चलने के लिए पैर और सिर को सब अंगों में शीर्ष बनाया है, हे मन! उस मालिक के चरणों की पूजा अर्चना करो॥ ५॥ जिसने तुझे अपवित्र से पवित्र कर दिया है, सब योनियों में तेरा मानव-जन्म उत्तम बना दिया है, अब यह तेरे ही वश में है कि तू उसका सिमरन करके अपना जीवन सफल कर ले। हे मन! प्रभु का ध्यान करने से सब कार्य सिद्ध हो जाते हैं॥ ६॥ लोक-परलोक में एक वही मौजूद है। जिधर किधर भी देखता हूँ, उधर ही परमात्मा नजर आता है। जिसे विस्मृत करने से एक पल भी जीवन निर्वाह नहीं होता, उसकी भक्ति करने के लिए मन में क्यों आलस्य पैदा होता है॥ ७॥ हम जीव अपराधी एवं गुणविहीन हैं, न कोई सेवा-भक्ति की है और न ही कोई शुभ कर्म किया है, किन्तु अहोभाग्य से गुरु रूपी जहाज मिल गया है। हे नानक! उस गुरु के संग लगकर हम पत्थर जीव भी संसार-सागर से पार हो गए हैं॥ ८॥ २॥

रामकली महला ५ ॥ काहू बिहावै रंग रस रूप ॥ काहू बिहावै माइ बाप पूत ॥ काहू बिहावै राज मिलख वापारा ॥ संत बिहावै हरि नाम अधारा ॥ १ ॥ रचना साचु बनी ॥ सभ का एकु धनी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ काहू बिहावै बेद अरु बादि ॥ काहू बिहावै रसना सादि ॥ काहू बिहावै लपटि संगि नारी ॥ संत रचे केवल नाम मुरारी ॥ २ ॥ काहू बिहावै खेलत जूआ ॥ काहू बिहावै अमली हूआ ॥ काहू बिहावै पर दरब चोराए ॥ हरि जन बिहावै नाम धिआए ॥ ३ ॥ काहू बिहावै जोग तप पूजा ॥ काहू रोग सोग भरमीजा ॥ काहू पवन धार जात बिहाए ॥ संत बिहावै कीरतनु गाए ॥ ४ ॥ काहू बिहावै दिनु रैनि चालत ॥ काहू बिहावै सो पिड़ु मालत ॥ काहू बिहावै बाल पड़ावत ॥ संत बिहावै हरि जसु गावत ॥ ५ ॥ काहू बिहावै नट नाटिक निरते ॥ काहू बिहावै जीआ इह हिरते ॥ काहू बिहावै राज महि डरते ॥ संत बिहावै हरि जसु करते ॥ ६ ॥ काहू बिहावै मता मसूरति ॥ काहू बिहावै सेवा जरूरति ॥ काहू बिहावै सोधत जीवत ॥ संत बिहावै हरि रसु पीवत ॥ ७ ॥ जितु को लाइआ तित ही लगाना ॥ ना को मूड़ु नही को सिआना ॥ करि किरपा जिसु देवै नाउ ॥ नानक ता कै बलि बलि जाउ ॥ ८ ॥ ३ ॥

कोई अपना जीवन दुनिया की रंगरलियों, रसों एवं सौन्दर्य में ही व्यतीत करता है, कोई माता-पिता एवं पुत्र के संग जीवन गुजार देता है, कोई राज्य, धन-सम्पति एवं व्यापार में जिंदगी बिताता है, लेकिन संतों की जिन्दगी हरि-नाम के आधार पर व्यतीत हो जाती है॥ १॥ यह जगत्-रचना परम-सत्य ने बनाई है और सबका मालिक परमेश्वर ही है॥ १॥ रहाउ॥ कोई वेदों के अध्ययन एवं वाद-विवाद में अपनी जिंदगी गुजार देता है, कोई जीभ के स्वाद में जीवन बिता देता है। किसी कामुक व्यक्ति का जीवन नारी के संग कामपिपासा में ही बीत जाता है, लेकिन संत केवल प्रभु के नाम में ही जिंदगी भर लीन रहते हैं॥ २॥ किसी का जीवन जुआ खेलते ही व्यतीत हो जाता है। कोई नशे में अपना जीवन गुजार देता है, कोई पराया धन चोरी करने में जिंदगी काट देता है, किन्तु भक्तजन परमात्मा के नाम-ध्यान में अपना जीवन साकार कर लेते हैं॥ ३॥ किसी का जीवन योग साधना, तपस्या एवं पूजा में ही गुजर जाता है, कोई रोग-शोक एवं भ्रम में पड़कर जिन्दगी बिता देता है, कोई योगासन से प्राणायाम करके जीवन व्यतीत कर देते हैं, लेकिन संतों का जीवन ईश्वर का भजन-कीर्तन करते ही व्यतीत हो जाता है॥ ४॥ किसी का जीवन दिन-रात सफर करते ही गुजर जाता है, कोई रणभूमि में डटकर लड़ता हुआ ही जिंदगी

काट देता है, कुछ लोग अध्यापक बनकर बच्चों को विद्या देने में ही समय बिता देते हैं, परन्तु संतों की जिन्दगी भगवान का यशोगान करने में व्यतीत हो जाती है॥ ५॥ किसी का जीवन कलाकार बनकर नाटक एवं नृत्य में ही गुजर जाता है, कोई जीव-हत्या एवं लूटपाट में जिंदगी बिता देते हैं, कोई अपना जीवन राज-भाग के कामों में डरता व्यतीत कर देता है, परन्तु संत प्रभु का यशोगान करते ही जिन्दगी बिता देते हैं॥ ६॥ किसी का सारा समय सलाह-मशविरा एवं परामर्श देने में ही कट जाता है, कोई जिन्दगी की आवश्यकताओं को पूरा करने एवं सेवा करते ही वक्त निकाल देता है, किसी का जीवन-संशोधन करने में ही समय गुजर जाता है, परन्तु संतों की पूरी जिंदगी हरि-नाम रूपी रस का पान करने में ही गुजर जाती है॥ ७॥ सच तो यही है कि ईश्वर ने जीव को जिस कार्य में लगाया है, वह उस में लग गया है। न कोई मूर्ख है और न ही कोई चतुर है। परमात्मा कृपा करके जिसे अपना नाम देता है, नानक उस पर बलिहारी जाता है॥ ८॥ ३॥

रामकली महला ५ ॥ दावा अगनि रहे हरि बूट ॥ मात गरभ संकट ते छूट ॥ जा का नामु सिमरत भउ जाइ ॥ तैसे संत जना राखै हरि राइ ॥ १ ॥ ऐसे राखनहार दइआल ॥ जत कत देखउ तुम प्रतिपाल ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जलु पीवत जिउ तिखा मिटंत ॥ धन बिगसै ग्रिहि आवत कंत ॥ लोभी का धनु प्राण अधारु ॥ तिउ हरि जन हरि हरि नाम पिआरु ॥ २ ॥ किरसानी जिउ राखै रखवाला ॥ मात पिता दइआ जिउ बाला ॥ प्रीतमु देखि प्रीतमु मिलि जाइ ॥ तिउ हरि जन राखै कंठि लाइ ॥ ३ ॥ जिउ अंधुले पेखत होइ अनंद ॥ गूंगा बकत गावै बहु छंद ॥ पिंगुल परबत परते पारि ॥ हरि कै नामि सगल उधारि ॥ ४ ॥ जिउ पावक संगि सीत को नास ॥ ऐसे प्राछत संतसंगि बिनास ॥ जिउ साबुनि कापर ऊजल होत ॥ नाम जपत सभु भ्रमु भउ खोत ॥ ५ ॥ जिउ चकवी सूरज की आस ॥ जिउ चात्रिक बूंद की पिआस ॥ जिउ कुरंक नाद करन समाने ॥ तिउ हरि नाम हरि जन मनहि सुखाने ॥ ६ ॥ तुमरी क्रिपा ते लागी प्रीति ॥ दइआल भए ता आए चीति ॥ दइआ धारी तिनि धारणहार ॥ बंधन ते होई छुटकार ॥ ७ ॥ सभि थान देखे नैण अलोइ ॥ तिसु बिनु दूजा अवरु न कोइ ॥ भ्रम भै छूटे गुर परसाद ॥ नानक पेखिओ सभु बिसमाद ॥ ८ ॥ ४ ॥

जैसे जंगल की आग में कुछ पौधे बचकर हरे रह जाते हैं, जैसे माता के गर्भ के संकट में से बच्चा छूट जाता है, जिसका नाम स्मरण करने से हर प्रकार का भय दूर हो जाता है, ईश्वर अपने संतजनों की रक्षा करता है॥ १॥ दयालु ईश्वर सबकी रक्षा करने वाला है। हे दीनदयाल ! जिधर-किधर भी देखता हूँ, केवल तू ही हमारा प्रतिपालक है॥ १॥ रहाउ॥ जैसे जल पीने से प्यास मिट जाती है, जैसे पति के घर में आने से पत्नी प्रसन्न हो जाती है, जैसे लोभी इन्सान का धन ही उसके प्राणों का आधार होता है, वैसे ही भक्तजनों का हरि-नाम से प्यार होता है॥ २॥ जैसे कृषक अपनी कृषि की रक्षा करता है, जैसे माता-पिता अपने बच्चे पर दया करते हैं, जैसे प्रियतम को देखकर प्रियतमा उसमें ही आसक्त हो जाती है, वैसे ही भक्तजनों को परमेश्वर अपने कंठ से लगाकर रखता है॥ ३॥ जैसे अन्धे को देखने पर आनंद होता है, जैसे कोई गूंगा बोलने लग जाए तो वह प्रसन्न होकर गीत गाने लगता हैं, जैसे कोई लंगड़ा आदमी पर्वत पर चढ़कर खुशी व्यक्त करता है, वैसे ही हरि का नाम जपने से सबका उद्धार हो जाता है॥ ४॥ जैसे अग्नि जलने से शीत का प्रकोप नाश हो जाता है, ऐसे ही संतों की संगति करने से हर प्रकार के पाप नाश हो जाते हैं। जैसे साबुन लगाकर कपड़े धोने से उज्ज्वल हो जाते हैं, वैसे ही नाम जपने से सब भ्रम दूर हो जाते हैं॥ ५॥ जैसे चकवी को सूर्योदय की आशा रहती है, जैसे चातक को स्वाति बूंद की

प्यास लगी रहती है, जैसे हिरन को संगीत के स्वर से सुख उपलब्ध होता है, वैसे ही प्रभु का नाम भक्तों के मन में सुख प्रदान करता है॥ ६॥ तेरी कृपा से ही तुझसे मेरी प्रीति लगी है। जब तू दयालु हुआ तो ही तू याद आया है। दयालु प्रभु ने जब कृपा की तो मेरा बन्धनों से छुटकारा हो गया॥ ७॥ मैंने आँखें खोलकर सब स्थान देख लिए हैं, उस परमात्मा के अतिरिक्त अन्य कोई नजर नहीं आता। गुरु की कृपा से सब भ्रम एवं भय दूर हो गए हैं। हे नानक! उस प्रभु की अद्भुत लीला ही सब जगह दिखाई दे रही है॥ ८॥ ४॥

रामकली महला ५ ॥ जीअ जंत सभि पेखीअहि प्रभ सगल तुमारी धारना ॥ १ ॥ इहु मनु हरि कै नामि उधारना ॥ १ ॥ रहाउ ॥ खिन महि थापि उथापे कुदरति सभि करते के कारना ॥ २ ॥ कामु क्रोधु लोभु झूठु निंदा साधू संगि बिदारना ॥ ३ ॥ नामु जपत मनु निरमल होवै सूखे सूखि गुदारना ॥ ४ ॥ भगत सरणि जो आवै प्राणी तिसु ईहा ऊहा न हारना ॥ ५ ॥ सूख दूख इसु मन की बिरथा तुम ही आगै सारना ॥ ६ ॥ तू दाता सभना जीआ का आपन कीआ पालना ॥ ७ ॥ अनिक बार कोटि जन ऊपरि नानकु वंञै वारना ॥ ८ ॥ ५ ॥

हे प्रभु! ये सभी जीव-जन्तु जो दिखाई दे रहे हैं, सबको तूने ही धारण किया हुआ है॥ १॥ इस मन का उद्धार हरि के नाम से ही होता है॥ १॥ रहाउ॥ समूची कुदरत ईश्वर की रचना है, वह क्षण में ही बनाने एवं मिटाने वाला है॥ २॥ साधुओं की संगति द्वारा काम, क्रोध, लोभ, झूठ एवं निंदा को नष्ट किया जा सकता है॥ ३॥ प्रभु का नाम जपने से मन निर्मल हो जाता है और सारा जीवन सुख में ही गुजरता है॥ ४॥ जो प्राणी भक्त की शरण में आ जाता है, वह लोक-परलोक में अपनी जीवन बाजी नहीं हारता॥ ५॥ हे परमेश्वर! इस मन की सुख-दुख की व्यथा तेरे समक्ष है, कल्याण करना॥ ६॥ तू सब जीवों का दाता है और स्वयं ही पालन-पोषण करता है॥ ७॥ नानक तेरे भक्तजनों पर करोड़ों बार न्यौछावर जाता है॥ ८॥ ५॥

रामकली महला ५ असटपदी १ओं सतिगुर प्रसादि ॥

दरसनु भेटत पाप सभि नासहि हरि सिउ देइ मिलाई ॥ १ ॥ मेरा गुरु परमेसरु सुखदाई ॥ पारब्रहम का नामु द्रिड़ाए अंते होइ सखाई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सगल दूख का डेरा भंना संत धूरि मुखि लाई ॥ २ ॥ पतित पुनीत कीए खिन भीतरि अगिआनु अंधेरु वंञाई ॥ ३ ॥ करण कारण समरथ सुआमी नानक तिसु सरणाई ॥ ४ ॥ बंधन तोड़ि चरन कमल द्रिड़ाए एक सबदि लिव लाई ॥ ५ ॥ अंध कूप बिखिआ ते काढिओ साच सबदि बणि आई ॥ ६ ॥ जनम मरण का सहसा चूका बाहुड़ि कतहु न धाई ॥ ७ ॥ नाम रसाइणि इहु मनु राता अंम्रितु पी त्रिपताई ॥ ८ ॥ संतसंगि मिलि कीरतनु गाइआ निहचल वसिआ जाई ॥ ९ ॥ पूरै गुरि पूरी मति दीनी हरि बिनु आन न भाई ॥ १० ॥ नामु निधानु पाइआ वडभागी नानक नरकि न जाई ॥ ११ ॥ घाल सिआणप उकति न मेरी पूरै गुरू कमाई ॥ १२ ॥ जप तप संजम सुचि है सोई आपे करे कराई ॥ १३ ॥ पुत्र कलत्र महा बिखिआ महि गुरि साचै लाइ तराई ॥ १४ ॥ अपणे जीअ तै आपि सम्हाले आपि लीए लड़ि लाई ॥ १५ ॥ साच धरम का बेड़ा बांधिआ भवजलु पारि पवाई ॥ १६ ॥ बेसुमार बेअंत सुआमी नानक बलि बलि जाई ॥ १७ ॥ अकाल मूरति अजूनी संभउ कलि अंधकार दीपाई ॥ १८ ॥ अंतरजामी जीअन का दाता देखत त्रिपति अघाई ॥ १९ ॥ एकंकारु निरंजनु निरभउ सभ जलि थलि रहिआ समाई ॥ २० ॥ भगति दानु भगता कउ दीना हरि नानकु जाचै माई ॥ २१ ॥ १ ॥ ६ ॥

गुरु के दर्शन एवं साक्षात्कार से सभी पाप दूर हो जाते हैं और वह ईश्वर से मिला देता है॥ १॥ मेरा गुरु-परमेश्वर सुख देने वाला है, वह परब्रह्म का नाम स्मरण करवाता है और अंत में सहायक बनता है॥ १॥ रहाउ॥ जिसने संत-गुरु की चरण-धूलि अपने मुख पर लगाई है, उसके सब दुखों का पहाड़ नष्ट हो गया है॥ २॥ उसने क्षण में ही पतितों को पावन कर दिया है और उनका अज्ञान का अंधेरा मिटा दिया है॥ ३॥ हे नानक! मेरा स्वामी करने-करवाने में समर्थ है, इसलिए उसकी शरण ली है॥ ४॥ उसने सब बन्धन तोड़कर प्रभु के चरण-कमल मन में बसा दिए हैं और एक शब्द में लगन लगा दी है॥ ५॥ गुरु ने माया के विष रूपी अंधकूप से निकाल दिया है और अब सच्चे शब्द से प्रीति पैदा हो गई है॥ ६॥ मेरा जन्म-मरण का संशय दूर हो गया है और अब इधर-उधर नहीं भटकता॥ ७॥ यह मन नाम-रस में ही लीन रहता है और नामामृत का पान करके तृप्त हो चुका है॥ ८॥ संतों के संग मिलकर परमात्मा का कीर्तिगान किया है और निश्चल स्थान में वास हो गया है॥ ६॥ पूर्ण गुरु ने पूर्ण उपदेश दिया है कि भगवान के बिना अन्य कोई आधार नहीं॥ १०॥ हे नानक! जिस भाग्यशाली ने नाम रूपी भण्डार प्राप्त किया है, वह नरक में नहीं जाता॥ ११॥ मेरे पास कोई साधना, बुद्धिमानी एवं चतुराई नहीं है, केवल पूर्ण गुरु की दी हुई नाम की कमाई है॥ १२॥ जो प्रभु करता एवं करवाता है, मेरे लिए वही जप, तप, संयम एवं शुभ कर्म है॥ १३॥ पुत्र, पत्नी इत्यादि महाविकारों में भी सच्चे गुरु ने संसार-सागर से पार करवा दिया है॥ १४॥ परमात्मा अपने जीवों की स्वयं ही देखभाल करता है और स्वयं ही अपने संग लगा लेता है॥ १५॥ गुरु ने सत्य धर्म का बेड़ा बाँधकर अपनी संगत को भवसागर से पार करवा दिया है॥ १६॥ जगत् का स्वामी बेशुमार एवं बेअंत है और नानक उस पर बार-बार बलिहारी जाता है॥ १७॥ अकालमूर्ति, अयोनि एवं स्वयंभू ईश्वर ने कलियुग के अज्ञान रूपी अन्धेरे में ज्ञान रूपी दीपक प्रज्वलित कर दिया है॥ १८॥ वह अन्तर्यामी सब जीवों का दाता है, जिसके दर्शन करने से पूर्ण तृप्ति प्राप्त होती है॥ १६॥ वह ओंकार, मायातीत, निर्भय प्रभु जल एवं पृथ्वी में समा रहा है॥ २०॥ हे नानक! भक्ति का दान ईश्वर ने भक्तों को ही दिया है और वह भी उससे यही याचना करता है॥ २१॥ १॥ ६॥

रामकली महला ५ ॥ सलोकु ॥ सिखहु सबदु पिआरिहो जनम मरन की टेक ॥ मुखु ऊजलु सदा सुखी नानक सिमरत एक ॥ १ ॥ मनु तनु राता राम पिआरे हरि प्रेम भगति बणि आई संतहु ॥ १ ॥ सतिगुरि खेप निबाही संतहु ॥ हरि नामु लाहा दास कउ दीआ सगली त्रिसन उलाही संतहु ॥ १ ॥ रहाउ ॥ खोजत खोजत लालु इकु पाइआ हरि कीमति कहणु न जाई संतहु ॥ २ ॥ चरन कमल सिउ लागो धिआना साचै दरसि समाई संतहु ॥ ३ ॥ गुण गावत गावत भए निहाला हरि सिमरत त्रिपति अघाई संतहु ॥ ४ ॥ आतम रामु रविआ सभ अंतरि कत आवै कत जाई संतहु ॥ ५ ॥ आदि जुगादी है भी होसी सभ जीआ का सुखदाई संतहु ॥ ६ ॥ आपि बेअंतु अंतु नही पाईऐ पूरि रहिआ सभ ठाई संतहु ॥ ७ ॥ मीत साजन मालु जोबनु सुत हरि नानक बापु मेरी माई संतहु ॥ ८ ॥ २ ॥ ७ ॥

श्लोक॥ हे प्यारे शिष्यो! शब्द का चिंतन करो; यही जन्म एवं मरण का आसरा है। हे नानक! प्रभु का सिमरन करने से मुख उज्ज्वल हो जाता है और जीव सदा सुखी रहता है॥१॥ हे संतजनो! यह तन-मन राम के प्रेम में ही लीन रहता है और उसकी प्रेम-भक्ति ही अच्छी लगती है॥ १॥ सतगुरु ने नाम रूपी सौदे का व्यापार करने के लिए अपनी प्रीति निभा दी है। हे संतजनो! उसने हरि-नाम रूपी लाभ अपने दास को दिया है और मन की सारी तृष्णा मिटा दी है॥ १॥ रहाउ॥ खोजते-खोजते एक बहुमूल्य रत्न प्राप्त हुआ है। हे संतजनो! उस हरि-नाम रूपी रत्न की सही कीमत आंकी नहीं जा सकती॥ २॥ हे संत पुरुषो! परमात्मा के चरण-कमल

से ध्यान लग गया है और उस सच्चे के दर्शनों में ही विलीन हो गया हूँ॥ ३॥ भगवान का गुणगान कर करके निहाल हो गया हूँ। हे सज्जनो, उसका सिमरन करने से मन तृप्त एवं संतुष्ट हो गया है॥ ४॥ हे संत पुरुषो ! सब में ईश्वर ही व्याप्त है, इधर-उधर जाने की आवश्यकता नहीं है॥ ५॥ सब को सुख देने वाला परमात्मा युगों-युगान्तरों से मौजूद है, वह वर्तमान में भी है और भविष्य में भी उसका ही अस्तित्व रहेगा॥ ६॥ वह बेअंत है, उसका अन्त नहीं पाया जा सकता और वह हर स्थान पर पूर्णतया व्याप्त है॥ ७॥ नानक कहते हैं कि हे संतजनो ! परमेश्वर ही मेरा मित्र, साजन, धन-दौलत, यौवन एवं पुत्र है और वही मेरा माता-पिता है॥ ८॥ २॥ ७॥

रामकली महला ५ ॥ मन बच क्रमि राम नामु चितारी ॥ घूमन घेरि महा अति बिखड़ी गुरमुखि नानक पारि उतारी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ अंतरि सूखा बाहरि सूखा हरि जपि मलन भए दुसटारी ॥ १ ॥ जिस ते लागे तिनहि निवारे प्रभ जीउ अपणी किरपा धारी ॥ २ ॥ उधरे संत परे हरि सरनी पचि बिनसे महा अहंकारी ॥ ३ ॥ साधू संगति इहु फलु पाइआ इकु केवल नामु अधारी ॥ ४ ॥ न कोई सूरु न कोई हीणा सभ प्रगटी जोति तुम्हारी ॥ ५ ॥ तुम्ह समरथ अकथ अगोचर रविआ एकु मुरारी ॥ ६ ॥ कीमति कउणु करे तेरी करते प्रभ अंतु न पारावारी ॥ ७ ॥ नाम दानु नानक वडिआई तेरिआ संत जना रेणारी ॥ ८ ॥ ३ ॥ ८ ॥ २२ ॥

मैं मन, वचन एवं कर्म से राम नाम ही याद करता रहता हूँ। हे नानक ! यह जगत् भँवर की तरह बड़ा कठिन है, लेकिन गुरु ने मेरी जीवन-नैया पार उतार दी है॥ १॥ रहाउ॥ मेरे अन्दर-बाहर सुख ही सुख हो गया है, ईश्वर का जाप करने से कामादिक दुष्टों का नाश हो गया है॥ १॥ जिसके हुक्म से ये दुष्ट विकार लगे थे, उसने ही उनको दूर कर दिया है। प्रभु जी ने स्वयं ही अपनी कृपा की है॥ २॥ जो संतजन भगवान की शरण में आ गए हैं, उनका उद्धार हो गया है, किन्तु महा अहंकारी जीवों का विकारों में ही नाश हो गया है॥ ३॥ साधुओं की संगति में यही फल प्राप्त हुआ है कि केवल एक प्रभु का नाम ही मेरा जीवनाधार बन गया है॥ ४॥ हे परमात्मा ! न कोई शूरवीर है और न कोई कमजोर है, क्योंकि सब में तेरी ही ज्योति प्रगट हो रही है॥ ५॥ हे ईश्वर, तू सर्वकला समर्थ, अकथनीय एवं मन-वाणी से परे है और सबमें तू ही व्यापक है॥ ६॥ हे कर्ता-प्रभु ! तेरी कीमत कौन आँक सकता है ? तू अनन्त एवं अपरम्पार है॥ ७॥ नानक प्रार्थना करते हैं कि हे ईश्वर ! तेरा नाम-दान ही बड़ा यश है और तेरे सन्तजनों की चरण-धूलि ही चाहता हूँ॥ ८॥ ३॥ ८॥ २२॥

रामकली महला ३ अनंदु ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

अनंदु भइआ मेरी माए सतिगुरू मै पाइआ ॥ सतिगुरु त पाइआ सहज सेती मनि वजीआ वाधाईआ ॥ राग रतन परवार परीआ सबद गावण आईआ ॥ सबदो त गावहु हरी केरा मनि जिनी वसाइआ ॥ कहै नानकु अनंदु होआ सतिगुरू मै पाइआ ॥ १ ॥

{गुरु अमरदास की लोकप्रख्यात रचना 'अनंदु साहिब' सर्व वन्दनीय है। कहा जाता है कि गुरु जी ने अपनी बेटी बीबी भानी व गुरु रामदास जी के विवाह पर इस वाणी का उच्चारण किया। उसी वक्त उन्हें अपने पौत्रे के जन्म की खुशखबरी भी मिली। इस वाणी में गुरु जी ने अपनी खुशी का इजहार करते हुए प्रभु का धन्यवाद किया। जब भी अखण्ड पाठ अथवा कीर्तन की समाप्ति होती है तो अरदास करने से पूर्व अनंदु साहिब का पाठ किया जाता है}

हे मेरी माँ ! मन में आनंद ही आनंद हो गया है, क्योंकि मैंने सतगुरु को पा लिया है। सतगुरु को सहज स्वभाव ही प्राप्त कर लिया है, जिससे मन में खुशियाँ पैदा हो गई हैं। यूं प्रतीत हो रहा

है रत्नों जैसे अमूल्य राग-रागनियाँ एवं परियाँ परिवार सहित शब्दगान करने के लिए आई हैं। जिन्होंने परमात्मा को मन में बसा लिया है, वे सभी उसकी स्तुति का शब्दगान करो। नानक कहते हैं कि सतगुरु को पाकर मन में परमानन्द पैदा हो गया है॥ १॥

ए मन मेरिआ तू सदा रहु हरि नाले ॥ हरि नालि रहु तू मंन मेरे दूख सभि विसारणा ॥ अंगीकारु ओहु करे तेरा कारज सभि सवारणा ॥ सभना गला समरथु सुआमी सो किउ मनहु विसारे ॥ कहै नानकु मंन मेरे सदा रहु हरि नाले ॥ २ ॥

हे मेरे मन! तू सदा परमात्मा के साथ लीन रह, हे मन! परमात्मा के साथ लीन रहेगा तो वह तेरे सभी दुख भुला देगा। वह तेरा ही साथ देता रहेगा और तेरे सभी कार्य सम्पूर्ण करने वाला है। जो स्वामी सभी बातें पूरी करने में समर्थ है, उसे क्यों मन से भुला रहे हो। नानक कहते हैं कि हे मेरे मन! सदा परमात्मा के साथ आस्था बनाकर रहो॥ २॥

साचे साहिबा किआ नाही घरि तैरै ॥ घरि त तैरै सभु किछु है जिसु देहि सु पावए ॥ सदा सिफति सलाह तेरी नामु मनि वसावए ॥ नामु जिन कै मनि वसिआ वाजे सबद घनेरे ॥ कहै नानकु सचे साहिब किआ नाही घरि तैरै ॥ ३ ॥

हे सच्चे मालिक! तेरे घर में क्या कुछ नहीं है? तेरे घर में तो सबकुछ है, परन्तु जिसे तू देता है, वही प्राप्त करता है। जो सदा तेरी महिमागान करते हैं, उनके मन में नाम का निवास हो जाता है। जिनके मन में नाम आ बसता है, उनके हृदय में अनहद शब्द के बाजे बजते रहते हैं। नानक कहते हैं कि हे सच्चे मालिक! तेरे घर में भला क्या कुछ नहीं है॥ ३॥

साचा नामु मेरा आधारो ॥ साचु नामु अधारु मेरा जिनि भुखा सभि गवाईआ ॥ करि सांति सुख मनि आइ वसिआ जिनि इछा सभि पुजाईआ ॥ सदा कुरबाणु कीता गुरू विटहु जिस दीआ एहि वडिआईआ ॥ कहै नानकु सुणहु संतहु सबदि धरहु पिआरो ॥ साचा नामु मेरा आधारो ॥ ४ ॥

प्रभु का सच्चा नाम ही मेरा आधार है। उसका सच्चा नाम ही मेरा आधार है, जिसने हर प्रकार की भूख को मिटा दिया है। जिस नाम ने मेरी सब कामनाएँ पूरी कर दी हैं, वह सुख शान्ति करके मेरे मन में आ बसा है। मैं उस गुरु पर सदा कुर्बान जाता हूँ, जिसने यह बड़ाई प्रदान की है। नानक कहते हैं कि हे संतजनो, जरा ध्यानपूर्वक सुनो; गुरु-शब्द से प्रेम करो। प्रभु का सच्चा नाम ही मेरा जीवनाधार है॥ ४॥

वाजे पंच सबद तितु घरि सभागै ॥ घरि सभागै सबद वाजे कला जितु घरि धारीआ ॥ पंच दूत तुधु वसि कीते कालु कंटकु मारिआ ॥ धुरि करमि पाइआ तुधु जिन कउ सि नामि हरि कै लागे ॥ कहै नानकु तह सुखु होआ तितु घरि अनहद वाजे ॥ ५ ॥

उस भाग्यशाली हृदय-घर में रबाब, पखावज, ताल, घुँघरू एवं शंख–पाँच प्रकार की ध्वनियों वाले अनहद शब्द बजते हैं। उस भाग्यवान हृदय-घर में पाँच शब्द बजते हैं, जिस घर में परमात्मा ने अपनी शक्ति रखी हुई है। हे परमेश्वर! तूने कामादिक पाँच दूतों को वशीभूत करके भयानक काल को भी मार दिया है। प्रभु के नाम में वही जीव लगे हैं, जिनकी किस्मत में प्रारम्भ से ही ऐसा लिखा है। नानक कहते हैं कि जिस हृदय-घर में अनहद शब्द बज रहा है, वहाँ सुख उपलब्ध हो गया है॥ ५॥

साची लिवै बिनु देह निमाणी ॥ देह निमाणी लिवै बाझहु किआ करे वेचारीआ ॥ तुधु बाझु समरथ कोइ नाही क्रिपा करि बनवारीआ ॥ एस नउ होरु थाउ नाही सबदि लागि सवारीआ ॥ कहै नानकु लिवै बाझहु किआ करे वेचारीआ ॥ ६ ॥

ईश्वर से सच्ची लगन के बिना यह देह तुच्छ है। सच्ची लगन के बिना बेचारी तुच्छ देह क्या कर सकती है ? हे बनवारी ! तेरे अतिरिक्त अन्य कोई समर्थ नहीं है, अपनी कृपा करो। इस देह को अन्य कोई स्थान नहीं है, शब्द में लगकर ही इसका सुधार हो सकता है। नानक कहते हैं कि ईश्वर से लगन के बिना यह बेचारी देह क्या कर सकती है॥ ६॥

आनंदु आनंदु सभु को कहै आनंदु गुरू ते जाणिआ ॥ जाणिआ आनंदु सदा गुर ते क्रिपा करे पिआरिआ ॥ करि किरपा किलविख कटे गिआन अंजनु सारिआ ॥ अंदरहु जिन का मोहु तुटा तिन का सबदु सचै सवारिआ ॥ कहै नानकु एहु अनंदु है आनंदु गुर ते जाणिआ ॥ ७ ॥

हर कोई आनंद आनंद की बात कहता है किन्तु सच्चा आनंद गुरु से जान लिया है। सच्चा आनंद गुरु से जान लिया है, जो सदा ही अपने प्रिय सेवकों पर कृपा करता है। गुरु कृपा करके सारे पाप नष्ट कर देता है और आँखों में ज्ञान का सुरमा डाल देता है। जिनका अन्तर्मन से मोह टूट गया है, सच्चे प्रभु ने शब्द द्वारा उनका जीवन सुन्दर बना दिया है। नानक कहते हैं कि यही सच्चा आनंद है, जिस आनंद की जानकारी गुरु से हासिल की है॥ ७॥

बाबा जिसु तू देहि सोई जनु पावै ॥ पावै त सो जनु देहि जिस नो होरि किआ करहि वेचारिआ ॥ इकि भरमि भूले फिरहि दह दिसि इकि नामि लागि सवारिआ ॥ गुर परसादी मनु भइआ निरमलु जिना भाणा भावए ॥ कहै नानकु जिसु देहि पिआरे सोई जनु पावए ॥ ८ ॥

हे बाबा ! जिसे तू देता है, वही व्यक्ति प्राप्त करता है। वही व्यक्ति प्राप्त करता है, जिसे तू स्वयं देता है, कोई अन्य बेचारा भला क्या कर सकता है। कोई भ्रम में भूला हुआ है और दसों दिशाओं में भटक रहा है लेकिन किसी ने नाम के संग लगकर अपना जीवन सफल कर लिया है। जिन्हें परमात्मा की रज़ा अच्छी लगी है, गुरु की कृपा से उनका मन निर्मल हो गया है। नानक कहते हैं कि जिसे प्यारा प्रभु देता है, वही व्यक्ति प्राप्त करता है॥ ८॥

आवहु संत पिआरिहो अकथ की करह कहाणी ॥ करह कहाणी अकथ केरी कितु दुआरै पाईऐ ॥ तनु मनु धनु सभु सउपि गुर कउ हुकमि मंनिऐ पाईऐ ॥ हुकमु मंनिहु गुरू केरा गावहु सची बाणी ॥ कहै नानकु सुणहु संतहु कथिहु अकथ कहाणी ॥ ९ ॥

हे प्यारे संतजनो ! आओ, हम मिलकर अकथनीय प्रभु की कथा कहानी करें। हम अकथनीय परमात्मा की कथा करें और सोचें कि उसे किस विधि द्वारा प्राप्त किया जा सकता है। अपना तन, मन, धन सब कुछ गुरु को सौंपकर उसके हुक्म का पालन करके ही ईश्वर को पाया जा सकता है। गुरु के हुक्म का पालन करो और उसकी सच्ची वाणी गाओ। नानक कहते हैं कि हे संतजनो ! सुनो, परमेश्वर की अकथनीय कथा कथन करें॥ ९॥

ए मन चंचला चतुराई किनै न पाइआ ॥ चतुराई न पाइआ किनै तू सुणि मंन मेरिआ ॥ एह माइआ मोहणी जिनि एतु भरमि भुलाइआ ॥ माइआ त मोहणी तिनै कीती जिनि ठगउली पाईआ ॥ कुरबाणु कीता तिसै विटहु जिनि मोहु मीठा लाइआ ॥ कहै नानकु मन चंचल चतुराई किनै न पाइआ ॥ १० ॥

हे चंचल मन ! चतुराई से किसी ने भी ईश्वर को प्राप्त नहीं किया। हे मेरे मन ! तू ध्यान से मेरी बात सुन, चतुराई से किसी ने भी ईश्वर को नहीं पाया। यह माया ऐसी मोहिनी है, जिसने जीवों को भ्रम में डालकर सत्य से भुलाया हुआ है। यह मोहिनी माया भी उस परमात्मा की ही पैदा

की हुई है, जिसने मोह रूपी ठग-बूटी जीवों के मुँह में डाली हुई है। मैं उस परमात्मा पर कुर्बान जाता हूँ, जिसने (नाम का) मीठा मोह लगाया हुआ है। नानक कहते हैं कि हे चंचल मन! चतुराई से किसी ने भी परमात्मा को प्राप्त नहीं किया॥ १०॥

ए मन पिआरिआ तू सदा सचु समाले ॥ एहु कुटंबु तू जि देखदा चलै नाही तेरै नाले ॥ साथि तेरै चलै नाही तिसु नालि किउ चितु लाईऐ ॥ ऐसा कंमु मूले न कीचै जितु अंति पछोताईऐ ॥ सतिगुरू का उपदेसु सुणि तू होवै तेरै नाले ॥ कहै नानकु मन पिआरे तू सदा सचु समाले ॥ ११ ॥

हे प्यारे मन! तू सदा सत्य का ध्यान कर। यह परिवार जिसे तू देखता है, इसने तेरे साथ नहीं जाना। जिस परिवार ने तेरे साथ नहीं जाना, उसके साथ तू क्यों चित्त लगा रहा है। ऐसा काम बिल्कुल नहीं करना चाहिए, जिससे अन्त में पछताना पड़े। तू सतगुरु का उपदेश सुन, यही तेरे साथ रहेगा। नानक कहते हैं कि हे प्यारे मन! तू सदा सत्य का ध्यान किया कर॥ ११॥

अगम अगोचरा तेरा अंतु न पाइआ ॥ अंतो न पाइआ किनै तेरा आपणा आपु तू जाणहे ॥ जीअ जंत सभि खेलु तेरा किआ को आखि वखाणए ॥ आखहि त वेखहि सभु तूहै जिनि जगतु उपाइआ ॥ कहै नानकु तू सदा अगंमु है तेरा अंतु न पाइआ ॥ १२ ॥

हे अगम्य, अगोचर परमेश्वर! तेरा अन्त किसी ने भी प्राप्त नहीं किया। किसी ने भी तेरा अन्त नहीं पाया, तू स्वयं ही अपने आप को जानता है। यह सभी जीव-जन्तु तेरा खेल (लीला) है, इस संदर्भ में कोई क्या कहकर बयान करे। जिसने यह जगत् पैदा किया है, तू ही सब में बोल रहा एवं देख रहा है। नानक कहते हैं कि हे ईश्वर! तू सदा अगम्य है, तेरा अन्त किसी ने भी नहीं पाया॥ १२॥

सुरि नर मुनि जन अंम्रितु खोजदे सु अंम्रितु गुर ते पाइआ ॥ पाइआ अंम्रितु गुरि क्रिपा कीनी सचा मनि वसाइआ ॥ जीअ जंत सभि तुधु उपाए इकि वेखि परसणि आइआ ॥ लबु लोभु अहंकारु चूका सतिगुरू भला भाइआ ॥ कहै नानकु जिस नो आपि तुठा तिनि अंम्रितु गुर ते पाइआ ॥ १३ ॥

जिस अमृत को देवता, मनुष्य एवं मुनिजन भी खोजते हैं, वह अमृत मुझे गुरु से प्राप्त हुआ है। गुरु की कृपा से मुझे अमृत प्राप्त हुआ है और परम-सत्य को मेरे मन में बसा दिया है। हे ईश्वर! सभी जीव-जन्तु तूने ही उत्पन्न किए हैं, पर कोई विरला ही गुरु के दर्शन एवं चरण-स्पर्श करने आया है। उसका लालच, लोभ एवं अहंकार दूर हो गया है और उसे सतगुरु ही भला लगा है। नानक कहते हैं कि जिस पर परमात्मा स्वयं प्रसन्न हो गया है, उसे गुरु से अमृत मिल गया है॥ १३॥

भगता की चाल निराली ॥ चाला निराली भगताह केरी बिखम मारगि चलणा ॥ लबु लोभु अहंकारु तजि त्रिसना बहुतु नाही बोलणा ॥ खंनिअहु तिखी वालहु निकी एतु मारगि जाणा ॥ गुर परसादी जिनी आपु तजिआ हरि वासना समाणी ॥ कहै नानकु चाल भगता जुगहु जुगु निराली ॥ १४ ॥

भक्तों का जीवन-आचरण दुनिया के अन्य लोगों से निराला होता है। भक्तों का जीवन-आचरण इसलिए निराला है, क्योंकि उन्होंने बड़े कठिन मार्ग पर चलना होता है। वे लालच, लोभ, अहंकार एवं तृष्णा को त्याग कर अधिक नहीं बोलना चाहते। उन्होंने इस मार्ग पर जाना होता है, जो तलवार की धार से भी तीक्ष्ण एवं बाल से भी छोटा होता है। गुरु की कृपा से जिन्होंने अहम् को त्याग दिया है, उनकी वासना परमात्मा में समा गई है। नानक कहते हैं कि भक्तों का जीवन-आचरण

युगों-युगान्तरों से ही दुनिया के लोगों से निराला है॥ १४॥

जिउ तू चलाइहि तिव चलह सुआमी होरु किआ जाणा गुण तेरे ॥ जिव तू चलाइहि तिवै चलह जिना मारगि पावहे ॥ करि किरपा जिन नामि लाइहि सि हरि हरि सदा धिआवहे ॥ जिस नो कथा सुणाइहि आपणी सि गुरदुआरै सुखु पावहे ॥ कहै नानकु सचे साहिब जिउ भावै तिवै चलावहे ॥ १५ ॥

हे स्वामी! जैसे तू चलाता है, हम वैसे ही चलते हैं। मैं तेरे गुणों को नहीं जानता। जैसे तू चलाता है, वैसे ही चलते हैं, जिस मार्ग पर तू डालता है। अपनी कृपा करके जिन्हें तू नाम-स्मरण में लगा देता है, वे सदा ही तेरा ध्यान करते रहते हैं। जिसे तू अपनी कथा सुनाता है, वे गुरु के द्वार पर सुख प्राप्त करते हैं। नानक कहते हैं कि हे सच्चे मालिक! जैसे तुझे मंजूर होता है, वैसे ही जीवों को चलाता है॥ १५॥

एहु सोहिला सबदु सुहावा ॥ सबदो सुहावा सदा सोहिला सतिगुरू सुणाइआ ॥ एहु तिन कै मंनि वसिआ जिन धुरहु लिखिआ आइआ ॥ इकि फिरहि घनेरे करहि गला गली किनै न पाइआ ॥ कहै नानकु सबदु सोहिला सतिगुरू सुणाइआ ॥ १६ ॥

यह सुन्दर शब्द ही ईश्वर का कीर्तिगान है। सतगुरु ने सदा सुन्दर शब्द का कीर्तिगान सुनाया है। यह उनके ही मन में आकर बसा है, जिनके भाग्य में आदि से ही लिखा हुआ आया है। कुछ व्यक्ति भटकते रहते हैं और बहुत बातें करते हैं, किन्तु बातों से किसी ने भी प्राप्त नहीं किया। नानक कहते हैं कि सतगुरु ने शब्द का ही कीर्तिगान सुनाया है॥ १६॥

पवितु होए से जना जिनी हरि धिआइआ ॥ हरि धिआइआ पवितु होए गुरमुखि जिनी धिआइआ ॥ पवितु माता पिता कुटंब सहित सिउ पवितु संगति सबाईआ ॥ कहदे पवितु सुणदे पवितु से पवितु जिनी मंनि वसाइआ ॥ कहै नानकु से पवितु जिनी गुरमुखि हरि हरि धिआइआ ॥ १७ ॥

जिन्होंने परमात्मा का ध्यान किया है, वे पवित्र हो गए हैं। परमात्मा का ध्यान करके वही पवित्र हुए हैं, जिन्होंने गुरुमुख बनकर ध्यान-मनन किया है। वे अपने माता-पिता एवं परिवार सहित पवित्र हो गए हैं और उनकी संगति करने वाले भी पवित्र हो गए हैं। हरि-नाम को मुँह से जपने वाले एवं कानों से सुनने वाले पवित्र हो गए हैं और जिन्होंने मन में बसाया है, वे भी पवित्र पावन हो गए हैं। नानक कहते हैं कि जिन्होंने गुरुमुख बनकर ईश्वर का ध्यान किया है, वे पवित्र हो गए हैं॥ १७॥

करमी सहजु न ऊपजै विणु सहजै सहसा न जाइ ॥ नह जाइ सहसा कितै संजमि रहे करम कमाए ॥ सहसै जीउ मलीणु है कितु संजमि धोता जाए ॥ मंनु धोवहु सबदि लागहु हरि सिउ रहहु चितु लाइ ॥ कहै नानकु गुर परसादी सहजु उपजै इहु सहसा इव जाइ ॥ १८ ॥

धर्म-कर्म करने से मन में सहज ज्ञान उत्पन्न नहीं होता और सहज ज्ञान के बिना मन की चिंता दूर नहीं होती। यह चिंता किसी भी साधन से मन से दूर नहीं होती और अनेक लोग कर्मकाण्ड कर-करके थक गए हैं। यह अन्तर्मन संशय चिंता से मलिन हो गया है, इसे किस साधन द्वारा शुद्ध किया जाए। मन को शुद्ध करने के लिए शब्द से लगन लगाओ और परमात्मा के साथ चित्त लगाओ। नानक कहते हैं कि गुरु की कृपा से सहज-ज्ञान पैदा हो जाता है और इस प्रकार संशय-चिंता मन से दूर हो जाती है॥ १८॥

जीअहु मैले बाहरहु निरमल ॥ बाहरहु निरमल जीअहु त मैले तिनी जनमु जूऐ हारिआ ॥ एह तिसना वडा रोगु लगा मरणु मनहु विसारिआ ॥ वेदा महि नामु उतमु सो सुणहि नाही फिरहि जिउ बेतालिआ ॥ कहै नानकु जिन सचु तजिआ कूड़े लागे तिनी जनमु जूऐ हारिआ ॥ १९ ॥

कोई मन से मैला है, परन्तु बाहर से निर्मल होने का दिखावा करता है। जो बाहर से निर्मल होने का दिखावा करता है और मन से मैला होता है, उसने अपना जन्म जुए में हार दिया है। उसे तृष्णा का यह बहुत बड़ा रोग लगा हुआ है और उसने मृत्यु को अपने मन से भुला दिया है। वेदों में नाम को सर्वोत्तम बताया गया है परन्तु यह लोग उसे सुनते ही नहीं और प्रेतों की तरह भटकते रहते हैं। नानक कहते हैं कि जिन्होंने सत्य को त्याग कर झूठ से मोह लगा लिया है, उन्होंने अपना अमूल्य जन्म जुए में हार दिया है॥ १९॥

जीअहु निरमल बाहरहु निरमल ॥ बाहरहु त निरमल जीअहु निरमल सतिगुर ते करणी कमाणी ॥ कूड़ की सोइ पहुचै नाही मनसा सचि समाणी ॥ जनमु रतनु जिनी खटिआ भले से वणजारे ॥ कहै नानकु जिन मंनु निरमलु सदा रहहि गुर नाले ॥ २० ॥

कुछ व्यक्ति दिल से भी निर्मल होते हैं और बाहर से भी निर्मल होते हैं। ऐसे दिल से एवं बाहर से निर्मल व्यक्ति सतगुरु के उपदेशानुसार शुभ करनी की कमाई करते हैं। उन्हें झूठ स्पर्श भी नहीं करता और उनका मन सत्य में ही विलीन रहता है। वही व्यापारी उत्तम हैं, जिन्होंने रत्न जैसा अमूल्य जन्म का लाभ हासिल कर लिया है। नानक कहते हैं कि जिनका मन निर्मल है, वे सदा ही गुरु के साथ रहते हैं॥ २०॥

जे को सिखु गुरू सेती सनमुखु होवै ॥ होवै त सनमुखु सिखु कोई जीअहु रहै गुर नाले ॥ गुर के चरन हिरदै धिआए अंतर आतमै समाले ॥ आपु छडि सदा रहै परणै गुर बिनु अवरु न जाणै कोए ॥ कहै नानकु सुणहु संतहु सो सिखु सनमुखु होए ॥ २१ ॥

यदि कोई शिष्य गुरु के सन्मुख हो जाए। यदि कोई शिष्य गुरु के सन्मुख हो जाए तो वह दिल से भी गुरु के साथ बना रहता है। वह हृदय में गुरु के चरणों का ध्यान करता रहता है और अन्तरात्मा में भी उसकी स्मृति में ही लीन रहता है। वह अपने अहम् को छोड़कर गुरु के सहारे रहता है और गुरु के बिना अन्य किसी को नहीं जानता। नानक कहते हैं कि हे संतो ! ध्यानपूर्वक सुनो; वही शिष्य गुरु के सन्मुख होता है॥ २१॥

जे को गुर ते वेमुखु होवै बिनु सतिगुर मुकति न पावै ॥ पावै मुकति न होर थै कोई पुछहु बिबेकीआ जाए ॥ अनेक जूनी भरमि आवै विणु सतिगुर मुकति न पाए ॥ फिरि मुकति पाए लागि चरणी सतिगुरू सबदु सुणाए ॥ कहै नानकु वीचारि देखहु विणु सतिगुर मुकति न पाए ॥ २२ ॥

यदि कोई शिष्य गुरु से विमुख हो जाए तो सतगुरु के बिना उसे मुक्ति नहीं मिलती। उसे किसी अन्य स्थान पर मुक्ति नहीं मिलती, चाहे इस संदर्भ में कोई जाकर विवेकवान महापुरुषों से पूछ लो। चाहे वह अनेक योनियों में भटक कर पुनः मानव योनि में आ जाए, तो भी गुरु के बिना मुक्ति नहीं पा सकता। वह दोबारा गुरु-चरणों में लगकर तभी मुक्ति पाता है, जब सतगुरु उसे शब्द (उपदेश) सुनाता है। नानक कहते हैं कि विचार करके देख लो, विमुख जीव सतगुरु के बिना मुक्ति नहीं प्राप्त कर सकता॥ २२॥

आवहु सिख सतिगुरू के पिआरिहो गावहु सची बाणी ॥ बाणी त गावहु गुरू केरी बाणीआ सिरि बाणी ॥ जिन कउ नदरि करमु होवै हिरदै तिना समाणी ॥ पीवहु अंम्रितु सदा रहहु हरि रंगि जपिहु

सारिगपाणी ॥ कहै नानकु सदा गावहु एह सची बाणी ॥ २३ ॥

हे गुरु के प्यारे शिष्यो! आओ, सच्ची वाणी गाओ। वाणी केवल गुरु की ही गान करो, जो सब वाणियों में सर्वोत्तम वाणी है। जिन पर परमात्मा की कृपा-दृष्टि हो जाती है, यह वाणी उनके हृदय में समा जाती है। नामामृत का पान करो; सदा परमात्मा के रंग में लीन रहो और सदैव प्रभु का नाम जपते रहो। नानक कहते हैं कि सदैव यह सच्ची वाणी गाते रहो॥ २३॥

सतिगुरू बिना होर कची है बाणी ॥ बाणी त कची सतिगुरू बाझहु होर कची बाणी ॥ कहदे कचे सुणदे कचे कचीं आखि वखाणी ॥ हरि हरि नित करहि रसना कहिआ कछू न जाणी ॥ चितु जिन का हिरि लइआ माइआ बोलनि पए रवाणी ॥ कहै नानकु सतिगुरू बाझहु होर कची बाणी ॥ २४ ॥

सतगुरु के बिना अन्य वाणी कच्ची है, गुरु के मुखारविंद से उच्चरित वाणी ही सत्य है। गुरु के अलावा अन्य सब वाणी झूठी है। कच्ची वाणी को मुँह से जपने एवं सुनने वाले भी कच्चे अर्थात् झूठे हैं और झूठे मनुष्यों ने कहकर कच्ची वाणी ही उच्चारण की है। ऐसे व्यक्ति अपनी रसना से नित्य हरि नाम बोलते रहते हैं लेकिन उस बारे कुछ भी ज्ञान नहीं जानते। जिनका चित्त माया ने चुरा लिया है, वे व्यर्थ ही बोल रहे हैं। नानक कहते हैं कि सतगुरु के मुखारविंद से उच्चरित वाणी ही सत्य है, अन्य सब वाणी कच्ची अर्थात् मिथ्या है॥ २४॥

गुर का सबदु रतंनु है हीरे जितु जड़ाउ ॥ सबदु रतनु जितु मंनु लागा एहु होआ समाउ ॥ सबद सेती मनु मिलिआ सचै लाइआ भाउ ॥ आपे हीरा रतनु आपे जिस नो देइ बुझाइ ॥ कहै नानकु सबदु रतनु है हीरा जितु जड़ाउ ॥ २५ ॥

गुरु का शब्द अमूल्य रत्न है, जिसमें गुण रूपी बहुमूल्य हीरे जड़ित हैं। शब्द रूपी अमूल्य रत्न में जिसका मन लग गया है, वह उसी में लीन हो गया है। जिसका मन शब्द से मिल गया है, उसने सत्य से प्रेम लगा लिया है। परमात्मा स्वयं ही शब्द रूपी रत्न एवं स्वयं ही गुरु रूपी हीरा है, वह जिसे यह शब्द रूपी रत्न देता है, वही इस तथ्य को समझता है। नानक कहते हैं कि गुरु-शब्द एक बहुमूल्य रत्न है, जिसमें गुण रूपी कीमती हीरे जड़ित हैं॥ २५॥

सिव सकति आपि उपाइ कै करता आपे हुकमु वरताए ॥ हुकमु वरताए आपि वेखै गुरमुखि किसै बुझाए ॥ तोड़े बंधन होवै मुकतु सबदु मंनि वसाए ॥ गुरमुखि जिस नो आपि करे सु होवै एकस सिउ लिव लाए ॥ कहै नानकु आपि करता आपे हुकमु बुझाए ॥ २६ ॥

शिव शक्ति (चेतन एवं माया) को उत्पन्न करके ईश्वर स्वयं ही अपना हुक्म चला रहा है। वह हुक्म चलाकर स्वयं ही अपनी लीला को देखता रहता है, परन्तु किसी गुरुमुख को ही इस रहस्य की सूझ देता है। जिसके मन में शब्द का निवास हो जाता है, वह सब बन्धनों को तोड़कर मुक्त हो जाता है। परमात्मा जिसे स्वयं बनाता है, वही गुरुमुख बनता है और वह एक परमेश्वर में ध्यान लगा लेता है। नानक कहते हैं कि स्रष्टा स्वयं ही अपने हुक्म की सूझ प्रदान करता है॥ २६॥

सिम्रिति सासत्र पुंन पाप बीचारदे ततै सार न जाणी ॥ ततै सार न जाणी गुरू बाझहु ततै सार न जाणी ॥ तिही गुणी संसारु भ्रमि सुता सुतिआ रैणि विहाणी ॥ गुर किरपा ते से जन जागे जिना हरि मनि वसिआ बोलहि अंम्रित बाणी ॥ कहै नानकु सो ततु पाए जिस नो अनदिनु हरि लिव लागै जागत रैणि विहाणी ॥ २७ ॥

स्मृतियाँ एवं शास्त्र पाप-पुण्य का विचार करते हैं परन्तु वे भी सार तत्व को नहीं जानते।

गुरु के बिना सार तत्व को नहीं जाना जाता, तत्व ज्ञान नहीं मिलता। त्रिगुणात्मक संसार अज्ञान की निद्रा में सोया हुआ है और अज्ञान की निद्रा में ही जीवन रूपी रात्रि व्यतीत हो जाती है। गुरु की कृपा से वही जीव अज्ञान की निद्रा से जागे हैं, जिनके मन में परमात्मा आ बसा है और वे अमृत-वाणी जपते रहते हैं। नानक कहते हैं कि उसे ही तत्व ज्ञान प्राप्त होता है, जिसकी दिन-रात परमात्मा में लगन लगी रहती है और उसकी जीवन-रात्रि जाग्रत रहते ही बीत जाती है॥ २७॥

माता के उदर महि प्रतिपाल करे सो किउ मनहु विसारीऐ ॥ मनहु किउ विसारीऐ एवडु दाता जि अगनि महि आहारु पहुचावए ॥ ओस नो किहु पोहि न सकी जिस नउ आपणी लिव लावए ॥ आपणी लिव आपे लाए गुरमुखि सदा समालीऐ ॥ कहै नानकु एवडु दाता सो किउ मनहु विसारीऐ ॥ २८ ॥

जो माता के उदर में भी पालन-पोषण करता है, उसे मन से क्यों भुलाएँ ? वह इतना बड़ा दाता है, उसे मन से कैसे भुलाया जा सकता है, जो गर्भाग्नि में हमें भोजन पहुँचाता है। वह जिसे अपनी लगन में लगा लेता है, उसे कोई दुख-दर्द स्पर्श नहीं कर सकता। सच तो यह है कि वह स्वयं ही अपनी लगन में लगाता है और गुरुमुख बनकर सदा ही उसे स्मरण करना चाहिए। नानक कहते हैं जो इतना बड़ा दाता है, उसे मन से क्यों भुलाएँ ?॥ २८॥

जैसी अगनि उदर महि तैसी बाहरि माइआ ॥ माइआ अगनि सभ इको जेही करतै खेलु रचाइआ ॥ जा तिसु भाणा ता जंमिआ परवारि भला भाइआ ॥ लिव छुड़की लगी त्रिसना माइआ अमरु वरताइआ ॥ एह माइआ जितु हरि विसरै मोहु उपजै भाउ दूजा लाइआ ॥ कहै नानकु गुर परसादी जिना लिव लागी तिनी विचे माइआ पाइआ ॥ २६ ॥

जैसी अग्नि माता के गर्भ में है, वैसी ही बाहर माया है। माया एवं गर्भ की अग्नि दोनों एक समान ही (दुखदायक) हैं, ईश्वर ने यह एक लीला रची हुई है। जब ईश्वरेच्छा हुई तो ही शिशु का जन्म हुआ, जिससे पूरे परिवार में खुशी का वातावरण बन गया। जब शिशु का जन्म हुआ तो उसकी परमेश्वर से लगन छूट गई, तृष्णा लग गई और माया ने अपना हुक्म लागू कर दिया। यह माया ऐसी है, जिससे जीव परमात्मा को भूल जाता है, फिर उसके मन में मोह उत्पन्न हो जाता है और द्वैतभाव लग जाता है। नानक कहते हैं कि गुरु की कृपा से जिनकी ईश्वर में लगन लग गई है, उन्होंने माया में भी उसे प्राप्त कर लिया है॥ २६॥

हरि आपि अमुलकु है मुलि न पाइआ जाइ ॥ मुलि न पाइआ जाइ किसै विटहु रहे लोक विललाइ ॥ ऐसा सतिगुरु जे मिलै तिस नो सिरु सउपीऐ विचहु आपु जाइ ॥ जिस दा जीउ तिसु मिलि रहै हरि वसै मनि आइ ॥ हरि आपि अमुलकु है भाग तिना के नानका जिन हरि पलै पाइ ॥ ३० ॥

ईश्वर स्वयं अमूल्य है और उसका मूल्यांकन नहीं किया जा सकता। किसी से भी उसका सही मूल्य आँका नहीं जा सकता, कितने ही लोग उसके लिए रोते तरसते हार गए हैं। यदि सतगुरु मिल जाए, तो उसे अपना सिर अर्पण कर देना चाहिए, इससे मन का अहम् दूर हो जाता है। जिसके यह दिए हुए प्राण हैं, यदि जीव उससे मिला रहे तो परमात्मा मन में स्थित हो जाता है। हे नानक ! परमात्मा स्वयं अमूल्य है और वही भाग्यवान् है, जो उसे प्राप्त करता है॥ ३०॥

हरि रासि मेरी मनु वणजारा ॥ हरि रासि मेरी मनु वणजारा सतिगुर ते रासि जाणी ॥ हरि हरि नित जपिहु जीअहु लाहा खटिहु दिहाड़ी ॥ एहु धनु तिना मिलिआ जिन हरि आपे भाणा ॥ कहै नानकु हरि रासि मेरी मनु होआ वणजारा ॥ ३१ ॥

हरि-नाम मेरी राशि है और मेरा मन व्यापारी है। मेरा मन व्यापारी और हरि-नाम मेरी जीवन-राशि है। इस राशि का ज्ञान मुझे सतगुरु से मिला है। दिल से नित्य हरि-नाम को जपते रहो और प्रतिदिन नाम-रूपी लाभ प्राप्त करो। यह नाम-धन उन्हें ही मिला है, जिन्हें परमात्मा ने स्वयं अपनी इच्छा से दिया है। नानक कहते हैं कि हरि-नाम मेरी जीवन-राशि है और मन व्यापारी बन गया है॥ ३१॥

ए रसना तू अन रसि राचि रही तेरी पिआस न जाइ ॥ पिआस न जाइ होरतु कितै जिचरु हरि रसु पलै न पाइ ॥ हरि रसु पाइ पलै पीऐ हरि रसु बहुड़ि न त्रिसना लागै आइ ॥ एहु हरि रसु करमी पाईऐ सतिगुरु मिलै जिसु आइ ॥ कहै नानकु होरि अन रस सभि वीसरे जा हरि वसै मनि आइ ॥ ३२ ॥

हे रसना! तू अन्य रसों में लीन रहती है, पर तेरी प्यास नहीं बुझती। किसी अन्य प्रकार से तेरी प्यास नहीं बुझ सकती, जब तक तू हरि-रस को प्राप्त करके उसका पान नहीं करती। हरि-रस को पा कर उसका पान कर ले, चूंकि हरि-रस का पान करने से दोबारा कोई तृष्णा नहीं लगेगी। यह हरि-रस शुभ कर्मों से ही प्राप्त होता है, जिसे सतगुरु मिल जाता है। नानक कहते हैं कि जब परमात्मा मन में बस जाता है तो अन्य सभी रस भूल जाते हैं॥ ३२॥

ए सरीरा मेरिआ हरि तुम महि जोति रखी ता तू जग महि आइआ ॥ हरि जोति रखी तुधु विचि ता तू जग महि आइआ ॥ हरि आपे माता आपे पिता जिनि जीउ उपाइ जगतु दिखाइआ ॥ गुर परसादी बुझिआ ता चलतु होआ चलतु नदरी आइआ ॥ कहै नानकु स्रिसटि का मूलु रचिआ जोति राखी ता तू जग महि आइआ ॥ ३३ ॥

हे मेरे शरीर! जब परमेश्वर ने तुझ में ज्योति स्थापित की तो तू तब ही इस जगत् में आया। ईश्वर ने जब ज्योति स्थापित की तो ही तू जगत् में आया है। वह स्वयं ही सबका माता-पिता है, जिसने प्रत्येक जीव को पैदा करके यह जगत् दिखाया है। गुरु की कृपा से समझा तो यह कौतुक हुआ कि यह जगत् कौतुक रूप ही नजर आया है। नानक कहते हैं कि जब परमात्मा ने सृष्टि का मूल रचा तो उसने तुझ में अपनी ज्योति स्थापित की और तब ही तू इस जगत् में आया है॥ ३३॥

मनि चाउ भइआ प्रभ आगमु सुणिआ ॥ हरि मंगलु गाउ सखी ग्रिहु मंदरु बणिआ ॥ हरि गाउ मंगलु नित सखीए सोगु दूखु न विआपए ॥ गुर चरन लागे दिन सभागे आपणा पिरु जापए ॥ अनहत बाणी गुर सबदि जाणी हरि नामु हरि रसु भोगो ॥ कहै नानकु प्रभु आपि मिलिआ करण कारण जोगो ॥ ३४ ॥

प्रभु के आगमन की खुशखबरी सुनकर मन में बड़ा चाव उत्पन्न हो गया है। हे मेरी सखी! परमात्मा का मंगलगान करो, यह हृदय-घर पावन मन्दिर बन गया है। हे सखी! नित्य प्रभु का मंगलगान करने से कोई दुख-दर्द एवं चिंता नहीं लगती। वह दिन भाग्यशाली है, जब गुरु-चरणों

में मन लग जाता है और प्रिय-प्रभु की अनुभूति होती है। गुरु के शब्द से अनहद वाणी की जानकारी मिली है, हरि-नाम जपो एवं हरि-रस का पान करते रहो। नानक कहते हैं कि सब करने-करवाने में समर्थ प्रभु स्वयं ही आ मिला है॥ ३४॥

ए सरीरा मेरिआ इसु जग महि आइ कै किआ तुधु करम कमाइआ ॥ कि करम कमाइआ तुधु सरीरा जा तू जग महि आइआ ॥ जिनि हरि तेरा रचनु रचिआ सो हरि मनि न वसाइआ ॥ गुर परसादी हरि मंनि वसिआ पूरबि लिखिआ पाइआ ॥ कहै नानकु एहु सरीरु परवाणु होआ जिनि सतिगुर सिउ चितु लाइआ ॥ ३५ ॥

हे मेरे शरीर ! इस जगत् में आकर तूने कौन-सा शुभ कर्म किया है ? हे शरीर ! इस जगत् में आकर तूने क्या कर्म किया है ? जिस परमात्मा ने तेरी रचना की है, उसे तो मन में ही नहीं बसाया। गुरु की कृपा से ईश्वर उसके मन में ही बसा है, पूर्व कर्मों के कारण जिसे यह फल प्राप्त हुआ है। नानक कहते हैं कि जिसने सतगुरु में चित्त लगाया है, उसका यह शरीर सफल हो गया है॥ ३५॥

ए नेत्रहु मेरिहो हरि तुम महि जोति धरी हरि बिनु अवरु न देखहु कोई ॥ हरि बिनु अवरु न देखहु कोई नदरी हरि निहालिआ ॥ एहु विसु संसारु तुम देखदे एहु हरि का रूपु है हरि रूपु नदरी आइआ ॥ गुर परसादी बुझिआ जा वेखा हरि इकु है हरि बिनु अवरु न कोई ॥ कहै नानकु एहि नेत्र अंध से सतिगुरि मिलिऐ दिब द्रिसटि होई ॥ ३६ ॥

हे मेरे नेत्रो ! परमात्मा ने तुझ में ज्योति स्थापित की है, इसलिए उसके अतिरिक्त किसी अन्य को मत देखो। प्रभु के अलावा किसी अन्य को मत देखो, क्योंकि उसकी कृपा से ही तुझे दृष्टि मिली है। यह जो विश्व-संसार तुम देख रहे हो, यह परमात्मा का रूप है और परमात्मा का ही रूप नजर आ रहा है। गुरु की कृपा से यह रहस्य समझ में आ गया है, जिधर भी देखता हूँ, एक ईश्वर ही दिखाई देता है और उसके अलावा अन्य कोई नहीं है। नानक कहते हैं कि यह नेत्र पहले अन्धे थे परन्तु सतगुरु को मिलकर दिव्य-दृष्टि प्राप्त हो गई है॥ ३६॥

ए स्रवणहु मेरिहो साचै सुनणै नो पठाए ॥ साचै सुनणै नो पठाए सरीरि लाए सुणहु सति बाणी ॥ जितु सुणी मनु तनु हरिआ होआ रसना रसि समाणी ॥ सचु अलख विडाणी ता की गति कही न जाए ॥ कहै नानकु अंम्रित नामु सुणहु पवित्र होवहु साचै सुनणै नो पठाए ॥ ३७ ॥

हे मेरे कानो ! परमात्मा ने तुम्हें जगत् में सत्य सुनने के लिए भेजा है। सत्य सुनने के लिए प्रभु ने शरीर के साथ लगाकर दुनिया में भेजा है इसलिए सत्य की वाणी सुनो, जिसे सुनने से मन-तन प्रफुल्लित हो जाता है और रसना हरि-रस में विलीन हो जाती है। उस परम सत्य, अलक्ष्य एवं अद्भुत प्रभु की विचित्र गति अकथनीय है। नानक कहते हैं कि नामामृत को सुनो एवं पवित्र हो जाओ, परमेश्वर ने तुम्हें सत्य सुनने के लिए जगत् में भेजा है॥ ३७॥

हरि जीउ गुफा अंदरि रखि कै वाजा पवणु वजाइआ ॥ वजाइआ वाजा पउण नउ दुआरे परगटु कीए दसवा गुपतु रखाइआ ॥ गुरदुआरै लाइ भावनी इकना दसवा दुआरु दिखाइआ ॥ तह अनेक रूप नाउ नव निधि तिस दा अंतु न जाई पाइआ ॥ कहै नानकु हरि पिआरै जीउ गुफा अंदरि रखि कै वाजा पवणु वजाइआ ॥ ३८ ॥

परमेश्वर ने आत्मा को शरीर रूपी गुफा में रखकर प्राणों का बाजा बजाया है। उसने प्राणों का बाजा बजाया अर्थात् जीवन साँसों का संचार किया, शरीर रूपी गुफा के नौ द्वार-आँखें, कान, मुँह, नाक इत्यादि प्रगट किए और दसम द्वार को गुप्त रखा हुआ है। उसने गुरु में श्रद्धा लगाकर दसम द्वार दिखा दिया है। वहाँ दसम द्वार में अनेक रूप एवं नौ निधियों वाले नाम का निवास है, जिसका रहस्य नहीं पाया जा सकता। नानक कहते हैं कि प्यारे प्रभु ने आत्मा को शरीर रूपी गुफा में स्थित कर प्राणों का संचार किया है॥ ३८॥

एहु साचा सोहिला साचै घरि गावहु ॥ गावहु त सोहिला घरि साचै जिथै सदा सचु धिआवहे ॥ सचो धिआवहि जा तुधु भावहि गुरमुखि जिना बुझावहे ॥ इहु सचु सभना का खसमु है जिसु बखसे सो जनु पावहे ॥ कहै नानकु सचु सोहिला सचै घरि गावहे ॥ ३९ ॥

परमात्मा का यह सच्चा कीर्तन सच्चे घर (सत्संगति) में बैठकर गान करो। उस सच्चे घर (सत्संगति) में बैठकर सच्चा कीर्तिगान करो, जहाँ सदैव सत्य का ध्यान किया जाता है। हे ईश्वर ! जो तुझे भाते हैं और जिन गुरुमुखों को ज्ञान हो जाता है, वही परम-सत्य का ध्यान करते हैं। यह परम सत्य सबका मालिक है, सत्य उसे ही प्राप्त होता है, जिसे वह स्वयं प्रदान करता है। नानक कहते हैं कि सच्चे घर (सत्संगति) में बैठकर परम-सत्य का कीर्तिगान करते रहो॥ ३९॥

अनदु सुणहु वडभागीहो सगल मनोरथ पूरे ॥ पारब्रहमु प्रभु पाइआ उतरे सगल विसूरे ॥ दूख रोग संताप उतरे सुणी सची बाणी ॥ संत साजन भए सरसे पूरे गुर ते जाणी ॥ सुणते पुनीत कहते पवितु सतिगुरु रहिआ भरपूरे ॥ बिनवंति नानकु गुर चरण लागे वाजे अनहद तूरे ॥ ४० ॥ १ ॥

हे भाग्यशालियो ! आप श्रद्धा से 'अनंद' वाणी को सुनो, इसे सुनने से सब मनोरथ पूरे हो जाते हैं। जिसने परब्रह्म प्रभु को पा लिया है, उसके सभी दुख-दर्द दूर हो गए हैं। जिसने सच्ची वाणी सुनी है, उसके सब दुख रोग एवं संताप उतर गए हैं। जिन्होंने पूर्ण गुरु से इस वाणी को जान लिया है, वे सभी सज्जन संत प्रसन्न हो गए हैं। इस वाणी को सुनने वाले पावन हो जाते हैं और इसे जपने वाले भी पवित्र हो जाते हैं। सतगुरु अपनी वाणी में व्यापक है। नानक विनती करते हैं कि गुरु के चरणों में लगने से मन में अनहद ध्वनियों वाले बाजे बज रहे हैं॥ ४०॥ १॥

रामकली सदु   १ओं सतिगुर प्रसादि ॥

जगि दाता सोइ भगति वछलु तिहु लोइ जीउ ॥ गुर सबदि समावए अवरु न जाणै कोइ जीउ ॥ अवरो न जाणहि सबदि गुर कै एकु नामु धिआवहे ॥ परसादि नानक गुरू अंगद परम पदवी पावहे ॥ आइआ हकारा चलणवारा हरि राम नामि समाइआ ॥ जगि अमरु अटलु अतोलु ठाकुरु भगति ते हरि पाइआ ॥ १ ॥

(बाबा सुन्दर जी द्वारा उच्चरित 'सद्' नामक इस वाणी में श्री गुरु अमरदास जी के ज्योति ज्योत समाने के समय का वर्णन है। 'सद्' से भाव है, मृत्यु का बुलावा।)

समूचे विश्व का दाता ईश्वर ही है, भक्तवत्सल है और तीनों लोकों में स्थित है। (गुरु अमरदास जी) शब्द-गुरु द्वारा परम-सत्य में ही लीन रहते थे और परम सत्य के अतिरिक्त अन्य किसी को नहीं जानते। वह अन्य किसी को नहीं जानते और गुरु के शब्द द्वारा एक प्रभु-नाम का ही ध्यान करते रहते थे। गुरु नानक देव जी और गुरु अंगद देव जी की कृपा से गुरु अमरदास जी ने (भक्ति की) परम पदवी प्राप्त की। जब गुरु (अमरदास जी) राम नाम में लीन रहते थे

तो उन्हें मृत्यु का आह्वान हो गया और उनकी ज्योति परमज्योति में विलीन हो गई। गुरु अमरदास जी ने भक्ति द्वारा उस ईश्वर को पा लिया जो जग में अमर, अटल एवं अडोल ठाकुर है॥ १॥

हरि भाणा गुर भाइआ गुरु जावै हरि प्रभ पासि जीउ ॥ सतिगुरु करे हरि पहि बेनती मेरी पैज रखहु अरदासि जीउ ॥ पैज राखहु हरि जनह केरी हरि देहु नामु निरंजनो ॥ अंति चलदिआ होइ बेली जमदूत कालु निखंजनो ॥ सतिगुरू की बेनती पाई हरि प्रभि सुणी अरदासि जीउ ॥ हरि धारि किरपा सतिगुरु मिलाइआ धनु धनु कहै साबासि जीउ ॥ २ ॥

ज्योति-ज्योत समाने की गुरु (अमरदास जी) को परमात्मा की रज़ा सहर्ष स्वीकार हो गई और वह प्रभु के पास चलने के लिए तैयार हो गए। सतिगुरु (अमरदास जी) ने ईश्वर से विनती की कि मेरी तुझसे यही प्रार्थना है कि मेरी लाज रखो। हे हरि! अपने दास की लाज रखो, मुझे अपना पावन नाम दो, जो काल एवं यमदूतों को नाश करने वाला है और अन्तिम समय साथी बने। जब सतिगुरु (अमरदास जी) ने विनती की तो प्रभु ने उनकी प्रार्थना सुन ली। परमात्मा ने कृपा करके सतिगुरु (अमरदास जी) को अपने साथ विलीन कर लिया और कहने लगे कि आप धन्य हैं और मेरी तुझे शाबाश है॥ २॥

मेरे सिख सुणहु पुत भाईहो मेरै हरि भाणा आउ मै पासि जीउ ॥ हरि भाणा गुर भाइआ मेरा हरि प्रभु करे साबासि जीउ ॥ भगतु सतिगुरु पुरखु सोई जिसु हरि प्रभ भाणा भावए ॥ आनंद अनहद वजहि वाजे हरि आपि गलि मेलावए ॥ तुसी पुत भाई परवारु मेरा मनि वेखहु करि निरजासि जीउ ॥ धुरि लिखिआ परवाणा फिरै नाही गुरु जाइ हरि प्रभ पासि जीउ ॥ ३ ॥

परलोक गमन से पूर्व गुरु (अमरदास जी) ने कहा कि हे मेरे सिक्खो, पुत्रो एवं भाईयो! मेरी बात सुनो, मेरे प्रभु की यह इच्छा हुई है कि मैं अब उस में विलीन हो जाऊँ। गुरु को परमात्मा की रज़ा भा गई है और प्रभु उन्हें शाबाश दे रहा है। वही परम भक्त एवं सतिगुरु पुरुष है, जिसे प्रभु की इच्छा सहर्ष स्वीकार हुई है। उसके मन में अनहद नाद वाले आनंदमयी बाजे बजते रहते हैं और प्रभु उसे स्वयं अपने गले से लगा लेता है। (सतिगुरु ने कहा कि) आप मेरे पुत्र, भाई एवं परिवार हो और अपने मन में यह विचार करके देख लो कि ईश्वर के दरबार में लिखा हुक्म टाला नहीं जा सकता, अतः अब गुरु (अमरदास जी) प्रभु के पास जा रहे हैं॥ ३॥

सतिगुरि भाणै आपणै बहि परवारु सदाइआ ॥ मत मै पिछै कोई रोवसी सो मै मूलि न भाइआ ॥ मितु पैझै मितु बिगसै जिसु मित की पैज भावए ॥ तुसी वीचारि देखहु पुत भाई हरि सतिगुरू पैनावए ॥ सतिगुरू परतखि होदै बहि राजु आपि टिकाइआ ॥ सभि सिख बंधप पुत भाई रामदास पैरी पाइआ ॥ ४ ॥

सतिगुरु अमरदास को जैसे उपयुक्त लगा, उन्होंने अपने परिवार को अपने पास बुला लिया और कहा कि मेरे परलोक गमन के पश्चात् कोई भी रोना मत, मुझे रोना बिल्कुल अच्छा नहीं लगेगा। जिसे अपने मित्र की प्रतिष्ठा अच्छी लगती है, वह मित्र के सम्मान पर प्रसन्न होता है, जिसे प्रभु-दरबार में शोभा मिल रही है, उसके शुभचिंतकों को रोने की बजाय खुश होना चाहिए। हे मेरे पुत्रो एवं भाईयो! आप विचार करके देख लो, परमात्मा सतिगुरु को शोभा का पात्र बना रहा है। सतिगुरु अमरदास जी ने अपने जीते जी ही श्री (गुरु) रामदास जी को गुरुगद्दी पर विराजमान किया और अपने सिक्खों, पुत्रों एवं सभी रिश्तेदारों को श्री गुरु रामदास जी के चरणों में लगवाया॥ ४॥

अंते सतिगुरु बोलिआ मै पिछै कीरतनु करिअहु निरबाणु जीउ ॥ केसो गोपाल पंडित सदिअहु हरि हरि कथा पड़हि पुराणु जीउ ॥ हरि कथा पड़ीऐ हरि नामु सुणीऐ बेबाणु हरि रंगु गुर भावए ॥ पिंडु पतलि किरिआ दीवा फुल हरि सरि पावए ॥ हरि भाइआ सतिगुरु बोलिआ हरि मिलिआ पुरखु सुजाणु जीउ ॥ रामदास सोढी तिलकु दीआ गुर सबदु सचु नीसाणु जीउ ॥ ५ ॥

ज्योति-ज्योत समाने के समय अन्त में सतिगुरु अमरदास जी ने कहा कि मेरे बाद शब्द कीर्तन करना। ईश्वर के पण्डित अर्थात् संतजनों को बुलवा लेना और हरि का कीर्तन कथा ही पुराणों का पठन होगा। हरि की कथा पढ़ना एवं हरि नाम सुनना। गुरु को हरि का रंग रूपी विमान ही अच्छा लगता है। मेरी अस्थियां हरि सर में डाल देना पिण्ड भरवाना, पत्तल, किरया एवं दीया जगाना इत्यादि सत्संग में प्रभु का गुणगान करने में होगा। जैसे परमात्मा को भाया है, वही सतिगुरु ने कहा है। मुझे परमपुरुष परमेश्वर मिल गया है और उसी में विलीन हो रहा हूँ। सतिगुरु अमरदास जी ने सोढी रामदास को गुरुयाई का तिलक बाबा बुड्ढा जी से लगवाया और सत्य-नाम एवं शब्द प्रदान किया जो सबके लिए सर्वमान्य है॥ ५॥

सतिगुरु पुरखु जि बोलिआ गुरसिखा मंनि लई रजाइ जीउ ॥ मोहरी पुतु सनमुखु होइआ रामदासै पैरी पाइ जीउ ॥ सभ पवै पैरी सतिगुरू केरी जिथै गुरू आपु रखिआ ॥ कोई करि बखीली निवै नाही फिरि सतिगुरू आणि निवाइआ ॥ हरि गुरहि भाणा दीई वडिआई धुरि लिखिआ लेखु रजाइ जीउ ॥ कहै सुंदरु सुणहु संतहु सभु जगतु पैरी पाइ जीउ ॥ ६ ॥ १ ॥

जैसे सतिगुरु अमरदास जी ने कहा, वैसे ही गुरु-शिष्यों ने उनकी रज़ा को मान लिया। सर्वप्रथम सतिगुरु अमरदास जी का अपना पुत्र बाबा मोहरी उनके सम्मुख हुआ और सतिगुरु (अमरदास जी) ने उन्हें गुरु रामदास के चरण-स्पर्श करने के लिए कहा और उन से गुरु रामदास के चरण-स्पर्श करवाए और सारे ही सिक्ख गुरु रामदास जी के चरणों में आ पड़े, जिनमें सतिगुरु अमरदास जी ने अपनी ज्योति स्थापित की थी। यदि कोई ईर्ष्यावश गुरु रामदास जी के आगे झुकता नहीं था तो सतगुरु ने उसे नम्रतापूर्वक शरण में ले लिया। गुरु अमरदास को परमात्मा की रज़ा सहर्ष स्वीकार हुई और उन्होंने गुरु रामदास जी को गुरुयाई देकर बड़ाई प्रदान की। बाबा सुन्दर जी कहते हैं कि हे सज्जनो ! सुनो; गुरु अमरदास जी ने गुरु रामदास को गुरुगद्दी देकर पूरे जगत् को उनके चरणों में डाल दिया॥ ६॥ १॥

रामकली महला ५ छंत १ओं सतिगुर प्रसादि ॥

साजनड़ा मेरा साजनड़ा निकटि खलोइअड़ा मेरा साजनड़ा ॥ जानीअड़ा हरि जानीअड़ा नैण अलोइअड़ा हरि जानीअड़ा ॥ नैण अलोइआ घटि घटि सोइआ अति अंम्रित प्रिअ गूड़ा ॥ नालि होवंदा लहि न सकंदा सुआउ न जाणै मूड़ा ॥ माइआ मदि माता होछी बाता मिलणु न जाई भरम धड़ा ॥ कहु नानक गुर बिनु नाही सूझै हरि साजनु सभ कै निकटि खड़ा ॥ १ ॥ गोबिंदा मेरे गोबिंदा प्राण अधारा मेरे गोबिंदा ॥ किरपाला मेरे किरपाला दान दातारा मेरे किरपाला ॥ दान दातारा अपर अपारा घट घट अंतरि सोहनिआ ॥ इक दासी धारी सबल पसारी जीअ जंत लै मोहनिआ ॥ जिस नो राखै सो सचु भाखै गुर का सबदु बीचारा ॥ कहु नानक जो प्रभ कउ भाणा तिस ही कउ प्रभु पिआरा ॥ २ ॥ माणो प्रभ माणो मेरे प्रभ का माणो ॥ जाणो प्रभु जाणो सुआमी सुघड़ु सुजाणो ॥ सुघड़ सुजाना सद परधाना अंम्रितु हरि का नामा ॥ चाखि अघाणे सारिगपाणे जिन कै भाग मथाना ॥ तिन ही पाइआ तिनहि धिआइआ सगल तिसै का माणो ॥ कहु नानक थिरु तखति निवासी सचु तिसै

दीबाणो ॥ ३ ॥ मंगला हरि मंगला मेरे प्रभ कै सुणीऐ मंगला ॥ सोहिलड़ा प्रभ सोहिलड़ा अनहद धुनीऐ सोहिलड़ा ॥ अनहद वाजे सबद अगाजे नित नित जिसहि वधाई ॥ सो प्रभु धिआईऐ सभु किछु पाईऐ मरै न आवै जाई ॥ चूकी पिआसा पूरन आसा गुरमुखि मिलु निरगुनीऐ ॥ कहु नानक घरि प्रभ मेरे कै नित नित मंगलु सुनीऐ ॥ ४ ॥ १ ॥

मेरा साजन प्रभु मेरे निकट ही खड़ा है। वह मुझे प्राणों से भी प्रिय है और उसके नयनों से दर्शन कर लिए हैं। मैंने अपने प्रिय को नयनों से देख लिया है जो घट-घट में व्यापक है और मेरा प्रियतम अमृत के समान मधुर है। जीव मन में स्थित प्रभु को अनुभव नहीं कर सकता और वह मूर्ख तो अपने जीवन लक्ष्य को भी नहीं जानता है। माया के नशे में मस्त बना हुआ वह व्यर्थ बातें करता रहता है और भ्रम के कारण प्रभु से उसका मिलन नहीं हो पाता। हे नानक ! साजन प्रभु सबके निकट मौजूद है, परन्तु गुरु के बिना उसकी सूझ नहीं होती॥ १॥ मेरा गोविन्द मेरे प्राणों का आधार है। सब जीवों को देने वाला दाता बड़ा कृपालु है। वह अपरंपार दातार घट-घट सबके अन्तर्मन में शोभा दे रहा है। उसने माया रूपी एक दासी बनाई हुई है, उसका सारे जगत् में प्रसार है और सब जीवों को उसने मोहित किया हुआ है। जिसकी वह रक्षा करता है, वही सत्य कहता है और वही गुरु-शब्द का विचार करता है। हे नानक ! जो प्रभु को अच्छा लगता है, उसे प्रभु प्यारा लगता है॥ २॥ मुझे अपने प्रभु पर मान है, सच तो यह है कि मुझे प्रभु पर ही मान है। मेरा स्वामी प्रभु अन्तर्यामी, चतुर एवं बुद्धिमान है। वह सदा ही चतुर, बुद्धिमान, सारी सृष्टि का प्रधान है। उस हरि का नाम अमृत के तुल्य है। जिनका भाग्य उज्ज्वल है, वे प्रभु के नामामृत का पान करके तृप्त हो गए हैं। उन्होंने उसे प्राप्त किया है, उसका ही ध्यान किया है और सबको उस पर गर्व है। हे नानक ! अटल सिंहासन पर विराजमान परमात्मा का दरबार शाश्वत है॥ ३॥ मेरे प्रभु का मंगलगान सुनो। उस प्रभु के घर में अनहद ध्वनि वाला कीर्तन होता रहता है। उसके घर में अनहद शब्द गूँजता रहता है और नित्य ही कल्याण की बधाई मिलती रहती है। सो प्रभु का ध्यान करने से सबकुछ प्राप्त हो जाता है और आवागमन से मुक्ति प्राप्त हो जाती है। प्रत्येक अभिलाषा पूर्ण हो जाती है और सब लालसाएँ मिट जाती हैं। निर्गुण परमात्मा को गुरु द्वारा पा लो। हे नानक ! हृदय-घर में सदैव मेरे प्रभु का मंगलगान सुनना चाहिए॥ ४॥ १॥

रामकली महला ५ ॥ हरि हरि धिआइ मना खिनु न विसारीऐ ॥ राम रामा राम रमा कंठि उर धारीऐ ॥ उर धारि हरि हरि पुरखु पूरनु पारब्रहमु निरंजनो ॥ भै दूरि करता पाप हरता दुसह दुख भव खंडनो ॥ जगदीस ईस गोपाल माधो गुण गोविंद वीचारीऐ ॥ बिनवंति नानक मिलि संगि साधू दिनसु रैणि चितारीऐ ॥ १ ॥ चरन कमल आधारु जन का आसरा ॥ मालु मिलख भंडार नामु अनंत धरा ॥ नामु नरहर निधानु जिन कै रस भोग एक नराइणा ॥ रस रूप रंग अनंत बीठल सासि सासि धिआइणा ॥ किलविख हरणा नाम पुनहचरणा नामु जम की त्रास हरा ॥ बिनवंति नानक रासि जन की चरन कमलह आसरा ॥ २ ॥ गुण बेअंत सुआमी तेरे कोइ न जानई ॥ देखि चलत दइआल सुणि भगत वखानई ॥ जीअ जंत सभि तुझु धिआवहि पुरखपति परमेसरा ॥ सरब जाचिक एकु दाता करुणा मै जगदीसरा ॥ साधू संतु सुजाणु सोई जिसहि प्रभ जी मानई ॥ बिनवंति नानक करहु किरपा सोइ तुझहि पछानई ॥ ३ ॥ मोहि निरगुण अनाथु सरणी आइआ ॥ बलि बलि बलि गुरदेव जिनि नामु द्रिड़ाइआ ॥ गुरि नामु दीआ कुसलु थीआ सरब इछा पुंनीआ ॥ जलने बुझाई सांति आई मिले चिरी विछुंनिआ ॥ आनंद हरख सहज साचे महा मंगल गुण गाइआ ॥ बिनवंति नानक नामु प्रभ का गुर पूरे ते पाइआ ॥ ४ ॥ २ ॥

हे मन! परमात्मा का मनन करो और उसे एक क्षण के लिए भी नहीं भुलाना चाहिए। प्यारे राम को हृदय एवं कण्ठ में धारण करके उसकी महिमागान करो। उस परमपुरुष, पूर्ण परब्रह्म, मायातीत ईश्वर को हृदय में बसाकर रखो। वह सब भय दूर करने वाला, पाप नाश करने वाला, असह्य दुख नष्ट करने वाला और जन्म-मरण का चक्र खंडन करने वाला है। उस जगदीश, ईश, गोपाल, माधो गोविंद के गुणों का चिंतन करते रहो। नानक की विनती है कि साधुओं की संगति में मिलकर दिन-रात उसे स्मरण करना चाहिए॥ १॥ परमात्मा के चरण-कमल ही भक्तजनों का आसरा है। प्रभु का अनंत नाम ही धन-सम्पति एवं सुखों का भण्डार है। प्रभु का नाम ही निधि है, नारायण का नाम जपना ही सब रसों को भोगना है। श्वास-श्वास से नाम का ध्यान करना ही दुनिया के रस, रूप, रंग एवं अनंत भण्डार हैं। प्रभु-नाम सब पापों को नष्ट करने वाला प्रायश्चित कर्म है और नाम ही यम के भय को दूर करने वाला है। नानक प्रार्थना करते हैं कि भगवान के चरण-कमल का आसरा ही दास की जीवन राशि है॥ २॥ हे स्वामी! तेरे गुण बेअंत हैं, पर कोई भी तेरे गुणों को नहीं जानता। हे दीनदयाल! तेरी अद्‌भुत लीला को देखकर एवं सुनकर भक्त तेरी महिमा का ही बखान करते हैं। हे पुरुषोत्तम परमेश्वर! सब जीव तेरा ही ध्यान करते रहते हैं। हे करुणामय जगदीश्वर! केवल एक तू ही दाता है, अन्य सब जीव तेरे याचक हैं। जिसे प्रभु गौरव देता है, वही साधु, संत एवं ज्ञानवान है। नानक विनती करते हैं कि हे प्रभु! जिस पर तू कृपा करता है, वही तुझे पहचानता है॥ ३॥ मैं गुणविहीन अनाथ तेरी शरण में आया हूँ। मैं अपने गुरुदेव पर कुर्बान जाता हूँ, जिसने मुझे नाम स्मरण करवाया है। गुरु ने मुझे नाम-दान दिया है, जिसे जपने से सब कामनाएँ पूरी हो गई हैं और सुखी हो गया हूँ। नाम ने मेरी सारी जलन बुझा दी है, मन को शान्ति मिल गई है और चिरकाल से बिछुड़े हुए को मिला दिया है। मैंने सच्चे परमेश्वर की महिमा का मंगलगान किया है, जिससे मन में आनंद, हर्ष एवं सहज सुख उपलब्ध हो गया है। नानक विनती करते हैं कि पूर्ण गुरु से मुझे प्रभु का नाम प्राप्त हो गया है॥ ४॥ २॥

रामकली महला ५ ॥ रुण झुणो सबदु अनाहदु नित उठि गाईऐ संतन कै ॥ किलविख सभि दोख बिनासनु हरि नामु जपीऐ गुर मंतन कै ॥ हरि नामु लीजै अमिउ पीजै रैणि दिनसु अराधीऐ ॥ जोग दान अनेक किरिआ लगि चरण कमलह साधीऐ ॥ भाउ भगति दइआल मोहन दूख सगले परहरै ॥ बिनवंति नानक तरै सागरु धिआइ सुआमी नरहरै ॥ १ ॥ सुख सागर गोबिंद सिमरणु भगत गावहि गुण तेरे राम ॥ अनद मंगल गुर चरणी लागे पाए सूख घनेरे राम ॥ सुख निधानु मिलिआ दूख हरिआ क्रिपा करि प्रभि राखिआ ॥ हरि चरण लागा भ्रमु भउ भागा हरि नामु रसना भाखिआ ॥ हरि एकु चितवै प्रभु एकु गावै हरि एकु द्रिसटी आइआ ॥ बिनवंति नानक प्रभि करी किरपा पूरा सतिगुरु पाइआ ॥ २ ॥ मिलि रहीऐ प्रभ साध जना मिलि हरि कीरतनु सुनीऐ राम ॥ दइआल प्रभू दामोदर माधो अंतु न पाईऐ गुनीऐ राम ॥ दइआल दुख हर सरणि दाता सगल दोख निवारणो ॥ मोह सोग विकार बिखड़े जपत नाम उधारणो ॥ सभि जीअ तेरे प्रभू मेरे करि किरपा सभ रेण थीवा ॥ बिनवंति नानक प्रभ मइआ कीजै नामु तेरा जपि जीवा ॥ ३ ॥ राखि लीए प्रभि भगत जना अपणी चरणी लाए राम ॥ आठ पहर अपना प्रभु सिमरह एको नामु धिआए राम ॥ धिआइ सो प्रभु तरे भवजल रहे आवण जाणा ॥ सदा सुखु कलिआण कीरतनु प्रभ लगा मीठा भाणा ॥ सभ इछ पुंनी आस पूरी मिले सतिगुर पूरिआ ॥ बिनवंति नानक प्रभि आपि मेले फिरि नाही दूख विसूरिआ ॥ ४ ॥ ३ ॥

नित्य सुबह उठकर संतों के साथ सुरीले अनहद शब्द का गान करना चाहिए। गुरु-उपदेश द्वारा हरि-नाम का जाप करने से सब पाप एवं दोष नष्ट हो जाते हैं। हरि-नाम स्मरण करो,

नामामृत का पान करो और दिन-रात उसकी ही आराधना करो। प्रभु के चरणों में लगने से योग, दान-पुण्य, एवं शुभ कर्मों का फल प्राप्त हो जाता है। दयालु प्रभु की प्रेम-भक्ति से सब दुख नाश हो जाते हैं। नानक विनती करते हैं कि स्वामी परमेश्वर का मनन करने से जीव संसार-सागर से पार हो जाता है॥ १॥ हे गोविंद ! तू सुखों का सागर है, सब भक्त तेरा ही सिमरन एवं स्तुतिगान करते रहते हैं। गुरु के चरणों में लगकर उन्हें बड़ा आनंद, कल्याण एवं अनेक सुख उपलब्ध होते हैं। प्रभु ने कृपा करके रक्षा की है, उनके सब दुख दूर कर दिए हैं और उन्हें सुखों की निधि मिल गई है। प्रभु के चरणों में लगने से सारा भ्रम एवं भय दूर हो जाता है और जीभ हरि-नाम ही जपती रहती है। जो भक्तजन एक परमात्मा का स्मरण करते हैं, उस एक का ही गुणगान करते हैं, उन्हें हर तरफ एक परमेश्वर ही नजर आता है। नानक विनती करते हैं कि प्रभु ने कृपा की है, जिससे पूर्ण सतगुरु प्राप्त हो गया है॥ २॥ प्रभु के साधुजनों के संग मिलकर रहना चाहिए और भगवान का भजन-कीर्तन सुनना चाहिए। हे दयालु प्रभु, हे दामोदर, हे माधव ! तेरी महिमा का अन्त नहीं पाया जा सकता। हे दीनदयाल ! तू दुखनाशक, शरण देने में समर्थ एवं सब दोष निवारण करने वाला है। तेरा नाम जपने से मोह, शोक एवं विषम विकारों से उद्धार हो जाता है। हे मेरे प्रभु ! सब जीव तेरे ही पैदा किए हुए हैं, ऐसी कृपा करो कि मैं सबकी चरण-धूलि बना रहूँ। नानक विनती करते हैं कि दया करो, चूंकि तेरा नाम जपकर ही जीना है॥ ३॥ प्रभु ने भक्तजनों की रक्षा करके उन्हें अपने चरणों से लगा लिया है। वे आठों प्रहर प्रभु का सिमरन करते रहते हैं और केवल उसके नाम का ही भजन करते हैं। सो प्रभु का भजन करके वे संसार-सागर से पार हो जाते हैं और उनका आवागमन मिट जाता है। परमात्मा का भजन-कीर्तन करने से ही उन्हें कल्याण एवं सदैव सुख मिलता है और प्रभु की रज़ा ही उन्हें मीठी लगी है। पूर्ण सतगुरु से मिलकर उनकी हर प्रकार की आशा एवं मनोकामनाएं पूरी हो गई हैं। नानक विनती करते हैं कि जिन्हें प्रभु ने अपने साथ मिला लिया है, फिर उन्हें कोई दुख-दर्द प्रभावित नहीं करता॥ ४॥ ३॥

रामकली महला ५ छंत ॥ सलोकु ॥ चरन कमल सरणागती अनद मंगल गुण गाम ॥ नानक प्रभु आराधीऐ बिपति निवारण राम ॥ १ ॥

श्लोक॥ प्रभु के चरण-कमल की शरण में आकर आनंद-मंगल रूपी गुणगान करना चाहिए। हे नानक ! प्रभु की आराधना करो, चूंकि वह हर विपत्ति का निवारण करने वाला है॥ १॥

छंतु ॥ प्रभ बिपति निवारणो तिसु बिनु अवरु न कोइ जीउ ॥ सदा सदा हरि सिमरीऐ जलि थलि महीअलि सोइ जीउ ॥ जलि थलि महीअलि पूरि रहिआ इक निमख मनहु न वीसरै ॥ गुर चरन लागे दिन सभागे सरब गुण जगदीसरै ॥ करि सेव सेवक दिनसु रैणी तिसु भावै सो होइ जीउ ॥ बलि जाइ नानकु सुखह दाते परगासु मनि तनि होइ जीउ ॥ १ ॥

छंद॥ प्रभु प्रत्येक विपत्ति का निवारण करने वाला है और उसके अतिरिक्त अन्य कोई नहीं। सदैव परमेश्वर का सिमरन करना चाहिए क्योंकि समुद्र, पृथ्वी एवं नभ में वही स्थित है। उसे एक क्षण भर भी मन से भुलाना नहीं चाहिए, जो समुद्र, पृथ्वी एवं गगन सब जगह मौजूद है। वह दिन भाग्यशाली है, जब गुरु-चरणों में मन लगा है। हे जगदीश्वर ! तू सर्वगुण सम्पन्न है। सेवक बनकर दिन-रात उसकी उपासना करते रहो, जो उसे मंजूर है, वही होता है। हे सुखों के दाता ! नानक तुझ पर बलिहारी जाता है, क्योंकि तेरी कृपा से मन-तन में प्रकाश होता है॥ १॥

सलोकु ॥ हरि सिमरत मनु तनु सुखी बिनसी दुतीआ सोच ॥ नानक टेक गोपाल की गोविंद संकट मोच ॥ १ ॥

श्लोक॥ भगवान का सिमरन करने से मन-तन सुखी हो जाता है और सब परेशानियाँ दूर हो जाती हैं। हे नानक! ईश्वर का आसरा लो, जो हर संकट से छुटकारा दिलाने वाला है॥ १॥

छंतु ॥ भै संकट काटे नाराइण दइआल जीउ ॥ हरि गुण आनंद गाए प्रभ दीना नाथ प्रतिपाल जीउ ॥ प्रतिपाल अचुत पुरखु एको तिसहि सिउ रंगु लागा ॥ कर चरन मसतकु मेलि लीने सदा अनदिनु जागा ॥ जीउ पिंडु ग्रिहु थानु तिस का तनु जोबनु धनु मालु जीउ ॥ सद सदा बलि जाइ नानकु सरब जीआ प्रतिपाल जीउ ॥ २ ॥

छंद॥ दयालु नारायण ने सब भय एवं संकट काट दिए हैं। हमने आनंद से प्रभु का गुणगान किया है, वह दीननाथ एवं सबका प्रतिपालक है। एक अच्युत परमपुरुष परमेश्वर ही हमारा प्रतिपालक है और उसके संग मन लीन हो गया है। जबसे उसके चरणों में अपना माथा टेका एवं हाथों से प्रार्थना की है, उसने मुझे अपने साथ मिला लिया है और निशदिन मोह माया से जाग्रत रहता हूँ। यह प्राण, शरीर, घर, स्थान, तन, यौवन एवं धन संपति परमात्मा की देन है। नानक सर्वदा उस पर बलिहारी जाता है, जो सब जीवों का प्रतिपालक है॥ २॥

सलोकु ॥ रसना उचरै हरि हरे गुण गोविंद वखिआन ॥ नानक पकड़ी टेक एक परमेसरु रखै निदान ॥ १ ॥

श्लोक॥ यह रसना 'हरि-हरि' ही जपती है और गोविंद के गुणों का बखान करती है। हे नानक! एक परमेश्वर की शरण ले ली है, जो अन्तिम समय छुटकारा दिलाता है॥ १॥

छंतु ॥ सो सुआमी प्रभु रखको अंचलि ता कै लागु जीउ ॥ भजु साधू संगि दइआल देव मन की मति तिआगु जीउ ॥ इक ओट कीजै जीउ दीजै आस इक धरणीधरै ॥ साधसंगे हरि नाम रंगे संसारु सागरु सभु तरै ॥ जनम मरण बिकार छूटे फिरि न लागै दागु जीउ ॥ बलि जाइ नानकु पुरख पूरन थिरु जा का सोहागु जीउ ॥ ३ ॥

छंद॥ सो स्वामी प्रभु हम सबका रक्षक है, इसलिए उसके आँचल में लग जाओ। अपने मन की मति त्याग कर साधुजनों की संगति में दयालु परमात्मा का भजन करो। केवल परमेश्वर का आसरा ग्रहण करो, अपना जीवन भी उस पर न्यौछावर कर दो और उस पर ही आशा रखो। जो साधुओं की संगति में प्रभु-नाम में लीन रहते हैं, वे सभी संसार-सागर से तैर जाते हैं। इस प्रकार उनका जन्म-मरण एवं सारे विकार छूट जाते हैं और पुनः कोई कलंक नहीं लगता। नानक पूर्ण परमेश्वर पर कुर्बान जाता है, जिसका सुहाग सदा अटल है॥ ३॥

सलोकु ॥ धरम अरथ अरु काम मोख मुकति पदारथ नाथ ॥ सगल मनोरथ पूरिआ नानक लिखिआ माथ ॥ १ ॥

श्लोक॥ धर्म, अर्थ, काम एवं मोक्ष रूपी मुक्ति पदार्थ ईश्वर देने वाला है। हे नानक! जिसके माथे पर कर्मालेख लिखा होता है, उसके सब मनोरथ पूरे हो जाते हैं॥ १॥

छंतु ॥ सगल इछ मेरी पुंनीआ मिलिआ निरंजन राइ जीउ ॥ अनदु भइआ वडभागीहो ग्रिहि प्रगटे

प्रभ आइ जीउ ॥ ग्रिहि लाल आए पुरबि कमाए ता की उपमा किआ गणा ॥ बेअंत पूरन सुख सहज दाता कवन रसना गुण भणा ॥ आपे मिलाए गहि कंठि लाए तिसु बिना नही जाइ जीउ ॥ बलि जाइ नानकु सदा करते सभ महि रहिआ समाइ जीउ ॥ ४ ॥ ४ ॥

छंद॥ जब से निरंजन प्रभु मिला है, तब से सब कामनाएँ पूरी हो गई हैं। अहोभाग्य से प्रभु हृदय-घर में प्रगट हो गया है, जिससे मन में आनंद ही आनंद हो गया है। पूर्व जन्म में किए शुभ कर्मों के कारण हृदय-घर में प्रभु आए हैं, जिसकी उपमा व्यक्त नहीं की जा सकती। वह सहज सुख प्रदान करने वाला दाता बेअंत एवं पूर्ण है, मैं कौन-सी जिह्वा से उसकी महिमा बयान करूँ ? उसने स्वयं ही साथ मिलाकर गले से लगा लिया है, उसके अलावा अन्य कोई अवलम्ब नहीं। नानक सदा ही सृजनहार पर बलिहारी जाता है, जो सब जीवों में समा रहा है॥ ४॥ ४॥

रागु रामकली महला ५ ॥ रण झुंझनड़ा गाउ सखी हरि एकु धिआवहु ॥ सतिगुरु तुम सेवि सखी मनि चिंदिअड़ा फलु पावहु ॥

हे सखी ! मधुर-सुरीले स्वर में यशगान करो और केवल परमेश्वर का ही ध्यान करो। हे मेरी सखी ! तुम सतगुरु की सेवा करो और मनोवांछित फल पा लो।

रामकली महला ५ रुती सलोकु ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

करि बंदन प्रभ पारब्रहम बाछउ साधह धूरि ॥ आपु निवारि हरि हरि भजउ नानक प्रभ भरपूरि ॥ १ ॥ किलविख काटण भै हरण सुख सागर हरि राइ ॥ दीन दइआल दुख भंजनो नानक नीत धिआइ ॥ २ ॥

परब्रह्म-प्रभु की वन्दना करो और साधुओं की चरण-धूलि की ही आकांक्षा करो। अपना अहम् छोड़कर भगवान का भजन करो, हे नानक ! वह प्रभु विश्वव्यापक है॥ १॥ सर्व पाप काटने वाला, भयनाशक प्रभु ही सुखों का सागर है। हे नानक ! नित्य दीनदयाल एवं दुखनाशक ईश्वर का ध्यान करना चाहिए॥ २॥

छंतु ॥ जसु गावहु वडभागीहो करि किरपा भगवंत जीउ ॥ रुती माह मूरत घड़ी गुण उचरत सोभावंत जीउ ॥ गुण रंगि राते धंनि ते जन जिनी इक मनि धिआइआ ॥ सफल जनमु भइआ तिन का जिनी सो प्रभु पाइआ ॥ पुंन दान न तुलि किरिआ हरि सरब पापा हंत जीउ ॥ बिनवंति नानक सिमरि जीवा जनम मरण रहंत जीउ ॥ १ ॥

छंद॥ हे भाग्यशालियो ! परमात्मा का यशोगान करो। हे भगवंत ! अपने भक्तजनों पर कृपा करो। हर ऋतु, महीने, मुहूर्त एवं घड़ी शोभावान ईश्वर के गुणों का उच्चारण करें। जो एकाग्रचित होकर परमात्मा का ध्यान करते हैं, उसके गुणों के रंग में लीन रहते हैं, वही व्यक्ति भाग्यवान् हैं। उनका जन्म सफल हो गया है, जिन्होंने प्रभु को पा लिया है। कोई दान-पुण्य एवं कोई भी धर्म-कर्म हरि-नाम के तुल्य नहीं है, वह सर्व पापों को नाश करने वाला है। नानक विनती करते हैं कि हे प्रभु ! तेरा सिमरन करके अपना जीवन बिता दूँ और जन्म-मरण के चक्र से मुक्त हो जाऊँ॥ १॥

सलोक ॥ उदमु अगमु अगोचरो चरन कमल नमसकार ॥ कथनी सा तुधु भावसी नानक नाम अधार ॥ १ ॥ संत सरणि साजन परहु सुआमी सिमरि अनंत ॥ सूके ते हरिआ थीआ नानक जपि भगवंत ॥ २ ॥

श्लोक॥ उस अगम्य-अगोचर को पाने का ही उद्यम कर रहा हूँ और प्रभु के चरण-कमल को प्रणाम है। नानक कहते हैं कि हे ईश्वर! मैं वही बात कहता हूँ जो तुझे अच्छी लगती है और तेरा नाम ही मेरा जीवनाधार है॥ १॥ हे सज्जनो, संतों की शरण ग्रहण करो अैर अनंत स्वामी का चिंतन करो। हे नानक! भगवंत का जाप करने से नीरस जीवन खुशहाल हो जाता है॥ २॥

छंतु ॥ रुति सरस बसंत माह चेतु वैसाख सुख मासु जीउ ॥ हरि जीउ नाहु मिलिआ मउलिआ मनु तनु सासु जीउ ॥ घरि नाहु निहचलु अनदु सखीए चरन कमल प्रफुलिआ ॥ सुंदरु सुघड़ु सुजाणु बेता गुण गोविंद अमुलिआ ॥ वडभागि पाइआ दुखु गवाइआ भई पूरन आस जीउ ॥ बिनवंति नानक सरणि तेरी मिटी जम की त्रास जीउ ॥ २ ॥

छंद॥ वसंत ऋतु आनंदमयी बन गई है और चैत्र-वैशाख का महीना सुखदायक बन गया है। प्रभु को मिलकर मन-तन एवं जीवन साँसें प्रसन्न हो गई हैं। हे सखी! अविनाशी पति--प्रभु हृदय-घर में आ बसा है, जिससे आनंद उत्पन्न हो गया है और उसके चरण-कमल के स्पर्श से मन प्रफुल्लित हो गया है। उस गोविन्द के गुण अमूल्य हैं, वह बड़ा सुन्दर, चतुर, बुद्धिमान एवं सर्वज्ञाता है। अहोभाग्य से उसे प्राप्त किया है, दुख दूर हो गया है और प्रत्येक आशा पूर्ण हो गई है। नानक विनती करते हैं कि हे स्वामी! तेरी शरण में आकर मेरी यम की पीड़ा मिट गई है॥ २॥

सलोक ॥ साधसंगति बिनु भ्रमि मुई करती करम अनेक ॥ कोमल बंधन बाधीआ नानक करमहि लेख ॥ १ ॥ जो भाणे से मेलिआ विछोड़े भी आपि ॥ नानक प्रभ सरणागती जा का वड परतापु ॥ २ ॥

श्लोक॥ साधु-संगति के बिना भ्रम में फँसकर अनेक कर्म करती हुई जीव-स्त्री ने सारी जिंदगी बर्बाद कर दी। हे नानक! पूर्व कर्मों के कर्मालेख अनुसार माया ने उसे अपने मोह के कोमल बन्धनों में बांध लिया है॥ १॥ जब परमात्मा को मंजूर होता है, वह अपने साथ मिला लेता है और स्वयं ही बिछोड़ भी देता है। हे नानक! उस प्रभु की शरण में आओ, जिसका सारी दुनिया में बड़ा प्रताप है॥ २॥

छंतु ॥ ग्रीखम रुति अति गाखड़ी जेठ अखाड़ै घाम जीउ ॥ प्रेम बिछोहु दुहागणी द्रिसटि न करी राम जीउ ॥ नह द्रिसटि आवै मरत हावै महा गारबि मुठीआ ॥ जल बाझु मछुली तड़फड़ावै संगि माइआ रुठीआ ॥ करि पाप जोनी भै भीत होई देइ सासन जाम जीउ ॥ बिनवंति नानक ओट तेरी राखु पूरन काम जीउ ॥ ३ ॥

छंद॥ ग्रीष्म ऋतु बड़ी कठिन होती है और ज्येष्ठ-आषाढ़ के महीने में बड़ी गर्मी पड़ती है। दुहागिन जीव-स्त्री को प्रेम का बिछोड़ा दुखी करता है, चूंकि राम रूपी पति उस पर दृष्टि नहीं करता। उसे पति-प्रभु नजर नहीं आता और वह आहें भरकर विलाप करती है। उसके बड़े घमण्ड ने उसका जीवन बर्बाद कर दिया है। वह जल के बिना मछली की तरह तड़पती है और माया के संग मोह के कारण उसका पति उससे रुठा हुआ है। वह पाप करके योनियों में भयभीत होती है और यम उसे पीड़ित करता है। नानक विनती करते हैं कि हे प्रभु! मैंने तेरी ओट ली है, मेरी रक्षा करो और सब कामनाएँ पूरी करो॥ ३॥

सलोक ॥ सरधा लागी संगि प्रीतमै इकु तिलु रहणु न जाइ ॥ मन तन अंतरि रवि रहे नानक

सहजि सुभाइ ॥ १ ॥ करु गहि लीनी साजनहि जनम जनम के मीत ॥ चरनह दासी करि लई नानक प्रभ हित चीत ॥ २ ॥

श्लोक॥ मेरी प्रियतम प्रभु से श्रद्धा लग गई है और तिल मात्र समय के लिए भी उससे रहा नहीं जाता। हे नानक! वह सहज-स्वभाव ही मेरे मन-तन में बसा हुआ है॥ १॥ मेरे जन्म-जन्मांतर के मित्र साजन-प्रभु ने मुझे हाथों से पकड़ लिया है। हे नानक! प्रभु ने शुभचिन्तक बनकर मुझे अपने चरणों की दासी बना लिया है॥ २॥

छंतु ॥ रुति बरसु सुहेलीआ सावण भादवे आनंद जीउ ॥ घण उनवि वुठे जल थल पूरिआ मकरंद जीउ ॥ प्रभु पूरि रहिआ सरब ठाई हरि नाम नव निधि ग्रिह भरे ॥ सिमरि सुआमी अंतरजामी कुल समूहा सभि तरे ॥ प्रिअ रंगि जागे नह छिद्र लागे क्रिपालु सद बखसिंदु जीउ ॥ बिनवंति नानक हरि कंतु पाइआ सदा मनि भावंदु जीउ ॥ ४ ॥

छंद॥ वर्षा ऋतु बड़ी सुखदायक है और सावन-भादों के महीनों में आनंद बना रहता है। मेघ उमड़-उमड़ कर वर्षा कर रहे हैं और उन्होंने सरोवरों एवं भूमि को सुगन्धित जल से भर दिया है। प्रभु सब स्थानों में जल की तरह व्याप्त है और नौ निधियाँ देने वाले हरि-नाम से हृदय-घर भर गया है। अन्तर्यामी स्वामी का सिमरन करने से सभी कुलों का उद्धार हो जाता है। जो प्रियतम के प्रेम में जाग्रत रहते हैं, उन्हें कोई पाप प्रभावित नहीं करता, क्योंकि कृपालु परमेश्वर सदैव क्षमावान् है। नानक विनती करते हैं कि उसने पति-प्रभु को प्राप्त कर लिया है, जो सदा ही उसके मन को भाता है॥ ४॥

सलोक ॥ आस पिआसी मै फिरउ कब पेखउ गोपाल ॥ है कोई साजनु संत जनु नानक प्रभ मेलणहार ॥ १ ॥ बिनु मिलबे सांति न ऊपजै तिलु पलु रहणु न जाइ ॥ हरि साधह सरणागती नानक आस पुजाइ ॥ २ ॥

श्लोक॥ मैं उसी की आशा एवं तीव्र लालसा में भटक रही हूँ कि कब परमात्मा के मुझे दर्शन होंगे। नानक कहते हैं कि क्या कोई ऐसा साजन संत है, जो प्रभु से मिलाने वाला हो॥ १॥ प्रभु-मिलन के बिना मन में शान्ति उत्पन्न नहीं होती और तिल भर समय के लिए भी नहीं रहा जाता। हे नानक! साधु की शरण में आने से ही आशा पूरी होती है॥ २॥

छंतु ॥ रुति सरद अडंबरो असू कतके हरि पिआस जीउ ॥ खोजंती दरसनु फिरत कब मिलीऐ गुणतास जीउ ॥ बिनु कंत पिआरे नह सूख सारे हार कंङण ध्रिगु बना ॥ सुंदरि सुजाणि चतुरि बेती सास बिनु जैसे तना ॥ ईत उत दह दिस अलोकन मनि मिलन की प्रभ पिआस जीउ ॥ बिनवंति नानक धारि किरपा मेलहु प्रभ गुणतास जीउ ॥ ५ ॥

छंद॥ आश्विन एवं कार्तिक के महीनों में जब शरद् ऋतु का आगमन होता है तो मन में हरि-मिलन की लालसा पैदा होती है। उसके दर्शन करने के लिए खोज में भटक रही हूँ कि कब गुणों का भण्डार परमात्मा मिलेगा। प्रिय-प्रभु के बिना सारे सुख फीके हैं और हार-कंगन सब शृंगार धिक्कार योग्य बन गए हैं। सुन्दर, बुद्धिमान एवं चतुर प्रभु सब कुछ जानता है और उसके बिना ऐसे हो गई हूँ जैसे साँसों के बिना मृतक शरीर होता है। मेरे मन में प्रभु-मिलन की ही लालसा बनी हुई है और उसे इधर-उधर दसों दिशाओं में देखती रहती हूँ। नानक विनती करते हैं कि हे गुणों के भण्डार परमेश्वर! कृपा करके अपने साथ मिला लो॥ ५॥

सलोक ॥ जलणि बुझी सीतल भए मनि तनि उपजी सांति ॥ नानक प्रभ पूरन मिले दुतीआ बिनसी भ्रांति ॥ १ ॥ साध पठाए आपि हरि हम तुम ते नाही दूरि ॥ नानक भ्रम भै मिटि गए रमण राम भरपूरि ॥ २ ॥

श्लोक॥ मन-तन में शान्ति उत्पन्न हो गई है, सारी जलन बुझ गई है और हृदय शीतल हो गया है। हे नानक! पूर्ण प्रभु मिल गया है, जिससे द्वैतभाव एवं भ्रांति नाश हो गई है॥ १॥ ईश्वर ने स्वयं ही यह सत्य बताने के लिए साधुओं को संसार में भेजा है कि वह तुमसे कहीं दूर नहीं। हे नानक! सब भ्रम एवं भय मिट गए हैं, एक राम ही सब जीवों में रमण कर रहा है॥ २॥

छंतु ॥ रुति सिसीअर सीतल हरि प्रगटे मंघर पोहि जीउ ॥ जलनि बुझी दरसु पाइआ बिनसे माइआ ध्रोह जीउ ॥ सभि काम पूरे मिलि हजूरे हरि चरण सेवकि सेविआ ॥ हार डोर सीगार सभि रस गुण गाउ अलख अभेविआ ॥ भाउ भगति गोविंद बांछत जमु न साकै जोहि जीउ ॥ बिनवंति नानक प्रभि आपि मेली तह न प्रेम बिछोह जीउ ॥ ६ ॥

छंद॥ मार्गशीर्ष एवं पौष के महीनों में शीतल शिशिर ऋतु आई है और प्रभु अन्तर्मन में प्रगट हो गया है। उसके दर्शन करके सारी जलन दूर हो गई है और माया के सब बन्धन नाश हो गए हैं। सेवक ने हरि-चरणों की सेवा की है और प्रत्यक्ष प्रभु से मिलकर सब कामनाएँ पूरी हो गई हैं। सब ने हार श्रृंगार सहित आनंद से उस अलक्ष्य, रहस्यातीत, परमात्मा का ही गुणगान किया है। जो गोविंद की प्रेम-भक्ति की कामना करते हैं, यम भी उन्हें तंग नहीं करता। नानक विनती करते हैं कि जिस जीव-स्त्री को प्रभु ने साथ मिला लिया है, उसका प्रेम वियोग नहीं होता॥ ६॥

सलोक ॥ हरि धनु पाइआ सोहागणी डोलत नाही चीत ॥ संत संजोगी नानका ग्रिहि प्रगटे प्रभ मीत ॥ १ ॥ नाद बिनोद अनंद कोड प्रिअ प्रीतम संगि बने ॥ मन बांछत फल पाइआ हरि नानक नाम भने ॥ २ ॥

श्लोक॥ जिस सुहागिन ने पति-प्रभु को पा लिया है, उसका मन कभी विचलित नहीं होता। हे नानक! संतों के संयोग से ही मित्र-प्रभु उसके हृदय-घर में प्रगट हो गया है॥ १॥ प्रियतम के संग ही आनंद, विनोद एवं संगीत इत्यादि सब खुशियां मिलती हैं। हे नानक! हरि-नाम का जाप करके मनोवांछित फल प्राप्त हो गया है॥ २॥

छंतु ॥ हिमकर रुति मनि भावती माघु फगणु गुणवंत जीउ ॥ सखी सहेली गाउ मंगलो ग्रिहि आए हरि कंत जीउ ॥ ग्रिहि लाल आए मनि धिआए सेज सुंदरि सोहीआ ॥ वणु त्रिणु त्रिभवण भए हरिआ देखि दरसन मोहीआ ॥ मिले सुआमी इछ पंनी मनि जपिआ निरमल मंत जीउ ॥ बिनवंति नानक नित करहु रलीआ हरि मिले स्रीधर कंत जीउ ॥ ७ ॥

छंद॥ हेमंत ऋतु मन को बहुत अच्छी लगती है, माघ-फाल्गुन के महीने बड़े गुणवान् हैं। हे मेरी सखी-सहेली, प्रभु हृदय-घर में आ गया है, इसलिए उसका मंगलगान करो। मन में उसका ध्यान किया है और हृदय-घर में वह प्रभु जी आए हैं और मेरी हृदय रूपी सेज सुन्दर एवं सुहावनी हो गई है। वन, तृण एवं तीनों लोक सब खुशहाल हो गए हैं और उसके दर्शन करके मोहित हो गई हूँ। मेरा स्वामी मुझे मिल गया है, मेरी कामना पूरी हो गई है, चूंकि मन में उसके निर्मल

नाम-मंत्र का ही जाप किया है। नानक विनती करते हैं कि नित्य आनंद प्राप्त करो, चूंकि श्रीधर हरि रूपी पति मिल गया है॥ ७॥

सलोक ॥ संत सहाई जीअ के भवजल तारणहार ॥ सभ ते ऊचे जाणीअहि नानक नाम पिआर ॥ १ ॥ जिन जानिआ सेई तरे से सूरे से बीर ॥ नानक तिन बलिहारणै हरि जपि उतरे तीर ॥ २ ॥

श्लोक॥ संत ही जीवों के सहायक हैं, जो संसार-सागर से पार करवाने वाले हैं। हे नानक! जो प्रभु-नाम से प्रेम करता है, वही सर्वश्रेष्ठ माना जाता है॥ १॥ जिन्होंने ईश्वर को पहचान लिया है, वे संसार से मुक्त हो गए हैं, वही शूरवीर एवं पराक्रमी हैं। हे नानक! मैं उन पर बलिहारी जाता हूँ, जो भगवान का जाप करके पार हो गए हैं॥ २॥

छंतु ॥ चरण बिराजित सभ ऊपरे मिटिआ सगल कलेसु जीउ ॥ आवण जावण दुख हरे हरि भगति कीआ परवेसु जीउ ॥ हरि रंगि राते सहजि माते तिलु न मन ते बीसरै ॥ तजि आपु सरणी परे चरनी सरब गुण जगदीसरै ॥ गोविंद गुण निधि स्रीरंग सुआमी आदि कउ आदेसु जीउ ॥ बिनवंति नानक मइआ धारहु जुगु जुगो इक वेसु जीउ ॥ ८ ॥ १ ॥ ६ ॥ ८ ॥

छंद॥ सब के ऊपर भगवान के चरण विराजमान हैं और उनका सारा दुख-क्लेश मिट गया है। जिनके हृदय में भगवान की भक्ति का प्रवेश हो गया है, उनका आवागमन का दुख मिट गया है। वे हरि-रंग में लीन रहकर सहज ही मस्त रहते हैं और तिल मात्र समय के लिए भी उन्हें प्रभु मन से नहीं भूलता। वे अपना अहंत्व त्यागकर सर्वगुणसम्पन्न जगदीश्वर के चरणों की शरण में आ गए हैं। गुणों के भण्डार, श्रीरंग, स्वामी, सृष्टि के आदि उस गोविन्द को हमारा शत् शत् नमन है। नानक विनती करते हैं कि हे स्वामी! मुझ पर दया करो, युगों-युगान्तरों से एक तेरा ही अस्तित्व है॥ ८॥ १॥ ६॥ ८॥

रामकली महला १ दखणी ओअंकारु ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

ओअंकारि ब्रहमा उतपति ॥ ओअंकारु कीआ जिनि चिति ॥ ओअंकारि सैल जुग भए ॥ ओअंकारि बेद निरमए ॥ ओअंकारि सबदि उधरे ॥ ओअंकारि गुरमुखि तरे ॥ ओनम अखर सुणहु बीचारु ॥ ओनम अखरु त्रिभवण सारु ॥ १ ॥ सुणि पाडे किआ लिखहु जंजाला ॥ लिखु राम नाम गुरमुखि गोपाला ॥ १ ॥ रहाउ ॥

ओंकार से ब्रह्मा की उत्पति हुई, जिसने चित में ओंकार का ही ध्यान किया। अनेक पर्वत एवं युग ओंकार से पैदा हुए और ओंकार ने वेदों का निर्माण किया। ओंकार शब्द से ही सबका उद्धार हुआ है और ओंकार से गुरुमुख संसार-सागर से तैर गए हैं। 'ओम्' अक्षर का विचार सुनो; ओम् अक्षर पृथ्वी, आकाश, पाताल तीनों लोकों का सार है॥ १॥ हे पांडे! जरा सुन; क्यों जंजाल में फँसाने वाली बातें लिख रहा है? गुरुमुख बनकर राम नाम लिखो॥ १॥ रहाउ॥

ससै सभु जगु सहजि उपाइआ तीनि भवन इक जोती ॥ गुरमुखि वसतु परापति होवै चुणि लै माणक मोती ॥ समझै सूझै पड़ि पड़ि बूझै अंति निरंतरि साचा ॥ गुरमुखि देखै साचु समाले बिनु साचे जगु काचा ॥ २ ॥

स—समूचा जगत् परमात्मा ने सहज स्वभाव ही उत्पन्न किया है और तीनों लोकों में उसकी ही ज्योति समाई हुई है। नाम रूपी वस्तु गुरु के माध्यम से ही प्राप्त होती है और इन नाम रूपी माणिक्य एवं मोतियों को चुन लेना चाहिए। जो व्यक्ति बार-बार वाणी पढ़कर उसे समझने का प्रयास करता है, वह इस तथ्य को बूझ लेता है कि अन्तर्मन में परम-सत्य परमेश्वर ही स्थित है। गुरुमुख सबमें ईश्वर को ही देखता है और सत्य का ही चिंतन करता है, सत्य के बिना समूचा जगत् नाशवान् है॥ २॥

धधै धरमु धरे धरमा पुरि गुणकारी मनु धीरा ॥ धधै धूलि पड़ै मुखि मसतकि कंचन भए मनूरा ॥ धनु धरणीधरु आपि अजोनी तोलि बोलि सचु पूरा ॥ करते की मिति करता जाणै कै जाणै गुरु सूरा ॥ ३ ॥

ध—धर्म की नगरी सत्संग में ही जीव धर्म को धारण करता है, यही उसके लिए गुणकारी है और मन धैर्यवान बना रहता है। जिनके मुख मस्तक पर संतों-महापुरुषों की चरण-धूलि पड़ती है, उनका पत्थर जैसा मन भी स्वर्ण बन जाता है। वह परमेश्वर धन्य है, जन्म-मरण से रहित है एवं हर प्रकार से पूर्ण सत्य है। उस कर्ता-प्रभु की गति वह प्रभु स्वयं ही जानता है या शूरवीर गुरु जानता है॥ ३॥

ङिआनु गवाइआ दूजा भाइआ गरबि गले बिखु खाइआ ॥ गुर रसु गीत बाद नही भावै सुणीऐ गहिर गंभीरु गवाइआ ॥ गुरि सचु कहिआ अंम्रितु लहिआ मनि तनि साचु सुखाइआ ॥ आपे गुरमुखि आपे देवै आपे अंम्रितु पीआइआ ॥ ४ ॥

द्वैतभाव में फँसकर जीव ने अपना ज्ञान गंवा दिया है और माया रूपी विष को खाकर घमण्ड में ही नष्ट हो गया है। उसे गुरु की वाणी के कीर्तन का आनंद नहीं आता और न ही उसे गुरु के वचन सुनने अच्छे लगते हैं, इस प्रकार उसने गहन-गंभीर सत्य को गंवा दिया है। जिसे गुरु ने सत्य का उपदेश सुनाया है, उसने नामामृत पा लिया है और उसके मन-तन को सत्य ही सुखद लगता है। परमात्मा ही गुरु है, वह स्वयं ही नाम की देन देता है और उसने स्वयं ही नामामृत का पान करवाया है॥ ४॥

एको एकु कहै सभु कोई हउमै गरबु विआपै ॥ अंतरि बाहरि एकु पछाणै इउ घरु महलु सिञापै ॥ प्रभु नेड़ै हरि दूरि न जाणहु एको स्रिसटि सबाई ॥ एकंकारु अवरु नही दूजा नानक एकु समाई ॥ ५ ॥

हर कोई कहता है कि परमात्मा एक है, किन्तु जीव अभिमान एवं घमण्ड में लीन रहता है। जो व्यक्ति अंतर्मन व बाहर एक ईश्वर को पहचान लेता है, इस तरह वह सच्चे घर को जान लेता है। परमात्मा हमारे निकट ही है, उसे कहीं दूर मत समझो, सारी सृष्टि में एक ईश्वर का ही निवास है। समूचे विश्व में ओंकार का ही प्रसार है, अन्य कोई नहीं है। हे नानक ! एक ईश्वर ही सब में समाया हुआ है॥ ५॥

इसु करते कउ किउ गहि राखउ अफरिओ तुलिओ न जाई ॥ माइआ के देवाने प्राणी झूठि ठगउरी पाई ॥ लबि लोभि मुहताजि विगूते इब तब फिरि पछुताई ॥ एकु सरेवै ता गति मिति पावै आवणु जाणु रहाई ॥ ६ ॥

ईश्वर को किस प्रकार मन में बसाकर रखूँ, क्योंकि यह मन तो अभिमानी बना हुआ है और उसकी महिमा को तौला नहीं जा सकता। हे माया के मतवाले प्राणी ! माया ने तेरे मुँह में झूठ रूपी ठगौरी डाली हुई है। लालच एवं लोभ में फँसकर जीव आवश्यकताओं पर मोहताज होकर ख्वार होता है और फिर पछताता रहता है। यदि एक परमेश्वर की स्तुति-वंदना की जाए तो उसकी गति का अनुमान लगाया जा सकता है और आवागमन से मुक्ति हो जाती है॥ ६॥

एकु अचारु रंगु इकु रूपु ॥ पउण पाणी अगनी असरूपु ॥ एको भवरु भवै तिहु लोइ ॥ एको बूझै सूझै पति होइ ॥ गिआनु धिआनु ले समसरि रहै ॥ गुरमुखि एकु विरला को लहै ॥ जिस नो देइ किरपा ते सुखु पाए ॥ गुरू दुआरै आखि सुणाए ॥ ७ ॥

एक परमेश्वर ही आचार, रंग रूप में कार्यशील है और पवन, पानी एवं अग्नि में भी वही स्थित है। तीनों लोकों में भी एक प्रभु जीव रूपी भंवरा बनकर भटकता रहता है और उसे समझने-बूझने वाला ही शोभा का पात्र बनता है। ज्ञान-ध्यान को हासिल करने वाला दुख-सुख में एक समान रहता है, कोई विरला ही गुरुमुख बनकर नाम प्राप्त करता है। जिस पर वह कृपा करता है, उसे ही नाम देता है और वह सुख प्राप्त करता है। वह गुरु के द्वारा उसे अपना नाम कहकर सुनाता है॥ ७॥

ऊरम धूरम जोति उजाला ॥ तीनि भवण महि गुर गोपाला ॥ ऊगविआ असरूपु दिखावै ॥ करि किरपा अपुनै घरि आवै ॥ ऊनवि बरसै नीझर धारा ॥ ऊतम सबदि सवारणहारा ॥ इसु एके का जाणै भेउ ॥ आपे करता आपे देउ ॥ ८ ॥

धरती एवं आकाश में उसकी ही ज्योति का उजाला है और तीनों लोकों में जगद्गुरु परमेश्वर ही मौजूद है। वह स्वयं ही प्रगट होकर भक्तों को अपने स्वरूप के दर्शन करवाता है और कृपा करके वह स्वयं ही हृदय घर में आता है। उसकी अनुकंपा से अमृत रस की धारा जीभ पर पड़ती रहती है। उसका उत्तम शब्द मानव-जीवन को सुन्दर बनाने वाला है। जो व्यक्ति परमात्मा के भेद को जान लेता है, उसे ज्ञान हो जाता है कि ईश्वर स्वयं ही कर्ता है और स्वयं ही देव है॥ ८॥

उगवै सूरु असुर संघारै ॥ ऊचउ देखि सबदि बीचारै ॥ ऊपरि आदि अंति तिहु लोइ ॥ आपे करै कथै सुणै सोइ ॥ ओहु बिधाता मनु तनु देइ ॥ ओहु बिधाता मनि मुखि सोइ ॥ प्रभु जगजीवनु अवरु न कोइ ॥ नानक नामि रते पति होइ ॥ ९ ॥

जब नाम रूपी सूर्योदय होता है तो विकार रूपी असुरों का संहार हो जाता है। जो ऊँची दृष्टि करके शब्द का चिंतन करता है, उसे तीनों लोकों एवं सृष्टि के आदि-अंत तक परमात्मा ही रक्षक नजर आता है। वह स्वयं ही सबकुछ करता है, स्वयं ही अपनी लीला की कथा करता है और स्वयं ही सुनता है। वही विधाता है और वही मन-तन प्रदान करता है। मन एवं मुख में वह विधाता ही विद्यमान है। प्रभु ही जगत् का जीवन है और उसके अलावा अन्य कोई नहीं। हे नानक ! जो प्रभु-नाम में लीन रहता है, उसकी ही कीर्ति होती है॥ ९॥

राजन राम रवै हितकारि ॥ रण महि लूझै मनूआ मारि ॥ राति दिनंति रहै रंगि राता ॥ तीनि भवन जुग चारे जाता ॥ जिनि जाता सो तिस ही जेहा ॥ अति निरमाइलु सीझसि देहा ॥ रहसी रामु रिदै इक भाइ ॥ अंतरि सबदु साचि लिव लाइ ॥ १० ॥

जो हितकारी राम का नाम जपता रहता है, वह मन को मारकर जगत् रूपी रणभूमि में डटकर जूझता है और दिन-रात परमात्मा के रंग में लीन रहता है। ऐसा व्यक्ति तीनों लोकों एवं चारों युगों में लोकप्रिय हो जाता है। जिसने भगवान को समझ लिया है, वह उस जैसा ही हो जाता है। उसका मन निर्मल एवं शरीर सफल हो जाता है और एक श्रद्धा भावना से राम उसके हृदय में बसा रहता है। उसके अन्तर में शब्द स्थित हो जाता है और सत्य में ही लगन लगी रहती है॥ १०॥

रोसु न कीजै अंम्रितु पीजै रहणु नही संसारे ॥ राजे राइ रंक नही रहणा आइ जाइ जुग चारे ॥ रहण कहण ते रहै न कोई किसु पहि करउ बिनंती ॥ एकु सबदु राम नाम निरोधरु गुरु देवै पति मती ॥ ११ ॥

मन में रोष नहीं करना चाहिए, नामामृत का पान करना चाहिए, चूंकि किसी ने भी इस संसार में नहीं रहना। राजा, महाराजा एवं भिखारी किसी ने भी दुनिया में नहीं रहना और चारों युगों में जन्म-मरण का चक्र पड़ा रहता है। यह कहने पर भी कि मैं सदा यहाँ ही रहूँगा, कोई यहाँ नहीं रहता। फिर मैं किसके पास विनती करूँ ? राम नाम एक शब्द ही जीव का उद्धारक है और गुरु ही बुद्धि एवं प्रतिष्ठा देता है॥ ११॥

लाज मरंती मरि गई घूघटु खोलि चली ॥ सासु दिवानी बावरी सिर ते संक टली ॥ प्रेमि बुलाई रली सिउ मन महि सबदु अनंदु ॥ लालि रती लाली भई गुरमुखि भई निचिंदु ॥ १२ ॥

लोक लाज में मरने वाली जीव-स्त्री की लाज ही मर गई है और अब वह घूंघट खोल कर चलती है। उसकी अविद्या रूपी सास माया बावली हो गई है और सिर से माया रूपी सास का डर दूर हो गया है। उसके प्रभु ने प्रेम एवं चाव से उसे अपने पास बुला लिया है, उसके मन में शब्द द्वारा आनंद हो गया है। वह अपने लाल प्रभु के प्रेम में रंग गई है, जिससे उसके चेहरे पर लाली आ गई है। वह गुरु द्वारा निश्चिन्त हो गई है॥ १२॥

लाहा नामु रतनु जपि सारु ॥ लबु लोभु बुरा अहंकारु ॥ लाड़ी चाड़ी लाइतबारु ॥ मनमुखु अंधा मुगधु गवारु ॥ लाहे कारणि आइआ जगि ॥ होइ मजूरु गइआ ठगाइ ठगि ॥ लाहा नामु पूंजी वेसाहु ॥ नानक सची पति सचा पातिसाहु ॥ १३ ॥

नाम रूपी रत्न का जाप ही सच्चा लाभ है। लालच, लोभ एवं अहंकार, निंदा, खुशामद, छेड़छाड़ एवं चुगली सब बुरे कार्य हैं। इन बुरी आदतों के कारण मनमुख जीव अंधा, मूर्ख एवं गंवार हो गया है। जीव तो जग में नाम रूपी पाने लाभ के लिए आया था परन्तु माया का मजदूर बनकर माया द्वारा ठग कर जगत् से खाली हाथ लौट जाता है। हे नानक ! सच्चा लाभ केवल प्रभु-नाम रूपी पूंजी प्राप्त करने से ही होता है, सच्चा पातशाह प्रभु उसे सच्ची प्रतिष्ठा प्रदान करता है॥ १३॥

आइ विगूता जगु जम पंथु ॥ आई न मेटण को समरथु ॥ आथि सैल नीच घरि होइ ॥ आथि देखि निवै जिसु दोइ ॥ आथि होइ ता मुगधु सिआना ॥ भगति बिहूना जगु बउराना ॥ सभ महि वरतै एको सोइ ॥ जिस नो किरपा करे तिसु परगटु होइ ॥ १४ ॥

जगत् में जन्म लेकर जीव यम के मार्ग में पड़कर बर्बाद हो रहा है और मोह-माया को नाश करने के लिए उसमें समर्था नहीं। जिस नीच व्यक्ति के घर में बहुत सारा धन होता है तो

अमीर-गरीब दोनों ही उसके धन को देखकर झुककर उसे प्रणाम करते हैं। जिसके पास बेशुमार धन होता है, वह मूर्ख भी चतुर माना जाता है। भक्तिविहीन होकर समूचा जगत् बावला बनकर इधर-उधर भटक रहा है। परन्तु एक ईश्वर ही सब जीवों में विद्यमान है, वह जिस पर अपनी कृपा करता है, उसके मन में प्रगट हो जाता है॥ १४॥

जुगि जुगि थापि सदा निरवैरु ॥ जनमि मरणि नही धंधा धैरु ॥ जो दीसै सो आपे आपि ॥ आपि उपाइ आपे घट थापि ॥ आपि अगोचरु धंधै लोई ॥ जोग जुगति जगजीवनु सोई ॥ करि आचारु सचु सुखु होई ॥ नाम विहूणा मुकति किव होई ॥ १५ ॥

युग-युगांतरों से संसार को बनाने वाला ईश्वर सदैव स्थिर है, वैर से रहित है अर्थात् प्रेमस्वरूप वह जन्म-मरण के चक्र से रहित है और दुनिया के धंधों से मुक्त है। जो कुछ भी दिखाई देता है, वह उसका ही रूप है। वह स्वयं ही पैदा करता है और स्वयं ही प्रत्येक हृदय में स्थित है। वह स्वयं ही अगोचर है और उसने सारी दुनिया को विभिन्न कार्यों में लगाया हुआ है। योग की युक्ति में भी जग का जीवन वह परमेश्वर ही है। भक्ति का उत्तम कार्य करने से सच्चा सुख उपलब्ध होता है, परन्तु नामविहीन जीव की मुक्ति नहीं हो सकती॥ १५॥

विणु नावै वेरोधु सरीर ॥ किउ न मिलहि काटहि मन पीर ॥ वाट वटाऊ आवै जाइ ॥ किआ ले आइआ किआ पलै पाइ ॥ विणु नावै तोटा सभ थाइ ॥ लाहा मिलै जा देइ बुझाइ ॥ वणजु वापारु वणजै वापारी ॥ विणु नावै कैसी पति सारी ॥ १६ ॥

नाम के बिना जीना अपने शरीर से विरोध करने की तरह है। तू प्रभु से क्यों नहीं मिलता ? वह तेरे मन की पीड़ा को दूर कर देगा। जीव रूपी पथिक बार-बार जग रूपी पथ पर आता जाता रहता है। वह क्या लेकर जगत् में आया है और क्या लाभ प्राप्त करके जा रहा है। नाम के बिना हर स्थान में नुक्सान ही होता है। उसे नाम रूपी लाभ तभी हासिल होता है, जब परमात्मा उसे सूझ प्रदान करता है। सच्चा व्यापारी तो प्रभु-नाम का ही वाणिज्य एवं व्यापार करता है, फिर नाम के बिना जीव कैसे शोभा प्राप्त कर सकता है ?॥ १६॥

गुण विचारे गिआनी सोइ ॥ गुण महि गिआनु परापति होइ ॥ गुणदाता विरला संसारि ॥ साची करणी गुर वीचारि ॥ अगम अगोचरु कीमति नही पाइ ॥ ता मिलीऐ जा लए मिलाइ ॥ गुणवंती गुण सारे नीत ॥ नानक गुरमति मिलीऐ मीत ॥ १७ ॥

वही सच्चा ज्ञानी है, जो परम-सत्य के गुणों का विचार करता है। गुणों में ही उसे ज्ञान प्राप्त होता है। संसार में कोई विरला मनुष्य ही है जो गुणों के दाता परमेश्वर का ध्यान करता है। गुरु के उपदेश द्वारा ही नाम-स्मरण की सच्ची करनी हो सकती है। अगम्य, मन-वाणी से परे परमेश्वर का सही मूल्य नहीं आँका जा सकता। प्रभु से तभी मिलाप होता है, जब वह स्वयं जीव को विलीन कर लेता है। गुणवान जीव-स्त्री नित्य परमात्मा के गुणों का चिंतन करती है। हे नानक ! मित्र-प्रभु गुरु मतानुसार ही मिलता है॥ १७॥

कामु क्रोधु काइआ कउ गालै ॥ जिउ कंचन सोहागा ढालै ॥ कसि कसवटी सहै सु ताउ ॥ नदरि सराफ वंनी सचड़ाउ ॥ जगतु पसू अहं कालु कसाई ॥ करि करतै करणी करि पाई ॥ जिनि कीती तिनि कीमति पाई ॥ होर किआ कहीऐ किछु कहणु न जाई ॥ १८ ॥

काम-क्रोध शरीर को यों गाल देते हैं, जैसे सुहागा स्वर्ण को पिघला कर रख देता है। पहले

स्वर्ण कसौटी की रगड़ सहता है और फिर वह अग्नि की आँच सहन करता है। जब स्वर्ण सुन्दर बन जाता है तो वह सर्राफ की नजर में स्वीकार हो जाता है। यह जगत् पशु है और अभिमान रूपी काल कसाई है। परमात्मा ने जीवों को पैदा करके कर्मानुसार उनका भाग्य लिख दिया है अर्थात् जो जैसा करता है, वैसा ही फल प्राप्त करता है। जिसने जगत्-रचना की है, वही इसकी कीमत कर सकता है। अन्य क्या कहा जा सकता है, कुछ भी कहा नहीं जा सकता॥ १८॥

खोजत खोजत अंम्रितु पीआ ॥ खिमा गही मनु सतगुरि दीआ ॥ खरा खरा आखै सभु कोइ ॥ खरा रतनु जुग चारे होइ ॥ खात पीअंत मूए नही जानिआ ॥ खिन महि मूए जा सबदु पछानिआ ॥ असथिरु चीतु मरनि मनु मानिआ ॥ गुर किरपा ते नामु पछानिआ ॥ १६ ॥

जिसने खोज-खोज कर नामामृत का पान किया है, उसने क्षमा-भावना ग्रहण करके मन सतगुरु को अर्पण कर दिया है। अब हर कोई उसे श्रेष्ठ अथवा अच्छा कहता है, चारों युगों में वही शुद्ध रत्न होता है। जिन्होंने ईश्वर को नहीं समझा, वे खाते-पीते ही प्राण त्याग गए हैं। जिन्होंने शब्द के रहस्य को पहचान लिया है, वे पल में अहम् प्रति मर गए हैं। उनका चित स्थिर हो गया है, जिनका मन मृत्यु के लिए सहमत हो गया है। गुरु की कृपा से ही उन्हें नाम की पहचान हुई है॥ १६॥

गगन गंभीरु गगनंतरि वासु ॥ गुण गावै सुख सहजि निवासु ॥ गइआ न आवै आइ न जाइ ॥ गुर परसादि रहै लिव लाइ ॥ गगनु अगंमु अनाथु अजोनी ॥ असथिरु चीतु समाधि सगोनी ॥ हरि नामु चेति फिरि पवहि न जूनी ॥ गुरमति सारु होर नाम बिहूनी ॥ २० ॥

गगन की तरह सर्वव्यापक गहनगंभीर परमात्मा का निवास गगन रूपी हृदय में है। जो उसका गुणगान करता है, वह सहज सुख भोगता रहता है। ऐसा जीव आवागमन से मुक्त हो जाता है। गुरु की कृपा से उसकी परमेश्वर में ही लगन लगी रहती है। सर्वव्यापक ईश्वर अगम्य है, वह जन्म-मरण के चक्र से परे है, सबका मालिक है। उसके ध्यान में समाधि लगाना उपयोगी है, जिससे मन स्थिर हो जाता है। हरि-नाम स्मरण करने से मनुष्य पुनः योनियों में नहीं पड़ता। गुरुमत ही सर्वोपरि है और अन्य सब कुछ नामविहीन है॥ २०॥

घर दर फिरि थाकी बहुतेरे ॥ जाति असंख अंत नही मेरे ॥ केते मात पिता सुत धीआ ॥ केते गुर चेले फुनि हूआ ॥ काचे गुर ते मुकति न हूआ ॥ केती नारि वरु एकु समालि ॥ गुरमुखि मरणु जीवणु प्रभ नालि ॥ दह दिस ढूढि घरै महि पाइआ ॥ मेलु भइआ सतिगुरू मिलाइआ ॥ २१ ॥

यहाँ आत्मा द्वारा संबोधन किया है कि मैं अनेक घरों-द्वारों पर भटक-भटक बहुत थक चुकी हूँ। मेरे जन्मों का कोई अंत नहीं, अनेक जातियों में मेरी असंख्य ही योनियां हो चुकी हैं। पूर्व जन्मों में मेरे कितने ही माता-पिता, पुत्र एवं पुत्रियां हो चुकी हैं। मेरे कितने ही गुरु और फिर कितने ही मेरे अपने चेले हो चुके हैं, किन्तु कच्चे गुरु के कारण ही मेरी मुक्ति नहीं हुई। यह बात हमेशा याद रखो कि जीव रूपी नारियां तो अनेक हैं, पर उन सबका मालिक परमात्मा ही है। गुरुमुख जीव-स्त्रियों का जीवन-मरण प्रभु की इच्छा से ही होता है। दसों दिशाओं में ढूँढ-ढूँढ कर मैंने पति-प्रभु को हृदय-घर में ही पा लिया है। मेरा पति-परमेश्वर से मिलाप हो गया है, पर यह मिलन सतगुरु ने करवाया है॥ २१॥

गुरमुखि गावै गुरमुखि बोलै ॥ गुरमुखि तोलि तुोलावै तोलै ॥ गुरमुखि आवै जाइ निसंगु ॥ परहरि मैलु जलाइ कलंकु ॥ गुरमुखि नाद बेद बीचारु ॥ गुरमुखि मजनु चजु अचारु ॥ गुरमुखि सबदु अंम्रितु है सारु ॥ नानक गुरमुखि पावै पारु ॥ २२ ॥

गुरु-मुख परमात्मा का कीर्ति-गान करता है और उसका ही नाम जपता है। वही परख करता-करवाता है। वह निडर होकर आता जाता है और मन की मैल दूर कर के कलंक को जला देता है। गुरु-मुख का शब्द वेदों का ज्ञान व चिंतन है और यही शुभ आचरण-व्यवहार एवं तीर्थ स्नान है। गुरु-मुख का शब्द अमृतमय सार तत्व है। हे नानक! गुरु-मुख संसार-सागर से पार हो जाता है॥ २२॥

चंचलु चीतु न रहई ठाइ ॥ चोरी मिरगु अंगूरी खाइ ॥ चरन कमल उर धारे चीत ॥ चिरु जीवनु चेतनु नित नीत ॥ चिंतत ही दीसै सभु कोइ ॥ चेतहि एकु तही सुखु होइ ॥ चिति वसै राचै हरि नाइ ॥ मुकति भइआ पति सिउ घरि जाइ ॥ २३ ॥

मनुष्य का चंचल चित टिक कर नहीं बैठता और मन रूपी मृग चोरी-चोरी विषय-विकार रूपी अंगूरी खाता रहता है। जो व्यक्ति प्रभु के चरण हृदय में बसा लेता है, वह दीर्घायु वाला हो जाता है और नित्य माया से चेतन रहता है। दुनिया में हर कोई इन्सान चिंतित ही दिखाई देता है, परन्तु जो परमात्मा को याद करता है, वह सुखी हो जाता है। जो प्रभु-नाम को चित में बसा लेता है और उसमें ही लीन रहता है, उसकी मुक्ति हो जाती है और वह आदरपूर्वक प्रभु-दरबार में चला जाता है॥ २३॥

छीजै देह खुलै इक गंढि ॥ छेआ नित देखहु जगि हंढि ॥ धूप छाव जे सम करि जाणै ॥ बंधन काटि मुकति घरि आणै ॥ छाइआ छूछी जगतु भुलाना ॥ लिखिआ किरतु धुरे परवाना ॥ छीजै जोबनु जरूआ सिरि कालु ॥ काइआ छीजै भई सिबालु ॥ २४ ॥

जब प्राणों की एक गांठ खुल जाती है तो देह नाश हो जाती है। जगत् में घूम कर देख लो, यह नित्य ही नाश हो रहा है। यदि व्यक्ति दुख-सुख को एक समान समझे तो वह बन्धनों को काट कर मुक्ति प्राप्त कर लेता है। इस खोखली माया ने पूरे जगत् को कुमार्गगामी किया हुआ है। जीवों का भाग्य प्रारम्भ से ही लिखा हुआ है। जब मनुष्य का यौवन नाश हो जाता है तो बुढ़ापा आ जाता है और मृत्यु उसके सिर पर मंडराने लगती है। उसकी काया पानी के ऊपर काई की तरह क्षीण हो जाती है॥ २४॥

जापै आपि प्रभू तिहु लोइ ॥ जुगि जुगि दाता अवरु न कोइ ॥ जिउ भावै तिउ राखहि राखु ॥ जसु जाचउ देवै पति साखु ॥ जागतु जागि रहा तुधु भावा ॥ जा तू मेलहि ता तुझै समावा ॥ जै जै कारु जपउ जगदीस ॥ गुरमति मिलीऐ बीस इकीस ॥ २५ ॥

तीनों लोकों में प्रभु ही व्यापक मालूम होता है। युग-युगान्तर केवल वही दाता है और उसके अतिरिक्त अन्य कोई नहीं है। हे जगत् के रखवाले! जैसे तुझे मंजूर होता है, वैसे ही तू जीवों को रखता है। मैं तुझसे ही यश मांगता हूँ, तू मुझे मान-सम्मान प्रदान करता है। यदि तुझे उपयुक्त लगे तो मैं सदैव मोह-माया से जाग्रत रहूँ। यदि तू अपने साथ मिला ले तो मैं तुझ में ही विलीन हो जाऊँ। हे जगदीश! मैं तेरी ही जय-जयकार करता रहूँ और तेरा ही नाम जपता रहूँ। गुरु उपदेशानुसार शत्-प्रतिशत जगदीश्वर से मिलाप हो जाता है॥ २५॥

झखि बोलणु किआ जग सिउ वादु ॥ झूरि मरै देखै परमादु ॥ जनमि मूए नही जीवण आसा ॥ आइ चले भए आस निरासा ॥ झुरि झुरि झखि माटी रलि जाइ ॥ कालु न चांपै हरि गुण गाइ ॥ पाई नव निधि हरि कै नाइ ॥ आपे देवै सहजि सुभाइ ॥ २६ ॥

जगत् से वाद-विवाद करने का क्या अभिप्राय है ? यह तो निरा झख मारना ही है। जब लोग उस मनुष्य के उन्मादपन को देखते हैं तो वह शर्म से ही मर जाता है। वह जन्म-मरण में पड़ा रहता है परन्तु वास्तविक जीवन की आशा नहीं रखता, वह जन्म लेकर जगत् में आता है और आशा के बिना निराश ही चल देता है। इस प्रकार वह कष्ट उठा-उठाकर मिट्टी में मिल जाता है। जो भगवान का गुणगान करता है, काल भी उसे निगल नहीं सकता। हरि-नाम से ही नवनिधियों की प्राप्ति होती है और यह नवनिधियाँ वह स्वयं ही सहज स्वभाव अपने भक्तों को देता है॥ २६॥

ञिआनो बोलै आपे बूझै ॥ आपे समझै आपे सूझै ॥ गुर का कहिआ अंकि समावै ॥ निरमल सूचे साचो भावै ॥ गुरु सागरु रतनी नही तोट ॥ लाल पदारथ साचु अखोट ॥ गुरि कहिआ सा कार कमावहु ॥ गुर की करणी काहे धावहु ॥ नानक गुरमति साचि समावहु ॥ २७ ॥

परमात्मा स्वयं ही गुरु के रूप में ज्ञान का उपदेश देता है और स्वयं ही शिष्य के रूप में इस ज्ञान को बूझता है। वह स्वयं ही ज्ञान को समझता और स्वयं ही सूझता है। जो गुरु के उपदेश को हृदय में बसा लेते हैं, वे निर्मल और शुद्ध हो जाते हैं और वही परमेश्वर को प्रिय लगते हैं। गुरु गुणों का सागर है और उसमें गुण रूपी रत्नों की कोई कमी नहीं है। उसमें सत्य रूपी लाल पदार्थ बेशुमार हैं। वही कार्य करो, जो गुरु करने के लिए कहता है। जो गुरु की अपनी करनी है, उसके पीछे क्यों भागते हो। हे नानक ! गुरु मतानुसार नाम-जपकर सत्य में विलीन हो जाओ॥ २७॥

टूटै नेहु कि बोलहि सही ॥ टूटै बाह दुहू दिस गही ॥ टूटि परीति गई बुर बोलि ॥ दुरमति परहरि छाडी ढोलि ॥ टूटै गंठि पड़ै वीचारि ॥ गुर सबदी घरि कारजु सारि ॥ लाहा साचु न आवै तोटा ॥ त्रिभवण ठाकुरु प्रीतमु मोटा ॥ २८ ॥

यदि सच्ची बात सामने की जाए तो प्रेम टूट जाता है। जैसे दोनों तरफ से पकड़ी हुई बाजू टूट जाती है, वैसे ही बुरे वचन बोलने से प्रीति टूट जाती है। दुर्मति वाली पत्नी को उसका पति त्याग देता है। यदि भूल पर विचार किया जाए तो टूटी हुई प्रेम की गांठ पुनः जुड़ जाती है। गुरु के शब्द द्वारा सब कार्य पूर्ण हो जाते हैं। जिसे सत्य का लाभ प्राप्त हो जाता है, उसे कोई कमी नहीं आती। तीनों लोकों का स्वामी परमात्मा ही जीव का घनिष्ठ मित्र बनता है॥ २८॥

ठाकहु मनूआ राखहु ठाइ ॥ ठहकि मुई अवगुणि पछुताइ ॥ ठाकुरु एकु सबाई नारि ॥ बहुते वेस करे कूड़िआरि ॥ पर घरि जाती ठाकि रहाई ॥ महलि बुलाई ठाक न पाई ॥ सबदि सवारी साचि पिआरी ॥ साई सोहागणि ठाकुरि धारी ॥ २९ ॥

अपने मन को बाहर भटकने से रोको और इसे टिकाकर रखो। दुनिया व्यर्थ ही लड़-झगड़ कर मर गई है, पर यह अपने अवगुणों के कारण बाद में पछतावा करती है। जगत् का मालिक एक प्रभु ही है, अन्य सब जीव-स्त्रियाँ उसकी पत्नियाँ हैं। झूठी जीव-स्त्री अनेक पाखण्ड करती रहती है। प्रभु ने पराए घर में जाने वाली जीव-स्त्री को रोक दिया है और उसे अपने आत्मस्वरूप में बुला लिया है। उस जीव-स्त्री को अपने पति-प्रभु के घर में जाने से किसी ने बाधा उत्पन्न नहीं

की। उसने शब्द द्वारा स्वयं को संवार लिया है और वह प्रभु की प्रिया बन गई है। वही जीव-स्त्री सुहागिन है, जिसे ठाकुर जी ने धारण किया है॥ २६॥

डोलत डोलत हे सखी फाटे चीर सीगार ॥ डाहपणि तनि सुखु नही बिनु डर बिणठी डार ॥ डरपि मुई घरि आपणै डीठी कंति सुजाणि ॥ डरु राखिआ गुरि आपणै निरभउ नामु वखाणि ॥ डूगरि वासु तिखा घणी जब देखा नही दूरि ॥ तिखा निवारी सबदु मंनि अंम्रितु पीआ भरपूरि ॥ देहि देहि आखै सभु कोई जै भावै तै देइ ॥ गुरू दुआरै देवसी तिखा निवारै सोइ ॥ ३० ॥

हे सखी! भटकते-भटकते मेरे सारे श्रृंगार एवं वस्त्र फट गए हैं। तृष्णाग्नि के कारण शरीर में सुख उपलब्ध नहीं होता और परमात्मा के भय बिना सबकुछ नाश हो गया है। प्रभु-भय द्वारा मैं हृदय-घर में मृत पड़ी रहती थी, परन्तु चतुर पति-प्रभु ने मुझ पर करुणा-दृष्टि की है। मेरे गुरु ने प्रभु-भय मेरे हृदय में स्थित कर दिया है और अब निर्भय प्रभु का नाम जपती रहती हूँ। मेरा निवास संसार रूपी पहाड़ में है, पर मुझे नामामृत पान की बहुत प्यास लगी हुई है। अब जब मैं देखती हूँ तो मेरा प्रभु मुझे कहीं दूर नहीं लगता। मैंने मन में नाम-सिमरन करके अपनी प्यास बुझा ली है और नामामृत का पान कर लिया है। हर कोई जीव परमात्मा से नाम दान की कामना करता है। लेकिन यदि उसे मंजूर हो तो ही वह देता है। वह हरेक जीव को गुरु द्वारा ही नाम देता है और उसकी प्यास बुझा देता है॥ ३०॥

ढंढोलत ढूढत हउ फिरी ढहि ढहि पवनि करारि ॥ भारे ढहते ढहि पए हउले निकसे पारि ॥ अमर अजाची हरि मिले तिन कै हउ बलि जाउ ॥ तिन की धूड़ि अघुलीऐ संगति मेलि मिलाउ ॥ मनु दीआ गुरि आपणै पाइआ निरमल नाउ ॥ जिनि नामु दीआ तिसु सेवसा तिसु बलिहारै जाउ ॥ जो उसारे सो ढाहसी तिसु बिनु अवरु न कोइ ॥ गुर परसादी तिसु संम्हला ता तनि दूखु न होइ ॥ ३१ ॥

मैं परमेश्वर को ढूँढती ढूँढती फिरती रही और देखा कि अनेक लोग संसार के तट पर गिर रहे हैं। पापों के भार से भरे हुए लोग तो संसार-सागर में गिर गए लेकिन पापों के भार से मुक्त जीव पार हो गए। जिन्हें अमर परमात्मा मिल गया है, मैं उन पर बलिहारी जाता हूँ। मैं उन भक्तजनों की चरण-धूलि में स्नान करती रहूँ, मुझे उनकी संगति में अपने साथ मिला लो। मैंने अपना मन गुरु को सौंपकर निर्मल नाम पा लिया है। जिसने मुझे नाम दिया है, उसकी ही सेवा करती हूँ और उस पर ही बलिहारी जाती हूँ। जो दुनिया को बनाता है, वही उसका नाश करने वाला है, उसके अतिरिक्त अन्य कोई समर्थ नहीं। गुरु की कृपा से उसका ध्यान-मनन किया जाए तो तन को कोई दुख नहीं होता॥ ३१॥

णा को मेरा किसु गही णा को होआ न होगु ॥ आवणि जाणि विगुचीऐ दुबिधा विआपै रोगु ॥ णाम विहूणे आदमी कलर कंध गिरंति ॥ विणु नावै किउ छूटीऐ जाइ रसातलि अंति ॥ गणत गणावै अखरी अगणतु साचा सोइ ॥ अगिआनी मतिहीणु है गुर बिनु गिआनु न होइ ॥ तूटी तंतु रबाब की वाजै नही विजोगि ॥ विछुड़िआ मेलै प्रभू नानक करि संजोग ॥ ३२ ॥

मैं किसका सहारा लूँ? कोई भी मेरा अपना नहीं है। (भगवान के अलावा) न कोई साथी था और न ही कभी कोई होगा। जीव जन्म-मरण के चक्र में नष्ट होता रहता है और उसे दुविधा का रोग सताता रहता है। नामविहीन आदमी बालू की दीवार की मानिंद ध्वस्त हो जाता है। नाम के बिना वह कैसे छुटकारा प्राप्त कर सकता है, अंत में वह रसातल में जा गिरता है। वह सच्चा

परमेश्वर अनंत है, किन्तु जीव अक्षरों द्वारा गिनती करता रहता है। अज्ञानी जीव मतिहीन है और गुरु के बिना उसे ज्ञान नहीं होता। जैंसे रबाब की टूटी हुई तार टूटने के कारण बजती ही नहीं, हे नानक! वैसे ही प्रभु संयोग बनाकर बिछुड़े जीवों को मिला लेता है॥ ३२॥

तरवरु काइआ पंखि मनु तरवरि पंखी पंच ॥ ततु चुगहि मिलि एकसे तिन कउ फास न रंच ॥ उडहि त बेगुल बेगुले ताकहि चोग घणी ॥ पंख तुटे फाही पड़ी अवगुणि भीड़ बणी ॥ बिनु साचे किउ छूटीऐ हरि गुण करमि मणी ॥ आपि छडाए छूटीऐ वडा आपि धणी ॥ गुर परसादी छूटीऐ किरपा आपि करेइ ॥ अपणै हाथि वडाईआ जै भावै तै देइ ॥ ३३ ॥

यह शरीर एक वृक्ष है और मन पक्षी है। पाँच ज्ञानेन्द्रियाँ रूपी अन्य पक्षी भी इस पर बैठे हुए हैं। जब वे पाँचों के साथ मिल कर तत्व-ज्ञान रूपी फल चुगते रहते हैं तो इन्हें किंचित मात्र भी माया का फंदा नहीं पड़ता। जब वे उस दाने को चुगने के लिए व्याकुल होकर उड़े तो उन्हें माया का फंदा पड़ गया और उनके पंख टूट गए। उनके अपने अवगुणों के कारण यह विपत्ति पैदा हो गई। सत्य के बिना जीव कैसे छूट सकता है और उसे गुण रूपी मणि उसकी कृपा से ही हासिल होती है। वह मालिक-प्रभु स्वयं महान है, यदि वह स्वयं बन्धनों से मुक्त कराए तो ही छुटकारा हो सकता है। जब वह स्वयं कृपा करता है तो गुरु की कृपा से जीव बन्धनों से छूट जाता है। सब बड़ाईयाँ परमात्मा के हाथ में हैं, यदि उसे मंजूर हो तो ही प्रदान करता है॥ ३३॥

थर थर कंपै जीअड़ा थान विहूणा होइ ॥ थानि मानि सचु एकु है काजु न फीटै कोइ ॥ थिरु नाराइणु थिरु गुरू थिरु साचा बीचारु ॥ सुरि नर नाथह नाथु तू निधारा आधारु ॥ सरबे थान थनंतरी तू दाता दातारु ॥ जह देखा तह एकु तू अंतु न पारावारु ॥ थान थनंतरि रवि रहिआ गुर सबदी वीचारि ॥ अणमंगिआ दानु देवसी वडा अगम अपारु ॥ ३४ ॥

जीवात्मा प्रभु-शरण रूपी स्थान से विहीन होकर थर-थर काँपता है। एक सच्चा परमेश्वर ही इसे शरण एवं आदर देता है और फिर इसका कोई कार्य नहीं बिगड़ता। वह नारायण स्थिर है, गुरु स्थिर है एवं उसका सच्चा विचार सदैव स्थिर है। हे परमेश्वर! तू देवताओं, नरों, नाथों का भी नाथ है, तू ही बेसहारों का सहारा है। विश्व के सब स्थानों में तेरा ही वास है और तू ही सबका दातार है। जिधर भी देखता हूँ, वहाँ केवल तू ही है और तेरा कोई अन्त एवं आर-पार नहीं। ईश्वर सर्वव्यापक है, पर इस तथ्य का ज्ञान गुरु के शब्द से ही होता है। वह अगम्य अपार परमेश्वर इतना बड़ा है कि बिना माँगे ही जीवों को दान देता रहता है॥ ३४॥

दइआ दानु दइआलु तू करि करि देखणहारु ॥ दइआ करहि प्रभ मेलि लैहि खिन महि ढाहि उसारि ॥ दाना तू बीना तुही दाना कै सिरि दानु ॥ दालद भंजन दुख दलण गुरमुखि गिआनु धिआनु ॥ ३५ ॥

हे परम पिता! तू दया का पुंज है, सब जीवों को तू दया का दान करता है और स्वयं ही रचना करके देखभाल भी करता है। हे प्रभु! जिस पर तू दया करता है, उसे साथ मिला लेता है, तू अपनी इच्छा से एक क्षण में ही बनाकर नष्ट कर देता है। तू ही चतुर एवं सर्वज्ञाता है, तू दानियों में सबसे बड़ा दानवीर है। तू गरीबी को मिटाने वाला और दुखों को नाश करने वाला है। गुरु के माध्यम से ही जीव को ज्ञान-ध्यान की प्राप्ति होती है॥ ३५॥

धनि गइऐ बहि झूरीऐ धन महि चीतु गवार ॥ धनु विरली सचु संचिआ निरमलु नामु पिआरि ॥ धनु गइआ ता जाण देहि जे राचहि रंगि एक ॥ मनु दीजै सिरु सउपीऐ भी करते की टेक ॥ धंधा धावत रहि गए मन महि सबदु अनंदु ॥ दुरजन ते साजन भए भेटे गुर गोविंद ॥ बनु बनु फिरती ढूढती बसतु रही घरि बारि ॥ सतिगुरि मेली मिलि रही जनम मरण दुखु निवारि ॥ ३६ ॥

मूर्ख आदमी का चित हर वक्त धन में ही लगा रहता है और धन के चले जाने से वह बहुत दुखी होता है। किसी विरले ने ही नाम रूपी सच्चा धन संचित किया है और प्रभु के निर्मल नाम से ही प्यार लगाया हुआ है। यदि मन प्रभु के रंग में लीन है तो धन चले जाने से कोई शोक नहीं होता। मन अर्पित करके, अपना सिर सौंपकर भी जीव ईश्वर का सहारा ही लेता है। जब मन में ब्रह्म-शब्द का आनंद उत्पन्न हो गया तो दुनिया के धंधे समाप्त हो गए। जब गोविंद गुरु से भेंट हो जाए तो दुर्जन भी सज्जन बन जाते हैं। जिस नाम रूपी वस्तु को ढूँढती हुई वन-वन में भटक रही थी, वह वस्तु तो हृदय-घर में ही मिल गई। जब से सतिगुरु ने परम सत्य से मिलाप करवाया है, जन्म-मरण का दुख दूर हो गया है॥ ३६॥

नाना करत न छूटीऐ विणु गुण जम पुरि जाहि ॥ ना तिसु एहु न ओहु है अवगुणि फिरि पछुताहि ॥ ना तिसु गिआनु न धिआनु है ना तिसु धरमु धिआनु ॥ विणु नावै निरभउ कहा किआ जाणा अभिमानु ॥ थाकि रही किव अपड़ा हाथ नही ना पारु ॥ ना साजन से रंगुले किसु पहि करी पुकार ॥ नानक प्रिउ प्रिउ जे करी मेले मेलणहारु ॥ जिनि विछोड़ी सो मेलसी गुर कै हेति अपारि ॥ ३७ ॥

अनेक प्रकार के कर्मकाण्ड करने से बन्धनों से छुटकारा नहीं होता और गुणहीन जीव को यमपुरी में ही जाना पड़ता है। न ही उसका इहलोक और न ही परलोक संवरता है, अवगुणों के कारण वह पछताता है। न उसके पास कोई ज्ञान-ध्यान है और न ही कोई धर्म का ध्यान है। नाम के बिना कोई निडर नहीं हो सकता और अभिमान का दुख नहीं समझ सकता। मैं थक गई हूँ, फिर मैं अपनी मंजिल तक कैसे पहुँच सकती हूँ। मेरी जीवन नैया भवसागर में चल रही है, जिसका कोई पार नहीं है। ऐसे संतजन भी मेरे सज्जन नहीं हैं जो परमात्मा के रंग में लीन हैं, फिर मैं किसके पास फरियाद करूँ। हे नानक ! यदि प्रिय-प्रिय करती रही तो मिलाने वाला प्रभु अपने साथ मिला लेगा। जिसने मुझे वियोग दिया है, वही गुरु के अपार प्रेम द्वारा मिला लेगा॥ ३७॥

पापु बुरा पापी कउ पिआरा ॥ पापि लदे पापे पासारा ॥ परहरि पापु पछाणै आपु ॥ ना तिसु सोगु विजोगु संतापु ॥ नरकि पड़ंतउ किउ रहै किउ बंचै जमकालु ॥ किउ आवण जाणा वीसरै झूठु बुरा खै कालु ॥ मनु जंजाली वेड़िआ भी जंजाला माहि ॥ विणु नावै किउ छूटीऐ पापे पचहि पचाहि ॥ ३८ ॥

पाप बुरा है, किन्तु पापी को यह प्यारा लगता है। पापी मनुष्य तो पापों का भार ही सिर पर लादता रहता है और अपने पापों का ही प्रसार करता रहता है। यदि वह पापों को छोड़कर अपने आप को पहचान ले तो उसे कोई दुख, वियोग एवं संताप नहीं लगता। वह नरक में पड़ने से कैसे बच सकता है और कैसे यमकाल से छूट सकता है ? उसे जन्म-मरण का चक्र कैसे भूले? झूठ बुरा है और काल झूठे आदमी को निगल लेता है। दुनिया के जंजालों में फंसा हुआ मन और भी जंजाल में फंस जाता है। हरि-नाम के बिना उसकी मुक्ति कैसे संभव है ? वह पापों में फंसा ही बर्बाद हो जाता है॥ ३८॥

फिरि फिरि फाही फासै कऊआ ॥ फिरि पछुताना अब किआ हूआ ॥ फाथा चोग चुगै नही बूझै ॥ सतगुरु मिलै त आखी सूझै ॥ जिउ मछुली फाथी जम जालि ॥ विणु गुर दाते मुकति न भालि ॥ फिरि फिरि आवै फिरि फिरि जाइ ॥ इक रंगि रचै रहै लिव लाइ ॥ इव छूटै फिरि फास न पाइ ॥ ३६ ॥

जीव रूपी कौआ बार-बार फंदे में फँसता रहता है परन्तु फिर वह पछताता है। फंदे में से छूटने के लिए अब उससे कुछ भी नहीं हो सकता। वह फंदे में फँसा हुआ भी विषय-विकार रूपी चोगा चुगता रहता है, पर वह समझता नहीं। यदि उसे सतगुरु मिल जाए तो उसे अपनी आँखों से फंदे एवं चोगे का ज्ञान हो जाए। जैसे मछली फँसी होती है, वैसे ही जीव मृत्यु के जाल में फँसा हुआ है। दाता गुरु के बिना किसी से मुक्ति की उम्मीद मत करो, अन्यथा जीव बार-बार जन्म लेता है और बार-बार मरता रहता है। यदि वह ईश्वर के रंग में लीन होकर उसका ध्यान करता रहे तो आवागमन से मुक्त हो जाता है और पुनः उसे मृत्यु की फाँसी नहीं पड़ती॥ ३६॥

बीरा बीरा करि रही बीर भए बैराइ ॥ बीर चले घरि आपणै बहिण बिरहि जलि जाइ ॥ बाबुल कै घरि बेटड़ी बाली बालै नेहि ॥ जे लोड़हि वरु कामणी सतिगुरु सेवहि तेहि ॥ बिरलो गिआनी बूझणउ सतिगुरु साचि मिलेइ ॥ ठाकुर हाथि वडाईआ जै भावै तै देइ ॥ बाणी बिरलउ बीचारसी जे को गुरमुखि होइ ॥ इह बाणी महा पुरख की निज घरि वासा होइ ॥ ४० ॥

मनुष्य की काया आत्मा को भाई-भाई कहकर बुलाती रहती है परन्तु प्राण छूटने पर उसका भाई पराया बनकर उसकी ओर दृष्टि भी नहीं करता। आत्मा रूपी भाई परलोक में चला जाता है और उसकी काया रूपी बहिन वियोग के कारण अग्नि में जल जाती है। अपने पिता के घर में रहती हुई बेटी खिलौने से खेलकर विवाह-योग्य हो जाती है, यदि वह कामिनी अपने पति को पाना चाहती है तो उसे सच्चे गुरु की सेवा करनी चाहिए। कोई विरला ज्ञानी ही इस तथ्य को बूझता है कि सतिगुरु ही सत्य से मिलाप करवाता है। उस ठाकुर जी के हाथ में सब बड़ाईयाँ हैं, जिसे चाहता है, उसे ही देता है। यदि कोई गुरुमुख बन जाता है तो ऐसा विरला ही वाणी का विचार करता है। यह वाणी महापुरुष की रची हुई है और इससे जीव का अपने सच्चे घर में निवास हो जाता है॥ ४०॥

भनि भनि घड़ीऐ घड़ि घड़ि भजै ढाहि उसारै उसरे ढाहै ॥ सर भरि सोखै भी भरि पोखै समरथ वेपरवाहै ॥ भरमि भुलाने भए दिवाने विणु भागा किआ पाईऐ ॥ गुरमुखि गिआनु डोरी प्रभि पकड़ी जिन खिंचै तिन जाईऐ ॥ हरि गुण गाइ सदा रंगि राते बहुड़ि न पछोताईऐ ॥ भभै भालहि गुरमुखि बूझहि ता निज घरि वासा पाईऐ ॥ भभै भउजलु मारगु विखड़ा आस निरासा तरीऐ ॥ गुर परसादी आपो चीन्है जीवतिआ इव मरीऐ ॥ ४१ ॥

परमेश्वर (तत्वों को) तोड़-तोड़कर जगत् का निर्माण करता है और जगत्-निर्माण करके उसका विनाश कर देता है, वह बिगाड़कर फिर से बनाता है, वह जीवों को पैदा करके उनका नाश कर देता है। वह सर्वकला समर्थ एवं बेपरवाह परमेश्वर भरे हुए सरोवरों को सुखा देता और पुनः उन्हें भर भी देता है। जो जीव भ्रम में भूले हुए हैं, वे पगले हो गए हैं और भाग्य के बिना कुछ भी हासिल नहीं होता। गुरु के माध्यम से ही यह ज्ञान होता है कि प्रत्येक जीव की जीवन-डोरी प्रभु ने अपने हाथ में पकड़ी हुई है। वह जीवों को जिधर खींचता है, वे उधर ही चल पड़ते हैं। जो भगवान का गौरवगान करके सदैव उसके रंग में लीन रहता है, उसे कोई दुबारा पछतावा नहीं होता। भ—सत्य की खोज करने वाले गुरु द्वारा सत्य का मार्ग बूझ लेते हैं और अपने सच्चे घर

में निवास प्राप्त कर लेते हैं। भ—इस भवसागर से पार होने वाला मार्ग बहुत कठिन है और इच्छाओं से इच्छारहित होकर ही इसमें से पार हुआ जा सकता है। जो व्यक्ति गुरु की कृपा से आत्म-ज्ञान को समझ लेता है, वह जीवन्मुक्त हो जाता है॥ ४१॥

माइआ माइआ करि मुए माइआ किसै न साथि ॥ हंसु चलै उठि डुमणो माइआ भूली आथि ॥ मनु झूठा जमि जोहिआ अवगुण चलहि नालि ॥ मन महि मनु उलटो मरै जे गुण होवहि नालि ॥ मेरी मेरी करि मुए विणु नावै दुखु भालि ॥ गड़ मंदर महला कहा जिउ बाजी दीबाणु ॥ नानक सचे नाम विणु झूठा आवण जाणु ॥ आपे चतुरु सरूपु है आपे जाणु सुजाणु ॥ ४२ ॥

"यह माया मेरी है, यह धन-दौलत मेरा अपना है।" यही कहते हुए कितने ही लोग दुनिया छोड़ गए हैं, परन्तु यह माया किसी के साथ नहीं गई। आत्मा रूपी हंस मायूस होकर दुनिया से चल देता है परन्तु माया उसे यही भूली रहती है। मोह-माया में फँसा हुआ मन झूठा है और मृत्यु ने उसे देख लिया है। मरणोपरांत जीव के अवगुण उसके साथ ही जाते हैं। यदि उसके पास गुण हो तो उसका अशुद्ध मन विकारों की ओर से पलट कर शुद्ध मन में ही समा जाता है। कितने ही जीव यह माया मेरी है, कहते हुए प्रभु नाम के बिना दुख भोगते हुए जीवन त्याग गए हैं। बाजीगर की खेल की तरह राजाओं के दुर्ग, मन्दिर, महल और उनका दरबार कहाँ रह जाता है ? हे नानक ! ईश्वर के सच्चे नाम के बिना जीव का आवागमन सब झूठा है। परमात्मा आप ही चतुर एवं सुन्दर है और आप ही बुद्धिमान एवं सर्वज्ञाता है॥ ४२॥

जो आवहि से जाहि फुनि आइ गए पछुताहि ॥ लख चउरासीह मेदनी घटै न वधै उताहि ॥ से जन उबरे जिन हरि भाइआ ॥ धंधा मुआ विगूती माइआ ॥ जो दीसै सो चालसी किस कउ मीतु करेउ ॥ जीउ समपउ आपणा तनु मनु आगै देउ ॥ असथिरु करता तू धणी तिस ही की मै ओट ॥ गुण की मारी हउ मुई सबदि रती मनि चोट ॥ ४३ ॥

जो भी जन्म लेता है, उसकी मृत्यु अटल है और जन्म-मरण के चक्र में पड़कर जीव पछताता रहता है। यह चौरासी लाख योनियों वाली पृथ्वी उनके जन्म-मरण से न कभी घटती है और न ही कभी बढ़ती है। जिन्हें ईश्वर भा गया है, उनका उद्धार हो गया है। उनकी दुनिया की लालसा समाप्त हो गई है और माया भी प्रभावित नहीं कर रही। दुनिया में जो कुछ भी नजर आ रहा है, वह नाशवान है, फिर मैं किसे मित्र बनाऊँ। मैं अपना जीवन उसे समर्पित कर दूँगा और तन-मन भी उसे न्यौछावर कर दूँगा। हे सृजनहार ! एक तू ही स्थिर रहने वाला है। मुझे तो उस मालिक का ही सहारा है। गुणों की मारी हुई अहंकार भावना समाप्त हो गई है, जब मन ब्रह्म-शब्द में लीन हुआ तो विकारों को बड़ी चोट लगी॥ ४३॥

राणा राउ न को रहै रंगु न तुंगु फकीरु ॥ वारी आपो आपणी कोइ न बंधै धीर ॥ राहु बुरा भीहावला सर डूगर असगाह ॥ मै तनि अवगण झुरि मुई विणु गुण किउ घरि जाह ॥ गुणीआ गुण ले प्रभ मिले किउ तिन मिलउ पिआरि ॥ तिन ही जैसी थी रहां जपि जपि रिदै मुरारि ॥ अवगुणी भरपूर है गुण भी वसहि नालि ॥ विणु सतगुर गुण न जापनी जिचरु सबदि न करे बीचारु ॥ ४४ ॥

राणा-राव, अमीर-गरीब एवं फकीर कोई भी सदा नहीं रहता, चूंकि सबकी मृत्यु अटल है। अपनी-अपनी बारी आने पर सभी जगत् से चले जाते हैं और कोई भी उन्हें रोक नहीं सकता। गहरे सागर एवं ऊँचे पहाड़ों वाले पथ की तरह मृत्यु का मार्ग बहुत बुरा एवं भयानक है। मैं अपने शरीर

पर अनेक अवगुणों के कारण दुखी हूँ, फिर गुणों के बिना मैं अपने सच्चे घर में कैसे जाऊँ ? गुणवान जीव अपने गुण साथ लेकर प्रभु से मिल गए हैं, मैं उनसे प्रेमपूर्वक कैसे मिलूँ ? मेरी कामना है कि हृदय में प्रभु का नाम जप-जपकर मैं भी उन जैसी गुणवान बनी रहूँ। दुनिया में प्रत्येक जीव अवगुणों से भरा हुआ है, परन्तु गुण भी उनके साथ ही बसते हैं। जब तक जीव शब्द का चिंतन नहीं करता, सतिगुरु के बिना उसे गुण हासिल नहीं होते॥ ४४॥

लसकरीआ घर संमले आए वजहु लिखाइ ॥ कार कमावहि सिरि धणी लाहा पलै पाइ ॥ लबु लोभु बुरिआईआ छोडे मनहु विसारि ॥ गड़ि दोही पातिसाह की कदे न आवै हारि ॥ चाकरु कहीऐ खसम का सउहे उतर देइ ॥ वजहु गवाए आपणा तखति न बैसहि सेइ ॥ प्रीतम हथि वडिआईआ जै भावै तै देइ ॥ आपि करे किसु आखीऐ अवरु न कोइ करेइ ॥ ४५ ॥

जिंदगी के इस खेल में कुछ जीवों ने अपनी स्थिति संभाल ली है और भाग्य लिखाकर ही आए हैं। वे वही कार्य करते हैं, जो मालिक ने सौंपा है और इस प्रकार लाभ प्राप्त करते हैं। उन्होंने लालच, लोभ एवं बुराईयों को छोड़ कर मन से भुला दिया है। वे जग रूपी दुर्ग में रहते हुए अपने मालिक की स्तुति करते रहते हैं और जीवन में कभी पराजित नहीं होते। जो कोई खुद को अपने मालिक का चाकर कहलवाता है, पर उसके सामने उत्तर देता है अर्थात् आज्ञा का पालन नहीं करता, वह अपनी मेहनत गंवा लेता है और उच्च पद पर नहीं बैठता। प्रियतम-प्रभु के हाथ में सब बड़ाईयाँ हैं, जिसे चाहता है, उसे ही देता है। वह स्वयं ही सबकुछ करता है, अन्य किसी को क्यों कहा जाए ? उसके अलावा अन्य कोई भी करने वाला नहीं॥ ४५॥

बीजउ सूझै को नही बहै दुलीचा पाइ ॥ नरक निवारणु नरह नरु साचउ साचै नाइ ॥ वणु त्रिणु ढूढत फिरि रही मन महि करउ बीचारु ॥ लाल रतन बहु माणकी सतिगुर हाथि भंडारु ॥ ऊतमु होवा प्रभु मिलै इक मनि एकै भाइ ॥ नानक प्रीतम रसि मिले लाहा लै परथाइ ॥ रचना राचि जिनि रची जिनि सिरिआ आकारु ॥ गुरमुखि बेअंतु धिआईऐ अंतु न पारावारु ॥ ४६ ॥

ईश्वर के अतिरिक्त अन्य कोई भी ऐसा नहीं सूझता जो सदा विश्व का शासन चलाता है। वह पुरुषोत्तम प्रभु ही नरक से निवारण करने वाला है, जिसका नाम सदैव सत्य है। मैं उसे वन-वन ढूँढती रहती हूँ और मन में उसका ही विचार करती हूँ कि लाल, रत्न एवं माणिक्य रूपी गुणों का भण्डार सतिगुरु के हाथ में है। यदि मुझे प्रभु मिल जाए तो मैं उत्तम हो जाऊँ और एकाग्रचित होकर उसके प्रेम में ही लीन रहूँ। हे नानक ! यदि प्रियतम का नामामृत प्राप्त हो जाए तो लाभ प्राप्त करके परलोक में चली जाऊँ। जिस परमेश्वर ने यह विश्व बनाया है, जिसने सारी रचना करके जीवों को उत्पन्न किया है, उसका न कोई अंत है और न ही आर-पार है, उस बेअंत परमात्मा का गुरु के माध्यम से ध्यान करना चाहिए॥ ४६॥

ड़ाड़ै रूड़ा हरि जीउ सोई ॥ तिसु बिनु राजा अवरु न कोई ॥ ड़ाड़ै गारुड़ु तुम सुणहु हरि वसै मन माहि ॥ गुर परसादी हरि पाईऐ मतु को भरमि भुलाहि ॥ सो साहु साचा जिसु हरि धनु रासि ॥ गुरमुखि पूरा तिसु साबासि ॥ रूड़ी बाणी हरि पाइआ गुर सबदी बीचारि ॥ आपु गइआ दुखु कटिआ हरि वरु पाइआ नारि ॥ ४७ ॥

ड़—वह प्रभु अत्यंत सुन्दर है और उसके अलावा अन्य कोई दुनिया का राजा नहीं है।

ङ—तुम गुरु मंत्र सुन लो, हरि मन में बस जाता है। गुरु की कृपा से ही परमात्मा प्राप्त होता है, इसलिए किसी भ्रम में मत भटको। वही सच्चा साहूकार है, जिसके पास हरि-धन रूपी पूंजी है। वही पूर्ण गुरुमुख है, उसे मेरी शाबाश है। शब्द-गुरु द्वारा विचार करने से सुन्दर वाणी द्वारा ईश्वर को पाया जा सकता है। उस जीव रूपी नारी ने ही हरि रूपी वर प्राप्त किया है, जिसका अहम् दूर हो गया है और उसका दुख कट गया है॥ ४७॥

सुइना रुपा संचीऐ धनु काचा बिखु छारु ॥ साहु सदाए संचि धनु दुबिधा होइ खुआरु ॥ सचिआरी सचु संचिआ साचउ नामु अमोलु ॥ हरि निरमाइलु ऊजलो पति साची सचु बोलु ॥ साजनु मीतु सुजाणु तू तू सरवरु तू हंसु ॥ साचउ ठाकुरु मनि वसै हउ बलिहारी तिसु ॥ माइआ ममता मोहणी जिनि कीती सो जाणु ॥ बिखिआ अंम्रितु एकु है बूझै पुरखु सुजाणु ॥ ४८ ॥

संसार में हर कोई सोना-चांदी इकट्ठा करने में लगा रहता है परन्तु यह धन तो कच्चा और विष रूप राख के समान है। कोई धन दौलत संचित करके स्वयं को साहूकार कहलवाता है, किन्तु दुविधा में फँसकर वह दुखी ही होता है। परमात्मा का सत्य-नाम ही अमूल्य है, इसलिए सत्यवादी सत्य ही संचित करता रहता है। जो निर्मल एवं पावन परमेश्वर का ध्यान करते हैं, उन सत्यवादियों का ही सम्मान होता है और उनका वचन भी सत्य है। हे परमेश्वर ! तू ही चतुर है, तू ही मेरा साजन एवं मित्र है और तू ही गुरु रूपी सरोवर एवं तू ही संत रूपी हंस है। मैं उस पर बलिहारी जाता हूँ, जिसके मन में सच्चे ठाकुर का निवास है। माया-ममता जो जीव को मोहित करने वाली है, जिसने इसे उत्पन्न किया है, उसे जानो। जो चतुर पुरुष इस तथ्य को बूझ लेता है, उसके लिए विष एवं अमृत भी एक समान है॥ ४८॥

खिमा विहूणे खपि गए खूहणि लख असंख ॥ गणत न आवै किउ गणी खपि खपि मुए बिसंख ॥ खसमु पछाणै आपणा खूलै बंधु न पाइ ॥ सबदि महली खरा तू खिमा सचु सुख भाइ ॥ खरचु खरा धनु धिआनु तू आपे वसहि सरीरि ॥ मनि तनि मुखि जापै सदा गुण अंतरि मनि धीर ॥ हउमै खपै खपाइसी बीजउ वथु विकारु ॥ जंत उपाइ विचि पाइअनु करता अलगु अपारु ॥ ४९ ॥

वे क्षमाविहीन जीव भी मर-खप गए हैं, जिनकी संख्या लाखों करोड़ों को छू रही है। उनकी गिनती नहीं की जा सकती , फिर उनकी कैसे गणना की जाए, असंख्य मनुष्य खप-खप कर मर गए हैं। जो अपने मालिक को पहचान लेता है, वह बन्धनों में नहीं पड़ता और उसके पूर्व सभी बन्धन भी खुल जाते हैं। तू शब्द द्वारा प्रभु-दरबार के लिए उत्तम बन जा, तुझे क्षमा, सत्य, सुख एवं प्रेम प्राप्त हो जाएगा। यदि यात्रा व्यय के लिए सत्य का धन है और परमात्मा का ध्यान करता रहे तो वह स्वयं ही तेरे शरीर में निवास कर जाएगा। यदि अपने मन, तन एवं मुख में प्रभु का नाम जपता रहे तो अन्तर्मन में शुभ-गुण उत्पन्न हो जाएंगे और मन में धैर्य हो जाएगा। अभिमान जीवों को नष्ट करता रहता है और हरि-नाम के बिना वस्तु विकार रूप है। जीवों को पैदा करके परमेश्वर ने अपने आपको उनमें स्थिर किया है, पर अपरंपार कर्ता-प्रभु निर्लिप्त है॥ ४९॥

स्रिसटे भेउ न जाणै कोइ ॥ स्रिसटा करै सु निहचउ होइ ॥ संपै कउ ईसरु धिआईऐ ॥ संपै पुरबि लिखे की पाईऐ ॥ संपै कारणि चाकर चोर ॥ संपै साथि न चालै होर ॥ बिनु साचे नही दरगह मानु ॥ हरि रसु पीवै छुटै निदानि ॥ ५० ॥

उस सृष्टि रचयिता का भेद कोई नहीं जानता। वह स्रष्टा जो कुछ करता है, वह निश्चय ही होता है। कुछ लोग धन के लिए ईश्वर का ध्यान करते हैं, किन्तु उन्हें धन तो पूर्व कर्मों के भाग्यानुसार ही मिलता है। लोग धन के लिए दूसरों के नौकर बन जाते हैं और कुछ चोर भी बन जाते हैं, किन्तु मरणोपरांत धन जीव के साथ नहीं जाता और यह किसी अन्य संबंधी का ही बन जाता है। सत्य का ध्यान किए बिना प्रभु के दरबार में किसी को भी आदर नहीं मिलता। जो हरि-नाम रूपी रस का पान करता है, वह जन्म-मरण से छूट जाता है॥ ५०॥

हेरत हेरत हे सखी होइ रही हैरानु ॥ हउ हउ करती मै मुई सबदि रवै मनि गिआनु ॥ हार डोर कंकन घणे करि थाकी सीगारु ॥ मिलि प्रीतम सुखु पाइआ सगल गुणा गलि हारु ॥ नानक गुरमुखि पाईऐ हरि सिउ प्रीति पिआरु ॥ हरि बिनु किनि सुखु पाइआ देखहु मनि बीचारि ॥ हरि पड़णा हरि बुझणा हरि सिउ रखहु पिआरु ॥ हरि जपीऐ हरि धिआईऐ हरि का नामु अधारु ॥ ५१ ॥

हे सखी! मैं यह देख-देख हैरान हो रही हूँ कि जो मैं अहंत्व करती रहती थी, वह अहम् समाप्त हो गया है। मेरे मन में ज्ञान उत्पन्न हो गया है और ब्रह्म-शब्द में ही लीन रहती हूँ। मैं हार, परांदी और कंगन इत्यादि सब आभूषणों का श्रृंगार कर-करके थक चुकी हूँ। अब मैंने सर्व गुणों का हार अपने गले में डाल लिया है और प्रियतम प्रभु से मिलकर सुख प्राप्त कर लिया है। हे नानक! गुरु के माध्यम से ही प्रभु से प्रेम होता है। मन में विचार करके देख लो कि भगवान के बिना किसी को भी सुख उपलब्ध नहीं हुआ। हरि की कथा पढ़नी चाहिए, हरि को समझना चाहिए और उससे ही प्रेम बनाकर रखो। सदैव हरि को ही जपते रहना चाहिए, हरि का ही भजन करना चाहिए, चूंकि हरि का नाम ही हमारा जीवनाधार है॥ ५१॥

लेखु न मिटई हे सखी जो लिखिआ करतारि ॥ आपे कारणु जिनि कीआ करि किरपा पगु धारि ॥ करते हथि वडिआईआ बूझहु गुर बीचारि ॥ लिखिआ फेरि न सकीऐ जिउ भावी तिउ सारि ॥ नदरि तेरी सुखु पाइआ नानक सबदु वीचारि ॥ मनमुख भूले पचि मुए उबरे गुर बीचारि ॥ जि पुरखु नदरि न आवई तिस का किआ करि कहिआ जाइ ॥ बलिहारी गुर आपणे जिनि हिरदै दिता दिखाइ ॥ ५२ ॥

हे सखी! ईश्वर ने जो भाग्य लिख दिया है, वह कभी मिट नहीं सकता। जिस ने स्वयं संसार बनाया है, वही कृपा करके अपने चरण-कमल हृदय में बसा देता है। गुरु के ज्ञान द्वारा इस तथ्य को समझ लो, सब बड़ाईयाँ परमात्मा के हाथ में हैं। भाग्य बदला नहीं जा सकता, जैसी नियति है, वैसा ही होना है। उसकी कृपा-दृष्टि से ही सुख उपलब्ध होता है। हे नानक! शब्द का चिंतन करो। मनमुख जीव भटक कर नष्ट हो गए हैं, पर गुरु के विचार द्वारा गुरुमुखों का उद्धार हो गया है। जो सत्यपुरुष नजर ही नहीं आता, उसका वर्णन क्या कहकर किया जाए। मैं अपने गुरु पर कुर्बान जाता हूँ, जिसने हृदय में ही परमात्मा के दर्शन करवा दिए हैं॥ ५२॥

पाधा पड़िआ आखीऐ बिदिआ बिचरै सहजि सुभाइ ॥ बिदिआ सोधै ततु लहै राम नाम लिव लाइ ॥ मनमुखु बिदिआ बिक्रदा बिखु खटे बिखु खाइ ॥ मूरखु सबदु न चीनई सूझ बूझ नह काइ ॥ ५३॥

पाधे को शिक्षित तभी कहा जाता है, यदि वह सहज-स्वभाव आध्यात्मिक विद्या का विचार करता है। वह इस विद्या की भलीभांति पड़ताल करके ज्ञान प्राप्त करता है और राम नाम में ध्यान

लगाकर रखता है। मनमुख जीव विद्या का विक्रय करता है, इस तरह विष प्राप्त करता और विष ही खाता है। मूर्ख को शब्द की पहचान नहीं होती और न ही कोई सूझबूझ होती है॥ ५३॥

पाधा गुरमुखि आखीऐ चाटड़िआ मति देइ ॥ नामु समालहु नामु संगरहु लाहा जग महि लेइ ॥ सची पटी सचु मनि पड़ीऐ सबदु सु सारु ॥ नानक सो पड़िआ सो पंडितु बीना जिसु राम नामु गलि हारु ॥ ५४ ॥ १ ॥

उस पाधे को ही गुरुमुख कहा जाता है, जो अपने विद्यार्थियों को भी यही उपदेश देता है कि नाम स्मरण करो, नाम का संग्रह करो और जग में लाभ प्राप्त करो। वह विद्यार्थी ही सच्ची पट्टी लिखता है, जो मन में सत्य का अध्ययन करता और शब्द को धारण करता है। हे नानक! वही शिक्षित एवं चतुर पण्डित है, जिसने अपने गले में राम नाम का हार पहन लिया है॥ ५४॥ १॥

रामकली महला १ सिध गोसटि १ओं सतिगुर प्रसादि ॥

सिध सभा करि आसणि बैठे संत सभा जैकारो ॥ तिसु आगै रहरासि हमारी साचा अपर अपारो ॥ मसतकु काटि धरी तिसु आगै तनु मनु आगै देउ ॥ नानक संतु मिलै सचु पाईऐ सहज भाइ जसु लेउ ॥ १ ॥ किआ भवीऐ सचि सूचा होइ ॥ साच सबद बिनु मुकति न कोइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥

{सिक्ख इतिहास के अनुसार सन् १५३६ में शिवरात्रि के मेले पर अचल बटाला में गुरु नानक देव जी की भेंट सिद्ध योगियों से हुई थी। सिद्ध गोष्ठी नामक इस वाणी में सिद्धों-योगियों एवं गुरु साहिब का प्रश्न-उत्तर है।}

सभी सिद्ध सभा में अपने आसनों पर बैठ गए और उन्होंने कहा कि संत-सभा को नमन है। (गुरु नानक देव जी उत्तर देते हैं कि) हमारी तो उस अपरम्पार परम सत्य ईश्वर के समक्ष ही वंदना है, हम अपना शीश काट कर भी उसे भेंट करते हैं और मन-तन भी उसे अर्पण करते हैं। हे नानक! यदि कोई संत मिल जाए तो ही परमसत्य की प्राप्ति होती है और सहज स्वभाव ही यश मिलता है॥ १॥ अपना घर-बार छोड़कर देश-परदेश भटकने से क्या सत्य एवं शुद्धता प्राप्त हो सकती है? सच्चे शब्द के बिना किसी की भी मुक्ति नहीं होती॥ १॥ रहाउ॥

कवन तुमे किआ नाउ तुमारा कउनु मारगु कउनु सुआओ ॥ साचु कहउ अरदासि हमारी हउ संत जना बलि जाओ ॥ कह बैसहु कह रहीऐ बाले कह आवहु कह जाहो ॥ नानकु बोलै सुणि बैरागी किआ तुमारा राहो ॥ २ ॥

(सिद्धों ने गुरु जी से प्रश्न किया) तुम कौन हो? तुम्हारा क्या नाम है? तुम्हारा कौन-सा मार्ग है? और तुम्हारा क्या जीवन-उद्देश्य है? आप से हमारी प्रार्थना है कि हमें सत्य बताओ, हम संतजनों पर बलिहारी जाते हैं। (सिद्धों ने गुरु नानक देव को संबोधित किया—) हे बालक! तू कहाँ बैठता है? तू कहाँ रहता है? तू कहाँ से आया है? और तूने कहाँ जाना है? नानक कहते हैं कि बैरागी पूछते हैं कि तुम्हारा क्या राह है?॥ २॥

घटि घटि बैसि निरंतरि रहीऐ चालहि सतिगुर भाए ॥ सहजे आए हुकमि सिधाए नानक सदा रजाए ॥ आसणि बैसणि थिरु नाराइणु ऐसी गुरमति पाए ॥ गुरमुखि बूझै आपु पछाणै सचे सचि समाए ॥ ३ ॥

(गुरु नानक देव जी ने सिद्धों को उत्तर दिया—) हम तो घट-घट में निवास करने वाले परमात्मा के ध्यान में ही लीन रहते हैं और सतिगुरु की रज़ा में ही चलते हैं। हमें तो प्रभु ने ही भेजा है, उसके

हुक्म से ही आया हूँ और नानक तो सदा ईश्वरेच्छा में ही चलता है। हमने ऐसी गुरुमत ही पाई है कि नारायण सदैव स्थिर है और आसन पर बैठने वाला वह स्वयं ही है। गुरुमुख इस तथ्य को समझ लेता है, अपने आपको पहचान लेता है और परमसत्य में ही विलीन हो जाता है॥ ३॥

दुनीआ सागरु दुतरु कहीऐ किउ करि पाईऐ पारो ॥ चरपटु बोलै अउधू नानक देहु सचा बीचारो ॥ आपे आखै आपे समझै तिसु किआ उतरु दीजै ॥ साचु कहहु तुम पारगरामी तुझु किआ बैसणु दीजै ॥ ४ ॥

(सिद्धों ने प्रश्न किया—) कहा जाता है कि यह दुनिया कठिनाई से पार किया जाने वाला सागर है, इसमें से कैसे पार हुआ जा सकता है? फिर चरपट नाथ बोले—हे अवधूत नानक! इस तथ्य के बारे में सच्चा विचार बताओ। (गुरु जी ने कहा कि) जो स्वयं इस तथ्य को कह रहा है, स्वयं ही उसे समझता भी है, उसे क्या उत्तर दिया जाए? सत्य कहो, तुम तो संसार सागर से पार हो चुके हो, तुझे चर्चा के लिए संत-सभा में बैठने ही क्यों दें? फिर भी बताता हूँ॥ ४॥

जैसे जल महि कमलु निरालमु मुरगाई नै साणे ॥ सुरति सबदि भव सागरु तरीऐ नानक नामु वखाणे ॥ रहहि इकांति एको मनि वसिआ आसा माहि निरासो ॥ अगमु अगोचरु देखि दिखाए नानकु ता का दासो ॥ ५ ॥

(गुरु जी उत्तर देते हैं कि) हे चरपट! जैसे जल में कमल का फूल निर्लिप्त रहता है और नदी में तैरती हुई मुर्गाबी अपने पंख भीगने नहीं देती, वैसे ही प्रभु का नाम जपने एवं शब्द में ध्यान लगाने से संसार-सागर से पार हुआ जा सकता है। जो एकांत में रहकर परमात्मा को मन में बसा लेता है, वह जीवन की आशाओं से निर्लिप्त हो जाता है। हे नानक! मैं तो उस महापुरुष का दास हूँ जो अगम्य, अगोचर परमात्मा के दर्शन करके अन्यों को भी उसके दर्शन करवा देता है॥ ५॥

सुणि सुआमी अरदासि हमारी पूछउ साचु बीचारो ॥ रोसु न कीजै उतरु दीजै किउ पाईऐ गुर दुआरो ॥ इहु मनु चलतउ सच घरि बैसै नानक नामु अधारो ॥ आपे मेलि मिलाए करता लागै साचि पिआरो ॥ ६ ॥

(योगी कहते हैं कि) हे स्वामी! हमारी प्रार्थना सुनो; हम आप से सच्चा विचार पूछते हैं। किसी प्रकार का रोष मत करना और सही उत्तर देना कि गुरु द्वारा परमात्मा को कैसे प्राप्त किया जा सकता है? गुरु नानक कहते हैं कि नाम ही जीवन का आधार है, यह चंचल मन सत्य रूपी घर में स्थित हो जाता है। जब सत्य से प्रेम हो जाता है तो परमेश्वर स्वयं ही अपने साथ मिला लेता है॥ ६॥

हाटी बाटी रहहि निराले रूखि बिरखि उदिआने ॥ कंद मूलु अहारो खाईऐ अउधू बोलै गिआने ॥ तीरथि नाईऐ सुखु फलु पाईऐ मैलु न लागै काई ॥ गोरख पूतु लोहारीपा बोलै जोग जुगति बिधि साई ॥ ७ ॥

योगी अपने मत का ज्ञान कहते हैं कि हम बाजारों और नगरों की ओर जाने वाले रास्तों से दूर जंगलों में वृक्षों एवं पेड़ों के नीचे निराले ही रहते हैं और कंदमूल का आहार खाकर निर्वाह करते हैं। हम तीर्थों में स्नान करते हैं और इसका सुख रूपी फल प्राप्त करते हैं और मन को जरा भी अहम् की मैल नहीं लगती। गोरख का पुत्र लोहारीपा कहता है कि योग की युक्ति यही है॥ ७॥

हाटी बाटी नीद न आवै पर घरि चितु न डोलाई ॥ बिनु नावै मनु टेक न टिकई नानक भूख न जाई ॥ हाटु पटणु घरु गुरू दिखाइआ सहजे सचु वापारो ॥ खंडित निद्रा अलप अहारं नानक ततु बीचारो ॥ ८ ॥

(गुरु जी सिद्धों को उपदेश देते हुए कहते हैं कि) जीव को बाजारों एवं नगरों में अज्ञानता की निद्रा नहीं आनी चाहिए और न ही पराई नारी के रूप को देखकर उसका मन डगमगाना चाहिए। किन्तु नाम के बिना जीव का मन टिक कर नहीं बैठता और न ही उसकी तृष्णा की भूख मिटती है। जिस व्यक्ति को गुरु ने उसके अन्तर्मन में शरीर रूपी नगर, दसम द्वार रूपी घर दिखा दिया है, वह सहज ही सत्य का व्यापार करता रहता है। वह थोड़ी ही निद्रा करता है और थोड़ा-ही भोजन खाता है। हे नानक ! यही हमारा तत्व विचार है॥ ८॥

दरसनु भेख करहु जोगिंद्रा मुंद्रा झोली खिंथा ॥ बारह अंतरि एकु सरेवहु खटु दरसन इक पंथा ॥ इन बिधि मनु समझाईऐ पुरखा बाहुड़ि चोट न खाईऐ ॥ नानकु बोलै गुरमुखि बूझै जोग जुगति इव पाईऐ ॥ ९ ॥

(योगी गुरु जी से कहते हैं कि) योगीराज गोरखनाथ के पंथ का वेष धारण करो, कानों में मुद्रा, झोली एवं कफनी ग्रहण करो। योगियों के बारह वेषों में से गोरख वाले इस वेष को ही धारण करो, यह शास्त्रों में बताए हुए छः पंथों में से एक श्रेष्ठ पंथ है। हे महापुरुष ! जो व्यक्ति इस विधि द्वारा मन को समझा लेता है, वह पुनः आवागमन की चोटें नहीं खाता। गुरु नानक कहते हैं कि योग की युक्ति तो यूं प्राप्त होती है कि जीव गुरुमुख बनकर सत्य का बोध कर ले॥ ९॥

अंतरि सबदु निरंतरि मुद्रा हउमै ममता दूरि करी ॥ कामु क्रोधु अहंकारु निवारै गुर कै सबदि सु समझ परी ॥ खिंथा झोली भरिपुरि रहिआ नानक तारै एकु हरी ॥ साचा साहिबु साची नाई परखै गुर की बात खरी ॥ १० ॥

(गुरु जी योगियों को समझाते हैं कि) जिस व्यक्ति ने अपना अहम् एवं ममता दूर कर ली है, वह अपने अन्तर्मन में अनहद शब्द को सुनता रहता है और यही उसके कानों की मुद्राएँ हैं। यों ही वह काम, क्रोध एवं अहंकार को दूर कर लेता है, परन्तु गुरु के शब्द द्वारा ही सुमति प्राप्त होती है। गुरु नानक कहते हैं कि एक परमात्मा ही जीव को भवसागर से पार करवाता है और उस सर्वव्यापक का सिमरन करना ही जीव के लिए कफनी एवं झोली धारण करना है। सबका मालिक प्रभु सत्य है, उसकी महिमा भी सत्य है, वह जीव परख लेता है कि गुरु की बात ही उत्तम है॥ १०॥

ऊंधउ खपरु पंच भू टोपी ॥ कांइआ कड़ासणु मनु जागोटी ॥ सतु संतोखु संजमु है नालि ॥ नानक गुरमुखि नामु समालि ॥ ११ ॥

जिसने अपने मन को विषय-विकारों से उलटा लिया है, यही उसका खप्पर है। आकाश, वायु अग्नि, जल एवं धरती इन पाँच भू-तत्वों के गुण ही उसकी टोपी है। जिसने काया को पवित्र कर लिया है, यही उसका कुश का आसन है और मन को वशीभूत करना ही उसकी लंगोटी है। सत्य, संतोष एवं संयम—यह शुभ गुण उसके साथ रहने वाले साथी हैं। हे नानक ! ऐसा जीव गुरुमुख बनकर नाम-स्मरण करता रहता है॥ ११॥

कवनु सु गुपता कवनु सु मुकता ॥ कवनु सु अंतरि बाहरि जुगता ॥ कवनु सु आवै कवनु सु जाइ ॥ कवनु सु त्रिभवणि रहिआ समाइ ॥ १२ ॥

(सिद्ध योगी गुरु नानक देव जी से प्रश्न करते हैं—) वह कौन है, जो गुप्त रहता है? वह कौन है जो बन्धनों से मुक्त है? वह कौन है, जो अन्दर-बाहर शब्द से जुड़ा रहता है? वह कौन है, जो दुनिया में जन्म लेकर आता है और वह कौन है, जो चला जाता है? वह कौन है, जो आकाश, पाताल, पृथ्वी तीनों लोकों में समाया रहता है?॥ १२॥

घटि घटि गुपता गुरमुखि मुकता ॥ अंतरि बाहरि सबदि सु जुगता ॥ मनमुखि बिनसै आवै जाइ ॥ नानक गुरमुखि साचि समाइ ॥ १३ ॥

(गुरु नानक देव जी सिद्धों को उत्तर देते हैं कि) घट-घट में व्यापक परमात्मा गुप्त रहता है और गुरुमुख ही बन्धनों से मुक्त है और अन्दर बाहर व्यवहार करता हुआ शब्द से जुड़ा रहता है। स्वेच्छाचारी प्राणी नाश हो जाता है और जन्म-मरण के चक्र में फँसा रहता है। गुरु नानक का कथन है कि गुरुमुख सत्य में ही विलीन रहता है॥ १३॥

किउ करि बाधा सरपनि खाधा ॥ किउ करि खोइआ किउ करि लाधा ॥ किउ करि निरमलु किउ करि अंधिआरा ॥ इहु ततु बीचारै सु गुरू हमारा ॥ १४ ॥

(सिद्ध दोबारा प्रश्न करते हैं कि) कोई मनुष्य बन्धनों में क्यों बंधा हुआ है? और माया रूपी सर्पिणी ने क्यों ग्रास बना लिया है? किसी जीव ने क्योंकर सत्य को खो दिया है और क्योंकर सत्य को पा लिया है? जीव का मन कैसे निर्मल होता है और कैसे अज्ञानता का अंधेरा दूर होता है? जो इस ज्ञान-तत्व का विचार करे, वही हमारा गुरु है॥ १४॥

दुरमति बाधा सरपनि खाधा ॥ मनमुखि खोइआ गुरमुखि लाधा ॥ सतिगुरु मिलै अंधेरा जाइ ॥ नानक हउमै मेटि समाइ ॥ १५ ॥

(गुरु नानक देव जी उत्तर देते हैं कि) मनुष्य को उसकी दुर्मति ने बन्धनों में बांध लिया है और माया रूपी सर्पिणी ने उसे निगल लिया है। मनमुखी जीव ने सत्य को खो दिया है और गुरुमुख ने सत्य को पा लिया है। जिसका सतगुरु से साक्षात्कार हो जाता है, उसका अज्ञान रूपी अंधेरा दूर हो जाता है। हे नानक! गुरुमुख जीव अपने अहम् को मिटाकर सत्य में विलीन हो जाता है॥ १५॥

सुंन निरंतरि दीजै बंधु ॥ उडै न हंसा पड़ै न कंधु ॥ सहज गुफा घरु जाणै साचा ॥ नानक साचे भावै साचा ॥ १६ ॥

(गुरु साहिब जी सिद्धों को समझाते हैं कि) यदि अन्तर्मन को शून्यावस्था में निरन्तर लीन करके उसके संकल्पों विकल्पों पर अंकुश लगा दिया तो जीव रूपी हंस उड़ता नहीं अर्थात् स्थिर हो जाता है और उसका अन्त नहीं होता। वह सच्चा जीव रूपी हंस सहजावस्था रूपी घर को पहचान लेता है। हे नानक! सच्चे परमेश्वर को ऐसा सत्यवादी जीव ही प्रिय लगता है॥ १६॥

किसु कारणि ग्रिहु तजिओ उदासी ॥ किसु कारणि इहु भेखु निवासी ॥ किसु वखर के तुम वणजारे ॥ किउ करि साथु लंघावहु पारे ॥ १७ ॥

(सिद्ध गुरु जी से प्रश्न करते हैं कि) हे उदासी संत! तूने अपना घर किस कारण त्याग दिया है? तूने किस कारण यह उदासियों वाला भेष धारण किया है? तुम किस सौदे के व्यापारी हो? तुम अपने साथियों को कैसे भवसागर से पार करवा सकते हो?॥ १७॥

गुरमुखि खोजत भए उदासी ॥ दरसन कै ताई भेख निवासी ॥ साच वखर के हम वणजारे ॥ नानक गुरमुखि उतरसि पारे ॥ १८ ॥

(गुरु नानक देव जी उत्तर देते हैं कि) हम गुरुमुख संतों की खोज में उदासी बने हैं और संतों महापुरुषों के दर्शन करने के लिए यह भेष धारण किया हुआ है। हम सत्य-नाम रूपी सौदे के व्यापारी हैं और गुरुमुख जीव भवसागर से पार हो जाते हैं॥ १८॥

कितु बिधि पुरखा जनमु वटाइआ ॥ काहे कउ तुझु इहु मनु लाइआ ॥ कितु बिधि आसा मनसा खाई ॥ कितु बिधि जोति निरंतरि पाई ॥ बिनु दंता किउ खाईऐ सारु ॥ नानक साचा करहु बीचारु ॥ १९ ॥

(सिद्धों ने गुरु जी से पुनः प्रश्न किया—) हे महापुरुष! तूने किस विधि द्वारा अपना जीवन बदल लिया है और तूने किससे अपना यह मन लगा लिया है? तूने किस विधि द्वारा अपनी आशा एवं अभिलाषाओं को समाप्त कर लिया है और किस विधि द्वारा परम-ज्योति प्राप्त कर ली है? दाँतों के बिना अहंत्व रूपी लोहा कैसे चबाया जा सकता है? हे नानक! इस बारे में सच्चा विचार करो॥ १९॥

सतिगुर कै जनमे गवनु मिटाइआ ॥ अनहति राते इहु मनु लाइआ ॥ मनसा आसा सबदि जलाई ॥ गुरमुखि जोति निरंतरि पाई ॥ त्रै गुण मेटे खाईऐ सारु ॥ नानक तारे तारणहारु ॥ २० ॥

(गुरु नानक देव जी उत्तर देते हैं कि) जब मैंने सतगुरु का आश्रय लेकर जीवन बदल लिया तो उसने मेरा आवागमन ही मिटा दिया। मेरा मन अनाहत शब्द में ही प्रवृत्त रहता है और ब्रह्म-शब्द द्वारा आशा-अभिलाषा को जला दिया है। मैंने गुरुमुख बनकर निरंतर प्रज्वलित परम-ज्योति प्राप्त कर ली है। जो माया के तीन गुणों को अपने मन से मिटा देता है, वही अहंत्व रूपी लोहे को चबाता है। हे नानक! तारनहार परमेश्वर स्वयं ही भवसागर से पार करा देता है॥ २०॥

आदि कउ कवनु बीचारु कथीअले सुंन कहा घर वासो ॥ गिआन की मुद्रा कवन कथीअले घटि घटि कवन निवासो ॥ काल का ठीगा किउ जलाईअले किउ निरभउ घरि जाईऐ ॥ सहज संतोख का आसणु जाणै किउ छेदे बैराईऐ ॥ गुर कै सबदि हउमै बिखु मारै ता निज घरि होवै वासो ॥ जिनि रचि रचिआ तिसु सबदि पछाणै नानकु ता का दासो ॥ २१ ॥

(सिद्धों ने पुनः पूछा—) सृष्टि-रचना के संबंध में आपका क्या विचार है और यह भी बताइए कि शून्य रूप में परम-सत्य का कहाँ वास था? ज्ञान की मुद्रा के बारे में आप क्या कहते हैं और घट-घट में किसका निवास है? काल की चोट से कैसे बचा जा सकता है? और निर्भय होकर सच्चे घर में कैसे जाया जाए? सहज संतोष का आसन कैसे जान लिया जाए और कामादिक वैरियों का नाश कैसे किया जा सकता है? (गुरु नानक देव जी उत्तर देते हैं कि) जो व्यक्ति गुरु के शब्द द्वारा अहम् रूपी विष को समाप्त कर देता है, उसका सच्चे घर में निवास हो जाता है। जिसने यह सृष्टि रचना की है, जो उसे शब्द द्वारा पहचान लेता है, नानक तो उसका दास है॥ २१॥

कहा ते आवै कहा इहु जावै कहा इहु रहै समाई ॥ एसु सबद कउ जो अरथावै तिसु गुर तिलु न तमाई ॥ किउ ततै अविगतै पावै गुरमुखि लगै पिआरो ॥ आपे सुरता आपे करता कहु नानक बीचारो ॥ हुकमे आवै हुकमे जावै हुकमे रहै समाई ॥ पूरे गुर ते साचु कमावै गति मिति सबदे पाई ॥ २२ ॥

(सिद्धों ने पुनः प्रश्न किया कि) यह जीव कहाँ से आता है और कहाँ चला जाता है ? आने से पूर्व एवं जाने के बाद यह कहाँ समाया रहता है ? जो इस शब्द के अर्थ समझा देता है, उस गुरु को तिल मात्र भी लोभ नहीं है। जीव कैसे परम तत्व परमात्मा को प्राप्त करे और गुरु के माध्यम से उसका किस तरह सत्य से प्रेम हो ? हे नानक ! उस परमेश्वर के बारे में अपना विचार बताओ, जो स्वयं ही जीवों को पैदा करने वाला है और स्वयं ही दुख-सुख सुनने वाला है। (गुरु नानक उत्तर देते हैं कि) जीव परमात्मा के हुक्म से जन्म लेता है, उसके हुक्म से ही चला जाता है और उसके हुक्म से ही सत्य में समाया रहता है। जीव पूर्ण गुरु द्वारा ही सत्कर्म करता है और शब्द से ही सत्य की गति को समझ लेता है॥ २२॥

आदि कउ बिसमादु बीचारु कथीअले सुंन निरंतरि वासु लीआ ॥ अकलपत मुद्रा गुर गिआनु बीचारीअले घटि घटि साचा सरब जीआ ॥ गुर बचनी अविगति समाईऐ ततु निरंजनु सहजि लहै ॥ नानक दूजी कार न करणी सेवै सिखु सु खोजि लहै ॥ हुकमु बिसमादु हुकमि पछाणै जीअ जुगति सचु जाणै सोई ॥ आपु मेटि निरालमु होवै अंतरि साचु जोगी कहीऐ सोई ॥ २३ ॥

(पिछले पूछे प्रश्नों के उत्तर देते हुए गुरु जी सिद्धों को बताते हैं कि) सृष्टि-रचना के बारे में मेरा विचार यह है कि उसे अद्‌भुत ही कहा जा सकता है। ईश्वर ने निरन्तर शून्यावस्था में निवास किया हुआ था। गुरु का ज्ञान ही निर्विकल्प मुद्रा है, जिसका विचार करने से यह पता लगता है कि सब जीवों का सच्चा परमेश्वर घट-घट में व्याप्त है। जब जीव गुरु के वचनों द्वारा प्रभु में लीन हो जाता है तो वह सहज ही परमतत्व निरंजन को पा लेता है। नानक कहते हैं कि जो शिष्य गुरु की सेवा करता है, वह खोज करके सत्य को प्राप्त कर लेता है और उसे अन्य कार्य नहीं करना चाहिए। परमात्मा का हुक्म विस्मय है, जो उसके हुक्म को पहचान लेता है, वह इस युक्ति द्वारा उस सत्य को जान लेता है। वही सच्चा योगी कहा जाता है, जो अपने अहम् को मिटाकर दुनिया से निर्लिप्त हो जाता है और उसके अन्तर्मन में सत्य का निवास हो जाता है॥ २३॥

अविगतो निरमाइलु उपजे निरगुण ते सरगुणु थीआ ॥ सतिगुर परचै परम पदु पाईऐ साचै सबदि समाइ लीआ ॥ एके कउ सचु एका जाणै हउमै दूजा दूरि कीआ ॥ सो जोगी गुर सबदु पछाणै अंतरि कमलु प्रगासु थीआ ॥ जीवतु मरै ता सभु किछु सूझै अंतरि जाणै सरब दइआ ॥ नानक ता कउ मिलै वडाई आपु पछाणै सरब जीआ ॥ २४ ॥

(गुरु नानक देव जी सिद्धों को समझाते हैं कि) निर्मल परमात्मा अविगत रूप से पैदा हुआ है और वह अपने निर्गुण रूप से सगुण स्वरूप हो गया। यदि जीव का मन सतगुरु में लीन रहे तो उसे मोक्ष की प्राप्ति हो जाती है और वह सच्चे-शब्द में ही विलीन हो जाता है। वह उस एक सत्य को जानता है और अपना अहम् एवं द्वैतभाव को दूर कर देता है। जो शब्द-गुरु को पहचान लेता है, वही सच्चा योगी है और उसके हृदय-कमल में परम-ज्योति का प्रकाश हो जाता है। यदि जीव अपने अहंत्व को समाप्त कर दे तो उसे सबकुछ सूझ जाता है और अन्तर्मन में सब पर दया करने वाले ईश्वर को जान लेता है। नानक कहते हैं कि जो सब जीवों में बसने वाले परमात्मा को पहचान लेता है, उसे ही कीर्ति प्राप्त होती है॥ २४॥

साचौ उपजै साचि समावै साचे सूचे एक मइआ ॥ झूठे आवहि ठवर न पावहि दूजै आवा गउणु भइआ ॥ आवा गउणु मिटै गुर सबदी आपे परखै बखसि लइआ ॥ एका बेदन दूजै बिआपी नामु

रसाइणु वीसरिआ ॥ सो बूझै जिसु आपि बुझाए गुर कै सबदि सु मुकतु भइआ ॥ नानक तारे तारणहारा हउमै दूजा परहरिआ ॥ २५ ॥

(गुरु जी बताते हैं कि) जीव परम सत्य से उत्पन्न होता है और सत्य में ही विलीन हो जाता है और सत्य से मिलकर पावन होकर उसका ही रूप बन जाता है। झूठे जीव जन्म लेकर आते हैं किन्तु द्वैतभाव के कारण उन्हें कोई सुख का स्थान नहीं मिलता और आवागमन का चक्र ही पड़ा रहता है। उनका आवागमन का चक्र गुरु के शब्द द्वारा ही मिटता है। ईश्वर स्वयं ही अच्छे बुरे जीवों की परख करता है और स्वयं ही उन्हें क्षमा कर देता है। द्वैतभाव के कारण सब जीवों को एक ही वेदना लगी हुई है कि उन्हें नाम-रसायन भूल गया है। इस भेद को वही बूझता है, जिसे परमात्मा स्वयं ज्ञान देता है और गुरु के शब्द द्वारा ही जीव मुक्त हुआ है। नानक कहते हैं कि जिसने अपने अभिमान एवं द्वैतभाव को त्याग दिया है, तारनहार परमेश्वर ने स्वयं ही उसका उद्धार कर दिया है॥ २५॥

मनमुखि भूलै जम की काणि ॥ पर घरु जोहै हाणे हाणि ॥ मनमुखि भरमि भवै बेबाणि ॥ वेमारगि मूसै मंत्रि मसाणि ॥ सबदु न चीनै लवै कुबाणि ॥ नानक साचि रते सुखु जाणि ॥ २६ ॥

मनमुखी जीव भूलकर यम का मोहताज बना रहता है। वह पराई नारी की ओर देखता है, जिस कारण उसे सिर्फ नुक्सान ही उठाना पड़ता है। स्वेच्छाचारी जीव भ्रम में जादू-टोने के चक्कर में भटकते रहते हैं। ऐसे वाममार्ग वाले मनुष्य लुटे जा रहे हैं और श्मशान में मंत्र पढ़कर भूतों-प्रेतों की ही पूजा करते हैं। वह शब्द की पहचान नहीं करते और अशिष्ट भाषा का ही इस्तेमाल करते हैं। हे नानक ! जो व्यक्ति सत्य में लीन रहते हैं, उन्हें ही सुख उपलब्ध होता है॥ २६॥

गुरमुखि साचे का भउ पावै ॥ गुरमुखि बाणी अघड़ु घड़ावै ॥ गुरमुखि निरमल हरि गुण गावै ॥ गुरमुखि पवित्रु परम पदु पावै ॥ गुरमुखि रोमि रोमि हरि धिआवै ॥ नानक गुरमुखि साचि समावै ॥ २७ ॥

(गुरु नानक देव जी सिद्धों को गुरुमुख के गुण बताते हुए कहते हैं कि) गुरुमुख जीव अपने मन में सच्चे परमात्मा का भय बनाकर रखता है और गुरु की वाणी द्वारा असाध्य मन को वशीभूत कर लेता है। वह निर्मल भावना से परमात्मा का गुणगान करता है और पवित्र परमपद को प्राप्त कर लेता है। वह अपने रोम-रोम से ईश्वर का ध्यान करता रहता है। हे नानक ! इस प्रकार गुरुमुख परम-सत्य में ही विलीन हो जाता है॥ २७॥

गुरमुखि परचै बेद बीचारी ॥ गुरमुखि परचै तरीऐ तारी ॥ गुरमुखि परचै सु सबदि गिआनी ॥ गुरमुखि परचै अंतर बिधि जानी ॥ गुरमुखि पाईऐ अलख अपारु ॥ नानक गुरमुखि मुकति दुआरु ॥ २८ ॥

गुरुमुख सत्य में ही लीन रहता है और वह वेदों का ज्ञाता बन जाता है। वह ईश्वर में लीन रहकर भवसागर से पार हो जाता है और सत्य में लीन रहकर शब्द का ज्ञाता बन जाता है। वह सत्य में प्रवृत्त रहकर मन की विधि को जान लेता है। वह अलख-अपार परमात्मा को प्राप्त कर लेता है। हे नानक ! गुरुमुख को मुक्ति का द्वार प्राप्त हो जाता है॥ २८॥

गुरमुखि अकथु कथै बीचारि ॥ गुरमुखि निबहै सपरवारि ॥ गुरमुखि जपीऐ अंतरि पिआरि ॥ गुरमुखि पाईऐ सबदि अचारि ॥ सबदि भेदि जाणै जाणाई ॥ नानक हउमै जालि समाई ॥ २९ ॥

गुरुमुख विचार कर अकथनीय सत्य का ही कथन करता है और परिवार में रहते हुए ही उसकी परमात्मा से प्रीति अंत तक निभ जाती है। वह अपने मन में श्रद्धा-प्रेम से प्रभु का ही जाप करता रहता है और शब्द द्वारा शुभ-आचरण बनाकर ब्रह्म को प्राप्त कर लेता है। शब्द के भेद को जानने वाला गुरुमुख सत्य को जान लेता है और दूसरों को भी इसका ज्ञान देता है। हे नानक! वह अपने अहम् को जलाकर सत्य में ही विलीन हो जाता है॥ २९॥

गुरमुखि धरती साचै साजी ॥ तिस महि ओपति खपति सु बाजी ॥ गुर कै सबदि रपै रंगु लाइ ॥ साचि रतउ पति सिउ घरि जाइ ॥ साच सबद बिनु पति नही पावै ॥ नानक बिनु नावै किउ साचि समावै ॥ ३० ॥

(गुरु जी सिद्धों को बताते हैं कि) गुरुमुख के लिए परमात्मा ने यह धरती बनाई है। उसने इस धरती में जीवों की उत्पति एवं प्रलय की अपनी एक लीला रची हुई है। जो जीव गुरु के शब्द में लीन होकर परमात्मा का रंग लगा लेता है, वह सत्य में रत होकर शोभा सहित अपने घर पहुँचता है। सच्चे शब्द के बिना कोई भी सत्य के दरबार में सम्मान का पात्र नहीं बनता। हे नानक! नाम के बिना जीव कैसे सत्य में विलीन हो सकता है॥ ३०॥

गुरमुखि असट सिधी सभि बुधी ॥ गुरमुखि भवजलु तरीऐ सच सुधी ॥ गुरमुखि सर अपसर बिधि जाणै ॥ गुरमुखि परविरति नरविरति पछाणै ॥ गुरमुखि तारे पारि उतारे ॥ नानक गुरमुखि सबदि निसतारे ॥ ३१ ॥

गुरुमुख को सुमति एवं आठ सिद्धियों की प्राप्ति हो जाती है। वह सत्य का ज्ञान होने के कारण भवसागर को पार कर लेता है। वह शुभ एवं अशुभ कर्म की विधि को जान लेता है और अंतर्मुखी ज्ञान एवं बहिर्मुखी कर्म होने के मार्ग को पहचान लेता है। वह अपने संगियों को संसार-सागर से पार करवा देता है। हे नानक! गुरुमुख शब्द द्वारा ही उनका निस्तार करवाता है॥ ३१॥

नामे राते हउमै जाइ ॥ नामि रते सचि रहे समाइ ॥ नामि रते जोग जुगति बीचारु ॥ नामि रते पावहि मोख दुआरु ॥ नामि रते त्रिभवण सोझी होइ ॥ नानक नामि रते सदा सुखु होइ ॥ ३२ ॥

(गुरु जी उपदेश देते हैं कि) परमात्मा के नाम में लीन होने से आत्माभिमान दूर हो जाता है। नाम में प्रवृत्त रहने वाला जीव सत्य में ही समाया रहता है। हरि-नाम में रत रहने वाले को योग-युक्ति का ज्ञान हो जाता है। प्रभु-नाम में लीन रहने वाला जीव मोक्ष-द्वार प्राप्त कर लेता है और नाम में लीन रहने से तीनों लोकों का ज्ञान हो जाता है। हे नानक! नाम में लीन रहने से सदा सुख प्राप्त होता है॥ ३२॥

नामि रते सिध गोसटि होइ ॥ नामि रते सदा तपु होइ ॥ नामि रते सचु करणी सारु ॥ नामि रते गुण गिआन बीचारु ॥ बिनु नावै बोलै सभु वेकारु ॥ नानक नामि रते तिन कउ जैकारु ॥ ३३ ॥

ईश्वर के नाम में लीन रहने से ही सिद्ध गोष्ठी सफल हो जाती है। नाम में प्रवृत्त रहने से ही तपस्या हो जाती है। नाम में लीन रहना ही सच्ची करनी है और नाम में रत रहना ही परमात्मा के गुणों और ज्ञान का विचार है। नाम के बिना बोलना सब बेकार है। हे नानक! नाम में लीन रहने वाले महापुरुषों को उनका प्रणाम है॥ ३३॥

पूरे गुर ते नामु पाइआ जाइ ॥ जोग जुगति सचि रहै समाइ ॥ बारह महि जोगी भरमाए संनिआसी छिअ चारि ॥ गुर कै सबदि जो मरि जीवै सो पाए मोख दुआरु ॥ बिनु सबदै सभि दूजै लागे देखहु रिदै बीचारि ॥ नानक वडे से वडभागी जिनी सचु रखिआ उर धारि ॥ ३४ ॥

पूर्ण गुरु से ही नाम प्राप्त होता है और सत्य में लीन रहना ही योग की सच्ची युक्ति है। योगी अपने बारह सम्प्रदायों में भटकते रहते हैं और सन्यासी अपने दस सम्प्रदायों में भटकते रहते हैं। जो व्यक्ति गुरु के शब्द द्वारा जीवन्मुक्त हो जाता है, उसे मोक्ष द्वार प्राप्त हो जाता है। अपने हृदय में भलीभांति विचार करके देख लो, ब्रह्म-शब्द के बिना लोग द्वैतभाव में ही लगे हुए हैं। हे नानक ! वही मनुष्य बड़े और भाग्यवान हैं, जिन्होंने अपने हृदय में सत्य को बसाकर रखा हुआ है॥ ३४॥

गुरमुखि रतनु लहै लिव लाइ ॥ गुरमुखि परखै रतनु सुभाइ ॥ गुरमुखि साची कार कमाइ ॥ गुरमुखि साचे मनु पतीआइ ॥ गुरमुखि अलखु लखाए तिसु भावै ॥ नानक गुरमुखि चोट न खावै ॥ ३५ ॥

गुरुमुख की नाम-रत्न में ही लगन लगी रहती है और सहज-स्वभाव ही नाम-रत्न की परख कर लेता है। वह नाम-सिमरन का ही सच्चा कार्य करता रहता है और उसका मन सत्य में ही विश्वस्त हो जाता है। गुरुमुख अन्यों को भी अलख प्रभु के दर्शन करवा देता है और यही उसे अच्छा लगता है। हे नानक ! गुरुमुख यम की चोट नहीं खाता॥ ३५॥

गुरमुखि नामु दानु इसनानु ॥ गुरमुखि लागै सहजि धिआनु ॥ गुरमुखि पावै दरगह मानु ॥ गुरमुखि भउ भंजनु परधानु ॥ गुरमुखि करणी कार कराए ॥ नानक गुरमुखि मेलि मिलाए ॥ ३६ ॥

गुरुमुख नाम जपता है, शरीर की शुद्धता के लिए स्नान करता और गरीबों को दान देता है। उसका सहज ही ईश्वर में ध्यान लगा रहता है और उसे सत्य के दरबार में सम्मान प्राप्त हो जाता है। हे नानक ! गुरुमुख भयनाशक परमेश्वर का चिंतन करके प्रमुख बन जाता है। वह अन्यों से भी नाम-दान का शुभ कर्म करवाता है। नानक कहते हैं कि गुरुमुख अपने संगियों को भी ईश्वर से मिला देता है॥ ३६॥

गुरमुखि सासत्र सिम्रिति बेद ॥ गुरमुखि पावै घटि घटि भेद ॥ गुरमुखि वैर विरोध गवावै ॥ गुरमुखि सगली गणत मिटावै ॥ गुरमुखि राम नाम रंगि राता ॥ नानक गुरमुखि खसमु पछाता ॥ ३७ ॥

गुरुमुख शास्त्रों, स्मृतियों एवं वेदों का ज्ञाता होता है और वह घट-घट में व्याप्त ईश्वर के रहस्य को जान लेता है। वह मन में से वैर-विरोध की भावना को दूर कर देता है और सब हिसाब मिटा देता है। वह राम नाम के रंग में ही लीन रहता है। हे नानक ! गुरुमुख ने मालिक-प्रभु को पहचान लिया है॥ ३७॥

बिनु गुर भरमै आवै जाइ ॥ बिनु गुर घाल न पवई थाइ ॥ बिनु गुर मनूआ अति डोलाइ ॥ बिनु गुर त्रिपति नही बिखु खाइ ॥ बिनु गुर बिसीअरु डसै मरि वाट ॥ नानक गुर बिनु घाटे घाट ॥ ३८ ॥

गुरु के बिना जीव भ्रम में पड़कर जन्म-मरण में फँसा रहता है और गुरु के बिना कोई भी कार्य सफल नहीं होता। गुरु के बिना जीव का मन बहुत डगमगाता रहता है और गुरु बिना मन को तृप्ति नहीं होती और वह माया रूपी विष ही सेवन करता रहता है। गुरु के बिना माया रूपी सर्प जीव को डंस लेता है और वह जीवन रूपी पंथ में ही प्राण त्याग देता है। हे नानक ! गुरु के बिना मनुष्य को अपने जीवन में घाटा ही घाटा होता है॥ ३८॥

जिसु गुरु मिलै तिसु पारि उतारै ॥ अवगण मेटै गुणि निसतारै ॥ मुकति महा सुख गुर सबदु बीचारि ॥ गुरमुखि कदे न आवै हारि ॥ तनु हटड़ी इहु मनु वणजारा ॥ नानक सहजे सचु वापारा ॥ ३६ ॥

जिस व्यक्ति को गुरु मिल जाता है, वह उसे संसार-सागर से पार उतार देता है। वह उसके अवगुण मिटाकर उसे गुण प्रदान कर देता है। गुरु-शब्द का चिंतन करने से मुक्ति एवं परम सुख प्राप्त हो जाता है। गुरुमुख जीव जीवन में कभी पराजित नहीं होता। मनुष्य का यह तन एक दुकान है और इसमें मन एक व्यापारी बैठा है। नानक कहते हैं कि यह मन सहज ही सत्य का व्यापार करता रहता है॥ ३६॥

गुरमुखि बांधिओ सेतु बिधातै ॥ लंका लूटी दैत संतापै ॥ रामचंदि मारिओ अहि रावणु ॥ भेदु बभीखण गुरमुखि परचाइणु ॥ गुरमुखि साइरि पाहण तारे ॥ गुरमुखि कोटि तेतीस उधारे ॥ ४० ॥

विधाता ने गुरुमुखों के लिए समुद्र पर सेतु बांध दिया था। इस प्रकार रावण की लंका को लूट लिया और दैत्यों का संहार हुआ। विभीषण ने रावण का भेद बताया तो रामचन्द्र जी ने लंकापति रावण का वध कर दिया। गुरु ने पत्थरों को भी समुद्र से तार दिया है और तेतीस करोड़ देवताओं का भी उद्धार कर दिया है॥ ४०॥

गुरमुखि चूकै आवण जाणु ॥ गुरमुखि दरगह पावै माणु ॥ गुरमुखि खोटे खरे पछाणु ॥ गुरमुखि लागै सहजि धिआनु ॥ गुरमुखि दरगह सिफति समाइ ॥ नानक गुरमुखि बंधु न पाइ ॥ ४१ ॥

गुरुमुख का जन्म-मरण का चक्र समाप्त हो जाता है और उसे भगवान के दरबार में शोभा प्राप्त हो जाती हे। उसे बुरे-भले की पहचान हो जाती है और सहज ही उसका परम-सत्य में ध्यान लगा रहता है। वह सत्य के दरबार में जाकर परमात्मा की स्तुति में ही लीन रहता है। नानक कहते हैं कि गुरुमुख को कोई बन्धन नहीं पड़ता॥ ४१॥

गुरमुखि नामु निरंजन पाए ॥ गुरमुखि हउमै सबदि जलाए ॥ गुरमुखि साचे के गुण गाए ॥ गुरमुखि साचै रहै समाए ॥ गुरमुखि साचि नामि पति ऊतम होइ ॥ नानक गुरमुखि सगल भवण की सोझी होइ ॥ ४२ ॥

गुरुमुख को निरंजन नाम प्राप्त हो जाता है और वह शब्द द्वारा अहंत्व को जला देता है। वह सच्चे परमेश्वर का ही गुणगान करता है और सत्य में ही लीन रहता है। वह परमात्मा का नाम जपता रहता है और उसकी प्रतिष्ठा उत्तम हो जाती है। नानक कहते हैं कि गुरुमुख को समूचे विश्व की सूझ हो जाती है॥ ४२॥

कवण मूलु कवण मति वेला ॥ तेरा कवणु गुरू जिस का तू चेला ॥ कवण कथा ले रहहु निराले ॥ बोलै नानकु सुणहु तुम बाले ॥ एसु कथा का देइ बीचारु ॥ भवजलु सबदि लंघावणहारु ॥ ४३ ॥

(सिद्धों ने एक बार फिर गुरु नानक देव जी से पूछा—) सृष्टि का मूल क्या है? यह मानव-जीवन कौन-सा उपदेश लेने का समय है? तेरा गुरु कौन है, जिसका तू चेला है? कौन-सी कथा लेकर तू दुनिया से निर्लिप्त रहता है? हे बालक नानक! जो हम बोल रहे हैं तुम ध्यान से सुनो। हमें इस कथा का भी अपना विचार बताओ कि शब्द संसार-सागर से पार करवाने वाला है?॥ ४३॥

पवन अरंभु सतिगुर मति वेला ॥ सबदु गुरू सुरति धुनि चेला ॥ अकथ कथा ले रहउ निराला ॥ नानक जुगि जुगि गुर गोपाला ॥ एकु सबदु जितु कथा वीचारी ॥ गुरमुखि हउमै अगनि निवारी ॥ ४४ ॥

(गुरु नानक देव जी उत्तर देते हैं कि) सृष्टि का आरम्भ पवन रूपी श्वास है। यह मानव-जीवन सतगुरु का उपदेश लेने का शुभावसर है। शब्द मेरा गुरु है और शब्द की ध्वनि को सुनने वाली मेरी सुरति उसका चेला है। अकथनीय प्रभु की कथा लेकर मैं दुनिया से निर्लिप्त रहता हूँ। हे नानक ! युग-युगान्तर एकमात्र परमात्मा ही विद्यमान है। एक शब्द ही है, जिस की कथा का विचार किया है। गुरु द्वारा अहम् रूपी अग्नि को मन में से दूर कर दिया है॥ ४४॥

मैण के दंत किउ खाईऐ सारु ॥ जितु गरबु जाइ सु कवणु आहारु ॥ हिवै का घरु मंदरु अगनि पिराहनु ॥ कवन गुफा जितु रहै अवाहनु ॥ इत उत किस कउ जाणि समावै ॥ कवन धिआनु मनु मनहि समावै ॥ ४५ ॥

(सिद्धों ने प्रश्न किया—) मोम के दाँतों द्वारा लोहे को कैसे चबाया जा सकता है ? वह कौन-सा भोजन है, जिसे खाने से मन का अभिमान दूर हो जाता है? यदि रहने के लिए बर्फ का घर बना हो तो अग्नि की कौन-सी पोशाक पहनी जाती है ? वह कौन-सी गुफा है, जिस में मन स्थिर रहता है ? लोक-परलोक में यह मन किसे जानकर उसमें लीन हो जाता है ? वह कौन-सा ध्यान है, जिसमें मन अपने आप में ही विलीन हो जाता है॥ ४५॥

हउ हउ मै मै विचहु खोवै ॥ दूजा मेटै एको होवै ॥ जगु करड़ा मनमुखु गावारु ॥ सबदु कमाईऐ खाईऐ सारु ॥ अंतरि बाहरि एको जाणै ॥ नानक अगनि मरै सतिगुर कै भाणै ॥ ४६ ॥

(गुरु जी ने उत्तर दिया—) जो व्यक्ति अहंत्व एवं ममत्व की भावना को मन से दूर कर देता है, वह अपनी दुविधा को मिटाकर ईश्वर का ही रूप बन जाता है। मूर्ख स्वेच्छाचारी जीव के लिए यह जगत् ही कड़ा लोहा है। जो शब्द की साधना करता है, वही कड़े लोहे को चबाता है। वह अन्तर एवं बाहर जगत् में ईश्वर को ही व्यापक मानता है। हे नानक ! तृष्णाग्नि सतगुरु की रज़ा में रहने से ही समाप्त होती है॥ ४६॥

सच भै राता गरबु निवारै ॥ एको जाता सबदु वीचारै ॥ सबदु वसै सचु अंतरि हीआ ॥ तनु मनु सीतलु रंगि रंगीआ ॥ कामु क्रोधु बिखु अगनि निवारे ॥ नानक नदरी नदरि पिआरे ॥ ४७ ॥

सत्य के भय में लीन हुआ जीव जब अपने घमण्ड का निवारण कर देता है, तो एक परमेश्वर की सत्ता को जानकर वह शब्द का ही चिंतन करता है। इस प्रकार उसके अन्तर्मन में ब्रह्म-शब्द का निवास हो जाता है, उसका मन-तन शीतल हो जाता है और वह परमात्मा के रंग में रंगीन हो जाता है। वह अपने अन्तर से काम, क्रोध एवं विष रूपी तृष्णाग्नि को दूर कर देता है। हे नानक ! प्यारे प्रभु की कृपा-दृष्टि से वह आनंदित हो जाता है॥ ४७॥

कवन मुखि चंदु हिवै घरु छाइआ ॥ कवन मुखि सूरजु तपै तपाइआ ॥ कवन मुखि कालु जोहत नित रहै ॥ कवन बुधि गुरमुखि पति रहै ॥ कवनु जोधु जो कालु संघारै ॥ बोलै बाणी नानकु बीचारै ॥ ४८ ॥

(सिद्धों ने पुनः प्रश्न किया—) कैसे (मन रूपी) चन्द्रमा बर्फ रूपी हृदय घर में शीतलता प्राप्त करता रहता है ? कैसे (शक्ति रूपी) सूर्य प्रचण्ड तपता रहता है ? किस तरह यम नित्य जीवों

की ओर दृष्टि करता रहता है? कौन-सी बुद्धि द्वारा गुरुमुख की प्रतिष्ठा बनी रहती है? वह कौन-सा योद्धा है, जो काल का भी संहार कर देता है? सिद्ध जो बोलते हैं, नानक उन प्रश्नों का विचार करके उत्तर देते हैं॥ ४८॥

सबदु भाखत ससि जोति अपारा ॥ ससि घरि सूरु वसै मिटै अंधिआरा ॥ सुखु दुखु सम करि नामु अधारा ॥ आपे पारि उतारणहारा ॥ गुर परचै मनु साचि समाइ ॥ प्रणवति नानकु कालु न खाइ ॥ ४६ ॥

(गुरु नानक ने उत्तर दिया कि) शब्द गान करने से (मन रूपी) चन्द्रमा के हृदय-घर में अपार ज्योति का प्रकाश हो जाता है। जब चन्द्रमा के घर में सूर्य का निवास हो जाता है तो सारा अंधेरा मिट जाता है। जब नाम जीवन का आधार बन जाता है तो जीव सुख-दुख को एक समान समझने लगता है। परमात्मा स्वयं ही भवसागर से पार उतारने वाला है। गुरु से विश्वस्त होकर मन सत्य में ही विलीन हो जाता है। नानक प्रार्थना करते हैं कि फिर काल जीव को ग्रास नहीं बनाता॥ ४६॥

नाम ततु सभ ही सिरि जापै ॥ बिनु नावै दुखु कालु संतापै ॥ ततो ततु मिलै मनु मानै ॥ दूजा जाइ इकतु घरि आनै ॥ बोलै पवना गगनु गरजै ॥ नानक निहचलु मिलणु सहजै ॥ ५० ॥

(गुरु जी सिद्धों को समझाते हैं कि) प्रभु का नाम तत्त्व सर्वोत्तम है। नाम के बिना जीव को मृत्यु का दुख एवं संताप बना रहता है। जब आत्मतत्व परमतत्व से मिल जाता है तो मन संतुष्ट हो जाता है। उसकी दुविधा दूर हो जाती है और वह प्रभु-चरणों में विलीन हो जाता है। जब प्राण रूपी पवन प्रभु का नाम बोलता है तो दशम द्वार रूपी आकाश गर्जता है। हे नानक! नाम-स्मरण से मन निश्चल हो जाता है और सहज ही उसका सत्य से मिलन हो जाता है॥ ५०॥

अंतरि सुंनं बाहरि सुंनं त्रिभवण सुंन मसुंनं ॥ चउथे सुंनै जो नरु जाणै ता कउ पापु न पुंनं ॥ घटि घटि सुंन का जाणै भेउ ॥ आदि पुरखु निरंजन देउ ॥ जो जनु नाम निरंजन राता ॥ नानक सोई पुरखु बिधाता ॥ ५१ ॥

जीव के अन्तर एवं बाहर शून्य (प्रभु) ही स्थित है। तीनों लोकों में भी शून्य की ही सत्ता है। जो आदमी तुरीयावस्था में शून्य को जान लेता है, उसे पाप पुण्य प्रभावित नहीं करता। वह घट-घट में व्यापक शून्य का भेद हासिल कर लेता है और आदिपुरुष, निरंजन का बोध प्राप्त कर लेता है। हे नानक! जो व्यक्ति निरंजन नाम में लीन हो जाता है, वह विधाता का रूप हो जाता है॥ ५१॥

सुंनो सुंनु कहै सभु कोई ॥ अनहत सुंनु कहा ते होई ॥ अनहत सुंनि रते से कैसे ॥ जिस ते उपजे तिस ही जैसे ॥ ओइ जनमि न मरहि न आवहि जाहि ॥ नानक गुरमुखि मनु समझाहि ॥ ५२ ॥

(सिद्धों ने पुनः प्रश्न किया–) प्रत्येक व्यक्ति शून्य-शून्य कहता रहता है। लेकिन यह अनहत शून्य कहाँ से पैदा हुआ है? जो अनहत शून्य में प्रवृत्त हुए हैं, वे कैसे हैं? (गुरु नानक देव जी ने उत्तर दिया–) जिस परमात्मा से वे उत्पन्न हुए हैं, वे उस जैसे ही बन जाते हैं। वे जन्म-मरण से छूट जाते हैं, अतः न ही वे जन्म लेकर आते हैं और न ही मृत्यु को प्राप्त होकर यहाँ से जाते हैं। हे नानक! गुरुमुख भूले हुए मन को समझा लेते हैं॥ ५२॥

नउ सर सुभर दसवै पूरे ॥ तह अनहत सुंन वजावहि तूरे ॥ साचै राचे देखि हजूरे ॥ घटि घटि साचु रहिआ भरपूरे ॥ गुपती बाणी परगटु होइ ॥ नानक परखि लए सचु सोइ ॥ ५३ ॥

जब मनुष्य की दो आँखें, दो कान, नासिका, मुँह इत्यादि नौ सरोवर नामामृत से भर जाते हैं तो उसका दसम द्वार भी नामामृत से परिपूर्ण हो जाता है और तभी वह अनाहद शब्द की ध्वनि बजाता है। वह सत्य को साक्षात् देखकर उस में ही लीन हो जाता है क्योंकि घट-घट में सत्यस्वरूप परमात्मा समाया हुआ है। हे नानक ! जिसके मन में अनहद शब्द रूपी गुप्त वाणी प्रगट हो जाती है, वह सत्य की पहचान कर लेता है॥ ५३॥

सहज भाइ मिलीऐ सुखु होवै ॥ गुरमुखि जागै नीद न सोवै ॥ सुंन सबदु अपरंपरि धारै ॥ कहते मुकतु सबदि निसतारै ॥ गुर की दीखिआ से सचि राते ॥ नानक आपु गवाइ मिलण नही भ्राते ॥ ५४ ॥

सहज स्वभाव परमात्मा को मिलने से ही सुख उपलब्ध होता है। गुरुमुख सदा ही जागृत रहता है और वह अज्ञान की निद्रा में नहीं सोता। अनहद शब्द को अपरंपार प्रभु ही उत्पन्न करता है। नाम-सिमरन करने वाले की मुक्ति हो जाती है और शब्द द्वारा अन्यों का भी कल्याण हो जाता है। गुरु से दीक्षा लेने वाला सत्य में ही विलीन रहता है। हे नानक ! अहंत्व को दूर करने से ही सत्य से मिलाप होता है किन्तु भ्रम में फँसने से मिलाप नहीं होता॥ ५४॥

कुबुधि चवावै सो कितु ठाइ ॥ किउ ततु न बूझै चोटा खाइ ॥ जम दरि बाधे कोइ न राखै ॥ बिनु सबदै नाही पति साखै ॥ किउ करि बूझै पावै पारु ॥ नानक मनमुखि न बुझै गवारु ॥ ५५ ॥

{सिद्धों ने फिर से प्रश्न किया–} वह कौन-सा ठिकाना है, जहाँ रहकर मनमुख अपनी खोटी बुद्धि को नाश कर देता है ? वह यम से चोटें खाता रहता है और परमतत्व को क्यों नहीं बूझता ? (गुरु जी उत्तर देते हैं कि) यम के द्वार पर बंधे हुए जीव की कोई भी रक्षा नहीं करता और शब्द के बिना कोई भी उसकी इज्जत एवं उस पर भरोसा नहीं करता। वह सत्य को कैसे पहचान सकता है और कैसे भवसागर से पार हो सकता है। हे नानक ! मूर्ख मनमुख को कभी ज्ञान नहीं होता॥ ५५॥

कुबुधि मिटै गुर सबदु बीचारि ॥ सतिगुरु भेटै मोख दुआर ॥ ततु न चीनै मनमुखु जलि जाइ ॥ दुरमति विछुड़ि चोटा खाइ ॥ मानै हुकमु सभे गुण गिआन ॥ नानक दरगह पावै मानु ॥ ५६ ॥

{गुरु जी उत्तर देते हैं–} गुरु-शब्द का चिंतन करने से खोटी बुद्धि का नाश हो जाता है। सतगुरु से साक्षात्कार होने से मोक्ष द्वार मिल जाता है। मनमुख परमतत्व की पहचान नहीं करता इसलिए जलकर राख हो जाता है। जीव अपनी दुर्मति के कारण सत्य से बिछुड़ कर यम का दुख भोगता रहता है। परमात्मा के हुक्म का पालन करने वाला सभी गुणों एवं ज्ञान को हासिल कर लेता है। हे नानक ! वही मनुष्य दरबार में सम्मान प्राप्त करता है॥ ५६॥

साचु वखरु धनु पलै होइ ॥ आपि तरै तारे भी सोइ ॥ सहजि रता बूझै पति होइ ॥ ता की कीमति करै न कोइ ॥ जह देखा तह रहिआ समाइ ॥ नानक पारि परै सच भाइ ॥ ५७ ॥

जिसके पास सत्य रूपी धन राशि होती है, वह स्वयं तो भवसागर से पार होता ही है, अपने संगियों का भी उद्धार करवा देता है। जो सहज ही सत्य में लीन रहता है, वह सत्य को बूझकर शोभा का पात्र बन जाता है। ऐसे व्यक्ति की सही कीमत कोई नहीं कर सकता। वह जिधर भी देखता है, उसे भगवान ही दिखाई देता है। हे नानक ! सत्य में श्रद्धा भावना रखने से जीव का कल्याण हो जाता है॥ ५७॥

सु सबद का कहा वासु कथीअले जितु तरीऐ भवजलु संसारो ॥ त्रै सत अंगुल वाई कहीऐ तिसु कहु कवनु अधारो ॥ बोलै खेलै असथिरु होवै किउ करि अलखु लखाए ॥ सुणि सुआमी सचु नानकु प्रणवै अपणे मन समझाए ॥ गुरमुखि सबदे सचि लिव लागै करि नदरी मेलि मिलाए ॥ आपे दाना आपे बीना पूरै भागि समाए ॥ ५८ ॥

(सिद्धों ने पुनः पूछा—) उस शब्द का निवास कहाँ पर है, जिस द्वारा संसार रूपी भवजल से उद्धार होता है? दस अंगुल बाहर आने वाले प्राण-वायु का वास्तव में क्या आधार है ? जो सत्ता बोलती एवं खेलती रहती है, वह कैसे स्थिर हो सकती है ? और क्योंकर परमात्मा के दर्शन कर सकती है? गुरु जी ने उत्तर दिया—हे स्वामी ! जरा ध्यान से सुनो; नानक सच्ची प्रार्थना करता है कि मन को समझाने से ही स्थिर किया जा सकता है। जब गुरुमुख बनकर शब्द द्वारा सत्य में ध्यान लग जाता है तो ईश्वर अपनी करुणा-दृष्टि से साथ मिला लेता है। परमात्मा स्वयं ही चतुर एवं सर्वज्ञाता है और पूर्ण भाग्य से ही जीव उसमें विलीन होता है॥ ५८॥

सु सबद कउ निरंतरि वासु अलखं जह देखा तह सोई ॥ पवन का वासा सुंन निवासा अकल कला धर सोई ॥ नदरि करे सबदु घट महि वसै विचहु भरमु गवाए ॥ तनु मनु निरमलु निरमल बाणी नामो मंनि वसाए ॥ सबदि गुरू भव सागरु तरीऐ इत उत एको जाणै ॥ चिहनु वरनु नही छाइआ माइआ नानक सबदु पछाणै ॥ ५६ ॥

उस शब्द का निरंतर सब में निवास है, वह अदृष्ट है, फिर भी जिधर भी देखो, वही समाया हुआ है। जैसे पवन हर जगह फैली हुई है, वैसे ही शब्द का निवास है। वह निर्गुण भी है और सगुण भी है। जब परमात्मा अपनी कृपा-दृष्टि करता है तो हृदय में शब्द का निवास हो जाता है और मन का भ्रम दूर हो जाता है। जो निर्मल वाणी द्वारा नाम को मन में बसा लेता है, उसका तन-मन निर्मल हो जाता है। जो व्यक्ति शब्द-गुरु द्वारा संसार-सागर से पार हो जाता है, वह लोक-परलोक में व्यापक ईश्वर को जान लेता है। हे नानक ! यह माया जिस परमात्मा की छाया है, उसका कोई चिन्ह एवं वर्ण नहीं। जीव फिर शब्द की पहचान कर लेता है॥ ५६॥

त्रै सत अंगुल वाई अउधू सुंन सचु आहारो ॥ गुरमुखि बोलै ततु बिरोलै चीनै अलख अपारो ॥ त्रै गुण मेटै सबदु वसाए ता मनि चूकै अहंकारो ॥ अंतरि बाहरि एको जाणै ता हरि नामि लगै पिआरो ॥ सुखमना इड़ा पिंगुला बूझै जा आपे अलखु लखाए ॥ नानक तिहु ते ऊपरि साचा सतिगुर सबदि समाए ॥ ६० ॥

हे अवधूत ! दस अंगुल के प्रमाण वाले प्राण-वायु का मुख्याधार परम-सत्य का चिंतन है। गुरुमुख नाम जपता एवं परम-तत्व को बिलोता रहता है और अलख अपार को पहचान लेता है। वह माया के तीन गुणों को मिटाकर शब्द को बसा लेता है, जिससे उसके मन का अहंकार दूर हो जाता है। यदि वह अन्तर एवं बाहर ईश्वर की सत्ता को समझ ले तो ही उसका हरि-नाम से प्रेम होता है। जब परमात्मा स्वयं ही दर्शन देता है तो गुरुमुख इड़ा, पिंगला एवं सुषुम्ना नाड़ियों द्वारा हासिल होने वाले ज्ञान को बूझ लेता है। हे नानक ! सच्चा परमेश्वर इन तीनों नाड़ियों से सर्वोच्च है और शब्द द्वारा ही उसमें लीन हुआ जा सकता है॥ ६०॥

मन का जीउ पवनु कथीअले पवनु कहा रसु खाई ॥ गिआन की मुद्रा कवन अउधू सिध की कवन कमाई ॥ बिनु सबदै रसु न आवै अउधू हउमै पिआस न जाई ॥ सबदि रते अंम्रित रसु पाइआ

साचे रहे अघाई ॥ कवन बुधि जितु असथिरु रहीऐ कितु भोजनि त्रिपतासै ॥ नानक दुखु सुखु सम करि जापै सतिगुर ते कालु न ग्रासै ॥ ६१ ॥

(सिद्धों ने फिर पूछा—) मन का (जीवन) प्राण वायु कहा जाता है किन्तु यह (प्राण) वायु कहाँ से आहार प्राप्त करता है ? ज्ञान प्राप्त करने की मुद्राएँ अर्थात् साधन कौन-से हैं और कौन-सी साधना द्वारा जीव सिद्ध बन जाता है ? (गुरु जी उत्तर देते हैं कि) हे अवधूत ! शब्द के बिना रस प्राप्त नहीं होता और अभिमान के कारण लालसा दूर नहीं होती। शब्द में लीन हुए जीव को ही हरि-नामामृत रस प्राप्त होता है और सत्य से तृप्त हो जाता है। (सिद्धों ने प्रश्न किया—) वह कौन-सी बुद्धि है, जिससे मन स्थिर रहता है और यह किस भोजन से तृप्त हो जाता है। गुरु नानक कहते हैं कि सतगुरु से दीक्षा लेने से ही जीव को दुख-सुख एक समान मालूम होता है और फिर उसे काल भी ग्रास नहीं बनाता॥ ६१॥

रंगि न राता रसि नही माता ॥ बिनु गुर सबदै जलि बलि ताता ॥ बिंदु न राखिआ सबदु न भाखिआ ॥ पवनु न साधिआ सचु न अराधिआ ॥ अकथ कथा ले सम करि रहै ॥ तउ नानक आतम राम कउ लहै ॥ ६२ ॥

जो व्यक्ति प्रभु के रंग में लीन नहीं हुआ, वह इस रस में कभी मस्त नहीं हुआ। शब्द-गुरु के बिना वह क्रोध की अग्नि में ही जलता रहता है। जिसने अपना वीर्य संभाल कर नहीं रखा, उसने कभी अपने मुख से शब्द का जाप नहीं किया, उसने प्राणायाम द्वारा प्राणों को वश में नहीं किया और न ही भगवान की आराधना की है। नानक कहते हैं कि यदि मनुष्य अकथनीय प्रभु की कथा करके दुख-सुख को एक समान समझ कर जीवन व्यतीत करे तो वह आत्मा में ही परमात्मा को प्राप्त कर लेता है॥ ६२॥

गुर परसादी रंगे राता ॥ अंम्रितु पीआ साचे माता ॥ गुर वीचारी अगनि निवारी ॥ अपिउ पीओ आतम सुखु धारी ॥ सचु अराधिआ गुरमुखि तरु तारी ॥ नानक बूझै को वीचारी ॥ ६३ ॥

गुरु की कृपा से ही मनुष्य प्रभु के रंग में रंगा रहता है। जिसने नामामृत का पान कर लिया है, वह सत्य में ही मग्न रहता है। गुरु की वाणी का विचार करने वाले मनुष्य ने अपनी तृष्णाग्नि बुझा ली है। जिसने नामामृत का पान किया है, उसे ही सच्चा सुख उपलब्ध हुआ है। गुरु के माध्यम से भगवान की आराधना करने से जीव भवसागर से तैर जाता है। हे नानक ! इस रहस्य को कोई विचारवान् ही समझता है॥ ६३॥

इहु मनु मैगलु कहा बसीअले कहा बसै इहु पवना ॥ कहा बसै सु सबदु अउधू ता कउ चूकै मन का भवना ॥ नदरि करे ता सतिगुरु मेले ता निज घरि वासा इहु मनु पाए ॥ आपै आपु खाइ ता निरमलु होवै धावतु वरजि रहाए ॥ किउ मूलु पछाणै आतमु जाणै किउ ससि घरि सूरु समावै ॥ गुरमुखि हउमै विचहु खोवै तउ नानक सहजि समावै ॥ ६४ ॥

(सिद्धों ने पुनः प्रश्न किया—) मस्त हाथी सरीखा यह मन कहाँ रहता है, और यह पवन रूपी प्राण कहाँ निवास करते हैं? हे अवधूत ! यह शब्द कहाँ वास करता है, जिसका जाप करने से मन की भटकन मिट जाती है। गुरु नानक उत्तर देते हैं कि जब प्रभु कृपा करता है तो वह जीव को सतगुरु से मिला देता है और फिर उसका यह मन अपने सच्चे घर में निवास प्राप्त कर लेता है।

जब यह अपने अहम् को समाप्त कर देता है तो यह निर्मल हो जाता है और फिर वह अपनी भटकन पर अंकुश लगा देता है। (सिद्धों ने फिर पूछा–) यह मन अपने मूल (परमात्मा) को कैसे पहचाने और आत्मा को कैसे जाने ? (गुरु रूपी) चन्द्रमा के घर में (शक्ति रूपी) सूर्य कैसे समा सकता है ? गुरु नानक देव जी उत्तर देते हैं कि जब गुरु के निर्देशानुसार अपने अन्तर्मन में से अहंकार को नष्ट कर देता है तो वह सहज ही विलीन हो जाता है॥ ६४॥

इहु मनु निहचलु हिरदै वसीअले गुरमुखि मूलु पछाणि रहै ॥ नाभि पवनु घरि आसणि बैसै गुरमुखि खोजत ततु लहै ॥ सु सबदु निरंतरि निज घरि आछै त्रिभवण जोति सु सबदि लहै ॥ खावै दूख भूख साचे की साचे ही त्रिपतासि रहै ॥ अनहद बाणी गुरमुखि जाणी बिरलो को अरथावै ॥ नानकु आखै सचु सुभाखै सचि रपै रंगु कबहू न जावै ॥ ६५ ॥

यह मन निश्चल हृदय में निवास करता है और गुरुमुख बनकर अपने मूल को पहचान लेता है। पवन रूपी प्राण अपने नाभि रूपी घर में आसन पर विराजमान होता है तथा गुरु की अनुकंपा से खोज करके परम तत्व को प्राप्त कर लेता है। वह शब्द अपने दसम द्वार रूपी सच्चे घर में ही निरंतर निवास करता है और शब्द द्वारा परमात्मा को ढूँढ लेता है, जिसकी ज्योति तीनों लोकों में फैली हुई है। जब मन को सत्य की भूख लगती है तो वह भूख उसके दुखों को निगल जाती है और फिर यह मन सत्य से ही तृप्त रहता है। गुरुमुख ने ही अनाहत वाणी को जान लिया है और विरले ने ही अर्थ को समझा है। गुरु नानक कहते हैं कि जो व्यक्ति सत्य का उच्चारण करता है, वह सत्य में ही रंग जाता है और फिर यह रंग कभी नहीं उतरता॥ ६५॥

जा इहु हिरदा देह न होती तउ मनु कैठै रहता ॥ नाभि कमल असथंभु न होतो ता पवनु कवन घरि सहता ॥ रूपु न होतो रेख न काई ता सबदि कहा लिव लाई ॥ रकतु बिंदु की मड़ी न होती मिति कीमति नही पाई ॥ वरनु भेखु असरूपु न जापी किउ करि जापसि साचा ॥ नानक नामि रते बैरागी इब तब साचो साचा ॥ ६६ ॥

(सिद्धों ने फिर पूछा–) जब यह हृदय एवं शरीर नहीं होता था तो यह मन कहाँ रहता था ? जब यह नाभि कमल रूपी स्तंभ नहीं होता था तो पवन रूपी प्राण किस घर में सहारा लेता था ? जब इस सृष्टि का कोई रूप-रंग एवं आकार नहीं था तो शब्द द्वारा कहाँ ध्यान लगाया जाता था ? जब माता के रक्त एवं पिता के वीर्य से बना हुआ यह शरीर नहीं था तो ईश्वर की गति की कीमत कैसे प्राप्त होती थी ? जब कोई रंग, वेष एवं रूप ही नहीं मालूम होता था तो सत्य का बोध क्योंकर होता था ? नानक कहते हैं कि प्रभु-नाम में लीन रहने वाले ही सच्चे वैरागी हैं और उन्हें भूतकाल, वर्तमान काल एवं भविष्य में परम सत्य ही दिखाई देता है॥ ६६॥

हिरदा देह न होती अउधू तउ मनु सुंनि रहै बैरागी ॥ नाभि कमलु असथंभु न होतो ता निज घरि बसतउ पवनु अनरागी ॥ रूपु न रेखिआ जाति न होती तउ अकुलीणि रहतउ सबदु सु सारु ॥ गउनु गगनु जब तबहि न होतउ त्रिभवण जोति आपे निरंकारु ॥ वरनु भेखु असरूपु सु एको एको सबदु विडाणी ॥ साच बिना सूचा को नाही नानक अकथ कहाणी ॥ ६७ ॥

(गुरु जी ने उत्तर देते हुए समझाया कि) हे अवधूत ! जब यह हृदय एवं शरीर नहीं था तो यह वैरागी मन शब्द में ही लीन रहता था। जब नाभि कमल रूपी स्तंभ नहीं होता था तो यह सत्य का प्रेमी पवन रूपी प्राण अपने सच्चे घर में निवास करता था। जब सृष्टि का कोई रूप-रंग एवं

आकार नहीं था तो वह शब्द परमात्मा में लीन रहता था। जब आवागमन एवं गगन भी नहीं था तो निरंकार की ज्योति तीनों लोकों में मौजूद थी। उस एक का रंग, वेष एवं स्वरूप बहुत सुन्दर है और स्वयं ही अद्भुत शब्द है। हे नानक ! परम सत्य के बिना कोई भी शुद्ध नहीं है और परमात्मा की लीला की कहानी भी वास्तव में अकथनीय है॥ ६७॥

कितु कितु बिधि जगु उपजै पुरखा कितु कितु दुखि बिनसि जाई ॥ हउमै विचि जगु उपजै पुरखा नामि विसरिऐ दुखु पाई ॥ गुरमुखि होवै सु गिआनु ततु बीचारै हउमै सबदि जलाए ॥ तनु मनु निरमलु निरमल बाणी साचै रहै समाए ॥ नामे नामि रहै बैरागी साचु रखिआ उरि धारे ॥ नानक बिनु नावै जोगु कदे न होवै देखहु रिदै बीचारे ॥ ६८ ॥

(सिद्धों ने फिर पूछा—) हे महापुरुष ! यह जगत् किस-किस विधि द्वारा उत्पन्न होता है और किस-किस कारण दुखों में नष्ट हो जाता है ? गुरु नानक ने समझाया कि यह जगत् अहम् में उत्पन्न होता है और यदि इसे नाम भूल जाए तो यह दुख प्राप्त करता है। जो गुरुमुख होता है, वह ज्ञान तत्व का विचार करता है और शब्द द्वारा अहम् को जला देता है। निर्मल वाणी द्वारा उसका तन-मन पावन हो जाता है और फिर वह सत्य में ही समाया रहता है। नाम से उत्पन्न हुआ नाम में लीन रहकर वैरागी बना रहता है और सत्य को हृदय में धारण करके रखता है। नानक कहते हैं कि अपने हृदय में विचार करके देख लो, नाम के बिना कभी योग नहीं होता॥ ६८॥

गुरमुखि साचु सबदु बीचारै कोइ ॥ गुरमुखि सचु बाणी परगटु होइ ॥ गुरमुखि मनु भीजै विरला बूझै कोइ ॥ गुरमुखि निज घरि वासा होइ ॥ गुरमुखि जोगी जुगति पछाणै ॥ गुरमुखि नानक एको जाणै ॥ ६९ ॥

(गुरु जी सिद्धों को समझाते हैं कि) कोई विरला गुरुमुख ही सच्चे शब्द का विचार करता है। इस प्रकार गुरुमुख के मन में सच्ची वाणी प्रगट हो जाती है। उसका मन नाम रस में भीग जाता है, पर इस तथ्य को कोई विरला ही समझता है। गुरुमुख का अपने वास्तविक घर में निवास हो जाता है और वह योग की युक्ति को पहचान लेता है। नानक कहते हैं कि गुरुमुख केवल परमात्मा को ही जानता है॥ ६९॥

बिनु सतिगुर सेवे जोगु न होई ॥ बिनु सतिगुर भेटे मुकति न कोई ॥ बिनु सतिगुर भेटे नामु पाइआ न जाइ ॥ बिनु सतिगुर भेटे महा दुखु पाइ ॥ बिनु सतिगुर भेटे महा गरबि गुबारि ॥ नानक बिनु गुर मुआ जनमु हारि ॥ ७० ॥

(गुरु जी सिद्धों को उपदेश देते हैं कि) सतगुरु की सेवा किए बिना योग-साधना नहीं हो सकती और सतगुरु से भेंट किए बिना किसी की मुक्ति नहीं होती। सतगुरु से साक्षात्कार किए बिना नाम प्राप्त नहीं होता और सतगुरु से भेंट किए बिना जीव बहुत दुख प्राप्त करता है। सतगुरु से भेंट के बिना अहंकार द्वारा मन में अज्ञान रूपी अंधेरा बना रहता है। नानक कहते हैं कि निगुरा जीव अपना जन्म व्यर्थ ही गंवा कर प्राण त्याग गया है॥ ७०॥

गुरमुखि मनु जीता हउमै मारि ॥ गुरमुखि साचु रखिआ उर धारि ॥ गुरमुखि जगु जीता जमकालु मारि बिदारि ॥ गुरमुखि दरगह न आवै हारि ॥ गुरमुखि मेलि मिलाए सुो जाणै ॥ नानक गुरमुखि सबदि पछाणै ॥ ७१ ॥

गुरुमुख ने अभिमान को समाप्त करके अपना मन जीत लिया है और सत्य को हृदय में धारण करके रखा है। उसने मृत्यु का भय समाप्त करके जगत् पर विजय पा ली है और वह यमराज से शिकस्त प्राप्त नहीं करता। गुरुमुख जीवन से पराजित होकर दरबार में नहीं आता। नानक कहते हैं कि गुरुमुख शब्द को पहचान लेता है, पर इस तथ्य को गुरुमुख ही जानता है, जिसे प्रभु साथ मिला लेता है॥ ७१॥

सबदै का निबेड़ा सुणि तू अउधू बिनु नावै जोगु न होई ॥ नामे राते अनदिनु माते नामै ते सुखु होई ॥ नामै ही ते सभु परगटु होवै नामे सोझी पाई ॥ बिनु नावै भेख करहि बहुतेरे सचै आपि खुआई ॥ सतिगुर ते नामु पाईऐ अउधू जोग जुगति ता होई ॥ करि बीचारु मनि देखहु नानक बिनु नावै मुकति न होई ॥ ७२ ॥

गुरु जी कहते हैं कि हे अवधूत! अब तू शब्द के संबंध में चल रही गोष्ठी के निष्कर्ष के बारे में जरा ध्यान से सुन कि नाम के बिना कोई योग-साधना नहीं होती। नाम में लीन जीव नित्य मस्त रहते हैं और नाम से ही सच्चा सुख प्राप्त होता है। नाम से ही सबकुछ प्रगट होता है और नाम से ही ज्ञान प्राप्त होता है। नामविहीन लोग बहुत सारे आडम्बर करते हैं और सच्चे परमेश्वर ने स्वयं ही दुनिया को भुलाया हुआ है। हे अवधूत! यदि सतगुरु से नाम प्राप्त हो जाए तो ही योग-युक्ति सफल होती है। गुरु नानक देव जी कहते हैं कि अपने मन से सोच-विचार कर देख लो, नाम के बिना जीव की मुक्ति नहीं होती॥ ७२॥

तेरी गति मिति तूहै जाणहि किआ को आखि वखाणै ॥ तू आपे गुपता आपे परगटु आपे सभि रंग माणै ॥ साधिक सिध गुरू बहु चेले खोजत फिरहि फुरमाणै ॥ मागहि नामु पाइ इह भिखिआ तेरे दरसन कउ कुरबाणै ॥ अबिनासी प्रभि खेलु रचाइआ गुरमुखि सोझी होई ॥ नानक सभि जुग आपे वरतै दूजा अवरु न कोई ॥ ७३ ॥ १ ॥

(गुरु नानक देव जी अन्तिम पद में परमेश्वर की स्तुति करते हुए कहते हैं कि) हे ईश्वर! तेरी जो गति एवं विस्तार है, उसे केवल तू ही जानता है, कोई कहकर क्या बखान कर सकता है? तू स्वयं ही निर्गुण रूप में गुप्त रहता है, स्वयं ही सगुण रूप में प्रगट हो जाता है और स्वयं ही सभी रंगों का आनंद लेता है। बहुत सारे सिद्ध साधक, गुरु एवं उनके शिष्य तेरे हुक्म में ही तुझे खोजते रहते हैं। वे तुझ से तेरे नाम का दान माँगते हैं, तुझ से यही भिक्षा प्राप्त करते हैं और तेरे दर्शन पर ही कुर्बान जाते हैं। यह जगत् अविनाशी प्रभु ने अपनी एक लीला रची हुई है, पर इस तथ्य की सूझ गुरुमुख को ही हुई है। गुरु नानक कहते हैं कि परमात्मा स्वयं ही सभी युगों में मौजूद है और उसके अलावा अन्य कोई नहीं है॥ ७३॥ १॥

१ओं सतिगुर प्रसादि ॥

रामकली की वार महला ३ ॥ जोधै वीरै पूरबाणी की धुनी ॥

सलोकु म: ३ ॥ सतिगुरु सहजै दा खेतु है जिस नो लाए भाउ ॥ नाउ बीजे नाउ उगवै नामे रहै समाइ ॥ हउमै एहो बीजु है सहसा गइआ विलाइ ॥ ना किछु बीजे न उगवै जो बखसे सो खाइ ॥ अंभै सेती अंभु रलिआ बहुड़ि न निकसिआ जाइ ॥ नानक गुरमुखि चलतु है वेखहु लोका आइ ॥ लोकु कि वेखै बपुड़ा जिस नो सोझी नाहि ॥ जिसु वेखाले सो वेखै जिसु वसिआ मन माहि ॥ १ ॥

श्लोक महला ३॥ सतगुरु सुख एवं शान्ति का खेत है, प्रभु जिसका प्रेम गुरु से लगा देता है, वह नाम ही बोता है, उसका बोया हुआ नाम ही पैदा होता है और फिर वह नाम में ही विलीन रहता है। जीव का अहम् ही उसके जन्म-मरण का बीज है, पर नाम बोने से उसका जन्म-मरण का भय दूर हो गया है। वह नाम के बिना न कुछ अन्य बोता है और न कुछ पैदा होता है। अब वह वही कुछ खाता है, जो परमात्मा देता है। गुरुमुख जल में जल की तरह मिला परमेश्वर से दुबारा अलग नहीं होता। नानक कहते हैं कि हे लोगो ! आकर देख लो, गुरुमुख की यही जीवन लीला है किन्तु ये लोग बेचारे क्या देखें, जिन्हें इस बात की कोई सूझ ही नहीं है। जिसके मन में भगवान बस गया है, वही देखता है, जिसे वह स्वयं दिखाता है॥ १॥

म: ३ ॥ मनमुखु दुख का खेतु है दुखु बीजे दुखु खाइ ॥ दुख विचि जंमै दुखि मरै हउमै करत विहाइ ॥ आवणु जाणु न सुझई अंधा अंधु कमाइ ॥ जो देवै तिसै न जाणई दिते कउ लपटाइ ॥ नानक पूरबि लिखिआ कमावणा अवरु न करणा जाइ ॥ २ ॥

महला ३॥ स्वेच्छाचारी जीव दुख का खेत है, वह दुख बोता है और दुख ही भोगता है। वह दुख में जन्म लेता है, दुख में ही प्राण त्याग देता है, उसकी पूरी जिंदगी अहंकार करते ही व्यतीत हो जाती है। उसे जन्म-मरण की कोई सूझ नहीं, वह ज्ञानहीन होने के कारण ज्ञानहीन कर्म ही करता है। जो परमेश्वर उसे जीवन के सुख देता है, उसे वह जानता ही नहीं अपितु उसकी दी हुई चीजों में ही लिपटा रहता है। हे नानक ! जो पूर्व ही मनुष्य की किस्मत में लिखा होता है, वही उसे करना पड़ता है और किस्मत के बिना अन्य कुछ भी नहीं किया जा सकता॥ २॥

म: ३ ॥ सतिगुरि मिलिऐ सदा सुखु जिस नो आपे मेले सोइ ॥ सुखै एहु बिबेकु है अंतरु निरमलु होइ ॥ अगिआन का भ्रमु कटीऐ गिआनु परापति होइ ॥ नानक एको नदरी आइआ जह देखा तह सोइ ॥ ३ ॥

महला ३॥ जिस व्यक्ति को ईश्वर (गुरु से) मिला देता है, वह सतगुरु से मिलकर सदा ही सुख प्राप्त करता है। यह विवेक ही सुख का कारण है, जिससे मन निर्मल हो जाता है। उसके अज्ञान का भ्रम निवृत्त हो जाता है और ज्ञान प्राप्त हो जाता है। हे नानक ! उस मनुष्य को हर तरफ एक परमेश्वर ही नजर आया है, वह जिधर भी देखता है, उधर ही वह मौजूद है॥ ३॥

पउड़ी ॥ सचै तखतु रचाइआ बैसण कउ जांई ॥ सभु किछु आपे आपि है गुर सबदि सुणाई ॥ आपे कुदरति साजीअनु करि महल सराई ॥ चंदु सूरजु दुइ चानणे पूरी बणत बणाई ॥ आपे वेखै सुणे आपि गुर सबदि धिआई ॥ १ ॥ वाहु वाहु सचे पातिसाह तू सची नाई ॥ १ ॥ रहाउ ॥

पउड़ी॥ सच्चे परमेश्वर ने यह जगत् रूपी सिंहासन अपने बैठने के लिए स्थान बनाया है। वह स्वयं ही सब कुछ करने वाला है, यह बात गुरु के शब्द ने सुनाई है। उसने स्वयं ही अपनी कुदरत बनाई है और बहुत सारे महल एवं सराय बनाई है। उसने दुनिया में आलोक करने के लिए चाँद एवं सूर्य रूपी दो दीपक बनाकर पूरी रचना बनाई है। वह स्वयं ही सब देखता एवं सुनता है और गुरु के शब्द द्वारा ही उसका ध्यान किया जाता है॥ १॥

वाह सच्चे पातशाह ! वाह वाह !! तू प्रशंसनीय है, तेरा नाम शाश्वत है॥ १॥ रहाउ॥

सलोकु ॥ कबीर महिदी करि कै घालिआ आपु पीसाइ पीसाइ ॥ तै सह बात न पुछीआ कबहू न लाई पाइ ॥ १ ॥

श्लोक॥ कबीर जी कहते हैं कि हे मेरे मालिक! मैंने स्वयं को पीस-पीस कर मेहंदी बनाकर रखा हुआ है, पर तूने कभी मेरी बात नहीं पूछी और न ही तूने इस मेहंदी को अपने चरणों से लगाया है॥ १॥

म: ३ ॥ नानक महिदी करि कै रखिआ सो सहु नदरि करेइ ॥ आपे पीसै आपे घसै आपे ही लाइ लएइ ॥ इहु पिरम पिआला खसम का जै भावै तै देइ ॥ २ ॥

महला ३॥ नानक कहते हैं कि मैंने खुद को मेहंदी बनाकर रखा हुआ है ताकि मालिक मुझ पर अपनी कृपा-दृष्टि करे। वह स्वयं ही मेहंदी को पीसता है, स्वयं ही इसे घिसाता है और स्वयं ही चरणों से लगा लेता है। यह प्रेम का प्याला मालिक-प्रभु का अपना है, जिसे वह चाहता है, उसे ही यह पीने के लिए देता है॥ २॥

पउड़ी ॥ वेकी स्रिसटि उपाईअनु सभ हुकमि आवै जाइ समाही ॥ आपे वेखि विगसदा दूजा को नाही ॥ जिउ भावै तिउ रखु तू गुर सबदि बुझाही ॥ सभना तेरा जोरु है जिउ भावै तिवै चलाही ॥ तुधु जेवड मै नाहि को किसु आखि सुणाई ॥ २ ॥

पउड़ी॥ परमेश्वर ने अनेक प्रकार की सृष्टि उत्पन्न की है, उसके हुक्म से जीव जन्मते एवं मरते हैं और (सृष्टि का प्रलय होने पर) सत्य में ही विलीन हो जाते हैं। हे परमेश्वर! तू स्वयं ही अपनी सृष्टि को देखकर प्रसन्न होता है और तेरे जैसा अन्य कोई नहीं। जैसे तुझे मंजूर होता है, वैसे ही तू जीवों को रखता है और गुरु के शब्द द्वारा ही तू ज्ञान प्रदान करता है। सब जीवों पर तेरा ही बल चलता है, जैसे तुझे उपयुक्त लगता है, वैसे ही तू चलाता है। मुझे तेरे जैसा महान् अन्य कोई नजर नहीं आता, मैं यह बात किसे कहकर सुनाऊँ ?॥ २॥

सलोकु म: ३ ॥ भरमि भुलाई सभु जगु फिरी फावी होई भालि ॥ सो सहु सांति न देवई किआ चलै तिसु नालि ॥ गुर परसादी हरि धिआईऐ अंतरि रखीऐ उर धारि ॥ नानक घरि बैठिआ सहु पाइआ जा किरपा कीती करतारि ॥ १ ॥

श्लोक महला ३॥ हे सखी! भ्रम में पड़कर भूली हुई मैं सारे जगत् में घूमती रही हूँ और अपने प्रिय-प्रभु को ढूँढती हुई बावली हो गई हूँ। यदि मेरा प्रभु मुझे शांति नहीं देता तो उससे मेरा क्या जोर चल सकता है? (उसकी सखी उसे समझाती है कि) गुरु की कृपा से ईश्वर का ध्यान-मनन हो सकता है और उसे अपने हृदय में बसाकर रखना चाहिए। नानक कहते हैं कि जब करतार की कृपा होती है तो घर बैठे ही मालिक को पाया जा सकता है॥ १॥

म: ३ ॥ धंधा धावत दिनु गइआ रैणि गवाई सोइ ॥ कूड़ु बोलि बिखु खाइआ मनमुखि चलिआ रोइ ॥ सिरै उपरि जम डंडु है दूजै भाइ पति खोइ ॥ हरि नामु कदे न चेतिओ फिरि आवण जाणा होइ ॥ गुर परसादी हरि मनि वसै जम डंडु न लागै कोइ ॥ नानक सहजे मिलि रहै करमि परापति होइ ॥ २ ॥

महला ३॥ दुनिया के कार्यों में भागकर ही पूरा दिन बीत गया है और रात सो कर गंवा दी है। झूठ बोल कर माया रूपी विष सेवन कर लिया है और अब मनमानी करने वाला जीव रोता पछता कर जगत् से चला गया है। सिर पर यम का डण्डा बज रहा है और द्वैतभाव में लगकर सारी प्रतिष्ठा गंवा दी है। जिसने प्रभु का नाम कभी याद नहीं किया है, उसे जन्म-मरण का चक्र दोबारा पड़ जाता है। गुरु की कृपा से जिसके मन में प्रभु बस जाता है, उसे यम का डण्डा कोई

नहीं लगता। नानक कहते हैं कि वह सहजावस्था में सत्य से मिला रहता है परन्तु यह सहजावस्था प्रभु-कृपा से ही प्राप्त होती है॥ २॥

पउड़ी ॥ इकि आपणी सिफती लाइअनु दे सतिगुर मती ॥ इकना नो नाउ बखसिओनु असथिरु हरि सती ॥ पउणु पाणी बैसंतरो हुकमि करहि भगती ॥ एना नो भउ अगला पूरी बणत बणती ॥ सभु इको हुकमु वरतदा मंनिऐ सुखु पाई ॥ ३ ॥

पउड़ी॥ परमेश्वर ने किसी को सतगुरु की मत देकर अपनी स्तुति करने में लगाया हुआ है। उसने कुछ महापुरुषों को नाम प्रदान करके सत्य में स्थिर किया हुआ है। वायु देवता, वरुण देवता एवं अग्नि देव सभी उसके हुक्म में ही भक्ति करते हैं। इन देवताओं की परमात्मा पर पूर्ण निष्ठा है और जगत् की पूर्ण रचना बनी हुई है। सब पर परमेश्वर का हुक्म ही कार्यशील है और उसके आदेश का पालन करने से ही सुख उपलब्ध होता है॥ ३॥

सलोकु ॥ कबीर कसउटी राम की झूठा टिकै न कोइ ॥ राम कसउटी सो सहै जो मरजीवा होइ ॥ १ ॥

श्लोक॥ हे कबीर ! राम की कसौटी ऐसी है कि कोई भी झूठा आदमी उस पर नहीं टिक पाता। जो मरजिया होता है, वही राम की कसौटी पर खरा उतरता है॥ १॥

म: ३ ॥ किउ करि इहु मनु मारीऐ किउ करि मिरतकु होइ ॥ कहिआ सबदु न मानई हउमै छडै न कोइ ॥ गुर परसादी हउमै छुटै जीवन मुकतु सो होइ ॥ नानक जिस नो बखसे तिसु मिलै तिसु बिघनु न लागै कोइ ॥ २ ॥

महला ३॥ इस मन को कैसे मारा जा सकता है और जीव कैसे लालसाओं की ओर से मृतक हो जाए ? कोई भी अभिमान को नहीं छोड़ता और न ही शब्द-गुरु का पालन करता है। गुरु की कृपा से जिसका अभिमान छूट जाता है, वही जीवन्मुक्त होता है। नानक कहते हैं कि परमात्मा जिस पर अपनी कृपा करता है, उसे ही मुक्ति मिली है और फिर उसे कोई विघ्न नहीं आता॥ २॥

म: ३ ॥ जीवत मरणा सभु को कहै जीवन मुकति किउ होइ ॥ भै का संजमु जे करे दारू भाउ लाएइ ॥ अनदिनु गुण गावै सुख सहजे बिखु भवजलु नामि तरेइ ॥ नानक गुरमुखि पाईऐ जा कउ नदरि करेइ ॥ ३ ॥

महला ३॥ जीवित ही मरने की बातें तो हर कोई करता है परन्तु जीवन-मुक्ति कैसे होती है ? यदि जीव परमात्मा के आस्था रूपी भय का संयम धारण करे और प्रेम की औषधि का उपयोग करे और नित्य उसका गुणगान करे तो सहज स्वभाव ही सुखपूर्वक नाम द्वारा विष रूपी भवसागर से पार हो जाता है। हे नानक ! जिस पर उसकी करुणा-दृष्टि होती है, वह जीवन-मुक्ति प्राप्त कर लेता है॥ ३॥

पउड़ी ॥ दूजा भाउ रचाइओनु त्रै गुण वरतारा ॥ ब्रहमा बिसनु महेसु उपाइअनु हुकमि कमावनि कारा ॥ पंडित पड़दे जोतकी ना बूझहि बीचारा ॥ सभु किछु तेरा खेलु है सचु सिरजणहारा ॥ जिसु भावै तिसु बखसि लैहि सचि सबदि समाई ॥ ४ ॥

पउड़ी॥ ईश्वर ने द्वैतभाव पैदा किया है और दुनिया भर में त्रिगुणात्मक माया का प्रसार है। ब्रह्मा, विष्णु एवं महेश–ये त्रिदेव परमात्मा ने ही उत्पन्न किए हैं और वे हुक्म से ही कार्य करते हैं। पण्डित एवं ज्योतिषी ग्रंथ पढ़ते रहते हैं परन्तु उन्हें यथार्थ ज्ञान की सूझ नहीं होती। हे सच्चे सृजनहार ! यह सारी दुनिया तेरा खेल है। जिसे तू चाहता है, उसे मुक्त कर देता है और वह सच्चे शब्द में विलीन हो जाता है॥ ४॥

सलोकु म: ३ ॥ मन का झूठा झूठु कमावै ॥ माइआ नो फिरै तपा सदावै ॥ भरमे भूला सभि तीरथ गहै ॥ ओहु तपा कैसे परम गति लहै ॥ गुर परसादी को सचु कमावै ॥ नानक सो तपा मोखंतरु पावै ॥ १ ॥

श्लोक महला ३॥ मन का झूठा आदमी सदा झूठ का ही कार्य करता है। वह स्वयं को तपस्वी कहलाता है किन्तु धन के लिए इधर-उधर घूमता रहता है। भ्रम में भूला हुआ वह सभी तीर्थों में रटन करता रहता है, किन्तु ऐसा तपस्वी कैसे परमगति प्राप्त कर सकता है ? हे नानक ! गुरु के आशीर्वाद से जो सत्य की साधना करता है, ऐसा तपस्वी ही मोक्ष प्राप्त करता है॥ १॥

म: ३ ॥ सो तपा जि इहु तपु घाले ॥ सतिगुर नो मिलै सबदु समाले ॥ सतिगुर की सेवा इहु तपु परवाणु ॥ नानक सो तपा दरगहि पावै माणु ॥ २ ॥

महला ३॥ सच्चा तपस्वी वही है, जो सतगुरु से साक्षात्कार कर शब्द-साधना की तपस्या करता है। सतगुरु की सेवा रूपी तपस्या ही परमात्मा को मंजूर होती है। हे नानक ! ऐसा तपस्वी ही सत्य के दरबार में शोभा प्राप्त करता है॥ २॥

पउड़ी ॥ राति दिनसु उपाइअनु संसार की वरतणि ॥ गुरमती घटि चानणा आनेरु बिनासणि ॥ हुकमे ही सभ साजीअनु रविआ सभ वणि त्रिणि ॥ सभु किछु आपे आपि है गुरमुखि सदा हरि भणि ॥ सबदे ही सोझी पई सचै आपि बुझाई ॥ ५ ॥

पउड़ी॥ दुनिया का कार्य-व्यवहार करने के लिए परमात्मा ने रात और दिन पैदा किए हैं। गुरु मतानुसार ही हृदय में ज्ञान का प्रकाश होता है और अज्ञान रूपी अंधेरे का विनाश हो जाता है। ईश्वर ने अपने हुक्म से समूचे विश्व की रचना की है और वह कण-कण में विद्यमान है। वह सर्वशक्तिमान है और गुरुमुख बनकर सदा भगवान का नाम जपते रहना चाहिए। शब्द द्वारा ही सूझ प्राप्त हुई है और सत्यस्वरूप परमेश्वर ने स्वयं ही ज्ञान प्रदान किया है॥ ५॥

सलोक म: ३ ॥ अभिआगत एहि न आखीअनि जिन के चित महि भरमु ॥ तिस दै दितै नानका तेहो जेहा धरमु ॥ अभै निरंजनु परम पदु ता का भूखा होइ ॥ तिस का भोजनु नानका विरला पाए कोइ ॥ १ ॥

श्लोक महला ३॥ जिसके हृदय में भ्रम है, घर में आए ऐसे साधु या फकीर को अभ्यागत नहीं कहा जाता। हे नानक ! दरअसल ऐसे व्यक्ति को दिए दान का पुण्य फल भी वैसा ही होता है। हे नानक ! जो निर्भय निरंजन प्रभु के परमपद को पाने का भूखा होता है, कोई विरला ही ऐसा भोजन पाता है॥ १॥

म: ३ ॥ अभिआगत एहि न आखीअनि जि पर घरि भोजनु करेनि ॥ उदरै कारणि आपणे बहले भेख करेनि ॥ अभिआगत सेई नानका जि आतम गउणु करेनि ॥ भालि लहनि सहु आपणा निज घरि रहणु करेनि ॥ २ ॥

महला ३॥ उन्हें अतिथि नहीं कहा जा सकता, जो पराये घर में भोजन करते हैं और वे केवल अपना पेट भरने के लिए बहुत भेस धारण करते हैं। हे नानक ! वास्तव में अभ्यागत वही है, जो अपने आत्म-तीर्थ की यात्रा करते रहते हैं। वे परमात्मा को खोज लेते हैं और अपने सच्चे घर में निवास कर लेते हैं॥ २॥

पउड़ी ॥ अंबरु धरति विछोड़िअनु विचि सचा असराउ ॥ घरु दरु सभो सचु है जिसु विचि सचा नाउ ॥ सभु सचा हुकमु वरतदा गुरमुखि सचि समाउ ॥ सचा आपि तखतु सचा बहि सचा करे निआउ ॥ सभु सचो सचु वरतदा गुरमुखि अलखु लखाई ॥ ६ ॥

पउड़ी॥ परमेश्वर ने अम्बर और धरती को एक दूसरे से अलग करके दोनों के बीच अपनी शक्ति का आधार दे रखा है। वे घर एवं द्वार सभी सत्य हैं, जिसमें परमेश्वर का नाम-सिमरन किया जाता है। सारी दुनिया में परमेश्वर का हुक्म ही सर्वोपरि है और गुरुमुख सत्य में ही विलीन हो जाता है। सत्य के साक्षात् रूप परमेश्वर का सिंहासन भी सत्य है, जहाँ वह बैठकर सच्चा न्याय करता है। विश्व में हर तरफ परमसत्य का ही प्रसार हो रहा है और गुरु ही उस अलख प्रभु के दर्शन करवाता है॥ ६॥

सलोकु म: ३ ॥ रैणाइर माहि अनंतु है कूड़ी आवै जाइ ॥ भाणै चलै आपणै बहुती लहै सजाइ ॥ रैणाइर महि सभु किछु है करमी पलै पाइ ॥ नानक नउ निधि पाईऐ जे चलै तिसै रजाइ ॥ १ ॥

श्लोक महला ३॥ इस जगत्-सागर में एक परमात्मा ही अनंत है, शेष सारी झूठी दुनिया जन्म-मरण के चक्र में पड़ी रहती है। जो व्यक्ति जीवन में मनमर्जी करता है, उसे बहुत दण्ड भोगना पड़ता है। इस जगत्-सागर में सबकुछ उपलब्ध है परन्तु भाग्य से ही प्राप्ति होती है। हे नानक ! यदि जीव परमात्मा की इच्छानुसार चले तो उसे नौ निधियाँ प्राप्त हो जाती हैं॥ १॥

म: ३ ॥ सहजे सतिगुरु न सेविओ विचि हउमै जनमि बिनासु ॥ रसना हरि रसु न चखिओ कमलु न होइओ परगासु ॥ बिखु खाधी मनमुखु मुआ माइआ मोहि विणासु ॥ इकसु हरि के नाम विणु ध्रिगु जीवणु ध्रिगु वासु ॥ जा आपे नदरि करे प्रभु सचा ता होवै दासनि दासु ॥ ता अनदिनु सेवा करे सतिगुरू की कबहि न छोडै पासु ॥ जिउ जल महि कमलु अलिपतो वरतै तिउ विचे गिरह उदासु ॥ जन नानक करे कराइआ सभु को जिउ भावै तिव हरि गुणतासु ॥ २ ॥

महला ३॥ जिसने सहज स्वभाव श्रद्धा से सतगुरु की सेवा नहीं की, अहंकार में ही उसके जन्म का अंत हो गया है। जिसकी रसना ने हरि-नाम रूपी रस का स्वाद नहीं चखा, उसके हृदय-कमल में प्रकाश नहीं हुआ। वह मनमुखी माया रूपी विष खाकर ही मर गया है और माया के मोह ने उसका विनाश कर दिया है। एक परमात्मा के नाम बिना उसका जीना एवं रहना धिक्कार योग्य है। जब सच्चा प्रभु अपनी कृपा-दृष्टि करता है तो वह दासों का दास बन जाता है। तब वह निशदिन सतगुरु की सेवा करता रहता है और कभी भी उसका साथ नहीं छोड़ता। जैसे कमल का फूल जल में निर्लिप्त रहता है, वैसे ही गृहस्थ में रहकर त्यागी बना रहता है। हे नानक ! जैसे गुणों के भण्डार परमात्मा को उपयुक्त लगता है, हर कोई जीव उसकी मर्जी से वैसे ही करता है॥ २॥

पउड़ी ॥ छतीह जुग गुबारु सा आपे गणत कीनी ॥ आपे स्रिसटि सभ साजीअनु आपि मति दीनी ॥ सिम्रिति सासत साजिअनु पाप पुंन गणत गणीनी ॥ जिसु बुझाए सो बुझसी सचै सबदि पतीनी ॥ सभु आपे आपि वरतदा आपे बखसि मिलाई ॥ ७ ॥

पउड़ी॥ ३६ युग घोर अन्धेरा बना रहा था, फिर आप ही उसने स्वयं को प्रगट किया। परमात्मा ने स्वयं ही सृष्टि-रचना करके जीवों को सुमति प्रदान की। उसने स्मृतियों एवं शास्त्रों की रचना की तथा पाप-पुण्य के कर्मों का लेखा लिखा है। जिसे वह ज्ञान देता है, वही इस भेद को समझता है और फिर उसका मन सत्य नाम में विश्वस्त हो जाता है। परमात्मा सर्वव्यापक है और स्वयं ही कृपा करके जीव को साथ मिला लेता है॥ ७॥

सलोक म: ३ ॥ इहु तनु सभो रतु है रतु बिनु तंनु न होइ ॥ जो सहि रते आपणै तिन तनि लोभ रतु न होइ ॥ भै पइऐ तनु खीणु होइ लोभ रतु विचहु जाइ ॥ जिउ बैसंतरि धातु सुधु होइ तिउ हरि का भउ दुरमति मैलु गवाइ ॥ नानक ते जन सोहणे जो रते हरि रंगु लाइ ॥ १ ॥

श्लोक महला ३॥ यह सारा तन रक्त से भरपूर है और रक्त के बिना तन का संचार नहीं होता। जो व्यक्ति प्रभु के रंग में तल्लीन हो जाते हैं, उनके मन में लोभ रूपी रक्त नहीं होता। मन में भय पैदा होने से तन क्षीण हो जाता है और उस में से लोभ रूपी रक्त निकल जाता है। जैसे अग्नि में धातु डालने से शुद्ध हो जाती है, वैसे ही प्रभु भय दुर्मति रूपी मैल को मन से निकाल देता है। हे नानक! वही भक्तजन सुन्दर हैं, जो भगवान से रंग लगाकर उसमें लीन हो गए हैं॥ १॥

म: ३ ॥ रामकली रामु मनि वसिआ ता बनिआ सीगारु ॥ गुर कै सबदि कमलु बिगसिआ ता सउपिआ भगति भंडारु ॥ भरमु गइआ ता जागिआ चूका अगिआन अंधारु ॥ तिस नो रूपु अति अगला जिसु हरि नालि पिआरु ॥ सदा रवै पिरु आपणा सोभावंती नारि ॥ मनमुखि सीगारु न जाणनी जासनि जनमु सभु हारि ॥ बिनु हरि भगती सीगारु करहि नित जंमहि होइ खुआरु ॥ सैसारै विचि सोभ न पाइनी अगै जि करे सु जाणै करतारु ॥ नानक सचा एकु है दुहु विचि है संसारु ॥ चंगै मंदै आपि लाइअनु सो करनि जि आपि कराए करतारु ॥ २ ॥

महला ३॥ जब रामकली राग द्वारा गुणगान किया तो राम मेरे मन में बस गया और मेरा सुन्दर शृंगार बन गया। जब गुरु के शब्द द्वारा हृदय-कमल प्रफुल्लित हो गया तो भगवान ने मुझे भक्ति का भण्डार सौंप दिया। जब सारा भ्रम दूर हो गया तो यह मन जाग्रत हो गया और अज्ञान का अंधकार समाप्त हो गया। जिस जीव-स्त्री का परमेश्वर से प्रेम होता है, उसे अति सुन्दर रूप चढ़ जाता है और वह शोभावान नारी सदा ही अपने प्रियतम के संग रमण करती है। स्वेच्छाचारी जीव-स्त्री शृंगार करना नहीं जानती और वह अपना समूचा जीवन हार कर जगत् से चली जाती है। जो जीव रूपी नारी भगवान की भक्ति के बिना अन्य शृंगार करती है, वह नित्य जन्म-मरण में ख्वार होती है। वह संसार में शोभा प्राप्त नहीं करती और आगे परलोक में ईश्वर ही जानता है, क्या व्यवहार किया जाए। हे नानक! एक ईश्वर ही सत्य है और शेष संसार जन्म-मरण दोनों में पड़ा हुआ है। परमात्मा ने स्वयं ही जीवों को अच्छे एवं बुरे कार्यों में लगाया हुआ है, इसलिए जीव वही कुछ करते हैं, जो वह उनसे करवाता है॥ २॥

म: ३ ॥ बिनु सतिगुर सेवे सांति न आवई दूजी नाही जाइ ॥ जे बहुतेरा लोचीऐ विणु करमा पाइआ न जाइ ॥ अंतरि लोभु विकारु है दूजै भाइ खुआइ ॥ तिन जंमणु मरणु न चुकई हउमै विचि दुखु पाइ ॥ जिनी सतिगुर सिउ चितु लाइआ सो खाली कोई नाहि ॥ तिन जम की तलब न होवई ना ओइ दुख सहाहि ॥ नानक गुरमुखि उबरे सचै सबदि समाहि ॥ ३ ॥

महला ३॥ सतगुरु की सेवा किए बिना मन को शान्ति नहीं मिलती और न ही द्वैतभाव दूर होता है। यदि हम अधिकतर पाने की कामना करें तो भी भाग्य के बिना प्राप्त नहीं होता। जिसके अन्तर्मन में लोभ रूपी विकार है, वह द्वैतभाव में ही ख्वार होता है। उसका जन्म-मरण का चक्र समाप्त नहीं होता और वह अभिमान में ही दुखी होता रहता है। जिन्होंने अपना चित्त सतगुरु से लगाया है, उन में से कोई भी देन से खाली नहीं रहता। उन्हें न ही यम का निमंत्रण आता है और न ही दुख सहन करना पड़ता है। हे नानक ! ऐसे गुरुमुख संसार-सागर से पार हो गए हैं और वे शब्द द्वारा सत्य में ही विलीन हो गए हैं॥ ३॥

पउड़ी ॥ आपि अलिपतु सदा रहै होरि धंधै सभि धावहि ॥ आपि निहचलु अचलु है होरि आवहि जावहि ॥ सदा सदा हरि धिआईऐ गुरमुखि सुखु पावहि ॥ निज घरि वासा पाईऐ सचि सिफति समावहि ॥ सचा गहिर गंभीरु है गुर सबदि बुझाई ॥ ८ ॥

पउड़ी॥ अन्य सभी जीव दुनिया के कार्यों में इधर-उधर भागते रहते हैं परन्तु ईश्वर इन कार्यों से सदा निर्लिप्त रहता है। वह निश्चल एवं अटल है किन्तु अन्य जीव आवागमन में पड़े रहते हैं। गुरुमुख बनकर सदैव भगवान का ध्यान करना चाहिए, तभी परमसुख प्राप्त होता है। ऐसा जीव अपने सच्चे घर में निवास प्राप्त कर लेता है और ईश्वर की स्तुति में ही लीन रहता है। वह सच्चा परमेश्वर गहन-गंभीर है और गुरु के शब्द द्वारा ही इस तथ्य की सूझ होती है॥ ८॥

सलोक म: ३ ॥ सचा नामु धिआइ तू सभो वरतै सचु ॥ नानक हुकमै जो बुझै सो फलु पाए सचु ॥ कथनी बदनी करता फिरै हुकमु न बूझै सचु ॥ नानक हरि का भाणा मंने सो भगतु होइ विणु मंने कचु निकचु ॥ १ ॥

श्लोक महला ३॥ हे जीव ! सत्य नाम का ध्यान किया कर, चूंकि समूचे विश्व में सत्य का ही प्रसार है। हे नानक ! जो परमात्मा के हुक्म को समझ लेता है, उसे सत्य रूपी फल प्राप्त हो जाता है। जो व्यक्ति मुँह से बातें ही करता रहता है और हुक्म को नहीं समझता, उसे सत्य का बोध नहीं होता। हे नानक ! जो भगवान की इच्छा को मानता है, वही भक्त होता है और ईश्वरेच्छा को न मानने वाला जीव झूठा एवं कच्चा ही सिद्ध होता है॥ १॥

म: ३ ॥ मनमुख बोलि न जाणनी ओना अंदरि कामु क्रोधु अहंकारु ॥ ओइ थाउ कुथाउ न जाणनी उन अंतरि लोभु विकारु ॥ ओइ आपणै सुआइ आइ बहि गला करहि ओना मारे जमु जंदारु ॥ अगै दरगह लेखै मंगिऐ मारि खुआरु कीचहि कूड़िआर ॥ एह कूड़ै की मलु किउ उतरै कोई कढहु इहु वीचारु ॥ सतिगुरु मिलै ता नामु दिड़ाए सभि किलविख कटणहारु ॥ नामु जपे नामो आराधे तिसु जन कउ करहु सभि नमसकारु ॥ मलु कूड़ी नामि उतारीअनु जपि नामु होआ सचिआरु ॥ जन नानक जिस दे एहि चलत हहि सो जीवउ देवणहारु ॥ २ ॥

महला ३॥ स्वेच्छाचारी जीव मधुर वाणी बोलना ही नहीं जानते, क्योंकि उनके मन में काम, क्रोध एवं अहंकार भरा होता है। उनके अन्तर्मन में लोभ रूपी विकार होता है, जिससे वे अच्छे बुरे को भी नहीं जानते। वे अपने स्वार्थ के लिए आकर बैठते और बातें करते हैं और परिणामस्वरूप निर्दयी यम से दण्ड भोगते हैं। आगे परलोक में भी उनसे कर्मों का लेखा-जोखा मांगा जाता है तथा अशुभ कर्मों के कारण उन झूठों को पीट-पीट कर ख्वार किया जाता है। कोई सोच-विचार कर यह निष्कर्ष निकालो कि उन स्वेच्छाचारी जीवों के मन में से झूठ की मैल कैसे उतर सकती

है ? जब सतगुरु से भेंट हो जाती है तो वह उनके मन में नाम दृढ़ करवा देता है, परमात्मा का नाम सब पापों को नाश करने वाला है। उस भक्त को सभी प्रणाम करो, जो नित्य नाम जपता और नाम की आराधना करता रहता है। जब नाम ने झूठ की मैल उतार दी तो वह भी नाम जपकर सत्यवादी बन गया। हे नानक ! जिसकी यह अद्‌भुत लीला हो रही है, वह दातार अमर है॥ २॥

पउड़ी ॥ तुधु जेवडु दाता नाहि किसु आखि सुणाईऐ ॥ गुर परसादी पाइ जिथहु हउमै जाईऐ ॥ रस कस सादा बाहरा सची वडिआईऐ ॥ जिस नो बखसे तिसु देइ आपि लए मिलाईऐ ॥ घट अंतरि अंम्रितु रखिओनु गुरमुखि किसै पिआई ॥ ६ ॥

पउड़ी॥ हे परमेश्वर ! तेरे जैसा बड़ा अन्य कोई दाता नहीं है, फिर तेरे अलावा किसे अपना दुख-दर्द सुनाया जाए। जब मन का अहंकार दूर हो जाता है तो गुरु की कृपा से ही सत्य की प्राप्ति होती है। तू दुनिया के सभी रसों-भोगों से दूर रहने वाला है और तेरी महिमा सत्य है। जिस पर तू करुणा करता है, उसे ही नाम की देन देता है और फिर स्वयं ही अपने साथ मिला लेता है। जीव के हृदय में ही अमृत रखा हुआ है परन्तु गुरु के माध्यम से किसी विरले को ही नामामृत का पान करवाता है॥ ६॥

सलोक मः ३ ॥ बाबाणीआ कहाणीआ पुत सपुत करेनि ॥ जि सतिगुर भावै सु मंनि लैनि सेई करम करेनि ॥ जाइ पुछहु सिम्रिति सासत बिआस सुक नारद बचन सभ स्रिसटि करेनि ॥ सचै लाइ सचि लगे सदा सचु समालेनि ॥ नानक आए से परवाणु भए जि सगले कुल तारेनि ॥ १ ॥

श्लोक महला ३॥ अपने पूर्वजों की कहानियाँ उनके पुत्र-सुपुत्र करते रहते हैं। जो सतगुरु को उपयुक्त लगता है, उसे वे मान लेते हैं और फिर वही कर्म वे स्वयं भी करते हैं। आप निःसंकोच स्मृतियों, शास्त्रों, व्यास, शुकदेव, देवर्षि नारद द्वारा इस बारे विश्लेषण कर लो, वे सारी सृष्टि को यही उपदेश करते हैं। सत्य में वही लगे हैं जिन्हें सच्चे परमेश्वर ने स्वयं लगाया है और वे सदा सत्य का ही ध्यान करते रहते हैं। हे नानक ! जगत् में आए वही मनुष्य स्वीकार हुए हैं, जिन्होंने अपनी समस्त वंशावलि को भवसागर से पार उतार दिया है॥ १॥

मः ३ ॥ गुरू जिना का अंधुला सिख भी अंधे करम करेनि ॥ ओइ भाणै चलनि आपणै नित झूठो झूठु बोलेनि ॥ कूड़ु कुसतु कमावदे पर निंदा सदा करेनि ॥ ओइ आपि डुबे पर निंदका सगले कुल डोबेनि ॥ नानक जितु ओइ लाए तितु लगे उइ बपुड़े किआ करेनि ॥ २ ॥

महला ३॥ जिनका गुरु ही अन्धा अर्थात् ज्ञानहीन है, उसके शिष्य भी अन्धे कर्म करते हैं। वे अपनी मर्जी से कार्य करते हैं और नित्य झूठ बोलते रहते हैं। वे झूठ एवं असत्य का व्यवहार करते हैं और सदा ही पराई निंदा करने में लीन रहते हैं। पराई निंदा करने वाले निंदक स्वयं तो डूबते ही हैं, अपनी समस्त कुल को भी डुबो देते हैं। हे नानक ! वे बेचारे भी क्या करें ? उन्हें जिस तरफ लगाया है, वे उसी तरफ लगे हुए हैं॥ २॥

पउड़ी ॥ सभ नदरी अंदरि रखदा जेती सिसटि सभ कीती ॥ इकि कूड़ि कुसति लाइअनु मनमुख विगूती ॥ गुरमुखि सदा धिआईऐ अंदरि हरि प्रीती ॥ जिन कउ पोतै पुंनु है तिन्ह वाति सिपीती ॥ नानक नामु धिआईऐ सचु सिफति सनाई ॥ १० ॥

पउड़ी॥ यह जितनी भी दुनिया ईश्वर ने पैदा की है, सबको अपनी नजर में रखता है। किसी स्वेच्छाचारी को झूठ एवं असत्य के कार्यों में लगाकर बर्बाद करता है। कोई गुरुमुख सदा ही उसका ध्यान करता रहता है और उसके मन में प्रभु से प्रेम बना होता है। जिनके कोष में पुण्य-कर्म है, उनके मुँह में हमेशा ही परमेश्वर का स्तुतिगान होता है। हे नानक! हमें हरदम नाम का ध्यान करते रहना चाहिए, सत्य की स्तुति करने से ही उस में लीन हुआ जा सकता है॥ १०॥

सलोकु म: १ ॥ सती पापु करि सतु कमाहि ॥ गुर दीखिआ घरि देवण जाहि ॥ इसतरी पुरखै खटिऐ भाउ ॥ भावै आवउ भावै जाउ ॥ सासतु बेदु न मानै कोइ ॥ आपो आपै पूजा होइ ॥ काजी होइ कै बहै निआइ ॥ फेरे तसबी करे खुदाइ ॥ वढी लै कै हकु गवाए ॥ जे को पुछै ता पड़ि सुणाए ॥ तुरक मंतु कनि रिदै समाहि ॥ लोक मुहावहि चाड़ी खाहि ॥ चउका दे कै सुचा होइ ॥ ऐसा हिंदू वेखहु कोइ ॥ जोगी गिरही जटा बिभूत ॥ आगै पाछै रोवहि पूत ॥ जोगु न पाइआ जुगति गवाई ॥ कितु कारणि सिरि छाई पाई ॥ नानक कलि का एहु परवाणु ॥ आपे आखणु आपे जाणु ॥ १ ॥

श्लोक महला १॥ धर्मी अथवा दानी व्यक्ति पाप कर के धर्म अथवा दान का दिखावा करता है और गुरु (धन खातिर) शिक्षा देने के लिए शिष्यों के घरों में जाता है। स्त्री पुरुष का प्रेम मात्र कमाई दौलत के कारण ही है, अगर धन नहीं तो स्त्री को कोई परवाह नहीं चाहे उसका पति घर आए या कहीं चला जाए। अब कोई भी शास्त्रों एवं वेदों को नहीं मानता और अपने-अपने (इष्ट देव) की पूजा हो रही है। काजी न्यायाधीश बनकर न्याय करने के लिए बैठता है, वह लोक-दिखावे के लिए माला फेरता है और खुदा-खुदा बोलता रहता है। परन्तु वह रिश्वत लेकर दूसरों का हक छीनकर नाइंसाफी करता है। यदि कोई उससे पूछता है तो वह कोई शरह की बात पढ़कर सुना देता है। मुसलमानों का मंत्र अर्थात् कलमा हिन्दू अफसरों के कानों एवं हृदय में बस गया है। वे भी लोगों को लूटते हैं और मुसलमान हाकिमों के पास हिन्दू-धर्म के नेताओं की चुगली-निंदा करते रहते हैं। हिन्दू चौंका देकर ही पवित्र बना रहता है। कोई देख लो, ऐसा हिन्दू है, जिस गृहस्थी ने योगी बनकर जटाएं रख ली हैं और विभूति लगा ली है। उसके पुत्र उसके आगे-पीछे रोते हैं। उसने योग की युक्ति गंवा ली है और उसका सत्य से मिलाप नहीं हुआ। उसने अपने सिर पर किस कारण राख डाली हुई है ? हे नानक! कलियुग का यही लक्षण एवं परम्परा है कि हर कोई अपनी प्रशंसा स्वयं करने वाला है और वह स्वयं ही दूसरों से बड़ा मानने वाला है॥ १॥

म: १ ॥ हिंदू कै घरि हिंदू आवै ॥ सूतु जनेऊ पड़ि गलि पावै ॥ सूतु पाइ करे बुरिआई ॥ नाता धोता थाइ न पाई ॥ मुसलमानु करे वडिआई ॥ विणु गुर पीरै को थाइ न पाई ॥ राहु दसाइ ओथै को जाइ ॥ करणी बाझहु भिसति न पाइ ॥ जोगी कै घरि जुगति दसाई ॥ तितु कारणि कनि मुंद्रा पाई ॥ मुंद्रा पाइ फिरै संसारि ॥ जिथै किथै सिरजणहारु ॥ जेते जीअ तेते वाटाऊ ॥ चीरी आई ढिल न काऊ ॥ एथै जाणै सु जाइ सिञाणै ॥ होरु फकड़ु हिंदू मुसलमाणै ॥ सभना का दरि लेखा होइ ॥ करणी बाझहु तरै न कोइ ॥ सचो सचु वखाणै कोइ ॥ नानक अगै पुछ न होइ ॥ २ ॥

महला १॥ जब किसी हिन्दू के घर में कोई हिन्दू ब्राह्मण आता है तो वह मंत्र पढ़कर उसके गले में सूत्र का जनेऊ डाल देता है। यदि ऐसा व्यक्ति जनेऊ डालकर बुराई करे तो उसे नहाने धोने की शुद्धता से भी कहीं स्थान नहीं मिलता। यदि कोई मुसलमान खुदा की प्रशंसा करता रहे तो गुरु-पीर के बिना उसे भी खुदा के घर स्थान नहीं मिलता। वहाँ प्रभु के दरबार में जाने का मार्ग तो हर कोई पूछता रहता है परन्तु कोई विरला ही वहाँ जाता है। शुभ कर्म के बिना कोई भी

स्वर्ग प्राप्त नहीं कर सकता। जिस किसी मनुष्य ने योगी के घर जाकर उससे योग की युक्ति पूछी है तो उसके मनोरथ के लिए योगी ने उसके कानों में मुद्राएँ डाल दी हैं। सृजनहार परमेश्वर सर्वव्यापक है, किन्तु मनुष्य मुद्राएँ पहनकर संसार में इधर-उधर ही भटकता रहता है। जगत् में जितने भी जीव हैं, वे सभी मुसाफिर हैं। जब भी किसी जीव को मृत्यु का निमंत्रण आया है, उसने जाने में कभी कोई देरी नहीं की। जिसे इहलोक में भगवान की पहचान हो जाती है, वह परलोक में भी जाकर उसे पहचान लेता है। हिन्दू एवं मुसलमान के शुभ कर्म के बिना अन्य सब व्यर्थ है। सत्य के दरबार में सब जीवों के कर्मों का हिसाब-किताब होता है और शुभ कर्मों के बिना किसी की भी मुक्ति संभव नहीं। गुरु नानक कहते हैं कि परमसत्य परमेश्वर का नाम जपने वाले जीव की आगे परलोक में कोई पूछताछ नहीं होती॥ २॥

पउड़ी ॥ हरि का मंदरु आखीऐ काइआ कोटु गड़ु ॥ अंदरि लाल जवेहरी गुरमुखि हरि नामु पड़ु ॥ हरि का मंदरु सरीरु अति सोहणा हरि हरि नामु दिड़ु ॥ मनमुख आपि खुआइअनु माइआ मोह नित कड़ु ॥ सभना साहिबु एकु है पूरै भागि पाइआ जाई ॥ ११ ॥

पउड़ी॥ यह मानव-शरीर रूपी किला हरि का मन्दिर कहा जाता है। इस में लाल एवं जवाहर रूपी शुभ गुण पड़े हैं। इन्हें प्राप्त करने के लिए गुरु के माध्यम से हरि का नाम जपो। यह शरीर रूपी हरि का मन्दिर अति सुन्दर है, इसलिए हरि नाम को मन में बसा लो। स्वेच्छाचारी जीव स्वयं ही कुमार्गगामी होते हैं और नित्य मोह-माया में फँसकर दुखी होते रहते हैं। सबका मालिक एक परमेश्वर ही है, परन्तु उत्तम भाग्य से ही उसे प्राप्त किया जा सकता है॥ ११॥

सलोक म: १ ॥ ना सति दुखीआ ना सति सुखीआ ना सति पाणी जंत फिरहि ॥ ना सति मूंड मुडाई केसी ना सति पड़िआ देस फिरहि ॥ ना सति रुखी बिरखी पथर आपु तछावहि दुख सहहि ॥ ना सति हसती बधे संगल ना सति गाई घाहु चरहि ॥ जिसु हथि सिधि देवै जे सोई जिस नो देइ तिसु आइ मिलै ॥ नानक ता कउ मिलै वडाई जिसु घट भीतरि सबदु रवै ॥ सभि घट मेरे हउ सभना अंदरि जिसहि खुआई तिसु कउणु कहै ॥ जिसहि दिखाला वाटड़ी तिसहि भुलावै कउणु ॥ जिसहि भुलाई पंध सिरि तिसहि दिखावै कउणु ॥ १ ॥

श्लोक महला १॥ दुख भोगने, सुखों में लीन रहने एवं जल में जीवों की तरह डुबकियां लगाने से भी सिद्धि नहीं मिलती। सिर के केश मुंडवा लेने एवं विद्या पढ़कर देश-प्रदेश में भटकने से भी सिद्धि नहीं होती। पेड़ों, पहाड़ों में रहकर और खुद को आड़े से चिरवा कर दुख सहने से भी सिद्धि नहीं होती। हाथी को जंजीर से बांधकर एवं गाय को घास चराने से भी सिद्धि नहीं होती। जिस परमेश्वर के हाथ में सिद्धि है, यदि वह किसी को सिद्धि प्रदान करे तो ही वह उसे आकर मिलता है, जिसे सिद्धि देता है। हे नानक! यह कीर्ति उसे ही मिलती है, जिसके हृदय में ब्रह्म-शब्द बस जाता है। परमेश्वर का फुरमान है कि सब शरीर मेरे ही बनाए हुए हैं और सबमें मैं ही मौजूद हूँ, जिसे मैं कुमार्गगामी कर देता हूँ, उसे कौन सन्मार्ग बता सकता है। जिसे मार्गदर्शन करता है, उसे कौन भुला सकता है? जिसे प्रारम्भ से ही रास्ता भुला दिया है, उसे कौन रास्ता दिखा सकता है?॥ १॥

म: १ ॥ सो गिरही जो निग्रहु करै ॥ जपु तपु संजमु भीखिआ करै ॥ पुंन दान का करे सरीरु ॥ सो गिरही गंगा का नीरु ॥ बोलै ईसरु सति सरूपु ॥ परम तंत महि रेख न रूपु ॥ २ ॥

महला १॥ वही गृहस्थी उत्तम है, जो अपनी इन्द्रियों को नियंत्रण में रखता है। वह जप, तप एवं संयम को भिक्षा बना लेता है और अपने शरीर को दान-पुण्य करने वाला बना लेता है। ऐसा गृहस्थी गंगा जल की तरह पावन हो जाता है। ईसर कहता है कि परमात्मा सत्यस्वरूप है, उस परमतत्व में कोई चक्र-चिन्ह एवं रूप नहीं है॥ २॥

म: १ ॥ सो अउधूती जो धूपै आपु ॥ भिखिआ भोजनु करै संतापु ॥ अउहठ पटण महि भीखिआ करै ॥ सो अउधूती सिव पुरि चड़ै ॥ बोलै गोरखु सति सरूपु ॥ परम तंत महि रेख न रूपु ॥ ३ ॥

महला १॥ वही अवधूत है, जो आत्माभिमान को जला देता है। वह अपने शारीरिक संताप को भिक्षा भोजन बना लेता है। वह अपने हृदय रूपी नगर में जाकर नाम की भिक्षा मांगता है। ऐसा अवधूत परमात्मा के चरणों में विलीन हो जाता है। गोरख कहता है कि ईश्वर सत्यस्वरूप है, उस परमतत्व का कोई रूप अथवा चिन्ह नहीं है॥ ३॥

म: १ ॥ सो उदासी जि पाले उदासु ॥ अरध उरध करे निरंजन वासु ॥ चंद सूरज की पाए गंढि ॥ तिसु उदासी का पड़ै न कंधु ॥ बोलै गोपी चंदु सति सरूपु ॥ परम तंत महि रेख न रूपु ॥ ४ ॥

महला १॥ वही उदासी साधु भला है जो वैराग्य का पालन करता है। वह निरंजन का ध्यान करता रहता है, जिसका निवास पृथ्वी एवं गगन इत्यादि सब लोकों में है। उस विरक्त की शरीर रूपी दीवार ध्वस्त नहीं होती जो शिव रूपी चाँद एवं शक्ति रूपी सूर्य का सुमेल करवा देता है। गोपी चंद कहता है कि ईश्वर सत्यस्वरूप है, वह परमतत्व निराकार है॥ ४॥

म: १ ॥ सो पाखंडी जि काइआ पखाले ॥ काइआ की अगनि ब्रहमु परजाले ॥ सुपनै बिंदु न देई झरणा ॥ तिसु पाखंडी जरा न मरणा ॥ बोलै चरपटु सति सरूपु ॥ परम तंत महि रेख न रूपु ॥ ५ ॥

महला १॥ वही जैनी साधु उत्तम है, जो काया की मैल को शुद्ध करता है। वह अपनी काया की अग्नि में ब्रह्म को प्रज्वलित करता है और स्वप्न में भी अपने वीर्य को बहने नहीं देता। उस जैनी को बुढ़ापा एवं मृत्यु प्रभावित नहीं करता। चरपट कहता है कि परमेश्वर सत्यस्वरूप है, वह परमतत्व निराकार है॥ ५॥

म: १ ॥ सो बैरागी जि उलटे ब्रहमु ॥ गगन मंडल महि रोपै थंमु ॥ अहिनिसि अंतरि रहै धिआनि ॥ ते बैरागी सत समानि ॥ बोलै भरथरि सति सरूपु ॥ परम तंत महि रेख न रूपु ॥ ६ ॥

महला १॥ वही वैरागी है, जो ब्रह्म को मन में प्रगट करता है। वह अपने मन को ध्यान रूपी स्तम्भ द्वारा अपने दसम द्वार में स्थिर करके रखता है। वह निशदिन परमात्मा में ही अन्तर्ध्यान रहता है। ऐसा वैरागी ही सत्य के समान हो जाता है। भर्तृहरि कहता है कि ईश्वर सत्यस्वरूप है, वह परमतत्व निराकार है॥ ६॥

म: १ ॥ किउ मरै मंदा किउ जीवै जुगति ॥ कंन पड़ाइ किआ खाजै भुगति ॥ आसति नासति एको नाउ ॥ कउणु सु अखरु जितु रहै हिआउ ॥ धूप छाव जे सम करि सहै ॥ ता नानकु आखै गुरु को कहै ॥ छिअ वरतारे वरतहि पूत ॥ ना संसारी ना अउधूत ॥ निरंकारि जो रहै समाइ ॥ काहे भीखिआ मंगणि जाइ ॥ ७ ॥

महला १॥ कैसे बुराई का अंत हो सकता है और किस युक्ति द्वारा जीव सही जीवन बिता सकता है ? कान छिदवा कर चूरमा खाने का क्या अभिप्राय है ? चाहे कोई आस्तिक है चाहे कोई नास्तिक है, परमात्मा का एक नाम ही सबका जीवनाधार है। वह कौन-सा अक्षर है, जिस द्वारा हृदय टिका रहता है ? नानक कहते हैं कि कोई मनुष्य तो ही गुरु का नाम जप सकता है, यदि वह सुख-दुख को एक समान समझकर सहन करता है। योगियों के जो शिष्य उनके छः सम्प्रदायों में आचरण करते हैं, न वे गृहस्थी हैं और न ही अवधूत हैं। जो प्राणी निरंकार के ध्यान में लीन रहता है, उसे घर-घर से भिक्षा माँगने नहीं जाना पड़ता॥ ७॥

पउड़ी ॥ हरि मंदरु सोई आखीऐ जिथहु हरि जाता ॥ मानस देह गुर बचनी पाइआ सभु आतम रामु पछाता ॥ बाहरि मूलि न खोजीऐ घर माहि बिधाता ॥ मनमुख हरि मंदर की सार न जाणनी तिनी जनमु गवाता ॥ सभ महि इकु वरतदा गुर सबदी पाइआ जाई ॥ १२ ॥

पउड़ी॥ जहाँ हरि की पहचान हो जाती है, उसे ही हरि का मन्दिर कहा जाता है। मानव-शरीर में ही गुरु के वचनों द्वार सत्य की प्राप्ति होती है और सबमें राम की पहचान हो जाती है। विधाता तो हृदय-घर में ही मौजूद है, इसलिए बाहर बिल्कुल नहीं खोजना चाहिए। स्वेच्छाचारी जीव हरि-मन्दिर की कद्र को नहीं जानते, उन्होंने अपना जन्म व्यर्थ ही गंवा लिया है। सब जीवों में एक परमेश्वर ही मौजूद है, पर उसे गुरु के शब्द द्वारा ही प्राप्त किया जा सकता है॥ १२॥

सलोक म: ३ ॥ मूरखु होवै सो सुणै मूरख का कहणा ॥ मूरख के किआ लखण है किआ मूरख का करणा ॥ मूरखु ओहु जि मुगधु है अहंकारे मरणा ॥ एतु कमाणै सदा दुखु दुख ही महि रहणा ॥ अति पिआरा पवै खूहि किहु संजमु करणा ॥ गुरमुखि होइ सु करे वीचारु ओसु अलिपतो रहणा ॥ हरि नामु जपै आपि उधरै ओसु पिछै डुबदे भी तरणा ॥ नानक जो तिसु भावै सो करे जो देइ सु सहणा ॥ १ ॥

श्लोक महला ३॥ मूर्ख आदमी हमेशा मूर्ख की बात ही सुनता है। मूर्ख के क्या लक्षण हैं और मूर्ख की क्या करतूत है ? मूर्ख वही होता है, जो विमूढ़ अहंकार में ही ग्रस्त रहता है। इस अहंकार के कारण वह सदा दुख ही भोगता है और दुखी ही रहता है। यदि किसी का प्रियजन पापों में गिर जाए तो उसे बाहर निकालने के लिए क्या प्रयास करना चाहिए ? जो गुरुमुख होता है, वही सोच-विचार करता है और वह निर्लिप्त रहता है। वह हरि नाम जपता रहता है, वह स्वयं तो पार होता ही है, जो डूब रहे होते हैं, उसके पीछे लगकर वे भी तैर जाते हैं। हे नानक ! जो परमात्मा को मंजूर होता है, वह वही करता है। वह जो दुख अथवा सुख किसी जीव को देता है, वह उसे सहन करना पड़ता है॥ १॥

म: १ ॥ नानकु आखै रे मना सुणीऐ सिख सही ॥ लेखा रबु मंगेसीआ बैठा कढि वही ॥ तलबा पउसनि आकीआ बाकी जिना रही ॥ अजराईलु फरेसता होसी आइ तई ॥ आवणु जाणु न सुझई भीड़ी गली फही ॥ कूड़ निखुटे नानका ओड़कि सचि रही ॥ २ ॥

महला १॥ गुरु नानक कहते हैं कि हे मन ! हमें सही सीख सुननी चाहिए। रब तुझसे तेरे किए शुभाशुभ कर्मों का हिसाब-किताब माँगेगा और वह अपनी आलेख पुस्तक निकाल कर बैठा होगा। वहाँ उन बागी स्वेच्छाचारी जीवों को बुलावे आएँगे जिनके कर्मों का हिसाब-किताब शेष होगा। इजरायल फरिश्ता उन्हें उनके पाप कर्मों का दण्ड देने के लिए खड़ा होगा। यम मार्ग की संकुचित गली में फँसी हुई आत्मा को उस वक्त कुछ नहीं सूझता कि वह कहाँ से आई है और उसने कहाँ जाना है। हे नानक ! अंत में सत्य रह जाता है और झूठ का नाश हो जाता है॥ २॥

पउड़ी ॥ हरि का सभु सरीरु है हरि रवि रहिआ सभु आपै ॥ हरि की कीमति ना पवै किछु कहणु न जापै ॥ गुर परसादी सालाहीऐ हरि भगती रापै ॥ सभु मनु तनु हरिआ होइआ अहंकारु गवापै ॥ सभु किछु हरि का खेलु है गुरमुखि किसै बुझाई ॥ १३ ॥

पउड़ी॥ समूचा शरीर भगवान का ही है और वह स्वयं ही सबमें समा रहा है। भगवान का मूल्यांकन नहीं किया जा सकता और इस संदर्भ में कुछ कहना भी उचित नहीं लगता। जो जीव गुरु की कृपा से स्तुतिगान करता है, वह भगवान की भक्ति में ही तल्लीन रहता है। वह अहंकार को दूर कर देता है, जिससे उसका तन-मन सब प्रफुल्लित हो जाता है। यह सबकुछ भगवान की लीला है, पर गुरु के माध्यम से ही इस तथ्य की सूझ किसी विरले को होती है॥ १३॥

सलोकु म: १ ॥ सहंसर दान दे इंद्रु रोआइआ ॥ परस रामु रोवै घरि आइआ ॥ अजै सु रोवै भीखिआ खाइ ॥ ऐसी दरगह मिलै सजाइ ॥ रोवै रामु निकाला भइआ ॥ सीता लखमणु विछुड़ि गइआ ॥ रोवै दहसिरु लंक गवाइ ॥ जिनि सीता आदी डउरू वाइ ॥ रोवहि पांडव भए मजूर ॥ जिन कै सुआमी रहत हदूरि ॥ रोवै जनमेजा खुइ गइआ ॥ एकी कारणि पापी भइआ ॥ रोवहि सेख मसाइक पीर ॥ अंति कालि मतु लागै भीड़ ॥ रोवहि राजे कंन पड़ाइ ॥ घरि घरि मागहि भीखिआ जाइ ॥ रोवहि किरपन संचहि धनु जाइ ॥ पंडित रोवहि गिआनु गवाइ ॥ बाली रोवै नाहि भतारु ॥ नानक दुखीआ सभु संसारु ॥ मंने नाउ सोई जिणि जाइ ॥ अउरी करम न लेखै लाइ ॥ १ ॥

श्लोक महला ३॥ देवराज इन्द्र ने गौतम ऋषि की पत्नी अहल्या से धोखे से संभोग किया था, जिससे क्रुद्ध होकर गौतम ऋषि ने सहस्र-भगा होने का अभिशाप दिया था। इस प्रकार ईश्वर ने ही सहस्र-भगा का दण्ड देकर इन्द्र को रुलाया। परशुराम के पिता जमदग्नि ऋषि का सहस्र बाहु ने वध कर दिया था चूंकि उसने अपनी कामधेनु गाय देने से इन्कार कर दिया था। इस प्रकार परशुराम पिता की मृत्यु पर रोता हुआ घर आया। श्री रामचन्द्र जी का दादा अज अपनी दान दी लीद खाकर बड़ा दुखी हुआ। भगवान की दरगाह में हर किसी को अपने किए कर्मों के अनुसार दण्ड मिलता है। जब श्री रामचन्द्र जी को अयोध्या से देश-निकाला मिला था तदन्तर वन में सीता एवं लक्ष्मण से बिछुड़ गया था। अपनी सोने की लंका को गंवाकर रावण बहुत दुखी हुआ, जिसने छल से साधु का वेष धारण करके सीता का हरण कर लिया था। एक वर्ष के अज्ञातवास के दौरान जब पाँचों पांडव राजा वैराट के नौकर बनकर रह गए तो वे बड़े पछताए, जिनका स्वामी कृष्ण उनके साथ रहता था। पांडवों का पड़पौत्र राजा जनमेजय प्रायश्चित का मौका गंवाकर बड़ा पछताया और वह एक ही भूल के कारण पापी बन गया था। शेख, पीर भी चिंता में रोते हैं कि कहीं अंत में उन्हें भी कोई विपत्ति न आ पड़े। राजा भर्तृहरि एवं राजा गोपी चंद सरीखे राजे कान छिदवा कर रोते रहे और वे घर-घर जाकर भिक्षा माँगते रहे। कंजूस आदमी अपना संचित किया हुआ धन गंवाकर बहुत रोता है और पण्डित अपना ज्ञान गंवाकर पछताते हैं। अपने जीवन साथी के बिना कुंवारी कन्या भी रोती है। हे नानक ! सारा संसार ही दुखी है। जो नाम का मनन करता है, वह अपनी जीवन-बाजी जीत कर जाता है, अन्य कोई भी कर्म साकार नहीं होता॥ १॥

म: २ ॥ जपु तपु सभु किछु मंनिऐ अवरि कारा सभि बादि ॥ नानक मंनिआ मंनीऐ बुझीऐ गुर परसादि ॥ २ ॥

महला २॥ ईश्वर का नाम सिमरन करने एवं उसमें अटूट आस्था रखने से ही जप-तप इत्यादि कर्मों का फल मिल जाता है तथा अन्य सभी कार्य व्यर्थ हैं। हे नानक! ईश्वर में आस्था रखने वाला ही दरगाह में शोभा का पात्र बनता है, लेकिन गुरु की कृपा से ही इस तथ्य की सूझ होती है॥ २॥

पउड़ी ॥ काइआ हंस धुरि मेलु करतै लिखि पाइआ ॥ सभ महि गुपतु वरतदा गुरमुखि प्रगटाइआ ॥ गुण गावै गुण उचरै गुण माहि समाइआ ॥ सची बाणी सचु है सचु मेलि मिलाइआ ॥ सभु किछु आपे आपि है आपे देइ वडिआई ॥ १४ ॥

पउड़ी॥ परमेश्वर ने आरम्भ से ही शरीर एवं आत्मा का मिलन लिखा हुआ है। वह सब जीवों में गुप्त ही विद्यमान है लेकिन गुरु ने ही उसे प्रगट किया है। जो परमात्मा का गुणगान करता है, गुणों को जपता रहता है, वह उसके गुणों में ही समाया रहता है। वह सत्यस्वरूप स्वयं ही सच्ची वाणी है और उस सत्य के सागर ने स्वयं ही साथ मिलाया है। परमेश्वर स्वयं ही सबकुछ है और वह स्वयं ही जीवों को बड़ाई देता है॥ १४॥

सलोक म: २ ॥ नानक अंधा होइ कै रतना परखण जाइ ॥ रतना सार न जाणई आवै आपु लखाइ ॥ १ ॥

श्लोक महला २॥ हे नानक! यदि ज्ञानहीन आदमी रत्नों की परख करने के लिए जाए तो वह रत्नों का महत्व तो जानता ही नहीं अपितु अपनी अज्ञानता ही सिद्ध करके आएगा॥ १॥

म: २ ॥ रतना केरी गुथली रतनी खोली आइ ॥ वखर तै वणजारिआ दुहा रही समाइ ॥ जिन गुणु पलै नानका माणक वणजहि सेइ ॥ रतना सार न जाणनी अंधे वतहि लोइ ॥ २ ॥

महला २॥ जौहरी ने आकर अपने रत्नों की पोटली खोल दी है और वह रत्न रूपी वस्तु जौहरी और व्यापारियों दोनों के मन को बहुत अच्छी लग रही है। हे नानक! जिन व्यापारियों के पास परखने का गुण है, वही रत्नों का व्यापार करते हैं। जो व्यापारी रत्नों के महत्व को नहीं जानते, वे जगत् में अन्धों की तरह भटकते रहते हैं॥ २॥

पउड़ी ॥ नउ दरवाजे काइआ कोटु है दसवै गुपतु रखीजै ॥ बजर कपाट न खुलनी गुर सबदि खुलीजै ॥ अनहद वाजे धुनि वजदे गुर सबदि सुणीजै ॥ तितु घट अंतरि चानणा करि भगति मिलीजै ॥ सभ महि एकु वरतदा जिनि आपे रचन रचाई ॥ १५ ॥

पउड़ी॥ यह मानव शरीर एक किला है जिसे दो आँखें, दो कान, मुँह, दो नासिका, गुदा एवं लिंग रूपी नौ दरवाजे लगे हुए हैं, जो प्रत्यक्ष है लेकिन दसम द्वार गुप्त रखा हुआ है। यह वज्र कपाट गुरु के शब्द द्वारा ही खुल सकता है। इसके भीतर अनहद ध्वनि के बाजे बजते रहते हैं, जिन्हें गुरु के शब्द द्वारा ही सुना जा सकता है। इसके हृदय में प्रभु ज्योति का आलोक है पर प्रभु को भक्ति से ही मिला जा सकता है। सब जीवों में एक परमेश्वर ही मौजूद है, जिसने स्वयं ही यह सृष्टि-रचना की है॥ १५॥

सलोक म: २ ॥ अंधे कै राहि दसिऐ अंधा होइ सु जाइ ॥ होइ सुजाखा नानका सो किउ उझड़ि पाइ ॥ अंधे एहि न आखीअनि जिन मुखि लोइण नाहि ॥ अंधे सेई नानका खसमहु घुथे जाहि ॥ १ ॥

श्लोक महला २॥ अन्धे आदमी के बताए हुए राह पर वही जाता है, जो स्वयं अंधा होता है। (अर्थात् मूर्ख ही मूर्ख के मार्ग पर जाता है) हे नानक! नेत्रों वाला अर्थात् ज्ञानी आदमी कभी भी नहीं भटकता। जिनके चेहरे पर आँखें नहीं हैं, उन्हें अन्धा नहीं कहा जाता। हे नानक! अंधे तो वही हैं, जिन्हें भगवान ने कुमार्गगामी किया हुआ है॥ १॥

म: २ ॥ साहिबि अंधा जो कीआ करे सुजाखा होइ ॥ जेहा जाणै तेहो वरतै जे सउ आखै कोइ ॥ जिथै सु वसतु न जापई आपे वरतउ जाणि ॥ नानक गाहकु किउ लए सकै न वसतु पछाणि ॥ २ ॥

महला २॥ ईश्वर ने जिस आदमी को स्वयं अन्धा बना दिया है, वह तभी नेत्रों वाला हो सकता है, यदि वह स्वयं दृष्टिवान बना दे। अन्धा आदमी जैसे जानता है, वैसे ही करता रहता है, चाहे सौ बार उसे समझाने का ही प्रयास किया जाए। जिसे अपने हृदय में पड़ी वस्तु का ज्ञान नहीं होता समझ लो वह स्वयं ही अज्ञानता पर चल रहा है। हे नानक! कोई ग्राहक उस वस्तु को कैसे ले सकेगा जब वह उसे पहचान ही नहीं सकता॥ २॥

म: २ ॥ सो किउ अंधा आखीऐ जि हुकमहु अंधा होइ ॥ नानक हुकमु न बुझई अंधा कहीऐ सोइ ॥ ३ ॥

महला २॥ उस आदमी को अन्धा क्यों कहा जाए जो ईश्वरेच्छा से अन्धा हुआ है ? हे नानक! जो परमात्मा के हुक्म को नहीं समझता, उसे ही अन्धा कहा जाता है॥ ३॥

पउड़ी ॥ काइआ अंदरि गड़ु कोटु है सभि दिसंतर देसा ॥ आपे ताड़ी लाईअनु सभ महि परवेसा ॥ आपे स्रिसटि साजीअनु आपि गुपतु रखेसा ॥ गुर सेवा ते जाणिआ सचु परगटीएसा ॥ सभु किछु सचो सचु है गुरि सोझी पाई ॥ १६ ॥

पउड़ी॥ मानव-शरीर में ही दुर्ग, किला तथा सभी देश-देशान्तर की चीजें उपलब्ध हैं। ईश्वर ने स्वयं ही समाधि लगाई हुई है और सब जीवों में प्रवेश किया हुआ है। वह स्वयं ही सृष्टि-रचना करता है और खुद को गुप्त रखता है। गुरु की सेवा करने से ही बोध होता है और वह सत्यस्वरूप प्रगट हो जाता है। गुरु ने यही सूझ दी है कि सबकुछ परमसत्य ही है॥ १६॥

सलोक म: १ ॥ सावणु राति अहाड़ु दिहु कामु क्रोधु दुइ खेत ॥ लबु वत्र दरोगु बीउ हाली राहकु हेत ॥ हलु बीचारु विकार मण हुकमी खटे खाइ ॥ नानक लेखै मंगिऐ अउतु जणेदा जाइ ॥ १ ॥

श्लोक महला १॥ पापी इन्सान के लिए सावन का महीना रात के समान है और आषाढ़ का महीना दिन के समान है। काम एवं क्रोध दोनों ही उसके लिए खेत के समान हैं। लालच उसके लिए विषय-विकार की फसल बोने के लिए उचित समय है और धोखा बोने वाला बीज है। उसके खेत में हल चलाने वाला किसान मोह है और उसका मंदा विचार ही जमीन को चलाने के लिए हल है। उसने पापों की फसल से पाप रूपी अनाज का फल इकट्ठा किया है और परमात्मा के हुक्म से ही फल प्राप्त करता है। हे नानक! उसके किए कर्मों का हिसाब मांगते समय ही पता चलता है कि वह जीव रूपी पिता जगत् में से संतानहीन ही गया है, क्योंकि उसने किसी पुण्य कर्म रूपी पुत्र को जन्म नहीं दिया॥ १॥

म: १ ॥ भउ भुइ पवितु पाणी सतु संतोखु बलेद ॥ हलु हलेमी हाली चितु चेता वत्र वखत संजोगु ॥ नाउ बीजु बखसीस बोहल दुनीआ सगल दरोग ॥ नानक नदरी करमु होइ जावहि सगल विजोग ॥ २॥

महला १॥ धर्मी इन्सान के लिए परमात्मा का डर खेत के समान है और मन की शुद्धता फसल को देने वाले जल के समान है। सत्य एवं संतोष दो बैलों के समान है और नम्रता हल के समान है जिससे खेत जोता जाता है। उसका चित्त हलवाहक एवं परमात्मा का सिमरन फसल बोने का उचित समय है। उसके लिए प्रभातकाल प्रभु से मिलाप करवाने वाला संयोग है और प्रभु का नाम खेत में बोने वाले बीज के समान है। परमात्मा की कृपा अनाज के समान है और उसे सारी दुनिया ही धोखा नजर आती है। हे नानक ! यदि परमात्मा की करुणा-दृष्टि हो जाए तो उसके सारे वियोग दूर हो जाते हैं॥ २॥

पउड़ी ॥ मनमुखि मोहु गुबारु है दूजै भाइ बोलै ॥ दूजै भाइ सदा दुखु है नित नीरु विरोलै ॥ गुरमुखि नामु धिआईऐ मथि ततु कढोलै ॥ अंतरि परगासु घटि चानणा हरि लधा टोलै ॥ आपे भरमि भुलाइदा किछु कहणु न जाई ॥ १७ ॥

पउड़ी॥ स्वेच्छाचारी जीव के मन में मोह रूपी गुबार है, जिस कारण वह द्वैतभाव की ही बातें करता रहता है। द्वैतभाव के कारण सदा दुख ही मिलता है और वह नित्य ही दूध के भ्रम में जल को बिलोता रहता है। यदि गुरुमुख बनकर नाम का ध्यान किया जाए तो मंथन करके परमतत्व प्राप्त हो जाता है। अन्तर्मन में प्रभु-ज्योति का प्रकाश हो जाता है और खोजकर भगवान को प्राप्त कर लेता है। ईश्वर स्वयं भ्रम में डालकर कुमार्गगामी कर देता है और इस बारे में कुछ कहा नहीं जा सकता॥ १७॥

सलोक म: २ ॥ नानक चिंता मति करहु चिंता तिस ही हेइ ॥ जल महि जंत उपाइअनु तिना भि रोजी देइ ॥ ओथै हटु न चलई ना को किरस करेइ ॥ सउदा मूलि न होवई ना को लए न देइ ॥ जीआ का आहारु जीअ खाणा एहु करेइ ॥ विचि उपाए साइरा तिना भि सार करेइ ॥ नानक चिंता मत करहु चिंता तिस ही हेइ ॥ १ ॥

श्लोक महला २॥ नानक कहते हैं कि हे जीव ! चिंता मत करो, चूंकि सब की चिंता ईश्वर को स्वयं ही है। जो जीव उसने जल में उत्पन्न किए हैं, वह उन्हें भी भोजन देता है। वहाँ जल में न कोई दुकान चलती है और न ही कोई कृषि करता है। वहाँ बिल्कुल ही कोई सौदा नहीं होता, न ही किसी का कोई लेन-देन होता है। वहाँ जीवों का आहार जीव ही बनते हैं। उसने जो जीव समुद्र में पैदा किए हैं, उनकी देखभाल भी वह स्वयं ही करता है। हे नानक ! कोई चिंता मत करो, चूंकि सब की चिंता ईश्वर को स्वयं ही है॥ १॥

म: १ ॥ नानक इहु जीउ मछुली झीवरु त्रिसना कालु ॥ मनूआ अंधु न चेतई पड़ै अचिंता जालु ॥ नानक चितु अचेतु है चिंता बधा जाइ ॥ नदरि करे जे आपणी ता आपे लए मिलाइ ॥ २ ॥

श्लोक महला १॥ हे नानक ! यह जीव मछली है और तृष्णा काल रूपी मछुवा है। अन्धा अर्थात् ज्ञानहीन मन भगवान को याद नहीं करता और अकस्मात् ही उसे मृत्यु का जाल आ पड़ता है। हे नानक ! मनुष्य का चित्त नासमझ है, इसलिए चिंता का बंधा हुआ यह यमपुरी को जाता है। यदि भगवान अपनी करुणा-दृष्टि कर दे तो वह स्वयं ही अपने साथ मिला लेता है॥ २॥

पउड़ी ॥ से जन साचे सदा सदा जिनी हरि रसु पीता ॥ गुरमुखि सचा मनि वसै सचु सउदा कीता ॥ सभु किछु घर ही माहि है वडभागी लीता ॥ अंतरि त्रिसना मरि गई हरि गुण गावीता ॥ आपे मेलि मिलाइअनु आपे देइ बुझाई ॥ १८ ॥

पउड़ी॥ वे लोग सदैव सत्यशील हैं, जिन्होंने नाम रूपी हरि-रस का पान किया है। जिन्होंने सत्य का सौदा किया है, गुरु के माध्यम से सच्चा प्रभु उनके मन में बस गया है। सबकुछ हृदय-घर में ही उपलब्ध है, परन्तु भाग्यशाली ने ही उसे प्राप्त किया है। भगवान का गुणानुवाद करने से उनके अन्तर्मन की तृष्णा समाप्त हो गई है। ईश्वर ने स्वयं ही उन्हें गुरु से मिलाकर अपने साथ मिला लिया है और स्वयं ही ज्ञान प्रदान किया है॥ १८॥

सलोक म: १ ॥ वेलि पिंञाइआ कति वुणाइआ ॥ कटि कुटि करि खुंबि चड़ाइआ ॥ लोहा वढे दरजी पाड़े सूई धागा सीवै ॥ इउ पति पाटी सिफती सीपै नानक जीवत जीवै ॥ होइ पुराणा कपड़ु पाटै सूई धागा गंढै ॥ माहु पखु किहु चलै नाही घड़ी मुहतु किछु हंढै ॥ सचु पुराणा होवै नाही सीता कदे न पाटै ॥ नानक साहिबु सचो सचा तिचरु जापी जापै ॥ १ ॥

श्लोक महला १॥ जैसे कपास को बेलकर रूई को कातकर कपड़ा बुना जाता है। फिर कपड़े को काट-कूट कर धोने के लिए भट्टी में डाल दिया जाता है। लोहे की कैंची कपड़े को काटती है और दर्जी उस कपड़े को फाड़ता है। फिर सूई और धागे से कपड़े को सिलाई कर दिया जाता है। हे नानक! इसी प्रकार मनुष्य की खोई हुई इज्जत भगवान की स्तुति करने से हासिल हो जाती है और फिर वह शिष्ट जीवन बिताता है। यदि कपड़ा पुराना होकर फट जाए तो सूई एवं धागे से उसे सिलाई कर लिया जाता है। यह सिलाई किया हुआ कपड़ा महीना या १५ दिन ही चलता है और घड़ी-मुहूर्त कुछ समय ही चलता है। सत्य कभी पुराना होता ही नहीं और यह एक बार सिलाई किया हुआ कभी फटता ही नहीं। हे नानक! सच्चा परमेश्वर सदैव शाश्वत है, पर जीव को यह बात तब तक ही सत्य लगती है, जब तक वह नाम जपता रहता है॥ १॥

म: १ ॥ सच की काती सचु सभु सारु ॥ घाड़त तिस की अपर अपार ॥ सबदे साण रखाई लाइ ॥ गुण की थेकै विचि समाइ ॥ तिस दा कुठा होवै सेखु ॥ लोहू लबु निकथा वेखु ॥ होइ हलालु लगै हकि जाइ ॥ नानक दरि दीदारि समाइ ॥ २ ॥

महला १॥ यदि सत्य की छुरी हो और सत्य ही उसका समूचा लोहा हो, यह छुरी शब्द की सान पर रखकर तीक्ष्ण की गई हो और इसे गुणों की म्यान में डालकर रख दिया जाए तो इसकी बनावट बहुत ही सुन्दर होती है। हे शेख! यदि कोई जीव उस छुरी से मारा गया हो तो तू देख लेना कि उस में लोभ रूपी लहू निकल गया है। जो जीव इस प्रकार हलाल हो जाता है, वह खुदा से जाकर जुड़ जाता है। हे नानक! वह खुदा के द्वार पर उसके दर्शन में लीन हो जाता है॥ २॥

म: १ ॥ कमरि कटारा बंकुड़ा बंके का असवारु ॥ गरबु न कीजै नानका मतु सिरि आवै भारु ॥ ३ ॥

महला १॥ हे नानक! जिस व्यक्ति ने अपनी कमर में सुन्दर कटार धारण की हुई है और कुशल घोड़े पर सवार है, उसे इस बात का अभिमान नहीं करना चाहिए। कहीं उसके सिर पर अभिमान करने से पापों का भार न आ पड़े॥ ३॥

पउड़ी ॥ सो सतसंगति सबदि मिलै जो गुरमुखि चलै ॥ सचु धिआइनि से सचे जिन हरि खरचु धनु पलै ॥ भगत सोहनि गुण गावदे गुरमति अचलै ॥ रतन बीचारु मनि वसिआ गुर कै सबदि भलै ॥ आपे मेलि मिलाइदा आपे देइ वडिआई ॥ १९ ॥

पउड़ी॥ जो व्यक्ति गुरु के निर्देशानुसार चलते हैं, वही सत्संगति में शब्द-ब्रह्म में विलीन हो

जाते हैं। वही सत्यवादी हैं, जो सत्य का ध्यान-मनन करते हैं और जिनके पास अन्तिम क्षणों में यात्रा व्यय के लिए हरि-नाम रूपी धन है। भक्तजन भगवान का गुणगान करते हुए बहुत सुन्दर लगते हैं और गुरु-मतानुसार अडिग रहते हैं। गुरु के शब्द द्वारा रत्न जैसे अमूल्य नाम का विचार उनके मन में निवास कर गया है। ईश्वर स्वयं ही गुरु से साक्षात्कार करवा कर अपने साथ मिला लेता है और स्वयं ही भक्तों को बड़ाई देता है॥ १६॥

सलोक म: ३ ॥ आसा अंदरि सभु को कोइ निरासा होइ ॥ नानक जो मरि जीविआ सहिला आइआ सोइ ॥ १ ॥

श्लोक महला ३॥ सारी दुनिया आशा में ही फँसी हुई है परन्तु कोई विरला ही आशाहीन होकर जीता है। हे नानक ! जो मरजीवा होता है, उसका ही जीवन सफल होता है॥ १॥

म: ३ ॥ ना किछु आसा हथि है केउ निरासा होइ ॥ किआ करे एह बपुड़ी जां भोलाए सोइ ॥ २ ॥

महला ३॥ आशा के हाथ में कुछ भी नहीं है, फिर मनुष्य क्योंकर आशाहीन हो सकता है ? जब परमेश्वर स्वयं ही जीव को भुला देता है तो यह बेचारी आशा क्या कर सकती है ?॥ २॥

पउड़ी ॥ ध्रिगु जीवणु संसार सचे नाम बिनु ॥ प्रभु दाता दातार निहचलु एहु धनु ॥ सासि सासि आराधे निरमलु सोइ जनु ॥ अंतरजामी अगमु रसना एकु भनु ॥ रवि रहिआ सरबति नानकु बलि जाई ॥ २० ॥

पउड़ी॥ सच्चे नाम के बिना संसार में जीना धिक्कार योग्य है। प्रभु ही देने वाला दातार है और यह धन ही निश्चल रहता है। वही व्यक्ति निर्मल है, जो श्वास-श्वास से आराधना करता रहता है। अपनी रसना से अन्तर्यामी, अगम्य ईश्वर का भजन करते रहो। नानक तो उस सर्वव्यापक परमेश्वर पर ही बलिहारी जाता है॥ २०॥

सलोकु म: १ ॥ सरवर हंस धुरे ही मेला खसमै एवै भाणा ॥ सरवर अंदरि हीरा मोती सो हंसा का खाणा ॥ बगुला कागु न रहई सरवरि जे होवै अति सिआणा ॥ ओना रिजकु न पइओ ओथै ओन्हा होरो खाणा ॥ सचि कमाणै सचो पाईऐ कूड़ै कूड़ा माणा ॥ नानक तिन कौ सतिगुरु मिलिआ जिना धुरे पैया परवाणा ॥ १ ॥

श्लोक महला १॥ गुरु रूपी सरोवर एवं गुरुमुख रूपी हंसों का मिलाप प्रारम्भ से ही लिखा हुआ है और परमेश्वर को यही मंजूर होता है। गुरु रूपी सरोवर में शुभ गुण रूपी हीरे-मोती ही गुरुमुख रूपी हंसों का भोजन है। मनमुख रूपी कोई बगुला एवं कौआ चाहे बहुत चतुर हो, वह कभी गुरु रूपी सरोवर में नहीं रहता। उनका भोजन वहाँ सरोवर में नहीं होता अपितु कहीं ओर ही उनका भोजन बना होता है। सत्य की साधना करने से सत्य ही प्राप्त होता है परन्तु झूठ की कमाई करने से केवल झूठा मान ही मिलता है। हे नानक ! सच्चा गुरु उन्हें ही मिला है, जिनकी तकदीर में आरम्भ से ही ऐसा लिखा है॥ १॥

म: १ ॥ साहिबु मेरा उजला जे को चिति करेइ ॥ नानक सोई सेवीऐ सदा सदा जो देइ ॥ नानक सोई सेवीऐ जितु सेविऐ दुखु जाइ ॥ अवगुण वंञनि गुण रवहि मनि सुखु वसै आइ ॥ २ ॥

महला १॥ मेरा मालिक पवित्र है, यदि कोई श्रद्धा से उसे याद करता है तो वह भी पावन

हो जाता है। हे नानक ! उस मालिक की ही भक्ति करनी चाहिए, जो हमें सदा ही देता रहता है। हे नानक ! उसकी ही उपासना करनी चाहिए, जिसकी उपासना करने से दुखों से छुटकारा हो जाता है। अवगुण दूर हो जाते हैं, गुण हृदय में बस जाते हैं और मन में सुखों का निवास हो जाता है॥ २॥

पउड़ी ॥ आपे आपि वरतदा आपि ताड़ी लाईअनु ॥ आपे ही उपदेसदा गुरमुखि पतीआईअनु ॥ इकि आपे उझड़ि पाइअनु इकि भगती लाइअनु ॥ जिसु आपि बुझाए सो बुझसी आपे नाइ लाइअनु ॥ नानक नामु धिआईऐ सची वडिआई ॥ २१ ॥ १ ॥ सुधु ॥

पउड़ी॥ परमेश्वर स्वयं ही समूचे जगत् में विद्यमान है और स्वयं ही उसने समाधि लगाई हुई है। वह स्वयं ही उपदेश देता है और गुरु के माध्यम से सत्य में विश्वस्त करता है। किसी को उसने स्वयं ही भूलभुलैया में डाला हुआ है और किसी को भक्ति में लगाया हुआ है। जिसे वह स्वयं ज्ञान देता है वही समझता है और स्वयं ही नाम-सिमरन में लगाया हुआ है। हे नानक ! प्रभु-नाम का ध्यान करने से ही सच्ची बड़ाई प्राप्त होती है॥ २१॥ १॥ शुद्ध॥

रामकली की वार महला ५ १ओं सतिगुर प्रसादि ॥

सलोक म: ५ ॥ जैसा सतिगुरु सुणीदा तैसो ही मै डीठु ॥ विछुड़िआ मेले प्रभू हरि दरगह का बसीठु ॥ हरि नामो मंतु द्रिड़ाइदा कटे हउमै रोगु ॥ नानक सतिगुरु तिना मिलाइआ जिना धुरे पइआ संजोगु ॥ १ ॥

श्लोक महला ५॥ जैसा सतिगुरु का यश सुना था, वैसा ही मैंने उसे देख लिया है। वह बिछुड़े हुए जीवों को प्रभु से मिला देता है और हरि के दरबार का मध्यस्थ है। वह हरि-नाम का मंत्र जीवों को दृढ़ करवाता है और उनका अभिमान का रोग काट देता है। नानक कहते हैं कि परमेश्वर ने उन्हें ही सतिगुरु से मिलाया है, जिनकी तकदीर में ऐसा संयोग लिखा हुआ है॥ १॥

म: ५ ॥ इकु सजणु सभि सजणा इकु वैरी सभि वादि ॥ गुरि पूरै देखालिआ विणु नावै सभ बादि ॥ साकत दुरजन भरमिआ जो लगे दूजै सादि ॥ जन नानकि हरि प्रभु बुझिआ गुर सतिगुर कै परसादि ॥ २ ॥

महला ५॥ यदि एक ईश्वर मेरा सज्जन बन जाए तो सभी जीव मेरे सज्जन बन जाते हैं। यदि वह मेरा वैरी बन जाए तो सभी मुझसे झगड़ा करने लगते हैं। पूर्ण गुरु ने मुझे यह दिखा दिया है कि नाम के बिना सबकुछ व्यर्थ है। जो द्वैतभाव के स्वाद में लगे रहे हैं, ऐसे दुष्ट शाक्त योनियों में ही भटकते रहे हैं। गुरु-सतगुरु के आशीर्वाद से नानक ने प्रभु को बूझ लिया है॥ २॥

पउड़ी ॥ थटणहारै थाटु आपे ही थटिआ ॥ आपे पूरा साहु आपे ही खटिआ ॥ आपे करि पासारु आपे रंग रटिआ ॥ कुदरति कीम न पाइ अलख ब्रहमटिआ ॥ अगम अथाह बेअंत परै परटिआ ॥ आपे वड पातिसाहु आपि वजीरटिआ ॥ कोइ न जाणै कीम केवडु मटिआ ॥ सचा साहिबु आपि गुरमुखि परगटिआ ॥ १ ॥

पउड़ी॥ रचयिता परमेश्वर ने स्वयं ही जगत्-रचना की है। स्वयं ही नाम रूपी धन का पूर्ण साहूकार है और उसने स्वयं ही नाम रूपी लाभ हासिल किया है। वह स्वयं ही जगत्-प्रसार करके रंग तमाशों में प्रसन्न रहता है। उस अलख ब्रह्म की कुदरत की सही कीमत आँकी नहीं जा

सकती। वह अगम्य, अथाह, बेअंत एवं महान् है। वह स्वयं ही समूचे विश्व का बड़ा बादशाह है और स्वयं ही वजीर है। कोई भी उसकी महिमा की कीमत नहीं जानता और न ही उसके धाम को जानता है। वह सच्चा मालिक स्वयं ही अपने भक्तों को दर्शन देने के लिए गुरु के माध्यम से प्रगट होता है॥ १॥

सलोक म: ५ ॥ सुणि सजण प्रीतम मेरिआ मै सतिगुरु देहु दिखालि ॥ हउ तिसु देवा मनु आपणा नित हिरदै रखा समालि ॥ इकसु सतिगुर बाहरा ध्रिगु जीवणु संसारि ॥ जन नानक सतिगुरु तिना मिलाइओनु जिन सद ही वरतै नालि ॥ १ ॥

श्लोक महला ५॥ हे मेरे सज्जन, प्रियतम प्रभु ! सुनो; मुझे सतगुरु के दर्शन करवा दो। मैं अपना मन उसे अर्पण कर दूँगा और नित्य ही हृदय में उसे स्मरण करता रहूँगा। एक सतगुरु के बिना संसार में जीना धिक्कार योग्य है। हे नानक ! सच्चा गुरु उन्हें ही मिला है, जिनके साथ प्रभु रहता है॥ १॥

म: ५ ॥ मैरै अंतरि लोचा मिलण की किउ पावा प्रभ तोहि ॥ कोई ऐसा सजणु लोड़ि लहु जो मेले प्रीतमु मोहि ॥ गुरि पूरै मेलाइआ जत देखा तत सोइ ॥ जन नानक सो प्रभु सेविआ तिसु जेवडु अवरु न कोइ ॥ २ ॥

महला ५॥ हे प्रभु ! मेरे अन्तर्मन में तुझे मिलने की तीव्र लालसा है, मैं तुझे कैसे प्राप्त कर सकता हूँ ? कोई ऐसा सज्जन ढूँढना है, जो मुझे प्रियतम से मिला दे। पूर्ण गुरु ने मुझे परमात्मा से मिला दिया है, अब जिधर भी देखता हूँ, उधर ही वह नजर आता है। नानक ने उस प्रभु की उपासना की है, जिस जैसा महान् अन्य कोई नहीं है॥ २॥

पउड़ी ॥ देवणहारु दातारु कितु मुखि सालाहीऐ ॥ जिसु रखै किरपा धारि रिजकु समाहीऐ ॥ कोइ न किस ही वसि सभना इक धर ॥ पाले बालक वागि दे कै आपि कर ॥ करदा अनद बिनोद किछू न जाणीऐ ॥ सरब धार समरथ हउ तिसु कुरबाणीऐ ॥ गाईऐ राति दिनंतु गावण जोगिआ ॥ जो गुर की पैरी पाहि तिनी हरि रसु भोगिआ ॥ २ ॥

पउड़ी॥ सर्व सुख देने वाले उस दातार की किस मुख से प्रशंसा की जाए ? वह अपनी कृपा करके जिसकी रक्षा करता है, उसे भोजन भी वही पहुँचाता है। एक परमात्मा ही सबका आधार है और कोई भी जीव किसी के वश नहीं है। वह स्वयं ही अपना हाथ देकर सब जीवों का बालक की तरह पोषण करता है। वह स्वयं ही आनंद-विनोद अनेक लीलाएं करता रहता है, जिसका ज्ञान जीवों को नहीं होता। मैं उस पर कुर्बान जाता हूँ, जो सर्वकला समर्थ एवं सबका जीवनाधार है। हमें रात-दिन उसका गुणगान करते रहना चाहिए चूंकि वही स्तुति योग्य है। जो व्यक्ति गुरु के चरणों में आ पड़े हैं, उन्होंने ही नाम रूपी हरि-रस भोगा है॥ २॥

सलोक म: ५ ॥ भीड़हु मोकलाई कीतीअनु सभ रखे कुटंबै नालि ॥ कारज आपि सवारिअनु सो प्रभ सदा सभालि ॥ प्रभु मात पिता कंठि लाइदा लहुड़े बालक पालि ॥ दइआल होए सभ जीअ जंत्र हरि नानक नदरि निहाल ॥ १ ॥

श्लोक महला ५॥ परमेश्वर ने परिवार सहित हमारी रक्षा की है और दुख संकटों से निकाल कर सुखी कर दिया है। उसने स्वयं ही हमारे सभी कार्य संवार दिए हैं, उस प्रभु का हम सदैव ध्यान करते हैं। प्रभु माता-पिता की तरह हमें गले से लगाकर रखता है और छोटे बालक की तरह

पोषण करता रहता है। सभी जीव-जंतु दयालु हो गए हैं, हे नानक! परमेश्वर ने कृपा-दृष्टि करके निहाल कर दिया है॥ १॥

म: ५ ॥ विणु तुधु होरु जि मंगणा सिरि दुखा कै दुख ॥ देहि नामु संतोखीआ उतरै मन की भुख ॥ गुरि वणु तिणु हरिआ कीतिआ नानक किआ मनुख ॥ २ ॥

महला ५॥ हे परमेश्वर! तेरे बिना और कुछ माँगना सिर पर दुखों का भार ही सहन करना है। मुझे अपना नाम दान दे दीजिए ताकि मुझे संतोष आ जाए और मन की भूख मिट जाए। हे नानक! गुरु ने वन एवं घास को भी हरा-भरा कर दिया है, फिर मनुष्य को समृद्ध करना उसके लिए कोई बड़ी बात नहीं है॥ २॥

पउड़ी ॥ सो ऐसा दातारु मनहु न वीसरै ॥ घड़ी न मुहतु चसा तिसु बिनु ना सरै ॥ अंतरि बाहरि संगि किआ को लुकि करै ॥ जिसु पति रखै आपि सो भवजलु तरै ॥ भगतु गिआनी तपा जिसु किरपा करै ॥ सो पूरा परधानु जिस नो बलु धरै ॥ जिसहि जराए आपि सोई अजरु जरै ॥ तिस ही मिलिआ सचु मंत्रु गुर मनि धरै ॥ ३ ॥

पउड़ी॥ जिसके बिना एक घड़ी, मुहूर्त एवं पल भर भी गुजारा नहीं होता, सो ऐसे दातार को मन से कदापि भुलाना नहीं चाहिए। वह तो घर के अन्दर एवं बाहर हर जगह साथ रहता है, फिर उससे छिपा कर कोई क्या काम कर सकता है? जिसकी वह लाज रखता है, वह स्वयं ही उसे भवसागर से पार करवा देता है। जिस पर वह कृपा करता है, वही भक्त, ज्ञानी एवं तपस्वी है और वही पूर्ण प्रधान है, जिसमें वह अपना बल प्रदान करता है। जिस जीव को वह सहन-शक्ति प्रदान करता है, वह असह्य को भी सहन कर जाता है। जो अपने मन में गुरु-मंत्र को धारण कर लेता है, उसे ही सत्य (परमेश्वर) मिल जाता है॥ ३॥

सलोकु म: ५ ॥ धंनु सु राग सुरंगड़े आलापत सभ तिख जाइ ॥ धंनु सु जंत सुहावड़े जो गुरमुखि जपदे नाउ ॥ जिनी इक मनि इकु अराधिआ तिन सद बलिहारै जाउ ॥ तिन की धूड़ि हम बाछदे करमी पलै पाइ ॥ जो रते रंगि गोविद कै हउ तिन बलिहारै जाउ ॥ आखा बिरथा जीअ की हरि सजणु मेलहु राइ ॥ गुरि पूरै मेलाइआ जनम मरण दुखु जाइ ॥ जन नानक पाइआ अगम रूपु अनत न काहू जाइ ॥ १ ॥

श्लोक महला ५॥ वही सुन्दर राग धन्य है, जिसका गान करने से मन की सारी तृष्णा बुझ जाती है। वही सुन्दर जीव धन्य है, जो गुरु के माध्यम से परमात्मा का नाम जपते रहते हैं। जिन्होंने एकाग्रचित होकर भगवान की आराधना की है, उन पर मैं सदैव बलिहारी जाता हूँ। हम तो उनकी चरण-धूलि की ही कामना करते हैं, परन्तु यह भाग्य से ही मिलती है। मैं उन भक्तजनों पर कुर्बान जाता हूँ, जो गोविन्द की स्मृति में लीन रहते हैं। मैं अपने मन की व्यथा उन्हें बताता हूँ और विनती करता हूँ कि मुझे मेरे सज्जन प्रभु से मिला दो। पूर्ण गुरु ने मुझे भगवान से मिला दिया है, जिससे मेरा जन्म-मरण का दुख दूर हो गया है। हे नानक! उस अगम्य रूप एवं अनंत प्रभु को पा लिया है और अब मैं इधर-उधर नहीं जाता॥ १॥

म: ५ ॥ धंनु सु वेला घड़ी धंनु धनु मूरतु पलु सारु ॥ धंनु सु दिनसु संजोगड़ा जितु डिठा गुर दरसारु ॥ मन कीआ इछा पूरीआ हरि पाइआ अगम अपारु ॥ हउमै तुटा मोहड़ा इकु सचु नामु आधारु ॥ जनु नानकु लगा सेव हरि उधरिआ सगल संसारु ॥ २ ॥

महला ५॥ वह समय, वह घड़ी धन्य है, वह मुहूर्त एवं श्रेष्ठ पल भी धन्य है। वह दिन एवं संयोग धन्य है, जब मैंने गुरु का दर्शन किया। अगम्य, अपार परमेश्वर को पा कर मेरी मनोकामना पूरी हो गई है। मेरा आत्माभिमान समाप्त हो गया है, माया का मोह भी टूट गया और परमात्मा का सच्चा-नाम ही मेरा जीवनाधार बन गया है। हे नानक! भगवान की उपासना में लीन होने से सारे संसार का उद्धार हो गया है॥ २॥

पउड़ी ॥ सिफति सलाहणु भगति विरले दितीअनु ॥ सउपे जिसु भंडार फिरि पुछ न लीतीअनु ॥ जिस नो लगा रंगु से रंगि रतिआ ॥ ओना इको नामु अधारु इका उन भतिआ ॥ ओना पिछै जगु भुंचै भोगई ॥ ओना पिआरा रबु ओनाहा जोगई ॥ जिसु मिलिआ गुरु आइ तिनि प्रभु जाणिआ ॥ हउ बलिहारी तिन जि खसमै भाणिआ ॥ ४ ॥

पउड़ी॥ किसी विरले को ही भगवान ने ही अपना स्तुतिगान एवं भक्ति प्रदान की है। वह जिसे भक्ति का भण्डार सौंप देता है, उससे कर्मों का हिसाब-किताब नहीं लेता। जिसे परमात्मा का रंग लग जाता है, वह उसके रंग में ही लीन रहता है। परमात्मा का एक नाम ही उनका जीवनाधार है और वही उनका भोजन है। उनका अनुसरण करके समूचा जगत् ही सुख भोगता रहता है। उन्हें रब्ब इतना प्यारा है कि वह उनके योग्य ही हो गया है। जिसे गुरु मिल जाता है, उसे प्रभु का ज्ञान हो जाता है। जो अपने मालिक-प्रभु को अच्छे लगते हैं, मैं तो उन पर ही न्यौछावर होता हूँ॥ ४॥

सलोक म: ५ ॥ हरि इकसै नालि मै दोसती हरि इकसै नालि मै रंगु ॥ हरि इको मेरा सजणो हरि इकसै नालि मै संगु ॥ हरि इकसै नालि मै गोसटे मुहु मैला करै न भंगु ॥ जाणै बिरथा जीअ की कदे न मोड़ै रंगु ॥ हरि इको मेरा मसलती भंनण घड़न समरथु ॥ हरि इको मेरा दातारु है सिरि दातिआ जग हथु ॥ हरि इकसै दी मै टेक है जो सिरि सभना समरथु ॥ सतिगुरि संतु मिलाइआ मसतकि धरि कै हथु ॥ वडा साहिबु गुरू मिलाइआ जिनि तारिआ सगल जगतु ॥ मन कीआ इछा पूरीआ पाइआ धुरि संजोग ॥ नानक पाइआ सचु नामु सद ही भोगे भोग ॥ १ ॥

श्लोक महला ५॥ एक परमात्मा से ही मेरी दोस्ती है और एक उससे ही मेरा स्नेह है। एक प्रभु ही मेरा सज्जन है और एक उससे ही मेरा साथ है। एक ईश्वर से ही मेरी बातचीत है, वह कभी मुझसे विमुख नहीं होता और न ही मित्रता को भंग करता है। वह मेरे दिल का दुख-दर्द जानता है और कभी भी मुझसे अपना स्नेह नहीं तोड़ता। एक परमेश्वर ही मेरा सलाहकार है, जो तोड़ने एवं बनाने में समर्थ है। एक ईश्वर ही मेरा दाता है और दुनिया के सभी दानवीरों पर उसका ही आशीर्वाद है। एक हरि का मुझे सहारा है, जो सर्वशक्तिमान है। सतगुरु संत ने मस्तक पर हाथ रखकर मुझे सत्य से मिला दिया है। गुरु ने मुझे बड़े मालिक प्रभु से मिला दिया है, जिसने सारे जगत् का उद्धार कर दिया है। मेरी तकदीर में आरम्भ से ही प्रभु का संयोग लिखा हुआ था और अब मेरी मनोकामना पूरी हो गई है। हे नानक! जिसने सत्य-नाम प्राप्त कर लिया है, वह सदा ही सुख-आनंद भोगता रहता है॥ १॥

म: ५ ॥ मनमुखा केरी दोसती माइआ का सनबंधु ॥ वेखदिआ ही भजि जानि कदे न पाइनि बंधु ॥ जिचरु पैननि खावन्हे तिचरु रखनि गंढु ॥ जितु दिनि किछु न होवई तितु दिनि बोलनि गंधु ॥ जीअ की सार न जाणनी मनमुख अगिआनी अंधु ॥ कूड़ा गंढु न चलई चिकड़ि पथर बंधु ॥ अंधे

आपु न जाणनी फकड़ु पिटनि धंधु ॥ झूठै मोहि लपटाइआ हउ हउ करत बिहंधु ॥ क्रिपा करे जिसु आपणी धुरि पूरा करमु करेइ ॥ जन नानक से जन उबरे जो सतिगुर सरणि परे ॥ २ ॥

महला ५॥ मनमुख जीवों की दोस्ती माया का ही संबंध है। वे पक्की दोस्ती कभी नहीं रखते और देखते ही देखते भाग जाते हैं। उनका रिश्ता तब तक ही कायम रहता है, जब तक उन्हें पहनने को वस्त्र एवं खाने को भोजन मिलता रहा है। जिस दिन उन्हें कुछ भी नहीं मिलता, उस दिन वे गाली-गलौच करते हैं। ऐसे मनमति अज्ञानी एवं अंधे हैं, जो दिल की गहराई को नहीं जानते। कीचड़-गारे से भरे हुए पत्थरों के बांध की तरह झूठी दोस्ती अधिक देर नहीं चलती। अन्धे मनमुखी जीव अपने आत्मज्ञान को नहीं जानते और व्यर्थ ही दुनिया के धंधों में सिर पीटते रहते हैं। इस प्रकार झूठे मोह में फँसकर आत्माभिमान करते हुए उनकी पूरी जिंदगी व्यतीत हो जाती है। जिस पर ईश्वर अपनी कृपा करता है, वह प्रारम्भ से ही पूर्ण करम कर देता है। हे नानक! वही व्यक्ति उबरे हैं, जो सतगुरु की शरण में आए हैं॥ २॥

पउड़ी ॥ जो रते दीदार सेई सचु हाकु ॥ जिनी जाता खसमु किउ लभै तिना खाकु ॥ मनु मैला वेकारु होवै संगि पाकु ॥ दिसै सचा महलु खुलै भरम ताकु ॥ जिसहि दिखाले महलु तिसु न मिलै धाकु ॥ मनु तनु होइ निहालु बिंदक नदरि झाकु ॥ नउ निधि नामु निधानु गुर कै सबदि लागु ॥ तिसै मिलै संत खाकु मसतकि जिसै भागु ॥ ५ ॥

पउड़ी॥ जो परमात्मा के दीदार में ही लीन रहते हैं, वही सच्चे संत कहलाते हैं। जिन्होंने मालिक को पहचान लिया है, उनके चरणों की धूलि क्योंकर मिल सकती है? उनकी संगत में विकारों से भरा मैला मन भी पावन हो जाता है। जीव का भ्रम रूपी कपाट खुल जाता है और सत्य का घर नजर आने लगता है। परमेश्वर जिसे अपना घर दिखा देता है, उसे फिर धक्का नहीं लगता। जिस व्यक्ति की ओर ईश्वर जरा-सी करुणा-दृष्टि से देख लेता है, उसका मन एवं तन निहाल हो जाता है। गुरु के शब्द में ध्यान लगाने से नाम रूपी नौ निधियाँ प्राप्त हो जाती हैं। संतों की चरण-धूलि उन्हें ही मिलती है, जिसके मस्तक पर उत्तम भाग्य होता है॥ ५॥

सलोक म: ५ ॥ हरणाखी कू सचु वैणु सुणाई जो तउ करे उधारणु ॥ सुंदर बचन तुम सुणहु छबीली पिरु तैडा मन साधारणु ॥ दुरजन सेती नेहु रचाइओ दसि विखा मै कारणु ॥ ऊणी नाही झूणी नाही नाही किसै विहूणी ॥ पिरु छैलु छबीला छडि गवाइओ दुरमति करमि विहूणी ॥ ना हउ भुली ना हउ चुकी ना मै नाही दोसा ॥ जितु हउ लाई तितु हउ लगी तू सुणि सचु संदेसा ॥ साई सोहागणि साई भागणि जै पिरि किरपा धारी ॥ पिरि अउगण तिस के सभि गवाए गल सेती लाइ सवारी ॥ करमहीण धन करै बिनंती कदि नानक आवै वारी ॥ सभि सुहागणि माणहि रलीआ इक देवहु राति मुरारी ॥ १ ॥

श्लोक महला ५॥ हे मृगलोचना! मैं तुम्हें एक सच्ची बात सुनाती हूँ, जो तेरा उद्धार कर देगी। हे छबीली! तुम मेरा सुन्दर वचन सुनो, तेरा प्रियवर ही तेरे मन का आधार है। तूने दुष्ट विकारों से अपना प्रेम लगा लिया है, पर मुझे यह तो बता इसका क्या कारण है? जीवात्मा जवाब देती है कि मुझ में किसी प्रकार की कोई त्रुटि नहीं है और किसी गुण से भी विहीन नहीं हूँ। परन्तु दुर्मति के कारण दुर्भाग्य से अपने छैल छबीले प्रियतम को गंवा दिया है। न ही मैं भूली हुई हूँ, न ही कोई गलती की है, न ही मुझ में कोई दोष है। जिधर मुझे मेरे स्वामी ने लगाया है, उधर ही लग गई हूँ, तू मेरा सच्चा संदेश सुन। वही जीव-स्त्री सुहागिन है, वही भाग्यवान् है, जिस पर

प्रिय-प्रभु अपनी कृपा करता है। फिर प्रियतम उसके सभी अवगुण दूर करके गले से लगाकर उसे संवार देता है। हे नानक ! भाग्यहीन जीव रूपी नारी विनती करती है कि हे प्रभु ! मेरी बारी कब आएगी ? सब सुहागिनें तेरे साथ आनंद करती रहती हैं, इसलिए मुझे एक रात का ही आनंद प्रदान कर दो॥ १॥

म: ५ ॥ काहे मन तू डोलता हरि मनसा पूरणहारु ॥ सतिगुरु पुरखु धिआइ तू सभि दुख विसारणहारु ॥ हरि नामा आराधि मन सभि किलविख जाहि विकार ॥ जिन कउ पूरबि लिखिआ तिन रंगु लगा निरंकार ॥ ओनी छडिआ माइआ सुआवड़ा धनु संचिआ नामु अपारु ॥ अठे पहर इकतै लिवै मंनेनि हुकमु अपारु ॥ जनु नानकु मंगै दानु इकु देहु दरसु मनि पिआरु ॥ २ ॥

महला ५॥ अरे मन ! तू क्यों डगमगाता है ? ईश्वर सब कामनाएँ पूर्ण करने वाला है। तू सतगुरु का ध्यान किया कर, वह सभी दुखों को भुलाने वाला है। हे मन ! हरि-नाम की आराधना करने से सभी किल्विष एवं विकार दूर हो जाते हैं। जिनकी तकदीर में पूर्व से ही लिखा होता है, उसे ही निराकार की स्मृति का रंग लगता है। ऐसे भक्त ने माया का स्वाद छोड़कर नाम रूपी अपार धन संचित कर लिया है। वह आठों प्रहर ईश्वर के ध्यान में लीन रहता है और उसके अपार हुक्म का ही पालन करता है। नानक तो परमात्मा से एक यही दान माँगता है कि मुझे अपने दर्शन दीजिए एवं मन में सदैव प्रेम बना रहे॥ २॥

पउड़ी ॥ जिसु तू आवहि चिति तिस नो सदा सुख ॥ जिसु तू आवहि चिति तिसु जम नाहि दुख ॥ जिसु तू आवहि चिति तिसु कि काड़िआ ॥ जिस दा करता मित्रु सभि काज सवारिआ ॥ जिसु तू आवहि चिति सो परवाणु जनु ॥ जिसु तू आवहि चिति बहुता तिसु धनु ॥ जिसु तू आवहि चिति सो वड परवारिआ ॥ जिसु तू आवहि चिति तिनि कुल उधारिआ ॥ ६ ॥

पउड़ी॥ हे परमेश्वर ! जिसे तू याद आता है, उसे सदा ही सुख मिलता रहता है। जिसे तू स्मरण होता है, उसका मृत्यु का दुख समाप्त हो जाता है। जिसे तू याद आता है, उसे किस प्रकार की चिंता हो सकती है। कर्ता परमेश्वर जिसका मित्र बन जाता है, उसका प्रत्येक कार्य साकार हो जाता है। जिसे तू याद आता है, उसका जन्म सफल हो जाता है। जिसे तू स्मरण आता है, वह धन-ऐश्वर्य से सम्पन्न हो जाता है। जिसे तेरी याद आती है, वह बड़े परिवार वाला हो जाता है। हे परमात्मा ! जिसे तू याद आता है, उसकी वंशावलि का भी कल्याण हो जाता है॥ ६॥

सलोक म: ५ ॥ अंदरहु अंना बाहरहु अंना कूड़ी कूड़ी गावै ॥ देही धोवै चक्र बणाए माइआ नो बहु धावै ॥ अंदरि मैलु न उतरै हउमै फिरि फिरि आवै जावै ॥ नींद विआपिआ कामि संतापिआ मुखहु हरि हरि कहावै ॥ बैसनो नामु करम हउ जुगता तुह कुटे किआ फलु पावै ॥ हंसा विचि बैठा बगु न बणई नित बैठा मछी नो तार लावै ॥ जा हंस सभा वीचारु करि देखनि ता बगा नालि जोड़ु कदे न आवै ॥ हंसा हीरा मोती चुगणा बगु डडा भालण जावै ॥ उडरिआ वेचारा बगुला मतु होवै मंञु लखावै ॥ जितु को लाइआ तित ही लागा किसु दोसु दिचै जा हरि एवै भावै ॥ सतिगुरु सरवरु रतनी भरपूरे जिसु प्रापति सो पावै ॥ सिख हंस सरवरि इकठे होए सतिगुर कै हुकमावै ॥ रतन पदारथ माणक सरवरि भरपूरे खाइ खरचि रहे तोटि न आवै ॥ सरवर हंसु दूरि न होई करते एवै भावै ॥ जन नानक जिस दै मसतकि भागु धुरि लिखिआ सो सिखु गुरू पहि आवै ॥ आपि तरिआ कुटंब सभि तारे सभा स्रिसटि छडावै ॥ १ ॥

श्लोक महला ५॥ ढोंगी पण्डित अपने मन से भी अन्धा है और अपनी बाहरी करतूतों से भी अन्धा अर्थात् ज्ञानहीन है, पर झूठमूठ ही विष्णु के भजन गाता रहता है। वह अपने शरीर को स्नान करवाता है और माथे पर धार्मिक चक्र बनाता है, वह धन-दौलत के लिए बहुत भागदौड़ करता है। उसके मन की मैल दूर नहीं होती और अहम् में पुनः पुनः जन्म मरण के चक्र में पड़ा रहता है। वह निद्रा में ग्रस्त एवं कामवासना का दुखी किया हुआ मुँह से हरि-हरि कहता रहता है। उसका नाम तो वैष्णो है किन्तु अपने कर्मों द्वारा वह अभिमान से जुड़ा हुआ है। छिलकों को कूट कर क्या फल प्राप्त हो सकता है? हंसों में बैठा हुआ बगुला हंस नहीं बनता और वह हंसों में बैठा हुआ भी नित्य मछली को पकड़ने के लिए ध्यान लगाकर रखता है। जब हंस अपनी सभा में सोच-विचार कर देखते हैं तो उनका बगुले से गठजोड़ कभी बनता ही नहीं। हंस तो हीरे-मोती चुगते हैं किन्तु बगुला मेंढकों को ढूँढने जाता है। बेचारा बगुला हंसों की डार में से उड़ गया है कि शायद मुझे कोई पहचान न ले। जिस किसी को जिस ओर परमात्मा ने लगाया है, वह उस ओर लगा हुआ है। जब परमेश्वर को यूं ही भाता है, फिर किसी को क्या दोष दिया जाए? सतगुरु गुण रूपी रत्नों से भरा हुआ सरोवर है, जिसे गुरु प्राप्त हो जाता है, उसे गुण रूपी रत्न हासिल हो जाते हैं। सतगुरु के हुक्म से शिष्य रूपी हंस उस सरोवर में इकट्ठे हो जाते हैं। गुरु रूपी सरोवर में गुण रूपी रत्न एवं माणिक्य पदार्थ भरे हुए हैं और शिष्य रूपी हंस उन्हें सेवन करते एवं अन्यों को भी करवाते हैं परन्तु वे कभी समाप्त नहीं होते। परमेश्वर को यही मंजूर होता है कि शिष्य रूपी हंस गुरु रूपी सरोवर से कभी दूर न हों। हे नानक! वही शिष्य गुरु के पास आता है, जिसके माथे पर जन्म से ऐसा भाग्य लिखा होता है। ऐसा शिष्य स्वयं तो भवसागर से तैर जाता है, अपने समूचे परिवार का उद्धार करवा देता है और सारी दुनिया का भी कल्याण करवाता है॥ १॥

म: ५ ॥ पंडितु आखाए बहुती राही कोरड़ मोठ जिनेहा ॥ अंदरि मोहु नित भरमि विआपिआ तिसटसि नाही देहा ॥ कूड़ी आवै कूड़ी जावै माइआ की नित जोहा ॥ सचु कहै ता छोहो आवै अंतरि बहुता रोहा ॥ विआपिआ दुरमति कुबुधि कुमूड़ा मनि लागा तिसु मोहा ॥ ठगै सेती ठगु रलि आइआ साथु भि इको जेहा ॥ सतिगुरु सराफु नदरी विचदो कढै तां उघड़ि आइआ लोहा ॥ बहुतेरी थाई रलाइ रलाइ दिता उघड़िआ पड़दा अगै आइ खलोहा ॥ सतिगुर की जे सरणी आवै फिरि मनूरहु कंचनु होहा ॥ सतिगुरु निरवैरु पुत्र सत्र समाने अउगण कटे करे सुधु देहा ॥ नानक जिसु धुरि मसतकि होवै लिखिआ तिसु सतिगुर नालि सनेहा ॥ अंम्रित बाणी सतिगुर पूरे की जिसु किरपालु होवै तिसु रिदै वसेहा ॥ आवण जाणा तिस का कटीऐ सदा सदा सुखु होहा ॥ २ ॥

महला ५॥ अनेक मार्गों (शास्त्रों) का ज्ञाता होने के कारण जीव पण्डित तो कहलाता है किन्तु कठोर मोठ जैसा बन जाता है जो पकाने से पकता नहीं। मन में मोह के कारण वह नित्य भ्रम में फँसा रहता और उसका शरीर कहीं भी स्थिर नहीं होता। उसे नित्य धन की लालसा लगी रहती है, इसलिए वह मिथ्या माया के मोह में फँसकर आवागमन में पड़ा रहता है। यदि कोई उसे सत्य कहता है तो उसे खीझ आती है, चूंकि उसके मन में बड़ा क्रोध भरा हुआ है। दुर्मति एवं खोटी बुद्धि में फँसा हुआ वह महांमूर्ख है और उसके मन में माया का मोह लगा हुआ है। अन्य ठगों के साथ ही यह एक पण्डित ठग भी मिल आया है और इन सब की संगत भी एक जैसी है। जब गुरु रूपी सराफ उस ठग पण्डित को अपनी नजर में से निकालता है अर्थात् उसकी परख करता है तो पण्डित रूपी लोहा निकल आया है। वह पण्डित रूपी लोहा अन्य शुद्ध सोने में मिला मिलाकर

बहुत स्थानों पर दिया गया किन्तु उसका पर्दा खुलता रहा और वह अपने लोहे के रूप में सबके सामने खड़ा होता रहा। यदि वह पण्डित गुरु की शरण में आ जाए तो वह जले हुए लोहे से पुनः सोना बन जाए। सतगुरु निर्वेर है, उसके लिए पुत्र एवं शत्रु सब एक समान हैं। वह उन सभी के अवगुणों को काटकर उनके शरीर को शुद्ध कर देता है। हे नानक! जिसके भाग्य में जन्म से ही लिखा होता है, उसका ही सतगुरु से स्नेह होता है। पूर्ण सतगुरु की वाणी अमृतमय है, परन्तु यह उसके हृदय में ही बसती है, जिस पर वह कृपालु हो जाता है। गुरु उसका जन्म-मरण का चक्र काट देता है और उसे सदैव सुख मिलता रहता है॥ २॥

पउड़ी ॥ जो तुधु भाणा जंतु सो तुधु बुझई ॥ जो तुधु भाणा जंतु सु दरगह सिझई ॥ जिस नो तेरी नदरि हउमै तिसु गई ॥ जिस नो तू संतुसटु कलमल तिसु खई ॥ जिस कै सुआमी वलि निरभउ सो भई ॥ जिस नो तू किरपालु सचा सो थिअई ॥ जिस नो तेरी मइआ न पोहै अगनई ॥ तिस नो सदा दइआलु जिनि गुर ते मति लई ॥ ७ ॥

पउड़ी॥ हे परमेश्वर! जो जीव तुझे भाता है, वही तुझे बूझता है। जो जीव तुझे प्रिय होता है, वही तेरे दरबार में सफल होता है। जिस पर तेरी करुणा-दृष्टि हुई है, उसका अभिमान दूर हो गया है। जिस पर तू प्रसन्न हुआ है, उसके सभी पाप-विकार नाश हो गए हैं। जगत् का स्वामी जिसके पक्ष में हुआ है, वह निडर हो गया है। जिस पर तू कृपालु हो गया है, वह सत्यवादी बन गया है। जिस पर तेरी मेहर हो जाती है, उसे तृष्णाग्नि भी स्पर्श नहीं करती। जिस व्यक्ति ने गुरु से मति ली है, उस पर तू सदा ही दयालु रहता है॥ ७॥

सलोक म: ५ ॥ करि किरपा किरपाल आपे बखसि लै ॥ सदा सदा जपी तेरा नामु सतिगुर पाइ पै ॥ मन तन अंतरि वसु दूखा नासु होइ ॥ हथ देइ आपि रखु विआपै भउ न कोइ ॥ गुण गावा दिनु रैणि एतै कंमि लाइ ॥ संत जना कै संगि हउमै रोगु जाइ ॥ सरब निरंतरि खसमु एको रवि रहिआ ॥ गुर परसादी सचु सचो सचु लहिआ ॥ दइआ करहु दइआल अपणी सिफति देहु ॥ दरसनु देखि निहाल नानक प्रीति एह ॥ १ ॥

श्लोक महला ५॥ हे कृपानिधान! कृपा करके मेरा कल्याण कर दे। सतगुरु के चरणों में पड़कर मैं सर्वदा तेरा नाम जपता हूँ। मेरे मन-तन में अवस्थित हो जाओ ताकि दुखों का नाश हो जाए। अपना हाथ देकर मेरी रक्षा करो, ताकि किसी प्रकार का भय प्रभावित न करे। मैं दिन-रात तेरा यशोगान करता रहूँ, इसलिए मुझे इसी काम में लगाकर रखो। संतजनों की संगति करने से अहंकार का रोग दूर हो जाता है। सब जीवों में एक परमेश्वर ही व्याप्त है। गुरु की कृपा से ही सत्य की प्राप्ति होती है और मैंने भी उस परमसत्य को पा लिया है। हे दीनदयाल! दया करो और अपनी स्तुति का दान दीजिए। हे नानक! भगवान से हमारी यही प्रीति है कि उसके दर्शन करके आनंदित हो गया हूँ॥ १ ॥

म: ५ ॥ एको जपीऐ मनै माहि इकस की सरणाइ ॥ इकसु सिउ करि पिरहड़ी दूजी नाही जाइ ॥ इको दाता मंगीऐ सभु किछु पलै पाइ ॥ मनि तनि सासि गिरासि प्रभु इको इकु धिआइ ॥ अंम्रितु नामु निधानु सचु गुरमुखि पाइआ जाइ ॥ वडभागी ते संत जन जिन मनि वुठा आइ ॥ जलि थलि महीअलि रवि रहिआ दूजा कोई नाहि ॥ नामु धिआई नामु उचरा नानक खसम रजाइ ॥ २ ॥

महला ५॥ मन में एक ईश्वर को ही जपते रहना चाहिए और एक उसकी ही शरण लेनी

चाहिए। एक उससे ही प्रेम करो, उसके अतिरिक्त अन्य कोई प्रेम का स्थान नहीं है। एक दाता से ही माँगना चाहिए, उससे सबकुछ मिल जाता है। अपने मन एवं तन, जीवन की हरेक साँस एवं भोजन का ग्रास लेते समय एक प्रभु का ही ध्यान करो। सच्चे परमेश्वर का नामामृत ही सच्चा कोष है जो गुरु की सहायता से मिलता है। वे संतजन बड़े खुशकिस्मत हैं, जिनके मन में भगवान बस गया है। समुद्र, पृथ्वी एवं नभ में एक परमात्मा ही रमण कर रहा है, अन्य कोई नहीं। हे नानक ! परमेश्वर की मर्जी में ही नाम का ध्यान एवं उच्चारण करता रहता हूँ॥ २॥

पउड़ी ॥ जिस नो तू रखवाला मारे तिसु कउणु ॥ जिस नो तू रखवाला जिता तिनै भैणु ॥ जिस नो तेरा अंगु तिसु मुखु उजला ॥ जिस नो तेरा अंगु सु निरमली हूं निरमला ॥ जिस नो तेरी नदरि न लेखा पुछीऐ ॥ जिस नो तेरी खुसी तिनि नउ निधि भुंचीऐ ॥ जिस नो तू प्रभ वलि तिसु किआ मुहछंदगी ॥ जिस नो तेरी मिहर सु तेरी बंदिगी ॥ ८ ॥

पउड़ी॥ हे ईश्वर ! जिसका तू रखवाला है, उसे कौन मार सकता है। जिसका तू रक्षक है, उसने तीनों लोकों को विजय कर लिया है। जिसका तू साथ देता है, उसका मुख उज्ज्वल हो जाता है। जिसे तेरा साथ मिल जाता है, वह अत्यंत निर्मल हो जाता है। जिस पर तेरी कृपा-दृष्टि हो जाती है, उसके कर्मों का हिसाब-किताब नहीं पूछा जाता। जिसे तेरी खुशी हासिल हो जाती है, वह दुनिया की नौ निधियों को भोगता है। हे प्रभु ! तू जिसके पक्ष में है, उसे किसी प्रकार की मोहताजी कैसे हो सकती है ? जिस पर तेरी मेहर है, वही तेरी भजन-बंदगी में लीन है॥ ८॥

सलोक महला ५ ॥ होहु क्रिपाल सुआमी मेरे संतां संगि विहावे ॥ तुधहु भुले सि जमि जमि मरदे तिन कदे न चुकनि हावे ॥ १ ॥

श्लोक महला ५॥ हे स्वामी ! कृपालु हो जाओ ताकि मेरा समूचा जीवन संतों के संग व्यतीत हो जाए। जो तुझे भूल गए हैं, वे जन्म-मरण में ही दुखी रहते हैं और उनके कष्ट कभी समाप्त नहीं होते॥ १॥

म: ५ ॥ सतिगुरु सिमरहु आपणा घटि अवघटि घट घाट ॥ हरि हरि नामु जपंतिआ कोइ न बंधै वाट ॥ २ ॥

महला ५॥ मन में सतगुरु को ही स्मरण करते रहो, चाहे कठिन घाटी एवं पहाड़ चढ़ना हो या दरिया पार करना हो। परमेश्वर का नाम जपने से मार्ग में कोई बाधा नहीं आती॥ २॥

पउड़ी ॥ तिथै तू समरथु जिथै कोइ नाहि ॥ ओथै तेरी रख अगनी उदर माहि ॥ सुणि कै जम के दूत नाइ तेरै छडि जाहि ॥ भउजलु बिखमु असगाहु गुर सबदी पारि पाहि ॥ जिन कउ लगी पिआस अंम्रितु सेइ खाहि ॥ कलि महि एहो पुंनु गुण गोविंद गाहि ॥ सभसै नो किरपालु सम्हाले साहि साहि ॥ बिरथा कोइ न जाइ जि आवै तुधु आहि ॥ ९ ॥

पउड़ी॥ हे ईश्वर ! जहाँ कोई (सहायक) नहीं है, वहाँ तू ही समर्थ है। माता की गर्भ-अग्नि में तू ही जीव की रक्षा करता है और तेरे नाम को सुनकर यम के दूत छोड़कर चले जाते हैं। इस विषम एवं असीम भवसागर से तो शब्द-गुरु के द्वारा ही पार होना संभव है। नामामृत वही पान करते हैं, जिन्हें इसकी तीव्र लालसा लगी होती है। कलियुग में केवल एक यही पुण्य-कर्म है कि गोविंद का गुण गान करते रहो। कृपानिधान सब जीवों की श्वास-श्वास से संभाल करता है।

हे परमेश्वर ! जो जीव जिस कामना से भी तेरे द्वार पर आता है, वह खाली हाथ नहीं जाता॥ ६॥

सलोक म: ५ ॥ दूजा तिसु न बुझाइहु पारब्रहम नामु देहु आधारु ॥ अगमु अगोचरु साहिबो समरथु सचु दातारु ॥ तू निहचलु निरवैरु सचु सचा तुधु दरबारु ॥ कीमति कहणु न जाईऐ अंतु न पारावारु ॥ प्रभु छोडि होरु जि मंगणा सभु बिखिआ रस छारु ॥ से सुखीए सचु साह से जिन सचा बिउहारु ॥ जिना लगी प्रीति प्रभ नाम सहज सुख सारु ॥ नानक इकु आराधे संतन रेणारु ॥ १ ॥

श्लोक महला ५॥ हे परब्रह्म, जीव को नाम रूपी आधार ही दो और उसे कोई अन्य सहारा मत बताओ। हे मालिक ! तू अगम्य, अगोचर, सर्वकला समर्थ और सच्चा दाता है। तू निश्चल, निर्वेर एवं सदैव शाश्वत है और तेरा दरबार भी सच्चा है। तेरी महिमा का मूल्यांकन नहीं किया जा सकता और न ही तेरा अंत एवं कोई आर-पार है। प्रभु को छोड़कर अन्य कुछ मांगना व्यर्थ है और माया के सभी रसों के समान धूल बराबर है। जिन जीवों ने सत्य-नाम का व्यापार किया है, वही सच्चे साहूकार एवं सुखी हैं। जिन्हें प्रभु-नाम से प्रीति लगी हुई है, उन्हें सहज सुख की प्राप्ति हो जाती है। हे नानक ! ऐसे व्यक्ति संतों की चरण-धूलि लेकर परमात्मा की ही आराधना करते रहते हैं॥ १॥

म: ५ ॥ अनद सूख बिस्राम नित हरि का कीरतनु गाइ ॥ अवर सिआणप छाडि देहि नानक उधरसि नाइ ॥ २ ॥

महला ५॥ नित्य भगवान का कीर्ति-गान करने से आनंद, सुख एवं शान्ति प्राप्त होती है। हे नानक ! अन्य सभी चतुराईयां छोड़ दीजिए, चूंकि हरि-नाम से ही उद्धार होता है॥ २॥

पउड़ी ॥ ना तू आवहि वसि बहुतु घिणावणे ॥ ना तू आवहि वसि बेद पड़ावणे ॥ ना तू आवहि वसि तीरथि नाईऐ ॥ ना तू आवहि वसि धरती धाईऐ ॥ ना तू आवहि वसि कितै सिआणपै ॥ ना तू आवहि वसि बहुता दानु दे ॥ सभु को तेरै वसि अगम अगोचरा ॥ तू भगता कै वसि भगता ताणु तेरा ॥ १० ॥

पउड़ी॥ हे परमात्मा, बहुत गिड़गिड़ाने से भी तू वश में नहीं आता, वेदों का अध्ययन करने से भी तू वश में नहीं आता। यदि तीर्थों पर स्नान किया जाए और धरती पर भ्रमण किया जाए तो भी तू वश में नहीं आता। किसी प्रकार की चतुराई करने से भी तुझे वश में नहीं किया जा सकता, बहुत दान देने से भी तू किसी के वश में नहीं आता। हे अगम्य-अगोचर, मालिक ! सब कुछ तेरे ही वश में है, परन्तु तू भक्तों के वश में है और तेरे भक्तों के पास तेरा ही दिया हुआ बल है॥ १०॥

सलोक म: ५ ॥ आपे वैदु आपि नाराइणु ॥ एहि वैद जीअ का दुखु लाइण ॥ गुर का सबदु अंम्रित रसु खाइण ॥ नानक जिसु मनि वसै तिस के सभि दूख मिटाइण ॥ १ ॥

श्लोक महला ५॥ हे नारायण ! तू स्वयं ही (सब दुख-दर्द दूर करने वाला) वैद्य है। यह दुनिया के वैद्य तो जीवों को दिल का दुख लगा देते हैं। गुरु का शब्द ही भोग योग्य अमृतमय रस है। हे नानक ! जिसके मन में (शब्द-गुरु) स्थित हो जाता है, उसके सभी दुख-दर्द मिट जाते हैं॥ १॥

म: ५ ॥ हुकमि उछलै हुकमे रहै ॥ हुकमे दुखु सुखु सम करि सहै ॥ हुकमे नामु जपै दिनु राति ॥ नानक जिस नो होवै दाति ॥ हुकमि मरै हुकमे ही जीवै ॥ हुकमे नान्हा वडा थीवै ॥ हुकमे सोग

हरख आनंद ॥ हुकमे जपै निरोधर गुर मंत ॥ हुकमे आवणु जाणु रहाए ॥ नानक जा कउ भगती लाए ॥ २ ॥

महला ५॥ परमात्मा के हुक्म में ही जीव कभी उछलता है और हुक्मानुसार ही स्थिर रहता है। उसके हुक्म में ही दुख-सुख को एक समान समझकर सहन करता है और उसके हुक्म के अन्तर्गत ही दिन-रात नाम जपता रहता है। हे नानक! जिसे वरदान देता है, वही नाम जपता है। हुक्म के अन्तर्गत ही जीव की मृत्यु होती है और हुक्म से ही वह दुनिया में जीता है। उसके हुक्म से जीव छोटा (गरीब) एवं बड़ा (धनवान) होता है और उसके हुक्मानुसार ही जीव को शोक, हर्ष एवं आनंद प्राप्त होता है। उसके हुक्म में ही जीव उद्धारक गुरु-मंत्र को जपता है। हे नानक! जिस व्यक्ति को परमात्मा भक्ति में लगा देता है, उसके हुक्म से उसका जन्म-मरण का चक्र मिट जाता है॥ २॥

पउड़ी ॥ हउ तिसु ढाढी कुरबाणु जि तेरा सेवदारु ॥ हउ तिसु ढाढी बलिहार जि गावै गुण अपार ॥ सो ढाढी धनु धंनु जिसु लोड़े निरंकारु ॥ सो ढाढी भागठु जिसु सचा दुआर बारु ॥ ओहु ढाढी तुधु धिआइ कलाणे दिनु रैणार ॥ मंगै अंम्रित नामु न आवै कदे हारि ॥ कपड़ु भोजनु सचु रहदा लिवै धार ॥ सो ढाढी गुणवंतु जिस नो प्रभ पिआरु ॥ ११ ॥

पउड़ी॥ हे परमेश्वर! मैं उस ढाढी पर कुर्बान जाता हूँ, जो तेरा सेवक है। मैं उस ढाढी पर न्यौछावर हूँ, जो तेरे अपार गुण गाता रहता है। वह ढाढी धन्य है, जिसे निराकार चाहता है। वह ढाढी भाग्यवान है, जिसे परमात्मा का सच्चा द्वार प्राप्त है। वह ढाढी तेरा ही ध्यान करता है और दिन-रात तेरे कल्याणकारी गुण गाता रहता है। वह नामामृत की कामना करता है और जीवन में कभी पराजित नहीं होता। तेरा सत्य-नाम ही उसका भोजन एवं वस्त्र हैं और तेरे ध्यान में ही लीन रहता है। सो ऐसा ढाढी ही गुणवान् है, जिसे प्रभु से प्रेम है॥ ११॥

सलोक म: ५ ॥ अंम्रित बाणी अमिउ रसु अंम्रितु हरि का नाउ ॥ मनि तनि हिरदै सिमरि हरि आठ पहर गुण गाउ ॥ उपदेसु सुणहु तुम गुरसिखहु सचा इहै सुआउ ॥ जनमु पदारथु सफलु होइ मन महि लाइहु भाउ ॥ सूख सहज आनदु घणा प्रभु जपतिआ दुखु जाइ ॥ नानक नामु जपत सुखु ऊपजै दरगह पाईऐ थाउ ॥ १ ॥

श्लोक महला ५॥ यह अमृतमय वाणी अमृत रूपी रस है और हरि का नाम ही अमृत है। अपने मन, तन एवं हृदय में हरि को याद करो और आठ प्रहर उसका ही स्तुतिगान करो। हे गुरु के शिष्यो, तुम उपदेश सुनो; जीवन का यही सच्चा मनोरथ है। मन में श्रद्धा धारण करने से तुम्हारा जन्म सफल हो जाएगा। प्रभु का जाप करने से दुख दूर हो जाता है और मन में सहज सुख एवं बड़ा आनंद प्राप्त होता है। हे नानक! परमात्मा का नाम जपने से मन में सुख पैदा हो जाता है और सत्य के दरबार में स्थान मिल जाता है॥ १॥

म: ५ ॥ नानक नामु धिआईऐ गुरु पूरा मति देइ ॥ भाणै जप तप संजमो भाणै ही कढि लेइ ॥ भाणै जोनि भवाईऐ भाणै बखस करेइ ॥ भाणै दुखु सुखु भोगीऐ भाणै करम करेइ ॥ भाणै मिटी साजि कै भाणै जोति धरेइ ॥ भाणै भोग भोगाइदा भाणै मनहि करेइ ॥ भाणै नरकि सुरगि अउतारे भाणै धरणि परेइ ॥ भाणै ही जिसु भगती लाए नानक विरले हे ॥ २ ॥

महला ५॥ हे नानक! पूर्ण गुरु यही मत देता है कि हरि-नाम का ध्यान करो। ईश्वरेच्छा

में ही जीव जप, तप एवं संयम करता है और अपनी इच्छा से ही वह जीव को बन्धन-मुक्त कर देता है। ईश्वरेच्छा से ही जीव योनियों में भटकता है और अपनी इच्छा से ही वह कृपा कर देता है। भगवान की रज़ा से ही दुख-सुख भोगना पड़ता है और उसकी इच्छा से ही हम शुभाशुभ कर्म करते हैं। वह अपनी इच्छा से ही शरीर का निर्माण करके उसमें प्राण डाल देता है। वह अपनी इच्छानुसार ही जीव को भोग विलास करवाता है और अपनी मर्जी से ही उन्हें रोकता भी है। प्रभु की रज़ा से ही जीव नरक-स्वर्ग में जन्म लेता है और ईश्वरेच्छा से ही धरती में उसका जन्म होता है। हे नानक! ऐसे जीव विरले ही हैं, जिसे प्रभु अपनी इच्छा से भक्ति में लगा देता है॥ २॥

पउड़ी ॥ वडिआई सचे नाम की हउ जीवा सुणि सुणे ॥ पसू परेत अगिआन उधारे इक खणे ॥ दिनसु रैणि तेरा नाउ सदा सद जापीऐ ॥ त्रिसना भुख विकराल नाइ तेरै ध्रापीऐ ॥ रोगु सोगु दुखु वंञै जिसु नांउ मनि वसै ॥ तिसहि परापति लालु जो गुर सबदी रसै ॥ खंड ब्रहमंड बेअंत उधारणहारिआ ॥ तेरी सोभा तुधु सचे मेरे पिआरिआ ॥ १२ ॥

पउड़ी॥ मैं तो सच्चे-नाम की कीर्ति सुन-सुनकर ही जीवन पा रहा हूँ। प्रभु का नाम एक क्षण में ही पशु-प्रेत एवं अज्ञानी जीवों का उद्धार कर देता है। हे परमेश्वर! दिन-रात सदैव तेरा नाम जपता रहता हूँ, तेरे नाम से तृष्णा की विकराल भूख भी मिट जाती है। जिसके मन में नाम बस जाता है, उसके रोग, शोक एवं दुख दूर हो जाते हैं। जो गुरु-शब्द में आनंद प्राप्त करता है, उसे प्यारा प्रभु प्राप्त होता है। हे उद्धारक! तेरे खण्ड-ब्रह्माण्ड बेअंत हैं। हे मेरे प्यारे सच्चे प्रभु! तेरी शोभा तुझे ही भाती है॥ १२॥

सलोक म: ५ ॥ मितु पिआरा नानक जी मै छडि गवाइआ रंगि कसुंभै भुली ॥ तउ सजण की मै कीम न पउदी हउ तुधु बिनु अढु न लहदी ॥ १ ॥

श्लोक महला ५॥ हे नानक! कुसुंभ फूल जैसी माया के मोह में फँसकर मैंने अपने प्यारे मित्र प्रभु को गंवा दिया है। मुझसे तुझ सज्जन की कीमत नहीं पड़ती और तेरे बिना मैं अपनी आधी दमड़ी का मूल्य भी नहीं पा सकती॥ १॥

म: ५ ॥ ससु विराइणि नानक जीउ ससुरा वादी जेठो पउ पउ लूहै ॥ हभे भसु पुणेदे वतनु जा मै सजणु तूहै ॥ २ ॥

महला ५॥ हे नानक! माया रूपी सास मेरी वैरी है, शरीर रूपी मेरा ससुर बहुत ही झगड़ालू और यम रूपी जेठ मुझे दुखी करता रहता है। हे प्रभु! अगर तू मेरा सज्जन है, तो ये सभी धूल फांकते रहें अर्थात् मुझे उनकी कोई चिंता नहीं॥ २॥

पउड़ी ॥ जिसु तू वुठा चिति तिसु दरदु निवारणो ॥ जिसु तू वुठा चिति तिसु कदे न हारणो ॥ जिसु मिलिआ पूरा गुरू सु सरपर तारणो ॥ जिस नो लाए सचि तिसु सचु सम्हालणो ॥ जिसु आइआ हथि निधानु सु रहिआ भालणो ॥ जिस नो इको रंगु भगतु सो जानणो ॥ ओहु सभना की रेणु बिरही चारणो ॥ सभि तेरे चोज विडाण सभु तेरा कारणो ॥ १३ ॥

पउड़ी॥ हे परमेश्वर! जिसके चित में तू बस गया है, उसके दुख-दर्द का निवारण हो गया है। जिसके अन्तर्मन में तू बस जाता है, वह कभी भी पराजित नहीं होता। जिसे पूर्ण गुरु मिल गया है, वह भवसागर से तैर गया है। जिसकी सत्य से लगन लगा देता है, वह सत्य का ही चिंतन करता रहता है। जिस व्यक्ति को नाम-निधि की प्राप्ति हो जाती है, वह इधर-उधर भटकने से हट

गया है। जिसे भगवान की लगन लगी रहती है, वास्तव में उसे ही सच्चा भक्त जानो। वह सबकी चरण-धूलि बना रहता है, जो प्रभु-चरणों का प्रेमी होता है। हे भगवंत ! तेरे सभी कौतुक बड़े अद्‌भुत हैं एवं यह समूचा विश्व तेरी ही उत्पति है॥ १३॥

सलोक म: ५ ॥ उसतति निंदा नानक जी मै हभ वञाई छोड़िआ हभु किझु तिआगी ॥ हभे साक कूड़ावे डिठे तउ पलै तैडै लागी ॥ १ ॥

श्लोक महला ५॥ हे नानक ! प्रशंसा और निंदा करना यह सब मैंने छोड़ दिया है और सबकुछ छोड़कर त्यागी बन गई हूँ। सभी रिश्ते-नाते मुझे झूठे ही नजर आए हैं, इसलिए मैं तेरी शरण में आ गई हूँ॥ १॥

म: ५ ॥ फिरदी फिरदी नानक जीउ हउ फावी थीई बहुतु दिसावर पंधा ॥ ता हउ सुखि सुखाली सुती जा गुर मिलि सजणु मै लधा ॥ २ ॥

महला ५॥ हे नानक ! बहुत सारे परदेसों के रास्तों पर भटकती-भटकती मैं बावली हो गई थी। जब गुरु को मिलकर मैंने सज्जन-प्रभु को पा लिया तो मैं सुखी हो गई॥ २॥

पउड़ी ॥ सभे दुख संताप जां तुधहु भुलीऐ ॥ जे कीचनि लख उपाव तां कही न घुलीऐ ॥ जिस नो विसरै नाउ सु निरधनु कांढीऐ ॥ जिस नो विसरै नाउ सु जोनी हांढीऐ ॥ जिसु खसमु न आवै चिति तिसु जमु डंडु दे ॥ जिसु खसमु न आवी चिति रोगी से गणे ॥ जिसु खसमु न आवी चिति सु खरो अहंकारीआ ॥ सोई दुहेला जगि जिनि नाउ विसारीआ ॥ १४ ॥

पउड़ी॥ हे परमात्मा ! अगर तुझे भुला दिया जाए तो सब दुख-संताप लग जाते हैं। यदि लाखों उपाय भी किए जाएँ तो भी दुखों से छुटकारा नहीं होता। जिसे प्रभु-नाम विस्मृत हो जाता है, उसे ही निर्धन कहा जाता है। नाम को विस्मृत करने वाला जीव योनियों में ही भटकता रहता है। जिसे प्रभु याद नहीं आता, उसे यम कठोर दण्ड देता है। जिसे भगवान स्मरण नहीं होता, वही रोगी माना जाता है। जिसे मालिक याद नहीं आता, वही बड़ा अहंकारी है। संसार में वही दुखी है, जिसने नाम को विस्मृत कर दिया है॥ १४॥

सलोक म: ५ ॥ तैडी बंदसि मै कोइ न डिठा तू नानक मनि भाणा ॥ घोलि घुमाई तिसु मित्र विचोले जै मिलि कंतु पछाणा ॥ १ ॥

श्लोक महला ५॥ हे परमेश्वर ! तेरे जैसा मैंने कोई नहीं देखा और तू ही नानक के मन को भाया है। उस मध्यस्थ मित्र गुरु पर कोटि-कोटि न्यौछावर हूँ, जिसे मिलकर पति-प्रभु को पहचान लिया है॥ १॥

म: ५ ॥ पाव सुहावे जां तउ धिरि जुलदे सीसु सुहावा चरणी ॥ मुखु सुहावा जां तउ जसु गावै जीउ पइआ तउ सरणी ॥ २ ॥

महला ५॥ वही पाँव सुन्दर हैं, जो तेरी ओर चलते हैं, वही शीश सुहावना है, जो तेरे चरणों में झुकता है। यह मुख तभी उत्तम है, यदि तेरा यशगान करता है और तेरी शरण में पड़ा अन्तर्मन ही भाग्यवान् है॥ २॥

पउड़ी ॥ मिलि नारी सतसंगि मंगलु गावीआ ॥ घर का होआ बंधानु बहुड़ि न धावीआ ॥ बिनठी दुरमति दुरतु सोइ कूड़ावीआ ॥ सीलवंति परधानि रिदै सचावीआ ॥ अंतरि बाहरि इकु इक रीतावीआ ॥

मनि दरसन की पिआस चरण दासावीआ ॥ सोभा बणी सीगारु खसमि जां रावीआ ॥ मिलीआ आइ संजोगि जां तिसु भावीआ ॥ १५ ॥

पउड़ी॥ जीव रूपी नारियों ने सत्संग में मिलकर प्रभु का मंगलगान किया है, जिससे हृदय-घर स्थिर हो गया है और इन्द्रियाँ विकारों की ओर नहीं दौड़ती। दुर्मति एवं पाप विनष्ट हो गए हैं और झूठ पास भी नहीं आता। हृदय में सत्य स्थित होने से जीव रूपी नारी शीलवान एवं प्रधान बन गई है। अन्तर-बाहर एक ही जीवन-युक्ति बना ली है कि मन में प्रभु-दर्शनों की ही आकांक्षा है, इसलिए उसके चरणों की दासी बन गई है। पति-प्रभु के रमण से वह शोभावान बन गई और उसका प्रेम-शृंगार बन गया है। जब प्रभु को भाया तो संयोग बनाकर स्वयं ही मिल गया॥ १५॥

सलोक म: ५ ॥ हभि गुण तैडे नानक जीउ मै कू थीए मै निरगुण ते किआ होवै ॥ तउ जेवडु दातारु न कोई जाचकु सदा जाचोवै ॥ १ ॥

श्लोक महला ५॥ नानक कहते हैं कि हे ईश्वर ! सभी गुण तेरे ही मुझे मिले हैं, मुझ गुणविहीन से क्या हो सकता है ? तेरे जैसा दाता अन्य कोई नहीं है, मुझ जैसा याचक सदा तुझ से ही मांगता रहता है॥ १॥

म: ५ ॥ देह छिजंदड़ी ऊण मझूणा गुरि सजणि जीउ धराइआ ॥ हभे सुख सुहेलड़ा सुता जिता जगु सबाइआ ॥ २ ॥

महला ५॥ शरीर को क्षीण होता देखकर मैं बहुत निराश हो गया था परन्तु सज्जन गुरु ने मेरे दिल को हौसला दिया है। मैंने समूचा जगत् जीत लिया है और मुझे जीवन के सभी सुख उपलब्ध हो गए हैं॥ २॥

पउड़ी ॥ वडा तेरा दरबारु सचा तुधु तखतु ॥ सिरि साहा पातिसाहु निहचलु चउरु छतु ॥ जो भावै पारब्रहम सोई सचु निआउ ॥ जे भावै पारब्रहम निथावे मिलै थाउ ॥ जो कीन्ही करतारि साई भली गल ॥ जिन्ही पछाता खसमु से दरगाह मल ॥ सही तेरा फुरमानु किनै न फेरीऐ ॥ कारण करण करीम कुदरति तेरीऐ ॥ १६ ॥

पउड़ी॥ हे परमेश्वर ! तेरा दरबार बहुत बड़ा है और तेरा सिंहासन अटल है। तू ही समूचे विश्व का सबसे बड़ा बादशाह है, तेरा चँवर एवं छत्र निश्चल है। जो परब्रह्म को मंजूर होता है, वही सच्चा न्याय है। यदि परमात्मा को स्वीकार हो तो बेसहारा को भी सहारा मिल जाता है। जो परमेश्वर ने किया है, वही भली बात है। जिसने मालिक को पहचान लिया है, उसे दरगाह में स्थान मिल गया है। तेरा हुक्म हमेशा सही है, जिसे सहर्ष मानना चाहिए। हे कृपानिधि ! तू सबका स्रष्टा है और यह तेरी ही रची हुई कुदरत है॥ १६॥

सलोक म: ५ ॥ सोइ सुणंदड़ी मेरा तनु मनु मउला नामु जपंदड़ी लाली ॥ पंधि जुलंदड़ी मेरा अंदरु ठंढा गुर दरसनु देखि निहाली ॥ १ ॥

श्लोक महला ५॥ हे प्रभो ! तेरी कीर्ति सुनकर मेरा तन-मन खिल गया है और तेरा नाम जपने से मेरे चेहरे पर लाली आ गई है। तेरे पथ पर चलने से मेरा मन शीतल-शांत हो गया है और गुरु के दर्शन करके आनंदित हो गई हूँ॥ १॥

म: ५ ॥ हठ मंझाहू मै माणकु लधा ॥ मुलि न घिधा मै कू सतिगुरि दिता ॥ ढूंढ वञाई थीआ थिता ॥ जनमु पदारथु नानक जिता ॥ २ ॥

महला ५॥ अपने अंतर्मन में से मैंने नाम रूपी माणिक्य ढूँढ लिया है। दरअसल यह मैंने मूल्य नहीं लिया, यह तो मुझे सतगुरु ने दिया है। अब मेरी तलाश समाप्त हो गई है और मैं स्थिर हो गया हूँ। हे नानक! मैंने अपना जन्म रूपी पदार्थ जीत लिया है अर्थात् अपना जन्म सफल कर लिया है॥ २॥

पउड़ी ॥ जिस कै मसतकि करमु होइ सो सेवा लागा ॥ जिसु गुर मिलि कमलु प्रगासिआ सो अनदिनु जागा ॥ लगा रंगु चरणारबिंद सभु भ्रमु भउ भागा ॥ आतमु जिता गुरमती आगंजत पागा ॥ जिसहि धिआइआ पारब्रहमु सो कलि महि तागा ॥ साधू संगति निरमला अठसठि मजनागा ॥ जिसु प्रभु मिलिआ आपणा सो पुरखु सभागा ॥ नानक तिसु बलिहारणै जिसु एवड भागा ॥ १७ ॥

पउड़ी॥ जिसके मस्तक पर उत्तम भाग्य लिखा हुआ है, वही भगवान की सेवा में लगा है। गुरु से भेंट करके जिसका हृदय-कमल खिल गया है, वह रात-दिन मोह-माया से जाग्रत रहता है। जिसकी ईश्वर के चरण-कमल से लगन लग गई है, उसके सभी भ्रम एवं भय दूर हो गए हैं। उसने गुरु की मतानुसार अपनी आत्मा को जीतकर अनश्वर प्रभु को पा लिया है। जिसने परमात्मा का मनन किया है, उसका कलियुग में उद्धार हो गया है। जो जीव साधु की संगति में मिलकर निर्मल हो गया है, उसने अड़सठ तीर्थों का स्नान कर लिया है। वही पुरुष सौभाग्यशाली है, जिसे अपना प्रभु मिल गया है। हे नानक! मैं उस व्यक्ति पर बलिहारी जाता हूँ, जिसके इतने अहोभाग्य हैं॥ १७॥

सलोक म: ५ ॥ जां पिरु अंदरि तां धन बाहरि ॥ जां पिरु बाहरि तां धन माहरि ॥ बिनु नावै बहु फेर फिराहरि ॥ सतिगुरि संगि दिखाइआ जाहरि ॥ जन नानक सचे सचि समाहरि ॥ १ ॥

श्लोक महला ५॥ जब प्रिय प्रभु हृदय-घर में था तो माया रूपी नारी बाहर थी, जब प्रिय-प्रभु हृदय-घर से बाहर था तो माया रूपी नारी घर की चौधरानी बन गई। नामविहीन जीव अनेक भटकनों में पड़कर भटकता रहता है। सतगुरु ने जीव रूपी नारी को उसके हृदय में ही प्रत्यक्ष दिखा दिया है। हे नानक! अब जीव रूपी नारी सत्य-नाम द्वारा सत्य में ही विलीन हो गई है॥ १॥

म: ५ ॥ आहर सभि करदा फिरै आहरु इकु न होइ ॥ नानक जितु आहरि जगु उधरै विरला बूझै कोइ ॥ २ ॥

महला ५॥ मनुष्य जीवन में सब प्रकार के उद्यम करता रहता है परन्तु उससे एक नाम जपने का उद्यम नहीं होता। हे नानक! कोई विरला मनुष्य ही इस तथ्य को बूझता है, जिस उद्यम द्वारा समूचे जगत् का उद्धार हो जाता है॥ २॥

पउड़ी ॥ वडी हू वडा अपारु तेरा मरतबा ॥ रंग परंग अनेक न जापन्हि करतबा ॥ जीआ अंदरि जीउ सभु किछु जाणला ॥ सभु किछु तेरै वसि तेरा घरु भला ॥ तेरै घरि आनंदु वधाई तुधु घरि ॥ माणु महता तेजु आपणा आपि जरि ॥ सरब कला भरपूरु दिसै जत कता ॥ नानक दासनि दासु तुधु आगै बिनवता ॥ १८ ॥

पउड़ी॥ हे परमेश्वर! तेरी पदवी सर्वोपरि है। अनेक प्रकार के तेरे रंगों वाले कौतुक समझे नहीं जा सकते। सब जीवों में प्राण तेरे ही धारण किए हुए हैं और तू सबकुछ जानता है। सबकुछ

तेरे वश में है और तेरा यह जगत् रूपी घर बहुत ही भला है। तेरे घर में बड़ा आनंद एवं भरपूर खुशियाँ हैं। अपने इतने बड़े मान, बड़ाई एवं तेज प्रताप को तू स्वयं ही भोगता है। जहाँ-कहीं तू दृष्टिगत होता है, तू सर्वकला भरपूर है। हे प्रभु ! तेरे दासों का दास नानक तेरे आगे ही विनती करता है॥ १८॥

सलोक मः ५ ॥ छतड़े बाजार सोहनि विचि वपारीए ॥ वखरु हिकु अपारु नानक खटे सो धणी ॥ १ ॥

श्लोक महला ५॥ हे प्रभु ! नभ रूपी छत से बने हुए चौदह लोक जैसे बाजार हैं और तेरे नाम के जीव रूपी व्यापारी ही सुन्दर लगते हैं। हे नानक ! वही धनवान् हैं जो हरि-नाम रूपी अमूल्य वस्तु का लाभ हासिल करते हैं॥ १॥

महला ५ ॥ कबीरा हमरा को नही हम किस हू के नाहि ॥ जिनि इहु रचनु रचाइआ तिस ही माहि समाहि ॥ २ ॥

महला ५॥ हे कबीर ! संसार में कोई भी हमारा अपना नहीं है और न ही हम किसी के साथी हैं। जिस परमेश्वर ने रचना की है, हम सभी ने उसमें ही विलीन हो जाना है॥ २॥

पउड़ी ॥ सफलिउ बिरखु सुहावड़ा हरि सफल अंम्रिता ॥ मनु लोचै उन्ह मिलण कउ किउ वंञै घिता ॥ वरना चिहना बाहरा ओहु अगमु अजिता ॥ ओहु पिआरा जीअ का जो खोल्है भिता ॥ सेवा करी तुसाड़ीआ मै दसिहु मिता ॥ कुरबाणी वंञा वारणै बले बलि किता ॥ दसनि संत पिआरिआ सुणहु लाइ चिता ॥ जिसु लिखिआ नानक दास तिसु नाउ अंम्रितु सतिगुरि दिता ॥ १६ ॥

पउड़ी॥ हरि एक ऐसा सुन्दर पेड़ है, जिसे नामामृत रूपी सुन्दर फल लगे हुए हैं। यह मन हरि को पाने का तीव्र अभिलाषी है, फिर उसे कैसे प्राप्त किया जा सकता है ? वह अगम्य, अजेय है और वर्ण एवं चिन्ह से परे है। वह मेरा प्राण-प्रिय है, जो यह भेद खोल दे। हे मित्र ! मैं तुम्हारी सेवा करता रहूँगा, मुझे सज्जन-प्रभु के बारे में बताओ। मैं तुझ पर कुर्बान हूँ और तुझ पर ही न्यौछावर हूँ। अपना चित लगाकर मेरी बात सुनो, यह भेद प्यारे संत ही बताते हैं। हे दास नानक ! जिसकी तकदीर में लिखा हुआ है, सतगुरु ने उसे ही नामामृत प्रदान किया है॥ १६॥

सलोक महला ५ ॥ कबीर धरती साध की तसकर बैसहि गाहि ॥ धरती भारि न बिआपई उन कउ लाहू लाहि ॥ १ ॥

श्लोक महला ५॥ हे कबीर ! साधुओं की धरती पर यद्यपि दुष्ट-तस्कर आकर बैठ गए हैं, धरती को उनके पापों के भार का कोई फर्क नहीं पड़ता किन्तु दुष्टों को उनकी संगति से लाभ ही प्राप्त होता है॥ १॥

महला ५ ॥ कबीर चावल कारणे तुख कउ मुहली लाइ ॥ संगि कुसंगी बैसते तब पूछे धरम राइ ॥ २ ॥

महला ५॥ हे कबीर ! जैसे चावलों के कारण भूसी को भी मूसलों से कूटा जाता है, वैसे ही जो व्यक्ति बुरी संगति में बैठते हैं तो यमराज उन्हें भी दण्ड देने के लिए उनसे पूछताछ करता है॥ २॥

पउड़ी ॥ आपे ही वड परवारु आपि इकातीआ ॥ आपणी कीमति आपि आपे ही जातीआ ॥ सभु किछु आपे आपि आपि उपंनिआ ॥ आपणा कीता आपि आपि वरंनिआ ॥ धंनु सु तेरा थानु जिथै

तू वुठा ॥ धंनु सु तेरे भगत जिन्ही सचु तूं डिठा ॥ जिस नो तेरी दइआ सलाहे सोइ तुधु ॥ जिसु गुर भेटे नानक निरमल सोई सुधु ॥ २० ॥

पउड़ी॥ हे परमेश्वर ! तू स्वयं ही बड़े परिवार वाला है और स्वयं ही अकेला रहने वाला है। तू अपने गुणों की कीमत स्वयं ही जानता है। तू स्वयंभू है और तूने स्वयं ही जगत् को उत्पन्न किया है। जो कुछ तूने पैदा किया है, तूने स्वयं ही उसे बयान किया है। वह स्थान धन्य है, जहाँ तू रहता है। हे सच्चे मालिक ! तेरे वे भक्त धन्य हैं, जिन्होंने तेरे दर्शन किए हैं। जिस पर तेरी दया होती है, वही तेरी स्तुति करता है। हे नानक ! जिसकी गुरु से भेंट हो जाती है, वह निर्मल एवं शुद्ध आचरण वाला हो जाता है॥ २०॥

सलोक म: ५ ॥ फरीदा भूमि रंगावली मंझि विसूला बागु ॥ जो नर पीरि निवाजिआ तिन्हा अंच न लाग ॥ १ ॥

श्लोक महला ५॥ हे फरीद ! यह जगत् रूपी धरती बड़ी रंगीली है परन्तु इसमें विकारों का विषैला बगीचा लगा हुआ है। जिस व्यक्ति पर गुरु-पीर ने अपनी कृपा कर दी है, उसे दुख रूपी कोई आँच नहीं लगती॥ १॥

म: ५ ॥ फरीदा उमर सुहावड़ी संगि सुवंनड़ी देह ॥ विरले केई पाईअन्हि जिन्हा पिआरे नेह ॥ २ ॥

महला ५॥ हे फरीद ! यह मनुष्य-जन्म बड़ा सुहावना है और साथ ही यह शरीर बड़ा सुन्दर है। जिनका प्यारे रब से प्रेम होता है, ऐसे विरले ही उसे पाते हैं॥ २॥

पउड़ी ॥ जपु तपु संजमु दइआ धरमु जिसु देहि सु पाए ॥ जिसु बुझाइहि अगनि आपि सो नामु धिआए ॥ अंतरजामी अगम पुरखु इक द्रिसटि दिखाए ॥ साधसंगति कै आसरै प्रभ सिउ रंगु लाए ॥ अउगण कटि मुखु उजला हरि नामि तराए ॥ जनम मरण भउ कटिओनु फिरि जोनि न पाए ॥ अंध कूप ते काढिअनु लड़ु आपि फड़ाए ॥ नानक बखसि मिलाइअनु रखे गलि लाए ॥ २१ ॥

पउड़ी॥ जप, तप, संयम, दया एवं धर्म इत्यादि शुभ गुण जिसे ईश्वर देता है, वही पाता है। वह जिसकी तृष्णाग्नि बुझा देता है, वही हरि-नाम का ध्यान करता है। अन्तर्यामी, अगम्य, पुरुषोत्तम प्रभु जिस पर अपनी कृपा-दृष्टि की झलक दिखा देता है, ऐसा जीव साधु की संगति के सहारे प्रभु से लगन लगा लेता है। ऐसे जीव के अवगुण मिट जाते हैं, उसका मुख उज्ज्वल हो जाता है और वह हरि-नाम द्वारा भवसागर से तैर जाता है। परमात्मा जिसका जन्म-मरण का भय काट देता है, वह दोबारा योनियों में नहीं पड़ता। ईश्वर ने स्वयं ही अपने आँचल से लगाकर अंधकूप में से बाहर निकाल लिया है। हे नानक ! भगवान ने कृपा करके अपने साथ मिला लिया है और उसे गले से लगाकर रखता है॥ २१॥

सलोक म: ५ ॥ मुहबति जिसु खुदाइ दी रता रंगि चलूलि ॥ नानक विरले पाईअहि तिसु जन कीम न मूलि ॥ १ ॥

श्लोक महला ५॥ जिसे खुदा से मुहब्बत हो जाती है, वह उसके रंग में ही रत रहता है। हे नानक ! ऐसे मनुष्य विरले ही मिलते हैं, जिनका मूल्यांकन नहीं किया जा सकता॥ १॥

म: ५ ॥ अंदरु विधा सचि नाइ बाहरि भी सचु डिठोमि ॥ नानक रविआ हभ थाइ वणि त्रिणि त्रिभवणि रोमि ॥ २ ॥

महला ५॥ मेरा मन सत्य-नाम से बिंधा हुआ है और बाहर भी परम-सत्य ही दिखाई दे रहा है। हे नानक! ईश्वर विश्वव्यापक है और वह वन, तृण, तीनों लोकों एवं रोम-रोम में समाया हुआ है॥ २॥

पउड़ी ॥ आपे कीतो रचनु आपे ही रतिआ ॥ आपे होइओ इकु आपे बहु भतिआ ॥ आपे सभना मंझि आपे बाहरा ॥ आपे जाणहि दूरि आपे ही जाहरा ॥ आपे होवहि गुपतु आपे परगटीऐ ॥ कीमति किसै न पाइ तेरी थटीऐ ॥ गहिर गंभीरु अथाहु अपारु अगणतु तूं ॥ नानक वरतै इकु इको इकु तूं ॥ २२ ॥ १ ॥ २ ॥ सुधु ॥

पउड़ी॥ परमात्मा ने स्वयं ही सृष्टि-रचना की है और स्वयं ही इसमें लीन है। वह स्वयं ही अपने एक सगुण रूप में हो गया और स्वयं ही अनेक रूपों में प्रगट हुआ है। वह स्वयं ही सब जीवों में समाया हुआ है और स्वयं ही बाहर भी विद्यमान है। वह स्वयं ही जीवों को दूर नजर आता है और स्वयं ही प्रत्यक्ष है। वह स्वयं ही गुप्त एवं प्रगट होता रहता है। हे ईश्वर! तेरी कुदरत रचना का महत्व कोई भी नहीं पा सका। तू गहनगम्भीर, अथाह, अपार एवं बेअंत है। नानक कहते हैं कि हे प्रभु! एक तू ही कण-कण में मौजूद है, केवल एक तू ही है॥ २२॥ १॥ २॥ शुद्ध॥

रामकली की वार राइ बलवंडि तथा सतै डूमि आखी ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

नाउ करता कादरु करे किउ बोलु होवै जोखीवदै ॥ दे गुना सति भैण भराव है पारंगति दानु पड़ीवदै ॥ नानकि राजु चलाइआ सचु कोटु सताणी नीव दै ॥ लहणे धरिओनु छतु सिरि करि सिफती अंम्रितु पीवदै ॥ मति गुर आतम देव दी खड़गि जोरि पराकुइ जीअ दै ॥ गुरि चेले रहरासि कीई नानकि सलामति थीवदै ॥ सहि टिका दितोसु जीवदै ॥ १ ॥

{इतिहास साक्षी है कि पंचम पातशाह गुरु अर्जुन देव जी के समय में राय बलवंड एवं सत्ता दोनों ही भाई गुरु-घर में कीर्तन करते थे। एक बार इन्होंने अभिमान में आकर गुरु जी का तिरस्कार कर दिया, जिस कारण अभिशाप पाकर बहुत दुखी हुए। तदुपरांत गुरु जी ने इन्हें क्षमा दान देकर इनका कल्याण किया। बलवंड एवं सत्ता डूम ने प्रथम पाँच पउड़ियों में गुरु अंगद देव जी का यशगान किया है और छठी, सप्तमी, अष्टमी पउड़ी में इन्होंने गुरु अमरदास, गुरु रामदास व गुरु अर्जुन देव जी का स्तुतिगान किया है।}

यदि कर्ता-परमेश्वर स्वयं ही न्यायपूर्ण निर्णय करे तो उसके आदेश पर एतराज नहीं किया जा सकता। दैवी गुण सच्चे बहन-भाई हैं जिसे ईश्वर दान देता है, वही कामयाब होता है। *(भाई लहणा को गुरु-गद्दी मिलना परमेश्वर का विधान था, गुरु-पुत्र बेशक विरोध करते रहे लेकिन दैवी गुणों के कारण भाई लहणा ही इसके हकदार बने)*। सतिगुरु नानक देव जी ने जगत् में धर्म का राज चलाया और बड़ी मजबूत आधारशिला रखकर सत्य का एक दुर्ग बना दिया। तदुपरांत उन्होंने भाई लहणा (गुरु अंगद देव) के सिर पर गुरुयाई का छत्र रख दिया और वे भी परमेश्वर की स्तुति करके नामामृत का पान करते रहे। गुरु नानक ने प्रभु-ज्ञान की खड्ग रूपी मति अपने आत्मबल से लहणा जी के हृदय में स्थापित कर दी। गुरु नानक देव जी ने जीते जी अपने शिष्य भाई लहणा जी के आगे नमन किया और अपने जिंदा रहते समय उन्हें गुरुयाई का तिलक लगा दिया॥ १॥

लहणे दी फेराईऐ नानका दोही खटीऐ ॥ जोति ओहा जुगति साइ सहि काइआ फेरि पलटीऐ ॥ झुलै सु छतु निरंजनी मलि तखतु बैठा गुर हटीऐ ॥ करहि जि गुर फुरमाइआ सिल जोगु अलूणी चटीऐ ॥ लंगरु चलै गुर सबदि हरि तोटि न आवी खटीऐ ॥ खरचे दिति खसंम दी आप खहदी खैरि दबटीऐ

॥ होवै सिफति खसंम दी नूरु अरसहु कुरसहु झटीऐ ॥ तुधु डिठे सचे पातिसाह मलु जनम जनम दी कटीऐ ॥ सचु जि गुरि फुरमाइआ किउ एदू बोलहु हटीऐ ॥ पुत्री कउलु न पालिओ करि पीरहु कंन्ह मुरटीऐ ॥ दिलि खोटै आकी फिरन्हि बंन्हि भारु उचाइन्हि छटीऐ ॥ जिनि आखी सोई करे जिनि कीती तिनै थटीऐ ॥ कउणु हारे किनि उवटीऐ ॥ २ ॥

गुरु नानक देव जी की श्रद्धापूर्वक सेवा से जब भाई लहणा जी को गुरुगद्दी प्राप्त हुई तो उनकी शोभा चारों दिशाओं में फैल गई। भाई लहणा जी गुरु नानक देव जी वाली वही ज्योति थी और उनकी जीवन-युक्ति भी वही है, मालिक प्रभु ने केवल उनका शरीर ही बदला है। भाई लहणा जी के सिर पर सुन्दर निरंजन का छत्र झूलता है और वे सिंहासन ग्रहण करके गुरु-गद्दी पर विराजमान हो गए हैं। गुरु नानक ने उन्हें जो हुक्म किया है, वे वही करते हैं और चाहे सत्य का मार्ग बड़ा दुर्गम है, मगर उन्होंने उस पर ही चलने का निर्णय किया। संगत के लिए गुरु के शब्द द्वारा लंगर चलता रहता है परन्तु उसमें कोई कमी नहीं आती। अपने मालिक की दी हुई नाम-देन को वे अन्यों को भी वितरित करते हैं, स्वयं भी सेवन करते रहते हैं और याचकों को भरपूर भिक्षा-दान देते रहते हैं। जिस वक्त गुरु अंगद देव जी के दरबार में ईश्वर का स्तुतिगान किया जाता है, उस वक्त वैकुण्ठ एवं देवलोक से भी नूर बरसता है। हे सच्चे पातशाह गुरु जी ! तेरे दर्शन करके जन्म-जन्मांतर की पापों की मैल भी कट जाती है। गुरु के शिष्य कहते रहते हैं कि गुरु नानक देव जी ने गुरु अंगद देव जी को गुरुयाई देने का सच्चा हुक्म किया है, अतः हम उस हुक्म की अवहेलना कैसे कर सकते हैं ? गुरु नानक देव जी के पुत्रों ने उनके हुक्म का पालन नहीं किया कि वे गुरु अंगद देव जी को अपना गुरु-पीर मानें, अपितु वे तो उनसे विमुख हो गए। खोटे दिलों वाले होने के कारण वे हुक्म मानने से विद्रोही होकर फिरते हैं और पापों का भार उठाकर घूमते रहते हैं। जिस गुरु नानक ने जो बात कही, गुरु अंगद देव जी ने वही बात कर दी। गुरु अंगद देव जी ने गुरु नानक के हुक्म का पालन किया है, इसलिए उन्हें गुरु स्थापित किया गया। देख लो, हुक्म मानने की इस खेल में (भाई लहणा एवं गुरु पुत्रों में) कौन बाजी हार गया है और कौन जीत गया है॥ २॥

जिनि कीती सो मंनणा को सालु जिवाहे साली ॥ धरम राइ है देवता लै गला करे दलाली ॥ सतिगुरु आखै सचा करे सा बात होवै दरहाली ॥ गुर अंगद दी दोही फिरी सचु करतै बंधि बहाली ॥ नानकु काइआ पलटु करि मलि तखतु बैठा सै डाली ॥ दरु सेवे उमति खड़ी मसकलै होइ जंगाली ॥ दरि दरवेसु खसंम दै नाइ सचै बाणी लाली ॥ बलवंड खीवी नेक जन जिसु बहुती छाउ पत्राली ॥ लंगरि दउलति वंडीऐ रसु अम्रितु खीरि घिआली ॥ गुरसिखा के मुख उजले मनमुख थीए पराली ॥ पए कबूलु खसंम नालि जां घाल मरदी घाली ॥ माता खीवी सहु सोइ जिनि गोइ उठाली ॥ ३ ॥

जिस (भाई लहणा) ने हुक्म का पालन किया, वही गुरु रूप में पूज्य हो गया। चावल और भूसी इन दोनों में कौन उत्तम है अर्थात् भाई लहणा एवं गुरु-पुत्रों में कौन श्रेष्ठ है ? धर्मराज रूपी देवता दोनों तरफ के गुण देखकर ही फैसला करता है। गुरु अंगद सर्वश्रेष्ठ हैं और अपने सेवकों की बातें सुनकर उन्हें प्रभु से मिलाने की मध्यस्थता करते हैं। सच्चा परमेश्वर वही करता है जो वचन सतगुरु अंगद देव जी कहते हैं और उनकी कही हुई बात तुरंत ही पूरी हो जाती है। गुरु अंगद देव जी की गुरुगद्दी की घोषणा हो गई तो सच्चे परमात्मा ने स्वयं ही गुरुयाई की पुष्टि कर दी। गुरु नानक देव जी अपनी काया पलट कर स्वयं ही गुरु-सिंहासन पर विराजमान हुए हैं और उनके सैकड़ों ही सिक्ख हैं। गुरु अंगद देव जी की सिक्ख संगत उनके द्वार पर खड़ी उनकी

स्तुति करती रहती है और संगत का मन पापों से यों पवित्र हो रहा है जैसे जंगाली हुई धातु अपघर्षक से साफ हो जाती है। दरवेश गुरु अंगद देव जी को अपने मालिक (गुरु नानक) के द्वार से सत्य की देन प्राप्त हुई है और वाणी गाने से उनके मुँह पर लाली आ जाती है। बलवंड कहता है कि गुरु अंगद देव जी की पत्नी माता खीवी जी बहुत भली स्त्री हैं, जिनकी छाँव पत्राली की तरह घनी है अर्थात् उनके पास बैठने से सबको बड़ा सुख एवं शान्ति मिलती है। माता जी की निगरानी में गुरु के लंगर में घृतयुक्त खीर वितरित की जाती है, जिसका स्वाद अमृत समान मीठा है। यहाँ गुरु के शिष्यों के मुख सदा उज्ज्वल रहते हैं किन्तु मनमुख जल बुन गए हैं और उनकी कोई पूछ नहीं होती। गुरु अंगद देव ने जब शूरवीरों वाली साधना की तो ही वे अपने मालिक को स्वीकार हुए। माता खीवी जी के पति गुरु अंगद देव जी ऐसे शूरवीर हैं, जिन्होंने सारी पृथ्वी का भार अपने सिर पर उठा लिया है॥ ३॥

होरिंओ गंग वहाईऐ दुनिआई आखै कि किओनु ॥ नानक ईसरि जगनाथि उचहदी वैणु विरिकिओनु ॥ माधाणा परबतु करि नेत्रि बासकु सबदि रिड़किओनु ॥ चउदह रतन निकालिअनु करि आवा गउणु चिलकिओनु ॥ कुदरति अहि वेखालीअनु जिणि ऐवड पिड ठिणकिओनु ॥ लहणे धरिओनु छत्रु सिरि असमानि किआड़ा छिकिओनु ॥ जोति समाणी जोति माहि आपु आपै सेती मिकिओनु ॥ सिखां पुत्रां घोखि कै सभ उमति वेखहु जि किओनु ॥ जां सुधोसु तां लहणा टिकिओनु ॥ ४ ॥

दुनिया कहती है कि गुरु नानक देव जी ने भला यह क्या किया है (अपने सेवक भाई लहणा को गुरुगद्दी देकर तो) उन्होंने गंगा अन्य ही दिशा बहा दी है। जगन्नाथ, ईश्वर रूप गुरु नानक देव जी ने (अपने शिष्य को गुरु बनाकर) बहुत ऊँची बात कर दी है। उन्होंने अपने ध्यान को विंध्याचल पर्वत रूपी मथनी और मन को वासुकि नाग रूपी रस्सी बनाकर शब्द रूपी क्षीर सागर का मंथन किया है, जिससे चौदह रत्न रूपी सरीखे चौदह गुण निकाल लिए हैं और इनके द्वारा जन्म-मरण के चक्र वाले जगत् को चमका दिया है। गुरु नानक देव जी ने भाई लहणा जी के शरीर को ठोक बजाकर देखा एवं उन्हें परखकर सिक्ख संगत को यह करिश्मा दिखा दिया है कि वही गुरुगद्दी का हकदार है। इस प्रकार भाई लहणा जी के सिर पर गुरुयाई का छत्र धर दिया और उनकी कीर्ति का चंदोआ आसमान तक तान दिया। तत्पश्चात् उनकी ज्योति भाई लहणा (गुरु अंगद देव) की ज्योति में समा गई और गुरु नानक ने स्वयं ही अपने स्वरूप को गुरु अंगद के स्वरूप में मिला दिया। गुरु नानक देव जी ने अपने सिक्खों एवं पुत्रों को भलीभांति परखकर जो कुछ किया है, सारी संगत ने उसे देख लिया है। जब भाई लहणा पवित्र-पावन हो गया तो ही उन्हें गुरु-गद्दी पर विराजमान करके गुरु नियुक्त किया गया॥ ४॥

फेरि वसाइआ फेरुआणि सतिगुरि खाडूरु ॥ जपु तपु संजमु नालि तुधु होरु मुचु गरूरु ॥ लबु विणाहे माणसा जिउ पाणी बूरु ॥ वर्हिऐ दरगह गुरू की कुदरती नूरु ॥ जितु सु हाथ न लभई तूं ओहु ठरूरु ॥ नउ निधि नामु निधानु है तुधु विचि भरपूरु ॥ निंदा तेरी जो करे सो वंञै चूरु ॥ नेड़ै दिसै मात लोक तुधु सुझै दूरु ॥ फेरि वसाइआ फेरुआणि सतिगुरि खाडूरु ॥ ५ ॥

फिर भाई फेरू जी के पुत्र सतिगुरु अंगद देव जी ने करतारपुर से आकर खडूर नगर बसा दिया। हे गुरु अंगद ! जप, तप एवं संयम तेरे साथ रहता है, परन्तु अन्य जगत् के साथ घमण्ड बसता है। जैसे बूर पानी को खराब कर देता है, वैसे ही लोभ ने मनुष्य को बर्बाद कर दिया है। गुरु अंगद देव जी के दरबार में कुदरती नूर बरसता है। हे गुरु ! तू शान्ति का वह स्रोत है, जिसकी गहराई को कोई भी समझ नहीं सकता। तेरे हृदय में नवनिधि वाला नाम रूपी कोष भरा

हुआ है। जो तेरी निंदा करता है, वह चूर-चूर होकर नष्ट हो जाता है। लोगों को तो निकट का मृत्युलोक ही नजर आता है परन्तु तुझे तो दूर का परलोक भी सूझता है। फिर भाई फेरू जी के पुत्र गुरु अंगद देव जी ने करतारपुर से आकर खडूर नगर बसा दिया॥ ५॥

सो टिका सो बैहणा सोई दीबाणु ॥ पियू दादे जेविहा पोता परवाणु ॥ जिनि बासकु नेत्रै घतिआ कारे नेही ताणु ॥ जिनि समुंदु विरोलिआ करि मेरु मधाणु ॥ चउदह रतन निकालिअनु कीतोनु चानाणु ॥ घोड़ा कीतो सहज दा जतु कीओ पलाणु ॥ धणखु चड़ाइओ सत दा जस हंदा बाणु ॥ कलि विचि धू अंधारु सा चड़िआ रै भाणु ॥ सतहु खेतु जमाइओ सतहु छावाणु ॥ नित रसोई तेरीऐ घिउ मैदा खाणु ॥ चारे कुंडां सुझीओसु मन महि सबदु परवाणु ॥ आवा गउणु निवारिओ करि नदरि नीसाणु ॥ अउतरिआ अउतारु लै सो पुरखु सुजाणु ॥ झखड़ि वाउ न डोलई परबतु मेराणु ॥ जाणै बिरथा जीअ की जाणी हू जाणु ॥ किआ सालाही सचे पातिसाह जां तू सुघड़ु सुजाणु ॥ दानु जि सतिगुर भावसी सो सते दाणु ॥ नानक हंदा छत्रु सिरि उमति हैराणु ॥ सो टिका सो बैहणा सोई दीबाणु ॥ पियू दादे जेविहा पोत्रा परवाणु ॥ ६ ॥

(गुरु अमरदास जी को भी) वही गुरुयाई का तिलक, वही सिंहासन एवं वही दरबार मिला। अपने पिता (गुरु अंगद देव) एवं दादा (गुरु नानक देव) सरीखा होने के कारण पौत्र गुरु अमरदास सारी संगत को गुरु रूप में पूजनीय हो गया, जिसने अपने प्रेम बल से मन रूपी वासुकि नाग को रस्सी बनाया और अपने ध्यान को सुमेर पर्वत रूपी मंथनी बनाकर नाम रूपी क्षीर सागर का मंथन किया। उसने क्षीर सागर में से चौदह रत्न सरीखे अमूल्य चौदह गुण निकाल लिए और सारे जगत् में ज्ञान का प्रकाश फैला दिया। गुरु अमरदास जी ने सहजावस्था को अपना घोड़ा बनाकर ब्रह्मचार्य को उस घोड़े की काठी बनाया है। उन्होंने सत्य रूपी धनुष में परमात्मा का यश रूपी बाण साधा है। इस कलियुग में अज्ञान रूपी घोर अंधकार था, पर गुरु का ज्ञान रूपी किरणों वाला सूर्योदय हो गया है। गुरु जी ने अपने सत्य-आचरण द्वारा अपने शरीर रूपी खेत में नाम रूपी फसल पैदा की है और सत्य-आचरण द्वारा ही इस फसल को सूखने से बचाव के लिए छाँव की है। हे गुरु अमरदास! सिक्ख संगत नित्य तेरी रसोई में से घी एवं मैदे से पकाया हुआ भोजन करती है। उसे चारों दिशाओं (में व्यापक परमात्मा) की सूझ हो गई है जिसने मन में शब्द को स्थित किया है। तूने कृपा-दृष्टि करके जिसे प्रभु दरबार में जाने के लिए नाम रूपी परवाना दिया है, उसका आवागमन ही मिटा दिया है। वह चतुर परमपुरुष स्वयं अवतार लेकर जगत् में आया है। गुरु जी आँधी एवं तूफान में भी नहीं डगमगाते और सुमेर पर्वत की तरह अटल हैं। हे गुरु! तू अन्तर्यामी है और जीवों की हर प्रकार की पीड़ा को जानता है। हे सच्चे पातशाह सतगुरु! जब तू सबकुछ जानने वाला एवं चतुर है, फिर मैं तेरी क्या स्तुति कर सकता हूँ। हे सतगुरु! जो दान तुझे उपयुक्त लगता है, वही दान मुझ सत्ते डूम को भी प्रदान कर। तेरे सिर पर गुरु नानक का छत्र झूल रहा है और सारी सिक्ख संगत देख-देखकर हैरान हो रही है। वही गुरुयाई का तिलक, वही सिंहासन एवं वही दरबार गुरु अमरदास को मिला है, अपने पिता (गुरु अंगद देव) और दादा (गुरु नानक देव जी) सरीखा पौत्र गुरु अमरदास गुरु रूप में सिक्ख संगत में पूजनीय हो गया॥ ६॥

धंनु धंनु रामदास गुरु जिनि सिरिआ तिनै सवारिआ ॥ पूरी होई करामाति आपि सिरजणहारै धारिआ ॥ सिखी अतै संगती पारब्रहमु करि नमसकारिआ ॥ अटलु अथाहु अतोलु तू तेरा अंतु न

पारावारिआ ॥ जिन्ही तूं सेविआ भाउ करि से तुधु पारि उतारिआ ॥ लबु लोभु कामु क्रोधु मोहु मारि कढे तुधु सपरवारिआ ॥ धंनु सु तेरा थानु है सचु तेरा पैसकारिआ ॥ नानकु तू लहणा तूहै गुरु अमरु तू वीचारिआ ॥ गुरु डिठा तां मनु साधारिआ ॥ ७ ॥

हे गुरु रामदास! तू धन्य-धन्य है, जिस ईश्वर ने तेरी रचना की है, उसने ही तुझे यश प्रदान किया है। सृजनहार परमेश्वर की करामात तुझे गुरु रूप में स्थापित करके पूरी हो गई है। सिक्खों एवं संगतों ने तुझे परब्रह्म का रूप मानकर प्रणाम किया है। तू अटल, अथाह एवं अतुलनीय है, तेरा अंत एवं आर-पार कोई भी पा नहीं सका। जिन्होंने श्रद्धापूर्वक तेरी सेवा की है, तूने उनका उद्धार कर दिया है। तूने सपरिवार काम-क्रोध, लोभ-लालच एवं मोह को समाप्त करके निकाल दिया है। तेरा सुन्दर स्थान धन्य है और तेरा किया प्रसार-नाम-दान सत्य है। मैंने भलीभांति यही विचार किया है कि तू ही गुरु नानक, तू ही गुरु अंगद एवं तू ही गुरु अमरदास है। जब गुरु रामदास जी के दर्शन किए तो मन संतुष्ट हो गया॥ ७॥

चारे जागे चहु जुगी पंचाइणु आपे होआ ॥ आपीन्है आपु साजिओनु आपे ही थंम्हि खलोआ ॥ आपे पटी कलम आपि आपि लिखणहारा होआ ॥ सभ उमति आवण जावणी आपे ही नवा निरोआ ॥ तखति बैठा अरजन गुरू सतिगुर का खिवै चंदोआ ॥ उगवणहु तै आथवणहु चहु चकी कीअनु लोआ ॥ जिन्ही गुरू न सेविओ मनमुखा पइआ मोआ ॥ दूणी चउणी करामाति सचे का सचा ढोआ ॥ चारे जागे चहु जुगी पंचाइणु आपे होआ ॥ ८ ॥ १ ॥

प्रथम चार गुरु—गुरु नानक, गुरु अंगद, गुरु अमरदास एवं गुरु रामदास अपने-अपने युग में कीर्तिमान् हुए और अब यह पाँचवां गुरु अर्जुन देव भी उनके ही रूप में ज्योतिष्मान हुआ है। उन्होंने स्वयं ही खुद को नम्रता एवं सद्गुणों द्वारा महान् बनाया और स्वयं ही संगतों का अवलम्ब बने। वह आप ही पट्टी, कलम एवं लिखने वाला हो गया है। सारी दुनिया आवागमन में फँसी हुई है, पर वह स्वयं ही नवनूतन अर्थात् बन्धनों से मुक्त है। गुरु अर्जुन देव जी उस सिंहासन पर विराजमान हैं जिसके ऊपर सतिगुरु का छत्र (यश) चारों ओर चमक रहा है। गुरु ने पूर्व से पश्चिम तक चारों दिशाओं में ज्ञान का प्रकाश कर दिया है। जिन्होंने गुरु की सेवा नहीं की, उन स्वेच्छाचारी जीवों को मृत्यु ने ग्रास बना लिया है। ईश्वर की यह विशेष देन है कि गुरु अर्जुन देव जी की करामातें दोगुणी चौगुणी हो रही हैं। प्रथम चार गुरु अपने-अपने युग में ज्योतिष्मान हुए तथा अब पाँचवां भी उनका ही रूप स्वयं कीर्तिमान हुआ है॥ ८॥ १॥

रामकली बाणी भगता की ॥ कबीर जीउ १ओं सतिगुर प्रसादि ॥

काइआ कलालनि लाहनि मेलउ गुर का सबदु गुड़ु कीनु रे ॥ त्रिसना कामु क्रोधु मद मतसर काटि काटि कसु दीनु रे ॥ १ ॥ कोई है रे संतु सहज सुख अंतरि जा कउ जपु तपु देउ दलाली रे ॥ एक बूंद भरि तनु मनु देवउ जो मदु देइ कलाली रे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ भवन चतुर दस भाठी कीन्ही ब्रहम अगनि तनि जारी रे ॥ मुद्रा मदक सहज धुनि लागी सुखमन पोचनहारी रे ॥ २ ॥ तीरथ बरत नेम सुचि संजम रवि ससि गहनै देउ रे ॥ सुरति पिआल सुधा रसु अंम्रितु एहु महा रसु पेउ रे ॥ ३ ॥ निझर धार चुऐ अति निरमल इह रस मनूआ रातो रे ॥ कहि कबीर सगले मद छूछे इहै महा रसु साचो रे ॥ ४ ॥ १ ॥

नाम रूपी मदिरा निकालने के लिए मैंने अपने शरीर रूपी भट्ठी में लाहन मिलाई है, गुरु के शब्द को मैंने गुड़ बनाया है। तृष्णा, काम, क्रोध एवं ईर्ष्या रूपी छाल को काट-काटकर गुड़ में डाला है॥ १॥ क्या कोई ऐसा संत है, जिसके हृदय में सहज सुख पैदा हो गया है ? मैं उस संत को अपने किए जप-तप का फल दलाली के रूप में दे दूँगा। यदि वह मुझे इस भट्ठी में से निकाल कर एक बूँद भर नाम रूपी मदिरा पान करने के लिए प्रदान कर दे तो मैं उसे अपना तन-मन भी सौंप दूँगा॥ १॥ रहाउ॥ यह नाम-मदिरा निकालने के लिए मैंने चौदह लोकों को भट्ठी बनाया है और इस भट्ठी में अपने शरीर की ब्रह्म-अग्नि प्रज्वलित की है। अनहद शब्द की मधुर ध्वनि में जो मेरा ध्यान लीन रहता है, उसे मैंने उस नाली की डाट बनाया है, जिसके द्वारा नाम-मदिरा बनकर शरीर रूपी मटकी में से बाहर निकलती है। सुषम्ना नाड़ी पर ध्यान लगाकर रखने का अभ्यास उसे शीतल रखने वाली लीर है, जिसमें से मदिरा भाप रूप में आ रही होती है॥ २॥ नाम-मदिरा का पान करने के लिए तीर्थ-स्नान, व्रत, पातंजलि ऋषि के अष्टांग के पाँच नियम, शुद्धता, संयम इड़ा-पिंगला नाड़ी द्वारा किए प्राणायाम इत्यादि के सभी फल उस संत के पास गिरवी रख दूँगा। मैं अपने ध्यान को अभ्यास प्याला बनाकर नाम रूपी सुधा रस पीता रहता हूँ, यही महारस है॥ ३॥ मेरे दसम द्वार में से अमृत रस की अति निर्मल धारा मेरी जिह्वा पर बहती रहती है, अब मेरा मन उस रस में मतवाला बना रहता है। कबीर जी कहते हैं कि दुनिया के सभी मद व्यर्थ हैं, केवल यह नाम रूपी महारस ही सच्चा है॥ ४॥ १॥

गुड़ु करि गिआनु धिआनु करि महूआ भउ भाठी मन धारा ॥ सुखमन नारी सहज समानी पीवै पीवनहारा ॥ १ ॥ अउधू मेरा मनु मतवारा ॥ उनमद चढा मदन रसु चाखिआ त्रिभवन भइआ उजिआरा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ दुइ पुर जोरि रसाई भाठी पीउ महा रसु भारी ॥ कामु क्रोधु दुइ कीए जलेता छूटि गई संसारी ॥ २ ॥ प्रगट प्रगास गिआन गुर गंमित सतिगुर ते सुधि पाई ॥ दासु कबीरु तासु मद माता उचकि न कबहू जाई ॥ ३ ॥ २ ॥

नाम रूपी मदिरा तैयार करने के लिए मैंने ज्ञान को गुड़ बनाकर और ध्यान को महुआ के फूल बनाकर इन्हें प्रभु-भय की भट्ठी में चढ़ाया है और मन की एकाग्रता होने पर नाम-मदिरा की धारा बहती रहती है। मेरी सुरति प्राण वायु द्वारा सुषुम्ना नाड़ी में प्रवेश करके सहज ही समाई रहती है और पीने वाला मेरा मन इस मदिरा का पान करता रहता है॥ १॥ हे अवधूत ! मेरा मन नाम-मदिरा का पान करके मतवाला हो गया है। मैंने प्रेम-रस चख लिया है और मन को नाम रूपी नशा हो गया है। इस नाम रस को पीने से मेरे शरीर में तीनों लोकों का उजाला हो गया है॥ १॥ रहाउ॥ पृथ्वी एवं आकाश, इन दोनों पाटों को मिलाकर जब भट्ठी जलाई तो इस भारी महारस का पान किया। काम-क्रोध रूपी इन दोनों विकारों को भट्ठी का ईंधन बनाकर जलाया तो मन की संसारी प्रवृत्ति छूट गई॥ २॥ गुरु से साक्षात्कार करने से मन में ज्ञान का प्रकाश प्रगट हो गया है और इस ज्ञान की सूझ सतगुरु से ही प्राप्त हुई है। दास कबीर कहता है कि मैं नाम-मदिरा के मद में ही मस्त हुआ रहता हूँ, जिसका नशा कभी समाप्त नहीं होता॥ ३॥ २॥

तूं मेरो मेरु परबतु सुआमी ओट गही मै तेरी ॥ ना तुम डोलहु ना हम गिरते रखि लीनी हरि मेरी ॥ १ ॥ अब तब जब कब तुही तुही ॥ हम तुअ परसादि सुखी सद ही ॥ १ ॥ रहाउ ॥ तोरे भरोसे मगहर बसिओ मेरे तन की तपति बुझाई ॥ पहिले दरसनु मगहर पाइओ फुनि कासी बसे आई ॥ २ ॥ जैसा मगहरु तैसी कासी हम एकै करि जानी ॥ हम निरधन जिउ इहु धनु पाइआ मरते फूटि गुमानी ॥ ३ ॥ करै गुमानु चुभहि तिसु सूला को काढन कउ नाही ॥ अजै सु चोभ कउ बिलल बिलाते नरके घोर पचाही ॥ ४ ॥ कवनु नरकु किआ सुरगु बिचारा संतन दोऊ रादे ॥ हम काहू की काणि

न कढते अपने गुर परसादे ॥ ५ ॥ अब तउ जाइ चढे सिंघासनि मिले है सारिंगपानी ॥ राम कबीरा एक भए है कोइ न सकै पछानी ॥ ६ ॥ ३॥

हे स्वामी! तू मेरा सुमेर पर्वत है, इसलिए मैंने तेरी ही ओट ली है। हे हरि! तूने मेरी लाज रख ली है, न तू कभी डगमगाता है और न ही हम गिरते हैं॥ १॥ अब भी और तब भी जब कब तू ही तू है। तेरी कृपा से हम सदा ही सुखी रहते हैं॥ १॥ रहाउ॥ तेरे भरोसे पर मैं पहले मगहर की भूमि में आ बसा था और मेरे तन के विकारों की तपस तूने ही बुझाई थी। (कहा जाता था कि मगहर में प्राण त्यागने वाला जीव नरक में जाता है।) मैंने तेरे दर्शन पहले मगहर में ही प्राप्त किए थे और अब पुनः काशी में आ बसा हूँ॥ २॥ मेरे लिए तो जैसा मगहर है, वैसे ही काशी है और मैंने दोनों को एक समान समझा है। जैसे निर्धन को धन मिल जाता है, वैसे ही मुझे नाम-धन प्राप्त हो गया है। अहंकारी जीव अहंकार में ही फूट-फूट कर मरते रहते हैं॥ ३॥ जो व्यक्ति अहंकार करता है, उसे दुख रूपी शूल चुभते रहते हैं, जिन्हें निकालने वाला कोई नहीं है। वह उम्र भर इन शूलों की चुभन से विलाप करता रहता है और आगे घोर नरक में भी दुखी होता है॥ ४॥ नरक अथवा स्वर्ग बेचारा कोई भी हो, संतों ने इन दोनों को रद्द कर दिया है। अपने गुरु की कृपा से हम किसी के मुहताज नहीं हैं॥ ५॥ अब हमें भगवान मिल गया है और हृदय रूपी सिंहासन पर चढ़कर उसके संग बैठ गए हैं। अब कबीर एवं राम दोनों एक रूप हो गए हैं और कोई भी पहचान नहीं सकता कि कबीर कौन है और राम कौन है॥ ६॥ ३॥

संता मानउ दूता डानउ इह कुटवारी मेरी ॥ दिवस रैनि तेरे पाउ पलोसउ केस चवर करि फेरी ॥ १ ॥ हम कूकर तेरे दरबारि ॥ भउकहि आगै बदनु पसारि ॥ १ ॥ रहाउ ॥ पूरब जनम हम तुम्हरे सेवक अब तउ मिटिआ न जाई ॥ तेरे दुआरै धुनि सहज की माथै मेरे दगाई ॥ २ ॥ दागे होहि सु रन महि जूझहि बिनु दागे भगि जाई ॥ साधू होइ सु भगति पछानै हरि लए खजानै पाई ॥ ३ ॥ कोठरे महि कोठरी परम कोठी बीचारि ॥ गुरि दीनी बसतु कबीर कउ लेवहु बसतु सम्हारि ॥ ४ ॥ कबीरि दीई संसार कउ लीनी जिसु मसतकि भागु ॥ अंम्रित रसु जिनि पाइआ थिरु ता का सोहागु ॥ ५ ॥ ४ ॥

मुझ कोतवाल का यही कर्त्तव्य है कि मैं संतों का सम्मान करूँ और (कामादिक) दुष्टों को दण्ड दूँ। हे मालिक! मैं दिन-रात तेरे चरणों की सेवा में लीन रहूँ और अपने केशों का चँवर बनाकर झुलाता रहूँ॥ १॥ मैं तेरे दरबार का कुत्ता हूँ और अपना मुँह लम्बा कर तेरे आगे भौंकता रहता हूँ॥ १॥ रहाउ॥ पूर्व जन्म से ही हम तुम्हारे सेवक हैं, इसलिए अब इस जन्म में भी तेरी सेवा किए बिना रहा नहीं जाता। तेरे द्वार पर अनहद शब्द की ध्वनि होती रहती है और तूने मेरे माथे पर यह भक्ति की निशानी लगा दी है॥ २॥ इस जगत् रूपी रणभूमि में वही शूरवीर दुष्टों से जूझते हैं, जो चिन्हित होते हैं और बिना चिन्ह तो डर कर ही भाग जाते हैं। जो सच्चा साधु होता है, उसे ही भक्ति की पहचान होती है और भगवान उसे अपने खजाने में शामिल कर लेता है॥ ३॥ मानव-शरीर रूपी कोठे में ही सत्य की कोठरी है, जो नाम-स्मरण द्वारा पावन हो जाती है। कबीर कहते हैं कि गुरु ने मुझे सत्य-नाम रूपी वस्तु प्रदान की है और कहा कि इस वस्तु को संभाल कर रखो॥ ४॥ कबीर ने यह नाम रूपी वस्तु संसार के लोगों को भी वितरित कर दी है, परन्तु इसे भाग्यवान् ने ही हासिल किया है। जिस जीव रूपी नारी ने नाम रूपी अमृत रस प्राप्त किया है, उसका सुहाग अटल है॥ ५॥ ४॥

जिह मुख बेदु गाइत्री निकसै सो किउ ब्रहमनु बिसरु करै ॥ जा कै पाइ जगतु सभु लागै सो किउ पंडितु हरि न कहै ॥ १ ॥ काहे मेरे बाम्हन हरि न कहहि ॥ रामु न बोलहि पाडे दोजकु भरहि

॥ १ ॥ रहाउ ॥ आपन ऊच नीच घरि भोजनु हठे करम करि उदरु भरहि ॥ चउदस अमावस रचि रचि मांगहि कर दीपकु लै कूपि परहि ॥ २ ॥ तूं ब्रहमनु मै कासीक जुलहा मुहि तोहि बराबरी कैसे कै बनहि ॥ हमरे राम नाम कहि उबरे बेद भरोसे पांडे डूबि मरहि ॥ ३ ॥ ५ ॥

जिस परब्रह्म के मुख से वेद एवं गायत्री निकले हैं, हे ब्राह्मण ! उसे क्यों विस्मृत करता है। हे पण्डित ! जिसके चरणों में समूचा जगत् लगता है, तू उस हरि को क्यों नहीं स्मरण करता॥ १॥ हे ब्राह्मण ! क्योंकर हरि का नाम नहीं जपता ? हे पाण्डे ! तू राम नाम नहीं बोलता, तेरी नरक में जाने की संभावना है॥ १॥ रहाउ॥ तू खुद को उच्च जाति का समझता है किन्तु नीचों के घर भोजन करता है, तू तो हठ कर्म करके अपना पेट भरता है। तू चौदस एवं अमावस्या के आधार पर अपने यजमानों से दान माँगता रहता है और हाथ में दीपक लेकर कूप में भी पड़ता है॥ २॥ तू ब्राह्मण है और मैं काशी का जुलाहा हूँ, फिर तेरी और मेरी बराबरी कैसे हो सकती है ? अरे पाण्डे ! हमारा तो राम नाम जपने से उद्धार हो गया है, परन्तु तू वेदों के भरोसे पर डूब मरेंगा॥ ३॥ ५॥

तरवरु एकु अनंत डार साखा पुहप पत्र रस भरीआ ॥ इह अंम्रित की बाड़ी है रे तिनि हरि पूरै करीआ ॥ १ ॥ जानी जानी रे राजा राम की कहानी ॥ अंतरि जोति राम परगासा गुरमुखि बिरलै जानी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ भवरु एकु पुहप रस बीधा बारह ले उर धरिआ ॥ सोरह मधे पवनु झकोरिआ आकासे फरु फरिआ ॥ २ ॥ सहज सुंनि इकु बिरवा उपजिआ धरती जलहरु सोखिआ ॥ कहि कबीर हउ ता का सेवकु जिनि इहु बिरवा देखिआ ॥ ३ ॥ ६ ॥

ईश्वर एक पेड़ है, मनुष्य, पशु-पक्षी, कीट-पतंगे एवं अन्य जीव इस पेड़ की डालियाँ, शाखाएँ, पुष्प, पत्र-रस इत्यादि हैं। यह सृष्टि (नाम रूपी) अमृत की वाटिका है, जिसे परमेश्वर ने स्वयं ही पैदा किया है॥ १॥ मैंने राजा राम की (रचना की) कहानी जान ली है। सब जीवों के अन्तर्मन में राम की ज्योति का ही प्रकाश है, पर किसी विरले गुरुमुख ने ही इस भेद को समझा है॥ १॥ रहाउ॥ एक जीव रूपी भंवरा इस पेड़ के पुष्प के रस में बिंध गया है, प्राणवायु ने प्राणायाम के अभ्यास द्वारा उस भंवरे को बारह पंखुड़ियों वाले अनाहत कमल में धारण कर दिया और फिर उस भंवरे ने सोलह पंखुड़ियों वाले विशुद्ध कमल पर चढ़कर प्राणवायु को झकझोरा, तदुपरांत यह भंवरा उड़कर दशम द्वार में जा चढ़ा॥ २॥ वहाँ अनहद शब्द की आनंदमय ध्वनि में सत्य-नाम रूपी पौधा उत्पन्न हो गया, जिसने उसकी शरीर रूपी धरती पर मंडराते हुए तृष्णा बादल को सुखा दिया है। कबीर कहते हैं कि मैं उस भक्त का सेवक हूँ, जिसने सत्य-नाम रूपी पौधे को देखा है॥ ३॥ ६॥

मुंद्रा मोनि दइआ करि झोली पत्र का करहु बीचारु रे ॥ खिंथा इहु तनु सीअउ अपना नामु करउ आधारु रे ॥ १ ॥ ऐसा जोगु कमावहु जोगी ॥ जप तप संजमु गुरमुखि भोगी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ बुधि बिभूति चढावउ अपुनी सिंगी सुरति मिलाई ॥ करि बैरागु फिरउ तनि नगरी मन की किंगुरी बजाई ॥ २ ॥ पंच ततु लै हिरदै राखहु रहै निरालम ताड़ी ॥ कहतु कबीरु सुनहु रे संतहु धरमु दइआ करि बाड़ी ॥ ३ ॥ ७ ॥

कानों में मौन धारण को मुद्राएँ पहनो, दया को अपनी कफ़नी बनाओ और विचार अर्थात् नाम-स्मरण को अपना खप्पर बनाओ। अपने इस शरीर को पावन रखने की खिंथा सी लो और नाम को अपना जीवनाधार बनाओ॥ १॥ हे योगी ! ऐसा योग कमाओ। गृहस्थ में रहकर गुरु के

निर्देशानुसार नाम-स्मरण करते रहो, यही जप-तप एवं संयम है॥ १॥ रहाउ॥ बुद्धि को निर्मल रखने की विभूति अपने शरीर पर लगाओ और अपनी सुरति से प्रभु का ध्यान करो, यही सिंगी बजाओ। प्रभु-मिलन का वैराग्य पैदा करके शरीर रूपी नगरी में मन की यह किंगुरी बजाते रहो॥ २॥ निर्विकल्प समाधि यूँ लगी रहती है कि पंचतत्व के शुभ गुणों को लेकर अपने हृदय में बसा लो। कबीर कहते हैं कि हे संतजनो! ध्यानपूर्वक सुनो, धर्म एवं दया को अपनी वाटिका बना लो॥ ३॥ ७॥

कवन काज सिरजे जग भीतरि जनमि कवन फलु पाइआ ॥ भव निधि तरन तारन चिंतामनि इक निमख न इहु मनु लाइआ ॥ १ ॥ गोबिंद हम ऐसे अपराधी ॥ जिनि प्रभि जीउ पिंडु था दीआ तिस की भाउ भगति नही साधी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ पर धन पर तन पर ती निंदा पर अपबादु न छूटै ॥ आवा गवनु होतु है फुनि फुनि इहु परसंगु न तूटै ॥ २ ॥ जिह घरि कथा होत हरि संतन इक निमख न कीन्हो मै फेरा ॥ लंपट चोर दूत मतवारे तिन संगि सदा बसेरा ॥ ३ ॥ काम क्रोध माइआ मद मतसर ए संपै मो माही ॥ दइआ धरमु अरु गुर की सेवा ए सुपनंतरि नाही ॥ ४ ॥ दीन दइआल क्रिपाल दमोदर भगति बछल भै हारी ॥ कहत कबीर भीर जन राखहु हरि सेवा करउ तुम्हारी ॥ ५ ॥ ८ ॥

किस काम के लिए जग में हमें उत्पन्न किया है और जन्म लेकर हमने क्या फल प्राप्त किया है? उस मोक्षदाता, संसार-सागर से पार करने वाले, चिंतामणि परमेश्वर में एक क्षण भी यह मन नहीं लगाया॥ १॥ हे गोविंद! हम जीव ऐसे अपराधी हैं, जिस प्रभु ने प्राण, शरीर दिया था, उसकी कभी प्रेम-भक्ति नहीं की॥ १॥ रहाउ॥ पराए धन की लालसा, पराई नारी की कामना, पराई निंदा एवं पराए झंझटों से हम छूट नहीं सके, इसलिए पुनः पुनः हमारा जन्म मरण होता रहता है और यह कहानी कभी समाप्त ही नहीं होती॥ २॥ जिस घर में हरि-कथा होती है, वहाँ एक क्षण भर भी फेरा नहीं किया। हमारा तो लंपट, चोर, दुष्ट एवं शराबियों के संग ही सदा बसेरा रहा॥ ३॥ काम, क्रोध, माया, अभिमान एवं ईर्ष्या इत्यादि यह संपति ही हमारे पास है। दया, धर्म और गुरु की सेवा इत्यादि शुभ-कर्म करने का ख्याल कभी सपने में भी नहीं आया॥ ४॥ हे परमेश्वर! तू दीनदयाल, कृपा का भण्डार, भक्तवत्सल एवं भयनाशक है। कबीर विनती करते हैं कि हे हरि! अपने सेवक की विपत्ति से रक्षा करो, मैं हरदम तेरी सेवा करता रहूँगा॥ ५॥ ८॥

जिह सिमरनि होइ मुकति दुआरु ॥ जाहि बैकुंठि नही संसारि ॥ निरभउ कै घरि बजावहि तूर ॥ अनहद बजहि सदा भरपूर ॥ १ ॥ ऐसा सिमरनु करि मन माहि ॥ बिनु सिमरन मुकति कत नाहि ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जिह सिमरनि नाही ननकारु ॥ मुकति करै उतरै बहु भारु ॥ नमसकारु करि हिरदै माहि ॥ फिरि फिरि तेरा आवनु नाहि ॥ २ ॥ जिह सिमरनि करहि तू केल ॥ दीपकु बांधि धरिओ बिनु तेल ॥ सो दीपकु अमरकु संसारि ॥ काम क्रोध बिखु काढीले मारि ॥ ३ ॥ जिह सिमरनि तेरी गति होइ ॥ सो सिमरनु रखु कंठि परोइ ॥ सो सिमरनु करि नही राखु उतारि ॥ गुर परसादी उतरहि पारि ॥ ४ ॥ जिह सिमरनि नाही तुहि कानि ॥ मंदरि सोवहि पटंबर तानि ॥ सेज सुखाली बिगसै जीउ ॥ सो सिमरनु तू अनदिनु पीउ ॥ ५ ॥ जिह सिमरनि तेरी जाइ बलाइ ॥ जिह सिमरनि तुझु पोहै न माइ ॥ सिमरि सिमरि हरि हरि मनि गाईऐ ॥ इहु सिमरनु सतिगुर ते पाईऐ ॥ ६ ॥ सदा सदा सिमरि दिनु राति ॥ ऊठत बैठत सासि गिरासि ॥ जागु सोइ सिमरन रस भोग ॥ हरि सिमरनु पाईऐ संजोग ॥ ७ ॥ जिह सिमरनि नाही तुझु भार ॥ सो सिमरनु राम नाम अधारु ॥ कहि कबीर जा का नही अंतु ॥ तिस के आगे तंतु न मंतु ॥ ८ ॥ ९ ॥

जिसके सिमरन से मुक्ति का द्वार मिल जाता है, वैकुण्ठ में वास हो जाता है और संसार में दोबारा जन्म नहीं होता, जिस निर्भय परमेश्वर के घर मंगल-वादन बजाया जाता है और सदा ही अनहद शब्द की ध्वनि बजती रहती है और मन आनंद से भरपूर हो जाता है॥ १॥ ऐसा सिमरन ही मन में किया करो, सिमरन के बिना जीव की कभी मुक्ति नहीं होती॥ १॥ रहाउ॥ जिस ईश्वर के स्मरण से कोई बाधा नहीं आती, वह मुक्ति कर देता है और किए पापों का भार उतर जाता है। सदैव ही अपने हृदय में भगवान को नमन करो, इससे तेरा जन्म-मरण मिट जाएगा॥ २॥ जिसके सिमरन से तू मनोविनोद करता है, जिसने बिना तेल के प्रज्वलित अपनी ज्योति का दीपक तेरे हृदय में बसा रखा है, वह दीपक तुझे दुनिया में अमर कर देगा और यह काम, क्रोध एवं अहम् रूपी विष को मार कर निकाल देगा॥ ३॥ जिस परमात्मा के स्मरण से तेरी गति होनी है, उस स्मरण को अपने कण्ठ में बसाकर रखो। वह स्मरण हमेशा ही करो, इसे कभी मत छोड़ो। गुरु के आशीर्वाद से तुम्हारा उद्धार हो जाएगा॥ ४॥ जिस सिमरन द्वारा तू किसी पर निर्भर नहीं रहता, अपने सुन्दर घर में रेशमी चादर तान कर विश्राम करता है, तुझे निद्रा के लिए सुखद सेज मिली हुई है और तेरा दिल खुश रहता है, वह सिमरन तू रात-दिन किया कर॥ ५॥ जिस ईश्वर की स्मृति में लीन होने से तेरी सब मुसीबतें दूर हो जाती हैं, जिस सिमरन द्वारा तुझे माया भी प्रभावित नहीं करती, परमेश्वर का सिमरन करके मन में उसका गुणगान करना चाहिए, परन्तु यह सिमरन सतगुरु से ही प्राप्त होता है॥ ६॥ दिन-रात सदैव भगवान का स्मरण करो। उठते-बैठते, श्वास लेते, भोजन करते समय, जागते-सोते वक्त नाम-स्मरण का आनंद भोगते रहो। भगवान का सिमरन संयोग से ही मिलता है॥ ७॥ जिस सिमरन द्वारा तुझे पापों का भार नहीं उठाना पड़ता, उस राम-नाम का सिमरन ही तेरा जीवनाधार है। कबीर जी कहते हैं कि जिस परमात्मा का कोई अन्त नहीं है, उसके आगे नाम के अलावा किसी प्रकार का कोई तंत्र-मंत्र नहीं चल सकता॥ ८॥ ६॥

रामकली घरु २ बाणी कबीर जी की १ओं सतिगुर प्रसादि ॥

बंधचि बंधनु पाइआ ॥ मुकतै गुरि अनलु बुझाइआ ॥ जब नख सिख इहु मनु चीन्हा ॥ तब अंतरि मजनु कीन्हा ॥ १ ॥ पवनपति उनमनि रहनु खरा ॥ नही मिरतु न जनमु जरा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ उलटी ले सकति सहारं ॥ पैसीले गगन मझारं ॥ बेधीअले चक्र भुअंगा ॥ भेटीअले राइ निसंगा ॥ २ ॥ चूकीअले मोह मइआसा ॥ ससि कीनो सूर गिरासा ॥ जब कुंभकु भरिपुरि लीणा ॥ तह बाजे अनहद बीणा ॥ ३ ॥ बकतै बकि सबदु सुनाइआ ॥ सुनतै सुनि मंनि बसाइआ ॥ करि करता उतरसि पारं ॥ कहै कबीरा सारं ॥ ४ ॥ १ ॥ १० ॥

बन्धनों में फँसाने वाली माया ने बन्धन डाल दिया परन्तु मुक्तिदाता गुरु ने तृष्णा की अग्नि बुझा दी है। जब नखशिख तक मन को पहचान लिया तो अन्तर्मन में तीर्थ-स्नान कर लिया॥ १॥ प्राणों के पति मन का तुरीयावस्था में रहना ही बेहतर है, चूंकि इस अवस्था में न मृत्यु होती है, न जन्म होता है और न ही बुढ़ापे का रोग लगता है॥ १॥ रहाउ॥ मैंने प्राणायाम द्वारा प्राण-वायु के बल से कुण्डलिनी शक्ति को सुषुम्ना नाड़ी में ऊपर की ओर चला लिया है और दसम द्वार में मार्ग पर चल पड़ा हूँ। मैंने अपनी आँखों की भौहों के मध्य नासिका की जड़ में स्थित आज्ञा चक्र को भेद दिया है और दसम द्वार में पहुँच कर निर्भय प्रभु से भेंट हो गई है॥ २॥ अब माया का मोह चूक गया है। शशि रूपी शीतल ज्ञान ने सूर्य रूपी परिताप को निगल लिया है। जब कुंभक क्रिया द्वार प्राण-वायु को सुषुम्ना नाड़ी में भर लिया तो मन में अनाहत ध्वनि की वीणा बजने

लगी॥३॥ जब वक्ता गुरु ने मुखारबिंद से ब्रह्म-शब्द सुनाया तो श्रोता शिष्य ने सुनकर उसे अपने मन में बसा लिया। वह श्रोता परमात्मा का नाम-स्मरण करके भवसागर से पार हो जाता है। कबीर जी कहते हैं कि नाम-स्मरण के अभ्यास का यही सार है॥ ४॥ १॥ १०॥

चंदु सूरजु दुइ जोति सरूपु ॥ जोती अंतरि ब्रहमु अनूपु ॥ १ ॥ करु रे गिआनी ब्रहम बीचारु ॥ जोती अंतरि धरिआ पसारु ॥ १ ॥ रहाउ ॥ हीरा देखि हीरे करउ आदेसु ॥ कहै कबीरु निरंजन अलेखु ॥ २ ॥ २ ॥ ११ ॥

चाँद एवं सूर्य दोनों ही ज्योति-रूप हैं, इनमें अनुपम ब्रह्म की ही ज्योति विद्यमान है॥ १॥ हे ज्ञानी! ब्रह्म का चिंतन करो; परमात्मा ने यह जगत्-प्रसार अपनी ज्योति में ही स्थित किया हुआ है॥ १॥ रहाउ॥ हीरे के दर्शन करके परमात्मा रूपी हीरे को नमन करता हूँ। कबीर जी कहते हैं कि मायातीत परमेश्वर अलेख है॥ २॥ २॥ ११॥

दुनीआ हुसीआर बेदार जागत मुसीअत हउ रे भाई ॥ निगम हुसीआर पहरूआ देखत जमु ले जाई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ नींबु भइओ आंबु आंबु भइओ नींबा केला पाका झारि ॥ नालीएर फलु सेबरि पाका मूरख मुंगध गवार ॥ १ ॥ हरि भइओ खांडु रेतु महि बिखरिओ हसतीं चुनिओ न जाई ॥ कहि कमीर कुल जाति पांति तजि चीटी होइ चुनि खाई ॥ २ ॥ ३ ॥ १२ ॥

हे भाई! दुनिया बेशक कितनी भी होशियार एवं सावधान है, मगर जागते हुए भी ठगी एवं लुटती जा रही है। वेद-शास्त्र जैसे होशियार पेहरेदारों के देखते हुए भी यम पकड़कर ले जाता है॥ १॥ रहाउ॥ मूर्ख, गंवार एवं विमूढ़ व्यक्ति को सिंबल का पेड़ नारियल का पका फल लगता है। वह नींबू को आम समझता है और आम को नींबू समझता है। उसे पका केला झाड़ी लगता है अर्थात् मूर्ख को कोई ज्ञान नहीं होता॥ २॥ ईश्वर रेत में बिखरी हुई चीनी के समान है, जो अहंकार रूपी हाथी बनकर चुगी नहीं जा सकती। कबीर जी कहते हैं कि यह चीनी कुल, जाति-पांति को त्याग कर नम्रता रूपी चींटी बनकर ही खाई जा सकती है॥ २॥ ३॥ १२॥

बाणी नामदेउ जीउ की रामकली घरु १ १ओं सतिगुर प्रसादि ॥

आनीले कागदु काटीले गूडी आकास मधे भरमीअले ॥ पंच जना सिउ बात बतऊआ चीतु सु डोरी राखीअले ॥ १ ॥ मनु राम नामा बेधीअले ॥ जैसे कनिक कला चितु मांडीअले ॥ १ ॥ रहाउ ॥ आनीले कुंभु भराईले ऊदक राज कुआरि पुरंदरीए ॥ हसत बिनोद बीचार करती है चीतु सु गागरि राखीअले ॥ २ ॥ मंदरु एकु दुआर दस जा के गऊ चरावन छाडीअले ॥ पांच कोस पर गऊ चरावत चीतु सु बछरा राखीअले ॥ ३ ॥ कहत नामदेउ सुनहु तिलोचन बालकु पालन पउढीअले ॥ अंतरि बाहरि काज बिरूधी चीतु सु बारिक राखीअले ॥ ४ ॥ १ ॥

कागज को लाकर उसे काटकर लड़का उसकी पतंग बनाता है, फिर वह आकाश में उड़ती रहती है। वह अपने सज्जनों मित्रों से वार्तालाप भी करता रहता है परन्तु अपना चित्त पतंग की डोर में ही लगाकर रखता है ॥ १॥ मेरा मन राम-नाम में ऐसे बिंध गया है जैसे सुनार का मन स्वर्ण-कला में लगा रहता है॥ १॥ रहाउ॥ एक नवयुवती शहर में से गागर लाकर उसे पानी से भर लेती है। वह अपनी सखियों के संग हँसती, विनोद करती एवं विचार-विमर्श भी करती रहती है, पर वह अपना चित्त उस गागर में ही रखती है॥ २॥ यदि दस द्वारों वाले घर में से गाय को घास चरने के लिए भेज दिया जाए तो पाँच कोस पर जाकर चरते हुए भी उसका चित्त अपने बछड़े

में ही लगा रहता है॥ ३॥ नामदेव जी कहते हैं कि हे त्रिलोचन! जरा सुनो; माँ अपने शिशु को झूले में लिटा देती है किन्तु अन्दर-बाहर घर के कार्यों में व्यस्त रहकर भी अपना चित्त शिशु में ही लगाकर रखती है॥ ४॥ १॥

बेद पुरान सासत्र आनंता गीत कबित न गावउगो ॥ अखंड मंडल निरंकार महि अनहद बेनु बजावउगो ॥ १ ॥ बैरागी रामहि गावउगो ॥ सबदि अतीत अनाहदि राता आकुल कै घरि जाउगो ॥ १ ॥ रहाउ ॥ इड़ा पिंगुला अउरु सुखमना पउनै बंधि रहाउगो ॥ चंदु सूरजु दुइ सम करि राखउ ब्रहम जोति मिलि जाउगो ॥ २ ॥ तीरथ देखि न जल महि पैसउ जीअ जंत न सतावउगो ॥ अठसठि तीरथ गुरू दिखाए घट ही भीतरि न्हाउगो ॥ ३ ॥ पंच सहाई जन की सोभा भलो भलो न कहावउगो ॥ नामा कहै चितु हरि सिउ राता सुंन समाधि समाउगो ॥ ४ ॥ २ ॥

मैं वेद, पुराण एवं शास्त्रों में लिखे अनंत गीत काव्यों का गुणगान नहीं करूँगा, अपितु अखण्ड मण्डल निराकार में प्रवृत होकर अनाहत वीणा बजाता रहूँगा॥ १॥ मैं वैरागी बनकर राम का गुणगान करूँगा और शब्द की अतीत अनाहद ध्वनि में रत होकर परमात्मा के घर जाऊँगा॥ १॥ रहाउ॥ मैं इड़ा, पिंगला एवं सुषुम्ना में प्राणवायु को बांधे रखूँगा और चाँद-सूर्य दोनों को एक समान समझकर ब्रह्म-ज्योति में विलीन हो जाऊँगा॥ २॥ तीर्थों के दर्शन करके स्नान करने के लिए जल में प्रवेश नहीं करूँगा और इस प्रकार जलचरों को नहीं सताऊँगा। गुरु ने अड़सठ तीर्थ मुझे अन्तर्मन में ही दिखा दिए हैं और अब मैं हृदय में ही स्नान करूँगा॥ ३॥ मैं दुनिया में शोभा सुनकर भी भला पुरुष नहीं कहलाऊँगा। नामदेव कहते हैं कि मेरा मन परमात्मा में लीन रहकर शून्य समाधि में समा जाएगा॥ ४॥ २॥

माइ न होती बापु न होता करमु न होती काइआ ॥ हम नही होते तुम नही होते कवनु कहां ते आइआ ॥ १ ॥ राम कोइ न किस ही केरा ॥ जैसे तरवरि पंखि बसेरा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ चंदु न होता सूरु न होता पानी पवनु मिलाइआ ॥ सासतु न होता बेदु न होता करमु कहां ते आइआ ॥ २ ॥ खेचर भूचर तुलसी माला गुर परसादी पाइआ ॥ नामा प्रणवै परम ततु है सतिगुर होइ लखाइआ ॥ ३ ॥ ३ ॥

जब न कोई माता थी, न पिता था, न कोई कर्म एवं शरीर था, हम भी नहीं थे, तुम भी नहीं थे, तब कौन कहाँ से आया था?॥ १॥ हे राम! कोई किसी का साथी नहीं है, जैसे पेड़ों पर पक्षियों का बसेरा है, वैसे ही यह जगत्-प्रसार है॥ १॥ रहाउ॥ जब चांद एवं सूर्य भी नहीं था, तब पवन एवं पानी को परमेश्वर ने स्वयं में मिलाया हुआ था। जब कोई शास्त्र एवं वेदों का भी जन्म नहीं हुआ था, तब कर्म कहाँ से आ गया॥ २॥ गुरु की कृपा से खेचरी-भूचरी मुद्राएँ एवं तुलसी माला प्राप्त हो गई है। नामदेव विनती करते हैं कि परमतत्व परमेश्वर ही जगत् की उत्पति का कारण है और उसने स्वयं ही सतगुरु के रूप में भेद समझाया है॥ ३॥ ३॥

रामकली घरु २ ॥ बानारसी तपु करै उलटि तीरथ मरै अगनि दहै काइआ कलपु कीजै ॥ असुमेध जगु कीजै सोना गरभ दानु दीजै राम नाम सरि तऊ न पूजै ॥ १ ॥ छोडि छोडि रे पाखंडी मन कपटु न कीजै ॥ हरि का नामु नित नितहि लीजै ॥ १ ॥ रहाउ ॥ गंगा जउ गोदावरि जाईऐ कुंभि जउ केदार न्हाईऐ गोमती सहस गऊ दानु कीजै ॥ कोटि जउ तीरथ करै तनु जउ हिवाले गारै राम नाम सरि तऊ न पूजै ॥ २ ॥ असु दान गज दान सिहजा नारी भूमि दान ऐसो दानु नित नितहि कीजै ॥ आतम जउ निरमाइलु कीजै आप बराबरि कंचनु दीजै राम नाम सरि तऊ न पूजै ॥ ३ ॥ मनहि न कीजै

रोसु जमहि न दीजै दोसु निरमल निरबाण पदु चीन्हि लीजै ॥ जसरथ राइ नंदु राजा मेरा राम चंदु प्रणवै नामा ततु रसु अंम्रितु पीजै ॥ ४ ॥ ४ ॥

यदि कोई व्यक्ति बनारस में उलटा लटक कर तपस्या करे, किसी तीर्थ पर मृत्यु की अभिलाषा करे, अपने शरीर को अग्नि में दहन करे, काया-कल्प करे, अश्वमेध यज्ञ करे, स्वर्ण का गुप्त दान करे, तो भी ये सभी कर्म राम-नाम के बराबर नहीं पहुँचते॥ १॥ हे पाखण्डी ! इन सभी पाखण्डों को छोड़ दे और कपट मत कर। तुझे तो नित्य हरि का नाम स्मरण करना चाहिए॥ १॥ रहाउ॥ यदि कोई गंगा एवं गोदावरी में जाकर कुम्भ के समय तीर्थ स्नान करे, चाहे केदारनाथ के दर्शन करे, यदि वह गोमती में स्नान करे और हजारों गाय दान कर दे, यदि वह करोड़ों बार तीर्थ-स्नान कर ले, चाहे अपना शरीर हिमालय पर्वत की बर्फ में गाल दे तो भी यह सब कर्म राम-नाम की उपमा में नहीं पहुँचते॥ २॥ चाहे कोई अश्व-दान, गज-दान, शृंगारयुक्त सुन्दर नारी-दान, भूमि दान भी कर ले, ऐसा दान नित्य ही करता रहे। चाहे वह अपने मन को निर्मल कर ले और अपने बराबर तोलकर स्वर्ण-दान करे, तो भी सभी कर्म राम-नाम की तुलना में नहीं आते॥ ३॥ मन में रोष नहीं करना चाहिए, यम को भी दोष नहीं देना चाहिए अपितु निर्मल निर्वाण पद की पहचान कर लेनी चाहिए। नामदेव विनती करते हैं कि दशरथ पुत्र श्री राम ही मेरा राजा है, परमतत्व नामामृत का पान करना चाहिए॥ ४॥ ४॥

रामकली बाणी रविदास जी की ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

पड़ीऐ गुनीऐ नामु सभु सुनीऐ अनभउ भाउ न दरसै ॥ लोहा कंचनु हिरन होइ कैसे जउ पारसहि न परसै ॥ १ ॥ देव संसै गांठि न छूटै ॥ काम क्रोध माइआ मद मतसर इन पंचहु मिलि लूटे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ हम बड कबि कुलीन हम पंडित हम जोगी संनिआसी ॥ गिआनी गुनी सूर हम दाते इह बुधि कबहि न नासी ॥ २ ॥ कहु रविदास सभै नही समझसि भूलि परे जैसे बउरे ॥ मोहि अधारु नामु नाराइन जीवन प्रान धन मोरे ॥ ३ ॥ १ ॥

चाहे हम सब हरि-नाम का पठन अथवा चिंतन कर लें या उसे कानों से सुन लें तो भी श्रद्धा एवं पूर्ण निष्ठा के बिना ईश्वर के दर्शन नहीं होते। लोहा शुद्ध स्वर्ण कैसे बन सकता है, जब तक वह पारस को स्पर्श न करे॥ १॥ हे ईश्वर ! मन में से संशय की गाँठ नहीं खुलती, अपितु काम, क्रोध, माया, अभिमान एवं ईर्ष्या—इन पाँचों ने मिलकर शुभ गुणों को लूट लिया है॥ १॥ रहाउ॥ हमारी यह बुद्धि कभी नाश नहीं होती कि हम बड़े कवि, कुलीन, पण्डित, योगी, सन्यासी, ज्ञानवान, गुणवान, शूरवीर एवं दानवीर हैं॥ २॥ रविदास जी कहते हैं कि हम सभी सत्य को नहीं समझते और जैसे बावले बनकर भटके हुए हैं। नारायण का नाम मेरा आधार है और यही मेरा जीवन, प्राण एवं धन है॥ ३॥ १॥

रामकली बाणी बेणी जीउ की ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

इड़ा पिंगुला अउर सुखमना तीनि बसहि इक ठाई ॥ बेणी संगमु तह पिरागु मनु मजनु करे तिथाई ॥ १ ॥ संतहु तहा निरंजन रामु है ॥ गुर गमि चीनै बिरला कोइ ॥ तहां निरंजनु रमईआ होइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ देव सथानै किआ नीसाणी ॥ तह बाजे सबद अनाहद बाणी ॥ तह चंदु न सूरजु पउणु न पाणी ॥ साखी जागी गुरमुखि जाणी ॥ २ ॥ उपजै गिआनु दुरमति छीजै ॥ अंम्रित रसि गगनंतरि

भीजै ॥ एसु कला जो जाणै भेउ ॥ भेटै तासु परम गुरदेउ ॥ ३ ॥ दसम दुआरा अगम अपारा परम पुरख की घाटी ॥ ऊपरि हाटु हाट परि आला आले भीतरि थाती ॥ ४ ॥ जागतु रहै सु कबहु न सोवै ॥ तीनि तिलोक समाधि पलोवै ॥ बीज मंत्रु लै हिरदै रहै ॥ मनूआ उलटि सुंन महि गहै ॥ ५ ॥ जागतु रहै न अलीआ भाखै ॥ पाचउ इंद्री बसि करि राखै ॥ गुर की साखी राखै चीति ॥ मनु तनु अरपै क्रिसन परीति ॥ ६ ॥ कर पलव साखा बीचारे ॥ अपना जनमु न जूऐ हारे ॥ असुर नदी का बंधै मूलु ॥ पछिम फेरि चड़ावै सूरु ॥ अजरु जरै सु निझरु झरै ॥ जगंनाथ सिउ गोसटि करै ॥ ७ ॥ चउमुख दीवा जोति दुआर ॥ पलू अनत मूलु बिचकारि ॥ सरब कला ले आपे रहै ॥ मनु माणकु रतना महि गुहै ॥ ८ ॥ मसतकि पदमु दुआलै मणी ॥ माहि निरंजनु त्रिभवण धणी ॥ पंच सबद निरमाइल बाजे ॥ ढुलके चवर संख घन गाजे ॥ दलि मलि दैतहु गुरमुखि गिआनु ॥ बेणी जाचै तेरा नामु ॥ ९ ॥ १ ॥

इड़ा (गंगा) पिंगला (यमुना), और सुषुम्ना (सरस्वती)—यह तीनों जिस एक स्थान पर रहती हैं, वह स्थल ही त्रिवेणी संगम है और वहाँ ही प्रयागराज तीर्थ है। उस पावन तीर्थ पर ही मेरा मन नाम रूपी जल में स्नान करता रहता है॥ १॥ हे संतजनो! उस स्थान पर ही मायातीत राम है, पर कोई विरला ही गुरु से साक्षात्कार करके इस सत्य की पहचान करता है कि वहाँ मायातीत राम का निवास है॥ १॥ रहाउ॥ इस देवस्थल की क्या निशानी है? उस पावन-स्थान पर अनाहत वाणी एवं शब्द गूँजता रहता है। वहाँ चाँद-सूर्य एवं पवन-पानी भी नहीं है। उस स्थान का तभी ज्ञान हुआ, जब गुरु की शिक्षा द्वारा मन जाग्रत हो गया॥ २॥ जब मन में ज्ञान उत्पन्न होता है तो दुर्मति नष्ट हो जाती है और मन दसम द्वार में नामामृत के रस से भीग जाता है। इस कला के भेद को जो समझ लेता है, उसकी परम गुरुदेव से भेंट हो जाती है॥ ३॥ दसम द्वार अगम्य-अपार है, वहाँ परमपुरुष परमात्मा का निवास है। ऊपर मस्तिष्क में सत्य की दुकान है। इस दसम द्वार रूपी दुकान के ऊपर एक ब्रह्म-कमल रूपी आला है, जिसमें परम-ज्योति रूपी थाती मौजूद है॥ ४॥ जो व्यक्ति सदैव मोह-माया से जाग्रत रहता है, वह कभी मोह की निद्रा में नहीं सोता। ऐसे साधक की लगी समाधि में तीनों लोक लुप्त हो जाते हैं। वह गुरु से मूलमंत्र लेकर उसे अपने हृदय में बसा लेता है, फिर उसका मन विकारों से हटकर शून्यावस्था में स्थिर रहता है॥ ५॥ जो मोह-माया से सचेत रहता है, वह कदापि झूठ या अपशब्द नहीं बोलता। वह अपनी पाँचों इन्द्रियों को वशीभूत रखता है और गुरु की शिक्षा को याद रखता है। फिर वह अपना तन-मन भगवान की प्रीति में अर्पण कर देता है॥ ६॥ वह अपने हाथों को शरीर रूपी पेड़ की शाखा एवं पत्ते मानता है और अपना जन्म व्यर्थ नहीं गंवाता। वह बुराईयों की नदिया पर अंकुश लगाता है और सूर्य को पश्चिम से उदय अर्थात् दुनियावी मोह को छोड़ देता है। वह अजर को सहन कर लेता है और चश्मे के बिना ही नामामृत का रस लेता है। फिर वह संसार के मालिक परमात्मा से भेंट करता है॥ ७॥ उस दसम द्वार में चौमुखा प्रभु-ज्योति का दीया प्रज्वलित होता है। वह जगत् के मूल केन्द्र में ही है और जगत् रूपी पल्लव उसके आस-पास है। वह सर्वकला सम्पूर्ण स्वयं ही रहता है। साधक अपने माणिक्य रूपी अमूल्य मन में गुण रूपी रत्नों को पिरो लेता है॥ ८॥ यह सहंसदल कमल मनुष्य के मस्तिष्क में है और उसके आस-पास पंखुड़ियाँ रूपी रत्न चमकते हैं। तीनों लोकों का मालिक परमेश्वर कमल में निवास करता है और वहाँ निर्मल पंच शब्द गूंजते रहते हैं। वहाँ चँवर झूलते हैं और शंखनाद होता रहता है। साधक गुरु से ज्ञान लेकर काम, क्रोध, लोभ, मोह एवं अहंकार रूपी दैत्यों का दमन कर देता है। बेणी कहते हैं कि हे प्रभु! मैं तो तेरा नाम ही माँगता हूँ॥ ९॥ १॥

रागु नट नाराइन महला ४

१ओं सिति नामु करता पुरखु निरभउ निरवैरु अकाल मूरति अजूनी सैभं गुर प्रसादि ॥

ओंकार एक है, नाम उसका सत्य है। वह आदिपुरुष संसार का रचयिता है, अभय है, वैर भावना से रहित होने के कारण प्रेमस्वरूप है, वह अकाल ब्रह्म मूर्ति अमर है, जन्म-मरण के चक्र से रहित है, स्वजन्मा अर्थात् स्वयं ही प्रकाशमान हुआ है, जिसे गुरु-कृपा से पाया जाता है।

मेरे मन जपि अहिनिसि नामु हरे ॥ कोटि कोटि दोख बहु कीने सभ परहरि पासि धरे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ हरि हरि नामु जपहि आराधहि सेवक भाइ खरे ॥ किलबिख दोख गए सभ नीकरि जिउ पानी मैलु हरे ॥ १ ॥ खिनु खिनु नरु नाराइनु गावहि मुखि बोलहि नर नरहरे ॥ पंच दोख असाध नगर महि इकु खिनु पलु दूरि करे ॥ २ ॥ वडभागी हरि नामु धिआवहि हरि के भगत हरे ॥ तिन की संगति देहि प्रभ जाचउ मै मूड़ मुगध निसतरे ॥ ३ ॥ क्रिपा क्रिपा धारि जगजीवन रखि लेवहु सरनि परे ॥ नानकु जनु तुमरी सरनाई हरि राखहु लाज हरे ॥ ४ ॥ १ ॥

हे मेरे मन ! सर्वदा हरि-नाम का जाप करो। चाहे करोड़ों दोष-पाप किए हों, हरि सब पाप दूर कर देगा॥ १॥ रहाउ॥ जो श्रद्धा एवं पूर्ण आस्था से हरि-नाम जपते एवं आराधना करते हैं, वही भले हैं। उनके मन से सब पाप दोष ऐसे निकल जाते हैं। जैसे पानी मैल को दूर करता है॥ १॥ जो क्षण-क्षण नारायण का स्तुतिगान करता है और मुँह से हरि-हरि बोलता है, उसके शरीर रूपी नगर में रहने वाले पाँच असाध्य दोष (काम, क्रोध, लोभ, मोह एवं अहंकार) प्रभु एक क्षण में ही दूर कर देता है॥ २॥ खुशकिस्मत ही हरि-नाम का भजन करते हैं और हरि के भक्त सदा प्रसन्न रहते हैं। हे प्रभु ! मुझे उनकी संगति प्रदान करो, ताकि मुझ मूर्ख एवं गंवार का उद्धार हो जाए॥ ३॥ हे कृपानिधि, हे जगत्पालक ! मैं तेरी शरण में आया हूँ, कृपा करके मुझे बचा लो। दास नानक तुम्हारी शरण में है, इसलिए मेरी लाज रखो॥ ४॥ १॥

नट महला ४ ॥ राम जपि जन रामै नामि रले ॥ राम नामु जपिओ गुर बचनी हरि धारी हरि क्रिपले ॥ १ ॥ रहाउ ॥ हरि हरि अगम अगोचरु सुआमी जन जपि मिलि सलल सलले ॥ हरि के संत मिलि राम रसु पाइआ हम जन कै बलि बलले ॥ १ ॥ पुरखोतमु हरि नामु जनि गाइओ सभि दालद दुख दलले ॥ विचि देही दोख असाध पंच धातू हरि कीए खिन परले ॥ २ ॥ हरि के संत मनि प्रीति लगाई जिउ देखै ससि कमले ॥ उनवै घनु घन घनिहरु गरजै मनि बिगसै मोर मुरले ॥ ३ ॥ हमरै सुआमी लोच हम लाई हम जीवह देखि हरि मिले ॥ जन नानक हरि अमल हरि लाए हरि मेलहु अनद भले ॥ ४ ॥ २ ॥

राम का जाप करके भक्तगण नाम में विलीन रहते हैं। गुरु के वचन द्वारा राम नाम का जाप उस खुशनसीब ने ही किया है, जिस पर हरि ने अपनी कृपा की है॥ १॥ रहाउ॥ परमेश्वर अगम्य,

अगोचर है, भक्तजन उस स्वामी का नाम जपकर उसमें ऐसे मिल जाते हैं, जैसे पानी में पानी मिल जाता है। जिस ने हरि के संत से मिलकर राम-रस प्राप्त किया है, हम उन पर बलिहारी जाते हैं॥ १॥ जिस ने पुरुषोत्तम प्रभु-नाम का यशगान किया है, उसके सब दुख एवं दारिद्रय नाश हो गए हैं। देह में मौजूद पाँच असाध्य दोष हरि ने क्षण में विनष्ट कर दिए हैं॥ २॥ हरि के संत ने मन में ऐसी प्रीति लगा दी है, जैसे चाँद को देखकर कुमुदिनी के फूल खिल जाते हैं, जैसे बादल झुकते और बहुत गरजते हैं तो मोर बहुत प्रसन्न होते हैं॥ ३॥ मेरे स्वामी ने मन में नाम-स्मरण की तीव्र लालसा लगा दी है, यदि हरि के दर्शन हो जाएँ तो जीता रहूँ। हे नानक ! हरि ने मुझे हरि-नाम का ऐसा नशा लगा दिया है कि उसके मिलन से ही आनंद प्राप्त होगा॥ ४॥ २॥

नट महला ४ ॥ मेरे मन जपि हरि हरि नामु सखे ॥ गुर परसादी हरि नामु धिआइओ हम सतिगुर चरन पखे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ ऊतम जगंनाथ जगदीसुर हम पापी सरनि रखे ॥ तुम वड पुरख दीन दुख भंजन हरि दीओ नामु मुखे ॥ १ ॥ हरि गुन ऊच नीच हम गाए गुर सतिगुर संगि सखे ॥ जिउ चंदन संगि बसै निंमु बिरखा गुन चंदन के बसखे ॥ २ ॥ हमरे अवगन बिखिआ बिखै के बहु बार बार निमखे ॥ अवगनिआरे पाथर भारे हरि तारे संगि जनखे ॥ ३ ॥ जिन कउ तुम हरि राखहु सुआमी सभ तिन के पाप क्रिखे ॥ जन नानक के दइआल प्रभ सुआमी तुम दुसट तारे हरणखे ॥ ४ ॥ ३ ॥

हे मेरे मन ! हरि-नाम का जाप कर, यही तेरा सच्चा साथी है। गुरु की कृपा से हरि-नाम का ध्यान किया है, अब तो हम सतगुरु की चरण-सेवा में ही लीन रहते हैं॥ १॥ रहाउ॥ हे जगन्नाथ, हे जगदीश्वर ! तू महान् है, जो मुझ पापी को अपनी शरण में रखा है। तू परमपुरुष एवं दीनों के दुख नाश करने वाला है। हे हरि ! तूने ही मेरे मुख में नाम-सिमरन की समर्था प्रदान की है॥ १॥ हरि की महिमा सर्वोपरि है, अतः गुरु-सतगुरु के संग मिलकर मुझ नीच ने उसका ही गुणगान किया है। जैसे चंदन के संग नीम के वृक्ष में चंदन के गुण आ बसते हैं, वैसे ही हमारी दशा हो चुकी है॥ २॥ मुझ में विषय विकारों के अनेक अवगुण हैं, जिन्हें मैं बार-बार हर क्षण करता रहता हूँ। मैं अवगुणी एवं भारी पत्थर बन गया हूँ परन्तु हरि ने अपने भक्तजनों की संगति द्वारा उद्धार कर दिया है॥ ३॥ हे हरि ! जिन भक्तों की तू रक्षा करता है, उनके सब पाप नष्ट हो जाते हैं। हे नानक के दयालु प्रभु स्वामी ! तूने हिरण्यकशिपु जैसे दुष्टों का भी निस्तारा कर दिया॥ ४॥ ३॥

नट महला ४ ॥ मेरे मन जपि हरि हरि राम रंगे ॥ हरि हरि क्रिपा करी जगदीसुरि हरि धिआइओ जन पगि लगे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जनम जनम के भूल चूक हम अब आए प्रभ सरनगे ॥ तुम सरणागति प्रतिपालक सुआमी हम राखहु वड पापगे ॥ १ ॥ तुमरी संगति हरि को को न उधरिओ प्रभ कीए पतित पवगे ॥ गुन गावत छीपा दुसटारिओ प्रभि राखी पैज जनगे ॥ २ ॥ जो तुमरे गुन गावहि सुआमी हउ बलि बलि बलि तिनगे ॥ भवन भवन पवित्र सभि कीए जह धूरि परी जन पगे ॥ ३ ॥ तुमरे गुन प्रभ कहि न सकहि हम तुम वड वड पुरख वडगे ॥ जन नानक कउ दइआ प्रभ धारहु हम सेवह तुम जन पगे ॥ ४ ॥ ४ ॥

हे मेरे मन ! प्रेमपूर्वक 'हरि-हरि' नाम जपो। जगदीश्वर हरि ने जब कृपा की तो संतों के चरणों में लगकर उसका ही भजन किया॥ १॥ रहाउ॥ हम जन्म-जन्मांतर से भूले हुए थे किन्तु अब प्रभु की शरण में आ गए हैं। हे मेरे स्वामी ! तू सबका प्रतिपालक एवं शरणागत पर दया करने

वाला है, मुझ सरीखे बड़े पापी की भी रक्षा करो॥ १॥ हे हरि! तुम्हारी संगति में आने वाले किस-किस का उद्धार नहीं हुआ? तूने तो पतित जीवों को भी पावन कर दिया है। ब्राह्मणों ने ईश्वर का स्तुतिगान कर रहे भक्त नामदेव को 'दुष्ट-दुष्ट' कहकर निंदा की थी परन्तु प्रभु ने उसकी भी लाज रख ली थी॥ २॥ हे स्वामी! जो तुम्हारे गुण गाते हैं, मैं उन पर सदा न्यौछावर हूँ। जहाँ-जहाँ भक्तजनों की चरण-धूलि पड़ी है, वे सभी घर पवित्र हो गए हैं॥ ३॥ हे प्रभु! हम तुम्हारे गुण व्यक्त नहीं कर सकते चूंकि तू महान् एवं परमपुरुष है। नानक कहते हैं कि हे परमेश्वर! हम पर ऐसी दया करो, ताकि तेरे भक्तों की चरण-सेवा में रत रहें॥ ४॥ ४॥

नट महला ४ ॥ मेरे मन जपि हरि हरि नामु मने ॥ जगंनाथि किरपा प्रभि धारी मति गुरमति नाम बने ॥ १ ॥ रहाउ ॥ हरि जन हरि जसु हरि हरि गाइओ उपदेसि गुरू गुर सुने ॥ किलबिख पाप नाम हरि काटे जिव खेत क्रिसानि लुने ॥ १ ॥ तुमरी उपमा तुम ही प्रभ जानहु हम कहि न सकहि हरि गुने ॥ जैसे तुम तैसे प्रभ तुम ही गुन जानहु प्रभ अपुने ॥ २ ॥ माइआ फास बंध बहु बंधे हरि जपिओ खुल खुलने ॥ जिउ जल कुंचरु तदूऐ बांधिओ हरि चेतिओ मोख मुखने ॥ ३ ॥ सुआमी पारब्रहम परमेसरु तुम खोजहु जुग जुगने ॥ तुमरी थाह पाई नही पावै जन नानक के प्रभ वडने ॥ ४ ॥ ५ ॥

हे मेरे मन! एकाग्रचित होकर हरि-नाम की उपासना करो। जब जगन्नाथ प्रभु ने कृपा की तो मेरी मति गुरु-मतानुसार नाम में प्रवृत्त हो गई॥ १॥ गुरु से उपदेश सुनकर हरि-भक्तों ने हरि का ही यशोगान किया है। हरि-नाम ने उनके सब किल्विष-पाप ऐसे काट दिए हैं, जैसे कृषक खेतों को काट देता है॥ १॥ हे परमेश्वर! तेरी उपमा तू स्वयं ही जानता है, हम तेरे गुण व्यक्त नहीं कर सकते। हे प्रभु! जैसे तुम हो, वैसे ही अपने गुणों को तुम्हीं जानते हो॥ २॥ जीव माया के अनेक बन्धनों में फँसा हुआ है परन्तु हरि का जाप करने से ही बन्धनों से छूट सकता है। जैसे जल में मगरमच्छ ने हाथी को बांध लिया था परन्तु हरि को याद करने से उसका छुटकारा हो गया था॥ ३॥ हे स्वामी, परब्रह्म-परमेश्वर! युग-युगान्तरों से हम तुझे ही खोजते आ रहे हैं। हे नानक के प्रभु! तेरी महिमा का अन्त नहीं पाया जा सकता॥ ४॥ ५॥

नट महला ४ ॥ मेरे मन कलि कीरति हरि प्रवणे ॥ हरि हरि दइआलि दइआ प्रभ धारी लगि सतिगुर हरि जपणे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ हरि तुम वड अगम अगोचर सुआमी सभि धिआवहि हरि रुड़णे ॥ जिन कउ तुम्हरे वड कटाख है ते गुरमुखि हरि सिमरणे ॥ १ ॥ इहु परपंचु कीआ प्रभ सुआमी सभु जगजीवनु जुगणे ॥ जिउ सललै सलल उठहि बहु लहरी मिलि सललै सलल समणे ॥ २ ॥ जो प्रभ कीआ सु तुम ही जानहु हम नह जाणी हरि गहणे ॥ हम बारिक कउ रिद उसतति धारहु हम करह प्रभू सिमरणे ॥ ३ ॥ तुम जल निधि हरि मान सरोवर जो सेवै सभ फलणे ॥ जनु नानकु हरि हरि हरि हरि बांछै हरि देवहु करि क्रिपणे ॥ ४ ॥ ६ ॥

हे मेरे मन! कलियुग में परमेश्वर का कीर्ति-गान ही मंजूर होता है। दयालु प्रभु ने जब दया की तो गुरु-चरणों में लगकर हरि का ही जाप किया॥ १॥ रहाउ॥ हे हरि! तू अगम्य अगोचर एवं महान् है, सभी जीव सुन्दर परमेश्वर का ही मनन करते हैं। जिन पर तेरी कृपा-दृष्टि हो जाती है, वे गुरुमुख तेरा ही सिमरन करते रहते हैं॥ १॥ यह समूचा जगत्-प्रपंच ईश्वर ने ही रचा है, वह जग का जीवन है, जो सब जीवों के साथ ऐसे जुड़ा हुआ है, जैसे जल में से उठने वाली अनेक लहरें उठकर पुनः जल में ही विलीन हो जाती हैं॥ २॥ हे प्रभु! जो कुछ भी तूने उत्पन्न किया है, उसे तू ही जानता है और तेरी अद्‌भुत लीला को हम नहीं जानते। हम तेरे बालक हैं, हमारे

हृदय में स्तुति धारण कर दो ताकि हम तेरा सिमरन करते रहें॥ ३॥ हे भगवान्! तू ही महासागर और मानसरोवर है, जो तेरी भक्ति करता है, उसे मनवांछित सभी फल मिल जाते हैं। नानक कहते हैं कि मैं तो 'हरि-हरि' नाम की ही कामना करता हूँ, अतः हे प्रभु! कृपा करके मुझे नाम प्रदान कर दीजिए॥ ४॥ ६॥

नट नाराइन महला ४ पड़ताल १ओं सतिगुर प्रसादि ॥

मेरे मन सेव सफल हरि घाल ॥ ले गुर पग रेन रवाल ॥ सभि दालिद भंजि दुख दाल ॥ हरि हो हो हो नदरि निहाल ॥ १ ॥ रहाउ ॥ हरि का ग्रिहु हरि आपि सवारिओ हरि रंग रंग महल बेअंत लाल लाल हरि लाल ॥ हरि आपनी क्रिपा करी आपि ग्रिहि आइओ हम हरि की गुर कीई है बसीठी हम हरि देखे भई निहाल निहाल निहाल निहाल ॥ १ ॥ हरि आवते की खबरि गुरि पाई मनि तनि आनदो आनंद भए हरि आवते सुने मेरे लाल हरि लाल ॥ जनु नानकु हरि हरि मिले भए गलतान हाल निहाल निहाल ॥ २ ॥ १ ॥ ७ ॥

हे मेरे मन! ईश्वर की उपासना ही सफल सेवा है, गुरु की चरण-धूलि पा लो, इससे सभी दुख-दर्द एवं दारिद्रय मिट जाएँगे। प्रभु की कृपा-दृष्टि से आनंद पा लो॥ १॥ रहाउ॥ यह शरीर ईश्वर का घर है, जिसे उसने स्वयं ही सुन्दर बनाया है। ईश्वर का यह सुन्दर महल बड़ा आनंददायक है, जिसमें गुण रूपी बेअंत रत्न-जवाहर, माणिक्य मौजूद हैं। हरि ने मुझ पर कृपा की है और स्वयं ही हृदय-घर में आ गया है। गुरु ने हरि से मेरी सिफारिश की है, जिससे हरि-दर्शन करके हम निहाल हो गए हैं॥ १॥ जब गुरु ने हरि के आने की खबर बताई तो हरि के आने की खबर सुनकर मन-तन आनंदित हो गया। जब नानक को प्रभु मिला तो वह उसमें लीन होकर परम निहाल हो गया॥ २॥ १॥ ७॥

नट महला ४ ॥ मन मिलु संतसंगति सुभवंती ॥ सुनि अकथ कथा सुखवंती ॥ सभ किलविख पाप लहंती ॥ हरि हो हो हो लिखतु लिखंती ॥ १ ॥ रहाउ ॥ हरि कीरति कलजुग विचि ऊतम मति गुरमति कथा भजंती ॥ जिनि जनि सुणी मनी है जिनि जनि तिसु जन कै हउ कुरबानंती ॥ १ ॥ हरि अकथ कथा का जिनि रसु चाखिआ तिसु जन सभ भूख लहंती ॥ नानक जन हरि कथा सुणि त्रिपते जपि हरि हरि हरि होवंती ॥ २ ॥ २ ॥ ८ ॥

हे मन! शोभावान् संतों की संगति में मिलो, सुखदायक हरि की अकथनीय कथा सुनो, इससे सभी दोष-पाप मिट जाते हैं। मगर ईश्वर की प्राप्ति उत्तम भाग्यालेख से ही होती है॥ १॥ रहाउ॥ कलियुग में ईश्वर का कीर्ति-गान ही उत्तम कर्म है, अतः गुरु-मतानुसार हरि-कथा एवं भजनगान करो। जिस ने यह कथा सुनी है और उसका निष्ठापूर्वक मनन किया है, मैं तो उस पर कुर्बान जाता हूँ॥ १॥ जिस ने हरि की अकथनीय कथा का आनंद प्राप्त किया है, उसकी सारी भूख मिट गई है। हे नानक! भक्तजन हरि-कथा सुनकर तृप्त हो गए हैं और हरि-हरि जपकर उसका ही रूप हो गए हैं॥ २॥ २॥ ८॥

नट महला ४ ॥ कोई आनि सुनावै हरि की हरि गाल ॥ तिस कउ हउ बलि बलि बाल ॥ सो हरि जनु है भल भाल ॥ हरि हो हो हो मेलि निहाल ॥ १ ॥ रहाउ ॥ हरि का मारगु गुर संति बताइओ गुरि चाल दिखाई हरि चाल ॥ अंतरि कपटु चुकावहु मेरे गुरसिखहु निहकपट कमावहु हरि की हरि घाल निहाल निहाल निहाल ॥ १ ॥ ते गुर के सिख मेरे हरि प्रभि भाए जिना हरि प्रभु जानिओ मेरा

नालि ॥ जन नानक कउ मति हरि प्रभि दीनी हरि देखि निकटि हदूरि निहाल निहाल निहाल निहाल ॥ २ ॥ ३ ॥ ६ ॥

कोई आकर मुझे हरि की महिमा सुनाए तो मैं उस पर न्यौछावर हो जाऊँगा। वह हरि का भक्त बहुत ही भला है। हे हरि! यदि उससे मेरा मिलाप हो जाए तो मैं आनंदित हो जाऊँगा॥ १॥ रहाउ॥ गुरु-संत ने मुझे मिलन का मार्ग बता दिया है और उसने मुझे मार्गदर्शन कर दिया है। हे मेरे गुरु के शिष्यो! अपने मन का कपट दूर कर दो, निष्कपट होकर हरि की भक्ति करो और निहाल हो जाओ॥ १॥ वही गुरु के शिष्य मेरे प्रभु को प्रिय लगे हैं, जिन्होंने उसे अपने साथ जान लिया है। प्रभु ने नानक को सुमति दी है और वह हरि को आसपास देख कर नित्य निहाल रहता है॥ २॥ ३॥ ६॥

रागु नट नाराइन महला ५ १ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

राम हउ किआ जाना किआ भावै ॥ मनि पिआस बहुतु दरसावै ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सोई गिआनी सोई जनु तेरा जिसु ऊपरि रुच आवै ॥ क्रिपा करहु जिसु पुरख बिधाते सो सदा सदा तुधु धिआवै ॥ १ ॥ कवन जोग कवन गिआन धिआना कवन गुनी रीझावै ॥ सोई जनु सोई निज भगता जिसु ऊपरि रंगु लावै ॥ २ ॥ साई मति साई बुधि सिआनप जितु निमख न प्रभु बिसरावै ॥ संतसंगि लगि एहु सुखु पाइओ हरि गुन सद ही गावै ॥ ३ ॥ देखिओ अचरजु महा मंगल रूप किछु आन नही दिसटावै ॥ कहु नानक मोरचा गुरि लाहिओ तह गरभ जोनि कह आवै ॥ ४ ॥ १ ॥

हे राम! मुझे क्या मालूम कि तुझे क्या रुचता है। मेरे मन में तो तेरे दर्शन की तीव्र लालसा है॥ १॥ रहाउ॥ वही ज्ञानी है, वही तेरा परम भक्त है, जिस पर तेरी अनुकंपा होती है। हे विधाता! जिस व्यक्ति पर तू कृपा करता है, वह सदा तेरा चिंतन करता रहता है॥ १॥ वह कौन-सा योग, ज्ञान-ध्यान एवं कौन से गुण हैं, जिससे तू प्रसन्न होता है। वही व्यक्ति तेरा दास और तेरा अपना भक्त है, जिसे तू अपना प्रेम लगा देता है॥ २॥ वही मति, वही बुद्धि-चतुराई ठीक है, जिससे एक पल भर भी प्रभु विस्मृत नहीं होता। जिसने संतों के संग मिलकर यह सुख प्राप्त कर लिया है, वह सदा ही प्रभु के गुण गाता रहता है॥ ३॥ जिसने महामंगल रूप अद्भुत परमेश्वर के दर्शन कर लिए हैं, उसे अन्य कोई भी नजर नहीं आता। हे नानक! गुरु ने जिस के मन से अभिमान रूपी मैल निकाल दिया है, वह गर्भ-योनि के चक्र में नहीं आता॥ ४॥ १॥

नट नाराइन महला ५ दुपदे १ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

उलाहनो मै काहू न दीओ ॥ मन मीठ तुहारो कीओ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ आगिआ मानि जानि सुखु पाइआ सुनि सुनि नामु तुहारो जीओ ॥ ईहां ऊहा हरि तुम ही तुम ही इहु गुर ते मंत्रु द्रिड़ीओ ॥ १ ॥ जब ते जानि पाई एह बाता तब कुसल खेम सभ थीओ ॥ साधसंगि नानक परगासिओ आन नाही रे बीओ ॥ २ ॥ १ ॥ २ ॥

हे परमेश्वर! मैंने किसी को शिकायत तक नहीं की, अपितु तेरा किया ही मेरे मन को मीठा लगता है॥ १॥ रहाउ॥ तेरी आज्ञा का पालन करके मुझे परम सुख उपलब्ध हुआ है और तेरा नाम सुन-सुनकर ही जीवन पा रहा हूँ। हे हरि! मैंने गुरु से मंत्र लेकर मन में दृढ़ कर लिया है कि लोक-परलोक सर्वत्र तू ही तू है॥ १॥ जब से मैंने यह बात जान ली है, तब से सब कुशलक्षेम

है। हे नानक ! साधुओं की संगति में यह प्रकाश हो गया है कि सत्य के अतिरिक्त कोई नहीं है॥ २॥ १॥

नट महला ५ ॥ जा कउ भई तुमारी धीर ॥ जम की त्रास मिटी सुखु पाइआ निकसी हउमै पीर ॥ १ ॥ रहाउ ॥ तपति बुझानी अंम्रित बानी त्रिपते जिउ बारिक खीर ॥ मात पिता साजन संत मेरे संत सहाई बीर ॥ १ ॥ खुले भ्रम भीति मिले गोपाला हीरै बेधे हीर ॥ बिसम भए नानक जसु गावत ठाकुर गुनी गहीर ॥ २ ॥ २ ॥ ३ ॥

हे परमात्मा ! जिसे तूने सहनशक्ति प्रदान की है, उसका यम का डर मिट गया है। उसकी अभिमान की पीड़ा निकल कर सुख उपलब्ध हो गया है॥ १॥ रहाउ॥ अमृतमय-वाणी ने सारी जलन बुझा दी है और मन ऐसे तृप्त हो गया है जैसे बालक दुग्धपान से तृप्त होता है। संतजन ही मेरे माता-पिता, सज्जन एवं सहायता करने वाले भाई हैं॥ १॥ प्रभु के मिलने से भ्रम के कपाट खुल गए हैं, नाम रूपी हीरे ने मन रूपी हीरे को भेद दिया है। हे नानक ! गुणों के गहरे सागर ठाकुर जी का यशगान कर आश्चर्यचकित हो गया हूँ॥ २॥ २॥ ३॥

नट महला ५ ॥ अपना जनु आपहि आपि उधारिओ ॥ आठ पहर जन कै संगि बसिओ मन ते नाहि बिसारिओ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ बरनु चिहनु नाही किछु पेखिओ दास का कुलु न बिचारिओ ॥ करि किरपा नामु हरि दीओ सहजि सुभाइ सवारिओ ॥ १ ॥ महा बिखमु अगनि का सागरु तिस ते पारि उतारिओ ॥ पेखि पेखि नानक बिगसानो पुनह पुनह बलिहारिओ ॥ २ ॥ ३ ॥ ४ ॥

परमेश्वर ने स्वयं ही अपने दास का उद्धार कर दिया है। वह आठ प्रहर दास के संग रहता है और उसने कभी भी मन से उसे नहीं भुलाया॥ १॥ रहाउ॥ उसने अपने दास का वर्ण एवं जाति कुछ भी नहीं देखा और न ही वंश का विचार किया है। हरि ने कृपा करके अपना नाम प्रदान कर दिया है और सहज-स्वभाव ही सुन्दर बना दिया है॥ १॥ यह जगत् महाविषम अग्नि का सागर है, जिससे मुझे पार करवा दिया है। हे नानक ! हरि को देख-देखकर मन खिल गया है और पुनः पुनः उस पर कुर्बान है॥ २॥ ३॥ ४॥

नट महला ५ ॥ हरि हरि मन महि नामु कहिओ ॥ कोटि अप्राध मिटहि खिन भीतरि ता का दुखु न रहिओ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ खोजत खोजत भइओ बैरागी साधू संगि लहिओ ॥ सगल तिआगि एक लिव लागी हरि हरि चरन गहिओ ॥ १ ॥ कहत मुकत सुनते निसतारे जो जो सरनि पइओ ॥ सिमरि सिमरि सुआमी प्रभु अपुना कहु नानक अनदु भइओ ॥ २ ॥ ४ ॥ ५ ॥

मन में हरि-हरि नाम का जाप किया है, जिससे करोड़ों अपराध क्षण में ही मिट गए हैं और कोई भी दुख नहीं रहा॥ १॥ रहाउ॥ परमसत्य को खोजते-खोजते वैरागी हो गया था, पर साधु की संगत करके सत्य को पा लिया है। सबकुछ त्यागकर ईश्वर में ही ध्यान लगाया और उसके चरणों को पकड़ लिया है॥ १॥ जो-जो व्यक्ति भगवान की शरण में आया, नाम-जपकर मुक्त हो गया है और नाम सुनने वालों का भी निस्तारा हो गया है। हे नानक ! अपने स्वामी प्रभु का स्मरण करके आनंद प्राप्त हो गया है॥ २॥ ४॥ ५॥

नट महला ५ ॥ चरन कमल संगि लागी डोरी ॥ सुख सागर करि परम गति मोरी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ अंचला गहाइओ जन अपुने कउ मनु बीधो प्रेम की खोरी ॥ जसु गावत भगति रसु उपजिओ माइआ की जाली तोरी ॥ १ ॥ पूरन पूरि रहे किरपा निधि आन न पेखउ होरी ॥ नानक मेलि लीओ दासु अपुना प्रीति न कबहू थोरी ॥ २ ॥ ५ ॥ ६ ॥

तेरे चरण-कमल के संग मेरी प्रेम-डोरी लग गई है, हे सुखसागर! मेरी परमगति कर दीजिए॥ १॥ रहाउ॥ तूने अपने सेवक को आँचल पकड़ाया है और मन तेरे प्रेम की खुमारी में बिंध गया है। तेरा यशगान करने से भक्ति का आनंद उत्पन्न हो गया है और तूने माया के बन्धनों का जाल काट दिया है॥ १॥ हे कृपानिधि! तू सर्वव्यापक है और तेरे अलावा मैं किसी अन्य को नहीं देखता। हे नानक! प्रभु ने दास को अपने साथ मिला लिया है और उससे मेरी प्रीति कभी कम नहीं होती॥ २॥ ५॥ ६॥

नट महला ५ ॥ मेरे मन जपु जपि हरि नाराइण ॥ कबहू न बिसरहु मन मेरे ते आठ पहर गुन गाइण ॥ १ ॥ रहाउ ॥ साधू धूरि करउ नित मजनु सभ किलबिख पाप गवाइण ॥ पूरन पूरि रहे किरपा निधि घटि घटि दिसटि समाइणु ॥ १ ॥ जाप ताप कोटि लख पूजा हरि सिमरण तुलि न लाइण ॥ दुइ कर जोड़ि नानकु दानु मांगै तेरे दासनि दास दसाइणु ॥ २ ॥ ६ ॥ ७ ॥

हे मन! नारायण का जाप करो, उसे कभी विस्मृत न करो और आठों प्रहर उसके गुण गाओ॥ १॥ रहाउ॥ साधु की चरण-धूल में नित्य स्नान करो, यह सब किल्विष-पाप मिटा देती है। कृपानिधि परमेश्वर सर्वव्यापक है, वह घट-घट में समाया हुआ दृष्टिगोचर होता है॥ १॥ लाखों-करोड़ों जप-तप एवं पूजा-पाठ हरि-सिमरन के तुल्य नहीं हैं। हे हरि! दोनों हाथ जोड़कर नानक तुझसे यही वरदान माँगता है कि मैं तेरे दासों के दासों का दास बना रहूँ॥ २॥ ६॥ ७॥

नट महला ५ ॥ मेरै सरबसु नामु निधानु ॥ करि किरपा साधू संगि मिलिओ सतिगुरि दीनो दानु ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सुखदाता दुख भंजनहारा गाउ कीरतनु पूरन गिआनु ॥ कामु क्रोधु लोभु खंड खंड कीन्हे बिनसिओ मूड़ अभिमानु ॥ १ ॥ किआ गुण तेरे आखि वखाणा प्रभ अंतरजामी जानु ॥ चरन कमल सरनि सुख सागर नानकु सद कुरबानु ॥ २ ॥ ७ ॥ ८ ॥

हरि-नाम रूपी निधि ही मेरा सर्वस्व है। सतगुरु ने मुझे नाम-दान प्रदान किया है और कृपा करके साधुओं के संग मिला दिया है॥ १॥ रहाउ॥ हे ईश्वर! तू ही सुख देने वाला एवं दुखों को मिटाने वाला है। अतः पूर्ण ज्ञान से तेरा कीर्ति-गान करता हूँ, इसके फलस्वरूप काम, क्रोध एवं लोभ टुकड़े टुकड़े हो गया है, मूर्ख अभिमान भी नष्ट हो गया है॥ १॥ हे अन्तर्यामी! तू सब जानता है, फिर मैं तेरे क्या गुण कहकर बखान कर सकता हूँ। हे सुखसागर! तेरे चरण-कमल की शरण ली है और नानक सदैव तुझ पर कुर्बान है॥ २॥ ७॥ ८॥

नट महला ५ ॥ हउ वारि वारि जाउ गुर गोपाल ॥ १ ॥ रहाउ ॥ मोहि निरगुन तुम पूरन दाते दीना नाथ दइआल ॥ १ ॥ ऊठत बैठत सोवत जागत जीअ प्रान धन माल ॥ २ ॥ दरसन पिआस बहुतु मनि मेरै नानक दरस निहाल ॥ ३ ॥ ८ ॥ ६ ॥

हे परम-परमेश्वर! मैं तुझ पर बार-बार बलिहारी जाता हूँ॥ १॥ रहाउ॥ हे दीनानाथ, हे दया के सागर! मैं तो गुणविहीन हूँ, पर तू पूर्ण दाता है॥ १॥ उठते-बैठते, सोते जागते तू ही मेरी आत्मा, प्राण एवं धन-सम्पति है॥ २॥ नानक विनती करते हैं कि हे ईश्वर! मेरे मन में तेरे दर्शन की तीव्र आकांक्षा है, इसलिए दर्शन देकर निहाल कर दो॥ ३॥ ८॥ ६॥

नट पड़ताल महला ५ ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

कोऊ है मेरो साजनु मीतु ॥ हरि नामु सुनावै नीत ॥ बिनसै दुखु बिपरीति ॥ सभु अरपउ मनु तनु चीतु ॥ १ ॥ रहाउ ॥ कोई विरला आपन कीत ॥ संगि चरन कमल मनु सीत ॥ करि किरपा हरि

जसु दीत ॥ १ ॥ हरि भजि जनमु पदारथु जीत ॥ कोटि पतित होहि पुनीत ॥ नानक दास बलि बलि कीत ॥ २ ॥ १ ॥ १० ॥ १९ ॥

क्या कोई मेरा ऐसा सज्जन अथवा शुभचिंतक है, जो मुझे नित्य हरि-नाम सुनाया करे, जिससे मेरे विपरीत दुख विनष्ट हो जाएँ और मैं उस शुभचिंतक को अपना तन-मन, चित सबकुछ अर्पण कर दूँगा॥ १॥ रहाउ॥ कोई विरला ही प्रभु ने अपना सेवक बनाया है, जिसने उसके चरण-कमल के संग अपना मन जोड़ लिया है। हरि ने कृपा करके उसे यश प्रदान किया है॥ १॥ भगवान का भजन करने से जन्म सफल हो जाता है और करोड़ों पतित भी पावन हो जाते हैं। दास नानक ने खुद को ईश्वर पर न्यौछावर कर दिया है॥ २॥ १॥ १०॥ १९॥

नट असटपदीआ महला ४ १ओं सतिगुर प्रसादि ॥

राम मेरे मनि तनि नामु अधारे ॥ खिनु पलु रहि न सकउ बिनु सेवा मै गुरमति नामु सम्हारे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ हरि हरि हरि हरि हरि मनि धिआवहु मै हरि हरि नामु पिआरे ॥ दीन दइआल भए प्रभ ठाकुर गुर कै सबदि सवारे ॥ १ ॥ मधसूदन जगजीवन माधो मेरे ठाकुर अगम अपारे ॥ इक बिनउ बेनती करउ गुर आगै मै साधू चरन पखारे ॥ २ ॥ सहस नेत्र नेत्र है प्रभ कउ प्रभु एको पुरखु निरारे ॥ सहस मूरति एको प्रभु ठाकुरु प्रभु एको गुरमति तारे ॥ ३ ॥ गुरमति नामु दमोदरु पाइआ हरि हरि नामु उरि धारे ॥ हरि हरि कथा बनी अति मीठी जिउ गूंगा गटक सम्हारे ॥ ४ ॥ रसना साद चखै भाइ दूजै अति फीके लोभ बिकारे ॥ जो गुरमुखि साद चखहि राम नामा सभ अन रस साद बिसारे ॥ ५ ॥ गुरमति राम नामु धनु पाइआ सुणि कहतिआ पाप निवारे ॥ धरम राइ जमु नेड़ि न आवै मेरे ठाकुर के जन पिआरे ॥ ६ ॥ सास सास सास है जेते मै गुरमति नामु सम्हारे ॥ सासु सासु जाइ नामै बिनु सो बिरथा सासु बिकारे ॥ ७ ॥ क्रिपा क्रिपा करि दीन प्रभ सरनी मोकउ हरि जन मेलि पिआरे ॥ नानक दासनि दासु कहतु है हम दासन के पनिहारे ॥ ८ ॥ १ ॥

राम नाम ही मेरे मन-तन का आधार है, सेवा किए बिना मैं क्षण भर के लिए भी नहीं रह सकता, गुरु के उपदेश से मैं नाम-स्मरण में ही लीन रहता हूँ॥ १॥ रहाउ॥ मन में सदैव हरि का ध्यान-मनन करता हूँ और हरि-नाम मुझे प्राणों से भी अति प्रिय है। प्रभु ने दयालु होकर मुझ दीन को गुरु के शब्द द्वारा संवार दिया है॥ १॥ मधुसूदन, जगत् को जीवन देने वाला माधव मेरा मालिक अगम्य-अपार है। मैं गुरु के समक्ष एक विनती करता हूँ कि मैं साधु-चरणों की सेवा में तल्लीन रहूँ॥ २॥ उस परमात्मा के हजारों नेत्र हैं, पर वह एक ईश्वर सबसे निराला है। जगत् का मालिक एक प्रभु ही है, जिसके हजारों रूप हैं। वह एक परमेश्वर गुरु के उपदेश द्वारा जीव का उद्धार कर देता है॥ ३॥ गुरु के उपदेश से दामोदर नाम प्राप्त हो गया है और उसका हरि-हरि नाम अपने हृदय में धारण कर लिया है। मुझे हरि की कथा इतनी मीठी लगी है, जिसका स्वाद व्यक्त नहीं किया जा सकता। जैसे गूंगा पुरुष मधुर पय-पान कर जाता और उसके आनंद को हृदय में याद करता है पर बता नहीं सकता॥ ४॥ जो रसना द्वैतभाव में अन्य पदार्थों के स्वाद चखती है, वे तो लोभ एवं विकार मात्र बहुत फीके हैं। जो गुरु के माध्यम से राम-नाम का स्वाद चखता है, उसे अन्य सभी रस एवं स्वाद भूल जाते हैं॥ ५॥ गुरु के उपदेश द्वारा राम-नाम रूपी धन पा लिया है, जिसे सुनने एवं जपने से पाप मिट जाते हैं। मेरे ठाकुर जी के प्रिय भक्तजनों के निकट धर्मराज के यमदूत भी आने का साहस नहीं करते॥ ६॥ मेरी जितनी भी जीवन-साँसें

है, मैं गुरु-मतानुसार उन साँसों से नाम-स्मरण करता रहता हूँ। जो जीवन-साँस नाम-स्मरण के बिना व्यतीत हो जाती है, वह साँस व्यर्थ ही बेकार हो जाती है॥ ७॥ हे प्रभु! मैं दीन तेरी शरण में आया हूँ, कृपा करके मुझे अपने प्रिय भक्तजनों से मिला दो। हे नानक! मैं प्रभु के दासों का दास यह सत्य कहता हूँ कि मैं दासों का पानी भरने वाला हूँ॥ ८॥ १॥

नट महला ४ ॥ राम हम पाथर निरगुनीआरे ॥ क्रिपा क्रिपा करि गुरू मिलाए हम पाहन सबदि गुर तारे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सतिगुर नामु द्रिड़ाए अति मीठा मैलागरु मलगारे ॥ नामै सुरति वजी है दह दिसि हरि मुसकी मुसक गंधारे ॥ १ ॥ तेरी निरगुण कथा कथा है मीठी गुरि नीके बचन समारे ॥ गावत गावत हरि गुन गाए गुन गावत गुरि निसतारे ॥ २ ॥ बिबेकु गुरू गुरू समदरसी तिसु मिलीऐ संक उतारे ॥ सतिगुर मिलिऐ परम पदु पाइआ हउ सतिगुर कै बलिहारे ॥ ३ ॥ पाखंड पाखंड करि करि भरमे लोभु पाखंडु जगि बुरिआरे ॥ हलति पलति दुखदाई होवहि जमकालु खड़ा सिरि मारे ॥ ४ ॥ उगवै दिनसु आलु जालु सम्हालै बिखु माइआ के बिसथारे ॥ आई रैनि भइआ सुपनंतरु बिखु सुपनै भी दुख सारे ॥ ५ ॥ कलरु खेतु लै कूड़ु जमाइआ सभ कूड़ै के खलवारे ॥ साकत नर सभि भूख भुखाने दरि ठाढे जम जंदारे ॥ ६ ॥ मनमुख करजु चड़िआ बिखु भारी उतरै सबदु वीचारे ॥ जितने करज करज के मंगीए करि सेवक पगि लगि वारे ॥ ७ ॥ जगंनाथ सभि जंत्र उपाए नकि खीनी सभ नथहारे ॥ नानक प्रभु खिंचै तिव चलीऐ जिउ भावै राम पिआरे ॥ ८ ॥ २ ॥

हे राम! हम गुणविहीन मात्र पत्थर ही हैं, लेकिन कृपा करके जब तूने गुरु से मिला दिया तो शब्द-गुरु द्वारा हम पत्थर भी संसार-सागर से पार हो गए॥ १॥ रहाउ॥ सतगुरु ने अत्यंत मीठा हरि-नाम दृढ़ करवाया है, जो चंदन से भी शीतल एवं महकदार है। प्रभु नाम के ध्यान से दस दिशाओं की जानकारी हुई है और हरि के गुणों की सुगन्धि सारे जगत् में फैली हुई है॥ १॥ हे प्रभु! तेरी गुणातीत कथा बड़ी मीठी है, गुरु के सुन्दर वचनों से ही इसका जाप किया है। गाते-गाते तेरे ही गुण गाए हैं और गुणगान करते हुए गुरु ने मेरा उद्धार कर दिया है॥ २॥ गुरु विवेकवान् है, गुरु ही समदर्शी है, उससे साक्षात्कार करने से शंका की निवृत्ति हो जाती है। सच्चे गुरु से मिलकर मोक्ष प्राप्त हो गया है और मैं सतगुरु पर ही बलिहारी जाता हूँ॥ ३॥ कितने ही जीव अनेक पाखण्ड करते हुए भटकते रहते हैं, जग में लोभ एवं पाखण्ड करना बहुत बुरा है। इस तरह लोभी एवं पाखण्डी जीव इहलोक एवं परलोक में बहुत दुखी होते हैं और उन्हें यमराज का दण्ड भोगना पड़ता है॥ ४॥ जब सूर्योदय होता है तो जीव दुनिया के कार्यों में व्यस्त हो जाते हैं परन्तु ये मिथ्या धंधे विष रूपी माया का विस्तार है। जब रात्रि होती है तो जीव सपनों में फँस जाते हैं और सपनों में भी माया रूपी विष का दुख भोगते हैं॥ ५॥ जिस व्यक्ति ने बंजर खेत लेकर उसमें झूठ बोया है, उसके सभी खलिहान झूठ से भरे होते हैं। पदार्थवादी पुरुष सदा ही भूखे रहते हैं और दण्ड भोगने के लिए निर्दयी यम के द्वार पर खड़े होते हैं॥ ६॥ स्वेच्छाचारी जीव पर माया रूपी विष का भारी ऋण चढ़ा रहता है, पर यह ऋण शब्द के चिंतन से ही उतरता है। जितने भी कर्ज माँगने वाले हैं, परमात्मा ने उन्हें सेवक बनाकर यमदूतों को उनसे कर्ज लेने से रोक दिया है॥ ७॥ सभी जीवों को जगत् के मालिक ने पैदा किया है किन्तु उसने उनके नाक में नकेल डाली हुई है। हे नानक! जैसे प्रिय प्रभु को मंजूर होता है, वह जीवों की नकेल को खींचता है और वैसे ही वे चलते हैं अर्थात् परमात्मा की इच्छानुसार ही जीवों का जीवन चलता है॥ ८॥ २॥

नट महला ४ ॥ राम हरि अंम्रित सरि नावारे ॥ सतिगुरि गिआनु मजनु है नीको मिलि कलमल पाप उतारे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ संगति का गुनु बहुतु अधिकाई पड़ि सूआ गनक उधारे ॥ परस नपरस भए कुबिजा कउ लै बैकुंठि सिधारे ॥ १ ॥ अजामल प्रीति पुत्र प्रति कीनी करि नाराइण बोलारे ॥ मेरे ठाकुर कै मनि भाइ भावनी जमकंकर मारि बिदारे ॥ २ ॥ मानुखु कथै कथि लोक सुनावै जो बोलै सो न बीचारे ॥ सतसंगति मिलै त दिड़ता आवै हरि राम नामि निसतारे ॥ ३ ॥ जब लगु जीउ पिंडु है साबतु तब लगि किछु न समारे ॥ जब घर मंदरि आगि लगानी कढि कूपु कढै पनिहारे ॥ ४ ॥ साकत सिउ मन मेलु न करीअहु जिनि हरि हरि नामु बिसारे ॥ साकत बचन बिछूआ जिउ डसीऐ तजि साकत परै परारे ॥ ५ ॥ लगि लगि प्रीति बहु प्रीति लगाई लगि साधू संगि सवारे ॥ गुर के बचन सति सति करि माने मेरे ठाकुर बहुतु पिआरे ॥ ६ ॥ पूरबि जनमि परचून कमाए हरि हरि हरि नामि पिआरे ॥ गुर प्रसादि अंम्रित रसु पाइआ रसु गावै रसु वीचारे ॥ ७ ॥ हरि हरि रूप रंग सभि तेरे मेरे लालन लाल गुलारे ॥ जैसा रंगु देहि सो होवै किआ नानक जंत विचारे ॥ ८ ॥ ३ ॥

हरि-नामामृत के सरोवर में ही स्नान करो। सतगुरु का ज्ञान ऐसा पावन स्नान है, जिससे सब पापों की मैल उतर जाती है॥ १॥ रहाउ॥ अच्छी संगति का गुण बड़ा लाभदायक है, गणिका से राम नाम पढ़कर तोते ने उसका उद्धार कर दिया था चूंकि तोता हर वक्त राम-राम बोलता रहता था और गणिका सुनती रहती थी। जब राजा कंस की मालिन कुबिजा को श्रीकृष्ण के चरण-स्पर्श प्राप्त हुए तो उसका भी कल्याण हुआ और वह वैकुण्ठ सिधार गई॥ १॥ अजामल ब्राह्मण ने अपने सबसे छोटे पुत्र नारायण से प्रीति की थी और अन्तिम समय उसने नारायण कहकर बुलाया। मेरे ठाकुर जी के मन में उसकी श्रद्धा बड़ी प्यारी लगी और यमदूतों को मार भगाया॥ २॥ मनुष्य बड़ी-बड़ी बातें करता हुआ लोगों को सुनाता है लेकिन जो वह बोलता है, उस पर खुद विचार नहीं करता। जब उसे सत्संगति मिल जाती है तो उसके मन में आस्था पैदा हो जाती है एवं राम-नाम द्वारा उसकी मुक्ति हो जाती है॥ ३॥ जब तक स्वस्थ शरीर में प्राण हैं, तब तक वह बिल्कुल भी भगवान को याद नहीं करता। जब उसके घर मन्दिर में आग लगती है तो वह कूप खोदकर आग बुझाने के लिए पानी निकालता है अर्थात् जब कोई भारी मुसीबत आती है तो ही वह भगवान को स्मरण करता है॥ ४॥ हे मन ! शाक्त आदमी से कभी मेल-मिलाप मत करो, जिसने हरि-नाम ही भुला दिया है। शाक्त आदमी के वचन इतने कड़वे होते हैं जैसे बिच्छु डंक मारता है, इसलिए शाक्त का संग छोड़कर परे हट जाना चाहिए॥ ५॥ उन जीवों ने साधु के संग लगकर अपना जीवन संवार लिया है, जिन्होंने पुनः पुनः उसके चरणों में लगकर सत्य से बहुत प्रीति लगाई है। जिन्होंने गुरु के वचन पर आस्था रखकर उसे सत्य माना है, मेरे ठाकुर जी को ऐसे जीव बहुत प्रिय हैं॥ ६॥ जिन्होंने पूर्व जन्म थोड़े शुभ कर्म किए हैं, वे अब भी हरि-नाम से ही प्रेम करते हैं। गुरु की कृपा से जिन्होंने नामामृत रूपी रस प्राप्त कर लिया है, वे नाम-रस का ही गुणगान करते हैं और उसका ही चिंतन करते हैं॥ ७॥ हे मेरे सुन्दर एवं प्रिय हरि ! जगत् में ये सभी रूप-रंग तेरे ही हैं। जैसे रंग तू किसी को देता है, वह वैसा ही हो जाता है। नानक का कथन है कि जीव बेचारे तो कुछ भी करने में असमर्थ हैं॥ ८॥ ३॥

नट महला ४ ॥ राम गुर सरनि प्रभू रखवारे ॥ जिउ कुंचरु तदूऐ पकरि चलाइओ करि ऊपरु कढि निसतारे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ प्रभ के सेवक बहुतु अति नीके मनि सरधा करि हरि धारे ॥ मेरे प्रभि

सरधा भगति मनि भावै जन की पैज सवारे ॥ १ ॥ हरि हरि सेवकु सेवा लागै सभु देखै ब्रहम पसारे ॥ एकु पुरखु इकु नदरी आवै सभ एका नदरि निहारे ॥ २ ॥ हरि प्रभु ठाकुरु रविआ सभ ठाई सभु चेरी जगतु समारे ॥ आपि दइआलु दइआ दानु देवै विचि पाथर कीरे कारे ॥ ३ ॥ अंतरि वासु बहुतु मुसकाई भ्रमि भूला मिरगु सिंङ्हारे ॥ बनु बनु ढूढि ढूढि फिरि थाकी गुरि पूरै घरि निसतारे ॥ ४ ॥ बाणी गुरू गुरू है बाणी विचि बाणी अंम्रितु सारे ॥ गुरु बाणी कहै सेवकु जनु मानै परतखि गुरू निसतारे ॥ ५ ॥ सभु है ब्रहमु ब्रहमु है पसरिआ मनि बीजिआ खावारे ॥ जिउ जन चंद्रहांसु दुखिआ ध्रिसटबुधी अपुना घरु लूकी जारे ॥ ६ ॥ प्रभ कउ जनु अंतरि रिद लोचै प्रभ जन के सास निहारे ॥ क्रिपा क्रिपा करि भगति द्रिड़ाए जन पीछै जगु निसतारे ॥ ७ ॥ आपन आपि आपि प्रभु ठाकुरु प्रभु आपे स्रिसटि सवारे ॥ जन नानक आपे आपि सभु वरतै करि क्रिपा आपि निसतारे ॥ ८ ॥ ४ ॥

गुरु-प्रभु की शरण ही हमारी रक्षा करती है, जैसे हाथी को घड़ियाल ने पकड़ कर पानी में खींच लिया था तो तूने ही बाहर निकाल कर उसे बचाया था॥ १॥ रहाउ॥ प्रभु के सेवक बहुत भले हैं, जिन्होंने श्रद्धा रखकर हरि को मन में धारण किया है। मेरे प्रभु के मन को श्रद्धा एवं भक्ति ही अच्छी लगती है और वह अपने भक्तजनों की लाज रखता है॥ १॥ हरि का भक्त सेवा भक्ति में ही लीन रहता है और सर्वत्र ब्रह्म का ही प्रसार देखता है। उसे हर जगह परमात्मा ही नजर आता है और एक वही सब जीवों को कृपा-दृष्टि से देखता है॥ २॥ मेरा मालिक हरि-प्रभु सर्वव्यापी है और वह जगत् के सब जीवों को सेवक समझकर उनका पालन-पोषण करता है। वह इतना दयालु है कि कीड़ों को पत्थर में पैदा करके उन्हें दान देता है॥ ३॥ मृग की नाभि में ही कस्तूरी मौजूद है, जो सुगन्धित करती है किन्तु वह भ्रम में भूला हुआ सुगन्धि की तलाश में झाड़ियों में सींग मारता रहता है। मैं वन-वन में ढूँढती-ढूँढती थक गई थी लेकिन पूर्ण गुरु ने हृदय-घर में सत्य को दिखाकर मेरा उद्धार कर दिया है॥ ४॥ वाणी गुरु है और गुरु ही वाणी है अर्थात् गुरु एवं वाणी में कोई अन्तर नहीं है, गुरु की वाणी ही गुरु है। गुरुवाणी में सारे अमृत भरपूर हैं। गुरु वाणी सुनाता है और सेवक उस पर आस्था रखता है। इस तरह प्रत्यक्ष गुरु अपने सेवक का निस्तार करता है॥ ५॥ सब कुछ ब्रह्म है अर्थात् ब्रह्म का रूप है और समूचे जगत् में ब्रह्म का प्रसार है। जीव अपने किए कर्मों का ही फल भोगता है। जैसे धृष्टबुद्धि भक्त चन्द्रहांस को बहुत दुखी करता था किन्तु उसने भूल से अपने ही पुत्र को मारकर स्वयं ही आग लगाकर अपना घर जला लिया था॥ ६॥ भक्त अपने हृदय में प्रभु की ही लालसा करता है और प्रभु अपने भक्त की श्वास-श्वास से रक्षा करता है। वह कृपा करके भक्त के मन में अपनी भक्ति दृढ़ कर देता है और ऐसे भक्त का अनुसरण करने वाले जगत् के लोगों का भी उद्धार होता है॥ ७॥ मालिक प्रभु स्वयं ही सर्वकर्ता है और वह स्वयं ही अपनी सृष्टि-रचना को संवारता है। हे नानक! परमात्मा स्वयं ही सब जीवों में रमण कर रहा है और कृपा करके खुद ही जीवों का कल्याण करता है॥ ८॥ ४॥

नट महला ४ ॥ राम करि किरपा लेहु उबारे ॥ जिउ पकरि द्रोपती दुसटां आनी हरि हरि लाज निवारे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ करि किरपा जाचिक जन तेरे इकु मागउ दानु पिआरे ॥ सतिगुर की नित सरधा लागी मोकउ हरि गुरु मेलि सवारे ॥ १ ॥ साकत करम पाणी जिउ मथीऐ नित पाणी झोल झुलारे ॥ मिलि सतसंगति परम पदु पाइआ कढि माखन के गटकारे ॥ २ ॥ नित नित काइआ मंजनु कीआ

नित मलि मलि देह सवारे ॥ मेरे सतिगुर के मनि बचन न भाए सभ फोकट चार सीगारे ॥ ३ ॥ मटकि मटकि चलु सखी सहेली मेरे ठाकुर के गुन सारे ॥ गुरमुखि सेवा मेरे प्रभ भाई मै सतिगुर अलखु लखारे ॥ ४ ॥ नारी पुरखु पुरखु सभ नारी सभु एको पुरखु मुरारे ॥ संत जना की रेनु मनि भाई मिलि हरि जन हरि निसतारे ॥ ५ ॥ ग्राम ग्राम नगर सभ फिरिआ रिद अंतरि हरि जन भारे ॥ सरधा सरधा उपाइ मिलाए मोकउ हरि गुर गुरि निसतारे ॥ ६ ॥ पवन सूतु सभु नीका करिआ सतिगुरि सबदु वीचारे ॥ निज घरि जाइ अंम्रित रसु पीआ बिनु नैना जगतु निहारे ॥ ७ ॥ तउ गुन ईस बरनि नही साकउ तुम मंदर हम निक कीरे ॥ नानक क्रिपा करहु गुर मेलहु मै रामु जपत मनु धीरे ॥ ८ ॥ ५ ॥

हे राम ! कृपा करके हमें बचा लो, जैसे दुष्ट कौरवों ने द्रौपदी को पकड़कर भरी सभा में निर्वस्त्र करने का प्रयास किया था तो तूने ही उसकी लाज रखी थी॥ १॥ रहाउ॥ हे प्रियवर ! अपने याचक पर कृपा करो; मैं तुझसे एक दान मांगता हूँ। मेरे मन में नित्य गुरु मिलन की श्रद्धा लगी रहती है, मुझे गुरु से मिला दो, ताकि मेरा जीवन-संवर जाए॥ १॥ शाक्त का कर्म यों ही व्यर्थ है, जैसे जल में मंथन किया जाता है और वह नित्य ही जल-मंथन की तरह कर्म करता है, जिससे कोई फल नहीं मिलता। जिसने सत्संगति में मिलकर परमपद पा लिया है, वह दुग्ध में से माखन निकालकर उसका स्वाद लेता रहता है॥ २॥ जो व्यक्ति नित्य शारीरिक स्नान करके उसे संवारता है, यदि मेरे सतगुरु के मन को उसकी बात ठीक नहीं लगी तो उसके किए सब शृंगार व्यर्थ हैं॥ ३॥ हे सखी-सहेली ! मटक-मटक कर प्रेमपूर्वक चलो, मेरे ठाकुर जी के गुणों को स्मरण करो। गुरु के दिशा-निर्देशानुसार की हुई सेवा ही मेरे प्रभु को अच्छी लगी है, सतगुरु ने अलख प्रभु को दिखा दिया है॥ ४॥ जगत् में जितने भी नारी पुरुष हैं, उन सबका मालिक एक परमेश्वर ही है। जिन्हें संतजनों की चरण-धूलि मन में अच्छी लगी है, भक्तजनों से मिलकर उनकी मुक्ति हो गई है॥ ५॥ मैं ग्राम-ग्राम एवं सब नगरों में परमात्मा को ढूँढता रहा हूँ परन्तु हरि-भक्तों ने उसे हृदय में ही पा लिया है। गुरु ने मन में श्रद्धा उत्पन्न करके परमात्मा से मिलाकर मेरा उद्धार कर दिया है॥ ६॥ गुरु के शब्द का चिंतन करके जीवन-साँसों को सफल कर लिया है। अब अपने सच्चे घर में जाकर नामामृत का रस पान कर लिया है और इन नेत्रों के बिना ज्ञान-चक्षुओं से जगत् का मोह देख लिया है॥ ७॥ हे ईश्वर ! हम तेरे गुण वर्णन नहीं कर सकते, तेरे सुन्दर घर में हम छोटे से कीड़े हैं। नानक वंदना करते हैं कि हे हरि ! कृपा करके मुझे गुरु से मिला दो, क्योंकि तेरा नाम जपकर मन को धैर्य प्राप्त होता है ॥ ८ ॥ ५॥

नट महला ४ ॥ मेरे मन भजु ठाकुर अगम अपारे ॥ हम पापी बहु निरगुणीआरे करि किरपा गुरि निसतारे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ साधू पुरख साध जन पाए इक बिनउ करउ गुर पिआरे ॥ राम नामु धनु पूजी देवहु सभु तिसना भूख निवारे ॥ १ ॥ पचै पतंगु म्रिग भ्रिंग कुंचर मीन इक इंद्री पकरि सघारे ॥ पंच भूत सबल है देही गुरु सतिगुरु पाप निवारे ॥ २ ॥ सासत्र बेद सोधि सोधि देखे मुनि नारद बचन पुकारे ॥ राम नामु पड़हु गति पावहु सतसंगति गुरि निसतारे ॥ ३ ॥ प्रीतम प्रीति लगी प्रभ केरी जिव सूरजु कमलु निहारे ॥ मेर सुमेर मोरु बहु नाचै जब उनवै घन घनहारे ॥ ४ ॥ साकत कउ अंम्रित बहु सिंचहु सभ डाल फूल बिसुकारे ॥ जिउ जिउ निवहि साकत नर सेती छेड़ि छेड़ि कढै बिखु खारे ॥ ५ ॥ संतन संत साध मिलि रहीऐ गुण बोलहि परउपकारे ॥ संतै संतु मिलै मनु बिगसै जिउ जल मिलि कमल सवारे

॥ ६ ॥ लोभ लहरि सभु सुआनु हलकु है हलकिओ सभहि बिगारे ॥ मेरे ठाकुर के दीबानि खबरि होई गुरि गिआनु खड़गु लै मारे ॥ ७ ॥ राखु राखु राखु प्रभ मेरे मै राखहु किरपा धारे ॥ नानक मै धर अवर न काई मै सतिगुरु गुरु निसतारे ॥ ८ ॥ ६ ॥ छका १ ॥

हे मेरे मन! अगम्य-अपार ईश्वर का भजन करो; हम बड़े पापी एवं गुणविहीन हैं परन्तु गुरु ने कृपा करके हमारा उद्धार कर दिया है॥ १॥ रहाउ॥ जिसने साधु पुरुष साधुजन पा लिए हैं, उस गुरु के प्यारे से मैं एक विनती करता हूँ कि मुझे राम-नाम रूपी धन की पूंजी दे दो ताकि मेरी तृष्णा की भूख निवृत्त हो जाए॥ १॥ पतंगा (दीये की रोशनी) मृग (नाद के कारण), भंवरा (फूल की सुगन्धि), हाथी (कामवासना) और मछली (लोभवश) सभी एक-एक इन्द्रिय के दोष में नष्ट हो जाते हैं। किन्तु हमारे शरीर में पाँच बलि तत्व (काम, क्रोध, लोभ, मोह एवं अहंकार) मौजूद हैं, परन्तु गुरु-सतगुरु ही इन पापों से छुटकारा दिलवा सकता है॥ २॥ हमने शास्त्रों एवं वेदों का भलीभांति अध्ययन किया और नारद मुनि के वचनों का भी निरीक्षण कर लिया है, सब यही पुकार कर कहते हैं कि राम-नाम का पाठ पढ़ो और परमगति पा लो। मगर गुरु की सत्संगति में ही मुक्ति संभव है॥ ३॥ प्रियतम-प्रभु से ऐसी प्रीति लग गई है, जैसे कमल का फूल सूर्य को देखता रहता है, जैसे घटाएँ आने पर मेघ गरजते हैं तो वनों एवं पर्वतों में मोर खुशी-खुशी झूमते हुए नाचते हैं॥ ४॥ यदि शाक्त रूपी पेड़ को अमृत-जल से सींचो तो भी उसकी सब शाखाएँ, पत्र, फूल विषैले ही रहते हैं। ज्यों-ज्यों भला व्यक्ति मायावी व्यक्ति से नम्रता से बात करता है, वह उससे छेड़छाड़ द्वारा त्यों-त्यों विष रूपी कटु वचन ही बोलता है॥ ५॥ संतों-साधुजनों के संग मिलकर रहना चाहिए चूंकि वे लोगों की भलाई के लिए शुभ वचन बोलते रहते हैं। जब किसी भद्रपुरुष को कोई संत मिल जाता है तो उसका मन यों खिल जाता है, जैसे जल में कमल संवर जाता है॥ ६॥ लोभ की लहर में पड़ने वाला आदमी पागल कुत्ते की तरह है, जो सब लोगों को काटकर वही बीमारी लगा देता है। जब मेरे ठाकुर जी के दरबार में इसकी खबर होती है तो गुरु ज्ञान-खड्ग लेकर इसका अन्त कर देता है॥ ७॥ हे प्रभु! कृपा करके मेरी रक्षा करो। नानक का कथन है कि मेरा अन्य कोई सहारा नहीं है परन्तु सतगुरु ही मुझे मुक्त कर सकता है॥ ८॥ ६॥ छका १॥ (महला ४ की छः अष्टपदियों का संग्रह)

रागु माली गउड़ा महला ४

१ओं सति नामु करता पुरखु निरभउ निरवैरु अकाल मूरति अजूनी सैभं गुर प्रसादि ॥

ओंकार केवल एक है, उसका नाम सत्य (शाश्वत) है, वह परमपुरुष संसार का रचयिता है, उसे कोई भय नहीं अर्थात् कर्म दोष से परे है, सब पर समान दृष्टि होने के कारण वह प्रेमस्वरूप है, अतः वैर भावना से रहित है, वह कालातीत ब्रह्म-मूर्ति अमर है, वह जन्म-मरण से रहित है, स्वयंभू अर्थात् स्वयं ही प्रकाशमान हुआ है और गुरु-कृपा से ही प्राप्त होता है।

अनिक जतन करि रहे हरि अंतु नाही पाइआ ॥ हरि अगम अगम अगाधि बोधि आदेसु हरि प्रभ राइआ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ कामु क्रोधु लोभु मोहु नित झगरते झगराइआ ॥ हम राखु राखु दीन तेरे हरि सरनि हरि प्रभ आइआ ॥ १ ॥ सरणागती प्रभ पालते हरि भगति वछलु नाइआ ॥ प्रहिलादु जनु हरनाखि पकरिआ हरि राखि लीओ तराइआ ॥ २ ॥ हरि चेति रे मन महलु पावण सभ दूख भंजनु राइआ ॥ भउ जनम मरन निवारि ठाकुर हरि गुरमती प्रभु पाइआ ॥ ३ ॥ हरि पतित पावन नामु सुआमी भउ भगत भंजनु गाइआ ॥ हरि हारु हरि उरि धारिओ जन नानक नामि समाइआ ॥ ४ ॥ १ ॥

अनेक यत्न करके हम हार गए हैं मगर ईश्वर का अंत प्राप्त नहीं हुआ। वह अगम्य, अपरंपार, अथाह ज्ञान वाला है, उस प्रभु को हमारा कोटि-कोटि नमन है॥ १॥ रहाउ॥ हम नित्य काम, क्रोध, लोभ, मोह के झगड़े में झगड़ते रहते हैं। हे हरि ! हम दीन तेरी शरण में आए हैं, हमारी रक्षा करो॥ १॥ हे हरि ! तेरा नाम भक्तवत्सल है और शरण में आए भक्तों की तू ही हिफाजत करता है। जब दुष्ट हिरण्यकशिपु ने भक्त प्रहलाद को मारने के लिए पकड़ लिया था तो तूने रक्षा करके उसका कल्याण किया था॥ २॥ हे मन ! प्रभु को पाने के लिए उसे याद करो, वह सब दुख मिटाने वाला है। जन्म-मरण का भय दूर करने वाले प्रभु की प्राप्ति गुरु-मतानुसार ही होती है॥ ३॥ हरि का नाम पतितों को पावन करने वाला है, भक्तजन उस भयभंजन स्वामी का ही स्तुतिगान करते हैं। हे नानक ! जिसने हरि-नाम का हार अपने गले में धारण कर लिया है, वह नाम में ही समाया रहता है॥ ४॥ १॥

माली गउड़ा महला ४ ॥ जपि मन राम नामु सुखदाता ॥ सतसंगति मिलि हरि सादु आइआ गुरमुखि ब्रहमु पछाता ॥ १ ॥ रहाउ ॥ वडभागी गुर दरसनु पाइआ गुरि मिलिऐ हरि प्रभु जाता ॥ दुरमति मैलु गई सभु नीकरि हरि अंम्रिति हरि सरि नाता ॥ १ ॥ धनु धनु साध जिन्ही हरि प्रभु पाइआ तिन्ह पूछउ हरि की बाता ॥ पाइ लगउ नित करउ जुदरीआ हरि मेलहु करमि बिधाता ॥ २ ॥ लिलाट लिखे पाइआ गुरु साधू गुर बचनी मनु तनु राता ॥ हरि प्रभ आइ मिले सुखु पाइआ सभ किलविख पाप गवाता ॥ ३ ॥ राम रसाइणु जिन्ह गुरमति पाइआ तिन्ह की ऊतम बाता ॥ तिन की पंक पाईऐ वडभागी जन नानकु चरनि पराता ॥ ४ ॥ २ ॥

हे मन ! परम सुख देने वाला राम नाम जपो; सत्संगति में मिलकर प्रभु-भजन का आनंद मिलता है और गुरु के माध्यम से ब्रह्म की पहचान हो सकती है॥ १॥ रहाउ॥ मैं बड़ा खुशकिस्मत हूँ, जो गुरु-दर्शन प्राप्त हुआ है, गुरु से मिलकर परमात्मा को जान लिया है। हरि-नामामृत के सरोवर में स्नान करने से दुर्मति की सारी मैल निकल गई है॥ १॥ वे साधु धन्य हैं, जिन्होंने प्रभु को पाया है, मैं उनसे हरि की बातें पूछता रहता हूँ। मैं उनके चरणों में लगकर नित्य प्रार्थना करता रहता हूँ कि मुझे कर्म-विधाता परमात्मा से मिला दो॥ २॥ ललाट पर लिखे कर्मानुसार मैंने साधु गुरु को पा लिया है और मेरा मन-तन गुरु के वचन में ही लीन रहता है। जब प्रभु मुझे मिल गया तो सुख प्राप्त हो गया और सारे किल्विष पाप दूर हो गए॥ ३॥ जिन्होंने गुरु की मतानुसार राम-रसायन को प्राप्त किया है, उनकी बात ही उत्तम है। उनकी चरण-धूलि अहोभाग्य से ही प्राप्त होती है, दास नानक तो उनके चरणों में ही पड़ा रहता है॥ ४॥ २॥

माली गउड़ा महला ४ ॥ सभि सिध साधिक मुनि जना मनि भावनी हरि धिआइओ ॥ अपरंपरो पारब्रहमु सुआमी हरि अलखु गुरू लखाइओ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ हम नीच मधिम करम कीए नही चेतिओ हरि राइओ ॥ हरि आनि मेलिओ सतिगुरू खिनु बंध मुकति कराइओ ॥ १ ॥ प्रभि मसतके धुरि लीखिआ गुरमती हरि लिव लाइओ ॥ पंच सबद दरगह बाजिआ हरि मिलिओ मंगलु गाइओ ॥ २ ॥ पतित पावनु नामु नरहरि मंदभागीआं नही भाइओ ॥ ते गरभ जोनी गालीअहि जिउ लोनु जलहि गलाइओ ॥ ३ ॥ मति देहि हरि प्रभ अगम ठाकुर गुर चरन मनु मै लाइओ ॥ हरि राम नामै रहउ लागो जन नानक नामि समाइओ ॥ ४ ॥ ३ ॥

सभी सिद्ध, साधकों एवं मुनिजनों ने मन में श्रद्धापूर्वक परमात्मा का ही ध्यान किया है। उस अपरम्पार, परब्रह्म अदृष्ट हरि को गुरु ने ही दिखाया है॥ १॥ रहाउ॥ हम नीच अधम कर्म करते हैं किन्तु भगवान को याद नहीं करते। प्रभु ने सतगुरु से मिलाकर क्षण में ही बन्धनों से मुक्ति दिलवा दी है॥ १॥ विधाता ने मस्तक पर ऐसा भाग्य लिखा था कि गुरु मतानुसार ईश्वर में ही ध्यान लगाया। परमेश्वर के दरबार में पाँच प्रकार की ध्वनियों वाला अनहद शब्द बजने लग गया है, हरि के मिलन से मंगलगान किया है॥ २॥ हरि का नाम पतितों को पावन करने वाला है, किन्तु बदकिस्मत जीवों को नहीं भाता। ऐसे जीव गर्भ-योनियों में कष्ट भोगते हैं, जैसे जले पर नमक छिड़क दिया जाता है॥ ३॥ हे प्रभु ! तू अगम्य एवं समूचे जगत् का मालिक है, मुझे ऐसी मति दीजिए कि मेरा मन गुरु-चरणों में लीन रहे। हे नानक ! राम-नाम को जपते रहो और नाम में ही विलीन रहो॥ ४॥ ३॥

माली गउड़ा महला ४ ॥ मेरा मनु राम नामि रसि लागा ॥ कमल प्रगासु भइआ गुरु पाइआ हरि जपिओ भ्रमु भउ भागा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ भै भाइ भगति लागो मेरा हीअरा मनु सोइओ गुरमति जागा ॥ किलबिख खीन भए सांति आई हरि उर धारिओ वडभागा ॥ १ ॥ मनमुखु रंगु कसुंभु है कचूआ जिउ कुसम चारि दिन चागा ॥ खिन महि बिनसि जाइ परतापै डंडु धरम राइ का लागा ॥ २ ॥ सतसंगति प्रीति साध अति गूड़ी जिउ रंगु मजीठ बहु लागा ॥ काइआ कापरु चीर बहु फारे हरि रंगु न लहै सभागा ॥ ३ ॥ हरि चारिंओ रंगु मिलै गुरु सोभा हरि रंगि चलूलै रांगा ॥ जन नानकु तिन के चरन पखारै जो हरि चरनी जनु लागा ॥ ४ ॥ ४ ॥

मेरा मन राम नाम के रस में लग गया है। गुरु को पा कर हृदय-कमल खिल गया है, हरि नाम जपकर सब भ्रम-भय समाप्त हो गए हैं॥ १॥ रहाउ॥ मेरा हृदय परमात्मा की भाव-भक्ति में

लगा हुआ है, गुरु के उपदेश से मोह-माया में सोया हुआ मन जाग्रत हो गया है। मैं बड़ा भाग्यवान हूँ जो परमात्मा को अपने हृदय में धारण किया, जिससे सब किल्विष पाप क्षीण हो गए हैं और मन को शांति मिल गई है॥ १॥ जैसे पुष्प चार दिन खिला रहता है वैसे ही स्वेच्छाचारी का रंग कुसुंभ की तरह कच्चा होता है। जब यमराज का दण्ड एवं परिताप मिलता है तो वह क्षण में ही विनष्ट हो जाता है॥ २॥ साधुओं की सत्संगति की प्रीति बड़ी प्रगाढ़ होती है, जैसे कपड़े को मजीठ का पक्का रंग लगा होता है, शरीर रूपी कपड़ा चाहे बहुत फट भी जाए पर सौभाग्य से इसे लगा हुआ हरि-नाम रूपी रंग कभी नहीं उतरता॥ ३॥ जिसे गुरु मिल जाता है, वह उसे हरि-रंग चढ़ा देता है, इस तरह वह हरि रंग में रंगकर पूरे जगत् में शोभा हासिल करता है। दास नानक उसके चरण धोता है, जो हरि के चरणों में लीन हो गया है॥ ४॥ ४॥

माली गउड़ा महला ४ ॥ मेरे मन भजु हरि हरि नामु गुपाला ॥ मेरा मनु तनु लीनु भइआ राम नामै मति गुरमति राम रसाला ॥ १ ॥ रहाउ ॥ गुरमति नामु धिआईऐ हरि हरि मनि जपीऐ हरि जपमाला ॥ जिन्ह कै मसतकि लीखिआ हरि मिलिआ हरि बनमाला ॥ १ ॥ जिन्ह हरि नामु धिआइआ तिन्ह चूके सरब जंजाला ॥ तिन्ह जमु नेड़ि न आवई गुरि राखे हरि रखवाला ॥ २ ॥ हम बारिक किछू न जाणहू हरि मात पिता प्रतिपाला ॥ करु माइआ अगनि नित मेलते गुरि राखे दीन दइआला ॥ ३ ॥ बहु मैले निरमल होइआ सभ किलबिख हरि जसि जाला ॥ मनि अनदु भइआ गुरु पाइआ जन नानक सबदि निहाला ॥ ४ ॥ ५ ॥

हे मेरे मन! प्रभु-नाम का भजन करो, गुरु उपदेश द्वारा रस पाकर मेरा मन-तन राम नाम में ही लीन हो गया है॥ १॥ रहाउ॥ गुरु-मतानुसार हरि-नाम का चिंतन करो और मन में हरि-नाम की ही माला जपते रहो। जिनके माथे पर जन्म से ही उत्तम भाग्य लिखा हुआ है, उन्हें परमात्मा मिल गया है॥ १॥ जिन भक्तजनों ने हरि-नाम का ध्यान किया है, उनके दुनिया के सब झंझट समाप्त हो गए हैं। यमदूत भी उनके निकट नहीं आते, गुरु परमेश्वर उनका रखवाला बन गया है॥ २॥ हम नादान बालक तो कुछ भी नहीं जानते कि ईश्वर ही माता-पिता की तरह हमारा पोषण कर रहा है। हम नित्य माया की अग्नि में हाथ डालते रहते हैं, परन्तु दीनदयाल गुरु ने रक्षा की है॥ ३॥ हम बहुत मलिन थे अब निर्मल हो गए हैं, हरि का यशोगान करने से सब किल्विष-पाप जल गए हैं। गुरु को पा कर मन आनंदित हो गया है, हे नानक! शब्द गुरु से यह निहाल हो गया है॥ ४॥ ५॥

माली गउड़ा महला ४ ॥ मेरे मन हरि भजु सभ किलबिख काट ॥ हरि हरि उर धारिओ गुरि पूरै मेरा सीसु कीजै गुर वाट ॥ १ ॥ रहाउ ॥ मेरे हरि प्रभ की मै बात सुनावै तिसु मनु देवउ कटि काट ॥ हरि साजनु मेलिओ गुरि पूरै गुर बचनि बिकानो हटि हाट ॥ १ ॥ मकर प्रागि दानु बहु कीआ सरीरु दीओ अध काटि ॥ बिनु हरि नाम को मुकति न पावै बहु कंचनु दीजै कटि काट ॥ २ ॥ हरि कीरति गुरमति जसु गाइओ मनि उघरे कपट कपाट ॥ त्रिकुटी फोरि भरमु भउ भागा लज भानी मटुकी माट ॥ ३ ॥ कलजुगि गुरु पूरा तिन पाइआ जिन धुरि मसतकि लिखे लिलाट ॥ जन नानक रसु अंम्रितु पीआ सभ लाथी भूख तिखाट ॥ ४ ॥ ६ ॥ छका १ ॥

हे मेरे मन! ईश्वर का भजन समूचे पाप-दोष काटने वाला है। पूर्ण गुरु ने तो हृदय में ही ईश्वर को स्थित कर दिया है, अतः मैं अपना शीश पूर्ण गुरु के मार्ग पर अर्पण करना चाहता हूँ॥ १॥ रहाउ॥ जो मुझे मेरे प्रभु की बात सुनाए, उसे मैं अपना मन काट-काटकर भेंट कर दूँगा।

पूर्ण गुरु ने मुझे सज्जन-प्रभु से मिला दिया है, इसलिए गुरु के वचन पर हाट-बाजार में बिकने को भी तैयार हूँ॥ १॥ चाहे किसी व्यक्ति ने मकर संक्रान्ति के समय प्रयाग तीर्थ पर बहुत दान-पुण्य किया हो, चाहे उसने काशी में जाकर आरे से अपना आधा शरीर कटवा दिया हो परन्तु हरि-नाम के बिना मुक्ति प्राप्त नहीं होती, चाहे उसने निर्धनों को स्वर्ण दान ही किया हो॥ २॥ गुरु के उपदेश द्वारा हरि-कीर्ति का यशोगान करने से मन को लगे हुए कपट कपाट भी खुल गए हैं। त्रिकुटी को फोड़कर भ्रम-भय भाग गया है और लोक लाज रूपी मटकी भी टूट गई है॥ ३॥ कलियुग में पूर्ण गुरु उसने ही पाया है, जिसके माथे पर उत्तम भाग्य लिखा हुआ है। हे नानक! जिसने नामामृत का रस पान किया है, उसकी सारी भूख एवं तृष्णा मिट गई है॥ ४॥ ६॥ छका १॥

माली गउड़ा महला ५ ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

रे मन टहल हरि सुख सार ॥ अवर टहला झूठीआ नित करै जमु सिरि मार ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जिना मसतकि लीखिआ ते मिले संगार ॥ संसारु भउजलु तारिआ हरि संत पुरख अपार ॥ १ ॥ नित चरन सेवहु साध के तजि लोभ मोह बिकार ॥ सभ तजहु दूजी आसड़ी रखु आस इक निरंकार ॥ २ ॥ इकि भरमि भूले साकता बिनु गुर अंध अंधार ॥ धुरि होवना सु होइआ को न मेटणहार ॥ ३ ॥ अगम रूपु गोबिंद का अनिक नाम अपार ॥ धनु धंनु ते जन नानका जिन हरि नामा उरि धार ॥ ४ ॥ १ ॥

हे मन! ईश्वर की सेवा परमसुख देने वाली है, अन्य सेवाएँ झूठी हैं और यमदूतों का दण्ड नित्य सिर पर सवार रहता है॥ १॥ रहाउ॥ जिनके मस्तक पर भाग्य लिखा है, वही सुसंगति में मिले हैं। परमपुरुष हरि के संतजनों ने संसार के लोगों को भवसागर से पार करवा दिया है॥ १॥ लोभ, मोह एवं विकारों को छोड़कर नित्य साधु-महापुरुषों के चरणों की सेवा करनी चाहिए। अन्य सब अभिलाषाओं को छोड़कर एक परमेश्वर पर पूर्ण आस्था रखो॥ २॥ कोई प्रभु से विमुख भ्रम में भटकता रहता है और गुरु के बिना (उसके लिए) अज्ञान रूपी अँधेरा बना रहता है। विधाता ने जो लिखा है, वही हुआ है और कोई भी उसे टाल नहीं सकता॥ ३॥ भगवान का रूप अगम्य है और उसके अनेकों ही अपार नाम हैं। हे नानक! वे भक्तजन धन्य एवं खुशनसीब हैं जिन्होंने हरि-नाम को अपने हृदय में धारण कर लिया है॥ ४॥ १॥

माली गउड़ा महला ५ ॥ राम नाम कउ नमसकार ॥ जासु जपत होवत उधार ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जा कै सिमरनि मिटहि धंध ॥ जा कै सिमरनि छूटहि बंध ॥ जा कै सिमरनि मूरख चतुर ॥ जा कै सिमरनि कुलह उधर ॥ १ ॥ जा कै सिमरनि भउ दुख हरै ॥ जा कै सिमरनि अपदा टरै ॥ जा कै सिमरनि मुचत पाप ॥ जा कै सिमरनि नही संताप ॥ २ ॥ जा कै सिमरनि रिद बिगास ॥ जा कै सिमरनि कवला दासि ॥ जा कै सिमरनि निधि निधान ॥ जा कै सिमरनि तरे निदान ॥ ३ ॥ पतित पावनु नामु हरी ॥ कोटि भगत उधारु करी ॥ हरि दास दासा दीनु सरन ॥ नानक माथा संत चरन ॥ ४ ॥ २ ॥

उस राम नाम को हमारा नमन है, जिसका जाप करने मात्र से उद्धार हो जाता है॥ १॥ रहाउ॥ जिसके सिमरन से उलझनें मिट जाती हैं, जिसके स्मरण से बन्धनों से छुटकारा हो जाता है, जिसे याद करने से मूर्ख भी चतुर बन जाता है, जिसका मनन करने से सारी वंशावलि का उद्धार हो जाता है॥ १॥ जिसके स्मरण से सारे भय-दुख नष्ट हो जाते हैं, जिसकी आराधना करने से विपत्ति टल जाती है, जिसके सिमरन से ५ाप नाश हो जाते हैं, जिसका सिमरन करने से कोई दुख-संताप नहीं लगता॥ २॥ जिसके स्मरण से हृदय प्रफुल्लित हो जाता है, जिसके स्मरण से धन की देवी लक्ष्मी दासी बन जाती है, जिसके सिमरन से नौ निधियों के कोष मिल जाते हैं, जिसके सिमरन से जीव भवसागर से तैर जाता है॥ ३॥ वह हरि-नाम पतितपावन है, जिसने

करोड़ों भक्तों का उद्धार कर दिया है। मुझ दीन ने भी हरि के दासों के दास की शरण ली है। नानक का कथन है कि हमारा माथा तो संतजनों के चरणों में ही रहता है॥ ४॥ २॥

माली गउड़ा महला ५ ॥ ऐसो सहाई हरि को नाम ॥ साधसंगति भजु पूरन काम ॥ १ ॥ रहाउ ॥ बूडत कउ जैसे बेड़ी मिलत ॥ बूझत दीपक मिलत तिलत ॥ जलत अगनी मिलत नीर ॥ जैसे बारिक मुखहि खीर ॥ १ ॥ जैसे रण महि सखा भ्रात ॥ जैसे भूखे भोजन मात ॥ जैसे किरखहि बरस मेघ ॥ जैसे पालन सरनि सेंघ ॥ २ ॥ गरुड़ मुखि नही सरप त्रास ॥ सूआ पिंजरि नही खाइ बिलासु ॥ जैसो आंडो हिरदे माहि ॥ जैसो दानो चकी दराहि ॥ ३ ॥ बहुतु ओपमा थोर कही ॥ हरि अगम अगम अगाधि तुही ॥ ऊच मूचौ बहु अपार ॥ सिमरत नानक तरे सार ॥ ४ ॥ ३ ॥

हरि का नाम ऐसा मददगार है कि साधु-संगति में इसका भजन करने से सभी कार्य पूर्ण हो जाते हैं॥ १॥ रहाउ॥ जैसे डूब रहे आदमी को नैया मिल जाती है, बुझ रहे दीपक को तेल मिल जाता है, जैसे अग्नि में जल रहे व्यक्ति को पानी मिल जाता है, जैसे रोते बालक के मुँह में दूध प्राप्त हो जाता है॥ १॥ जैसे युद्ध में भाई सहायक होता है, जैसे भोजन भूखे आदमी की भूख को मिटा देता है, जैसे बादल वर्षा करके कृषि को बचा लेता है और जैसे शेर अर्थात् बलशाली की शरण में रक्षा हो जाती है॥ २॥ जिसके मुँह में गरुड़-मंत्र होता है, उसे साँपों का भय नहीं रहता और पिंजरे में बैठे तोते को बिल्ली नहीं खा सकती। जैसे हृदय में याद करने से कुँज के अण्डे खराब नहीं होते, जैसे चक्की की किल्ली से लगे दाने नहीं पिसते॥ ३॥ हरि नाम की उपमा तो बहुत है, किन्तु मैंने थोड़ी-सी बयान की है। हे हरि! तू ही अगम्य, अगोचर, अगाध, अपरंपार एवं सर्वोपरि है। नानक कहते हैं कि तुझे याद करने से सब का उद्धार हो जाता है॥ ४॥ ३॥

माली गउड़ा महला ५ ॥ इही हमारै सफल काज ॥ अपुने दास कउ लेहु निवाजि ॥ १ ॥ रहाउ ॥ चरन संतह माथ मोर ॥ नैनि दरसु पेखउ निसि भोर ॥ हसत हमरे संत टहल ॥ प्रान मनु धनु संत बहल ॥ १ ॥ संतसंगि मेरे मन की प्रीति ॥ संत गुन बसहि मेरै चीति ॥ संत आगिआ मनहि मीठ ॥ मेरा कमलु बिगसै संत डीठ ॥ २ ॥ संतसंगि मेरा होइ निवासु ॥ संतन की मोहि बहुतु पिआस ॥ संत बचन मेरे मनहि मंत ॥ संत प्रसादि मेरे बिखै हंत ॥ ३ ॥ मुकति जुगति एहा निधान ॥ प्रभ दइआल मोहि देवहु दान ॥ नानक कउ प्रभ दइआ धारि ॥ चरन संतन के मेरे रिदे मझारि ॥ ४ ॥ ४ ॥

हे परमात्मा! अपने दास पर उपकार करो; यही हमारे कार्य सफल करने वाला है॥ १॥ रहाउ॥ मेरा माथा संतों के चरणों में झुका रहे, मेरे नयन रात-दिन उनके दर्शन करते रहें। मेरे हाथ संतों की सेवा में तल्लीन रहें और प्राण, मन एवं धन सब उनको अर्पण हैं॥ १॥ मेरे मन में संतों के संग प्रेम बना रहे और मेरे चित्त में उनके गुण बस जाएँ। संतों की आज्ञा मेरे मन को मधुर लगती है और उनको देखकर मेरा हृदय-कमल खिल जाता है॥ २॥ मेरा निवास संतों के संग सदा बना रहे और मुझे उनकी ही तीव्र लालसा है। संतों के वचन ही मेरे मन में मंत्र हैं और उनकी कृपा से मेरे विकारों का नाश हो गया है॥ ३॥ संतों का संग ही मेरा कोष है और यही मुक्ति पाने की युक्ति है। हे दयालु प्रभु! मुझे यही वरदान दीजिए। नानक कहते हैं कि हे प्रभु! कृपा करो, ताकि संतों के चरण मेरे हृदय में बसते रहें॥ ४॥ ४॥

माली गउड़ा महला ५ ॥ सभ कै संगी नाही दूरि ॥ करन करावन हाजरा हजूरि ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सुनत जीओ जासु नामु ॥ दुख बिनसे सुख कीओ बिस्रामु ॥ सगल निधि हरि हरि हरे ॥ मुनि जन ता की सेव करे ॥ १ ॥ जा कै घरि सगले समाहि ॥ जिस ते बिरथा कोइ नाहि ॥ जीअ जंत्र करे प्रतिपाल ॥ सदा सदा सेवहु किरपाल ॥ २ ॥ सदा धरमु जा कै दीबाणि ॥ बेमुहताज नही किछु काणि

॥ सभ किछु करना आपन आपि ॥ रे मन मेरे तू ता कउ जापि ॥ ३ ॥ साधसंगति कउ हउ बलिहार ॥ जासु मिलि होवै उधारु ॥ नाम संगि मन तनहि रात ॥ नानक कउ प्रभि करी दाति ॥ ४ ॥ ५ ॥

ईश्वर सब के साथ ही है और वह कहीं दूर नहीं है। सब करने-करवाने वाला सदा ही प्रत्यक्ष है॥ १॥ रहाउ॥ जिसका नाम सुनकर जीवन प्राप्त होता है, दुख नष्ट हो जाते हैं और सुख शांति प्राप्त होती है। परमेश्वर का नाम सब निधियाँ हैं और मुनिजन उसकी सेवा में ही लीन रहते हैं॥ १॥ जिसके घर में सर्व कोष समाए हुए हैं, जिसके द्वार से कोई भी खाली नहीं लौटता, जो सब जीवों का पोषण करता है। अतः सदैव उस कृपानिधि परमेश्वर की उपासना करो॥ २॥ जिसके दरबार में सदा धर्म-न्याय होता है, वह बेपरवाह है, उसे कोई कमी नहीं है। वह स्वयं ही सबकुछ करने वाला है। हे मेरे मन! तू उसका ही जाप कर॥ ३॥ मैं साधु-संगति पर कुर्बान जाता हूँ, जिसे मिलकर उद्धार हो जाता है। हे प्रभु! नानक को ऐसी देन प्रदान करो कि मन-तन सदैव नाम के संग लीन रहे॥ ४॥ ५॥

माली गउड़ा महला ५ दुपदे

१ओं सतिगुर प्रसादि ॥ हरि समरथ की सरना ॥ जीउ पिंडु धनु रासि मेरी प्रभ एक कारन करना ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सिमरि सिमरि सदा सुखु पाईऐ जीवणै का मूलु ॥ रवि रहिआ सरबत ठाई सूखमो असथूल ॥ १ ॥ आल जाल बिकार तजि सभि हरि गुना निति गाउ ॥ कर जोड़ि नानकु दानु मांगै देहु अपना नाउ ॥ २ ॥ १ ॥ ६ ॥

मैं समर्थ ईश्वर की शरण में आ गया हूँ; सर्वकर्ता एक प्रभु ही मेरे प्राण, शरीर, धन एवं राशि है॥ १॥ रहाउ॥ उसे स्मरण करने से सदैव सुख प्राप्त होता है और वही जीवन का मूल है। वह निराकार एवं साकार रूप में सर्वत्र रमण कर रहा है॥ १॥ व्यर्थ के जंजाल एवं सब विकारों को तजकर नित्य भगवान का गुणगान करो। नानक दोनों हाथ जोड़कर परमात्मा से यही दान माँगता है कि मुझे अपना नाम प्रदान करो॥ २॥ १॥ ६॥

माली गउड़ा महला ५ ॥ प्रभ समरथ देव अपार ॥ कउनु जानै चलित तेरे किछु अंतु नाही पार ॥ १ ॥ रहाउ ॥ इक खिनहि थापि उथापदा घड़ि भंनि करनैहारु ॥ जेत कीन उपारजना प्रभु दानु देइ दातार ॥ १ ॥ हरि सरनि आइओ दासु तेरा प्रभ ऊच अगम मुरार ॥ कढि लेहु भउजल बिखम ते जनु नानकु सद बलिहार ॥ २ ॥ २ ॥ ७ ॥

हे देवाधिदेव, तू सबकुछ करने में समर्थ व अपरम्पार है। तेरी अद्भुत लीलाएं कोई भी नहीं जानता और तेरी महिमा का कोई आर-पार नहीं है॥ १॥ रहाउ॥ एक क्षण में पैदा करने एवं नष्ट करने वाला रचयिता परमेश्वर ही है और वही दुनिया को बनाने एवं मिटाने वाला है। उसने जितने भी जीव पैदा किए हैं, वह दातार सबको दान देता है॥ १॥ हे महान्-अपरंपार परमेश्वर! तेरा दास तेरी शरण में आया है, उसे विषम भवसागर से निकाल लो, दास नानक सदा तुझ पर न्यौछावर है॥ २॥ २॥ ७॥

माली गउड़ा महला ५ ॥ मनि तनि बसि रहे गोपाल ॥ दीन बांधव भगति वछल सदा सदा क्रिपाल ॥ १ ॥ रहाउ ॥ आदि अंते मधि तूहै प्रभ बिना नाही कोइ ॥ पूरि रहिआ सगल मंडल एकु सुआमी सोइ ॥ १ ॥ करनि हरि जसु नेत्र दरसनु रसनि हरि गुन गाउ ॥ बलिहारि जाए सदा नानकु देहु अपणा नाउ ॥ २ ॥ ३ ॥ ८ ॥ ६ ॥ १४ ॥

मेरे मन-तन में परमात्मा ही बस रहा है, वह दीनबंधु, भक्तवत्सल सर्वदा कृपा का भण्डार है॥ १॥ रहाउ॥ हे परमेश्वर ! सृष्टि के आदि, अन्त एवं मध्य में तू ही है। (भूत, वर्तमान एवं भविष्य में) तेरे सिवा अन्य कोई नहीं है। एक स्वामी ही समूचे ब्रह्माण्ड में रमण कर रहा है॥ १॥ मैं अपने कानों से हरि यश सुनता, नेत्रों से उसके ही दर्शन करता और रसना से हरि का गुणानुवाद करता हूँ। नानक तुझ पर सदा बलिहारी जाता है, मुझे अपना नाम प्रदान करो॥ २॥ ३॥ ८॥ ६॥ १४॥

माली गउड़ा बाणी भगत नामदेव जी की १ओं सतिगुर प्रसादि ॥

धनि धंनि ओ राम बेनु बाजै ॥ मधुर मधुर धुनि अनहत गाजै ॥ १ ॥ रहाउ ॥ धनि धनि मेघा रोमावली ॥ धनि धनि क्रिसन ओढै कांबली ॥ १ ॥ धनि धनि तू माता देवकी ॥ जिह ग्रिह रमईआ कवलापती ॥ २ ॥ धनि धनि बन खंड बिंद्राबना ॥ जह खेलै स्री नाराइना ॥ ३ ॥ बेनु बजावै गोधनु चरै ॥ नामे का सुआमी आनद करै ॥ ४ ॥ १ ॥

प्रभु की बजने वाली बाँसुरी धन्य है, जिससे बहुत ही मधुर-मधुर अनाहत ध्वनि प्रकट हो रही है॥ १॥ रहाउ॥ भेड़ की वह ऊन धन्य है, वह कामरी धन्य है, जो श्रीकृष्ण जी ने ओढ़ी है॥ १॥ हे माता देवकी ! तू धन्य है, जिसके घर में कमलापति प्रभु हुआ है॥ २॥ वृंदावन का वह वन स्थल भाग्यवान् है, जहाँ श्री नारायण खेलते रहे॥ ३॥ वह बाँसुरी बजाता और गायें चराता रहता है, नामदेव का स्वामी आनंद करता रहता है॥ ४॥ १॥

मेरो बापु माधउ तू धनु केसौ सांवलीओ बीठुलाइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ कर धरे चक्र बैकुंठ ते आए गज हसती के प्रान उधारीअले ॥ दुहसासन की सभा द्रोपती अंबर लेत उबारीअले ॥ १ ॥ गोतम नारि अहलिआ तारी पावन केतक तारीअले ॥ ऐसा अधमु अजाति नामदेउ तउ सरनागति आईअले ॥ २ ॥ २ ॥

हे मेरे पिता माधव, हे केशव, हे साँवले बीठल ! तू धन्य है॥ १॥ रहाउ॥ तू हाथ में सुदर्शन चक्र धारण करके बैकुण्ठ से आया था और तूने ग्राह से हाथी के प्राणों का उद्धार किया था। दुःशासन की सभा में द्रौपदी को निर्वस्त्र होने से तूने ही बचाया था॥ १॥ तूने ही गौतम ऋषि की पत्नी अहल्या का उद्धार किया था जो अभिशाप के कारण शिला बन गई थी। तूने कितने ही पतितों का कल्याण करके उन्हें पावन किया। इसलिए अधम एवं निम्न जाति वाला नामदेव तेरी ही शरण में आया है॥ २॥ २॥

सभै घट रामु बोलै रामा बोलै ॥ राम बिना को बोलै रे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ एकल माटी कुंजर चीटी भाजन हैं बहु नाना रे ॥ असथावर जंगम कीट पतंगम घटि घटि रामु समाना रे ॥ १ ॥ एकल चिंता राखु अनंता अउर तजहु सभ आसा रे ॥ प्रणवै नामा भए निहकामा को ठाकुरु को दासा रे ॥ २ ॥ ३॥

सब के शरीर में राम ही बोलता है, राम के अलावा अन्य कौन बोलता है॥ १॥ रहाउ॥ मिट्टी एक ही है परन्तु उस मिट्टी से हाथी एवं चींटी रूपी अनेक प्रकार के जीव रूपी बर्तन हुए हैं। वृक्ष, पहाड़, मनुष्य, पशु-पक्षी, कीट-पतंगों सबमें राम ही समाया हुआ है॥ १॥ अन्य सब आशाएँ त्यागकर एक परमेश्वर का ही चिंतन करो। नामदेव विनती करता है कि अब वह निष्काम हो गया है, इसलिए मालिक एवं दास में कोई भेद नहीं है॥ २॥ ३॥

रागु मारू महला १ घरु १ चउपदे

१ओं सति नामु करता पुरखु निरभउ निरवैरु अकाल मूरति अजूनी सैभं गुर प्रसादि ॥

ईश्वर केवल एक है, नाम उसका सत्य है, वही संसार का रचनहार है, सर्वशक्तिमान है, उसे कोई भय नहीं अर्थात् कर्म दोष से परे है, सब पर एक समान दृष्टि होने के कारण वह प्रेमस्वरूप है, अतः वैर भावना से रहित है, वह कालातीत ब्रह्म-मूर्ति सदा अमर है, जन्म-मरण से रहित है, स्वयंभू अर्थात् स्वयं ही प्रकाशमान हुआ है, उसे गुरु-कृपा से ही पाया जा सकता है।

सलोकु ॥ साजन तेरे चरन की होइ रहा सद धूरि ॥ नानक सरणि तुहारीआ पेखउ सदा हजूरि ॥ १ ॥ सबद ॥ पिछहु राती सदड़ा नामु खसम का लेहि ॥ खेमे छत्र सराइचे दिसनि रथ पीड़े ॥ जिनी तेरा नामु धिआइआ तिन कउ सदि मिले ॥ १ ॥ बाबा मै करमहीण कूड़िआर ॥ नामु न पाइआ तेरा अंधा भरमि भूला मनु मेरा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ साद कीते दुख परफुड़े पूरबि लिखे माइ ॥ सुख थोड़े दुख अगले दूखे दूखि विहाइ ॥ २ ॥ विछुड़िआ का किआ वीछुड़ै मिलिआ का किआ मेलु ॥ साहिबु सो सालाहीऐ जिनि करि देखिआ खेलु ॥ ३ ॥ संजोगी मेलावड़ा इनि तनि कीते भोग ॥ विजोगी मिलि विछुड़े नानक भी संजोग ॥ ४ ॥ १ ॥

श्लोक॥ हे ईश्वर ! मैं सर्वदा तेरे चरणों की धूल बना रहूँ। गुरु नानक कहते हैं कि मैं तेरी शरण में सदा तुझे प्रत्यक्ष देखता रहूँ॥ १॥ शब्द॥ जिन लोगों को रात्रि के पिछले प्रहर ब्रह्ममुहूर्त में आह्वान होता है, वही परमात्मा का नाम स्मरण करते हैं। उनके लिए छत्र, खेमें, कनातें एवं सुसज्जित रथ हर वक्त तैयार रहते हैं अर्थात् उन्हें ही यश मिलता है। हे परमेश्वर ! जिन्होंने तेरे नाम का चिंतन किया है, उन्हें बुलाकर तू स्वयं ही दे देता है भाव उनकी मनोकामनाएं पूरी हो जाती हैं॥ १॥ हे बाबा ! मैं भाग्यहीन एवं झूठा हूँ। मैंने तेरा नाम प्राप्त नहीं किया, मेरा अंधा मन भ्रम में ही भटकता रहा॥ १॥ रहाउ॥ हे माँ ! पूर्व जन्म में किए कर्मानुसार मैंने जितने भी माया के स्वाद भोगे हैं, मेरे दुखों में उतनी ही वृद्धि हो गई। मेरी किस्मत में सुख थोड़े हैं, परन्तु दुख अधिक हैं, मेरा जीवन दुखों में ही व्यतीत हो गया है॥ २॥ जो परमात्मा से बिछुड़े हुए हैं, उनके लिए अन्य कौन-सा वियोग इससे अधिक दुखदायक है ? जो उससे मिले हुए हैं, उनके लिए अन्य कौन-सा मिलाप शेष रह गया है ? सो उस परमेश्वर की स्तुति करो, जिसने यह जगत् रूपी खेल रचकर इसकी देखभाल की है॥ ३॥ संयोग से जीवों का मिलाप हुआ है परन्तु इन्होंने सांसारिक पदार्थों का ही भोग किया। अब मिलन के पश्चात् वियोग से उससे बिछुड़ गए हैं, उनका फिर संयोग हो सकता है॥ ४॥ १॥

मारू महला १ ॥ मिलि मात पिता पिंडु कमाइआ ॥ तिनि करतै लेखु लिखाइआ ॥ लिखु दाति जोति वडिआई ॥ मिलि माइआ सुरति गवाई ॥ १ ॥ मूरख मन काहे करसहि माणा ॥ उठि चलणा खसमै भाणा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ तजि साद सहज सुखु होई ॥ घर छडणे रहै न कोई ॥ किछु खाजै किछु धरि जाईऐ ॥ जे बाहुड़ि दुनीआ आईऐ ॥ २ ॥ सजु काइआ पटु हढाए ॥ फुरमाइसि बहुतु चलाए ॥

करि सेज सुखाली सोवै ॥ हथी पउदी काहे रोवै ॥ ३ ॥ घर घुंमणवाणी भाई ॥ पाप पथर तरणु न जाई ॥ भउ बेड़ा जीउ चड़ाऊ ॥ कहु नानक देवै काहू ॥ ४ ॥ २ ॥

माता-पिता के संयोग से शरीर बना तो परमेश्वर ने उसमें भाग्य लिख दिया। भाग्यलेख एवं प्राणों की देन ईश्वर का बड़प्पन था। परन्तु माया में लीन होकर सारी सुधबुध ही गंवा दी॥ १॥ अरे मूर्ख मन ! तू क्योंकर अभिमान करता है ? चूंकि परमात्मा की इच्छानुसार एक न एक दिन जगत् में से चले जाना है॥ १॥ रहाउ॥ स्वादों को छोड़ने से ही सहज सुख प्राप्त होता है। कोई भी जीव सदा के लिए नहीं रहता अपितु यह शरीर रूपी घर छोड़ना ही पड़ता है। यदि पुनः दुनिया में आना हो तो मनुष्य को अपना कुछ धन (शुभ कर्म) खर्च कर लेना चाहिए और कुछ संभाल कर यहाँ ही रखना चाहिए॥ २॥ मनुष्य अपने जीवन में शरीर को सुन्दर बनाकर रेशमी कपड़े धारण करता है और दूसरों पर हुक्म बहुत चलाता रहता है। वह सुखदायक सेज बनाकर उस पर सोता है। जब उसके प्राण यमदूतों के हाथों में आ जाते हैं, तब क्यों रोता है॥ ३॥ घर के झंझट तो भँवर के समान हैं। अरे भाई ! पाप रूपी पत्थरों से भरी हुई नैया द्वारा संसार-सागर से पार नहीं हुआ जाता। श्रद्धा-भक्ति रूपी नैया से ही जीव भवसागर से पार होता है। हे नानक ! यह श्रद्धा-भक्ति रूपी नैया परमेश्वर किसी विरले को ही प्रदान करता है॥ ४॥ २॥

मारू महला १ घरु १ ॥ करणी कागदु मनु मसवाणी बुरा भला दुइ लेख पए ॥ जिउ जिउ किरतु चलाए तिउ चलीऐ तउ गुण नाही अंतु हरे ॥ १ ॥ चित चेतसि की नही बावरिआ ॥ हरि बिसरत तेरे गुण गलिआ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जाली रैनि जालु दिनु हूआ जेती घड़ी फाही तेती ॥ रसि रसि चोग चुगहि नित फासहि छूटसि मूड़े कवन गुणी ॥ २ ॥ काइआ आरणु मनु विचि लोहा पंच अगनि तितु लागि रही ॥ कोइले पाप पड़े तिसु ऊपरि मनु जलिआ संन्ही चिंत भई ॥ ३ ॥ भइआ मनूरु कंचनु फिरि होवै जे गुरु मिलै तिनेहा ॥ एकु नामु अंम्रितु ओहु देवै तउ नानक त्रिसटसि देहा ॥ ४ ॥ ३ ॥

आचरण कागज एवं मन स्याही की दवात है और बुरा-भला दो प्रकार के कर्म तकदीर में लिखे पड़े हैं। हे परमेश्वर ! तेरे गुणों का तो कोई अन्त नहीं है, जैसे-जैसे कर्म करवाता है, वैसे ही चलना पड़ता है॥ १॥ हे बावले जीव ! मन में परमात्मा को याद क्यों नहीं करता ? भगवान को विस्मृत करने से तेरे गुण क्षीण हो जाते हैं॥ १॥ रहाउ॥ तुझे फँसाने के लिए रात्रि जाली और दिन जाल बना हुआ है, जितनी घड़ियाँ हैं, उतनी ही मुसीबतें हैं। तू नित्य स्वाद ले लेकर विषय-विकार रूपी दाना चुगता रहता है और फँसता जा रहा है। अरे मूर्ख ! किस गुण से भला तेरा छुटकारा हो सकता है ?॥ २॥ शरीर एक भट्ठी बना हुआ है, जिसमें मन लोहे के समान है और काम, क्रोध, मोह, लोभ एवं अहंकार रूपी पंचाग्नि इसे जला रही है। पाप रूपी कोयले इसके ऊपर पड़े हुए हैं, यह तन जल रहा है और तेरी चिंता छोटी चिमटी बनी हुई है॥ ३॥ यदि गुरु मिल जाए तो लोहा रूपी मन स्वर्ण हो सकता है। हे नानक ! यदि वह तुझे नामामृत प्रदान कर दे तो तेरे शरीर में रहने वाला मन स्थिर हो सकता है॥ ४॥ ३॥

मारू महला १ ॥ बिमल मझारि बससि निरमल जल पदमनि जावल रे ॥ पदमनि जावल जल रस संगति संगि दोख नही रे ॥ १ ॥ दादर तू कबहि न जानसि रे ॥ भखसि सिबालु बससि निरमल जल अंम्रितु न लखसि रे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ बसु जल नित न वसत अलीअल मेर चचा गुन रे ॥ चंद कुमुदनी दूरहु निवससि अनभउ कारनि रे ॥ २ ॥ अंम्रित खंडु दूधि मधु संचसि तू बन चातुर रे ॥ अपना आपु तू कबहु न छोडसि पिसन प्रीति जिउ रे ॥ ३ ॥ पंडित संगि वसहि जन मूरख आगम सास सुने

॥ अपना आपु तू कबहु न छोडसि सुआन पूछि जिउ रे ॥ ४ ॥ इकि पाखंडी नामि न राचहि इकि हरि हरि चरणी रे ॥ पूरबि लिखिआ पावसि नानक रसना नामु जपि रे ॥ ५ ॥ ४ ॥

कमल का फूल एवं पानी का मलिन जाला यह दोनों ही सरोवर के निर्मल जल में रहते हैं। कमल का फूल पानी के मलिन जाले एवं अमृतमयी जल इन दोनों की संगत में रहता है परन्तु उसे उनकी संगत करने से कोई दोष नहीं लगता॥ १॥ हे मेंढक ! तू कभी नहीं समझता। तू निर्मल जल में रहता है परन्तु पानी के मलिन जाले को खाता रहता है, तू अमृत रूपी जल के महत्व को नहीं जानता॥ १॥ रहाउ॥ चाहे तू नित्य ही जल में रहता है। भँवरा जल में नहीं रहता परन्तु वह फूल का रस ऊपर से ही चूसता रहता है। अपने मन के ज्ञान के कारण कुमुदिनी चाँद को दूर से देखकर ही अपना शीश झुका देती है॥ २॥ हे मेंढक ! तू बुद्धिमान बन जा, तुझे ज्ञान नहीं कि चीनी, दूध एवं शहद से मधुर अमृतमयी रस पदार्थ बन जाते हैं। जैसे जोंक थन से चिपक कर दुग्ध की बजाय रक्त चूषण करती है, वैसे ही तू भी कीचड़ की गंदगी खाने का अपना स्वभाव कभी नहीं छोड़ता॥ ३॥ जैसे मूर्ख आदमी विद्वान पण्डितों से वेद-शास्त्र सुनता रहता है, परन्तु शिक्षा को ग्रहण न करने के कारण फिर भी वह ज्ञानहीन ही बना रहता है, जैसे कुत्ते की दुम सदा टेढ़ी ही रहती है, वैसे ही तू भी अपना स्वभाव नहीं छोड़ता॥ ४॥ पाखण्डी लोग परमात्मा का नाम नहीं जपते किन्तु भक्तजन भगवान के चरणों में ही रत रहते हैं। हे नानक ! प्रत्येक जीव पूर्व जन्म में किए कर्मों का फल प्राप्त करता है, अतः अपनी जीभ से हरि-नाम का जाप करते रहो॥ ५॥ ४॥

मारू महला १ ॥ सलोकु ॥ पतित पुनीत असंख होहि हरि चरनी मनु लाग ॥ अठसठि तीरथ नामु प्रभ नानक जिसु मसतकि भाग ॥ १ ॥ सबदु ॥ सखी सहेली गरबि गहेली ॥ सुणि सह की इक बात सुहेली ॥ १ ॥ जो मै बेदन सा किसु आखा माई ॥ हरि बिनु जीउ न रहै कैसे राखा माई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ हउ दोहागणि खरी रंञाणी ॥ गइआ सु जोबनु धन पछुताणी ॥ २ ॥ तू दाना साहिबु सिरि मेरा ॥ खिजमति करी जनु बंदा तेरा ॥ ३ ॥ भणति नानकु अंदेसा एही ॥ बिनु दरसन कैसे रवउ सनेही ॥ ४ ॥ ५ ॥

श्लोक॥ भगवान के चरणों में मन लगाने से असंख्य पापी जीव पावन हो गए हैं। हे नानक ! प्रभु का नाम अड़सठ तीर्थ के (पुण्य-फल के) समान है, जिसका उत्तम भाग्य है, उसे ही यह मिला है॥ १॥ शब्द॥ हे अभिमानी सखी ! मालिक की सुखदायक बात सुन॥ १॥ हे माँ ! अपने मन की वेदना मैं किसे कहकर सुनाऊँ ? हरि के बिना मैं रह नहीं सकती, फिर इन प्राणों को कैसे बचाऊँ ?॥ १॥ रहाउ॥ मैं दुहागिन बहुत ही दुखी हूँ। जब जीव रूपी नारी का यौवन बीत गया तो उसे बड़ा पछतावा हुआ॥ २॥ हे परमेश्वर ! तू मेरा चतुर मालिक है, मैं तेरा सेवक हूँ, इसलिए तेरी ही खिदमत करता हूँ॥ ३॥ नानक कहते हैं कि मुझे एक यही चिंता है कि प्रभु-दर्शन के बिना कैसे आनंद प्राप्त करूँ॥ ४॥ ५॥

मारू महला १ ॥ मुल खरीदी लाला गोला मेरा नाउ सभागा ॥ गुर की बचनी हाटि बिकाना जितु लाइआ तितु लागा ॥ १ ॥ तेरे लाले किआ चतुराई ॥ साहिब का हुकमु न करणा जाई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ मा लाली पिउ लाला मेरा हउ लाले का जाइआ ॥ लाली नाचै लाला गावै भगति करउ तेरी राइआ ॥ २ ॥ पीअहि त पाणी आणी मीरा खाहि त पीसण जाउ ॥ पखा फेरी पैर मलोवा जपत रहा तेरा नाउ ॥ ३ ॥ लूण हरामी नानकु लाला बखसिहि तुधु वडिआई ॥ आदि जुगादि दइआपति दाता तुधु विणु मुकति न पाई ॥ ४ ॥ ६ ॥

मैं मूल्य पर खरीदा हुआ मालिक का सेवक गुलाम हूँ और मेरा नाम भाग्यवान् पड़ गया है। मैं गुरु के वचन से दुकान पर बिका हुआ हूँ, जिधर मुझे लगाया है, मैं उधर ही लगा हूँ॥ १॥ तेरे सेवक को कोई चतुराई नहीं आती, मुझसे मालिक के हुक्म का पालन भी अच्छी तरह नहीं होता॥ १॥ रहाउ॥ मेरी माता तेरी दासी है, मेरा पिता भी तेरा दास है और उन दासों की मैं औलाद हूँ। हे मेरे मालिक ! दास-दासी बनकर मेरे माता-पिता तेरी भक्ति में नाचते गाते रहे और अब मैं भी तेरी ही भक्ति करता हूँ॥ २॥ हे स्वामी ! यदि तुझे प्यास लगी हो तो मैं तेरे पीने के लिए पानी लेकर आऊँ। अगर कुछ खाना हो तो तेरे लिए दाने पीसने के लिए जाऊँ। मैं तुझे पंखा करता रहूँ, तेरे पैर मलता रहूँ और तेरा ही नाम जपता रहूँ॥ ३॥ नानक कहते हैं कि हे मालिक ! इसके बावजूद भी मैं तेरा एहसान-फरामोश सेवक हूँ, यदि तू क्षमादान कर दे तो यह तेरा बड़प्पन है। युगों-युगान्तरों से केवल तू ही दयालु दाता है, तेरे बिना मुक्ति नहीं मिल सकती॥ ४॥ ६॥

मारू महला १ ॥ कोई आखै भूतना को कहै बेताला ॥ कोई आखै आदमी नानकु वेचारा ॥ १ ॥ भइआ दिवाना साह का नानकु बउराना ॥ हउ हरि बिनु अवरु न जाना ॥ १ ॥ रहाउ ॥ तउ देवाना जाणीऐ जा भै देवाना होइ ॥ एकी साहिब बाहरा दूजा अवरु न जाणै कोइ ॥ २ ॥ तउ देवाना जाणीऐ जा एका कार कमाइ ॥ हुकमु पछाणै खसम का दूजी अवर सिआणप काइ ॥ ३ ॥ तउ देवाना जाणीऐ जा साहिब धरे पिआरु ॥ मंदा जाणै आप कउ अवरु भला संसारु ॥ ४ ॥ ७ ॥

कोई भूत कहता है, तो कोई मुझे बेताल कह देता है और कोई कहता है कि यह आदमी तो बेचारा नानक ही है॥ १॥ परन्तु सत्य तो यह है कि बावला नानक तो अपने मालिक का दीवाना हो गया है। मैं तो ईश्वर के अलावा अन्य किसी को नहीं जानता॥ १॥ रहाउ॥ वास्तव में उसे ही दीवाना समझना चाहिए, जो परमात्मा की भक्ति-भय में दीवाना हो जाए। वह परमेश्वर के अतिरिक्त किसी अन्य को न जाने॥ २॥ दीवाना तो उसे ही समझो, जो एक ही काम (प्रभु-भक्ति) करता हो। अपने मालिक के हुक्म को पहचानता हो, अन्य कोई चतुराई न करता हो॥ ३॥ किसी को तभी दीवाना समझना चाहिए, जो मालिक का प्रेम हृदय में धारण करे। वह खुद को बुरा समझता हो और संसार को भला मानता हो॥ ४॥ ७॥

मारू महला १ ॥ इहु धनु सरब रहिआ भरपूरि ॥ मनमुख फिरहि सि जाणहि दूरि ॥ १ ॥ सो धनु वखरु नामु रिदै हमारै ॥ जिसु तू देहि तिसै निसतारै ॥ १ ॥ रहाउ ॥ न इहु धनु जलै न तसकरु लै जाइ ॥ न इहु धनु डूबै न इसु धन कउ मिलै सजाइ ॥ २ ॥ इसु धन की देखहु वडिआई ॥ सहजे माते अनदिनु जाई ॥ ३ ॥ इक बात अनूप सुनहु नर भाई ॥ इसु धन बिनु कहहु किनै परम गति पाई ॥ ४ ॥ भणति नानकु अकथ की कथा सुणाए ॥ सतिगुरु मिलै त इहु धनु पाए ॥ ५ ॥ ८ ॥

यह नाम रूपी धन सर्वव्यापी है परन्तु स्वेच्छाचारी जीव स्थान-स्थान भटकते हुए इसे दूर समझते हैं॥ १॥ नाम रूपी धन पदार्थ हमारे हृदय में ही मौजूद है। हे ईश्वर ! यह धन जिसे तू देता है, उसका उद्धार हो जाता है॥ १॥ रहाउ॥ यह धन न तो अग्नि में जलता है और न ही चोर इसे चुरा कर ले जा सकते हैं। न यह धन पानी में डूबता है और न ही इस धन वाले को कोई दण्ड मिलता है॥ २॥ इस नाम-धन की कीर्ति देखो; इसके धनी का दिन-रात सहज ही मस्ती में व्यतीत हो जाता है॥ ३॥ हे जिज्ञासुओ, एक अनूप बात सुनो; इस धन के बिना किसने परमगति प्राप्त की है॥ ४॥ नानक अकथनीय परमेश्वर की कथा सुनाते हुए कहते हैं कि जिसे सतगुरु मिल जाता है, उसे यह धन प्राप्त हो जाता है॥ ५॥ ८॥

मारू महला १ ॥ सूर सरु सोसि लै सोम सरु पोखि लै जुगति करि मरतु सु सनबंधु कीजै ॥ मीन की चपल सिउ जुगति मनु राखीऐ उडै नह हंसु नह कंधु छीजै ॥ १ ॥ मूड़े काइचे भरमि भुला ॥ नह चीनिआ परमानंदु बैरागी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ अजर गहु जारि लै अमर गहु मारि लै भ्राति तजि छोडि तउ अपिउ पीजै ॥ मीन की चपल सिउ जुगति मनु राखीऐ उडै नह हंसु नह कंधु छीजै ॥ २ ॥ भणति नानकु जनो रवै जे हरि मनो मन पवन सिउ अंम्रितु पीजै ॥ मीन की चपल सिउ जुगति मनु राखीऐ उडै नह हंसु नह कंधु छीजै ॥ ३ ॥ ६ ॥

पिंगला नाड़ी को रेचक क्रिया द्वारा सुखा लो, इड़ा नाड़ी को पूरक क्रिया द्वारा प्राणवायु से भर लो। प्राणायाम की यह युक्ति उपयोग करके सुषुम्ना नाड़ी से संबंध जोड़ लो। चंचल मछली सरीखी ऐसी युक्ति से यदि मन को स्थिर करके रखा जाए तो फिर यह आत्मा भटकती नहीं और न ही यह शरीर रूपी दीवार ध्वस्त होती है॥ १॥ अरे मूर्ख ! क्यों भ्रम में भटक रहा है ? तूने परमानंद निर्लिप्त परमेश्वर की पहचान नहीं की॥ १॥ रहाउ॥ अजर कामादिक विकारों को जला दो, मोह-माया को समाप्त कर दो, भ्रांतियों को छोड़कर नामामृत पान करो। चंचल मछली सरीखी ऐसी युक्ति से यदि मन को नियंत्रण में किया जाए तो आवागमन छूट जाता है, आत्मा न ही भटकती है और न ही शरीर रूपी दीवार ध्वस्त होती है॥ २॥ नानक विनय करते हैं कि हे भक्तजनो, एकाग्रचित होकर प्रभु का सिमरन करो और हरिनामामृत का पान करना। इस प्रकार चंचल मछली सरीखी ऐसी युक्ति से मन को नियंत्रण में किया जाए तो आत्मा भटकती नहीं और न ही शरीर रूपी दीवार ध्वस्त होती है॥ ३॥ ६॥

मारू महला १ ॥ माइआ मुई न मनु मुआ सरु लहरी मै मतु ॥ बोहिथु जल सिरि तरि टिकै साचा वखरु जितु ॥ माणकु मन महि मनु मारसी सचि न लागै कतु ॥ राजा तखति टिकै गुणी भै पंचाइण रतु ॥ १ ॥ बाबा साचा साहिबु दूरि न देखु ॥ सरब जोति जगजीवना सिरि सिरि साचा लेखु ॥ १ ॥ रहाउ ॥ ब्रहमा बिसनु रिखी मुनी संकरु इंदु तपै भेखारी ॥ मानै हुकमु सोहै दरि साचै आकी मरहि अफारी ॥ जंगम जोध जती संनिआसी गुरि पूरै वीचारी ॥ बिनु सेवा फलु कबहु न पावसि सेवा करणी सारी ॥ २ ॥ निधनिआ धनु निगुरिआ गुरु निंमाणिआ तू माणु ॥ अंधुलै माणकु गुरु पकड़िआ निताणिआ तू ताणु ॥ होम जपा नही जाणिआ गुरमती साचु पछाणु ॥ नाम बिना नाही दरि ढोई झूठा आवण जाणु ॥ ३ ॥ साचा नामु सलाहीऐ साचे ते त्रिपति होइ ॥ गिआन रतनि मनु माजीऐ बहुड़ि न मैला होइ ॥ जब लगु साहिबु मनि वसै तब लगु बिघनु न होइ ॥ नानक सिरु दे छुटीऐ मनि तनि साचा सोइ ॥ ४ ॥ १० ॥

न माया का लोभ समाप्त हुआ, न मन की लालसा का अन्त हुआ। हृदय रूपी सरोवर माया-मोह रूपी जल-तरंगों से भरपूर रहता है और यह मन माया के मोह रूपी नशे में मस्त बना रहता है। जिस चित में सत्य-नाम रूपी सौदा भरा हुआ है, वह चित रूपी जहाज हृदय रूपी सरोवर के जल में पहुँच कर प्रभु-चरणों में टिक जाता है। जिस मन में नाम रूपी माणिक्य होता है, वह मन को वशीभूत कर लेता है, परन्तु सत्य में लीन पावन मन को कोई दोष नहीं लगता। शुभ गुणों वाला मन रूपी राजा स्थिर होकर सिंहासन पर विराजमान हो जाता है और सत्य के भय में तल्लीन रहता है॥ १॥ हे बाबा ! सच्चे परमेश्वर को दूर मत समझो; चूंकि सब जीवों में जग के जीवन ईश्वर की ही ज्योति विद्यमान है और सबके माथे पर [illegible] तकदीर का सच्चा आलेख लिख दिया है॥ १॥ रहाउ॥ ब्रह्मा, विष्णु, ऋषि-मुनि, शिवशंकर, देवराज इन्द्र, तपस्वी एवं

फकीर—जो भी परमात्मा के हुक्म का पालन करता है, वही सच्चे दरबार में शोभा का पात्र बनता है किन्तु घमण्डी विमुख जीव आवागमन में पड़े रहते हैं। पूर्ण गुरु ने यही विचार किया है कि जंगम साधु, योद्धा, ब्रह्मचारी, संन्यासी इत्यादि कोई भी सेवा बिना कभी फल प्राप्त नहीं करता, इसलिए सेवा ही उत्तम कर्म है॥ २॥ हे ईश्वर ! तू ही निर्धनों का धन, निगुरों का गुरु एवं मानहीनों का मान है। तू ही बलहीनों का बल है, मुझ अन्धे (ज्ञानहीन) ने माणिक्य रूपी गुरु का आँचल पकड़ लिया है। मैंने होम, जप-तप को समझा ही नहीं परन्तु गुरु मतानुसार सत्य को पहचान लिया है। परमात्मा के नाम बिना किसी को भी उसके द्वार पर सहारा नहीं मिलता, झूठा आदमी केवल जन्म-मरण में ही पड़ा रहता है॥ ३॥ सच्चे नाम की प्रशंसा करो, चूंकि सत्य से ही मन की तृप्ति होती है। ज्ञान-रत्न से मन को स्वच्छ करने से वह दोबारा मलिन नहीं होता। जब तक मन में भगवान बसता रहता है, तब तक कोई विघ्न उत्पन्न नहीं होता। हे नानक ! जिसके मन-तन में सत्य ही बसा हुआ है, वह सबकुछ न्यौछावर करके मोक्ष हासिल कर लेता है॥ ४॥ १०॥

मारू महला १ ॥ जोगी जुगति नामु निरमाइलु ता कै मैलु न राती ॥ प्रीतम नाथु सदा सचु संगे जनम मरण गति बीती ॥ १ ॥ गुसाई तेरा कहा नामु कैसे जाती ॥ जा तउ भीतरि महलि बुलावहि पूछउ बात निरंती ॥ १ ॥ रहाउ ॥ ब्रहमणु ब्रहम गिआन इसनानी हरि गुण पूजे पाती ॥ एको नामु एकु नाराइणु त्रिभवण एका जोती ॥ २ ॥ जिहवा डंडी इहु घटु छाबा तोलउ नामु अजाची ॥ एको हाटु साहु सभना सिरि वणजारे इक भाती ॥ ३ ॥ दोवै सिरे सतिगुरू निबेड़े सो बूझै जिसु एक लिव लागी जीअहु रहै निभराती ॥ सबदु वसाए भरमु चुकाए सदा सेवकु दिनु राती ॥ ४ ॥ ऊपरि गगनु गगन परि गोरखु ता का अगमु गुरू पुनि वासी ॥ गुर बचनी बाहरि घरि एको नानकु भइआ उदासी ॥ ५ ॥ ११ ॥

जिस योगी की योग-युक्ति परमात्मा का निर्मल नाम है, उसके मन में अहम् रूपी मैल किंचित मात्र भी नहीं रहती। सदैव सत्य प्रियतम-प्रभु जिसके अंग-संग है, उसकी जन्म-मरण की गति मिट गई है॥ १॥ हे मालिक ! तेरा नाम कैसा है, उसकी कैसे पहचान होती है, यदि तू मुझे दसम द्वार रूपी महल में बुला ले तो तुझसे मिलन की बात पूछ लूँ॥ १॥ रहाउ॥ सच्चा ब्राह्मण वही है, जो ब्रह्म-ज्ञान रूपी तीर्थ में स्नान करता है और हरि गुणगान रूपी पुष्पों से पूजा-अर्चना करता है। परमात्मा एक है, एक उसके ही नाम का अस्तित्व है और तीनों लोकों में उसकी ही ज्योति का प्रसार है॥ २॥ यह जिह्वा तराजू की डण्डी है, यह हृदय तराजू का तुला है, इसमें अतुल नाम को तोलो अर्थात् हृदय में भगवान का भजन करो। एक परमेश्वर सबका मालिक है, जिसका संसार रूपी हाट है, सब एक भाँति के जीव नाम के व्यापारी हैं॥ ३॥ लोक-परलोक दोनों स्थानों में सतगुरु ही जीवों के कर्मों का निपटारा करता है, इस तथ्य को वही बूझता है, जो भ्राँतियों से रहित होकर एक ईश्वर में ध्यान लगाता है। वह शब्द को मन में बसा लेता है, भ्रम को मिटाकर दिन-रात भगवान की भक्ति में लीन रहता है॥ ४ ॥ धरती के ऊपर गगन मण्डल है, उस गगन पर ईश्वर रहता है, परन्तु वह स्थान अगम्य है और गुरु पुनः जीवों को उस स्थान का वासी बना देता है। हे नानक ! गुरु के वचन से यह ज्ञान हो जाता है कि शरीर रूपी घर एवं बाहर जगत् में परमात्मा ही मौजूद है, इस ज्ञान से जीव निर्लिप्त हो जाता है॥ ५॥ ११॥

रागु मारू महला १ घरु ५ १ओं सतिगुर प्रसादि ॥

अहिनिसि जागै नीद न सोवै ॥ सो जाणै जिसु वेदन होवै ॥ प्रेम के कान लगे तन भीतरि वैदु कि जाणै कारी जीउ ॥ १ ॥ जिस नो साचा सिफती लाए ॥ गुरमुखि विरले किसै बुझाए ॥ अंम्रित की सार सोई जाणै जि अंम्रित का वापारी जीउ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ पिर सेती धन प्रेमु रचाए ॥ गुर कै सबदि

तथा चितु लाए ॥ सहज सेती धन खरी सुहेली त्रिसना तिखा निवारी जीउ ॥ २ ॥ सहसा तोड़े भरमु चुकाए ॥ सहजे सिफती धणखु चड़ाए ॥ गुर कै सबदि मरै मनु मारे सुंदरि जोगाधारी जीउ ॥ ३ ॥ हउमै जलिआ मनहु विसारे ॥ जम पुरि वजहि खड़ग करारे ॥ अब कै कहिऐ नामु न मिलई तू सहु जीअड़े भारी जीउ ॥ ४ ॥ माइआ ममता पवहि ख़िआली ॥ जम पुरि फासहिगा जम जाली ॥ हेत के बंधन तोड़ि न साकहि ता जमु करे खुआरी जीउ ॥ ५ ॥ ना हउ करता ना मै कीआ ॥ अंम्रितु नामु सतिगुरि दीआ ॥ जिसु तू देहि तिसै किआ चारा नानक सरणि तुमारी जीउ ॥ ६ ॥ १ ॥ १२ ॥

जिसके तन में प्रेम के तीर लगे हों, उसका उपचार वैद्य क्या कर सकता है ? वह रात-दिन जागता रहता है, उसे नींद नहीं आती। जिसे प्रेम-वेदना होती है, वही जानता है॥ १॥ परमात्मा जिसे स्तुतिगान में लगाता है, किसी विरले गुरुमुख को ही इस तथ्य की सूझ प्रदान करता है। जो अमृत का व्यापारी होता है, वही अमृत का महत्व समझता है॥ १॥ रहाउ॥ जैसे पत्नी अपने पति से प्रेम करती है, वैसे ही अगर गुरु के शब्द द्वारा प्रभु में चित लगाया जाए तो जीव रूपी नारी सहज ही सुखी हो जाती है और उसकी तृष्णा की प्यास बुझ जाती है॥ २॥ जीव रूपी नारी अपने संशय एवं भ्रम को मिटा देती है और सहज ही परमात्मा की स्तुति का तीर हृदय-रूपी धनुष पर चढ़ाती है। वह गुरु के शब्द द्वारा मन को मारकर अहंकार को समाप्त कर देती है, इस प्रकार वह सुन्दर प्रभु को पा लेती है॥ ३॥ अहंकार की अग्नि में जलकर जो व्यक्ति मन से परमात्मा को भुला देता है, वह यमपुरी में खड्ग के भीष्ण दण्ड का पात्र बनता है। हे जीव ! अब हरि-नाम माँगने से भी नहीं मिलेगा, तुझे भारी दण्ड भोगना पड़ेगा॥ ४॥ जो मोह-माया की ममता के ख्यालों में प्रवृत्त रहेगा, वह यमपुरी में यम जाल में फँस जाएगा। जो मोह-माया के बन्धन तोड़ नहीं सकता, उसे यम ख्वार करता है॥ ५॥ न मैं अब कुछ करता हूँ और न ही पहले कुछ किया है। यह नामामृत सतगुरु ने कृपा करके मुझे प्रदान किया है। नानक विनती करते हैं कि हे ईश्वर ! जिसे तू देता है, उसे अन्य प्रयास करने की कोई आवश्यकता नहीं, इसलिए मैं तेरी ही शरण में आया हूँ॥ ६॥ १॥ १२॥

मारू महला ३ घरु १ १ओं सतिगुर प्रसादि ॥

जह बैसालहि तह बैसा सुआमी जह भेजहि तह जावा ॥ सभ नगरी महि एको राजा सभे पवितु हहि थावा ॥ १ ॥ बाबा देहि वसा सच गावा ॥ जा ते सहजे सहजि समावा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ बुरा भला किछु आपस ते जानिआ एई सगल विकारा ॥ इहु फुरमाइआ खसम का होआ वरतै इहु संसारा ॥ २ ॥ इंद्री धातु सबल कहीअत है इंद्री किस ते होई ॥ आपे खेल करै सभि करता ऐसा बूझै कोई ॥ ३ ॥ गुर परसादी एक लिव लागी दुबिधा तदे बिनासी ॥ जो तिसु भाणा सो सति करि मानिआ काटी जम की फासी ॥ ४ ॥ भणति नानकु लेखा मागै कवना जा चूका मनि अभिमाना ॥ तासु तासु धरम राइ जपतु है पए सचे की सरना ॥ ५ ॥ १ ॥

हे स्वामी ! तू जहाँ मुझे बिठाता है, मैं वहीं बैठता हूँ और जहाँ भेजता है, वहीं जाता हूँ। यह विश्व रूपी समूची नगरी का एक तू ही सम्राट है और सब स्थान पावन हैं॥ १॥ हे बाबा ! मुझे ऐसी सुसंगति में बसा दीजिए, जहाँ सत्य का स्तुतिगान करता रहूँ, जिससे मैं सहज ही समा जाऊँ॥ १॥ रहाउ॥ बुरा-भला जो कुछ कर्म होता है, उसका कर्ता मैं खुद को मानता हूँ, यह अहम् ही सारे पापों का कारण है। परमात्मा के हुक्म से ही सारे संसार में सबकुछ हो रहा है॥ २॥ इस काम-इन्द्रिय रूपी विकार को बहुत प्रबल कहा जाता है परन्तु यह इन्द्रिय किससे उत्पन्न हुई है ?

परमेश्वर स्वयं ही सारी लीला करता है, परन्तु इस तथ्य को कोई विरला ही बूझता है॥ ३॥ गुरु की कृपा से जब परमेश्वर में लगन लग गई तो दुविधा का नाश हो गया। जो परमात्मा को मंजूर है, उसे ही सत्य मान लिया है, जिससे यम की फाँसी कट गई है॥ ४॥ नानक कहते हैं कि जब मन का अभिमान ही चूक गया तो कर्मों का लेखा-जोखा कौन माँग सकता है। जब सच्चे परमेश्वर की शरण में पड़ें तो यमराज भी डरता हुआ जाप करने लग गया॥ ५॥ १॥

मारू महला ३ ॥ आवण जाणा ना थीऐ निज घरि वासा होइ ॥ सचु खजाना बखसिआ आपे जाणै सोइ ॥ १ ॥ ए मन हरि जीउ चेति तू मनहु तजि विकार ॥ गुर कै सबदि धिआइ तू सचि लगी पिआरु ॥ १ ॥ रहाउ ॥ ऐथै नावहु भुलिआ फिरि हथु किथाऊ न पाइ ॥ जोनी सभि भवाईअनि बिसटा माहि समाइ ॥ २ ॥ वडभागी गुरु पाइआ पूरबि लिखिआ माइ ॥ अनदिनु सची भगति करि सचा लए मिलाइ ॥ ३ ॥ आपे स्रिसटि सभ साजीअनु आपे नदरि करेइ ॥ नानक नामि वडिआईआ जै भावै तै देइ ॥ ४ ॥ २ ॥

जिस जीव का अपने सच्चे घर में निवास हो जाता है, उसका आवागमन ही मिट जाता है। जिसे ईश्वर ने सत्य का कोष प्रदान किया है, वह स्वयं ही इस रहस्य को जानता है॥ १॥ हे मन! तू विकारों को तज कर परमात्मा को याद कर; सत्य से प्रेम एवं आस्था रखकर तू गुरु के शब्द द्वारा ध्यान कर॥ १॥ रहाउ॥ यदि मानव-जन्म में हरि-नाम को भुला दिया तो फिर कहीं भी प्राप्त नहीं होगा। सब योनियों में तू भटकता रहेगा और विष्ठा में ही नष्ट हो जाएगा॥ २॥ हे माँ! अहोभाग्य से गुरु प्राप्त हुआ है परन्तु पूर्व लिखे भाग्य से ही मिला है। रात-दिन भगवान् की भक्ति करता रहता हूँ, ताकि परम सत्य अपने साथ मिला ले॥ ३॥ ईश्वर ने स्वयं ही सृष्टि रचना की है और वह स्वयं ही कृपा-दृष्टि करता है। हे नानक! नाम में ही सारी बड़ाई है, यदि उसे मंजूर हो तो ही वह देता है॥ ४॥ २॥

मारू महला ३ ॥ पिछले गुनह बखसाइ जीउ अब तू मारगि पाइ ॥ हरि की चरणी लागि रहा विचहु आपु गवाइ ॥ १ ॥ मेरे मन गुरमुखि नामु हरि धिआइ ॥ सदा हरि चरणी लागि रहा इक मनि एकै भाइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ ना मै जाति न पति है ना मै थेहु न थाउ ॥ सबदि भेदि भ्रमु कटिआ गुरि नामु दीआ समझाइ ॥ २ ॥ इहु मनु लालच करदा फिरै लालचि लागा जाइ ॥ धंधै कूड़ि विआपिआ जम पुरि चोटा खाइ ॥ ३ ॥ नानक सभु किछु आपे आपि है दूजा नाही कोइ ॥ भगति खजाना बखसिओनु गुरमुखा सुखु होइ ॥ ४ ॥ ३ ॥

हे मानव! पिछले गुनाह क्षमा करवा कर अब तू सन्मार्ग लग जा। मन का अहम् दूर करके हरि-चरणों में रह॥ १॥ हे मेरे मन! गुरुमुख बनकर प्रभु का चिंतन करो, एकाग्रचित होकर सदा प्रभु-चरणों में लीन रहो॥ १॥ रहाउ॥ न मेरी कोई ऊँची जाति है, न कोई शोभा है और न ही कोई ठौर-ठिकाना है परन्तु गुरु ने मुझे नाम प्रदान करके समझा दिया है और शब्द से भेद कर सारा भ्रम काट दिया है॥ २॥ यह मन लालची है और लालच में ही इधर-उधर भटकता रहता है। यह दुनिया के झूठे धँधों में लीन रहकर यमपुरी में दण्ड भोगता है॥ ३॥ हे नानक! परमेश्वर स्वयं ही सबकुछ करने वाला है, उसके अलावा अन्य कोई समर्थ नहीं। वह अपनी भक्ति का खजाना गुरुमुखों को प्रदान करता है, जिससे वे सदैव सुखी रहते हैं॥ ४॥ ३॥

मारू महला ३ ॥ सचि रते से टोलि लहु से विरले संसारि ॥ तिन मिलिआ मुखु उजला जपि नामु मुरारि ॥ १ ॥ बाबा साचा साहिबु रिदै समालि ॥ सतिगुरु अपना पुछि देखु लेहु वखरु भालि ॥ १ ॥

रहाउ ॥ इकु सचा सभ सेवदी धुरि भागि मिलावा होइ ॥ गुरमुखि मिले से न विछुड़हि पावहि सचु सोइ ॥ २ ॥ इकि भगती सार न जाणनी मनमुख भरमि भुलाइ ॥ ओना विचि आपि वरतदा करणा किछू न जाइ ॥ ३ ॥ जिसु नालि जोरु न चलई खले कीचै अरदासि ॥ नानक गुरमुखि नामु मनि वसै ता सुणि करे साबासि ॥ ४ ॥ ४ ॥

निःसंदेह खोज कर देख लो, दुनिया में ऐसे विरले ही हैं, जो सत्य की स्मृति में लीन रहते हैं। उन्हें मिलकर भगवान् का नाम जपकर मुख उज्ज्वल हो जाता है॥ १॥ हे बाबा! सच्चे परमेश्वर को हृदय में स्मरण करो; अपने सतगुरु से पूछकर देख लो और सत्य नाम रूपी सौदा तलाश लो॥ १॥ रहाउ॥ चाहे सारी दुनिया एक ईश्वर की अर्चना करती है लेकिन भाग्य से ही उससे मिलाप होता है। गुरुमुख सत्य को पा लेते हैं और वे प्रभु से मिलकर कभी जुदा नहीं होते॥ २॥ कुछ व्यक्ति भक्ति का महत्व नहीं जानते, ऐसे स्वेच्छाचारी भ्रम में ही भटकते रहते हैं। परन्तु उन में परमेश्वर ही क्रियाशील है और उन बेचारों से स्वयं कुछ भी नहीं किया जा सकता॥ ३॥ जिसके समक्ष कोई बल नहीं चलता, उसके आगे प्रार्थना करनी चाहिए। हे नानक! जिन के मन में गुरु के माध्यम से नाम का निवास हो जाता है, ईश्वर उनकी प्रार्थना सुनकर उन्हें शाबाश देता है॥ ४॥ ४॥

मारू महला ३ ॥ मारू ते सीतलु करे मनूरहु कंचनु होइ ॥ सो साचा सालाहीऐ तिसु जेवडु अवरु न कोइ ॥ १ ॥ मेरे मन अनदिनु धिआइ हरि नाउ ॥ सतिगुर कै बचनि अराधि तू अनदिनु गुण गाउ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ गुरमुखि एको जाणीऐ जा सतिगुरु देइ बुझाइ ॥ सो सतिगुरु सालाहीऐ जिदू एह सोझी पाइ ॥ २ ॥ सतिगुरु छोडि दूजै लगे किआ करनि अगै जाइ ॥ जम पुरि बधे मारीअहि बहुती मिलै सजाइ ॥ ३ ॥ मेरा प्रभु वेपरवाहु है ना तिसु तिलु न तमाइ ॥ नानक तिसु सरणाई भजि पउ आपे बखसि मिलाइ ॥ ४ ॥ ५ ॥

जो उग्र मन को शीतल एवं लोहे को कंचन बना देता है, उस सच्चे परमेश्वर का स्तुतिगान करो, उस जैसा अन्य कोई समर्थ नहीं है॥ १॥ हे मेरे मन! नित्य हरि-नाम का मनन करो; सतगुरु के वचन द्वारा उसकी आराधना करो और हर वक्त उसके ही गुण गाओ॥ १॥ रहाउ॥ जब सतगुरु सूझ प्रदान कर देता है तो गुरुमुख एक परमात्मा को समझ लेता है। सो सतगुरु की प्रशंसा करो, जिससे यह सूझ प्राप्त होती है॥ २॥ जो सतगुरु को छोड़कर द्वैतभाव में संलग्न हो गए हैं, वे परलोक में क्या करेंगे? यमपुरी में बाँध कर उन्हें कठोर दण्ड मिलेगा॥ ३॥ मेरा प्रभु बेपरवाह है, जिसे तिल भर कोई लालच नहीं। हे नानक! उसकी शरण में आ जाओ, वह स्वयं ही क्षमा करके अपने साथ मिला लेगा॥ ४॥ ५॥

मारू महला ४ घरु २ ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

जपिओ नामु सुक जनक गुर बचनी हरि हरि सरणि परे ॥ दालदु भंजि सुदामे मिलिओ भगती भाइ तरे ॥ भगति वछलु हरि नामु क्रितारथु गुरमुखि क्रिपा करे ॥ १ ॥ मेरे मन नामु जपत उधरे ॥ ध्रू प्रहिलादु बिदरु दासी सुतु गुरमुखि नामि तरे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ कलजुगि नामु प्रधानु पदारथु भगत जना उधरे ॥ नामा जैदेउ कबीरु त्रिलोचनु सभि दोख गए चमरे ॥ गुरमुखि नामि लगे से उधरे सभि किलबिख पाप टरे ॥ २ ॥ जो जो नामु जपै अपराधी सभि तिन के दोख परहरे ॥ बेसुआ रवत अजामलु उधरिओ मुखि बोलै नाराइणु नरहरे ॥ नामु जपत उग्रसैणि गति पाई तोड़ि बंधन मुकति करे

॥ ३ ॥ जन कउ आपि अनुग्रहु कीआ हरि अंगीकारु करे ॥ सेवक पैज रखै मेरा गोविदु सरणि परे उधरे ॥ जन नानक हरि किरपा धारी उर धरिओ नामु हरे ॥ ४ ॥ १ ॥

गुरु के वचन द्वारा शुकदेव एवं राजा जनक भी नाम जपकर भगवान् की शरण में पड़े। सुदामा का दारिद्र नष्ट हुआ और भक्ति-भाव से उसका भी कल्याण हुआ। हरि का नाम भक्तवत्सल एवं कृतार्थ करने वाला है, वह गुरमुख पर ही कृपा करता है॥ १॥ हे मेरे मन! नाम जपकर कितने ही भक्तजनों का उद्धार हो गया है। भक्त ध्रुव, भक्त प्रहलाद, दासी पुत्र विदुर (गुरु के माध्यम से) नाम जपकर भवसागर से पार हो गए॥ १॥ रहाउ॥ कलियुग में परमात्मा का नाम ही प्रधान है, जिससे भक्तजनों का उद्धार हुआ है। भक्त नामदेव, भक्त जयदेव, भक्त कबीर एवं भक्त रविदास सबके दोष निवृत्त हो गए। जो गुरुमुख नाम-स्मरण में प्रवृत्त हुए, उनका कल्याण हुआ और उनके सब किल्विष पाप नष्ट हो गए॥ २॥ जिस-जिस अपराधी ने नाम का जाप किया, उसके सब दोष समाप्त हो गए। वेश्या के संग भोग करने वाले पापी अजामल का मुँह से नारायण नाम बोलने से ही उद्धार हो गया। राजा उग्रसेन ने नाम जपकर गति प्राप्त की, ईश्वर ने उसके सब बन्धन तोड़कर उसकी मुक्ति कर दी॥ ३॥ प्रभु ने स्वयं ही अपने भक्त पर कृपा की है और उसका ही साथ दिया है। मेरा प्रभु सदा अपने सेवक की लाज रखता है और उसकी शरण में आने वाले का उद्धार हुआ है। हे नानक! जिसने हरि-नाम को अपने हृदय में धारण किया है, उस पर उसने कृपा की है॥ ४॥ १॥

मारू महला ४ ॥ सिध समाधि जपिओ लिव लाई साधिक मुनि जपिआ ॥ जती सती संतोखी धिआइआ मुखि इंद्रादिक रविआ ॥ सरणि परे जपिओ ते भाए गुरमुखि पारि पइआ ॥ १ ॥ मेरे मन नामु जपत तरिआ ॥ धंना जटु बालमीकु बटवारा गुरमुखि पारि पइआ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सुरि नर गण गंधरबे जपिओ रिखि बपुरै हरि गाइआ ॥ संकरि ब्रहमै देवी जपिओ मुखि हरि हरि नामु जपिआ ॥ हरि हरि नामि जिना मनु भीना ते गुरमुखि पारि पइआ ॥ २ ॥ कोटि कोटि तेतीस धिआइओ हरि जपतिआ अंतु न पाइआ ॥ बेद पुराण सिम्रिति हरि जपिआ मुखि पंडित हरि गाइआ ॥ नामु रसालु जिना मनि वसिआ ते गुरमुखि पारि पइआ ॥ ३ ॥ अनत तरंगी नामु जिन जपिआ मै गणत न करि सकिआ ॥ गोबिदु क्रिपा करे थाइ पाए जो हरि प्रभ मनि भाइआ ॥ गुरि धारि क्रिपा हरि नामु द्रिड़ाइओ जन नानक नामु लइआ ॥ ४ ॥ २ ॥

सिद्धों ने समाधि लगाकर और साधक-मुनियों ने ध्यान लगाकर भगवान् का ही जाप किया है। यति, सत्यवादी, संतोषवान जीवों ने ईश्वर का मनन किया और देवराज इन्द्र इत्यादि देवगणों ने भी उसे ही स्मरण किया। शरण में आए जिन जीवों ने जाप किया, वही परमात्मा को प्रिय लगे हैं और उन गुरुमुखों का उद्धार हुआ है॥ १॥ रहाउ॥ हे मेरे मन! नाम का जाप करके अनेक जीवों की मुक्ति हुई। धन्ना जाट एवं (द्वापर युग में) लुटेरा वाल्मीक गुरु से उपदेश लेकर मुक्त हुए॥ १॥ रहाउ॥ देवते, मनुष्य, गण-गंधर्व सबने जाप किया और बेचारे ऋषियों ने हरि का ही स्तुतिगान किया। शिवशंकर, ब्रह्मा एवं देवी पार्वती ने भी मुख से हरि-नाम ही जपा है। जिनका मन हरि-नाम में भीग गया, इनका गुरु के माध्यम से उद्धार हुआ॥ २॥ तेंतीस करोड़ देवी देवताओं ने परमात्मा का ही ध्यान किया परन्तु जाप करके भी उन्हें अन्त प्राप्त नहीं हुआ। वेद, पुराण एवं स्मृतियों ने हरि का जाप किया और पण्डितों ने भी मुख से हरि का यशोगान किया। जिनके मन में मीठा प्रभु-नाम बस गया, गुरु-उपदेशानुसार उनकी मुक्ति हो गई॥ ३॥ जिन्होंने अनंत तरंगों वाले हरि-नाम का जाप किया है, मैं उनकी गणना नहीं कर सका। जो परमात्मा के

मन को भा गया है, गोविन्द ने कृपा करके उसका जीवन सफल कर दिया है। हे नानक ! नाम-स्मरण उसने ही किया है, जिसे गुरु ने कृपा करके मन में हरि-नाम दृढ़ करवाया है॥ ४॥ २॥

मारू महला ४ घरु ३ १ओं सतिगुर प्रसादि ॥

हरि हरि नामु निधानु लै गुरमति हरि पति पाइ ॥ हलति पलति नालि चलदा हरि अंते लए छडाइ ॥ जिथै अवघट गलीआ भीड़ीआ तिथै हरि हरि मुकति कराइ ॥ १ ॥ मेरे सतिगुरा मै हरि हरि नामु द्रिड़ाइ ॥ मेरा मात पिता सुत बंधपो मै हरि बिनु अवरु न माइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ मै हरि बिरही हरि नामु है कोई आणि मिलावै माइ ॥ तिसु आगै मै जोदड़ी मेरा प्रीतमु देइ मिलाइ ॥ सतिगुरु पुरखु दइआल प्रभु हरि मेले ढिल न पाइ ॥ २ ॥ जिन हरि हरि नामु न चेतिओ से भागहीण मरि जाइ ॥ ओइ फिरि फिरि जोनि भवाईअहि मरि जंमहि आवै जाइ ॥ ओइ जम दरि बधे मारीअहि हरि दरगह मिलै सजाइ ॥ ३ ॥ तू प्रभु हम सरणागती मोकउ मेलि लैहु हरि राइ ॥ हरि धारि क्रिपा जगजीवना गुर सतिगुर की सरणाइ ॥ हरि जीउ आपि दइआलु होइ जन नानक हरि मेलाइ ॥ ४ ॥ १ ॥ ३ ॥

गुरु के उपदेशानुसार जिसने हरि-नाम रूपी निधि प्राप्त की है, उसने ही यश हासिल किया है। लोक-परलोक में वही जीव का मददगार बनता है और अन्त में छुटकारा दिलवाता है। जहाँ संकीर्ण एवं कठिन गली-मार्ग है, वहाँ परमात्मा मुक्त करवाता है॥ १॥ हे मेरे सतगुरु ! मुझे हरि-नाम दृढ़ करवा दो। हे माँ ! हरि के बिना अन्य कोई भी मेरा माता-पिता, पुत्र एवं बंधु नहीं है॥ १॥ रहाउ॥ हे माँ ! मैं ईश्वर का प्रेमी हूँ, कोई आकर मुझे उससे मिला दे। मैं उसके समक्ष प्रार्थना करता हूँ कि मुझे मेरे प्रियतम से मिला दे। महापुरुष सतगुरु बड़ा दयालु है, जो ईश्वर से मिलाप करवाने में कोई देरी नहीं करता॥ २॥ जिन्होंने ईश्वर को याद नहीं किया, ऐसे भाग्यहीन मृत्यु का शिकार हो जाते हैं। वे बार-बार अनेक योनियों में भटकते हैं और आवागमन में पड़े रहते हैं। वे यम के द्वार पर कष्ट सहते हैं और प्रभु-दरबार में कठोर दण्ड भोगते हैं॥ ३॥ हे ईश्वर ! तू मेरा प्रभु है, मैं तेरी शरण में आया हूँ, मुझे अपने साथ मिला लो। हे जग के जीवन ! कृपा करके गुरु की शरण में रखो। हे नानक ! परमात्मा ने स्वयं ही दयालु होकर उसे अपने साथ मिला लिया है॥ ४॥ १॥ ३॥

मारू महला ४ ॥ हउ पूंजी नामु दसाइदा को दसे हरि धनु रासि ॥ हउ तिसु विटहु खन खंनीऐ मै मेले हरि प्रभ पासि ॥ मै अंतरि प्रेमु पिरंम का किउ सजणु मिलै मिलासि ॥ १ ॥ मन पिआरिआ मित्रा मै हरि हरि नामु धनु रासि ॥ गुरि पूरै नामु द्रिड़ाइआ हरि धीरक हरि साबासि ॥ १ ॥ रहाउ ॥ हरि हरि आपि मिलाइ गुरु मै दसे हरि धनु रासि ॥ बिनु गुर प्रेमु न लभई जन वेखहु मनि निरजासि ॥ हरि गुर विचि आपु रखिआ हरि मेले गुर साबासि ॥ २ ॥ सागर भगति भंडार हरि पूरे सतिगुर पासि ॥ सतिगुरु तुठा खोलि देइ मुखि गुरमुखि हरि परगासि ॥ मनमुखि भाग विहूणिआ तिख मुईआ कंधी पासि ॥ ३ ॥ गुरु दाता दातारु है हउ मागउ दानु गुर पासि ॥ चिरी विछुंना मेलि प्रभ मै मनि तनि वडड़ी आस ॥ गुर भावै सुणि बेनती जन नानक की अरदासि ॥ ४ ॥ २ ॥ ४ ॥

मैं हरि-नाम रूपी पूंजी के बारे में पूछता रहता हूँ, कोई मुझे बता दे कि यह धन राशि कहाँ से मिलती है। जो मुझे परमेश्वर से मिला दे, मैं उस पर कुर्बान जाता हूँ। मेरे अन्तर्मन में प्रियतम का बड़ा प्रेम है, मेरा सज्जन मुझे कैसे मिलेगा, जिससे मैं उसमें विलीन हो जाऊँ॥ १॥ हे प्यारे मित्र मन ! हरि नाम ही मेरी धन-राशि है। पूर्ण गुरु ने मन में हरि-नाम दृढ़ करवाया है, उससे

ही धीरज प्राप्त हुआ है और उसे ही हमारा नमन है॥ १॥ रहाउ॥ हरि स्वयं ही गुरु से मिलाप करवाता है और वही धन-राशि का मार्गदर्शन करता है। हे भक्तजनो! अपने मन में निर्णय करके देख लो, गुरु के बिना प्रभु प्रेम नहीं मिलता। हरि गुरु के मन में स्वयं निवास करता है, परमात्मा से मिलाप करवाने वाले उस गुरु को शाबाश है॥ २॥ पूर्ण सतगुरु के पास भगवान् की भक्ति का गहन सागर सरीखा भण्डार है। सतगुरु प्रसन्न होकर भण्डार को खोलकर अपने शिष्यों को देता है और गुरुमुखों के हृदय में आलोक हो जाता है। स्वेच्छाचारी जीव कितने दुर्भाग्यशाली हैं जो नामामृत के सरोवर के पास रहकर प्यासे ही रह जाते हैं॥ ३॥ गुरु ही सबसे बड़ा दाता है, मैं उससे यही दान माँगता हूँ मुझ जैसे चिरकाल से बिछुड़े हुए को परमात्मा से मिला दो, मेरे मन-तन में एक यही अभिलाषा है। नानक विनती करते हैं कि यदि गुरु को मंजूर हो तो वह मेरी प्रार्थना सुन लेगा॥ ४॥ २॥ ४॥

मारू महला ४ ॥ हरि हरि कथा सुणाइ प्रभ गुरमति हरि रिदै समाणी ॥ जपि हरि हरि कथा वडभागीआ हरि उतम पदु निरबाणी ॥ गुरमुखा मनि परतीति है गुरि पूरै नामि समाणी ॥ १ ॥ मन मेरे मै हरि हरि कथा मनि भाणी ॥ हरि हरि कथा नित सदा करि गुरमुखि अकथ कहाणी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ मै मनु तनु खोजि ढंढोलिआ किउ पाईऐ अकथ कहाणी ॥ संत जना मिलि पाइआ सुणि अकथ कथा मनि भाणी ॥ मेरै मनि तनि नामु अधारु हरि मै मेले पुरखु सुजाणी ॥ २ ॥ गुर पुरखै पुरखु मिलाइ प्रभ मिलि सुरती सुरति समाणी ॥ वडभागी गुरु सेविआ हरि पाइआ सुघड़ सुजाणी ॥ मनमुख भाग विहूणिआ तिन दुखी रैणि विहाणी ॥ ३ ॥ हम जाचिक दीन प्रभ तेरिआ मुखि दीजै अंम्रित बाणी ॥ सतिगुरु मेरा मित्रु प्रभ हरि मेलहु सुघड़ सुजाणी ॥ जन नानक सरणागती करि किरपा नामि समाणी ॥ ४ ॥ ३ ॥ ५ ॥

गुरु ने हरि की कथा सुनाई है, गुरु के उपदेशानुसार हृदय में समा गई है। जिस खुशकिस्मत ने हरि-कथा का जाप किया है, उसे ही उत्तम निर्वाण-पद प्राप्त हुआ है। गुरुमुखों के मन में पूर्ण निष्ठा है, पूर्ण गुरु के द्वारा वे नाम-स्मरण में ही विलीन रहते हैं॥ १॥ हे मेरे मन! मुझे हरि की कथा ही प्रिय लगती है। मैं नित्य हरि-कथा करता हूँ और यह अकथनीय कथा ही मुझे प्रिय है॥ १॥ रहाउ॥ मैंने मन-तन से खोज कर ढूँढा है कि अकथनीय कथा क्योंकर प्राप्त होती है। (उत्तर-) संतजनों से मिलकर ही इसे पाया जा सकता है, अकथनीय कथा सुनकर मन को प्यारी लगी है। मेरे मन-तन में हरि-नाम का ही आधार है और यह मुझे चतुर, परमपुरुष प्रभु से मिला देता है॥ २॥ महापुरुष गुरु ने परमपुरुष परमात्मा से मिला दिया है और मेरी आत्म-ज्योति परमज्योति में विलीन हो गई है। अहोभाग्य से गुरु की सेवा की है, जिसके फलस्वरूप चतुर, सर्वज्ञाता ईश्वर को पा लिया है। मनमुख दुर्भाग्यशाली हैं, जिनकी जीवन-रात्रि दुखों में ही व्यतीत होती है॥ ३॥ हे भगवान्! हम तेरे दीन याचक हैं, कृपा करके मुख में अमृत-वाणी डाल दीजिए। हे सतगुरु मित्र! मुझे चतुर प्रभु से मिला दो। दास नानक तेरी शरण में आया है, इसलिए कृपा करो ताकि वह हरि-नाम स्मरण में समाया रहे॥ ४॥ ३॥ ५॥

मारू महला ४ ॥ हरि भाउ लगा बैरागीआ वडभागी हरि मनि राखु ॥ मिलि संगति सरधा ऊपजै गुर सबदी हरि रसु चाखु ॥ सभु मनु तनु हरिआ होइआ गुरबाणी हरि गुण भाखु ॥ १ ॥ मन पिआरिआ मित्रा हरि हरि नाम रसु चाखु ॥ गुरि पूरै हरि पाइआ हलति पलति पति राखु ॥ १ ॥ रहाउ ॥ हरि हरि नामु धिआईऐ हरि कीरति गुरमुखि चाखु ॥ तनु धरती हरि बीजीऐ विचि संगति हरि प्रभ राखु ॥ अंम्रितु

हरि हरि नामु है गुरि पूरै हरि रसु चाखु ॥ २ ॥ मनमुख त्रिसना भरि रहे मनि आसा दह दिस बहु लाखु ॥ बिनु नावै ध्रिगु जीवदे विचि बिसटा मनमुख राखु ॥ ओइ आवहि जाहि भवाईअहि बहु जोनी दुरगंध भाखु ॥ ३ ॥ त्राहि त्राहि सरणागती हरि दइआ धारि प्रभ राखु ॥ संतसंगति मेलापु करि हरि नामु मिलै पति साखु ॥ हरि हरि नामु धनु पाइआ जन नानक गुरमति भाखु ॥ ४ ॥ ४ ॥ ६ ॥

जिस भाग्यशाली का ईश्वर से वैराग्यपूर्ण प्रेम लगा है, उसने मन में ही उसे बसा लिया है। सुसंगति में मिलने से ही श्रद्धा उत्पन्न होती है, गुरु के शब्द द्वारा हरि-नाम का स्वाद चखा जा सकता है। गुरु की वाणी द्वारा प्रभु का गुणानुवाद करने से तन-मन विकसित हो गया है॥ १॥ हे प्यारे मित्र मन ! हरि नामामृत का स्वाद चखो। पूर्ण गुरु से ही परमात्मा की प्राप्ति होती है और लोक-परलोक में वही लाज रखता है॥ १॥ रहाउ॥ गुरमुख बन ईश्वर का मनन करो, हरि-भजन का आनंद लो। तन रूपी धरती में हरि-नाम बोना चाहिए, सत्संग में प्रभु को याद करो। हरि का नाम अमृत के समान है और पूर्ण गुरु द्वारा हरि-नाम रस का स्वाद प्राप्त करो॥ २॥ स्वेच्छाचारी तृष्णा से भरे रहते हैं, उनके मन में लाखों ही तीव्र लालसा होती है, इसलिए वे दसों दिशाओं में भागते रहते हैं। नाम के बिना जीना धिक्कार योग्य है, स्वेच्छाचारी विष्ठा में ही पड़े रहते हैं। वे आवागमन में भटकते रहते हैं और विविध योनियों की दुर्गंध सेवन करते हैं॥ ३॥ हे परमात्मा, त्राहिमाम् ! त्राहिमाम् !! मैं तेरी शरण में आया हूँ, दया करके मेरी रक्षा करो। मुझे संतों की संगति में मिला दो, ताकि हरि-नाम मिल जाए और दुनिया में मेरी लाज बनी रहे। हे नानक! गुरु-मतानुसार हरि-नाम रूपी धन प्राप्त हो गया है॥ ४॥ ४॥ ६॥

मारू महला ४ घरु ५ ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

हरि हरि भगति भरे भंडारा ॥ गुरमुखि रामु करे निसतारा ॥ जिस नो क्रिपा करे मेरा सुआमी सो हरि के गुण गावै जीउ ॥ १ ॥ हरि हरि क्रिपा करे बनवाली ॥ हरि हिरदै सदा सदा समाली ॥ हरि हरि नामु जपहु मेरे जीअड़े जपि हरि हरि नामु छडावै जीउ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सुख सागरु अंम्रितु हरि नाउ ॥ मंगत जनु जाचै हरि देहु पसाउ ॥ हरि सति सति सदा हरि सति हरि सति मेरै मनि भावै जीउ ॥ २ ॥ नवे छिद्र स्रवहि अपवित्रा ॥ बोलि हरि नाम पवित्र सभि किता ॥ जे हरि सुप्रसंनु होवै मेरा सुआमी हरि सिमरत मलु लहि जावै जीउ ॥ ३ ॥ माइआ मोहु बिखमु है भारी ॥ किउ तरीऐ दुतरु संसारी ॥ सतिगुरु बोहिथु देइ प्रभु साचा जपि हरि हरि पारि लंघावै जीउ ॥ ४ ॥ तू सरबत्र तेरा सभु कोई ॥ जो तू करहि सोई प्रभ होई ॥ जनु नानकु गुण गावै बेचारा हरि भावै हरि थाइ पावै जीउ ॥ ५ ॥ १ ॥ ७ ॥

ईश्वर की भक्ति के भण्डार भरे हुए हैं, परमात्मा गुरुमुख का ही उद्धार करता है। जिस पर मेरा स्वामी कृपा करता है, वही उसके गुण गाता है॥ १॥ ईश्वर ही कृपा करता है, अतः सदैव उसे स्मरण करो, हे मेरे मन ! हरि-नाम जपो, हरि-नाम जपने से बन्धनों से छुटकारा होता है॥ १॥ रहाउ॥ हरि-नाम अमृतमय एवं सुखों का सागर है। वह उसे ही देता है, जो विनम्र भावना से याचना करता है। ईश्वर सदैव सत्य है और वह परमसत्य ही मेरे मन को प्रिय लगता है॥ २॥ शरीर के नौ छिद्रों—कान, आँखें, नासिका, मुँह, गुदा एवं लिंग से अपवित्र स्रवित होते रहते हैं, किन्तु हरि-नाम का स्तुतिगान करने से सब पवित्र हो जाता है। अगर ईश्वर परम-प्रसन्न हो जाए तो उसकी उपासना करने से सारी मैल उतर जाती है॥ ३॥ (प्रश्न) माया-मोह रूपी सागर बड़ा कठिन है। इस दुर्गम संसार-सागर से कैसे पार हुआ जा सकता है ? (उत्तर) अगर सच्चा प्रभु

सतगुरु रूपी जहाज से मिला दे तो गुरु-उपदेश से हरि-नाम जपकर जीव संसार-सागर से पार हो जाता है॥ ४॥ हे ईश्वर ! तू सर्वव्यापी है, सबकुछ तेरा ही पैदा किया हुआ है। जो तू करता है, जग में वही होता है। नानक बेचारा तो तेरे ही गुण गाता रहता है, अगर तुझे मंजूर हो तो हमारी उपासना सफल हो सकती है॥ ५॥ १॥ ७॥

मारू महला ४ ॥ हरि हरि नामु जपहु मन मेरे ॥ सभि किलविख काटै हरि तेरे ॥ हरि धनु राखहु हरि धनु संचहु हरि चलदिआ नालि सखाई जीउ ॥ १ ॥ जिस नो क्रिपा करे सो धिआवै ॥ नित हरि जपु जापै जपि हरि सुखु पावै ॥ गुर परसादी हरि रसु आवै जपि हरि हरि पारि लंघाई जीउ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ निरभउ निरंकारु सति नामु ॥ जग महि स्रेसटु ऊतम कामु ॥ दुसमन दूत जमकालु ठेह मारउ हरि सेवक नेड़ि न जाई जीउ ॥ २ ॥ जिसु उपरि हरि का मनु मानिआ ॥ सो सेवकु चहु जुग चहु कुंट जानिआ ॥ जे उस का बुरा कहै कोई पापी तिसु जमकंकरु खाई जीउ ॥ ३ ॥ सभ महि एकु निरंजन करता ॥ सभि करि करि वेखै अपणे चलता ॥ जिसु हरि राखै तिसु कउणु मारै जिसु करता आपि छडाई जीउ ॥ ४ ॥ हउ अनदिनु नामु लई करतारे ॥ जिनि सेवक भगत सभे निसतारे ॥ दस अठ चारि वेद सभि पूछहु जन नानक नामु छडाई जीउ ॥ ५ ॥ २ ॥ ८ ॥

हे मन ! ईश्वर का जाप करो; वह तेरे सभी पाप-दोष काट देगा। मन में हरि-धन बसाकर रखो, हरि-धन संचित करो, यही दुनिया से चलते समय तेरा साथी बनकर साथ जाएगा॥ १॥ जिस पर ईश्वर कृपा करता है, वही उसका ध्यान करता है। वह नित्य परमेश्वर का जाप करता हुआ सुख पा लेता है। गुरु-कृपा से ही हरि-नाम का स्वाद आता है और ईश्वर का जाप संसार-सागर से पार करवाता है॥ १॥ रहाउ॥। ईश्वर निराकार एवं निर्भय है, उसका नाम सत्य है और जग में नाम-स्मरण ही उत्तम एवं श्रेष्ठ कर्म है। यमराज के दूत शत्रु की तरह जीवों को मार देते हैं परन्तु हरि-भक्त के निकट भी नहीं जाते॥ २॥ जिस पर भगवान् का मन प्रसन्न हो गया है, वह भक्त चारों युगों—चारों दिशाओं में सुविख्यात हो गया है। यदि कोई पापी उसका बुरा करता अथवा चाहता है तो मृत्यु उसे अपना ग्रास बना लेती है॥ ३॥ सब में एक मायातीत परमेश्वर ही विद्यमान है और वह अपनी लीला कर करके देखता रहता है। जिसकी रक्षा ईश्वर करता है, उसे भला कौन मार सकता है ? प्रभु स्वयं उसे संकटों से बचाता है॥ ४॥ मैं नित्य ईश्वर का नाम जपता रहता हूँ, जिसने सेवक-भक्त सबकी मुक्ति कर दी है। हे नानक ! निःसंकोच अठारह पुराण एवं चारों वेदों का अवलोकन कर लो, उनका भी यही मानना है कि ईश्वर का नाम ही मुक्तिदाता है॥ ५॥ २॥ ८॥

मारू महला ५ घरु २ १ਓं सतिगुर प्रसादि ॥

डरपै धरति अकासु नख्यत्रा सिर ऊपरि अमरु करारा ॥ पउणु पाणी बैसंतरु डरपै डरपै इंद्रु बिचारा ॥ १ ॥ एका निरभउ बात सुनी ॥ सो सुखीआ सो सदा सुहेला जो गुर मिलि गाइ गुनी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ देहधार अरु देवा डरपहि सिध साधिक डरि मुइआ ॥ लख चउरासीह मरि मरि जनमे फिरि फिरि जोनी जोइआ ॥ २ ॥ राजसु सातकु तामसु डरपहि केते रूप उपाइआ ॥ छल बपुरी इह कउला डरपै अति डरपै धरम राइआ ॥ ३ ॥ सगल समग्री डरहि बिआपी बिनु डर करणैहारा ॥ कहु नानक भगतन का संगी भगत सोहहि दरबारा ॥ ४ ॥ १ ॥

धरती, आकाश एवं नक्षत्र भी डरते हैं, सब पर ईश्वर का कठोर हुक्म चल रहा है। पवन, पानी एवं अग्नि उसके भय में ही कार्यशील हैं और बेचारा इन्द्रदेव भी उससे डरता है॥ १॥ यही

बात सुनी है कि रचयिता ईश्वर ही निर्भय है। जो गुरु से मिलकर उसका गुणगान करता है, वही सुखी और सदा खुश रहता है॥ १॥ रहाउ॥ देहधारी प्राणी और देवता उससे ही डर रहे हैं। बड़े-बड़े सिद्ध-साधक ईश्वर-भय से ही मृत्यु को प्राप्त होते हैं। चौरासी लाख योनियों के सभी जीव मर-मरकर जन्मते रहते हैं और उन्हें बार-बार योनियों में धकेला जा रहा है॥ २॥ रजोगुणी (मनुष्य), सतोगुणी (देवते) एवं तमोगुणी (दैत्य) तथा अनेक रूप वाले उत्पन्न जीव परमात्मा के भय में विचरते हैं। जीवों से छल करने वाली बेचारी माया भी ईश्वर से भयभीत है और धर्मराज भी भय में विचरण कर रहा है॥ ३॥ समूची जगत्-रचना उसके भय में है, मगर ईश्वर को कोई डर नहीं। हे नानक! वह भक्तजनों का साथी है और भक्त उसके दरबार में ही शोभा के पात्र बनते हैं॥ ४॥ १॥

मारू महला ५ ॥ पांच बरख को अनाथु ध्रू बारिकु हरि सिमरत अमर अटारे ॥ पुत्र हेति नाराइणु कहिओ जमकंकर मारि बिदारे ॥ १ ॥ मेरे ठाकुर केते अगनत उधारे ॥ मोहि दीन अलप मति निरगुण परिओ सरणि दुआरे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ बालमीकु सुपचारो तरिओ बधिक तरे बिचारे ॥ एक निमख मन माहि अराधिओ गजपति पारि उतारे ॥ २ ॥ कीनी रखिआ भगत प्रहिलादै हरनाखस नखहि बिदारे ॥ बिदरु दासी सुतु भइओ पुनीता सगले कुल उजारे ॥ ३ ॥ कवन पराध बतावउ अपुने मिथिआ मोह मगनारे ॥ आइओ साम नानक ओट हरि की लीजै भुजा पसारे ॥ ४ ॥ २ ॥

पाँच वर्ष का मासूम बालक ध्रुव ईश्वर का सिमरन करके अमर पद पा गया। अजामल ने पुत्र प्रेम के कारण मुँह से नारायण कहा तो ईश्वर ने यमदूतों को मार भगाकर उसका उद्धार किया॥ १॥ हे मेरे ठाकुर! तूने कितने ही असंख्य जीवों का उद्धार कर दिया। मैं दीन, अल्पमति एवं गुणविहीन तेरी शरण में आया हूँ, मेरा कल्याण करो॥ १॥ रहाउ॥ वाल्मीक को मोक्ष प्राप्त हुआ और बेचारे नीच शिकारी की मुक्ति हुई। एक पल हाथी ने मन में आराधना की तो ईश्वर ने मगरमच्छ से उसका छुटकारा किया॥ २॥ दैत्य हिरण्यकशिपु को नखों से चीर कर नृसिंह भगवान् ने भक्त प्रहलाद की रक्षा की। दासी पुत्र विदुर को पावन कर दिया और उसकी समस्त वंशावलि उज्ज्वल कर दी॥ ३॥ मैं अपने कौन-से अपराध बताऊँ, क्योंकि जीवन भर मिथ्या मोह में ही मग्न रहा। नानक कहते हैं कि हे हरि! तेरा आसरा लेने के लिए मैं तेरी शरण में आया हूँ, अपनी भुजा फैलाकर मुझे बचा लो॥ ४॥ २॥

मारू महला ५ ॥ वित नवित भ्रमिओ बहु भाती अनिक जतन करि धाए ॥ जो जो करम कीए हउ हउमै ते ते भए अजाए ॥ १ ॥ अवर दिन काहू काज न लाए ॥ सो दिनु मोकउ दीजै प्रभ जीउ जा दिन हरि जसु गाए ॥ १ ॥ रहाउ ॥ पुत्र कलत्र ग्रिह देखि पसारा इस ही महि उरझाए ॥ माइआ मद चाखि भए उदमाते हरि हरि कबहु न गाए ॥ २ ॥ इह बिधि खोजी बहु परकारा बिनु संतन नही पाए ॥ तुम दातार वडे प्रभ संम्रथ मागन कउ दानु आए ॥ ३ ॥ तिआगिओ सगला मानु महता दास रेण सरणाए ॥ कहु नानक हरि मिलि भए एकै महा अनंद सुख पाए ॥ ४ ॥ ३ ॥

मैं धन के लिए बहुत भटकता रहा और अनेक यत्न करके भागदौड़ करता रहा। जितने भी कर्म अहम् में किए हैं, वे सब निष्फल हो चुके हैं॥ १॥ जीवन के अन्य दिन किसी शुभ कर्म में नहीं लगाए, हे प्रभु जी! मुझे वह दिन दीजिए, जिस दिन मैं तेरा यशगान करूँ॥ १॥ रहाउ॥ जीवन भर अपने पुत्र, पत्नी एवं घर का प्रसार देखकर इसी में उलझा रहा। धन-दौलत का नशा चखकर इसमें ही मस्त रहा परन्तु भगवान का कभी भजन नहीं किया॥ २॥ मैंने अनेक प्रकार से

नाम-स्मरण की युक्ति खोजी है परन्तु संतों के बिना प्राप्त नहीं होती। हे ईश्वर! तू सबसे बड़ा दाता है, सर्वकला समर्थ है, मैं तुझसे ही माँगने के लिए आया हूँ॥ ३॥ समूचा अभिमान एवं गर्व त्यागकर दास चरण-धूल समान तेरी शरण में आया है। हे नानक! भगवान् से मिलकर एक महा आनंद एवं परमसुख उपलब्ध हुआ है॥ ४॥ ३॥

मारू महला ५ ॥ कवन थान धीरिओ है नामा कवन बसतु अहंकारा ॥ कवन चिहन सुनि ऊपरि छोहिओ मुख ते सुनि करि गारा ॥ १ ॥ सुनहु रे तू कउनु कहा ते आइओ ॥ एती न जानउ केतीक मुदति चलते खबरि न पाइओ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सहन सील पवन अरु पाणी बसुधा खिमा निभराते ॥ पंच तत मिलि भइओ संजोगा इन महि कवन दुराते ॥ २ ॥ जिनि रचि रचिआ पुरखि बिधातै नाले हउमै पाई ॥ जनम मरणु उस ही कउ है रे ओहा आवै जाई ॥ ३ ॥ बरनु चिहनु नाही किछु रचना मिथिआ सगल पसारा ॥ भणति नानकु जब खेलु उझारै तब एकै एकंकारा ॥ ४ ॥ ४ ॥

नाम-शोहरत किस जगह पर टिके हुए हैं, अहंकार कहाँ रहता है? मुँह से गाली सुनकर चेहरे पर कौन-सा जख्म पड़ गया है कि तू क्रोध से भर गया है?॥ १॥ अरे भाई! सुनो; तू कौन है और कहाँ से आया है? तू इतनी बात भी नहीं जानता कि यहाँ कब तक रहना है और तुझे यहाँ से चले जाने की खबर भी नहीं होनी॥ १॥ रहाउ॥ पवन और पानी दोनों ही सहनशील हैं और पृथ्वी तो निःसंदेह क्षमावान् है। पाँच तत्वों से मिलकर तेरा शरीर बना है, बताओ, इन में क्या बुराई है?॥ २॥ जिस विधाता ने शरीर-रचना की है, उसने ही इसमें अभिमान भी डाल दिया है। जन्म-मरण का चक्र उस मनुष्य को ही है और वही आवागमन में पड़ा रहता है॥ ३॥ यह समूचा जगत्-प्रसार मिथ्या है और इस रचना का कोई भी रंग रूप व चिन्ह स्थिर नहीं है। नानक कहते हैं कि जब वह जगत् लीला को नष्ट कर देता है तो एक ओंकार का ही अस्तित्व रह जाता है॥ ४॥ ४॥

मारू महला ५ ॥ मान मोह अरु लोभ विकारा बीओ चीति न घालिओ ॥ नाम रतनु गुणा हरि बणजे लादि वखरु लै चालिओ ॥ १ ॥ सेवक की ओड़कि निबही प्रीति ॥ जीवत साहिबु सेविओ अपना चलते राखिओ चीति ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जैसी आगिआ कीनी ठाकुरि तिस ते मुखु नही मोरिओ ॥ सहजु अनंदु रखिओ ग्रिह भीतरि उठि उआहू कउ दउरिओ ॥ २ ॥ आगिआ महि भूख सोई करि सूखा सोग हरख नही जानिओ ॥ जो जो हुकमु भइओ साहिब का सो माथै ले मानिओ ॥ ३ ॥ भइओ क्रिपालु ठाकुरु सेवक कउ सवरे हलत पलाता ॥ धंनु सेवकु सफलु ओहु आइआ जिनि नानक खसमु पछाता ॥ ४ ॥ ५ ॥

मान-मोह और लोभ-विकार को अपने चित में आने नहीं दिया। नाम-रत्न एवं हरि-गुणों का व्यापार कर उसकी सामग्री लादकर जगत् से चल पड़ा हूँ॥ १॥ सेवक की प्रभु से प्रीति अंत तक निभ गई है। जीवित रहते मालिक की उपासना करता रहा और अब जग से चलते समय भी मन में उसे ही याद किया है॥ १॥ रहाउ॥ मेरे ठाकुर जी ने जैसी आज्ञा की, उससे कभी विमुख नहीं हुआ। अगर उसने घर में रखा तो सहज ही आनंद प्राप्त करता रहा। अगर उसने उठने का आदेश किया तो मैं उधर ही दौड़ पड़ा॥ २॥ अगर भूख ने तंग किया तो उसकी आज्ञा में उसे ही सुख माना और खुशी-गम को कभी समझा ही नहीं। मालिक का जो जो हुक्म हुआ, उसे सहर्ष स्वीकार किया॥ ३॥ जब ठाकुर जी अपने सेवक पर कृपालु हो गए तो उसका लोक-परलोक दोनों ही संवर गए। हे नानक! जिसने अपने मालिक को पहचान लिया है, वह सेवक धन्य है, उसका जन्म सफल हो गया है॥ ४॥ ५॥

मारू महला ५ ॥ खुलिआ करमु क्रिपा भई ठाकुर कीरतनु हरि हरि गाई ॥ स्रमु थाका पाए बिस्रामा मिटि गई सगली धाई ॥ १ ॥ अब मोहि जीवन पदवी पाई ॥ चीति आइओ मनि पुरखु बिधाता संतन की सरणाई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ कामु क्रोधु लोभु मोहु निवारि निवरे सगल बैराई ॥ सद हजूरि हाजरु है नाजरु कतहि न भइओ दूराई ॥ २ ॥ सुख सीतल सरधा सभ पूरी होए संत सहाई ॥ पावन पतित कीए खिन भीतरि महिमा कथनु न जाई ॥ ३ ॥ निरभउ भए सगल भै खोए गोबिद चरण ओटाई ॥ नानकु जसु गावै ठाकुर का रैणि दिनसु लिव लाई ॥ ४ ॥ ६ ॥

मेरा भाग्य खुल गया, ठाकुर जी की कृपा हो गई, इसके फलस्वरूप प्रभु का ही कीर्तिगान किया है। श्रम की थकावट दूर होकर आराम मिल गया है और सारी भटकन मिट गई है॥ १॥ अब मुझे जीवन-पद प्राप्त हो गया है। संतजनों की शरण में आकर मन में विधाता ही याद आया है॥ १॥ रहाउ॥ काम, क्रोध, लोभ एवं मोह का निवारण कर दिया है और सब वैरी नष्ट हो गए हैं। मुझे तो ईश्वर साक्षात् प्रत्यक्ष ही लगता है, वह कहीं दूर नजर नहीं आता॥ २॥ संतों की मदद से सारी श्रद्धा पूरी हो गई है और मन को सुख-शान्ति उपलब्ध हुई है। जिसने क्षण में ही पतित जीवों को पावन कर दिया है, उसकी महिमा कथन नहीं की जा सकती॥ ३॥ प्रभु-चरणों की ओट लेने से सारे भय निवृत्त हो गए हैं और निर्भय हो गया हूँ। हे नानक ! अब तो लगन लगाकर रात-दिन ठाकुर जी का ही यशगान करता रहता हूँ॥ ४॥ ६॥

मारू महला ५ ॥ जो समरथु सरब गुण नाइकु तिस कउ कबहु न गावसि रे ॥ छोडि जाइ खिन भीतरि ता कउ उआ कउ फिरि फिरि धावसि रे ॥ १ ॥ अपुने प्रभ कउ किउ न समारसि रे ॥ बैरी संगि रंग रसि रचिआ तिसु सिउ जीअरा जारसि रे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जा कै नामि सुनिऐ जमु छोडै ता की सरणि न पावसि रे ॥ काढि देइ सिआल बपुरे कउ ता की ओट टिकावसि रे ॥ २ ॥ जिस का जासु सुनत भव तरीऐ ता सिउ रंगु न लावसि रे ॥ थोरी बात अलप सुपने की बहुरि बहुरि अटकावसि रे ॥ ३ ॥ भइओ प्रसादु क्रिपा निधि ठाकुर संतसंगि पति पाई ॥ कहु नानक त्रै गुण भ्रमु छूटा जउ प्रभ भए सहाई ॥ ४ ॥ ७ ॥

हे ज़ीव ! जो सर्वकला समर्थ, सर्व-गुणों का स्वामी है, उस ईश्वर का कभी स्तुतिगान नहीं करते। परन्तु जिस माया को हर कोई एक क्षण में छोड़ जाता है, उसके लिए बार-बार दौड़ते रहते हो॥ १॥ अरे नादान ! अपने प्रभु को क्यों नहीं स्मरण करते। काम, क्रोध, मोह रूपी वैरियों के संग रंगरलियों में लीन रहते हो, उनके संग अपना दिल क्यों जला रहे हो॥ १॥ रहाउ॥ अरे भोले ! जिसका नाम सुनकर यम भी छोड़ जाता है, उसकी शरण क्यों नहीं लेते। अपने मन में से बेचारे गीदड़ रूपी भय को निकाल दो और परमात्मा का सहारा बसा लो॥ २॥ जिसका यश सुनकर संसार-सागर से छुटकारा हो जाता है, उसकी स्मृति में लीन नहीं होते। छोटे सपने की तरह (माया की प्रीति) थोड़ी सी बात है परन्तु पुनः पुनः उस में ही मन फँसा रहे हो॥ ३॥ कृपानिधि ठाकुर जी की कृपा से संतों का संग पाकर शोभा प्राप्त हुई है। हे नानक ! जब प्रभु सहायक बन जाता है तो त्रिगुणात्मक माया का भ्रम छूट जाता है॥ ४॥ ७॥

मारू महला ५ ॥ अंतरजामी सभ बिधि जानै तिस ते कहा दुलारिओ ॥ हसत पाव झरे खिन भीतरि अगनि संगि लै जारिओ ॥ १ ॥ मूड़े तै मन ते रामु बिसारिओ ॥ लूणु खाइ करहि हरामखोरी

पेखत नैन बिदारिओ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ असाध रोगु उपजिओ तन भीतरि टरत न काहू टारिओ ॥ प्रभ बिसरत महा दुखु पाइओ इहु नानक ततु बीचारिओ ॥ २ ॥ ८ ॥

जब अन्तर्यामी ईश्वर सब युक्तियाँ जानता है, तो उससे क्या छिपाया जा सकता है। आदमी के हाथ-पाँव इत्यादि अंग क्षण में खत्म हो जाते हैं और उन्हें अग्नि में जला दिया जाता है॥ १॥ अरे मूर्ख! तूने मन से राम को भुला दिया है। तू मालिक का नमक खाकर हरामखोरी करता है, लोगों की आँखों के देखते ही तुझे जलाकर नाश कर दिया जाएगा॥ १॥ रहाउ॥ तन में असाध्य रोग पैदा हो गया है, जिसका किसी विधि से कोई उपचार नहीं है। नानक ने तो इस बात पर विचार किया है कि प्रभु को विस्मृत करने से महादुख ही प्राप्त होता है॥ २॥ ८॥

मारू महला ५ ॥ चरन कमल प्रभ राखे चीति ॥ हरि गुण गावह नीता नीत ॥ तिसु बिनु दूजा अवरु न कोऊ ॥ आदि मधि अंति है सोऊ ॥ १ ॥ संतन की ओट आपे आपि ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जा कै वसि है सगल संसारु ॥ आपे आपि आपि निरंकारु ॥ नानक गहिओ साचा सोइ ॥ सुखु पाइआ फिरि दूखु न होइ ॥ २ ॥ ६ ॥

प्रभु के चरण-कमल मन में बसा लो, नित्य ही उसके गुण गाते रहो। उसके अलावा जग में कोई बड़ा नहीं है। सृष्टि के आदि, मध्य एवं अन्त में केवल उसका ही अस्तित्व है॥ १॥ वह स्वयं ही संतजनों का आसरा है॥ १॥ रहाउ॥ जिसके वश में समूचा संसार है, वह निराकार स्वयं ही सबकुछ है। हे नानक! जिसने परमसत्य का सहारा ले लिया है, उसे ही सच्चा सुख हासिल हुआ है और फिर वह कभी दुखी नहीं होता॥ २॥ ६॥

मारू महला ५ घरु ३ १ॐ सतिगुर प्रसादि ॥

प्रान सुखदाता जीअ सुखदाता तुम काहे बिसारिओ अगिआनथ ॥ होछा मदु चाखि होए तुम बावर दुलभ जनमु अकारथ ॥ १ ॥ रे नर ऐसी करहि इआनथ ॥ तजि सारंगधर भ्रमि तू भूला मोहि लपटिओ दासी संगि सानथ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ धरणीधरु तिआगि नीच कुल सेवहि हउ हउ करत बिहावथ ॥ फोकट करम करहि अगिआनी मनमुखि अंध कहावथ ॥ २ ॥ सति होता असति करि मानिआ जो बिनसत सो निहचलु जानथ ॥ पर की कउ अपनी करि पकरी ऐसे भूल भुलानथ ॥ ३ ॥ खत्री ब्राहमण सूद वैस सभ एकै नामि तरानथ ॥ गुरु नानकु उपदेसु कहतु है जो सुनै सो पारि परानथ ॥ ४ ॥ १ ॥ १० ॥

हे ज्ञानहीन मानव! प्राणों एवं आत्मा को सुख प्रदान करने वाले ईश्वर को तूने क्यों भुला दिया है। माया का तुच्छ नशा सेवन करके तू बावला हो गया है, जिस कारण तेरा दुर्लभ जन्म व्यर्थ जा रहा है॥ १॥ हे नर! तू बड़ी मूर्खता कर रहा है, भगवान् को त्याग कर भ्रम में भूला हुआ है और माया दासी के संग नाता बनाया हुआ है॥ १॥ रहाउ॥ तू ईश्वर को छोड़कर नीच कुल की सेवा में मग्न है और मैं-मैं करके पूरी जिंदगी अहंकार में गुजर रही है। हे अज्ञानी! तू निकम्मे कर्म करता है, इसलिए तू मनमुखी एवं अंधा कहलाता है॥ २॥ जो (मृत्यु) सत्य है, उसे असत्य समझ लिया है, जो (जीवन) नाशवान् है, उसे निश्चल मान लिया है। जो (धन) पराया है, उसे अपना समझ कर पकड़ा हुआ है और तू ऐसी भूल में भूला हुआ है॥ ३॥ क्षत्रिय, ब्राह्मण, वैश्य, एवं शूद्र—ये सब एक हरि-नाम से मोक्ष पाते हैं। गुरु नानक उपदेश कहते हैं, जो इसे सुनता है, उसकी मुक्ति हो जाती है॥ ४॥ १॥ १०॥

मारू महला ५ ॥ गुपतु करता संगि सो प्रभु डहकावए मनुखाइ ॥ बिसारि हरि जीउ बिखै भोगहि तपत थंम गलि लाइ ॥ १ ॥ रे नर काइ पर ग्रिहि जाइ ॥ कुचल कठोर कामि गरधभ तुम नही सुनिओ धरम राइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ बिकार पाथर गलहि बाधे निंद पोट सिराइ ॥ महा सागरु समुदु लंघना पारि न परना जाइ ॥ २ ॥ कामि क्रोधि लोभि मोहि बिआपिओ नेत्र रखे फिराइ ॥ सीसु उठावन न कबहू मिलई महा दुतर माइ ॥ ३ ॥ सूरु मुकता ससी मुकता ब्रहम गिआनी अलिपाइ ॥ सुभावत जैसे बैसंतर अलिपत सदा निरमलाइ ॥ ४ ॥ जिसु करमु खुलिआ तिसु लहिआ पड़दा जिनि गुर पहि मंनिआ सुभाइ ॥ गुरि मंत्रु अवखधु नामु दीना जन नानक संकट जोनि न पाइ ॥ ५ ॥ २ ॥ रे नर इन बिधि पारि पराइ ॥ धिआइ हरि जीउ होइ मिरतकु तिआगि दूजा भाउ ॥ रहाउ दूजा ॥ २ ॥ ११ ॥

मनुष्य छिप-छिप कर बुरे काम करता है, मगर साथ रहने वाले प्रभु को उसकी हरकत पता है, वह केवल दुनिया को ही धोखा दे सकता है। ईश्वर को भुलाकर विषय-विकारों एवं काम-भोग में लिप्त जीव गर्म स्तम्भ के दण्ड का पात्र बनता है॥ १॥ हे आदमी! क्यों पराई नारी के घर जाते हो। हे मलिन, निर्दयी, कामी गधे! क्या तूने यमराज का नाम नहीं सुना?॥ १॥ रहाउ॥ तूने पाप रूपी पत्थर गले से बाँध लिया है और निंदा रूपी गठरी सिर पर रख ली है। तूने महासागर संसार समुद्र से पार होना है, तुझे इस में से पार होना असंभव हो जाएगा॥ २॥ काम, क्रोध, लोभ, मोह में फँसकर तूने अपनी आँखें फेर रखी हैं। तुझे कभी भी अपना शीश ऊपर उठाने का अवसर नहीं मिलना, माया-मोह का सागर पार करना बड़ा कठिन है॥ ३॥ जैसे सूर्य एवं चन्द्रमा निर्लिप्त रहते हैं और जैसे अपने स्वभावानुसार अग्नि भी सदा अलिप्त एवं निर्मल रहती है, वैसे ही ब्रह्मज्ञानी भी निर्लिप्त रहता है। (सूर्य, चन्द्रमा एवं अग्नि अच्छे-बुरे सब जीवों को अपना प्रकाश एवं सुख देते हैं, वैसे ही ब्रह्मज्ञानी जीवों को उपदेश देकर परमात्मा से जोड़ते हैं)॥ ४॥ जिसका भाग्योदय हुआ, जिसने सहज स्वभाव गुरु में पूर्ण आस्था धारण की है, उसका भ्रम का पर्दा उतर गया है। हे नानक! गुरु ने जिसे नाम-मंत्र रूपी औषधि प्रदान की है, वह गर्भ-योनि के संकट से छूट गया है॥ ५॥ २॥ हे आदमी! इस विधि से मुक्ति संभव है, द्वैतभाव को त्याग कर और जीवित ही अहम् को मारकर परमात्मा का ध्यान करो॥ रहाउ दूसरा॥ २॥ ११॥

मारू महला ५ ॥ बाहरि ढूढन ते छूटि परे गुरि घर ही माहि दिखाइआ था ॥ अनभउ अचरज रूपु प्रभ पेखिआ मेरा मनु छोडि न कतहू जाइआ था ॥ १ ॥ मानकु पाइओ रे पाइओ हरि पूरा पाइआ था ॥ मोलि अमोलु न पाइआ जाई करि किरपा गुरू दिवाइआ था ॥ १ ॥ रहाउ ॥ अदिसटु अगोचरु पारब्रहमु मिलि साधू अकथु कथाइआ था ॥ अनहद सबदु दसम दुआरि वजिओ तह अंम्रित नामु चुआइआ था ॥ २ ॥ तोटि नाही मनि त्रिसना बूझी अखुट भंडार समाइआ था ॥ चरण चरण चरण गुर सेवे अघड़ु घड़िओ रसु पाइआ था ॥ ३ ॥ सहजे आवा सहजे जावा सहजे मनु खेलाइआ था ॥ कहु नानक भरमु गुरि खोइआ ता हरि महली महलु पाइआ था ॥ ४ ॥ ३ ॥ १२ ॥

गुरु ने हृदय-घर में ही परम-सत्य के दर्शन करवा दिए, जिससे ईश्वर को बाहर ढूँढने से छूट गया। मैंने परमात्मा का अद्भुत रूप देख लिया है, इसलिए उसे छोड़कर मेरा मन इधर-उधर नहीं जाता॥ १॥ मैंने पूर्ण परमेश्वर रूपी माणिक्य को पा लिया है। गुरु की कृपा से परमात्मा रूपी माणिक्य की प्राप्ति हो सकी है, जो बड़ा अमूल्य है और जिसे किसी भी कीमत पर पाया नहीं जा सकता॥ १॥ रहाउ॥ साधुओं के संग मिलकर अदृश्य, अगोचर, अकथनीय परब्रह्म का स्तुतिगान किया। जब दसम द्वार में अनाहत शब्द गूँजने लगा तो रसना में नामामृत टपकने लगा॥ २॥ मन

में अक्षय भण्डार समा गया है, जिससे तृष्णा बुझ गई है और किसी पदार्थ की कोई कमी नहीं। गुरु-चरणों की सेवा करने से अशिष्ट मन शिष्ट हो गया है, जिससे नामामृत का रस प्राप्त हो गया है॥ ३॥ मैं सहज ही आता एवं जाता और सहज ही मन रमण कर रहा है। हे नानक! जब गुरु ने भ्रम को मिटाया तो प्रभु चरणों में स्थान पा लिया॥ ४॥ ३॥ १२॥

मारू महला ५ ॥ जिसहि साजि निवाजिआ तिसहि सिउ रुच नाहि ॥ आन रूती आन बोईऐ फलु न फूलै ताहि ॥ १ ॥ रे मन वत्र बीजण नाउ ॥ बोइ खेती लाइ मनूआ भलो समउ सुआउ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ खोइ खहड़ा भरमु मन का सतिगुर सरणी जाइ ॥ करमु जिस कउ धुरहु लिखिआ सोई कार कमाइ ॥ २ ॥ भाउ लागा गोबिद सिउ घाल पाई थाइ ॥ खेति मेरै जंमिआ निखुटि न कबहू जाइ ॥ ३ ॥ पाइआ अमोलु पदारथो छोडि न कतहू जाइ ॥ कहु नानक सुखु पाइआ त्रिपति रहे आघाइ ॥ ४ ॥ ४ ॥ १३ ॥

जिस परमात्मा ने तुझे उत्पन्न करके गौरव प्रदान किया है, उससे तेरी कोई रुचि नहीं। यदि अन्य ऋतु में अन्य बीज बोया जाए तो उसे कोई फल-फूल नहीं लगता॥ १॥ हे भोले मन! यह मानव-जीवन नाम रूपी बीज बोने का सुअवसर है, मन लगाकर हृदय रूपी खेत में नाम-बोने के इस शुभ-समय का लाभ प्राप्त कर लो॥ १॥ रहाउ॥ मन का भ्रम एवं हठ छोड़कर गुरु की शरण में जाओ। जिसकी तकदीर में विधाता ने लिखा होता है, वह वही कर्म करता है॥ २॥ गोविन्द से ऐसा अटूट प्रेम लगा है कि सेवा भक्ति सफल हो गई है। मेरे हृदय-रूपी खेत में अक्षुण्ण नाम रूपी फसल तैयार हो चुकी है॥ ३॥ अब मुझे सत्य रूपी अमूल्य पदार्थ की प्राप्ति हुई है, जिसे मैं छोड़कर कहीं नहीं जाता। हे नानक! मुझे सुख उपलब्ध हो गया है, जिससे मैं संतुष्ट एवं तृप्त रहता हूँ॥ ४॥ ४॥ १३॥

मारू महला ५ ॥ फूटो आंडा भरम का मनहि भइओ परगासु ॥ काटी बेरी पगह ते गुरि कीनी बंदि खलासु ॥ १ ॥ आवण जाणु रहिओ ॥ तपत कड़ाहा बुझि गइआ गुरि सीतल नामु दीओ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जब ते साधू संगु भइआ तउ छोडि गए निगहार ॥ जिस की अटक तिस ते छुटी तउ कहा करै कोटवार ॥ २ ॥ चूका भारा करम का होए निहकरमा ॥ सागर ते कंढै चड़े गुरि कीने धरमा ॥ ३ ॥ सचु थानु सचु बैठका सचु सुआउ बणाइआ ॥ सचु पूंजी सचु वखरो नानक घरि पाइआ ॥ ४ ॥ ५ ॥ १४ ॥

भ्रम का अण्डा फूट गया है एवं मेरे मन में सत्य का प्रकाश हो गया है। पैरों में पड़ी बन्धनों की बेड़ी काटकर गुरु ने (माया की) कैद से मुक्ति कर दी है॥ १॥ मेरा जन्म-मरण का चक्र मिट गया है। जब गुरु ने शान्ति उत्पन्न करने वाला हरि-नाम प्रदान किया तो मन में से तृष्णाग्नि की जलती हुई कड़ाही बुझ गई॥ १॥ रहाउ॥ जब से साधुओं का संग मिला है, तब से मुझ पर निगाह रखने वाले यमदूत मेरा साथ छोड़ गए हैं। जिसने बन्धन में डाला था, जब उससे ही छूट गया तो कोतवाल यमराज मेरा क्या बिगाड़ सकता है॥ २॥ मेरे पाप-कर्मों का भार सिर से उतर गया है और निष्कर्म हो गया हूँ। गुरु ने मुझ पर बड़ा उपकार किया है, जिस कारण मैं संसार-सागर से निकल कर तट पर पहुँच गया हूँ॥ ३॥ अब सत्संग रूपी सच्चा स्थान मिल गया है, सच्चा स्थान ही उठने-बैठने-रहने का ठिकाना है और सत्य ही मेरा जीवन-उद्देश्य बन गया है। हे नानक! सत्य ही मेरी पूंजी एवं व्यापार का सौदा है, जिसे हृदय-घर में ही पा लिया है॥ ४॥ ५॥ १४॥

मारू महला ५ ॥ बेदु पुकारै मुख ते पंडत कामामन का माठा ॥ मोनी होइ बैठा इकांती हिरदै कलपन गाठा ॥ होइ उदासी ग्रिहु तजि चलिओ छुटकै नाही नाठा ॥ १ ॥ जीअ की कै पहि बात कहा ॥ आपि मुकतु मोकउ प्रभु मेले ऐसो कहा लहा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ तपसी करि कै देही साधी मनूआ दह दिस धाना ॥ ब्रहमचारि ब्रहमचजु कीना हिरदै भइआ गुमाना ॥ संनिआसी होइ कै तीरथि भ्रमिओ उसु महि क्रोधु बिगाना ॥ २ ॥ घूंघर बाधि भए रामदासा रोटीअन के ओपावा ॥ बरत नेम करम खट कीने बाहरि भेख दिखावा ॥ गीत नाद मुखि राग अलापे मनि नही हरि हरि गावा ॥ ३ ॥ हरख सोग लोभ मोह रहत हहि निरमल हरि के संता ॥ तिन की धूड़ि पाए मनु मेरा जा दइआ करे भगवंता ॥ कहु नानक गुरु पूरा मिलिआ तां उतरी मन की चिंता ॥ ४ ॥ मेरा अंतरजामी हरि राइआ ॥ सभु किछु जाणै मेरे जीअ का प्रीतमु बिसरि गए बकबाइआ ॥ १ ॥ रहाउ दूजा ॥ ६ ॥ १५ ॥

पण्डित अपने मुख से वेद पढ़ता है किन्तु नाम-अभ्यास करने में आलसी है। मौनी एकांत में ध्यान लगाए बैठ जाता है परन्तु उसके हृदय में परेशानियों की गाँठ पड़ी रहती है। इन्सान विरक्त बनकर घर-गृहस्थी को छोड़कर चल देता है मगर घर छोड़ने से उसकी तृष्णा का अन्त नहीं होता॥ १॥ मैं अपने दिल की बात किससे कहूँ ? ऐसा संत कहाँ से ढूँढ लूँ, जो स्वयं बन्धनों से मुक्त है और मुझे भी प्रभु से मिला दे॥ १॥ रहाउ॥ तपस्वी ने तपस्या करके शरीर की साधना कर ली, परन्तु मन फिर भी दसों दिशाओं में भटकता रहता है। ब्रह्मचारी ने ब्रह्मचार्य तो धारण कर लिया लेकिन उसके हृदय में घमण्ड पैदा हो गया। कोई संन्यासी बनकर तीर्थों पर भटकता रहा, पर मन में क्रोध ही भरा रहा, जिसने उसे मूर्ख बना दिया॥ २॥ कुछ लोग पैरों में घुँघरू बाँधकर मन्दिरों में नाचने वाले राम के दास बन जाते हैं परन्तु यह काम भी उनका रोटी कमाने का एक साधन है। किसी ने व्रत-उपवास रखे, नियम एवं षट कर्म किए, किन्तु यह भी उनका मात्र लोक-दिखावा ही है। कुछ लोग मुँह से भजन गाते हैं, नाद बजाते एवं राग अलापते हैं परन्तु मन से हरि-नाम नहीं गाते॥ ३॥ निर्मल जीवन वाले हरि के संतजन खुशी-गम एवं लोभ-मोह से सदैव निर्लिप्त होते हैं। यदि भगवंत दया करे तो मेरे मन को उनकी चरण-धूलि प्राप्त हो जाए। हे नानक ! जब पूर्ण गुरु से साक्षात्कार हुआ तो मन की सारी चिंता दूर हो गई॥ ४॥ मेरा परमेश्वर अन्तर्यामी है, वह मेरे दिल की हरेक बात को जानता है, इसलिए बेकार की बातें भूल चुकी हैं॥ १॥ रहाउ दूसरा॥ ६॥ १५॥

मारू महला ५ ॥ कोटि लाख सरब को राजा जिसु हिरदै नामु तुमारा ॥ जा कउ नामु न दीआ मेरै सतिगुरि से मरि जनमहि गावारा ॥ १ ॥ मेरे सतिगुर ही पति राखु ॥ चीति आवहि तब ही पति पूरी बिसरत रलीऐ खाकु ॥ १ ॥ रहाउ ॥ रूप रंग खुसीआ मन भोगण ते ते छिद्र विकारा ॥ हरि का नामु निधानु कलिआणा सूख सहजु इहु सारा ॥ २ ॥ माइआ रंग बिरंग खिनै महि जिउ बादर की छाइआ ॥ से लाल भए गूड़ै रंगि राते जिन गुर मिलि हरि हरि गाइआ ॥ ३ ॥ ऊच मूच अपार सुआमी अगम दरबारा ॥ नामो वडिआई सोभा नानक खसमु पिआरा ॥ ४ ॥ ७ ॥ १६ ॥

हे परमेश्वर ! जिसके हृदय में तेरा नाम है, वह तो लाखों-करोड़ों सब का राजा है। परन्तु जिसे मेरे सतगुरु ने नाम प्रदान नहीं किया, वह मूर्ख जन्म-मरण में ही फँसा रहता है॥ १॥ हे मेरे सतगुरु ! तू ही मान-सम्मान रखने वाला है। अगर स्मरण आए तो ही पूर्ण सम्मान मिलता है, परन्तु विस्मृत करने से जीव खाक में मिल जाता है॥ १॥ रहाउ॥ दुनिया के जितने भी रूप, रंग, खुशियाँ एवं मन के भोगने वाले पदार्थ हैं, यह सभी अवगुण एवं पाप हैं। हरि का नाम ऐसी निधि

है, जो कल्याणकारी, सुखदायक एवं श्रेष्ठ पदार्थ है॥ २॥ बादल की छाया की तरह माया के रंग-बिरंगे विलास क्षण में ही नाश हो जाते हैं। जिन्होंने गुरु से मिलकर भगवान का गुणगान किया है, वे सत्य के गहरे रंग में लीन होकर लाल हो गए हैं॥ ३॥ सर्वोपरि, अपरंपार स्वामी का दरबार अगम्य है। हे नानक ! प्रभु-नाम की ही बड़ाई एवं शोभा फैली हुई है, वह मालिक अति प्रिय है॥ ४॥ ७॥ १६॥

मारू महला ५ घरु ४ १ओं सतिगुर प्रसादि ॥

ओअंकारि उतपाती ॥ कीआ दिनसु सभ राती ॥ वणु त्रिणु त्रिभवण पाणी ॥ चारि बेद चारे खाणी ॥ खंड दीप सभि लोआ ॥ एक कवावै ते सभि होआ ॥ १ ॥ करणैहारा बूझहु रे ॥ सतिगुरु मिलै त सूझै रे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ त्रै गुण कीआ पसारा ॥ नरक सुरग अवतारा ॥ हउमै आवै जाई ॥ मनु टिकणु न पावै राई ॥ बाझु गुरू गुबारा ॥ मिलि सतिगुर निसतारा ॥ २ ॥ हउ हउ करम कमाणे ॥ ते ते बंध गलाणे ॥ मेरी मेरी धारी ॥ ओहा पैरि लोहारी ॥ सो गुर मिलि एकु पछाणै ॥ जिसु होवै भागु मथाणै ॥ ३ ॥ सो मिलिआ जि हरि मनि भाइआ ॥ सो भूला जि प्रभू भुलाइआ ॥ नह आपहु मूरखु गिआनी ॥ जि करावै सु नामु वखानी ॥ तेरा अंतु न पारावारा ॥ जन नानक सद बलिहारा ॥ ४ ॥ १ ॥ १७ ॥

ओंकार से समूची उत्पति हुई, उसने दिन-रात, वन-वनस्पति, पानी एवं तीन लोकों का निर्माण किया। ऋग्वेद, सामवेद, यजुर्वेद एवं अथर्ववेद, पैदा करने वाले चार स्रोत–अण्डज, जेरज, स्वेदज, उद्भिज, धरती के नवखण्ड, सप्तद्वीप एवं चौदह लोक सब एक (ओंकार) शब्द से ही उत्पन्न हुए॥ १॥ हे जीव ! रचनहार ईश्वर को समझो; परन्तु यदि सतगुरु मिल जाए तो ही सूझ प्राप्त होती है॥ १॥ रहाउ॥ ईश्वर ने रज, तम एवं सत रूपी त्रिगुणों का जग में प्रसार किया और नरक, स्वर्ग एवं अवतारों की सृजना कर दी। अहम् के कारण जीव जन्म-मरण के चक्र में पड़ गया और उसका मन रत्ती भर समय के लिए भी नहीं टिकता। गुरु के बिना अज्ञान रूपी घोर अंधेरा बना रहता है परन्तु सच्चा गुरु मिल जाए तो मोक्ष प्राप्त हो जाता है॥ २॥ जीव अभिमान में जितने भी कर्म करते हैं, यह सभी उनके गले के बन्धन बन जाते हैं। जिन्होंने हृदय में मेरी-मेरी रूपी ममता धारण कर ली है, यही उनके पैरों में लोहे की जंजीर बन गई है। जिसका भाग्य उत्तम होता है, वह गुरु से भेंट करके ईश्वर को पहचान लेता है॥ ३॥ वही उससे मिला है जो प्रभु के मन को भाया है और वही भ्रम में भूला हुआ है, जिसे प्रभु ने भुला दिया है। अपने आप कोई मूर्ख एवं ज्ञानी नहीं है दरअसल जैसा वह (प्रभु) करवाता है, वैसा ही जीव का नाम दुनिया में मशहूर होता है। हे ईश्वर ! तेरा कोई अन्त एवं आर-पार नहीं है, नानक सदैव तुझ पर कुर्बान है॥ ४॥ १॥ १७॥

मारू महला ५ ॥ मोहनी मोहि लीए त्रै गुनीआ ॥ लोभि विआपी झूठी दुनीआ ॥ मेरी मेरी करि कै संची अंत की बार सगल ले छलीआ ॥ १ ॥ निरभउ निरंकारु दइअलीआ ॥ जीअ जंत सगले प्रतिपलीआ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ एकै स्रमु करि गाडी गडहै ॥ एकहि सुपनै दामु न छडहै ॥ राजु कमाइ करी जिनि थैली ता कै संगि न चंचलि चलीआ ॥ २ ॥ एकहि प्राण पिंड ते पिआरी ॥ एक संची तजि बाप महतारी ॥ सुत मीत भ्रात ते गुहजी ता कै निकटि न होई खलीआ ॥ ३ ॥ होइ अउधूत बैठे लाइ तारी ॥ जोगी जती पंडित बीचारी ॥ ग्रिहि मड़ी मसाणी बन महि बसते ऊठि तिना कै लागी पलीआ

॥ ४ ॥ काटे बंधन ठाकुरि जा के ॥ हरि हरि नामु बसिओ जीअ ता कै ॥ साधसंगि भए जन मुकते गति पाई नानक नदरि निहलीआ ॥ ५ ॥ २ ॥ १८ ॥

मोहिनी माया ने त्रिगुणात्मक सब जीवों को मोह लिया है और यह झूठी दुनिया लोभ में ही फँसी हुई है। जिन्होंने मेरी-मेरी कहकर यह माया संचित की थी, अन्तिम समय उनको भी इसने छल लिया है॥ १॥ निर्भय, निराकार, दयालु ईश्वर सब जीव-जन्तुओं का पोषक है॥ १॥ रहाउ॥ किसी ने मेहनत से धन कमाकर गड्डे में दबा दिया है, कोई सपने में भी एक दाम तक नहीं छोड़ता। जिस राजा ने शासन करके थैलियाँ भर ली थीं, यह चंचल माया उसके साथ भी नहीं गई॥ २॥ किसी को यह प्राणों से भी अधिक प्रिय लगती है, किसी ने अपने माता-पिता को छोड़कर माया संचित की और किसी ने पुत्रों, मित्र एवं भाई से छिपाकर इसे रखा, किन्तु यह उसके निकट भी खड़ी नहीं हुई॥ ३॥ जो अवधूत बनकर समाधि लगाकर बैठे हैं, जो योगी, सन्यासी, पण्डित एवं विचारवान हैं और जो व्यक्ति अपने घर, श्मशान एवं जंगल में रहते हैं, यह उठकर उनके भी पीछे लग गई है॥ ४॥ जिसके बन्धन ठाकुर जी ने काट दिए हैं, उसके दिल में हरि नाम स्थित हो गया है। हे नानक! जो व्यक्ति साधु-संगति में बन्धनों से मुक्त होकर गति पा गए हैं, वे प्रभु की कृपा-दृष्टि से निहाल हो गए हैं॥ ५॥ २॥ १८॥

मारू महला ५ ॥ सिमरहु एकु निरंजन सोऊ ॥ जा ते बिरथा जात न कोऊ ॥ मात गरभ महि जिनि प्रतिपारिआ ॥ जीउ पिंडु दे साजि सवारिआ ॥ सोई बिधाता खिनु खिनु जपीऐ ॥ जिसु सिमरत अवगुण सभि ढकीऐ ॥ चरण कमल उर अंतरि धारहु ॥ बिखिआ बन ते जीउ उधारहु ॥ करण पलाह मिटहि बिललाटा ॥ जपि गोविद भरमु भउ फाटा ॥ साधसंगि विरला को पाए ॥ नानकु ता कै बलि बलि जाए ॥ १ ॥ राम नामु मनि तनि आधारा ॥ जो सिमरै तिस का निसतारा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ मिथिआ वसतु सति करि मानी ॥ हितु लाइओ सठ मूड़ अगिआनी ॥ काम क्रोध लोभ मद माता ॥ कउडी बदलै जनमु गवाता ॥ अपना छोडि पराइऐ राता ॥ माइआ मद मन तन संगि जाता ॥ त्रिसन न बूझै करत कलोला ॥ ऊणी आस मिथिआ सभि बोला ॥ आवत इकेला जात इकेला ॥ हम तुम संगि झूठे सभि बोला ॥ पाइ ठगउरी आपि भुलाइओ ॥ नानक किरतु न जाइ मिटाइओ ॥ २ ॥ पसु पंखी भूत अरु प्रेता ॥ बहु बिधि जोनी फिरत अनेता ॥ जह जानो तह रहनु न पावै ॥ थान बिहून उठि उठि फिरि धावै ॥ मनि तनि बासना बहुतु बिसथारा ॥ अहंमेव मूठो बेचारा ॥ अनिक दोख अरु बहुतु सजाई ॥ ता की कीमति कहणु न जाई ॥ प्रभ बिसरत नरक महि पाइआ ॥ तह मात न बंधु न मीत न जाइआ ॥ जिस कउ होत क्रिपाल सुआमी ॥ सो जनु नानक पारगरामी ॥ ३ ॥ भ्रमत भ्रमत प्रभ सरनी आइआ ॥ दीना नाथ जगत पित माइआ ॥ प्रभ दइआल दुख दरद बिदारण ॥ जिसु भावै तिस ही निसतारण ॥ अंध कूप ते काढनहारा ॥ प्रेम भगति होवत निसतारा ॥ साध रूप अपना तनु धारिआ ॥ महा अगनि ते आपि उबारिआ ॥ जप तप संजम इस ते किछु नाही ॥ आदि अंति प्रभ अगम अगाही ॥ नामु देहि मागै दासु तेरा ॥ हरि जीवन पदु नानक प्रभु मेरा ॥ ४ ॥ ३ ॥ १६ ॥

केवल एक परमात्मा का स्मरण करो; जिससे कोई भी खाली हाथ नहीं जाता। जिसने माँ के गर्भ में प्रतिपालन किया, प्राण-शरीर देकर सुन्दर बनाया, उस विधाता को हर पल जपते रहना चाहिए। जिसे स्मरण करने से सब अवगुण ढक जाते हैं। अपने अन्तर्मन में उसके चरणों को धारण

कर लो, आत्मा को विषय-विकारों के वन से बचा लो। करुणा प्रलाप एवं विलाप मिट जाते हैं, ईश्वर का भजन करने से भ्रम-भय समाप्त हो जाते हैं। कोई विरला पुरुष ही साधु-संगति प्राप्त करता है और नानक तो उस पर कुर्बान जाता है॥ १॥ राम नाम ही मन-तन का आधार है, जो स्मरण करता है, उसकी मुक्ति हो जाती है॥ १॥ रहाउ॥ मिथ्या वस्तुओं को जीव ने सत्य मान लिया है, मूर्ख, अज्ञानी ने माया से प्रेम लगाया हुआ है। वह काम, क्रोध, लोभ के नशे में मस्त रहता है और कौड़ी के बदले अपना दुर्लभ जन्म व्यर्थ गंवा देता है। वह अपने धन को छोड़कर पराए धन में लीन रहता है। माया के नशे में मन तन को संग ही समझता है। उसकी तृष्णा नहीं बुझती और आनंद मग्न ही रहता है। उसकी आशा व्यर्थ है और सब वचन झूठे हैं। वह अकेला ही आता है और अकेला ही चला जाता है। हमारे संग हुए तुम्हारे सब वचन झूठे हैं। ईश्वर ने माया का भ्रम डालकर स्वयं ही जीव को कुमार्गगामी किया हुआ है। हे नानक! भाग्य को टाला नहीं जा सकता॥ २॥ वह पशु-पक्षी और भूत-प्रेत इत्यादि अनेक योनियों में भटकता है। वह जिधर भी जाता है, वहाँ उसे रहने के लिए ठिकाना नहीं मिलता। वह स्थानच्युत होकर बार-बार योनियों में भटकता है। उसके मन-तन में वासना का विस्तार बहुत ज्यादा है। अभिमान ने बेचारे जीव को ठग लिया है और अनेक दोषों के कारण बहुत दण्ड भोगता है। उस दण्ड का सही अनुमान नहीं लगाया जा सकता। ईश्वर को विस्मृत करके वह नरक में ही पड़ता है और वहां माता, बन्धु एवं पत्नी कोई सहायक नहीं होता। हे नानक! जिस पर भगवान् की कृपा हो जाती है, उसे मोक्ष प्राप्त हो जाता है॥ ३॥ हे प्रभु! अनेक योनियों में भटकते-भटकते तेरी शरण में आया है। तू दीनानाथ, जगत् का पिता एवं माता है। तू दयालु है और सब दुख-दर्द मिटाने वाला है। जिसे तू चाहता है, उसकी मुक्ति हो जाती है। संसार रूपी अंधकूप में से तू ही बाहर निकालने वाला है और प्रेम-भक्ति द्वारा जीव का निस्तार होता है। तूने स्वयं ही साधु-रूप में शरीर धारण किया है और स्वयं ही माया रूपी महा अग्नि से बचाया है। जप, तप एवं संयम इस जीव से नहीं होता, सृष्टि के आदि एवं अन्त में अगम्य, असीम परमेश्वर का ही अस्तित्व है। नानक विनती करते हैं कि हे हरि! तेरा दास तुझसे नाम की ही कामना करता है, मेरा प्रभु जीवन प्रदाता है॥ ४॥ ३॥ १६॥

मारू महला ५ ॥ कत कउ डहकावहु लोगा मोहन दीन किरपाई ॥ १ ॥ ऐसी जानि पाई ॥ सरणि सूरो गुर दाता राखै आपि वडाई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ भगता का आगिआकारी सदा सदा सुखदाई ॥ २ ॥ अपने कउ किरपा करीअहु इकु नामु धिआई ॥ ३ ॥ नानकु दीनु नामु मागै दुतीआ भरमु चुकाई ॥ ४ ॥ ४ ॥ २० ॥

हे लोगो! क्यों छल कर रहे हो, ईश्वर तो मुझ दीन पर मेहरबान है॥ १॥ मुझे यह ज्ञान हो गया है कि गुरु ही दाता है, शरण में आने वाले की शूरवीर की तरह रक्षा करता है और स्वयं ही कीर्ति प्रदान करता है॥ १॥ रहाउ॥ भक्तवत्सल होने के कारण वह अपने भक्तों की बात मानने वाला है और सदा ही सुख देने वाला है॥ २॥ हे भक्तवत्सल! अपने दास पर कृपा करो कि तेरे नाम का ध्यान करता रहे॥ ३॥ दीन नानक तेरे नाम की ही कामना करता है ताकि मेरा द्वैत भ्रम मिट जाए॥ ४॥ ४॥ २०॥

मारू महला ५ ॥ मेरा ठाकुरु अति भारा ॥ मोहि सेवकु बेचारा ॥ १ ॥ मोहनु लालु मेरा प्रीतम मन प्राना ॥ मोकउ देहु दाना ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सगले मै देखे जोई ॥ बीजउ अवरु न कोई ॥ २ ॥ जीअन प्रतिपालि समाहै ॥ है होसी आहे ॥ ३ ॥ दइआ मोहि कीजै देवा ॥ नानक लागो सेवा ॥ ४ ॥ ५ ॥ २१ ॥

मेरा स्वामी महान् है और मैं तो उसका छोटा-सा सेवक हूँ॥ १॥ मेरा प्रियतम मोहन मुझे मन एवं प्राणों से भी दुलारा है। हे प्रियवर ! मुझे नाम-दान दीजिए॥ १॥ रहाउ॥ मैंने सब अवलम्ब खोज कर देख लिए हैं परन्तु ईश्वर के अलावा अन्य कोई नहीं है॥ २॥ वह सब जीवों का पोषण एवं उनकी संभाल करता है। वह अब (वर्तमान में) भी है, भविष्य में भी होगा और अतीत में भी वही था॥ ३॥ नानक कहते हैं कि हे देवाधिदेव ! मुझ पर दया करो, ताकि तेरी उपासना में लगा रहूँ॥ ४॥ ५॥ २१॥

मारू महला ५ ॥ पतित उधारन तारन बलि बलि बले बलि जाईऐ ॥ ऐसा कोई भेटै संतु जितु हरि हरे हरि धिआईऐ ॥ १ ॥ मोकउ कोइ न जानत कहीअत दासु तुमारा ॥ एहा ओट आधारा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सरब धारन प्रतिपारन इक बिनउ दीना ॥ तुमरी बिधि तुम ही जानहु तुम जल हम मीना ॥ २ ॥ पूरन बिसथीरन सुआमी आहि आइओ पाछै ॥ सगलो भू मंडल खंडल प्रभ तुम ही आछै ॥ ३ ॥ अटल अखइओ देवा मोहन अलख अपारा ॥ दानु पावउ संता संगु नानक रेनु दासारा ॥ ४ ॥ ६ ॥ २२ ॥

हे ईश्वर ! तू पतितों का उद्धारक एवं मोक्षदाता है, मैं तुझ पर कोटि कोटि बलिहारी जाता हूँ। मुझे कोई ऐसा संत मिल जाए, जिसके संग तेरा भजन करता रहूँ॥ १॥ मुझे कोई नहीं जानता, लेकिन तेरा दास कहलाता हूँ, यही मेरा आसरा है॥ १॥ रहाउ॥ हे जगत्पालक, हे सर्वेश्वर ! मुझ दीन की तुझसे एक विनती है, तू अपनी लीला को स्वयं ही जानता है, तू जल है और मैं एक मछली हूँ॥ २॥ हे स्वामी ! यह जगत् तेरा पूर्ण विस्तार है और बड़ी जिज्ञासा से तेरे पीछे आया हूँ। हे प्रभु ! समूचे भूमण्डल एवं ब्रह्माण्ड के खण्डों में तू ही व्यापक है॥ ३॥ हे मोहन, हे देव ! तू अलक्ष्य, अपरंपार, अटल एवं अनश्वर है। नानक वंदना करते हैं कि मुझे संतों की संगत एवं भक्तजनों की चरण-धूल का दान उपलब्ध हो॥ ४॥ ६॥ २२॥

मारू महला ५ ॥ त्रिपति आघाए संता ॥ गुर जाने जिन मंता ॥ ता की किछु कहनु न जाई ॥ जा कउ नाम बडाई ॥ १ ॥ लालु अमोला लालो ॥ अगह अतोला नामो ॥ १ ॥ रहाउ ॥ अविगत सिउ मानिआ मानो ॥ गुरमुखि ततु गिआनो ॥ पेखत सगल धिआनो ॥ तजिओ मन ते अभिमानो ॥ २ ॥ निहचलु तिन का ठाणा ॥ गुर ते महलु पछाणा ॥ अनदिनु गुर मिलि जागे ॥ हरि की सेवा लागे ॥ ३ ॥ पूरन त्रिपति अघाए ॥ सहज समाधि सुभाए ॥ हरि भंडारु हाथि आइआ ॥ नानक गुर ते पाइआ ॥ ४ ॥ ७ ॥ २३ ॥

जिन्होंने गुरु का मंत्र जान लिया है, वे संतजन तृप्त एवं संतुष्ट हो गए हैं। जिसे नाम की बड़ाई मिली है, उसकी महिमा व्यक्त नहीं की जा सकती॥ १॥ मेरा प्यारा प्रभु अमूल्य रत्न है, जिसका नाम अतुल्य एवं गंभीर है॥ १॥ रहाउ॥ जिसका मन ईश्वर के साथ लीन हो गया है, उस गुरुमुख को परमतत्व का ज्ञान प्राप्त हो गया है। उसने अपने मन का अभिमान त्याग दिया है, सबको देखते हुए भी उसका भगवान में ध्यान लगा रहता है॥ २॥ जिन्होंने गुरु द्वारा अपने सच्चे घर को पहचान लिया है, उनका निश्चल ठिकाना बन गया है। वे गुरु से मिलकर रात-दिन जाग्रत रहते हैं और भगवान् की भक्ति में तल्लीन रहते हैं॥ ३॥ वे पूर्ण तृप्त एवं संतुष्ट रहते हैं और सहज स्वभाव ही समाधिस्थ होकर सत्य में लीन रहते हैं। हे नानक ! गुरु की कृपा से हरि-नाम रूपी भण्डार उपलब्ध हुआ है॥ ४॥ ७॥ २३॥

मारू महला ५ घरु ६ दुपदे १ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

छोडि सगल सिआणपा मिलि साध तिआगि गुमानु ॥ अवरु सभु किछु मिथिआ रसना राम राम वखानु ॥ १ ॥ मेरे मन करन सुणि हरि नामु ॥ मिटहि अघ तेरे जनम जनम के कवनु बपुरो जामु ॥ १ ॥ रहाउ ॥ दूख दीन न भउ बिआपै मिलै सुख बिस्रामु ॥ गुर प्रसादि नानकु बखानै हरि भजनु ततु गिआनु ॥ २ ॥ १ ॥ २४ ॥

सब चतुराईयाँ छोड़ दो, साधु महात्मा पुरुषों के साथ मिल कर घमण्ड त्याग दो। अन्य सबकुछ झूठा है, इसलिए जीभ से राम-नाम जपो॥ १॥ हे मन ! कानों से हरि-नाम की स्तुति सुनो; इससे तेरे जन्म-जन्मांतर के पाप मिट जाएँगे, फिर बेचारा यम क्या बिगाड़ सकता है॥ १॥ रहाउ॥ दुख, निर्धनता व भय प्रभावित नहीं करते और सुख शान्ति प्राप्त होती है। नानक कहते हैं कि गुरु-कृपा से हरि-भजन करने से ही परमतत्व का ज्ञान होता है॥ २॥ १॥ २४॥

मारू महला ५ ॥ जिनी नामु विसारिआ से होत देखे खेह ॥ पुत्र मित्र बिलास बनिता तूटते ए नेह ॥ १ ॥ मेरे मन नामु नित नित लेह ॥ जलत नाही अगनि सागर सूखु मनि तनि देह ॥ १ ॥ रहाउ ॥ बिरख छाइआ जैसे बिनसत पवन झूलत मेह ॥ हरि भगति द्रिड़ु मिलु साध नानक तेरै कामि आवत एह ॥ २ ॥ २ ॥ २५ ॥

जिन्होंने हरि-नाम को भुला दिया, उन्हें मिट्टी होते देखा है। पुत्र, मित्र एवं पत्नी जिनके साथ मनुष्य विलास करता है, ये सभी स्नेह टूट जाते हैं॥ १॥ हे मेरे मन ! नित्य नाम स्मरण करो; इससे तृष्णा रूपी अग्नि सागर में नहीं जलना पड़ता और मन-तन को सुख उपलब्ध होता है॥ १॥ रहाउ॥ जैसे पेड़ की छाया नाश हो जाती है, वायु बादलों को उड़ा ले जाती है, वैसे ही दुनिया की रंगरलियाँ हैं। हे नानक ! साधुओं के संग मिलकर भगवान् की भक्ति दृढ़ कर लो, यही तुम्हारे काम आने वाली है॥ २॥ २॥ २५॥

मारू महला ५ ॥ पुरखु पूरन सुखह दाता संगि बसतो नीत ॥ मरै न आवै न जाइ बिनसै बिआपत उसन न सीत ॥ १ ॥ मेरे मन नाम सिउ करि प्रीति ॥ चेति मन महि हरि हरि निधाना एह निरमल रीति ॥ १ ॥ रहाउ ॥ क्रिपाल दइआल गोपाल गोबिद जो जपै तिसु सीधि ॥ नवल नवतन चतुर सुंदर मनु नानक तिसु संगि बीधि ॥ २ ॥ ३ ॥ २६ ॥

सुख देने वाला पूर्ण परमेश्वर निरंतर भक्तों के अंग-संग रहता है। वह जन्म-मरण से रहित है, अनश्वर है और उस पर गर्मी एवं सर्दी का प्रभाव नहीं पड़ता॥ १॥ हे मेरे मन ! प्रभु-नाम से प्रीति करो; मन में हरि-नाम रूपी निधि को याद करो, यही निर्मल जीवन आचरण है॥ १॥ रहाउ॥ जो दयालु, कृपालु ईश्वर का नाम जपता है, उसे सर्व सिद्धियाँ उपलब्ध हो जाती हैं। हे नानक ! यह मन नवल, नवनूतन, चतुर एवं सुन्दर प्रभु के संग ही बिंध गया है॥ २॥ ३॥ २६॥

मारू महला ५ ॥ चलत बैसत सोवत जागत गुर मंत्रु रिदै चितारि ॥ चरण सरण भजु संगि साधू भव सागर उतरहि पारि ॥ १ ॥ मेरे मन नामु हिरदै धारि ॥ करि प्रीति मनु तनु लाइ हरि सिउ अवर सगल विसारि ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जीउ मनु तनु प्राण प्रभ के तू आपन आपु निवारि ॥ गोविद भजु सभि सुआरथ पूरे नानक कबहु न हारि ॥ २ ॥ ४ ॥ २७ ॥

हे मानव! चलते-बैठते, सोते-जागते हरदम हृदय में गुरु-मंत्र को याद करो। संतों के संग प्रभु-चरणों का भजन करो, भवसागर से मुक्ति संभव है॥ १॥ हे मेरे मन! हृदय में प्रभु-नाम को धारण करो; अन्य सबकुछ भुलाकर मन-तन से भगवान से प्रीति करो॥ १॥ रहाउ॥ यह आत्मा, मन, तन, प्राण सब ईश्वर की देन है, इसलिए तू अपना अहम् त्याग दे। हे नानक! गोविंद का भजन करने से सभी मनोरथ पूर्ण होते हैं और कभी भी निराश नहीं होना पड़ता ॥२॥ ४॥ २७॥

मारू महला ५ ॥ तजि आपु बिनसी तापु रेण साधू थीउ ॥ तिसहि परापति नामु तेरा करि क्रिपा जिसु दीउ ॥ १ ॥ मेरे मन नामु अंम्रितु पीउ ॥ आन साद बिसारि होछे अमरु जुगु जुगु जीउ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ नामु इक रस रंग नामा नामि लागी लीउ ॥ मीतु साजनु सखा बंधपु हरि एकु नानक कीउ ॥ २ ॥ ५ ॥ २८ ॥

हे जीव! अहं-भावना त्याग दो, हर प्रकार की तकलीफ मिट जाएगी, इसलिए साधुओं की चरणरज बन जाओ। हे परमात्मा! तेरा नाम उसे ही प्राप्त होता है, जिसे तू कृपा करके देता है॥ १॥ हे मेरे मन! नामामृत का पान करो; अन्य तुच्छ स्वाद भुला दो और अमर होकर युग-युग जीओ॥ १॥ रहाउ॥ जिसकी प्रभु-नाम से लगन लगी रहती है, उसके लिए केवल नाम ही पदार्थों के तमाम रस एवं दुनिया के रंग हैं। हे नानक! एक ईश्वर को ही मैंने अपना मित्र, साजन, सखा एवं बंधु बनाया है॥ २॥ ५॥ २८॥

मारू महला ५ ॥ प्रतिपालि माता उदरि राखै लगनि देत न सेक ॥ सोई सुआमी ईहा राखै बूझु बुधि बिबेक ॥ १ ॥ मेरे मन नाम की करि टेक ॥ तिसहि बूझु जिनि तू कीआ प्रभु करण कारण एक ॥ १ ॥ रहाउ ॥ चेति मन महि तजि सिआणप छोडि सगले भेख ॥ सिमरि हरि हरि सदा नानक तरे कई अनेक ॥ २ ॥ ६ ॥ २९ ॥

जो माता के उदर में जीव का प्रतिपालन करता है, कोई दुख-दर्द नहीं लगने देता, वही स्वामी इहलोक में रक्षा करता है, अपनी विवेक बुद्धि से इस तथ्य को समझ लो॥ १॥ हे मेरे मन! प्रभु-नाम का सहारा लो; जिसने तुझे बनाया है, उसे समझो, केवल एक परमात्मा ही रचयिता है॥ १॥ रहाउ॥ सब ढोंग एवं चतुराईयाँ छोड़कर मन में भगवान को याद करो। हे नानक! सदैव परमात्मा की उपासना करो; जिसे स्मरण करके अनेक जीव भवसागर से तैर गए हैं॥ २॥ ६॥ २९॥

मारू महला ५ ॥ पतित पावन नामु जा को अनाथ को है नाथु ॥ महा भउजल माहि तुलहो जा को लिखिओ माथ ॥ १ ॥ डूबे नाम बिनु घन साथ ॥ करण कारणु चिति न आवै दे करि राखै हाथ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ साधसंगति गुण उचारण हरि नाम अंम्रित पाथ ॥ करहु क्रिपा मुरारि माधउ सुणि नानक जीवै गाथ ॥ २ ॥ ७ ॥ ३० ॥

जिसका नाम पतितपावन है, जो अनाथ जीवों का नाथ है, संसार-सागर में से पार करवाने के लिए तुलहा है, उसे ही मिलता है, जिसके मस्तक पर उत्तम भाग्य लिखा होता है॥ १॥ प्रभु-नाम के बिना अनेक काफिले भवसागर में डूब गए हैं, जो हाथ देकर रक्षा करता है, वह स्रष्टा उन्हें याद ही नहीं आता। साधुओं की सभा में भगवान का गुणगान ही नामामृत को पाने का मार्ग है। नानक विनय करते हैं कि हे ईश्वर! कृपा करो, ताकि तेरी कथा सुनकर जीता रहूँ॥ २॥ ७॥ ३०॥

मारू अंजुली महला ५ घरु ७ १ओं सतिगुर प्रसादि ॥

संजोगु विजोगु धुरहु ही हूआ ॥ पंच धातु करि पुतला कीआ ॥ साहै कै फुरमाइअड़ै जी देही विचि जीउ आइ पइआ ॥ १ ॥ जिथै अगनि भखै भड़हारे ॥ ऊरध मुख महा गुबारे ॥ सासि सासि समाले सोई ओथै खसमि छडाइ लइआ ॥ २ ॥ विचहु गरभै निकलि आइआ ॥ खसमु विसारि दुनी चितु लाइआ ॥ आवै जाइ भवाईऐ जोनी रहणु न कितही थाइ भइआ ॥ ३ ॥ मिहरवानि रखि लइअनु आपे ॥ जीअ जंत सभि तिस के थापे ॥ जनमु पदारथु जिणि चलिआ नानक आइआ सो परवाणु थिआ ॥ ४ ॥ १ ॥ ३१ ॥

{इस शब्द का शीर्षक अंजुली है। अंजुली का अर्थ है दोनों हाथ जोड़कर भगवान के आगे की गई प्रार्थना}

(आत्मा-परमात्मा का) संयोग एवं वियोग ईश्वरेच्छा से ही निश्चित हुआ है। पाँच तत्वों से मानव-शरीर बनाया और फिर ईश्वर के हुक्म से जीव आकर शरीर में प्रवेश कर गया॥ १॥ जहाँ माता के गर्भ में भट्ठी की तरह अग्नि जलती थी, यह जीव वहाँ घोर अंधेरे में उलटे मुँह पड़ा हुआ था। उसने श्वास-श्वास से ईश्वर को याद किया और वहाँ मालिक ने उसे विपत्ति में से बचा लिया था॥ २॥ जब माता के गर्भ में से बाहर निकलकर आया अर्थात् जन्म हुआ तो उसने भगवान को भुलाकर दुनिया के साथ चित्त लगा लिया। परिणामस्वरूप वह जन्मता मरता और अनेक योनियों में भटकता रहता है, और उसे किसी भी स्थान पर निवास नहीं मिला॥ ३॥ मेहरबान रब ने स्वयं ही उसे बचा लिया है चूंकि सभी जीव-जन्तु उसके ही पैदा किए हुए हैं। हे नानक ! जो अपने दुर्लभ जन्म की बाजी को जीतकर यहाँ से गया है, उसका ही जन्म लेना मंजूर हुआ है॥ ४॥ १॥ ३१ ॥

मारू महला ५ ॥ वैदो न वाई भैणो न भाई एको सहाई रामु हे ॥ १ ॥ कीता जिसो होवै पापां मलो धोवै सो सिमरहु परधानु हे ॥ २ ॥ घटि घटे वासी सरब निवासी असथिरु जा का थानु हे ॥ ३ ॥ आवै न जावै संगे समावै पूरन जा का कामु हे ॥ ४ ॥ भगत जना का राखणहारा ॥ संत जीवहि जपि प्रान अधारा ॥ करन कारन समरथु सुआमी नानकु तिसु कुरबानु हे ॥ ५ ॥ २ ॥ ३२ ॥

जग में न कोई वैद्य, न दवाई, न कोई शुभचिंतक एवं न ही कोई बहिन एवं भाई है, केवल एक राम ही सच्चा सहायक है॥ १॥ जिसका किया सब हो रहा है, जो पापों की मैल को धो देता है, उस सर्वेश्वर को मन में याद करो॥ २॥ जो घट-घट में वास करता है, सर्वव्यापी है, जिसका स्थान हमेशा अटल है॥ ३॥ जो कहीं आता जाता नहीं है, सबके संग समाया हुआ है, जिसका किया हुआ काम पूर्ण होता है॥ ४॥ वह भक्तजनों का रखवाला है, संतजन उस प्राणाधार को जप कर ही जीते हैं। नानक तो सर्वकर्ता समर्थ स्वामी पर सर्वदा कुर्बान है॥ ५॥ २॥ ३२॥

१ओं सतिगुर प्रसादि ॥ मारू महला ९ ॥ हरि को नामु सदा सुखदाई ॥ जा कउ सिमरि अजामलु उधरिओ गनिका हू गति पाई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ पंचाली कउ राज सभा महि राम नाम सुधि आई ॥ ता को दूखु हरिओ करुणा मै अपनी पैज बढाई ॥ १ ॥ जिह नर जसु किरपा निधि गाइओ ता कउ भइओ सहाई ॥ कहु नानक मै इही भरोसै गही आनि सरनाई ॥ २ ॥ १ ॥

प्रभु का नाम सदा सुखदायक है, जिसे स्मरण करने से पापी अजामल का उद्धार हो गया और गणिका ने भी मोक्ष प्राप्त कर लिया॥ १॥ रहाउ॥ जब द्रौपदी को कौरवों की राजसभा में राम-नाम स्मरण आया तो करुणामय भगवान ने उसका दुख दूर करके अपनी गरिमा में वृद्धि की॥ १॥

जिस व्यक्ति ने भी कृपानिधि का यशगान किया है, वह उसका सहायक बना है। हे नानक! इसी भरोसे पर मैंने भी भगवान की शरण ले ली है॥ २॥ १॥

मारू महला ६ ॥ अब मै कहा करउ री माई ॥ सगल जनमु बिखिअन सिउ खोइआ सिमरिओ नाहि कन्हाई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ काल फास जब गर महि मेली तिह सुधि सभ बिसराई ॥ राम नाम बिनु या संकट महि को अब होत सहाई ॥ १ ॥ जो संपति अपनी करि मानी छिन महि भई पराई ॥ कहु नानक यह सोच रही मनि हरि जसु कबहू न गाई ॥ २ ॥ २ ॥

हे माँ! अब मैं क्या करूँ? चूंकि सारा जन्म विषय-विकारों में ही गंवा दिया लेकिन भगवान् को याद नहीं किया॥ १॥ रहाउ॥ जब काल ने मेरे गले में फंदा डाला तो उसने सारी होश भुला दी। इस संकट की घड़ी में राम नाम के बिना अन्य कौन मददगार हो सकता है॥ १॥ जिस संपति को अपनी मान बैठा था, वह क्षण में ही पराई हो गई है। हे नानक! मन में यही सोच रहा हूँ, भगवान् का यशोगान कभी नहीं किया॥ २॥ २॥

मारू महला ६ ॥ माई मै मन को मानु न तिआगिओ ॥ माइआ के मदि जनमु सिराइओ राम भजनि नही लागिओ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जम को डंडु परिओ सिर ऊपरि तब सोवत तै जागिओ ॥ कहा होत अब कै पछुताए छूटत नाहिन भागिओ ॥ १ ॥ इह चिंता उपजी घट महि जब गुर चरनन अनुरागिओ ॥ सुफलु जनमु नानक तब हूआ जउ प्रभ जस महि पागिओ ॥ २ ॥ ३ ॥

हे माँ! मैंने अपने मन का अभिमान नहीं छोड़ा। माया के नशे में सारा जन्म बिता लिया है, लेकिन राम के भजन में मन नहीं लगाया॥ १॥ रहाउ॥ जब यम का दण्ड सिर पर पड़ा तो अज्ञान की निद्रा से जागा। अब पछताने से भला क्या हो सकता है? चूंकि भागकर भी यम से छूट नहीं सकता॥ १॥ जब मन में यह चिंता पैदा हो गई तो गुरु चरणों से प्रेम लगा लिया। हे नानक! मेरा जन्म तभी सफल हुआ है, जब ईश्वर के यश में रत हुआ॥ २॥ ३॥

मारू असटपदीआ महला १ घरु १ ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

बेद पुराण कथे सुणे हारे मुनी अनेका ॥ अठसठि तीरथ बहु घणा भ्रमि थाके भेखा ॥ साचो साहिबु निरमलो मनि मानै एका ॥ १ ॥ तू अजरावरु अमरु तू सभ चालणहारी ॥ नामु रसाइणु भाइ लै परहरि दुखु भारी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ हरि पड़ीऐ हरि बुझीऐ गुरमती नामि उधारा ॥ गुरि पूरै पूरी मति है पूरै सबदि बीचारा ॥ अठसठि तीरथ हरि नामु है किलविख काटणहारा ॥ २ ॥ जलु बिलोवै जलु मथै ततु लोड़ै अंधु अगिआना ॥ गुरमती दधि मथीऐ अंम्रितु पाईऐ नामु निधाना ॥ मनमुख ततु न जाणनी पसू माहि समाना ॥ ३ ॥ हउमै मेरा मरी मरु मरि जंमै वारो वार ॥ गुर कै सबदे जे मरै फिरि मरै न दूजी वार ॥ गुरमती जगजीवनु मनि वसै सभि कुल उधारणहार ॥ ४ ॥ सचा वखरु नामु है सचा वापारा ॥ लाहा नामु संसारि है गुरमती वीचारा ॥ दूजै भाइ कार कमावणी नित तोटा सैसारा ॥ ५ ॥ साची संगति थानु सचु सचे घर बारा ॥ सचा भोजनु भाउ सचु सचु नामु अधारा ॥ सची बाणी संतोखिआ सचा सबदु वीचारा ॥ ६ ॥ रस भोगण पातिसाहीआ दुख सुख संघारा ॥ मोटा नाउ धराईऐ गलि अउगण भारा ॥ माणस दाति न होवई तू दाता सारा ॥ ७ ॥ अगम अगोचरु तू धणी अविगतु अपारा ॥ गुर सबदी दरु जोईऐ मुकते भंडारा ॥ नानक मेलु न चूकई साचे वापारा ॥ ८ ॥ १ ॥

वेद-पुराण की कथा करने-सुनने वाले अनेक मुनिजन भी हार गए हैं। अनेक वेषधारी साधु अड़सठ तीर्थों पर भटकते हुए थक चुके हैं। एक परम-सत्य परमेश्वर ही निर्मल है, जिसका ध्यान करके यह मन प्रसन्न होता है॥ १॥ हे ईश्वर ! तू अजर अमर है, शेष सारी दुनिया चलायमान है। जो श्रद्धा भावना से नाम-औषधि लेता है, उसका भारी दुख नाश हो जाता है॥ १॥ रहाउ॥ ईश्वर का पाठ करो, उसे ही समझो, गुरु-मतानुसार हरि-नाम का जाप करने से ही उद्धार होता है, पूर्ण गुरु का उपदेश पूर्ण है, जो पूर्ण शब्द का चिंतन करता है। हरि-नाम ही अड़सठ तीर्थ का स्नान है, जो सब पापों को काटनेवाला है॥ २॥ अंधा अज्ञानी जीव माखन की लालसा करता है, पर वह जल बिलोता है और जल का ही मंथन करता रहता है। यदि गुरु उपदेश रूपी दही का मंथन किया जाए तो सुखों की निधि नामामृत प्राप्त होता है। मनमुखी जीव पशु के समान है, जो नाम-तत्व से अनभिज्ञ है॥ ३॥ अहम् में लीन रहने वाला जन्म-मरण के चक्र में फँसा रहता है। यदि गुरु के शब्द द्वार मरे तो उसकी मुक्ति हो जाती है। यदि गुरु-मतानुसार जग का जीवन परमेश्वर मन में वास कर जाए तो समूची वंशावलि का उद्धार हो जाता है॥ ४॥ प्रभु का नाम ही सच्चा सौदा है और इस सौदे का व्यापार ही सच्चा है, संसार में प्रभु का नाम-स्मरण ही सच्चा लाभ है परन्तु इस तथ्य का ज्ञान गुरु-मतानुसार ही होता है। द्वैतभाव में कोई कार्य करने से संसार में निरंतर क्षति होती रहती है॥ ५॥ जो व्यक्ति अच्छी संगत, पावन स्थान एवं सच्चे घर-बार में रहता है। वहाँ वह हरि-नाम रूपी सच्चा भोजन ही ग्रहण करता है, सत्य में ही आस्था रखता है और सत्य नाम ही उसका जीवनाधार होता है। सच्ची वाणी द्वारा ही उसे संतोष प्राप्त होता है और वह सच्चे शब्द का चिंतन करता रहता है॥ ६॥ राज-शासन के ऐश्वर्य-सुख भोगने पर भी दुख-सुख ने जीव को नष्ट कर दिया है। बड़ा नाम रखवाने से मनुष्य के गले में अवगुणों का भारी पत्थर पड़ जाता है। हे ईश्वर ! मनुष्य भला क्या दे सकता है, केवल तू ही संसार को देने वाला है॥ ७॥ हे मालिक ! तू अगम्य, अगोचर, अनश्वर एवं अपार है। यदि शब्द-गुरु द्वारा तेरे द्वार की तलाश की जाए तो मुक्ति का भण्डार प्राप्त हो जाता है। हे नानक ! सच्चा व्यापार करने से मिलाप कभी नहीं टूटता॥ ८॥ १॥

मारू महला १ ॥ बिखु बोहिथा लादिआ दीआ समुंद मंझारि ॥ कंधी दिसि न आवई ना उरवारु न पारु ॥ वंझी हाथि न खेवटू जलु सागरु असरालु ॥ १ ॥ बाबा जगु फाथा महा जालि ॥ गुर परसादी उबरे सचा नामु समालि ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सतिगुरू है बोहिथा सबदि लंघावणहारु ॥ तिथै पवणु न पावको ना जलु ना आकारु ॥ तिथै सचा सचि नाइ भवजल तारणहारु ॥ २ ॥ गुरमुखि लंघे से पारि पए सचे सिउ लिव लाइ ॥ आवा गउणु निवारिआ जोती जोति मिलाइ ॥ गुरमती सहजु ऊपजै सचे रहै समाइ ॥ ३ ॥ सपु पिड़ाई पाईऐ बिखु अंतरि मनि रोसु ॥ पूरबि लिखिआ पाईऐ किस नो दीजै दोसु ॥ गुरमुखि गारड़ु जे सुणे मंने नाउ संतोसु ॥ ४ ॥ मागरमछु फहाईऐ कुंडी जालु वताइ ॥ दुरमति फाथा फाहीऐ फिरि फिरि पछोताइ ॥ जंमण मरणु न सुझई किरतु न मेटिआ जाइ ॥ ५ ॥ हउमै बिखु पाइ जगतु उपाइआ सबदु वसै बिखु जाइ ॥ जरा जोहि न सकई सचि रहै लिव लाइ ॥ जीवन मुकतु सो आखीऐ जिसु विचहु हउमै जाइ ॥ ६ ॥ धंधै धावत जगु बाधिआ ना बूझै वीचारु ॥ जंमण मरणु विसारिआ मनमुख मुगधु गवारु ॥ गुरि राखे से उबरे सचा सबदु वीचारि ॥ ७ ॥ सूहटु पिंजरि प्रेम कै बोलै बोलणहारु ॥ सचु चुगै अंम्रितु पीऐ उडै त एका वार ॥ गुरि मिलिऐ खसमु पछाणीऐ कहु नानक मोख दुआरु ॥ ८ ॥ २ ॥

विकारों का जहाज लादकर संसार-समुद्र में उतार दिया है। इस संसार-समुद्र का कोई किनारा नजर नहीं आता और न ही कोई आर-पार है। हाथ में न कोई चप्पू है और न ही कोई इसे चलाने वाला खेवट है और इस सागर का जल बड़ा भयानक है॥ १॥ हे बाबा, यह जगत् महाजाल में फँसा हुआ है। यदि शाश्वत हरिनाम का स्मरण करे तो गुरु कृपा से यह उबर सकता है॥ १॥ रहाउ॥ सतगुरु जहाज है, शब्द-गुरु पार करवाने वाला है। इस जहाज में पवन, अग्नि, जल नहीं है और न ही कोई आकार है। वहाँ शाश्वत हरि-नाम ही भवसागर से पार करवाने वाला है॥ २॥ गुरुमुख सत्य से लगन लगाकर पार हो गए हैं। उनका आवागमन मिट गया है और उनकी ज्योति परम-ज्योति में विलीन हो गई है। गुरु-मतानुसार सहजावस्था उत्पन्न होती है और वे सत्य में ही विलीन रहते हैं॥ ३॥ अगर किसी साँप को पिटारी में डाल दिया जाए तो भी उसके भीतर जहर एवं मन में क्रोध भरा रहता है। जीव अपने कर्मों का फल ही भोगता है, इसलिए किसी दूसरे को दोष मत दीजिए। अगर कोई जीव गुरु से गारूड़-मंत्र सुन ले, नाम का मनन करे तो उसे संतोष प्राप्त हो जाता है॥ ४॥ जैसे पानी में जाल अथवा कुण्डी में माँस लगाकर मगरमच्छ को फँसा लिया जाता है, वैसे ही दुर्मति के कारण यम की फाँसी में फँसा हुआ जीव पुनःपुनः पछताता है। जीव को जन्म-मरण के चक्र की कोई सूझ नहीं होती और किए हुए कर्मों का फल कभी भी मिटाया नहीं जा सकता॥ ५॥ ईश्वर ने अहम् रूपी जहर डालकर जगत् को पैदा किया है, परन्तु यदि मन में शब्द स्थित हो जाए तो यह जहर दूर हो जाता है। जिसका परम-सत्य में ध्यान लगा रहता है, उसे बुढ़ापा प्रभावित नहीं करता। जीवन्मुक्त वही कहलवाता है, जिसके मन का अभिमान दूर हो जाता है॥ ६॥ माया ने संसारी धंधों में व्यस्त जगत् को बन्धनों में बाँध लिया है परन्तु यह सत्य-विचार को नहीं बूझता। मनमुखी जीव जन्म-मरण को भुलाकर मूर्ख एवं गंवार बना हुआ है। जिन्होंने सच्चे शब्द का चिंतन किया है, गुरु ने उनकी रक्षा की है और उनका छुटकारा हो गया है॥ ७॥ शरीर रूपी पिंजरे में बैठा जीव रूपी तोता प्रभु-प्रेम के वही बोल-बोलता है, जो बोल गुरु बोलता है। वह नाम रूपी सच्चा चोगा चुगता है और नामामृत पान करता है। वह शरीर रूपी पिंजरे में से एक बार ही उड़ता है अर्थात् जन्म-मरण के चक्र से छूट जाता है। हे नानक! यदि गुरु मिल जाए तो परमात्मा की पहचान हो जाती है और मोक्ष उपलब्ध हो जाता है॥ ८॥ २॥

मारू महला १ ॥ सबदि मरै ता मारि मरु भागो किसु पहि जाउ ॥ जिस कै डरि भै भागीऐ अंम्रितु ता को नाउ ॥ मारहि राखहि एकु तू बीजउ नाही थाउ ॥ १ ॥ बाबा मै कुचीलु काचउ मतिहीन ॥ नाम बिना को कछु नही गुरि पूरै पूरी मति कीन ॥ १ ॥ रहाउ ॥ अवगणि सुभर गुण नही बिनु गुण किउ घरि जाउ ॥ सहजि सबदि सुखु ऊपजै बिनु भागा धनु नाहि ॥ जिन कै नामु न मनि वसै से बाधे दूख सहाहि ॥ २ ॥ जिनी नामु विसारिआ से कितु आए संसारि ॥ आगै पाछै सुखु नही गाडे लादे छारु ॥ विछुड़िआ मेला नही दूखु घणो जम दुआरि ॥ ३ ॥ अगै किआ जाणा नाहि मै भूले तू समझाइ ॥ भूले मारगु जो दसे तिस कै लागउ पाइ ॥ गुर बिनु दाता को नही कीमति कहणु न जाइ ॥ ४ ॥ साजनु देखा ता गलि मिला साचु पठाइओ लेखु ॥ मुखि धिमाणै धन खड़ी गुरमुखि आखी देखु ॥ तुधु भावै तू मनि वसहि नदरी करमि विसेखु ॥ ५ ॥ भूख पिआसो जे भवै किआ तिसु मागउ देइ ॥ बीजउ सूझै को नही मनि तनि पूरनु देइ ॥ जिनि कीआ तिनि देखिआ आपि वडाई देइ ॥ ६ ॥ नगरी नाइकु नवतनो बालकु लील अनूपु ॥ नारि न पुरखु न पंखणू साचउ चतुरु सरूपु ॥ जो तिसु भावै सो थीऐ तू दीपकु तू धूपु ॥ ७ ॥ गीत साद चाखे सुणे बाद साद तनि रोगु ॥ सचु भावै साचउ चवै छूटै सोग विजोगु ॥ नानक नामु न वीसरै जो तिसु भावै सु होगु ॥ ८ ॥ ३ ॥

शब्द से मृत्यु को मारो; मृत्यु से भागकर किधर जाओगे ? जिसके डर से सब भय भाग जाते हैं, उसका नाम अमृत है। हे ईश्वर ! मारने-बचाने वाला केवल तू ही है, तेरे अलावा अन्य कोई नहीं है॥ १॥ हे बाबा ! मैं मैला, झूठा एवं मतिहीन हूँ, पूर्ण गुरु ने यह पूर्ण उपदेश दिया है कि नाम के बिना कुछ भी नहीं॥ १॥ रहाउ॥ मैं अवगुणों से भरा हुआ हूँ, मुझमें कोई शुभ गुण नहीं है, गुणों के बिना भला सच्चे घर कैसे जा सकता हूँ। सहजावस्था में शब्द द्वारा मन में सुख उत्पन्न होता है, परन्तु भाग्य के बिना सच्चा धन प्राप्त नहीं होता। जिनके मन में नाम अवस्थित नहीं होता, वे यम द्वार में बंधे हुए कष्ट भोगते रहते हैं॥ २॥ जिन्होंने प्रभु-नाम को विस्मृत कर दिया है, वे क्योंकर दुनिया में आए हैं, उन्हें लोक-परलोक कहीं भी सुख उपलब्ध नहीं होता, उन्होंने अपने ठेले पाप रूपी राख से लाद लिए हैं। जिसका सत्य से वियोग हो जाए, उसका पुनः मिलाप नहीं होता और वह यम के द्वार पर बहुत दुख भोगता है॥ ३॥ हे ईश्वर ! मैं नहीं जानता कि आगे मेरे साथ क्या होगा ? मुझ भूले हुए को तू ही सूझ प्रदान कर। मुझ भूले हुए को जो सन्मार्ग बताएगा, मैं उसके चरणों में लग जाऊँगा। गुरु के बिना अन्य कोई दाता नहीं और उसकी कीमत आँकी नहीं जा सकती॥ ४॥ यदि मैं अपने साजन के दर्शन कर लूँ तो उसे आलिंगन होकर मिलूँगा। उस सच्चे को मैंने एक पत्र भी भेजा है। हे जीव-स्त्री ! तू मुँह लटका कर क्यों खड़ी है, गुरु के माध्यम से पति-प्रभु को अपनी आँखों से देख। हे प्रभु ! यदि तुझे उपयुक्त लगे तो मन में आ बसता है और तेरी कृपा-दृष्टि हो जाती है॥ ५॥ जो स्वयं भूखा-प्यासा भटकता रहता है, उससे क्या माँगा जाए जो वह दे सकता है। मन-तन में बसने वाले पूर्ण परमेश्वर के अलावा अन्य कोई नहीं सूझ रहा, वही सबकुछ देता है। जिसने बनाया है, उसने ही देखरेख की है, वह स्वयं ही बड़ाई देता है॥ ६॥ काया रूपी नगरी का स्वामी नवनूतन है और उसकी जगत् रूपी अद्भुत लीला बाल-लीला के समान है। वह सच्चा परमात्मा बड़ा चतुर एवं अति सुन्दर है, वह न नारी है, न पुरुष है और न कोई पक्षी है। जो उसे मंजूर है, वही होता है। हे परमेश्वर ! तू ही सूर्य रूपी दीपक है और तू ही चन्दन रूपी सुगन्धि है॥ ७॥ जिन्होंने बेकार के गीत सुने हैं, पदार्थों के स्वाद चखे हैं, इन व्यर्थ स्वादों ने उनके मन में रोग पैदा कर दिया है। जो सत्य से प्रेम करता है, सदा सत्य बोलता है, उसके सब शोक-वियोग मिट जाते हैं। हे नानक ! परमात्मा का नाम कभी विस्मृत न हो; जो उसे मंजूर है, वही होगा॥ ८॥ ३॥

मारू महला १ ॥ साची कार कमावणी होरि लालच बादि ॥ इहु मनु साचै मोहिआ जिहवा सचि सादि ॥ बिनु नावै को रसु नही होरि चलहि बिखु लादि ॥ १ ॥ ऐसा लाला मेरे लाल को सुणि खसम हमारे ॥ जिउ फुरमावहि तिउ चला सचु लाल पिआरे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ अनदिनु लाले चाकरी गोले सिरि मीरा ॥ गुर बचनी मनु वेचिआ सबदि मनु धीरा ॥ गुर पूरे साबासि है काटै मन पीरा ॥ २ ॥ लाला गोला धणी को किआ कहउ वडिआईऐ ॥ भाणै बखसे पूरा धणी सचु कार कमाईऐ ॥ विछुड़िआ कउ मेलि लए गुर कउ बलि जाईऐ ॥ ३ ॥ लाले गोले मति खरी गुर की मति नीकी ॥ साची सुरति सुहावणी मनमुख मति फीकी ॥ मनु तनु तेरा तू प्रभू सचु धीरक धुर की ॥ ४ ॥ साचै बैसणु उठणा सचु भोजनु भाखिआ ॥ चिति सचै वितो सचा साचा रसु चाखिआ ॥ साचै घरि साचै रखे गुर बचनि सुभाखिआ ॥ ५ ॥ मनमुख कउ आलसु घणो फाथे ओजाड़ी ॥ फाथा चुगै नित चोगड़ी लगि बंधु विगाड़ी ॥ गुर परसादी मुकतु होइ साचे निज ताड़ी ॥ ६ ॥ अनहति लाला बेधिआ प्रभ हेति पिआरी ॥ बिनु साचे जीउ जलि बलउ झूठे वेकारी ॥ बादि कारा सभि छोडीआ साची तरु तारी ॥ ७ ॥ जिनी नामु

विसारिआ तिना ठउर न ठाउ ॥ लालै लालचु तिआगिआ पाइआ हरि नाउ ॥ तू बखसहि ता मेलि लैहि नानक बलि जाउ ॥ ८ ॥ ४ ॥

सच्चा कार्य करना चाहिए, क्योंकि अन्य सब लालच बेकार हैं। यह मन सत्य ने मोह लिया है और जिह्वा सत्य के स्वाद में ही लीन रहती है। प्रभु-नाम के बिना कोई आनंद नहीं, ज्ञानहीन लोग विकार रूपी विष लादकर जगत् से चले जाते हैं॥ १॥ हे मेरे मालिक ! मेरी विनती सुनो; मैं तेरा ऐसा आज्ञाकारी गुलाम हूँ, तू जैसे हुक्म करता है, वैसे ही पालन करता हूँ॥ १॥ रहाउ॥ तेरा ही आदेश है और इस गुलाम ने दिन-रात तेरी ही चाकरी करनी है। मैंने गुरु के वचनों द्वारा अपना मन उसे बेच दिया है, शब्द गुरु द्वारा मन को धैर्य हो गया है। पूर्ण गुरु को मेरी शाबाश है, जिसने मन की पीड़ा दूर कर दी है॥ २॥ जो मालिक का गुलाम एवं दास है, उसकी भला क्या प्रशंसा करूँ ? पूर्ण मालिक अपनी रज़ा से अनुकंपा करता है तो सच्चा कार्य हो पाता है। मैं गुरु पर कुर्बान जाता हूँ जो बिछुड़े जीवों का मिलाप करवा देता है॥ ३॥ गुरु की निर्मल मति के कारण सेवक की मति भी भली हो गई है। सेवक की शुद्ध सुरति सुन्दर है किन्तु स्वेच्छाचारी की मति हीन है। हे प्रभु ! यह मन-तन सब तेरा है और आरम्भ से ही सच्चा धैर्य दिया हुआ है॥ ४॥ मेरा उठना-बैठना, भोजन एवं बातचीत सब सत्य के अंतर्गत है। मेरा मन सत्य को ही याद करता है, सत्य ही मेरी धन-राशि है और सत्य का अमृत ही चखा है। गुरु के वचन द्वारा नाम-स्मरण करने से सच्चे प्रभु ने अपने सच्चे घर में रख लिया है॥ ५॥ स्वेच्छाचारी जीव बड़ा आलस्य करता है, इसलिए झंझटों में उलझा रहता है। वह नित्य सांसारिक पदार्थ रूपी चोगा चुगता रहता है और इन पदार्थों में संलग्न होकर उसने ईश्वर से संबंध बिगाड़ लिया है। परन्तु गुरु की कृपा से सत्य में ध्यान लगाने से उसकी मुक्ति हो जाती है॥ ६॥ अनाहद ध्वनि ने सेवक को बिंध लिया है, प्रभु-प्रेम में यही उसे प्रिय है। सत्य के बिना झूठे एवं विकारी जीवों का दिल तृष्णाग्नि में ही जलता है। सेवक व्यर्थ कार्य छोड़कर सत्य का गुणगान कर संसार सागर से पार हो गया है॥ ७॥ जिन्होंने परमात्मा को विस्मृत कर दिया है, उनका कोई ठिकाना नहीं। सेवक ने लालच को त्यागकर हरि-नाम पा लिया है। नानक विनती करते हैं कि हे ईश्वर ! अगर तू कृपा करे तो साथ मिला सकता है, मैं तुझ पर सदा कुर्बान हूँ॥ ८॥ ४॥

मारू महला १ ॥ लालै गारबु छोडिआ गुर कै भै सहजि सुभाई ॥ लालै खसमु पछाणिआ वडी वडिआई ॥ खसमि मिलिऐ सुखु पाइआ कीमति कहणु न जाई ॥ १ ॥ लाला गोला खसम का खसमै वडिआई ॥ गुर परसादी उबरे हरि की सरणाई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ लाले नो सिरि कार है धुरि खसमि फुरमाई ॥ लालै हुकमु पछाणिआ सदा रहै रजाई ॥ आपे मीरा बखसि लए वडी वडिआई ॥ २ ॥ आपि सचा सभु सचु है गुर सबदि बुझाई ॥ तेरी सेवा सो करे जिस नो लैहि तू लाई ॥ बिनु सेवा किनै न पाइआ दूजै भरमि खुआई ॥ ३ ॥ सो किउ मनहु विसारीऐ नित देवै चड़ै सवाइआ ॥ जीउ पिंडु सभु तिस दा साहु तिनै विचि पाइआ ॥ जा क्रिपा करे ता सेवीऐ सेवि सचि समाइआ ॥ ४ ॥ लाला सो जीवतु मरै मरि विचहु आपु गवाए ॥ बंधन तूटहि मुकति होइ त्रिसना अगनि बुझाए ॥ सभ महि नामु निधानु है गुरमुखि को पाए ॥ ५ ॥ लाले विचि गुणु किछु नही लाला अवगणिआरु ॥ तुधु जेवडु दाता को नही तू बखसणहारु ॥ तेरा हुकमु लाला मंने एह करणी सारु ॥ ६ ॥ गुरु सागरु अंम्रित सरु जो इछे सो फलु पाए ॥ नामु पदारथु अमरु है हिरदै मंनि वसाए ॥ गुर सेवा सदा सुखु है जिस नो हुकमु

मनाए ॥ ७ ॥ सुइना रुपा सभ धातु है माटी रलि जाई ॥ बिनु नावै नालि न चलई सतिगुरि बूझ बुझाई ॥ नानक नामि रते से निरमले साचै रहे समाई ॥ ८ ॥ ५ ॥

गुरु के कोमल स्वभाव द्वारा दास ने अपना अभिमान छोड़ दिया है, यह उसकी बड़ी बड़ाई है कि दास ने मालिक को पहचान लिया है। मालिक को मिलकर ही परमसुख मिलता है, जिसका मूल्यांकन नहीं किया जा सकता॥ १॥ यह मालिक की बड़ाई है कि दास उसका सेवक है। गुरु की कृपा से भगवान की शरण में आकर उसका उद्धार हो गया है॥ १॥ रहाउ॥ प्रभु ने प्रारम्भ से ही दास को हुक्मपालन एवं सेवा का कार्य सौंपा है। उसने हुक्म को पहचान लिया है और वह सदा उसकी रज़ा में रहता है। यह मालिक का बड़ा बड़प्पन है कि वह स्वयं ही दास को क्षमा कर देता है॥ २॥ शब्द गुरु ने यह रहस्य बताया है कि ईश्वर ही सत्य है और उसका किया सब सत्य है। हे परमेश्वर ! तेरी सेवा-भक्ति वही करता है, जिसे तू अपनी लगन में लगाता है। सेवा के बिना किसी को सत्य प्राप्त नहीं हुआ और द्वैतभाव के भ्रम में फँसकर जीव ख्वार ही हुआ है॥ ३॥ उस परमात्मा को मन से क्यों भुलाया जाए, जो नित्य ही अपार खुशियाँ देता है। यह प्राण एवं शरीर सब उसकी देन है और उसने ही जीवन-साँसें डाली हैं। यदि वह कृपा करे तो ही उसकी सेवा-भक्ति की जा सकती है और सेवा-भक्ति से सत्य में समाया जा सकता है॥ ४॥ सच्चा सेवक वही है, जो जीवित ही बुराईयों की ओर से मरता है और आत्माभिमान को मिटा देता है। उसके तमाम बन्धन टूट जाते हैं, तृष्णाग्नि बुझ जाती है और उसकी मुक्ति हो जाती है। सब में नाम रूपी निधि मौजूद है परन्तु कोई गुरुमुख ही इसे प्राप्त करता है॥ ५॥ दास में कोई भी गुण नहीं, वह तो अवगुणों से भरा हुआ है। हे ईश्वर ! तुझ जैसा दाता कोई नहीं है, तू क्षमावान है। दास तेरे हुक्म का पालन करता रहे, यही उत्तम कार्य है॥ ६॥ गुरु गुणों का सागर है, नामामृत का सरोवर है, उससे मनवांछित फल की प्राप्ति होती है। नाम-रूपी पदार्थ अमिट है, गुरु इसे हृदय में बसा देता है। गुरु की सेवा से सदा सुख प्राप्त होता है, पर सेवा भी वही करता है, जिससे हुक्म मनवाता है॥ ७॥ सोना-चांदी इत्यादि सब धातुएँ अन्ततः मिट्टी में ही मिल जाती हैं। सतगुरु ने यही रहस्य बताया है कि प्रभु नाम के अतिरिक्त कुछ भी साथ नहीं जाता। हे नानक ! वही निर्मल हैं जो नाम-स्मरण में रत हैं और सत्य में ही विलीन रहते हैं॥ ८॥ ५॥

मारू महला १ ॥ हुकमु भइआ रहणा नही धुरि फाटे चीरै ॥ एहु मनु अवगणि बाधिआ सहु देह सरीरै ॥ पूरै गुरि बखसाईअहि सभि गुनह फकीरै ॥ १ ॥ किउ रहीऐ उठि चलणा बुझु सबद बीचारा ॥ जिसु तू मेलहि सो मिलै धुरि हुकमु अपारा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जिउ तू राखहि तिउ रहा जो देहि सु खाउ ॥ जिउ तू चलावहि तिउ चला मुखि अंम्रित नाउ ॥ मेरे ठाकुर हथि वडिआईआ मेलहि मनि चाउ ॥ २ ॥ कीता किआ सालाहीऐ करि देखै सोई ॥ जिनि कीआ सो मनि वसै मै अवरु न कोई ॥ सो साचा सालाहीऐ साची पति होई ॥ ३ ॥ पंडितु पड़ि न पहुचई बहु आल जंजाला ॥ पाप पुंन दुइ संगमे खुधिआ जमकाला ॥ विछोड़ा भउ वीसरै पूरा रखवाला ॥ ४ ॥ जिन की लेखै पति पवै से पूरे भाई ॥ पूरे पूरी मति है सची वडिआई ॥ देदे तोटि न आवई लै लै थकि पाई ॥ ५ ॥ खार समुद्रु ढंढोलीऐ इकु मणीआ पावै ॥ दुइ दिन चारि सुहावणा माटी तिसु खावै ॥ गुरु सागरु सति सेवीऐ दे तोटि न आवै ॥ ६ ॥ मेरे प्रभ भावनि से ऊजले सभ मैलु भरीजै ॥ मैला ऊजलु ता थीऐ पारस संगि भीजै ॥ वंनी साचे लाल की किनि कीमति कीजै ॥ ७ ॥ भेखी हाथ न लभई तीरथि नही दाने ॥ पूछउ बेद पड़ंतिआ मूठी विणु माने ॥ नानक कीमति सो करे पूरा गुरु गिआने ॥ ८ ॥ ६ ॥

ईश्वरेच्छा से अगर मौत का बुलावा आ गया तो इस सच्चाई को मान लो कि अब संसार में नहीं रहना है। यह मन अवगुणों में बँधा हुआ है, इसलिए मनुष्य दुखों को सहता है। यदि पूर्ण गुरु से क्षमादान पाया जाए तो सब गुनाह छूट जाते हैं॥ १॥ (जब मृत्यु अटल है) एक न एक दिन हर किसी ने जग से चले जाना है तो सदैव कैसे रहा जा सकता है ? शब्द-गुरु द्वारा चिंतन करके रहस्य को समझ लो। हे ईश्वर ! जिसे तू मिलाता है, वही मिलता है, तेरा हुक्म अटल है॥ १॥ रहाउ॥ जैसे तू (सुख-दुख में) रखता है, वैसे ही रहता हूँ, जो तू देता है, वही खाता हूँ। जैसे तू चलाता है, वैसे ही चलता हूँ, मुँह से तेरा नामामृत जपता रहता हूँ। मेरे ठाकुर जी के हाथ में सब बड़ाईयाँ हैं, साथ मिला लो, मन में यही चाव है॥ २॥ परमात्मा द्वारा पैदा किए गए जगत की क्यों प्रशंसा करें ? वास्तव में वही सबकी देखभाल करता है। जिसने पैदा किया है, वही मन में बसता है, उसके अलावा अन्य कोई महान नहीं। उस परमसत्य ईश्वर की प्रशंसा करनी चाहिए, तो ही सच्चा सम्मान मिलता है॥ ३॥ पण्डित अनेक ग्रंथों का अध्ययन करके भी अपने लक्ष्य (सत्य) तक नहीं पहुँचता, अपितु दुनिया के जंजालों में ही उलझा रहता है। पाप एवं पुण्य में फँसकर यम एवं माया की भूख उसे दुखी करते रहते हैं। जिसे पूर्ण प्रभु बचाने वाला है, उसे वियोग एवं भय भूल जाता है॥ ४॥ जिनकी सेवा-भक्ति सफल होती है, वही पूर्ण संत हैं। पूर्ण संत की मति भी पूर्ण होती है, उसे ही सच्ची बड़ाई मिलती है। ईश्वर सदैव देता रहता है, जिसमें कोई कमी नहीं आती किन्तु जीव ले लेकर थक जाते हैं॥ ५॥ यदि खारे समुद्र में ढूँढने से कोई एक मोती मिल भी जाए तो वह दो-चार दिन ही सुन्दर लगता है, आखिरकार उस मोती को मिट्टी निगल जाती है। यदि सत्य के सागर गुरु की सेवा की जाए तो कोई कमी नहीं आती॥ ६॥ जो मेरे प्रभु को प्रिय लगते हैं, वही उज्ज्वल हैं एवं अन्य सभी पापों की मैल से भरे हुए हैं। पापों से मलिन हुआ जीव तभी उज्ज्वल होता है, जब वह गुरु रूपी पारस से मिलकर नामामृत से भीग जाता है। सत्य रूपी लाल का नाम-रंग उसे ऐसा चढ़ जाता है कि उसका मूल्यांकन नहीं किया जा सकता॥ ७॥ वेश धारण करने, तीर्थों में स्नान एवं दान पुण्य से भी सत्य प्राप्त नहीं होता। वेदों का पाठ करने वाले पण्डितों से पूछ लो, इस सत्य को न मानने वाली दुनिया ही लुट रही है। हे नानक ! जिसे पूर्ण गुरु ज्ञान प्रदान करता है, वही नाम-रत्न की सही कीमत कर सकता है॥ ८॥ ६॥

मारू महला १ ॥ मनमुखु लहरि घरु तजि विगूचै अवरा के घर हेरै ॥ ग्रिह धरमु गवाए सतिगुरु न भेटै दुरमति घूमन घेरै ॥ दिसंतरु भवै पाठ पड़ि थाका त्रिसना होइ वधेरै ॥ काची पिंडी सबदु न चीनै उदरु भरै जैसे ढोरै ॥ १ ॥ बाबा ऐसी रवत रवै संनिआसी ॥ गुर कै सबदि एक लिव लागी तेरै नामि रते त्रिपतासी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ घोली गेरू रंगु चड़ाइआ वसत्र भेख भेखारी ॥ कापड़ फारि बनाई खिंथा झोली माइआधारी ॥ घरि घरि मागै जगु परबोधै मनि अंधै पति हारी ॥ भरमि भुलाणा सबदु न चीनै जूऐ बाजी हारी ॥ २ ॥ अंतरि अगनि न गुर बिनु बूझै बाहरि पूअर तापै ॥ गुर सेवा बिनु भगति न होवी किउ करि चीनसि आपै ॥ निंदा करि करि नरक निवासी अंतरि आतम जापै ॥ अठसठि तीरथ भरमि विगूचहि किउ मलु धोपै पापै ॥ ३ ॥ छाणी खाकु बिभूत चड़ाई माइआ का मगु जोहै ॥ अंतरि बाहरि एकु न जाणै साचु कहे ते छोहै ॥ पाठु पड़ै मुखि झूठो बोलै निगुरे की मति ओहै ॥ नामु न जपई किउ सुखु पावै बिनु नावै किउ सोहै ॥ ४ ॥ मूंडु मुडाइ जटा सिख बाधी मोनि रहै अभिमाना ॥ मनूआ डोलै दह दिस धावै बिनु रत आतम गिआना ॥ अंम्रितु छोडि महा बिखु पीवै माइआ का

देवाना ॥ किरतु न मिटई हुकमु न बूझै पसूआ माहि समाना ॥ ५ ॥ हाथ कमंडलु कापड़ीआ मनि त्रिसना उपजी भारी ॥ इसत्री तजि करि कामि विआपिआ चितु लाइआ पर नारी ॥ सिख करे करि सबदु न चीनै लंपटु है बाजारी ॥ अंतरि बिखु बाहरि निभराती ता जमु करे खुआरी ॥ ६ ॥ सो संनिआसी जो सतिगुर सेवै विचहु आपु गवाए ॥ छादन भोजन की आस न करई अचिंतु मिलै सो पाए ॥ बकै न बोलै खिमा धनु संग्रहै तामसु नामि जलाए ॥ धनु गिरही संनिआसी जोगी जि हरि चरणी चितु लाए ॥ ७ ॥ आस निरास रहै संनिआसी एकसु सिउ लिव लाए ॥ हरि रसु पीवै ता साति आवै निज घरि ताड़ी लाए ॥ मनूआ न डोलै गुरमुखि बूझै धावतु वरजि रहाए ॥ ग्रिहु सरीरु गुरमती खोजे नामु पदारथु पाए ॥ ८ ॥ ब्रहमा बिसनु महेसु सरेसट नामि रते वीचारी ॥ खाणी बाणी गगन पताली जंता जोति तुमारी ॥ सभि सुख मुकति नाम धुनि बाणी सचु नामु उर धारी ॥ नाम बिना नही छूटसि नानक साची तरु तू तारी ॥ ९ ॥ ७ ॥

स्वेच्छाचारी जीव जोश में घर-बार त्याग कर भटकता फिरता है और दूसरों के घर देखता है। वह गृहस्थ धर्म का पालन नहीं करता, सतगुरु से उसकी भेंट नहीं होती अतः वह दुर्मति के भँवर में ही फँसा रहता है। वह देश-दिशांतर भटकता है, धर्मग्रंथों के पाठ-पढ़-पढ़कर मायूस हो जाता है, जिससे उसकी तृष्णा में और भी वृद्धि हो जाती है। वह नश्वर शरीर शब्द के भेद को नहीं जानता और पशु की तरह पेट भरता रहता है॥ १॥ हे बाबा ! सन्यासी का जीवन-आचरण ऐसा होना चाहिए कि गुरु के शब्द द्वारा उसकी परमात्मा में लगन लगी रहे और हरि-नाम में रत रहकर तृप्त हो जाए॥ १॥ रहाउ॥ वह गेरु रंग घोलकर भगवे वस्त्र धारण कर लेता है और वेष रचकर भिखारी बन जाता है। वह कपड़े फाड़कर गोदड़ी बनाकर धन पाने के लिए गले में झोली डाल लेता है। वह स्वयं तो घर-घर जाकर भिक्षा माँगता है किन्तु जग के लोगों को धर्मोपदेश देता है। मन के अन्धे ने अपना सम्मान ही गंवा दिया है। भ्रम में भूला हुआ ब्रह्म-शब्द का भेद नहीं जानता, इस तरह उसने अपनी जीवनबाजी जुए में हार दी है॥ २॥ गुरु के बिना उसके अन्तर्मन में से तृष्णाग्नि नहीं बुझती किन्तु बाहर वह धूनियाँ तापता है। गुरु की सेवा के बिना भक्ति नहीं होती फिर वह अन्तरात्मा को कैसे पहचान सकता है। अन्तरात्मा में ऐसे लगता है कि वह पराई निंदा कर-करके नरक में पड़ गया है। अड़सठ तीर्थों पर भटक कर भ्रम में ही ख्वार होता है, उसके पापों की मैल कैसे उतर सकती है॥ ३॥ वह खाक छानकर शरीर पर विभूति लगा लेता है किन्तु माया का मार्ग देखता रहता है। वह अन्दर बाहर ईश्वर को नहीं जानता परन्तु सच्चाई बताने पर क्रोधित होता है। उस निगुरे की मति ऐसी है कि वह पाठ भी पढ़ता है किन्तु मुँह से झूठ ही बोलता रहता है। वह प्रभु नाम का जाप नहीं करता तो फिर भला सुख कैसे पा सकता है, नाम विहीन कैसे सुन्दर लग सकता है॥ ४॥ किसी ने अपना सिर मुँडवा लिया है, किसी ने अपने सिर पर जटा को बाँध लिया है, कोई मौनी बनकर रहता है, परन्तु मन में अभिमान बना रहता है। आत्म-ज्ञान में रंगे बिना मन विचलित होता है और दसों दिशाओं में भटकता है। वह माया का दीवाना नामामृत को छोड़कर महाघातक माया रूपी विष पान करता रहता है। उसका कर्म नहीं मिटता, न ही ईश्वरेच्छा को बूझता है और पशु समान ही माना जाता है॥ ५॥ कोई कापड़िया साधु बन गया है, हाथ में उसने कमण्डल पकड़ लिया है किन्तु मन में भारी तृष्णा पैदा हो गई है। अपनी स्त्री को छोड़कर कामवासना में फँस गया और पराई नारी में चित लगा लिया। वह लोगों को शिक्षा तो देता है परन्तु खुद ब्रह्म-शब्द को नहीं पहचानता और ऐसा लम्पट बाजारी बन जाता है।

मन में तो तृष्णा रूपी विष है पर बाहर से शान्ति धारण की हुई है अतः यम उसे ख्वार करता है॥ ६॥ वास्तव में वही संन्यासी है, जो सतगुरु की सेवा करता है और मन से अभिमान को मिटा देता है। वह वस्त्र-भोजन की आशा नहीं करता पर जो कुछ उसे बिना सोचे ही मिल जाता है, उसे ले लेता है। वह व्यर्थ बकवास एवं बातें नहीं करता, वह क्षमा रूपी धन संचित करता है और नाम से अपने क्रोध को जला देता है। जो भगवान के चरणों में मन लगाता है, वह गृहस्थी, संन्यासी एवं योगी प्रशंसा का पात्र है॥ ७॥ संन्यासी वही है जो जीवन की आशाओं को छोड़ कर विरक्त रहता है और एक ईश्वर में ध्यान लगाता है। जब वह हरिनामामृत का पान करता है तो ही उसे शान्ति प्राप्त होती है और अपने सच्चे घर में समाधि लगाता है। गुरमुख बनकर वह सच्चाई को बूझ लेता है, जिससे उसका मन नहीं डोलता और चंचल मन को काबू कर लेता है। वह गुरु-मत द्वारा अपने शरीर-घर को खोजता है और नाम रूपी पदार्थ को पा लेता है॥ ८॥ ब्रह्मा, विष्णु एवं शिवशंकर जैसे सर्वश्रेष्ठ देवते नाम का चिंतन करने में ही रत रहते हैं। हे अखिलेश्वर! चारों स्रोतों, चारों वाणियों, आकाश, पाताल, सब में तेरी ही ज्योति व्याप्त है। सर्व सुख एवं मुक्ति हरिनामोच्चारण में ही है, अतः सच्चा नाम हृदय में बसा लिया है। हे नानक! ईश्वर के नाम बिना किसी का छुटकारा नहीं होता, सच्चे नाम से ही संसार-सागर से पार हुआ जा सकता है॥ ६॥ ७॥

मारू महला १ ॥ मात पिता संजोगि उपाए रकतु बिंदु मिलि पिंडु करे ॥ अंतरि गरभ उरधि लिव लागी सो प्रभु सारे दाति करे ॥ १ ॥ संसारु भवजलु किउ तरै ॥ गुरमुखि नामु निरंजनु पाईऐ अफरिओ भारु अफारु टरै ॥ १ ॥ रहाउ ॥ ते गुण विसरि गए अपराधी मै बउरा किआ करउ हरे ॥ तू दाता दइआलु सभै सिरि अहिनिसि दाति समारि करे ॥ २ ॥ चारि पदारथ लै जगि जनमिआ सिव सकती घरि वासु धरे ॥ लागी भूख माइआ मगु जोहै मुकति पदारथु मोहि खरे ॥ ३ ॥ करण पलाव करे नही पावै इत उत ढूढत थाकि परे ॥ कामि क्रोधि अहंकारि विआपे कूड़ कुटंब सिउ प्रीति करे ॥ ४ ॥ खावै भोगै सुणि सुणि देखै पहिरि दिखावै काल घरे ॥ बिनु गुर सबद न आपु पछाणै बिनु हरि नाम न कालु टरे ॥ ५ ॥ जेता मोहु हउमै करि भूले मेरी मेरी करते छीनि खरे ॥ तनु धनु बिनसै सहसै सहसा फिरि पछुतावै मुखि धूरि परे ॥ ६ ॥ बिरधि भइआ जोबनु तनु खिसिआ कफु कंठु बिरूधो नैनहु नीरु ढरे ॥ चरण रहे कर कंपण लागे साकत रामु न रिदै हरे ॥ ७ ॥ सुरति गई काली हू धउले किसै न भावै रखिओ घरे ॥ बिसरत नाम ऐसे दोख लागहि जमु मारि समारे नरकि खरे ॥ ८ ॥ पूरब जनम को लेखु न मिटई जनमि मरै का कउ दोसु धरे ॥ बिनु गुर बादि जीवणु होरु मरणा बिनु गुर सबदै जनमु जरे ॥ ६ ॥ खुसी खुआर भए रस भोगण फोकट करम विकार करे ॥ नामु बिसारि लोभि मूलु खोइओ सिरि धरम राइ का डंडु परे ॥ १० ॥ गुरमुखि राम नाम गुण गावहि जा कउ हरि प्रभु नदरि करे ॥ ते निरमल पुरख अपरंपर पूरे ते जग महि गुर गोविंद हरे ॥ ११ ॥ हरि सिमरहु गुर बचन समारहु संगति हरि जन भाउ करे ॥ हरि जन गुरु परधानु दुआरै नानक तिन जन की रेणु हरे ॥ १२ ॥ ८ ॥

माता-पिता के संयोग द्वारा रक्त एवं वीर्य के मिलन से शरीर बना था। माँ के गर्भ में उलटे पड़े जीव की सत्य में लगन लगी हुई थी, वह परमात्मा ही देखभाल करता एवं देता है॥ १॥ संसार रूपी सागर से कैसे पार हुआ जा सकता है? यदि गुरु के सान्निध्य में पावन-नाम प्राप्त हो जाए तो अभिमानी जीव का पापों का भार दूर हो जाता है॥ १॥ रहाउ॥ हे ईश्वर! मैं बावला क्या करूँ? मुझ अपराधी को तेरे सब उपकार भूल गए हैं। तू दयालु दाता है और दिन-रात देते हुए देखभाल करता है॥ २॥ मानव ने धर्म, अर्थ, काम एवं मोक्ष की इच्छा लेकर जन्म लिया था,

पर जीव रूपी शिव ने माया रूपी शक्ति के घर में वास कर लिया। फिर उसे तृष्णा की भूख लग गई, वह धन-दौलत को पाने के लिए भागता है पर माया के मोह ने उससे मोक्ष-पदार्थ छीन लिया॥ ३॥ वह धन के लिए मेहनत-मशक्कत करता है। परन्तु उसे उतना धन प्राप्त नहीं होता जितनी इच्छा करता है। फिर वह इधर-उधर ढूँढ कर थक जाता है। वह काम, क्रोध एवं अहंकार में ग्रस्त रहता है और मिथ्या कुटम्ब से प्रेम करता है॥ ४॥ वह मृत्यु के घर इस जगत् में स्वादिष्ट पदार्थ खाता, भोगता, संगीत सुन-सुन कर प्रसन्न होता, दुनिया के रंग-तमाशे देखता और सुन्दर वस्त्र पहनकर लोगों को दिखाता है। शब्द गुरु के बिना वह आत्म ज्ञान को नहीं पहचानता और परमात्मा के नाम बिना उसका काल नहीं टलता॥ ५॥ जितना अधिक मोह एवं अभिमान करता है, उतना ही भटकता है और 'मेरी-मेरी' करता हुआ खत्म हो जाता है। हजारों चिंता से उसका तन-धन नाश हो जाता है और फिर वह पछताता है परन्तु उसके मुँह में धूल ही पड़ती है॥ ६॥ अब जब वह बूढ़ा हो गया तो शरीर निर्बल और यौवन का अंत हो गया। बलगम खांसी से गला रुक गया और आँखों से नीर बहने लग गया। पैर चलने से रह गए हैं और हाथ थर-थर काँपने लगे हैं। लेकिन अफसोस अभी भी विमुखी जीव के हृदय में राम नाम याद नहीं आता॥ ७॥ बूढ़ा होकर उसकी होश नष्ट हो गई और उसके काले केश अब सफेद हो गए हैं। परिवार में से कोई भी उसे घर में रखना नहीं चाहता। परमात्मा के नाम को भूलने से उसे ऐसे दोष लग जाते हैं और यमदूत उसे पीटकर नरक में ले जाते हैं॥ ८॥ दरअसल पूर्व जन्म में किए कर्मों का लेख कभी नहीं मिटता। इसी कारण वह जन्मता-मरता है, इसलिए किसी अन्य को क्यों दोष दिया जाए? गुरु के बिना जीना व्यर्थ एवं मृत्यु के समान है। शब्द गुरु के बिना जन्म जलता रहता है॥ ६॥ खुशियाँ मनाने एवं पदार्थों के रस भोगने से मनुष्य तंग ही हुए हैं और खोटे कर्मों ने मन में विकार ही पैदा किए हैं। नाम को भुलाकर लालच में फँसकर उसने मूल ही गंवा दिया और यमपुरी में उसके सिर पर यमराज का डण्डा पड़ता है॥ १०॥ जिस पर भगवान की कृपा-दृष्टि हो जाती है, वह गुरु के माध्यम से राम-नाम का ही गुणगान करता है। ऐसे निर्मल पुरुष अपरंपार हैं और गोविंद गुरु का ही रूप बन जाते हैं॥ ११॥ ईश्वर को याद करो, गुरु के वचन को हृदय में धारण करो, भक्तजनों की संगति से प्रेम करो। सत्य के द्वार पर गुरु भक्तजनों का प्रधान होता है। हे नानक! हम भी उनकी चरणरज हैं॥ १२॥ ८॥

१ओं सतिगुर प्रसादि ॥

मारू काफी महला १ घरु २ ॥ आवउ वंञउ डुंमणी किती मित्र करेउ ॥ सा धन ढोई न लहै वाढी किउ धीरेउ ॥ १ ॥ मैडा मनु रता आपनड़े पिर नालि ॥ हउ घोलि घुमाई खंनीऐ कीती हिक भोरी नदरि निहालि ॥ १ ॥ रहाउ ॥ पेईअड़ै डोहागणी साहुरड़ै किउ जाउ ॥ मै गलि अउगण मुठड़ी बिनु पिर झूरि मराउ ॥ २ ॥ पेईअड़ै पिरु संमला साहुरड़ै घरि वासु ॥ सुखि सवंधि सोहागणी पिरु पाइआ गुणतासु ॥ ३ ॥ लेफु निहाली पट की कापड़ु अंगि बणाइ ॥ पिरु मुती डोहागणी तिन डुखी रैणि विहाइ ॥ ४ ॥ किती चखउ साडड़े किती वेस करेउ ॥ पिर बिनु जोबनु बादि गइअमु वाढी झूरेदी झूरेउ ॥ ५ ॥ सचे संदा सदड़ा सुणीऐ गुर वीचारि ॥ सचे सचा बैहणा नदरी नदरि पिआरि ॥ ६ ॥ गिआनी अंजनु सच का डेखै डेखणहारु ॥ गुरमुखि बूझै जाणीऐ हउमै गरबु निवारि ॥ ७ ॥ तउ भावनि तउ जेहीआ मू जेहीआ कितीआह ॥ नानक नाहु न वीछुड़ै तिन सचै रतड़ीआह ॥ ८ ॥ १ ॥ ६ ॥

आवागमन में पड़कर दुविधाग्रस्त जीव-स्त्री कितने ही मित्र बनाती है। पति-परमेश्वर से बिछुड़ कर उसे कहीं ठिकाना नहीं मिलता, तब उसे कैसे धैर्य हो सकता है॥ १॥ मेरा मन अपने

प्रभु के संग लीन है, उसने थोड़ी-सी कृपा-दृष्टि करके आनंदित कर दिया है, अतः मैं खण्ड-खण्ड होकर उस पर न्यौछावर जाती हूँ॥ १॥ रहाउ॥ मैं दुहागिन अब तक अपने पीहर (इहलोक) में बसती रही, अब मैं अपने ससुराल (परलोक) कैसे जाऊँ ? मेरे गले में अनेक अवगुण पड़े हुए हैं, पति के बिना मैं अवगुणों से ठगी गई हूँ और झूर-झूर कर मर रही हूँ॥ २॥ यदि पीहर में अपने पति-प्रभु का स्मरण करूँ तो ससुराल में निवास मिल सकता है। जिस सुहागिन ने गुणनिधि प्रभु को पा लिया है, वही सुखी रहती है॥ ३॥ जिस दुहागिन को पति-प्रभु ने छोड़ दिया है, उसकी जीवन-रात्रि दुखों में ही व्यतीत होती है, चाहे वह अपने सोने के लिए लेफ व रेशमी बिस्तर और शरीर में पहनने के लिए रेशमी पोशाक ही बना ले॥ ४॥ निस्संकोच कितने ही पदार्थों के स्वाद चखती रहूँ, कितने ही सुन्दर पहनावे धारण करती रहूँ, परन्तु प्रभु के बिना यौवन व्यर्थ है, उससे बिछुड़ी चिंताग्रस्त रहती हूँ॥ ५॥ गुरु के ज्ञान-विचार द्वारा सच्चे प्रभु का सच्चा उपदेश सुनना चाहिए। जब सच्चे की प्रेम भरी कृपा-दृष्टि हो जाती है तो जीव-स्त्री का आचरण सत्य-सा हो जाता है और वह उसके प्रेम में ही लीन रहती है॥ ६॥ ज्ञानी व्यक्ति देखने के लिए सत्य का अञ्जन लगाकर ईश्वर को ही देखता है। अगर गुरमुख बनकर अहम् अभिमान का निवारण किया जाए तो सत्य को बूझा एवं जाना जा सकता है॥ ७॥ हे पति-परमेश्वर ! जो जीव-स्त्रियाँ तुझे प्रिय हैं, वह तो तुझ जैसी ही सुन्दर हैं परन्तु मुझ जैसी अनेक (दुहागिन) हैं। हे नानक ! जो प्रभु-प्रेम में रत रहती हैं, उनका कदापि वियोग नहीं होता॥ ८॥ १॥ ६॥

मारू महला १ ॥ ना भैणा भरजाईआ ना से ससुड़ीआह ॥ सचा साकु न तुटई गुरु मेले सहीआह ॥ १ ॥ बलिहारी गुर आपणे सद बलिहारै जाउ ॥ गुर बिनु एता भवि थकी गुरि पिरु मेलिमु दितमु मिलाइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ फुफी नानी मासीआ देर जेठानड़ीआह ॥ आवनि वंञनि ना रहनि पूर भरे पहीआह ॥ २ ॥ मामे तै मामाणीआ भाइर बाप न माउ ॥ साथ लडे तिन नाठीआ भीड़ घणी दरीआउ ॥ ३ ॥ साचउ रंगि रंगावलो सखी हमारो कंतु ॥ सचि विछोड़ा ना थीऐ सो सहु रंगि रवंतु ॥ ४ ॥ सभे रुती चंगीआ जितु सचे सिउ नेहु ॥ सा धन कंतु पछाणिआ सुखि सुती निसि डेहु ॥ ५ ॥ पतणि कूके पातणी वंञहु ध्रुकि विलाड़ि ॥ पारि पवंदड़े डिठु मै सतिगुर बोहिथि चाड़ि ॥ ६ ॥ हिकनी लदिआ हिकि लदि गए हिकि भारे भर नालि ॥ जिनी सचु वणंजिआ से सचे प्रभ नालि ॥ ७ ॥ ना हम चंगे आखीअह बुरा न दिसै कोइ ॥ नानक हउमै मारीऐ सचे जेहड़ा सोइ ॥ ८ ॥ २ ॥ १० ॥

बहन, भाभी एवं सास कोई भी सदा नहीं रहता, किन्तु गुरु जिन (सत्संगी) सखियों को ईश्वर से मिला देता है, उनका सच्चा रिश्ता कभी नहीं टूटता॥ १॥ मैं अपने गुरु पर कुर्बान हूँ और सदैव कुर्बान जाती हूँ, गुरु के बिना इधर-उधर भटक कर थक गई थी, लेकिन गुरु ने मुझे पति-प्रभु से मिला दिया है॥ १॥ रहाउ॥ फूफी, नानी, मौसी, देवरानी, जेठानी-ये नातेदार जन्म लेकर आते एवं मृत्यु को प्राप्त होकर चले जाते हैं, ये सदैव के लिए हमारे साथ नहीं रहते और इन रिश्तेदारों के समूह वर्ग यहाँ से चले जाते हैं॥ २॥ मामा-मामी, भाई, पिता-माता, ये नातेदार भी हमारे संग सदैव नहीं रहते, इन अतिथियों के काफिले लदे हुए जा रहे हैं और भवसागर रूपी दरिया में बहुत भीड़ लगी हुई है॥ ३॥ हे सखी ! हमारा पति-प्रभु बड़ा रंगीला है और सत्य के रंग में ही रत रहता है। जो जीव-स्त्री परमेश्वर की स्मृति में लीन रहती है, उसका सत्य से कभी वियोग नहीं होता॥ ४॥ वे समस्त ऋतुएँ अच्छी हैं, जिनमें सत्य से प्रेम होता है। जिस जीव रूपी नारी

ने परमात्मा को पहचान लिया है, वह सदैव सुखी रहती है॥ ५॥ भवसागर रूपी दरिया के तट पर खड़ा गुरु रूपी मल्लाह पुकार पुकार कर जीव रूपी मुसाफिरों को कह रहा है कि दौड़कर नाम रूपी जहाज में सवार होकर पार हो जाओ। सतगुरु के जहाज में चढ़कर भवसागर में से पार होते अनेक प्राणियों को मैंने स्वयं देखा है॥ ६॥ किसी ने सत्य रूपी सौदा लाद लिया है, कुछ सत्य का सौदा लादकर पार हो गए हैं। लेकिन कुछ जीव पापों का भार लादकर भवसागर में डूब गए हैं। जिन्होंने सत्य का व्यापार किया है, वे सच्चे प्रभु के संग रहते हैं॥ ७॥ न हम खुद को अच्छा कहते हैं, न ही कोई बुरा दिखाई देता है। हे नानक! जिसने अभिमान को मिटा दिया है, वह सत्य जैसा ही बन गया है॥ ८॥ २॥ १०॥

मारू महला १ ॥ ना जाणा मूरखु है कोई ना जाणा सिआणा ॥ सदा साहिब कै रंगे राता अनदिनु नामु वखाणा ॥ १ ॥ बाबा मूरखु हा नावै बलि जाउ ॥ तू करता तू दाना बीना तेरै नामि तराउ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ मूरखु सिआणा एकु है एक जोति दुइ नाउ ॥ मूरखा सिरि मूरखु है जि मंने नाही नाउ ॥ २ ॥ गुर दुआरै नाउ पाईऐ बिनु सतिगुर पलै न पाइ ॥ सतिगुर कै भाणै मनि वसै ता अहिनिसि रहै लिव लाइ ॥ ३ ॥ राजं रंगं रूपं मालं जोबनु ते जूआरी ॥ हुकमी बाधे पासै खेलहि चउपड़ि एका सारी ॥ ४ ॥ जगि चतुरु सिआणा भरमि भुलाणा नाउ पंडित पड़हि गावारी ॥ नाउ विसारहि बेदु समालहि बिखु भूले लेखारी ॥ ५ ॥ कलर खेती तरवर कंठे बागा पहिरहि कजलु झरै ॥ एहु संसारु तिसै की कोठी जो पैसै सो गरबि जरै ॥ ६ ॥ रयति राजे कहा सबाए दुहु अंतरि सो जासी ॥ कहत नानकु गुर सचे की पउड़ी रहसी अलखु निवासी ॥ ७ ॥ ३ ॥ ११ ॥

मैं नहीं मानता कि कोई मूर्ख अथवा कोई चतुर है। मैं तो सदैव परमात्मा के रंग में लीन हूँ और उसका नाम-स्मरण करता रहता हूँ॥ १॥ हे बाबा! मैं मूर्ख तो परमात्मा के नाम पर बलिहारी जाता हूँ। हे ईश्वर! तू विश्व का रचयिता है, तू ही चतुर है और तेरे नाम से ही मुक्ति संभव है॥ १॥ रहाउ॥ मूर्ख एवं चतुर एक ही है, उनके नाम ही दो हैं किन्तु ज्योति एक ही है। जो ईश्वर में निष्ठा नहीं रखता, वह महामूर्ख है॥ २॥ गुरु के द्वारा ही नाम (का भेद) प्राप्त होता है और सच्चे गुरु के बिना प्राप्त नहीं होता। यदि सतगुरु की रज़ा से मन में नाम स्थित हो जाए तो रात-दिन उस में ही ध्यान लगा रहता है॥ ३॥ राज्य करने वाले शासक, रंगरलियां मनाने वाले, सौन्दर्य सम्पन्न, धनवान, यौवन सम्पन्न एवं जुआरी—ये सभी परमात्मा के हुक्म में जगत् रूपी चौपड़ की खेल में गोटियों के रूप में खेल खेलते रहते हैं॥ ४॥ जग में खुद को चतुर-सयाना समझने वाला व्यक्ति भी भ्रम में भूला हुआ है। यद्यपि वह नाम का पण्डित है किन्तु वह गंवार केवल ग्रंथ ही पढ़ता रहता है। कोई प्रभु-नाम को भुलाकर वेदों का अध्ययन करता है, जिसका लेखक स्वयं माया रूपी विष में भूला हुआ है॥ ५॥ नाम के बिना मनुष्य का जीवन यूं व्यर्थ है, जैसे बंजर भूमि में बोई फसल है, दरिया के तट पर पेड़ हैं और वहाँ सफेद वस्त्र धारण किए हुए हैं जहाँ कालिमा उड़-उड़कर वस्त्रों पर पड़ती हो। यह संसार तृष्णा का घर है, जो इसके भीतर प्रवेश करता है, वह गर्व में जल जाता है॥ ६॥ राजा और प्रजा सभी कहाँ हैं? जो भी राजा-प्रजा इन दोनों की श्रेणी में हैं, वे नाशवान हैं। नानक कहते हैं कि जो सच्चे गुरु की नाम रूपी सीढ़ी पा लेता है, वह प्रभु-चरणों में ही रहता है॥ ७॥ ३॥ ११॥

मारू महला ३ घरु ५ असटपदी ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

जिस नो प्रेमु मंनि वसाए ॥ साचै सबदि सहजि सुभाए ॥ एहा वेदन सोई जाणै अवरु कि जाणै कारी जीउ ॥ १ ॥ आपे मेले आपि मिलाए ॥ आपणा पिआरु आपे लाए ॥ प्रेम की सार सोई जाणै जिस नो नदरि तुमारी जीउ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ दिब द्रिसटि जागै भरमु चुकाए ॥ गुर परसादि परम पदु पाए ॥ सो जोगी इह जुगति पछाणै गुर कै सबदि बीचारी जीउ ॥ २ ॥ संजोगी धन पिर मेला होवै ॥ गुरमति विचहु दुरमति खोवै ॥ रंग सिउ नित रलीआ माणै अपणे कंत पिआरी जीउ ॥ ३ ॥ सतिगुर बाझहु वैदु न कोई ॥ आपे आपि निरंजनु सोई ॥ सतिगुर मिलिऐ मरै मंदा होवै गिआन बीचारी जीउ ॥ ४ ॥ एहु सबदु सारु जिस नो लाए ॥ गुरमुखि त्रिसना भुख गवाए ॥ आपण लीआ किछू न पाईऐ करि किरपा कल धारी जीउ ॥ ५ ॥ अगम निगमु सतिगुरू दिखाइआ ॥ करि किरपा अपनै घरि आइआ ॥ अंजन माहि निरंजनु जाता जिन कउ नदरि तुमारी जीउ ॥ ६ ॥ गुरमुखि होवै सो ततु पाए ॥ आपणा आपु विचहु गवाए ॥ सतिगुर बाझहु सभु धंधु कमावै वेखहु मनि वीचारी जीउ ॥ ७ ॥ इकि भ्रमि भूले फिरहि अहंकारी ॥ इकना गुरमुखि हउमै मारी ॥ सचै सबदि रते बैरागी होरि भरमि भुले गावारी जीउ ॥ ८ ॥ गुरमुखि जिनी नामु न पाइआ ॥ मनमुखि बिरथा जनमु गवाइआ ॥ अगै विणु नावै को बेली नाही बूझै गुर बीचारी जीउ ॥ ९ ॥ अंम्रित नामु सदा सुखदाता ॥ गुरि पूरै जुग चारे जाता ॥ जिसु तू देवहि सोई पाए नानक ततु बीचारी जीउ ॥ १० ॥ १ ॥

जिसके मन में प्रेम बसा देता है, वह सहज ही सच्चे शब्द में समाया रहता है। यह प्रेम-वेदना वही (ईश्वर) जानता है, अन्य कोई इसका उपचार नहीं जानता॥ १॥ ईश्वर स्वयं ही संगति में मिलाकर साथ मिला लेता है और स्वयं ही अपना प्रेम लगाता है। हे परमेश्वर ! प्रेम की कद्र वही जानता है, जिस पर तुम्हारी कृपा-दृष्टि हो जाती है॥ १॥ रहाउ॥ उसके भीतर दिव्य-दृष्टि उदित होने से सब भ्रम निवृत्त हो जाते हैं और गुरु की कृपा से मोक्ष प्राप्त होता है। जो गुरु के शब्द का चिंतन करता है, वही योगी इस युक्ति को पहचान लेता है॥ २॥ संयोग से ही जीव-स्त्री एवं पति-परमेश्वर का मिलन होता है। गुरु-मतानुसार जीव-स्त्री अन्तर्मन में से दुर्मति को दूर कर देती है और बड़े प्रेम से पति-प्रभु के संग रंगरलियाँ मनाती रहती है॥ ३॥ सतगुरु के बिना कोई वैद्य नहीं है और वह स्वयं पावनस्वरूप है। यदि सतगुरु मिल जाए तो मन में से बुरा आचरण मिट जाता है और जीव ज्ञान का विचारवान् बन जाता है॥ ४॥ जिसे शब्द गुरु में प्रवृत्त कर देता है, वह गुरुमुख बनकर तृष्णा की भूख को दूर कर देता है। भगवान की कृपा से ही कल्याण होता है, अन्यथा अपने आप करने से कुछ भी हासिल नहीं होता॥ ५॥ जब सतगुरु ने वेदों शास्त्रों का रहस्य बतलाया तो जीव प्रभु की कृपा से अपने सच्चे घर में आ गया। हे ईश्वर ! जिन पर तुम्हारी कृपा-दृष्टि हो गई है, उसने कालिमायुक्त जगत् में रहते हुए परम-सत्य को पहचान लिया है॥ ६॥ जो गुरुमुख बन जाता है, वह तत्व-ज्ञान को प्राप्त कर लेता है और अपने मन में से आत्माभिमान को मिटा देता है। अपने मन में विचार कर देख लो, सतगुरु की शरण बिना सभी लोग दुनिया के धंधों में ही ग्रस्त हैं॥ ७॥ कुछ अहंकारी व्यक्ति भ्रम में भटकते रहते हैं और किसी ने गुरुमुख बनकर अहम् को मिटा दिया है। वैरागी सच्चे शब्द में ही प्रवृत्त रहते हैं लेकिन अन्य मूर्ख लोग भ्रम में ही भटकते रहते हैं॥ ८॥ जिसने गुरु के सान्निध्य में नाम प्राप्त नहीं किया, उस मनमुख ने जीवन व्यर्थ ही गंवा दिया है। आगे परलोक में नाम के बिना कोई भी साथी नहीं होता लेकिन इसकी सूझ गुरु-उपदेश से ही होती है॥ ९॥ हरि का नामामृत सदैव सुख देने वाला है और चारों

युगों में पूर्ण गुरु द्वारा इस तथ्य की सूझ हो सकती है। नानक कहते हैं कि हे प्रभु ! जिसे तू देता है, वही तेरा नाम प्राप्त करता है, मैंने तो यही ज्ञान चिंतन किया है॥ १०॥ १॥

मारू महला ५ घरु ३ असटपदीआ ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

लख चउरासीह भ्रमते भ्रमते दुलभ जनमु अब पाइओ ॥ १ ॥ रे मूड़े तू होछै रसि लपटाइओ ॥ अंम्रितु संगि बसतु है तेरै बिखिआ सिउ उरझाइओ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ रतन जवेहर बनजनि आइओ कालरु लादि चलाइओ ॥ २ ॥ जिह घर महि तुधु रहना बसना सो घरु चीति न आइओ ॥ ३ ॥ अटल अखंड प्राण सुखदाई इक निमख नही तुझु गाइओ ॥ ४ ॥ जहा जाणा सो थानु विसारिओ इक निमख नही मनु लाइओ ॥ ५ ॥ पुत्र कलत्र ग्रिह देखि समग्री इस ही महि उरझाइओ ॥ ६ ॥ जितु को लाइओ तित ही लागा तैसे करम कमाइओ ॥ ७ ॥ जउ भइओ क्रिपालु ता साधसंगु पाइआ जन नानक ब्रहमु धिआइओ ॥ ८ ॥ १ ॥

चौरासी लाख योनियों में भटकते-भटकते अब यह दुर्लभ मानव जन्म प्राप्त हुआ है॥ १॥ अरे मूर्ख ! तू तुच्छ पदार्थों के स्वाद में फँसा रहता है। नामामृत तेरे हृदय में साथ ही रहता है किन्तु तू विषय-विकारों के साथ उलझा हुआ है॥ १॥ रहाउ॥ तू जगत् में नाम-रूपी रत्न-जवाहरों का व्यापार करने आया था, लेकिन बंजर मिट्टी लाद कर ही चल दिया है॥ २॥ जिस घर में तूने सदा के लिए रहना है, वह सच्चा घर तुझे याद नहीं आया॥ ३॥ अटल, अखण्ड एवं प्राणों को सुख देने वाले ईश्वर का एक क्षण भी तूने भजन नहीं किया॥ ४॥ जहाँ तूने जाना है, उस सच्चे स्थान को भुला दिया है और एक पल भी परमेश्वर में मन नहीं लगाया॥ ५॥ तू जीवन भर अपने पुत्र, पत्नी, घर इत्यादि सामग्री में ही उलझा रहा॥ ६॥ तुझे जिधर लगाया गया, उधर ही लगा रहा और वैसे ही कर्म करता रहा॥ ७॥ हे नानक ! जब प्रभु कृपालु हो गया तो उसे साधुओं की संगति मिल गई और तब ब्रह्म का ध्यान किया॥ ८॥ १॥

मारू महला ५ ॥ करि अनुग्रहु राखि लीनो भइओ साधू संगु ॥ हरि नाम रसु रसना उचारै मिसट गूड़ा रंगु ॥ १ ॥ मेरे मान को असथानु ॥ मीत साजन सखा बंधपु अंतरजामी जानु ॥ १ ॥ रहाउ ॥ संसार सागरु जिनि उपाइओ सरणि प्रभ की गही ॥ गुर प्रसादी प्रभु अराधे जमकंकरु किछु न कही ॥ २ ॥ मोख मुकति दुआरि जा कै संत रिदा भंडारु ॥ जीअ जुगति सुजाणु सुआमी सदा राखणहारु ॥ ३ ॥ दूख दरद कलेस बिनसहि जिसु बसै मन माहि ॥ मिरतु नरकु असथान बिखड़े बिखु न पोहै ताहि ॥ ४ ॥ रिधि सिधि नव निधि जा कै अंम्रिता परवाह ॥ आदि अंते मधि पूरन ऊच अगम अगाह ॥ ५ ॥ सिध साधिक देव मुनि जन बेद करहि उचारु ॥ सिमरि सुआमी सुख सहजि भुंचहि नही अंतु पारावारु ॥ ६ ॥ अनिक प्राछत मिटहि खिन महि रिदै जपि भगवान ॥ पावना ते महा पावन कोटि दान इसनान ॥ ७ ॥ बल बुधि सुधि पराण सरबसु संतना की रासि ॥ बिसरु नाही निमख मन ते नानक की अरदासि ॥ ८ ॥ २ ॥

ईश्वर ने कृपा करके बचा लिया है और साधुओं का संग प्राप्त हो गया है। यह रसना खूब मज़े लेकर हरि-नाम जपती रहती है और इसे गहरा मीठा रंग लग गया है॥ १॥ प्रभु मेरे मन का अवलम्ब है, उस अन्तर्यामी को ही मेरा सच्चा मित्र, साजन, सखा एवं बंधु समझो॥ १॥ रहाउ॥

जिसने यह संसार-सागर उत्पन्न किया है, मैंने उस प्रभु की शरण ली है। गुरु-कृपा से प्रभु की आराधना की है, इसलिए यमदूत भी कुछ नहीं कहते॥ २॥ जिसका द्वार मोक्ष व मुक्तिदायक है, जिसके नाम का भण्डार संतों के हृदय में है, वह जीवनयुक्ति का ज्ञाता, चतुर स्वामी सदैव रक्षा करने वाला है॥ ३॥ जिसके मन में बस जाता है, उसके दुख-दर्द एवं सब क्लेश मिट जाते हैं। मृत्यु, दुखदायी नरक स्थान एवं माया रूपी विष भी उसे प्रभावित नहीं करते॥ ४॥ जिसके घर में नामामृत का प्रवाह होता है, ऋद्धियाँ सिद्धियाँ व नौ निधियाँ सेवा में रत हैं, वह अगम्य, अथाह, सर्वोच्च परमेश्वर आदि, मध्य एवं अंत में सदैव विद्यमान है॥ ५॥ बड़े-बड़े सिद्ध साधक, देवगण, मुनिजन एवं वेद ईश्वर की स्तुति करते हैं। वे अपने स्वामी का स्मरण करके सहज सुख प्राप्त करते हैं, जिसका कोई अन्त व आर-पार नहीं॥ ६॥ हृदय में भगवान का नाम जपने से क्षण में अनेक पाप मिट जाते हैं। परमात्मा का नाम महा पावन है, इसे जपने से करोड़ों दान-पुण्य व तीर्थ स्नान का फल हासिल होता है॥ ७॥ संतजनों की धन-राशि, बल, बुद्धि ज्ञान, प्राण सबकुछ है। नानक की प्रार्थना है कि हे परमेश्वर ! मन से एक पल भी न भूलना॥ ८॥ २॥

मारू महला ५ ॥ ससत्रि तीखणि काटि डारिओ मनि न कीनो रोसु ॥ काजु उआ को ले सवारिओ तिलु न दीनो दोसु ॥ १ ॥ मन मेरे राम रउ नित नीति ॥ दइआल देव क्रिपाल गोबिंद सुनि संतना की रीति ॥ १ ॥ रहाउ ॥ चरण तलै उगाहि बैसिओ स्रमु न रहिओ सरीरि ॥ महा सागरु नह विआपै खिनहि उतरिओ तीरि ॥ २ ॥ चंदन अगर कपूर लेपन तिसु संगे नही प्रीति ॥ बिसटा मूत्र खोदि तिलु तिलु मनि न मनी बिपरीति ॥ ३ ॥ ऊच नीच बिकार सुक्रित संलगन सभ सुख छत्र ॥ मित्र सत्रु न कछू जानै सरब जीअ समत ॥ ४ ॥ करि प्रगासु प्रचंड प्रगटिओ अंधकार बिनास ॥ पवित्र अपवित्रह किरण लागे मनि न भइओ बिखादु ॥ ५ ॥ सीत मंद सुगंध चलिओ सरब थान समान ॥ जहा सा किछु तहा लागिओ तिलु न संका मान ॥ ६ ॥ सुभाइ अभाइ जु निकटि आवै सीतु ता का जाइ ॥ आप पर का कछु न जाणै सदा सहजि सुभाइ ॥ ७ ॥ चरण सरण सनाथ इहु मनु रंगि राते लाल ॥ गोपाल गुण नित गाउ नानक भए प्रभ किरपाल ॥ ८ ॥ ३ ॥

{यहाँ पर पेड़, धरती, आकाश, सूर्य, वायु, अग्नि की उदाहरण देते हुए गुरु जी ने संतजनों की सराहना की है}

कोई तीखे औजार से पेड़ को काट डालता है, मगर वह मन में क्रोध नहीं करता अपितु उसका कार्य संवार देता है और तिल भर भी उसे दोष नहीं देता॥ १॥ हे मेरे मन ! नित्य राम का भजन करो; दयालु-कृपालु गोविंद का ध्यान करने वाले संतजनों का आचरण सुनो॥ १॥ रहाउ॥ जो व्यक्ति लकड़ी से बनी हुई नाव को पैरों तले दबा कर उसमें बैठ गया है, उसके शरीर की थकावट दूर हो गई है। महासागर ने भी कोई विघ्न पैदा नहीं किया और एक क्षण में ही सागर के तट पर जा उतारा है॥ २॥ धरती की चन्दन, अगर, कर्पूर के लेपन एवं सुगन्धि से कोई प्रीति नहीं, यदि कोई विष्ठा, मूत्र फैंकता व खोदकर तिल-तिल भी कर देता है तो वह अपने मन में घृणा नहीं करती (वैसे ही संतजन सहिष्णु हैं)॥ ३॥ सब को सुख देने वाला आकाश रूपी छत्र सबके संग संबंध बनाकर रखता है, चाहे कोई ऊँची अथवा निम्न जाति का है कोई बुराई अथवा भलाई करने वाला है। वह किसी को अपना मित्र अथवा शत्रु नहीं समझता अपितु सबको एक समान मानता है (वैसे ही संतों के लिए सब एक समान हैं)॥ ४॥ सूर्य अपना प्रचण्ड प्रकाश करके प्रगट हो जाता है और अंधकार मिट जाता है, उसकी किरणें सभी पवित्र-अपवित्र जीवों को स्पर्श करती हैं परन्तु उसके मन में इस बात का कोई दुख नहीं होता (वैसे ही संतजन सूर्य की मानिंद

हैं)॥ ५॥ शीतल एवं सुगन्धित वायु मन्द-मन्द सब स्थानों पर समान रूप में बहती है। जहाँ कहीं भी कोई अच्छा-बुरा जीव होता है, वहाँ ही उसे छूती है और तिल भर संकोच नहीं करती (वैसे ही संत मानवता का कल्याण करते हैं)॥ ६॥ अच्छे-बुरे स्वभाव वाला जो भी व्यक्ति अग्नि के निकट आता है, उसकी शीत दूर हो जाती है। अग्नि अपने पराए के भेद को कुछ भी नहीं जानती और सहज-स्वभाव विचरण करती है (वैसे ही संत सबका भला करते हैं)॥ ७॥ जो इनकी चरण शरण में आ जाता है, उसे अवलम्ब मिल जाता है और उसका मन प्रियतम के रंग में रंगा रहता है। हे नानक! प्रभु कृपालु हो गया है, नित्य उसका गुणगान करो॥ ८॥ ३॥

मारू महला ५ घरु ४ असटपदीआ ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

चादना चादनु आंगनि प्रभ जीउ अंतरि चादना ॥ १ ॥ आराधना अराधनु नीका हरि हरि नामु अराधना ॥ २ ॥ तिआगना तिआगनु नीका कामु क्रोधु लोभु तिआगना ॥ ३ ॥ मागना मागनु नीका हरि जसु गुर ते मागना ॥ ४ ॥ जागना जागनु नीका हरि कीरतन महि जागना ॥ ५ ॥ लागना लागनु नीका गुर चरणी मनु लागना ॥ ६ ॥ इह बिधि तिसहि परापते जा कै मसतकि भागना ॥ ७ ॥ कहु नानक तिसु सभु किछु नीका जो प्रभ की सरनागना ॥ ८ ॥ १ ॥ ४ ॥

हृदय रूपी आँगन में प्रभु का प्रकाश ही सबसे बड़ी चाँदनी है॥ १॥ अगर आराधना करनी है तो ईश्वर की करो, यही सफल आराधना है॥ २॥(अगर त्यागना है तो) मन में से काम, क्रोध एवं लोभ का त्याग करो, यही सबसे बड़ा त्याग है॥ ३॥ सबसे बड़ी माँग गुरु से हरि-यश माँगना है॥ ४॥ जागने में जागरण हरि-संकीर्तन में जागना है॥ ५॥ गुरु-चरणों में मन को लगाना ही सर्वोत्तम लगन है॥ ६॥ जिसके माथे पर उत्तम भाग्य होता है, उसे ही इस युक्ति की प्राप्ति होती है॥ ७॥ हे नानक! जो प्रभु की शरण में आ जाता है, उसके लिए सब कुछ अच्छा है॥ ८॥ १॥ ४॥

मारू महला ५ ॥ आउ जी तू आउ हमारै हरि जसु स्रवन सुनावना ॥ १ ॥ रहाउ ॥ तुधु आवत मेरा मनु तनु हरिआ हरि जसु तुम संगि गावना ॥ १ ॥ संत क्रिपा ते हिरदै वासै दूजा भाउ मिटावना ॥ २ ॥ भगत दइआ ते बुधि परगासै दुरमति दूख तजावना ॥ ३ ॥ दरसनु भेटत होत पुनीता पुनरपि गरभि न पावना ॥ ४ ॥ नउ निधि रिधि सिधि पाई जो तुमरै मनि भावना ॥ ५ ॥ संत बिना मै थाउ न कोई अवर न सूझै जावना ॥ ६ ॥ मोहि निरगुन कउ कोइ न राखै संता संगि समावना ॥ ७ ॥ कहु नानक गुरि चलतु दिखाइआ मन मधे हरि हरि रावना ॥ ८ ॥ २ ॥ ५ ॥

हे संतजनो! मेरे घर में आओ, कानों में भगवान का यश सुनाओ॥ १॥ रहाउ॥ तुम्हारे आने से मन-तन खिल जाता है और तुम्हारे संग मिलकर ईश्वर का ही गुणगान करना है॥ १॥ संतों की कृपा से हृदय में सत्य स्थित होता है और द्वैतभाव मिट जाता है॥ २॥ भक्तों की दया से बुद्धि आलोकित हो जाती है और दुर्मति के सब दुख दूर होते हैं॥ ३॥ संतों के दर्शन एवं भेंट से ही जीवन-आचरण पावन होता है और गर्भ-योनि से छुटकारा हो जाता है॥ ४॥ जो तुम्हारे मन को भाता है, उसे नौ निधियाँ, ऋद्धियाँ, सिद्धियाँ हासिल हो जाती हैं॥ ५॥ संतों के बिना मेरा अन्य कोई स्थान नहीं और अन्य स्थान जाना भी नहीं सूझता॥ ६॥ मुझ निर्गुण को कोई बचाने वाला नहीं है, इसलिए संतों के संग ही रहना है॥ ७॥ हे नानक! गुरु ने कौतुक दिखा दिया है, अब मन में ही प्रभु-दर्शन से सुख मिल गया है॥ ८॥ २॥ ५॥

मारू महला ५ ॥ जीवना सफल जीवन सुनि हरि जपि जपि सद जीवना ॥ १ ॥ रहाउ ॥ पीवना जितु मनु आघावै नामु अंम्रित रसु पीवना ॥ १ ॥ खावना जितु भूख न लागै संतोखि सदा त्रिपतीवना ॥ २ ॥ पैनणा रखु पति परमेसुर फिरि नागे नही थीवना ॥ ३ ॥ भोगना मन मधे हरि रसु संतसंगति महि लीवना ॥ ४ ॥ बिनु तागे बिनु सूई आनी मनु हरि भगती संगि सीवना ॥ ५ ॥ मातिआ हरि रस महि राते तिसु बहुड़ि न कबहू अउखीवना ॥ ६ ॥ मिलिओ तिसु सरब निधाना प्रभि क्रिपालि जिसु दीवना ॥ ७ ॥ सुखु नानक संतन की सेवा चरण संत धोइ पीवना ॥ ८ ॥ ३ ॥ ६ ॥

उसी का जीवन सफल है, जो ईश्वर की वंदना एवं महिमागान सुन जीवन बिताता है॥ १॥ रहाउ॥ वही पीना चाहिए, जिससे मन तृप्त हो जाए, इसलिए नामामृत का रस पीना चाहिए॥ १॥ वही खाना चाहिए, जिसे खाने से दोबारा भूख न लगे, मन सदा संतुष्ट एवं तृप्त रहे॥ २॥ जिसे पहनने से लाज बनी रहती है तो परमेश्वर का नाम रूपी कपड़ा धारण करो, इससे पुनः कभी निर्लज्ज नहीं होना पड़ता॥ ३॥ मन में हरि-नाम रूपी रस भोगना ही उत्तम है, अतः संतों की संगत में लीन रहो॥ ४॥ धागा सूई लाए बिना ही संतजनों का मन भगवान की भक्ति में सिल जाता है॥ ५॥ जो हरि-नाम रूपी रस में मस्त रहता है, वह कभी विचलित नहीं होता॥ ६॥ जिसे कृपालु प्रभु ने नाम प्रदान कर दिया, उसे सुखों के सब भण्डार मिल गए हैं॥ ७॥ हे नानक! संतों की सेवा से ही परम सुख प्राप्त होता है, अतः उनके चरण धो कर पीते रहो॥ ८॥ ३॥ ६॥

मारू महला ५ घरु ८ अंजुलीआ १ओं सतिगुर प्रसादि ॥

जिसु ग्रिहि बहुतु तिसै ग्रिहि चिंता ॥ जिसु ग्रिहि थोरी सु फिरै भ्रमंता ॥ दुहू बिवसथा ते जो मुकता सोई सुहेला भालीऐ ॥ १ ॥ ग्रिह राज महि नरकु उदास करोधा ॥ बहु बिधि बेद पाठ सभि सोधा ॥ देही महि जो रहै अलिपता तिसु जन की पूरन घालीऐ ॥ २ ॥ जागत सूता भरमि विगूता ॥ बिनु गुर मुकति न होईऐ मीता ॥ साधसंगि तुटहि हउ बंधन एको एकु निहालीऐ ॥ ३ ॥ करम करै त बंधा नह करै त निंदा ॥ मोह मगन मनु विआपिआ चिंदा ॥ गुर प्रसादि सुखु दुखु सम जाणै घटि घटि रामु हिआलीऐ ॥ ४ ॥ संसारै महि सहसा बिआपै ॥ अकथ कथा अगोचर नही जापै ॥ जिसहि बुझाए सोई बूझै ओहु बालक वागी पालीऐ ॥ ५ ॥ छोडि बहै तउ छूटै नाही ॥ जउ संचै तउ भउ मन माही ॥ इस ही महि जिस की पति राखै तिसु साधू चउरु ढालीऐ ॥ ६ ॥ जो सूरा तिस ही होइ मरणा ॥ जो भागै तिसु जोनी फिरणा ॥ जो वरताए सोई भल मानै बुझि हुकमै दुरमति जालीऐ ॥ ७ ॥ जितु जितु लावहि तितु तितु लगना ॥ करि करि वेखै अपणे जचना ॥ नानक के पूरन सुखदाते तू देहि त नामु समालीऐ ॥ ८ ॥ १ ॥ ७ ॥

जिस घर में बेशुमार धन-दौलत है, वहाँ चिन्ता ही बनी रहती है, पर जिस घर में धन जरूरत से कम है, उसे पाने के लिए वह भाग दौड़ करता रहता है। इन दोनों परिस्थितियों से जो मुक्त है, वही सुखी मिलता है॥ १॥ मैंने अनेक प्रकार से सभी वेदों का पाठ करके विश्लेषण किया है, उनका यही उपदेश है कि गृहस्थ राज में नरक है और त्यागी बनने से क्रोध बढ़ता है। जो शरीर में माया से निर्लिप्त रहता है, उस व्यक्ति का परिश्रम सफल होता है॥ २॥ इन्सान जागता सोता हुआ भी हर वक्त भ्रम में ख्वार होता रहता है। हे मित्र! गुरु के बिना मुक्ति नहीं होती। साधुओं

की संगत में सब बन्धन टूट जाते हैं और एक ईश्वर ही दिखाई देता है॥ ३॥ यदि कोई धर्म-कर्म करता है तो कर्मों के जाल में फँस जाता है और यदि नहीं करता तो संसार निन्दा करता है। मोह में मग्न मन चिंता में फँसा रहता है। गुरु की कृपा से जो सुख दुख को एक समान समझता है, वह घट-घट में व्याप्त राम को महसूस करता है॥ ४॥ संसार में हर समय कोई न कोई संशय व्याप्त रहता है और ईश्वर की अकथनीय कथा का ज्ञान नहीं होता। भगवान बालक की तरह पोषण करता है, जिसे ज्ञान देता है, उसे ही सूझ होती है॥ ५॥ अगर कोई धन का मोह छोड़ भी दे तो भी छूटता नहीं। जो बेशुमार धन संचित करता है, उसके मन में खोने का डर बना रहता है। इस से निर्लिप्त रहने वाले की जिसकी भगवान लाज रखता है, उस साधु के सिर पर यश रूपी चँवर झूलता है॥ ६॥ जो शूरवीर होता है, वही युद्ध में लड़कर वीरगति प्राप्त करता है। जो पीठ दिखाकर भाग जाता है, उसे योनि चक्र में भटकना पड़ता है। परमात्मा जो करता है, उसे भला मानना चाहिए और उसके हुक्म को समझकर दुर्मति को जला देना चाहिए॥ ७॥ जिधर ईश्वर ने लगाना है, जीव ने उधर ही लगना है। जो उसे ठीक लगता है, वही कर-करके देखता रहता है। हे नानक के पूर्ण सुखदाता ! यदि तू नाम-दान दे तो तेरा नाम-स्मरण करता रहूँ॥ ८॥ १॥ ७॥

मारू महला ५ ॥ बिरखै हेठि सभि जंत इकठे ॥ इकि तते इकि बोलनि मिठे ॥ असतु उदोतु भइआ उठि चले जिउ जिउ अउध विहाणीआ ॥ १ ॥ पाप करेदड़ सरपर मुठे ॥ अजराईलि फड़े फड़ि कुठे ॥ दोजकि पाए सिरजणहारै लेखा मंगै बाणीआ ॥ २ ॥ संगि न कोई भईआ बेबा ॥ मालु जोबनु धनु छोडि वञेसा ॥ करण करीम न जातो करता तिल पीड़े जिउ घाणीआ ॥ ३ ॥ खुसि खुसि लैदा वसतु पराई ॥ वेखै सुणे तेरै नालि खुदाई ॥ दुनीआ लबि पइआ खात अंदरि अगली गल न जाणीआ ॥ ४ ॥ जमि जमि मरै मरै फिरि जंमै ॥ बहुतु सजाइ पइआ देसि लंमै ॥ जिनि कीता तिसै न जाणी अंधा ता दुखु सहै पराणीआ ॥ ५ ॥ खालक थावहु भुला मुठा ॥ दुनीआ खेलु बुरा रुठ तुठा ॥ सिदकु सबूरी संतु न मिलिओ वतै आपण भाणीआ ॥ ६ ॥ मउला खेल करे सभि आपे ॥ इकि कढे इकि लहरि विआपे ॥ जिउ नचाए तिउ तिउ नचनि सिरि सिरि किरत विहाणीआ ॥ ७ ॥ मिहर करे ता खसमु धिआई ॥ संता संगति नरकि न पाई ॥ अंम्रित नाम दानु नानक कउ गुण गीता नित वखाणीआ ॥ ८ ॥ २ ॥ ८ ॥ १२ ॥ २० ॥

जगत् रूपी पेड़ के नीचे सभी जीव इकट्ठे हो जाते हैं। इन में कुछ गुस्सैल स्वभाव वाले हैं और कुछ मधुरभाषी हैं। जब जीवन रूपी सूर्यास्त हो जाता है तथा नया जीवन उदय होने वाला होता है (जीवन-रात्रि समाप्त हुई) तो ज्यों-ज्यों जीवों की जीवन अवधि खत्म हो जाती है तो वे जगत् से उठकर चले जाते हैं॥ १॥ पाप कर्म करने वाले अवश्य ही लुट जाते हैं और यमराज पकड़-पकड़कर उन्हें कठोर दण्ड देता है। सृजनहार उन्हें नरक में धकेल देता है और यमराज रूपी बानिया उनसे कर्मों का हिसाब-किताब माँगता है॥ २॥ अन्त में बहिन भाई कोई भी साथी नहीं बनता। वह अपना माल, यौवन एवं धन इत्यादि सबकुछ छोड़कर चल देता है। जो कृपालु, पैदा करने वाले, सर्व समर्थ परमात्मा को नहीं जानता, उसे यम तिल की तरह कोल्हु में पीसता है॥ ३॥ जीव खुशी-खुशी पराई वस्तु को लेता है, लेकिन देखने, सुनने वाला खुदा उसके साथ ही है। दुनिया के लालच में पड़ कर वह पापों के गड्ढे में गिर गया है और परलोक में होने वाली बात को नहीं जाना॥ ४॥ इस प्रकार मूर्ख जीव जन्म ले-लेकर मरता है, वह बार-बार मरता एवं

जन्मता रहता है। वह आवागमन के लम्बे चक्र में बहुत दण्ड प्राप्त करता है। जिसने पैदा किया है, अन्धा प्राणी उस परमेश्वर को नहीं जानता और बहुत दुख सहन करता है॥ ५॥ परमात्मा को भुलाकर जीव लुट गया है। यह दुनिया रूपी खेल तमाशा बहुत बुरा है क्योंकि माया के प्रभाव से जीव कभी रूठता और कभी प्रसन्न होता है। उसे कोई सत्यनिष्ठ संतोषी संत नहीं मिलता इसलिए वह अपनी इच्छानुसार चलता है॥ ६॥ अल्लाह मौला खुद ही सब खेल करता है। कोई मुक्ति प्रदान करता है और कोई संसार-सागर की लहरों में फँस जाता है। जैसे-जैसे वह नचाता है, वैसे ही वे नाचते हैं, प्रत्येक जीव के साथ उसके मुकद्दर अनुसार बीत रही है॥ ७॥ यदि मालिक मेहर कर दे तो ही जीव ध्यान करता है और संतों की संगति में रहने से नरक में नहीं जाना पड़ता। नानक कहते हैं कि हे परमात्मा ! यदि नामामृत का दान मिल जाए तो नित्य तेरे गुणों के गीत गाता रहूँ॥ ८॥ २॥ ८॥ १२॥ २०॥

मारू सोलहे महला १   १ओं सतिगुर प्रसादि ॥

साचा सचु सोई अवरु न कोई ॥ जिनि सिरजी तिन ही फुनि गोई ॥ जिउ भावै तिउ राखहु रहणा तुम सिउ किआ मुकराई हे ॥ १ ॥ आपि उपाए आपि खपाए ॥ आपे सिरि सिरि धंधै लाए ॥ आपे वीचारी गुणकारी आपे मारगि लाई हे ॥ २ ॥ आपे दाना आपे बीना ॥ आपे आपु उपाइ पतीना ॥ आपे पउणु पाणी बैसंतरु आपे मेलि मिलाई हे ॥ ३ ॥ आपे ससि सूरा पूरो पूरा ॥ आपे गिआनि धिआनि गुरु सूरा ॥ कालु जालु जमु जोहि न साकै साचे सिउ लिव लाई हे ॥ ४ ॥ आपे पुरखु आपे ही नारी ॥ आपे पासा आपे सारी ॥ आपे पिड़ बाधी जगु खेलै आपे कीमति पाई हे ॥ ५ ॥ आपे भवरु फुलु फलु तरवरु ॥ आपे जलु थलु सागरु सरवरु ॥ आपे मछु कछु करणीकरु तेरा रूपु न लखणा जाई हे ॥ ६ ॥ आपे दिनसु आपे ही रैणी ॥ आपि पतीजै गुर की बैणी ॥ आदि जुगादि अनाहदि अनदिनु घटि घटि सबदु रजाई हे ॥ ७ ॥ आपे रतनु अनूपु अमोलो ॥ आपे परखे पूरा तोलो ॥ आपे किस ही कसि बखसे आपे दे लै भाई हे ॥ ८ ॥ आपे धनखु आपे सरबाणा ॥ आपे सुघड़ु सरूपु सिआणा ॥ कहता बकता सुणता सोई आपे बणत बणाई हे ॥ ९ ॥ पउणु गुरू पाणी पित जाता ॥ उदर संजोगी धरती माता ॥ रैणि दिनसु दुइ दाई दाइआ जगु खेलै खेलाई हे ॥ १० ॥ आपे मछुली आपे जाला ॥ आपे गऊ आपे रखवाला ॥ सरब जीआ जगि जोति तुमारी जैसी प्रभि फुरमाई हे ॥ ११ ॥ आपे जोगी आपे भोगी ॥ आपे रसीआ परम संजोगी ॥ आपे वेबाणी निरंकारी निरभउ ताड़ी लाई हे ॥ १२ ॥ खाणी बाणी तुझहि समाणी ॥ जो दीसै सभ आवण जाणी ॥ सेई साह सचे वापारी सतिगुरि बूझ बुझाई हे ॥ १३ ॥ सबदु बुझाए सतिगुरु पूरा ॥ सरब कला साचे भरपूरा ॥ अफरिओ वेपरवाहु सदा तू ना तिसु तिलु न तमाई हे ॥ १४ ॥ कालु बिकालु भए देवाने ॥ सबदु सहज रसु अंतरि माने ॥ आपे मुकति त्रिपति वरदाता भगति भाइ मनि भाई हे ॥ १५ ॥ आपि निरालमु गुर गम गिआना ॥ जो दीसै तुझ माहि समाना ॥ नानकु नीचु भिखिआ दरि जाचै मै दीजै नामु वडाई हे ॥ १६ ॥ १ ॥

केवल ईश्वर ही सत्य है, अन्य कोई नहीं। जिसने यह दुनिया बनाई है, उसने ही इसे नाश किया है। हे परमेश्वर ! जैसे तुझे मंजूर है, वैसे ही सबने रहना है और तेरे आगे कोई बहाना नहीं

चल सकता॥ १॥ वह स्वयं ही पैदा करता है और स्वयं ही नष्ट कर देता है, स्वयं ही जीवों को भिन्न-भिन्न कार्यों में लगाता है। वह गुणों का सागर स्वयं ही विचार करता है और स्वयं ही सन्मार्ग लगाता है॥ २॥ वह स्वयं ही चतुर है और स्वयं ही देखने वाला है। वह स्वयं ही सगुण रूप पैदा करके प्रसन्न होता है। पवन, पानी एवं अग्नि भी वह स्वयं ही है और स्वयं ही मिलाता है॥ ३॥ वह स्वयं ही चाँद एवं सूरज है, और सर्वकला सम्पूर्ण है। ज्ञान-ध्यान में लीन रहने वाला शूरवीर गुरु भी वही है। जिसने परमसत्य ईश्वर में ध्यान लगाया है, उसे मृत्यु एवं यम-जाल भी प्रभावित नहीं करता॥ ४॥ पुरुष एवं नारी के रूप में स्वयं ही है, वह स्वयं चौपड़ का खेल एवं स्वयं ही गोटियाँ है। परमात्मा ने स्वयं ही यह धरती रूपी अखाड़ा बनाया है, जिसमें समूचा जगत्-खेल रहा है और स्वयं जीव रूपी खिलाड़ियों को शुभाशुभ कर्म का फल देता है॥ ५॥ भँवरा, फल-फूल, वृक्ष, जल, भूमि, सागर एवं सरोवर सब उसका ही रूप है। हे परमेश्वर ! तेरा रूप जाना नहीं जा सकता, तू ही मत्स्यावतार, कच्छपावतार और सारी रचना रचने वाला है॥ ६॥ दिन एवं रात वही है और वह स्वयं ही गुरु के वचनों अर्थात् वाणी से प्रसन्न होता है। उसकी मर्जी से युगों-युगान्तरों से दिन-रात घट-घट में उसका अनाहत शब्द गूँज रहा है॥ ७॥ वह स्वयं ही अनुपम अमूल्य नाम रूपी रत्न है। वह स्वयं ही बुरे-भले को परखता है और स्वयं ही पूरा तोलता है। वह स्वयं ही किसी के कर्म पर क्षमा-दान करता है और किसी को दण्ड देता है॥ ८॥ वह स्वयं ही धनुष एवं बाण चलाने वाला है, वह बड़ा बुद्धिमान, सुन्दर रूप एवं चतुर है। वह स्वयं ही कहने वाला, वक्ता एवं श्रोता है और सब उसकी ही रचना है॥ ९॥ पवन जगत् का गुरु है, पानी पिता है और उदर के संयोग से धरती जगत् की माता है। रात और दिन दोनों दाई-दाया हैं और समूचा जगत् इनके खेलाने से खेल रहा है॥ १०॥ मछली एवं फाँसने वाला जाल परमात्मा ही है। वह स्वयं ही गाय और स्वयं ही रखवाला है। हे ईश्वर ! सब जीवों में तेरी ही ज्योति है, जैसी तेरी आज्ञा है, दुनिया वैसे ही चल रही है॥ ११॥ योगी, भोगी, रसिया एवं परम संयोगी भी वही है और निराकार निर्भय परमात्मा ने स्वयं ही समाधि लगाई हुई है॥ १२॥ हे सर्वेश्वर ! अण्डज, जेरज, स्वेदज, उद्भिज्ज चारों स्त्रोत एवं चारों वाणियां तुझ में ही समाई हुई है। जो भी दृष्टिमान है, सब नाशवान् है। जिन्हें सतगुरु ने ज्ञान प्रदान किया है, वही सत्य के व्यापारी एवं साहूकार हैं॥ १३॥ पूर्ण सतगुरु ही शब्द का रहस्य बतलाता है कि ईश्वर सर्वकला सम्पूर्ण है। हे ईश्वर ! तू बेपरवाह एवं मन-वाणी से परे है और तुझे तिल मात्र भी कोई लालच नहीं॥ १४॥ जो व्यक्ति मन में सहज ही शब्द का रस प्राप्त करता है, उसे देखकर भयानक काल भी भाग जाता है। जिसके मन को भगवान की भक्ति भा गई है, वरदाता परमेश्वर ने प्रसन्न होकर मुक्ति-तृप्ति प्रदान की है॥ १५॥ हे परमात्मा ! तू स्वयं ही निर्लिप्त रहता है, पर तेरा ज्ञान गुरु की संगत करने से ही होता है। जो कुछ भी दिखाई देता है, वह तुझ में ही विलीन हो जाता है। नानक स्वयं को निम्न मानते हुए सत्य के द्वार पर भिक्षा माँगते हैं कि उसे नाम-दान की बड़ाई दीजिए॥ १६॥ १॥

मारू महला १ ॥ आपे धरती धउलु अकासं ॥ आपे साचे गुण परगासं ॥ जती सती संतोखी आपे आपे कार कमाई हे ॥ १ ॥ जिसु करणा सो करि करि वेखै ॥ कोइ न मेटै साचे लेखै ॥ आपे करे कराए आपे आपे दे वडिआई हे ॥ २ ॥ पंच चोर चंचल चितु चालहि ॥ पर घर जोहहि घरु नही भालहि ॥ काइआ नगरु ढहै ढहि ढेरी बिनु सबदै पति जाई हे ॥ ३ ॥ गुर ते बूझै त्रिभवणु सूझै ॥ मनसा मारि मनै सिउ लूझै ॥ जो तुधु सेवहि से तुध ही जेहे निरभउ बाल सखाई हे ॥ ४ ॥ आपे सुरगु मछु पइआला ॥ आपे जोति सरूपी बाला ॥ जटा बिकट बिकराल सरूपी रूपु न रेखिआ काई हे

॥ ५ ॥ बेद कतेबी भेदु न जाता ॥ ना तिसु मात पिता सुत भ्राता ॥ सगले सैल उपाइ समाए अलखु न लखणा जाई हे ॥ ६ ॥ करि करि थाकी मीत घनेरे ॥ कोइ न काटै अवगुण मेरे ॥ सुरि नर नाथु साहिबु सभना सिरि भाइ मिलै भउ जाई हे ॥ ७ ॥ भूले चूके मारगि पावहि ॥ आपि भुलाइ तूहै समझावहि ॥ बिनु नावै मै अवरु न दीसै नावहु गति मिति पाई हे ॥ ८ ॥ गंगा जमुना केल केदारा ॥ कासी कांती पुरी दुआरा ॥ गंगा सागरु बेणी संगमु अठसठि अंकि समाई हे ॥ ६ ॥ आपे सिध साधिकु वीचारी ॥ आपे राजनु पंचा कारी ॥ तखति बहै अदली प्रभु आपे भरमु भेदु भउ जाई हे ॥ १० ॥ आपे काजी आपे मुला ॥ आपि अभुलु न कबहू भुला ॥ आपे मिहर दइआपति दाता ना किसै को बैराई हे ॥ ११ ॥ जिसु बखसे तिसु दे वडिआई ॥ सभसै दाता तिलु न तमाई ॥ भरपुरि धारि रहिआ निहकेवलु गुपतु प्रगटु सभ ठाई हे ॥ १२ ॥ किआ सालाही अगम अपारै ॥ साचे सिरजणहार मुरारै ॥ जिस नो नदरि करे तिसु मेले मेलि मिलै मेलाई हे ॥ १३ ॥ ब्रहमा बिसनु महेसु दुआरै ॥ ऊभे सेवहि अलख अपारै ॥ होर केती दरि दीसै बिललादी मै गणत न आवै काई हे ॥ १४ ॥ साची कीरति साची बाणी ॥ होर न दीसै बेद पुराणी ॥ पूंजी साचु सचे गुण गावा मै धर होर न काई हे ॥ १५ ॥ जुगु जुगु साचा है भी होसी ॥ कउणु न मूआ कउणु न मरसी ॥ नानकु नीचु कहै बेनंती दरि देखहु लिव लाई हे ॥ १६ ॥ २ ॥

धरती, धर्म रूपी बैल एवं आकाश स्वयं ईश्वर ही है, उस परम-सत्य ने स्वयं ही अपने गुणों का प्रकाश किया है। ब्रह्मचारी, सदाचारी, संतोषी भी वही है एवं स्वयं ही कार्य कर रहा है॥ १॥ जिस ने यह जगत् बनाया है, वही उसकी देखभाल करता है। उस परम-सत्य द्वारा लिखे कर्मालेख को कोई नहीं मिटा सकता, वही करता एवं जीवों से करवाता है और स्वयं ही भक्तजनों को बड़ाई देता है॥ २॥ काम-क्रोध रूपी पाँच चोर आदमी के चंचल मन को चलायमान कर देते हैं। वह पराई नारी की ओर देखता रहता है किन्तु अपने घर की तलाश नहीं करता। मानव-शरीर रूपी नगरी का अन्त हो जाता है और शब्द-गुरु के बिना जीव अपनी प्रतिष्ठा गंवा देता है॥ ३॥ जो गुरु द्वारा सत्य का रहस्य बूझ लेता है, उसे तीनों लोकों का ज्ञान हो जाता है। वह अपनी अभिलाषा को मार कर मन में जूझता रहता है। हे ईश्वर ! जो तेरी भक्ति करते हैं, वे तेरा ही रूप बन जाते हैं। तू निर्भय एवं बचपन का साथी है॥ ४॥ स्वर्गलोक, मृत्युलोक एवं पाताल लोक परमसत्य का ही रूप हैं। वह स्वयं ही ज्योति स्वरूप एवं तरुण है। वह स्वयं ही विकट जटाधारी एवं विकराल स्वरूप वाला है और उसकी कोई रूप-रेखा नहीं है॥ ५॥ वेदों एवं कुरान ने भी परमात्मा का भेद नहीं समझा और उसका कोई माता-पिता, पुत्र एवं भाई नहीं है। वह सब पर्वतों को बनाकर खुद में ही विलीन कर लेता है और उस अलख को देखा नहीं जा सकता॥ ६॥ मैं अनेक मित्र बनाकर थक गया हूँ मगर कोई भी मेरे अवगुण काटने वाला नहीं। देवताओं, मनुष्यों एवं योगियों सबका मालिक केवल ईश्वर है, वह भक्ति भाव से ही मिलता है और फिर भय दूर हो जाता है॥ ७॥ पथभ्रष्ट जीव को स्वयं ही सही रास्ता बताता है। वह स्वयं ही भुला देता है और स्वयं ही सत्य का ज्ञान देता है। तेरे नाम के बिना मुझे कोई सहारा नजर नहीं आता और तेरी गति एवं मर्यादा नाम द्वारा ही प्राप्त होती है॥ ८॥ गंगा, यमुना, वृंदावन, केदारनाथ, काशी, मथुरा, द्वारिका पुरी, गंगासागर और त्रिवेणी संगम इत्यादि अड़सठ तीर्थ ईश्वर के स्वरूप में ही लीन बने हुए हैं॥ ६॥ वह स्वयं ही सिद्ध, साधक एवं विचार करने वाला विद्वान है। पंचों की सभा में वह स्वयं ही राजा है। प्रभु स्वयं ही न्यायाधीश बनकर सिंहासन पर विराजमान होता है और

उसकी कृपा से भ्रम, भेद एवं भय दूर हो जाता है॥ १०॥ काजी एवं मुल्ला वह स्वयं ही है। वह अविस्मरणीय है और कभी भूला नहीं है, वह दाता बड़ा मेहरबान एवं दयालु है और उसका किसी से कोई वैर नहीं॥ ११॥ जिस पर कृपा करता है, उसे ही यश प्रदान करता है। वह सबका दाता है, जिसे तिल भर किसी बात का कोई लोभ नहीं। गुप्त एवं प्रगट रूप में सब स्थानों पर वह शुद्ध रूप में सर्वव्यापक हो रहा है॥ १२॥ अगम्य, अपार ईश्वर की क्या प्रशंसा करूँ, परम-सत्य सृजनहार जिस पर करुणा-दृष्टि करता है, उसे साथ मिला लेता है, मिलाने वाला वही है॥ १३॥ ब्रह्मा, विष्णु एवं शिवशंकर भी अलख-अपार परमात्मा के द्वार पर खड़े उसकी सेवा में लीन हैं और कितनी ही सृष्टि उसके द्वार पर फरियाद कर रही है। परन्तु उनकी गणना करना संभव नहीं है॥ १४॥ उसकी वाणी एवं कीर्ति सदैव सत्य है और वेदों-पुराणों में भी सत्य की स्तुति के अलावा कुछ दिखाई नहीं देता। परमात्मा का नाम ही मेरी जीवन-पूँजी है, उसका ही गुणगान करता हूँ और उसके अलावा मेरा अन्य कोई अवलम्ब नहीं॥ १५॥ युगों-युगान्तरों से परम-सत्य परमात्मा ही है, वह वर्तमान में भी है और भविष्य में भी एक वही होगा। वह कौन है जो मरा नहीं और कौन है जो मरेगा नहीं। गुरु नानक स्वयं को निम्न मानते हुए विनती करते हैं कि भगवान में ध्यान लगाकर उसे हृदय घर में ही देख लो॥ १६॥ २॥

मारू महला १ ॥ दूजी दुरमति अंनी बोली ॥ काम क्रोध की कची चोली ॥ घरि वरु सहजु न जाणै छोहरि बिनु पिर नीद न पाई हे ॥ १ ॥ अंतरि अगनि जलै भड़कारे ॥ मनमुखु तके कुंडा चारे ॥ बिनु सतिगुर सेवे किउ सुखु पाईऐ साचे हाथि वडाई हे ॥ २ ॥ कामु क्रोधु अहंकारु निवारे ॥ तसकर पंच सबदि संघारे ॥ गिआन खड़गु लै मन सिउ लूझै मनसा मनहि समाई हे ॥ ३ ॥ मा की रकतु पिता बिदु धारा ॥ मूरति सूरति करि आपारा ॥ जोति दाति जेती सभ तेरी तू करता सभ ठाई हे ॥ ४ ॥ तुझ ही कीआ जंमण मरणा ॥ गुर ते समझ पड़ी किआ डरणा ॥ तू दइआलु दइआ करि देखहि दुखु दरदु सरीरहु जाई हे ॥ ५ ॥ निज घरि बैसि रहे भउ खाइआ ॥ धावत राखे ठाकि रहाइआ ॥ कमल बिगास हरे सर सुभर आतम रामु सखाई हे ॥ ६ ॥ मरणु लिखाइ मंडल महि आए ॥ किउ रहीऐ चलणा परथाए ॥ सचा अमरु सचे अमरा पुरि सो सचु मिलै वडाई हे ॥ ७ ॥ आपि उपाइआ जगतु सबाइआ ॥ जिनि सिरिआ तिनि धंधै लाइआ ॥ सचै ऊपरि अवर न दीसै साचे कीमति पाई हे ॥ ८ ॥ ऐथै गोइलड़ा दिन चारे ॥ खेलु तमासा धुंधूकारे ॥ बाजी खेलि गए बाजीगर जिउ निसि सुपनै भखलाई हे ॥ ९ ॥ तिन कउ तखति मिली वडिआई ॥ निरभउ मनि वसिआ लिव लाई ॥ खंडी ब्रहमंडी पाताली पुरीई त्रिभवण ताड़ी लाई हे ॥ १० ॥ साची नगरी तखतु सचावा ॥ गुरमुखि साचु मिलै सुखु पावा ॥ साचे साचै तखति वडाई हउमै गणत गवाई हे ॥ ११ ॥ गणत गणीऐ सहसा जीऐ ॥ किउ सुखु पावै दूऐ तीऐ ॥ निरमलु एकु निरंजनु दाता गुर पूरे ते पति पाई हे ॥ १२ ॥ जुगि जुगि विरली गुरमुखि जाता ॥ साचा रवि रहिआ मनु राता ॥ तिस की ओट गही सुखु पाइआ मनि तनि मैलु न काई हे ॥ १३ ॥ जीभ रसाइणि साचै राती ॥ हरि प्रभु संगी भउ न भराती ॥ स्रवण स्रोत रजे गुरबाणी जोती जोति मिलाई हे ॥ १४ ॥ रखि रखि पैर धरे पउ धरणा ॥ जत कत देखउ तेरी सरणा ॥ दुखु सुखु देहि तूहै मनि भावहि तुझ ही सिउ बणि आई हे ॥ १५ ॥ अंत कालि को बेली नाही ॥ गुरमुखि जाता तुधु सालाही ॥ नानक नामि रते बैरागी निज घरि ताड़ी लाई हे ॥ १६ ॥ ३ ॥

द्वैतभाव व दुर्मति के कारण जीव रूपी नारी अन्धी व बहरी हो चुकी है। उसने काम-क्रोध की कच्ची चोली धारण की हुई है। वह किशोरी इस बात से बेखबर है कि उसका पति-प्रभु हृदय-घर में ही है, अपने स्वामी के बिना उसे रात को नींद भी नहीं आती॥ १॥ मन में तृष्णाग्नि भड़कती रहती है और मनमुख चारों दिशाओं में उम्मीद लगाकर रहता है। सतगुरु की सेवा किए बिना सुख कैसे प्राप्त हो सकता है, यह बड़ाई तो सच्चे परमेश्वर के हाथ में है॥ २॥ जो काम, क्रोध एवं अहंकार का निवारण करता है, शब्द द्वारा कामादिक पाँच चोरों को मारता है और ज्ञान रूपी खड्ग लेकर मन से जूझता है, उसकी तमाम लालसा मन में ही समा जाती है॥ ३॥ माँ के रक्त एवं पिता के वीर्य से तूने मानव-शरीर रूपी सुन्दर मूर्ति का निर्माण किया। सब में तेरी प्राण-ज्योति विद्यमान है, तू बनानेवाला है, सर्वव्यापक है॥ ४॥ जीवन-मृत्यु तूने ही बनाया है, गुरु से इस रहस्य का ज्ञान हो गया है, इसलिए अब मृत्यु से क्या डरना। तू बड़ा दयालु है, जिसे दया-दृष्टि से देखता है, उसके शरीर से दुख-दर्द मिट जाता है॥ ५॥ जो सच्चे घर में निवास कर लेते हैं, उन्होंने मृत्यु के भय को निगल लिया है। उन्होंने भटकते मन पर अंकुश लगा लिया है और उनका हृदय-कमल खिल गया है। उनकी ज्ञानेन्द्रियाँ रूपी सरोवर नामामृत के जल से भरपूर हो गया है और राम ही उनका मित्र बन गया है॥ ६॥ सब जीव मृत्यु की तिथि लिखवाकर पृथ्वी में आते हैं, जब मृत्यु अटल है तो कोई कैसे सदा के लिए रह सकता है। उन्होंने पुनः परलोक गमन ही करना है। ईश्वर का हुक्म अटल है, जो उसके हुक्म का पालन करते हैं, वे सचखण्ड में पहुँच जाते हैं और सत्य से ही उन्हें बड़ाई मिलती है॥ ७॥ समूचा जगत् ईश्वर ने स्वयं ही उत्पन्न किया है। जिसने यह जगत्-प्रसार किया है, उसने स्वयं जीवों को भिन्न भिन्न कार्यों में लगा दिया है। उस परमसत्य से ऊँचा कोई नजर नहीं आता, उसने स्वयं ही सत्य की महिमा को जाना है॥ ८॥ यहाँ जीव चार दिन ही आता है, यह जग खेल-तमाशा है और जीव अज्ञानता के घोर अँधेरे में रहता है। जैसे कोई सपने में बड़बड़ाता है, वैसे ही जीव रूपी बाजीगर अपनी जीवन-बाजी खेलकर चले गए हैं॥ ६॥ जिन्होंने परमात्मा को मन में बसाया है, उसमें लगन लगाई है, उन्हें ही सत्य के सिंहासन पर बड़ाई मिली है। खण्ड-ब्रह्माण्ड, पाताल, चौदह पुरियों एवं तीनों लोकों में रहने वाले जीवों ने सत्य में ही समाधि लगाई है॥ १०॥ निरंकार की सचखण्ड रूपी नगरी सत्य है, उसका सिंहासन सदा अटल है। जो गुरुमुख सत्य को पा लेता है, उसे सुख हासिल हो जाता है। जिसे सत्य के सिंहासन पर बड़ाई मिली है, उसने अभिमान को मिटा दिया है॥ ११॥ गणना करने वाला संशय में ही जीता रहता है, द्वैतभाव व भ्रम में सुख कैसे प्राप्त हो सकता है। देने वाला मायातीत एक परमात्मा ही निर्मल है और पूर्ण गुरु की सेवा से ही शोभा हासिल होती है॥ १२॥ युग-युगान्तर किसी विरले गुरुमुख ने ही सत्य का रहस्य जाना है और यह मन भी उस परम-सत्य में लीन है। उसकी ओट लेकर सुख हासिल हो गया है, अब मन-तन शुद्ध हो गया है॥ १३॥ यह जीभ सत्य के रस में ही लीन रहती है। यदि प्रभु साथी है तो कोई भय एवं भ्रम नहीं। गुरु की वाणी सुनकर कान तृप्त हो गए हैं और यह ज्योति-परमज्योति में विलीन हो गई है॥ १४॥ मैं सोच-समझकर पैर धरती पर रखकर चलता हूँ। हे ईश्वर! जहाँ कहीं तेरी ही शरण चाहता हूँ। चाहे तू दुख अथवा सुख दे, तू ही मन को प्यारा लगता है और मेरी तुझ से ही प्रीति बनी हुई है॥ १५॥ अन्तिम समय कोई किसी का साथी नहीं और गुरु के माध्यम से इस सत्य को समझकर तेरी ही प्रशंसा करता हूँ। हे नानक! सत्य-नाम में लीन रहने वाले ही वास्तव में वैरागी हैं और उन्होंने सच्चे घर में ही समाधि लगाई हुई है॥ १६॥ ३॥

मारू महला १ ॥ आदि जुगादी अपर अपारे ॥ आदि निरंजन खसम हमारे ॥ साचे जोग जुगति वीचारी साचे ताड़ी लाई हे ॥ १ ॥ केतड़िआ जुग धुंधूकारै ॥ ताड़ी लाई सिरजणहारै ॥ सचु नामु सची वडिआई साचै तखति वडाई हे ॥ २ ॥ सतजुगि सतु संतोखु सरीरा ॥ सति सति वरतै गहिर गंभीरा ॥ सचा साहिबु सचु परखै साचै हुकमि चलाई हे ॥ ३ ॥ सत संतोखी सतिगुरु पूरा ॥ गुर का सबदु मने सो सूरा ॥ साची दरगह साचु निवासा मानै हुकमु रजाई हे ॥ ४ ॥ सतजुगि साचु कहै सभु कोई ॥ सचि वरतै साचा सोई ॥ मनि मुखि साचु भरम भउ भंजनु गुरमुखि साचु सखाई हे ॥ ५ ॥ त्रेतै धरम कला इक चूकी ॥ तीनि चरण इक दुबिधा सूकी ॥ गुरमुखि होवै सु साचु वखाणै मनमुखि पचै अवाई हे ॥ ६ ॥ मनमुखि कदे न दरगह सीझै ॥ बिनु सबदै किउ अंतरु रीझै ॥ बाधे आवहि बाधे जावहि सोझी बूझ न काई हे ॥ ७ ॥ दइआ दुआपुरि अधी होई ॥ गुरमुखि विरला चीनै कोई ॥ दुइ पग धरमु धरे धरणीधर गुरमुखि साचु तिथाई हे ॥ ८ ॥ राजे धरमु करहि परथाए ॥ आसा बंधे दानु कराए ॥ राम नाम बिनु मुकति न होई थाके करम कमाई हे ॥ ९ ॥ करम धरम करि मुकति मंगाही ॥ मुकति पदारथु सबदि सलाही ॥ बिनु गुर सबदै मुकति न होई परपंचु करि भरमाई हे ॥ १० ॥ माइआ ममता छोडी न जाई ॥ से छूटे सचु कार कमाई ॥ अहिनिसि भगति रते वीचारी ठाकुर सिउ बणि आई हे ॥ ११ ॥ इकि जप तप करि करि तीरथ नावहि ॥ जिउ तुधु भावै तिवै चलावहि ॥ हठि निग्रहि अपतीजु न भीजै बिनु हरि गुर किनि पति पाई हे ॥ १२ ॥ कली काल महि इक कल राखी ॥ बिनु गुर पूरे किनै न भाखी ॥ मनमुखि कूड़ु वरतै वरतारा बिनु सतिगुर भरमु न जाई हे ॥ १३ ॥ सतिगुरु वेपरवाहु सिरंदा ॥ ना जम काणि न छंदा बंदा ॥ जो तिसु सेवे सो अबिनासी ना तिसु कालु संताई हे ॥ १४ ॥ गुर महि आपु रखिआ करतारे ॥ गुरमुखि कोटि असंख उधारे ॥ सरब जीआ जगजीवनु दाता निरभउ मैलु न काई हे ॥ १५ ॥ सगले जाचहि गुर भंडारी ॥ आपि निरंजनु अलख अपारी ॥ नानकु साचु कहै प्रभ जाचै मै दीजै साचु रजाई हे ॥ १६ ॥ ४ ॥

जग के प्रारम्भ व युगों-युगान्तरों से अपरंपार ईश्वर ही व्याप्त है। मायातीत है, सृष्टि का आदि है और वही हमारा मालिक है। उस परम-सत्य ने योग-युक्ति का विचार किया और निर्गुण रूप में समाधि लगा ली॥ १॥ सृष्टा ने समाधि लगाई तो सृष्टि-रचना से पूर्व कितने ही युग घोर अंधकार बना रहा। उसका नाम सदैव सत्य है, उसकी बड़ाई सदा शाश्वत है, जिसका स्तुतिगान कर रहा हूँ, वह सत्य के सिंहासन पर विराजमान है॥ २॥ जब सत्ययुग आया तो तब लोगों में सत्य एवं संतोष था। चारों ओर सत्य का प्रसार था। सच्चा परमेश्वर सत्य की ही परख करता है और उसके हुक्म से दुनिया चल रही है॥ ३॥ पूर्ण सतगुरु संतोषी एवं सत्यनिष्ठ है। जो गुरु के शब्द में आस्था रखता है, वही शूरवीर है। जो परमात्मा के हुक्म एवं रज़ा को मानता है, उसका सत्य के दरबार में निवास होता है॥ ४॥ सत्ययुग में प्रत्येक आदमी सत्य बोलता था और जो सत्य में विचरण करता था, वही सत्यवादी था। मन एवं मुख में सत्य के कारण भ्रम-भय मिट जाता था और गुरु के माध्यम से सत्य ही साथी था॥ ५॥ त्रैता युग में धर्म (रूपी बैल) की एक कला नाश हो गई, धर्म के तीन पैर रह गए और जीवों के मन में दुविधा प्रगट हो गई। इस युग में गुरुमुख ही सत्य बोलता था पर स्वेच्छाचारी दुविधा में चिंताग्रस्त रहता था॥ ६॥ स्वेच्छाचारी प्रभु दरबार में कभी मान्य नहीं होता। ब्रह्म-शब्द के बिना उसका अन्तर्मन कैसे संतुष्ट हो सकता है ? इसलिए स्वेच्छाचारी कर्म-बन्धन के कारण आवागमन में पड़े रहते थे और उन्हें सत्य का ज्ञान नहीं होता था॥ ७॥ द्वापर युग में दया की भावना आधी हो गई और कोई विरला गुरुमुख ही रहस्य को

पहचानता था। पृथ्वी को धारण करने वाला अब धर्म रूपी बैल दो पैरों पर खड़ा था और गुरु से ही सत्य की प्राप्ति होती थी॥ ८॥ बड़े-बड़े राजा अपने किसी मनोरथ के लिए धर्म-कर्म कर रहे थे, वे किसी आशा में बँधकर दान-पुण्य करते थे। वे अनेक धर्म-कर्म करके थक गए लेकिन राम-नाम के बिना मुक्ति प्राप्त नहीं होती॥ ६॥ लोग धर्म-कर्म करके मुक्ति की कामना कर रहे थे किन्तु ब्रह्म-शब्द की स्तुति से ही मुक्ति मिलती है। लोग दुनिया के परपंच में अकारथ ही भटक रहे थे, पर शब्द गुरु के बिना मुक्ति नहीं मिलती॥ १०॥ जीवों से माया ममता छोड़ी नहीं जाती थी, लेकिन जिन्होंने सत्य की साधना की, वे बन्धनों से छूट गए। महापुरुष रात-दिन भगवान की भक्ति में लीन थे और उनकी ठाकुर जी से अटूट प्रीति बनी हुई थी॥ ११॥ कोई मंत्रों के जप व तपस्या में लीन थे तो कोई तीर्थों में स्नान कर रहे थे। हे परमात्मा ! जैसा तुझे मंजूर है, तू वैसे ही जीवों को चलाता है। हठ-योग व इन्द्रियों को संयमित करने से मन आनंदित नहीं होता। गुरु (के ज्ञान) परमेश्वर (की स्तुति) के बिना किसी को भी सत्य के दरबार में यश नहीं मिला॥ १२॥ जब कलियुग आया तो धर्म (रूपी बैल) की एक ही कला रह गई, पूर्ण गुरु के बिना किसी ने भी सत्य की बात नहीं की है। मनमुखी जीवों का यही आचरण है कि उनमें झूठ का ही विचरण हो रहा है, पर सच्चे गुरु के बिना भ्रम दूर नहीं होता॥ १३॥ सतगुरु परमेश्वर बे-परवाह एवं स्रष्टा है, न उसे कोई यम का भय है और न ही लोगों पर निर्भर है, जो उसकी भक्ति करता है, वह अटल हो जाता है और उसे काल भी दुखी नहीं करता॥ १४॥ परमेश्वर ने खुद को गुरु के हृदय में प्रगट किया हुआ है और गुरु के नाम-मंत्र से करोड़ों असंख्य जीवों का उद्धार हुआ है। जग का जीवन परमेश्वर सब जीवों को देने वाला है, वह निर्भय एवं पवित्र-पावन है॥ १५॥ सब जीव गुरु भण्डारी से ही माँगते हैं, वह स्वयं मायातीत, अलक्ष्य व अपरंपार है। नानक सत्य कहता है और प्रभु से यही माँगता है कि मुझे अपनी रज़ा में रखकर सत्य का दान दीजिए॥ १६॥ ४॥

मारू महला १ ॥ साचै मेले सबदि मिलाए ॥ जा तिसु भाणा सहजि समाए ॥ त्रिभवण जोति धरी परमेसरि अवरु न दूजा भाई हे ॥ १ ॥ जिस के चाकर तिस की सेवा ॥ सबदि पतीजै अलख अभेवा ॥ भगता का गुणकारी करता बखसि लए वडिआई हे ॥ २ ॥ देदे तोटि न आवै साचे ॥ लै लै मुकरि पउदे काचे ॥ मूलु न बूझहि साचि न रीझहि दूजै भरमि भुलाई हे ॥ ३ ॥ गुरमुखि जागि रहे दिन राती ॥ साचे की लिव गुरमति जाती ॥ मनमुख सोइ रहे से लूटे गुरमुखि साबतु भाई हे ॥ ४ ॥ कूड़े आवै कूड़े जावै ॥ कूड़े राती कूड़ु कमावै ॥ सबदि मिले से दरगह पैधे गुरमुखि सुरति समाई हे ॥ ५ ॥ कूड़ि मुठी ठगी ठगवाड़ी ॥ जिउ वाड़ी ओजाड़ि उजाड़ी ॥ नाम बिना किछु सादि न लागै हरि बिसरिऐ दुखु पाई हे ॥ ६ ॥ भोजनु साचु मिलै आघाई ॥ नाम रतनु साची वडिआई ॥ चीनै आपु पछाणै सोई जोती जोति मिलाई हे ॥ ७ ॥ नावहु भुली चोटा खाए ॥ बहुतु सिआणप भरमु न जाए ॥ पचि पचि मुए अचेत न चेतहि अजगरि भारि लदाई हे ॥ ८ ॥ बिनु बाद बिरोधहि कोई नाही ॥ मै देखालिहु तिसु सालाही ॥ मनु तनु अरपि मिलै जगजीवनु हरि सिउ बणत बणाई हे ॥ ६ ॥ प्रभ की गति मिति कोइ न पावै ॥ जे को वडा कहाइ वडाई खावै ॥ साचे साहिब तोटि न दाती सगली तिनहि उपाई हे ॥ १० ॥ वडी वडिआई वेपरवाहे ॥ आपि उपाए दानु समाहे ॥ आपि दइआलु दूरि नही दाता मिलिआ सहजि रजाई हे ॥ ११ ॥ इकि सोगी इकि रोगि विआपे ॥ जो किछु करे सु आपे आपे ॥ भगति भाउ गुर की मति पूरी अनहदि सबदि लखाई हे ॥ १२ ॥ इकि नागे भूखे भवहि भवाए ॥ इकि हठु करि मरहि न कीमति पाए ॥ गति अविगत की सार न जाणै बूझै सबदु कमाई हे ॥ १३ ॥ इकि तीरथि नावहि अंनु न खावहि ॥ इकि अगनि जलावहि देह खपावहि ॥ राम नाम बिनु मुकति न होई कितु

बिधि पारि लंघाई हे ॥ १४ ॥ गुरमति छोडहि उझड़ि जाई ॥ मनमुखि रामु न जपै अवाई ॥ पचि पचि बूडहि कूड़ु कमावहि कूड़ि कालु बैराई हे ॥ १५ ॥ हुकमे आवै हुकमे जावै ॥ बूझै हुकमु सो साचि समावै ॥ नानक साचु मिलै मनि भावै गुरमुखि कार कमाई हे ॥ १६ ॥ ५ ॥

परमात्मा ने शब्द गुरु द्वारा ही अपने संग मिलाया है, जब उसे मंजूर हुआ तो वे सहज स्वभाव सत्य में समा गए। तीनों लोकों में परमेश्वर ने अपनी ज्योति स्थापित की हुई है, उस जैसा बड़ा अन्य कोई नहीं है॥ १॥ जिसके हम सेवक हैं, उसकी ही भक्ति में लीन रहते हैं। वह अलख अभेद्य शब्द की स्तुति से ही प्रसन्न होता है। वह भक्तजनों का कल्याण करने वाला है, यह उसका बड़प्पन है कि शरण में आए जीवों को क्षमा कर देता है॥ २॥ जीवों को देते देते उस सच्चे के घर में कोई कमी नहीं आती, परन्तु झूठे एहसान-फरामोश ले लेकर भी मुकर जाते हैं। वे अपने मूल को पहचानते नहीं, सत्य में उनकी कोई लगन नहीं लगती, इसलिए द्वैतभाव व भ्रम के कारण भटकते रहते हैं॥ ३॥ गुरुमुख दिन-रात माया की ओर से जाग्रत रहते हैं, वे गुरु-मतानुसार सत्य में ध्यान लगाने की विधि को समझ लेते हैं। मगर मनमुख जीव अज्ञान की निद्रा में पड़े रहते हैं, इसलिए कामादिक विकार उनके शुभ गुणों को लूट लेते हैं। गुरुमुख अपने गुणों की पूँजी को बचाकर रखते हैं॥ ४॥ झूठे व्यक्ति जन्म-मरण के चक्र में पड़े रहते हैं। वे झूठ में रत रहकर झूठे काम ही करते रहते हैं। जो शब्द की स्तुति में लीन रहते हैं, उन्हें ही सच्चे दरबार में शोभा हासिल होती है और गुरु के माध्यम से उनका सत्य में ही ध्यान लगा रहता है॥ ५॥ झूठ में रत जीव रूपी नारी की जीवन-रूपी वाटिका को कामादिक ठगों ने ऐसे उजाड़ दिया है, जैसे उजाड़ में लगी हुई वाटिका को पशु उजाड़ देते हैं। हरि-नाम के बिना जीवन में कुछ स्वादिष्ट नहीं लगता, भगवान को भूलने से दुख ही प्राप्त होता है॥ ६॥ यदि सत्य-नाम रूपी भोजन मिल जाए तो मन तृप्त हो जाता है। जिसे अमूल्य नाम-रत्न मिल जाता है, उसे ही यश प्राप्त होता है। जो आत्म-स्वरूप को पहचान लेता है, उसे सत्य की पहचान हो जाती है और फिर उसकी ज्योति परम-ज्योति में विलीन हो जाती है॥ ७॥ ईश्वर को विस्मृत करने वाली जीव-स्त्री बहुत कष्ट सहन करती है और अनेक चतुराईयाँ करने से भी उसका भ्रम दूर नहीं होता। मूर्ख व्यक्ति परमात्मा को याद नहीं करते, अतः दुखी ही हुए हैं और उन्होंने पापों का भार लाद लिया है॥ ८॥ वैर-विरोध से कोई खाली नहीं है, अगर कोई इससे बचा हुआ है तो मुझे दिखा दो, मैं उसकी भूरि-भूरि प्रशंसा करूँगा। मन-तन अर्पण करने से ही परमात्मा मिलता है, भगवान से प्रीति बनी रहती है॥ ६॥ प्रभु की गति एवं महिमा कोई भी जान नहीं सकता। अगर कोई कहता है कि मैं ही बड़ा हूँ तो उसका आत्माभिमान उसे मिटा देता है। सच्चे परमेश्वर की देन में कोई कमी नहीं, सारी दुनिया उसने ही पैदा की है॥ १०॥ उस बेपरवाह की महिमा बहुत बड़ी है, वह स्वयं ही जीवों को पैदा करके उन्हें जीने के लिए भोजन देता है। वह दयालु दाता कहीं दूर नहीं है और वह सहज ही अपनी मर्जी से मिला है॥ ११॥ दुनिया में कोई शोकग्रस्त है तो कोई रोगग्रस्त है। जो कुछ करता है, वह स्वेच्छा से ही करता है। यदि गुरु की शिक्षा द्वारा भगवान की भक्ति की जाए तो अनाहत शब्द का अनुभव हो जाता है॥ १२॥ कुछ नंगे-भूखे इधर-उधर भटकते रहते हैं, कुछ हठपूर्वक प्राण त्याग देते हैं और अमूल्य जन्म का महत्व नहीं समझते। वे भले-बुरे का महत्व नहीं जानते, परन्तु जो शब्द की साधना करते हैं, वही इस रहस्य को बूझते हैं॥ १३॥ कोई तीर्थों में स्नान करता है तो कोई व्रत उपवास रखता है, कुछ लोग धूनियाँ तपाकर शरीर को कष्ट देते हैं। राम-नाम के बिना किसी की भी मुक्ति संभव नहीं, तो फिर किस विधि द्वारा पार हुआ जा सकता है॥ १४॥ कुछ व्यक्ति गुरुमत को छोड़कर पथभ्रष्ट हो जाते हैं। स्वेच्छाचारी जीव राम नाम का जाप नहीं करता, झूठ कमाता है, दुखी होकर डूबता है और झूठ के कारण यम भी उसका वैरी हो जाता है॥ १५॥ हुक्म से ही

जीव का जन्म-मरण होता है जो हुक्म के रहस्य को जान लेता है, वह सत्य में विलीन हो जाता है। हे नानक! सत्यस्वरूप परमात्मा उसे ही मिलता है, जिसे मन में प्यारा लगता है और गुरुमुख बनकर नाम-सिमरन का कर्म करता है॥ १६॥ ५॥

मारू महला १ ॥ आपे करता पुरखु बिधाता ॥ जिनि आपे आपि उपाइ पछाता ॥ आपे सतिगुरु आपे सेवकु आपे स्रिसटि उपाई हे ॥ १ ॥ आपे नेड़ै नाही दूरे ॥ बूझहि गुरमुखि से जन पूरे ॥ तिन की संगति अहिनिसि लाहा गुर संगति एह वडाई हे ॥ २ ॥ जुगि जुगि संत भले प्रभ तेरे ॥ हरि गुण गावहि रसन रसेरे ॥ उसतति करहि परहरि दुखु दालदु जिन नाही चिंत पराई हे ॥ ३ ॥ ओइ जागत रहहि न सूते दीसहि ॥ संगति कुल तारे साचु परीसहि ॥ कलिमल मैलु नाही ते निरमल ओइ रहहि भगति लिव लाई हे ॥ ४ ॥ बूझहु हरि जन सतिगुर बाणी ॥ एहु जोबनु सासु है देह पुराणी ॥ आजु कालि मरि जाईऐ प्राणी हरि जपु जपि रिदै धिआई हे ॥ ५ ॥ छोडहु प्राणी कूड़ कबाड़ा ॥ कूड़ु मारे कालु उछाहाड़ा ॥ साकत कूड़ि पचहि मनि हउमै दुहु मारगि पचै पचाई हे ॥ ६ ॥ छोडिहु निंदा ताति पराई ॥ पड़ि पड़ि दझहि साति न आई ॥ मिलि सतसंगति नामु सलाहहु आतम रामु सखाई हे ॥ ७ ॥ छोडहु काम क्रोधु बुरिआई ॥ हउमै धंधु छोडहु लंपटाई ॥ सतिगुर सरणि परहु ता उबरहु इउ तरीऐ भवजलु भाई हे ॥ ८ ॥ आगै बिमल नदी अगनि बिखु झेला ॥ तिथै अवरु न कोई जीउ इकेला ॥ भड़ भड़ अगनि सागरु दे लहरी पड़ि दझहि मनमुख ताई हे ॥ ९ ॥ गुर पहि मुकति दानु दे भाणै ॥ जिनि पाइआ सोई बिधि जाणै ॥ जिन पाइआ तिन पूछहु भाई सुखु सतिगुर सेव कमाई हे ॥ १० ॥ गुर बिनु उरझि मरहि बेकारा ॥ जमु सिरि मारे करे खुआरा ॥ बाधे मुकति नाही नर निंदक डूबहि निंद पराई हे ॥ ११ ॥ बोलहु साचु पछाणहु अंदरि ॥ दूरि नाही देखहु करि नंदरि ॥ बिघनु नाही गुरमुखि तरु तारी इउ भवजलु पारि लंघाई हे ॥ १२ ॥ देही अंदरि नामु निवासी ॥ आपे करता है अबिनासी ॥ ना जीउ मरै न मारिआ जाई करि देखै सबदि रजाई हे ॥ १३ ॥ ओहु निरमलु है नाही अंधिआरा ॥ ओहु आपे तखति बहै सचिआरा ॥ साकत कूड़े बंधि भवाईअहि मरि जनमहि आई जाई हे ॥ १४ ॥ गुर के सेवक सतिगुर पिआरे ॥ ओइ बैसहि तखति सु सबदु वीचारे ॥ ततु लहहि अंतरगति जाणहि सतसंगति साचु वडाई हे ॥ १५ ॥ आपि तरै जनु पितरा तारे ॥ संगति मुकति सु पारि उतारे ॥ नानकु तिस का लाला गोला जिनि गुरमुखि हरि लिव लाई हे ॥ १६ ॥ ६ ॥

परमात्मा स्वयं संसार का रचयिता पुरुष विधाता है, जिसने स्वयं जीवों को पैदा करके पहचान दी है। सतगुरु एवं सेवक भी वही है और उसने स्वयं ही सृष्टि उत्पन्न की है॥ १॥ वह हमारे निकट ही है, कहीं दूर नहीं। जिन्होंने गुरु के सान्निध्य में रहकर इस रहस्य को बूझ लिया है, वही पूर्ण पुरुष हैं। गुरु-संगति की यही कीर्ति है कि उनकी संगति में रहने से नित्य लाभ ही लाभ मिलता है॥ २॥ हे प्यारे प्रभु! तेरे संतजन युग-युग भले हैं, जो प्रेमपूर्वक तेरे गुण गाते रहते हैं। वे तेरा स्तुतिगान करके दुख-दारिद्रय से मुक्त हो जाते हैं और उन्हें कोई पराई चिंता नहीं है॥ ३॥ वे सदा मोह-माया से सतर्क रहते हैं और मोह की निद्रा में दिखाई नहीं देते। वे सत्य-नाम ही वितरित करते हैं और अपने संगियों एवं वंशावलि का उद्धार कर देते हैं। वे सदैव निर्मल हैं, उन्हें पापों की मैल स्पर्श नहीं करती और उनकी प्रभु-भक्ति में ही लगन लगी रहती है॥ ४॥ हे भक्तजनो! सतगुरु की वाणी को समझो, यह यौवन, श्वास एवं शरीर पुराना हो जाना है अर्थात् नाशवान है। आज अथवा कल एक न एक दिन प्राणी ने मृत्यु को प्राप्त हो जाना है, इसलिए

भगवान का जाप कर लो और हृदय में उसका ही ध्यान करो॥ ५॥ हे प्राणी! झूठी बातों को छोड़ दो, झूठे आदमी को काल पछाड़ कर मारता है। ईश्वर से विमुख जीव झूठ में फँसकर नष्ट हो जाता है। उसके मन में अहम् ही बना रहता है और द्वैतभाव के मार्ग पर चलकर वह समाप्त हो जाता है॥ ६॥ पराई-निन्दा और दूसरों से द्वेष करना छोड़ दो, जो ग्रंथों का अध्ययन करके भी ईर्ष्याग्नि में जलते रहते हैं, उनके मन को शान्ति नहीं मिलती। सत्संगति में मिलकर राम-नाम का स्तुतिगान करो, अंत में वही सहायक होता है॥ ७॥ काम, क्रोध एवं बुराई करना छोड़ दो, अहम् पैदा करने वाला धंधा एवं लम्पटता छोड़ दो। गुरु की शरण में रहे तो बन्धनों से मुक्त हो जाओगे, इस तरह भवसागर पार किया जा सकता है॥ ८॥ आगे यमपुरी में विशुद्ध अग्नि से भरी हुई वैतर्णी नामक नदी में से पार होना पड़ता है, जिसमें से विष रूपी लपटें निकलती हैं। वहाँ जीव अकेला ही होता है और उसका कोई साथी नहीं होता। उस अग्नि के सागर में भड़कती हुई लहरें उत्पन्न होती हैं, जिन में गिरकर स्वेच्छाचारी जलकर राख हो जाते हैं॥ ६॥ मुक्ति का भेद गुरु के ही पास है, जो वह स्वेच्छा से ही देता है। जिन्होंने गुरु से मुक्ति का भेद पाया है, वही इसकी विधि को जानते हैं। हे भाई! उनसे जाकर पूछ लो, जिन्होंने इसे पा लिया है। सतिगुरु की सेवा करने से ही सच्चा सुख प्राप्त होता है॥ १०॥ गुरु के बिना जीव विकारों में उलझकर मर जाते हैं। फिर यम उनके सिर पर प्रहार करके बड़ा तंग करता है। बन्धनों में फँसे हुए निंदक आदमी की मुक्ति संभव नहीं, वह पराई निन्दा कर-कर के ही डूब जाता है॥ ११॥ सदैव सत्य बोलो और मन में ही पहचान लो, अपने मन में ही झाँक कर देखो, वह कहीं दूर नहीं है। गुरुमुख नाम रूपी नैया में सवार होकर भवसागर में से पार हो जाता है और उसे कोई विघ्न उत्पन्न नहीं होता॥ १२॥ शरीर में ही प्रभु-नाम स्थित है, वह अविनाशी परमात्मा स्वयं ही रचयिता है। आत्मा न कभी मरता है, न ही इसे मारा जा सकता है, ईश्वर स्वयं ही रचना करके अपनी इच्छानुसार देख-रेख करता है॥ १३॥ परमात्मा निर्मल है, उसमें अज्ञान रूपी अंधेरा नहीं है। वह परम-सत्य स्वयं ही अपने सिंहासन पर विराजमान होता है। प्रभु से टूटे हुए झूठे जीव बन्धनों में फँसकर योनि-चक्र में ही भटकते रहते हैं, इसलिए पुनः पुनः जन्म-मरण में ही पड़े रहते हैं॥ १४॥ गुरु की सेवा में तल्लीन रहने वाले सेवक सतगुरु को बहुत प्रिय हैं। वे सत्य के सिंहासन पर विराजमान होकर ब्रह्म-शब्द का ही चिन्तन करते हैं। वे परम तत्व को पाकर अन्तर्गति को जान लेते हैं और सत्संगत में मिलकर सत्य का स्तुतिगान करके बड़ाई प्राप्त करते हैं॥ १५॥ ऐसे भक्तजन स्वयं तो पार होते ही हैं, अपने पितरों का भी उद्धार करने के योगदान देते हैं। उनकी संगत में आने वाले भी मुक्ति पा कर उद्धारक बन गए हैं। नानक उसका सेवक एवं गुलाम है, जिस गुरमुख ने परमात्मा में लगन लगाई है॥ १६॥ ६॥

मारू महला १ ॥ केते जुग वरते गुबारै ॥ ताड़ी लाई अपर अपारै ॥ धुंधूकारि निरालमु बैठा ना तदि धंधु पसारा हे ॥ १ ॥ जुग छतीह तिनै वरताए ॥ जिउ तिसु भाणा तिवै चलाए ॥ तिसहि सरीकु न दीसै कोई आपे अपर अपारा हे ॥ २ ॥ गुपते बूझहु जुग चतुआरे ॥ घटि घटि वरतै उदर मझारे ॥ जुगु जुगु एका एकी वरतै कोई बूझै गुर वीचारा हे ॥ ३ ॥ बिंदु रकतु मिलि पिंडु सरीआ ॥ पउणु पाणी अगनी मिलि जीआ ॥ आपे चोज करे रंग महली होर माइआ मोह पसारा हे ॥ ४ ॥ गरभ कुंडल महि उरध धिआनी ॥ आपे जाणै अंतरजामी ॥ सासि सासि सचु नामु समाले अंतरि उदर मझारा हे ॥ ५ ॥ चारि पदारथ लै जगि आइआ ॥ सिव सकती घरि वासा पाइआ ॥ एकु विसारे ता पिड़ हारे अंधुलै नामु विसारा हे ॥ ६ ॥ बालकु मरै बालक की लीला ॥ कहि कहि रोवहि बालु रंगीला ॥ जिस

का सा सो तिन ही लीआ भूला रोवणहारा हे ॥ ७ ॥ भरि जोबनि मरि जाहि कि कीजै ॥ मेरा मेरा करि रोवीजै ॥ माइआ कारणि रोइ विगूचहि ध्रिगु जीवणु संसारा हे ॥ ८ ॥ काली हू फुनि धउले आए ॥ विणु नावै गथु गइआ गवाए ॥ दुरमति अंधुला बिनसि बिनासै मूठे रोइ पूकारा हे ॥ ९ ॥ आपु वीचारि न रोवै कोई ॥ सतिगुरु मिलै त सोझी होई ॥ बिनु गुर बजर कपाट न खूलहि सबदि मिलै निसतारा हे ॥ १० ॥ बिरधि भइआ तनु छीजै देही ॥ रामु न जपई अंति सनेही ॥ नामु विसारि चलै मुहि कालै दरगह झूठु खुआरा हे ॥ ११ ॥ नामु विसारि चलै कूड़िआरो ॥ आवत जात पड़ै सिरि छारो ॥ साहुरड़ै घरि वासु न पाए पेईअड़ै सिरि मारा हे ॥ १२ ॥ खाजै पैझै रली करीजै ॥ बिनु अभ भगती बादि मरीजै ॥ सर अपसर की सार न जाणै जमु मारे किआ चारा हे ॥ १३ ॥ परविरती नरविरति पछाणै ॥ गुर कै संगि सबदि घरु जाणै ॥ किस ही मंदा आखि न चलै सचि खरा सचिआरा हे ॥ १४ ॥ साच बिना दरि सिझै न कोई ॥ साच सबदि पैझै पति होई ॥ आपे बखसि लए तिसु भावै हउमै गरबु निवारा हे ॥ १५ ॥ गुर किरपा ते हुकमु पछाणै ॥ जुगह जुगंतर की बिधि जाणै ॥ नानक नामु जपहु तरु तारी सचु तारे तारणहारा हे ॥ १६ ॥ १ ॥ ७ ॥

जब अपरंपार ईश्वर ने समाधि लगाई तो प्रलय के घोर अन्धेरे में कितने ही युग बीत गए। उस घोर अन्धकार में निर्लिप्त होकर वह अकेला ही बैठा रहा, तब कोई जगत्-प्रसार नहीं था और न ही कोई कामकाज था॥ १॥ उसने छत्तीस युगों का प्रचलन किया, जैसे उसे मंजूर है, वैसे चलाता है। उसका शरीक कोई दिखाई नहीं देता, वह स्वयं अपरंपार है॥ २॥ यह बात समझ लो कि वह चारों युगों में गुप्त रूप में क्रियाशील है, प्रत्येक जीव के हृदय एवं उदर में व्याप्त है। सच तो यही है कि युग-युगांतर केवल ईश्वर ही कार्यशील है, लेकिन इस तथ्य को कोई विरला ही गुरु के विचार द्वारा बूझता है॥ ३॥ जब माँ के रक्त एवं पिता के वीर्य से मिलकर मानव-शरीर का सृजन हुआ तो पवन, पानी एवं अग्नि इत्यादि पंच तत्वों ने मिलकर प्राणों का संचार करके बना दिया। इस शरीर रूपी रंग-महल में ईश्वर स्वयं ही लीला करता है, अन्य मोह-माया का ही प्रसार है॥ ४॥ माँ के गर्भ में उल्टा पड़ा हुआ जीव परमात्मा के ध्यान में लीन था। अन्तर्यामी स्वयं लीला जानता है, माँ के उदर में जीव श्वास-श्वास से सत्य-नाम को ही स्मरण कर रहा था॥ ५॥ धर्म, अर्थ, काम एवं मोक्ष—चार पदार्थों की कामना लेकर वह जगत् में आया, लेकिन जीव ने माया के जग रूपी घर में निवास पा लिया। जब कोई ईश्वर को भुला देता है तो वह अपनी जीवन बाजी हार जाता है। अन्धे जीव ने नाम को भुला दिया है॥ ६॥ अकस्मात् जब बालक की जीवन-लीला समाप्त हो जाती है तो परिवार वाले उसकी नटखट लीला को याद करते हैं। वे यह कह-कहकर विलाप करते हैं कि बालक बड़ा रंगीला था। मगर रोने वाला इस सत्य को समझने की भूल करता है कि जिस (ईश्वर) का था, उसने ही उसे ले लिया है॥ ७॥ अगर कोई भरी जवानी में मृत्यु को प्राप्त हो जाता है तो उसके परिवार वाले क्या करते हैं। वे उसे 'मेरा-मेरा' कहकर रोते रहते हैं। इस प्रकार माया के कारण सब रोते हैं और ख्वार होते हैं। संसार का ऐसा जीवन धिक्कार योग्य है॥ ८॥ काले केशों से फिर सफेद बाल आ गए अर्थात् बुढ़ापा आ गया है। नाम के बिना वह अपनी जीवन-पूँजी व्यर्थ गँवा कर चला जाता है। खोटी बुद्धि वाला ज्ञानहीन जीव बहुत बुरी तरह नाश होता है और ठगे जाने पर रोता-चिल्लाता है॥ ९॥ जो अपने आप का विचार करता है, ऐसा कोई कभी नहीं रोता। यदि सतगुरु मिल जाए तो ही सूझ प्राप्त होती है। गुरु के बिना वज्र कपाट नहीं खुलते और मुक्ति तो शब्द द्वारा ही मिलती है॥ १०॥ जब आदमी वृद्ध हो गया, शरीर भी क्षीण हो गया तो भी वह ईश्वर का नाम नहीं जपता, जो उसके अंतकाल का सच्चा साथी है। जो

व्यक्ति हरि-नाम को भुलाकर तिरस्कृत होकर चला जाता है, प्रभु-दरबार में उसका झूठ उसे ख्वार करता है॥ ११॥ मिथ्यावादी जीव नाम को भुलाकर जग से खाली हाथ चला जाता है, जिसके फलस्वरूप उसके सिर पर धूल ही पड़ती है अर्थात् अपमानित होता है और जन्म-मरण के चक्र में पड़ जाता है। जो जीव-स्त्री अपने पीहर अर्थात् इहलोक में सिर पर यम की चोटें खाती रहती है, उसे अपने ससुराल अर्थात् परलोक में निवास प्राप्त नहीं होता॥ १२॥ मनुष्य बढ़िया खाता-पीता, पहनता और आनंद करता है किन्तु मन से भक्ति के बिना जीवन व्यर्थ गँवा कर मृत्यु को प्राप्त हो जाता है। वह अच्छे-बुरे का महत्व नहीं जानता, लेकिन जब यम उसे मारता है तो उसका कोई चारा नहीं चलता॥ १३॥ जो व्यक्ति प्रवृति एवं निवृति को पहचान लेता है, गुरु के संग रहकर शब्द को जान लेता है, वह धर्म-मार्ग पर चलता हुआ किसी को बुरा नहीं कहता और सत्य के भेद को समझकर सत्यवादी ही माना जाता है॥ १४॥ सत्य के बिना कोई भी अपने मनोरथ में सफल नहीं होता और शब्द के ज्ञान द्वारा ही शोभा हासिल होती है। यदि परमात्मा को मंजूर हो तो वह स्वयं ही क्षमा कर देता है और अभिमान घमण्ड का निवारण कर देता है॥ १५॥ गुरु की कृपा से जीव ईश्वरेच्छा को पहचान लेता है और युग-युगान्तर से चली आ रही प्रभु-मिलन की विधि को जान लेता है। हे नानक! परमात्मा का नाम जपते रहो; तो ही संसार-सागर से पार हुआ जा सकता है और वह परम-सत्य परमेश्वर ही मोक्षदाता है॥ १६॥ १॥ ७॥

मारू महला १ ॥ हरि सा मीतु नाही मै कोई ॥ जिनि तनु मनु दीआ सुरति समोई ॥ सरब जीआ प्रतिपालि समाले सो अंतरि दाना बीना हे ॥ १ ॥ गुरु सरवरु हम हंस पिआरे ॥ सागर महि रतन लाल बहु सारे ॥ मोती माणक हीरा हरि जसु गावत मनु तनु भीना हे ॥ २ ॥ हरि अगम अगाहु अगाधि निराला ॥ हरि अंतु न पाईऐ गुर गोपाला ॥ सतिगुर मति तारे तारणहारा मेलि लए रंगि लीना हे ॥ ३ ॥ सतिगुर बाझहु मुकति किनेही ॥ ओहु आदि जुगादी राम सनेही ॥ दरगह मुकति करे करि किरपा बखसे अवगुण कीना हे ॥ ४ ॥ सतिगुरु दाता मुकति कराए ॥ सभि रोग गवाए अंम्रित रसु पाए ॥ जमु जागाति नाही करु लागै जिसु अगनि बुझी ठरु सीना हे ॥ ५ ॥ काइआ हंस प्रीति बहु धारी ॥ ओहु जोगी पुरखु ओह सुंदरि नारी ॥ अहिनिसि भोगै चोज बिनोदी उठि चलतै मता न कीना हे ॥ ६ ॥ स्रिसटि उपाइ रहे प्रभ छाजै ॥ पउण पाणी बैसंतरु गाजै ॥ मनूआ डोलै दूत संगति मिलि सो पाए जो किछु कीना हे ॥ ७ ॥ नामु विसारि दोख दुख सहीऐ ॥ हुकमु भइआ चलणा किउ रहीऐ ॥ नरक कूप महि गोते खावै जिउ जल ते बाहरि मीना हे ॥ ८ ॥ चउरासीह नरक साकतु भोगाईऐ ॥ जैसा कीचै तैसो पाईऐ ॥ सतिगुर बाझहु मुकति न होई किरति बाधा ग्रसि दीना हे ॥ ९ ॥ खंडे धार गली अति भीड़ी ॥ लेखा लीजै तिल जिउ पीड़ी ॥ मात पिता कलत्र सुत बेली नाही बिनु हरि रस मुकति न कीना हे ॥ १० ॥ मीत सखे केते जग माही ॥ बिनु गुर परमेसर कोई नाही ॥ गुर की सेवा मुकति पराइणि अनदिनु कीरतनु कीना हे ॥ ११ ॥ कूड़ु छोडि साचे कउ धावहु ॥ जो इछहु सोई फलु पावहु ॥ साच वखर के वापारी विरले लै लाहा सउदा कीना हे ॥ १२ ॥ हरि हरि नामु वखरु लै चलहु ॥ दरसनु पावहु सहजि महलहु ॥ गुरमुखि खोजि लहहि जन पूरे इउ समदरसी चीना हे ॥ १३ ॥ प्रभ बेअंत गुरमति को पावहि ॥ गुर कै सबदि मन कउ समझावहि ॥ सतिगुर की बाणी सति सति करि मानहु इउ आतम रामै लीना हे ॥ १४ ॥ नारद सारद सेवक तेरे ॥ त्रिभवणि सेवक वडहु वडेरे ॥

सभ तेरी कुदरति तू सिरि सिरि दाता सभु तेरो कारणु कीना हे ॥ १५ ॥ इकि दरि सेवहि दरदु वञाए ॥ ओइ दरगह पैधे सतिगुरू छडाए ॥ हउमै बंधन सतिगुरि तोड़े चितु चंचलु चलणि न दीना हे ॥ १६ ॥ सतिगुर मिलहु चीनहु बिधि साई ॥ जितु प्रभु पावहु गणत न काई ॥ हउमै मारि करहु गुर सेवा जन नानक हरि रंगि भीना हे ॥ १७ ॥ २ ॥ ८ ॥

ईश्वर जैसा मित्र मेरा कोई नहीं है, जिसने मुझे तन-मन दिया और मेरे भीतर सुरति डाल दी। सब जीवों का पोषक, देखभाल करने वाला वह चतुर प्रभु अन्तर्मन में ही बसा हुआ है॥ १॥ गुरु नामामृत का सरोवर है और हम उसके प्यारे हंस हैं। गुरु रूपी गुणों के सागर में बहुत सारे रत्न एवं लाल मौजूद हैं। प्रभु का यशगान ही मोती, माणिक्य एवं हीरा है, जिससे मन-तन भीग गया है॥ २॥ ईश्वर अगम्य, अथाह, असीम एवं बड़ा निराला है, उसका अंत नहीं पाया जा सकता। मुक्तिदाता सतिगुरु के उपदेश द्वारा उद्धार कर देता है। वह जिसे साथ मिला लेता है, वह उसके प्रेम में लीन हो जाता है॥ ३॥ सतिगुरु के बिना किसी को भी मुक्ति नहीं मिलती, वह आदि-युगादि से ईश्वर का प्रिय मित्र है। वह कृपा करके अवगुणों से क्षमा करके ईश्वर के दरबार में मुक्ति प्रदान करवा देता है॥ ४॥ सतिगुरु ही दाता है, वही जीव की मुक्ति करवाता है। वह मुँह में नामामृत डाल कर सभी रोग दूर कर देता है। जिसकी तृष्णाग्नि बुझ गई है, सीना शीतल हो गया है, यम रूपी अधिकारी उस पर कोई कर (टैक्स) नहीं लगाता॥ ५॥ आत्मा रूपी हंस काया से बहुत प्रेम लगा लेता है। आत्मा एक योगी पुरुष के समान है और यह काया एक सुन्दर नारी की तरह है। आत्मा रूपी योगी काया रूपी नारी को दिन-रात भोगता रहता है, उससे बड़ा आनंद-विनोद करता है किन्तु संसार से जाते वक्त उससे कोई सलाह-मशविरा नहीं करता॥ ६॥ सृष्टि को पैदा करके प्रभु इसमें व्याप्त हो रहा है और वह पवन, पानी एवं अग्नि के रूप में प्रगट हो रहा है। परन्तु कामादिक दूतों की संगत में मिलकर मनुष्य का मन डगमगाता रहता है और अपने किए कर्मों का ही फल प्राप्त करता है॥ ७॥ वह परमात्मा के नाम को भुलाकर किए दोष के दुख सहन करता रहता है। जब ईश्वर का हुक्म हो गया तो फिर जीव यहाँ चलने से कैसे रह सकता है। जैसे जल से विहीन मछली तड़पती है, वैसे ही जीव यमपुरी में जाकर नरक-कुण्ड में गोते खाता है॥ ८॥ शाक्त मनुष्य चौरासी लाख योनि-चक्र का नरक भोगता है। वह जैसा कर्म करता है, वैसा ही फल प्राप्त करता है। गुरु के बिना उसकी मुक्ति नहीं होती, कर्मों में बँधा होने के कारण यम उसे जकड़ लेता है॥ ६॥ यम के मार्ग में उसे ऐसी गली में से गुजरना पड़ता है जो तलवार की धार की तरह बहुत ही तंग एवं संकुचित है। जैसे तिलों को कोल्हू में पिराया जाता है, वैसे ही कर्मों का हिसाब लिया जाता है। वहाँ माता-पिता, पत्नी-पुत्र, मित्र कोई भी साथ नहीं होता, हरि-नाम रूपी रस का पान किए बिना मुक्ति नहीं मिलती॥ १०॥ जग में चाहे कितने ही मित्र एवं साथी हों लेकिन गुरु-परमेश्वर के बिना अंतकाल कोई भी मददगार नहीं होता। गुरु की सेवा ही मुक्ति का साधन है और साथ ही जिसने रात-दिन परमात्मा का संकीर्तन किया है॥ ११॥ झूठ को छोड़कर सत्य को पाने का प्रयास करो और इस प्रकार मनवांछित फल पा लो। जग में सत्य-नाम रूपी सौदे के व्यापारी विरले ही हैं, जिन्होंने नाम रूपी मुनाफा प्राप्त करके यह सौदा किया है॥ १२॥ हरि-नाम रूपी सौदा साथ लेकर जाओ और सहज ही सत्य के धाम पर पहुँचकर ईश्वर के दर्शन हासिल कर लो। गुरमुख पूर्ण पुरुषों ने परम-सत्य को खोज लिया है और उस निरंकार को समदर्शी के रूप में पहचान लिया है॥ १३॥ कोई विरला ही गुरु मतानुसार बेअन्त प्रभु को प्राप्त करता है, वह गुरु के शब्द द्वारा मन को समझाता है। सतगुरु की वाणी को सत्य मानो, इस प्रकार ईश्वर में लीन हुआ जा सकता है॥ १४॥ हे ईश्वर ! देवर्षि नारद एवं विद्या की

देवी सरस्वती तेरे ही उपासक हैं; आकाश, पाताल एवं पृथ्वी इन तीनों लोकों में बड़े-बड़े संत, महात्मा, देवी-देवता इत्यादि तेरी उपासना में लीन हैं। यह सारी कुदरत तेरी ही रचना है, तू सबका दाता है और सब तेरी मर्जी से हो रहा है॥ १५॥ कई जीव तेरे दर पर तेरी स्तुति करते हुए अपना दुख-दर्द दूर कर रहे हैं। सतगुरु उन्हें बन्धनों से मुक्त करवाता है और वे सत्य के दरबार में सत्कृत होते हैं। सतगुरु उनके अहम् के बन्धनों को तोड़ देता है और उनका चंचल मन इधर-उधर नहीं भटकता॥ १६॥ सतगुरु से मिलो और उससे ऐसी विधि पहचान लो, जिससे प्रभु प्राप्त हो जाए और कर्मों का हिसाब-किताब मिट जाए। अपने अहम् को मिटाकर गुरु की सेवा करो; नानक तो परमात्मा के प्रेम-रंग में भीग गया है॥ १७॥ २॥ ८॥

मारू महला १ ॥ असुर सघारण रामु हमारा ॥ घटि घटि रमईआ रामु पिआरा ॥ नाले अलखु न लखीऐ मूले गुरमुखि लिखु वीचारा हे ॥ १ ॥ गुरमुखि साधू सरणि तुमारी ॥ करि किरपा प्रभि पारि उतारी ॥ अगनि पाणी सागरु अति गहरा गुरु सतिगुरु पारि उतारा हे ॥ २ ॥ मनमुख अंधुले सोझी नाही ॥ आवहि जाहि मरहि मरि जाही ॥ पूरबि लिखिआ लेखु न मिटई जम दरि अंधु खुआरा हे ॥ ३ ॥ इकि आवहि जावहि घरि वासु न पावहि ॥ किरत के बाधे पाप कमावहि ॥ अंधुले सोझी बूझ न काई लोभु बुरा अहंकारा हे ॥ ४ ॥ पिर बिनु किआ तिसु धन सीगारा ॥ पर पिर राती खसमु विसारा ॥ जिउ बेसुआ पूत बापु को कहीऐ तिउ फोकट कार विकारा हे ॥ ५ ॥ प्रेत पिंजर महि दूख घनेरे ॥ नरकि पचहि अगिआन अंधेरे ॥ धरम राइ की बाकी लीजै जिनि हरि का नामु विसारा हे ॥ ६ ॥ सूरजु तपै अगनि बिखु झाला ॥ अपतु पसू मनमुखु बेताला ॥ आसा मनसा कूड़ु कमावहि रोगु बुरा बुरिआरा हे ॥ ७ ॥ मसतकि भारु कलर सिरि भारा ॥ किउ करि भवजलु लंघसि पारा ॥ सतिगुरु बोहिथु आदि जुगादी राम नामि निसतारा हे ॥ ८ ॥ पुत्र कलत्र जगि हेतु पिआरा ॥ माइआ मोहु पसरिआ पासारा ॥ जम के फाहे सतिगुरि तोड़े गुरमुखि ततु बीचारा हे ॥ ९ ॥ कूड़ि मुठी चालै बहु राही ॥ मनमुखु दाझै पड़ि पड़ि भाही ॥ अंम्रित नामु गुरू वड दाणा नामु जपहु सुख सारा हे ॥ १० ॥ सतिगुरु तुठा सचु द्रिड़ाए ॥ सभि दुख मेटे मारगि पाए ॥ कंडा पाइ न गडई मूले जिसु सतिगुरु राखणहारा हे ॥ ११ ॥ खेहू खेह रलै तनु छीजै ॥ मनमुखु पाथरु सैलु न भीजै ॥ करण पलाव करे बहुतेरे नरकि सुरगि अवतारा हे ॥ १२ ॥ माइआ बिखु भुइअंगम नाले ॥ इनि दुबिधा घर बहुते गाले ॥ सतिगुर बाझहु प्रीति न उपजै भगति रते पतीआरा हे ॥ १३ ॥ साकत माइआ कउ बहु धावहि ॥ नामु विसारि कहा सुखु पावहि ॥ त्रिहु गुण अंतरि खपहि खपावहि नाही पारि उतारा हे ॥ १४ ॥ कूकर सूकर कहीअहि कूड़िआरा ॥ भउकि मरहि भउ भउ भउ हारा ॥ मनि तनि झूठे कूड़ु कमावहि दुरमति दरगह हारा हे ॥ १५ ॥ सतिगुरु मिलै त मनूआ टेकै ॥ राम नामु दे सरणि परेकै ॥ हरि धनु नामु अमोलकु देवै हरि जसु दरगह पिआरा हे ॥ १६ ॥ राम नामु साधू सरणाई ॥ सतिगुर बचनी गति मिति पाई ॥ नानक हरि जपि हरि मन मेरे हरि मेले मेलणहारा हे ॥ १७ ॥ ३ ॥ ९ ॥

ईश्वर पाप रूपी असुरों का संहार करने वाला है; वह प्यारा प्रभु सब जीवों में समाया हुआ है। वह अदृष्ट रूप में साथ ही है, मगर उसके दर्शन एवं सूझ बिल्कुल नहीं होती और गुरु के सान्निध्य में चिंतन से ही प्राप्ति होती है॥ १॥ जो साधु गुरुमुख तेरी शरण में आया है, हे प्रभु ! कृपा करके तूने उसका संसार-सागर से उद्धार कर दिया है। यह संसार-सागर तृष्णा की अग्नि के जल से भरा हुआ है, जो बहुत ही गहरा है, परन्तु गुरु इस में से पार उतार देता है॥ २॥ अंधे

मनमुखी को इस बात की सूझ ही नहीं है। इसलिए वह जगत् में आता-जाता, मरता और मरकर यहाँ से चला जाता है। पूर्व कर्मों द्वारा लिखा भाग्यलेख कभी मिटता नहीं और मनमुखी यम के दर पर दुखी होता है॥ ३॥ कई जीव जन्मते-मरते रहते हैं और सच्चे घर में निवास प्राप्त नहीं करते और कर्म बन्धन में फँसकर पाप करते रहते हैं। ऐसे ज्ञानहीन को कोई सूझ-बूझ ही नहीं है कि लोभ एवं अहंकार बहुत बुरा है॥ ४॥ पति-प्रभु के बिना उस जीव स्त्री का शृंगार व्यर्थ है, वह पराए-पुरुष के प्रेम में आसक्त रहकर अपने मालिक को भुला देती है। जैसे वेश्या के पुत्र का पिता किसे कहा जा सकता है? यों ही मनमुख के किए हुए सभी कर्म व्यर्थ एवं विकार रूप हैं॥ ५॥ मनमुख प्रेत के शरीर रूपी पिंजरे में अनेक दुख भरे हुए हैं। वह अज्ञान रूपी अंधेरे के कारण नरक में दुखी होता है। जिसने परमात्मा का नाम भुला दिया है, उसे यमराज का दण्ड भोगना पड़ता है॥ ६॥ नरक-कुण्ड में सूर्य प्रचंड तपता रहता है और उस में से अग्नि की विष रूपी लपटें निकलती रहती हैं। मन के संकेतों पर चलने वाला प्राणी बेशर्म, पशु एवं प्रेत समान है। वह आशा एवं अभिलाषा की पूर्ति के लिए झूठ का ही उपयोग करता है और उसे बुराई करने का बुरा रोग लगा रहता है॥ ७॥ जिस ने अपने माथे एवं सिर पर पाप रूपी मिट्टी का भार उठाया है, वह भवसागर से क्योंकर पार हो सकता है? सृष्टि के आदि एवं युगादि से सतिगुरु ही जहाज है, जो राम-नाम द्वारा पार करवा देता है॥ ८॥ जग में प्रत्येक मनुष्य को पुत्र एवं पत्नी ही प्रिय है और सर्वत्र मोह-माया का ही प्रसार फैला हुआ है। जो गुरु के सान्निध्य में परम-तत्व का चिंतन करता है, सतगुरु उसके यम के बन्धन तोड़ देता है॥ ६॥ झूठ की ठगी हुई दुनिया अनेक मार्गो पर चलती है और मनमुख तृष्णाग्नि में पड़-पड़कर जलता रहता है। गुरु नामामृत देने वाला बड़ा दानवीर है; परमात्मा का नाम जपते रहो, यही सच्चा सुख देने वाला है॥ १०॥ सतगुरु प्रसन्न होकर सत्य का रहस्य दृढ़ करवाता है; वह सभी दुख मिटाकर सन्मार्ग लगाता है। जिस का सतगुरु रखवाला बन जाता है, उसके पैर में काँटा बिल्कुल ही नहीं चुभता॥ ११॥ जब मनुष्य का शरीर क्षीण हो जाता है तो यह खाक बनकर खाक में ही मिल जाता है। मनमुखी जीव पत्थर समान है, जिसका मन भक्ति में नहीं भीगता। वह अनेक प्रलाप करता है किन्तु फिर भी कभी नरक और कभी स्वर्ग में जन्म लेता रहता है॥ १२॥ विष रूप माया नागिन जीवों के संग ही रहती है और इस दुविधा ने अनेक घर बर्बाद कर दिए हैं। सच्चे गुरु के बिना मन में प्रीति उत्पन्न नहीं होती और भक्ति में लीन रहने वाले संतुष्ट रहते हैं॥ १३॥ शक्ति का पुजारी माया के लिए तो बहुत भागदौड़ करता है किन्तु नाम को भुलाकर कैसे सुख प्राप्त कर सकता है। वह त्रिगुणात्मक माया में ही खपता खपाता रहता है, अतः उसकी मुक्ति नहीं होती॥ १४॥ झूठे आदमी को कुत्ता एवं सूअर ही कहा जाता है, वह कुत्ते की तरह व्यर्थ भौंकता रहता है और भौंक-भौंक कर हार जाता है। वह मन-तन से झूठा है, झूठे काम करता है और दुर्मति के कारण अपनी जीवन बाजी हार कर ही प्रभु-दरबार में जाता है॥ १५॥ यदि सतगुरु मिल जाए तो मन स्थिर हो जाता है और शरण में आए हुए को राम-नाम प्रदान कर देता है। वह अमूल्य हरि-नाम रूपी धन प्रदान करता है। जो हरि का यशगान करता है, वही दरबार में प्रभु को प्यारा लगता है॥ १६॥ साधु-महात्मा की शरण में आने से ही राम-नाम मिलता है और सतगुरु की वाणी द्वारा उसकी गति एवं विस्तार का रहस्य प्राप्त होता है। गुरु नानक का कथन है कि हे मेरे मन! हरि नाम का जाप करो; क्योंकि यही परम-सत्य से मिलाने वाला है॥ १७॥ ३॥ ६॥

मारू महला १ ॥ घरि रहु रे मन मुगध इआने ॥ रामु जपहु अंतरगति धिआने ॥ लालच छोडि रचहु अपरंपरि इउ पावहु मुकति दुआरा हे ॥ १ ॥ जिसु बिसरिऐ जमु जोहणि लागै ॥ सभि सुख जाहि दुखा फुनि आगै ॥ राम नामु जपि गुरमुखि जीअड़े एहु परम ततु वीचारा हे ॥ २ ॥ हरि हरि नामु जपहु

रसु मीठा ॥ गुरमुखि हरि रसु अंतरि डीठा ॥ अहिनिसि राम रहहु रंगि राते एहु जपु तपु संजमु सारा हे ॥ ३ ॥ राम नामु गुर बचनी बोलहु ॥ संत सभा महि इहु रसु टोलहु ॥ गुरमति खोजि लहहु घरु अपना बहुड़ि न गरभ मझारा हे ॥ ४ ॥ सचु तीरथि नावहु हरि गुण गावहु ॥ ततु वीचारहु हरि लिव लावहु ॥ अंत कालि जमु जोहि न साकै हरि बोलहु रामु पिआरा हे ॥ ५ ॥ सतिगुरु पुरखु दाता वड दाणा ॥ जिसु अंतरि साचु सु सबदि समाणा ॥ जिस कउ सतिगुरु मेलि मिलाए तिसु चूका जम भै भारा हे ॥ ६ ॥ पंच ततु मिलि काइआ कीनी ॥ तिस महि राम रतनु लै चीनी ॥ आतम रामु रामु है आतम हरि पाईऐ सबदि वीचारा हे ॥ ७ ॥ सत संतोखि रहहु जन भाई ॥ खिमा गहहु सतिगुर सरणाई ॥ आतमु चीनि परातमु चीनहु गुर संगति इहु निसतारा हे ॥ ८ ॥ साकत कूड़ कपट महि टेका ॥ अहिनिसि निंदा करहि अनेका ॥ बिनु सिमरन आवहि फुनि जावहि ग्रभ जोनी नरक मझारा हे ॥ ६ ॥ साकत जम की काणि न चूकै ॥ जम का डंडु न कबहू मूकै ॥ बाकी धरम राइ की लीजै सिरि अफरिओ भारु अफारा हे ॥ १० ॥ बिनु गुर साकतु कहहु को तरिआ ॥ हउमै करता भवजलि परिआ ॥ बिनु गुर पारु न पावै कोई हरि जपीऐ पारि उतारा हे ॥ ११ ॥ गुर की दाति न मेटै कोई ॥ जिसु बखसे तिसु तारे सोई ॥ जनम मरण दुखु नेड़ि न आवै मनि सो प्रभु अपर अपारा हे ॥ १२ ॥ गुर ते भूले आवहु जावहु ॥ जनमि मरहु फुनि पाप कमावहु ॥ साकत मूड़ अचेत न चेतहि दुखु लागै ता रामु पुकारा हे ॥ १३ ॥ सुखु दुखु पुरब जनम के कीए ॥ सो जाणै जिनि दातै दीए ॥ किस कउ दोसु देहि तू प्राणी सहु अपणा कीआ करारा हे ॥ १४ ॥ हउमै ममता करदा आइआ ॥ आसा मनसा बंधि चलाइआ ॥ मेरी मेरी करत किआ ले चाले बिखु लादे छार बिकारा हे ॥ १५ ॥ हरि की भगति करहु जन भाई ॥ अकथु कथहु मनु मनहि समाई ॥ उठि चलता ठाकि रखहु घरि अपुनै दुखु काटे काटणहारा हे ॥ १६ ॥ हरि गुर पूरे की ओट पराती ॥ गुरमुखि हरि लिव गुरमुखि जाती ॥ नानक राम नामि मति ऊतम हरि बखसे पारि उतारा हे ॥ १७ ॥ ४ ॥ १० ॥

हे मूर्ख नादान मन ! हृदय-घर में स्थिर रहो, ध्यान लगाकर अन्तर्मुख होकर राम को जपते रहो। लोभ-लालच को छोड़कर अपरंपार परमेश्वर में लीन रहो, इस प्रकार मुक्ति का द्वार पा लो॥ १॥ जिसे विस्मृत करने से यम पीड़ित करने लगता है, सभी सुख दूर हो जाते हैं और आगे परलोक में दुख पुनः भोगने पड़ते हैं। हे मन ! गुरुमुख बनकर राम नाम का जाप करते रहो, यही परम-तत्व का चिंतन है॥ २॥ हरि-नाम जपो, यही मीठा रस है। गुरुमुख ने अन्तर्मन में ही हरि-रस को देख लिया है। नित्य राम-रंग में लीन रहो, यही जप, तपस्या एवं संयम का सार है॥ ३॥ गुरु के वचन द्वारा राम नाम बोलो; संतों की सभा में इस रस को तलाशो। गुरु की शिक्षा द्वारा अपना सच्चा घर खोज लो, इस तरह पुनः गर्भ-योनि में नहीं आओगे॥ ४॥ नाम रूपी सच्चे तीर्थ में स्नान करो; भगवान के गुण गाओ, परम-तत्व का चिंतन करो एवं परमात्मा में ध्यान लगाओ। प्यारे प्रभु का नाम जपते रहो, इस प्रकार अंतकाल यम प्रभावित नहीं कर सकेगा॥ ५॥ सतगुरु दाता है, बड़ा चतुर है। जिसके अन्तर्मन में सत्य अवस्थित होता है, वह ब्रह्म में ही विलीन हो जाता है। सतगुरु जिसे परमेश्वर से मिला देता है, उसका यम का भारी भय समाप्त हो जाता है॥ ६॥ पंच तत्वों से मिलकर यह शरीर बनाया गया है और इस में मौजूद राम-नाम रत्न को पहचान लो। आत्मा एवं परमात्मा एक ही हैं और इस तथ्य का ज्ञान शब्द के चिंतन द्वारा ही होता है॥ ७॥ हे भाई ! सत्य एवं संतोष में रहो, क्षमा भावना रखो और गुरु की शरण में पड़ जाओ। आत्मा को जान कर परमात्मा को पहचान लो; गुरु की संगति में ही उद्धार हो सकता है॥ ८॥

प्रभु से विमुख मनुष्य झूठ एवं कपट में ही टिका रहता है और दिन-रात अनेक लोगों की निन्दा करता है। परमात्मा के सिमरन बिना वह पुनः पुनः जन्मता-मरता है और नरक रूपी गर्भ-योनि में पड़ता है॥ ६॥ पदार्थवादी मनुष्य का मृत्यु का डर दूर नहीं होता, यमदूतों का दण्ड उसका कभी समाप्त नहीं होता। उस अहंकारी के सिर पर पाप रूपी अहंकार का भार टिका रहता है और धर्मराज उसके कर्मों का निपटारा करता है॥ १०॥ बताओ, गुरु के बिना कौन-सा पदार्थवादी मनुष्य पार हुआ है। वह तो अभिमान करता हुआ भवसागर में ही पड़ा है। गुरु के बिना कोई भी पार नहीं हो सकता, परमात्मा का जाप करने से ही मुक्ति मिलती है॥ ११॥ गुरु की बख्शिश कोई मिटा नहीं सकता, जिस पर कृपा करता है, उसका उद्धार हो जाता है। जन्म-मरण का दुख उसके निकट नहीं आता और उसका मन अपरम्पार प्रभु में ही लीन रहता है॥ १२॥ यदि गुरु को भूल गए तो आवागमन में पड़े रहोगे; पुनः जन्म-मरण ही बना रहेगा; और पाप-कर्म में लिप्त रहोगे। मूर्ख एवं ज्ञानहीन विमुखी जीव परमात्मा को याद नहीं करता किन्तु जब उसे कोई दुख लगता है तो राम को पुकारता है॥ १३॥ दुख-सुख तो पूर्व जन्म के शुभाशुभ कर्मों का फल है, परन्तु इस भेद को वही जानता है, जिस दाता ने दिए हैं। हे प्राणी ! तू किसी अन्य को दोष क्यों दे रहा है, अब तो अपने कर्मों का कठोर दुख भोग॥ १४॥ तू अभिमान एवं ममत्व करता हुआ जगत् में आया है, तेरी आशा एवं लालसाओं ने तुझे बांधकर चलाया है। 'मैं-मेरी' करके यहाँ क्या लेकर चले हो। तुम तो माया रूपी विकारों की राख लादकर ले चले हो॥ १५॥ हे मेरे भाई ! भगवान की भक्ति करो; अकथनीय प्रभु की कथा करो ताकि असंयमित मन मन में ही समा जाए। इधर-उधर भटकते मन को हृदय-घर में स्थिर करके रखो, ईश्वर ही सब दुःख काटने वाला है॥ १६॥ जिसने पूर्ण गुरु की ओट ले ली है, उसकी गुरु के सान्निध्य में परमात्मा में लगन लगी रहती है और उसने मुक्ति की विधि जान ली है। हे नानक ! राम नाम द्वारा जिसकी मति उत्तम हो जाती है, परमात्मा क्षमा करके उसका उद्धार कर देता है॥ १७॥ ४॥ १०॥

मारू महला १ ॥ सरणि परे गुरदेव तुमारी ॥ तू समरथु दइआलु मुरारी ॥ तेरे चोज न जाणै कोई तू पूरा पुरखु बिधाता हे ॥ १ ॥ तू आदि जुगादि करहि प्रतिपाला ॥ घटि घटि रूपु अनूपु दइआला ॥ जिउ तुधु भावै तिवै चलावहि सभु तेरो कीआ कमाता हे ॥ २ ॥ अंतरि जोति भली जगजीवन ॥ सभि घट भोगै हरि रसु पीवन ॥ आपे लेवै आपे देवै तिहु लोई जगत पित दाता हे ॥ ३ ॥ जगतु उपाइ खेलु रचाइआ ॥ पवणै पाणी अगनी जीउ पाइआ ॥ देही नगरी नउ दरवाजे सो दसवा गुपतु रहाता हे ॥ ४ ॥ चारि नदी अगनी असराला ॥ कोई गुरमुखि बूझै सबदि निराला ॥ साकत दुरमति डूबहि दाझहि गुरि राखे हरि लिव राता हे ॥ ५ ॥ अपु तेजु वाइ प्रिथमी आकासा ॥ तिन महि पंच ततु घरि वासा ॥ सतिगुर सबदि रहहि रंगि राता तजि माइआ हउमै भ्राता हे ॥ ६ ॥ इहु मनु भीजै सबदि पतीजै ॥ बिनु नावै किआ टेक टिकीजै ॥ अंतरि चोरु मुहै घरु मंदरु इनि साकति दूतु न जाता हे ॥ ७ ॥ दुंदर दूत भूत भीहाले ॥ खिंचोताणि करहि बेताले ॥ सबद सुरति बिनु आवै जावै पति खोई आवत जाता हे ॥ ८ ॥ कूड़ु कलरु तनु भसमै ढेरी ॥ बिनु नावै कैसी पति तेरी ॥ बाधे मुकति नाही जुग चारे जमकंकरि कालि पराता हे ॥ ९ ॥ जम दरि बाधे मिलहि सजाई ॥ तिसु अपराधी गति नही काई ॥ करण पलाव करे बिललावै जिउ कुंडी मीनु पराता हे ॥ १० ॥ साकतु फासी पड़ै इकेला ॥ जम वसि कीआ अंधु दुहेला ॥ राम नाम बिनु मुकति न सूझै आजु कालि पचि जाता हे ॥ ११ ॥ सतिगुर बाझु न बेली कोई ॥ ऐथै ओथै राखा प्रभु सोई ॥ राम नामु देवै करि किरपा इउ सललै सलल मिलाता हे ॥ १२ ॥ भूले सिख गुरू समझाए ॥ उझड़ि जादे मारगि पाए ॥ तिसु गुर सेवि सदा दिनु राती दुख

भंजन संगि सखाता हे ॥ १३ ॥ गुर की भगति करहि किआ प्राणी ॥ ब्रहमै इंद्रि महेसि न जाणी ॥ सतिगुरु अलखु कहहु किउ लखीऐ जिसु बखसे तिसहि पछाता हे ॥ १४ ॥ अंतरि प्रेमु परापति दरसनु ॥ गुरबाणी सिउ प्रीति सु परसनु ॥ अहिनिसि निरमल जोति सबाई घटि दीपकु गुरमुखि जाता हे ॥ १५ ॥ भोजन गिआनु महा रसु मीठा ॥ जिनि चाखिआ तिनि दरसनु डीठा ॥ दरसनु देखि मिले बैरागी मनु मनसा मारि समाता हे ॥ १६ ॥ सतिगुरु सेवहि से परधाना ॥ तिन घट घट अंतरि ब्रहमु पछाना ॥ नानक हरि जसु हरि जन की संगति दीजै जिन सतिगुरु हरि प्रभु जाता हे ॥ १७ ॥ ५ ॥ ११ ॥

हे गुरुदेव ! हम तुम्हारी शरण में आए हैं, तू सर्वशक्तिमान एवं दयालु है। तेरी लीलाएँ कोई नहीं जानता, तू पूर्ण पुरुष विधाता है॥ १॥ तू युग-युगांतरों से सबका पोषण कर रहा है, हे अनुपम रूप वाले दयालु प्रभु ! तू सब में समाया हुआ है, जैसा तुझे मंजूर है, वैसे ही जीवों को चलाता है, सब कुछ तेरा किया ही हो रहा है॥ २॥ हे संसार के जीवनदाता ! सब के अन्तर्मन में तेरी ही ज्योति विद्यमान है, तू खुद ही सब शरीरों को भोगता है और आनंद करता है। जगत्-पिता प्रभु तीनों लोकों का दाता है, वह खुद ही नियामतें देता और खुद ही वापिस ले लेता है॥ ३॥ उसने जगत् को उत्पन्न करके एक खेल रचाया हुआ है और पवन, पानी, अग्नि इत्यादि पंच तत्वों से शरीर का निर्माण करके इसमें प्राण डाल दिए। शरीर रूपी नगर को दो आँखें, दो कान, मुँह, नाक इत्यादि नौ द्वार लगा दिए परन्तु दसम द्वार उसने गुप्त रखा॥ ४॥ शरीर में हिंसा, मोह, लोभ एवं क्रोध रूपी भयानक अग्नि की चार नदियां बहती हैं और माया से निर्लिप्त कोई विरला गुरुमुख ही शब्द द्वारा इस भेद को समझता है। पदार्थवादी जीव दुर्मति के कारण इन नदियों में डूबता एवं जलता रहता है, लेकिन परमात्मा की लगन में लीन रहने वाले की गुरु स्वयं रक्षा करता है॥ ५॥ जगत्-रचना जल, अग्नि, पवन, पृथ्वी एवं आकाश इन पंच तत्वों से हुई है और इन पंच तत्वों से बने हुए शरीर रूपी घर में ही आत्मा का निवास है। जो सतगुरु के शब्द द्वारा प्रभु-रंग में लीन रहता है, वह माया, अभिमान, भ्रांतियों को त्याग देता है॥ ६॥ यह मन ब्रह्म-शब्द में भीगकर ही संतुष्ट होता है, नाम के बिना क्या सहारा ले सकता है। पदार्थवादी जीव माया के उन दूतों से परिचित ही नहीं जो अहम् रूपी चोर हृदय-घर एवं शरीर रूपी मन्दिर को लूटता जा रहा है॥ ७॥ कामादिक के भयानक भूत रूपी दूत शरीर में ही हैं, जो प्रेत की तरह खींचतान करते हैं। शब्द-सुरति का अभ्यास किए बिना जीव आता-जाता है और अपनी प्रतिष्ठा गँवा कर आवागमन में पड़ा रहता है॥ ८॥ यह तन नाशवान है, जो रेत की तरह भस्म बनकर ढेरी हो जाता है। हे भाई ! नाम के बिना तेरी कैसी प्रतिष्ठा है ? बन्धनों में फँसा हुआ चारों युग मुक्ति नहीं पा सकता, काल एवं यमदूतों ने बाखूबी पहचाना होता है॥ ६॥ यम के द्वार पर बँधे हुए को कठोर सजा मिलती है और उस अपराधी की कोई गति नहीं होती। वह गिड़गिड़ाकर बहुत रोता-चिल्लाता है, जैसे कुण्डी में फँसी हुई मछली तड़पती है॥ १०॥ पदार्थवादी जीव अकेला ही यम की फाँसी में पड़ता है। यम उसे अपने वश में कर लेता है और वह अन्धा बहुत दुखी होता है। राम नाम के बिना मुक्ति पाने का कोई साधन नहीं सूझता और आज अथवा कल में ही नष्ट हो जाता है॥ ११॥ सच्चे गुरु के बिना अन्य कोई साथी नहीं है, लोक-परलोक दोनों में प्रभु ही रक्षा करता है। गुरु कृपा करके राम नाम देता है और परमात्मा से यूँ मिलाता है, जैसे जल जल में मिलकर एक रूप हो जाता है॥ १२॥ अगर शिष्य से भूल हो जाए तो गुरु उसे समझा देता है, अगर वह गलत रास्ते पर जाता है तो उसे सच्चा मार्ग प्रदान करता है। उस गुरु की सदैव सेवा करो, जो सब दुख मिटाने वाला, सच्चा साथी एवं शुभचिन्तक है॥ १३॥ साधारण प्राणी गुरु की भक्ति क्या कर सकता है ? जब ब्रह्मा, विष्णु एवं शिवशंकर ने भेद को नहीं समझा। सतगुरु अदृष्ट है, बताओ

उसे कैसे जाना जा सकता है, जिस पर कृपा करता है, उसने उसे पहचान लिया है॥ १४॥ जिसके मन में प्रेम होता है, उसे दर्शन प्राप्त हो जाते हैं। जिसकी गुरु की वाणी से प्रीति होती है, वही चरणों का स्पर्श पाता है। परमात्मा की निर्मल ज्योति सब में दिन-रात आलोकित है और गुरुमुख ने यह ज्योति रूपी दीपक हृदय में जान लिया है॥ १५॥ ज्ञान रूपी भोजन बहुत ही मीठा रस है, जिसने इसे चख लिया है, उसने दर्शन कर लिए हैं। वैरागी पुरुष प्रभु-दर्शन करके उससे ही मिल जाता है और अपनी इच्छाओं को त्याग कर सत्य में विलीन हो जाता है॥ १६॥ सतगुरु की उपासना करने वाले ही सर्वश्रेष्ठ हैं और उन्होंने घट-घट में ब्रह्म को पहचान लिया है। नानक का कथन है कि जिन्होंने सतगुरु-प्रभु को जान लिया है, मुझे हरि यश एवं उन भक्तजनों की संगति प्रदान करो॥ १७॥ ५॥ ११॥

मारू महला १ ॥ साचे साहिब सिरजणहारे ॥ जिनि धर चक्र धरे वीचारे ॥ आपे करता करि करि वेखै साचा वेपरवाहा हे ॥ १ ॥ वेकी वेकी जंत उपाए ॥ दुइ पंदी दुइ राह चलाए ॥ गुर पूरे विणु मुकति न होई सचु नामु जपि लाहा हे ॥ २ ॥ पड़हि मनमुख परु बिधि नही जाना ॥ नामु न बूझहि भरमि भुलाना ॥ लै कै वढी देनि उगाही दुरमति का गलि फाहा हे ॥ ३ ॥ सिम्रिति सासत्र पड़हि पुराणा ॥ वादु वखाणहि ततु न जाणा ॥ विणु गुर पूरे ततु न पाईऐ सच सूचे सचु राहा हे ॥ ४ ॥ सभ सालाहे सुणि सुणि आखै ॥ आपे दाना सचु पराखै ॥ जिन कउ नदरि करे प्रभु अपनी गुरमुखि सबदु सलाहा हे ॥ ५ ॥ सुणि सुणि आखै केती बाणी ॥ सुणि कहीऐ को अंतु न जाणी ॥ जा कउ अलखु लखाए आपे अकथ कथा बुधि ताहा हे ॥ ६ ॥ जनमे कउ वाजहि वाधाए ॥ सोहिलड़े अगिआनी गाए ॥ जो जनमै तिसु सरपर मरणा किरतु पइआ सिरि साहा हे ॥ ७ ॥ संजोगु विजोगु मेरै प्रभि कीए ॥ स्रिसटि उपाइ दुखा सुख दीए ॥ दुख सुख ही ते भए निराले गुरमुखि सीलु सनाहा हे ॥ ८ ॥ नीके साचे के वापारी ॥ सचु सउदा लै गुर वीचारी ॥ सचा वखरु जिसु धनु पलै सबदि सचै ओमाहा हे ॥ ९ ॥ काची सउदी तोटा आवै ॥ गुरमुखि वणजु करे प्रभ भावै ॥ पूंजी साबतु रासि सलामति चूका जम का फाहा हे ॥ १० ॥ सभु को बोलै आपण भाणै ॥ मनमुखु दूजै बोलि न जाणै ॥ अंधुले की मति अंधली बोली आइ गइआ दुखु ताहा हे ॥ ११ ॥ दुख महि जनमै दुख महि मरणा ॥ दूखु न मिटै बिनु गुर की सरणा ॥ दूखी उपजै दूखी बिनसै किआ लै आइआ किआ लै जाहा हे ॥ १२ ॥ सची करणी गुर की सिरकारा ॥ आवणु जाणु नही जम धारा ॥ डाल छोडि ततु मूलु पराता मनि साचा ओमाहा हे ॥ १३ ॥ हरि के लोग नही जमु मारै ॥ ना दुखु देखहि पंथि करारै ॥ राम नामु घट अंतरि पूजा अवरु न दूजा काहा हे ॥ १४ ॥ ओड़ु न कथनै सिफति सजाई ॥ जिउ तुधु भावहि रहहि रजाई ॥ दरगह पैधे जानि सुहेले हुकमि सचे पातिसाहा हे ॥ १५ ॥ किआ कहीऐ गुण कथहि घनेरे ॥ अंतु न पावहि वडे वडेरे ॥ नानक साचु मिलै पति राखहु तू सिरि साहा पातिसाहा हे ॥ १६ ॥ ६ ॥ १२ ॥

परम-सत्य परमेश्वर ही सृजनहार है, जिसने सोच-विचार कर चक्राकार पृथ्वी को धारण किया हुआ है। वह स्वयं ही रचना करके देखरेख करता है, लेकिन सच्चा प्रभु फिर भी बेपरवाह है॥ १॥ उसने भिन्न-भिन्न प्रकार के जीव पैदा किए हैं, उसने गुरुमुख एवं मनमुख दो प्रकार के जीव पैदा करके अच्छाई एवं बुराई रूपी दो मार्ग चलाए हैं। पूर्ण गुरु के बिना किसी की मुक्ति नहीं होती, ईश्वर का नाम जपने से ही लाभ होता है॥ २॥ मनमुख पाठ तो करता है किन्तु विधि को नहीं जानता। वह नाम के रहस्य को नहीं बूझता अपितु भ्रम में ही भटकता है। जो लोग रिश्वत लेकर झूठी गवाही देते हैं, उनके गले में दुर्मति की फाँसी पड़ जाती है अर्थात् उनकी बुद्धि खोटी

हो जाती है॥ ३॥ कुछ व्यक्ति स्मृतियाँ, शास्त्र एवं पुराण पढ़ते रहते हैं, वे वाद-विवाद करते हैं परन्तु सत्यशील तत्व को नहीं समझते। पूर्ण गुरु के बिना परम तत्व की प्राप्ति नहीं होती, सत्यशील सत्य के मार्ग पर ही चलते हैं॥ ४॥ सभी लोग स्तुति करते हैं और सुन-सुनकर गुण सुनाते रहते हैं। वह चतुर एवं सच्चा प्रभु स्वयं ही उनकी परख करता है। जिन पर प्रभु अपनी कृपा-दृष्टि करता है, वह गुरु के सान्निध्य में शब्द की स्तुति करता रहता है॥ ५॥ सुन-सुनकर कितनी ही दुनिया बोलती रहती है लेकिन सुनने एवं बोलने से कोई भी ईश्वर का रहस्य नहीं जान सका। अलख प्रभु जिसे अपना आप प्रगट कर देता है, उसे ही अकथनीय कथा करने की बुद्धि प्राप्त होती है॥ ६॥ किसी जीव के जन्म लेने पर घर में खुशी का माहौल बन जाता है, परिवार को शुभकामनाएँ मिलती हैं और ज्ञानहीन संबंधी मिलकर मंगलगान करते हैं। जिसने जन्म लिया है, उसकी मृत्यु अटल है। जैसे कर्म है, वैसे ही मृत्यु का दिन तय है॥ ७॥ जीव का परिवार से संयोग एवं वियोग मेरे प्रभु ने ही बनाया हुआ है और सृष्टि को पैदा करके दुख-सुख भी दिए हुए हैं, जिन गुरुमुखों ने सहनशीलता का कवच धारण कर लिया है, वे दुख-सुख से निर्लिप्त रहते हैं॥ ८॥ सत्य के व्यापारी ही भले हैं, वे गुरु से विचार करके सच्चा सौदा खरीदते हैं। जिसके पास सच्चा सौदा एवं नाम-धन होता है, उसके मन में सच्चे शब्द द्वारा स्तुतिगान करने से उत्साह उत्पन्न हो जाता है॥ ६॥ झूठ का सौदा करने में नुक्सान ही होता है। प्रभु को वही मनुष्य भाता है, जो गुरमुख सच्चा व्यापार करता है। उसकी पूँजी सुरक्षित रहती है, उसकी राशि भी ठीक-ठाक रहती है और उसका यम का फँदा कट जाता है॥ १०॥ हर कोई अपनी इच्छा से ही बोलता है और स्वेच्छाचारी द्वैतभाव के कारण बोलना ही नहीं जानता। अन्धे की बुद्धि एवं बोली अंधी ही है, इसलिए वह जन्म-मरण का दुःख भोगता है॥ ११॥ वह दुख में जन्म लेता और दुख में ही मृत्यु को प्राप्त हो जाता है। गुरु की शरण के बिना उसका दुख नहीं मिटता। वह दुख में ही पैदा होता है और दुख में ही नष्ट हो जाता है। वह क्या लेकर आया और क्या लेकर जाता है॥ १२॥ जो कार्य गुरु ने जीव को सौंपा है, वही कार्य सत्यशील है, इससे जन्म-मरण नहीं होता और न ही यम के कानून की कोई धारा लागू होती है। वह जगत् रूपी पेड़ की डालियों अर्थात् देवी-देवताओं को छोड़कर मूल परमात्मा के चरणों में आ गया है और उसके मन में मिलन के लिए सच्ची उमंग पैदा हो गई है॥ १३॥ ईश्वर के उपासक को यम नहीं मारता और न ही वह भयानक मार्ग के दुख को देखता है। वह अपने हृदय में राम-नाम की पूजा करता रहता है और उसे अन्य कोई झंझट नहीं पड़ता॥ १४॥ हे ईश्वर ! तेरी स्तुति करने का कोई अंत नहीं है, जैसे तुझे उपयुक्त लगता है, वैसे ही तेरी इच्छा में रहते हैं, सच्चे प्रभु के हुक्म से सहज ही दरबार में सुख की अनुभूति होती है॥ १५॥ सभी गुण कथन करते हैं, मगर ईश्वर के गुणों के बारे में क्या कहा जाए !! जब बड़े-बड़े देवी-देवता भी अन्त नहीं पा सके। नानक प्रार्थना करते हैं कि हे ईश्वर ! सत्य से मिलाकर हमारी लाज रखो, केवल तू ही बादशाहों का भी बादशाह है॥ १६॥ ६॥ १२॥

मारू महला १ दखणी ॥ काइआ नगरु नगर गड़ अंदरि ॥ साचा वासा पुरि गगनंदरि ॥ असथिरु थानु सदा निरमाइलु आपे आपु उपाइदा ॥ १ ॥ अंदरि कोट छजे हटनाले ॥ आपे लेवै वसतु समाले ॥ बजर कपाट जड़े जड़ि जाणै गुर सबदी खोलाइदा ॥ २ ॥ भीतरि कोट गुफा घर जाई ॥ नउ घर थापे हुकमि रजाई ॥ दसवै पुरखु अलेखु अपारी आपे अलखु लखाइदा ॥ ३ ॥ पउण पाणी अगनी इक वासा ॥ आपे कीतो खेलु तमासा ॥ बलदी जलि निवरै किरपा ते आपे जल निधि पाइदा ॥ ४ ॥ धरति उपाइ धरी धरम साला ॥ उतपति परलउ आपि निराला ॥ पवणै खेलु कीआ सभ थाई कला खिंचि ढाहाइदा ॥ ५ ॥ भार अठारह मालणि तेरी ॥ चउरु ढुलै पवणै लै फेरी ॥ चंदु सूरजु दुइ दीपक राखे

ससि घरि सूरु समाइदा ॥ ६ ॥ पंखी मंच उडरि नही धावहि ॥ सफलिओ बिरखु अंम्रित फलु पावहि ॥ गुरमुखि सहजि रवै गुण गावै हरि रसु चोग चुगाइदा ॥ ७ ॥ झिलमिल झिलकै चंदु न तारा ॥ सूरज किरणि न बिजुलि गैणारा ॥ अकथी कथउ चिहनु नही कोई पूरि रहिआ मनि भाइदा ॥ ८ ॥ पसरी किरणि जोति उजिआला ॥ करि करि देखै आपि दइआला ॥ अनहद रुण झुणकारु सदा धुनि निरभउ कै घरि वाइदा ॥ ६ ॥ अनहदु वाजै भ्रमु भउ भाजै ॥ सगल बिआपि रहिआ प्रभु छाजै ॥ सभ तेरी तू गुरमुखि जाता दरि सोहै गुण गाइदा ॥ १० ॥ आदि निरंजनु निरमलु सोई ॥ अवरु न जाणा दूजा कोई ॥ एकंकारु वसै मनि भावै हउमै गरबु गवाइदा ॥ ११ ॥ अंम्रितु पीआ सतिगुरि दीआ ॥ अवरु न जाणा दूआ तीआ ॥ एको एकु सु अपर परंपरु परखि खजानै पाइदा ॥ १२ ॥ गिआनु धिआनु सचु गहिर गंभीरा ॥ कोइ न जाणै तेरा चीरा ॥ जेती है तेती तुधु जाचै करमि मिलै सो पाइदा ॥ १३ ॥ करमु धरमु सचु हाथि तुमारै ॥ वेपरवाह अखुट भंडारै ॥ तू दइआलु किरपालु सदा प्रभु आपे मेलि मिलाइदा ॥ १४ ॥ आपे देखि दिखावै आपे ॥ आपे थापि उथापे आपे ॥ आपे जोड़ि विछोड़े करता आपे मारि जीवाइदा ॥ १५ ॥ जेती है तेती तुधु अंदरि ॥ देखहि आपि बैसि बिज मंदरि ॥ नानकु साचु कहै बेनंती हरि दरसनि सुखु पाइदा ॥ १६ ॥ १ ॥ १३ ॥

नगर-किले में से मानव-शरीर भी एक नगर ही है और गगनंतर पुरी अर्थात् दसम द्वार में सत्यस्वरूप ईश्वर का निवास है। यह दसम द्वार रूपी स्थिर स्थान सदैव निर्मल रहता है और वह स्वयं अपने आपको उत्पन्न करता है।। १।। इस किले में छज्जे और बाजार हैं। वह स्वयं ही वस्तु लेता और उसकी संभाल करता है। इस किले को वज्र कपाट जड़े हुए हैं, जिनको वह खुद ही जड़ित करना जानता है और इन कपाटों को शब्द-गुरु द्वारा ही खोलता है।। २।। शरीर रूपी किले में दसम द्वार रूपी गुफा है, जहाँ परम-सत्य का घर है। उसने हुक्म से ही शरीर रूपी नगर में आँख, नाक, कान, इत्यादि नौ घर बनाए हुए हैं। दसम द्वार में अपरंपार, अलक्ष्य ईश्वर स्वयं रहता है और अदृश्य स्वयं ही अपने आपको प्रगट करता है।। ३।। पवन, पानी, अग्नि इत्यादि पंच तत्वों से बने हुए शरीर रूपी नगर में प्रभु ने ही वास किया हुआ है और समूचा खेल-तमाशा उसने स्वयं ही बनाया है। जो जलती हुई अग्नि पानी से बुझ जाती है, वह स्वयं ही अग्नि (बड़वाग्नि) समुद्र में डाल देता है।। ४।। धरती को उत्पन्न करके उसने जीवों को धर्म करने के लिए धर्मशाला बना दी है। जगत् की उत्पति एवं प्रलय होता रहता है किन्तु वह स्वयं निराला ही रहता है। उसने हर जगह पवन (प्राणों) का खेल रचा है और स्वयं ही अपनी शक्ति को खींचकर प्राणों का खेल नष्ट कर देता है।। ५।। हे ईश्वर ! अठारह भार वाली यह वनस्पति तेरी मालिन है,पवन का चक्कर तुझ पर चँवर झूल रहा है। सूर्य एवं चाँद रूपी दो दीपक आलोकित किए हुए हैं और चाँद के घर में सूर्य समा जाता है अर्थात् सूर्य से ही चन्द्रमा को प्रकाश मिलता है।। ६।। गुरुमुख रूपी पेड़ से ज्ञानेन्द्रियाँ रूपी पक्षी उड़कर नहीं जाते। शरीर रूपी पेड़ सुन्दर नाम रूपी फल से भरपूर है और वे पक्षी यह अमृतमयी फल पाते हैं। गुरुमुख सहज ही गुणगान करते हैं और ज्ञानेन्द्रियाँ रूपी पक्षियों को हरि-नाम रूपी चोगा चुगाते रहते हैं।। ७।। मन में सत्य की ज्योति चमक रही है। न चन्द्रमा है, न कोई तारा है, न सूर्य की किरणें हैं और न आसमान वाली बिजली है। मैं अकथनीय अवस्था कथन कर रहा हूँ, जिसका कोई चक्र-चिन्ह नहीं है और मनभावन प्रभु सब में समा रहा है।। ८।। किरणों का प्रसार होने से सर्वत्र उजाला हो गया। दयालु परमेश्वर स्वयं उत्पन्न करके देखता रहता है। सुरीली ध्वनि वाला अनहद शब्द सदैव निर्भय प्रभु के द्वार रूपी घर में बजता रहता है।। ६।। जब अनहद शब्द बजता है तो मन में से भ्रम-भय दूर हो जाते हैं। प्रभु सब जीवों

में व्याप्त हो रहा है और सब पर अपनी छाया कर रहा है। हे ईश्वर! सारी दुनिया तेरी ही बनाई हुई है, तू गुरु के माध्यम से ही जाना जाता है और तेरे द्वार पर गुणगान करने वाला ही शोभा का पात्र बनता है॥ १०॥ जगत् का आदि, निरंजन, निर्मल वही है, उसके अलावा मैं किसी दूसरे को बड़ा नहीं मानता। जब ओंकार मन में बस जाता है तो वही मन को भाता है और अभिमान एवं घमण्ड को दूर कर देता है॥ ११॥ जो नामामृत पान किया है, मुझे सतगुरु ने दिया है। अब किसी दूसरे-तीसरे को मैं नहीं जानता। ईश्वर एक ही है, सबसे बड़ा एवं अपरंपार है, वह स्वयं ही जीवों को परखकर अपने कोष में मिला लेता है॥ १२॥ हे सत्यस्वरूप! तू गहन-गंभीर है, मुझे ज्ञान-ध्यान प्रदान करो, तेरा रहस्य कोई नहीं जानता। जितनी भी यह दुनिया है, सब तुझसे ही माँगती है परन्तु जिस पर कृपा करता है वही पाता है॥ १३॥ धर्म-कर्म सब तेरे हाथ में है, तू बेपरवाह है और तेरा भण्डार कभी कम नहीं होता। हे प्रभु! तू बड़ा दयालु एवं सदैव कृपा करने वाला है और स्वयं ही मिलाता है॥ १४॥ देखता-दिखाता, बनाता-बिगाड़ता वह स्वयं ही है, संयोग-वियोग एवं मारने-जिंदा रखने वाला ईश्वर ही है॥ १५॥ यह जितनी भी दुनिया है, तेरे विराट रूप शरीर में बसती है। तू स्वयं अपने मन्दिर में बैठकर रचना को देखता रहता है। नानक विनयपूर्वक सत्य ही कहता है कि ईश्वर के दर्शन से ही सुख उपलब्ध होता है॥ १६॥ १॥ १३॥

मारू महला १ ॥ दरसनु पावा जे तुधु भावा ॥ भाइ भगति साचे गुण गावा ॥ तुधु भाणे तू भावहि करते आपे रसन रसाइदा ॥ १ ॥ सोहनि भगत प्रभू दरबारे ॥ मुकतु भए हरि दास तुमारे ॥ आपु गवाइ तेरै रंगि राते अनदिनु नामु धिआइदा ॥ २ ॥ ईसरु ब्रहमा देवी देवा ॥ इंद्र तपे मुनि तेरी सेवा ॥ जती सती केते बनवासी अंतु न कोई पाइदा ॥ ३ ॥ विणु जाणाए कोइ न जाणै ॥ जो किछु करे सु आपण भाणै ॥ लख चउरासीह जीअ उपाए भाणै साह लवाइदा ॥ ४ ॥ जो तिसु भावै सो निहचउ होवै ॥ मनमुखु आपु गणाए रोवै ॥ नावहु भुला ठउर न पाए आइ जाइ दुखु पाइदा ॥ ५ ॥ निरमल काइआ ऊजल हंसा ॥ तिसु विचि नामु निरंजन अंसा ॥ सगले दूख अंम्रितु करि पीवै बाहुड़ि दूखु न पाइदा ॥ ६ ॥ बहु सादहु दूखु परापति होवै ॥ भोगहु रोग सु अंति विगोवै ॥ हरखहु सोगु न मिटई कबहू विणु भाणे भरमाइदा ॥ ७ ॥ गिआन विहूणी भवै सबाई ॥ साचा रवि रहिआ लिव लाई ॥ निरभउ सबदु गुरू सचु जाता जोती जोति मिलाइदा ॥ ८ ॥ अटलु अडोलु अतोलु मुरारे ॥ खिन महि ढाहि फेरि उसारे ॥ रूपु न रेखिआ मिति नही कीमति सबदि भेदि पतीआइदा ॥ ९ ॥ हम दासन के दास पिआरे ॥ साधिक साच भले वीचारे ॥ मंने नाउ सोई जिणि जासी आपे साचु द्रिड़ाइदा ॥ १० ॥ पलै साचु सचे सचिआरा ॥ साचे भावै सबदु पिआरा ॥ त्रिभवणि साचु कला धरि थापी साचे ही पतीआइदा ॥ ११ ॥ वडा वडा आखै सभु कोई ॥ गुर बिनु सोझी किनै न होई ॥ साचि मिलै सो साचे भाए ना वीछुड़ि दुखु पाइदा ॥ १२ ॥ धुरहु विछुंने धाही रुंने ॥ मरि मरि जनमहि मुहलति पुंने ॥ जिसु बखसे तिसु दे वडिआई मेलि न पछोताइदा ॥ १३ ॥ आपे करता आपे भुगता ॥ आपे त्रिपता आपे मुकता ॥ आपे मुकति दानु मुकतीसरु ममता मोहु चुकाइदा ॥ १४ ॥ दाना कै सिरि दानु वीचारा ॥ करण कारण समरथु अपारा ॥ करि करि वेखै कीता अपणा करणी कार कराइदा ॥ १५ ॥ से गुण गावहि साचे भावहि ॥ तुझ ते उपजहि तुझ माहि समावहि ॥ नानकु साचु कहै बेनंती मिलि साचे सुखु पाइदा ॥ १६ ॥ २ ॥ १४ ॥

हे परमात्मा ! तेरे दर्शन तो ही कर सकता हूँ, अगर तू चाहता है। तेरी भक्ति तेरे ही गुण गाता रहूँ। हे रचयिता ! तेरी इच्छा से ही तू हमें भाता है और तू ही हमारी जीभ में मिठास डालता है॥ १॥ भक्तगण प्रभु के दरबार में ही सुन्दर लगते हैं। हे ईश्वर ! तेरे दास बन्धनों से मुक्त हो गए हैं। वे अपना अहम् मिटाकर तेरे रंग में लीन रहते हैं और दिन-रात तेरे नाम का ध्यान करते रहते हैं॥ २॥ शिवशंकर, ब्रह्मा, देवी-देवता, देवराज इन्द्र, तपस्वी एवं मुनि सब तेरी उपासना में लीन रहते हैं। ब्रह्मचारी-संन्यासी वनों में रहते हैं, परन्तु कोई भी तेरा रहस्य नहीं पा सका॥ ३॥ बिना जानकारी कोई भी तुझे जान नहीं सकता। जो कुछ भी तू करता है, अपनी मर्जी से ही करता है। तूने चौरासी लाख योनियों के जीव पैदा किए हैं परन्तु अपनी मर्जी से उन्हें साँस लेने देता है॥ ४॥ जो उसे मंजूर है, वह निश्चय होता है। स्वेच्छाचारी खुद को बड़ा मानता है रोता रहता है। वह नाम को भुलाकर कहीं भी ठिकाना प्राप्त नहीं करता और जन्म-मरण के चक्र में दुख प्राप्त करता है॥ ५॥ यह काया निर्मल है, आत्मा भी उज्ज्वल है और इस में ही निरंजन नाम का अंश है। जो सभी दुखों को अमृत समान समझकर पान कर जाता है, वह कभी दुखी नहीं होता॥ ६॥ अधिक स्वादों से दुख ही प्राप्त होता है और भोग-विलास करने से अनेक रोग पैदा हो जाते हैं, इस प्रकार अन्त में प्राणी ख्वार होता है। खुशी से पैदा हुई चिन्ता कभी मिटती नहीं और ईश्वरेच्छा को न मानने से जीव भटकता रहता है॥ ७॥ ज्ञानविहीन सारी दुनिया भटकती रहती है। परमात्मा सर्वव्यापक है परन्तु इस बात की सूझ उसमें ध्यान लगाने से ही होती है। जिसने निर्भय होकर शब्द-गुरु को सत्य स्वीकार कर लिया है, उसकी ज्योति परम-ज्योति में विलीन हो गई है॥ ८॥ ईश्वर अटल, अडोल एवं अतुलनीय है। वह क्षण में ही नष्ट कर देता है और फिर बना भी देता है। उसकी कोई रूप-रेखा एवं विस्तार नहीं, उसका मूल्यांकन नहीं किया जा सकता और शब्द द्वारा भेद पाकर ही जीव संतुष्ट होता है॥ ६॥ हे प्यारे ! हम तेरे दासों के दास हैं, वही साधक, सत्यवादी एवं भले हैं, जो तेरा चिंतन करते हैं। जो निष्ठापूर्वक नाम का मनन करता है, वह जीवनबाजी जीत लेता है और सत्य में ही दृढ़ रहता है॥ १०॥ जिसके पास सत्य है, वास्तव में वही सत्यशील है। जिसे शब्द से प्रेम होता है, वही सच्चे प्रभु को भाता है। तीनों लोकों में ईश्वर ने सत्य को शक्ति रूप में स्थिर किया हुआ है और वह सत्यशील पर ही प्रसन्न होता है॥ ११॥ हर कोई ईश्वर को बड़ा एवं महान् बताता है किन्तु गुरु के बिना किसी को भी सूझ नहीं हुई। जो सत्य में मिल जाते हैं, वही सच्चे प्रभु को भाते हैं और फिर उससे बिछुड़ कर दुखी नहीं होते॥ १२॥ जो प्रारम्भ से ही बिछुड़े हुए हैं, वे फूट-फूट कर रोते हैं। जब उनकी जीवन-अवधि पूरी हो जाती है, वे मरते-जन्मते रहते हैं। लेकिन जिस पर ईश्वर कृपा करता है, उसे ही बड़ाई देता है, और मिलाकर पछताता नहीं॥ १३॥ कर्ता-भोक्ता, तृप्त एवं मुक्त ईश्वर ही है। मुक्ति देने वाला वह मुक्तीश्वर खुद ही ममता-मोह मिटा देता है॥ १४॥ उसका दिया दान ही सर्वश्रेष्ठ दान है, वह अपरंपार करने करवाने में समर्थ है। वह पैदा कर-करके अपनी रचना को देखता रहता है और कर्मों के अनुसार ही कर्म करवाता है॥ १५॥ हे सत्यस्वरूप ! जो तुझे भाते हैं, वही तेरा गुणगान करते हैं। सब जीव तुझ से पैदा होकर तुझ में ही समा जाते हैं। नानक विनयपूर्वक सत्य ही कहता है कि परम-सत्य ईश्वर को मिलकर ही सुख प्राप्त होता है॥ १६॥ २॥ १४॥

मारू महला १ ॥ अरबद नरबद धुंधूकारा ॥ धरणि न गगना हुकमु अपारा ॥ ना दिनु रैनि न चंदु न सूरजु सुंन समाधि लगाइदा ॥ १ ॥ खाणी न बाणी पउण न पाणी ॥ ओपति खपति न आवण जाणी ॥ खंड पताल सपत नही सागर नदी न नीरु वहाइदा ॥ २ ॥ ना तदि सुरगु मछु पइआला ॥ दोजकु भिसतु नही खै काला ॥ नरकु सुरगु नही जंमणु मरणा ना को आइ न जाइदा ॥ ३ ॥ ब्रहमा बिसनु

महेसु न कोई ॥ अवरु न दीसै एको सोई ॥ नारि पुरखु नही जाति न जनमा ना को दुखु सुखु पाइदा ॥ ४ ॥ ना तदि जती सती बनवासी ॥ ना तदि सिध साधिक सुखवासी ॥ जोगी जंगम भेखु न कोई ना को नाथु कहाइदा ॥ ५ ॥ जप तप संजम ना ब्रत पूजा ॥ ना को आखि वखाणै दूजा ॥ आपे आपि उपाइ विगसै आपे कीमति पाइदा ॥ ६ ॥ ना सुचि संजमु तुलसी माला ॥ गोपी कानु न गऊ गोुआला ॥ तंतु मंतु पाखंडु न कोई ना को वंसु वजाइदा ॥ ७ ॥ करम धरम नही माइआ माखी ॥ जाति जनमु नही दीसै आखी ॥ ममता जालु कालु नही माथै ना को किसै धिआइदा ॥ ८ ॥ निंदु बिंदु नही जीउ न जिंदो ॥ ना तदि गोरखु न माछिंदो ॥ ना तदि गिआनु धिआनु कुल ओपति ना को गणत गणाइदा ॥ ९ ॥ वरन भेख नही ब्रहमण खत्री ॥ देउ न देहुरा गऊ गाइत्री ॥ होम जग नही तीरथि नावणु ना को पूजा लाइदा ॥ १० ॥ ना को मुला ना को काजी ॥ ना को सेखु मसाइकु हाजी ॥ रईअति राउ न हउमै दुनीआ ना को कहणु कहाइदा ॥ ११ ॥ भाउ न भगती ना सिव सकती ॥ साजनु मीतु बिंदु नही रकती ॥ आपे साहु आपे वणजारा साचे एहो भाइदा ॥ १२ ॥ बेद कतेब न सिंम्रिति सासत ॥ पाठ पुराण उदै नही आसत ॥ कहता बकता आपि अगोचरु आपे अलखु लखाइदा ॥ १३ ॥ जा तिसु भाणा ता जगतु उपाइआ ॥ बाझु कला आडाणु रहाइआ ॥ ब्रहमा बिसनु महेसु उपाए माइआ मोहु वधाइदा ॥ १४ ॥ विरले कउ गुर सबदु सुणाइआ ॥ करि करि देखै हुकमु सबाइआ ॥ खंड ब्रहमंड पाताल अरंभे गुपतहु परगटी आइदा ॥ १५ ॥ ता का अंतु न जाणै कोई ॥ पूरे गुर ते सोझी होई ॥ नानक साचि रते बिसमादी बिसम भए गुण गाइदा ॥ १६ ॥ ३ ॥ १५ ॥

सृष्टि-रचना से पूर्व अरबों-खरबों वर्ष धुंध रूपी घोर अंधेरा ही बना रहा। तब न धरती थी, न गगन था, अपितु परमात्मा का हुक्म ही व्याप्त था। दिन-रात, सूर्य एवं चाँद भी नहीं था, तब ईश्वर शून्य समाधि में ही लीन था॥ १॥ तब उत्पति के चार स्रोत—अण्डज, जेरज, स्वदेज और उद्भिज्ज भी नहीं थे, वाणी, पवन एवं पानी भी नहीं था। तब न किसी प्रकार की उत्पति होती थी, न ही मृत्यु होती थी और न ही कोई जन्मता एवं मरता था। तब न ब्रह्माण्ड के खण्ड थे, न सात पाताल थे, सागर एवं कोई नदिया भी नहीं थी। जिन में जल बहता है॥ २॥ तब स्वर्गलोक, मृत्युलोक और पाताललोक का भी अस्तित्व नहीं था। तब कोई दोजख एवं बिहिश्त भी नहीं था और न ही मारने वाला काल था। नरक-स्वर्ग, जन्म-मरण का कोई चक्र भी नहीं था और न ही कोई जन्म लेता था और न ही मृत्यु को प्राप्त होता था॥ ३॥ तब ब्रह्मा, विष्णु, महेश—त्रिदेव भी नहीं थे, एक परमेश्वर के अलावा अन्य कोई दृष्टिमान नहीं था। तब न कोई नारी-पुरुष था, न जाति एवं जन्म का अन्तर था और न ही कोई दुख-सुख की अनूभुति करता था॥ ४॥ तब कोई ब्रह्मचारी, संन्यासी एवं वन में रहने वाला भी नहीं था, न ही कोई सिद्ध, साधिक और सुख में रहने वाला गृहस्थी था। योगी, जंगम एवं कोई सम्प्रदाय भी नहीं था और न ही कोई नाथ कहलवाता था॥ ५॥ तब न कोई जप, तप एवं संयम करता था और न ही कोई व्रत एवं पूजा-अर्चना करता था। न ही कोई द्वैत-भाव को व्यक्त करने वाला था। तब स्वयंभू परमेश्वर स्वयं में ही प्रसन्न रहता था और स्वयं ही अपनी सही कीमत आंकने वाला था॥ ६॥ तब शुद्धता, तुलसी की पूजा एवं माला भी नहीं थी; न ही गोपी, कृष्ण-कन्हैया, गाय एवं ग्वाला था। तन्त्र-मन्त्र, पाखण्ड एवं बाँसुरी बजाने वाला भी कोई नहीं था॥ ७॥ तब धर्म-कर्म, माया की मक्खी का भी अस्तित्व नहीं था और कोई जाति-जन्म भी नजर नहीं आता था; तब ममता का जाल एवं माथे पर काल भी नहीं था और न

ही कोई किसी का ध्यान करता था॥ ८॥ न ही कोई किसी की निंदा-अपमान करता था, न कोई जीव एवं प्राण थे। तब न ही कोई गोरखनाथ एवं मछन्दरनाथ थे। तब ज्ञान, ध्यान, वंशावलि एवं कर्मों का लेखा-जोखा भी नहीं था॥ ६॥ तब ब्राह्मण-क्षत्रिय इत्यादि वर्ण एवं सम्प्रदाय तक नहीं था, कोई देवता, मन्दिर, गाय एवं गायत्री (मंत्र) का भी अस्तित्व नहीं था, उस समय होम, यज्ञ एवं तीर्थ-स्नान भी नहीं था और न ही कोई पूजा-अर्चना में लीन होता था॥ १०॥ तब कोई मुल्ला-मौलवी, काजी, शेख अथवा हाजी भी नहीं था। राजा-प्रजा, दुनिया का अहंकार, कोई कहने-कहलवाने वाला भी नहीं होता था॥ ११॥ आस्था, प्रेम, भक्ति, शिव-शक्ति, साजन, मित्र, वीर्य-रक्त कुछ भी नहीं था। तब परमात्मा स्वयं ही साहूकार एवं व्यापारी था और सत्यस्वरूप को यही स्वीकार था॥ १२॥ वेद, कुरान, स्मृतियाँ एवं शास्त्र भी नहीं थे; तब न कोई पुराणों का पाठ होता था और न ही सूर्योदय एवं अस्त होता था। अपहुँच, इन्द्रियातीत निरंकार स्वयं ही कहता-वक्ता था; वह अलख है और स्वयं ही दिखाता है॥ १३॥ जब उसकी मर्जी हुई तो उसने जगत् को उत्पन्न कर दिया; उसने बिना शक्ति के सारी रचना को आधार प्रदान किया। उसने ब्रह्मा (उत्पन्न करने वाले), विष्णु (पोषक), महेश (संहारक) इन त्रिदेवों को उत्पन्न करके मोह-माया में वृद्धि कर दी॥ १४॥ गुरु ने किसी विरले को ही शब्द सुनाया है, वह जीवों को पैदा कर करके सबकी देखभाल करता है और उसका हुक्म सब पर चलता है। उसने खण्ड, ब्राह्मण्ड एवं पाताल को बनाना आरम्भ कर दिया और अपने गुप्त निराकार रूप से साकार रूप में प्रगट हो गया॥ १५॥ उसका रहस्य कोई भी नहीं जानता और पूर्ण गुरु से ही उसकी सूझ प्राप्त होती है। हे नानक! जो सत्य में लीन हो गए, वे आश्चर्यजनक लीला को सुनकर चकित हो गए और उन्होंने परमात्मा का ही गुणगान किया॥ १६॥ ३॥ १५॥

मारू महला १ ॥ आपे आपु उपाइ निराला ॥ साचा थानु कीओ दइआला ॥ पउण पाणी अगनी का बंधनु काइआ कोटु रचाइदा ॥ १ ॥ नउ घरु थापे थापणहारै ॥ दसवै वासा अलख अपारै ॥ साइर सपत भरे जलि निरमलि गुरमुखि मैलु न लाइदा ॥ २ ॥ रवि ससि दीपक जोति सबाई ॥ आपे करि वेखै वडिआई ॥ जोति सरूप सदा सुखदाता सचे सोभा पाइदा ॥ ३ ॥ गड़ महि हाट पटण वापारा ॥ पूरै तोलि तोलै वणजारा ॥ आपे रतनु विसाहे लेवै आपे कीमति पाइदा ॥ ४ ॥ कीमति पाई पावणहारै ॥ वेपरवाह पूरे भंडारै ॥ सरब कला ले आपे रहिआ गुरमुखि किसै बुझाइदा ॥ ५ ॥ नदरि करे पूरा गुरु भेटै ॥ जम जंदारु न मारै फेटै ॥ जिउ जल अंतरि कमलु बिगासी आपे बिगसि धिआइदा ॥ ६ ॥ आपे वरखै अंम्रित धारा ॥ रतन जवेहर लाल अपारा ॥ सतिगुरु मिलै त पूरा पाईऐ प्रेम पदारथु पाइदा ॥ ७ ॥ प्रेम पदारथु लहै अमोलो ॥ कब ही न घाटसि पूरा तोलो ॥ सचे का वापारी होवै सचो सउदा पाइदा ॥ ८ ॥ सचा सउदा विरला को पाए ॥ पूरा सतिगुरु मिलै मिलाए ॥ गुरमुखि होइ सु हुकमु पछाणै मानै हुकमु समाइदा ॥ ६ ॥ हुकमे आइआ हुकमि समाइआ ॥ हुकमे दीसै जगतु उपाइआ ॥ हुकमे सुरगु मछु पइआला हुकमे कला रहाइदा ॥ १० ॥ हुकमे धरती धउल सिरि भारं ॥ हुकमे पउण पाणी गैणारं ॥ हुकमे सिव सकती घरि वासा हुकमे खेल खेलाइदा ॥ ११ ॥ हुकमे आडाणे आगासी ॥ हुकमे जल थल त्रिभवण वासी ॥ हुकमे सास गिरास सदा फुनि हुकमे देखि दिखाइदा ॥ १२ ॥ हुकमि उपाए दस अउतारा ॥ देव दानव अगणत अपारा ॥ मानै हुकमु सु दरगह पैझै साचि मिलाइ समाइदा ॥ १३ ॥ हुकमे जुग छतीह गुदारे ॥ हुकमे सिध साधिक वीचारे ॥ आपि नाथु नंथी सभ जा की बखसे मुकति कराइदा ॥ १४ ॥ काइआ कोटु गड़ै महि राजा ॥ नेब खवास

भला दरवाजा ॥ मिथिआ लोभु नाही घरि वासा लबि पापि पछुताइदा ॥ १५ ॥ सतु संतोखु नगर महि कारी ॥ जतु सतु संजमु सरणि मुरारी ॥ नानक सहजि मिलै जगजीवनु गुर सबदी पति पाइदा ॥ १६ ॥ ४ ॥ १६ ॥

वह स्वयं ही जग को उत्पन्न करके निर्लिप्त हो गया, उस दीनदयाल ने रहने के लिए जग रूपी सच्चा स्थान बनाया। फिर पवन, पानी, अग्नि इत्यादि पंच तत्वों का संगठन करके शरीर रूपी किला बना दिया॥ १॥ सृजनहार ने शरीर रूपी किले में आँख, कान, मुँह इत्यादि नौ घरों की सृजना की और उस अलख-अपार ने अपना निवास दसम द्वार में कर लिया। गुरुमुख के सात सरोवर (पाँच ज्ञानेन्द्रियाँ, मन एवं बुद्धि) नामामृत के पावन जल से भर दिए, जिसे कोई मैल नहीं लगती॥ २॥ सूर्य एवं चाँद रूपी दीपक में परमात्मा की ज्योति ही समाई हुई है। वह स्वयं ही बनाकर अपनी बड़ाई को देखता रहता है। ज्योति-स्वरूप परमेश्वर सदैव सुख देने वाला है और सत्यशील जीव सत्य में लीन होकर ही शोभा प्राप्त करता है॥ ३॥ शरीर रूपी किले में नगर एवं बाजार हैं, जिसमें नाम का व्यापार होता है। ईश्वर रूपी व्यापारी पूर्ण तौल से नाम रूपी वस्तु को तौलता है। वह स्वयं ही नाम-रत्नों को खरीदता है और स्वयं ही उसकी सही कीमत आंकता है॥ ४॥ मूल्यांकन करने वाले प्रभु ने स्वयं ही नाम-रत्न का मूल्यांकन किया है, उस बेपरवाह प्रभु के भण्डार भरे हुए हैं। वह अपनी सर्व शक्तियों सहित स्वयं ही सब में समाया हुआ है परन्तु इस तथ्य की सूझ किसी गुरुमुख को ही होती है॥ ५॥ अगर उसकी कृपा-दृष्टि हो जाए तो पूर्ण गुरु से भेंट हो जाती है और निर्दयी यम भी पीड़ित नहीं करता। जैसे कमल का फूल जल में खिला हुआ है, वैसे ही वह स्वयं ही खिलकर ध्यान करता रहता है॥ ६॥ वह स्वयं ही अमृत धारा की वर्षा करता है और उसका अपार नाम ही रत्न, जवाहर एवं लाल समान है। अगर सतिगुरु मिल जाए तो प्रेम के फलस्वरूप ही पूर्ण प्रभु प्राप्त होता है॥ ७॥ जो अमूल्य प्रेम पदार्थ को पा लेता है, वह कभी कम नहीं होता। जब भी उसे तोलो, वह पूरा होता है। वह सत्य का ही व्यापारी होता है और सच्चा सौदा ही लादता है॥ ८॥ यह सच्चा सौदा कोई विरला पुरुष ही प्राप्त करता है। अगर पूर्ण सतगुरु मिल जाए तो वह मिला देता है। जो गुरुमुख होता है, वही ईश्वर के हुक्म को पहचानता और मानकर उसके हुक्म में ही समा जाता है॥ ६॥ प्रत्येक जीव ईश्वर के हुक्म से ही पैदा हुआ है और हुक्म से ही उसमें विलीन हो गया है। समूचा दृष्टिमान जगत् उसके हुक्म से ही उत्पन्न हुआ है। उसके हुक्म में स्वर्गलोक, मृत्युलोक एवं पाताललोक की रचना हुई और हुक्म से ही उसने इनमें शक्ति स्थित की॥ १०॥ ईश्वर के हुक्म में ही धर्म रूपी बैल ने सिर पर धरती का भार उठाया हुआ है। उसके हुक्म से ही पवन एवं पानी कार्यशील हैं। उसके हुक्म में ही शिव (जीव) ने शक्ति (माया) के घर में वास किया हुआ है और हुक्म में ही जीवन रूपी खेल खेलाता है॥ ११॥ हुक्म में आकाश का प्रसार है, उसके हुक्म में ही तीनों लोकों के वासी जीव जल एवं थल में रहते हैं। उसके हुक्म में ही जीव साँस-ग्रास लेता है और पुनः हुक्म में ही देखता एवं दिखाता है॥ १२॥ ईश्वर के हुक्म के अन्तर्गत ही दस अवतार (मच्छ, कच्छ, वाराह, नृसिंह, वामन, राम, कृष्ण, परशुराभ इत्यादि) पैदा हुए और हुक्म में ही असंख्य देव-दानव उत्पन्न किए। जो उसके हुक्म को मानता है वही उसके दरबार में शोभा का पात्र बनता है और परम-सत्य में ही विलीन हो जाता है॥ १३॥ हुक्म में ही ईश्वर ने छत्तीस युग शून्य समाधि में व्यतीत कर दिए। चिंतनशील सिध-साधक उसके हुक्म से ही पैदा हुए हैं। वह सृष्टि का मालिक है और सब उसके नियंत्रण में है। जिस पर कृपा करता है, उसे मुक्त कर देता है॥ १४॥ शरीर रूपी किले में मन राजा है। कर्मन्द्रियाँ एवं ज्ञानेन्द्रियाँ इसके नायब एवं खास सेवक हैं और मुँह इसका दरवाजा है।

किन्तु मिथ्या लोभ के कारण जीव को सच्चे घर में वास नहीं मिलता और लालच, पाप के कारण पछताता है॥ १५॥ सत्य एवं संतोष भी शरीर रूपी नगर में अधिकारी हैं, जो यतीत्व, सदाचार एवं संयम द्वारा मन रूपी राजा को ईश्वर की शरण में जाने के लिए प्रेरित करते हैं। हे नानक! ईश्वर सहज स्वभाव ही मिलता है और शब्द-गुरु द्वारा ही जीव को सम्मान प्राप्त होता है॥ १६॥ ४॥ १६॥

मारू महला १ ॥ सुंन कला अपरंपरि धारी ॥ आपि निरालमु अपर अपारी ॥ आपे कुदरति करि करि देखै सुंनहु सुंनु उपाइदा ॥ १ ॥ पउणु पाणी सुंनै ते साजे ॥ स्रिसटि उपाइ काइआ गड़ राजे ॥ अगनि पाणी जीउ जोति तुमारी सुंने कला रहाइदा ॥ २ ॥ सुंनहु ब्रहमा बिसनु महेसु उपाए ॥ सुंने वरते जुग सबाए ॥ इसु पद वीचारे सो जनु पूरा तिसु मिलीऐ भरमु चुकाइदा ॥ ३ ॥ सुंनहु सपत सरोवर थापे ॥ जिनि साजे वीचारे आपे ॥ तितु सत सरि मनूआ गुरमुखि नावै फिरि बाहुड़ि जोनि न पाइदा ॥ ४ ॥ सुंनहु चंदु सूरजु गैणारे ॥ तिस की जोति त्रिभवण सारे ॥ सुंने अलख अपार निरालमु सुंने ताड़ी लाइदा ॥ ५ ॥ सुंनहु धरति अकासु उपाए ॥ बिनु थंमा राखे सचु कल पाए ॥ त्रिभवण साजि मेखुली माइआ आपि उपाइ खपाइदा ॥ ६ ॥ सुंनहु खाणी सुंनहु बाणी ॥ सुंनहु उपजी सुंनि समाणी ॥ उतभुजु चलतु कीआ सिरि करतै बिसमादु सबदि देखाइदा ॥ ७ ॥ सुंनहु राति दिनसु दुइ कीए ॥ ओपति खपति सुखा दुख दीए ॥ सुख दुख ही ते अमरु अतीता गुरमुखि निज घरु पाइदा ॥ ८ ॥ साम वेदु रिगु जुजरु अथरबणु ॥ ब्रहमे मुखि माइआ है त्रै गुण ॥ ता की कीमति कहि न सकै को तिउ बोले जिउ बोलाइदा ॥ ९ ॥ सुंनहु सपत पाताल उपाए ॥ सुंनहु भवण रखे लिव लाए ॥ आपे कारणु कीआ अपरंपरि सभु तेरो कीआ कमाइदा ॥ १० ॥ रज तम सत कल तेरी छाइआ ॥ जनम मरण हउमै दुखु पाइआ ॥ जिस नो क्रिपा करे हरि गुरमुखि गुणि चउथै मुकति कराइदा ॥ ११ ॥ सुंनहु उपजे दस अवतारा ॥ स्रिसटि उपाइ कीआ पासारा ॥ देव दानव गण गंधरब साजे सभि लिखिआ करम कमाइदा ॥ १२ ॥ गुरमुखि समझै रोगु न होई ॥ इह गुर की पउड़ी जाणै जनु कोई ॥ जुगह जुगंतरि मुकति पराइण सो मुकति भइआ पति पाइदा ॥ १३ ॥ पंच ततु सुंनहु परगासा ॥ देह संजोगी करम अभिआसा ॥ बुरा भला दुइ मसतकि लीखे पापु पुंनु बीजाइदा ॥ १४ ॥ ऊतम सतिगुर पुरख निराले ॥ सबदि रते हरि रसि मतवाले ॥ रिधि बुधि सिधि गिआनु गुरू ते पाईऐ पूरै भागि मिलाइदा ॥ १५ ॥ इसु मन माइआ कउ नेहु घनेरा ॥ कोई बूझहु गिआनी करहु निबेरा ॥ आसा मनसा हउमै सहसा नरु लोभी कूड़ु कमाइदा ॥ १६ ॥ सतिगुर ते पाए वीचारा ॥ सुंन समाधि सचे घर बारा ॥ नानक निरमल नादु सबद धुनि सचु रामै नामि समाइदा ॥ १७ ॥ ५ ॥ १७ ॥

ईश्वर ने सर्वप्रथम शून्य समाधि धारण की थी, वह अपरंपार स्वयं निर्लिप्त था। वह स्वयं ही कुदरत को उत्पन्न कर करके देखता है और शून्य समाधि में शून्य से सब उत्पन्न करता है॥ १॥ शून्य से उसने पवन-पानी का निर्माण किया, सृष्टि उत्पन्न करके शरीर रूपी किले में मन रूपी राजा को पैदा किया। हे ईश्वर! अग्नि, पानी एवं जीव में तुम्हारी ही ज्योति है और समूची शक्ति शून्य में ही स्थिर की हुई है॥ २॥ शून्य से ही ब्रह्मा, विष्णु, महेश उत्पन्न किए, सभी युग शून्य में ही बीत गए। इस पद को जो व्यक्ति विचार लेता है, वही पूर्ण ज्ञानी है और उससे मिलकर भ्रम दूर हो जाता है॥ ३॥ शून्य में ही परमेश्वर ने सात सरोवर (पाँच ज्ञानेन्द्रियाँ, मन-बुद्धि) बनाए,

जिसने इसे बनाया है, वह स्वयं ही इनका विचार करता है। जिस गुरुमुख का मन इन सात सरोवरों में स्नान करता है, वह पुनः योनि-चक्र में नहीं पड़ता॥ ४॥ शून्य से ही उसने चाँद, सूर्य एवं गगन बनाए और उसकी ज्योति तीनों लोकों में फैली हुई है। अलख, अपार निर्लिप्त परमात्मा स्वयं भी शून्य में ही समाया हुआ है और शून्य में ही समाधि लगाता है॥ ५॥ शून्य से ही धरती एवं आकाश उत्पन्न किए और बिना स्तम्भ के अपनी सत्य की शक्ति से स्थित किया हुआ है। उसने तीनों लोकों की रचना करके उन्हें माया रूपी रस्सी से बाँध रखा है और वह स्वयं ही पैदा करके नष्ट भी कर देता है॥ ६॥ शून्य से ही जीवों की उत्पत्ति के चारों स्रोत अस्तित्व में आए और शून्य से ही चारों वाणियाँ आईं। ये सब शून्य से उत्पन्न होकर शून्य में ही विलीन हो गए। करतार ने अपने शब्द द्वारा वनस्पति की रचना करके एक बड़ी अद्भुत लीला कर दिखाई है॥ ७॥ दिन और रात दोनों ही उसने शून्य से उत्पन्न किए और इसी से जीवों को जन्म-मरण, दुख-सुख दिए हैं। गुरुमुख सुख-दुख से रहित होकर अमर हो गया और उसने अपने सच्चे घर में स्थान पा लिया॥ ८॥ ऋगवेद, सामवेद, यजुर्वेद एवं अथर्ववेद-ब्रह्मा के मुख से निकले त्रिगुणात्मक माया रूपी ही हैं। प्रभु महिमा की सही कीमत कोई नहीं आँक सकता, जीव वैसे ही बोलता है, जैसे वह बुलाता है॥ ६॥ शून्य से ही सात पाताल उत्पन्न किए, शून्य में ही विश्व को उत्पन्न किया और सब ईश्वर में ही ध्यान लगाते हैं। हे परमेश्वर! तूने स्वयं यह जगत्-प्रसार किया है और सब जीव वही करते हैं, जो तू करवाता है॥ १०॥ रजोगुण, तमोगुण एवं सतोगुण की शक्ति तेरी ही छाया है। तूने जीव में अभिमान का दुख डाला हुआ है जो जन्म-मरण का कारण है। जिस पर परमात्मा कृपा करता है, वह गुरु के सान्निध्य में चौथे गुण को ग्रहण करके मुक्ति पा लेता है॥ ११॥ शून्य से दस अवतार उत्पन्न हुए, सृष्टि को उत्पन्न करके समूचा प्रसार किया। उसने देव, दानव, गण एवं गंधर्व की रचना की और सभी जीव भाग्यानुसार ही कर्म करते हैं॥ १२॥ गुरु के सान्निध्य में जो इस तथ्य को समझ लेता है, उसे कोई रोग नहीं लगता। कोई विरला ही गुरु के मार्ग को जानता है। यह मार्ग युग-युगान्तरों से मुक्ति पाने का साधन है, जो बन्धनों से मुक्ति प्राप्त कर गया है, उसे प्रभु के द्वार पर शोभा मिली है॥ १३॥ शून्य से ही पंच तत्वों का प्रकाश हुआ और इन तत्वों के संयोग से देह बनकर कर्मों का अभ्यास करती है। बुरा भला दोनों प्रकार के कर्म माथे पर लिखे हुए हैं और जीव पाप-पुण्य बोता है॥ १४॥ सतिगुरु उत्तम पुरुष एवं निराला है, जो शब्द में रत रहकर हरि-रस में मतवाला बना रहता है। ऋद्धियां, सिद्धियां, बुद्धि एवं ज्ञान गुरु से ही प्राप्त होते हैं और पूर्ण भाग्य से ही (गुरु से) मिलाप होता है॥ १५॥ इस मन को माया से बहुत प्रेम लगा हुआ है। चाहे ज्ञानी पुरुषों से बूझकर इस तथ्य का कोई निर्णय कर लो। लोभी आदमी झूठ में ही लिप्त रहता है और उसे आशा, तृष्णा, अभिमान एवं सन्देह का रोग लगा रहता है॥ १६॥ जो व्यक्ति सतगुरु से ज्ञान पा लेता है, वह शून्य समाधि द्वारा सच्चे प्रभु में निवास पा लेता है। हे नानक! फिर मन में शब्द की ध्वनि से निर्मल नाद सुनाई देता है और वह सच्चे राम नाम में समा जाता है॥ १७॥ ५॥ १७॥

मारू महला १ ॥ जह देखा तह दीन दइआला ॥ आइ न जाई प्रभु किरपाला ॥ जीआ अंदरि जुगति समाई रहिओ निरालमु राइआ ॥ १ ॥ जगु तिस की छाइआ जिसु बापु न माइआ ॥ ना तिसु भैण न भराउ कमाइआ ॥ ना तिसु ओपति खपति कुल जाती ओहु अजरावरु मनि भाइआ ॥ २ ॥ तू अकाल पुरखु नाही सिरि काला ॥ तू पुरखु अलेख अगंम निराला ॥ सत संतोखि सबदि अति सीतलु सहज भाइ लिव लाइआ ॥ ३ ॥ त्रै वरताइ चउथै घरि वासा ॥ काल बिकाल कीए इक ग्रासा ॥ निरमल

जोति सरब जगजीवनु गुरि अनहद सबदि दिखाइआ ॥ ४ ॥ ऊतम जन संत भले हरि पिआरे ॥ हरि रस माते पारि उतारे ॥ नानक रेण संत जन संगति हरि गुर परसादी पाइआ ॥ ५ ॥ तू अंतरजामी जीअ सभि तेरे ॥ तू दाता हम सेवक तेरे ॥ अंम्रित नामु क्रिपा करि दीजै गुरि गिआन रतनु दीपाइआ ॥ ६ ॥ पंच ततु मिलि इहु तनु कीआ ॥ आतम राम पाए सुखु थीआ ॥ करम करतूति अंम्रित फलु लागा हरि नाम रतनु मनि पाइआ ॥ ७ ॥ ना तिसु भूख पिआस मनु मानिआ ॥ सरब निरंजनु घटि घटि जानिआ ॥ अंम्रित रसि राता केवल बैरागी गुरमति भाइ सुभाइआ ॥ ८ ॥ अधिआतम करम करे दिनु राती ॥ निरमल जोति निरंतरि जाती ॥ सबदु रसालु रसन रसि रसना बेणु रसालु वजाइआ ॥ ९ ॥ बेणु रसाल वजावै सोई ॥ जा की त्रिभवण सोझी होई ॥ नानक बूझहु इह बिधि गुरमति हरि राम नामि लिव लाइआ ॥ १० ॥ ऐसे जन विरले संसारे ॥ गुर सबदु वीचारहि रहहि निरारे ॥ आपि तरहि संगति कुल तारहि तिन सफल जनमु जगि आइआ ॥ ११ ॥ घरु दरु मंदरु जाणै सोई ॥ जिसु पूरे गुर ते सोझी होई ॥ काइआ गड़ महल महली प्रभु साचा सचु साचा तखतु रचाइआ ॥ १२ ॥ चतुर दस हाट दीवे दुइ साखी ॥ सेवक पंच नाही बिखु चाखी ॥ अंतरि वसतु अनूप निरमोलक गुरि मिलिऐ हरि धनु पाइआ ॥ १३ ॥ तखति बहै तखतै की लाइक ॥ पंच समाए गुरमति पाइक ॥ आदि जुगादी है भी होसी सहसा भरमु चुकाइआ ॥ १४ ॥ तखति सलामु होवै दिनु राती ॥ इहु साचु वडाई गुरमति लिव जाती ॥ नानक रामु जपहु तरु तारी हरि अंति सखाई पाइआ ॥ १५ ॥ १ ॥ १८ ॥

जहाँ देखता हूँ, वहाँ दीनदयाल है। वह कृपालु प्रभु न आता है, न जाता है। जीवों में जीने की युक्ति समाई हुई है, लेकिन परमात्मा निर्लिप्त रहता है॥ १॥ यह जग स्वयंभू ईश्वर की छाया है, जिसका कोई बाप एवं माँ नहीं, न उसकी कोई बहिन है और न ही उसने कोई भाई बनाया। न उसका जन्म होता है, न ही वह मृत्यु को प्राप्त होता है, उसकी कोई कुल-जाति भी नहीं है, अतः वह अजर-अमर ईश्वर ही मन को भाया है॥ २॥ हे परमेश्वर ! तू कालातीत है, तेरे सिर पर काल का कोई भय नहीं। तू परमपुरुष है, कर्मों के लेखे से रहित है, जीवों की पहुँच से परे एवं जग से निराला है। जिसने श्रद्धा-भावना से ध्यान लगाया है, शब्द द्वारा उसके मन में सत्य, संतोष एवं शान्ति पैदा हो गई है॥ ३॥ संसार में त्रिगुणों का प्रसार करके तू तुरीयावस्था में रहता है, तूने विकराल काल को ग्रास बना लिया। हे संसार के जीवनदाता ! तेरी निर्मल ज्योति सब में व्याप्त है और गुरु ने अनहद शब्द द्वारा तेरा दर्शन करवा दिया है॥ ४॥ हे प्यारे प्रभु ! तेरे संतजन भले एवं उत्तम हैं, वे हरि रस में मस्त होकर पार हो गए हैं। नानक तो उन संतजनों की चरणरज बन चुका है और गुरु की कृपा से उनकी संगति में ईश्वर को पाया है॥ ५॥ तू अन्तर्यामी है, सभी जीव तेरी रचना हैं। तू हमारा दाता हैं और हम तेरे सेवक हैं। कृपा करके नामामृत प्रदान करो, गुरु से ज्ञान रत्न का दीपक आलोकित किया है॥ ६॥ पाँच तत्वों से यह तन बनाया है, उसमें आत्मा के निवास से सुख उत्पन्न हो गया है। शुभ कर्मों के फलस्वरूप उसमें अमृत नाम रूपी फल लग गया है और रत्न सरीखा हरि-नाम मन में ही पा लिया है॥ ७॥ जिसका मन हरि से संतुष्ट हो गया है, उसे कोई भूख-प्यास प्रभावित नहीं करती और उसने घट-घट में व्याप्त मायातीत ईश्वर को जान लिया है। वह वैराग्यगन होकर केवल अमृत रस में ही लीन रहता है और गुरु के उपदेश द्वारा शोभा का पात्र बन गया है॥ ८॥ जो दिन-रात आध्यात्मिक ज्ञान प्राप्ति का कर्म करता है, उसने निर्मल ज्योति को जान लिया है। उसने आत्मिक रस में लीन होकर रसना से रसीले शब्द द्वारा रसीली ध्वनि वाली बाँसुरी को बजाया है॥ ९॥ जिसे तीनों लोकों का ज्ञान हो जाता है, वही

रसीली बाँसुरी बजाता है। हे नानक ! गुरु-मतानुसार इस विधि को बूझ लो, क्योंकि इससे ही राम नाम में ध्यान लगता है॥ १०॥ संसार में ऐसे विरले ही व्यक्ति हैं, जो शब्द-गुरु का चिंतन करके निर्लिप्त रहते हैं। वे स्वयं तो पार होते ही हैं, संगत में आने वालों का वंशावलि सहित उद्धार कर देते हैं और जग में उनका जन्म सफल हुआ है॥ ११॥ जिसे पूर्ण गुरु से ज्ञान प्राप्त हो जाता है, वही प्रभु के शरीर रूपी घर, द्वार, मन्दिर रूपी दसम द्वार को जान लेता है। महल का मालिक शरीर रूपी गढ़ में ही रहता है और उस परम-सत्य ने हृदय को सच्चा तख्त बनाया हुआ है॥ १२॥ चौदह भवन एवं सूर्य-चाँद रूपी दो दीये साक्षी हैं कि सेवक-पंचों ने माया रूपी विष को नहीं चखा। उनके हृदय में अनुपम अमूल्य नाम-वस्तु विद्यमान है और गुरु से मिलकर उन्होंने हरिनाम रूपी धन पा लिया है॥ १३॥ हृदय रूपी तख्त पर वही बैठता है जो योग्य होता है। गुरु उपदेशानुसार वे सेवक पंच सत्य में ही लीन रहते हैं। आदि-जुगादि से एक ईश्वर ही है, अब भी है, भविष्य में भी उसका ही अस्तित्व होगा। जिसने इस रहस्य को जान लिया है, उसका भ्रम एवं सन्देह दूर हो गया है॥ १४॥ हृदय रूपी तख्त पर उस विराजमान को दिन-रात नमन होता है। ईश्वर का यह बड़प्पन है, गुरु की शिक्षा द्वारा ध्यान लगाने से ही उसे जाना जाता है। हे नानक ! राम नाम जपने से ही भवसागर से पार हुआ जा सकता है और अन्त में वही सहायक साथी प्राप्त होता है॥ १५॥ १॥ १८॥

मारू महला १ ॥ हरि धनु संचहु रे जन भाई ॥ सतिगुर सेवि रहहु सरणाई ॥ तसकरु चोरु न लागै ता कउ धुनि उपजै सबदि जगाइआ ॥ १ ॥ तू एकंकारु निरालमु राजा ॥ तू आपि सवारहि जन के काजा ॥ अमरु अडोलु अपारु अमोलकु हरि असथिर थानि सुहाइआ ॥ २ ॥ देही नगरी ऊतम थाना ॥ पंच लोक वसहि परधाना ॥ ऊपरि एकंकारु निरालमु सुंन समाधि लगाइआ ॥ ३ ॥ देही नगरी नउ दरवाजे ॥ सिरि सिरि करणैहारै साजे ॥ दसवै पुरखु अतीतु निराला आपे अलखु लखाइआ ॥ ४ ॥ पुरखु अलेखु सचे दीवाना ॥ हुकमि चलाए सचु नीसाना ॥ नानक खोजि लहहु घरु अपना हरि आतम राम नामु पाइआ ॥ ५ ॥ सरब निरंजन पुरखु सुजाना ॥ अदलु करे गुर गिआन समाना ॥ कामु क्रोधु लै गरदनि मारे हउमै लोभु चुकाइआ ॥ ६ ॥ सचै थानि वसै निरंकारा ॥ आपि पछाणै सबदु वीचारा ॥ सचै महलि निवासु निरंतरि आवण जाणु चुकाइआ ॥ ७ ॥ ना मनु चलै न पउणु उडावै ॥ जोगी सबदु अनाहदु वावै ॥ पंच सबद झुणकारु निरालमु प्रभि आपे वाइ सुणाइआ ॥ ८ ॥ भउ बैरागा सहजि समाता ॥ हउमै तिआगी अनहदि राता ॥ अंजनु सारि निरंजनु जाणै सरब निरंजनु राइआ ॥ ९ ॥ दुख भै भंजनु प्रभु अबिनासी ॥ रोग कटे काटी जम फासी ॥ नानक हरि प्रभु सो भउ भंजनु गुरि मिलिऐ हरि प्रभु पाइआ ॥ १० ॥ कालै कवलु निरंजनु जाणै ॥ बूझै करमु सु सबदु पछाणै ॥ आपे जाणै आपि पछाणै सभु तिस का चोजु सबाइआ ॥ ११ ॥ आपे साहु आपे वणजारा ॥ आपे परखे परखणहारा ॥ आपे कसि कसवटी लाए आपे कीमति पाइआ ॥ १२ ॥ आपि दइआलि दइआ प्रभि धारी ॥ घटि घटि रवि रहिआ बनवारी ॥ पुरखु अतीतु वसै निहकेवलु गुर पुरखै पुरखु मिलाइआ ॥ १३ ॥ प्रभु दाना बीना गरबु गवाए ॥ दूजा मेटै एकु दिखाए ॥ आसा माहि निरालमु जोनी अकुल निरंजनु गाइआ ॥ १४ ॥ हउमै मेटि सबदि सुखु होई ॥ आपु वीचारे गिआनी सोई ॥ नानक हरि जसु हरि गुण लाहा सतसंगति सचु फलु पाइआ ॥ १५ ॥ २ ॥ १९ ॥

हे मेरे भाई, भक्तजनो! हरि-नाम धन संचय करो; सतगुरु की सेवा में तल्लीन रहो और उसकी शरण में पड़े रहो। इस धन को कोई तस्कर अथवा चोर चुरा नहीं सकता, क्योंकि शब्द ध्वनि द्वारा मन सावधान रहता है॥ १॥ हे परमात्मा! तू एकाकार है, मोह-माया से निर्लिप्त है, समूचे विश्व का बादशाह है। तू स्वयं ही अपने भक्तजनों के कार्य सँवारता है। अमर, अडोल, अपरंपार, अमूल्य ईश्वर का अटल स्थान भी बहुत सुन्दर हैं॥ २॥ शरीर रूपी नगरी उत्तम स्थान है, जहाँ सत्य, संतोष, नम्रता इत्यादि पाँच लोग रहते हैं। इन सबके ऊपर एक ओंकार निर्लिप्त होकर शून्य समाधि लगाए बैठा हुआ है॥ ३॥ आँखें, कान, नाक, मुँह इत्यादि शरीर रूपी नगरी के नौ द्वार हैं, सबकी रचना उस रचयिता ने की है। सबसे निराला एवं मायातीत प्रभु दसम द्वार में रहता है और उस परमपुरुष ने स्वयं ही अपने अदृष्ट रूप को दिखाया है॥ ४॥ कर्मों से रहित उस परमपुरुष का दीवान (न्यायालय) शाश्वत है, वह सब पर अपना हुक्म चलाता है और उसका नाम रूपी परवाना अटल है। हे नानक! हृदय-घर में परमात्मा को खोज लो, क्योंकि आत्मा में ही राम नाम पाया जा सकता है॥ ५॥ वह निरंजन परमपुरुष बड़ा चतुर है, सर्वव्यापी है। वह सब जीवों का न्याय करता है और गुरु के ज्ञान द्वारा उसकी प्राप्ति संभव है। वह काम, क्रोध को गर्दन से पकड़ कर नष्ट कर देता और अभिमान-लोभ को मिटा देता है॥ ६॥ निराकार परमात्मा सच्चे स्थान में वास करता है और शब्द का चिंतन करने वाला आत्मस्वरूप को पहचान लेता है। इस प्रकार जीव का सच्चे घर में निवास हो जाता है और उसका आवागमन मिट जाता है॥ ७॥ योगी मन में अनहद शब्द बजाता रहता है, जिससे उसका मन इधर-उधर नहीं भटकता और न ही वासना रूपी वायु उसे उड़ाती है। उसके मन में पाँच प्रकार की अनहद ध्वनि वाले शब्द की निराली झंकार होती रहती है और प्रभु ने स्वयं ही शब्द को बजाकर सुनाया है॥ ८॥ जिसके मन में भय-श्रद्धा है, वह वैरागवान होकर सहज ही समाया रहता है। वह अहम् को त्यागकर अनहद ध्वनि में रत रहता है और ज्ञान रूपी अञ्जन लगाकर जान लेता है कि निरंजन परमेश्वर सर्वव्यापी है॥ ६॥ अविनाशी प्रभु सब दुख-भय मिटाने वाला है, उसने सारे रोग एवं यम की फाँसी काट दी है। हे नानक! सो प्रभु भय काटने वाला है और गुरु को मिलकर ही उसे पाया जा सकता है॥ १०॥ निरंजन को जानने वाला काल के भय को भी खा जाता है। जो प्रभु-कृपा को बूझता है, वह शब्द को पहचान लेता है। ईश्वर स्वयं ही जानता एवं पहचानता है और सब उसकी ही लीला है॥ ११॥ साहूकार एवं वणजारा वह स्वयं ही है। परख करने वाला वह स्वयं ही परख करता है। वह स्वयं ही कसौटी-परख करके कीमत लगाता है॥ १२॥ दयालु प्रभु ने स्वयं ही सब पर दया की हुई है, घट-घट सब में व्याप्त है। मायातीत परमपुरुष वासना से रहित है और महापुरुष गुरु ही उस परमपुरुष से मिलाता है॥ १३॥ चतुर प्रभु सारा अभिमान मिटा देता है और द्वैतभाव को मिटाकर अपने रूप का ही दर्शन करवाता है। जिस मनुष्य ने अकुल निरंजन का यशगान किया है, वह आशा में रहकर भी निर्लिप्त रहता है॥ १४॥ अहम् मिटाकर शब्द से ही परम सुख प्राप्त होता है और जो चिंतन करता है, वही ज्ञानवान है। हे नानक! ईश्वर का यश एवं गुण गाने से ही सच्चा लाभ उपलब्ध होता है और सत्संगति में ही सच्चा फल प्राप्त होता है॥ १५॥ २॥ १६॥

मारू महला १ ॥ सचु कहहु सचै घरि रहणा ॥ जीवत मरहु भवजलु जगु तरणा ॥ गुरु बोहिथु गुरु बेड़ी तुलहा मन हरि जपि पारि लंघाइआ ॥ १ ॥ हउमै ममता लोभ बिनासनु ॥ नउ दर मुकते दसवै आसनु ॥ ऊपरि परै परै अपरंपरु जिनि आपे आपु उपाइआ ॥ २ ॥ गुरमति लेवहु हरि लिव तरीऐ ॥ अकलु गाइ जम ते किआ डरीऐ ॥ जत जत देखउ तत तत तुम ही अवरु न दुतीआ गाइआ

॥ ३ ॥ सचु हरि नामु सचु है सरणा ॥ सचु गुर सबदु जितै लगि तरणा ॥ अकथु कथै देखै अपरंपरु फुनि गरभि न जोनी जाइआ ॥ ४ ॥ सच बिनु सतु संतोखु न पावै ॥ बिनु गुर मुकति न आवै जावै ॥ मूल मंत्र हरि नामु रसाइणु कहु नानक पूरा पाइआ ॥ ५ ॥ सच बिनु भवजलु जाइ न तरिआ ॥ एहु समुंदु अथाहु महा बिखु भरिआ ॥ रहै अतीतु गुरमति ले ऊपरि हरि निरभउ कै घरि पाइआ ॥ ६ ॥ झूठी जग हित की चतुराई ॥ बिलम न लागै आवै जाई ॥ नामु विसारि चलहि अभिमानी उपजै बिनसि खपाइआ ॥ ७ ॥ उपजहि बिनसहि बंधन बंधे ॥ हउमै माइआ के गलि फंधे ॥ जिसु राम नामु नाही मति गुरमति सो जम पुरि बंधि चलाइआ ॥ ८ ॥ गुर बिनु मोख मुकति किउ पाईऐ ॥ बिनु गुर राम नामु किउ धिआईऐ ॥ गुरमति लेहु तरहु भव दुतरु मुकति भए सुखु पाइआ ॥ ९ ॥ गुरमति क्रिसनि गोवरधन धारे ॥ गुरमति साइरि पाहण तारे ॥ गुरमति लेहु परम पदु पाईऐ नानक गुरि भरमु चुकाइआ ॥ १० ॥ गुरमति लेहु तरहु सचु तारी ॥ आतम चीनहु रिदै मुरारी ॥ जम के फाहे काटहि हरि जपि अकुल निरंजनु पाइआ ॥ ११ ॥ गुरमति पंच सखे गुर भाई ॥ गुरमति अगनि निवारि समाई ॥ मनि मुखि नामु जपहु जगजीवन रिद अंतरि अलखु लखाइआ ॥ १२ ॥ गुरमुखि बूझै सबदि पतीजै ॥ उसतति निंदा किस की कीजै ॥ चीनहु आपु जपहु जगदीसरु हरि जगंनाथु मनि भाइआ ॥ १३ ॥ जो ब्रहमंडि खंडि सो जाणहु ॥ गुरमुखि बूझहु सबदि पछाणहु ॥ घटि घटि भोगे भोगणहारा रहै अतीतु सबाइआ ॥ १४ ॥ गुरमति बोलहु हरि जसु सूचा ॥ गुरमति आखी देखहु ऊचा ॥ स्रवणी नामु सुणै हरि बाणी नानक हरि रंगि रंगाइआ ॥ १५ ॥ ३ ॥ २० ॥

अगर सच्चे घर में रहना है तो सदैव सत्य बोलो, अगर जगत् रूपी भवसागर से तैरना है तो जीवित ही मर जाओ अर्थात् जीवन्मुक्त हो जाओ। गुरु जहाज, नैया और तुलहा है, हे मन ! परमात्मा का जाप करने से संसार-सागर से पार हुआ जा सकता है॥ १॥ जो अभिमान, ममता एवं लोभ को मिटा देता है, वह शरीर रूपी नौ द्वारों से मुक्त होकर दसम द्वार में आसन लगा लेता है। सबसे ऊपर परे से परे ईश्वर सर्वोपरि है, स्वयंभू है॥ २॥ गुरु की शिक्षा लो, परमात्मा में लगन लगाने से ही पार हुआ जाता है। ईश्वर का गुणगान करने से यम से क्या डरना है। हे परमेश्वर ! जिधर-जिधर भी देखता हूँ, वहाँ तुम ही विद्यमान हो और तेरे अलावा किसी अन्य का यशगान नहीं किया॥ ३॥ हरि का नाम सत्य है, उसकी शरण भी शाश्वत है। गुरु का शब्द भी सत्य है, जिससे लगकर संसार-सागर से पार हुआ जा सकता है। जो अकथनीय प्रभु का कथन करता है, वह उस अपरंपार के दर्शन करके पुनः गर्भ-योनि में नहीं जाता॥ ४॥ सत्य-नाम के बिना सत्य एवं संतोष प्राप्त नहीं होता; गुरु के बिना मुक्ति नहीं होती और जीव आवागमन में ही पड़ा रहता है। हे नानक ! परमात्मा का नाम ही मूलमंत्र एवं रसों का घर है और इससे ही पूर्ण परमेश्वर को पाया जाता है॥ ५॥ सत्य के बिना जगत्-सागर से पार नहीं हुआ जा सकता, यह अथाह समुद्र है, जो महा विष से भरा हुआ है। जो गुरु की शिक्षा लेकर वासनाओं से अलिप्त रहता है, वह निर्भय प्रभु के घर में स्थान पा लेता है॥ ६॥ दुनिया के मोह की चतुराई झूठी है, इससे जन्म-मरण में कोई देरी नहीं लगती। अभिमानी आदमी नाम को विस्मृत करके जग से चल देते हैं, जिसके कारण जन्म-मरण के चक्र में दुखी होते हैं॥ ७॥ वे जन्मते-मरते हैं और बन्धनों में ही फँसे रहते हैं। उनके गले में अहम् और मोह-माया का फंदा पड़ा रहता है। जिसने गुरु मतानुसार राम नाम को नहीं बसाया, उसे बाँधकर यमपुरी में भेज दिया गया है॥ ८॥ गुरु के बिना मोक्ष कैसे प्राप्त हो सकता है और गुरु बिन राम नाम का मनन कैसे किया जा सकता है। गुरुमत को ग्रहण करके

दुस्तर भवसागर से पार हो जाओ, जो मुक्ति प्राप्त कर गए हैं, उन्होंने सुख पा लिया है॥ ६॥ गुरु-मतानुसार श्रीकृष्ण ने गोवर्धन पर्वत को ऊँगली पर धारण कर लिया था और श्रीराम ने समुद्र पर पत्थर तैरा दिए थे। गुरु की मत ग्रहण करने से परमपद प्राप्त होता है। हे नानक! गुरु ही भ्रम मिटाने वाला है॥ १०॥ गुरु की शिक्षा प्राप्त करो और सत्य द्वारा भवसागर से पार हो जाओ। आत्मा एवं हृदय में ईश्वर को पहचान लो। परमात्मा का जाप करने से यम के फंदे कट जाते हैं और मायातीत की प्राप्ति हो जाती है॥ ११॥ गुरुमत द्वारा ही संत-मित्र एवं गुरुभाई का परस्पर संबंध होता है। गुरु की मति तृष्णाग्नि को निवृत्त कर देती है। अपने मन एवं मुख से जीवनदाता ईश्वर का नाम जपो; इस तरह हृदय में ही अदृष्ट प्रभु के दर्शन हो जाते हैं॥ १२॥ गुरुमुख इस तथ्य को बूझ लेता है और नाम द्वारा संतुष्ट हो जाता है, फिर किसकी प्रशंसा एवं निंदा की जाए। अपना आप पहचानो, जगदीश्वर का नाम जपो, संसार का स्वामी हरि ही मन को भाया है॥ १३॥ जो खण्ड-ब्रह्माण्ड में समाया हुआ है, उसे जानो। गुरु के सान्निध्य में सत्य को बूझो, शब्द की पहचान करो। वह भोगनेवाला ईश्वर घट-घट (प्रत्येक शरीर) में व्याप्त होकर सब पदार्थ भोग रहा है, लेकिन फिर भी सबसे अलिप्त रहता है॥ १४॥ गुरु-मतानुसार पावन हरि-यश बोलो, आँखों से प्रभु को देखो। हे नानक! जो कानों से हरि-नाम एवं वाणी सुनता है, वह उसके प्रेम-रंग में ही रंग गया है॥ १५॥ ३॥ २०॥

मारू महला १ ॥ कामु क्रोधु परहरु पर निंदा ॥ लबु लोभु तजि होहु निचिंदा ॥ भ्रम का संगलु तोड़ि निराला हरि अंतरि हरि रसु पाइआ ॥ १ ॥ निसि दामनि जिउ चमकि चंदाइणु देखै ॥ अहिनिसि जोति निरंतरि पेखै ॥ आनंद रूपु अनूपु सरूपा गुरि पूरै देखाइआ ॥ २ ॥ सतिगुर मिलहु आपे प्रभु तारे ॥ ससि घरि सूरु दीपकु गैणारे ॥ देखि अदिसटु रहहु लिव लागी सभु त्रिभवणि ब्रहमु सबाइआ ॥ ३ ॥ अंम्रित रसु पाए त्रिसना भउ जाए ॥ अनभउ पदु पावै आपु गवाए ॥ ऊची पदवी ऊचो ऊचा निरमल सबदु कमाइआ ॥ ४ ॥ अद्रिसट अगोचरु नामु अपारा ॥ अति रसु मीठा नामु पिआरा ॥ नानक कउ जुगि जुगि हरि जसु दीजै हरि जपीऐ अंतु न पाइआ ॥ ५ ॥ अंतरि नामु परापति हीरा ॥ हरि जपते मनु मन ते धीरा ॥ दुघट घट भउ भंजनु पाईऐ बाहुड़ि जनमि न जाइआ ॥ ६ ॥ भगति हेति गुर सबदि तरंगा ॥ हरि जसु नामु पदारथु मंगा ॥ हरि भावै गुर मेलि मिलाए हरि तारे जगतु सबाइआ ॥ ७ ॥ जिनि जपु जपिओ सतिगुर मति वा के ॥ जमकंकर कालु सेवक पग ता के ॥ ऊतम संगति गति मिति ऊतम जगु भउजलु पारि तराइआ ॥ ८ ॥ इहु भवजलु जगतु सबदि गुर तरीऐ ॥ अंतर की दुबिधा अंतरि जरीऐ ॥ पंच बाण ले जम कउ मारै गगनंतरि धणखु चड़ाइआ ॥ ९ ॥ साकत नरि सबद सुरति किउ पाईऐ ॥ सबद सुरति बिनु आईऐ जाईऐ ॥ नानक गुरमुखि मुकति पराइणु हरि पूरै भागि मिलाइआ ॥ १० ॥ निरभउ सतिगुरु है रखवाला ॥ भगति परापति गुर गोपाला ॥ धुनि अनंद अनाहदु वाजै गुर सबदि निरंजनु पाइआ ॥ ११ ॥ निरभउ सो सिरि नाही लेखा ॥ आपि अलेखु कुदरति है देखा ॥ आपि अतीतु अजोनी संभउ नानक गुरमति सो पाइआ ॥ १२ ॥ अंतर की गति सतिगुरु जाणै ॥ सो निरभउ गुर सबदि पछाणै ॥ अंतरु देखि निरंतरि बूझै अनत न मनु डोलाइआ ॥ १३ ॥ निरभउ सो अभ अंतरि वसिआ ॥ अहिनिसि नामि निरंजन रसिआ ॥ नानक हरि जसु संगति पाईऐ हरि सहजे सहजि मिलाइआ ॥ १४ ॥ अंतरि बाहरि सो प्रभु जाणै ॥ रहै अलिपतु चलते घरि आणै ॥ ऊपरि आदि सरब तिहु लोई सचु नानक अंम्रित रसु पाइआ ॥ १५ ॥ ४ ॥ २१ ॥

हे मानव जीवो ! काम, क्रोध एवं पराई निंदा को छोड़ दो; लालच, लोभ को तज कर निश्चिन्त हो जाओ। जो भ्रम की जंजीर तोड़कर निर्लिप्त हो गया है, उसने अन्तर्मन में ही हरि-रस पा लिया है॥ १॥ जैसे रात्रिकाल कोई बिजली की चमक जैसा प्रकाश देखता है, वैसे ही मैं निशदिन प्रभु-ज्योति को निरंतर देखता हूँ। पूर्ण गुरु ने आनंद-स्वरूप एवं अनुपम स्वरूप प्रभु के दर्शन करवाए हैं॥ २॥ सतगुरु से साक्षात्कार होने पर प्रभु स्वयं ही जगत्-सागर से पार उतार देता है। हृदय रूपी घर में यूं आलोक हो जाता है, जैसे आकाश में दीपक रूपी सूर्योदय होता है। उस अदृष्ट ईश्वर को सर्वत्र देखकर उसमें लगन लगाओ, तीनों लोकों में ब्रह्म का ही प्रसार है॥ ३॥ हरि-नाम रूपी अमृत-रस को पाने से तृष्णा एवं भय का निवारण हो जाता है। जो अहम् को मिटा देता है, उसे मोक्ष प्राप्त हो जाता है। जिसने निर्मल शब्द की साधना की है, उसने सर्वोच्च पदवी पा ली है और वह सर्वश्रेष्ठ बन गया है॥ ४॥ ईश्वर का नाम अदृष्ट एवं इन्द्रियातीत है और प्यारा नाम बहुत ही मीठा रस है। हे हरि ! नानक को युग-युग अपना यश प्रदान करते रहो, तेरा जाप करके अन्त नहीं पा सका॥ ५॥ हरि-नाम रूपी हीरा मन में ही प्राप्त होता है और मन में ही हरि-नाम जपने से मन को धैर्य हो जाता है। जो व्यक्ति कठिन मार्ग पर चलकर भयभंजन परमात्मा को पा लेता है, वह पुनः जन्म-मरण के चक्र में नहीं पड़ता॥ ६॥ गुरु के शब्द द्वारा भक्ति के लिए मन में उमंग की तरंगें पैदा हो गई हैं और हरि-यश एवं नाम-पदार्थ ही माँगता हूँ। यदि परमात्मा को मंजूर हो तो वह गुरु से मिला देता है और वह समूचे जगत का उद्धारक है॥ ७॥ जिसने हरि का नाम जपा है, उसे गुरु की शिक्षा प्राप्त हो गई है और यमदूत एवं काल भी उसकी सेवा करते हैं। उत्तम संगति करने से जीवन-मुक्ति प्राप्त हो जाती है और भयानक जगत्-संसार से उद्धार हो जाता है॥ ८॥ यह जगत्-सागर तो शब्द-गुरु द्वारा ही पार किया जा सकता है, शब्द द्वारा मन की दुविधा मन में ही जल जाती है। सत्य, संतोष, दया, धर्म एवं धैर्य रूपी पाँच बाण लेकर ही यम को मारा जा सकता है और दसम द्वार में धनुष चढ़ाया जा सकता है॥ ६॥ पदार्थवादी जीव शब्द में ध्यान लगाए बिना कैसे मोक्ष पा सकता है। शब्द में लगन लगाए बिना आवागमन बना रहता है। हे नानक ! गुरु से ही मुक्ति संभव है और पूर्ण भाग्य से ही परमात्मा गुरु से मिलाता है॥ १०॥ निर्भय सतगुरु सब जीवों का रखवाला है और गुरु-परमेश्वर से ही भक्ति प्राप्त होती है। शब्द-गुरु से ही ईश्वर पाया जाता है और मन में आनंदमयी अनाहत शब्द बजता रहता है॥ ११॥ प्रभु निर्भय है, उसके सिर पर कर्मों का कोई लेखा नहीं है। वह स्वयं कर्मों से रहित है और उसकी कुदरत में ही उसे देखा जाता है। वह स्वयं निर्लेप, योनि से रहित एवं स्वजन्मा है, हे नानक ! गुरु उपदेशानुसार ही उसे पाया जा सकता है॥ १२॥ मन की अवस्था सतगुरु ही जानता है। जो गुरु के शब्द को पहचान लेता है, वही निडर है। वह प्रभु को अपने अन्तर्मन में देखकर बूझ लेता है और उसका मन अन्यत्र दोलायमान नहीं होता॥ १३॥ निर्भय वही है जिसके अन्तर्मन में सत्य बस गया है और वह पावन नाम में ही लीन रहता है। हे नानक ! सुसंगति में ही हरि-यश प्राप्त होता है और प्रभु सहज स्वभाव ही साथ मिला लेता है॥ १४॥ जो भीतर-बाहर प्रभु को ही जानता है, निर्लिप्त रहकर अपने सच्चे घर में स्थित हो जाता है। तीनों लोकों से ऊपर सर्वत्र परमात्मा ही विद्यमान है, हे नानक ! सत्य नाम का अमृत-रस पा लो॥ १५॥ ४॥ २१॥

मारू महला १ ॥ कुदरति करनैहार अपारा ॥ कीते का नाही किहु चारा ॥ जीअ उपाइ रिजकु दे आपे सिरि सिरि हुकमु चलाइआ ॥ १ ॥ हुकमु चलाइ रहिआ भरपूरे ॥ किसु नेड़ै किसु आखां दूरे

॥ गुपत प्रगट हरि घटि घटि देखहु वरतै ताकु सबाइआ ॥ २ ॥ जिस कउ मेले सुरति समाए ॥ गुर सबदी हरि नामु धिआए ॥ आनद रूप अनूप अगोचर गुर मिलिऐ भरमु जाइआ ॥ ३ ॥ मन तन धन ते नामु पिआरा ॥ अंति सखाई चलणवारा ॥ मोह पसार नही संगि बेली बिनु हरि गुर किनि सुखु पाइआ ॥ ४ ॥ जिस कउ नदरि करे गुरु पूरा ॥ सबदि मिलाए गुरमति सूरा ॥ नानक गुर के चरन सरेवहु जिनि भूला मारगि पाइआ ॥ ५ ॥ संत जनां हरि धनु जसु पिआरा ॥ गुरमति पाइआ नामु तुमारा ॥ जाचिकु सेव करे दरि हरि कै हरि दरगह जसु गाइआ ॥ ६ ॥ सतिगुरु मिलै त महलि बुलाए ॥ साची दरगह गति पति पाए ॥ साकत ठउर नाही हरि मंदर जनम मरै दुखु पाइआ ॥ ७ ॥ सेवहु सतिगुर समुंदु अथाहा ॥ पावहु नामु रतनु धनु लाहा ॥ बिखिआ मलु जाइ अंम्रित सरि नावहु गुर सर संतोखु पाइआ ॥ ८ ॥ सतिगुर सेवहु संक न कीजै ॥ आसा माहि निरासु रहीजै ॥ संसा दूख बिनासनु सेवहु फिरि बाहुड़ि रोगु न लाइआ ॥ ९ ॥ साचे भावै तिसु वडीआए ॥ कउनु सु दूजा तिसु समझाए ॥ हरि गुर मूरति एका वरतै नानक हरि गुर भाइआ ॥ १० ॥ वाचहि पुसतक वेद पुरानां ॥ इक बहि सुनहि सुनावहि कानां ॥ अजगर कपटु कहहु किउ खुल्है बिनु सतिगुर ततु न पाइआ ॥ ११ ॥ करहि बिभूति लगावहि भसमै ॥ अंतरि क्रोधु चंडालु सु हउमै ॥ पाखंड कीने जोगु न पाईऐ बिनु सतिगुर अलखु न पाइआ ॥ १२ ॥ तीरथ वरत नेम करहि उदिआना ॥ जतु सतु संजमु कथहि गिआना ॥ राम नाम बिनु किउ सुखु पाईऐ बिनु सतिगुर भरमु न जाइआ ॥ १३ ॥ निउली करम भुइअंगम भाठी ॥ रेचक कुंभक पूरक मन हाठी ॥ पाखंड धरमु प्रीति नही हरि सउ गुर सबद महा रसु पाइआ ॥ १४ ॥ कुदरति देखि रहे मनु मानिआ ॥ गुर सबदी सभु ब्रहमु पछानिआ ॥ नानक आतम रामु सबाइआ गुर सतिगुर अलखु लखाइआ ॥ १५ ॥ ५ ॥ २२ ॥

कुदरत बनाने वाला अपरंपार है, उसके उत्पन्न किए जीव का कोई बल नहीं चल सकता। जीवों को पैदा करके वह स्वयं ही भोजन दे रहा है और सब पर उसका हुक्म चला रहा है॥ १॥ अपना हुक्म चलाकर वह सबमें समा रहा है, फिर किसे निकट एवं किसे उससे दूर कहा जाए ? गुप्त एवं प्रगट ईश्वर को घट-घट (प्रत्येक शरीर) में देखो, वह सब में व्याप्त है॥ २॥ जिस जीव को वह साथ मिला लेता है, उसकी सुरति में ही समा जाता है। ऐसा जीव गुरु के शब्द द्वारा हरि-नाम का ध्यान करता रहता है। ईश्वर आनंद-रूप, अनुपम एवं इन्द्रियातीत है, गुरु को मिलने से सारा भ्रम दूर हो जाता है॥ ३॥ परमात्मा का नाम मन, तन एवं धन से भी प्रिय है और अंतकाल चलते समय वही सहायक होता है। समूचे जगत् में मोह ही फैला हुआ है और कोई किसी का साथी एवं शुभचिन्तक नहीं, फिर गुरु परमेश्वर के बिना किसने सुख हासिल किया है॥ ४॥ पूर्ण गुरु जिस पर कृपा-दृष्टि करता है, वह शूरवीर गुरुमत द्वारा शब्द से मिला देता है। हे नानक ! गुरु-चरणों की अर्चना करो, जिसने भूले हुए जीव को सन्मार्ग लगा दिया है॥ ५॥ संतजनों को हरि-यश रूपी धन प्राणों से भी प्रिय है। हे परमात्मा ! गुरु-उपदेशानुसार तुम्हारा नाम ही प्राप्त किया है। याचक हरि के दर पर उपासना करता है और उसने दरबार में प्रभु का ही यशोगान किया है॥ ६॥ जिसे सतगुरु मिल जाता है, परमात्मा उसे अपने महल में बुला लेता है। उसे सच्चे दरबार में ही मुक्ति एवं शोभा प्राप्त होती है। पदार्थवादी जीव को हरि के मन्दिर में ठिकाना नहीं मिलता और वह जन्म-मरण में ही दुख भोगता है॥ ७॥ सतगुरु की सेवा करो, वह तो प्रेम का अथाह समुद्र है और उससे नाम-रत्न रूपी धन पाकर लाभ प्राप्त करो। नामामृत के सरोवर में

स्नान करने से विषय-विकारों की मैल दूर हो जाती है और गुरु रूपी सरोवर में ही संतोष प्राप्त होता है॥ ८॥ सतगुरु की सेवा करो; कोई संकोच मत करो और आशा (भरे जीवन) में रहते हुए आशाहीन रहो। संशय एवं दुख विनाशक परमात्मा की उपासना करो; इससे पुनः कोई रोग नहीं लग सकता॥ ६॥ यदि सत्यस्वरूप को मंजूर हो तो उसे ही यश प्रदान करता है। अन्य कोई इस लायक नहीं जो उसे समझा सकता है। परमात्मा एवं गुरु एक ही रूप हैं और एकमात्र वही सर्वव्यापक है, हे नानक! गुरु परमेश्वर ही मन को भाया है॥ १०॥ पण्डित वेद-पुराण को पढ़ते हैं, कुछ बैठकर कानों से सुनते सुनाते हैं। बताओ, अजगर जैसा कठोर कपाट कैसे खुल सकता है और गुरु के बिना परम तत्व प्राप्त नहीं होता॥ ११॥ कुछ व्यक्ति शरीर पर भस्म लगाते और विभूति करते हैं परन्तु उनके मन में चाण्डाल रूप क्रोध एवं अहम् ही रहता है। ऐसा पाखण्ड करने से योग प्राप्त नहीं होता और न ही गुरु के बिना प्रभु प्राप्त होता है॥ १२॥ कई मनुष्य तीर्थ-स्नान, व्रत-उपवास, नेम का पालन करते हैं और वनों में भी रहते हैं। कई ब्रह्मचार्य, त्याग, संयम एवं ज्ञान की बातें करते हैं। लेकिन राम नाम के बिना क्योंकर सुख प्राप्त हो सकता है, गुरु के बिना भ्रम दूर नहीं होता॥ १३॥ कोई न्योली कर्म करता है, कोई कुण्डलिनी शक्ति को जाग्रत करता, कोई मन के हठ से प्राणायाम की रेचक, पूरक, कुम्भक क्रियाओं का अभ्यास करता है। ये सभी धर्म कर्म निरा पाखण्ड ही हैं और इससे परमात्मा से प्रेम उत्पन्न नहीं होता, अपितु गुरु के शब्द से ही नाम के महारस को पाया जा सकता है॥ १४॥ उसकी कुदरत को देखकर मन संतुष्ट हो जाता है, गुरु के शब्द द्वारा सबमें व्याप्त ब्रह्म की पहचान होती है। हे नानक! सतगुरु ही आत्मा में व्याप्त अदृष्ट प्रभु के दर्शन करवाने वाला है॥ १५॥ ५॥ २२॥

मारू सोलहे महला ३ ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

हुकमी सहजे स्रिसटि उपाई ॥ करि करि वेखै अपणी वडिआई ॥ आपे करे कराए आपे हुकमे रहिआ समाई हे ॥ १ ॥ माइआ मोहु जगतु गुबारा ॥ गुरमुखि बूझै को वीचारा ॥ आपे नदरि करे सो पाए आपे मेलि मिलाई हे ॥ २ ॥ आपे मेले दे वडिआई ॥ गुर परसादी कीमति पाई ॥ मनमुखि बहुतु फिरै बिललादी दूजै भाइ खुआई हे ॥ ३ ॥ हउमै माइआ विचे पाई ॥ मनमुख भूले पति गवाई ॥ गुरमुखि होवै सो नाइ राचै साचै रहिआ समाई हे ॥ ४ ॥ गुर ते गिआनु नाम रतनु पाइआ ॥ मनसा मारि मन माहि समाइआ ॥ आपे खेल करे सभि करता आपे देइ बुझाई हे ॥ ५ ॥ सतिगुरु सेवे आपु गवाए ॥ मिलि प्रीतम सबदि सुखु पाए ॥ अंतरि पिआरु भगती राता सहजि मते बणि आई हे ॥ ६ ॥ दूख निवारणु गुर ते जाता ॥ आपि मिलिआ जगजीवनु दाता ॥ जिस नो लाए सोई बूझै भउ भरमु सरीरहु जाई हे ॥ ७ ॥ आपे गुरमुखि आपे देवै ॥ सचै सबदि सतिगुरु सेवै ॥ जरा जमु तिसु जोहि न साकै साचे सिउ बणि आई हे ॥ ८ ॥ त्रिसना अगनि जलै संसारा ॥ जलि जलि खपै बहुतु विकारा ॥ मनमुखु ठउर न पाए कबहू सतिगुर बूझ बुझाई हे ॥ ६ ॥ सतिगुरु सेवनि से वडभागी ॥ साचै नामि सदा लिव लागी ॥ अंतरि नामु रविआ निहकेवलु त्रिसना सबदि बुझाई हे ॥ १० ॥ सचा सबदु सची है बाणी ॥ गुरमुखि विरलै किनै पछाणी ॥ सचै सबदि रते बैरागी आवणु जाणु रहाई हे ॥ ११ ॥ सबदु बुझै सो मैलु चुकाए ॥ निरमल नामु वसै मनि आए ॥ सतिगुरु अपणा सद ही सेवहि हउमै विचहु जाई हे ॥ १२ ॥ गुर ते बूझै ता दरु सूझै ॥ नाम विहूणा कथि कथि लूझै ॥ सतिगुर सेवे की वडिआई त्रिसना

भूख गवाई हे ॥ १३ ॥ आपे आपि मिलै ता बूझै ॥ गिआन विहूणा किछू न सूझै ॥ गुर की दाति सदा मन अंतरि बाणी सबदि वजाई हे ॥ १४ ॥ जो धुरि लिखिआ सु करम कमाइआ ॥ कोइ न मेटै धुरि फुरमाइआ ॥ सतसंगति महि तिन ही वासा जिन कउ धुरि लिखि पाई हे ॥ १५ ॥ अपणी नदरि करे सो पाए ॥ सचै सबदि ताड़ी चितु लाए ॥ नानक दासु कहै बेनंती भीखिआ नामु दरि पाई हे ॥ १६ ॥ १ ॥

ईश्वर ने अपने हुक्म में स्वाभाविक ही सृष्टि को उत्पन्न किया और रचना कर-करके खुद ही अपनी कीर्ति को देख रहा है। करता करवाता वही है और अपने हुक्म में ही लीन है॥ १॥ मोह-माया का अन्धेरा समूचे जगत् में फैला हुआ है परन्तु कोई विरला गुरमुख ही तथ्य को बूझता है। जिस पर ईश्वर अपनी कृपा-दृष्टि करता है, वही उसे पा लेता है और वह स्वयं ही साथ मिला लेता है॥ २॥ वह स्वयं ही जीव को मिलाकर बड़ाई प्रदान करता है और गुरु की अनुकंपा से ही सही कीमत आँक पाता है। मनमुखी जीव बहुत भटकता, रोता-चिल्लाता एवं द्वैतभाव में तंग होता है॥ ३॥ अहम् एवं माया में लिप्त होकर मनमुखी जीव पथभ्रष्ट हुआ है और अपनी प्रतिष्ठा गँवा दी है। जो गुरुमुख होता है, वह नाम में ही लीन रहता है और सत्य में ही समाया रहता है॥ ४॥ जिसने गुरु से ज्ञान एवं नाम रूपी रत्न पा लिया है, वह अपनी वासनाओं को मिटाकर मन में ही स्थिर रहता है। परमात्मा स्वयं ही सारी लीला करता है और स्वयं ही ज्ञान प्रदान करता है॥ ५॥ जो अहम् मिटाकर सतगुरु की सेवा करता है, वह प्रियतम प्रभु से मिलकर शब्द द्वारा सुख प्राप्त करता है। मन में प्रेम धारण कर वह भक्ति में लीन रहता है और सहज ही उसकी प्रभु से प्रीति बनी रहती है॥ ६॥ दुख का निवारण करने वाला परमेश्वर तो गुरु से ही जाना जाता है, फिर जीवनदाता प्रभु स्वयं ही मिल जाता है। जिसे वह भक्ति में लगाता है, वही इस तथ्य को बूझता है और उसके शरीर में से भय एवं भ्रम दूर हो जाता है॥ ७॥ वह स्वयं ही गुरु की संगति में नाम प्रदान करता है और जीव सच्चे शब्द द्वारा सतिगुरु की सेवा करता है। जिसकी प्रभु से प्रीति हो गई है, बुढ़ापा एवं मृत्यु उसे बिल्कुल स्पर्श नहीं करते॥ ८॥ संसार तृष्णा की अग्नि में जल रहा है और जल-जलकर अनेक विकारों में दुखी हो रहा है। सतगुरु ने यही ज्ञान प्रदान किया है कि स्वेच्छाचारी जीव को कभी ठिकाना नहीं मिलता॥ ६॥ सतगुरु की सेवा में लीन रहने वाले भाग्यशाली हैं और उनकी सदैव सत्य-नाम में लगन लगी रहती है। उनके अन्तर्मन में वासना-रहित नाम ही समाया रहता है और शब्द ने उनकी तृष्णा बुझा दी है॥ १०॥ शब्द सत्य है और वाणी भी सत्य है, किसी विरले गुरुमुख ने इस तथ्य की पहचान की है। जो वैराग्यवान ब्रह्म-शब्द में लीन रहते हैं, उनका जन्म-मरण छूट जाता है॥ ११॥ जो शब्द के भेद को समझ लेता है, उसकी मन की मैल दूर हो जाती है और उसके मन में निर्मल नाम का वास हो जाता है। जो सदैव अपने सतगुरु की सेवा करते हैं, उनके मन में से अभिमान दूर हो जाता है॥ १२॥ जब जीव गुरु से ज्ञान प्राप्त करता है तो ही उसे सत्य के दर की सूझ होती है किन्तु नामविहीन व्यर्थ बातें कर-करके उलझता रहता है। सतगुरु की सेवा करने की यह बड़ाई है कि इसने तृष्णा भूख मिटा दी है॥ १३॥ जब ईश्वर स्वयं मिलता है तो ही ज्ञान होता है। लेकिन ज्ञानविहीन को कोई सूझ नहीं होती। जिसके मन में गुरु की बख्शिश है, वह वाणी द्वारा शब्द ही जपता रहता है॥ १४॥ जो प्रारम्भ से लिखा है, जीव वही कर्म करता है। भाग्यालेख को कोई टाल नहीं सकता। जिनकी तकदीर में लिखा होता है, सत्संगति में उनका ही निवास होता है॥ १५॥ जिस पर अपनी कृपा-दृष्टि करता है, वही उसे प्राप्त करता है और वह समाधिस्थ सच्चे शब्द में ही चित लगाता है। दास नानक विनती करता है कि नाम रूपी भिक्षा प्रभु के द्वार से प्राप्त हुई है॥ १६॥ १॥

मारू महला ३ ॥ एको एकु वरतै सभु सोई ॥ गुरमुखि विरला बूझै कोई ॥ एको रवि रहिआ सभ अंतरि तिसु बिनु अवरु न कोई हे ॥ १ ॥ लख चउरासीह जीअ उपाए ॥ गिआनी धिआनी आखि सुणाए ॥ सभना रिजकु समाहे आपे कीमति होर न होई हे ॥ २ ॥ माइआ मोहु अंधु अंधारा ॥ हउमै मेरा पसरिआ पासारा ॥ अनदिनु जलत रहै दिनु राती गुर बिनु सांति न होई हे ॥ ३ ॥ आपे जोड़ि विछोड़े आपे ॥ आपे थापि उथापे आपे ॥ सचा हुकमु सचा पासारा होरनि हुकमु न होई हे ॥ ४ ॥ आपे लाइ लए सो लागै ॥ गुर परसादी जम का भउ भागै ॥ अंतरि सबदु सदा सुखदाता गुरमुखि बूझै कोई हे ॥ ५ ॥ आपे मेले मेलि मिलाए ॥ पुरबि लिखिआ सो मेटणा न जाए ॥ अनदिनु भगति करे दिनु राती गुरमुखि सेवा होई हे ॥ ६ ॥ सतिगुरु सेवि सदा सुखु जाता ॥ आपे आइ मिलिआ सभना का दाता ॥ हउमै मारि त्रिसना अगनि निवारी सबदु चीनि सुखु होई हे ॥ ७ ॥ काइआ कुटंबु मोहु न बूझै ॥ गुरमुखि होवै त आखी सूझै ॥ अनदिनु नामु रवै दिनु राती मिलि प्रीतम सुखु होई हे ॥ ८ ॥ मनमुख धातु दूजै है लागा ॥ जनमत की न मूओ आभागा ॥ आवत जात बिरथा जनमु गवाइआ बिनु गुर मुकति न होई हे ॥ ९ ॥ काइआ कुसुध हउमै मलु लाई ॥ जे सउ धोवहि ता मैलु न जाई ॥ सबदि धोपै ता हछी होवै फिरि मैली मूलि न होई हे ॥ १० ॥ पंच दूत काइआ संघारहि ॥ मरि मरि जंमहि सबदु न वीचारहि ॥ अंतरि माइआ मोह गुबारा जिउ सुपनै सुधि न होई हे ॥ ११ ॥ इकि पंचा मारि सबदि है लागे ॥ सतिगुरु आइ मिलिआ वडभागे ॥ अंतरि साचु रवहि रंगि राते सहजि समावै सोई हे ॥ १२ ॥ गुर की चाल गुरू ते जापै ॥ पूरा सेवकु सबदि सिजापै ॥ सदा सबदु रवै घट अंतरि रसना रसु चाखै सचु सोई हे ॥ १३ ॥ हउमै मारे सबदि निवारे ॥ हरि का नामु रखै उरि धारे ॥ एकसु बिनु हउ होरु न जाणा सहजे होइ सु होई हे ॥ १४ ॥ बिनु सतिगुर सहजु किनै नही पाइआ ॥ गुरमुखि बूझै सचि समाइआ ॥ सचा सेवि सबदि सच राते हउमै सबदे खोई हे ॥ १५ ॥ आपे गुणदाता बीचारी ॥ गुरमुखि देवहि पकी सारी ॥ नानक नामि समावहि साचै साचे ते पति होई हे ॥ १६ ॥ २ ॥

एक अनन्तशक्ति (परमेश्वर) सर्वव्यापक है, इस रहस्य को कोई विरला गुरुमुख ही बूझता है। एक वही सब जीवों में समाया हुआ है, उसके अतिरिक्त अन्य कोई नहीं॥ १॥ उसने चौरासी लाख जीव पैदा किए हैं, ज्ञानी-ध्यानी भी कहकर यही बात सुनाते हैं। वह सब जीवों को भोजन देता है और अपनी महिमा स्वयं ही जानता है, कोई अन्य उसकी कीर्ति नहीं बता सकता॥ २॥ मोह-माया का घोर अन्धेरा है और अभिमान एवं अपनत्व हर जगह फैला हुआ है। मनुष्य दिन-रात तृष्णाग्नि में जल रहे हैं और गुरु के बिना उन्हें शान्ति प्राप्त नहीं होती॥ ३॥ संयोग एवं वियोग बनाने वाला वही है और स्वयं ही पैदा एवं नष्ट कर देता है। उसका हुक्म अटल है और उसका जगत्-प्रसार भी सत्य है, उसके अतिरिक्त कोई अन्य हुक्म नहीं कर सकता॥ ४॥ भक्ति में वही लगता है, जिसे वह लगा लेता है। गुरु की कृपा से यम का भय दूर हो जाता है। अन्तर्मन में शब्द विद्यमान है, जो सदा सुख देने वाला है, कोई गुरुमुख ही इस भेद को समझता है॥ ५॥ वह स्वयं ही गुरु से मिलाकर अपने साथ मिला लेता है, पूर्व से ही लिखा हुआ कर्मालेख मिटाया नहीं जा सकता। वह दिन-रात भक्ति करता है और गुरु के सान्निध्य में ही सेवा होती है॥ ६॥ सतगुरु की सेवा में सदैव सुख माना है और सबका दाता स्वयं ही आ मिला है। अहंकार को मिटाकर तृष्णाग्नि का निवारण हुआ है और शब्द के रहस्य को पहचान कर सुख प्राप्त हुआ है॥ ७॥ मनुष्य परिवार के मोह के कारण सत्य को नहीं बूझता, यदि वह गुरुमुख बन जाए तो उसे सूझ हो जाती है। जो मनुष्य दिन-रात नाम-सिमरण करता है, उसे प्रियतम-प्रभु से मिलकर ही सुख प्राप्त होता

है॥ ८॥ मनमुख द्वैतभाव में लीन रहता है, वह बदनसीब जन्म लेते ही मर क्यों न गया। आवागमन में उसने अपना जन्म वृथा गँवा दिया, गुरु के बिना उसे मुक्ति नहीं मिलती॥ ६॥ मन को अहम् की मैल लगा ली, जिससे शरीर अशुद्ध हो गया। यदि शरीर को सौ बार भी धोए तो भी यह मैल दूर नहीं होती। शब्द द्वारा धोने से ही शरीर शुद्ध होता है और फिर यह बिल्कुल मैला नहीं होता॥ १०॥ काम, क्रोध, लोभ, मोह एवं अहंकार रूपी पाँच दूत शरीर को नाश कर देते हैं। जीव शब्द का चिंतन नहीं करता, अतः बार-बार जन्मता-मरता रहता है, उसके अन्तर्मन में मोह-माया का अन्धेरा ऐसे होता है, जिस तरह सपने में होश नहीं होती॥ ११॥ कुछ व्यक्ति कामादिक पाँच दूतों को मार कर शब्द में तल्लीन हो गए हैं, उन खुशकिस्मत जीवों को सतिगुरु मिल गया है। जिनके अन्तर्मन में सत्य रमण करता है, उसके प्रेम में लीन रहते हैं, वे सहज ही समाए रहते हैं॥ १२॥ गुरु की (भक्ति वाली) युक्ति का ज्ञान गुरु से ही होता है और पूर्ण सेवक को ही शब्द की पहचान होती है। उसके हृदय में सदैव ही शब्द रमण करता है और वह अपनी रसना से सत्य का स्वाद चखता रहता है॥१३॥ वह ब्रह्म-शब्द द्वारा अहम् को मिटाकर मन से दूर कर देता है और परमात्मा का नाम हृदय में धारण करके रखता है। एक परमात्मा के बिना किसी को नहीं जाना और जो कुछ सहज-स्वभाव होता है, वह ठीक होता है॥ १४॥ सतगुरु के बिना किसी को भी सहजावस्था प्राप्त नहीं हुई। जो गुरु के सान्निध्य में इस तथ्य को बूझ लेता है, वह सत्य में ही समा जाता है। सत्य की उपासना करके वह शब्द द्वारा सत्य में लीन रहता है और शब्द द्वारा अपने अहम् को दूर कर देता है॥ १५॥ गुण दाता प्रभु स्वयं ही विचार करता है और गुरुमुख को सच्चा जीवन जीने की सूझ देता है। हे नानक! वह सच्चे प्रभु-नाम में लीन रहता है और सत्य-नाम द्वारा ही उसे शोभा प्राप्त होती है॥ १६॥ २॥

मारू महला ३ ॥ जगजीवनु साचा एको दाता ॥ गुर सेवा ते सबदि पछाता ॥ एको अमरु एका पतिसाही जुगु जुगु सिरि कार बणाई हे ॥ १ ॥ सो जनु निरमलु जिनि आपु पछाता ॥ आपे आइ मिलिआ सुखदाता ॥ रसना सबदि रती गुण गावै दरि साचै पति पाई हे ॥ २ ॥ गुरमुखि नामि मिलै वडिआई ॥ मनमुखि निंदकि पति गवाई ॥ नामि रते परम हंस बैरागी निज घरि ताड़ी लाई हे ॥ ३ ॥ सबदि मरै सोई जनु पूरा ॥ सतिगुरु आखि सुणाए सूरा ॥ काइआ अंदरि अंम्रित सरु साचा मनु पीवै भाइ सुभाई हे ॥ ४ ॥ पड़ि पंडितु अवरा समझाए ॥ घर जलते की खबरि न पाए ॥ बिनु सतिगुर सेवे नामु न पाईऐ पड़ि थाके सांति न आई हे ॥ ५ ॥ इकि भसम लगाइ फिरहि भेखधारी ॥ बिनु सबदै हउमै किनि मारी ॥ अनदिनु जलत रहहि दिनु राती भरमि भेखि भरमाई हे ॥ ६ ॥ इकि ग्रिह कुटंब महि सदा उदासी ॥ सबदि मुए हरि नामि निवासी ॥ अनदिनु सदा रहहि रंगि राते भै भाइ भगति चितु लाई हे ॥ ७ ॥ मनमुखु निंदा करि करि विगुता ॥ अंतरि लोभु भउकै जिसु कुता ॥ जमकालु तिसु कदे न छोडै अंति गइआ पछुताई हे ॥ ८ ॥ सचै सबदि सची पति होई ॥ बिनु नावै मुकति न पावै कोई ॥ बिनु सतिगुर को नाउ न पाए प्रभि ऐसी बणत बणाई हे ॥ ६ ॥ इकि सिध साधिक बहुतु वीचारी ॥ इकि अहिनिसि नामि रते निरंकारी ॥ जिस नो आपि मिलाए सो बूझै भगति भाइ भउ जाई हे ॥ १० ॥ इसनानु दानु करहि नही बूझहि ॥ इकि मनूआ मारि मनै सिउ लूझहि ॥ साचै सबदि रते इक रंगी साचै सबदि मिलाई हे ॥ ११ ॥ आपे सिरजे दे वडिआई ॥ आपे भाणै देइ मिलाई ॥ आपे नदरि करे मनि वसिआ मेरै प्रभि इउ फुरमाई हे ॥ १२ ॥ सतिगुरु सेवहि से जन साचे ॥ मनमुख सेवि न जाणनि काचे ॥ आपे करता करि करि वेखै जिउ भावै तिउ लाई हे ॥ १३ ॥ जुगि जुगि साचा एको

दाता ॥ पूरै भागि गुर सबदु पछाता ॥ सबदि मिले से विछुड़े नाही नदरी सहजि मिलाई हे ॥ १४ ॥ हउमै माइआ मैलु कमाइआ ॥ मरि मरि जंमहि दूजा भाइआ ॥ बिनु सतिगुर सेवे मुकति न होई मनि देखहु लिव लाई हे ॥ १५ ॥ जो तिसु भावै सोई करसी ॥ आपहु होआ ना किछु होसी ॥ नानक नामु मिलै वडिआई दरि साचै पति पाई हे ॥ १६ ॥ ३ ॥

जगत् को जीवन देने वाला शाश्वत स्वरूप एक (परमेश्वर) ही दाता है। गुरु की सेवा व शब्द से ही पहचान होती है। केवल उसका ही हुक्म सब पर चलता है, एक उसकी ही बादशाहत है और युग-युगांतरों से सब उसकी मर्जी से ही हो रहा है॥ १॥ वही जीव निर्मल है, जिसने आप को पहचान लिया है और सुख देने वाला ईश्वर स्वयं ही उसे आ मिला है। उसकी जीभ शब्द में लीन रहकर उसका ही गुणगान करती है और सत्य के द्वार पर शोभा प्राप्त करती है॥ २॥ गुरुमुख को नाम-स्मरण से बड़ाई मिलती है लेकिन निंदक मनमुखी जीव अपनी प्रतिष्ठा गँवा देता है। नाम में लीन वैराग्यवान पुरुष परमहंस है और उसने अपने सच्चे घर में ही समाधि लगाई है॥ ३॥ वही आदमी पूर्ण है, जो शब्द द्वारा अपने अहम् को मिटा देता है, शूरवीर सतिगुरु यही सत्य कहकर सुनाता है। शरीर में नामामृत का सच्चा सरोवर है और मन बड़े प्रेम एवं श्रद्धा से इसका पान करता है॥ ४॥ पण्डित धर्म-ग्रंथों का अध्ययन करके दूसरों को समझाता रहता है किन्तु तृष्णाग्नि में जल रहे अपने हृदय-घर का उसे कोई ज्ञान नहीं होता। सतगुरु की सेवा बिना नाम प्राप्त नहीं हो सकता, कुछ व्यक्ति ग्रंथों का अध्ययन करके थक गए हैं लेकिन उनके मन को शान्ति प्राप्त नहीं हुई॥ ५॥ कुछ वेषधारी साधु शरीर पर भस्म लगाकर इधर-उधर घूमते रहते हैं, लेकिन शब्द के बिना किसने अपने अहंकार को समाप्त किया है। वे प्रतिदिन तृष्णाग्नि में जलते रहते हैं और दिन-रात वेष बनाकर भ्रम में भटकते रहते हैं॥ ६॥ कुछ लोग अपने घर परिवार में रहकर भी विरक्त रहते हैं और शब्द द्वारा अभिमान को मिटाकर परमात्मा का नाम-स्मरण करते रहते हैं। वे सदैव प्रभु के रंग में लीन रहते हैं और ईश्वर की अर्चना एवं भक्ति में चित्त लगाते हैं॥ ७॥ मनमुख के मन में लोभ रूपी कुत्ता भौंकता रहता है, वह पराई निन्दा कर-करके दुखी होता है। काल उसे कभी नहीं छोड़ता और अन्त में वह पछताता ही जाता है॥ ८॥ सच्चे शब्द में लीन होने से ही सच्ची शोभा प्राप्त होती है परन्तु नाम के बिना कोई भी मुक्ति प्राप्त नहीं कर सकता। प्रभु ने ऐसी विधि बनाई है कि सतिगुरु के बिना कोई भी नाम प्राप्त नहीं कर सकता॥ ६॥ कई सिद्ध, साधक एवं बहुत सारे चिंतक हैं, कई दिन-रात निरंकार के नाम में लीन रहते हैं, मगर जिसे स्वयं मिलाता है वही सत्य को बूझता है और भाव-भक्ति द्वारा उसका भय दूर हो जाता है॥ १०॥ कुछ तीर्थ-स्नान एवं दान-पुण्य करते हैं लेकिन प्रभु का रहस्य नहीं समझते। कई व्यक्ति ऐसे भी हैं, जो मन को मार कर मन से ही उलझते रहते हैं। कई परमात्मा के रंग में लीन रहते हैं और उनका मिलाप हो जाता है॥ ११॥ वह स्वयं ही जीवों को पैदा करके बड़ाई देता है और स्वेच्छा से मिला लेता है। वह स्वयं ही कृपा-दृष्टि करके मन में आ बसता है, मेरे प्रभु ने यही फुरमाया है॥ १२॥ सतिगुरु की सेवा करने वाले ही सच्चे हैं। मनमुख सेवा का महत्व नहीं जानते, अतः कच्चे हैं। ईश्वर स्वयं ही लीला कर-करके देखता रहता है और जैसे उसे उपयुक्त लगता है, वैसे ही दुनिया को लगाता है॥ १३॥ युग-युगांतर एक सच्चा दाता ईश्वर ही है और पूर्ण भाग्य से शब्द-गुरु द्वारा ही उसकी पहचान होती है। जो ईश्वर से मिल जाता है, वह कभी नहीं बिछुड़ता और प्रभु-कृपा से सहज ही मिलाप होता है॥ १४॥ अहम् एवं माया में लिप्त प्राणी मलिन कर्म ही करता है और द्वैतभाव में मर-मर कर जन्मता रहता है। अपने मन में ध्यान लगाकर देख लो, सतिगुरु की सेवा के बिना मुक्ति प्राप्त नहीं होती॥ १५॥ जो परमात्मा को मंजूर

है, वह वही करेगा। अपने आप न कुछ हुआ है और न ही कुछ (भविष्य में) होगा। हे नानक! प्रभु-नाम के मनन से ही बड़ाई मिलती है और सच्चे द्वार पर सम्मान प्राप्त होता है॥ १६॥ ३॥

मारू महला ३ ॥ जो आइआ सो सभु को जासी ॥ दूजै भाइ बाधा जम फासी ॥ सतिगुरि राखे से जन उबरे साचे साचि समाई हे ॥ १ ॥ आपे करता करि करि वेखै ॥ जिस नो नदरि करे सोई जनु लेखै ॥ गुरमुखि गिआनु तिसु सभु किछु सूझै अगिआनी अंधु कमाई हे ॥ २ ॥ मनमुख सहसा बूझ न पाई ॥ मरि मरि जंमै जनमु गवाई ॥ गुरमुखि नामि रते सुखु पाइआ सहजे साचि समाई हे ॥ ३ ॥ धंधै धावत मनु भइआ मनूरा ॥ फिरि होवै कंचनु भेटै गुरु पूरा ॥ आपे बखसि लए सुखु पाए पूरै सबदि मिलाई हे ॥ ४ ॥ दुरमति झूठी बुरी बुरिआरि ॥ अउगणिआरी अउगणिआरि ॥ कची मति फीका मुखि बोलै दुरमति नामु न पाई हे ॥ ५ ॥ अउगणिआरी कंत न भावै ॥ मन की जूठी जूठु कमावै ॥ पिर का साउ न जाणै मूरखि बिनु गुर बूझ न पाई हे ॥ ६ ॥ दुरमति खोटी खोटु कमावै ॥ सीगारु करे पिर खसम न भावै ॥ गुणवंती सदा पिरु रावै सतिगुरि मेलि मिलाई हे ॥ ७ ॥ आपे हुकमु करे सभु वेखै ॥ इकना बखसि लए धुरि लेखै ॥ अनदिनु नामि रते सचु पाइआ आपे मेलि मिलाई हे ॥ ८ ॥ हउमै धातु मोह रसि लाई ॥ गुरमुखि लिव साची सहजि समाई ॥ आपे मेलै आपे करि वेखै बिनु सतिगुर बूझ न पाई हे ॥ ९ ॥ इकि सबदु वीचारि सदा जन जागे ॥ इकि माइआ मोहि सोइ रहे अभागे ॥ आपे करे कराए आपे होरु करणा किछू न जाई हे ॥ १० ॥ कालु मारि गुर सबदि निवारे ॥ हरि का नामु रखै उर धारे ॥ सतिगुर सेवा ते सुखु पाइआ हरि कै नामि समाई हे ॥ ११ ॥ दूजै भाइ फिरै देवानी ॥ माइआ मोहि दुख माहि समानी ॥ बहुते भेख करै नह पाए बिनु सतिगुर सुखु न पाई हे ॥ १२ ॥ किस नो कहीऐ जा आपि कराए ॥ जितु भावै तितु राहि चलाए ॥ आपे मिहरवानु सुखदाता जिउ भावै तिवै चलाई हे ॥ १३ ॥ आपे करता आपे भुगता ॥ आपे संजमु आपे जुगता ॥ आपे निरमलु मिहरवानु मधुसूदनु जिस दा हुकमु न मेटिआ जाई हे ॥ १४ ॥ से वडभागी जिनी एको जाता ॥ घटि घटि वसि रहिआ जगजीवनु दाता ॥ इक थै गुपतु परगटु है आपे गुरमुखि भ्रमु भउ जाई हे ॥ १५ ॥ गुरमुखि हरि जीउ एको जाता ॥ अंतरि नामु सबदि पछाता ॥ जिसु तू देहि सोई जनु पाए नानक नामि वडाई हे ॥ १६ ॥ ४ ॥

जो भी आया है, आखिरकार सब ने संसार से जाना है, (मृत्यु अटल है) द्वैतभाव के कारण जीव यम की फाँसी में बँधा रहता है। जिनकी सतिगुरु ने रक्षा की है, उनका उद्धार हो गया है और वे परम-सत्य में ही विलीन हो गए हैं॥ १॥ परमात्मा स्वयं ही जीवों को पैदा कर करके उनकी संभाल करता है। जिस पर अपनी कृपा-दृष्टि करता है, वही मनुष्य परवान होता है। गुरुमुख को ज्ञान द्वारा सब कुछ सूझ हो जाती है परन्तु अज्ञानी जीव अंधा आचरण ही करता है॥ २॥ मनमुख के मन में संशय बना रहता है और उसे कोई ज्ञान प्राप्त नहीं होता, इसलिए मर-मर कर जन्मता और अपना जीवन व्यर्थ गँवा देता है। गुरुमुख प्रभु-नाम में लीन रहकर सुख प्राप्त करता है और सहज ही सत्य में समाहित हो जाता है॥ ३॥ मन जगत् के धँधों में भाग-दौड़ करता हुआ लोहा बन जाता है, लेकिन यदि पूर्ण गुरु से भेंट हो जाए तो पुनः कंचन हो जाता है। जब परमात्मा स्वयं ही जीव को क्षमा कर देता है तो ही वह सुख प्राप्त करता है और वह शब्द द्वारा मिला लेता है॥ ४॥ खोटी बुद्धि वाली जीव-स्त्री झूठी एवं बुरी है और बुराई में ही लीन रहती है। वह गुणविहीन अवगुणों में जीवन व्यतीत करती है। उसकी बुद्धि कच्ची है, वह अपने मुँह से

फीका ही बोलती है अतः खोटी बुद्धि वाली जीव-स्त्री को नाम प्राप्त नहीं होता॥ ५॥ गुणहीन जीव-स्त्री पति-प्रभु को अच्छी नहीं लगती, वह मन की अपवित्र, अपवित्र कर्म ही करती है। ऐसी मूर्ख जीव-स्त्री पति-प्रभु के संयोग के आनंद को नहीं जानती और गुरु के बिना उसे ज्ञान प्राप्त नहीं होता॥ ६॥ खोटी बुद्धि वाली जीव-स्त्री खोटी है और छल-कपट का आचरण ही अपनाती है, वह झूठा शृंगार करती है, इसलिए पति-प्रभु को अच्छी नहीं लगती। लेकिन गुणवान जीव-स्त्री सदैव अपने पति-प्रभु के संग रमण करती है और सतिगुरु ने ही उसे प्रभु से मिलाया है॥ ७॥ परमात्मा स्वयं ही हुक्म करता है और सब को देखता है। किसी को वह कर्मालेख अनुसार क्षमा कर देता है। जो सदैव हरि-नाम में लीन रहते हैं, उन्होंने सत्य को पा लिया है और स्वयं ही साथ मिला लिया है॥ ८॥ माया जीवों को अहम् एवं मोह के स्वाद में लगा देती है। मगर गुरुमुख ईश्वर में ध्यान लगाकर सहजावस्था में ही समाया रहता है। परमात्मा स्वयं ही जीवों को मिलाता, स्वयं ही पैदा करके उनकी देखभाल करता है, परन्तु सतिगुरु के बिना किसी को भी इस रहस्य का ज्ञान प्राप्त नहीं हुआ है॥ ६॥ कोई ब्रह्म-शब्द का चिंतन करते हुए सदैव सावधान रहता है। लेकिन कोई बदनसीब मोह-माया में सोया रहता है। एक यही सत्य है कि परमात्मा स्वयं करने करवाने वाला है और किसी अन्य से कुछ भी नहीं किया जा सकता॥ १०॥ जो गुरु के शब्द द्वारा काल को मारकर दूर कर देता है, वह परमात्मा का नाम हृदय में धारण कर लेता है। सतिगुरु की सेवा से ही उसने परम सुख प्राप्त किया है और वह परमात्मा के नाम में ही लीन रहता है॥ ११॥ जीव-स्त्री द्वैतभाव में बावली होकर भटकती है और मोह-माया के दुख में फँसी रहती है। अनेक वेष धारण करने से सत्य की प्राप्ति नहीं होती और सतिगुरु के बिना परम-सुख नहीं मिलता॥ १२॥ जब परमात्मा स्वयं ही सब कुछ करवाता है तो फिर किसे दोष दिया जाए। जैसा चाहता है, उस मार्ग पर ही जीवों को चलाता है। वह स्वयं ही मेहरबान एवं सुख देने वाला है, जैसा उसे मंजूर है, वैसे ही वह जीवों को चलाता है॥ १३॥ करने एवं भोगने वाला प्रभु ही है और संयम एवं युक्ति भी वह स्वयं ही है। वह मधुसूदन स्वयं ही निर्मल एवं मेहरबान है, जिसका हुक्म मिटाया नहीं जा सकता॥ १४॥ जिन्होंने एक ईश्वर को जान लिया है, वे खुशकिस्मत हैं। जगत् को जीवन देने वाला घट-घट सब में बसा रहा है। किसी स्थान पर वह गुप्त है और कहीं वह साक्षात् रूप में है। गुरुमुख का भ्रम-भय दूर हो जाता है॥ १५॥ गुरुमुख एक परमेश्वर को ही जानता है, मन में नाम और शब्द को पहचान लेता है। नानक का कथन है कि हे ईश्वर ! जिसे तू देता है, वही नाम प्राप्त करता है और नाम द्वारा ही बड़ाई मिलती है॥ १६॥ ४॥

मारू महला ३ ॥ सचु सालाही गहिर गंभीरै ॥ सभु जगु है तिस ही कै चीरै ॥ सभि घट भोगवै सदा दिनु राती आपे सूख निवासी हे ॥ १ ॥ सचा साहिबु सची नाई ॥ गुर परसादी मंनि वसाई ॥ आपे आइ वसिआ घट अंतरि तूटी जम की फासी हे ॥ २ ॥ किसु सेवी तै किसु सालाही ॥ सतिगुरु सेवी सबदि सालाही ॥ सचै सबदि सदा मति ऊतम अंतरि कमलु प्रगासी हे ॥ ३ ॥ देही काची कागद मिकदारा ॥ बूंद पवै बिनसै ढहत न लागै बारा ॥ कंचन काइआ गुरमुखि बूझै जिसु अंतरि नामु निवासी हे ॥ ४ ॥ सचा चउका सुरति की कारा ॥ हरि नामु भोजनु सचु आधारा ॥ सदा त्रिपति पवित्रु है पावनु जितु घटि हरि नामु निवासी हे ॥ ५ ॥ हउ तिन बलिहारी जो साचै लागे ॥ हरि गुण गावहि अनदिनु जागे ॥ साचा सूखु सदा तिन अंतरि रसना हरि रसि रासी हे ॥ ६ ॥ हरि नामु चेता अवरु न पूजा ॥ एको सेवी अवरु न दूजा ॥ पूरै गुरि सभु सचु दिखाइआ सचै नामि निवासी हे ॥ ७ ॥ भ्रमि भ्रमि जोनी

फिरि फिरि आइआ ॥ आपि भूला जा खसमि भुलाइआ ॥ हरि जीउ मिलै ता गुरमुखि बूझै चीनै सबदु अबिनासी हे ॥ ८ ॥ कामि क्रोधि भरे हम अपराधी ॥ किआ मुहु लै बोलह ना हम गुण न सेवा साधी ॥ डुबदे पाथर मेलि लैहु तुम आपे साचु नामु अबिनासी हे ॥ ६ ॥ ना कोई करे न करणै जोगा ॥ आपे करहि करावहि सु होइगा ॥ आपे बखसि लैहि सुखु पाए सद ही नामि निवासी हे ॥ १० ॥ इहु तनु धरती सबदु बीजि अपारा ॥ हरि साचे सेती वणजु वापारा ॥ सचु धनु जंमिआ तोटि न आवै अंतरि नामु निवासी हे ॥ ११ ॥ हरि जीउ अवगणिआरे नो गुणु कीजै ॥ आपे बखसि लैहि नामु दीजै ॥ गुरमुखि होवै सो पति पाए इकतु नामि निवासी हे ॥ १२ ॥ अंतरि हरि धनु समझ न होई ॥ गुर परसादी बूझै कोई ॥ गुरमुखि होवै सो धनु पाए सद ही नामि निवासी हे ॥ १३ ॥ अनल वाउ भरमि भुलाई ॥ माइआ मोहि सुधि न काई ॥ मनमुख अंधे किछू न सूझै गुरमति नामु प्रगासी हे ॥ १४ ॥ मनमुख हउमै माइआ सूते ॥ अपणा घरु न समालहि अंति विगूते ॥ पर निंदा करहि बहु चिंता जालै दुखे दुखि निवासी हे ॥ १५ ॥ आपे करतै कार कराई ॥ आपे गुरमुखि देइ बुझाई ॥ नानक नामि रते मनु निरमलु नामे नामि निवासी हे ॥ १६ ॥ ५ ॥

गहन-गंभीर सच्चे परमेश्वर की प्रशंसा करो, समूचा जगत् उसी के वश में है। वह दिन-रात सदैव सब शरीरों को भोगता है और स्वयं ही सुखपूर्वक रहता है॥ १॥ उस सच्चे मालिक का नाम सदैव सत्य है और गुरु की कृपा से ही वह मन में बसता है। वह स्वयं ही मन में आ बसा है, जिससे यम की फाँसी टूट गई है॥ २॥ किसकी सेवा एवं किसकी प्रशंसा की जाए ? सतगुरु की सेवा करो और ब्रह्म की प्रशंसा करो। सच्चे शब्द द्वारा बुद्धि सदैव उत्तम बनी रहती है और हृदय-कमल विकसित हो जाता है॥ ३॥ यह शरीर कागज की तरह नाशवान् है। जैसे पानी की बूँद पड़ने से कागज खराब हो जाता है, वैसे ही शरीर का नाश होते विलंब नहीं होता। जिसके मन में नाम बस जाता है, वह गुरुमुख सत्य को बूझ लेता है और उसका शरीर कंचन जैसा शुद्ध हो जाता है॥ ४॥ पावन हृदय ही सच्चा चौका है, जिसके इर्द निकली हुई रेखा सुरति है, जो हृदय को विकारग्रस्त नहीं होने देती। परमात्मा का नाम ही मन का भोजन है और सत्य ही इसका आधार है। जिस हृदय में परमात्मा का नाम अवस्थित है, वह पवित्र-पावन और सदा तृप्त रहता है॥ ५॥ मैं उन पर बलिहारी जाता हूँ, जो परमात्मा की भक्ति में तल्लीन हो गए हैं। वे परमात्मा का गुणगान करके निशदिन जाग्रत रहते हैं। उनके मन में सदा सच्चा सुख बना रहता है और रसना हरि-रस में लीन रहती है॥ ६॥ मैं तो परमात्मा का नाम ही याद करता हूँ और किसी अन्य की पूजा-अर्चना नहीं करता। उस एक की ही उपासना करता हूँ और किसी दूसरे की नहीं करता। पूर्ण गुरु ने मुझे सर्वत्र सत्य दिखा दिया है और सत्य नाम में ही लीन रहता हूँ॥ ७॥ जीव पुनः पुनः योनियों में भटक कर अब मानव-जन्म में आया है। जब मालिक ने उसे भुला दिया तो यह स्वयं ही भटक गया। जब ईश्वर मिलता है, गुरुमुख उसे बूझ लेता है और फिर अविनाशी शब्द के रहस्य को पहचान लेता है॥ ८॥ हे दीनदयाल ! हम अपराधी तो काम-क्रोध से भरे हुए हैं। क्या मुँह लेकर बोलें, हम में न कोई अच्छाई है, न ही तेरी उपासना की है। तुम स्वयं ही हम डूबते पत्थरों को साथ मिला लो, तेरा सत्य-नाम सदा अनश्वर है॥ ६॥ न कोई कुछ करता है और न ही करने योग्य है। वही कुछ होगा, जो तू करता और जीवों से करवाता है। जिसे तू क्षमा कर देता है, वही सुख प्राप्त करता है और वह सदैव ही नाम-स्मरण में लीन रहता है॥ १०॥ यह तन ध रती है, इसमें ब्रह्म-शब्द का बीज डालो। सच्चे प्रभु-नाम के साथ वाणिज्य-व्यापार करो। सच्चे नाम-धन से कभी कमी नहीं आती और मन में नाम ही स्थित रहता है॥ ११॥ हे परमेश्वर ! मुझ

गुणविहीन को गुण प्रदान करो और स्वयं ही क्षमा करके नाम-दान दे दो। जो गुरुमुख होता है, उसे ही सम्मान प्राप्त होता है और एक नाम में ही लीन रहता है॥ १२॥ हरि-नाम रूपी धन जीव के अन्तर्मन में ही है परन्तु उसे ज्ञान नहीं होता। गुरु की कृपा से कोई विरला ही इस भेद को समझता है। जो गुरुमुख होता है, उसे यह धन प्राप्त हो जाता है और वह सदैव ही नाम-स्मरण में लीन रहता है॥ १३॥ तृष्णा रूपी अग्नि एवं वासना रूपी वायु जीव को भ्रम में भटकाती रहती है और मोह-माया में मस्त जीव को कोई होश नहीं होती। अन्धे मनमुख को कोई ज्ञान नहीं होता, परन्तु गुरु के उपदेश से ही ह्रदय में नाम का आलोक होता है॥ १४॥ मनमुखी जीव अहंकार एवं मोह-माया में ही सोए रहते हैं। वे कामादिक दूतों से अपने ह्रदय-घर की संभाल नहीं करते और अंत में ख्वार होते हैं। वे पराई निन्दा करते हैं, चिन्ता उन्हें बहुत जलाती है और सदैव दुखी रहते हैं॥ १५॥ ईश्वर स्वयं ही मनमुखों से ऐसा कार्य करवाता है परन्तु वह गुरुमुखों को ज्ञान प्रदान कर देता है। हे नानक! नाम में लीन होने से मन निर्मल हो जाता है और जीव नाम द्वारा नाम-स्मरण में ही लीन रहता है॥ १६॥ ५॥

मारू महला ३ ॥ एको सेवी सदा थिरु साचा ॥ दूजै लागा सभु जगु काचा ॥ गुरमती सदा सचु सालाही साचे ही साचि पतीजै हे ॥ १ ॥ तेरे गुण बहुते मै एकु न जाता ॥ आपे लाइ लए जगजीवनु दाता ॥ आपे बखसे दे वडिआई गुरमति इहु मनु भीजै हे ॥ २ ॥ माइआ लहरि सबदि निवारी ॥ इहु मनु निरमलु हउमै मारी ॥ सहजे गुण गावै रंगि राता रसना रामु रवीजै हे ॥ ३ ॥ मेरी मेरी करत विहाणी ॥ मनमुखि न बूझै फिरै इआणी ॥ जमकालु घड़ी मुहतु निहाले अनदिनु आरजा छीजै हे ॥ ४ ॥ अंतरि लोभु करै नही बूझै ॥ सिर ऊपरि जमकालु न सूझै ॥ ऐथै कमाणा सु अगै आइआ अंतकालि किआ कीजै हे ॥ ५ ॥ जो सचि लागे तिन साची सोइ ॥ दूजै लागे मनमुखि रोइ ॥ दुहा सिरिआ का खसमु है आपे आपे गुण महि भीजै हे ॥ ६ ॥ गुर कै सबदि सदा जनु सोहै ॥ नाम रसाइणि इहु मनु मोहै ॥ माइआ मोह मैलु पतंगु न लागै गुरमती हरि नामि भीजै हे ॥ ७ ॥ सभना विचि वरतै इकु सोई ॥ गुर परसादी परगटु होई ॥ हउमै मारि सदा सुखु पाइआ नाइ साचै अंम्रितु पीजै हे ॥ ८ ॥ किलबिख दूख निवारणहारा ॥ गुरमुखि सेविआ सबदि वीचारा ॥ सभु किछु आपे आपि वरतै गुरमुखि तनु मनु भीजै हे ॥ ९ ॥ माइआ अगनि जलै संसारे ॥ गुरमुखि निवारै सबदि वीचारे ॥ अंतरि सांति सदा सुखु पाइआ गुरमती नामु लीजै हे ॥ १० ॥ इंद्र इंद्रासणि बैठे जम का भउ पावहि ॥ जमु न छोडै बहु करम कमावहि ॥ सतिगुरु भेटै ता मुकति पाईऐ हरि हरि रसना पीजै हे ॥ ११ ॥ मनमुखि अंतरि भगति न होई ॥ गुरमुखि भगति सांति सुखु होई ॥ पवित्र पावन सदा है बाणी गुरमति अंतरु भीजै हे ॥ १२ ॥ ब्रहमा बिसनु महेसु वीचारी ॥ त्रै गुण बधक मुकति निरारी ॥ गुरमुखि गिआनु एको है जाता अनदिनु नामु रवीजै हे ॥ १३ ॥ बेद पड़हि हरि नामु न बूझहि ॥ माइआ कारणि पड़ि पड़ि लूझहि ॥ अंतरि मैलु अगिआनी अंधा किउ करि दुतरु तरीजै हे ॥ १४ ॥ बेद बाद सभि आखि वखाणहि ॥ न अंतरु भीजै न सबदु पछाणहि ॥ पुंनु पापु सभु बेदि द्रिड़ाइआ गुरमुखि अंम्रितु पीजै हे ॥ १५ ॥ आपे साचा एको सोई ॥ तिसु बिनु दूजा अवरु न कोई ॥ नानक नामि रते मनु साचा सचो सचु रवीजै हे ॥ १६ ॥ ६ ॥

एक ईश्वर की ही उपासना करता हूँ जो सदैव स्थिर एवं शाश्वत है। द्वैतभाव में लीन समूचा जगत् नाशवान है। गुरु उपदेशानुसार सदा ही सत्य की स्तुति करता हूँ और मन उस परम-सत्य

से ही संतुष्ट होता है॥ १॥ हे गुणों के सागर ! तेरे गुण बेअंत हैं, किन्तु मैंने तेरे एक गुण को भी नहीं जाना। हे जग-जीवन दाता ! तू स्वयं ही अपनी भक्ति में लगा लेता है, स्वयं ही क्षमा करके बड़ाई प्रदान करता है और गुरु-मत से ही यह मन हरि-रस में भीगता है॥ २॥ शब्द द्वारा माया की लहर को दूर कर दिया है और अभिमान को मिटाकर यह मन निर्मल हो गया है। राम के रंग में लीन रसना स्वाभाविक ही गुणगान करती है॥ ३॥ मैं-मेरी करते हुए सारी आयु व्यतीत हो जाती है, मनमुखी जीव को ज्ञान नहीं होता और वह अज्ञानता में भटकता रहता है। यम उसे हर घड़ी एवं मुहूर्त देखता रहता है और प्रतिदिन उसकी आयु कम होती है॥ ४॥ वह मन में लोभ करता है पर इसके फल को नहीं बूझता। यम उसके सिर पर खड़ा है किन्तु उसे कोई सूझ नहीं। (इहलोक में) जो कर्म किया है, वही आगे (परलोक में) आया है, अब वह अंतकाल क्या कर सकता है॥ ५॥ जो सत्य में लवलीन हो जाते हैं, उनकी ही सच्ची शोभा होती है। द्वैतभाव में लीन मनमुखी जीव रोते हैं। ईश्वर स्वयं लोक-परलोक का मालिक है और स्वयं ही गुणों पर प्रसन्न होता है॥ ६॥ गुरु के शब्द द्वारा मनुष्य सदैव शोभा का पात्र बनता है। नाम रूपी रसायन का पान करके यह मन मोहित हो जाता है। फिर मोह-माया की मैल बिल्कुल नहीं लगती और मन गुरु-मतानुसार हरि नाम में भीग जाता है॥ ७॥ सब जीवों में एक ईश्वर ही व्याप्त है और गुरु की कृपा से वह प्रगट हो जाता है। अभिमान को मिटाकर सदैव सुख प्राप्त होता है और सत्य-नाम में लीन रहकर नामामृत का पान होता है॥ ८॥ पाप-दुखों का निवारण करने वाला ईश्वर ही है और गुरुमुख ने शब्द-चिंतन द्वारा उसकी ही उपासना की है। वह स्वयं ही सब कुछ कर रहा है और नाम-स्मरण से गुरुमुख का तन-मन भीग जाता है॥ ६॥ माया की अग्नि समूचे संसार में जल रही है, लेकिन गुरु शब्द के चिंतन द्वारा इसका निवारण कर देता है। जिसने गुरु की शिक्षा द्वारा नाम-स्मरण किया है, उसके मन को ही शान्ति मिली है और सदैव सुख पा लिया है॥ १०॥ अपने सिंहासन पर विराजमान स्वर्गाधिपति देवराज इन्द्र भी यम का भय अनुभव करता है। अगर कोई अनेक धर्म-कर्म करता है, परन्तु यम उसे भी नहीं छोड़ता। जीव को मुक्ति तभी मिलती है, जब उसकी सतगुरु से भेंट होती है और जिह्वा हरिनामामृत का पान करती है॥ ११॥ मनमुखी जीव के मन में प्रभु-भक्ति उत्पन्न नहीं होती मगर गुरुमुख को भक्ति से शान्ति एवं सुख उत्पन्न हो जाता है। वाणी सदैव पवित्र एवं पावन है और गुरु उपदेशानुसार हृदय भीग जाता है॥ १२॥ ब्रह्मा, विष्णु एवं महेश भी माया के तीन गुणों में बँधे हुए हैं और मुक्ति उनसे निराली रहती है। गुरु का ज्ञान एकमात्र परमेश्वर को ही जानता है और वह रात-दिन नाम में ही लीन रहता है॥ १३॥ जीव वेदों का पाठ करता है परन्तु हरि-नाम के रहस्य को नहीं बूझता। पाठ-पठन कर वह माया के कारण उलझता रहता है। मन में मैल होने के कारण अज्ञानी एवं अंधा क्योंकर दुस्तर संसार-सागर से पार हो सकता है॥१४॥ पण्डित लोग वेदों के वाद-विवाद कहकर उसकी व्याख्या करते हैं, परन्तु इससे न ही उनका मन भीगता है और न ही उन्हें शब्द की पहचान होती है। समस्त वेदों ने यही दृढ़ करवाया है कि पाप-पुण्य क्या है परन्तु गुरुमुख नामामृत का ही पान करता है॥ १५॥ एक ईश्वर ही सत्य है, उसके अतिरिक्त अन्य कोई नहीं। हे नानक ! जो मनुष्य नाम में लीन हो गए हैं, उनका ही मन सच्चा है और वे एक सत्य का ही चिंतन करते हैं॥ १६॥ ६॥

मारू महला ३ ॥ सचै सचा तखतु रचाइआ ॥ निज घरि वसिआ तिथै मोहु न माइआ ॥ सद ही साचु वसिआ घट अंतरि गुरमुखि करणी सारी हे ॥ १ ॥ सचा सउदा सचु वापारा ॥ न तिथै भरमु न दूजा पसारा ॥ सचा धनु खटिआ कदे तोटि न आवै बूझै को वीचारी हे ॥ २ ॥ सचै लाए से जन

लागे ॥ अंतरि सबदु मसतकि वडभागे ॥ सचै सबदि सदा गुण गावहि सबदि रते वीचारी हे ॥ ३ ॥ सचो सचा सचु सालाही ॥ एको वेखा दूजा नाही ॥ गुरमति ऊचो ऊची पउड़ी गिआनि रतनि हउमै मारी हे ॥ ४ ॥ माइआ मोहु सबदि जलाइआ ॥ सचु मनि वसिआ जा तुधु भाइआ ॥ सचे की सभ सची करणी हउमै तिखा निवारी हे ॥ ५ ॥ माइआ मोहु सभु आपे कीना ॥ गुरमुखि विरलै किन ही चीना ॥ गुरमुखि होवै सु सचु कमावै साची करणी सारी हे ॥ ६ ॥ कार कमाई जो मेरे प्रभ भाई ॥ हउमै त्रिसना सबदि बुझाई ॥ गुरमति सद ही अंतरु सीतलु हउमै मारि निवारी हे ॥ ७ ॥ सचि लगे तिन सभु किछु भावै ॥ सचै सबदे सचि सुहावै ॥ ऐथै साचे से दरि साचे नदरी नदरि सवारी हे ॥ ८ ॥ बिनु साचे जो दूजै लाइआ ॥ माइआ मोह दुख सबाइआ ॥ बिनु गुर दुखु सुखु जापै नाही माइआ मोह दुखु भारी हे ॥ ९ ॥ साचा सबदु जिना मनि भाइआ ॥ पूरबि लिखिआ तिनी कमाइआ ॥ सचो सेवहि सचु धिआवहि सचि रते वीचारी हे ॥ १० ॥ गुर की सेवा मीठी लागी ॥ अनदिनु सूख सहज समाधी ॥ हरि हरि करतिआ मनु निरमलु होआ गुर की सेव पिआरी हे ॥ ११ ॥ से जन सुखीए सतिगुरि सचे लाए ॥ आपे भाणे आपि मिलाए ॥ सतिगुरि राखे से जन उबरे होर माइआ मोह खुआरी हे ॥ १२ ॥ गुरमुखि साचा सबदि पछाता ॥ ना तिसु कुटंबु ना तिसु माता ॥ एको एकु रविआ सभ अंतरि सभना जीआ का आधारी हे ॥ १३ ॥ हउमै मेरा दूजा भाइआ ॥ किछु न चलै धुरि खसमि लिखि पाइआ ॥ गुर साचे ते साचु कमावहि साचै दूख निवारी हे ॥ १४ ॥ जा तू देहि सदा सुखु पाए ॥ साचै सबदे साचु कमाए ॥ अंदरु साचा मनु तनु साचा भगति भरे भंडारी हे ॥ १५ ॥ आपे वेखै हुकमि चलाए ॥ अपणा भाणा आपि कराए ॥ नानक नामि रते बैरागी मनु तनु रसना नामि सवारी हे ॥ १६ ॥ ७ ॥

सच्चे परमेश्वर ने (सृष्टि को) अपना सच्चा सिंहासन बनाया है, वह अपने निजघर दसम द्वार में बस गया है और वहाँ मोह-माया का कोई प्रभाव नहीं। जिसके हृदय में सदैव सत्य बसा रहता है, उस गुरुमुख का आचरण भी श्रेष्ठ है॥ १॥ जब (नाम रूपी) सच्चा सौदा और सच्चा व्यापार किया जाता है, तब वहाँ कोई भ्रम एवं द्वैतभाव का प्रसार नहीं होता। सच्चे धन का लाभ प्राप्त करने से कोई कमी नहीं आती, कोई विरला विचारवान ही इस तथ्य को बूझता है॥ २॥ सच्चे प्रभु ने जिन्हें इस व्यापार में लगाया है, वही इस में लग गए हैं। जिनके मस्तक पर उत्तम भाग्य होता है, उनके मन में शब्द का निवास होता है। सच्चे शब्द द्वारा वे परमात्मा का ही गुणगान करते हैं और ऐसे विवेकशील पुरुष शब्द में लीन रहते हैं॥ ३॥ मैं परम-सत्य परमेश्वर की ही स्तुति करता हूँ, जो सदैव शाश्वत है। उस एक को ही देखता हूँ और उसके बिना दूसरा कोई नहीं। गुरु का उपदेश ही सर्वश्रेष्ठ सीढ़ी है, जिससे सत्य तक पहुँचा जा सकता है और ज्ञान रत्न से अहम् को मिटाया जा सकता है॥ ४॥ ब्रह्म-शब्द ने मोह-माया को जलाया है। हे ईश्वर ! जब तुझे भाया तो मन में सत्य अवस्थित हो गया। सच्चे प्रभु का किया हुआ सब कुछ सत्य है और नेक आचरण अपनाने से अहंकार एवं तृष्णा को दूर किया जा सकता है॥ ५॥ माया-मोह सब परमात्मा ने ही बनाया है और किसी विरले गुरुमुख ने इस तथ्य की पहचान की है। जो गुरुमुख बन जाता है, वह नेक आचरण अपनाता है और सच्ची करनी ही उसका श्रेष्ठ कर्म है॥ ६॥ उसने वही कार्य किया है, जो मेरे प्रभु को भाया है और शब्द द्वारा अहम् एवं तृष्णाग्नि बुझा ली है। गुरु की शिक्षा द्वारा मन सदैव शीतल रहता है और अभिमान को मारकर मन से दूर कर दिया है॥ ७॥ जो सत्य में लीन हो गए हैं, उन्हें सब कुछ अच्छा लगता है। वे सच्चे शब्द में ही मग्न रहते हैं और सत्य

से ही शोभा प्राप्त करते हैं। जो इहलोक में सत्यशील होते हैं, वे प्रभु के दरबार में भी सत्यशील माने जाते हैं और कृपानिधान प्रभु ने अपनी कृपादृष्टि से उन्हें संवार दिया है॥ ८॥ सत्य के बिना जो द्वैतभाव में चित लगाता है, उसे माया-मोह के दुख लगे रहते हैं। गुरु के बिना उसे यह मालूम नहीं होता कि दुख सुख क्या है? मोह-माया का दुख बहुत भारी है॥ ६॥ जिनके मन को सच्चा शब्द भा गया है, उन्होंने पूर्व कर्मालेख का फल पा लिया है। वे विवेकशील पुरुष सत्य की उपासना करते हैं, सत्य का मनन करते हैं और सत्य में ही लीन रहते हैं॥ १०॥ उन्हें गुरु की सेवा ही मीठी लगी है और रात दिन सहज-समाधि लगाकर सुखी रहते हैं। परमात्मा का नाम जपते हुए उनका मन निर्मल हुआ है और उन्हें गुरु की सेवा ही प्यारी लगी है॥ ११॥ वही भक्तजन सुखी हैं, जिन्हें सतगुरु ने प्रभु की भक्ति में लगा दिया है। परमात्मा ने अपनी मर्जी से स्वयं ही मिला लिया है। जिनकी सतगुरु ने रक्षा की है, वे उबर गए हैं लेकिन अन्य माया-मोह में ही ख्वार हुए हैं॥ १२॥ गुरुमुख ने शब्द द्वारा स्वयंभू परमेश्वर को ही पहचाना है, जिसका न कोई परिवार है, न कोई माता है, केवल एक वही सबके अन्तर्मन में रमण कर रहा है और वह सब जीवों का आधार है॥ १३॥ मनुष्य को अहंत्व, ममता एवं द्वैतभाव ही अच्छा लगता है। मालिक ने प्रारम्भ से लिख दिया है कि अन्तिम समय कुछ भी साथ नहीं जाता। जो सच्चे गुरु से दीक्षा लेकर सच्चा आचरण अपनाता है, परमात्मा उसके सब दुख दूर कर देता है॥ १४॥ हे ईश्वर! जिसे तू देता है, वह सदैव सुख प्राप्त करता है और वह सच्चे शब्द द्वारा सच्चा आचरण अपनाता है। उसके अन्तर्मन में सत्य बसा रहता है, उसका तन-मन सच्चा हो जाता है और वह भक्ति के भंडार भर लेता है॥ १५॥ वह स्वयं ही देखता है, सब पर अपना हुक्म चलाता है और अपनी इच्छानुसार ही जीवों से करवाता है। हे नानक! वैराग्यवान जीव नाम में ही लीन रहते हैं और प्रभु के नाम ने उनका मन, तन एवं जीभ संवार दी है॥ १६॥ ७॥

मारू महला ३ ॥ आपे आपु उपाइ उपंना ॥ सभ महि वरतै एकु परछंना ॥ सभना सार करे जगजीवनु जिनि अपणा आपु पछाता हे ॥ १ ॥ जिनि ब्रहमा बिसनु महेसु उपाए ॥ सिरि सिरि धंधै आपे लाए ॥ जिसु भावै तिसु आपे मेले जिनि गुरमुखि एको जाता हे ॥ २ ॥ आवा गउणु है संसारा ॥ माइआ मोहु बहु चितै बिकारा ॥ थिरु साचा सालाही सद ही जिनि गुर का सबदु पछाता हे ॥ ३ ॥ इकि मूलि लगे ओनी सुखु पाइआ ॥ डाली लागे तिनी जनमु गवाइआ ॥ अंम्रित फल तिन जन कउ लागे जो बोलहि अंम्रित बाता हे ॥ ४ ॥ हम गुण नाही किआ बोलह बोल ॥ तू सभना देखहि तोलहि तोल ॥ जिउ भावै तिउ राखहि रहणा गुरमुखि एको जाता हे ॥ ५ ॥ जा तुधु भाणा ता सची कारै लाए ॥ अवगण छोडि गुण माहि समाए ॥ गुण महि एको निरमलु साचा गुर कै सबदि पछाता हे ॥ ६ ॥ जह देखा तह एको सोई ॥ दूजी दुरमति सबदे खोई ॥ एकसु महि प्रभु एकु समाणा अपणै रंगि सद राता हे ॥ ७ ॥ काइआ कमलु है कुमलाणा ॥ मनमुखु सबदु न बुझै इआणा ॥ गुर परसादी काइआ खोजे पाए जगजीवनु दाता हे ॥ ८ ॥ कोट गही के पाप निवारे ॥ सदा हरि जीउ राखै उर धारे ॥ जो इछे सोई फलु पाए जिउ रंगु मजीठै राता हे ॥ ६ ॥ मनमुखु गिआनु कथे न होई ॥ फिरि फिरि आवै ठउर न कोई ॥ गुरमुखि गिआनु सदा सालाहे जुगि जुगि एको जाता हे ॥ १० ॥ मनमुखु कार करे सभि दुख सबाए ॥ अंतरि सबदु नाही किउ दरि जाए ॥ गुरमुखि सबदु वसै मनि साचा सद सेवे सुखदाता हे ॥ ११ ॥ जह देखा तू सभनी थाई ॥ पूरै गुरि सभ सोझी पाई ॥ नामो नामु धिआईऐ सदा सद इहु मनु नामे राता हे ॥ १२ ॥ नामे राता पवितु सरीरा ॥ बिनु नावै डूबि मुए बिनु नीरा ॥ आवहि जावहि

नामु नही बूझहि इकना गुरमुखि सबदु पछाता हे ॥ १३ ॥ पूरै सतिगुरि बूझ बुझाई ॥ विणु नावै मुकति किनै न पाई ॥ नामे नामि मिलै वडिआई सहजि रहै रंगि राता हे ॥ १४ ॥ काइआ नगरु ढहै ढहि ढेरी ॥ बिनु सबदै चूकै नही फेरी ॥ साचु सलाहे साचि समावै जिनि गुरमुखि एको जाता हे ॥ १५ ॥ जिस नो नदरि करे सो पाए ॥ साचा सबदु वसै मनि आए ॥ नानक नामि रते निरंकारी दरि साचै साचु पछाता हे ॥ १६ ॥ ८ ॥

वह स्वतः प्रकाश स्वयंभू है और एक वही प्रच्छन्न रूप में सब में व्याप्त है। जिसने अपने आप को पहचान लिया है, उसे यह ज्ञान हो गया है कि जगत् को जीवन देने वाला सब की देखभाल करता है॥ १॥ जिसने ब्रह्मा, विष्णु एवं शिव को उत्पन्न किया है, उस परमात्मा ने पैदा करके स्वयं ही अपने-अपने कार्य में लगा दिया है। जिसे वह पसंद करता है, उसे स्वयं ही मिला लेता है, जिसने गुरु के सान्निध्य में एक ईश्वर के भेद को समझ लिया है॥ २॥ यह संसार जन्म-मरण के चक्र में पड़ा हुआ है, मोह-माया के कारण मनुष्य बहुत विकारों को सोचता रहता है। जिसने गुरु का शब्द पहचान लिया है, वह सदैव ही अविनाशी प्रभु का स्तुतिगान करता रहता है॥ ३॥ कई मनुष्य मूल परमात्मा की भक्ति में लग गए हैं और उन्होंने सच्चा सुख पा लिया है। जो इष्ट देवी-देवताओं की पूजा में लीन हो गए, उन्होंने अपना जीवन व्यर्थ गँवा लिया। उन लोगों को अमृत फल प्राप्त होता है, जो मीठे वचन बोलते हैं॥ ४॥ हे परमपिता! हम जीवों में कोई गुण नहीं है, फिर हम क्या बात करें ? तू सब को देखता है और उनके कर्मों को तौलता रहता है। जैसा तुझे मंजूर है, वैसे ही तू रखता है, वैसे ही हमने रहना है और गुरु के सान्निध्य में तुझे ही जाना है॥ ५॥ जब तुझे स्वीकार हो तो तू सच्चे कार्य में लगा देता है। फिर जीव अवगुणों को छोड़कर गुणों में लीन हो जाता है। केवल एक निर्मल प्रभु ही गुणों में बसता है, जिसे गुरु के शब्द द्वारा ही पहचाना जा सकता है॥ ६॥ जहाँ भी देखता हूँ, वहाँ एक वही मौजूद है। शब्द द्वारा द्वैतभाव दुर्मति दूर कर दी है। वह एक प्रभु एक स्वयं में ही लीन रहता है और सदैव ही अपने रंग में रंगा रहता है॥ ७॥ यह शरीर कमल की तरह शीघ्र ही मुरझाने वाला है किन्तु अनजान मनमुख शब्द के भेद को नहीं समझता। जो गुरु की कृपा से अपने शरीर को खोजता है, वह जगजीवन दाता को पा लेता है॥ ८॥ जो सदैव ही परमात्मा को हृदय में बसाकर रखता है, वह शरीर रूपी किले में से पापों का निवारण कर देता है। वह मनवांछित फल प्राप्त करता है और उसका मन मजीठ के रंग की तरह प्रभु-प्रेम में रंग जाता है॥ ६॥ मनमुख जीव ज्ञान की बातें तो करता है किन्तु उसे खुद कोई ज्ञान नहीं होता। इसलिए वह बार-बार जन्म लेता रहता है और उसे सुख का कोई ठिकाना नहीं मिलता। गुरुमुख को ज्ञान होता है, वह सदा परमात्मा की प्रशंसा करता है और युग-युगांतर उस एक को ही अटल मानता है॥ १०॥ मनमुख जितने भी कर्म करता है, उससे सब दुख ही पैदा होते हैं। उसके मन में शब्द ही नहीं, तो वह प्रभु के द्वार पर कैसे जा सकता है। गुरुमुख के मन में शब्द अवस्थित है और वह सदा सुखदाता की उपासना करता है॥ ११॥ हे ईश्वर! जिधर भी देखता हूँ, तू सब स्थानों में व्याप्त है। पूर्ण गुरु से यही सूझ प्राप्त हुई है कि सर्वदा नाम का मनन करो, क्योंकि यह मन नाम में ही लीन होता है॥ १२॥ प्रभु-नाम में लीन शरीर पवित्र है, परन्तु नामविहीन मनुष्य जल के बिना ही डूबकर मर जाते हैं। वह नाम के रहस्य को नहीं समझता और जन्मता-मरता रहता है, कुछ लोगों ने गुरु के सान्निध्य में शब्द को पहचान लिया है॥ १३॥ पूर्ण सतिगुरु ने यही ज्ञान बतलाया है कि नाम के बिना किसी ने भी मुक्ति प्राप्त नहीं की। परमात्मा के नाम से ही जीव को लोक-परलोक में बड़ाई मिलती है और वह सहज ही प्रभु-रंग में लीन रहता है॥ १४॥ शरीर रूपी नगरी आखिरकार ध्वस्त होकर राख

की ढेरी बन जाती है और शब्द के बिना जीव का आवागमन नहीं छूटता। जिसने गुरु के सान्निध्य में एक परमात्मा को जान लिया है, वह उस परम-सत्य का स्तुतिगान करके उस में ही विलीन हो जाता है॥ १५॥ जिस पर अपनी कृपा-दृष्टि करता है, वही उसे पाता है और सच्चा शब्द उसके मन में आ बसता है। हे नानक! वही मनुष्य निरंकार के उपासक हैं, जो नाम में लीन रहते हैं, जिन्होंने सत्य को पहचान लिया है, वे सच्चे द्वार पर स्वीकार हो जाते हैं॥ १६॥ ८॥

मारू सोलहे ३ ॥ आपे करता सभु जिसु करणा ॥ जीअ जंत सभि तेरी सरणा ॥ आपे गुपतु वरतै सभ अंतरि गुर कै सबदि पछाता हे ॥ १ ॥ हरि के भगति भरे भंडारा ॥ आपे बखसे सबदि वीचारा ॥ जो तुधु भावै सोई करसहि सचे सिउ मनु राता हे ॥ २ ॥ आपे हीरा रतनु अमोलो ॥ आपे नदरी तोले तोलो ॥ जीअ जंत सभि सरणि तुमारी करि किरपा आपि पछाता हे ॥ ३ ॥ जिस नो नदरि होवै धुरि तेरी ॥ मरै न जंमै चूकै फेरी ॥ साचे गुण गावै दिनु राती जुगि जुगि एको जाता हे ॥ ४ ॥ माइआ मोहि सभु जगतु उपाइआ ॥ ब्रहमा बिसनु देव सबाइआ ॥ जो तुधु भाणे से नामि लागे गिआन मती पछाता हे ॥ ५ ॥ पाप पुंन वरतै संसारा ॥ हरखु सोगु सभु दुखु है भारा ॥ गुरमुखि होवै सो सुखु पाए जिनि गुरमुखि नामु पछाता हे ॥ ६ ॥ किरतु न कोई मेटणहारा ॥ गुर कै सबदे मोख दुआरा ॥ पूरबि लिखिआ सो फलु पाइआ जिनि आपु मारि पछाता हे ॥ ७ ॥ माइआ मोहि हरि सिउ चितु न लागै ॥ दूजै भाइ घणा दुखु आगै ॥ मनमुख भरमि भुले भेखधारी अंतकालि पछुताता हे ॥ ८ ॥ हरि कै भाणै हरि गुण गाए ॥ सभि किलबिख काटे दूख सबाए ॥ हरि निरमलु निरमल है बाणी हरि सेती मनु राता हे ॥ ९ ॥ जिस नो नदरि करे सो गुण निधि पाए ॥ हउमै मेरा ठाकि रहाए ॥ गुण अवगण का एको दाता गुरमुखि विरली जाता हे ॥ १० ॥ मेरा प्रभु निरमलु अति अपारा ॥ आपे मेलै गुर सबदि वीचारा ॥ आपे बखसे सचु द्रिड़ाए मनु तनु साचै राता हे ॥ ११ ॥ मनु तनु मैला विचि जोति अपारा ॥ गुरमति बूझै करि वीचारा ॥ हउमै मारि सदा मनु निरमलु रसना सेवि सुखदाता हे ॥ १२ ॥ गड़ काइआ अंदरि बहु हट बाजारा ॥ तिसु विचि नामु है अति अपारा ॥ गुर कै सबदि सदा दरि सोहै हउमै मारि पछाता हे ॥ १३ ॥ रतनु अमोलकु अगम अपारा ॥ कीमति कवणु करे वेचारा ॥ गुर कै सबदे तोलि तोलाए अंतरि सबदि पछाता हे ॥ १४ ॥ सिम्रिति सासत्र बहुतु बिसथारा ॥ माइआ मोहु पसरिआ पासारा ॥ मूरख पड़हि सबदु न बूझहि गुरमुखि विरलै जाता हे ॥ १५ ॥ आपे करता करे कराए ॥ सची बाणी सचु द्रिड़ाए ॥ नानक नामु मिलै वडिआई जुगि जुगि एको जाता हे ॥ १६ ॥ ९ ॥

हे ईश्वर! तू स्वयं ही कर्ता है, जिसने सब करना है। जीव-जन्तु सभी तेरी शरण में हैं। तू स्वयं सबके मन में गुप्त रूप में व्याप्त है और भक्तों ने तुझे गुरु के शब्द द्वारा पहचान लिया है॥ १॥ भगवान के भण्डार भक्ति से भरे हुए हैं और वह शब्द के चिंतन द्वारा स्वयं ही देता है। जो तुझे मंजूर है, वही करते हैं और भक्तों का मन सत्य में ही लीन रहता है॥ २॥ अमूल्य हीरा एवं रत्न तू स्वयं ही है। तू अपनी कृपा-दृष्टि से हीरे-रत्नों को परखकर स्वयं ही तौलता है। सभी जीव तुम्हारी शरण में हैं और तू स्वयं ही कृपा करके पहचाना जाता है॥ ३॥ जिस पर तेरी कृपा-दृष्टि होती है, उसका जन्म-मरण का चक्र छूट जाता है। वह दिन-रात सच्चे प्रभु के गुण गाता है और युग-युगांतर उस एक का ही अस्तित्व मानता है॥ ४॥ हे परमात्मा! माया-मोह एवं समूचा जगत् तूने उत्पन्न किया, ब्रह्मा, विष्णु एवं देवताओं की रचना की। जो तुझे अच्छे लगे, वे तेरे नाम में लीन हो गए और उन्होंने ज्ञान मति द्वारा तुझे पहचान लिया॥ ५॥ समूचे संसार में

पाप-पुण्य फैला हुआ है। खुशी एवं गम, सब भारी दुख हैं। जो गुरुमुख होता है, वही सुख प्राप्त करता है, जिसने गुरु के सान्निध्य में हरि-नाम को पहचान लिया है॥ ६॥ जीव का कर्म-फल कोई भी मिटाने वाला नहीं है और गुरु के उपदेश से ही मुक्ति का द्वार मिलता है। जिस मनुष्य ने अहम् को मिटाकर सत्य को पहचान लिया है, उसने वही फल पाया है, जो उसकी तकदीर में पूर्व ही लिखा हुआ है॥ ७॥ माया-मोह के कारण मनुष्य का परमात्मा में चित नहीं लगता और द्वैतभाव के कारण भारी दुख भोगता है। मनमुख अनेक वेष धारण करके भ्रम में भटकता है और अंतकाल पछताता है॥ ८॥ परमात्मा की इच्छा से जीव उसका गुणगान करता है और वह उसके सभी पाप-दुख काट देता है। निर्मल परमात्मा की वाणी भी निर्मल है और मन उसमें ही लीन रहता है॥ ६॥ जिस पर वह कृपा करता है, वह उस गुणों के भण्डार को प्राप्त कर लेता है और वह अपने अहम् एवं अपनत्व को मन से दूर कर देता है। गुण-अवगुणों का प्रदाता एक परमेश्वर ही है, कोई विरला गुरुमुख ही इस तथ्य को जानता है॥ १०॥ मेरा प्रभु निर्मल एवं अपरंपार है और गुरु-शब्द के चिंतन द्वारा स्वयं ही मिला लेता है। वह स्वयं ही क्षमा करके सत्य दृढ़ करवाता है और जीव का मन-तन सत्य में लीन हो जाता है॥ ११॥ यह मन तन विकारों के कारण मैला है, परन्तु उस में अपार प्रभु की ही ज्योति स्थित है। गुरु-मतानुसार विचार करके ही जीव इस भेद को समझ पाता है। अहम् को मारकर मन सदैव निर्मल रहता है और वह अपनी रसना से सुखदाता परमेश्वर की ही अर्चना करता है॥ १२॥ शरीर रूपी किले में अनेक दुकानें बाजार हैं, जिसमें अपार प्रभु नाम का व्यापार होता है। गुरु के शब्द द्वारा जिसने अहम् को मिटाकर प्रभु को पहचान लिया है, वह सदैव उसके द्वार पर शोभा प्राप्त करता है॥ १३॥ अगम्य अपार हरि का नाम अमूल्य रत्न है, जीव बेचारा उसकी क्या उपमा कर सकता है। जिसने अपने मन में शब्द को पहचान लिया है, वह गुरु के शब्द द्वारा ही तोल सकता है॥ १४॥ स्मृतियों एवं शास्त्रों में विस्तारपूर्वक व्याख्या है, जो माया-मोह का फैला हुआ प्रसार ही है। मूर्ख लोग इनका पाठ-पठन करते हैं किन्तु शब्द के भेद को नहीं समझते। किसी विरले गुरुमुख ने ही शब्द के भेद को पहचाना है॥ १५॥ ईश्वर स्वयं ही करने-करवाने वाला है, वह सच्ची वाणी द्वारा सत्य ही दृढ़ करवाता है। हे नानक! उस मनुष्य को नाम से ही बड़ाई मिलती है, जिसने युग-युगांतर एक प्रभु को व्याप्त मान लिया है॥ १६॥ ६॥

मारू महला ३ ॥ सो सचु सेविहु सिरजणहारा ॥ सबदे दूख निवारणहारा ॥ अगमु अगोचरु कीमति नही पाई आपे अगम अथाहा हे ॥ १ ॥ आपे सचा सचु वरताए ॥ इकि जन साचै आपे लाए ॥ साचो सेवहि साचु कमावहि नामे सचि समाहा हे ॥ २ ॥ धुरि भगता मेले आपि मिलाए ॥ सची भगती आपे लाए ॥ साची बाणी सदा गुण गावै इसु जनमै का लाहा हे ॥ ३ ॥ गुरमुखि वणजु करहि परु आपु पछाणहि ॥ एकस बिनु को अवरु न जाणहि ॥ सचा साहु सचे वणजारे पूंजी नामु विसाहा हे ॥ ४ ॥ आपे साजे स्रिसटि उपाए ॥ विरले कउ गुर सबदु बुझाए ॥ सतिगुरु सेवहि से जन साचे काटे जम का फाहा हे ॥ ५ ॥ भंनै घड़े सवारे साजे ॥ माइआ मोहि दूजै जंत पाजे ॥ मनमुख फिरहि सदा अंधु कमावहि जम का जेवड़ा गलि फाहा हे ॥ ६ ॥ आपे बखसे गुर सेवा लाए ॥ गुरमती नामु मंनि वसाए ॥ अनदिनु नामु धिआए साचा इसु जग महि नामो लाहा हे ॥ ७ ॥ आपे सचा सची नाई ॥ गुरमुखि देवै मंनि वसाई ॥ जिन मनि वसिआ से जन सोहहि तिन सिरि चूका काहा हे ॥ ८ ॥ अगम अगोचरु कीमति नही पाई ॥ गुर परसादी मंनि वसाई ॥ सदा सबदि सालाही गुणदाता लेखा कोइ न मंगै ताहा हे ॥ ६ ॥ ब्रहमा बिसनु रुद्रु तिस की सेवा ॥ अंतु न पावहि अलख अभेवा ॥ जिन कउ

नदरि करहि तू अपणी गुरमुखि अलखु लखाहा हे ॥ १० ॥ पूरै सतिगुरि सोझी पाई ॥ एको नामु मंनि वसाई ॥ नामु जपी तै नामु धिआई महलु पाइ गुण गाहा हे ॥ ११ ॥ सेवक सेवहि मंनि हुकमु अपारा ॥ मनमुख हुकमु न जाणहि सारा ॥ हुकमे मंने हुकमे वडिआई हुकमे वेपरवाहा हे ॥ १२ ॥ गुर परसादी हुकमु पछाणै ॥ धावतु राखै इकतु घरि आणै ॥ नामे राता सदा बैरागी नामु रतनु मनि ताहा हे ॥ १३ ॥ सभ जग महि वरतै एको सोई ॥ गुर परसादी परगटु होई ॥ सबदु सलाहहि से जन निरमल निज घरि वासा ताहा हे ॥ १४ ॥ सदा भगत तेरी सरणाई ॥ अगम अगोचर कीमति नही पाई ॥ जिउ तुधु भावहि तिउ तू राखहि गुरमुखि नामु धिआहा हे ॥ १५ ॥ सदा सदा तेरे गुण गावा ॥ सचे साहिब तेरै मनि भावा ॥ नानकु साचु कहै बेनंती सचु देवहु सचि समाहा हे ॥ १६ ॥ १ ॥ १० ॥

एक वही सृजनहार है, सो उस परम-सत्य की ही उपासना करो। वह शब्द द्वारा दुखों का निवारण करने वाला है। वह अपहुँच, ज्ञानेन्द्रियों की समझ से परे है और किसी ने भी उसकी सही कीमत नहीं आँकी, वह स्वयं ही अगम्य एवं अथाह है॥ १॥ वह सच्चा प्रभु स्वयं ही सत्य का विस्तार करता है। कुछ जीवों को वह स्वयं ही सत्य में लवलीन कर देता है। वे सत्य की अर्चना करते हैं, सच्चा आचरण अपनाते हैं और सत्य-नाम में ही समाहित हो जाते हैं॥ २॥ प्रभु स्वयं ही भक्तों को अपने साथ मिला लेता है और स्वयं ही उन्हें अपनी सच्ची भक्ति में लगाता है। वे सच्ची वाणी द्वारा सदैव परमात्मा के गुण गाते हैं और इस मानव-जन्म का भी यही लाभ है॥ ३॥ गुरुमुख नाम का व्यापार करते हैं और पराए-अपने की पहचान करते हैं। वे एक ईश्वर के बिना अन्य किसी को नहीं जानते। परमात्मा सच्चा साहूकार है, उसके भक्त सच्चे व्यापारी हैं और नाम रूपी पूंजी ही खरीदते हैं॥ ४॥ वह स्वयं ही रचना करके सृष्टि उत्पन्न करता है और किसी विरले को शब्द-गुरु द्वारा यह रहस्य बताता है। सतगुरु की सेवा करने वाले व्यक्ति ही सत्यशील हैं और उनका यम का फंदा काट देता है॥ ५॥ ईश्वर स्वयं ही तोड़ता, बनाता, संवारता एवं रचना करता है। उसने जीवों को माया-मोह एवं द्वैतभाव के स्वार्थ में लगाया हुआ है। मनमुख सदा ज्ञानहीन कर्म करते हुए भटकते रहते हैं और मौत का फंदा उनके गले में पड़ता है॥ ६॥ दयालु प्रभु स्वयं ही क्षमा करके गुरु की सेवा में लगा देता है और गुरु-मतानुसार नाम मन में बसा देता है। फिर मनुष्य दिन-रात हरि-नाम का ध्यान करते हैं और इस जगत् में नाम का ही लाभ है॥ ७॥ ईश्वर सत्य है, उसका नाम भी सत्य है। वह गुरु के माध्यम से ही जीव को नाम देता है और नाम मन में बसा देता है। जिनके मन में नाम अवस्थित हो गया है, उनके सिर से पापों का भार उतर गया है और वे प्रभु-दरबार में सुन्दर लगते हैं॥ ८॥ अगम्य, अगोचर परमेश्वर का मूल्यांकन नहीं किया जा सकता और गुरु की कृपा से ही मन में बसता है। जो शब्द द्वारा सदैव गुणदाता प्रभु का स्तुतिगान करता है, उससे कर्मों का हिसाब-किताब कोई नहीं माँगता॥ ६॥ ब्रह्मा, विष्णु एवं शिवशंकर उसकी उपासना करते हैं लेकिन वे अदृष्ट-अभेद परमात्मा का अन्त प्राप्त नहीं करते। हे परमेश्वर ! जिन पर तू अपनी कृपा-दृष्टि करता है, उन्हें गुरु के माध्यम से अपने अदृष्ट रूप के दर्शन करवा देता है॥ १०॥ पूर्ण सतिगुरु ने यही सूझ प्रदान की है कि एक परमात्मा का नाम मन में बसाओ, नाम जपो, नाम का ध्यान करो और गुणगान करके मंजिल पा लो॥ ११॥ प्रभु का अपार हुक्म मानकर सेवक उसकी ही सेवा करते हैं। लेकिन मनमुख जीव हुक्म के महत्व को नहीं जानते। जो उसके हुक्म को मानता है, वह हुक्म से ही बड़ाई प्राप्त करता है और उसके हुक्म से बेपरवाह हो जाता है॥ १२॥ गुरु की कृपा से जो हुक्म को पहचान लेता है, वह भटकते मन को टिकाकर एकाग्रचित कर लेता है। नाम में लीन रहने वाला वैराग्यवान बना रहता है और नाम रत्न उसके मन में स्थित हो जाता है॥ १३॥ समूचे जगत् में एक ईश्वर ही व्याप्त है और गुरु की

कृपा से ही वह प्रगट होता है। जो ब्रह्म-शब्द की प्रशंसा करते हैं, वही भक्तजन निर्मल हैं और उनका आत्म-स्वरूप में निवास हो जाता है॥ १४॥ हे परमेश्वर! भक्त सदैव तेरी शरण में रहते हैं, तू अगम्य, मन-वाणी से परे है, तेरा मूल्यांकन नहीं किया जा सकता। जैसे तू चाहता है, वैसे ही जीवों को रखता है और गुरु के माध्यम से तेरे नाम का ध्यान होता है॥ १५॥ हे सच्चे मालिक! मैं सदा तेरा गुणगान करता रहूँ ताकि तेरे मन को भा जाऊँ। नानक सच्ची विनती करता है कि मुझे सत्य-नाम प्रदान करो, ताकि मैं सत्य में विलीन हो जाऊँ॥ १६॥ १॥ १०॥

मारू महला ३ ॥ सतिगुरु सेवनि से वडभागी ॥ अनदिनु साचि नामि लिव लागी ॥ सदा सुखदाता रविआ घट अंतरि सबदि सचै ओमाहा हे ॥ १ ॥ नदरि करे ता गुरू मिलाए ॥ हरि का नामु मंनि वसाए ॥ हरि मनि वसिआ सदा सुखदाता सबदे मनि ओमाहा हे ॥ २ ॥ क्रिपा करे ता मेलि मिलाए ॥ हउमै ममता सबदि जलाए ॥ सदा मुकतु रहै इक रंगी नाही किसै नालि काहा हे ॥ ३ ॥ बिनु सतिगुर सेवे घोर अंधारा ॥ बिनु सबदै कोइ न पावै पारा ॥ जो सबदि राते महा बैरागी सो सचु सबदे लाहा हे ॥ ४ ॥ दुखु सुखु करतै धुरि लिखि पाइआ ॥ दूजा भाउ आपि वरताइआ ॥ गुरमुखि होवै सु अलिपतो वरतै मनमुख का किआ वेसाहा हे ॥ ५ ॥ से मनमुख जो सबदु न पछाणहि ॥ गुर के भै की सार न जाणहि ॥ भै बिनु किउ निरभउ सचु पाईऐ जमु काढि लएगा साहा हे ॥ ६ ॥ अफरिओ जमु मारिआ न जाई ॥ गुर कै सबदे नेड़ि न आई ॥ सबदु सुणे ता दूरहु भागै मतु मारे हरि जीउ वेपरवाहा हे ॥ ७ ॥ हरि जीउ की है सभ सिरकारा ॥ एहु जमु किआ करे विचारा ॥ हुकमी बंदा हुकमु कमावै हुकमे कढदा साहा हे ॥ ८ ॥ गुरमुखि साचै कीआ अकारा ॥ गुरमुखि पसरिआ सभु पासारा ॥ गुरमुखि होवै सो सचु बूझै सबदि सचै सुखु ताहा हे ॥ ९ ॥ गुरमुखि जाता करमि बिधाता ॥ जुग चारे गुर सबदि पछाता ॥ गुरमुखि मरै न जनमै गुरमुखि गुरमुखि सबदि समाहा हे ॥ १० ॥ गुरमुखि नामि सबदि सालाहे ॥ अगम अगोचर वेपरवाहे ॥ एक नामि जुग चारि उधारे सबदे नाम विसाहा हे ॥ ११ ॥ गुरमुखि सांति सदा सुखु पाए ॥ गुरमुखि हिरदै नामु वसाए ॥ गुरमुखि होवै सो नामु बूझै काटे दुरमति फाहा हे ॥ १२ ॥ गुरमुखि उपजै साचि समावै ॥ ना मरि जंमै न जूनी पावै ॥ गुरमुखि सदा रहहि रंगि राते अनदिनु लैदे लाहा हे ॥ १३ ॥ गुरमुखि भगत सोहहि दरबारे ॥ सची बाणी सबदि सवारे ॥ अनदिनु गुण गावै दिनु राती सहज सेती घरि जाहा हे ॥ १४ ॥ सतिगुरु पूरा सबदु सुणाए ॥ अनदिनु भगति करहु लिव लाए ॥ हरि गुण गावहि सद ही निरमल निरमल गुण पातिसाहा हे ॥ १५ ॥ गुण का दाता सचा सोई ॥ गुरमुखि विरला बूझै कोई ॥ नानक जनु नामु सलाहे बिगसै सो नामु बेपरवाहा हे ॥ १६ ॥ २ ॥ ११ ॥

जो सतगुरु की सेवा करते हैं, वही खुशकिस्मत हैं और रात-दिन उनकी सच्चे-नाम में लगन लगी रहती है। सुख देने वाला परमात्मा सदैव उनके हृदय में रमण करता है और उनके मन में सच्चे शब्द की उमंग बनी रहती है॥ १॥ यदि कृपा करे तो वह जीव को गुरु से मिला देता है और गुरु परमात्मा का नाम मन में बसा देता है। जब सदा सुख देने वाला परमेश्वर मन में बस जाता है तो ही शब्द द्वारा उसके मन में भक्ति के लिए उत्साह उत्पन्न होता है॥ २॥ अगर कृपा-दृष्टि कर दे तो गुरु से मिलाकर मिला लेता है। जीव शब्द-गुरु द्वारा अहम् एवं ममता को जला देता है। एक प्रभु के प्रेम में लीन वह सदैव मोह-माया से मुक्त रहता है और उसका किसी से कोई वैर-विरोध नहीं रहता॥ ३॥ सतगुरु की सेवा के बिना अज्ञानता का घोर अंधेरा बना रहता

है और शब्द के बिना कोई संसार-सागर में से पार नहीं हो सकता। जो शब्द में लीन रहते हैं वही महा वैरागी हैं और शब्द द्वारा लाभ पाते हैं॥ ४॥ दुख-सुख तो परमात्मा ने जन्म से पूर्व ही भाग्य में लिखा हुआ है और उसने ही द्वैतभाव का प्रसार किया है। जो गुरुमुख बन जाता है, वह मोह-माया से निर्लिप्त रहता है, किन्तु मनमुखी जीव का अल्पमात्र भी विश्वास नहीं किया जा सकता॥ ५॥ मनमुख वही हैं जो शब्द के भेद को नहीं पहचानते और गुरु के भय का महत्व नहीं जानते। भय के बिना निर्भय सत्य कैसे पाया जा सकता है? यम मनमुख की जीवन-साँसें ही निकाल लेगा॥ ६॥ भयंकर यम को मारा नहीं जा सकता किन्तु गुरु के शब्द से वह जीव के निकट नहीं आता। जब शब्द सुनता है तो दूर से ही भाग जाता है कि शायद बेपरवाह परमेश्वर मुझे समाप्त न कर दे॥ ७॥ समूचे विश्व में परमात्मा का ही शासन है, उसका हुक्म सब पर चलता है, फिर यह यम बेचारा क्या कर सकता है? यह तो उसका हुक्म मानने वाला सेवक है, हुक्म का पालन करता है और हुक्म से ही जीव की जीवन-साँसें निकालता है॥ ८॥ गुरुमुख को ज्ञान है कि सच्चे परमेश्वर ने ही सृष्टि-रचना की है और समूचा जगत्-प्रसार उसका ही है। जो गुरुमुख होता है, वह सत्य को बूझ लेता है और सच्चे शब्द द्वारा ही उसे सुख उपलब्ध होता है॥ ६॥ गुरुमुख समझ लेता है कि विधाता कर्मों के अनुसार ही फल प्रदान करता है और उसने शब्द-गुरु के भेद को चारों युग में पहचान लिया है। वह जन्म-मरण के चक्र से छूट जाता है और शब्द में ही लीन रहता है॥ १०॥ गुरुमुख नाम एवं शब्द की ही स्तुति करता है, जो अगम्य-मन वाणी से परे एवं बेपरवाह है। चारों युग एक हरि-नाम ही जीवों का उद्धार करने वाला है और शब्द द्वारा ही नाम का व्यापार होता है॥ ११॥ गुरुमुख सदैव ही शान्ति एवं सुख प्राप्त करता है और अपने हृदय में हरि-नाम को बसा लेता है। जो गुरुमुख होता है, वह नाम के भेद को बूझ लेता है और उसकी दुर्मति का फंदा कट जाता है॥ १२॥ गुरुमुख सत्य से उत्पन्न होकर सत्य में ही विलीन हो जाता है। वह न ही जन्मता-मरता है और न ही योनि-चक्र में पड़ता है। गुरुमुख सदा ही परमात्मा के रंग में लीन रहता है और नित्य नाम का लाभ प्राप्त करता है॥ १३॥ गुरुमुख भक्त प्रभु दरबार में सुन्दर लगते हैं और सच्ची वाणी शब्द द्वारा उनका जीवन-संवार देती है। वे दिन-रात परमात्मा के गुण गाते हैं और सहज ही अपने सच्चे घर पहुँच जाते हैं॥ १४॥ पूर्ण सतिगुरु शब्द सुनाता है, उपदेश करता है कि नित्य ध्यान लगाकर भगवान् की भक्ति करो। जो भगवान् का गुणगान करते हैं, वे सदैव ही निर्मल हैं और निर्मल गुणों के कारण बादशाह बन जाते हैं॥ १५॥ गुणों का दाता वह सत्यस्वरूप परमेश्वर ही है, इस रहस्य को कोई विरला गुरुमुख ही बूझता है। हे नानक! परमात्मा का नाम बेपरवाह है, वह तो नाम का स्तुतिगान करके ही प्रसन्न रहता है॥ १६॥ २॥ ११॥

मारू महला ३ ॥ हरि जीउ सेविहु अगम अपारा ॥ तिस दा अंतु न पाईऐ पारावारा ॥ गुर परसादि रविआ घट अंतरि तितु घटि मति अगाहा हे ॥ १ ॥ सभ महि वरतै एको सोई ॥ गुर परसादी परगटु होई ॥ सभना प्रतिपाल करे जगजीवनु देदा रिजकु संबाहा हे ॥ २ ॥ पूरै सतिगुरि बूझि बुझाइआ ॥ हुकमे ही सभु जगतु उपाइआ ॥ हुकमु मंने सोई सुखु पाए हुकमु सिरि साहा पातिसाहा हे ॥ ३ ॥ सचा सतिगुरु सबदु अपारा ॥ तिस दै सबदि निसतरै संसारा ॥ आपे करता करि करि वेखै देदा सास गिराहा हे ॥ ४ ॥ कोटि मधे किसहि बुझाए ॥ गुर कै सबदि रते रंगु लाए ॥ हरि सालाहहि सदा सुखदाता हरि बखसे भगति सलाहा हे ॥ ५ ॥ सतिगुरु सेवहि से जन साचे ॥ जो मरि जंमहि काचनि काचे ॥ अगम अगोचरु वेपरवाहा भगति वछलु अथाहा हे ॥ ६ ॥ सतिगुरु पूरा साचु द्रिड़ाए ॥ सचै

सबदि सदा गुण गाए ॥ गुणदाता वरतै सभ अंतरि सिरि सिरि लिखदा साहा हे ॥ ७ ॥ सदा हदूरि गुरमुखि जापै ॥ सबदे सेवै सो जनु ध्रापै ॥ अनदिनु सेवहि सची बाणी सबदि सचै ओमाहा हे ॥ ८ ॥ अगिआनी अंधा बहु करम द्रिड़ाए ॥ मनहठि करम फिरि जोनी पाए ॥ बिखिआ कारणि लबु लोभु कमावहि दुरमति का दोराहा हे ॥ ६ ॥ पूरा सतिगुरु भगति द्रिड़ाए ॥ गुर कै सबदि हरि नामि चितु लाए ॥ मनि तनि हरि रविआ घट अंतरि मनि भीनै भगति सलाहा हे ॥ १० ॥ मेरा प्रभु साचा असुर संघारणु ॥ गुर कै सबदि भगति निसतारणु ॥ मेरा प्रभु साचा सद ही साचा सिरि साहा पातिसाहा हे ॥ ११ ॥ से भगत सचे तेरै मनि भाए ॥ दरि कीरतनु करहि गुर सबदि सुहाए ॥ साची बाणी अनदिनु गावहि निरधन का नामु वेसाहा हे ॥ १२ ॥ जिन आपे मेलि विछोड़हि नाही ॥ गुर कै सबदि सदा सालाही ॥ सभना सिरि तू एको साहिबु सबदे नामु सलाहा हे ॥ १३ ॥ बिनु सबदै तुधुनो कोई न जाणी ॥ तुधु आपे कथी अकथ कहाणी ॥ आपे सबदु सदा गुरु दाता हरि नामु जपि संबाहा हे ॥ १४ ॥ तू आपे करता सिरजणहारा ॥ तेरा लिखिआ कोइ न मेटणहारा ॥ गुरमुखि नामु देवहि तू आपे सहसा गणत न ताहा हे ॥ १५ ॥ भगत सचे तेरै दरवारे ॥ सबदे सेवनि भाइ पिआरे ॥ नानक नामि रते बैरागी नामे कारजु सोहा हे ॥ १६ ॥ ३ ॥ १२ ॥

अगम्य अपार ईश्वर की उपासना करो; उसका कोई अन्त एवं आर-पार पाया नहीं जा सकता। गुरु की कृपा से वह जिसके हृदय में बस जाता है, उस हृदय में अथाह ज्ञान उत्पन्न हो जाता है॥ १॥ सब जीवों में एक परमेश्वर ही व्याप्त है और गुरु की कृपा से वह प्रगट हो जाता है। जगत् को जीवन देने वाला परमात्मा सबका पोषण करता है और सब जीवों को रिजक देकर संभाल करता है॥ २॥ पूर्ण सतिगुरु ने बूझकर यही समझाया है कि ईश्वर के हुक्म से समूचा जगत् उत्पन्न हुआ है। जो हुक्म मानता है, उसे ही सुख प्राप्त होता है और उसका हुक्म शाह-बादशाह सब पर चलता है॥ ३॥ सच्चे सतगुरु का शब्द अपार है, उसके शब्द से संसार का उद्धार होता है। स्रष्टा स्वयं ही पैदा कर करके जीवों की देखभाल करता है और उन्हें श्वास एवं भोजन देता है॥ ४॥ करोड़ों में से किसी विरले को ही वह ज्ञान प्रदान करता है, ऐसा पुरुष गुरु के शब्द द्वारा प्रभु के रंग में ही लीन रहता है। जिसे भक्ति एवं स्तुतिगान का वरदान प्रदान करता है, वह सदा सुख देने वाले ईश्वर का ही स्तुतिगान करता रहता है॥ ५॥ वही मनुष्य सच्चे हैं, जो सतिगुरु की सेवा करते हैं। जो जन्मते-मरते रहते हैं, वे कच्चे ही हैं। ईश्वर अपहुँच, मन-वाणी से परे, बे-परवाह, भक्तवत्सल एवं गुणों का अथाह सागर है॥ ६॥ पूर्ण सतगुरु ने जिसे सत्य-नाम दृढ़ करवा दिया है, वह सच्चे शब्द द्वारा सदैव ही प्रभु का गुणगान करता रहता है। गुणदाता परमेश्वर सबके अन्तर्मन में व्याप्त है और वह सबके माथे पर भाग्य एवं मृत्यु का समय लिखता है॥ ७॥ गुरुमुख जीव को वह सदैव ही आस-पास अनुभव होता है। जो ब्रह्म-शब्द की उपासना करता है, वह सदा तृप्त रहता है। जो मनुष्य नित्य सच्ची वाणी द्वारा परमात्मा की सेवा करता है, सच्चे शब्द द्वारा उसके मन में भक्ति के लिए उत्साह बना रहता है॥ ८॥ अन्धा अज्ञानी आदमी अनेक कर्म करता है और मन के हठ से कर्म करके पुनः योनियों में ही पड़ता है। विषय-विकारों के कारण वह लालच-लोभ का आचरण अपनाता है, जिससे दुर्मति के दोराहे पर पड़ा रहता है॥ ६॥ पूर्ण सतिगुरु ही भक्ति दृढ़ करवाता है। जो गुरु के उपदेश से हरि-नाम में चित लगाता है, उसके ही मन-तन में प्रभु रमण करता है और प्रभु की भक्ति एवं स्तुतिगान से जीव का मन भीगता है॥ १०॥ मेरा सच्चा प्रभु (विकार रूपी) असुरों का संहार करने वाला है। गुरु के शब्द द्वारा भक्ति करने से ही संसार-सागर से मुक्ति मिलती है। मेरा प्रभु सत्य है, सदैव ही परम सत्य

है और संसार के शाह-बादशाहों पर भी उसका ही हुक्म चलता है॥ ११॥ हे भगवान्! वही भक्तजन सच्चे हैं, जो तेरे मन को भा गए हैं, वे तेरे दर पर कीर्तिगान करते हैं और गुरु शब्द से ही सुन्दर लगते हैं। वे प्रतिदिन तेरी सच्ची वाणी गाते हैं और तेरा नाम ही उन निर्धनों की पूंजी है॥ १२॥ जिन्हें तू स्वयं ही मिला लेता है, फिर खुद से जुदा नहीं करता। वे गुरु के उपदेश सदा तेरी प्रशंसा करते रहते हैं। समूचे विश्व में एक तू ही सबका मालिक है और वे शब्द-गुरु द्वारा तेरे नाम का ही स्तुतिगान करते हैं॥ १३॥ शब्द-गुरु के बिना तुझे कोई भी जान नहीं सकता। तूने अपनी अकथनीय कथा स्वयं ही कही है। तू स्वयं ही शब्द है, सदा ही नाम देने वाला गुरु है और स्वयं ही हरि नाम जप कर वितरित करता है॥ १४॥ तू स्वयं ही सृजनहार कर्ता है, तेरा लिखा कोई मिटाने वाला नहीं है। तू स्वयं ही गुरुमुख जीवों को नाम देता है और फिर उनके लिए कर्मालेख देने का भय नहीं रहता॥ १५॥ सच्चे भक्त तेरे दरबार पर श्रद्धा-प्रेम से शब्द की वंदना करते हैं। हे नानक! वे वैरागी हुए तेरे नाम में लीन रहते हैं और नाम द्वारा उनका प्रत्येक कार्य सुन्दर हो जाता है॥ १६॥ ३॥ १२॥

मारू महला ३ ॥ मेरै प्रभि साचै इकु खेलु रचाइआ ॥ कोइ न किस ही जेहा उपाइआ ॥ आपे फरकु करे वेखि विगसै सभि रस देही माहा हे ॥ १ ॥ वाजै पउणु तै आपि वजाए ॥ सिव सकती देही महि पाए ॥ गुर परसादी उलटी होवै गिआन रतनु सबदु ताहा हे ॥ २ ॥ अंधेरा चानणु आपे कीआ ॥ एको वरतै अवरु न बीआ ॥ गुर परसादी आपु पछाणै कमलु बिगसै बुधि ताहा हे ॥ ३ ॥ अपणी गहण गति आपे जाणै ॥ होरु लोकु सुणि सुणि आखि वखाणै ॥ गिआनी होवै सु गुरमुखि बूझै साची सिफति सलाहा हे ॥ ४ ॥ देही अंदरि वसतु अपारा ॥ आपे कपट खुलावणहारा ॥ गुरमुखि सहजे अंम्रितु पीवै त्रिसना अगनि बुझाहा हे ॥ ५ ॥ सभि रस देही अंदरि पाए ॥ विरले कउ गुरु सबदु बुझाए ॥ अंदरु खोजे सबदु सालाहे बाहरि काहे जाहा हे ॥ ६ ॥ विणु चाखे सादु किसै न आइआ ॥ गुर कै सबदि अंम्रितु पीआइआ ॥ अंम्रितु पी अमरा पदु होए गुर कै सबदि रसु ताहा हे ॥ ७ ॥ आपु पछाणै सो सभि गुण जाणै ॥ गुर कै सबदि हरि नामु वखाणै ॥ अनदिनु नामि रता दिनु राती माइआ मोहु चुकाहा हे ॥ ८ ॥ गुर सेवा ते सभु किछु पाए ॥ हउमै मेरा आपु गवाए ॥ आपे क्रिपा करे सुखदाता गुर कै सबदे सोहा हे ॥ ९ ॥ गुर का सबदु अंम्रित है बाणी ॥ अनदिनु हरि का नामु वखाणी ॥ हरि हरि सचा वसै घट अंतरि सो घटु निरमलु ताहा हे ॥ १० ॥ सेवक सेवहि सबदि सलाहहि ॥ सदा रंगि राते हरि गुण गावहि ॥ आपे बखसे सबदि मिलाए परमल वासु मनि ताहा हे ॥ ११ ॥ सबदे अकथु कथे सालाहे ॥ मेरे प्रभ साचे वेपरवाहे ॥ आपे गुणदाता सबदि मिलाए सबदै का रसु ताहा हे ॥ १२ ॥ मनमुखु भूला ठउर न पाए ॥ जो धुरि लिखिआ सु करम कमाए ॥ बिखिआ राते बिखिआ खोजै मरि जनमै दुखु ताहा हे ॥ १३ ॥ आपे आपि आपि सालाहे ॥ तेरे गुण प्रभ तुझ ही माहे ॥ तू आपि सचा तेरी बाणी सची आपे अलखु अथाहा हे ॥ १४ ॥ बिनु गुर दाते कोइ न पाए ॥ लख कोटी जे करम कमाए ॥ गुर किरपा ते घट अंतरि वसिआ सबदे सचु सालाहा हे ॥ १५ ॥ से जन मिले धुरि आपि मिलाए ॥ साची बाणी सबदि सुहाए ॥ नानक जनु गुण गावै नित साचे गुण गावह गुणी समाहा हे ॥ १६ ॥ ४ ॥ १३ ॥

मेरे सच्चे प्रभु ने एक अद्भुत खेल रचाया है और कोई भी जीव किसी दूसरे जैसा उत्पन्न नहीं किया। वह स्वयं ही जीवों के रंग, रूप, चेहरे में अन्तर डालकर उन्हें देखकर प्रसन्न होता है और सभी रस मानव-शरीर में ही हैं॥ १॥ हे परमात्मा ! तूने स्वयं ही शरीर में प्राणों का संचार किया है। शिव (जीव) शक्ति (माया) को शरीर में तूने ही डाला है। गुरु की कृपा से यदि जीव का मन माया की ओर से विरक्त हो जाए तो अमूल्य रत्न रूपी शब्द का ज्ञान प्राप्त हो जाता है॥ २॥ अँधेरा एवं उजाला तूने स्वयं ही उत्पन्न किया है, उनमें एक तू ही व्याप्त है और तेरे अतिरिक्त अन्य कोई नहीं है। गुरु की कृपा से जो मनुष्य अपने आपको पहचान लेता है, उसका हृदय-कमल खिल जाता है और उसे उत्तम बुद्धि प्राप्त हो जाती है॥ ३॥ अपनी गहरी गति सीमा को तू स्वयं ही जानता है। अन्य लोग सुन-सुनकर व्याख्या करते हैं। जो ज्ञानवान होता है, वह गुरुमुख बनकर इस रहस्य को बूझ लेता है और परमात्मा की सच्ची स्तुति करता रहता है॥ ४॥ मानव-शरीर में ही बेअंत वस्तुएं हैं और ईश्वर स्वयं ही कपाट खोलने वाला है। गुरुमुख सहजावस्था में नामामृत का पान करता है और उसकी तृष्णाग्नि बुझ जाती है॥ ५॥ परमात्मा ने सभी रस शरीर में ही डाले हैं और शब्द-गुरु द्वारा वह किसी विरले पुरुष को ही यह तथ्य समझाता है। जब मनुष्य अपने अन्तर्मन को खोजता है तो वह शब्द की ही स्तुति करता है, फिर वह बाहर क्यों जाएगा॥ ६॥ नामामृत को चखे बिना किसी को भी उसका स्वाद नहीं आया। ईश्वर ने गुरु के शब्द द्वारा ही नामामृत का पान करवाया है। नामामृत का पान करके वे अमर हो गए हैं और गुरु के शब्द द्वारा ही उन्हें रस प्राप्त हुआ है॥ ७॥ जो अपने आप को पहचान लेता है, वह सभी गुणों को जान लेता है। वह गुरु के शब्द द्वारा हरि-नाम का ही बखान करता है। वह दिन-रात हरि-नाम में लीन रहकर माया-मोह को मिटा देता है॥ ८॥ गुरु की सेवा से मनुष्य सब कुछ प्राप्त कर लेता है, वह अपने मन से अहंत्व, ममत्व और अपनेपन की भावना को दूर कर देता है। सुख देने वाला प्रभु स्वयं ही कृपा करता है और गुरु के शब्द से ही जीव शोभा का पात्र बनता है॥ ९॥ गुरु का शब्द अमृतवाणी है। जो व्यक्ति नित्य परमात्मा का नाम जपता है, उसके हृदय में सच्चा परमेश्वर बस जाता है और उसका हृदय निर्मल हो जाता है॥ १०॥ भक्त हरदम भगवान् की अर्चना में लीन रहते हैं, वे शब्द द्वारा उसका स्तुतिगान करते हैं और रंग में लीन होकर भगवान के गुण गाते हैं। वह स्वयं ही कृपा करके शब्द द्वारा मिला लेता है और उनके मन में चन्दन की सुगन्धि का वास हो जाता है॥ ११॥ जो व्यक्ति शब्द द्वारा मेरे सच्चे बेपरवाह प्रभु की अकथनीय कथा एवं स्तुति करता है, वह गुणदाता स्वयं ही शब्द द्वारा उसे अपने साथ मिला लेता है और उसे ही शब्द का स्वाद मिलता है॥ १२॥ मनमुखी जीव भटका हुआ है, अतः उसे कहीं भी सुख का ठिकाना नहीं मिलता। जो विधाता ने भाग्य में लिख दिया है, वह वही कर्म करता है। विषय-विकारों में लीन रहकर वह विषय-विकारों को ही खोजता है, फलस्वरूप जन्म-मरण का दुख भोगता है॥ १३॥ हे प्रभु ! वास्तव में तू स्वयं ही अपनी प्रशंसा करता है, तेरे गुण तुझ में ही हैं। तू स्वयं ही सच्चा है, तेरी वाणी भी सच्ची है और तू स्वयं ही अलख और अथाह है॥ १४॥ दाता गुरु के बिना कोई भी (भगवान् को) पा नहीं सकता, चाहे जीव लाखों करोड़ धर्म-कर्म भी करे। गुरु की कृपा से परमात्मा जिसके हृदय में बस गया है, वह शब्द द्वारा सत्य की ही स्तुति करता है॥ १५॥ प्रभु को वही मनुष्य मिले हैं, जिन्हें उसने प्रारम्भ से लिखे हुक्म से स्वयं ही मिला लिया है। वे सच्ची वाणी एवं शब्द द्वारा सुन्दर बन गए हैं। दास नानक नित्य सत्यस्वरूप परमात्मा के गुण गाता है और गुणगान करके उस गुणनिधान में ही लीन हो जाता है॥ १६॥ ४॥ १३॥

मारू महला ३ ॥ निहचलु एकु सदा सचु सोई ॥ पूरे गुर ते सोझी होई ॥ हरि रसि भीने सदा धिआइनि गुरमति सीलु संनाहा हे ॥ १ ॥ अंदरि रंगु सदा सचिआरा ॥ गुर कै सबदि हरि नामि पिआरा ॥ नउ निधि नामु वसिआ घट अंतरि छोडिआ माइआ का लाहा हे ॥ २ ॥ रईअति राजे दुरमति दोई ॥ बिनु सतिगुर सेवे एकु न होई ॥ एकु धिआइनि सदा सुखु पाइनि निहचलु राजु तिनाहा हे ॥ ३ ॥ आवणु जाणा रखै न कोई ॥ जंमणु मरणु तिसै ते होई ॥ गुरमुखि साचा सदा धिआवहु गति मुकति तिसै ते पाहा हे ॥ ४ ॥ सचु संजमु सतिगुरू दुआरै ॥ हउमै क्रोधु सबदि निवारै ॥ सतिगुरु सेवि सदा सुखु पाईऐ सीलु संतोखु सभु ताहा हे ॥ ५ ॥ हउमै मोहु उपजै संसारा ॥ सभु जगु बिनसै नामु विसारा ॥ बिनु सतिगुर सेवे नामु न पाईऐ नामु सचा जगि लाहा हे ॥ ६ ॥ सचा अमरु सबदि सुहाइआ ॥ पंच सबद मिलि वाजा वाइआ ॥ सदा कारजु सचि नामि सुहेला बिनु सबदै कारजु केहा हे ॥ ७ ॥ खिन महि हसै खिन महि रोवै ॥ दूजी दुरमति कारजु न होवै ॥ संजोगु विजोगु करतै लिखि पाए किरतु न चलै चलाहा हे ॥ ८ ॥ जीवन मुकति गुर सबदु कमाए ॥ हरि सिउ सद ही रहै समाए ॥ गुर किरपा ते मिलै वडिआई हउमै रोगु न ताहा हे ॥ ६ ॥ रस कस खाए पिंडु वधाए ॥ भेख करै गुर सबदु न कमाए ॥ अंतरि रोगु महा दुखु भारी बिसटा माहि समाहा हे ॥ १० ॥ बेद पड़हि पड़ि बादु वखाणहि ॥ घट महि ब्रहमु तिसु सबदि न पछाणहि ॥ गुरमुखि होवै सु ततु बिलोवै रसना हरि रसु ताहा हे ॥ ११ ॥ घरि वथु छोडहि बाहरि धावहि ॥ मनमुख अंधे सादु न पावहि ॥ अन रस राती रसना फीकी बोले हरि रसु मूलि न ताहा हे ॥ १२ ॥ मनमुख देही भरमु भतारो ॥ दुरमति मरै नित होइ खुआरो ॥ कामि क्रोधि मनु दूजै लाइआ सुपनै सुखु न ताहा हे ॥ १३ ॥ कंचन देही सबदु भतारो ॥ अनदिनु भोग भोगे हरि सिउ पिआरो ॥ महला अंदरि गैर महलु पाए भाणा बुझि समाहा हे ॥ १४ ॥ आपे देवै देवणहारा ॥ तिसु आगै नही किसै का चारा ॥ आपे बखसे सबदि मिलाए तिस दा सबदु अथाहा हे ॥ १५ ॥ जीउ पिंडु सभु है तिसु केरा ॥ सचा साहिबु ठाकुरु मेरा ॥ नानक गुरबाणी हरि पाइआ हरि जपु जापि समाहा हे ॥ १६ ॥ ५ ॥ १४ ॥

केवल ईश्वर ही निश्चल है, वह सदैव शाश्वत है, इस बात की सूझ पूर्ण गुरु से ही प्राप्त होती है। जो व्यक्ति हरि-रस में भीगे हुए सदा ही उसका चिंतन करते रहते हैं, गुरु-मतानुसार शील आचरण ही उनका कवच बन जाता है॥ १॥ जिसके मन में प्रभु का रंग है, वह सदा सत्यवादी है। गुरु के शब्द से उसे हरि का नाम ही प्यारा लगता है। नौ निधियाँ प्रदान करने वाला हरि-नाम उसके हृदय में बस गया है और उसने माया का लोभ मन से छोड़ दिया है॥ २॥ दुर्मति के कारण राजा और प्रजा दुविधा में पड़े रहते हैं। सतिगुरु की सेवा किए बिना कोई भी प्रभु से एक रूप नहीं होता। जो एक ईश्वर का ध्यान करते हैं, वे सदैव सुख प्राप्त करते हैं और उनका ही शासन निश्चल रहता है॥ ३॥ आवागमन से कोई नहीं बच सकता और इससे जन्म-मरण होता रहता है। गुरु के सान्निध्य में सदैव ईश्वर का ध्यान करो, इससे ही परमगति एवं मुक्ति मिलती है॥ ४॥ सत्य एवं संयम सतिगुरु के द्वारा ही मिलते हैं और शब्द से ही अहम् एवं क्रोध का निवारण होता है। सतिगुरु की सेवा से सदैव सुख प्राप्त होता है और शील आचरण एवं संतोष इत्यादि शुभ गुण उत्पन्न हो जाते हैं॥ ५॥ अभिमान एवं मोह में संसार उत्पन्न होता है और प्रभु-नाम को भुला कर समूचा जगत् नाश हो जाता है। सतिगुरु की सेवा के बिना नाम प्राप्त नहीं होता और जगत् में नाम का ही सच्चा लाभ है॥ ६॥ जिसे शब्द द्वारा परमात्मा का हुक्म सुन्दर लगता है, अनाहत ध्वनियों वाले पाँच शब्दों ने मिलकर उसके मन में बाजा बजाया है। सच्चे नाम का कार्य सदा

आनंददायक है और शब्द के बिना कार्य कैसे साकार हो सकता है॥ ७॥ मनुष्य पल में ही हँसने लग पड़ता है और पल में ही रोने लगता है अर्थात् खुशी एवं गम महसूस करता है। द्वैतभाव-दुर्मति के कारण उसका कार्य सिद्ध नहीं होता। संयोग एवं वियोग ईश्वर ने पूर्व से ही लिख दिया है और भाग्य बदलने से भी बदला नहीं जा सकता॥ ८॥ जो शब्द-गुरु के अनुसार आचरण अपनाता है, उसे ही जीवन-मुक्ति प्राप्त होती है। ऐसा व्यक्ति सदैव ईश्वर में लीन रहता है। गुरु की कृपा से ही उसे लोक-परलोक में बड़ाई मिलती है और उसे अभिमान का रोग नहीं लगता॥ ६॥ जो व्यक्ति मीठे-नमकीन व्यंजन खाकर अपना शरीर बढ़ाता है, वह अनेक आडम्बर करता है, परन्तु शब्द-गुरु के अनुसार आचरण नहीं करता। उसके अन्तर्मन में रोग एवं महा दुख लग जाता है और अन्त में वह विष्ठा में ही गल-सड़ जाता है॥ १०॥ पण्डित वेदों का अध्ययन करता है और तदन्तर वाद-विवाद की बातें करता रहता है। ब्रह्म तो हृदय में ही है किन्तु वह शब्द द्वारा उसकी पहचान नहीं करता। जो गुरुमुख होता है वही परम-तत्व का मंथन करता है और उसकी रसना हरि-नाम रस का पान करती रहती है॥ ११॥ जो मनुष्य हृदय-घर में मौजूद नाम रूपी वस्तु को छोड़कर बाहर भटकता रहता है, ऐसे अन्धे मनमुखी को नाम का स्वाद प्राप्त नहीं होता। उसकी रसना अन्य रसों में लीन होकर रुक्ष बोलती है और हरि-नाम रस का उसे बिल्कुल स्वाद नहीं मिलता॥ १२॥ मनमुख जीवात्मा का स्वामी भ्रम है और वह दुर्मति के कारण मरती एवं नित्य ही ख्वार होती है। वह अपना मन काम, क्रोध एवं द्वैतभाव में लगा लेती है, जिससे उसे सपने में भी सुख हासिल नहीं होता॥ १३॥ जो जीवात्मा कंचन सरीखी है, उसका स्वामी शब्द है। वह प्रभु के प्रेम में लीन होकर नित्य भोग भोगती है। यदि कोई अन्य जीव के शरीर रूपी महल में प्रभु का दसम द्वार प्राप्त कर ले तो वह ईश्वरेच्छा को समझ कर उस में ही लीन हो जाती है॥ १४॥ वह दातार स्वयं ही देता रहता है और उसके आगे किसी का कोई उपाय नहीं चल सकता। वह स्वयं ही क्षमा करके जीव को शब्द द्वारा मिला लेता है और उसका शब्द अटल है॥ १५॥ यह प्राण एवं शरीर सब उसका ही दिया हुआ है और वह सच्चा साहिब ही मेरा मालिक है। हे नानक ! गुरु की वाणी द्वारा मैंने परमेश्वर को पा लिया है और उसका जाप कर उसमें ही लीन हूँ॥ १६॥ ५॥ १४॥

मारू महला ३ ॥ गुरमुखि नाद बेद बीचारु ॥ गुरमुखि गिआनु धिआनु आपारु ॥ गुरमुखि कार करे प्रभ भावै गुरमुखि पूरा पाइदा ॥ १ ॥ गुरमुखि मनूआ उलटि परावै ॥ गुरमुखि बाणी नादु वजावै ॥ गुरमुखि सचि रते बैरागी निज घरि वासा पाइदा ॥ २ ॥ गुर की साखी अंम्रित भाखी ॥ सचै सबदे सचु सुभाखी ॥ सदा सचि रंगि राता मनु मेरा सचे सचि समाइदा ॥ ३ ॥ गुरमुखि मनु निरमलु सत सरि नावै ॥ मैलु न लागै सचि समावै ॥ सचो सचु कमावै सद ही सची भगति द्रिड़ाइदा ॥ ४ ॥ गुरमुखि सचु बैणी गुरमुखि सचु नैणी ॥ गुरमुखि सचु कमावै करणी ॥ सद ही सचु कहै दिनु राती अवरा सचु कहाइदा ॥ ५ ॥ गुरमुखि सची ऊतम बाणी ॥ गुरमुखि सचो सचु वखाणी ॥ गुरमुखि सद सेवहि सचो सचा गुरमुखि सबदु सुणाइदा ॥ ६ ॥ गुरमुखि होवै सु सोझी पाए ॥ हउमै माइआ भरमु गवाए ॥ गुर की पउड़ी ऊतम ऊची दरि सचै हरि गुण गाइदा ॥ ७ ॥ गुरमुखि सचु संजमु करणी सारु ॥ गुरमुखि पाए मोख दुआरु ॥ भाइ भगति सदा रंगि राता आपु गवाइ समाइदा ॥ ८ ॥ गुरमुखि होवै मनु खोजि सुणाए ॥ सचै नामि सदा लिव लाए ॥ जो तिसु भावै सोई करसी जो सचे मनि भाइदा ॥ ६ ॥ जा तिसु भावै सतिगुरू मिलाए ॥ जा तिसु भावै ता मंनि वसाए ॥ आपणै भाणै सदा रंगि राता भाणै मंनि वसाइदा ॥ १० ॥ मनहठि करम करे सो छीजै ॥ बहुते भेख करे नही भीजै ॥ बिखिआ राते दुखु

कमावहि दुखे दुखि समाइदा ॥ ११ ॥ गुरमुखि होवै सु सुखु कमाए ॥ मरण जीवण की सोझी पाए ॥ मरणु जीवणु जो सम करि जाणै सो मेरे प्रभ भाइदा ॥ १२ ॥ गुरमुखि मरहि सु हहि परवाणु ॥ आवण जाणा सबदु पछाणु ॥ मरै न जंमै ना दुखु पाए मन ही मनहि समाइदा ॥ १३ ॥ से वडभागी जिनी सतिगुरु पाइआ ॥ हउमै विचहु मोहु चुकाइआ ॥ मनु निरमलु फिरि मैलु न लागै दरि सचै सोभा पाइदा ॥ १४ ॥ आपे करे कराए आपे ॥ आपे वेखै थापि उथापे ॥ गुरमुखि सेवा मेरे प्रभ भावै सचु सुणि लेखै पाइदा ॥ १५ ॥ गुरमुखि सचो सचु कमावै ॥ गुरमुखि निरमलु मैलु न लावै ॥ नानक नामि रते वीचारी नामे नामि समाइदा ॥ १६ ॥ १ ॥ १५ ॥

गुरुमुख का शब्द वेदों का ज्ञान एवं चिन्तन है, गुरुमुख को ही अपार ज्ञान एवं ध्यान की लब्धि होती है। जो वह कार्य करता है वही प्रभु को अच्छा लगता है और गुरुमुख ही पूर्ण परमेश्वर को पाता है॥ १॥ गुरु-मुख संसार की वृत्तियों से मन को बदल देता है। गुरुमुख वाणी का नाद बजाता रहता है और सत्य में लीन रहकर वैरागी होकर सच्चे घर में वास प्राप्त कर लेता है॥ २॥ गुरु की शिक्षा अमृत वाणी है और सच्चे शब्द द्वारा सत्य का ही उच्चारण किया है। सदा सत्य के रंग में लीन मेरा मन परम-सत्य में ही समा जाता है॥ ३॥ गुरुमुख का निर्मल मन सत्य के सरोवर में स्नान करता है, उसे कोई मैल नहीं लगती और वह सत्य में ही समा जाता है। वह सदैव सत्य कर्म करता है और सच्ची भक्ति ही मन में बसाता है॥ ४॥ गुरु-मुख सत्य ही बताता है और आँखों से सत्य ही देखता है। वह सत्य का ही जीवन-आचरण अपनाता है। वह सदैव सत्य बोलता है और अन्यों को सत्य बोलने के लिए प्रेरित करता है॥ ५॥ वह सच्ची एवं उत्तम वाणी पढ़ता, बोलता एवं गाता रहता है और परम सत्य का ही बखान करता है। वह सदैव परम-सत्य परमेश्वर की अर्चना करता है और दूसरों को भी शब्द सुनाता रहता है॥ ६॥ जो गुरुमुख होता है, उसे ज्ञान प्राप्त हो जाता है। वह मन में से अभिमान, माया एवं भ्रम को दूर कर देता है। गुरु की नाम रूपी सीढ़ी सबसे ऊँची एवं श्रेष्ठ है और गुरु सत्य के दर पर प्रभु के गुण गाता रहता है॥ ७॥ वह सत्य एवं संयम वाला जीवन-आचरण अपनाता है और उसे मोक्ष-द्वार प्राप्त हो जाता है। वह प्रेम-भक्ति के रंग में सदा लीन रहता है और अहम् को मिटाकर सत्य में समाहित हो जाता है॥ ८॥ जो गुरुमुख होता है, वह मन को खोजकर नाम के बारे में दूसरों को सुनाता है। वह सदा ही सत्य नाम में लगन लगाता है। जो परमात्मा को मंजूर है, वह वही करता है और जो सच्चे के मन को अच्छा लगता है॥ ६॥ यदि उसे स्वीकार हो तो वह सतगुरु से मिला देता है। यदि उसे उपयुक्त लगे तो मन में नाम बसा देता है। वह स्वेच्छा में सदा ही रंग में लीन रहता है और स्वेच्छा से मन में आ बसता है॥ १०॥ जो व्यक्ति मन के हठ से कर्म करता है, वह बर्बाद हो जाता है। अनेक दिखावे करने से भी उसका मन प्रभु-रंग में नहीं भीगता। वह विषय-विकारों में लीन रहकर दुख ही भोगता है और दुखों में ही समा जाता है॥ ११॥ जो गुरुमुख होता है, वह सुख ही हासिल करता है और उसे जीवन-मृत्यु का ज्ञान हो जाता है। जो जीवन-मृत्यु को बराबर समझता है, वही जीव मेरे प्रभु को अच्छा लगता है॥ १२॥ जो गुरुमुख बनकर मृत्यु को प्राप्त होता है, वही ईश्वर को परवान होता है। वह जन्म एवं मृत्यु को भी ईश्वर का हुक्म ही मानता है। वह न ही मरता है, न ही जन्म लेता है, न ही दुख प्राप्त करता है, अपितु उसकी ज्योति परम-ज्योति में विलीन हो जाती है॥ १३॥ वही खुशकिस्मत हैं, जिन्होंने सच्चे गुरु को पाया है। उन्होंने मन में से अभिमान एवं मोह को दूर कर दिया है। उनका मन निर्मल हो जाता है, फिर उन्हें अहम् की मैल नहीं लगती और वे सच्चे द्वार पर ही शोभा प्राप्त करते हैं॥ १४॥ करने एवं करवाने वाला स्वयं ईश्वर ही है। वह स्वयं ही देखभाल करता और बनाकर मिटा भी देता है। गुरुमुख की सेवा

ही मेरे प्रभु को अच्छी लगती है और वह सत्य को सुनकर ही उसे परवान कर लेता है॥ १५॥ गुरुमुख सच्चा जीवन-आचरण अपनाता है, वह निर्मल ही रहता है और उसके मन को कोई मैल नहीं लगती। हे नानक ! हरि-नाम में रत चिंतनशील प्रभु-नाम में ही विलीन हो जाता है॥ १६॥ १॥ १५॥

मारू महला ३ ॥ आपे स्रिसटि हुकमि सभ साजी ॥ आपे थापि उथापि निवाजी ॥ आपे निआउ करे सभु साचा साचे साचि मिलाइदा ॥ १ ॥ काइआ कोटु है आकारा ॥ माइआ मोहु पसरिआ पासारा ॥ बिनु सबदै भसमै की ढेरी खेहू खेह रलाइदा ॥ २ ॥ काइआ कंचन कोटु अपारा ॥ जिसु विचि रविआ सबदु अपारा ॥ गुरमुखि गावै सदा गुण साचे मिलि प्रीतम सुखु पाइदा ॥ ३ ॥ काइआ हरि मंदरु हरि आपि सवारे ॥ तिसु विचि हरि जीउ वसै मुरारे ॥ गुर कै सबदि वणजनि वापारी नदरी आपि मिलाइदा ॥ ४ ॥ सो सूचा जि करोधु निवारे ॥ सबदे बूझै आपु सवारे ॥ आपे करे कराए करता आपे मंनि वसाइदा ॥ ५ ॥ निरमल भगति है निराली ॥ मनु तनु धोवहि सबदि वीचारी ॥ अनदिनु सदा रहै रंगि राता करि किरपा भगति कराइदा ॥ ६ ॥ इसु मन मंदर महि मनूआ धावै ॥ सुखु पलरि तिआगि महा दुखु पावै ॥ बिनु सतिगुर भेटे ठउर न पावै आपे खेलु कराइदा ॥ ७ ॥ आपि अपरंपरु आपि वीचारी ॥ आपे मेले करणी सारी ॥ किआ को कार करे वेचारा आपे बखसि मिलाइदा ॥ ८ ॥ आपे सतिगुरु मेले पूरा ॥ सचै सबदि महाबल सूरा ॥ आपे मेले दे वडिआई सचे सिउ चितु लाइदा ॥ ६ ॥ घर ही अंदरि साचा सोई ॥ गुरमुखि विरला बूझै कोई ॥ नामु निधानु वसिआ घट अंतरि रसना नामु धिआइदा ॥ १० ॥ दिसंतरु भवै अंतरु नही भाले ॥ माइआ मोहि बधा जमकाले ॥ जम की फासी कबहू न तूटै दूजै भाइ भरमाइदा ॥ ११ ॥ जपु तपु संजमु होरु कोई नाही ॥ जब लगु गुर का सबदु न कमाही ॥ गुर कै सबदि मिलिआ सचु पाइआ सचे सचि समाइदा ॥ १२ ॥ काम करोधु सबल संसारा ॥ बहु करम कमावहि सभु दुख का पसारा ॥ सतिगुर सेवहि से सुखु पावहि सचै सबदि मिलाइदा ॥ १३ ॥ पउणु पाणी है बैसंतरु ॥ माइआ मोहु वरतै सभ अंतरि ॥ जिनि कीते जा तिसै पछाणहि माइआ मोहु चुकाइदा ॥ १४ ॥ इकि माइआ मोहि गरबि विआपे ॥ हउमै होइ रहे है आपे ॥ जमकालै की खबरि न पाई अंति गइआ पछुताइदा ॥ १५ ॥ जिनि उपाए सो बिधि जाणै ॥ गुरमुखि देवै सबदु पछाणै ॥ नानक दासु कहै बेनंती सचि नामि चितु लाइदा ॥ १६ ॥ २ ॥ १६ ॥

ईश्वर ने स्वयं ही अपने हुक्म से समूची सृष्टि का निर्माण किया है और स्वयं ही सब बनाया एवं नष्ट किया है। वह सत्यस्वरूप सबके साथ न्याय करता है और सत्यवादियों को सत्य से मिला देता है॥ १॥ यह शरीर किला आकार है, जिसमें माया का मोह फैला हुआ है। शब्द के बिना यह भस्म की ढेरी है और मिट्टी में ही मिल जाता है॥ २॥ यह कंचन शरीर अपार किला है, जिसमें अपार ब्रह्म-शब्द रमण कर रहा है। गुरुमुख सदा सच्चे प्रभु के गुण गाता रहता है और अपने प्रियतम से मिलकर सुख हासिल करता है॥ ३॥ यह शरीर ही परमात्मा का मन्दिर है और वह स्वयं ही इसे सुन्दर बनाता है। इस मन्दिर में परमात्मा ही रहता है। नाम के व्यापारी गुरु के शब्द द्वारा व्यापार करते हैं और प्रभु कृपा कर उन्हें मिला लेता है॥ ४॥ वही शुद्ध है, जो अपने क्रोध को दूर कर देता है। वह शब्द द्वारा बूझकर खुद को सुन्दर बना लेता है। दरअसल करने-करवाने वाला स्वयं परमात्मा ही है और स्वयं ही नाम मन में बसा देता है॥ ५॥ निर्मल भक्ति विलक्षण है, इसमें शब्द का मनन करने से मन-तन शुद्ध हो जाता है। भक्त सदैव प्रभु-प्रेम में लीन रहता है और प्रभु स्वयं ही कृपा करके भक्ति करवाता है॥ ६॥ इस शरीर में मन भटकता रहता है और

पुआल जैसी व्यर्थ माया के लिए आत्मिक सुख को त्याग कर महा दुख प्राप्त करता है। सतिगुरु से साक्षात्कार किए बिना कोई भी सुख का ठिकाना नहीं पा सकता है और परमात्मा स्वयं ही यह लीला करवाता है॥ ७॥ ईश्वर स्वयं ही अपरंपार है, स्वयं ही विचारवान् है और स्वयं ही जीव से शुभ-कर्म करवा कर मिला लेता है। यह जीव बेचारा कोई कार्य क्या कर सकता है, ईश्वर स्वयं ही अनुकंपा करके उसे अपने साथ मिला लेता है॥ ८॥ वह स्वयं ही जीव को पूर्ण सतिगुरु से मिला देता है और उसे सच्चे शब्द द्वारा महाबली शूरवीर बना देता है। वह स्वयं ही मिलाकर बड़ाई प्रदान करता है और जीव का चित सत्य से लगा देता है॥ ६॥ हृदय-घर में वह परम-सत्य ही विद्यमान है और कोई विरला गुरुमुख ही इस रहस्य को बूझता है। जिसके हृदय में नाम रूपी भण्डार बस गया है, उसकी रसना नाम का ही भजन करती रहती है॥ १०॥ सत्य की खोज में मानव देश-देशान्तर भटकता रहता है किन्तु अपने अन्तर्मन में खोज नहीं करता। माया-मोह में बँधा हुआ वह यमकाल के शिकंजे में आ जाता है। वह द्वैतभाव में भटकता रहता है और उसकी यम की फाँसी कभी नहीं टूटती॥ ११॥ जब तक मनुष्य गुरु के शब्द अनुरूप आचरण नहीं अपनाता, तब तक कोई जप, तप, संयम एवं कोई अन्य उपाय उसका कल्याण नहीं कर सकता। जिसे गुरु के शब्द द्वारा सत्य मिल गया है, वह परम-सत्य में ही विलीन हो गया है॥ १२॥ संसार में काम-क्रोध बहुत बली है, जीव अनेक धर्म-कर्म करता रहता है किन्तु यह सब दुखों का ही प्रसार है। जो सतिगुरु की सेवा करते हैं, वही सुख पाते हैं और गुरु उन्हें सच्चे शब्द द्वारा परमात्मा से मिला देता है॥ १३॥ यह शरीर पवन, पानी, अग्नि से बना हुआ है और माया का मोह सब जीवों के भीतर कार्यशील है। जिसने पंच तत्वों से पैदा किया है, जब जीव उस रचनहार को पहचान लेता है तो उसका माया-मोह दूर हो जाता है॥ १४॥ कई जीव माया मोह में अभिमानी बने रहते हैं और अहंकार के कारण अपने आप ही सब कुछ बन बैठते हैं। जिस व्यक्ति को यमकाल की खबर नहीं हुई, वह अंतकाल जगत् में से पछताता ही गया है॥ १५॥ जिसने उत्पन्न किया है, वही युक्ति को जानता है। गुरु जिसे शब्द देता है, वह पहचान लेता है। दास नानक विनती करता है कि वह अपना चित सत्य-नाम में ही लगाता है॥ १६॥ २॥ १६॥

मारू महला ३ ॥ आदि जुगादि दइआपति दाता ॥ पूरे गुर कै सबदि पछाता ॥ तुधुनो सेवहि से तुझहि समावहि तू आपे मेलि मिलाइदा ॥ १ ॥ अगम अगोचरु कीमति नही पाई ॥ जीअ जंत तेरी सरणाई ॥ जिउ तुधु भावै तिवै चलावहि तू आपे मारगि पाइदा ॥ २ ॥ है भी साचा होसी सोई ॥ आपे साजे अवरु न कोई ॥ सभना सार करे सुखदाता आपे रिजकु पहुचाइदा ॥ ३ ॥ अगम अगोचरु अलख अपारा ॥ कोइ न जाणै तेरा परवारा ॥ आपणा आपु पछाणहि आपे गुरमती आपि बुझाइदा ॥ ४ ॥ पाताल पुरीआ लोअ आकारा ॥ तिसु विचि वरतै हुकमु करारा ॥ हुकमे साजे हुकमे ढाहे हुकमे मेलि मिलाइदा ॥ ५ ॥ हुकमै बूझै सु हुकमु सलाहे ॥ अगम अगोचर वेपरवाहे ॥ जेही मति देहि सो होवै तू आपे सबदि बुझाइदा ॥ ६ ॥ अनदिनु आरजा छिजदी जाए ॥ रैणि दिनसु दुइ साखी आए ॥ मनमुखु अंधु न चेतै मूड़ा सिर ऊपरि कालु रूआइदा ॥ ७ ॥ मनु तनु सीतलु गुर चरणी लागा ॥ अंतरि भरमु गइआ भउ भागा ॥ सदा अनंदु सचे गुण गावहि सचु बाणी बोलाइदा ॥ ८ ॥ जिनि तू जाता करम बिधाता ॥ पूरै भागि गुर सबदि पछाता ॥ जति पति सचु सचा सचु सोई हउमै मारि मिलाइदा ॥ ६ ॥ मनु कठोरु दूजै भाइ लागा ॥ भरमे भूला फिरै अभागा ॥ करमु होवै ता सतिगुरु सेवे सहजे ही सुखु पाइदा ॥ १० ॥ लख चउरासीह आपि उपाए ॥ मानस जनमि गुर भगति द्रिड़ाए ॥ बिनु भगती बिसटा विचि वासा बिसटा विचि फिरि पाइदा ॥ ११ ॥ करमु होवै गुरु भगति द्रिड़ाए ॥ विणु करमा किउ

पाइआ जाए ॥ आपे करे कराए करता जिउ भावै तिवै चलाइदा ॥ १२ ॥ सिम्रिति सासत अंतु न जाणै ॥ मूरखु अंधा ततु न पछाणै ॥ आपे करे कराए करता आपे भरमि भुलाइदा ॥ १३ ॥ सभु किछु आपे आपि कराए ॥ आपे सिरि सिरि धंधै लाए ॥ आपे थापि उथापे वेखै गुरमुखि आपि बुझाइदा ॥ १४ ॥ सचा साहिबु गहिर गंभीरा ॥ सदा सलाही ता मनु धीरा ॥ अगम अगोचरु कीमति नही पाई गुरमुखि मंनि वसाइदा ॥ १५ ॥ आपि निरालमु होर धंधै लोई ॥ गुर परसादी बूझै कोई ॥ नानक नामु वसै घट अंतरि गुरमती मेलि मिलाइदा ॥ १६ ॥ ३ ॥ १७ ॥

सृष्टि-रचना से पूर्व एवं युगों के प्रारम्भ में दयालु दाता (परमात्मा) ही है, जिसे पूर्ण गुरु के शब्द द्वारा ही भक्तों ने पहचाना है। हे परमेश्वर ! जो तेरी उपासना करते हैं, वे तुझ में ही समा जाते हैं और तू स्वयं ही उन्हें अपने साथ मिलाता है॥ १॥ तू जीवों की पहुँच से परे एवं इन्द्रियातीत है और किसी ने भी तेरी कीमत नहीं आँकी। सभी जीव-जन्तु तेरी ही शरण में हैं। जैसे तू चाहता है, वैसे ही जीवों को चलाता है और तू स्वयं ही सन्मार्ग प्रदान करता है॥ २॥ अब भी परम-सत्य निरंकार ही है और भविष्य में भी वही रहेगा। वह स्वयं ही बनाने वाला है, अन्य कोई समर्थ नहीं। सुख देने वाला परमात्मा सबकी देखरेख करता है और स्वयं ही रिजक पहुँचाता है॥ ३॥ हे अगम्य, अगोचर, अलख-अपार ! कोई भी तेरा आर-पार नहीं जानता। तू स्वयं ही अपने आपको पहचानता है और गुरु उपदेश द्वारा ही अपने बारे में ज्ञान प्रदान करता है॥ ४॥ हे निरंकार ! समूचे पातालों, पुरियों एवं लोकों, जो यह सृष्टि है, इसमें तेरा ही सख्त हुक्म चल रहा है। तू हुक्म से ही बनाता एवं तबाह कर देता है और हुक्म से ही मिला लेता है॥ ५॥ जो तेरे हुक्म को समझ लेता है, वह तेरे हुक्म की प्रशंसा करता रहता है। तू अपहुँच, मन-वाणी से परे और बे-परवाह है। तू जीव को जैसी मत देता है, वह वैसा ही हो जाता है और तू स्वयं ही शब्द का रहस्य समझा देता है॥ ६॥ प्रतिदिन जीव की आयु घटती जाती है और दिन-रात दोनों ही इस बात के साक्षी हैं। यम सिर पर खड़ा उसे रुलाता है किन्तु अन्धा मनमुखी जीव मूर्खता के कारण उसे याद ही नहीं करता॥ ७॥ जो गुरु के चरणों में लग गया है, उसका मन-तन शीतल हो गया है। उसके मन से भ्रम दूर हो गया है और मृत्यु का भय भाग गया है। वह सदा आनंदपूर्वक भगवान् के गुण गाता है और प्रभु स्वयं ही उससे सच्ची वाणी बुलवाता है॥ ८॥ हे कर्मविधाता ! जिसने तुझे जान लिया है, उसने पूर्ण भाग्य से शब्द-गुरु द्वारा पहचान लिया है। वह सच्चा प्रभु ही उसकी जाति-पांति एवं सत्य है और वह सत्यस्वरूप उसके अभिमान को मिटाकर मिला लेता है॥ ९॥ जिसका मन कठोर है, वह द्वैतभाव में ही लीन रहता है। ऐसा दुर्भाग्यशाली जीव भ्रम में ही भटकता रहता है। यदि उस पर प्रभु-कृपा हो जाए तो वह सतिगुरु की सेवा करता है और सहज ही सुख प्राप्त करता है॥ १०॥ प्रभु ने स्वयं ही चौरासी लाख योनियों वाले जीव उत्पन्न किए हैं और मानव-जन्म में ही गुरु भक्ति करवाता है। भक्ति के बिना जीव विष्ठा में टिका रहता है और पुनः पुनः विष्ठा में ही पड़ता है॥ ११॥ यदि प्रभु-कृपा हो तो वह गुरु भक्ति करवाता है। भाग्य के बिना उसे कैसे पाया जा सकता है। सत्य तो यही है कि ईश्वर स्वयं ही सब करता-करवाता है और जैसे उसे उपयुक्त लगता है, वैसे ही जीव को चलाता है॥ १२॥ स्मृतियाँ एवं शास्त्र भी भगवान् का रहस्य नहीं जानते। मूर्ख एवं अन्धा मनुष्य परम तत्व को नहीं पहचानता। करने करवाने वाला स्वयं ईश्वर ही है और स्वयं ही जीव को भ्रम में भटकाता रहता है॥ १३॥ वह अपने आप ही सब कुछ जीवों से करवाता है और स्वयं ही उन्हें संसार के धंधों में लगाता है। वह स्वयं ही बनाता-बिगाड़ता, देखता रहता है और गुरुमुख को इस तथ्य का ज्ञान बता देता है॥ १४॥ वह सच्चा मालिक गहन-गम्भीर है, सदैव उसका स्तुतिगान करने से ही मन को शान्ति प्राप्त होती है।

उस अगम्य, अगोचर की कीमत को किसी ने नहीं जाना और गुरु के सान्निध्य में ही उसे मन में बसाया जाता है॥ १५॥ सारी दुनिया धंधों में लगी रहती है किन्तु वह स्वयं अलिप्त है। गुरु की कृपा से कोई विरला ही सत्य को बूझता है। हे नानक! जब परमात्मा का नाम हृदय में बस जाता है तो वह गुरु-मतानुसार अपने साथ मिला लेता है॥ १६॥ ३॥ १७॥

मारू महला ३ ॥ जुग छतीह कीओ गुबारा ॥ तू आपे जाणहि सिरजणहारा ॥ होर किआ को कहै कि आखि वखाणै तू आपे कीमति पाइदा ॥ १ ॥ ओअंकारि सभ स्रिसटि उपाई ॥ सभु खेलु तमासा तेरी वडिआई ॥ आपे वेक करे सभि साचा आपे भंनि घड़ाइदा ॥ २ ॥ बाजीगरि इक बाजी पाई ॥ पूरे गुर ते नदरी आई ॥ सदा अलिपतु रहै गुर सबदी साचे सिउ चितु लाइदा ॥ ३ ॥ बाजहि बाजे धुनि आकारा ॥ आपि वजाए वजावणहारा ॥ घटि घटि पउणु वहै इक रंगी मिलि पवणै सभ वजाइदा ॥ ४ ॥ करता करे सु निहचउ होवै ॥ गुर कै सबदे हउमै खोवै ॥ गुर परसादी किसै दे वडिआई नामो नामु धिआइदा ॥ ५ ॥ गुर सेवे जेवडु होरु लाहा नाही ॥ नामु मंनि वसै नामो सालाही ॥ नामो नामु सदा सुखदाता नामो लाहा पाइदा ॥ ६ ॥ बिनु नावै सभ दुखु संसारा ॥ बहु करम कमावहि वधहि विकारा ॥ नामु न सेवहि किउ सुखु पाईऐ बिनु नावै दुखु पाइदा ॥ ७ ॥ आपि करे तै आपि कराए ॥ गुर परसादी किसै बुझाए ॥ गुरमुखि होवहि से बंधन तोड़हि मुकती कै घरि पाइदा ॥ ८ ॥ गणत गणै सो जलै संसारा ॥ सहसा मूलि न चुकै विकारा ॥ गुरमुखि होवै सु गणत चुकाए सचे सचि समाइदा ॥ ९ ॥ जे सचु देइ त पाए कोई ॥ गुर परसादी परगटु होई ॥ सचु नामु सालाहे रंगि राता गुर किरपा ते सुखु पाइदा ॥ १० ॥ जपु तपु संजमु नामु पिआरा ॥ किलविख काटे काटणहारा ॥ हरि कै नामि तनु मनु सीतलु होआ सहजे सहजि समाइदा ॥ ११ ॥ अंतरि लोभु मनि मैलै मलु लाए ॥ मैले करम करे दुखु पाए ॥ कूड़ो कूड़ु करे वापारा कूड़ु बोलि दुखु पाइदा ॥ १२ ॥ निरमल बाणी को मंनि वसाए ॥ गुर परसादी सहसा जाए ॥ गुर कै भाणै चलै दिनु राती नामु चेति सुखु पाइदा ॥ १३ ॥ आपि सिरंदा सचा सोई ॥ आपि उपाइ खपाए सोई ॥ गुरमुखि होवै सु सदा सलाहे मिलि साचे सुखु पाइदा ॥ १४ ॥ अनेक जतन करे इंद्री वसि न होई ॥ कामि करोधि जलै सभु कोई ॥ सतिगुर सेवे मनु वसि आवै मन मारे मनहि समाइदा ॥ १५ ॥ मेरा तेरा तुधु आपे कीआ ॥ सभि तेरे जंत तेरे सभि जीआ ॥ नानक नामु समालि सदा तू गुरमती मंनि वसाइदा ॥ १६ ॥ ४ ॥ १८ ॥

छत्तीस युगों तक घोर अंधकार किया हुआ था, हे सृजनहार! तू स्वयं ही इस रहस्य को जानता है। अन्य कोई इस बारे में क्या बता सकता है और क्या कहकर बयान करे, तुझे स्वयं इसका महत्व पता है॥ १॥ ओंकार ने समूची सृष्टि उत्पन्न की। यह समूचा खेल-तमाशा हे परमेश्वर! तेरी ही कीर्ति है। हे परम-सत्य! तूं स्वयं सबको अलग-अलग करता और स्वयं ही तोड़ता-बनाता है॥ २॥ बाजीगर परमेश्वर ने एक लीला रची है, जिस मनुष्य को पूर्ण गुरु से यह लीला नजर आ गई है, वह सदैव निर्लिप्त रहता है और गुरु के उपदेश द्वारा सत्य में ही मन लगाता है॥ ३॥ मानव-शरीर में भिन्न-भिन्न ध्वनियों वाले बाजे बज रहे हैं और बजाने वाला प्रभु स्वयं ही बजा रहा है। सब शरीरों में प्राण वायु चल रहा है और प्रभु प्राण वायु से मिलाकर यह सब बाजे बजा रहा है॥ ४॥ जो ईश्वर करता है, वह निश्चय होता है। मनुष्य गुरु के शब्द द्वारा अभिमान को दूर कर देता है। गुरु-कृपा से जिस किसी को बड़ाई देता है, वह हरि-नाम का ही ध्यान करता है॥ ५॥ गुरु की सेवा करने जितना बड़ा अन्य कोई लाभ नहीं। जिसके मन में नाम बस जाता है, वह केवल नाम की ही स्तुति करता है। केवल नाम ही सदा सुख देने वाला है और

वह नाम रूपी लाभ ही प्राप्त करता है॥ ६॥ नाम के बिना संसार में सब दुख ही दुख हैं। जो मनुष्य अनेक धर्म-कर्म करता है, उसके मन के विकार बढ़ जाते हैं। हरि-नाम की सेवा किए बिना कैसे सुख प्राप्त हो सकता है, नाम के बिना दुख ही मिलता है॥ ७॥ ईश्वर स्वयं ही करता है और स्वयं ही जीव से कर्म करवाता है। गुरु की कृपा से किसी विरले को ही यह भेद समझाता है। जो गुरुमुख होता है, वह अपने तमाम बन्धन तोड़ देता है और मुक्ति के घर में वास पा लेता है॥ ८॥ जो कर्मों का हिसाब-किताब करता है, वह संसार में जलता रहता है। उसके विकार एवं संशय बिल्कुल दूर नहीं होते। जो गुरुमुख होता है, उसका हिसाब-किताब समाप्त हो जाता है और वह परम-सत्य में ही विलीन हो जाता है॥ ६॥ यदि प्रभु सत्य-नाम दे तो ही कोई प्राप्त करता है और गुरु की कृपा से प्रगट हो जाता है। सच्चे प्रभु-नाम की स्तुति करता हुआ जिज्ञासु उसके रंग में ही रत रहता है और गुरु की कृपा से सुख पाता है॥ १०॥ परमात्मा का प्यारा नाम ही जप, तप एवं संयम है और वह सब पापों को काटने वाला है। हरि के नाम से तन-मन शीतल हो जाता है और वह सहज ही सहजावस्था में समा जाता है॥ ११॥ जिसके अन्तर्मन में लोभ है, वह मैले मन को और मलिन कर लेता है। वह मलिन कर्म करके दुख ही प्राप्त करता है। वह झूठ का व्यापार करता है और झूठ बोलकर दुख प्राप्त करता है॥ १२॥ जो कोई निर्मल वाणी को मन में बसाता है, गुरु की कृपा से उसका संशय दूर हो जाता है। वह दिन-रात गुरु की रज़ानुसार चलता है और नाम-स्मरण करके सुख प्राप्त करता है॥ १३॥ वह सच्चा परमेश्वर स्वयं ही स्रष्टा है और उत्पन्न एवं नष्ट करने वाला भी वह स्वयं ही है। जो गुरुमुख होता है, वह सदा परमात्मा का स्तुतिगान करता है और सत्य से मिलकर सुख प्राप्त करता है॥ १४॥ यदि कोई अनेक यत्न भी करे तो भी काम-इन्द्रिय उसके वश में नहीं होती एवं प्रत्येक जीव काम-क्रोध में जल रहा है। यदि कोई सतिगुरु की सेवा करे तो ही मन उसके वश में आता है और मन को मारने से ही आत्म-ज्योति परम-ज्योति में विलीन होती है॥ १५॥ हे परमात्मा! जीवों के मन में मेरा-तेरा की भावना तूने ही पैदा की है और सभी जीव तेरी ही रचना है। हे नानक! तू सदा परमात्मा का नाम-स्मरण कर, गुरु-उपदेश द्वारा वह मन में बसता है॥ १६॥ ४॥ १८॥

मारू महला ३ ॥ हरि जीउ दाता अगम अथाहा ॥ ओसु तिलु न तमाइ वेपरवाहा ॥ तिस नो अपड़ि न सकै कोई आपे मेलि मिलाइदा ॥ १ ॥ जो किछु करै सु निहचउ होई ॥ तिसु बिनु दाता अवरु न कोई ॥ जिस नो नाम दानु करे सो पाए गुर सबदी मेलाइदा ॥ २ ॥ चउदह भवण तेरे हटनाले ॥ सतिगुरि दिखाए अंतरि नाले ॥ नावै का वापारी होवै गुर सबदी को पाइदा ॥ ३ ॥ सतिगुरि सेविऐ सहज अनंदा ॥ हिरदै आइ वुठा गोविंदा ॥ सहजे भगति करे दिनु राती आपे भगति कराइदा ॥ ४ ॥ सतिगुर ते विछुड़े तिनी दुखु पाइआ ॥ अनदिनु मारीअहि दुखु सबाइआ ॥ मथे काले महलु न पावहि दुख ही विचि दुखु पाइदा ॥ ५ ॥ सतिगुरु सेवहि से वडभागी ॥ सहज भाइ सची लिव लागी ॥ सचो सचु कमावहि सद ही सचै मेलि मिलाइदा ॥ ६ ॥ जिस नो सचा देइ सु पाए ॥ अंतरि साचु भरमु चुकाए ॥ सचु सचे का आपे दाता जिसु देवै सो सचु पाइदा ॥ ७ ॥ आपे करता सभना का सोई ॥ जिस नो आपि बुझाए बूझै कोई ॥ आपे बखसे दे वडिआई आपे मेलि मिलाइदा ॥ ८ ॥ हउमै करदिआ जनमु गवाइआ ॥ आगै मोहु न चूकै माइआ ॥ अगै जमकालु लेखा लेवै जिउ तिल घाणी पीड़ाइदा ॥ ६ ॥ पूरै भागि गुर सेवा होई ॥ नदरि करे ता सेवे कोई ॥ जमकालु तिसु नेड़ि न आवै महलि सचै सुखु पाइदा ॥ १० ॥ तिन सुखु पाइआ जो तुधु भाए ॥ पूरै भागि गुर सेवा लाए ॥ तेरै हथि है सभ वडिआई जिसु देवहि सो पाइदा ॥ ११ ॥ अंदरि परगासु गुरू ते पाए ॥ नामु पदारथु मंनि

वसाए ॥ गिआन रतनु सदा घटि चानणु अगिआन अंधेरु गवाइदा ॥ १२ ॥ अगिआनी अंधे दूजै लागे ॥ बिनु पाणी डुबि मूए अभागे ॥ चलदिआ घरु दरु नदरि न आवै जम दरि बाधा दुखु पाइदा ॥ १३ ॥ बिनु सतिगुर सेवे मुकति न होई ॥ गिआनी धिआनी पूछहु कोई ॥ सतिगुरु सेवे तिसु मिलै वडिआई दरि सचै सोभा पाइदा ॥ १४ ॥ सतिगुर नो सेवे तिसु आपि मिलाए ॥ ममता काटि सचि लिव लाए ॥ सदा सचु वणजहि वापारी नामो लाहा पाइदा ॥ १५ ॥ आपे करे कराए करता ॥ सबदि मरै सोई जनु मुकता ॥ नानक नामु वसै मन अंतरि नामो नामु धिआइदा ॥ १६ ॥ ५ ॥ १९ ॥

परमात्मा संसार का दाता है, अगम्य-अथाह, बेपरवाह है और उसे तिल भर भी कोई लोभ नहीं। कोई भी उस तक पहुँच नहीं सकता, वह स्वयं ही अपने साथ मिला लेता है॥ १॥ जो कुछ वह करता है, वह निश्चय होता है। उसके सिवा अन्य कोई भी प्रदाता नहीं है, जिसे वह नाम-दान करता है, वही पाता है और वह शब्द-गुरु द्वारा साथ मिलाता है॥ २॥ हे प्रभु ! चौदह लोक तेरे बाज़ार हैं और सतिगुरु ने ये हृदय में ही दिखा दिए हैं। जो नाम का व्यापारी होता है, कोई विरला ही गुरु के शब्द द्वारा नाम को पा लेता है॥ ३॥ सतिगुरु की सेवा करने से सहज ही आनंद मिलता है और हृदय में प्रभु आकर बस जाता है। तब जीव सहज ही दिन-रात भक्ति करता रहता है और प्रभु स्वयं ही भक्ति करवाता है॥ ४॥ जो सतिगुरु से बिछुड़ गए हैं, उन्होंने दुख ही पाया है। उन्हें प्रतिदिन मार पड़ती है और सब दुख उन्हें घेर लेते हैं। उनका तिरस्कार होता है, उन्हें सच्चा स्थान नहीं मिलता और ऐसे व्यक्ति दुखों में और दुखी होते हैं॥ ५॥ सतगुरु की सेवा में तल्लीन रहने वाले भाग्यवान् हैं। सहज-स्वभाव पूर्ण निष्ठा से उनकी परमात्मा में लगन लगी रहती है। वे सदा सत्य का आचरण अपनाते हैं और उन्हें परमात्मा से मिला देता है॥ ६॥ सच्चा प्रभु जिसे सच्चा-नाम देता है, वही इसे प्राप्त करता है। जिसके मन में सत्य बस जाता है, उसका भ्रम दूर हो जाता है। परमात्मा स्वयं ही सत्य-नाम का प्रदाता है, जिसे वह देता है, वही सत्य प्राप्त करता है॥ ७॥ वह कर्ता-प्रभु स्वयं ही सबका (स्वामी) है,जिसे वह स्वयं सूझ प्रदान करता है, ऐसा कोई विरला पुरुष ही तथ्य को बूझता है। वह स्वयं ही कृपा करके बड़ाई प्रदान करता है और अपने साथ मिला लेता है॥ ८॥ समूचा जीवन तो अभिमान करते हुए जीव ने गंवा लिया और आगे भी उसका माया का मोह दूर नहीं होता। आगे परलोक में जब यमराज किए कर्मों का हिसाब लेता है तो दण्ड के रूप में कोल्हू में यूं पीसता है जैसे तेली तिलों को पीसता है॥ ९॥ पूर्ण भाग्य से ही गुरु की सेवा होती है। जब प्रभु अपनी कृपा करता है तब ही कोई सेवा करता है। यमराज भी उसके निकट नहीं आता और वह सच्चे घर में सुख प्राप्त करता है॥ १०॥ हे निरंकार ! उन्होंने ही सुख पाया है, जो तुझे प्रिय हैं। पूर्ण भाग्य से ही तूने उनको गुरु की सेवा में लगाया है। सब बड़ाई तेरे हाथ में है, जिसे तू देता है, वही इसे पाता है॥ ११॥ मन में ज्ञान का प्रकाश गुरु से ही प्राप्त होता है और वह मन में नाम पदार्थ बसा देता है। ज्ञान-रत्न से हृदय में सदा प्रकाश होता है और अज्ञानता का अंधेरा मिट जाता है॥ १२॥ अज्ञानी अंधे द्वैतभाव में लिप्त रहते हैं, ऐसे अभागे तो पानी के बिना ही डूबकर मर जाते हैं। जगत से चलते वक्त उन्हें अपना सच्चा घर द्वार नजर नहीं आता और वे यम के द्वार पर बंधे हुए दुख ही भोगते हैं॥ १३॥ सतिगुरु की सेवा किए बिना किसी को मुक्ति प्राप्त नहीं होती, चाहे इस संदर्भ में किसी ज्ञानी-ध्यानी से जाकर पूछ लो। जो सतिगुरु की सेवा करता है, उसे ही कीर्ति प्राप्त होती है और सच्चे दर पर शोभा का पात्र बनता है॥ १४॥ जो सतिगुरु की सेवा करता है, ईश्वर स्वयं ही उसे मिला लेता है। ऐसा व्यक्ति ममता को नाश करके सत्य में ही लगन लगाता है। वह व्यापारी सदा सत्य का व्यापार करता रहता है

और नाम रूपी लाभ हासिल करता है॥ १५॥ कर्ता-प्रभु स्वयं ही करता और करवाता है। जो शब्द द्वारा मोह-माया की ओर से मर जाता है, वही मुक्त होता है। हे नानक ! जिसके मन में परमात्मा का नाम बस जाता है, वह नाम द्वारा नाम का ही मनन करता रहता है॥ १६॥ ५॥ १६॥

मारू महला ३ ॥ जो तुधु करणा सो करि पाइआ ॥ भाणे विचि को विरला आइआ ॥ भाणा मंने सो सुखु पाए भाणे विचि सुखु पाइदा ॥ १ ॥ गुरमुखि तेरा भाणा भावै ॥ सहजे ही सुखु सचु कमावै ॥ भाणे नो लोचै बहुतेरी आपणा भाणा आपि मनाइदा ॥ २ ॥ तेरा भाणा मंने सु मिलै तुधु आए ॥ जिसु भाणा भावै सो तुझहि समाए ॥ भाणे विचि वडी वडिआई भाणा किसहि कराइदा ॥ ३ ॥ जा तिसु भावै ता गुरू मिलाए ॥ गुरमुखि नामु पदारथु पाए ॥ तुधु आपणै भाणै सभ स्रिसटि उपाई जिस नो भाणा देहि तिसु भाइदा ॥ ४ ॥ मनमुखु अंधु करे चतुराई ॥ भाणा न मंने बहुतु दुखु पाई ॥ भरमे भूला आवै जाए घरु महलु न कबहू पाइदा ॥ ५ ॥ सतिगुरु मेले दे वडिआई ॥ सतिगुर की सेवा धुरि फुरमाई ॥ सतिगुर सेवे ता नामु पाए नामे ही सुखु पाइदा ॥ ६ ॥ सभ नावहु उपजै नावहु छीजै ॥ गुर किरपा ते मनु तनु भीजै ॥ रसना नामु धिआए रसि भीजै रस ही ते रसु पाइदा ॥ ७ ॥ महलै अंदरि महलु को पाए ॥ गुर कै सबदि सचि चितु लाए ॥ जिस नो सचु देइ सोई सचु पाए सचे सचि मिलाइदा ॥ ८ ॥ नामु विसारि मनि तनि दुखु पाइआ ॥ माइआ मोहु सभु रोगु कमाइआ ॥ बिनु नावै मनु तनु है कुसटी नरके वासा पाइदा ॥ ९ ॥ नामि रते तिन निरमल देहा ॥ निरमल हंसा सदा सुखु नेहा ॥ नामु सलाहि सदा सुखु पाइआ निज घरि वासा पाइदा ॥ १० ॥ सभु को वणजु करे वापारा ॥ विणु नावै सभु तोटा संसारा ॥ नागो आइआ नागो जासी विणु नावै दुखु पाइदा ॥ ११ ॥ जिस नो नामु देइ सो पाए ॥ गुर कै सबदि हरि मंनि वसाए ॥ गुर किरपा ते नामु वसिआ घट अंतरि नामो नामु धिआइदा ॥ १२ ॥ नावै नो लोचै जेती सभ आई ॥ नाउ तिना मिलै धुरि पुरबि कमाई ॥ जिनी नाउ पाइआ से वडभागी गुर कै सबदि मिलाइदा ॥ १३ ॥ काइआ कोटु अति अपारा ॥ तिसु विचि बहि प्रभु करे वीचारा ॥ सचा निआउ सचो वापारा निहचलु वासा पाइदा ॥ १४ ॥ अंतर घर बंके थानु सुहाइआ ॥ गुरमुखि विरलै किनै थानु पाइआ ॥ इतु साथि निबहै सालाहे सचे हरि सचा मंनि वसाइदा ॥ १५ ॥ मेरै करतै इक बणत बणाई ॥ इसु देही विचि सभ वथु पाई ॥ नानक नामु वणजहि रंगि राते गुरमुखि को नामु पाइदा ॥ १६ ॥ ६ ॥ २० ॥

जो तूने करना है, वही भाग्य में पाया है। हे ईश्वर ! कोई विरला पुरुष ही तेरी रज़ा में चला है। जो तेरी रज़ा को मानता है, वही सुख पाता है। सत्य तो यही है कि प्रभु-रज़ा में ही सुख मिलता है॥ १॥ गुरुमुख को तेरी रज़ा ही भाती है। वह सच्चा आचरण अपनाकर सुख ही सुख पाता है। बहुत सारे जिज्ञासु तेरी रज़ा को मानना चाहते हैं परन्तु तू स्वयं ही अपनी रज़ा मनवाता है॥ २॥ जो तेरी रज़ा को सहर्ष मानते हैं, वे तुझ में ही आकर मिल जाते हैं। जिसे तेरी रज़ा स्वीकार है, वे तुझ में ही विलीन हो जाते हैं। ईश्वरेच्छा में बड़ा बड़प्पन है, लेकिन तू किसी विरले से ही अपनी रज़ा मनवाता है॥ ३॥ जब परमात्मा को मंजूर हो तो वह गुरु से मिला देता है। गुरु के सान्निध्य में नाम-पदार्थ प्राप्त होता है। हे परमेश्वर ! तूने अपनी इच्छा में समस्त सृष्टि उत्पन्न की है। उस जीव को ही तेरी इच्छा सहर्ष स्वीकार है, जिसे तूं स्वयं इच्छा मानने की शक्ति देता है॥ ४॥ अन्धा मनमुखी जीव चतुराई करता है, वह ईश्वरेच्छा को नहीं मानता, इसलिए बहुत दुखी होता है। वह भ्रम में भटक कर आवागमन में पड़ा रहता है और अपने सच्चे घर को कभी प्राप्त नहीं

करता॥ ५॥ अगर सतिगुरु से मिलन हो जाए तो ही बड़ाई प्रदान करता है, सतिगुरु की सेवा करना तो ईश्वर के दरबार से ही फुरमान है। यदि सतिगुरु की सेवा की जाए तो ही हरि-नाम प्राप्त होता है और नाम से ही सुख मिलता है॥ ६॥ समूचा जगत्-प्रसार नाम से उत्पन्न होता है और नाम से ही नष्ट हो जाता है। गुरु की कृपा से ही मन-तन नाम-रस में भीगता है। जब रसना नाम का स्तुतिगान करके नाम-रस में भीगती हैं तो उस नाम-रस से हरि-रस मिलता है॥ ७॥ कोई विरला पुरुष ही शरीर रूपी घर में दसम द्वार को पाता है और गुरु के शब्द द्वारा सत्य में चित लगाता है। गुरु जिसे सत्य-नाम देता है, वही सत्य को प्राप्त करता है और वह सत्य द्वारा ही परम-सत्य से मिला देता है॥ ८॥ नाम को भुलाकर जीव ने मन-तन में दुख ही पाया है और माया-मोह में लगकर सब रोग ही कमाया है। नाम के बिना उसका मन-तन कुष्ठी हो गया है, अतः वह नरक में ही वास पाता है॥ ६॥ जो प्रभु-नाम में लीन हैं, उनका ही शरीर निर्मल है। उनकी निर्मल आत्मा प्रभु-प्रेम द्वारा सदा सुखी रहती है। नाम का स्तुतिगान करके उसने सदा सुख पाया है और वह अपने सच्चे घर में वास पा लेता है॥ १०॥ सभी जीव जगत् में भिन्न-भिन्न व्यापार करते हैं लेकिन हरि-नाम के बिना संसार में घाटा ही पड़ता है। प्रत्येक जीव नग्न अर्थात् खाली हाथ ही आया है और नग्न (खाली) ही चला जाएगा। प्रभु-नाम के बिना उसे दुख ही मिलता है॥ ११॥ जिसे परमात्मा नाम देता है, वही उसे पाता है। गुरु के शब्द द्वारा वह प्रभु को मन में बसा लेता है। गुरु की कृपा से जिसके हृदय में हरि-नाम बस गया है, वह अन्तर्मन में नाम का ही ध्यान करता रहता है॥ १२॥ जितनी भी समूची सृष्टि पैदा हुई है, वह नाम को पाने की आकांक्षी है। लेकिन नाम उन्हें ही मिलता है, जिनके पूर्व जन्म के किए कर्म शुभ थे। जिन्होंने नाम पा लिया है, वे खुशनसीब हैं और शब्द-गुरु द्वारा प्रभु ने उन्हें मिला लिया है॥ १३॥ मानव शरीर एक बहुत बड़ा किला है, जिसमें बैठकर प्रभु विचार करता है। वह सच्चा न्याय एवं सच्चा व्यापार करता है और वह निश्चल वास पाता है॥ १४॥ शरीर रूपी किले में मन, बुद्धि इत्यादि सुन्दर घर बने हुए हैं और किसी विरले गुरुमुख ने ही यह स्थान पाया है। जो सच्चे परमात्मा की प्रशंसा करता है, उस परम-सत्य को मन में बसा लेता है, इस प्रकार प्रभु अंत तक उसका साथ निभाता है॥ १५॥ मेरे परमेश्वर ने एक ऐसी संरचना की है कि शरीर में ही सब वस्तुएँ डाल दी हैं। हे नानक! प्रभु-रंग में लीन रहने वाले नाम का व्यापार करते हैं और कोई गुरुमुख ही नाम (का रहस्य) प्राप्त करता है॥ १६॥ ६॥ २०॥

मारू महला ३ ॥ काइआ कंचनु सबदु वीचारा ॥ तिथै हरि वसै जिस दा अंतु न पारावारा ॥ अनदिनु हरि सेविहु सची बाणी हरि जीउ सबदि मिलाइदा ॥ १ ॥ हरि चेतहि तिन बलिहारै जाउ ॥ गुर कै सबदि तिन मेलि मिलाउ ॥ तिन की धूरि लाई मुखि मसतकि सतसंगति बहि गुण गाइदा ॥ २ ॥ हरि के गुण गावा जे हरि प्रभ भावा ॥ अंतरि हरि नामु सबदि सुहावा ॥ गुरबाणी चहु कुंडी सुणीऐ साचै नामि समाइदा ॥ ३ ॥ सो जनु साचा जि अंतरु भाले ॥ गुर कै सबदि हरि नदरि निहाले ॥ गिआन अंजनु पाए गुर सबदी नदरी नदरि मिलाइदा ॥ ४ ॥ वडै भागि इहु सरीरु पाइआ ॥ माणस जनमि सबदि चितु लाइआ ॥ बिनु सबदै सभु अंध अंधेरा गुरमुखि किसहि बुझाइदा ॥ ५ ॥ इकि कितु आए जनमु गवाए ॥ मनमुख लागे दूजै भाए ॥ एह वेला फिरि हाथि न आवै पगि खिसिऐ पछुताइदा ॥ ६ ॥ गुर कै सबदि पवित्रु सरीरा ॥ तिसु विचि वसै सचु गुणी गहीरा ॥ सचो सचु वेखै सभ थाई सचु सुणि मंनि वसाइदा ॥ ७ ॥ हउमै गणत गुर सबदि निवारे ॥ हरि जीउ हिरदै रखहु उर धारे ॥ गुर कै सबदि सदा सालाहे मिलि साचे सुखु पाइदा ॥ ८ ॥ सो चेते जिसु आपि चेताए ॥ गुर कै सबदि वसै मनि

आए ॥ आपे वेखै आपे बूझै आपै आपु समाइदा ॥ ६ ॥ जिनि मन विचि वथु पाई सोई जाणै ॥ गुर के सबदे आपु पछाणै ॥ आपु पछाणै सोई जनु निरमलु बाणी सबदु सुणाइदा ॥ १० ॥ एह काइआ पवितु है सरीरु ॥ गुर सबदी चेतै गुणी गहीरु ॥ अनदिनु गुण गावै रंगि राता गुण कहि गुणी समाइदा ॥ ११ ॥ एहु सरीरु सभ मूलु है माइआ ॥ दूजै भाइ भरमि भुलाइआ ॥ हरि न चेतै सदा दुखु पाए बिनु हरि चेते दुखु पाइदा ॥ १२ ॥ जि सतिगुरु सेवे सो परवाणु ॥ काइआ हंसु निरमलु दरि सचै जाणु ॥ हरि सेवे हरि मंनि वसाए सोहै हरि गुण गाइदा ॥ १३ ॥ बिनु भागा गुरु सेविआ न जाइ ॥ मनमुख भूले मुए बिललाइ ॥ जिन कउ नदरि होवै गुर केरी हरि जीउ आपि मिलाइदा ॥ १४ ॥ काइआ कोटु पके हटनाले ॥ गुरमुखि लेवै वसतु समाले ॥ हरि का नामु धिआइ दिनु राती ऊतम पदवी पाइदा ॥ १५ ॥ आपे सचा है सुखदाता ॥ पूरे गुर कै सबदि पछाता ॥ नानक नामु सलाहे साचा पूरै भागि को पाइदा ॥ १६ ॥ ७ ॥ २१ ॥

शब्द का चिंतन करने से शरीर सोने जैसा शुद्ध हो जाता है और इसमें ईश्वर वास करता है, जिसका कोई अन्त एवं आर-पार नहीं पाया जा सकता। सच्ची वाणी द्वारा नित्य ईश्वर की आराधना करो, शब्द द्वारा प्रभु जीव को अपने संग मिला लेता है॥ १॥ मैं उन पर कुर्बान जाता हूँ, जो परमात्मा को याद करते हैं। शब्द-गुरु द्वारा ही उनका मिलन हुआ है। मैंने उनकी चरण-धूलि अपने मुख एवं माथे लगा ली है और सत्संगति में बैठकर भगवान के गुण गाता रहता हूँ॥ २॥ मैं भगवान के गुण तभी गाता हूँ, यदि मेरे प्रभु को मंजूर है। अन्तर्मन में हरि का नाम बस गया है और शब्द से जीवन सुन्दर बन गया है। चारों दिशाओं में गुरु वाणी की कीर्ति सुनी जा रही है और सत्य-नाम में ही समा रहा हूँ॥ ३॥ वही मनुष्य सच्चा है, जो अन्तर्मन में सत्य की खोज करता है। गुरु के शब्द को पढ़ने, सुनने, गाने वाले को परमात्मा अपनी कृपा-दृष्टि से आनंदित कर देता है। जो शब्द-गुरु द्वारा ज्ञान का सुरमा नेत्रों में डालता है, कृपानिधान कृपा कर संग मिला लेता है॥ ४॥ अहोभाग्य से यह मानव-शरीर प्राप्त हुआ है और इस मानव-जन्म में शब्द से ही चित्त लगाया है। शब्द के बिना सब ओर अंधेरा ही अंधेरा है और किसी गुरुमुख को ही प्रभु यह रहस्य बताता है॥ ५॥ कुछ जीवों ने अपना जन्म व्यर्थ गँवा लिया है, जगत् में किस कार्य आए हैं। मनमुखी द्वैतभाव में ही तल्लीन हैं। तदन्तर यह सुनहरी अवसर पुनः हाथ में नहीं आने वाला, पैर फिसलने पर गिर कर मनुष्य पछताता ही है॥ ६॥ गुरु के शब्द द्वारा जिसका शरीर पवित्र हो जाता है, उस में ही गुणों का गहरा सागर परमेश्वर आ बसता है। फिर वह सर्वत्र परम-सत्य को ही देखता है और सत्य की महिमा को सुनकर उसे अपने मन में बसाता है॥ ७॥ वह गुरु के शब्द द्वारा अहम् एवं कर्मों की गणना को निवृत्त कर देता है। परमात्मा को अपने हृदय में बसाकर रखो, जो गुरु के शब्द द्वारा सदा स्तुतिगान करता है, वह प्रभु को मिलकर सुख पाता है॥ ८॥ परमात्मा को वही याद करता है, जिसे वह स्वयं याद करवाता है और गुरु के शब्द द्वारा वह मन में आकर बस जाता है। वह स्वयं ही सब देखता है, स्वयं ही बूझता है और अपने आप में ही समाया रहता है॥ ६॥ जिसने मन में नाम-रूपी वस्तु डाली है, वही इसके भेद को जानता है। गुरु के शब्द द्वारा मनुष्य अपने आप को पहचान लेता है। जो अपने आप को पहचानता है, वही व्यक्ति निर्मल है और अन्यों को गुरु की वाणी एवं शब्द ही सुनाता है॥ १०॥ यह शरीर तो ही पवित्र है, यदि शब्द-गुरु द्वारा गुणों के गहन सागर परमात्मा का स्मरण करता है। वह प्रतिदिन प्रभु के गुणगान में ही लीन रहता है और गुणों का कथन करके गुणीनिधान में ही समा जाता है॥ ११॥ यह समूचा शरीर मूल माया-रजोगुण, तमोगुण एवं सतोगुण से बना हुआ है और द्वैतभाव के कारण

भ्रम में भटका हुआ है। यह परमात्मा को याद नहीं करता, अतः सदा दुख पाता है। वास्तव में परमात्मा का स्मरण किए बिना दुख ही नसीब होता है॥ १२॥ जो व्यक्ति सतगुरु की सेवा करता है, वही परवान होता है। उसका शरीर एवं आत्मा निर्मल होकर सच्चे प्रभु के द्वार से परिचित हो जाते हैं। वह परमात्मा की उपासना करता है, उसे मन में बसाता है और उसका गुणगान करता हुआ सुन्दर लगता है॥ १३॥ भाग्य के बिना गुरु की सेवा नहीं की जा सकती और भूले हुए मनमुखी जीव रोते हुए ही दम तोड़ देते हैं। जिन पर गुरु की कृपा-दृष्टि हो जाती है, उन्हें प्रभु स्वयं ही मिला लेता है॥ १४॥ यह मानव-शरीर एक किला है, जिसमें पक्के बाज़ार बने हुए हैं, जहाँ से गुरुमुख नाम रूपी वस्तु खरीद लेता है और नाम-स्मरण करता है। वह दिन-रात हरि-नाम का भजन करके उत्तम पदवी (तुरीयावस्था) पा लेता है॥ १५॥ सच्चा परमेश्वर ही सुख प्रदाता है और इसकी पहचान पूर्ण गुरु के शब्द द्वारा ही होती है। हे नानक! परमात्मा के नाम का स्तुतिगान कर पूर्ण खुशनसीब ही उसे पाता है॥ १६॥ ७॥ २१॥

मारू महला ३ ॥ निरंकारि आकारु उपाइआ ॥ माइआ मोहु हुकमि बणाइआ ॥ आपे खेल करे सभि करता सुणि साचा मंनि वसाइदा ॥ १ ॥ माइआ माई त्रै गुण परसूति जमाइआ ॥ चारे बेद ब्रहमे नो फुरमाइआ ॥ वर्हे माह वार थिती करि इसु जग महि सोझी पाइदा ॥ २ ॥ गुर सेवा ते करणी सार ॥ राम नामु राखहु उरि धार ॥ गुरबाणी वरती जग अंतरि इसु बाणी ते हरि नामु पाइदा ॥ ३ ॥ वेदु पड़ै अनदिनु वाद समाले ॥ नामु न चेतै बधा जमकाले ॥ दूजै भाइ सदा दुखु पाए त्रै गुण भरमि भुलाइदा ॥ ४ ॥ गुरमुखि एकसु सिउ लिव लाए ॥ त्रिबिधि मनसा मनहि समाए ॥ साचै सबदि सदा है मुकता माइआ मोहु चुकाइदा ॥ ५ ॥ जो धुरि राते से हुणि राते ॥ गुर परसादी सहजे माते ॥ सतिगुरु सेवि सदा प्रभु पाइआ आपै आपु मिलाइदा ॥ ६ ॥ माइआ मोहि भरमि न पाए ॥ दूजै भाइ लगा दुखु पाए ॥ सूहा रंगु दिन थोड़े होवै इसु जादे बिलम न लाइदा ॥ ७ ॥ एहु मनु भै भाइ रंगाए ॥ इतु रंगि साचे माहि समाए ॥ पूरै भागि को इहु रंगु पाए गुरमती रंगु चड़ाइदा ॥ ८ ॥ मनमुखु बहुतु करे अभिमानु ॥ दरगह कब ही न पावै मानु ॥ दूजै लागे जनमु गवाइआ बिनु बूझे दुखु पाइदा ॥ ९ ॥ मेरै प्रभि अंदरि आपु लुकाइआ ॥ गुर परसादी हरि मिलै मिलाइआ ॥ सचा प्रभु सचा वापारा नामु अमोलकु पाइदा ॥ १० ॥ इसु काइआ की कीमति किनै न पाई ॥ मेरै ठाकुरि इह बणत बणाई ॥ गुरमुखि होवै सु काइआ सोधै आपहि आपु मिलाइदा ॥ ११ ॥ काइआ विचि तोटा काइआ विचि लाहा ॥ गुरमुखि खोजे वेपरवाहा ॥ गुरमुखि वणजि सदा सुखु पाए सहजे सहजि मिलाइदा ॥ १२ ॥ सचा महलु सचे भंडारा ॥ आपे देवै देवणहारा ॥ गुरमुखि सालाहे सुखदाते मनि मेले कीमति पाइदा ॥ १३ ॥ काइआ विचि वसतु कीमति नही पाई ॥ गुरमुखि आपे दे वडिआई ॥ जिस दा हटु सोई वथु जाणै गुरमुखि देइ न पछोताइदा ॥ १४ ॥ हरि जीउ सभ महि रहिआ समाई ॥ गुर परसादी पाइआ जाई ॥ आपे मेलि मिलाए आपे सबदे सहजि समाइदा ॥ १५ ॥ आपे सचा सबदि मिलाए ॥ सबदे विचहु भरमु चुकाए ॥ नानक नामि मिलै वडिआई नामे ही सुखु पाइदा ॥ १६ ॥ ८ ॥ २२ ॥

निरंकार ने समूची सृष्टि को उत्पन्न किया और अपने हुक्म से ही उसने माया-मोह को पैदा किया है। सृष्टिकर्ता स्वयं ही सारी लीला करता है और उसकी महिमा को सुनकर उस परम-सत्य को मन में बसाया जाता है॥ १॥ माया रूपी माता को गर्भ धारण करवाकर विधाता ने (तमोगुण, सतोगुण एवं रजोगुण) तीन गुणों वाला जगत् पैदा किया। उसने ब्रह्मा को चारों वेद—ऋग्वेद,

सामवेद, यजुर्वेद, अथर्ववेद रचने के लिए फरमान किया और वर्ष, महीने, वार, तिथि बनाकर जगत् में समय का ज्ञान प्रदान किया॥ २॥ गुरु की सेवा एवं नाम-स्मरण का श्रेष्ठ कर्म करो और राम-नाम को अपने हृदय में धारण करो। जगत् में गुरु वाणी पढ़ी, सुनी एवं गाई जा रही है और इस वाणी से ही हरि का नाम प्राप्त होता है॥ ३॥ पण्डित वेद मंत्रों का अध्ययन करता है किन्तु वह प्रतिदिन तर्क वितर्क में लीन रहता है। वह नाम स्मरण नहीं करता, अतः यमकाल ने इसे बाँध लिया है। वह द्वैतभाव में सदा दुख हासिल करता है और त्रिगुणों के कारण भ्रम में भटकता रहता है॥ ४॥ गुरुमुख एक ईश्वर में ही लगन लगाता है और उसकी रजो, तमो एवं सतोगुण तीन प्रकार की लालसाएँ मन में ही दूर हो जाती हैं। वह सच्चे शब्द द्वारा सदा ही बन्धनों से मुक्त रहता है और माया-मोह को अपने मन से मिटा देता है॥ ५॥ जो प्रारम्भ से ही ईश्वर में लीन हैं, वे अब भी उसके रंग में लीन हैं। गुरु की कृपा से वे सहजावस्था में मस्त रहते हैं। जिन्होंने सतिगुरु की सेवा करके प्रभु को पाया है, प्रभु ने स्वयं ही उन्हें मिलाया है॥ ६॥ माया-मोह एवं भ्रम में फँसा मनुष्य परमात्मा को नहीं पा सकता और द्वैतभाव में लीन होकर दुख ही प्राप्त करता है। लाल रंग (खुशी एवं उल्लास) थोड़े दिन ही रहता है और इसे समाप्त होते विलम्ब नहीं होता॥ ७॥ जो व्यक्ति मन को प्रभु-भय एवं प्रेम में रंगता है, वह इस रंग द्वारा उस परम-सत्य में ही विलीन हो जाता है। कोई पूर्ण भाग्यशाली ही यह रंग प्राप्त करता है और गुरु मत द्वारा ही प्रेम रंग चढ़ाता है॥ ८॥ स्वेच्छाचारी जीव बहुत अभिमान करता है, मगर प्रभु दरबार में वह कभी सम्मान प्राप्त नहीं करता। द्वैतभाव में लीन होकर उसने अपना जन्म व्यर्थ गँवा दिया है और तथ्य को बूझे बिना वह दुख ही पाता है॥ ६॥ मेरे प्रभु ने अपने आपको हृदय में छिपा कर रखा हुआ है और गुरु की कृपा से वह जीव को मिला है। प्रभु सत्यस्वरूप है, उसका नाम-व्यापार भी सत्य है और जीव इस व्यापार द्वारा अमूल्य नाम पाता है॥ १०॥ इस मानव-शरीर की सही कीमत कोई भी नहीं पा सकता मेरे ठाकुर जी ने यह लीला बनाई है। जो गुरुमुख होता है, वह शरीर को विकारों से शुद्ध कर लेता है और इस प्रकार ईश्वर स्वयं ही उसे मिला लेता है॥ ११॥ मानव-शरीर में ही हानि और लाभ है, गुरुमुख हृदय में बेपरवाह परमात्मा की खोज करता है। गुरुमुख सत्य का व्यापार करके सदा सुख प्राप्त करता है और सहजावस्था में ही प्रभु में लीन हो जाता है॥ १२॥ ईश्वर का निवास स्थान एवं भण्डार दोनों ही सच्चे हैं और वह दातार स्वयं ही जीवों को देता रहता है। गुरुमुख सुख देने वाले ईश्वर का स्तुतिगान करता है और मन को उससे मिलाकर सही कीमत आँक लेता है॥ १३॥ नाम रूपी वस्तु मानव-शरीर में ही मौजूद है किन्तु मानव इसका महत्व नहीं जान पाया। ईश्वर स्वयं ही गुरुमुख को बड़ाई प्रदान करता है। इस नाम-वस्तु को वही जानता है, जिसकी यह दुकान है और जिस गुरुमुख को वह देता है, वह पछताता नहीं॥ १४॥ ईश्वर सब में समा रहा है और उसे गुरु की कृपा से ही पाया जाता है। वह स्वयं ही गुरु से मिलाकर अपने साथ मिला लेता है और जीव शब्द द्वारा सहजावस्था में लीन हो जाता है॥ १५॥ वह स्वयं ही शब्द-गुरु से मिलाता है और शब्द-गुरु मन के भ्रम को मिटा देता है। हे नानक! परमात्मा के नाम से ही बड़ाई मिलती है और नाम से ही सुख हासिल होता है॥ १६॥ ८॥ २२॥

मारू महला ३ ॥ अगम अगोचर वेपरवाहे ॥ आपे मिहरवान अगम अथाहे ॥ अपड़ि कोइ न सकै तिस नो गुर सबदी मेलाइआ ॥ १ ॥ तुधुनो सेवहि जो तुधु भावहि ॥ गुर कै सबदे सचि समावहि ॥ अनदिनु गुण रवहि दिनु राती रसना हरि रसु भाइआ ॥ २ ॥ सबदि मरहि से मरणु सवारहि ॥ हरि के गुण हिरदै उर धारहि ॥ जनमु सफलु हरि चरणी लागे दूजा भाउ चुकाइआ ॥ ३ ॥ हरि जीउ मेले आपि

मिलाए ॥ गुर कै सबदे आपु गवाए ॥ अनदिनु सदा हरि भगती राते इसु जग महि लाहा पाइआ ॥ ४ ॥ तेरे गुण कहा मै कहणु न जाई ॥ अंतु न पारा कीमति नही पाई ॥ आपे दइआ करे सुखदाता गुण महि गुणी समाइआ ॥ ५ ॥ इसु जग महि मोहु है पासारा ॥ मनमुखु अगिआनी अंधु अंधारा ॥ धंधै धावतु जनमु गवाइआ बिनु नावै दुखु पाइआ ॥ ६ ॥ करमु होवै ता सतिगुरु पाए ॥ हउमै मैलु सबदि जलाए ॥ मनु निरमलु गिआनु रतनु चानणु अगिआनु अंधेरु गवाइआ ॥ ७ ॥ तेरे नाम अनेक कीमति नही पाई ॥ सचु नामु हरि हिरदै वसाई ॥ कीमति कउणु करे प्रभ तेरी तू आपे सहजि समाइआ ॥ ८ ॥ नामु अमोलकु अगम अपारा ॥ ना को होआ तोलणहारा ॥ आपे तोले तोलि तोलाए गुर सबदी मेलि तोलाइआ ॥ ६ ॥ सेवक सेवहि करहि अरदासि ॥ तू आपे मेलि बहालहि पासि ॥ सभना जीआ का सुखदाता पूरै करमि धिआइआ ॥ १० ॥ जतु सतु संजमु जि सचु कमावै ॥ इहु मनु निरमलु जि हरि गुण गावै ॥ इसु बिखु महि अंम्रितु परापति होवै हरि जीउ मेरे भाइआ ॥ ११ ॥ जिस नो बुझाए सोई बूझै ॥ हरि गुण गावै अंदरु सूझै ॥ हउमै मेरा ठाकि रहाए सहजे ही सचु पाइआ ॥ १२ ॥ बिनु करमा होर फिरै घनेरी ॥ मरि मरि जंमै चुकै न फेरी ॥ बिखु का राता बिखु कमावै सुखु न कबहू पाइआ ॥ १३ ॥ बहुते भेख करे भेखधारी ॥ बिनु सबदै हउमै किनै न मारी ॥ जीवतु मरै ता मुकति पाए सचै नाइ समाइआ ॥ १४ ॥ अगिआनु त्रिसना इसु तनहि जलाए ॥ तिस दी बूझै जि गुर सबदु कमाए ॥ तनु मनु सीतलु क्रोधु निवारे हउमै मारि समाइआ ॥ १५ ॥ सचा साहिबु सची वडिआई ॥ गुर परसादी विरलै पाई ॥ नानकु एक कहै बेनंती नामे नामि समाइआ ॥ १६ ॥ १ ॥ २३ ॥

मन-वाणी से परे परमपिता परमेश्वर बे-परवाह है, वह स्वयं ही मेहरबान, अगम्य एवं अथाह है। उस तक कोई पहुँच नहीं सकता और शब्द-गुरु द्वारा मिला लेता है॥ १॥ हे परमेश्वर! जो तुझे भाते हैं, वही तेरी उपासना करते हैं और गुरु के शब्द द्वारा सत्य में विलीन रहते हैं। वे नित्य तेरा गुणगान करते हैं और उनकी जिह्वा को हरि-नाम रस ही भाया है॥ २॥ जो शब्द-गुरु द्वारा अहम् को मार लेते हैं, वे अपने मरण को सँवार लेते हैं और भगवान के गुणों को हृदय में धारण कर लेते हैं। प्रभु-चरणों में लगकर उनका जन्म सफल हो गया है और द्वैतभाव मिट गया है॥ ३॥ जो व्यक्ति गुरु के शब्द द्वारा अपने अहम् को दूर कर देते हैं, ईश्वर स्वयं ही उन्हें अपने साथ मिला लेता है। वे सदा परमात्मा की भक्ति में लीन रहते हैं और इस जगत् में उन्होंने लाभ प्राप्त किया है॥ ४॥ हे प्रभु! मैं तेरे गुण वर्णन करना चाहता हूँ लेकिन मुझ से वर्णन नहीं किए जा सकते। तेरा कोई अन्त नहीं है, न ही कोई आर पार है और किसी ने भी तेरी सही कीमत नहीं आँकी। जब सुखदाता परमेश्वर स्वयं ही दया करता है तो जीव गुणनिधान के गुणों में लीन हो जाता है॥ ५॥ इस जगत् में चारों ओर मोह ही फैला हुआ है और अज्ञानी मनमुखी जीव अज्ञानता के अन्धकार में ही भटकता रहता है। संसार के धंधों में भागदौड़ करते हुए उसने अपना जन्म व्यर्थ गंवा लिया है और नाम के बिना दुख ही पाया है॥ ६॥ अगर प्रभु-कृपा हो जाए तो वह सतगुरु को पा लेता है और वह शब्द गुरु द्वारा अपने अहम् की मैल को साफ कर लेता है। उसका मन निर्मल हो जाता है, जिसमें ज्ञान-रत्न का आलोक हो जाता है और अज्ञानता का अंधेरा मिट जाता है॥ ७॥ तेरे नाम अनेक हैं और किसी ने भी उनकी सही कीमत नहीं आँकी। तेरे सत्य-नाम को अपने हृदय में बसा लिया है। हे प्रभु! तेरी सही कीमत कौन कर सकता है, तू स्वयं ही परमानंद में समाया हुआ है॥ ८॥ तेरा अमूल्य नाम अगम्य-अपार है और इसे तोलने वाला कोई नहीं हुआ

है। तू खुद ही इसे तोलता है और जीवों से तौल कर तुलवाता है। तूने शब्द-गुरु से मिलाकर उनसे नाम को तुलवाया है॥ ६॥ सेवक तेरी सेवा-भक्ति में रत होकर तुझसे ही प्रार्थना करते हैं और तू उन्हें मिलाकर अपने पास बिठाता है। सब जीवों को सुख देने वाला दाता केवल तू ही है और किसी विरले ने पूर्ण भाग्य से ही तेरा ध्यान किया है॥ १०॥ यदि कोई सत्य का आचरण अपनाता है तो उसे तपश्चर्या, सदाचार एवं संयम इत्यादि शुभ कर्मों का फल मिल जाता है। यदि कोई परमात्मा के गुण गाता है तो उसका मन निर्मल हो जाता है और माया रूपी विष में विचरन करते हुए ही उसे नामामृत प्राप्त हो जाता है। मेरे परमेश्वर को यही भाया है॥ ११॥ जिसे वह ज्ञान देता है, वही बूझता है। वह परमात्मा के गुण गाता है, जिससे उसके मन में ज्ञान हो जाता है। उसने अहम् एवं ममता को रोक कर सहज ही सत्य को पा लिया है॥ १२॥ कितने ही बदकिस्मत लोग भटकते रहते हैं, वे बार-बार जन्मते मरते रहते हैं, किन्तु उनका आवागमन खत्म नहीं होता। विषय-विकारों में लीन रहने वाला जीव विकारों का ही आचरण करता है और उसने जीवन में कभी सुख प्राप्त नहीं किया॥ १३॥ वेष धारण करने वाला बहुरूपिया अनेक वेष बनाता रहता है लेकिन शब्द-गुरु के बिना किसी का भी अहम् नहीं मिटा। यदि वह जीवित ही पापों की तरफ से मर जाए तो मुक्ति पा लेता है और सत्य-नाम में विलीन हो जाता है॥ १४॥ अज्ञान एवं तृष्णाग्नि इस तन को जलाते रहते हैं, परन्तु जो शब्द-गुरु के अनुरूप आचरण अपनाता है, उसकी तृष्णाग्नि बुझ जाती है। उसका तन-मन शीतल हो जाता है, वह अपने क्रोध का निवारण कर देता है, अहम् को मारकर वह सत्य में समाहित हो जाता है॥ १५॥ सत्यस्वरूप परमेश्वर की महिमा भी सच्ची है और गुरु की कृपा से किसी विरले ने ही बड़ाई प्राप्त की है। नानक तो एक यही विनती करता है कि वह नाम द्वारा प्रभु में समाया रहे॥ १६॥ १॥ २३॥

मारू महला ३ ॥ नदरी भगता लैहु मिलाए ॥ भगत सलाहनि सदा लिव लाए ॥ तउ सरणाई उबरहि करते आपे मेलि मिलाइआ ॥ १ ॥ पूरै सबदि भगति सुहाई ॥ अंतरि सुखु तेरै मनि भाई ॥ मनु तनु सची भगती राता सचे सिउ चितु लाइआ ॥ २ ॥ हउमै विचि सद जलै सरीरा ॥ करमु होवै भेटे गुरु पूरा ॥ अंतरि अगिआनु सबदि बुझाए सतिगुर ते सुखु पाइआ ॥ ३ ॥ मनमुखु अंधा अंधु कमाए ॥ बहु संकट जोनी भरमाए ॥ जम का जेवड़ा कदे न काटै अंते बहु दुखु पाइआ ॥ ४ ॥ आवण जाणा सबदि निवारे ॥ सचु नामु रखै उर धारे ॥ गुर कै सबदि मरै मनु मारे हउमै जाइ समाइआ ॥ ५ ॥ आवण जाणै परज विगोई ॥ बिनु सतिगुर थिरु कोइ न होई ॥ अंतरि जोति सबदि सुखु वसिआ जोती जोति मिलाइआ ॥ ६ ॥ पंच दूत चितवहि विकारा ॥ माइआ मोह का एहु पसारा ॥ सतिगुरु सेवे ता मुकतु होवै पंच दूत वसि आइआ ॥ ७ ॥ बाझु गुरू है मोहु गुबारा ॥ फिरि फिरि डुबै वारो वारा ॥ सतिगुर भेटे सचु द्रिड़ाए सचु नामु मनि भाइआ ॥ ८ ॥ साचा दरु साचा दरवारा ॥ सचे सेवहि सबदि पिआरा ॥ सची धुनि सचे गुण गावा सचे माहि समाइआ ॥ ९ ॥ घरै अंदरि को घरु पाए ॥ गुर कै सबदे सहजि सुभाए ॥ ओथै सोगु विजोगु न विआपै सहजे सहजि समाइआ ॥ १० ॥ दूजै भाइ दुसटा का वासा ॥ भउदे फिरहि बहु मोह पिआसा ॥ कुसंगति बहहि सदा दुखु पावहि दुखो दुखु कमाइआ ॥ ११ ॥ सतिगुर बाझहु संगति न होई ॥ बिनु सबदे पारु न पाए कोई ॥ सहजे गुण रवहि दिनु राती जोती जोति मिलाइआ ॥ १२ ॥ काइआ बिरखु पंखी विचि वासा ॥ अंम्रितु चुगहि गुर सबदि निवासा ॥ उडहि न मूले न आवहि न जाही निज घरि वासा पाइआ ॥ १३ ॥ काइआ सोधहि सबदु

वीचारहि ॥ मोह ठगउरी भरमु निवारहि ॥ आपे क्रिपा करे सुखदाता आपे मेलि मिलाइआ ॥ १४ ॥ सद ही नेड़ै दूरि न जाणहु ॥ गुर कै सबदि नजीकि पछाणहु ॥ बिगसै कमलु किरणि परगासै परगटु करि देखाइआ ॥ १५ ॥ आपे करता सचा सोई ॥ आपे मारि जीवाले अवरु न कोई ॥ नानक नामु मिलै वडिआई आपु गवाइ सुखु पाइआ ॥ १६ ॥ २ ॥ २४ ॥

हे भक्तवत्सल ! कृपा करके भक्तों को अपने साथ मिला लो, चूंकि भक्तजन लगन लगाकर सदा तेरी ही प्रशंसा करते रहते हैं। हे सृष्टिकर्ता ! तेरी शरण में ही उनका उद्वार हुआ है और तूने स्वयं ही उन्हें मिलाया है॥ १॥ पूर्ण गुरु-शब्द द्वारा की हुई भक्ति ही तुझे सुन्दर लगती है, यही तेरे मन को भा गई है और इससे उनके मन में सच्चा सुख उत्पन्न होता है। जिसने सच्चे परमेश्वर से चित्त लगाया है, उसका मन-तन सच्ची भक्ति में ही लीन रहता है॥ २॥ मनुष्य सदा अहम् की अग्नि में जलता रहता है, लेकिन यदि प्रभु-कृपा हो जाए तो पूर्ण गुरु से भेंट हो जाती है। शब्द-गुरु मन में से अज्ञान को दूर कर देता है और सतगुरु से सुख पाता है॥ ३॥ अन्धा मनमुखी जीव अन्धे कर्म ही करता है, फलस्वरूप योनि चक्र में भटकता हुआ अनेक कष्ट सहन करता है। मौत का फंदा वह कभी काट नहीं पाता और अन्तकाल बहुत दुख भोगता है॥ ४॥ आवागमन का निवारण शब्द-गुरु से होता है, जो सत्य-नाम को अपने हृदय में धारण करता है, वह गुरु के शब्द द्वारा मन को मार कर अपना अभिमान मिटाकर सत्य में विलीन हो जाता है॥ ५॥ जन्म-मरण के चक्र में पड़ी हुई दुनिया ख्वार होती रहती है, सतगुरु के बिना कोई भी स्थिर नहीं हो सकता। जिसके अन्तर्मन में शब्द ब्रह्म ज्योति का वास हो गया है, उसे ही सुख मिला है और उसकी ज्योति परम-ज्योति में विलीन हो गई है॥ ६॥ काम, क्रोध, लोभ, मोह एवं अहंकार रूपी पंच दूत विकारों का ख्याल करते हैं, यह सब मोह-माया का ही प्रसार है। यदि कोई सतगुरु की सेवा करे तो वह इन बन्धनों से मुक्त हो जाता है और पांच दूतों को वशीभूत कर लेता है॥ ७॥ गुरु के बिना मोह का अन्धेरा बना रहता है और जीव पुनः पुनः मोह के समुद्र में डूबता रहता है। यदि सतगुरु से भेंट हो जाए तो वह सत्य ही दृढ़ करवाता है और तब जीव के मन को सत्य-नाम ही प्यारा लगता है॥ ८॥ ईश्वर का द्वार एवं दरबार दोनों ही सत्य हैं। शब्द से प्रेम करने वाले परमात्मा की उपासना करते हैं। सच्चे परमात्मा का गुणगान करते हुए मन में सच्ची अनहद ध्वनि गूँजने लगती है और इस प्रकार जीव सत्य में विलीन हो जाता है॥ ६॥ यदि कोई शरीर रूपी घर में दसम द्वार रूपी घर को पा लेता है तो वह गुरु के शब्द द्वारा सहजवस्था में लीन हो जाता है। वहाँ उसे कोई शोक अथवा वियोग प्रभावित नहीं करता और वह सहज ही सहजावस्था में लीन रहता है॥ १०॥ द्वैतभाव में दुष्टता का वास होता है और इस तरह के व्यक्ति मोह-लालसा में भटकते रहते हैं। वे कुसंगति में बैठकर सदा दुख पाते हैं और दुखों में घिरे रहते हैं॥ ११॥ सतिगुरु के बिना सुसंगति प्राप्त नहीं होती और शब्द-गुरु के बिना कोई संसार-सागर से पार नहीं हो सकता। जो व्यक्ति सहजावस्था में दिन-रात प्रभु के गुण गाता रहता है, उसकी ज्योति परम-ज्योति में विलीन हो जाती है॥ १२॥ यह मानव-शरीर एक वृक्ष है, जिसमें मन रूपी पक्षी का निवास है। वह नामामृत का दाना चुगता है और शब्द-गुरु में लीन रहता है। अब वह बिल्कुल भी इधर-उधर नहीं उड़ता और अपने सच्चे घर में वास पा लेता है॥ १३॥ जो अपने शरीर को विकारों की ओर से शुद्ध करके शब्द का चिंतन करता है, वह मोह की ठग-बूटी सेवन नहीं करता और भ्रम को निवृत्त कर देता है। सुखदाता परमेश्वर स्वयं ही कृपा करके मिला लेता है॥ १४॥ ईश्वर सदैव ही हमारे निकट है, उसे कहीं दूर मत समझो। गुरु के शब्द द्वारा उसे नजदीक ही पहचान लो। जब हृदय-कमल खिल गया तो गुरु ने ज्ञान की किरणों का आलोक

करके प्रगट रूप में प्रभु के दर्शन करवा दिए॥ १५॥ वह सत्यस्वरूप परमेश्वर स्वयं कर्ता है, वह स्वयं ही मारने एवं जीवित करने वाला है और उसके बिना अन्य कोई नहीं। हे नानक! परमात्मा के नाम-स्मरण से ही संसार में कीर्ति मिलती है और अहंत्व को मिटाकर ही सच्चा सुख पाया जा सकता है॥ १६॥ २॥ २४॥

मारू सोलहे महला ४ १ओं सतिगुर प्रसादि ॥

सचा आपि सवारणहारा ॥ अवर न सूझसि बीजी कारा ॥ गुरमुखि सचु वसै घट अंतरि सहजे सचि समाई हे ॥ १ ॥ सभना सचु वसै मन माही ॥ गुर परसादी सहजि समाही ॥ गुरु गुरु करत सदा सुखु पाइआ गुर चरणी चितु लाई हे ॥ २ ॥ सतिगुरु है गिआनु सतिगुरु है पूजा ॥ सतिगुरु सेवी अवरु न दूजा ॥ सतिगुर ते नामु रतन धनु पाइआ सतिगुर की सेवा भाई हे ॥ ३ ॥ बिनु सतिगुर जो दूजै लागे ॥ आवहि जाहि भ्रमि मरहि अभागे ॥ नानक तिन की फिरि गति होवै जि गुरमुखि रहहि सरणाई हे ॥ ४ ॥ गुरमुखि प्रीति सदा है साची ॥ सतिगुर ते मागउ नामु अजाची ॥ होहु दइआलु क्रिपा करि हरि जीउ रखि लेवहु गुर सरणाई हे ॥ ५ ॥ अंम्रित रसु सतिगुरू चुआइआ ॥ दसवै दुआरि प्रगटु होइ आइआ ॥ तह अनहद सबद वजहि धुनि बाणी सहजे सहजि समाई हे ॥ ६ ॥ जिन कउ करतै धुरि लिखि पाई ॥ अनदिनु गुरु गुरु करत विहाई ॥ बिनु सतिगुर को सीझै नाही गुर चरणी चितु लाई हे ॥ ७ ॥ जिसु भावै तिसु आपे देइ ॥ गुरमुखि नामु पदारथु लेइ ॥ आपे क्रिपा करे नामु देवै नानक नामि समाई हे ॥ ८ ॥ गिआन रतनु मनि परगटु भइआ ॥ नामु पदारथु सहजे लइआ ॥ एह वडिआई गुर ते पाई सतिगुर कउ सद बलि जाई हे ॥ ९ ॥ प्रगटिआ सूरु निसि मिटिआ अंधिआरा ॥ अगिआनु मिटिआ गुर रतनि अपारा ॥ सतिगुर गिआनु रतनु अति भारी करमि मिलै सुखु पाई हे ॥ १० ॥ गुरमुखि नामु प्रगटी है सोइ ॥ चहु जुगि निरमलु हछा लोइ ॥ नामे नामि रते सुखु पाइआ नामि रहिआ लिव लाई हे ॥ ११ ॥ गुरमुखि नामु परापति होवै ॥ सहजे जागै सहजे सोवै ॥ गुरमुखि नामि समाइ समावै नानक नामु धिआई हे ॥ १२ ॥ भगता मुखि अंम्रित है बाणी ॥ गुरमुखि हरि नामु आखि वखाणी ॥ हरि हरि करत सदा मनु बिगसै हरि चरणी मनु लाई हे ॥ १३ ॥ हम मूरख अगिआन गिआनु किछु नाही ॥ सतिगुर ते समझ पड़ी मन माही ॥ होहु दइआलु क्रिपा करि हरि जीउ सतिगुर की सेवा लाई हे ॥ १४ ॥ जिनि सतिगुरु जाता तिनि एकु पछाता ॥ सरबे रवि रहिआ सुखदाता ॥ आतमु चीनि परम पदु पाइआ सेवा सुरति समाई हे ॥ १५ ॥ जिन कउ आदि मिली वडिआई ॥ सतिगुरु मनि वसिआ लिव लाई ॥ आपि मिलिआ जगजीवनु दाता नानक अंकि समाई हे ॥ १६ ॥ १ ॥

सत्यस्वरूप परमेश्वर स्वयं ही भक्तों को सँवारने वाला है, उसके सिमरन एवं भक्ति के अलावा अन्य कोई उससे विमुख करने वाला कार्य उन्हें सूझता ही नहीं। गुरुमुख के अन्तर्मन में ही सत्य निवसित होता है और वह सहज-स्वभाव ही सत्य में विलीन रहता है॥ १॥ सब के मन में सत्य ही अवस्थित है, किन्तु गुरु की कृपा से ही जीव सहजावस्था में लीन होता है। गुरु का नाम जपते हुए सदा सुख ही पाया है, अतः गुरु के चरणों में ही चित्त लगाया है॥ २॥ मेरे लिए तो सतगुरु ही ज्ञान एवं पूजा है, अतः मैं सतगुरु की ही उपासना करता हूँ और उसके अलावा किसी अन्य की सेवा नहीं करता। सतगुरु से ही अमूल्य रत्न सरीखा प्रभु-नाम रूपी धन पाया है और हमें तो सतगुरु की सेवा ही भा गई है॥ ३॥ सतगुरु के बिना जो द्वैतभाव में संलग्न हो गए

हैं, ऐसे दुर्भाग्यशाली जीव आवागमन में फँसकर भ्रम में ही मरते रहते हैं। हे नानक! उनकी भी फिर से मुक्ति हो जाती है, यदि गुरु की शरण में रहते हैं॥ ४॥ गुरु के संग लगाई प्रीति सदा ही सच्ची है। मैं तो सतगुरु से अतुलनीय परमात्मा का नाम ही माँगता हूँ। हे प्रभु! दयालु हो जाओ और कृपा करके गुरु की शरण में रख लो॥ ५॥ सतगुरु ने मेरे मुख में अमृतमयी हरिनाम रस डाल दिया है और प्रभु दशम द्वार में प्रगट हो गया है। वहाँ दशम द्वार में मधुर ध्वनि वाला अनाहत शब्द बजता है और मैं सहज ही सहजावस्था में लीन रहता हूँ॥ ६॥ विधाता ने प्रारम्भ से ही जिनके भाग्य में लिख दिया है, उनकी आयु प्रतिदिन 'गुरु-गुरु' जपते हुए ही व्यतीत होती है। सतगुरु के बिना कोई भी अपने मनोरथ में सफल नहीं होता, अतः हमने अपना चित्त गुरु-चरणों में लगा दिया है॥ ७॥ जिसे वह चाहता है, उसे ही (नाम) देता है पर गुरु के सान्निध्य में ही जीव नाम पदार्थ पाता है। हे नानक! अपनी कृपा करके प्रभु जिसे नाम प्रदान करता है, वह नाम में ही समाया रहता है॥ ८॥ ज्ञान रूपी रत्न मन में प्रगट हो गया है और सहज ही नाम रूपी पदार्थ पाया है। यह बड़ाई भी गुरु से प्राप्त हुई है, अतः मैं सतगुरु पर सदा बलिहारी जाता हूँ॥ ६॥ जैसे सूर्योदय होने पर रात्रिकाल का अन्धेरा मिट जाता है, वैसे ही गुरु के दिए अपार ज्ञान रत्न से अज्ञान मिट गया है। सतगुरु का ज्ञान रत्न अति अमूल्य है, पूर्ण भाग्य से जिसे मिल जाता है, वह सुख प्राप्त करता है॥ १०॥ गुरु के सान्निध्य में जिसे नाम प्राप्त हुआ है, उसकी शोभा समूचे जगत् में प्रगट हो गई है और चहुँ युगों में समस्त लोकों में उसे ही पवित्र एवं गुणवान माना जाता है। जो व्यक्ति केवल नाम में ही लीन रहता है, उसने ही सुख पाया है और वह नाम में ही लगन लगाकर रखता है॥ ११॥ जिसे गुरु के सान्निध्य में प्रभु-नाम प्राप्त हो जाता है, वह सहजावस्था में ही जागता और सोता है। गुरुमुख नाम में लीन रहकर परमात्मा में ही विलीन हो जाता है, हे नानक! वह परमात्मा के नाम का ही मनन करता रहता है॥ १२॥ भक्तों के मुँह में हर वक्त अमृत-वाणी ही रहती है, गुरु ने अपने मुखारबिंद से हरि-नाम ही कहकर सुनाया है। परमात्मा का नाम जपने से मन सदा खिला रहता है, अतः परमात्मा के चरणों में ही मन लगाया है॥ १३॥ हम मूर्ख एवं अज्ञानी हैं और हमें कुछ भी ज्ञान नहीं है। अब मन में सतगुरु से समझ पड़ गई है। हे प्रभु जी! दयालु हो जाओ और कृपा करके सतगुरु की सेवा में लगाकर रखो॥ १४॥ जिसने सतगुरु को जान लिया है, उसने एक परमेश्वर को भी पहचान लिया है। जीवों को सुख देने वाला परमेश्वर सर्वव्यापक है। जिस जीव ने अपनी आत्म-ज्योति को पहचान कर परम पद पाया है, उसकी सुरति प्रभु-सेवा में ही लीन रहती है॥ १५॥ जिन्हें प्रारम्भ से ही बड़ाई मिली है, सतगुरु उनके मन में बसा रहता है और उनकी उसमें ही लगन लगी रहती है। हे नानक! संसार को जीवन देने वाला निरंकार प्रभु स्वयं ही उन्हें मिला है और वे उसके चरणों में ही लीन रहते हैं॥ १६॥ १॥

मारू महला ४ ॥ हरि अगम अगोचरु सदा अबिनासी ॥ सरबे रवि रहिआ घट वासी ॥ तिसु बिनु अवरु न कोई दाता हरि तिसहि सरेवहु प्राणी हे ॥ १ ॥ जा कउ राखै हरि राखणहारा ॥ ता कउ कोइ न साकसि मारा ॥ सो ऐसा हरि सेवहु संतहु जा की ऊतम बाणी हे ॥ २ ॥ जा जापै किछु किथाऊ नाही ॥ ता करता भरपूरि समाही ॥ सूके ते फुनि हरिआ कीतोनु हरि धिआवहु चोज विडाणी हे ॥ ३ ॥ जो जीआ की वेदन जाणै ॥ तिसु साहिब कै हउ कुरबाणै ॥ तिसु आगै जन करि बेनंती जो सरब सुखा का दाणी हे ॥ ४ ॥ जो जीऐ की सार न जाणै ॥ तिसु सिउ किछु न कहीऐ अजाणै ॥ मूरख सिउ नह लूझु पराणी हरि जपीऐ पदु निरबाणी हे ॥ ५ ॥ ना करि चिंत चिंता है करते ॥ हरि देवै जलि थलि

जंता सभतै ॥ अचिंत दानु देइ प्रभु मेरा विचि पाथर कीट पखाणी हे ॥ ६ ॥ ना करि आस मीत सुत भाई ॥ ना करि आस किसै साह बिउहार की पराई ॥ बिनु हरि नावै को बेली नाही हरि जपीऐ सारंगपाणी हे ॥ ७ ॥ अनदिनु नामु जपहु बनवारी ॥ सभ आसा मनसा पूरै थारी ॥ जन नानक नामु जपहु भव खंडनु सुखि सहजे रैणि विहाणी हे ॥ ८ ॥ जिनि हरि सेविआ तिनि सुखु पाइआ ॥ सहजे ही हरि नामि समाइआ ॥ जो सरणि परै तिस की पति राखै जाइ पूछहु वेद पुराणी हे ॥ ६ ॥ जिसु हरि सेवा लाए सोई जनु लागै ॥ गुर कै सबदि भरम भउ भागै ॥ विचे ग्रिह सदा रहै उदासी जिउ कमलु रहै विचि पाणी हे ॥ १० ॥ विचि हउमै सेवा थाइ न पाए ॥ जनमि मरै फिरि आवै जाए ॥ सो तपु पूरा साई सेवा जो हरि मेरे मनि भाणी हे ॥ ११ ॥ हउ किआ गुण तेरे आखा सुआमी ॥ तू सरब जीआ का अंतरजामी ॥ हउ मागउ दानु तुझै पहि करते हरि अनदिनु नामु वखाणी हे ॥ १२ ॥ किस ही जोरु अहंकार बोलण का ॥ किस ही जोरु दीबान माइआ का ॥ मै हरि बिनु टेक धर अवर न काई तू करते राखु मै निमाणी हे ॥ १३ ॥ निमाणे माणु करहि तुधु भावै ॥ होर केती झखि झखि आवै जावै ॥ जिन का पखु करहि तू सुआमी तिन की ऊपरि गल तुधु आणी हे ॥ १४ ॥ हरि हरि नामु जिनी सदा धिआइआ ॥ तिनी गुर परसादि परम पदु पाइआ ॥ जिनि हरि सेविआ तिनि सुखु पाइआ बिनु सेवा पछोताणी हे ॥ १५ ॥ तू सभ महि वरतहि हरि जगंनाथु ॥ सो हरि जपै जिसु गुर मसतकि हाथु ॥ हरि की सरणि पइआ हरि जापी जनु नानकु दासु दसाणी हे ॥ १६ ॥ २ ॥

मन-वाणी से परे परमेश्वर सदा अनश्वर है, सर्वव्याप्त सब में रमण कर रहा है। उसके अतिरिक्त अन्य कोई देने वाला नहीं है, हे प्राणियो ! सो ऐसे प्रभु की उपासना करते रहो॥ १॥ ईश्वर समूचे संसार का रखवाला है, अतः जिसकी भी वह रक्षा करता है, उसे कोई भी मार नहीं सकता। हे भक्तजनो ! सो ऐसे ईश्वर की अर्चना करो, जिसकी वाणी सबसे उत्तम है॥ २॥ जहाँ मालूम होता है कि किसी स्थान पर कुछ भी नहीं है, वहाँ ईश्वर सर्वव्यापी है। जिसने सूखे को भी पुनः हरा-भरा कर दिया है, जिसकी लीला बड़ी अद्भुत है, सो उस परमेश्वर का भजन करो॥ ३॥ मैं तो उस मालिक पर ही कुर्बान जाता हूँ, जो सब जीवों का दुख-दर्द जानता है। हे भक्तजनो ! उसके समक्ष ही विनती करो जो सर्व सुखों का दाता है॥ ४॥ जो दिल की खबर नहीं जानता, उस नासमझ इन्सान को कुछ भी नहीं कहना चाहिए। हे प्राणी ! मूर्ख आदमी से कभी झगड़ा मत करो, अपितु भगवान का जाप करते रहना चाहिए, जिससे निर्वाण पद मिलता है॥ ५॥ हे मानव ! किसी बात की चिंता मत करो, क्योंकि परमात्मा को तो सबकी चिंता है। वह तो समुद्र-पृथ्वी में रहने वाले सब जीवों को आहार देता है। मेरा प्रभु तो पत्थर की चट्टानों में रहने वाले कीटों को भी रिजक देता है॥ ६॥ अपने मित्र, पुत्र एवं भाई की भी कोई आशा मत करो और न ही किसी साहूकार एवं अपने वाणिज्य-व्यापार की कोई पराई आशा करो। परमात्मा के नाम बिना कोई भी तेरा सच्चा साथी नहीं, सो उसका नाम जपते रहना चाहिए॥ ७॥ प्रतिदिन परमात्मा का नाम जपते रहो; वह तेरी सब आशाएँ एवं मनोरथ पूरे कर देगा। हे नानक ! जन्म-मरण का चक्र मिटाने वाले प्रभु का नाम जपते रहो; इससे तेरी जीवन रूपी रात्रि सुखमय एवं परमानंद में व्यतीत होगी॥ ८॥ जिसने भी ईश्वर की उपासना की है, उसने ही सुख पाया है और वह सहजावस्था में प्रभु-नाम में विलीन हो गया है। जो भी उसकी शरण में पड़े हैं, प्रभु ने उनकी लाज रखी है, इस सच्चाई के संदर्भ में वेद-पुराण भी हामी भरते हैं॥ ६॥ भगवान जिसे अपनी आराधना में लगाता है, वही खुशनसीब उसकी आराधना में तल्लीन होता है। गुरु के उपदेश द्वारा भ्रम एवं

भय दूर हो जाता है। जैसे पानी में कमल का फूल निर्लिप्त रहता है, वैसे ही ऐसा मनुष्य गृहस्थ में भी माया से सदा विरक्त रहता है॥ १०॥ अहम्-भावना में की हुई सेवा साकार नहीं होती, इस तरह का जीव जीवन-मृत्यु के चक्र में ही फँसा रहता है। वही तपस्या एवं सेवा पूर्ण है, जो मेरे परमेश्वर के मन को भा गई है॥ ११॥ हे स्वामी! मैं तेरे गुणों का क्या वर्णन करूँ, तू तो सब जीवों के मन की भावना को जानता है। हे रचयिता! मैं तुझसे केवल यही दान माँगता हूँ कि मैं प्रतिदिन तेरे नाम का स्तुतिगान करता रहूँ॥ १२॥ किसी मनुष्य में अधिक बोलने का अहंकार तथा ताकत का घमण्ड है। किसी के पास दरबार एवं धन-सम्पति का बल है। लेकिन मुझे तो भगवान् के सिवा अन्य कोई सहारा नहीं है। हे स्रष्टा! मैं विनीत हूँ, तू मुझे बचा ले॥ १३॥ जब तुझे अच्छा लगता है तो ही तू सम्मानहीन को सम्मान प्रदान करता है, अन्य कितनी ही दुनिया दुखी होकर आवागमन में पड़ी रहती है। हे स्वामी! तू जिनका भी पक्ष करता है, तूने उनकी बात सर्वोपरि कर दी है॥ १४॥ जिन्होंने सदैव ही परमात्मा के नाम का चिंतन किया है, गुरु की कृपा से उन्होंने ही मोक्ष पाया है। जिसने भी प्रभु की आराधना की है, उसे ही सुख उपलब्ध हुआ। उसकी सेवा के बिना कितनी ही दुनिया पछता रही है॥ १५॥ हे संसार के मालिक! तू सब जीवों में कार्यशील है। प्रभु को वही जपता है, जिसके माथे पर गुरु का आशीर्वाद होता है। प्रभु की शरण में से ही जाप होता है और नानक तो उसके दासों का भी दास है॥ १६॥ २॥

मारू सोलहे महला ५ १ओ सतिगुर प्रसादि ॥

कला उपाइ धरी जिनि धरणा ॥ गगनु रहाइआ हुकमे चरणा ॥ अगनि उपाइ ईधन महि बाधी सो प्रभु राखै भाई हे ॥ १ ॥ जीअ जंत कउ रिजकु संबाहे ॥ करण कारण समरथ आपाहे ॥ खिन महि थापि उथापनहारा सोई तेरा सहाई हे ॥ २ ॥ मात गरभ महि जिनि प्रतिपालिआ ॥ सासि ग्रासि होइ संगि समालिआ ॥ सदा सदा जपीऐ सो प्रीतमु वडी जिसु वडिआई हे ॥ ३ ॥ सुलतान खान करे खिन कीरे ॥ गरीब निवाजि करे प्रभु मीरे ॥ गरब निवारण सरब सधारण किछु कीमति कही न जाई हे ॥ ४ ॥ सो पतिवंता सो धनवंता ॥ जिसु मनि वसिआ हरि भगवंता ॥ मात पिता सुत बंधप भाई जिनि इह स्रिसटि उपाई हे ॥ ५ ॥ प्रभ आए सरणा भउ नही करणा ॥ साधसंगति निहचउ है तरणा ॥ मन बच करम अराधे करता तिसु नाही कदे सजाई हे ॥ ६ ॥ गुण निधान मन तन महि रविआ ॥ जनम मरण की जोनि न भविआ ॥ दूख बिनास कीआ सुखि डेरा जा त्रिपति रहे आघाई हे ॥ ७ ॥ मीतु हमारा सोई सुआमी ॥ थान थनंतरि अंतरजामी ॥ सिमरि सिमरि पूरन परमेसुर चिंता गणत मिटाई हे ॥ ८ ॥ हरि का नामु कोटि लख बाहा ॥ हरि जसु कीरतनु संगि धनु ताहा ॥ गिआन खड़गु करि किरपा दीना दूत मारे करि धाई हे ॥ ९ ॥ हरि का जापु जपहु जपु जपने ॥ जीति आवहु वसहु घरि अपने ॥ लख चउरासीह नरक न देखहु रसकि रसकि गुण गाई हे ॥ १० ॥ खंड ब्रहमंड उधारणहारा ॥ ऊच अथाह अगंम अपारा ॥ जिस नो क्रिपा करे प्रभु अपनी सो जनु तिसहि धिआई हे ॥ ११ ॥ बंधन तोड़ि लीए प्रभि मोले ॥ करि किरपा कीने घर गोले ॥ अनहद रुण झुणकारु सहज धुनि साची कार कमाई हे ॥ १२ ॥ मनि परतीति बनी प्रभ तेरी ॥ बिनसि गई हउमै मति मेरी ॥ अंगीकारु कीआ प्रभि अपनै जग महि सोभ सुहाई हे ॥ १३ ॥ जै जै कारु जपहु जगदीसै ॥ बलि बलि जाई प्रभ अपुने ईसै ॥ तिसु बिनु दूजा अवरु न दीसै एका जगति सबाई हे ॥ १४ ॥ सति सति सति प्रभु जाता ॥ गुर

परसादि सदा मनु राता ॥ सिमरि सिमरि जीवहि जन तेरे एकंकारि समाई हे ॥ १५ ॥ भगत जना का प्रीतमु पिआरा ॥ सभै उधारणु खसमु हमारा ॥ सिमरि नामु पुंनी सभ इछा जन नानक पैज रखाई हे ॥ १६ ॥ १ ॥

हे भाई ! जिसने शक्ति को उत्पन्न करके पृथ्वी को धारण किया हुआ है, गगन को अपने हुक्म रूपी चरणों में टिकाया हुआ है, अग्नि को उत्पन्न करके ईंधन में बाँध दिया है, सो वह प्रभु ही सबकी रक्षा करता है॥ १॥ जो सब जीवों को आहार पहुँचाता है, वह स्वयं ही सब कुछ करने-कराने में समर्थ है। जो पल में बनाने एवं मिटाने वाला है, वह प्रभु ही तेरा सहायक है॥ २॥ जिसने माँ के गर्भ में तेरा पोषण किया, प्रत्येक श्वास एवं ग्रास के साथ तेरा संगी बनकर हिफाजत की है, सर्वदा उस प्रियतम का ही नाम जपना चाहिए, जिसकी बड़ाई सबसे बड़ी है॥ ३॥ यदि उसकी मर्जी हो तो वह एक क्षण में बड़े-बड़े सुलतानों एवं खानों को छोटा-सा कीड़ा अर्थात् भिखारी बना देता है। प्रभु अपनी कृपा करके गरीब को भी बादशाह बना देता है। अभिमान का निवारण करने वाला परमात्मा सर्व-साधारण का सहारा है, जिसकी महिमा का मूल्य कुछ भी नहीं किया जा सकता॥ ४॥ वही इज्जतदार और वही धनवान् है, जिसके मन में भगवान की स्मृति बस गई है। जिसने यह सृष्टि उत्पन्न की है, वह परम-परमेश्वर ही हमारा माता-पिता, पुत्र, भाई एवं रिश्तेदार है॥ ५॥ प्रभु की शरण में आने से कोई भय प्रभावित नहीं करता। साधु-संगति में निश्चित ही भवसागर से पार हुआ जा सकता है। जो मन, वचन एवं कर्म द्वारा भगवान् की आराधना करता है, उसे कभी कोई दण्ड नहीं मिलता॥ ६॥ जिसके मन एवं तन में गुणों के भण्डार परमेश्वर की स्मृति बस गई है, वह जन्म-मरण की योनियों में नहीं भटकता। जब मन तृप्त होकर हर्षित रहता है तो सब दुख नाश हो जाते हैं और सर्व सुख मन में निवास कर लेते हैं॥ ७॥ वह स्वामी ही हमारा मित्र है, जो सर्वव्यापी एवं अन्तर्यामी है। उस पूर्ण परमेश्वर का सिमरन करके सारी चिन्ता मिटा ली है॥ ८॥ परमात्मा के नाम में लाखों-करोड़ों बाजुओं का बाहुबल है और हरि का कीर्तिगान ही सबसे बड़ा धन है। प्रभु ने कृपा करके ज्ञान रूपी खड्ग दी है, जिससे पाँच दूतों काम-क्रोध को मार कर भगा दिया है॥ ९॥ परमात्मा के नाम का जाप करो, क्योंकि यही जपने योग्य है। अपनी जीवनबाजी को जीतकर अपने सच्चे घर में आकर बस जाओ। प्रेमपूर्वक मज़े लेकर भगवान् का गुणगान करो, इस प्रकार चौरासी लाख योनियों का नरक मत देखो अर्थात् इसमें मत पड़ो॥ १०॥ परमात्मा खण्ड-ब्रह्मांड के जीवों का उद्धार करने वाला है, वह सब देवी-देवताओं से भी ऊँचा, ज्ञान का अथाह सागर, जीवों की पहुँच से परे एवं अपार है। प्रभु जिस पर अपनी कृपा करता है, वही जीव उसका मनन करता है॥ ११॥ प्रभु ने सब बन्धन तोड़कर मुझे मोल ले लिया है और कृपा करके अपने घर का सेवक बना लिया है। अब मैंने नाम-स्मरण का सच्चा कार्य कर लिया है, अतः मन में अनाहत शब्द की आनंदमय ध्वनि की मंद-मंद मीठी झंकार होती रहती है॥ १२॥ हे प्रभु ! मेरे मन में तेरे प्रति आस्था बन गई है, जिससे मेरी अहम् मति नाश हो गई है। मेरे प्रभु ने मेरा पक्ष किया है और समूचे जगत् में मेरी सुन्दर शोभा हो गई है॥ १३॥ उस जगदीश्वर की जय-जयकार करते हुए उसका ही नाम जपो, मैं तो अपने ईश्वर पर बलिहारी जाता हूँ। समूचे जगत् में एक वही मौजूद है और उसके बिना अन्य कोई दृष्टिमान नहीं होता॥ १४॥ मैंने जान लिया है कि एक प्रभु ही परम सत्य है, गुरु की कृपा से मेरा मन सदा उसमें ही लीन रहता है। हे परमेश्वर ! तेरे भक्तजन तेरा नाम-स्मरण करते हुए ही जी रहे हैं और वे तो ओंकार की स्मृति में ही लीन रहते हैं॥ १५॥ प्रभु भक्तजनों का प्रियतम प्यारा है, हमारा मालिक सबका उद्धार करने वाला है। हे नानक ! परमात्मा का नाम-स्मरण करने से हमारी सब मनोकामनाएँ पूरी हो गई हैं और उसने हमारी लाज रख ली है॥ १६॥ १॥

मारू सोलहे महला ५ १ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

संगी जोगी नारि लपटाणी ॥ उरझि रही रंग रस माणी ॥ किरत संजोगी भए इकत्रा करते भोग बिलासा हे ॥ १ ॥ जो पिरु करै सु धन ततु मानै ॥ पिरु धनहि सीगारि रखै संगानै ॥ मिलि एकत्र वसहि दिनु राती प्रिउ दे धनहि दिलासा हे ॥ २ ॥ धन मागै प्रिउ बहु बिधि धावै ॥ जो पावै सो आणि दिखावै ॥ एक वसतु कउ पहुचि न साकै धन रहती भूख पिआसा हे ॥ ३ ॥ धन करै बिनउ दोऊ कर जोरै ॥ प्रिअ परदेसि न जाहु वसहु घरि मोरै ॥ ऐसा बणजु करहु ग्रिह भीतरि जितु उतरै भूख पिआसा हे ॥ ४ ॥ सगले करम धरम जुग साधा ॥ बिनु हरि रस सुखु तिलु नही लाधा ॥ भई क्रिपा नानक सतसंगे तउ धन पिर अनंद उलासा हे ॥ ५ ॥ धन अंधी पिरु चपलु सिआना ॥ पंच ततु का रचनु रचाना ॥ जिसु वखर कउ तुम आए हहु सो पाइओ सतिगुर पासा हे ॥ ६ ॥ धन कहै तू वसु मै नाले ॥ प्रिअ सुखवासी बाल गुपाले ॥ तुझै बिना हउ कित ही न लेखै वचनु देहि छोडि न जासा हे ॥ ७ ॥ पिरि कहिआ हउ हुकमी बंदा ॥ ओहु भारो ठाकुरु जिसु काणि न छंदा ॥ जिचरु राखै तिचरु तुम संगि रहणा जा सदे त ऊठि सिधासा हे ॥ ८ ॥ जउ प्रिअ बचन कहे धन साचे ॥ धन कछू न समझै चंचलि काचे ॥ बहुरि बहुरि पिर ही संगु मागै ओहु बात जानै करि हासा हे ॥ ६ ॥ आई आगिआ पिरहु बुलाइआ ॥ ना धन पुछी न मता पकाइआ ॥ ऊठि सिधाइओ छूटरि माटी देखु नानक मिथन मोहासा हे ॥ १० ॥ रे मन लोभी सुणि मन मेरे ॥ सतिगुरु सेवि दिनु राति सदेरे ॥ बिनु सतिगुर पचि मूए साकत निगुरे गलि जम फासा हे ॥ ११ ॥ मनमुखि आवै मनमुखि जावै ॥ मनमुखि फिरि फिरि चोटा खावै ॥ जितने नरक से मनमुखि भोगै गुरमुखि लेपु न मासा हे ॥ १२ ॥ गुरमुखि सोइ जि हरि जीउ भाइआ ॥ तिसु कउणु मिटावै जि प्रभि पहिराइआ ॥ सदा अनंदु करे आनंदी जिसु सिरपाउ पइआ गलि खासा हे ॥ १३ ॥ हउ बलिहारी सतिगुर पूरे ॥ सरणि के दाते बचन के सूरे ॥ ऐसा प्रभु मिलिआ सुखदाता विछुड़ि न कत ही जासा हे ॥ १४ ॥ गुण निधान किछु कीम न पाई ॥ घटि घटि पूरि रहिओ सभ ठाई ॥ नानक सरणि दीन दुख भंजन हउ रेण तेरे जो दासा हे ॥ १५ ॥ १ ॥ २ ॥

(शरीर रूपी) नारी अपने संगी (आत्मा रूपी) योगी से लिपटी रहती है, वह उसी में उलझकर रंगरलियां एवं आनंद लेती है। कर्मों के संयोग से ये इकट्ठे हो गए हैं और भोग-विलास करते रहते हैं॥ १॥ उसका पति जो कुछ भी करता है, स्त्री उसे तत्क्षण मान लेती है। पति अपनी पत्नी को श्रृंगार कर अपने संग रखता है। वे दोनों मिलकर दिन-रात इकट्ठे ही रहते हैं और पति अपनी पत्नी को दिलासा देता रहता है॥ २॥ जब पत्नी पति से कुछ माँगती है तो वह अनेक प्रकार से इधर-उधर भागदौड़ करता है। जो कुछ वह प्राप्त करता है, उसे लाकर वह अपनी स्त्री को दिखाता है। परन्तु (आत्मा रूपी) पति एक हरि-नाम रूपी वस्तु तक पहुँच नहीं सकता और इस वस्तु के बिना उसकी (शरीर रूपी) स्त्री को माया की भूख-प्यास लगी रहती है॥ ३॥ स्त्री अपने दोनों हाथ जोड़कर विनती करती है कि हे मेरे प्रियवर! मुझे छोड़कर परदेस मत जाओ और मेरे घर में ही बसते रहो। घर में रहकर ऐसा वाणिज्य-व्यापार करो, जिससे मेरी तमाम भूख-प्यास मिट जाए॥ ४॥ (आत्मा रूपी) पति एवं (शरीर रूपी) पत्नी ने सभी युग के धर्म-कर्म करके देख लिए हैं, परन्तु हरि-नाम रस के बिना इन्हें तिल मात्र भी सुख नहीं मिला। हे नानक! जब सत्संग द्वारा प्रभु की कृपा हो गई तो पत्नी एवं पति आनंद-उल्लास में मग्न हो गए॥ ५॥ स्त्री ज्ञानहीन है किन्तु पति चतुर एवं बुद्धिमान है। परमात्मा ने यह रचना पाँच तत्वों से बनाई

है, जिस नाम रूपी वस्तु के लिए तुम जगत् में आए हो, वह वस्तु सतिगुरु से प्राप्त होती है॥ ६॥ स्त्री कहती है कि हे मेरे स्वामी ! तुम सदा ही मेरे संग रहो, तुम्हारे संग सुख में रहना मेरा कुटम्ब है। तुम्हारे बिना मेरा कोई अस्तित्व नहीं है, मुझे वचन दो कि तुम मुझे छोड़कर कहीं नहीं जाओगे॥ ७॥ (आत्मा रूपी) पति (शरीर रूपी) पत्नी को सच्ची बात कहता है कि मैं तो परमात्मा के हुक्म का पालन करने वाला बंदा हूँ, वह समूचे जगत् का मालिक है, जिसे किसी बात की कोई परवाह एवं भय नहीं। जब तक प्रभु मुझे रखेगा, तब तक ही मैंने तेरे साथ रहना है, जब वह मुझे बुलाएगा मैंने यहाँ से चले जाना है॥ ८॥ जब पति ने अपनी पत्नी को ऐसे सच्चे वचन कहे तो तुच्छ मति वाली चंचल स्त्री ने कुछ भी न समझा। वह बार-बार प्रिय का संग ही माँगती रही और अपने पति की बात को व्यंग्य ही समझ लिया॥ ६॥ जब प्रभु की आज्ञा आई तो पति को बुला लिया, पति ने न ही अपनी पत्नी से पूछा और न ही उसके साथ कोई सलाह की। (आत्मा रूपी) पति उठकर चला गया और विधवा पत्नी मिट्टी हो गई। हे नानक ! इस सच्चाई को देख लो, मोह का प्रसार मिथ्या ही है॥ १०॥ हे लोभी मन ! जरा ध्यानपूर्वक सुन; दिन-रात सदैव सतिगुरु की सेवा करो, सतिगुरु के बिना पदार्थवादी जीव गल सड़कर मर गए हैं और उन निगुरों के गले में यम का फंदा ही पड़ता है॥ ११॥ मनमुखी जीव जन्मते-मरते रहते हैं और उनको बार-बार यम से चोटें प्राप्त होती हैं। जितने भी नरक हैं, मनमुखी उतने ही भोगते हैं, लेकिन गुरुमुख को तिल मात्र भी दुख प्रभावित नहीं करता॥ १२॥ वास्तव में गुरुमुख वही है, जो भगवान् को भाया है। जिसे प्रभु ने यश प्रदान किया है, उसकी शोभा कौन मिटा सकता है। जिसके गले में परमात्मा ने सम्मान का सिरोपा पहनाया है, वह सदा परमानंद में लीन रहता है॥ १३॥ मैं पूर्ण सतगुरु पर बलिहारी जाता हूँ। हे शरण दाता, वचन के शूरवीर सतगुरु ! तेरी दया से मुझे सुख देने वाला ऐसा प्रभु मिला है, जिससे बिछुड़ कर मैं कहीं नहीं जाता॥ १४॥ उस गुणनिधान परमेश्वर की महिमा की कीमत नहीं आँकी जा सकती, वह घट-घट सबमें रमण कर रहा है। नानक तो दीनों के दुख नाश करने वाले परमात्मा की शरण में है और प्रार्थना करता है कि हे प्रभु ! मैं तेरे दासों की चरण-धूलि बना रहूँ॥ १५॥ १॥ २॥

मारू सोलहे महला ५ १ओं सतिगुर प्रसादि ॥

करै अनंदु अनंदी मेरा ॥ घटि घटि पूरनु सिर सिरहि निबेरा ॥ सिरि साहा कै सचा साहिबु अवरु नाही को दूजा हे ॥ १ ॥ हरखवंत आनंत दइआला ॥ प्रगटि रहिओ प्रभु सरब उजाला ॥ रूप करे करि वेखै विगसै आपे ही आपि पूजा हे ॥ २ ॥ आपे कुदरति करे वीचारा ॥ आपे ही सचु करे पसारा ॥ आपे खेल खिलावै दिनु राती आपे सुणि सुणि भीजा हे ॥ ३ ॥ साचा तखतु सची पातिसाही ॥ सचु खजीना साचा साही ॥ आपे सचु धारिओ सभु साचा सचे सचि वरतीजा हे ॥ ४ ॥ सचु तपावसु सचे केरा ॥ साचा थानु सदा प्रभ तेरा ॥ सची कुदरति सची बाणी सचु साहिब सुखु कीजा हे ॥ ५ ॥ एको आपि तूहै वड राजा ॥ हुकमि सचे कै पूरे काजा ॥ अंतरि बाहरि सभु किछु जाणै आपे ही आपि पतीजा हे ॥ ६ ॥ तू वड रसीआ तू वड भोगी ॥ तू निरबाणु तूहै ही जोगी ॥ सरब सूख सहज घरि तेरै अमिउ तेरी द्रिसटीजा हे ॥ ७ ॥ तेरी दाति तुझै ते होवै ॥ देहि दानु सभसै जंत लोऐ ॥ तोटि न आवै पूर भंडारै त्रिपति रहे आघीजा हे ॥ ८ ॥ जाचहि सिध साधिक बनवासी ॥ जाचहि जती सती सुखवासी ॥ इकु दातारु सगल है जाचिक देहि दानु स्रिसटीजा हे ॥ ६ ॥ करहि भगति अरु रंग अपारा ॥ खिन महि थापि उथापनहारा ॥ भारो तोलु बेअंत सुआमी हुकमु मंनि भगतीजा हे ॥ १० ॥ जिसु देहि दरसु सोई

तुधु जाणै ॥ ओहु गुर कै सबदि सदा रंग माणै ॥ चतुरु सरूपु सिआणा सोई जो मनि तेरै भावीजा हे ॥ ११ ॥ जिसु चीति आवहि सो वेपरवाहा ॥ जिसु चीति आवहि सो साचा साहा ॥ जिसु चीति आवहि तिसु भउ केहा अवरु कहा किछु कीजा हे ॥ १२ ॥ त्रिसना बूझी अंतरु ठंढा ॥ गुरि पूरै लै तूटा गंढा ॥ सुरति सबदु रिद अंतरि जागी अमिउ झोलि झोलि पीजा हे ॥ १३ ॥ मरै नाही सद सद ही जीवै ॥ अमरु भइआ अबिनासी थीवै ॥ ना को आवै ना को जावै गुरि दूरि कीआ भरमीजा हे ॥ १४ ॥ पूरे गुर की पूरी बाणी ॥ पूरै लागा पूरे माहि समाणी ॥ चड़ै सवाइआ नित नित रंगा घटै नाही तोलीजा हे ॥ १५ ॥ बारहा कंचनु सुधु कराइआ ॥ नदरि सराफ वंनी सचड़ाइआ ॥ परखि खजानै पाइआ सराफी फिरि नाही ताईजा हे ॥ १६ ॥ अंम्रित नामु तुमारा सुआमी ॥ नानक दास सदा कुरबानी ॥ संतसंगि महा सुखु पाइआ देखि दरसनु इहु मनु भीजा हे ॥ १७ ॥ १ ॥ ३ ॥

मेरा आनंदी प्रभु सदा आनंद करता है, वह घट-घट में व्याप्त है और प्रत्येक जीव का कर्मों के अनुसार ही निपटारा करता है। वह सत्यस्वरूप परमेश्वर बादशाहों से भी बड़ा बादशाह है और उसके अलावा अन्य कोई बड़ा नहीं॥ १॥ खुशदिल, बेअंत एवं दयालु प्रभु की ज्योति का प्रकाश सब में प्रगट है। वह अपने अनेक रूप पैदा करके उन्हें देखकर प्रसन्न होता है और स्वयं ही पुजारी के रूप में अपनी पूजा करता है॥ २॥ वह स्वयं ही विचार करके कुदरत को रचता है और स्वयं ही जगत्-प्रसार करता है। वह स्वयं ही जीवों को दिन-रात खेल खेलाता रहता है और स्वयं ही अपना यश सुनकर प्रसन्न होता है॥ ३॥ उसका सिंहासन सदा अटल है और उसकी बादशाहत भी सच्ची है। उसका खजाना सत्य है और वही सच्चा शाह है। उसने स्वयं ही सत्य को धारण किया हुआ है, सब ओर उसके सत्य का ही प्रसार है और वह परम सत्य के रूप में ही कार्यशील है॥ ४॥ उस परम-सत्य का न्याय भी सत्य है। हे प्रभु! तेरा निवास स्थान भी सदा अटल है। हे सच्चे मालिक! तेरी कुदरत एवं वाणी दोनों ही सच्चे हैं और तूने ही सब ओर सुख पैदा किया है॥ ५॥ एक तू ही सबसे बड़ा राजा है और तेरे सच्चे हुक्म से ही जीवों के समस्त कार्य पूरे होते हैं। जो जीवों के भीतर एवं बाहर जगत् में होता है, तू सब कुछ जानता है और तू स्वयं ही अपने में प्रसन्न रहता है॥ ६॥ तू ही बड़ा रसिया और तू ही बड़ा भोगी है। तू ही वासना से रहित है और तू ही महान योगी है। तेरे घर में सहजावस्था वाले सर्व सुख हैं और तेरी दृष्टि से अमृत बरसता है॥ ७॥ तेरी देन तुझ से ही लब्ध होती है और सब लोकों में जीवों को तू ही देने वाला है। तेरे भण्डार भरे हुए हैं, जो कभी समाप्त नहीं होते और सब जीव तृप्त होकर संतुष्ट रहते हैं॥ ८॥ बड़े-बड़े सिद्ध, साधक एवं वनों में रहने वाले तुझसे ही माँगते हैं, संन्यासी, सदाचारी एवं सुख में रहने वाले भी तुझसे ही याचना करते हैं। एक तू ही दातार है, अन्य सभी याचक हैं और समस्त सृष्टि को तू ही देने वाला है॥ ६॥ बेअंत जीव तेरी भक्ति करते हैं और तुझसे ही प्रेम करते हैं। तू ही क्षण में बनाने-तोड़ने वाला है। हे बेअंत स्वामी! तू सर्वशक्तिमान है और जीव तेरे हुक्म को मानकर ही तेरी भक्ति करते हैं॥ १०॥ जिसे तू दर्शन देता है केवल वही तुझे जानता है। वह गुरु के शब्द द्वारा सदा आनंदपूर्वक रहता है। जो तेरे मन को भा जाता है, वही चतुर, सुन्दर रूप वाला एवं बुद्धिमान है॥ ११॥ जिसे तू याद आता है, वही बेपरवाह है, जिसकी स्मृति में तू आता है, वही सच्चा बादशाह है। जिसे तू स्मरण आ जाता है, उसे कोई भय नहीं और उसका कोई क्या बिगाड़ सकता है॥ १२॥ जो पूर्ण गुरु के सम्पर्क में आ गया है, उसका टूटा हुआ दिल परमात्मा से जुड़ गया है। गुरु के सान्निध्य में उसकी तृष्णा बुझ गई है और मन शीतल हो गया है। उसके हृदय में ब्रह्म-शब्द से प्रीति जाग्रत हो गई है और वह आनंद से नामामृत का पान करता है॥ १३॥ वह कभी मरता नहीं अपितु सदा जीवित रहता है। वह अमर होकर अविनाशी बन गया है। गुरु ने

मेरा भ्रम दूर कर दिया है कि न कोई जन्म लेता है और न कोई मरता है॥ १४॥ पूर्ण गुरु की वाणी पूर्ण है। जो पूर्ण गुरु के साथ लग जाता है, वह पूर्ण परमेश्वर में ही समा जाता है। ऐसे जीव का परमात्मा से रंग दिन-ब-दिन बढ़ता जाता है, जो कभी कम नहीं होता॥ १५॥ जब सोना शत प्रतिशत शुद्ध हो गया तो वह सर्राफ की नजर में सच्चा सिद्ध हो गया और सर्राफ ने परख कर उसे खजाने में डाल लिया और उस सोने को परखने के लिए फिर तपाया नहीं जाता अर्थात् जब जीव गुरु रूपी सर्राफ की नजर में शुद्ध हो गया तो उसे परखकर खजाने में डाल दिया गया और उसे पुनः परीक्षा में से नहीं गुजरना पड़ा॥ १६॥ हे स्वामी ! तुम्हारा नाम अमृत की तरह मीठा है और दास नानक सदा तुझ पर कुर्बान जाता है। संतों की संगति में मुझे महा सुख प्राप्त हुआ है और उनके दर्शन से यह मन खुशी से भर गया है॥ १७॥ १॥ ३॥

मारू महला ५ सोलहे ੧ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

गुरु गोपालु गुरु गोविंदा ॥ गुरु दइआलु सदा बखसिंदा ॥ गुरु सासत सिम्रिति खटु करमा गुरु पवित्रु असथाना हे ॥ १ ॥ गुरु सिमरत सभि किलविख नासहि ॥ गुरु सिमरत जम संगि न फासहि ॥ गुरु सिमरत मनु निरमलु होवै गुरु काटे अपमाना हे ॥ २ ॥ गुर का सेवकु नरकि न जाए ॥ गुर का सेवकु पारब्रहमु धिआए ॥ गुर का सेवकु साधसंगु पाए गुरु करदा नित जीअ दाना हे ॥ ३ ॥ गुर दुआरै हरि कीरतनु सुणीऐ ॥ सतिगुरु भेटि हरि जसु मुखि भणीऐ ॥ कलि कलेस मिटाए सतिगुरु हरि दरगह देवै मानां हे ॥ ४ ॥ अगमु अगोचरु गुरू दिखाइआ ॥ भूला मारगि सतिगुरि पाइआ ॥ गुर सेवक कउ बिघनु न भगती हरि पूर द्रिढ़ाइआ गिआनां हे ॥ ५ ॥ गुरि द्रिसटाइआ सभनी ठांई ॥ जलि थलि पूरि रहिआ गोसाई ॥ ऊच ऊन सभ एक समानां मनि लागा सहजि धिआना हे ॥ ६ ॥ गुरि मिलिऐ सभ त्रिसन बुझाई ॥ गुरि मिलिऐ नह जोहै माई ॥ सतु संतोखु दीआ गुरि पूरै नामु अंम्रितु पी पानां हे ॥ ७ ॥ गुर की बाणी सभ माहि समाणी ॥ आपि सुणी तै आपि वखाणी ॥ जिनि जिनि जपी तेई सभि निसत्रे तिन पाइआ निहचल थानां हे ॥ ८ ॥ सतिगुर की महिमा सतिगुरु जाणै ॥ जो किछु करे सु आपण भाणै ॥ साधू धूरि जाचहि जन तेरे नानक सद कुरबानां हे ॥ ६ ॥ १ ॥ ४ ॥

गुरु ही संसार का पालक है, गुरु ही गोविन्द है, दया का सागर गुरु सदैव क्षमावान् है। शास्त्र, स्मृतियों एवं छः कर्मों का ज्ञान गुरु ही है, वही हमारा पावन स्थान है॥ १॥ गुरु के सिमरन से सभी पाप-दोष नाश हो जाते हैं, गुरु स्मरण से जीव यम की फाँसी में नहीं फँसता। गुरु का सिमरन करने से मन निर्मल हो जाता है और वह जीव के अभिमान को मिटा देता है॥ २॥ गुरु की सेवा करने वाला नरक में नहीं पड़ता और वह परब्रह्म का ध्यान-मनन करने में लीन रहता है। गुरु का सेवक सुसंगति पा लेता है और गुरु नित्य ही सत्संगियों को नाम-दान देता रहता है॥ ३॥ गुरु के द्वार पर परमात्मा का भजन-संकीर्तन सुनना चाहिए, सतगुरु को मिलकर मुख से ईश्वर का यशोगान करना चाहिए। गुरु अपने सेवक के सभी कलह-कलेश मिटा देता है और प्रभु-दरबार में उसे शोभा दिलवाता है॥ ४॥ गुरु ने ही अगम्य-अगोचर परमेश्वर के दर्शन करवाए हैं और सतगुरु ने भूले हुए जीव को सही मार्ग लगाया है। गुरु के सेवक को प्रभु-भक्ति के फलस्वरूप कोई विघ्न नहीं आता और गुरु ने उसे पूर्ण ज्ञान दृढ़ करवाया है॥ ५॥ गुरु ने उसे सर्वव्यापी दिखा दिया है, परमात्मा तो समुद्र एवं पृथ्वी में भी व्याप्त है। बड़ा और छोटा (ऊँच-नीच) सब उसके लिए एक समान हैं, अतः सहज ही मन उसके ध्यान में लग गया है॥ ६॥ गुरु से मिलकर सारी तृष्णा बुझ जाती है, गुरु से भेंटवार्ता होने के कारण माया भी प्रभावित नहीं करती।

पूर्ण गुरु ने सत्य-संतोष प्रदान किया है और गुरु के सान्निध्य में नामामृत का ही पान किया है॥ ७॥ गुरु की वाणी सभी के दिल में समा गई है। उसने स्वयं ही इसका यश सुना है और स्वयं ही इसका बखान किया है। जिस-जिस जिज्ञासु ने वाणी को जपा है, वे सभी संसार-सागर से पार हो गए हैं और उन्होंने अटल स्थान पा लिया है॥ ८॥ सतगुरु की महिमा को गुरु स्वयं ही जानता है। जो कुछ वह करता है, अपनी मर्जी से ही करता है। नानक प्रार्थना करता है कि हे ईश्वर! तेरे भक्तजन तो साधु-महापुरुषों की चरण-धूलि ही चाहते हैं और सदैव तुझ पर कुर्बान हैं॥ ६॥ १॥ ४॥

मारू सोलहे महला ५ १ओं सतिगुर प्रसादि ॥

आदि निरंजनु प्रभु निरंकारा ॥ सभ महि वरतै आपि निरारा ॥ वरनु जाति चिहनु नही कोई सभ हुकमे स्रिसटि उपाइदा ॥ १ ॥ लख चउरासीह जोनि सबाई ॥ माणस कउ प्रभि दीई वडिआई ॥ इसु पउड़ी ते जो नरु चूकै सो आइ जाइ दुखु पाइदा ॥ २ ॥ कीता होवै तिसु किआ कहीऐ ॥ गुरमुखि नामु पदारथु लहीऐ ॥ जिसु आपि भुलाए सोई भूलै सो बूझै जिसहि बुझाइदा ॥ ३ ॥ हरख सोग का नगरु इहु कीआ ॥ से उबरे जो सतिगुर सरणीआ ॥ त्रिहा गुणा ते रहै निरारा सो गुरमुखि सोभा पाइदा ॥ ४ ॥ अनिक करम कीए बहुतेरे ॥ जो कीजै सो बंधनु पैरे ॥ कुरुता बीजु बीजे नही जंमै सभु लाहा मूलु गवाइदा ॥ ५ ॥ कलजुग महि कीरतनु परधाना ॥ गुरमुखि जपीऐ लाइ धिआना ॥ आपि तरै सगले कुल तारे हरि दरगह पति सिउ जाइदा ॥ ६ ॥ खंड पताल दीप सभि लोआ ॥ सभि कालै वसि आपि प्रभि कीआ ॥ निहचलु एकु आपि अबिनासी सो निहचलु जो तिसहि धिआइदा ॥ ७ ॥ हरि का सेवकु सो हरि जेहा ॥ भेदु न जाणहु माणस देहा ॥ जिउ जल तरंग उठहि बहु भाती फिरि सललै सलल समाइदा ॥ ८ ॥ इकु जाचिकु मंगै दानु दुआरै ॥ जा प्रभ भावै ता किरपा धारै ॥ देहु दरसु जितु मनु त्रिपतासै हरि कीरतनि मनु ठहराइदा ॥ ६ ॥ रूड़ो ठाकुरु कितै वसि न आवै ॥ हरि सो किछु करे जि हरि किआ संता भावै ॥ कीता लोड़नि सोई कराइनि दरि फेरु न कोई पाइदा ॥ १० ॥ जिथै अउघटु आइ बनतु है प्राणी ॥ तिथै हरि धिआईऐ सारिंगपाणी ॥ जिथै पुत्रु कलत्रु न बेली कोई तिथै हरि आपि छडाइदा ॥ ११ ॥ वडा साहिबु अगम अथाहा ॥ किउ मिलीऐ प्रभ वेपरवाहा ॥ काटि सिलक जिसु मारगि पाए सो विचि संगति वासा पाइदा ॥ १२ ॥ हुकमु बूझै सो सेवकु कहीऐ ॥ बुरा भला दुइ समसरि सहीऐ ॥ हउमै जाइ त एको बूझै सो गुरमुखि सहजि समाइदा ॥ १३ ॥ हरि के भगत सदा सुखवासी ॥ बाल सुभाइ अतीत उदासी ॥ अनिक रंग करहि बहु भांती जिउ पिता पूतु लाडाइदा ॥ १४ ॥ अगम अगोचरु कीमति नही पाई ॥ ता मिलीऐ जा लए मिलाई ॥ गुरमुखि प्रगटु भइआ तिन जन कउ जिन धुरि मसतकि लेखु लिखाइदा ॥ १५ ॥ तू आपे करता कारण करणा ॥ स्रिसटि उपाइ धरी सभ धरणा ॥ जन नानकु सरणि पइआ हरि दुआरै हरि भावै लाज रखाइदा ॥ १६ ॥ १ ॥ ५ ॥

सृष्टि का आदि, मायातीत, निर्गुण प्रभु सब में कार्यशील होकर भी स्वयं निर्लिप्त रहता है। उसका कोई वर्ण, जाति एवं चिन्ह नहीं, वह तो अपने हुक्म से ही समस्त सृष्टि को उत्पन्न करता है॥ १॥ चौरासी लाख योनियों में से प्रभु ने मनुष्य को ही गौरव प्रदान किया है, किन्तु जो आदमी इस सुअवसर को पाकर भी (भक्ति-सिमरन से) चूक जाता है, वह जीवन-मृत्यु के बन्धन में पड़कर दुख ही पाता है॥ २॥ जो ईश्वर का बनाया हुआ है, उसकी क्या तारीफ की जाए। नाम रूपी पदार्थ तो गुरु के माध्यम से प्राप्त होता है। वही मनुष्य भूलता है, जिसे वह स्वयं भुलाता है और वही सत्य को बूझता है, जिसे वह स्वयं ज्ञान प्रदान करता है॥ ३॥ परब्रह्म ने खुशी एवं गम का

यह शरीर रूपी नगर बनाया है, जो सतगुरु की शरण में आ गया है, उसका उद्धार हो गया है। जो माया के तीन गुणों से निर्लिप्त रहता है, वह गुरुमुख शोभा का पात्र बनता है॥ ४॥ मनुष्य ने अनेक प्रकार के कर्म किए हैं, लेकिन जो कर्म किए हैं, उसके पैरों में बन्धन पड़ गए हैं। यदि कोई बिन मौसम बीज बोता है तो वह जमता नहीं और वह अपना मूल लाभ सब गंवा देता है॥ ५॥ कलियुग में परमात्मा का भजन-कीर्तन ही प्रधान कर्म है, अतः गुरु के सान्निध्य में ध्यान लगाकर उसका नाम जपना चाहिए। नाम जपने वाला स्वयं तो पार होता ही है, अपनी समस्त वंशावलि का भी उद्धार करवाता है और वह सम्मानपूर्वक प्रभु-दरबार में जाता है॥ ६॥ ये खण्ड, पाताल, द्वीप एवं सभी लोक प्रभु ने स्वयं ही सभी काल के वश में किए हुए हैं। एक निश्चल परमेश्वर स्वयं अविनाशी है और वही पुरुष निश्चल है, जो उसका चिंतन करता है॥ ७॥ ईश्वर का उपासक ईश्वर-रूप जैसा ही होता है। मानव-शरीर में उसमें एवं भगवान में कोई भेद मत समझो; जैसे अनेक प्रकार की जल-तरंगें उठकर पुनः जल में ही विलीन हो जाती हैं, वैसे ईश्वर का उपासक पुनः उसमें ही समाहित हो जाता है॥ ८॥ एक याचक प्रभु-द्वार पर दान माँगता है। यदि प्रभु को स्वीकार हो तो ही वह कृपा करता है। अपने दर्शन दीजिए, जिससे मन तृप्त हो जाए और हरि-कीर्तन में मन स्थिर होता है॥ ६॥ सुन्दर परमात्मा किसी भी प्रकार से मनुष्य के वश में नहीं आता, वह वही कुछ करता है, जो उसके संत-महापुरुषों को उपयुक्त लगता है। वे जो चाहते हैं, वही कुछ परमेश्वर से करवा लेते हैं, उनकी कही हुई बात अस्वीकार नहीं होती॥ १०॥ हे प्राणी! जहाँ कोई मुसीबत आ बनती है, वहाँ श्रीहरि का ध्यान करना चाहिए। जहाँ पुत्र, पत्नी एवं कोई साथी नहीं होता, वहाँ भगवान स्वयं ही उद्धारक होता है॥ ११॥ मालिक-प्रभु ही संसार में बड़ा है, अगम्य एवं असीम है, उस बेपरवाह प्रभु को कैसे मिला जा सकता है। जिस के बन्धन काटकर सच्चा मार्ग प्रदान करता है, वह तो सुसंगति में वास पाता है॥ १२॥ जो उसके हुक्म का भेद बूझ लेता है, वास्तव में वही सेवक कहलाने का हकदार है। बुरा-भला वह दोनों को एक समान मानता है। जब अहम् दूर हो जाता है, वह एक परमेश्वर के रहस्य को बूझ जाता है और वह गुरुमुख सहजावस्था में ही सत्य में विलीन हो जाता है॥ १३॥ भगवान के भक्त सदा सुखपूर्वक रहते हैं। वे बाल स्वभाव वाले भोले होते हैं, वासना से निर्लिप्त एवं विरक्त रहते हैं। वे विभिन्न प्रकार के अनेक रंग भोगते हैं, जैसे पिता अपने पुत्र से लाड लडाता है॥ १४॥ अगम्य-अगोचर परमेश्वर की किसी ने भी सही कीमत नहीं आँकी। उससे तभी मिला जाता है, जब वह स्वेच्छा से अपने संग मिला लेता है। गुरु के सान्निध्य में उस मनुष्य के हृदय में प्रभु प्रगट हो जाता है, जिनके माथे पर आरम्भ से ही भाग्य में लिखा है॥ १५॥ हे ईश्वर! तू ही कर्ता करने-करवाने वाला है, तूने ही समूची सृष्टि को उत्पन्न किया और धरती को स्थापित किया हुआ है। नानक तो परमात्मा के द्वार पर उसकी शरण में ही पड़ा है, यदि उसे स्वीकार हो तो वह स्वयं ही अपने दास की लाज रखता है॥ १६॥ १॥ ५॥

मारू सोलहे महला ५ १ओं सतिगुर प्रसादि ॥

जो दीसै सो एको तूहै ॥ बाणी तेरी स्रवणि सुणीऐ ॥ दूजी अवर न जापसि काई सगल तुमारी धारणा ॥ १ ॥ आपि चितारे अपणा कीआ ॥ आपे आपि आपि प्रभु थीआ ॥ आपि उपाइ रचिओनु पसारा आपे घटि घटि सारणा ॥ २ ॥ इकि उपाए वड दरवारी ॥ इकि उदासी इकि घर बारी ॥ इकि भूखे इकि त्रिपति अघाए सभसै तेरा पारणा ॥ ३ ॥ आपे सति सति सति साचा ॥ ओति पोति भगतन संगि राचा ॥ आपे गुपतु आपे है परगटु अपणा आपु पसारणा ॥ ४ ॥ सदा सदा सद होवणहारा ॥

ऊचा अगमु अथाहु अपारा ॥ ऊणे भरे भरे भरि ऊणे एहि चलत सुआमी के कारणा ॥ ५ ॥ मुखि सालाही सचे साहा ॥ नैणी पेखा अगम अथाहा ॥ करनी सुणि सुणि मनु तनु हरिआ मेरे साहिब सगल उधारणा ॥ ६ ॥ करि करि वेखहि कीता अपणा ॥ जीअ जंत सोई है जपणा ॥ अपणी कुदरति आपे जाणै नदरी नदरि निहालणा ॥ ७ ॥ संत सभा जह बैसहि प्रभ पासे ॥ अनंद मंगल हरि चलत तमासे ॥ गुण गावहि अनहद धुनि बाणी तह नानक दासु चितारणा ॥ ८ ॥ आवणु जाणा सभु चलतु तुमारा ॥ करि करि देखै खेलु अपारा ॥ आपि उपाए उपावणहारा अपणा कीआ पालणा ॥ ६ ॥ सुणि सुणि जीवा सोइ तुमारी ॥ सदा सदा जाई बलिहारी ॥ दुइ कर जोड़ि सिमरउ दिनु राती मेरे सुआमी अगम अपारणा ॥ १० ॥ तुधु बिनु दूजे किसु सालाही ॥ एको एकु जपी मन माही ॥ हुकमु बूझि जन भए निहाला इह भगता की घालणा ॥ ११ ॥ गुर उपदेसि जपीऐ मनि साचा ॥ गुर उपदेसि राम रंगि राचा ॥ गुर उपदेसि तुटहि सभि बंधन इहु भरमु मोहु परजालणा ॥ १२ ॥ जह राखै सोई सुख थाना ॥ सहजे होइ सोई भल माना ॥ बिनसे बैर नाही को बैरी सभु एको है भालणा ॥ १३ ॥ डर चूके बिनसे अंधिआरे ॥ प्रगट भए प्रभ पुरख निरारे ॥ आपु छोडि पए सरणाई जिस का सा तिसु घालणा ॥ १४ ॥ ऐसा को वडभागी आइआ ॥ आठ पहर जिनि खसमु धिआइआ ॥ तिसु जन कै संगि तरै सभु कोई सो परवार सधारणा ॥ १५ ॥ इह बखसीस खसम ते पावा ॥ आठ पहर कर जोड़ि धिआवा ॥ नामु जपी नामि सहजि समावा नामु नानक मिलै उचारणा ॥ १६ ॥ १ ॥ ६ ॥

जो भी दृष्टिगोचर है, हे परमात्मा ! वह केवल तू ही है। तेरी ही वाणी कानों से सुनी जा रही है। तेरे सिवा अन्य कोई वस्तु मालूम ही नहीं और यह सारी दुनिया तेरे सहारे पर ही कायम है॥ १॥ अपने बनाए हुए संसार का तू स्वयं ही ध्यान रखता है। वह प्रभु स्वयं ही प्रकाशमान हुआ है। उसने स्वयं ही सगुण रूप उत्पन्न करके जगत्-रचना का प्रसार किया है और वह स्वयं ही घट-घट में व्याप्त होकर सबकी संभाल करता है॥ २॥ उसने कई बड़े दरबार वाले बादशाह पैदा किए, कई उदासी साधु तो कई गृहस्थी पैदा किए। कई भूखे रहते हैं और कुछ लोग ऐसे भी हैं जो खा कर तृप्त रहते हैं। मगर सब जीवों को एक तेरा ही भरोसा है॥ ३॥ वह सत्यस्वरूप परमेश्वर स्वयं ही सत्य है, वह ताने-बाने की तरह भक्तों के संग लीन रहता है। वह स्वयं ही गुप्त निवास करता है और भक्तों को दर्शन देने के लिए स्वयं ही प्रत्यक्ष हो जाता है, यह सारी दुनिया उसका ही प्रसार है॥ ४॥ अनन्तकाल सदा सर्वदा ईश्वर ही रहने वाला है, वह सबसे ऊँचा, अगम्य, अथाह एवं अपरंपार है। मेरे स्वामी के यह अद्‌भुत कौतुक हैं कि वह खाली बर्तन को भी भर देता है और भरे हुए को खाली कर देता है॥ ५॥ हे सच्चे मालिक ! मैं मुँह से तेरी ही स्तुति करता हूँ, नयनों से अगम्य-अथाह प्रभु को ही देखता हूँ। अपने कानों से तेरा यश सुन-सुनकर मेरा मन-तन आनंदित हो गया है। हे मालिक ! तू सबका उद्धारक है॥ ६॥ वह अपनी सृष्टि-रचना को देखता रहता है और सभी जीव परमेश्वर का ही नाम जप रहे हैं। अपनी कुदरत को वह स्वयं ही जानता है और कृपा-दृष्टि करके जीवों को निहाल कर देता है॥ ७॥ जहाँ संतों की सभा में भक्तजन बैठते हैं, वहाँ प्रभु उनके पास ही विराजमान होता है। वहाँ पर परमात्मा की अद्‌भुत लीला-तमाशों का कथन एवं मंगलगान होता है। जब वहाँ वाणी द्वारा भगवान का गुणगान होता है तो अनाहत ध्वनि गूंजती रहती है, दास नानक भी परमात्मा के स्मरण में ही लीन है॥ ८॥ हे परमेश्वर ! जन्म-मरण सब तेरी एक लीला है, तू अपनी यह अद्‌भुत खेल कर-करके देख रहा है। हे उत्पन्न करने वाले ! तू ही उत्पन्न करता है और अपनी पैदा की हुई दुनिया का तू स्वयं ही पोषण करता है॥ ६॥ मैं तेरी महिमा सुन-सुनकर जीवन पा रहा हूँ और सदा तुझ पर बलिहारी

जाता हूँ। हे मेरे स्वामी ! मैं दोनों हाथ जोड़कर दिन-रात तेरी वंदना करता हूँ॥ १०॥ तुझ बिन किसी अन्य की मैं क्या प्रशंसा करूँ ? मैं तो मन में केवल तेरा ही नाम जपता रहता हूँ। तेरे हुक्म के रहस्य को बूझ कर भक्तजन निहाल हो गए हैं और तेरे भक्तों की यही साधना है॥ ११॥ गुरु के उपदेश से मन में परमात्मा को ही जपना चाहिए, गुरु के उपदेश द्वारा राम के प्रेम रंग में लीन रहना चाहिए। गुरु के उपदेश से सभी बन्धन टूट जाते हैं और माया का यह मोह-भ्रम भी जल जाता है॥ १२॥ जहाँ भी ईश्वर रखता है, वही सुख का स्थान है, जो कुछ भी सहज स्वभाव होता है, उसे ही भला मानना चाहिए। यद्यपि मन में से वैर भावना नाश हो जाए तो कोई वैरी नहीं रहता और सब में एक परमात्मा को ही खोजना चाहिए॥ १३॥ मेरे सभी डर समाप्त हो गए हैं और अज्ञानता रूपी अंधेरा मिट गया है। परम पुरुष एवं निराला प्रभु हृदय में प्रगट हो गया है। मैं अपने अहम् को छोड़कर उसकी शरण में पड़ गया हूँ और जिसका बनाया हुआ हूँ, उसकी ही उपासना की है॥ १४॥ दुनिया में ऐसा कोई खुशनसीब ही आया है, जिसने आठ प्रहर मालिक का चिंतन किया है। उस महापुरुष की संगत करके हर कोई संसार-सागर से पार हो जाता है और वह अपने परिवार का भी कल्याण करवा देता है॥ १५॥ मैं अपने मालिक से यही वरदान चाहता हूँ कि हाथ जोड़कर आठ प्रहर उसकी ही अर्चना करता रहूँ। नानक विनती करता है कि हे परमेश्वर ! यदि मुझे तेरा नाम मिल जाए तो उसका ही उच्चारण करता रहूँ और नाम जप कर सहजावस्था द्वारा नाम में समाहित हो जाऊँ॥ १६॥ १॥ ६॥

मारू महला ५ ॥ सूरति देखि न भूलु गवारा ॥ मिथन मोहारा झूठु पसारा ॥ जग महि कोई रहणु न पाए निहचलु एकु नाराइणा ॥ १ ॥ गुर पूरे की पउ सरणाई ॥ मोहु सोगु सभु भरमु मिटाई ॥ एको मंत्रु द्रिड़ाए अउखधु सचु नामु रिद गाइणा ॥ २ ॥ जिसु नामै कउ तरसहि बहु देवा ॥ सगल भगत जा की करदे सेवा ॥ अनाथा नाथु दीन दुख भंजनु सो गुर पूरे ते पाइणा ॥ ३ ॥ होरु दुआरा कोइ न सूझै ॥ त्रिभवण धावै ता किछू न बूझै ॥ सतिगुरु साहु भंडारु नाम जिसु इहु रतनु तिसै ते पाइणा ॥ ४ ॥ जा की धूरि करे पुनीता ॥ सुरि नर देव न पावहि मीता ॥ सति पुरखु सतिगुरु परमेसरु जिसु भेटत पारि पराइणा ॥ ५ ॥ पारजातु लोड़हि मन पिआरे ॥ कामधेनु सोही दरबारे ॥ त्रिपति संतोखु सेवा गुर पूरे नामु कमाइ रसाइणा ॥ ६ ॥ गुर कै सबदि मरहि पंच धातू ॥ भै पारब्रहम होवहि निरमला तू ॥ पारसु जब भेटै गुरु पूरा ता पारसु परसि दिखाइणा ॥ ७ ॥ कई बैकुंठ नाही लवै लागे ॥ मुकति बपुड़ी भी गिआनी तिआगे ॥ एकंकारु सतिगुर ते पाईऐ हउ बलि बलि गुर दरसाइणा ॥ ८ ॥ गुर की सेव न जाणै कोई ॥ गुरु पारब्रहमु अगोचरु सोई ॥ जिस नो लाइ लए सो सेवकु जिसु वडभाग मथाइणा ॥ ९ ॥ गुर की महिमा बेद न जाणहि ॥ तुछ मात सुणि सुणि वखाणहि ॥ पारब्रहम अपरंपर सतिगुर जिसु सिमरत मनु सीतलाइणा ॥ १० ॥ जा की सोइ सुणी मनु जीवै ॥ रिदै वसै ता ठंढा थीवै ॥ गुरु मुखहु अलाए ता सोभा पाए तिसु जम कै पंथि न पाइणा ॥ ११ ॥ संतन की सरणाई पड़िआ ॥ जीउ प्राण धनु आगै धरिआ ॥ सेवा सुरति न जाणा काई तुम करहु दइआ किरमाइणा ॥ १२ ॥ निरगुण कउ संगि लेहु रलाए ॥ करि किरपा मोहि टहलै लाए ॥ पखा फेरउ पीसउ संत आगै चरण धोइ सुखु पाइणा ॥ १३ ॥ बहुतु दुआरे भ्रमि भ्रमि आइआ ॥ तुमरी क्रिपा ते तुम सरणाइआ ॥ सदा सदा संतह संगि राखहु एहु नाम दानु देवाइणा ॥ १४ ॥ भए क्रिपाल गुसाई मेरे ॥ दरसनु पाइआ सतिगुर पूरे ॥ सूख सहज सदा आनंदा नानक दास दसाइणा ॥ १५ ॥ २ ॥ ७ ॥

हे नादान मानव! सुन्दर रूप देखकर किसी भूल में मत पड़, क्योंकि माया का मोह प्रसार सब झूठा और नाशवान है। मृत्यु अटल है, अतः जगत् में कोई सदा के लिए रहने वाला नहीं, केवल एक ईश्वर ही अटल-अमर है॥ १॥ पूर्ण गुरु की शरण में पड़ो, क्योंकि वह तुम्हारा मोह, शोक एवं समूचा भ्रम मिटाने वाला है। वह औषधि के रूप में केवल नाम-मंत्र ही दृढ़ करवाता है और गुरु का यही उपदेश है कि हृदय में सत्य-नाम का ही गुणगान करते रहो॥ २॥ जिस नाम को पाने के लिए अनेक देवी-देवता भी तरसते हैं, सभी भक्त जिसकी उपासना करते हैं, अनाथों का नाथ, दीनों का दुख नाश करने वाला वह प्रभु तो पूर्ण गुरु द्वारा ही पाया जा सकता है॥ ३॥ (गुरु के सिवाय) अन्य कोई भी द्वार नहीं सूझता, जीव चाहे तीनों लोकों में दौड़ता रहे परन्तु उसे कुछ भी ज्ञान नहीं होता। सतगुरु ही ऐसा साहूकार है, जिसके पास नाम का भण्डार है, यह नाम रूपी रत्न उससे ही प्राप्त होता है॥ ४॥ जिसकी चरण-धूलि जीवों को पवित्र कर देती है, उसे देवता, मनुष्य एवं त्रिदेव भी नहीं पाते। सत्यपुरुष सतगुरु परमेश्वर का ही रूप है, जिसे मिलने से जीव संसार-सागर से पार हो जाते हैं॥ ५॥ हे प्यारे मन! यदि तू सर्व इच्छाएँ पूरी करने वाला स्वर्ग का पारिजात वृक्ष पाना चाहता है, अगर तेरी अभिलाषा है कि सब कामनाएँ पूरी करने वाली कामधेनु तेरे द्वार पर शोभा देती रहे तो तू पूर्ण गुरु की सेवा में तल्लीन रह, रसायन रूप नाम की साधना कर, जिससे तुझे तृप्ति एवं संतोष मिल जाएगा॥ ६॥ गुरु के शब्द द्वारा काम, क्रोध, इत्यादि पाँचों विकार मिट जाते हैं और परब्रह्म के श्रद्धा रूपी भय से जीव निर्मल हो जाता है। जब पारस रूपी पूर्ण गुरु मिल जाता है तो उसके चरण-स्पर्श से साधारण मनुष्य भी पारस रूप दिखाई देने लगता है॥ ७॥ बैकुण्ठ के अनेक सुख भी उसकी बराबरी नहीं कर सकते और ज्ञानी मनुष्य भी बेचारी मुक्ति को त्याग देते हैं अर्थात् उसकी लालसा नहीं करते। एक परमेश्वर तो सतिगुरु के द्वारा ही पाया जाता है, अतः मैं गुरु-दर्शनों पर बलिहारी जाता हूँ॥ ८॥ गुरु की सेवा का भेद कोई नहीं जानता, इन्द्रियातीत परब्रह्म ही गुरु है। उसका सेवक वही है, जिसे वह अपनी लगन में लगा लेता है और जिसके माथे पर अहोभाग्य होता है॥ ६॥ गुरु की महिमा का रहस्य वेद भी नहीं जानते और सुन-सुनकर तुच्छ मात्र ही उपमा बयान करते हैं। सतिगुरु ही अपरंपार परब्रह्म है, जिसे स्मरण करने से मन शीतल हो जाता है॥ १०॥ जिसकी महिमा सुनने से मन जी रहा है, जिसके हृदय में वास करने से शान्ति मिलती है, जब मनुष्य मुँह से 'गुरु गुरु' जपता है तो ही शोभा का पात्र बनता है और उसे यम के मार्ग में नहीं डाला जाता॥ ११॥ मैं संतजनों की शरण में पड़ गया हूँ और अपना जीवन, प्राण एवं धन उनके समक्ष अर्पण कर दिया है। हे भगवान्! मुझे तेरी सेवा एवं नाम-स्मरण करने का कोई ज्ञान नहीं, अतः मुझ कीट पर तुम दया करो॥ १२॥ मुझ गुणविहीन को अपने संग मिला लो, कृपा करके मुझे अपनी सेवा में संलग्न कर लो। मैं तेरे संतों को पंखा करता हूँ, उनके आगे आटा पीसता हूँ और उनके चरण धोकर सुख की अनुभूति करता हूँ॥ १३॥ मैं बहुत सारे द्वारों पर भटक-भटक कर तेरे पास आया हूँ, तुम्हारी कृपा से तुम्हारी शरण में आया हूँ। मुझे सदा संतों की संगत में रखो और मुझे उनसे नाम का दान दिलवा देना॥ १४॥ मेरा मालिक जब कृपालु हो गया तो ही मुझे पूर्ण सतिगुरु के दर्शन प्राप्त हुए। हे नानक! अब सदैव ही मेरे मन में सहज-सुख एवं आनंद बना रहता है और परमात्मा के दासों का दास बन गया हूँ॥ १५॥ २॥ ७॥

मारू सोलहे महला ५ १ओं सतिगुर प्रसादि ॥

सिमरै धरती अरु आकासा ॥ सिमरहि चंद सूरज गुणतासा ॥ पउण पाणी बैसंतर सिमरहि सिमरै सगल उपारजना ॥ १ ॥ सिमरहि खंड दीप सभि लोआ ॥ सिमरहि पाताल पुरीआ सचु सोआ ॥

सिमरहि खाणी सिमरहि बाणी सिमरहि सगले हरि जना ॥ २ ॥ सिमरहि ब्रहमे बिसन महेसा ॥ सिमरहि देवते कोड़ि तेतीसा ॥ सिमरहि जख्यि दैत सभि सिमरहि अगनतु न जाई जसु गना ॥ ३ ॥ सिमरहि पसु पंखी सभि भूता ॥ सिमरहि बन परबत अउधूता ॥ लता बली साख सभ सिमरहि रवि रहिआ सुआमी सभ मना ॥ ४ ॥ सिमरहि थूल सूखम सभि जंता ॥ सिमरहि सिध साधिक हरि मंता ॥ गुपत प्रगट सिमरहि प्रभ मेरे सगल भवन का प्रभ धना ॥ ५ ॥ सिमरहि नर नारी आसरमा ॥ सिमरहि जाति जोति सभि वरना ॥ सिमरहि गुणी चतुर सभि बेते सिमरहि रैणी अरु दिना ॥ ६ ॥ सिमरहि घड़ी मूरत पल निमखा ॥ सिमरै कालु अकालु सुचि सोचा ॥ सिमरहि सउण सासत्र संजोगा अलखु न लखीऐ इकु खिना ॥ ७ ॥ करन करावनहार सुआमी ॥ सगल घटा के अंतरजामी ॥ करि किरपा जिसु भगती लावहु जनमु पदारथु सो जिना ॥ ८ ॥ जा कै मनि वूठा प्रभु अपना ॥ पूरै करमि गुर का जपु जपना ॥ सरब निरंतरि सो प्रभु जाता बहुड़ि न जोनी भरमि रुना ॥ ९ ॥ गुर का सबदु वसै मनि जा कै ॥ दूखु दरदु भ्रमु ता का भागै ॥ सूख सहज आनंद नाम रसु अनहद बाणी सहज धुना ॥ १० ॥ सो धनवंता जिनि प्रभु धिआइआ ॥ सो पतिवंता जिनि साधसंगु पाइआ ॥ पारब्रहमु जा कै मनि वूठा सो पूर करंमा ना छिना ॥ ११ ॥ जलि थलि महीअलि सुआमी सोई ॥ अवरु न कहीऐ दूजा कोई ॥ गुर गिआन अंजनि काटिओ भ्रमु सगला अवरु न दीसै एक बिना ॥ १२ ॥ ऊचे ते ऊचा दरबारा ॥ कहणु न जाई अंतु न पारा ॥ गहिर गंभीर अथाह सुआमी अतुलु न जाई किआ मिना ॥ १३ ॥ तू करता तेरा सभु कीआ ॥ तुझु बिनु अवरु न कोई बीआ ॥ आदि मधि अंति प्रभु तूहै सगल पसारा तुम तना ॥ १४ ॥ जमदूतु तिसु निकटि न आवै ॥ साधसंगि हरि कीरतनु गावै ॥ सगल मनोरथ ता के पूरन जो स्रवणी प्रभ का जसु सुना ॥ १५ ॥ तू सभना का सभु को तेरा ॥ साचे साहिब गहिर गंभीरा ॥ कहु नानक सेई जन ऊतम जो भावहि सुआमी तुम मना ॥ १६ ॥ १ ॥ ८ ॥

धरती और आकाश ईश्वर का ही स्मरण करते हैं, सूर्य-चाँद भी उस गुणनिधि की उपासना कर रहे हैं, पवन, पानी एवं अग्नि भी उसका गुणानुवाद करते हैं, वास्तव में समस्त सृष्टि उसे ही स्मरण कर रही है॥ १॥ खण्ड, द्वीप एवं सभी लोक उसे याद कर रहे हैं, पाताल, पुरियां भी उस परम-सत्य का सुमिरन करने में लीन हैं, उत्पत्ति के चार स्रोत एवं चारों वाणियां उसकी स्मृति में लीन हैं और सभी हरि-भक्त उसे ही स्मरण करते हैं॥ २॥ ब्रह्मा, विष्णु एवं महेश भी उस ओंकार को ही याद करते हैं, तेंतीस करोड़ देवते भी उसका स्मरण करते हैं, यक्ष, सभी दैत्य भी उस एक का ही सुमिरन करते हैं, असंख्य जीव प्रभु का ही यशगान करते हैं, जिनकी गणना नहीं की जा सकती॥ ३॥ पशु-पक्षी, सभी तत्व उसे याद करते हैं, वन, पर्वत एवं अवधूत भी उसका सिमरन करते हैं, लता, पेड़, शाखा इत्यादि सभी उसकी आराधना करते हैं, सभी जीवों के मन में परमेश्वर ही रमण कर रहा है॥ ४॥ सूक्ष्म एवं स्थूल शरीर वाले सभी जीव उसका स्मरण करते हैं, बड़े-बड़े सिद्ध-साधक हरि-नाम मंत्र का ध्यान करते रहते हैं। सभी गुप्त एवं प्रगट जीव मेरे प्रभु को ही याद करते हैं, मेरा प्रभु तो आकाश, पाताल, पृथ्वी इत्यादि सभी लोकों का स्वामी है॥ ५॥ ब्रह्मचार्य, गृहस्थ, वानप्रस्थ एवं संन्यास-इन चार आश्रमों के नर-नारी भी परमात्मा की ही अर्चना करते हैं, सभी जातियाँ-क्षत्रिय, ब्राह्मण, वैश्य एवं शूद्र इन चारों वर्णों के लोग, सूक्ष्म शरीर वाली आत्माएँ सब उसकी ही वंदना करते हैं। सभी गुणवान्, चतुर एवं विद्वान दिन-रात ईश्वर की ही उपासना करते हैं॥ ६॥ घड़ी, मुहूर्त, पल एवं निमेष उसे ही याद करते रहते हैं, काल, काल से रहित, संयम एवं शारीरिक पवित्रता रखने वाले प्राणी भगवान की स्मृति में लीन रहते हैं; शगुन, शास्त्र

एवं संयोग बताने वाले ज्योतिषी भी उसका सिमरन करते हैं लेकिन उस अलख परमेश्वर के एक क्षण दर्शन नहीं किए जा सकते॥ ७॥ हे मालिक! तू सब कुछ करने-करवाने में समर्थ है, सबके दिल की भावना को जानने वाला है। तूने कृपा करके जिसे भक्ति में लगाया है, उसने अपना जन्म जीत लिया है॥ ८॥ जिसके मन में प्रभु की स्मृति बस गई है, पूर्ण भाग्य से वह गुरु का जाप जपता रहता है और उसने प्रभु को सर्वव्यापी जान लिया है, अतः वह पुनः योनि-चक्र के दुख में नहीं भटकता॥ ६॥ जिस के मन में गुरु का शब्द वास कर जाता है, उसका दुख-दर्द एवं भ्रम दूर हो जाता है। वह नामामृत का पान करके सहज-सुख एवं आनंद में रहता है और मन में रसीली ध्वनि वाली अनाहत वाणी सुनता रहता है॥ १०॥ वही धनवान् है, जिसने प्रभु का भजन किया है, वही प्रतिष्ठित है, जिसने साधसंगत पा ली है। जिस मनुष्य के मन में परब्रह्म बस गया है, वह पूर्ण खुश-किस्मत है और वह जग में छिपा नहीं रहता॥ ११॥ सागर, भूमि एवं आकाश में प्रभु ही है, उसके अतिरिक्त अन्य कोई नहीं कहा जा सकता। गुरु के ज्ञान रूपी सुरमे ने मेरा सारा भ्रम मिटा दिया है और अब एक परमेश्वर के सिवाय अन्य कोई दृष्टिगत नहीं होता॥ १२॥ ईश्वर का दरबार सबसे ऊँचा है, उसका कोई अन्त एवं आर-पार व्यक्त नहीं किया जा सकता। वह सबका स्वामी गहन-गम्भीर, अथाह एवं अतुलनीय है, उसकी महिमा को क्या तौला जा सकता है॥ १३॥ तू रचयिता है और यह समूचा संसार तेरा ही बनाया हुआ है, तेरे अतिरिक्त अन्य कोई है ही नहीं। हे प्रभु! जगत् के आदि, मध्य एवं अन्त में एक तू ही है और यह समूचा जगत्-प्रसार तेरा शरीर है॥ १४॥ जो व्यक्ति साधसंगत में ईश्वर का कीर्ति-गान करता है, यमदूत उसके निकट भी नहीं आता। जो अपने कानों से प्रभु का यश सुनता है, उसके सभी मनोरथ पूर्ण हो जाते हैं॥ १५॥ तू सबका रखवाला है और सबको तेरा ही सहारा है। हे सच्चे मालिक! तू गहन-गंभीर है, नानक का कथन है कि हे स्वामी! वही मनुष्य उत्तम हैं, जो तेरे मन को भा जाते हैं॥ १६॥ १॥ ८॥

मारू महला ५ ॥ प्रभ समरथ सरब सुख दाना ॥ सिमरउ नामु होहु मिहरवाना ॥ हरि दाता जीअ जंत भेखारी जनु बांछै जाचंगना ॥ १ ॥ मागउ जन धूरि परम गति पावउ ॥ जनम जनम की मैलु मिटावउ ॥ दीरघ रोग मिटहि हरि अउखधि हरि निरमलि रापै मंगना ॥ २ ॥ स्रवणी सुणउ बिमल जसु सुआमी ॥ एका ओट तजउ बिखु कामी ॥ निवि निवि पाइ लगउ दास तेरे करि सुक्रितु नाही संगना ॥ ३ ॥ रसना गुण गावै हरि तेरे ॥ मिटहि कमाते अवगुण मेरे ॥ सिमरि सिमरि सुआमी मनु जीवै पंच दूत तजि तंगना ॥ ४ ॥ चरन कमल जपि बोहिथि चरीऐ ॥ संतसंगि मिलि सागरु तरीऐ ॥ अरचा बंदन हरि समत निवासी बाहुड़ि जोनि न नंगना ॥ ५ ॥ दास दासन को करि लेहु गुोपाला ॥ क्रिपा निधान दीन दइआला ॥ सखा सहाई पूरन परमेसुर मिलु कदे न होवी भंगना ॥ ६ ॥ मनु तनु अरपि धरी हरि आगै ॥ जनम जनम का सोइआ जागै ॥ जिस का सा सोई प्रतिपालकु हति तिआगी हउमै हंतना ॥ ७ ॥ जलि थलि पूरन अंतरजामी ॥ घटि घटि रविआ अछल सुआमी ॥ भरम भीति खोई गुरि पूरै एकु रविआ सरबंगना ॥ ८ ॥ जत कत पेखउ प्रभ सुख सागर ॥ हरि तोटि भंडार नाही रतनागर ॥ अगह अगाह किछु मिति नही पाईऐ सो बूझै जिसु किरपंगना ॥ ६ ॥ छाती सीतल मनु तनु ठंढा ॥ जनम मरण की मिटवी डंझा ॥ करु गहि काढि लीए प्रभि अपुनै अमिओ धारि द्रिसटंगना ॥ १० ॥ एको एकु रविआ सभ ठाई ॥ तिसु बिनु दूजा कोई नाही ॥ आदि मधि अंति प्रभु रविआ त्रिसन बुझी भरमंगना ॥ ११ ॥ गुरु परमेसरु गुरु गोबिंदु ॥ गुरु करता गुरु सद बखसंदु ॥ गुर जपु जापि जपत फलु पाइआ गिआन दीपकु संत संगना ॥ १२ ॥ जो पेखा सो सभु किछु सुआमी ॥ जो सुनणा सो प्रभ की बानी

॥ जो कीनो सो तुमहि कराइओ सरणि सहाई संतह तना ॥ १३ ॥ जाचकु जाचै तुमहि अराधै ॥ पतित पावन पूरन प्रभ साधै ॥ एको दानु सरब सुख गुण निधि आन मंगन निहकिंचना ॥ १४ ॥ काइआ पातु प्रभु करणैहारा ॥ लगी लागि संत संगारा ॥ निरमल सोइ बणी हरि बाणी मनु नामि मजीठै रंगना ॥ १५ ॥ सोलह कला संपूरन फलिआ ॥ अनत कला होइ ठाकुरु चड़िआ ॥ अनद बिनोद हरि नामि सुख नानक अंम्रित रसु हरि भुंचना ॥ १६ ॥ २ ॥ ६ ॥

हे समर्थ प्रभु ! तू सर्व सुख देने वाला है, मुझ पर मेहरबान हो जाओ, ताकि तेरा नाम-स्मरण करता रहूँ। हे हरि ! तू ही दाता है, सभी जीव भिखारी हैं, मैं याचक बनकर तुझसे दान मांगता हूँ॥ १॥ मैं भक्तजनों की चरण-धूलि माँगता हूँ, ताकि परमगति प्राप्त हो जाए, इससे जन्म-जन्मांतर की मैल मिट जाती है। हरि-नाम रूपी औषधि से पुराने रोग भी मिट जाते हैं। यह दान भी माँगता हूँ कि निर्मल हरि के प्रेम-रंग में मेरा मन रंग जाए॥ २॥ हे स्वामी ! मैं कानों से तेरा पावन यश सुनता रहूँ, मैं विष रूपी कामवासना को तज दूँ और एक तेरी ही शरण में रहूँ। मैं झुक-झुक कर तेरे दासों के चरणों में लगता रहूँ और यह शुभ कर्म करते हुए संकोच न करूँ॥ ३॥ हे परमात्मा ! मेरी जीभ तेरे ही गुण गाती रहे, ताकि मेरे पूर्व किए हुए अवगुण मिट जाएँ। दुखी करने वाले पाँच विकार त्याग कर मेरा मन स्वामी की स्मृति में जीता रहे॥ ४॥ तेरा नाम जपकर तेरे चरण-कमल रूपी जहाज पर चढ़ा जा सकता है, संतों के संग संसार-सागर से पार हुआ जा सकता है, परमात्मा को सर्वव्यापी समझना ही उसकी पूजा-अर्चना एवं वंदना है और इस प्रकार जीव को बार-बार योनि-चक्र में अपमानित नहीं होना पड़ता॥ ५॥ हे प्रभु ! मुझे अपने दासों का दास बना लो; तू कृपा का भण्डार है, दीनदयाल है। हे पूर्ण परमेश्वर ! तू ही मित्र एवं सहायक है, मुझे आन मिलो, ताकि तुझसे मेरी मैत्री कभी न टूटे॥ ६॥ मैंने अपना तन-मन सब कुछ भगवान् के समक्ष अर्पण कर दिया है और जन्म-जन्मांतर का अज्ञानता में सोया हुआ मन जाग्रत हो गया है। जिसने बनाया है, वही हमारा पोषण करने वाला है। मारने वाले अहम् को त्याग कर मिटा दिया है॥ ७॥ अन्तर्यामी परमेश्वर जल, धरती सबमें व्याप्त है, वह घट-घट में रमण कर रहा है और उस स्वामी से छल-कपट नहीं किया जा सकता। पूर्ण गुरु ने मेरी भ्रम की दीवार नष्ट कर दी है और अब मुझे सबमें एक परमेश्वर ही दृष्टिगत हो रहा है॥ ८॥ मैं जिधर भी देखता हूँ, सुखों का सागर प्रभु ही है। रत्नाकर हरि के भण्डार में कभी कोई कमी नहीं आती। वह अथाह और असीम है और उसका कुछ भी विस्तार नहीं पाया जा सकता। वही उसे बूझता है, जिस पर उसकी कृपा होती है॥ ६॥ मेरी छाती शीतल एवं मन-तन ठण्डा हो गया है, जन्म-मरण की चिन्ता मिट गई है। मेरे प्रभु ने अमृत-दृष्टि धारण करके मेरा हाथ पकड़कर मुझे संसार सागर में से निकाल लिया है॥ १०॥ एक ईश्वर सब स्थानों में रमण कर रहा है, उसके बिना अन्य कोई नहीं। सृष्टि के आदि, मध्य एवं अन्त में प्रभु सदैव व्याप्त है, मेरी तृष्णा बुझ गई है और भ्रम मिट गया है॥ ११॥ गुरु परमेश्वर है, गुरु ही गोविन्द है। गुरु ही बनाने वाला है, वह सदैव क्षमावान् है। गुरु का जाप जपकर मनवांछित फल पा लिया है और संतों की संगत करने से ज्ञान का दीपक आलोकित हो गया है॥ १२॥ जो भी देखता हूँ, सब कुछ मेरा स्वामी ही है। जो कुछ सुनता हूँ, वह प्रभु की ही वाणी है। हे ईश्वर ! जो कुछ किया है, वह तूने ही मुझसे करवाया है, जो संतों की शरण में आता है, तू उनकी ही सहायता करता है॥ १३॥ याचक तुम्हारी आराधना ही माँगता है। हे पूर्ण प्रभु ! तू पतितों को पावन करने वाला है और उनका जीवन संवार देता है। हे सर्व सुख दाता, हे गुणों के भण्डार ! मैं तुझसे एक दान ही माँगता हूँ, अन्य कुछ माँगना तो व्यर्थ है॥ १४॥ यह शरीर रूपी पात्र प्रभु ही बनाने वाला है, संतों की संगत करने से नाम-स्मरण की लगन लग गई है। हरि की

वाणी से मेरी अच्छी शोभा बन गई है और मन नाम रूपी मजीठ रंग में रंग गया है॥ १५॥ सोलह कला सम्पूर्ण परमेश्वर निराकार रूप से पूर्ण साकार रूप बन गया, सृष्टि को उत्पन्न करके वह अपने बेअंत रूपों में प्रगट हो गया। हे नानक! हरि-नाम का सिमरन करने से ही सुख, आनंद एवं खुशियों की लब्धि होती है, अतः हरिनामामृत का ही पान करना चाहिए॥ १६॥ २॥ ६॥

मारू सोलहे महला ५ १ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

तू साहिबु हउ सेवकु कीता ॥ जीउ पिंडु सभु तेरा दीता ॥ करन करावन सभु तूहै तूहै है नाही किछु असाड़ा ॥ १ ॥ तुमहि पठाए ता जग महि आए ॥ जो तुधु भाणा से करम कमाए ॥ तुझ ते बाहरि किछू न होआ ता भी नाही किछु काड़ा ॥ २ ॥ ऊहा हुकमु तुमारा सुणीऐ ॥ ईहा हरि जसु तेरा भणीऐ ॥ आपे लेख अलेखै आपे तुम सिउ नाही किछु झाड़ा ॥ ३ ॥ तू पिता सभि बारिक थारे ॥ जिउ खेलावहि तिउ खेलणहारे ॥ उझड़ मारगु सभु तुम ही कीना चलै नाही को वेपाड़ा ॥ ४ ॥ इकि बैसाइ रखे ग्रिह अंतरि ॥ इकि पठाए देस दिसंतरि ॥ इक ही कउ घासु इक ही कउ राजा इन महि कहीऐ किआ कूड़ा ॥ ५ ॥ कवन सु मुकती कवन सु नरका ॥ कवनु सैसारी कवनु सु भगता ॥ कवन सु दाना कवनु सु होछा कवन सु सुरता कवनु जड़ा ॥ ६ ॥ हुकमे मुकती हुकमे नरका ॥ हुकमि सैसारी हुकमे भगता ॥ हुकमे होछा हुकमे दाना दूजा नाही अवरु धड़ा ॥ ७ ॥ सागरु कीना अति तुम भारा ॥ इकि खड़े रसातलि करि मनमुख गावारा ॥ इकना पारि लंघावहि आपे सतिगुरु जिन का सचु बेड़ा ॥ ८ ॥ कउतकु कालु इहु हुकमि पठाइआ ॥ जीअ जंत ओपाइ समाइआ ॥ वेखै विगसै सभि रंग माणे रचनु कीना इकु आखाड़ा ॥ ९ ॥ वडा साहिबु वडी नाई ॥ वड दातारु वडी जिसु जाई ॥ अगम अगोचरु बेअंत अतोला है नाही किछु आहाड़ा ॥ १० ॥ कीमति कोइ न जाणै दूजा ॥ आपे आपि निरंजन पूजा ॥ आपि सु गिआनी आपि धिआनी आपि सतवंता अति गाड़ा ॥ ११ ॥ केतड़िआ दिन गुपतु कहाइआ ॥ केतड़िआ दिन सुंनि समाइआ ॥ केतड़िआ दिन धुंधूकारा आपे करता परगटड़ा ॥ १२ ॥ आपे सकती सबलु कहाइआ ॥ आपे सूरा अमरु चलाइआ ॥ आपे सिव वरताईअनु अंतरि आपे सीतलु ठारु गड़ा ॥ १३ ॥ जिसहि निवाजे गुरमुखि साजे ॥ नामु वसै तिसु अनहद वाजे ॥ तिस ही सुखु तिस ही ठकुराई तिसहि न आवै जमु नेड़ा ॥ १४ ॥ कीमति कागद कही न जाई ॥ कहु नानक बेअंत गुसाई ॥ आदि मधि अंति प्रभु सोई हाथि तिसै कै नेबेड़ा ॥ १५ ॥ तिसहि सरीकु नाही रे कोई ॥ किस ही बुतै जबाबु न होई ॥ नानक का प्रभु आपे आपे करि करि वेखै चोज खड़ा ॥ १६ ॥ १ ॥ १० ॥

हे ईश्वर! तू मेरा मालिक है और मैं तेरा सेवक हूँ। यह आत्मा, शरीर सब तेरा ही दिया हुआ है। जग में करने करवाने वाला एक तू ही है और हमारा इसमें कोई सहयोग नहीं॥ १॥ तूने भेजा तो हम जगत् में आए; जो तुझे मंजूर है, वही कर्म करते हैं। तेरे हुक्म के बिना कभी कुछ नहीं हुआ, फिर भी हमें कोई चिंता-फिक्र नहीं॥ २॥ वहाँ (परलोक में) तेरा हुक्म सुना जाता है और यहाँ (इहलोक में) तेरा हरि-यश गाया जाता है। तू स्वयं ही जीवों के कर्मालेख लिखता है और स्वेच्छा से स्वयं ही कर्मालेख मिटा देता है, अतः तुझसे कोई झगड़ा अथवा शिकायत नहीं॥ ३॥ तू हमारा पिता है और हम सभी तेरे बच्चे हैं। जैसे तू खेलाता है, वैसे ही खेलते हैं। कुमार्ग सब तूने ही बनाया है और कोई भी जीव अपने आप कुमार्ग नहीं चलता॥ ४॥ परमात्मा ने किसी को घर में बैठाकर रखा हुआ है, कई देश-देशान्तर भेज दिए हैं, कोई घास काटने वाला घासी और किसी को उसने राजा बना दिया है, फिर इन में क्या झूठा कहा जा सकता है॥ ५॥

कौन मुक्ति प्राप्त करता है, कौन नरक भोगता है ? कौन संसार के कर्मों में पड़ा है, कौन भक्त है ? कौन चतुर है ? कौन ओच्छा है ? कौन समझदार है? कौन जड़बुद्धि है ?॥ ६॥ वास्तव में परमात्मा के हुक्म से किसी को मुक्ति मिलती है अथवा किसी को नरक भोगना पड़ता है। उसके हुक्म से कोई संसार के कर्मों में लीन है और हुक्म से कोई भक्त बनकर भक्ति में लीन है। उसके हुक्म से ही कोई ओच्छा और कोई चतुर बनता है। तुम्हारे बिना अन्य कोई गुट नहीं है॥ ७॥ तूने ही अत्यंत भारी संसार-सागर बनाया है, कुछ मनमुखी जीवों को मूर्ख बनाकर उन्हें रसातल में पहुँचा दिया है। सतिगुरु जिन जीवों का सच्चा जहाज बन गया है, तूने स्वयं ही उन्हें संसार-सागर से पार करवा दिया है॥ ८॥ परमात्मा ने एक लीला रची है कि उसने अपने हुक्म से ही काल को जगत् में भेजा है। वह जीवों को उत्पन्न करके स्वयं ही मिटा देता है। वह स्वयं ही देखता, प्रसन्न होता और सभी रंग-रस भोगता है, यह जगत् रूपी रचना उसने एक अखाड़ा बना रखा है॥ ६॥ ईश्वर ही सबसे बड़ा है, उसका नाम भी महान् है। वह बहुत बड़ा दाता है और उसका निवास स्थान भी सर्वश्रेष्ठ है। वह जीवों की पहुँच से परे, इन्द्रियातीत, बेअंत एवं अतुलनीय है और तोलने के लिए कोई परिमाण नहीं॥ १०॥ अन्य कोई भी उसकी महत्ता को नहीं जानता, कालिमा से परे प्रभु स्वयं ही अपनी पूजा करता है। वह स्वयं ही ज्ञानवान है, स्वयं ही ध्यानशील और स्वयं ही बहुत बड़ा सत्यशील है॥ ११॥ कितने ही दिन वह गुप्त बना रहा, कितने ही दिन वह शून्य समाधि में समाया रहा, उसने कितने ही दिन घोर अन्धेरा बनाकर रखा, वह रचयिता परमेश्वर फिर स्वयं ही जगत् रूप में प्रगट हो गया॥ १२॥ सर्वशक्तिमान परमेश्वर स्वयं ही आदि-शक्ति कहलवाया है, उस शूरवीर प्रभु ने स्वयं ही समूचे विश्व में अपना हुक्म चलाया हुआ है, उसने स्वयं ही अन्तर्मन में सुख-शान्ति का प्रसार किया हुआ है और वह स्वयं ही बर्फ के सादृश शीतल है॥ १३॥ जिसे वह कीर्ति प्रदान करता है, उसे गुरुमुख बना देता है। जिसके मन में हरि-नाम स्थित हो जाता है, उसके अन्तर्मन में अनाहत ध्वनियाँ बजती रहती हैं। उसे ही सुख उपलब्ध होता है, उसे ही दुनिया में ऐश्वर्य मिलता है और यम भी उसके निकट नहीं आते॥ १४॥ कागज पर लिखकर भी उसका मूल्य आँका नहीं जा सकता, हे नानक ! परमात्मा बेअंत है। सृष्टि के आदि, मध्य एवं अन्त तक केवल प्रभु का ही अस्तित्व है और जीवों के किए कर्मों का फैसला उसके ही हाथ में है॥ १५॥ उसकी बराबरी करने वाला कोई नहीं है, किसी भी बहाने से उसके हुक्म को अस्वीकार नहीं किया जा सकता। नानक का प्रभु अपने आप ही अपनी अद्भुत लीला कर-करके देख रहा है॥ १६॥ १॥ १०॥

मारू महला ५ ॥ अचुत पारब्रहम परमेसुर अंतरजामी ॥ मधुसूदन दामोदर सुआमी ॥ रिखीकेस गोवरधन धारी मुरली मनोहर हरि रंगा ॥ १ ॥ मोहन माधव क्रिस्न मुरारे ॥ जगदीसुर हरि जीउ असुर संघारे ॥ जगजीवन अबिनासी ठाकुर घट घट वासी है संगा ॥ २ ॥ धरणीधर ईस नरसिंघ नाराइण ॥ दाड़ा अग्रे प्रिथमि धराइण ॥ बावन रूपु कीआ तुधु करते सभ ही सेती है चंगा ॥ ३ ॥ स्री रामचंद जिसु रूपु न रेखिआ ॥ बनवाली चक्रपाणि दरसि अनूपिआ ॥ सहस नेत्र मूरति है सहसा इकु दाता सभ है मंगा ॥ ४ ॥ भगति वछलु अनाथह नाथे ॥ गोपी नाथु सगल है साथे ॥ बासुदेव निरंजन दाते बरनि न साकउ गुण अंगा ॥ ५ ॥ मुकंद मनोहर लखमी नाराइण ॥ द्रोपती लजा निवारि उधारण ॥ कमलाकंत करहि कंतूहल अनद बिनोदी निहसंगा ॥ ६ ॥ अमोघ दरसन आजूनी संभउ ॥ अकाल मूरति जिसु कदे नाही खउ ॥ अबिनासी अबिगत अगोचर सभु किछु तुझ ही है लगा ॥ ७ ॥ स्रीरंग बैकुंठ के वासी ॥ मछु कछु कूरमु आगिआ अउतरासी ॥ केसव चलत करहि निराले कीता लोड़हि सो

होइगा ॥ ८ ॥ निराहारी निरवैरु समाइआ ॥ धारि खेलु चतुरभुजु कहाइआ ॥ सावल सुंदर रूप बणावहि बेणु सुनत सभ मोहैगा ॥ ६ ॥ बनमाला बिभूखन कमल नैन ॥ सुंदर कुंडल मुकट बैन ॥ संख चक्र गदा है धारी महा सारथी सतसंगा ॥ १० ॥ पीत पीतंबर त्रिभवण धणी ॥ जगंनाथु गोपालु मुखि भणी ॥ सारिंगधर भगवान बीठुला मै गणत न आवै सरबंगा ॥ ११ ॥ निहकंटकु निहकेवलु कहीऐ ॥ धनंजै जलि थलि है महीऐ ॥ मिरत लोक पइआल समीपत असथिर थानु जिसु है अभगा ॥ १२ ॥ पतित पावन दुख भै भंजनु ॥ अहंकार निवारणु है भव खंडनु ॥ भगती तोखित दीन क्रिपाला गुणे न कित ही है भिगा ॥ १३ ॥ निरंकारु अछल अडोलो ॥ जोति सरूपी सभु जगु मउलो ॥ सो मिलै जिसु आपि मिलाए आपहु कोइ न पावैगा ॥ १४ ॥ आपे गोपी आपे काना ॥ आपे गऊ चरावै बाना ॥ आपि उपावहि आपि खपावहि तुधु लेपु नही इकु तिलु रंगा ॥ १५ ॥ एक जीह गुण कवन बखानै ॥ सहस फनी सेख अंतु न जानै ॥ नवतन नाम जपै दिनु राती इकु गुणु नाही प्रभ कहि संगा ॥ १६ ॥ ओट गही जगत पित सरणाइआ ॥ भै भइआनक जमदूत दुतर है माइआ ॥ होहु क्रिपाल इछा करि राखहु साध संतन कै संगि संगा ॥ १७ ॥ द्रिसटिमान है सगल मिथेना ॥ इकु मागउ दानु गोबिद संत रेना ॥ मसतकि लाइ परम पदु पावउ जिसु प्रापति सो पावैगा ॥ १८ ॥ जिन कउ क्रिपा करी सुखदाते ॥ तिन साधू चरण लै रिदै पराते ॥ सगल नाम निधानु तिन पाइआ अनहद सबद मनि वाजंगा ॥ १६ ॥ किरतम नाम कथे तेरे जिहबा ॥ सति नामु तेरा परा पूरबला ॥ कहु नानक भगत पए सरणाई देहु दरसु मनि रंगु लगा ॥ २० ॥ तेरी गति मिति तूहै जाणहि ॥ तू आपे कथहि तै आपि वखाणहि ॥ नानक दासु दासन को करीअहु हरि भावै दासा राखु संगा ॥ २१ ॥ २ ॥ ११ ॥

अन्तर्यामी परब्रह्म परमेश्वर अटल अमर है, श्रीकृष्ण के रूप में मधु राक्षस का संहार करने वाला वही मधुसूदन, दामोदर सबका स्वामी है। वही हृषिकेश, गोवर्धन पर्वत को धारण करने वाला, मुरली मनोहर श्रीकृष्णावतार है, उस हरि की लीला अपरंपार है॥ १॥ उस प्यारे मोहन, माधव, कृष्ण मुरारि, जगदीश्वर श्री हरि ने ही असुरों का संहार किया है। वह अनश्वर प्रभु समूचे जगत् को जीवन देने वाला है, उस ठाकुर जी का घट-घट में वास है॥ २॥ समूची धरती को सहारा देने वाला ईश्वर, नृसिंहावतार में हिरण्यकशिपु का वध करने वाला नारायण ही है। अपनी अगली दाढ़ों पर पृथ्वी को उठाकर समुद्र में से निकाल कर लाने वाला वही वाराहावतार है। हे कर्तार ! तूने ही वामनावतार धारण किया था, तू ही सब का कल्याण करने वाला है॥ ३॥ जिसका कोई रूप-रंग एवं चिन्ह नहीं है, वही श्रीरामचन्द्र अवतार है। उस बनवारी चक्रपाणि के दर्शन अनुपम हैं। उसके हजारों ही नेत्र हैं, हजारों ही मूर्त हैं, सबको देने वाला एक परमेश्वर ही है और सभी उससे ही माँगते हैं॥ ४॥ वह भक्तवत्सल, अनाथों का नाथ है, सबके संग रहने वाला गोपीनाथ भी वही कहलाता है, उस वासुदेव, मायातीत दाता के गुणों का वर्णन नहीं कर सकता॥ ५॥ वह मोक्षदाता, मनोहर, श्री लक्ष्मी नारायण समूचे विश्व में पूजनीय है, द्रौपदी की लाज रखकर उसका उद्धार करने वाला एक वही है। वह कमलापति अनेक कौतुक करता रहता है। वह आनंद-विनोद करने वाला संसार से सदैव निर्लिप्त रहता है॥ ६॥ वह कोई योनि धारण नहीं करता, क्योंकि वह आवागमन के चक्र से रहित है, वह स्वतः प्रकाश स्वयंभू है, उसके दर्शन करने से अवश्य ही शुभ फल मिलता है। वह काल (मृत्यु) से परे है, अविनाशी होने के कारण उसका अस्तित्व सदैव है, जिसका कभी नाश नहीं होता। हे परमेश्वर ! अविनाशी, अव्यक्त, अदृष्ट सभी विशेषण तुझे ही शोभा देते हैं॥ ७॥ वही श्रीरंग वैकुण्ठ में वास कर रहा है। मत्स्य, कच्छप

एवं कूर्म के रूप में विष्णु ने हुक्म से ही अवतार धारण किया था। वही केशव अद्‌भुत लीलाएँ करता रहता है, संसार में वही होता है, जो वह चाहता है॥ ८॥ वह भोजन-पानी से रहित है, उसका किसी से कोई वैर नहीं, वह सारी दुनिया में समाया हुआ है। जग रूपी अद्‌भुत लीला रचकर ही वह चतुर्भुज कहलाया है। उसने ही साँवला सुंदर रूप बनाया था, जिसकी सुरीली बाँसुरी को सुनकर सभी मुग्ध हो गए थे॥ ६॥ उस कमलनयन ने वैजयंती माला एवं अनूप आभूषण धारण किए थे। उसी ने कानों में सुन्दर कुण्डल, मुकुट धारण किया और वही मधुर वचन बोलता है। उस ईश्वर ने ही शंख, सुदर्शन चक्र एवं गदा धारण की हुई है और वही (अर्जुन का) महासारथी भी बना॥ १०॥ पीताम्बर धारण करने वाला वही तीनों लोकों का स्वामी है, उसे ही मुख से जगन्नाथ एवं गोपाल कहा जाता है। सारंगधर, भगवान बिट्ठल इत्यादि उसके अनेकों ही नाम हैं, उसकी महिमा वर्णन नहीं की जा सकती॥ ११॥ वह दुख-क्लेश और वासनाओं से रहित कहलाता है। वही धनञ्जय समुद्र, पृथ्वी एवं नभ में व्याप्त है। जिसका निवास स्थान सदा अटल है, वह मृत्युलोक, पाताललोक में रहने वाले जीवों के पास ही रहता है॥ १२॥ वह पतितपावन सारे दुःख-भय नाश करने वाला है, वही अहंकार का निवारण करने वाला है एवं जीवों के जन्म-मरण के चक्र को मिटाने वाला है। दीनों पर कृपा करने वाला प्रभु भक्ति से ही प्रसन्न होता है और किसी अन्य गुण से खुश नहीं होता॥ १३॥ उस निराकार से किसी प्रकार का छल नहीं किया जा सकता, वह सदा अडोल है, ज्योतिस्वरूप है और उससे ही समूचा जगत् प्रफुल्लित हुआ है। उस सर्वोच्च शक्ति परमेश्वर से वही मिलता है, जिसे वह स्वयं अपने साथ मिलाता है, अपने आप कोई भी उसे पा नहीं सकता॥ १४॥ राधा एवं कृष्ण-कन्हैया स्वयं परमात्मा ही है और गऊओं को वृंदावन में चराने वाला भी वही है। हे परम पिता! तू स्वयं ही सृष्टि एवं जीवों को उत्पन्न करता और स्वयं ही नाश भी कर देता है, तुझे तिल मात्र भी संसार से कोई लोभ-मोह नहीं॥ १५॥ मेरी एक ही जीभ है, यह तेरे कौन-कौन से गुण बयान कर सकती है। हजार फनों वाला शेषनाग भी तेरा रहस्य नहीं जानता। हे प्रभु! वह दिन-रात तेरे नए से नए नाम को जपता रहता है किन्तु वह तेरा एक भी गुण वर्णन नहीं कर सकता॥ १६॥ हे जगत् पिता! मैंने तेरी ओट ली है, तेरी ही शरण में आया हूँ। भयानक यमदूत नित्य भयभीत करते हैं, यह माया ऐसा सागर है, जिस में से पार होना बहुत कठिन है। कृपालु हो जाओ और अपनी इच्छा करके साधु-संतों के ही संग रखो॥ १७॥ यह दृष्टिमान समूचा जगत्-प्रसार झूठा एवं नश्वर है। हे गोविन्द! मैं तुझसे संतजनों की चरणरज का ही दान माँगता हूँ, तांकि मैं इसे अपने माथे पर लगाकर परमपद (मोक्ष) पा सकूँ, लेकिन जिसके कर्मालेख में इसकी लब्धि लिखी है, वही इसे प्राप्त करेगा॥ १८॥ जिन पर सुखदाता परमेश्वर ने अपनी कृपा की है, उन्होंने साधुओं की चरणरज को लेकर हृदय में बसा लिया है। प्रभु-नाम रूपी सुखों का भण्डार उन्होंने पा लिया है और उनके मन में अनाहत शब्द गूँज रहा है॥ १६॥ यह जिह्वा तेरे किए कर्मों के आधार पर सुविख्यात नामों का ही कथन कर रही है, परन्तु सृष्टि-रचना से पूर्व ही 'सत्य-नाम' तेरा मूल प्राचीन नाम है। नानक की प्रार्थना है कि हे सत्यस्वरूप परमेश्वर! भक्त तो शरण में पड़ गए हैं, उन्हें दर्शन देकर निहाल करो, क्योंकि उनका मन तेरी लगन में ही लीन है॥ २०॥ तेरी गति एवं विस्तार तू ही जानता है, तू स्वयं ही कथन करता है और स्वयं ही व्याख्या करता है। नानक की विनती है कि हे हरि! यदि तुझे स्वीकार हो तो मुझे अपने दासों का दास बनाकर उनके ही संग रखो॥ २१॥ २॥ ११॥

मारू महला ५ ॥ अलह अगम खुदाई बंदे ॥ छोडि खिआल दुनीआ के धंधे ॥ होइ पै खाक फकीर मुसाफरु इहु दरवेसु कबूलु दरा ॥ १ ॥ सचु निवाज यकीन मुसला ॥ मनसा मारि निवारिहु आसा ॥ देह मसीति मनु मउलाणा कलम खुदाई पाकु खरा ॥ २ ॥ सरा सरीअति ले कंमावहु ॥

तरीकति तरक खोजि टोलावहु ॥ मारफति मनु मारहु अबदाला मिलहु हकीकति जितु फिरि न मरा ॥ ३ ॥ कुराणु कतेब दिल माहि कमाही ॥ दस अउरात रखहु बद राही ॥ पंच मरद सिदकि ले बाधहु खैरि सबूरी कबूल परा ॥ ४ ॥ मका मिहर रोजा पै खाका ॥ भिसतु पीर लफज कमाइ अंदाजा ॥ हूर नूर मुसकु खुदाइआ बंदगी अलह आला हुजरा ॥ ५ ॥ सचु कमावै सोई काजी ॥ जो दिलु सोधै सोई हाजी ॥ सो मुला मलऊन निवारै सो दरवेसु जिसु सिफति धरा ॥ ६ ॥ सभे वखत सभे करि वेला ॥ खालकु यादि दिलै महि मउला ॥ तसबी यादि करहु दस मरदनु सुंनति सीलु बंधानि बरा ॥ ७ ॥ दिल महि जानहु सभ फिलहाला ॥ खिलखाना बिरादर हमू जंजाला ॥ मीर मलक उमरे फानाइआ एक मुकाम खुदाइ दरा ॥ ८ ॥ अवलि सिफति दूजी साबूरी ॥ तीजै हलेमी चउथै खैरी ॥ पंजवै पंजे इकतु मुकामै एहि पंजि वखत तेरे अपरपरा ॥ ९ ॥ सगली जानि करहु मउदीफा ॥ बद अमल छोडि करहु हथि कूजा ॥ खुदाइ एकु बुझि देवहु बांगां बुरगू बरखुरदार खरा ॥ १० ॥ हकु हलालु बखोरहु खाणा ॥ दिल दरीआउ धोवहु मैलाणा ॥ पीरु पछाणै भिसती सोई अजराईलु न दोज ठरा ॥ ११ ॥ काइआ किरदार अउरत यकीना ॥ रंग तमासे माणि हकीना ॥ नापाक पाकु करि हदूरि हदीसा साबत सूरति दसतार सिरा ॥ १२ ॥ मुसलमाणु मोम दिलि होवै ॥ अंतर की मलु दिल ते धोवै ॥ दुनीआ रंग न आवै नेड़ै जिउ कुसम पाटु घिउ पाकु हरा ॥ १३ ॥ जा कउ मिहर मिहर मिहरवाना ॥ सोई मरदु मरदु मरदाना ॥ सोई सेखु मसाइकु हाजी सो बंदा जिसु नजरि नरा ॥ १४ ॥ कुदरति कादर करण करीमा ॥ सिफति मुहबति अथाह रहीमा ॥ हकु हुकमु सचु खुदाइआ बुझि नानक बंदि खलास तरा ॥ १५ ॥ ३ ॥ १२ ॥

अल्लाह अगम्य है, हे खुदा के बंदे ! दुनिया के काम-धन्धों का ख्याल छोड़ दो; फकीरों के पैरों की धूल बनकर एक मुसाफिर बन जा, ऐसा दरवेश ही खुदा के दर पर कबूल होता है॥ १॥ सत्य को अपनी नमाज एवं खुदा में यकीऩ को मुसल्ला (दरी) बना। अपनी वासनाओं को मारकर आशा को मन से निवृत्त करो। अपने शरीर को मस्जिद एवं मन को मौलवी बना लो, पवित्र एवं निर्मल जीवन तेरे लिए खुदा का कलमा पढ़ना है॥ २॥ खुदा का नाम लेकर बंदगी करो, यही तेरे लिए इस्लामी शरअ अर्थात् कानून एवं शरीयत शुभ कर्म करना है। अभिमान को त्याग कर अपने दिल में ही खुदा को ढूँढो, यह करनी ही तेरे लिए तरीकत है। हे अब्दल फकीर ! मारफत यह है कि अपने मन को मारो अर्थात् अपने वश में करो। खुदा से मिलो, यह हकीकत है, जिससे फिर मृत्यु नहीं होती॥ ३॥ कुरान, तौरेत, जंबूर इन कतेबों का पाठ करना यही है कि अपने दिल में खुदा के नाम की कमाई करो। अपनी दस औरतों अर्थात् इन्द्रियों को बुराई के राह पर जाने से रोक कर रखो। पाँच मर्दों—काम, क्रोध, लोभ, मोह एवं अहंकार को धैर्य से पकड़ कर बाँध लो; संतोष एवं दान द्वारा तू अल्लाह को परवान हो जाएगा॥ ४॥ जीवों पर मेहर करना ही मक्के का हज्ज करना है और दरवेशों के पैरों की धूल बन जाना रोज़ा रखना है। अपने पीर के वचनों का पूर्णतया पालन करना ही बिहिश्त में जाना है। नूर रूप अल्लाह का दर्शन करना ही परियों का सुख भोगना है, खुदा की बंदगी ही शरीर पर सुगन्धि लगाना है, यह दुनिया रूपी खुदा का घर ही बंदगी करने के लिए बेहतर स्थान है॥ ५॥ सत्य का आचरण अपनाने वाला ही सच्चा काजी है। जो अपने दिल को शुद्ध कर लेता है, वास्तव में वही मक्के का हज्ज करने वाला हाजी है। वही मुल्ला है, जो अपने मन की अहम् रूपी मैल को दूर करता है और दरवेश वही कहलाता है,

जो अल्लाह की प्रशंसा का सहारा लेता है॥ ६॥ (पाँच वक्त की नमाज़ पर गुरु जी का कथन है कि) हर वक्त को बंदगी करने का समय बना लो, दुनिया को बनाने वाले उस परवरदगार को हर समय अपने दिल में याद करो। खुदा को याद करते रहो, यही तस्बीह अर्थात् माला जपना है, दस इन्द्रियों को मार देना ही सुन्नत करवाना है और शील स्वभाव ही सबसे बड़ा नियंत्रण है॥ ७॥ अपने दिल में यह बात समझ लो जगत् का सब कुछ थोड़े समय के लिए ही रहने वाला है। हे मेरे भाई ! परिवार एवं घरबार जंजाल ही है। एक खुदा का दरबार ही सदा अटल रहने वाला मुकाम है और बादशाह, मलिक एवं सरदार फना होने वाले हैं॥ ८॥ अल्लाह की प्रशंसा पहली नमाज, संतोष रखना दूसरी नमाज, नम्रता धारण करना तीसरे वक्त की नमाज, जरूरतमंदों को दान-पुण्य करना चौथी नमाज और पाँच इन्द्रियों को एक स्थान पर स्थिर करके रखना तेरी पाँचवी नमाज है। तेरी नमाज़ के ये पाँच वक्त ही सबसे उत्तम हैं॥ ६॥ यह समझकर कि खुदा सारी दुनिया में रहता है, इस ज्ञान को वजीफा बना अर्थात् अपने मनोरथ पूर्ति का पाठ बना और पाप कर्मों के त्याग को हाथ में पकड़ने वाला लोटा बना। खुदा को एक ही समझकर मस्जिद में नमाज पढ़ने के लिए बाँग दिया कर और उस खुदा का नेक पुत्र बनना ही बिगुल बजाना है॥ १०॥ हक की कमाई का ही भोजन किया करो, अपने दिल को दरिया की तरह बड़ा बनाओ और मन की मैल साफ कर लो। अपने पीर को पहचान कर सेवा में लीन रहने वाला ही बिहिश्त में जाने का हकदार है और मृत्यु का फरिश्ता (यम) उसे दोजख (नरक) में नहीं डालता॥ ११॥ जिस शरीर द्वारा तू शुभाशुभ कर्म करता है, उसे अपनी विश्वासपात्र औरत बना और फिर उस द्वारा खुदा को मिलकर रंग-तमाशों का आनंद भोग। हे नापाक बंदे ! अपने आपको पवित्र बना। खुदा को साक्षात् समझना ही कुरान की हदीसों को पढ़ना है। साबत सूरत रहना ही सिर पर पगड़ी पहनना है॥ १२॥ सच्चा मुसलमान वही है, जिसका दिल मोम की तरह नरम होता है, वह अपने अन्तर्मन की मैल को दिल से धो देता है। वह दुनिया के रंग-तमाशों के निकट नहीं आता और यूं पवित्र होता है, जिस प्रकार फूल, रेशम, घी एवं मृग-चरम पाक पवित्र होता है॥ १३॥ जिस पर मेहरबान अल्लाह की मेहर होती है, वास्तव में वही मर्दों में शूरवीर मर्द है। जिस पर खुदा की कृपा-दृष्टि है, वही शेख, शेखों का पीर, हाजी एवं खुदा का नेक बंदा है॥ १४॥ हे कृपालु, रहमदिल, सच्चे खुदा ! तू कुदरत का रचयिता है, सब को बनाने वाला है, तेरी स्तुति एवं मुहब्बत अथाह है, तेरा हुक्म भी सत्य है। हे नानक ! उस खुदा के भेद को बूझने वाला आदमी बन्धनों से मुक्त होकर संसार-सागर से पार हो जाता है॥ १५॥ ३॥ १२॥

मारू महला ५ ॥ पारब्रहम सभ ऊच बिराजे ॥ आपे थापि उथापे साजे ॥ प्रभ की सरणि गहत सुखु पाईऐ किछु भउ न विआपै बाल का ॥ १ ॥ गरभ अगनि महि जिनहि उबारिआ ॥ रकत किरम महि नही संघारिआ ॥ अपना सिमरनु दे प्रतिपालिआ ओहु सगल घटा का मालका ॥ २ ॥ चरण कमल सरणाई आइआ ॥ साधसंगि है हरि जसु गाइआ ॥ जनम मरण सभि दूख निवारे जपि हरि हरि भउ नही काल का ॥ ३ ॥ समरथ अकथ अगोचर देवा ॥ जीअ जंत सभि ता की सेवा ॥ अंडज जेरज सेतज उतभुज बहु परकारी पालका ॥ ४ ॥ तिसहि परापति होइ निधाना ॥ राम नाम रसु अंतरि माना ॥ करु गहि लीने अंध कूप ते विरले केई सालका ॥ ५ ॥ आदि अंति मधि प्रभु सोई ॥ आपे करता करे सु होई ॥ भ्रमु भउ मिटिआ साधसंग ते दालिद न कोई घालका ॥ ६ ॥ ऊतम बाणी गाउ गोपाला ॥ साधसंगति की मंगहु रवाला ॥ बासन मेटि निबासन होईऐ कलमल सगले जालका ॥ ७ ॥ संता की इह रीति निराली ॥ पारब्रहमु करि देखहि नाली ॥ सासि सासि आराधनि हरि हरि किउ सिमरत

कीजै आलका ॥ ८ ॥ जह देखा तह अंतरजामी ॥ निमख न विसरहु प्रभ मेरे सुआमी ॥ सिमरि सिमरि जीवहि तेरे दासा बनि जलि पूरन थालका ॥ ६ ॥ तती वाउ न ता कउ लागै ॥ सिमरत नामु अनदिनु जागै ॥ अनद बिनोद करे हरि सिमरनु तिसु माइआ संगि न तालका ॥ १० ॥ रोग सोग दूख तिसु नाही ॥ साधसंगि हरि कीरतनु गाही ॥ आपणा नामु देहि प्रभ प्रीतम सुणि बेनंती खालका ॥ ११ ॥ नाम रतनु तेरा है पिआरे ॥ रंगि रते तेरै दास अपारे ॥ तेरै रंगि रते तुधु जेहे विरले केई भालका ॥ १२ ॥ तिन की धूड़ि मांगै मनु मेरा ॥ जिन विसरहि नाही काहू बेरा ॥ तिन कै संगि परम पदु पाई सदा संगी हरि नालका ॥ १३ ॥ साजनु मीतु पिआरा सोई ॥ एकु द्रिड़ाए दुरमति खोई ॥ कामु क्रोधु अहंकारु तजाए तिसु जन कउ उपदेसु निरमालका ॥ १४ ॥ तुधु विणु नाही कोई मेरा ॥ गुरि पकड़ाए प्रभ के पैरा ॥ हउ बलिहारी सतिगुर पूरे जिनि खंडिआ भरमु अनालका ॥ १५ ॥ सासि सासि प्रभु बिसरै नाही ॥ आठ पहर हरि हरि कउ धिआई ॥ नानक संत तेरै रंगि राते तू समरथु वडालका ॥ १६ ॥ ४ ॥ १३ ॥

परब्रह्म सर्वोच्च स्थान पर विराजमान है, सारी दुनिया को बनाने, मिटाने एवं पुनः स्थापना करने वाला भी वह आप ही है। उस सर्वोच्च शक्ति प्रभु की शरण लेने से ही सुख प्राप्त होता है और मृत्यु इत्यादि कोई भय व्याप्त नहीं होता॥ १॥ जिस निरंकार ने गर्भ-अग्नि में से बचाया है, माँ के रक्त में छोटा-सा कृमि होने के बावजूद भी मिटने नहीं दिया, जिसने अपना सिमरन देकर पोषण किया है, वह सब शरीरों का मालिक है॥ २॥ मैं तो प्रभु के चरण-कमल की शरण में आया हूँ, सज्जन साधुओं के संग ईश्वर का ही यश गाया है। परमात्मा का नाम जपने से जन्म-मरण के सभी दुख टूट जाते हैं और मृत्यु का भय भी नहीं रहता॥ ३॥ देवाधिदेव सर्वोच्च शक्ति परमेश्वर सर्वकला समर्थ है, उसकी लीलाएँ अकथनीय हैं, वह अदृष्ट है। सृष्टि के सब जीव उसकी ही उपासना करते हैं। अण्डज, जेरज, स्वदेज एवं उद्भिज्ज से पैदा होने वाले अनेक प्रकार के सब जीवों का पोषण कर रहा है॥ ४॥ सुखों का खजाना उसे ही प्राप्त होता है, जो अपने अन्तर्मन में राम नाम का आनंद लेता है। उसने स्वयं ही हाथ पकड़कर संसार-सागर रूपी अन्धकूप में से बाहर निकाल लिया है, परन्तु कोई विरला ही ऐसा साधक है॥ ५॥ वह प्रभु ही जगत् के आदि, मध्य एवं अंत में है। जो वह करता है, वही होता है। संतों की संगत करने से भ्रम-भय सब मिट गया है और कोई दरिद्रता भी अब प्रभावित नहीं करती॥ ६॥ प्रभु की उत्तम वाणी गाते रहो, साधु-महापुरुषों की चरणधूलि की कामना करो; यदि वासनाओं को मिटाकर वासना-रहित हुआ जाए तो सब पाप जल जाते हैं॥ ७॥ संतों की यह निराली ही रीति है कि परब्रह्म को सदा अपने आसपास ही देखते हैं। प्रत्येक धड़कन से भगवान् की आराधना करो और उसका नाम-स्मरण करने में कदापि आलस्य नहीं करना चाहिए॥ ८॥ जहाँ भी दृष्टि जाती है, वहाँ अन्तर्यामी है। हे मेरे स्वामी प्रभु! मुझे थोड़े समय के लिए भी विस्मृत न होना। तेरे भक्तजन तुझे स्मरण कर-करके ही जीवन पा रहे हैं, तू वन, जल, धरती इत्यादि सबमें व्याप्त है॥ ६॥ जो परमात्मा का नाम-स्मरण करते हुए प्रतिदिन जाग्रत रहता है, उसे किसी प्रकार की कष्टदायक गर्म वायु भी प्रभावित नहीं करती। वह प्रभु का सिमरन करके आनंद-खुशियाँ भोगता रहता है और माया के संग उसका कोई नाता नहीं रहता॥ १०॥ जो साधु पुरुषों की संगत में ईश्वर का कीर्ति-गान करता है, उसे कोई रोग, शोक एवं दुख नहीं लगता। हे प्रियतम प्रभु! मेरी एक विनती सुनो; मुझे अपना नाम प्रदान करो॥ ११॥ हे प्यारे प्रभु! तेरा नाम अमूल्य रत्न है, दास तेरे प्रेम-रंग में ही लीन रहते हैं, तेरे रंग में लीन रहने वाले तेरे जैसे ही बन जाते हैं परन्तु ऐसे कोई विरले ही मिलते हैं॥ १२॥ मेरा मन उन भक्तजनों की चरण-धूलि ही माँगता है, जिन्हें परमात्मा कभी विस्मृत नहीं

होता। उनकी संगति में परम-पद पाया जाता है और प्रभु सदैव उनके साथ रहता है॥ १३॥ वही प्यारा मित्र एवं सज्जन है, जो दुर्मति दूर करके प्रभु का नाम मन में दृढ़ कर दे। उस उपासक का उपदेश भी निर्मल है, जो काम, क्रोध एवं अहंकार का त्याग करवा दे॥ १४॥ हे प्रभु ! तेरे बिना मेरा कोई नहीं है। गुरु ने मुझे प्रभु के चरण पकड़ा दिए हैं। मैं पूरे सतिगुरु पर कुर्बान जाता हूँ, जिसने मेरा मोह-माया का भ्रम मिटा दिया है॥ १५॥ श्वास-श्वास से प्रभु को याद करो और उसे कदापि न भुलाओ। आठ प्रहर भगवान् का भजन करो। नानक विनय करता है कि हे ईश्वर! तू सर्वकला समर्थ एवं सर्वोपरि है, संतजन तेरे रंग में ही लीन रहते हैं॥ १६॥ ४॥ १३॥

मारू महला ५ १ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

चरन कमल हिरदै नित धारी ॥ गुरु पूरा खिनु खिनु नमसकारी ॥ तनु मनु अरपि धरी सभु आगै जग महि नामु सुहावणा ॥ १ ॥ सो ठाकुरु किउ मनहु विसारे ॥ जीउ पिंडु दे साजि सवारे ॥ सासि गरासि समाले करता कीता अपणा पावणा ॥ २ ॥ जा ते बिरथा कोऊ नाही ॥ आठ पहर हरि रखु मन माही ॥ साधसंगि भजु अचुत सुआमी दरगह सोभा पावणा ॥ ३ ॥ चारि पदारथ असट दसा सिधि ॥ नामु निधानु सहज सुखु नउ निधि ॥ सरब कलिआण जे मन महि चाहहि मिलि साधू सुआमी रावणा ॥ ४ ॥ सासत सिंम्रिति बेद वखाणी ॥ जनमु पदारथु जीतु पराणी ॥ कामु क्रोधु निंदा परहरीऐ हरि रसना नानक गावणा ॥ ५ ॥ जिसु रूपु न रेखिआ कुलु नही जाती ॥ पूरन पूरि रहिआ दिनु राती ॥ जो जो जपै सोई वडभागी बहुड़ि न जोनी पावणा ॥ ६ ॥ जिस नो बिसरै पुरखु बिधाता ॥ जलता फिरै रहै नित ताता ॥ अकिरतघणै कउ रखै न कोई नरक घोर महि पावणा ॥ ७ ॥ जीउ प्राण तनु धनु जिनि साजिआ ॥ मात गरभ महि राखि निवाजिआ ॥ तिस सिउ प्रीति छाडि अन राता काहू सिरै न लावणा ॥ ८ ॥ धारि अनुग्रहु सुआमी मेरे ॥ घटि घटि वसहि सभन कै नेरे ॥ हाथि हमारै कछूऐ नाही जिसु जणाइहि तिसै जणावणा ॥ ९ ॥ जा कै मसतकि धुरि लिखि पाइआ ॥ तिस ही पुरख न विआपै माइआ ॥ नानक दास सदा सरणाई दूसर लवै न लावणा ॥ १० ॥ आगिआ दूख सूख सभि कीने ॥ अंम्रित नामु बिरलै ही चीने ॥ ता की कीमति कहणु न जाई जत कत ओही समावणा ॥ ११ ॥ सोई भगतु सोई वड दाता ॥ सोई पूरन पुरखु बिधाता ॥ बाल सहाई सोई तेरा जो तेरै मनि भावणा ॥ १२ ॥ मिरतु दूख सूख लिखि पाए ॥ तिलु नही बधहि घटहि न घटाए ॥ सोई होइ जि करते भावै कहि कै आपु वञावणा ॥ १३ ॥ अंध कूप ते सेई काढे ॥ जनम जनम के टूटे गांढे ॥ किरपा धारि रखे करि अपुने मिलि साधू गोबिंदु धिआवणा ॥ १४ ॥ तेरी कीमति कहणु न जाई ॥ अचरज रूपु वडी वडिआई ॥ भगति दानु मंगै जनु तेरा नानक बलि बलि जावणा ॥ १५ ॥ १ ॥ १४ ॥ २२ ॥ २४ ॥ २ ॥ १४ ॥ ६२ ॥

मैं नित्य परमात्मा के चरण हृदय में धारण करता हूँ, पूर्ण गुरु को क्षण-क्षण नमन है, मन-तन इत्यादि अर्पण करके सब उसके समक्ष भेंट कर दिया है, जगत् में प्रभु का नाम ही सुहावना है॥ १॥ उस ठाकुर जी को मन से क्योंकर भुलाया जाए, जिसने प्राण-शरीर देकर बनाकर संवार दिया है, खाते-पीते हर वक्त ईश्वर ही रक्षा करता रहता है, किन्तु फिर भी प्रत्येक जीव अपने किए कर्मों का ही फल पाता है॥ २॥ जिसके द्वार से छोटा-बड़ा कोई भी खाली हाथ नहीं लौटता, अतः आठ प्रहर उस ईश्वर की स्मृति को मन में बसाकर रखो। यदि प्रभु-दरबार में शोभा पाना चाहते हो तो संतों के संग अटल स्वामी का भजन करो॥ ३॥ हरि-नाम का खजाना ही काम, अर्थ, धर्म, मोक्ष रूपी चार पदार्थ, अठारह सिद्धियाँ, सहज सुख एवं नौ निधियाँ देने वाला है। यदि मन में

सर्व कल्याण पाना चाहते हो तो साधु पुरुषों की संगत में मिलकर भगवान् का सिमरन करो॥ ४॥ शास्त्रों, स्मृतियों एवं वेदों ने भी यही बखान किया है कि हे प्राणी! मानव-जन्म को जीत लो। हे नानक! काम, क्रोध एवं निंदा को त्यागकर जीभ से भगवान् का गुणगान करना चाहिए॥ ५॥ जिस का कोई रूप अथवा रेखा नहीं, जिसकी न कोई कुल अथवा जाति है, वह दिन-रात सर्वव्यापक है। जो जो उसका जाप करता है, वही खुशनसीब है और वह पुनः योनियों के चक्र में नहीं पड़ता॥ ६॥ जिसे परमपुरुष विधाता भूल जाता है, वह दुखों की अग्नि में जलता रहता है और नित्य ही कष्ट भोगता है। परमात्मा के उपकारों को भुलाने वाले नमकहराम को कोई बचा नहीं सकता और उसे भयानक नरक में धकेल दिया जाता है॥ ७॥ जिसने बनाया है, जीवन, प्राण, तन एवं धन दिया है, माँ के गर्भ में उपकार करके रक्षा की है, उसके प्रेम को छोड़कर जीव अन्य संसारिक रसों में लीन रहता है, परमात्मा के अलावा उसका कोई भी कल्याण नहीं कर सकता॥ ८॥ हे मेरे स्वामी! कृपा करो; घट-घट एवं सब जीवों के निकट तू ही रहता है। हमारे हाथ में कुछ भी नहीं, जिसे तू भेद बताता है, वही तुझे समझता है॥ ६॥ जिसके माथे पर उत्तम भाग्य होता है, उस पुरुष पर माया का कोई प्रभाव नहीं पड़ता। दास नानक सदा परमात्मा की शरण में रहता है और किसी अन्य से प्रेम नहीं लगाता॥ १०॥ सभी दुख-सुख ईश्वर की आज्ञा से ही बने हैं, हरिनामामृत को किसी विरले पुरुष ने ही पहचाना है। उसकी सही कीमत आँकी नहीं जा सकती और सब में एक वही समाया हुआ है॥ ११॥ वास्तव में परमात्मा ही भक्त है, एक वही बड़ा दाता है, वही पूर्ण पुरुष विधाता है। वही तेरा बचपन का साथी है, जो तेरे मन को भाता है॥ १२॥ मृत्यु, दुख, सुख सब तकदीर में लिख दिए हैं और तिल मात्र भी इनमें बढ़ौत्तरी नहीं होती और ये घटाने से भी घट नहीं सकते। जो परमात्मा को मंजूर है, वही होता है, यदि यह कहा जाए कि मैं अपनी तकदीर बदल सकता हूँ तो यह स्वयं को तंग ही करना है॥ १३॥ वह रचयिता ही माया के अन्धकूप में से निकालता है और जन्म-जन्मांतर के टूटे हुए रिश्ते जोड़ देता है। वह कृपा करके अपना बना लेता है, अतः साधुओं के संग गोविन्द का ध्यान करना चाहिए॥ १४॥ हे ईश्वर! तेरा मूल्यांकन नहीं किया जा सकता, तेरा रूप अद्भुत है, तेरी कीर्ति बहुत बड़ी है, दास नानक तुझसे भक्ति का दान माँगता और तुझ पर कुर्बान जाता है॥ १५॥ १॥ १४॥ २२॥ २४॥ २॥ १४॥ ६२॥

मारू वार महला ३ १ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

सलोकु म: १ ॥ विणु गाहक गुणु वेचीऐ तउ गुणु सहघो जाइ ॥ गुण का गाहकु जे मिलै तउ गुणु लाख विकाइ ॥ गुण ते गुण मिलि पाईऐ जे सतिगुर माहि समाइ ॥ मोलि अमोलु न पाईऐ वणजि न लीजै हाटि ॥ नानक पूरा तोलु है कबहु न होवै घाटि ॥ १ ॥

श्लोक महला १॥ ग्राहक के बिना किसी अन्य को गुण बेचा जाए तो वह सस्ता ही बिक जाता है। अगर गुण का ग्राहक मिल जाए तो वह लाखों में बिकता है। अगर सतगुरु में लीन हुआ जाए तो उस गुणवान् से मिलकर गुण प्राप्त हो जाते हैं। अमूल्य गुण तो किसी भी मूल्य पर नहीं मिलते और न ही किसी दुकान से खरीद कर मिलते हैं। हे नानक! गुणों का तौल सदा पूरा है और वह कभी भी कम नहीं होता अर्थात् किसी को गुण देने से कभी कम नहीं होते॥ १॥

म: ४ ॥ नाम विहूणे भरमसहि आवहि जावहि नीत ॥ इकि बांधे इकि ढीलिआ इकि सुखीए हरि प्रीति ॥ नानक सचा मंनि लै सचु करणी सचु रीति ॥ २ ॥

महला ४॥ नामविहीन भटकते रहते हैं और सदा आवागमन में पड़े रहते हैं। कोई बन्धनों

में फँसा है, किसी के बन्धन खुल गए हैं और कुछ लोग परमात्मा से प्रेम लगाकर सुखी हैं। हे नानक! परमात्मा का मनन कर लो, क्योंकि यही सत्कर्म एवं सच्ची जीवन रीति है॥ २॥

पउड़ी ॥ गुर ते गिआनु पाइआ अति खड़गु करारा ॥ दूजा भ्रमु गड़ु कटिआ मोहु लोभु अहंकारा ॥ हरि का नामु मनि वसिआ गुर सबदि वीचारा ॥ सच संजमि मति ऊतमा हरि लगा पिआरा ॥ सभु सचो सचु वरतदा सचु सिरजणहारा ॥ १ ॥

पउड़ी॥ गुरु से ज्ञान रूपी अति शक्तिशाली खड्ग पाया है, जिससे लोभ, मोह, अहंकार एवं द्वैतभाव रूपी किला काट दिया है। शब्द गुरु का चिंतन करने से परमात्मा का नाम मन में बस गया है। सत्य, संयम एवं उत्तम बुद्धि के कारण अब परमात्मा ही प्यारा लगा है। परमेश्वर ही सृजनहार है और सब में वह परम-सत्य ही व्याप्त है॥ १॥

सलोकु म: ३ ॥ केदारा रागा विचि जाणीऐ भाई सबदे करे पिआरु ॥ सतसंगति सिउ मिलदो रहै सचे धरे पिआरु ॥ विचहु मलु कटे आपणी कुला का करे उधारु ॥ गुणा की रासि संग्रहै अवगण कढै विडारि ॥ नानक मिलिआ सो जाणीऐ गुरू न छोडै आपणा दूजै न धरे पिआरु ॥ १ ॥

श्लोक महला ३॥ रागों में केदारा राग तभी उत्तम माना जाता है, यदि इस द्वारा प्राणी ब्रह्म शब्द से प्रेम करे। वह सत्संगति से मिला रहे और सच्चे प्रभु से प्रेम करे। वह अपने मन में से अभिमान रूपी मैल को दूर कर दे और अपनी वंशावलि का उद्धार करे। वह गुणों की राशि संचित करे और अपने अवगुणों को मार कर बाहर निकाल दे। हे नानक! गुरु से मिला वही समझा जाता है, जो अपने गुरु को नहीं छोड़ता और न ही किसी अन्य से प्रेम करता है॥ १॥

म: ४ ॥ सागरु देखउ डरि मरउ भै तेरै डरु नाहि ॥ गुर कै सबदि संतोखीआ नानक बिगसा नाइ ॥ २ ॥

महला ४॥ हे ईश्वर! संसार-सागर को देखकर तो मैं बहुत डर रहा हूँ, लेकिन तेरे भय के कारण इससे डर नहीं लगता। हे नानक! गुरु के शब्द से मन को संतोष मिला है और प्रभु-नाम से मन खिला रहता है॥ २॥

म: ४ ॥ चड़ि बोहिथै चालसउ सागरु लहरी देइ ॥ ठाक न सचै बोहिथै जे गुरु धीरक देइ ॥ तितु दरि जाइ उतारीआ गुरु दिसै सावधानु ॥ नानक नदरी पाईऐ दरगह चलै मानु ॥ ३ ॥

महला ४॥ गुरु के नाम रूपी जहाज पर चढ़कर चल पड़ा हूँ, निःसंदेह सागर से लहरें उठ रही हैं। यदि गुरु धीरज दे तो इस सच्चे जहाज के मार्ग में कोई विघ्न नहीं आता। जहाज का खेवट गुरु होशियार है, उसने मुझे प्रभु के द्वार पर जाकर उतार दिया है। हे नानक! परमात्मा की कृपा-दृष्टि से ही जीव दरगाह में जाकर सम्मान प्राप्त करता है॥ ३॥

पउड़ी ॥ निहकंटक राजु भुंचि तू गुरमुखि सचु कमाई ॥ सचै तखति बैठा निआउ करि सतसंगति मेलि मिलाई ॥ सचा उपदेसु हरि जापणा हरि सिउ बणि आई ॥ ऐथै सुखदाता मनि वसै अंति होइ सखाई ॥ हरि सिउ प्रीति ऊपजी गुरि सोझी पाई ॥ २ ॥

पउड़ी॥ तू गुरु के सान्निध्य में सत्य की कमाई कर और इस तरह सुखदायक राज भोग। प्रभु अपने सच्चे सिंहासन पर बैठा ही न्याय करता है और सत्संगति से मेल मिला लेता है। जो व्यक्ति परमात्मा का सच्चा उपदेश जपता है, उसकी उससे प्रीति हो जाती है। सुख देने वाला परमेश्वर इहलोक में भी उसके मन में बस जाता है और अन्तकाल सहायक होता है। गुरु से ज्ञान पा कर मन में भगवान् से प्रीति उत्पन्न हो गई है॥ २॥

सलोकु म: १ ॥ भूली भूली मै फिरी पाधरु कहै न कोइ ॥ पूछहु जाइ सिआणिआ दुखु काटै मेरा कोइ ॥ सतिगुरु साचा मनि वसै साजनु उत ही ठाइ ॥ नानक मनु त्रिपतासीऐ सिफती साचै नाइ ॥ १ ॥

श्लोक महला १॥ मैं इधर-उधर भटकता रहा परन्तु किसी ने भी रास्ता नहीं बताया। विद्वानों से भी जाकर पूछा कि कोई मेरा दुख काट दे। यदि सच्चा सतगुरु मन में बस जाए तो उस स्थान पर ही सज्जन प्रभु निवसित हो जाए। हे नानक! ईश्वर के सच्चे नाम की स्तुति करने से मन तृप्त हो जाता है॥ १॥

म: ३ ॥ आपे करणी कार आपि आपे करे रजाइ ॥ आपे किस ही बखसि लए आपे कार कमाइ ॥ नानक चानणु गुर मिले दुख बिखु जाली नाइ ॥ २ ॥

महला ३॥ ईश्वर स्वयं ही कार्य करता है और अपनी इच्छा से ही सब करता है। वह स्वयं ही किसी को क्षमा कर देता है और स्वयं ही कार्य को सफल कर देता है। हे नानक! यदि गुरु का ज्ञान रूपी आलोक मिल जाए तो नाम द्वारा विकारों के दुख को जलाया जा सकता है॥ २॥

पउड़ी ॥ माइआ वेखि न भुलु तू मनमुख मूरखा ॥ चलदिआ नालि न चलई सभु झूठु दरबु लखा ॥ अगिआनी अंधु न बूझई सिर ऊपरि जम खड़गु कलखा ॥ गुर परसादी उबरे जिन हरि रसु चखा ॥ आपि कराए करे आपि आपे हरि रखा ॥ ३ ॥

पउड़ी॥ हे मूर्ख मनमुखी! धन-दौलत को देखकर मत भूल। धन-दौलत, सब झूठ है, क्योंकि जगत् में से चलते हुए यह साथ नहीं जाता। अज्ञानी अन्धा जीव यह नहीं समझता कि यम की तलवार उसके सिर पर लटक रही है। जिन्होंने हरि-नाम रूपी रस चखा है, गुरु की कृपा से वे उबर गए हैं। ईश्वर स्वयं ही सब करता-करवाता है और स्वयं सबका रक्षक है॥ ३॥

सलोकु म: ३ ॥ जिना गुरु नही भेटिआ भै की नाही बिंद ॥ आवणु जावणु दुखु घणा कदे न चूकै चिंद ॥ कापड़ जिवै पछोड़ीऐ घड़ी मुहत घड़ीआलु ॥ नानक सचे नाम बिनु सिरहु न चुकै जंजालु ॥ १ ॥

श्लोक महला ३॥ जिन्हें गुरु नहीं मिला, किंचित मात्र भी भय नहीं। वे आवागमन का भारी दुख सहन करते हैं और उनकी चिंता कभी दूर नहीं होती। जैसे धोते समय मैले कपड़ों को पछाड़ा जाता है और हर वक्त एवं मुहूर्त के बाद घड़ियाल को पीटा जाता है, वैसे ही उनकी पिटाई होती है। हे नानक! सत्य-नाम के बिना सिर से जंजाल दूर नहीं होते॥ १॥

म: ३ ॥ त्रिभवण ढूढी सजणा हउमै बुरी जगति ॥ ना झुरु हीअड़े सचु चउ नानक सचो सचु ॥ २ ॥

महला ३॥ हे मेरे साजन! तीनों लोकों में ढूँढ कर देख लिया है कि जगत् में अहम् बहुत बुरी बीमारी है। नानक का कथन है कि हृदय में परेशानी की अपेक्षा सत्य जपते रहो, सब ओर सत्य ही सत्य है॥ २॥

पउड़ी ॥ गुरमुखि आपे बखसिओनु हरि नामि समाणे ॥ आपे भगती लाइओनु गुर सबदि नीसाणे ॥ सनमुख सदा सोहणे सचै दरि जाणे ॥ ऐथै ओथै मुकति है जिन राम पछाणे ॥ धंनु धंनु से जन जिन हरि सेविआ तिन हउ कुरबाणे ॥ ४ ॥

पउड़ी॥ परमात्मा ने गुरुमुखों को स्वयं ही क्षमा कर दिया है और वे हरि-नाम में ही लीन रहते हैं। उसने स्वयं ही उन्हें भक्ति में लगाया है और शब्द-गुरु द्वारा उन्हें प्रभु-दरबार में जाने के लिए परवाना मिल गया है। ईश्वर के उन्मुख रहने वाले सदा सुन्दर लगते हैं और सच्चे द्वार पर प्रसिद्ध हो जाते हैं। जिन्होंने राम को पहचान लिया है, वे यहाँ-वहाँ मुक्त हो जाते हैं। वे भक्तजन धन्य हैं, जिन्होंने परमात्मा की भक्ति की है और मैं उन पर ही कुर्बान जाता हूँ॥ ४॥

सलोकु म: १ ॥ महल कुचजी मड़वड़ी काली मनहु कसुध ॥ जे गुण होवनि ता पिरु रवै नानक अवगुण मुंध ॥ १ ॥

श्लोक महला १॥ मूर्ख जीव-स्त्री शरीर रूपी महल में मस्त बनी रहती है, वह मन से काली एवं अपवित्र है। हे नानक! यदि शुभ गुण हों तो ही वह प्रिय-प्रभु से रमण करती है, लेकिन जीव-स्त्री में तो अवगुण ही भरे हुए हैं॥ १॥

म: १ ॥ साचु सील सचु संजमी सा पूरी परवारि ॥ नानक अहिनिसि सदा भली पिर कै हेति पिआरि ॥ २ ॥

महला १॥ वही जीव स्त्री अपने परिवार में पूरी निपुण है, जो सत्यशील, शील स्वभाव एवं संयम वाली है। हे नानक! प्रियतम के प्रेम के कारण वह सदा भली है॥ २॥

पउड़ी ॥ आपणा आपु पछाणिआ नामु निधानु पाइआ ॥ किरपा करि कै आपणी गुर सबदि मिलाइआ ॥ गुर की बाणी निरमली हरि रसु पीआइआ ॥ हरि रसु जिनी चाखिआ अन रस ठाकि रहाइआ ॥ हरि रसु पी सदा त्रिपति भए फिरि त्रिसना भुख गवाइआ ॥ ५ ॥

पउड़ी॥ जब अपने आप को पहचान लिया तो ही हरि-नाम रूपी सुखों का भण्डार पाया। ईश्वर ने अपनी कृपा करके शब्द-गुरु से मिला दिया है। गुरु की निर्मल वाणी ने हरि-नाम का पान करवाया है। जिन्होंने हरि-रस चखा है, उन्होंने अन्य रसों को त्याग दिया है। हरि-रस पीकर वे सदा के लिए तृप्त हो गए हैं और फिर उनकी तृष्णा एवं भूख मिट गई है॥ ५॥

सलोकु म: ३ ॥ पिर खुसीए धन रावीए धन उरि नामु सीगारु ॥ नानक धन आगै खड़ी सोभावंती नारि ॥ १ ॥

श्लोक महला ३॥ जो जीव-स्त्री प्रभु-नाम को अपने हृदय का शृंगार बनाती है, पति-प्रभु प्रसन्न होकर उससे ही रमण करता है। हे नानक! जो जीव-स्त्री अपने पति की सेवा में तत्पर रहती है, वही शोभावान् नारी है॥ १॥

म: १ ॥ ससुरै पेईऐ कंत की कंतु अगंमु अथाहु ॥ नानक धंनु सोहागणी जो भावहि वेपरवाह ॥ २ ॥

महला १॥ इहलोक एवं परलोक में जीव-स्त्री पति-परमेश्वर की ही सेविका है और उसका पति-परमेश्वर अगम्य एवं अथाह है। हे नानक! वही सुहागिन धन्य है, जो अपने बेपरवाह प्रभु को भाती है॥ २॥

पउड़ी ॥ तखति राजा सो बहै जि तखतै लाइक होई ॥ जिनी सचु पछाणिआ सचु राजे सेई ॥ एहि भूपति राजे न आखीअहि दूजै भाइ दुखु होई ॥ कीता किआ सालाहीऐ जिसु जादे बिलम न होई ॥ निहचलु सचा एकु है गुरमुखि बूझै सु निहचलु होई ॥ ६ ॥

पउड़ी॥ केवल वही राजा तख्त पर विराजमान होता है, जो इसके योग्य होता है। सच्चे राजा वही हैं जिन्होंने परम-सत्य को पहचान लिया है। ये शासक सही राजे नहीं कहे जाते, जो द्वैतभाव में लीन होकर दुखी होते हैं। परमात्मा के पैदा किए जीव की क्या प्रशंसा की जाए, जिसे जगत् से जाते हुए देरी नहीं लगती। एक ईश्वर ही सदा अटल है, गुरु के सान्निध्य में जो तथ्य को बूझ लेता है, वह भी अटल हो जाता है॥ ६॥

सलोकु म: ३ ॥ सभना का पिरु एकु है पिर बिनु खाली नाहि ॥ नानक से सोहागणी जि सतिगुर माहि समाहि ॥ १ ॥

श्लोक महला ३॥ सबका पति-प्रभु एक ही है और कोई भी जीव रूपी स्त्री पति-प्रभु से विहीन नहीं। हे नानक! वास्तव में वही सुहागिन है, जो सतगुरु में लीन रहती है॥ १॥

म: ३ ॥ मन के अधिक तरंग किउ दरि साहिब छुटीऐ ॥ जे राचै सच रंगि गूड़ै रंगि अपार कै ॥ नानक गुर परसादी छुटीऐ जे चितु लगै सचि ॥ २ ॥

महला ३॥ मन में आशा की अनेक तरंगें उठती रहती हैं, वह प्रभु-द्वार से क्योंकर छूट सकता है। यदि वह अपार प्रभु के गहरे प्रेम और सच्चे रंग में लीन हो जाए तो हे नानक! यदि सत्य से चित्त लग जाए तो गुरु की कृपा से छूट जाता है॥ २॥

पउड़ी ॥ हरि का नामु अमोलु है किउ कीमति कीजै ॥ आपे स्रिसटि सभ साजीअनु आपे वरतीजै ॥ गुरमुखि सदा सलाहीऐ सचु कीमति कीजै ॥ गुर सबदी कमलु बिगासिआ इव हरि रसु पीजै ॥ आवण जाणा ठाकिआ सुखि सहजि सवीजै ॥ ७ ॥

पउड़ी॥ परमात्मा का नाम अमूल्य है, इसका मूल्यांकन क्योंकर किया जा सकता है। उसने स्वयं ही समूची सृष्टि का निर्माण किया है और स्वयं ही उसमें कार्यशील है। गुरु के सान्निध्य में सदा उसका स्तुतिगान करो, इस प्रकार उस परम-सत्य का सही मूल्यांकन किया जा सकता है। शब्द-गुरु द्वारा हृदय-कमल खिल गया है, इस प्रकार हरि-नाम का पान किया है। मैंने अपना आवागमन मिटा दिया है और सहजावस्था में सुखपूर्वक रहता हूँ॥ ७॥

सलोकु म: १ ॥ ना मैला ना धुंधला ना भगवा ना कचु ॥ नानक लालो लालु है सचै रता सचु ॥ १ ॥

श्लोक महला १॥ हे नानक! भगवान् की भक्ति में लीन ही सत्यशील है और उसका प्रेम लाल रंग की तरह बहुत पक्का होता है। इस प्रकार न ही कभी मैला होता है, न कभी धुंधला होता है, न कभी भगवा होता है और न ही कच्चा होता है॥ १॥

म: ३ ॥ सहजि वणसपति फुलु फलु भवरु वसै भै खंडि ॥ नानक तरवरु एकु है एको फुलु भिरंगु ॥ २ ॥

महला ३॥ परमानंद में ही वनस्पति, फूल एवं फल की लब्धि होती है और भक्त रूपी जिज्ञासु भँवरा निडर होकर वास करता है। हे नानक! ईश्वर रूपी पेड़ एक ही है और नाम रूपी फल भी एक ही है और भक्त रूपी भँवरा उसमें ही लीन रहता है॥ २॥

पउड़ी ॥ जो जन लूझहि मनै सिउ से सूरे परधाना ॥ हरि सेती सदा मिलि रहे जिनी आपु पछाना ॥ गिआनीआ का इहु महतु है मन माहि समाना ॥ हरि जीउ का महलु पाइआ सचु लाइ धिआना ॥ जिन गुर परसादी मनु जीतिआ जगु तिनहि जिताना ॥ ८ ॥

पउड़ी॥ जो व्यक्ति अपने मन से संघर्ष करता है, वास्तव में वही महान् योद्धा है। जिसने अपने-आपको पहचान लिया है, वह सदा भगवान् के संग मिला रहता है। ज्ञानी पुरुषों की यही बड़ाई है कि वे अपने मन में लीन रहते हैं। उन्होंने सत्य में ध्यान लगाकर भगवान् का घर पा लिया है। गुरु की कृपा से जिसने मन को जीत लिया है, उसने समूचे जगत् पर विजय पा ली है॥ ८॥

सलोकु म: ३ ॥ जोगी होवा जगि भवा घरि घरि भीखिआ लेउ ॥ दरगह लेखा मंगीऐ किसु किसु उतरु देउ ॥ भिखिआ नामु संतोखु मड़ी सदा सचु है नालि ॥ भेखी हाथ न लधीआ सभ बधी जमकालि ॥ नानक गला झूठीआ सचा नामु समालि ॥ १ ॥

श्लोक महला ३॥ अगर योगी बनकर जगत् में घर-घर से भिक्षा लेता रहे और ज़ब ईश्वर के दरबार में हिसाब माँगा जाएगा तो किस-किस का उत्तर देगा। जो नाम की भिक्षा माँगता है और संतोष रूपी मंदिर में रहता है, परमात्मा सदा उसके साथ रहता है। दिखावा करने से कुछ नहीं मिलता, सारी दुनिया काल के शिकंजे में फँसी हुई है। हे नानक! अन्य सब बातें झूठी हैं, अतः सत्य नाम का ही स्मरण करो॥ १॥

म: ३ ॥ जितु दरि लेखा मंगीऐ सो दरु सेविहु न कोइ ॥ ऐसा सतिगुरु लोड़ि लहु जिसु जेवडु अवरु न कोइ ॥ तिसु सरणाई छूटीऐ लेखा मंगै न कोइ ॥ सचु द्रिड़ाए सचु द्रिड़ु सचा ओहु सबदु देइ ॥ हिरदै जिस दै सचु है तनु मनु भी सचा होइ ॥ नानक सचै हुकमि मंनिऐ सची वडिआई देइ ॥ सचे माहि समावसी जिस नो नदरि करेइ ॥ २ ॥

महला ३॥ जिस द्वार पर आस्था रखने के बावजूद भी हिसाब माँगा जाता है, उस द्वार की कोई सेवा मत करो। अतः ऐसा सतिगुरु ढूँढ लो, जिस जैसा अन्य कोई बड़ा नहीं। उसकी शरण में आने से ही मुक्ति प्राप्त होती है और कोई भी हिसाब नहीं माँगता। सतिगुरु सत्य नाम जपता है, अन्यों को भी सत्य नाम जपवाता है और सच्चा शब्द ही प्रदान करता है। जिसके हृदय में सत्य है, उसका तन-मन भी सच्चा हो जाता है। हे नानक! सच्चे परमात्मा के हुक्म को ही मानना चाहिए, क्योंकि वही सच्ची बड़ाई प्रदान करता है। जिस पर वह अपनी कृपा-दृष्टि करता है, वह सत्य में ही विलीन हो जाता है॥ २॥

पउड़ी ॥ सूरे एहि न आखीअहि अहंकारि मरहि दुखु पावहि ॥ अंधे आपु न पछाणनी दूजै पचि जावहि ॥ अति करोध सिउ लूझदे अगै पिछै दुखु पावहि ॥ हरि जीउ अहंकारु न भावई वेद कूकि सुणावहि ॥ अहंकारि मुए से विगती गए मरि जनमहि फिरि आवहि ॥ ९ ॥

पउड़ी॥ वे शूरवीर कहलाने के हकदार नहीं, जो अहंकार में मरते और दुख पाते हैं। ऐसे अन्धे अर्थात् ज्ञानहीन अपने आपको नहीं पहचानते और द्वैतभाव में लीन रह कर बर्बाद हो जाते हैं। वे अति क्रोध से दूसरों से लड़ते हैं और आगे-पीछे दुख ही पाते हैं। वेद पुकार-पुकार कर सुनाते हैं कि ईश्वर को अहंकार नहीं भाता। जो अहंकार में मरते हैं, उनकी गति नहीं होती, अतः वे जन्म-मरण, आवागमन के चक्र में ही पड़े रहते हैं॥ ९॥

सलोकु म: ३ ॥ कागउ होइ न ऊजला लोहे नाव न पारु ॥ पिरम पदारथु मंनि लै धंनु सवारणहारु ॥ हुकमु पछाणै ऊजला सिरि कासट लोहा पारि ॥ त्रिसना छोडै भै वसै नानक करणी सारु ॥ १ ॥

श्लोक महला ३॥ काला कौआ सफेद हंस नहीं बनता एवं लोहे की नाव से कोई भी नदिया से पार नहीं हो सकता। जीवन सँवारने वाला परमात्मा धन्य है, उसके प्रेम-पदार्थ को मन में धारण

कर लो। जो हुक्म के भेद को पहचान लेता है, वही उज्ज्वल होता है। जैसे लोहा लकड़ी की नाव से लगकर नदिया से पार हो जाता है, वैसे ही पतित जीव नाम के संग लगकर संसार-सागर से पार हो जाता है। हे नानक ! यही श्रेष्ठ कर्म है कि मनुष्य तृष्णा को छोड़ कर प्रभु-भय में बसा रहे॥ १॥

म: ३ ॥ मारू मारण जो गए मारि न सकहि गवार ॥ नानक जे इहु मारीऐ गुर सबदी वीचारि ॥ एहु मनु मारिआ ना मरै जे लोचै सभु कोइ ॥ नानक मन ही कउ मनु मारसी जे सतिगुरु भेटै सोइ ॥ २ ॥

महला ३॥ जो व्यक्ति मरुस्थल अथवा वनों-तीर्थों में मन को मारने गए, ऐसे मूर्ख अपने मन को मार नहीं सके। हे नानक ! अगर इस मन को मारना है तो शब्द-गुरु के चिंतन द्वारा ही मारा जा सकता है। चाहे हर कोई चाहता है किन्तु यह मन मारने से भी नहीं मरता। हे नानक ! अगर सतगुरु से साक्षात्कार हो जाए तो शुद्ध मन, अशुद्ध मन को मार देता है॥ २॥

पउड़ी ॥ दोवै तरफा उपाईओनु विचि सकति सिव वासा ॥ सकती किनै न पाइओ फिरि जनमि बिनासा ॥ गुरि सेविऐ साति पाईऐ जपि सास गिरासा ॥ सिम्रिति सासत सोधि देखु ऊतम हरि दासा ॥ नानक नाम बिना को थिरु नही नामे बलि जासा ॥ १० ॥

पउड़ी॥ (लोक-परलोक) दोनों मार्गों को उत्पन्न करके जीव रूपी शिव का शक्ति रूपी माया में निवास कर दिया है। माया रूपी शक्ति द्वारा किसी ने भी सत्य को प्राप्त नहीं किया और वह पुनः जन्मता-मरता है। साँस-ग्रास हर पल गुरु की सेवा और नाम जपने से शान्ति प्राप्त होती है। शास्त्रों एवं स्मृतियों का विश्लेषण करके देख लिया है, जिनका परिणाम यही है कि परमात्मा के दास ही उत्तम हैं। हे नानक ! नाम के बिना कोई स्थिर नहीं, अतः हरि-नाम पर ही कुर्बान जाता हूँ॥ १०॥

सलोकु म: ३ ॥ होवा पंडितु जोतकी वेद पड़ा मुखि चारि ॥ नव खंड मधे पूजीआ अपणै चजि वीचारि ॥ मतु सचा अखरु भुलि जाइ चउकै भिटै न कोइ ॥ झूठे चउके नानका सचा एको सोइ ॥ १ ॥

श्लोक महला ३॥ यदि पण्डित एवं ज्योतिषी बन कर मुँह से चार वेदों का पाठ करे, चाहे अपने आचरण एवं विचारों के कारण पृथ्वी के नौ खण्डों में पूजनीय हो जाए। मगर इस सच्ची बात को भूलना नहीं चाहिए कि चौके को स्पर्श करने से दूषित नहीं होता, अपितु हे नानक ! चौके तो झूठे हैं, एक परमात्मा ही सच्चा है॥ १॥

म: ३ ॥ आपि उपाए करे आपि आपे नदरि करेइ ॥ आपे दे वडिआईआ कहु नानक सचा सोइ ॥ २ ॥

महला ३॥ वह स्वयं ही उत्पन्न करता है, करने वाला भी वह स्वयं ही है और स्वयं ही कृपा-दृष्टि करता है। हे नानक ! वह सच्चा परमेश्वर स्वयं ही बड़ाई प्रदान करता है॥ २॥

पउड़ी ॥ कंटकु कालु एकु है होरु कंटकु न सूझै ॥ अफरिओ जग महि वरतदा पापी सिउ लूझै ॥ गुर सबदी हरि भेदीऐ हरि जपि हरि बूझै ॥ सो हरि सरणाई छुटीऐ जो मन सिउ जूझै ॥ मनि वीचारि हरि जपु करे हरि दरगह सीझै ॥ ११ ॥

पउड़ी॥ एक काल ही सबसे दुःखदायक है, उसके अलावा अन्य कोई दुखदाई नहीं सूझता।

समूचे जगत् में अटल बना हुआ यह कार्यशील है और पापी लोगों को दण्ड देता है। जो व्यक्ति शब्द-गुरु द्वारा हरि में लीन रहता है, वह हरि को जपकर उसे बूझ लेता है। जो मन से जूझता है, वह भगवान् की शरण में आकर यमों से छूट जाता है। जो मन में विचार करके भगवान का जाप करता है, उसके दरबार में स्वीकार हो जाता है॥ ११॥

सलोकु म: १ ॥ हुकमि रजाई साखती दरगह सचु कबूलु ॥ साहिबु लेखा मंगसी दुनीआ देखि न भूलु ॥ दिल दरवानी जो करे दरवेसी दिलु रासि ॥ इसक मुहबति नानका लेखा करते पासि ॥ १ ॥

श्लोक महला १॥ ईश्वर की रज़ा एवं हुक्म से ही सृष्टि-रचना हुई है और उसके दरबार में सत्य ही स्वीकार होता है। हे जीव! दुनिया को देखकर भुलावे में मत पड़, क्योंकि मालिक तो किए कर्मों का ही हिसाब माँगता है। फकीरी वही करता है, जो अपने दिल को विकारों की तरफ जाने से रोके और दिल को हमेशा शुद्ध रखे। हे नानक! परमात्मा से इश्क-मुहब्बत करने का हिसाब उस कर्ता के पास ही है॥ १॥

म: १ ॥ अलगउ जोइ मधूकड़उ सारंगपाणि सबाइ ॥ हीरै हीरा बेधिआ नानक कंठि सुभाइ ॥ २ ॥

महला १॥ हे नानक! जब जीव रूपी भँवरा निर्लिप्त होकर सबमें ईश्वर को पाता है, तो उसका हीरे रूपी मन प्रभु रूपी हीरे से बिंध जाता है और सहज-स्वभाव प्रभु उसके मन में अवस्थित हो जाता है॥ २॥

पउड़ी ॥ मनमुख कालु विआपदा मोहि माइआ लागे ॥ खिन महि मारि पछाड़सी भाइ दूजै ठागे ॥ फिरि वेला हथि न आवई जम का डंडु लागे ॥ तिन जम डंडु न लगई जो हरि लिव जागे ॥ सभ तेरी तुधु छडावणी सभ तुधै लागे ॥ १२ ॥

पउड़ी॥ मोह-माया में लीन मनमुखी जीव को काल सताता रहता है। द्वैतभाव द्वारा ठगे गए जीव को काल क्षण में पछाड़ कर समाप्त कर देता है। जब यम का दण्ड प्राप्त होता है तो पुनः सुनहरी अवसर नहीं मिलता। जो परमात्मा में ध्यान लगाकर जाग्रत रहते हैं, उन्हें यम का दण्ड स्पर्श नहीं करता। हे ईश्वर! सारी दुनिया तेरी ही पैदा की हुई है, तूने ही इसे मुक्त करवाना है और सभी तेरी स्तुति में लगे हुए हैं॥ १२॥

सलोकु म: १ ॥ सरबे जोइ अगछमी दूखु घनेरो आथि ॥ कालरु लादसि सरु लाघणउ लाभु न पूंजी साथि ॥ १ ॥

श्लोक महला १॥ सबमें अविनाशी ईश्वर को देखो, धन-दौलत के साथ मोह लगाने से दुख ही दुख मिलते हैं। हे मानव! तूने संसार-सागर में से पार होना है, किन्तु अपने साथ जाने के लिए पाप रूपी कल्लर बेकार ही लाद लिया है, मगर नाम रूपी पूंजी को छोड़कर यह पूंजी ले जाने में कोई लाभ नहीं है॥ १॥

म: १ ॥ पूंजी साचउ नामु तू अखुटउ दरबु अपारु ॥ नानक वखरु निरमलउ धंनु साहु वापारु ॥ २ ॥

महला १॥ हे मानव! सत्य-नाम की पूंजी संचय कर, यही अक्षय अपार धन है। नानक का कथन है कि यह नाम रूपी पदार्थ पवित्र है और इसका व्यापार करने वाला साहूकार भी धन्य है॥ २॥

म: १ ॥ पूरब प्रीति पिराणि लै मोटउ ठाकुरु माणि ॥ माथै ऊभै जमु मारसी नानक मेलणु नामि ॥ ३ ॥

महला १॥ हे जीव ! ईश्वर से अपनी पूर्व जन्म की प्रीति को पहचान ले और उसके प्रेम का आनंद प्राप्त कर, अन्यथा सिर पर खड़ा यम तुझे प्रताड़ित करेगा, हे नानक ! परमात्मा से मिलाप उसके नाम द्वारा ही होता है॥ ३॥

पउड़ी ॥ आपे पिंडु सवारिओनु विचि नव निधि नामु ॥ इकि आपे भरमि भुलाइअनु तिन निहफल कामु ॥ इकनी गुरमुखि बुझिआ हरि आतम रामु ॥ इकनी सुणि कै मंनिआ हरि ऊतम कामु ॥ अंतरि हरि रंगु उपजिआ गाइआ हरि गुण नामु ॥ १३ ॥

पउड़ी॥ परमात्मा ने स्वयं ही मानव शरीर को सुन्दर बनाया है एवं उसमें नौ निधियाँ प्रदान करने वाला नाम स्थापित किया है। किसी को उसने स्वयं ही भ्रम में भुलाया हुआ है, उसका प्रत्येक कार्य निष्फल हो गया है। किसी ने गुरु के सान्निध्य में आत्मा में परमात्मा के रहस्य को समझ लिया है। किसी ने ईश्वर का यश सुनकर निष्ठापूर्वक उसका ही मनन किया है, जो एक सर्वोत्तम कार्य है। जिसके मन में प्रेम-रंग उत्पन्न हो गया है, उसने परमात्मा के नाम का ही गुणगान किया है॥ १३॥

सलोकु म: १ ॥ भोलतणि भै मनि वसै हेकै पाधर हीडु ॥ अति डाहपणि दुखु घणो तीने थाव भरीडु ॥ १ ॥

श्लोक महला १॥ भोलापन और प्रभु-भय मन में वास करे तो हृदय में से ही एक (प्रभु-मिलन का) रास्ता है। अधिक ईर्ष्या-द्वेष करने से बहुत दुख भोगना पड़ता है और इससे मन, तन एवं वाणी तीनों भ्रष्ट हो जाते हैं॥ १॥

म: १ ॥ मांदलु बेदि सि बाजणो घणो धड़ीऐ जोइ ॥ नानक नामु समालि तू बीजउ अवरु न कोइ ॥ २ ॥

महला १॥ जो लोग पक्षपात करते हैं, उनके लिए वेदों में भी अन्ध-भक्ति का ढोल बजता अनुभूत होता है। नानक का कथन है कि हे मानव ! तू ईश्वर का नाम-स्मरण कर, क्योंकि उसके अलावा अन्य कोई नहीं॥ २॥

म: १ ॥ सागरु गुणी अथाहु किनि हाथाला देखीऐ ॥ वडा वेपरवाहु सतिगुरु मिलै त पारि पवा ॥ मझ भरि दुख बदुख ॥ नानक सचे नाम बिनु किसै न लथी भुख ॥ ३ ॥

महला १॥ तीन गुणों वाला संसार-सागर अथाह है, इसकी गहराई से कौन परिचित है। यदि बड़ा बेपरवाह सतिगुरु मिल जाए तो इससे पार हो सकता हूँ। इस संसार-सागर में निरा दुख ही भरा हुआ है। हे नानक ! सच्चे नाम के बिना किसी की भी भूख दूर नहीं हुई॥ ३॥

पउड़ी ॥ जिनी अंदरु भालिआ गुर सबदि सुहावै ॥ जो इछनि सो पाइदे हरि नामु धिआवै ॥ जिस नो क्रिपा करे तिसु गुरु मिलै सो हरि गुण गावै ॥ धरम राइ तिन का मितु है जम मगि न पावै ॥ हरि नामु धिआवहि दिनसु राति हरि नामि समावै ॥ १४ ॥

पउड़ी॥ जिन्होंने सुन्दर शब्द-गुरु द्वारा हृदय में ही सत्य को खोजा है, परमात्मा के नाम का चिंतन करके उन्होंने मनवांछित फल पा लिया है। जिस पर कृपा करता है, उसे गुरु मिल जाता है और वह प्रभु के गुण गाता रहता है। धर्मराज उसका मित्र बन जाता है और उसे यम-मार्ग में

नहीं डालता। वह दिन-रात प्रभु-नाम का ध्यान करता रहता है और उस में ही समाहित हो जाता है॥ १४॥

सलोकु म: १ ॥ सुणीऐ एकु वखाणीऐ सुरगि मिरति पइआलि ॥ हुकमु न जाई मेटिआ जो लिखिआ सो नालि ॥ कउणु मूआ कउणु मारसी कउणु आवै कउणु जाइ ॥ कउणु रहसी नानका किस की सुरति समाइ ॥ १ ॥

श्लोक महला १॥ स्वर्गलोक, मृत्युलोक तथा पाताललोक—सबमें एक ईश्वर का ही नाम यश सुना जाता एवं बखान होता है। उसका हुक्म मिटाया नहीं जा सकता, जो उसने तकदीर में लिख दिया है, वह जीव के साथ ही रहता है। संसार में कौन मरा है, कौन मारता है, जीवन-मृत्यु के चक्र में कौन पड़ता है, कौन रहेगा ? हे नानक ! किस की आत्मा परम-सत्य में विलीन हो जाती है॥ १॥

म: १ ॥ हउ मुआ मै मारिआ पउणु वहै दरीआउ ॥ त्रिसना थकी नानका जा मनु रता नाइ ॥ लोइण रते लोइणी कंनी सुरति समाइ ॥ जीभ रसाइणि चूनड़ी रती लाल लवाइ ॥ अंदरु मुसकि झकोलिआ कीमति कही न जाइ ॥ २ ॥

महला १॥ अहम्-भावना के कारण ही जीव मृत्यु को प्राप्त हुआ है, उसकी मैं-ममता ने उसे मारा है और उसके प्राण नदिया की तरह बहते हैं अर्थात् प्राणों से ही जीवन चलता है। हे नानक ! अगर मन प्रभु-नाम में लीन हो जाए तो तृष्णा मिट जाती है। आँखें प्रभु-दर्शन में लीन हो जाती हैं और सुरति कानों द्वारा हरि-नाम में समा जाती है। जीभ हरि-नाम रूपी औषधि पान करती रहती है और नाम जपकर प्रियतम के प्रेम में लीन रहती है। उसका हृदय नाम से सुगन्धित हो जाता है और उसका मूल्यांकन नहीं किया जा सकता॥ २॥

पउड़ी ॥ इसु जुग महि नामु निधानु है नामो नालि चलै ॥ एहु अखुटु कदे न निखुटई खाइ खरचिउ पलै ॥ हरि जन नेड़ि न आवई जमकंकर जमकलै ॥ से साह सचे वणजारिआ जिन हरि धनु पलै ॥ हरि किरपा ते हरि पाईऐ जा आपि हरि घलै ॥ १५ ॥

पउड़ी॥ इस जग में परमात्मा का नाम ही सुखों का भण्डार है और केवल नाम ही साथ जाता है। यह नाम-भण्डार अक्षय है और कभी समाप्त नहीं होता, खाने एवं खर्च करने पर भी इसमें वृद्धि ही होती है। यमराज के यमदूत भी भक्तजनों के निकट नहीं आते। जिनके पास हरि-नाम रूपी धन है, वही सच्चे शाह एवं व्यापारी हैं। परमात्मा को उसकी कृपा से ही पाया जा सकता है, यदि वह स्वयं प्रदान कर दे॥ १५॥

सलोकु म: ३ ॥ मनमुख वापारै सार न जाणनी बिखु विहाझहि बिखु संग्रहहि बिख सिउ धरहि पिआरु ॥ बाहरहु पंडित सदाइदे मनहु मूरख गावार ॥ हरि सिउ चितु न लाइनी वादी धरनि पिआरु ॥ वादा कीआ करनि कहाणीआ कूड़ु बोलि करहि आहारु ॥ जग महि राम नामु हरि निरमला होरु मैला सभु आकारु ॥ नानक नामु न चेतनी होइ मैले मरहि गवार ॥ १ ॥

श्लोक महला ३॥ स्वेच्छाचारी सच्चे व्यापार के महत्व को नहीं जानते, अतः वे विष ही खरीदते, विष ही संचित करते और विष से ही प्रेम करते हैं। वे बाहर से तो पण्डित-विद्वान कहलवाते हैं, किन्तु मन से मूर्ख एवं गंवार ही सिद्ध होते हैं। ऐसे व्यक्ति परमात्मा की स्मृति में चित्त नहीं लगाते, मगर वाद-विवाद एवं झगड़ों में इनकी रुचि बनी रहती है। वे नित्य ही वाद-विवाद अथवा लड़ाई-झगड़े की कहानियाँ करते रहते हैं और झूठ बोलकर ही गुजारा करते हैं। जगत् में राम नाम ही अत्यंत निर्मल है, अन्य समूचा आकार ही मैला है। हे नानक ! जो ईश्वर का नाम-स्मरण नहीं करते और ऐसे गंवार मैले होकर ही मरते हैं॥ १॥

म: ३ ॥ दुखु लगा बिनु सेविऐ हुकमु मंने दुखु जाइ ॥ आपे दाता सुखै दा आपे देइ सजाइ ॥ नानक एवै जाणीऐ सभु किछु तिसै रजाइ ॥ २ ॥

महला ३॥ ईश्वर की उपासना के बिना दुख ही प्राप्त हुआ है, परन्तु उसका हुक्म मानने से दुख-दर्द दूर हो जाता है। वह स्वयं ही सुख देने वाला है और स्वयं ही जीवों को कर्मों के अनुसार दण्ड देता है। हे नानक! इस तरह समझ लो कि सबकुछ उसकी रज़ा में हो रहा है॥ २॥

पउड़ी ॥ हरि नाम बिना जगतु है निरधनु बिनु नावै त्रिपति नाही ॥ दूजै भरमि भुलाइआ हउमै दुखु पाही ॥ बिनु करमा किछू न पाईऐ जे बहुतु लोचाही ॥ आवै जाइ जंमै मरै गुर सबदि छुटाही ॥ आपि करै किसु आखीऐ दूजा को नाही ॥ १६ ॥

पउड़ी॥ परमेश्वर के नाम बिना समूचा जगत् निर्धन है और नाम के बिना तृप्ति नहीं होती। जो मनुष्य द्वैतभाव द्वारा भ्रम में भूला रहता है, वह अहम् के कारण दुख ही पाता है। यदि बहुत कामना भी की जाए, परन्तु भाग्य के बिना कुछ भी पाया नहीं जा सकता। मनुष्य आवागमन में जन्मता-मरता रहता है लेकिन इसका छुटकारा शब्द-गुरु से ही होता है। परमात्मा स्वयं ही करने वाला है, किसी अन्य को क्यों कहा जाए, उसके सिवाय अन्य कोई नहीं॥ १६॥

सलोकु म: ३ ॥ इसु जग महि संती धनु खटिआ जिना सतिगुरु मिलिआ प्रभु आइ ॥ सतिगुरि सचु द्रिड़ाइआ इसु धन की कीमति कही न जाइ ॥ इतु धनि पाइऐ भुख लथी सुखु वसिआ मनि आइ ॥ जिंन्हा कउ धुरि लिखिआ तिनी पाइआ आइ ॥ मनमुखु जगतु निरधनु है माइआ नो बिललाइ ॥ अनदिनु फिरदा सदा रहै भुख न कदे जाइ ॥ सांति न कदे आवई नह सुखु वसै मनि आइ ॥ सदा चिंत चितवदा रहै सहसा कदे न जाइ ॥ नानक विणु सतिगुर मति भवी सतिगुर नो मिलै ता सबदु कमाइ ॥ सदा सदा सुख महि रहै सचे माहि समाइ ॥ १ ॥

श्लोक महला ३॥ इस जगत् में संतों ने ही नाम-धन उपार्जित किया है, जिन्हें सतगुरु मिला है, प्रभु की स्मृति उनके मन में बस गई है। सतगुरु ने सत्य ही दृढ़ करवाया है और इस धन की सही कीमत आँकी नहीं जा सकती। इस धन को पाने से सारी भूख दूर हो जाती है और मन में सुख अवस्थित हो जाता है। जिनके भाग्य में प्रारम्भ से ही लिखा है, जगत् में आकर उन्होंने यह धन पा लिया है। स्वेच्छाचारी जगत् निर्धन है, जो धन के लिए रोता-चिल्लाता एवं तड़पता रहता है। यह प्रतिदिन इधर-उधर भटकता रहता है, लेकिन इसकी धन की भूख कदापि दूर नहीं होती। इसे कभी शान्ति नहीं मिलती और न ही मन में सुख बसता है। यह सदा चिन्ता-परेशानियों में पड़ा रहता है और इसका संशय कभी दूर नहीं होता। हे नानक ! सतगुरु के बिना इसकी बुद्धि भ्रष्ट हो गई है, यदि इसे सतगुरु मिल जाए तो ही शब्द की कमाई करता है। इस प्रकार सदा सुखी रहता है और सत्य में ही विलीन हो जाता है॥ १॥

म: ३ ॥ जिनि उपाई मेदनी सोई कार करेइ ॥ एको सिमरहु भाइरहु तिसु बिनु अवरु न कोइ ॥ खाणा सबदु चंगिआईआ जितु खाधै सदा त्रिपति होइ ॥ पैनणु सिफति सनाइ है सदा सदा ओहु ऊजला मैला कदे न होइ ॥ सहजे सचु धनु खटिआ थोड़ा कदे न होइ ॥ देही नो सबदु सीगारु है जितु सदा सदा सुखु होइ ॥ नानक गुरमुखि बुझीऐ जिस नो आपि विखाले सोइ ॥ २ ॥

महला ३॥ जिसने यह पृथ्वी पैदा की है, वही इसकी संभाल करता है। हे प्यारे भाइयो ! एक परमेश्वर को ही स्मरण करो, क्योंकि उसके सिवा अन्य कोई रखवाला नहीं। शब्द का चिन्तन एवं

अच्छाईयों को अपना भोजन बनाओ, जिसे खाने से मन सदा तृप्त रहता है। ईश्वर की स्तुति एवं भजन-गान ही मनुष्य का सही वस्त्र है और यह सदा-सर्वदा उज्ज्वल रहता है और कभी मैला नहीं होता। जिसने सहजावस्था में सत्य नाम रूपी धन की कमाई की है, वह धन कभी कम नहीं होता। परमात्मा का नाम ही शरीर का सच्चा शृंगार है, जिससे सदैव सुख मिलता रहता है। हे नानक! जिसे स्वयं ही दर्शन करवाता है, वह गुरुमुख बनकर इस रहस्य को समझ लेता है॥ २॥

पउड़ी ॥ अंतरि जपु तपु संजमो गुर सबदी जापै ॥ हरि हरि नामु धिआईऐ हउमै अगिआनु गवापै ॥ अंदरु अंम्रिति भरपूरु है चाखिआ सादु जापै ॥ जिन चाखिआ से निरभउ भए से हरि रसि ध्रापै ॥ हरि किरपा धारि पीआइआ फिरि कालु न विआपै ॥ १७ ॥

पउड़ी॥ मन में जप, तप एवं संयम का ज्ञान शब्द-गुरु द्वारा ही मालूम होता है। परमात्मा के नाम का ध्यान करने से अभिमान एवं अज्ञान दूर हो जाते हैं। मनुष्य का मन नामामृत से भरपूर है लेकिन इसे चखने से ही इसका स्वाद मालूम होता है। जिन्होंने इसे चखा है, वे निर्भय हो गए हैं और हरि-नाम रस से संतुष्ट हो गए हैं। परमात्मा ने कृपा करके जिसे नामामृत का पान करवाया है, उसे फिर काल ने तंग नहीं किया॥ १७॥

सलोकु म: ३ ॥ लोकु अवगणा की बंन्है गंठड़ी गुण न विहाझै कोइ ॥ गुण का गाहकु नानका विरला कोई होइ ॥ गुर परसादी गुण पाईअन्हि जिस नो नदरि करेइ ॥ १ ॥

श्लोक महला ३॥ लोग अवगुणों की गठरी तो बाँधते जाते हैं, किन्तु गुणों को कोई भी नहीं खरीदता। हे नानक! गुणों का ग्राहक कोई विरला पुरुष ही होता है। जिस पर प्रभु कृपा-दृष्टि करता है, गुरु के आशीर्वाद से वह गुणों को प्राप्त कर लेता है॥ १॥

म: ३ ॥ गुण अवगुण समानि हहि जि आपि कीते करतारि ॥ नानक हुकमि मंनिऐ सुखु पाईऐ गुर सबदी वीचारि ॥ २ ॥

महला ३॥ गुण-अवगुण भी एक समान ही हैं, क्योंकि ईश्वर ने ही इन्हें बनाया है। हे नानक! शब्द गुरु द्वारा चिंतन करने एवं परमात्मा का हुक्म मानने से ही सुख प्राप्त होता है॥ २॥

पउड़ी ॥ अंदरि राजा तखतु है आपे करे निआउ ॥ गुर सबदी दरु जाणीऐ अंदरि महलु असराउ ॥ खरे परखि खजानै पाईअनि खोटिआ नाही थाउ ॥ सभु सचो सचु वरतदा सदा सचु निआउ ॥ अंम्रित का रसु आइआ मनि वसिआ नाउ ॥ १८ ॥

पउड़ी॥ परमात्मा रूपी राजा मन में ही अपने सिंहासन पर विराजमान है और स्वयं न्याय करता है। अन्तर्मन में ही जीवों का आश्रय प्रभु का दसम द्वार है और शब्द-गुरु द्वारा ही जिसका द्वार बोध होता है। वह स्वयं ही भले जीवों को परखकर खजाने में डाल देता है, किन्तु दुष्टों को कहीं भी ठिकाना नहीं मिलता। सब तरफ परम-सत्य ही व्याप्त है और उसका न्याय भी सदैव सत्य है। जिसके मन में प्रभु का नाम बस गया है, उसे ही नामामृत का स्वाद आया है॥ १८॥

सलोक म: १ ॥ हउ मै करी तां तू नाही तू होवहि हउ नाहि ॥ बूझहु गिआनी बूझणा एह अकथ कथा मन माहि ॥ बिनु गुर ततु न पाईऐ अलखु वसै सभ माहि ॥ सतिगुरु मिलै त जाणीऐ जां सबदु वसै मन माहि ॥ आपु गइआ भ्रमु भउ गइआ जनम मरन दुख जाहि ॥ गुरमति अलखु लखाईऐ ऊतम मति तराहि ॥ नानक सोहं हंसा जपु जापहु त्रिभवण तिसै समाहि ॥ १ ॥

श्लोक महला १॥ हे ईश्वर! जब अभिमान करता हूँ तो तू मन में नहीं रहता किन्तु जब तू

मन में होता है तो अभिमान मिट जाता है। हे ज्ञानवान् पुरुषो ! यदि बूझना है तो इस अकथनीय कथा को मन में ही बूझ लो। गुरु के बिना परम तत्व पाया नहीं जा सकता, वह अदृष्ट रूप में सबमें बसा हुआ है। यदि सतगुरु मिल जाए तो ही इस रहस्य का ज्ञान होता है और मन में शब्द अवस्थित हो जाता है। जब अहम् दूर हो गया तो भ्रम-भय मिट गया और जन्म-मरण का दुख भी विनष्ट हो गया। गुरु-मत से ही अदृष्ट प्रभु के दर्शन होते हैं और उत्तम मत से ही भवसागर से पार हुआ जा सकता है। हे नानक ! वह मैं ही हूँ अर्थात् परमात्मा से लीनता वाले मंत्र का जाप करो, तीनों लोकों में वही समाया हुआ है॥ १॥

म: ३ ॥ मनु माणकु जिनि परखिआ गुर सबदी वीचारि ॥ से जन विरले जाणीअहि कलजुग विचि संसारि ॥ आपै नो आपु मिलि रहिआ हउमै दुबिधा मारि ॥ नानक नामि रते दुतरु तरे भउजलु बिखमु संसारु ॥ २ ॥

महला ३॥ जिन्होंने शब्द-गुरु का विचार करके मन रूपी माणिक्य को परख लिया है, ऐसे व्यक्ति कलियुगी संसार में विरले ही जाने जाते हैं। अपने अहम् एवं दुविधा को मारकर वे आत्मस्वरूप में मिले रहते हैं॥ हे नानक ! ईश्वर के नाम में लीन रहने वाले ही इस दुस्तर एवं भयानक संसार-सागर से पार हुए हैं॥ २॥

पउड़ी ॥ मनमुख अंदरु न भालनी मुठे अहंमते ॥ चारे कुंडां भवि थके अंदरि तिख तते ॥ सिंम्रिति सासत न सोधनी मनमुख विगुते ॥ बिनु गुर किनै न पाइओ हरि नामु हरि सते ॥ ततु गिआनु वीचारिआ हरि जपि हरि गते ॥ १९ ॥

पउड़ी॥ स्वेच्छाचारी अपने अन्तर्मन में तलाश नहीं करते, अपितु अभिमान के कारण ठगे गए हैं। वे चारों दिशाओं में घूमकर थक गए हैं और उनके अन्तर्मन में तृष्णाग्नि प्रज्वलित होती रहती है। वे स्मृति एवं शास्त्रों का विश्लेषण नहीं करते, अतः स्वेच्छाचारी दुखी हुए हैं। गुरु के बिना किसी को परम-सत्य प्रभु-नाम नहीं मिला। जिन्होंने तत्व-ज्ञान का चिंतन किया है, परमात्मा का जाप करके उनकी गति हो गई है॥ १६॥

सलोक म: २ ॥ आपे जाणै करे आपि आपे आणै रासि ॥ तिसै अगै नानका खलिइ कीचै अरदासि ॥ १ ॥

श्लोक महला २॥ ईश्वर स्वयं ही जानता है, कर्ता भी स्वयं ही है, स्वयं ही बिगड़े कार्यों को ठीक करता है। हे नानक ! उस दीनदयाल के समक्ष ही प्रार्थना करो॥ १॥

म: १ ॥ जिनि कीआ तिनि देखिआ आपे जाणै सोइ ॥ किस नो कहीऐ नानका जा घरि वरतै सभु कोइ ॥ २ ॥

महला १॥ जिसने दुनिया को उत्पन्न किया है, उसने ही इसकी देखभाल की है, वह सर्वज्ञाता है। हे नानक ! जब सब हृदय-घर में ही व्याप्त है, फिर किससे कहा जाए॥ २॥

पउड़ी ॥ सभे थोक विसारि इको मितु करि ॥ मनु तनु होइ निहालु पापा दहै हरि ॥ आवण जाणा चुकै जनमि न जाहि मरि ॥ सचु नामु आधारु सोगि न मोहि जरि ॥ नानक नामु निधानु मन महि संजि धरि ॥ २० ॥

पउड़ी॥ हे जीव ! सब पदार्थों को भुलाकर ईश्वर को अपना मित्र बना, इससे मन-तन आनंदित हो जाएगा और प्रभु सब पाप मिटा देगा। तेरा आवागमन छूट जाएगा और जन्म-मरण

से रहित हो जाओगे। सच्चा नाम ही ऐसा सहारा है, जिससे शोक एवं मोह रूपी अग्नि में जलना नहीं पड़ता। हे नानक ! परमात्मा का नाम सुखों का भण्डार है, इसे अपने मन में संजोकर रख लो॥ २०॥

सलोक म: ५ ॥ माइआ मनहु न वीसरै मांगै दंमा दंम ॥ सो प्रभु चिति न आवई नानक नही करंम ॥ १ ॥

श्लोक महला ५॥ आदमी मन से धन-दौलत को नहीं भूलता, अपितु अधिकाधिक धन की ही लालसा करता है। हे नानक ! अगर भाग्य साथ नहीं तो उसे प्रभु भी याद नहीं आता॥ १॥

म: ५ ॥ माइआ साथि न चलई किआ लपटावहि अंध ॥ गुर के चरण धिआइ तू तूटहि माइआ बंध ॥ २ ॥

महला ५॥ अरे अन्धे ! माया किसी भी जीव के साथ नहीं चलती, फिर क्यों इससे लिपट रहे हो। तू गुरु के चरणों का ध्यान कर, तेरे माया के बन्धन टूट जाएँगे॥ २॥

पउड़ी ॥ भाणै हुकमु मनाइओनु भाणै सुखु पाइआ ॥ भाणै सतिगुरु मेलिओनु भाणै सचु धिआइआ ॥ भाणे जेवड होर दाति नाही सचु आखि सुणाइआ ॥ जिन कउ पूरबि लिखिआ तिन सचु कमाइआ ॥ नानक तिसु सरणागती जिनि जगतु उपाइआ ॥ २१ ॥

पउड़ी॥ परमात्मा ने अपनी रज़ा में ही अपना हुक्म मनवाया है और ईश्वरेच्छा में ही जीव ने सुख पाया है। उसने अपनी इच्छा से जिसे सतिगुरु से मिला दिया है, उसने रज़ा में ही परम-सत्य का मनन किया है। सतगुरु ने यह सत्य ही कहकर सुनाया है कि ईश्वरेच्छा जैसी बड़ी अन्य कोई देन नहीं। जिनके भाग्य में पूर्व से ही ऐसा लिखा है, उसने ही सत्य का आचरण किया है। हे नानक ! उसकी शरण में पड़े रहो, जिसने यह जगत् उत्पन्न किया है॥ २१॥

सलोक म: ३ ॥ जिन कउ अंदरि गिआनु नही भै की नाही बिंद ॥ नानक मुइआ का किआ मारणा जि आपि मारे गोविंद ॥ १ ॥

श्लोक महला ३॥ जिनके अंत:करण में ज्ञान नहीं और परमात्मा का थोड़ा-सा भी भय नहीं, हे नानक ! भला उन मृतक मनुष्यों को और क्या मारना है, जिन्हें प्रभु ने स्वयं ही मार दिया है॥ १॥

म: ३ ॥ मन की पत्री वाचणी सुखी हू सुखु सारु ॥ सो ब्राहमणु भला आखीऐ जि बुझै ब्रहमु बीचारु ॥ हरि सालाहे हरि पड़ै गुर कै सबदि वीचारि ॥ आइआ ओहु परवाणु है जि कुल का करे उधारु ॥ अगै जाति न पुछीऐ करणी सबदु है सारु ॥ होरु कूड़ु पड़णा कूड़ु कमावणा बिखिआ नालि पिआरु ॥ अंदरि सुखु न होवई मनमुख जनमु खुआरु ॥ नानक नामि रते से उबरे गुर कै हेति अपारि ॥ २ ॥

महला ३॥ अपने मन की पत्री को पढ़ना ही परम सुख है। वही ब्राह्मण भला कहना चाहिए जो ब्रह्म-विचार को बूझ लेता है। वह गुरु के शब्द (उपदेश) का गहन चिंतन कर परमात्मा की स्तुति एवं उसके गुणों का अध्ययन करता रहता है। उसका ही जन्म सफल है, जो अपनी कुल का उद्धार करता है। आगे परलोक में किसी की जाति नहीं पूछी जाती, अपितु शुभ कर्म एवं शब्द का चिंतन ही श्रेष्ठ माना जाता है। अन्य पढ़ना, आचरण करना सब झूठ ही झूठ है और विषय-विकारों से प्रेम मात्र झूठ ही है। स्वेच्छाचारी के मन को सुख नहीं मिलता और उसका जन्म

व्यर्थ ही बर्बाद होता है। हे नानक! गुरु के अपार प्रेम द्वारा हरि-नाम में लीन रहने वाले संसार-सागर से उबर गए हैं॥ २॥

पउड़ी ॥ आपे करि करि वेखदा आपे सभु सचा ॥ जो हुकमु न बूझै खसम का सोई नरु कचा ॥ जितु भावै तितु लाइदा गुरमुखि हरि सचा ॥ सभना का साहिबु एकु है गुर सबदी रचा ॥ गुरमुखि सदा सलाहीऐ सभि तिस दे जचा ॥ जिउ नानक आपि नचाइदा तिव ही को नचा ॥ २२ ॥ १ ॥ सुधु ॥

पउड़ी॥ ईश्वर स्वयं ही संसार बनाता है, स्वयं ही संभाल करता है और एकमात्र वही सत्य है। जो मालिक के हुक्म को नहीं समझता, वह आदमी कच्चा है। जिधर उपयुक्त लगता है, उधर ही सच्चा प्रभु लगा देता है। सबका मालिक एक ही है और शब्द-गुरु द्वारा ही जीव उसमें रचता है। गुरु के सान्निध्य में सदा उसका स्तुतिगान करो, सभी जीव उसके याचक हैं। हे नानक! जैसे परमात्मा जीवों को नचाता है, वैसे ही वे नाचते हैं॥ २२॥ १॥ शुद्ध॥

मारू वार महला ५ डखणे म: ५ १ओं सतिगुर प्रसादि ॥

तू चउ सजण मैडिआ डेई सिसु उतारि ॥ नैण महिंजे तरसदे कदि पसी दीदारु ॥ १ ॥

हे मेरे सज्जन प्रभु! अगर तू कहे तो मैं अपना शीश उतारकर तुझे भेंट कर दूँ। मेरे नयन तरस रहे हैं, कब तेरा दीदार होगा॥ १॥

म: ५ ॥ नीहु महिंजा तऊ नालि बिआ नेह कूड़ावे डेखु ॥ कपड़ भोग डरावणे जिचरु पिरी न डेखु ॥ २ ॥

महला ५॥ तेरे साथ ही मेरा प्रेम है, अन्य सब प्रेम झूठे ही देखे हैं। जब तक प्रिय-प्रभु को न देख लूँ, तब तक सभी कपड़े एवं भोग भयानक ही लगते हैं॥ २॥

म: ५ ॥ उठी झालू कंतड़े हउ पसी तउ दीदारु ॥ काजलु हारु तमोल रसु बिनु पसे हभि रस छारु ॥ ३ ॥

महला ५॥ हे स्वामी! मैं सुबह उठती हूँ, ताकि तेरा दीदार पा सकूँ। तुझे देखे बिना यह काजल, हार, पान का रस सब कुछ मेरे लिए धूल के समान हैं॥ ३॥

पउड़ी ॥ तू सचा साहिबु सचु सचु सभु धारिआ ॥ गुरमुखि कीतो थाटु सिरजि संसारिआ ॥ हरि आगिआ होए बेद पापु पुंनु वीचारिआ ॥ ब्रहमा बिसनु महेसु त्रै गुण बिसथारिआ ॥ नव खंड प्रिथमी साजि हरि रंग सवारिआ ॥ वेकी जंत उपाइ अंतरि कल धारिआ ॥ तेरा अंतु न जाणै कोइ सचु सिरजणहारिआ ॥ तू जाणहि सभ बिधि आपि गुरमुखि निसतारिआ ॥ १ ॥

पउड़ी॥ हे परमात्मा! तू ही सच्चा मालिक है, तूने सब परम सत्य ही धारण किया हुआ है। इस संसार का निर्माण करके तूने गुरुमुखों के लिए भक्ति एवं सिमरन करने का स्थान बनाया है। ईश्वर की आज्ञा से ही वेदों की उत्पत्ति हुई, जिन्होंने पाप-पुण्य का विचार किया। ब्रह्मा, विष्णु एवं शिव को बनाकर माया के तीन गुणों का विस्तार किया। नवखण्ड पृथ्वी का निर्माण करके परमात्मा ने उसे अनेक रंगों से सुन्दर बना दिया। अनेक प्रकार के जीवों को पैदा करके उनमें जीवन-शक्ति स्थापित कर दी। हे सच्चे सृजनहार! कोई भी तेरा अन्त (रहस्य) नहीं जानता। तू सब युक्तियाँ जानता है और स्वयं ही गुरुमुख का उद्धार करता है॥ १॥

डखणे म: ५ ॥ जे तू मित्रु असाडड़ा हिक भोरी ना वेछोड़ि ॥ जीउ महिंजा तउ मोहिआ कदि पसी जानी तोहि ॥ १ ॥

डखणे महला ५॥ हे प्रभु ! अगर तू हमारा मित्र है तो हमें थोड़ी देर के लिए भी अपने से जुदा मत कर। तूने मेरा मन मोह लिया है, हे प्राणप्रिय ! कब तेरा दीदार होगा॥ १॥

म: ५ ॥ दुरजन तू जलु भाहड़ी विछोड़े मरि जाहि ॥ कंता तू सउ सेजड़ी मैडा हभो दुखु उलाहि ॥ २ ॥

महला ५॥ ओह दुर्जन ! तू प्रचण्ड अग्नि में जल जा, ओह वियोग ! तू मर ही जा। हे पति-प्रभु ! तू मेरी हृदय रूपी सेज पर सो कर सब दुख-दर्द मिटा दे॥ २॥

म: ५ ॥ दुरजनु दूजा भाउ है वेछोड़ा हउमै रोगु ॥ सजणु सचा पातिसाहु जिसु मिलि कीचै भोगु ॥ ३ ॥

महला ५॥ सच तो यही है कि द्वैतभाव ही दुर्जन है एवं अभिमान का रोग ही वियोग का कारण है। सच्चा बादशाह प्रभु ही सज्जन है, जिसे मिलकर आनंद मिलता है॥ ३॥

पउड़ी ॥ तू अगम दइआलु बेअंतु तेरी कीमति कहै कउणु ॥ तुधु सिरजिआ सभु संसारु तू नाइकु सगल भउण ॥ तेरी कुदरति कोइ न जाणै मेरे ठाकुर सगल रउण ॥ तुधु अपड़ि कोइ न सकै तू अबिनासी जग उधरण ॥ तुधु थापे चारे जुग तू करता सगल धरण ॥ तुधु आवण जाणा कीआ तुधु लेपु न लगै त्रिण ॥ जिसु होवहि आपि दइआलु तिसु लावहि सतिगुर चरण ॥ तू होरतु उपाइ न लभही अबिनासी स्रिसटि करण ॥ २ ॥

पउड़ी॥ हे ईश्वर ! तू अगम्य है, दया का सागर है, बेअन्त है, तेरी सही कीमत कौन आँक सकता है। तूने समूचे संसार का निर्माण किया है, तू सब लोकों का स्वामी है। हे मेरे विश्वव्यापी ठाकुर ! तेरी शक्ति को कोई नहीं जानता। तू अनश्वर है, जगत् का उद्धारक है, कोई भी तुझ तक पहुँच नहीं सकता। तूने ही सतियुग, त्रैता, द्वापर एवं कलियुग की स्थापना की है, तू ही समूची धरती का रचयिता है। जीवों का जन्म-मरण बेशक तूने ही बनाया है, किन्तु तुझे तिल मात्र भी इसका दोष नहीं लगता। जिस पर तू दयालु हो जाता है, उसे गुरु के चरणों में लगा देता है। हे अविनाशी सृष्टिकर्ता ! गुरु के बिना तू किसी अन्य उपाय से नहीं मिलता॥ २॥

डखणे म: ५ ॥ जे तू वतहि अंङणे हभ धरति सुहावी होइ ॥ हिकसु कंतै बाहरी मैडी वात न पुछै कोइ ॥ १ ॥

डखणे महला ५॥ हे परमेश्वर ! यदि तू मेरे हृदय रूपी आँगन में आ जाए तो शरीर रूपी सारी धरती सुन्दर बन जाए। पति-प्रभु के बिना तो कोई भी मेरी बात नहीं पूछता॥ १॥

म: ५ ॥ हभे टोल सुहावणे सहु बैठा अंङणु मलि ॥ पही न वंञै बिरथड़ा जो घरि आवै चलि ॥ २ ॥

महला ५॥ मेरा पति-प्रभु मेरे हृदय रूपी आँगन में आकर बैठ गया है, अतः अब मुझे सभी शृंगार सुन्दर लगते हैं। जो भी अतिथि संत चलकर मेरे घर आता है, वह खाली हाथ नहीं जाता॥ २॥

म: ५ ॥ सेज विछाई कंत कू कीआ हभु सीगारु ॥ इती मंझि न समावई जे गलि पहिरा हारु ॥ ३ ॥

महला ५॥ मैंने अपने पति-प्रभु के लिए हृदय रूपी सेज बिछा ली है और सारा श्रृंगार कर लिया है। अब अगर गले में हार भी पहन लूँ तो यह थोड़ा-सा भी बर्दाश्त नहीं होता जो प्रभु से जुदाई का कारण बनता है॥ ३॥

पउड़ी ॥ तू पारब्रहमु परमेसरु जोनि न आवही ॥ तू हुकमी साजहि स्रिसटि साजि समावही ॥ तेरा रूपु न जाई लखिआ किउ तुझहि धिआवही ॥ तू सभ महि वरतहि आपि कुदरति देखावही ॥ तेरी भगति भरे भंडार तोटि न आवही ॥ एहि रतन जवेहर लाल कीम न पावही ॥ जिसु होवहि आपि दइआलु तिसु सतिगुर सेवा लावही ॥ तिसु कदे न आवै तोटि जो हरि गुण गावही ॥ ३ ॥

पउड़ी॥ हे परब्रह्म परमेश्वर ! तू सदा अमर है, किसी योनि में नहीं आता। तू अपने हुक्म से ही सृष्टि का निर्माण करता है और निर्माण करके उसमें समाया रहता है। तेरा रूप देखा नहीं जा सकता फिर क्योंकर तेरा ध्यान किया जा सकता है। तू सब जीवों में व्याप्त है और स्वयं ही अपनी कुदरत दिखाता है। तेरी भक्ति के भण्डार भरे हुए हैं और उनमें कभी कोई कमी नहीं आती। यह (भक्ति ही) रत्न, हीरे-जवाहरात एवं मोती हैं, इसका मूल्यांकन नहीं किया जा सकता। जिस पर तू दयालु हो जाता है, उसे सतगुरु की सेवा में लगा देता है। हे हरि ! जो तेरा गुणगान करता है, उसे किसी भी वस्तु की कमी नहीं आती॥ ३॥

डखणे म: ५ ॥ जा मू पसी हठ मै पिरी महिजै नालि ॥ हभे डुख उलाहिअमु नानक नदरि निहालि ॥ १ ॥

डखणे महला ५॥ जब मैंने अपने दिल में देखा तो मेरा स्वामी साथ ही दिखाई दिया। हे नानक ! उसने अपनी करुणा-दृष्टि से मुझे निहाल कर दिया है और मेरे सब दुख-दर्द दूर कर दिए हैं॥ १॥

म: ५ ॥ नानक बैठा भखे वाउ लंमे सेवहि दरु खड़ा ॥ पिरीए तू जाणु महिजा साउ जोई साई मुहु खड़ा ॥ २ ॥

महला ५॥ नानक तो परमात्मा के द्वार पर खड़ा उसकी सेवा में लीन है, चिरकाल से उसके द्वार पर बैठा हवा खा रहा है अर्थात् जीवन व्यतीत कर रहा है। हे प्रियतम ! मैं क्योंकर खड़ा हूँ, तू मेरा उद्देश्य जानता ही है; मैं तो अपने मालिक के सुन्दर मुख को देखने के लिए ही खड़ा हूँ॥ २॥

म: ५ ॥ किआ गालाइओ भूछ पर वेलि न जोहे कंत तू ॥ नानक फुला संदी वाड़ि खिड़िआ हभु संसारु जिउ ॥ ३ ॥

महला ५॥ अरे मूर्ख ! तू क्या व्यर्थ बातें करता है। तू तभी एक योग्य पति है, यदि पराई नारियों की ओर मत देखे। हे नानक ! यह समूचा संसार यूं खिला हुआ है, जैसे फूलों की वाटिका खिली होती है॥ ३॥

पउड़ी ॥ सुघड़ु सुजाणु सरूपु तू सभ महि वरतंता ॥ तू आपे ठाकुरु सेवको आपे पूजंता ॥ दाना बीना आपि तू आपे सतवंता ॥ जती सती प्रभु निरमला मेरे हरि भगवंता ॥ सभु ब्रहम पसारु पसारिओ आपे खेलंता ॥ इहु आवा गवणु रचाइओ करि चोज देखंता ॥ तिसु बाहुड़ि गरभि न पावही जिसु देवहि गुर मंता ॥ जिउ आपि चलावहि तिउ चलदे किछु वसि न जंता ॥ ४ ॥

पउड़ी॥ हे ईश्वर ! तू बड़ा निपुण, चतुर एवं सुन्दर रूप वाला है, तू ही सबमें व्याप्त है।

मालिक एवं सेवक भी तू स्वयं ही है और स्वयं ही अपनी पूजा करता है। तू स्वयं ही सत्यनिष्ठ है और सब कुछ जानने एवं देखने वाला भी स्वयं ही है। हे मेरे हरि भगवंत ! तू ही ब्रह्मचारी, सदाचारी एवं निर्मल रहने वाला है। सब ब्रह्म का ही प्रसार है और उसमें स्वयं ही अपनी लीला खेलता है। जीवों के जन्म-मरण का यह चक्र बनाकर स्वयं अपनी लीला देखता रहता है। जिसे वह गुरु-मंत्र देता है, उसे पुनः गर्भ योनि में नहीं धकेलता। जैसे वह जीवों को चलाता है, वैसे ही वे चलते हैं, इन जीवों के अपने वश में कुछ भी नहीं॥ ४॥

डखणे म: ५ ॥ कुरीए कुरीए वैदिआ तलि गाड़ा महरेरु ॥ वेखे छिटड़ि थीवदो जामि खिसंदो पेरु ॥ १ ॥

डखणे महला ५॥ हे जग रूपी नदी किनारे की पगडण्डी पर चलते जा रहे प्राणी ! तेरे नीचे तो गहरा कीचड़ भरा हुआ है। ध्यान से देखना, अगर तेरा पैर फिसल गया तो कीचड़ के छींटों से कलंकित हो जाओगे॥ १॥

म: ५ ॥ सचु जाणै कचु वैदिओ तू आघू आघे सलवे ॥ नानक आतसड़ी मंझि नैणू बिआ ढलि पबणि जिउ जुंमिओ ॥ २ ॥

महला ५॥ हे जीव रूपी मुसाफिर ! तू काँच रूपी माया को सत्य समझता है और इसे पाने के लिए तू आगे ही आगे दौड़ता जाता है। हे नानक ! जैसे घी अग्नि में जल जाता है और दूसरा चौपत्ती (नीलोफर) जल के सूखने पर नाश हो जाती है, वैसे ही जीवन अवधि समाप्त होने पर नाश हो जाओगे॥ २॥

म: ५ ॥ भोरे भोरे रूहड़े सेवेदे आलकु ॥ मुदति पई चिराणीआ फिरि कडू आवै रुति ॥ ३ ॥

महला ५॥ हे भोलेभाले अनजान जीव ! परमात्मा की उपासना में क्योंकर आलस्य करता है। (प्रभु से बिछुड़े) बहुत लम्बा समय बीत गया है, प्रभु-मिलन का यह मौसम (अर्थात् सुनहरी अवसर) कब आएगा॥ ३॥

पउड़ी ॥ तुधु रूपु न रेखिआ जाति तू वरना बाहरा ॥ ए माणस जाणहि दूरि तू वरतहि जाहरा ॥ तू सभि घट भोगहि आपि तुधु लेपु न लाहरा ॥ तू पुरखु अनंदी अनंत सभ जोति समाहरा ॥ तू सभ देवा महि देव बिधाते नरहरा ॥ किआ आराधे जिहवा इक तू अबिनासी अपरपरा ॥ जिसु मेलहि सतिगुरु आपि तिस के सभि कुल तरा ॥ सेवक सभि करदे सेव दरि नानकु जनु तेरा ॥ ५ ॥

पउड़ी॥ हे ईश्वर ! न कोई तेरा रूप-आकार है, न तेरी कोई जाति है और तू ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य एवं शूद्र इत्यादि वर्णों से भी रहित है। ये मानव तुझे दूर ही समझते हैं मगर तू प्रत्यक्ष रूप में व्याप्त है। सब शरीरों को तू स्वयं ही भोगता है परन्तु तुझे कोई दोष नहीं लगता। तू परमपुरुष, परम आनंदी एवं अनंत है, सबमें तेरी ही ज्योति समाई हुई है। हे विधाता ! तू ही देवाधिदेव है। तू अविनाशी एवं अपरंपार है, एक जीभ तेरी क्या आराधना कर सकती है। जिसे तू सतगुरु से मिला देता है, उसकी समूची वंशावलि का उद्धार हो जाता है। सभी भक्तजन तेरी उपासना करते हैं। दास नानक भी तेरे द्वार पर तेरी शरण में आ पड़ा है॥ ५॥

डखणे म: ५ ॥ गहडड़ड़ा त्रिणि छाइआ गाफल जलिओहु भाहि ॥ जिना भाग मथाहड़ै तिन उसताद पनाहि ॥ १ ॥

डखणे महला ५॥ आदमी का घास से बना छप्पर रूपी शरीर लापरवाही के कारण पाप-विकारों की अग्नि से जल गया है, जिनके माथे पर उत्तम भाग्य है, उन्हें अपने उस्ताद

(गुरु-पीर) की पनाह मिल गई है॥ १॥

म: ५ ॥ नानक पीठा पका साजिआ धरिआ आणि मउजूदु ॥ बाझहु सतिगुर आपणे बैठा झाकु दरूद ॥ २ ॥

महला ५॥ हे नानक! किसी ने आटा गूंथा, रोटियां पका कर भोजन तैयार कर लिया और सारा भोजन लाकर श्रद्धालुओं के सामने रख दिया। किन्तु गुरु-पीर के बिना दुआ-प्रार्थना के बगैर उसका मनोरथ पूरा नहीं हुआ, अब वह दुखी हुआ बैठा इधर-उधर झांक रहा है, क्योंकि गुरु के बिना प्रार्थना किए बगैर कैसे भोजन मिलेगा॥ २॥

म: ५ ॥ नानक भुसरीआ पकाईआ पाईआ थालै माहि ॥ जिनी गुरू मनाइआ रजि रजि सेई खाहि ॥ ३ ॥

महला ५॥ हे नानक! किसी ने गुरु वाली मीठी रोटियाँ पकाकर उन्हें थाल में परोस दिया। जिन्होंने गुरु-पीर को प्रसन्न कर लिया, वे तृप्त होकर रोटियाँ खा रहे हैं॥ ३॥

पउड़ी ॥ तुधु जग महि खेलु रचाइआ विचि हउमै पाईआ ॥ एकु मंदरु पंच चोर हहि नित करहि बुरिआईआ ॥ दस नारी इकु पुरखु करि दसे सादि लुोभाईआ ॥ एनि माइआ मोहणी मोहीआ नित फिरहि भरमाईआ ॥ हाठा दोवै कीतीओ सिव सकति वरताईआ ॥ सिव अगै सकती हारिआ एवै हरि भाईआ ॥ इकि विचहु ही तुधु रखिआ जो सतसंगि मिलाईआ ॥ जल विचहु बिंबु उठालिओ जल माहि समाईआ ॥ ६ ॥

पउड़ी॥ हे ईश्वर! तूने जगत् में खेल रचाया हुआ है और सब जीवों में अहम्-भावना डाल दी है। यह मानव-शरीर एक मन्दिर है, जिस में काम, क्रोध, लोभ, मोह एवं अहंकार रूपी पाँच चोर नित्य ही बुरे कर्म करते हैं। तूने इन्द्रिय रूपी दस नारियों एवं मन रूपी एक पुरुष को बनाकर शरीर में बसा दिया है, यह दसों इन्द्रियाँ विकारों के स्वाद में लीन रहती हैं। माया मोहिनी ने इन्हें मोह लिया है, अतः यह नित्य ही भटकती रहती हैं। तूने अपनी जगत् रूपी खेल के दो हिस्से बनाए हैं, जीव और माया को बनाया है। जीव माया के आगे पराजित हुआ है, ईश्वर को ऐसे ही भाया है। जिन्हें तूने सत्संग में मिलाया है, इन में से कई जीवों को तूने बचा लिया है। जल में से उत्पन्न किया हुआ जल में ही विलीन हो जाता है॥ ६॥

डखणे म: ५ ॥ आगाहा कू त्राघि पिछा फेरि न मुहडड़ा ॥ नानक सिझि इवेहा वार बहुड़ि न होवी जनमड़ा ॥ १ ॥

डखणे महला ५॥ हे मानव! तू आगे प्रभु-चरणों में पहुँचने की महत्वाकांक्षा कर और संसार की तरफ पीछे मत देख। हे नानक! इस मानव-जन्म में ही अपना जीवन सफल कर लो, दोबारा तुम्हारा जन्म नहीं होगा॥ १॥

म: ५ ॥ सजणु मैडा चाईआ हभ कही दा मितु ॥ हभे जाणनि आपणा कही न ठाहे चितु ॥ २ ॥

महला ५॥ मेरा सज्जन प्रभु बड़ा रंगीला है, सबका प्यारा मित्र है। सब जीव उसे अपना ही समझते हैं और वह किसी का दिल नहीं तोड़ता॥ २॥

म: ५ ॥ गुझड़ा लधमु लालु मथै ही परगटु थिआ ॥ सोई सुहावा थानु जिथै पिरीए नानक जी तू वुठिआ ॥ ३ ॥

महला ५॥ मैंने रहस्यपूर्ण प्यारे प्रभु को ढूँढ लिया है, वह मेरे समक्ष ही प्रगट हो गया है। नानक का कथन है कि हे प्रियतम प्रभु! वही हृदय रूपी स्थान सुन्दर हो गया, जहाँ तू बस गया है॥ ३॥

पउड़ी ॥ जा तू मेरै वलि है ता किआ मुहछंदा ॥ तुधु सभु किछु मैनो सउपिआ जा तेरा बंदा ॥ लखमी तोटि न आवई खाइ खरचि रहंदा ॥ लख चउरासीह मेदनी सभ सेव करंदा ॥ एह वैरी मित्र सभि कीतिआ नह मंगहि मंदा ॥ लेखा कोइ न पुछई जा हरि बखसंदा ॥ अनंदु भइआ सुखु पाइआ मिलि गुर गोविंदा ॥ सभे काज सवारिऐ जा तुधु भावंदा ॥ ७ ॥

पउड़ी॥ हे ईश्वर! जब तू मेरे साथ है तो अब मुझे किसी पर निर्भर अथवा आश्रित होने की क्या आवश्यकता है। सच तो यही है कि तूने सब कुछ मुझे ही दे दिया है और मैं एक तेरा ही सेवक हूँ। मैं बेशक कितना ही खाता एवं खर्च करता रहता हूँ, मगर धन-दौलत की किसी प्रकार की कमी नहीं आई। चौरासी लाख योनियों के सृष्टि के सब जीव तेरी ही उपासना करते हैं। सब शत्रुओं को तूने मेरा मित्र बना दिया है और अब वे बिल्कुल भी मेरा बुरा नहीं चाहते। जब परमात्मा क्षमावान् है तो फिर कर्मों का हिसाब कोई भी नहीं पूछता। गोविंद गुरु को मिलकर हमने परम सुख पा लिया है और मन में आनंद ही आनंद हो गया है। अगर तू चाहता है तो सभी कार्य सिद्ध हो जाते हैं॥ ७॥

डखणे म: ५ ॥ डेखण कू मुसताकु मुखु किजेहा तउ धणी ॥ फिरदा कितै हालि जा डिठमु ता मनु ध्रापिआ ॥ १ ॥

डखणे महला ५॥ हे मालिक! मैं तेरे दर्शनों का आकांक्षी हूँ, तेरा मुख कैसा है, कैसे बताऊँ कि मैं किस हाल में भटकता फिरता था, लेकिन जब तुझे देखा तो मन तृप्त हो गया॥ १॥

म: ५ ॥ दुखीआ दरद घणे वेदन जाणे तू धणी ॥ जाणा लख भवे पिरी डिखंदो ता जीवसा ॥ २ ॥

महला ५॥ हे मालिक! तू मेरी वेदना को जानता ही है कि मुझ जैसे दुखियारे को कितने ही दर्द लगे हुए हैं। हे प्यारे! बेशक मैं लाखों ही उपचार जानता होऊँ तो भी तेरा दर्शन पाकर ही जीवित रह सकता हूँ॥ २॥

म: ५ ॥ ढहदी जाइ करारि वहणि वहंदे मै डिठिआ ॥ सेई रहे अमाण जिना सतिगुरु भेटिआ ॥ ३ ॥

महला ५॥ जीवन रूपी नदिया का किनारा ध्वस्त होता जा रहा है और मैंने इस नदिया के बहाव में बहते लोगों को देखा है, मगर जिन्हें सतिगुरु मिल गया है, वही इससे सुरक्षित रहे हैं॥ ३॥

पउड़ी ॥ जिसु जन तेरी भुख है तिसु दुखु न विआपै ॥ जिनि जनि गुरमुखि बुझिआ सु चहु कुंडी जापै ॥ जो नरु उस की सरणी परै तिसु कंबहि पापै ॥ जनम जनम की मलु उतरै गुर धूड़ी नापै ॥ जिनि हरि भाणा मंनिआ तिसु सोगु न संतापै ॥ हरि जीउ तू सभना का मितु है सभि जाणहि आपै ॥ ऐसी सोभा जनै की जेवडु हरि परतापै ॥ सभ अंतरि जन वरताइआ हरि जन ते जापै ॥ ८ ॥

पउड़ी॥ जिसे तुझे पाने की लालसा लगी हुई है, उसे कोई दुख-क्लेश नहीं लगता। जिस ने गुरु के सान्निध्य में ईश्वर को बूझ लिया है, वह उत्तर, दक्षिण, पूर्व, पश्चिम इन चारों दिशाओं में विख्यात हो गया है। जो आदमी उसकी शरण में आता है, उसे देखकर पाप भी थर-थर कांपने लगते हैं। जो गुरु की चरण-धूलि में स्नान करता है, उसकी जन्म-जन्मांतर की मैल निवृत्त हो

जाती है। जिसने ईश्वरेच्छा को सहर्ष स्वीकार किया है, उसे कोई शोक-संताप नहीं लगता। हे परमात्मा! तू सब जीवों का मित्र है और तू स्वयं ही सबको जानता है। विश्व में जितना परमात्मा का प्रताप है, वैसी ही उसके भक्तजनों की शोभा है। समूचे जगत् में उसने भक्तों का यश फैला दिया है और उनकी कीर्ति से ही परमात्मा जाना जाता है॥ ८॥

डखणे म: ५ ॥ जिना पिछै हउ गई से मै पिछै भी रविआसु ॥ जिना की मै आसड़ी तिना महिजी आस ॥ १ ॥

डखणे महला ५॥ जिनके पीछे मैं गई थी, अब वे मेरे ही पीछे फिरते हैं। जिनकी मैंने आशा की थी, उन्होंने मेरी आशा की हुई है॥ १॥

म: ५ ॥ गिली गिली रोडड़ी भउदी भवि भवि आइ ॥ जो बैठे से फाथिआ उबरे भाग मथाइ ॥ २ ॥

महला ५॥ जैसे उड़ती हुई मक्खी घूम-घूम कर गीली-गीली गुड़ की डली के पास आती है और उससे चिपक कर ही मर जाती है, वैसे ही जो मनुष्य माया के निकट होकर बैठे हैं, वे माया-जाल में फँस गए हैं, परन्तु भाग्यशाली इससे उबर गए हैं॥ २॥

म: ५ ॥ डिठा हभ मझाहि खाली कोइ न जाणीऐ ॥ तै सखी भाग मथाहि जिनी मेरा सजणु राविआ ॥ ३ ॥

महला ५॥ हमने तो सब में ईश्वर को ही देखा है और कोई भी उससे खाली नहीं जाना जाता है। वह सखी भाग्यशाली है, जिसने मेरे सज्जन प्रभु के संग रमण किया है॥ ३॥

पउड़ी ॥ हउ ढाढी दरि गुण गावदा जे हरि प्रभ भावै ॥ प्रभु मेरा थिर थावरी होर आवै जावै ॥ सो मंगा दानु गोसाईआ जितु भुख लहि जावै ॥ प्रभ जीउ देवहु दरसनु आपणा जितु ढाढी त्रिपतावै ॥ अरदासि सुणी दातारि प्रभि ढाढी कउ महलि बुलावै ॥ प्रभ देखदिआ दुख भुख गई ढाढी कउ मंगणु चिति न आवै ॥ सभे इछा पूरीआ लगि प्रभ कै पावै ॥ हउ निरगुणु ढाढी बखसिओनु प्रभि पुरखि वेदावै ॥ ६ ॥

पउड़ी॥ अगर प्रभु चाहता है तो यह ढाढी उसके ही गुण गाता है। मेरा प्रभु सदा रहने वाला शाश्वत है, परन्तु अन्य सभी जन्म-मरण में पड़े हुए हैं। हे मालिक! मैं वही दान माँगता हूँ, जिससे मेरी सारी लालसा दूर हो जाए। हे प्रभु जी! अपना दर्शन दो, जिससे यह ढाढी तृप्त हो जाए। जब दातार प्रभु ने प्रार्थना सुनी तो उसने ढाढी को अपने महल में बुला लिया। प्रभु के दर्शन करते ही दुख एवं भूख मिट गई, अब ढाढी को कुछ माँगना याद ही नहीं आता। प्रभु-चरणों में लगकर सभी कामनाएँ पूरी हो गई हैं। उस परमपुरुष प्रभु ने मुझ गुणविहीन को क्षमा कर दिया है॥ ६॥

डखणे म: ५ ॥ जा छुटे ता खाकु तू सुंञी कंतु न जाणही ॥ दुरजन सेती नेहु तू कै गुणि हरि रंगु माणही ॥ १ ॥

डखणे महला ५॥ हे मानव देह! प्राण पखेरू होते ही जब आत्मा से नाता टूट जाता है तो तू मिट्टी हो जाती है। फिर तुम आत्मा से सूनी होकर पति-प्रभु को जान नहीं सकती। कामादिक दुष्ट विकारों से ही तुम्हारा प्रेम बना हुआ है, फिर भला किस गुण के कारण प्रभु-प्रेम का आनंद ले सकती हो॥ १॥

म: ५ ॥ नानक जिसु बिनु घड़ी न जीवणा विसरे सरै न बिंद ॥ तिसु सिउ किउ मन रूसीऐ जिसहि हमारी चिंद ॥ २ ॥

महला ५॥ हे नानक! जिसके बिना घड़ी भर भी जीवित रहा नहीं जाता, जिसे भूलने से थोड़ा-सा भी निर्वाह नहीं होता, उससे मन में क्यों रूठा जाए, जिसे हर वक्त हमारी चिंता लगी रहती है॥ २॥

म: ५ ॥ रते रंगि पारब्रहम कै मनु तनु अति गुलालु ॥ नानक विणु नावै आलूदिआ जिती होरु खिआलु ॥ ३ ॥

महला ५॥ जो परब्रह्म के रंग में लीन हो जाते हैं, उनका मन-तन गुलाल जैसा अति लाल हो जाता है। हे नानक! प्रभु-नाम के बिना अन्य जितने भी ख्याल हैं, वे मन को मैला करने वाले हैं॥ ३॥

पवड़ी ॥ हरि जीउ जा तू मेरा मित्रु है ता किआ मै काड़ा ॥ जिनी ठगी जगु ठगिआ से तुधु मारि निवाड़ा ॥ गुरि भउजलु पारि लंघाइआ जिता पावाड़ा ॥ गुरमती सभि रस भोगदा वडा आखाड़ा ॥ सभि इंद्रीआ वसि करि दितीओ सतवंता साड़ा ॥ जितु लाईअनि तितै लगदीआ नह खिंजोताड़ा ॥ जो इछी सो फलु पाइदा गुरि अंदरि वाड़ा ॥ गुरु नानकु तुठा भाइरहु हरि वसदा नेड़ा ॥ १० ॥

पउड़ी॥ हे परमात्मा! जब तू मेरा मित्र है तो फिर मुझे किसी प्रकार की क्या चिन्ता है। जिन काम, क्रोध रूपी ठगों ने संसार को ठग लिया है, तूने उन्हें मार कर भगा दिया है। गुरु ने मुझे भयानक संसार-सागर से पार लंघा दिया है और मैंने सारा दुनियावी झगड़ा ही जीत लिया है। गुरु के उपदेशानुसार जगत् रूपी बड़े अखाड़े में सभी रसों का भोग कर रहा हूँ। जब ईश्वर हमारा बन गया तो उसने सब इन्द्रियों को वश में कर दिया। अब इन्हें जिधर लगाता हूँ, उधर ही लगती हैं और मेरे साथ किसी प्रकार की खींचतान नहीं करती। गुरु ने मेरे मन को अन्तर्मुखी बना दिया है और जो इच्छा करता हूँ वही फल प्राप्त करता हूँ। हे भाइयो! गुरु नानक मुझ पर प्रसन्न हो गया है और अब परमात्मा मेरे निकट ही रहता है॥ १०॥

डखणे म: ५ ॥ जा मूं आवहि चिति तू ता हभे सुख लहाउ ॥ नानक मन ही मंझि रंगावला पिरी तहिजा नाउ ॥ १ ॥

डखणे महला ५॥ हे ईश्वर! जब तू मुझे याद आता है तो सभी सुख पा लेता हूँ। नानक का कथन है कि हे मेरे प्रियतम! मुझे तेरा नाम मन में बड़ा ही प्यारा लगता है॥ १॥

म: ५ ॥ कपड़ भोग विकार ए हभे ही छार ॥ खाकु लोड़ेदा तंनि खे जो रते दीदार ॥ २ ॥

महला ५॥ सुन्दर कपड़े, भोग-विकार ये सभी धूल के समान हैं। जो परमात्मा के दीदार में लीन रहते हैं, मैं उनकी ही चरण-धूलि पाना चाहता हूँ॥ २॥

म: ५ ॥ किआ तकहि बिआ पास करि हीअड़े हिकु अधारु ॥ थीउ संतन की रेणु जितु लभी सुख दातारु ॥ ३ ॥

महला ५॥ हे मानव! क्यों लोगों का सहारा देख रहा है? अपने हृदय में एक ईश्वर का ही सहारा बना ले। संत-महापुरुषों की चरण-धूलि बन जाओ, जिससे तुझे सुख देने वाला प्रभु मिल जाएगा॥ ३॥

पउड़ी ॥ विणु करमा हरि जीउ न पाईऐ बिनु सतिगुर मनूआ न लगै ॥ धरमु धीरा कलि अंदरे इहु पापी मूलि न तगै ॥ अहि करु करे सु अहि करु पाए इक घड़ी मुहतु न लगै ॥ चारे जुग मै सोधिआ विणु संगति अहंकारु न भगै ॥ हउमै मूलि न छुटई विणु साधू सतसंगै ॥ तिचरु थाह न पावई जिचरु

साहिब सिउ मन भंगै ॥ जिनि जनि गुरमुखि सेविआ तिसु घरि दीबाणु अभगै ॥ हरि किरपा ते सुखु पाइआ गुर सतिगुर चरणी लगै ॥ ११ ॥

पउड़ी॥ भाग्य के बिना परमात्मा को पाया नहीं जा सकता और सतिगुरु के बिना मन प्रभु में नहीं लगता। इस कलियुग में केवल धर्म ही दृढ़ सहारा है किन्तु यह पापी मन बिल्कुल भी स्थित नहीं होता। मनुष्य इस हाथ पाप करता है और उस हाथ उसका फल पाता है, पाप-कर्म का फल मिलते एक घड़ी मुहूर्त भी नहीं लगता। मैंने चारों युगों का भलीभांति विश्लेषण करके देख लिया है कि सुसंगति किए बिना अहंकार दूर नहीं होता। साधुओं की संगत किए बिना तो अहम्-भावना बिल्कुल ही नहीं छूटती। जब तक मन मालिक से टूटा रहता है, तब तक सत्य का ज्ञान नहीं मिलता। जिसने गुरुमुख बनकर परमात्मा की उपासना की है, उसके हृदय-घर में अटूट आश्रय बन गया है। परमात्मा की कृपा से उसने परम-सुख पा लिया है और वह गुरु-चरणों में ही लीन रहता है॥ ११॥

डखणे म: ५ ॥ लोड़ीदो हभ जाइ सो मीरा मीरंन सिरि ॥ हठ मंझाहू सो धणी चउदो मुखि अलाइ ॥ १ ॥

डखणे महला ५॥ जिसे मैं हर स्थान पर ढूँढता रहता हूँ, वह बादशाहों का भी बादशाह है। वह मालिक तो मेरे हृदय में ही रहता है और मुँह से बोलकर उसका ही नाम जपता रहता हूँ॥ १॥

म: ५ ॥ माणिकू मोहि माउ डिंना धणी अपाहि ॥ हिआउ महिजा ठंढड़ा मुखहु सचु अलाइ ॥ २ ॥

महला ५॥ हे मेरी माँ! मालिक-प्रभु ने स्वयं ही मुझे नाम रूपी माणिक्य दिया है, अतः मुख से उस परम-सत्य का स्तुतिगान करने से मेरा हृदय शीतल हो गया है॥ २॥

म: ५ ॥ मू थीआऊ सेज नैणा पिरी विछावणा ॥ जे डेखै हिक वार ता सुख कीमा हू बाहरे ॥ ३ ॥

महला ५॥ हे प्रियतम! मेरा हृदय तेरे लिए सेज बन गया है और मेरे नेत्र बिछौना बन गए हैं। यदि तू एक बार भी मेरी तरफ देख ले तो मुझे अमूल्य सुख मिल जाए॥ ३॥

पउड़ी ॥ मनु लोचै हरि मिलण कउ किउ दरसनु पाईआ ॥ मै लख विड़ते साहिबा जे बिंद बोलाईआ ॥ मै चारे कुंडा भालीआ तुधु जेवडु न साईआ ॥ मै दसिहु मारगु संतहो किउ प्रभू मिलाईआ ॥ मनु अरपिहु हउमै तजहु इतु पंथि जुलाईआ ॥ नित सेविहु साहिबु आपणा सतसंगि मिलाईआ ॥ सभे आसा पूरीआ गुर महलि बुलाईआ ॥ तुधु जेवडु होरु न सुझई मेरे मित्र गोसाईआ ॥ १२ ॥

पउड़ी॥ मेरा मन प्रभु-मिलन का ख्वाहिशमंद है, फिर क्योंकर उसके दर्शन पा सकता हूँ। हे मेरे मालिक! यदि तू मुझ से एक क्षण भर के लिए बोल पड़े, तो मैं समझूँगा कि मैंने लाखों रुपए कमा लिए। हे स्वामी! मैंने चारों दिशाएँ खोज ली हैं, किन्तु तुझ जैसा कोई नहीं। हे संतजनो! मुझे मार्ग बताओ कि प्रभु को कैसे मिला जा सकता है? (संतजनों का उत्तर है कि) अपना मन अर्पण कर दो, अभिमान को त्याग दो, इस मार्ग पर चलते रहो। नित्य अपने मालिक की बंदगी करो, सत्संग में प्रभु से मिला जाता है। गुरु-परमेश्वर ने मुझे अपने चरणों में बुला लिया है, अतः मेरी सभी अभिलाषाएँ पूरी हो गई हैं। हे मेरे मित्र गुसाँई! तुझ जैसा मुझे अन्य कोई नहीं सूझता॥ १२॥

डखणे म: ५ ॥ मू थीआऊ तखतु पिरी महिंजे पातिसाह ॥ पाव मिलावे कोलि कवल जिवै बिगसावदो ॥ १ ॥

डखणे महला ५॥ अगर मेरा हृदय सिंहासन बन जाए और मेरा प्रियतम बादशाह बनकर उस पर बैठ जाए तो जब वे अपने चरण मेरे हृदय-कमल को स्पर्श करेगा तो वह कमल की तरह विकसित हो जाएगा॥ १॥

म: ५ ॥ पिरीआ संदड़ी भुख मू लावण थी विथरा ॥ जाणु मिठाई इख बेई पीड़े ना हुटै ॥ २ ॥

महला ५॥ अपने प्रियतम की भूख मिटाने के लिए अगर मैं सलोना भोजन बनकर बिखर जाऊँ, यह अच्छी तरह जानो कि मैं गन्ने की मिठास हूँ, अगर मुझे बार-बार दलोगे, तो भी मिठास देने से न हटूँगी॥ २॥

म: ५ ॥ ठगा नीहु मत्रोड़ि जाणु गंध्रबा नगरी ॥ सुख घटाऊ डूइ इसु पंधाणू घर घणे ॥ ३ ॥

महला ५॥ कामादिक ठगों से अपना नाता तोड़ दो और इसे गन्धर्व-नगरी की तरह धोखा ही समझो। दो घड़ियों के इस सुख के कारण जीव रूपी यात्री अनेक घर अर्थात् योनियों में भटकता रहता है॥ ३॥

पउड़ी ॥ अकल कला नह पाईऐ प्रभु अलख अलेखं ॥ खटु दरसनु भ्रमते फिरहि नह मिलीऐ भेखं ॥ वरत करहि चंद्राइणा से कितै न लेखं ॥ बेद पड़हि संपूरना ततु सार न पेखं ॥ तिलकु कढहि इसनानु करि अंतरि कालेखं ॥ भेखी प्रभू न लभई विणु सची सिखं ॥ भूला मारगि सो पवै जिसु धुरि मसतकि लेखं ॥ तिनि जनमु सवारिआ आपणा जिनि गुरु अखी देखं ॥ १३ ॥

पउड़ी॥ प्रभु को किसी चतुराई से भी पाया नहीं जा सकता, वह अदृष्ट एवं कर्मों के लेखे से रहित है। छः दर्शनों वाले योगी, जंगम, बौद्धि, संन्यासी, वैरागी एवं जैनी भटकते रहते हैं किन्तु वेष धारण से भगवान् नहीं मिलता। कुछ लोग चन्द्रायण का व्रत रखते हैं किन्तु वह भी किसी काम नहीं आता। कुछ विद्वान सम्पूर्ण वेदों का पाठ करते हैं लेकिन वे भी सार तत्व को नहीं देखते। जो स्नान करके अपने माथे पर तिलक लगाते हैं, उनके मन में पाप रूपी कालिमा भरी रहती है। सच्ची शिक्षा के बिना पाखण्ड अथवा आडम्बर से प्रभु नहीं मिलता। जिसके माथे पर भाग्य हो, वह भूला हुआ आदमी सन्मार्ग पा लेता है। जिन्होंने गुरु के साक्षात् दर्शन किए हैं, उन्होंने अपना जीवन संवार लिया है॥ १३॥

डखणे म: ५ ॥ सो निवाहू गडि जो चलाऊ न थीऐ ॥ कार कूड़ावी छडि संमलु सचु धणी ॥ १ ॥

डखणे महला ५॥ मित्रता निभाने वाले प्रभु को अपने हृदय में बसा लो, जो तेरा साथ छोड़कर जाने वाला नहीं। झूठे कार्यों को छोड़कर सच्चे मालिक की बंदगी करो॥ १॥

म: ५ ॥ हभ समाणी जोति जिउ जल घटाऊ चंद्रमा ॥ परगटु थीआ आपि नानक मसतकि लिखिआ ॥ २ ॥

महला ५॥ जैसे जल से भरे हुए घड़ों में चन्द्रमा की परछाई समाई होती है, वैसे ही सब में परमात्मा की ज्योति समाई हुई है। हे नानक! प्रभु स्वयं ही उसके हृदय में प्रगट हो गया है, जिसके माथे पर भाग्य लिखा हुआ है॥ २॥

म: ५ ॥ मुख सुहावे नामु चउ आठ पहर गुण गाउ ॥ नानक दरगह मंनीअहि मिली निथावे थाउ ॥ ३ ॥

महला ५॥ नाम जपने से ही मुख सुन्दर होता है, अतः आठ प्रहर ईश्वर के ही गुण गाओ। हे नानक! परमात्मा के दरबार में ही शोभा हासिल होती है और बेसहारा को भी सहारा मिल जाता है॥ ३॥

पउड़ी ॥ बाहर भेखि न पाईऐ प्रभु अंतरजामी ॥ इकसु हरि जीउ बाहरी सभ फिरै निकामी ॥ मनु रता कुटंब सिउ नित गरबि फिरामी ॥ फिरहि गुमानी जग महि किआ गरबहि दामी ॥ चलदिआ नालि न चलई खिन जाइ बिलामी ॥ बिचरदे फिरहि संसार महि हरि जी हुकामी ॥ करमु खुला गुरु पाइआ हरि मिलिआ सुआमी ॥ जो जनु हरि का सेवको हरि तिस की कामी ॥ १४ ॥

पउड़ी॥ प्रभु अन्तर्यामी है, अतः बाहरी ढोंग अथवा पाखण्ड से उसे पाया नहीं जा सकता। एक ईश्वर के बिना सब लोग बेकार फिरते रहते हैं। जिन लोगों का मन अपने परिवार के प्रेम में लीन रहता है, वे नित्य ही घमण्डी बने फिरते रहते हैं। जो व्यक्ति संसार में घमण्डी बने फिरते हैं, वे धन का क्यों घमण्ड करते हैं ? क्योंकि संसार में से चलते वक्त यह (धन) किसी के साथ नहीं जाता और यह बिना किसी विलम्ब क्षण में ही किसी अन्य के पास चला जाता है। सच तो यही है कि परमात्मा के हुक्म से ऐसे व्यक्ति संसार में भटकते रहते हैं। जिसका भाग्योदय हो गया, उसने गुरु को पा लिया और गुरु के सान्निध्य में उसे स्वामी प्रभु मिल गया है। जो व्यक्ति परमात्मा का उपासक है, वह उसके सब कार्य संवार देता है॥ १४॥

डखणे म: ५ ॥ मुखहु अलाए हभ मरणु पछाणंदो कोइ ॥ नानक तिना खाकु जिना यकीना हिक सिउ ॥ १ ॥

डखणे महला ५॥ मुँह से सभी (मृत्यु के संदर्भ में) बातें करते हैं, लेकिन कोई विरला ही मौत के रहस्य को पहचानता है। हे नानक ! जिनका परमात्मा में यकीन है, उनकी चरण-धूलि ही चाहता हूँ॥ १॥

म: ५ ॥ जाणु वसंदो मंझि पछाणू को हेकड़ो ॥ तै तनि पड़दा नाहि नानक जै गुरु भेटिआ ॥ २ ॥

महला ५॥ यह बात जान लो कि परमात्मा सब में अवस्थित है, किन्तु कोई विरला ही उसे पहचानने वाला है। हे नानक ! जिसका गुरु से साक्षात्कार हो गया है, उसके तन में भ्रम का पर्दा नहीं रहता॥ २॥

म: ५ ॥ मतड़ी कांढकु आह पाव धोवंदो पीवसा ॥ मू तनि प्रेमु अथाह पसण कू सचा धणी ॥ ३ ॥

महला ५॥ मैं उस महापुरुष के चरण धोकर पी जाऊँ, जो खोटी बुद्धि को मन से बाहर निकालने वाला है। मेरे मन-तन में प्रभु का दर्शन करने के लिए अथाह प्रेम है, जो जगत् का सच्चा मालिक है॥ ३॥

पउड़ी ॥ निरभउ नामु विसारिआ नालि माइआ रचा ॥ आवै जाइ भवाईऐ बहु जोनी नचा ॥ बचनु करे तै खिसकि जाइ बोले सभु कचा ॥ अंदरहु थोथा कूड़िआरु कूड़ी सभ खचा ॥ वैरु करे निरवैर नालि झूठे लालचा ॥ मारिआ सचै पातिसाहि वेखि धुरि करमचा ॥ जमदूती है हेरिआ दुख ही महि पचा ॥ होआ तपावसु धरम का नानक दरि सचा ॥ १५ ॥

पउड़ी॥ जिसने निर्भय परमात्मा का नाम भुला दिया है और माया के संग लीन रहता है, वह आवागमन में भटकता हुआ अनेक योनियों का शिकार होता है। वह जो भी वचन करता है, उससे मुकर जाता है, इस प्रकार वह सब झूठ ही बोलता है। ऐसा झूठा इन्सान मन से खोखला ही होता है और सब झूठी क्रिया में ही लीन रहता है। वह झूठे लालच में फँसकर निर्वैर लोगों से भी वैर करता है। उसके खोटे कर्मों को देखकर ही सच्चे पातशाह प्रभु ने उसे मारा है। यमदूत

उसे तंग करते हैं और वह दुखों में ही लीन रहता है। हे नानक ! परमात्मा के सच्चे दरबार में धर्म का ही न्याय हुआ है॥ १५॥

डखणे म: ५ ॥ परभाते प्रभ नामि जपि गुर के चरण धिआइ ॥ जनम मरण मलु उतरै सचे के गुण गाइ ॥ १ ॥

डखणे महला ५॥ सुबह उठकर प्रभु का नाम जपो, गुरु के चरणों का ध्यान करो। भगवान् का गुणगान करने से जन्म-मरण की सारी मैल दूर हो जाती है॥ १॥

म: ५ ॥ देह अंधारी अंधु सुंञी नाम विहूणीआ ॥ नानक सफल जनंमु जै घटि वुठा सचु धणी ॥ २ ॥

महला ५॥ परमात्मा के नाम से विहीन मानव-देह अन्धकारमय, गुणहीन एवं ज्ञानहीन ही है। हे नानक ! जिसके हृदय में सच्चे मालिक की स्मृति बसी रहती है, उसका ही जन्म सफल है॥ २॥

म: ५ ॥ लोइण लोई डिठ पिआस न बुझै मू घणी ॥ नानक से अखड़ीआ बिअंनि जिनी डिसंदो मा पिरी ॥ ३ ॥

महला ५॥ इन आँखों से तो प्रभु-ज्योति को ही देखा है, मगर अब भी उसके दर्शनों की अत्याधिक प्यास लगी हुई है, जो बुझती ही नहीं। हे नानक ! वे आँखें अन्य ही हैं, जिससे प्रियतम प्रभु दिखाई देता है॥ ३॥

पउड़ी ॥ जिनि जनि गुरमुखि सेविआ तिनि सभि सुख पाई ॥ ओहु आपि तरिआ कुटंब सिउ सभि जगतु तराई ॥ ओनि हरि नामा धनु संचिआ सभ तिखा बुझाई ॥ ओनि छडे लालच दुनी के अंतरि लिव लाई ॥ ओसु सदा सदा घरि अनंदु है हरि सखा सहाई ॥ ओनि वैरी मित्र सम कीतिआ सभ नालि सुभाई ॥ होआ ओही अलु जग महि गुर गिआनु जपाई ॥ पूरबि लिखिआ पाइआ हरि सिउ बणि आई ॥ १६ ॥

पउड़ी॥ जिस व्यक्ति ने गुरुमुख बनकर परमात्मा की उपासना की है, उसने सब सुख पा लिए हैं। वह अपने परिवार सहित स्वयं तो पार हुआ ही है, उसने समूचे जगत् का भी उद्धार कर दिया है। उसने हरि-नाम रूपी धन ही संचय किया है और सारी तृष्णा बुझा ली है। दुनिया के सब लालच छोड़कर उसने अन्तर्मन में ईश्वर से ही लगन लगाई है। उसके हृदय-घर में सदैव आनंद बना रहता है और ईश्वर उसका सहायक व शुभचिंतक बन गया है। उसने शत्रु और मित्रों को एक समान ही समझा है और सबके संग प्रेमपूर्वक रहता है। वह गुरु के ज्ञान द्वारा नाम जपकर समूचे जगत् में विख्यात हो गया है। उसकी ईश्वर से प्रीति लगी हुई है और उसने पूर्व जन्म में किए शुभ कर्मों का फल पा लिया है॥ १६॥

डखणे म: ५ ॥ सचु सुहावा काढीऐ कूड़ै कूड़ी सोइ ॥ नानक विरले जाणीअहि जिन सचु पलै होइ ॥ १ ॥

डखणे महला ५॥ एक सत्य ही सुन्दर कहा जाता है, परन्तु झूठ की शोभा झूठी ही होती है। हे नानक ! जिनके पास सत्य होता है, ऐसे व्यक्ति विरले ही ज्ञात होते हैं॥ १॥

म: ५ ॥ सजण मुखु अनूपु अठे पहर निहालसा ॥ सुतड़ी सो सहु डिठु तै सुपने हउ खंनीऐ ॥ २ ॥

महला ५॥ मेरे सज्जन का मुख अनुपम है, आठ प्रहर उसे ही निहारती रहूँगी। मैंने सोते समय उस मालिक को देखा है, और सपने में भी उस पर कुर्बान जाती हूँ॥ २॥

म: ५ ॥ सजण सचु परखि मुखि अलावणु थोथरा ॥ मंन मझाहू लखि तुधहु दूरि न सु पिरी ॥ ३ ॥

महला ५॥ सज्जन प्रभु को अपने हृदय में ही पहचानो, मुँह से बोलना तो सब व्यर्थ ही है। वह प्रियतम तुझसे कहीं दूर नहीं अपितु उसे अपने मन में देख लो॥ ३॥

पउड़ी ॥ धरति आकासु पातालु है चंदु सूरु बिनासी ॥ बादिसाह साह उमराव खान ढाहि डेरे जासी ॥ रंग तुंग गरीब मसत सभु लोकु सिधासी ॥ काजी सेख मसाइका सभे उठि जासी ॥ पीर पैकाबर अउलीए को थिरु न रहासी ॥ रोजा बाग निवाज कतेब विणु बुझे सभ जासी ॥ लख चउरासीह मेदनी सभ आवै जासी ॥ निहचलु सचु खुदाइ एकु खुदाइ बंदा अबिनासी ॥ १७ ॥

पउड़ी॥ धरती, आकाश, पाताल, चाँद-सूर्य सब नाशवान् हैं। बड़े-बड़े बादशाह, साहूकार, नवाब एवं सरदार मौत को प्राप्त हो जाएँगे। कंगाल, अमीर, गरीब एवं मस्त सभी लोग संसार में से चले जाएँगे। काज़ी, शेख, सम्पन्न लोग सभी दुनिया से चले जाएँगे। पीर-पैगम्बर, औलिये सब की मृत्यु निश्चित है। रोज़ा रखने वाले, बाँग देने वाले, नमाज पढ़ने वाले, कुरान शरीफ पढ़ने वाले सत्य को बूझे बिना सब नाश हो जाएँगे। संसार की चौरासी लाख योनियाँ सब आवागमन में पड़ी हुई है। सत्य तो यही है कि एक सच्चा खुदा ही सदा अटल है और एक खुदा की बंदगी करने वाला बंदा ही नाश रहित है॥ १७॥

डखणे म: ५ ॥ डिठी हभ ढंढोलि हिकसु बाझु न कोइ ॥ आउ सजण तू मुखि लगु मेरा तनु मनु ठंढा होइ ॥ १ ॥

डखणे महला ५॥ मैंने सारी दुनिया ढूँढ कर देख ली है, मगर ईश्वर के सिवा अन्य कोई हितैषी नहीं है। हे सज्जन! तुम मेरे पास आओ, अपने दर्शन दो, जिससे मेरा तन-मन शीतल हो जाए॥ १॥

म: ५ ॥ आसकु आसा बाहरा मू मनि वडी आस ॥ आस निरासा हिकु तू हउ बलि बलि बलि गईआस ॥ २ ॥

महला ५॥ सच्चा आशिक वही है, जिसके मन में कोई आशा नहीं होती, लेकिन मेरे मन में तो बड़ी-बड़ी आशाएँ बनी हुई हैं। हे ईश्वर! एक तू ही आशा से रहित है और मैं तुझ पर बारंबार बलिहारी जाता हूँ॥ २॥

म: ५ ॥ विछोड़ा सुणे डुखु विणु डिठे मरिओदि ॥ बाझु पिआरे आपणे बिरही ना धीरोदि ॥ ३ ॥

महला ५॥ जब वियोग की बात सुनकर ही बहुत दुख होता है तो दर्शन किए बिना वह मृतक समान हो जाता है। अपने प्यारे के बिना वियोगी को धैर्य नहीं होता॥ ३॥

पउड़ी ॥ तट तीरथ देव देवालिआ केदारु मथुरा कासी ॥ कोटि तेतीसा देवते सणु इंद्रै जासी ॥ सिम्रिति सासत्र बेद चारि खटु दरस समासी ॥ पोथी पंडित गीत कवित कवते भी जासी ॥ जती सती संनिआसीआ सभि कालै वासी ॥ मुनि जोगी दिगंबरा जमै सणु जासी ॥ जो दीसै सो विणसणा सभ बिनसि बिनासी ॥ थिरु पारब्रहमु परमेसरो सेवकु थिरु होसी ॥ १८ ॥

पउड़ी॥ पावन तीर्थ स्थल, देवताओं के देवालय, केदारनाथ, मथुरा, काशी, देवराज इन्द्र समेत तेंतीस करोड़ देवते सब नाश हो जाएँगे। स्मृतियाँ, शास्त्र, ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद,

अथर्ववेद, छः दर्शन सभी समाहित हो जाएँगे। बड़े-बड़े ग्रंथ, पण्डित, गीत, कविता एवं कवि भी यहाँ से चले जाएँगे। बड़े-बड़े ब्रह्मचारी, सदाचारी, संन्यासी सभी काल के वश में पड़ जाएँगे। मुनि, योगी, दिगम्बर भी एक न एक दिन मृत्यु को प्राप्त हो जाएँगे। जो भी दृष्टिगत है, वह नाश हो जाना है, सब कुछ पूर्णतया नष्ट हो जाएगा। लेकिन परब्रह्म परमेश्वर सदा अटल अमर है और उसका सेवक भी स्थिर रहेगा॥ १८॥

सलोक डखणे मः ५ ॥ सै नंगे नह नंग भुखे लख न भुखिआ ॥ डुखे कोड़ि न डुख नानक पिरी पिखंदो सुभ दिसटि ॥ १ ॥

श्लोक डखणे महला ५॥ सौ नंगे आदमी भी नग्नपन की परवाह नहीं करते, लाखों भूखे भी भूख से व्याकुल नहीं होते। हे नानक ! अगर इन पर भगवान् की शुभ-दृष्टि हो तो करोड़ों दुखयारे भी दुख से परेशान नहीं होते॥ १॥

मः ५ ॥ सुख समूहा भोग भूमि सबाई को धणी ॥ नानक हभो रोगु मिरतक नाम विहूणिआ ॥ २ ॥

महला ५॥ अगर कोई मनुष्य समूची धरती का मालिक बन जाए, समस्त सुख भोगता रहे, मगर हे नानक ! परमात्मा के नाम बिना यह सब रोग ही हैं और वह एक मृतक समान हैं॥ २॥

मः ५ ॥ हिकस कूं तू आहि पछाणू भी हिकु करि ॥ नानक आसड़ी निबाहि मानुख परथाई लजीवदो ॥ ३ ॥

महला २॥ हे जीव ! ईश्वर को ही तू चाह, उसे ही अपना शुभचिंतक बना। हे नानक ! वह हर आशा पूरी करने वाला है, किसी मनुष्य से माँगने पर तो लज्जित होना पड़ता है॥ ३॥

पउड़ी ॥ निहचलु एकु नराइणो हरि अगम अगाधा ॥ निहचलु नामु निधानु है जिसु सिमरत हरि लाधा ॥ निहचलु कीरतनु गुण गोबिंद गुरमुखि गावाधा ॥ सचु धरमु तपु निहचलो दिनु रैनि अराधा ॥ दइआ धरमु तपु निहचलो जिसु करमि लिखाधा ॥ निहचलु मसतकि लेखु लिखिआ सो टलै न टलाधा ॥ निहचल संगति साध जन बचन निहचलु गुर साधा ॥ जिन कउ पूरबि लिखिआ तिन सदा सदा आराधा ॥ १६ ॥

पउड़ी॥ केवल ईश्वर ही निश्चल है, अगम्य एवं असीम है। नाम-रूपी सुखों की निधि निश्चल है, जिसे स्मरण करने से भगवान् मिल जाता है। प्रभु का कीर्तिगान सदा स्थिर रहने वाला है, गुरुमुख प्रभु के ही गुण गाता है। सत्य, धर्म एवं तप सदैव रहने वाला है, दिन-रात परमात्मा की आराधना करो। निश्चल दया, धर्म एवं तप उसे ही मिलता है, जिसके भाग्य में लिखा होता है। माथे पर लिखा हुआ भाग्य सदा अटल है, वह टालने पर भी टाला नहीं जा सकता। साधु-महापुरुषों की संगति एवं गुरु-साधु का वचन सदा अटल है। जिनके भाग्य में प्रारम्भ से लिखा हुआ है, उन्होंने सदा भगवान् की आराधना की है॥ १६॥

सलोक डखणे मः ५ ॥ जो डुबंदो आपि सो तराए किन्ह खे ॥ तारेदड़ो भी तारि नानक पिर सिउ रतिआ ॥ १ ॥

श्लोक डखणे महला ५॥ जो स्वयं डूब रहा है, वह किसी अन्य को कैसे पार करवा सकता है। हे नानक ! ईश्वर की स्मृति में लीन रहने वाला खुद तो जगत् से तैरता ही है, दूसरों का भी उद्धार करवा देता है॥ १॥

म: ५ ॥ जिथै कोइ कथंनि नाउ सुणंदो मा पिरी ॥ मूं जुलाऊं तथि नानक पिरी पसंदो हरिओ थीओसि ॥ २ ॥

महला ५॥ जहाँ कोई मेरे प्रियतम का नाम कथन करता या सुनता है, मैं वहाँ चला जाता हूँ, हे नानक ! मुझे प्रियतम प्रभु इतना पसंद है कि उसके दर्शन से ही फूल की तरह खिल जाता हूँ॥ २॥

म: ५ ॥ मेरी मेरी किआ करहि पुत्र कलत्र सनेह ॥ नानक नाम विहूणीआ निमुणीआदी देह ॥ ३॥

महला ५॥ हे जीव ! पुत्र एवं पत्नी के स्नेह में फँसकर तू क्यों कहता है कि यह मेरी (पत्नी) है, यह मेरा (पुत्र) है। हे नानक ! परमात्मा के नाम से विहीन शरीर की कोई मजबूत नींव नहीं होती अर्थात् कभी भी नाश हो सकती है॥ ३॥

पउड़ी ॥ नैनी देखउ गुर दरसनो गुर चरणी मथा ॥ पैरी मारगि गुर चलदा पखा फेरी हथा ॥ अकाल मूरति रिदै धिआइदा दिनु रैनि जपंथा ॥ मै छडिआ सगल अपाइणो भरवासै गुर समरथा ॥ गुरि बखसिआ नामु निधानु सभो दुखु लथा ॥ भोगहु भुंचहु भाईहो पलै नामु अगथा ॥ नामु दानु इसनानु दिड़ु सदा करहु गुर कथा ॥ सहजु भइआ प्रभु पाइआ जम का भउ लथा ॥ २० ॥

पउड़ी॥ इन आँखों से गुरु का दर्शन करता हूँ, गुरु-चरणों में शीश निवाता हूँ। अपने पैरों से गुरु के मार्ग पर चलता और हाथों से उसे पंखा झुलाता हूँ। हृदय में अकालमूर्ति (ईश्वर) का मनन करता हूँ और दिन-रात उसका जाप करने में लीन हूँ। समर्थ गुरु के भरोसे पर मैंने अपनापन छोड़ दिया है। गुरु ने मुझे हरि-नाम रूपी सुखों का भण्डार प्रदान किया है, जिससे सारा दुख दूर हो गया है। हे मेरे भाइयो ! अकथ प्रभु का नाम मेरे पास है, आप भी उसे सेवन करो एवं आनंद प्राप्त करो। सदा गुरु की कथा करो, नाम, दान एवं स्नान-इन शुभ कर्मों को हृदय में बसा लो। प्रभु को पाकर मन में परमानंद उत्पन्न हो गया है और यम का भय भी दूर हो गया है॥ २०॥

सलोक डखणे म: ५ ॥ लगड़ीआ पिरीअंनि पेखंदीआ ना तिपीआ ॥ हभ मझाहू सो धणी बिआ न डिठो कोइ ॥ १ ॥

श्लोक डखणे महला ५॥ ये आँखें तो प्रभु से ही लग चुकी हैं और उसे देखकर तृप्त नहीं होतीं। वह मालिक सब में मौजूद है, उसके अतिरिक्त अन्य कोई दृष्टिगत नहीं होता॥ १॥

म: ५ ॥ कथड़ीआ संताह ते सुखाऊ पंधीआ ॥ नानक लधड़ीआ तिंनाह जिना भागु मथाहड़ै ॥ २ ॥

महला ५॥ संत-महापुरुषों की कथाएँ सुखदायक रास्ते हैं, हे नानक ! ये (शिक्षादायक कथाएँ) उन्हें ही मिलती हैं, जिनका उत्तम भाग्य होता है॥ २॥

म: ५ ॥ डूंगरि जला थला भूमि बना फल कंदरा ॥ पाताला आकास पूरनु हभ घटा ॥ नानक पेखि जीओ इकतु सूति परोतीआ ॥ ३ ॥

महला ५॥ पहाड़ों, सरोवर, मारूस्थल, भूमि, वन, फल, गुफाओं, आकाश, पाताल सब में ईश्वर ही व्याप्त है। हे नानक ! हम तो उसे देखकर ही जी रहे हैं, जिसने सबको एक सूत्र में पिरोया हुआ है॥ ३॥

पउड़ी ॥ हरि जी माता हरि जी पिता हरि जीउ प्रतिपालक ॥ हरि जी मेरी सार करे हम हरि के बालक ॥ सहजे सहजि खिलाइदा नही करदा आलक ॥ अउगणु को न चितारदा गल सेती लाइक ॥ मुहि मंगां सोई देवदा हरि पिता सुखदाइक ॥ गिआनु रासि नामु धनु सउपिओनु इसु सउदे लाइक ॥ साझी गुर नालि बहालिआ सरब सुख पाइक ॥ मै नालहु कदे न विछुड़ै हरि पिता सभना गला लाइक ॥ २१ ॥

पउड़ी॥ परमात्मा ही हमारा माता-पिता है और वही हमारा प्रतिपालक है। वही मेरी देखभाल करता है और हम उसके ही बालक हैं। वह सहज-स्वभाव ही जीवन रूपी खेल खेलाता है और इसमें वह कभी आलस्य नहीं करता। वह मेरा कोई भी अवगुण याद नहीं करता, अपितु अपने गले से लगा लेता है। जो कुछ भी मुँह से माँगता हूँ, वही दे देता है, मेरा हरि पिता सब सुख देने वाला है। उसने मुझे ज्ञान रूपी राशि एवं नाम रूपी धन सौंप दिया है और मुझे इस व्यापार के योग्य बना दिया है। उसने गुरु के साथ सांझेदार बनाकर बिठा दिया है और मैंने सर्व सुख पा लिए हैं। मेरा हरि पिता सब बातों अर्थात् सर्वकला समर्थ है, (मेरी तो बस यही कामना है कि) अब वह मुझसे कभी जुदा न होए॥ २१॥

सलोक डखणे म: ५ ॥ नानक कचड़िआ सिउ तोड़ि ढूढि सजण संत पकिआ ॥ ओइ जीवंदे विछुड़हि ओइ मुइआ न जाही छोड़ि ॥ १ ॥

श्लोक डखणे महला ५॥ नानक का कथन है कि हे मनुष्य ! झूठे एवं पाखण्डी लोगों से नाता तोड़कर पक्के सज्जन संतों को ढूँढ लो। चूंकि झूठे लोग तो जीते जी ही बिछुड़ जाते हैं परन्तु सज्जन संत तो मरणोपरांत भी साथ नहीं छोड़ते॥ १॥

म: ५ ॥ नानक बिजुलीआ चमकंनि घुरन्हि घटा अति कालीआ ॥ बरसनि मेघ अपार नानक संगमि पिरी सुहंदीआ ॥ २ ॥

महला ५॥ हे नानक ! बिजली चमकती है, अत्यंत काली घटा गरजती है, चाहे बादल बहुत बरसते हैं, हे नानक ! जीव-स्त्री तो प्रभु मिलन में ही शोभायमान होती है॥ २॥

म: ५ ॥ जल थल नीरि भरे सीतल पवण झुलारदे ॥ सेजड़ीआ सोइंन हीरे लाल जड़ंदीआ ॥ सुभर कपड़ भोग नानक पिरी विहूणी तती़आ ॥ ३ ॥

महला ५॥ चाहे धरती के सरोवर-नदियाँ जल से भरे हुए हों, शीतल पवन बहती हो, सोने की सेज हीरे-मोतियों से जड़ित हो, सुन्दर कपड़े एवं स्वादिष्ट भोग-पदार्थ भी हों परन्तु हे नानक ! पति-प्रभु के बिना सब दुखदायक ही प्रतीत होते हैं॥ ३॥

पउड़ी ॥ कारणु करतै जो कीआ सोई है करणा ॥ जे सउ धावहि प्राणीआ पावहि धुरि लहणा ॥ बिनु करमा किछू न लभई जे फिरहि सभ धरणा ॥ गुर मिलि भउ गोविंद का भै डरु दूरि करणा ॥ भै ते बैरागु ऊपजै हरि खोजत फिरणा ॥ खोजत खोजत सहजु उपजिआ फिरि जनमि न मरणा ॥ हिआइ कमाइ धिआइआ पाइआ साध सरणा ॥ बोहिथु नानक देउ गुरु जिसु हरि चड़ाए तिसु भउजलु तरणा ॥ २२ ॥

पउड़ी॥ परमात्मा ने जो कारण बनाया है, मनुष्य ने वही करना है। यदि प्राणी सौ यत्न करता हुआ भी भागदौड़ करता रहे, किन्तु उसे वही प्राप्त होता है, जो प्रारब्ध में लिखा होता है। यदि प्राणी सारी धरती पर भी घूमता रहे, फिर भी भाग्य के बिना उसे कुछ भी नहीं मिलता। गुरु

को मिलकर जो भगवान के प्रति श्रद्धा रूपी भय मन में बसा लेता है, उसका यम का भय दूर हो जाता है। श्रद्धा रूपी भय धारण करने से ही प्रभु-मिलन के लिए वैराग्य उत्पन्न होता है और तब वह परमात्मा को खोजता है। भगवान् को खोजते-खोजते ही मन में परमानंद पैदा होता है और फिर जन्म-मरण छूट जाता है। उसने साधु की शरण पाकर हृदय में परमात्मा का ही ध्यान किया है। हे नानक! गुरु ही नाम रूपी जहाज है, जिसे ईश्वर इस में चढ़ा देता है, उसे भवसागर से तार देता है॥ २२॥

सलोक म: ५ ॥ पहिला मरणु कबूलि जीवण की छडि आस ॥ होहु सभना की रेणुका तउ आउ हमारै पासि ॥ १ ॥

श्लोक महला ५॥ सर्वप्रथम मृत्यु को कबूल करो; जीने की आशा छोड़ दो, सबकी चरणरज बन जाओ; हे मानव! तो ही हमारे पास आओ॥ १॥

म: ५ ॥ मुआ जीवंदा पेखु जीवंदे मरि जानि ॥ जिन्हा मुहबति इक सिउ ते माणस परधान ॥ २॥

महला ५॥ अहंकार-भाव से मृत आदमी को ही जीवित समझो एवं अभिमान में जीवित को तो मृतक ही समझो। वही मनुष्य सर्वश्रेष्ठ हैं, जिनकी ईश्वर से मुहब्बत लगी हुई है॥ २॥

म: ५ ॥ जिसु मनि वसै पारब्रहमु निकटि न आवै पीर ॥ भुख तिख तिसु न विआपई जमु नही आवै नीर ॥ ३ ॥

महला ५॥ जिसके मन में परब्रह्म बस जाता है, कोई पीड़ा उसके निकट भी नहीं आती। भूख-प्यास तो उसे बिल्कुल तंग नहीं करते और यम उसके निकट ही नहीं आता॥ ३॥

पउड़ी ॥ कीमति कहणु न जाईऐ सचु साह अडोलै ॥ सिध साधिक गिआनी धिआनीआ कउणु तुधुनो तोलै ॥ भंनण घड़ण समरथु है ओपति सभ परलै ॥ करण कारण समरथु है घटि घटि सभ बोलै ॥ रिजकु समाहे सभसै किआ माणसु डोलै ॥ गहिर गभीरु अथाहु तू गुण गिआन अमोलै ॥ सोई कंमु कमावणा कीआ धुरि मउलै ॥ तुधहु बाहरि किछु नही नानकु गुण बोलै ॥ २३ ॥ १ ॥ २ ॥

पउड़ी॥ हे सच्चे मालिक! तू सदैव अडोल है, तेरी कीमत आँकी नहीं जा सकती। सिद्ध-साधक, ज्ञानी-ध्यानी में से कौन तेरी महिमा को तौल सकता है। तू नष्ट करने एवं बनाने में समर्थ है, संसार की उत्पत्ति एवं प्रलय सब तेरी ही लीला है। तू सब कुछ करने-करवाने में समर्थ है और सब शरीरों में तू ही बोलता है। हे मनुष्य! तू क्यों फिक्र करता है, जबकि परमात्मा तो सब को आहार प्रदान करता है। हे ईश्वर! तू गहन-गम्भीर एवं अथाह है, तेरे गुण एवं ज्ञान अमूल्य है। मनुष्य ने तो वही काम करना है, जो परमेश्वर ने उसके लिए निश्चित कर दिया है। हे मालिक! तुझसे बाहर कुछ भी नहीं है, नानक तो तेरे ही गुण गाता है॥ २३॥ १॥ २॥

रागु मारू बाणी कबीर जीउ की १ओं सतिगुर प्रसादि ॥

पडीआ कवन कुमति तुम लागे ॥ बूडहुगे परवार सकल सिउ रामु न जपहु अभागे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ बेद पुरान पड़े का किआ गुनु खर चंदन जस भारा ॥ राम नाम की गति नही जानी कैसे उतरसि पारा ॥ १ ॥ जीअ बधहु सु धरमु करि थापहु अधरमु कहहु कत भाई ॥ आपस कउ मुनिवर करि थापहु का कउ कहहु कसाई ॥ २ ॥ मन के अंधे आपि न बूझहु काहि बुझावहु भाई ॥ माइआ

कारन बिदिआ बेचहु जनमु अबिरथा जाई ॥ ३ ॥ नारद बचन बिआसु कहत है सुक कउ पूछहु जाई ॥ कहि कबीर रामै रमि छूटहु नाहि त बूडे भाई ॥ ४ ॥ १ ॥

अरे पण्डित ! तुम किस कुमति में लग चुके हो। हे अभागे, अगर राम का नाम नहीं जपा तो पूरे परिवार सहित डूब जाओगे॥ १॥ रहाउ॥ वेद एवं पुराणों को पढ़ने का तुझे क्या फायदा है ? यह तो यूं ही व्यर्थ है, जैसे गधे पर चन्दन का भार लादा होता है। राम नाम की महत्ता को तूने जाना ही नहीं, फिर कैसे पार हो सकते हो॥ १॥ यज्ञ करते समय बलि देने के लिए जीव-हत्या को तुम धर्म कहते हो, हे भाई ! फिर बताओ अधर्म क्या है ? ऐसा करके भी तुम खुद को मुनि कहलवाते हो तो फिर कसाई किसे कहते हो॥ २॥ हे मन के अन्धे ! स्वयं तो तुम कुछ समझते ही नहीं, फिर किसी अन्य को क्या ज्ञान दे सकते हो। तुम धन-दौलत के लिए विद्या को बेचते हो और इस तरह तुम्हारा जन्म व्यर्थ ही जा रहा है॥ ३॥ देवर्षि नारद एवं व्यास भी यही वचन कहता है और इस संदर्भ में चाहे शुकदेव से भी विश्लेषण किया जा सकता है। हे भाई ! कबीर भी एक यही सत्य कहते हैं कि राम का नाम जपने से ही छुटकारा हो सकता है, अन्यथा भवसागर में ही डूबोगे॥ ४॥ १॥

बनहि बसे किउ पाईऐ जउ लउ मनहु न तजहि बिकार ॥ जिह घरु बनु समसरि कीआ ते पूरे संसार ॥ १ ॥ सार सुखु पाईऐ रामा ॥ रंगि रवहु आतमै राम ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जटा भसम लेपन कीआ कहा गुफा महि बासु ॥ मनु जीते जगु जीतिआ जां ते बिखिआ ते होइ उदासु ॥ २ ॥ अंजनु देइ सभै कोई टुकु चाहन माहि बिडानु ॥ गिआन अंजनु जिह पाइआ ते लोइन परवानु ॥ ३ ॥ कहि कबीर अब जानिआ गुरि गिआनु दीआ समझाइ ॥ अंतरगति हरि भेटिआ अब मेरा मनु कतहू न जाइ ॥ ४ ॥ २ ॥

जब तक मन में से कामादिक विकारों को छोड़ा नहीं जा सकता, फिर वन में जाकर बसने से भी भगवान को कैसे पाया जा सकता है। जिसने अपने घर एवं वन को एक समान समझ लिया है, वही व्यक्ति संसार में पूर्ण त्यागी है॥ १॥ राम-नाम का सिमरन करने से ही परम-सुख हासिल होता है, अतः अपने हृदय में ही प्रेमपूर्वक राम को जपते रहो॥ १॥ रहाउ॥ किसी ने लम्बी जटाएँ रखकर, शरीर में भस्म का लेपन करके गुफा में निवास कर लिया है, परन्तु इसका क्या लाभ ? जिसने अपने मन को जीत लिया है, उसने तो समझो सारे जगत् को ही जीत लिया है और वह विषय-विकारों से विरक्त हो जाता है॥ २॥ हर कोई अपनी आँखों में सुरमा लगाता है किन्तु हरेक इन्सान की भावना में थोड़ा अन्तर अवश्य होता है। (कोई अपनी आँखों की ज्योति बढ़ाने एवं कोई सुन्दर दिखने के लिए आँखों में सुरमा डालता है)। जिसने अपनी आँखों में ज्ञान रूपी सुरमा डाला है, वही आँखें वास्तव में स्वीकार होती हैं॥ ३॥ हे कबीर ! अब मैंने सत्य को जान लिया है, गुरु ने मुझे ज्ञान देकर समझा दिया है। मुझे मेरे अन्तर्मन में ही परमात्मा मिल गया है, अतः अब मेरा मन कहीं भी नहीं भटकता॥ ४॥ २॥

रिधि सिधि जा कउ फुरी तब काहू सिउ किआ काज ॥ तेरे कहने की गति किआ कहउ मै बोलत ही बड लाज ॥ १ ॥ रामु जिह पाइआ राम ॥ ते भवहि न बारै बार ॥ १ ॥ रहाउ ॥ झूठा जगु डहकै घना दिन दुइ बरतन की आस ॥ राम उदकु जिह जन पीआ तिहि बहुरि न भई पिआस ॥ २ ॥ गुर प्रसादि जिह बूझिआ आसा ते भइआ निरासु ॥ सभु सचु नदरी आइआ जउ आतम भइआ उदासु ॥ ३ ॥ राम नाम रसु चाखिआ हरि नामा हर तारि ॥ कहु कबीर कंचनु भइआ भ्रमु गइआ समुद्रै पारि ॥ ४ ॥ ३ ॥

जिसे ऋद्धियाँ-सिद्धियाँ पाने का ख्याल लगा हुआ है, तो उसे भला किसी से क्या वास्ता हो सकता है। तेरी कही बातों के बारे में क्या कहूँ? मुझे तो बात करते भी बहुत शर्म महसूस होती है॥ १॥ जिसने राम को पा लिया है, उसे द्वार-द्वार पर भटकना नहीं पड़ता॥ १॥ रहाउ॥ दो दिन व्यवहार की आशा लेकर यह झूठा जगत बहुत भटकता रहता है। जिसने राम-नाम रूपी जल पी लिया है, उसे पुनः कोई प्यास नहीं लगती॥ २॥ गुरु की कृपा से जिसने इस रहस्य को बूझ लिया है, वह आशाओं को छोड़कर निर्लिप्त हो गया है। जब अन्तर्मन विरक्त हो गया तो उसे सब ओर सत्य ही नजर आया है॥ ३॥ जिसने मुक्तिदाता ईश्वर का नाम जपा है, वह पार हो गया है। हे कबीर! वह मनुष्य स्वर्ण की तरह हो गया है, उसका भ्रम मिट गया है और वह संसार-समुद्र से पार हो गया है॥ ४॥ ३॥

उदक समुंद सलल की साखिआ नदी तरंग समावहिगे ॥ सुंनहि सुंनु मिलिआ समदरसी पवन रूप होइ जावहिगे ॥ १ ॥ बहुरि हम काहे आवहिगे ॥ आवन जाना हुकमु तिसै का हुकमै बुझि समावहिगे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जब चूकै पंच धातु की रचना ऐसे भरमु चुकावहिगे ॥ दरसनु छोडि भए समदरसी एको नामु धिआवहिगे ॥ २ ॥ जित हम लाए तित ही लागे तैसे करम कमावहिगे ॥ हरि जी क्रिपा करे जउ अपनी तौ गुर के सबदि समावहिगे ॥ ३ ॥ जीवत मरहु मरहु फुनि जीवहु पुनरपि जनमु न होई ॥ कहु कबीर जो नामि समाने सुंन रहिआ लिव सोई ॥ ४ ॥ ४ ॥

जैसे समुद्र का पानी समुद्र में एवं लहरें नदी में विलीन हो जाती हैं, वैसे ही हम परम-सत्य में समाहित हो जाएँगे। जब शून्य (परमात्मा) में शून्य (आत्मा) मिल जाएगा तो हम समदर्शी पवन रूप हो जाएँगे॥ १॥ फिर दुनिया में हम क्योंकर आएँगे? जन्म-मरण तो परमात्मा के हुक्म में ही होता है और उसके हुक्म को बूझकर उसमें ही समा जाएँगे॥ १॥ रहाउ॥ जब पंच तत्वों (पृथ्वी, आकाश, अग्नि, पवन, जल) की रचना विनष्ट हो जाएगी तो इस तरह सब भ्रम मिट जाएगा। छदम् दर्शन एवं पाखण्डों को छोड़कर हम समदर्शी होकर एक ईश्वर के नाम का ध्यान करते रहेंगे॥ २॥ भगवान् हमें जिधर लगाएगा, उधर ही लगे रहेंगे और वैसे ही कर्म करते रहेंगे। यदि परमात्मा अपनी कृपा कर दे तो गुरु के शब्द में समाहित हो जाएँगे॥ ३॥ अगर जिंदा रहते हुए विषय-विकारों की तरफ से मर जाओ तो मरकर पुनः जीवित बन जाओ, इस प्रकार बार-बार जन्म-मरण नहीं होगा। हे कबीर! जो व्यक्ति परमात्मा के नाम में लीन रहता है, उसकी लगन शून्य-समाधि में लगी रहती है॥ ४॥ ४॥

जउ तुम्ह मोकउ दूरि करत हउ तउ तुम मुकति बतावहु ॥ एक अनेक होइ रहिओ सगल महि अब कैसे भरमावहु ॥ १ ॥ राम मोकउ तारि कहां लै जई है ॥ सोधउ मुकति कहा देउ कैसी करि प्रसादु मोहि पाई है ॥ १ ॥ रहाउ ॥ तारन तरनु तबै लगु कहीऐ जब लगु ततु न जानिआ ॥ अब तउ बिमल भए घट ही महि कहि कबीर मनु मानिआ ॥ २ ॥ ५ ॥

हे राम! अगर तुम मुझे अपने से दूर करते हो तो तुम यह बताओ कि मुक्ति क्या है? एक तू ही अनेक रूप होकर सब में बसा हुआ है, अब भला कैसे भ्रम हो सकता है॥ १॥ हे मेरे राम! तुम मुझे पार करवाने के लिए कहाँ ले जाते हो? मुझे समझाओ कि मुक्ति कैसी है, मुझे मुक्ति कहाँ ले जाकर दोगे। मुक्ति तो मैंने पहले ही तेरी कृपा से पा ली है॥ १॥ रहाउ॥ जब तक परमतत्व को नहीं जानता, तब तक मनुष्य संसार के बन्धनों से मुक्त करवाने व मुक्त होने की बात रहता है। कबीर जी कहते हैं कि अब तो हम अपने शरीर में प्रभु का नाम जपकर पवित्र हो गए हैं और हमारा मन संतुष्ट हो गया है॥ २॥ ५॥

जिनि गड़ कोट कीए कंचन के छोडि गइआ सो रावनु ॥ १ ॥ काहे कीजतु है मनि भावनु ॥ जब जमु आइ केस ते पकरै तह हरि को नामु छडावन ॥ १ ॥ रहाउ ॥ कालु अकालु खसम का कीन्हा इहु परपंचु बधावनु ॥ कहि कबीर ते अंते मुकते जिन्ह हिरदै राम रसाइनु ॥ २ ॥ ६ ॥

जिसने सोने के दुर्ग एवं किले बनाए थे, वह रावण भी उन्हें यहीं छोड़ गया है॥ १॥ हे प्राणी! तू क्योंकर मनमर्जी करता है, जब यम आकर केशों से पकड़ता है तो परमात्मा का नाम ही उससे छुड़वाता है॥ १॥ रहाउ॥ यह काल भी अकालपुरुष का बनाया हुआ है, यह जगत-प्रपंच उसी ने बाँध रखा है। कबीर जी कहते हैं कि जिनके हृदय में राम नाम रूपी रसायन होता है, वही अन्त में मुक्त होते हैं॥ २॥ ६॥

देही गावा जीउ धर महतउ बसहि पंच किरसाना ॥ नैनू नकटू स्रवनू रसपति इंद्री कहिआ न माना ॥ १ ॥ बाबा अब न बसउ इह गाउ ॥ घरी घरी का लेखा मागै काइथु चेतू नाउ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ धरम राइ जब लेखा मागै बाकी निकसी भारी ॥ पंच क्रिसानवा भागि गए लै बाधिओ जीउ दरबारी ॥ २ ॥ कहै कबीरु सुनहु रे संतहु खेत ही करहु निबेरा ॥ अब की बार बखसि बंदे कउ बहुरि न भउजलि फेरा ॥ ३ ॥ ७ ॥

यह शरीर एक गाँव है, जीव इस गाँव की धरती का स्वामी है और इस में काम, क्रोध रूपी पाँच किसान रहते हैं। ये आँखें, नाक, कान, जीभ एवं इन्द्रियाँ किसी का कहना नहीं मानते॥१॥ हे बाबा! अब मैं इस गाँव में पुनः नहीं बसना चाहता, क्योंकि यहाँ का चित्रगुप्त नामक मुंशी घड़ी-घड़ी का हिसाब-किताब माँगता है॥ १॥ रहाउ॥ जब धर्मराज ने हिसाब माँगा तो मेरी तरफ से बहुत भारी रकम बकाया निकली। काम, क्रोध रूपी वे पाँच किसान तो कहीं भाग गए परन्तु जीव रूपी स्वामी को धर्मराज के दरबार में बाँध लिया गया॥ २॥ कबीर जी कहते हैं कि हे संतजनो! मेरी बात जरा ध्यानपूर्वक सुनो; अपने खेत में ही (अपने कर्मों का) हिसाब निपटा लो। हे ईश्वर! अब की बार तू बंदे को क्षमा कर दे और दोबारा संसार-समुद्र के चक्कर में मत डालना॥ ३॥ ७॥

रागु मारू बाणी कबीर जीउ की १ओं सतिगुर प्रसादि ॥

अनभउ किनै न देखिआ बैरागीअड़े ॥ बिनु भै अनभउ होइ वणाहंबै ॥ १ ॥ सहु हदूरि देखै तां भउ पवै बैरागीअड़े ॥ हुकमै बूझै त निरभउ होइ वणाहंबै ॥ २ ॥ हरि पाखंडु न कीजई बैरागीअड़े ॥ पाखंडि रता सभु लोकु वणाहंबै ॥ ३ ॥ त्रिसना पासु न छोडई बैरागीअड़े ॥ ममता जालिआ पिंडु वणाहंबै ॥ ४ ॥ चिंता जालि तनु जालिआ बैरागीअड़े ॥ जे मनु मिरतकु होइ वणाहंबै ॥ ५ ॥ सतिगुर बिनु बैरागु न होवई बैरागीअड़े ॥ जे लोचै सभु कोइ वणाहंबै ॥ ६ ॥ करमु होवै सतिगुरु मिलै बैरागीअड़े ॥ सहजे पावै सोइ वणाहंबै ॥ ७ ॥ कहु कबीर इक बेनती बैरागीअड़े ॥ मोकउ भउजलु पारि उतारि वणाहंबै ॥ ८ ॥ १ ॥ ८ ॥

हे वैरागी! भक्ति-भावना के बिना ईश्वर को किसी ने नहीं देखा। दुनियावी भय से रहित होने पर ही भक्ति-भावना, सत्य का ज्ञान उत्पन्न होता है॥ १॥ जब मनुष्य मालिक प्रभु को साक्षात् देखता है तो ही उसके मन में प्रेम-भक्ति पैदा होती है। जब वह उसके हुक्म को बूझ लेता है तो ही निर्भय होता है॥ २॥ (यदि भगवान् को पाना चाहते हो तो) कोई पाखण्ड नहीं करना चाहिए। मगर संसार के सब लोग पाखण्ड में ही लीन हैं॥ ३॥ तृष्णा कदापि साथ नहीं छोड़ती और ममता

ने तो शरीर को ही जला दिया है॥ ४॥ यदि मन अहम्-भावना के प्रति मृत हो जाए तो चिंता को तजकर साधना द्वारा ही तन की ममता को मिटाया जा सकता है॥ ५॥ हे वैरागी! चाहे सब लोग वैराग्य पाना चाहते हैं किन्तु सतगुरु के बिना वैराग्य उत्पन्न नहीं होता॥ ६॥ यदि उत्तम भाग्य हो तो ही सत्गुरु मिलता है और सहज ही सत्य की प्राप्ति हो जाती है॥ ७॥ कबीर जी कहते हैं कि परमात्मा से मेरी एक यही विनती है कि मुझे भवसागर से पार उतार दो॥ ८॥ १॥ ८॥

राजन कउनु तुमारै आवै ॥ ऐसो भाउ बिदर को देखिओ ओहु गरीबु मोहि भावै ॥ १ ॥ रहाउ ॥ हसती देखि भरम ते भूला स्री भगवानु न जानिआ ॥ तुमरो दूधु बिदर को पान्हो अंम्रितु करि मै मानिआ ॥ १ ॥ खीर समानि सागु मै पाइआ गुन गावत रैनि बिहानी ॥ कबीर को ठाकुरु अनद बिनोदी जाति न काहू की मानी ॥ २ ॥ ६ ॥

{एक बार श्रीकृष्ण जब हस्तिनापुर आए तो वे राजमहल में जाने की अपेक्षा भक्त विदुर के घर चले गए। दुर्योधन ने इस बात का शिकवा किया तो श्रीकृष्ण ने उत्तर दिया कि}

हे राजन! तुम्हारे सुन्दर घर में कौन आए? मैंने विदुर का ऐसा प्रेम देखा है कि वह गरीब ही मुझे अच्छा लगता है॥ १॥ रहाउ॥ हाथी इत्यादि (सत्ता) देखकर तुम भ्रम में ही भूले हुए हो किन्तु भगवान की महिमा को नहीं जाना। तुम्हारे दूध की अपेक्षा विदुर का पानी मैंने अमृत समान माना है॥ १॥ मुझे उसका साग (तेरी) खीर के समान स्वादिष्ट् प्रतीत हुआ और भगवान् का गुणगान करते हुए रात्रि व्यतीत हुई। कबीर का मालिक बड़ा आनंदी एवं विचित्र लीलाएँ करने वाला है, वह किसी की ऊँची अथवा नीच जाति को नहीं मानता॥ २॥ ६॥

सलोक कबीर ॥ गगन दमामा बाजिओ परिओ नीसानै घाउ ॥ खेतु जु मांडिओ सूरमा अब जूझन को दाउ ॥ १ ॥ सूरा सो पहिचानीऐ जु लरै दीन के हेत ॥ पुरजा पुरजा कटि मरै कबहू न छाडै खेतु ॥ २ ॥ २ ॥

श्लोक कबीर॥ गगन तक युद्ध का बिगुल बज चुका है और नगाड़े पर भी चोट हो गई है। शूरवीरों ने रणभूमि में तैयारी कर ली है और अब उनके लिए शत्रुओं से जूझने का समय आ गया है॥ १॥ सच्चा शूरवीर वही समझा जाता है जो अपने धर्म एवं मासूमों के लिए लड़ता है। धर्म एवं गरीबों की खातिर चाहे वह अंग-अंग से कट कर मर जाए किन्तु वह रणभूमि को कदापि नहीं छोड़ता॥ २॥ २॥

कबीर का सबदु रागु मारू बाणी नामदेउ जी की ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

चारि मुकति चारै सिधि मिलि कै दूलह प्रभ की सरनि परिओ ॥ मुकति भइओ चउहूं जुग जानिओ जसु कीरति माथै छत्रु धरिओ ॥ १ ॥ राजा राम जपत को को न तरिओ ॥ गुर उपदेसि साध की संगति भगतु भगतु ता को नामु परिओ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ संख चक्र माला तिलकु बिराजित देखि प्रतापु जमु डरिओ ॥ निरभउ भए राम बल गरजित जनम मरन संताप हिरिओ ॥ २ ॥ अंबरीक कउ दीओ अभै पदु राजु भभीखन अधिक करिओ ॥ नउ निधि ठाकुरि दई सुदामै ध्रूअ अटलु अजहू न टरिओ ॥ ३ ॥ भगत हेति मारिओ हरनाखसु नरसिंघ रूप होइ देह धरिओ॥ नामा कहै भगति बसि केसव अजहूं बलि के दुआर खरो ॥ ४ ॥ १ ॥

जब हम पति-प्रभु की शरण में आ गए तो चारों मुक्तियाँ एवं चारों सिद्धियाँ हमें प्राप्त हो गईं। जब मुक्ति प्राप्त हो गई तो चारों युगों में विख्यात हो गया और परमात्मा ने यश एवं कीर्ति का

छत्र हमारे सिर पर झुला दिया है॥ १॥ राम का नाम जपकर भला कौन-कौन पार नहीं हुआ ? जिसने भी गुरु का उपदेश सुना, साधु-पुरुषों की संगति की है, उसका ही नाम भगत पड़ गया है॥ १॥ रहाउ॥ जिस पर शंख, चक्र, माला एवं तिलक शोभायमान है, उस परमात्मा के प्रताप को देखकर यम भी डरकर भाग गए हैं। राम के बल से निर्भय हो गए हैं और जन्म-मरण का दुख मिट गया है॥ २॥ भगवान् ने राजा अंबरीष को अभय-पद प्रदान किया था और प्रभु के वर से ही विभीषण ने अधिकतर समय लंका पर राज्य किया। उस ठाकुर जी ने गरीब सुदामा को नौ निधियाँ प्रदान की थीं और भक्त ध्रुव को अटल कर दिया जो अभी तक कायम है॥ ३॥ अपने भक्त प्रहलाद के लिए नृसिंह अवतार धारण करके दुष्ट हिरण्यकशिपु का वध किया। नामदेव कहते हैं कि ईश्वर तो भक्ति के वश में है और आज भी राजा बलि के द्वार पर खड़ा है॥ ४॥ १॥

मारू कबीर जीउ ॥ दीनु बिसारिओ रे दिवाने दीनु बिसारिओ रे ॥ पेटु भरिओ पसूआ जिउ सोइओ मनुखु जनमु है हारिओ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ साधसंगति कबहू नही कीनी रचिओ धंधै झूठ ॥ सुआन सूकर बाइस जिवै भटकतु चालिओ ऊठि ॥ १ ॥ आपस कउ दीरघु करि जानै अउरन कउ लग मात ॥ मनसा बाचा करमना मै देखे दोजक जात ॥ २ ॥ कामी क्रोधी चातुरी बाजीगर बेकाम ॥ निंदा करते जनमु सिरानो कबहू न सिमरिओ रामु ॥ ३ ॥ कहि कबीर चेतै नही मूरखु मुगधु गवारु ॥ रामु नामु जानिओ नही कैसे उतरसि पारि ॥ ४ ॥ १ ॥

अरे पगले ! तूने अपना धर्म ही भुला दिया है। पशु की तरह पेट भरकर तू गहरी नींद सोया रहता है और मनुष्य-जन्म व्यर्थ ही गंवा दिया है॥ १॥ रहाउ॥ साधु-पुरुषों की कभी संगति ही नहीं की, अपितु जग के झूठे धँधों में ही लीन रहा। कुत्ते, सूअर एवं कौए की तरह मनुष्य भटकता रहता है और अंत में फिर संसार से चल देता है॥ १॥ मनुष्य स्वयं को बड़ा समझता है किन्तु अन्य लोगों को छोटे से छोटा समझता है। अपने मन, वचन एवं कर्म द्वारा ऐसा करने वालों को मैंने नरक में ही जाते देखा है॥ २॥ कामी, क्रोधी, चालबाज एवं छल-कपट करने वाले सभी निकम्मे हैं, उन्होंने राम का तो कभी स्मरण नहीं किया, अपितु दूसरों की निंदा करते हुए अपना जन्म व्यर्थ ही व्यतीत कर दिया है॥ ३॥ कबीर जी कहते हैं कि मूर्ख-गंवार जीव चिंतन ही नहीं करता, फिर राम नाम के रहस्य को जाने बिना वह कैसे पार उतर सकता है॥ ४॥ १॥

रागु मारू बाणी जैदेउ जीउ की ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

चंद सत भेदिआ नाद सत पूरिआ सूर सत खोड़सा दतु कीआ ॥ अबल बलु तोड़िआ अचल चलु थपिआ अघड़ु घड़िआ तहा अपिउ पीआ ॥ १ ॥ मन आदि गुण आदि वखाणिआ ॥ तेरी दुबिधा द्रिसटि संमानिआ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ अरधि कउ अरधिआ सरधि कउ सरधिआ सलल कउ सललि संमानि आइआ ॥ बदति जैदेउ जैदेव कउ रंमिआ ब्रहमु निरबाणु लिव लीणु पाइआ ॥ २ ॥ १ ॥

चन्द्रमा स्वर द्वारा पूरक करके सातवाँ चक्र भेद दिया और सातवें चक्र में अनाहत नाद बजा दिया, फिर सोलह बार ॐ का उच्चारण करके सूर्य स्वर द्वारा रेचक किया। जब मन के बल को तोड़कर उसे बलहीन कर दिया, भटकते मन को स्थिर किया और चंचल मन को सुन्दर बनाया तो ही मन ने नामामृत का पान किया॥ १॥ हे मेरे मन ! जब जगत् के मूल परमेश्वर के गुणों का बखान किया तो तेरी दुविधा मिट गई और तेरी समदर्शी दृष्टि हो गई॥ १॥ रहाउ॥ जब आराधना योग्य परमेश्वर की आराधना की एवं श्रद्धेय प्रभु में श्रद्धा धारण की तो जैसे जल जल में विलीन हो जाता है, वैसे ही परम-सत्य में विलीन हो गया। जयदेव कहता है कि ब्रह्म का चिंतन करके निर्वाण पद पाया है और उसमें लिवलीन होकर उसे पा लिया है॥ २॥ १॥

कबीरु ॥ मारू ॥ रामु सिमरु पछुताहिगा मन ॥ पापी जीअरा लोभु करतु है आजु कालि उठि जाहिगा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ लालच लागे जनमु गवाइआ माइआ भरम भुलाहिगा ॥ धन जोबन का गरबु न कीजै कागद जिउ गलि जाहिगा ॥ १ ॥ जउ जमु आइ केस गहि पटकै ता दिन किछु न बसाहिगा ॥ सिमरनु भजनु दइआ नही कीनी तउ मुखि चोटा खाहिगा ॥ २ ॥ धरम राइ जब लेखा मागै किआ मुखु लै कै जाहिगा ॥ कहतु कबीरु सुनहु रे संतहु साधसंगति तरि जांहिगा ॥ ३ ॥ १ ॥

हे मन! राम का भजन-सुमिरन कर ले नहीं तो पछताएगा। पापी मन लोभ ही करता रहता है लेकिन आजकल में मृत्यु को प्राप्त हो जाएगा॥ १॥ रहाउ॥ लालच में फँसकर तूने अपना जन्म व्यर्थ गंवा लिया है और माया के भ्रम ने तुझे भुलाया हुआ है। धन एवं यौवन का घमण्ड मत करो, तू कागज की तरह गल जाएगा॥ १॥ जब यम आकर केशों से पकड़कर तुझे पटका कर मारेगा, उस दिन तेरा कुछ भी वश नहीं चलना। तूने कभी भगवान् का भजन-सिमरन नहीं किया और न ही कभी जीवों पर दया की है, तब तू अपने मुँह पर चोटें ही खाएगा॥ २॥ जब धर्मराज तुझसे तेरे कर्मों का लेखा-जोखा माँगेगा, तो तू क्या मुँह लेकर उसके पास जाएगा। कबीर जी कहते हैं कि हे सज्जनो, जरा ध्यानपूर्वक सुनो; साधु-संगति में ही संसार-सागर से पार हो सकोगे॥ ३॥ १॥

रागु मारू बाणी रविदास जीउ की १ओं सतिगुर प्रसादि ॥

ऐसी लाल तुझ बिनु कउनु करै ॥ गरीब निवाजु गुसईआ मेरा माथै छत्रु धरै ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जा की छोति जगत कउ लागै ता पर तुंही ढरै ॥ नीचह ऊच करै मेरा गोबिंदु काहू ते न डरै ॥ १ ॥ नामदेव कबीरु तिलोचनु सधना सैनु तरै ॥ कहि रविदासु सुनहु रे संतहु हरि जीउ ते सभै सरै ॥ २ ॥ १ ॥

हे प्यारे प्रभु! तेरे बिना ऐसी कृपा कौन कर सकता है, हे गुसाँई! तू ग़रीब-नवाज है और मुझ दीन पर तूने छत्र धर दिया है॥ १॥ रहाउ॥ जिसकी छूत जगत् को लग जाती है अर्थात् जिसे दुनिया अछूत समझती है, उस पर तू ही कृपा करता है। मेरा गोबिंद नीच को भी ऊँचा बना देता है और वह किसी से नहीं डरता॥ १॥ उसकी अनुकंपा से नामदेव, कबीर, त्रिलोचन, सधना एवं सैन इत्यादि भी संसार-समुद्र से पार हो गए हैं। रविदास जी कहते हैं, हे सज्जनो! मेरी बात जरा ध्यानपूर्वक सुनो, ईश्वर की रज़ा से सभी मनोरथ पूरे हो सकते हैं॥ २॥ १॥

मारू ॥ सुख सागर सुरितरु चिंतामनि कामधेन बसि जा के रे ॥ चारि पदारथ असट महा सिधि नव निधि कर तल ता कै ॥ १ ॥ हरि हरि हरि न जपसि रसना ॥ अवर सभ छाडि बचन रचना ॥ १ ॥ रहाउ ॥ नाना खिआन पुरान बेद बिधि चउतीस अछर माही ॥ बिआस बीचारि कहिओ परमारथु राम नाम सरि नाही ॥ २ ॥ सहज समाधि उपाधि रहत होइ बडे भागि लिव लागी ॥ कहि रविदास उदास दास मति जनम मरन भै भागी ॥ ३ ॥ २ ॥ १५ ॥

जिसके वश में सुखों का सागर कल्पवृक्ष, चिंतामणि एवं कामधेनु हैं; धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष रूपी चार पदार्थ, आठ महासिद्धियाँ एवं नौ निधियाँ भी उस ईश्वर के हाथ में ही हैं॥ १॥ हे भाई! जिह्वा से तुम भगवान् का नाम तो जपते ही नहीं, अन्य सभी वचन एवं व्यर्थ रचना को छोड़ कर प्रभु का भजन कर ले॥ १॥ रहाउ॥ अनेक आख्यान, पुराणों, वेदों एवं विधियों तथा चौंतीस अक्षरों में लिखे गए शास्त्रों का विचार करके व्यास जी ने यही बताया है कि राम नाम के बराबर कोई परमार्थ नहीं है॥ २॥ सहज-स्वभाव समाधि में रत होकर दुख-तकलीफों से रहित हो गए हैं और अहोभाग्य से ईश्वर में लगन लग गई है। रविदास जी कहते हैं कि दास की मति जग से विरक्त हो गई है, जिससे जन्म-मरण का भय भाग गया है॥ ३॥ २॥ १५॥ ☆☆☆